29-

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri





CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ श्रीः ॥

श्रीसूरसागर ।

अर्थात्

भाषा कविकुलचूडामणि श्रीसूरदासजी रचित श्रीमद्भाग-
वत बारहोंस्कन्धोंका ललित रागरागिनियोंमें

अनुवाद ।

काशीनिवासी-श्रीराधाकृष्णदासद्वारा अनेक शुद्धप्रतियोंसे संशोधित ।

वही
भजनानन्दी तथा प्रेमीभक्तोंके चित्तविनोदार्थ-
खेमराज श्रीकृष्णदासने
बंबई
निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयमें
मुद्रितकर प्रसिद्ध किया ।

श्रावण संवत् १९६४, शके १८२९.

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निवेदन.

भाषा कविकुलगुरु श्रीसूरदासजीको यदि भाषाका आदिकवि कहाजाय तो भी अत्युक्ति न होगी. यद्यपि इनके पहिलेके बहुतेरे कवियोंकी कविता और ग्रंथ मिलते हैं परंतु यदि विचारकर देखा जाय तो आजकल जो कविताका प्रचार है उसकी जड़ श्रीसूरदासजीहीसे है. सभी कवि इन्हींका अनुसरण करते हैं

सूरसागर सूरसागरहीहै. सम्भव है कि, समुद्रके सबरत्न इकट्ठे करलिये जासकें और उसका उचित मूल्यभी निर्धारित होसके परंतु यह किसकी सामर्थ्य है जो सूरके अगाध समुद्रके अनमोल रत्नोंका मोल करसके? कोई जौंहरी भी तो हो और होही करके क्या कर सकता है. यहाँ तो सूरकी चकाचौंधमें सभी सूर हो जाते हैं, सूझै क्या और कहैं क्या? और सूझा भी तो जुबान बंद.

मेरी बहुत दिनोंसे इच्छाथी कि इसका दर्शन तो करता परंतु संयोग न आया एकदिन पूज्यपाद श्रीभारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्रजीके पुस्तकालयमें पुस्तकोंको उलटतेपलटते एक बस्तेमें सूरसागरका केवल दशमस्कंधका पूर्वार्द्ध हाथ आया उसे देखकर और भी पिपासा बढ़ी इसी बीच बांकीपुर जानेका संयोग हुआ और वहां मित्रवर बाबू रामदीनसिंहजीके यहां सूरसागरका प्रथमसे नवमस्कंधतक देखनेमें आया. मुझे उत्साह हुआ कि, यदि यह अमूल्य ग्रंथ छपजाता तो भाषारसिकोंको बड़ा आनंद आता और भक्तोंको तो एक निधि ही हाथ आजाता. मैंने भाषाके सच्चे प्रेमी सेठजी श्रीखेमराज श्रीकृष्णदासजीको लिखा और उन्होंने सहर्ष इसे छापना स्वीकार किया दशम उत्तरार्द्ध और एकादश द्वादश स्कंध श्री १०८ महाराज काशिराज बहादुरके पुस्तकालयसे मँगाया गया. अतएव मैं उक्त महामान्यवरोंको हृदयसे धन्यवाद देताहूं.

सेवक—
श्रीराधाकृष्णदास,
चौखम्भा—काशी.

इससे पहली आवृत्तिमें ग्रंथका कुछ भाग छपजाने पर पता लगा कि इसकी एक प्राचीन पूरी प्रति जानीमल खानचन्द्रजीकी कोठीमें है. उक्त कोठीके स्वामी बाबू गिरिधरदासजीने कृपाकर उसे दी और राधाकृष्णदासजीने छपजानेके उपरांत मिलान करके शुद्धिपत्र तथा पाठांतरकी एक सूची पृथक् बनादी बहुतसे पद तथा पदोंके भाग छूट गयेथे वे भी पाठांतरके साथ बढ़ा दियेगये थे कि यदि भगवदिच्छा और ग्राहकोंके उत्साहसे इसके फिरसे छपनेका अवसर प्राप्त होगा तो ये सब यथा यथा स्थान सन्निवेशित कर दिये जायगे और यथा सम्भव नोट आदिभी दिये जायँगे इस प्रकार जो उस समय शीघ्रताके कारण नहीं होसकाथा वह सब अतिश्रमसे अबकी आवृत्तिमें यथास्थानसन्निवेशितकर यह उत्तम ग्रंथ मुद्रित किया गयाहै.

यह किंवदन्ती प्रसिद्ध है कि, सूरदासजीने सवालाख पद बनाये और सूरसागर सारावलीके देखनेसे भी विदित हुआ कि एक लाख पद तक तो उन्होंने सारावलीके बनाने तक बनाये थे, परंतु इस ग्रंथमें बहुत कम पद हैं. वह दिन परमसौभाग्यका होगा जब कि वह सब पद देखनेमें आवैंगे और भाषा रसिकोंके लिये वह दिन चिरस्मरणीय होगा जब कि सब पद छपकर प्रकाशित हो जायँगे। मैं बड़े हर्षके साथ प्रकाशित करता हूं कि, श्री १०८ गोस्वामि श्रीबालकृष्ण लालजी महाराज कांकरौली नरेशने आज्ञाकी है कि, मेरे पुस्तकालयमें पूरे सवालाख पद हैं और उन्होंने यह भी प्रतिज्ञा की है कि यदि तुम चाहोगे तो मैं उसे नकल करनेकी आज्ञा दूंगा यादि 'श्रीवेङ्कटेश्वर' भगवान्से प्रेरित हुए हमारे ग्राहकोंसे उत्साह पाकर उत्साहित हुआ मैं उसे छापनेकी इच्छा करता हुवा उस ग्रंथको प्राप्त करनेका उद्योग करूंगा.

मैं फिर उन महाशयोंको हृदयसे धन्यवाद देताहूं जिनसे इस बड़े काममें मुझे सहायता मिलीहै और आशा करताहूं कि, मेरी अनुपयुक्तताके कारण जो इसमें त्रुटियें रहगई हैं उन्हें सज्जन क्षमा करके मूल ग्रंथकी ओर दृष्टिदेंगे ॥

आपका कृपाकांक्षी—
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस—मुंबई.



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दशमस्कंध उत्तरार्ध.





T

कन्हैयालाल जालान कलकत्ता

॥ श्रीहरिः ॥

श्रीसूरदासजीका जीवनचरित्र।

न जाने क्यों हमारे देशके विद्वानोंका ध्यान इतिहासकी ओर तनिक भी न आया ? कि जिसके कारण अनेकानेक प्रसिद्ध पुरुषोंके नामभी नहीं सुननेमें आते. सूरदासजीको हुए अभी कुछ बहुत दिन नहीं हुए परंतु इतनेही थोडे कालमें भारतवर्षके एक इतने बडे प्रसिद्ध कविके जीवन चरित्रका पता ठीक ठीक नहीं लगता, यहाँतक यहाँके लोगोंका ध्यान इस ओर कम था कि सूरदासजीके थोडेही दिन पीछे गोस्वामी श्रीविट्ठलनाथजी महाराजके पुत्र श्रीगोकुलनाथजीने जो चौरासी वैष्णवोंकी वार्ता लिखी उसमें भी सूरदासजीका चरित्र सुना सुनायाही लिख दिया; यदि उस समय थोडाभी परिश्रम किया जाता तो इनका पूरा पता लगजाता परंतु खेद कि इधर तो किसीका ध्यानही न था ॥

सूरदासजीके विषयमें चौरासी वैष्णवोंकी वार्तामें तथा पूज्यपाद भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्रजीने जो लिखाहै वह और साहित्यलहरीमें बाबू रामदीनसिंहने जो कुछ छापाहै स्थानान्तरमें प्रकाशित कियाजाताहै यहाँ हम केवल समयका निरूपण करते हैं ॥

सूरदासजीका समय निर्णय करना कुछ बहुत कठिन नहीं है क्योंकि श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुके ये शिष्य थे ("श्रीवल्लभगुरु तत्त्व सुनायो लीला भेद बतायो" सू. सा. सा. ११०२) और श्रीगोसाईं जी (श्रीविट्ठलनाथजी) के समयमें ये मरे यह तो इनके लेखहीसे विदित है "थापि गोसाईं करी मेरी आठ मद्धे छाप" (भारतेन्दुजी लिखित लेख) श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुका जन्म संवत् १५३५ वैशाख कृष्ण ११ को और अन्तर्धान संवत् १५८७ आषाढ़ शु० २ को और श्री गोस्वामी विट्ठलनाथजीका जन्म संवत १५७२ पौषकृष्ण ९ और अन्तर्धान संवत् १६४२ माघ कृष्ण ७ को हुआ. अब इनका समय संवत् १५३५ से लेकर संवत् १६४२ के बीच १०७ वर्ष के भीतर ही निर्णय होना चाहिये. अब विचारना चाहिये कि इन्होंने अल्पायु पाई या दीर्घायु । १ पहिले तो उनके पदोंकी बडी संख्या ही उन्हें दीर्घायु बताती है परन्तु मुझे उनकी अवस्था लगभग अस्सी वर्षकी होनेका पक्का प्रमाण मिला है. सूरदासजीने सूरसागर सारावलीको अपनी सरसठ वर्षकी अवस्थामें लिखा है ॥ यथाः—

गुरु प्रसाद होत यह दरशन सरसठ बरस प्रवीन । शिव विधान तप करेउ बहुत दिन तऊ पार नहिं लीन ॥ १००२ ॥ सुख पर्यंक अंक ध्रुव देखियत कुसुम कन्द द्रुम छाये । मधुर मल्लिका कुसुमित कुंजन दम्पति लगत सोहाये ॥ १००३ ॥ गोवर्द्धन गिरि रत्नसिंहासन दम्पति रस सुख मान । निबिड कुंज जहँ कोउ न आवत रस बिलसत सुखखान ॥ १००४ ॥ निशा भोर कबहूं नहिं जानत प्रेममत्त अनुराग । ललितादिक सींचत सुख नैननि उर सहचरि बडभाग ॥ १००५ ॥ यह निकुंजको वर्णन करिदे वेद रहे पचिहारा।नेति नेति करि कहेउ सहस विधि तऊ न पायो पार॥१००६॥

दरशन दियो कृपा करि मोहन नेग दियो वरदान। आगम कल्प रमन तुव ह्वै है श्रीमुख कही बखान× ॥ १००७॥

सूरसागर सारावलीको सूरदासजीने एक लाख पद बनानेके उपरांत बनायाहैः—

कर्मयोग पुनि ज्ञान उपासन सबही भ्रम भरमायो। श्रीवल्लभगुरु तत्त्व सुनायो लीला भेद बतायो ॥ ११०२॥ तादिनते हरिलीला गाई एक लक्ष पदबन्द। ताको सार सूरसारावलि गावत अति आनन्द ॥ ११०३॥ तब बोले जगदीश जगतगुरु सुनो सूर मम गाथ। तू कृत मम यश जो गावैगो सदा रहै मम साथ ॥ ११०४॥

सूरदासजीके सवालक्ष पद बनानेकी किम्बदन्ती जो प्रसिद्ध है वह ठीक विदित होती है क्योंकि एकलाख पद तो श्रीवल्लभाचार्यके शिष्य होनेके उपरांत और सारावलीके समाप्त होने तक बनाये इसके आगे पीछे के अलगही रहे॥

अब देखना चाहिये कि यह सारावली कब बनी? इसके अंतमें सूरदास जी लिखतेहैंः—

"सरस समतसर लीला गावै युगल चरण चित लावै। गर्भवास बंदीखानेमें बहुरि सूर नहिं आवै ॥११०७॥" मुझे सरस सम्वत्सरका शब्द खटका और इसपर मैंने माननीय महामहोपाध्याय श्रीपंडित सुधाकर द्विवेदीजीसे पूँछा इन्होंने बताया कि सरस नहीं यह शब्द षरस होसकता है जिसका अर्थ साठ होता है और पहिले लोग सैकडाको छोडकर प्रायः लिखदिया करते थे, इससे संवत १५६० का अनुमान हुआ. परंतु जो विचारकर देखा तो यह बात सर्वथा असंगत प्रतीत हुई. क्योंकि एक तो "सरस सम्बत्सर लीला गावै" से विदित होताहै कि, यह फलस्तुतिहै. सम्भवहै इस लीलाहीका नाम सरस सम्बत्सर लीलाहो. क्योंकि गोवर्धनपूजाके प्रसंगमेंभी सूरदासजीने लिखाहै "श्याम कह्यो सूरदास सों मेरी लीला सरस बनाय" दूसरे यह कि, हम ऊपर दिखला चुकेहैं कि सरसठ वर्षकी अवस्थामें यह ग्रंथ बना तो १५६० मेंसे ६७ निकाल दीजिये तो १४९३ बचताहै जो कि श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुके जन्मके बहुत पहिले आता है और यदि श्रीगोसाईंजीके कालमें सूरदासजीकी मृत्यु उनके लेखानुसार मानीजाय तथा सूरदासजीने सम्वत १६०७ में साहित्यलहरी बनायीहै तब तो सूरदासजीकी अवस्था ११४ वर्षसेभी अधिक हो जातीहै, इससे इसे छोडकर साहित्यलहरीहीके सम्बतपर ध्यान देना चाहिये॥

साहित्यलहरीमें सूरदासजीने यों सम्वत दियाहैः—

"मुनि पुनि रसनके रस लेष। दशन गौरीनंदको लिखि सुबल सम्वत पेष॥ नंदनंदन मास छैतें हीन त्रितियावार। नंदनंदन जनमतेहैं बाणसुख आगार॥ त्रितिय रिक्ष सुकर्म योग बिचारि सूर नवीन। नंदनंदन दासहित साहित्य लहरीकीन ॥ १०९ ॥"

मुनि = सात, रसन = एक, रस = छ, दशन गौरीनंद = एक अर्थात् १६०७ ("अंकानां वामतो गतिः") नंदनंदनमास = बैशाख, अक्षय तृतीया कृत्तिकानक्षत्र सुकर्म योगमें साहित्यलहरी बनाया।

साहित्य लहरीको सूरदासजीने सूरसागरसे दृष्टकूट पदोंको छांटकर संग्रह कियाहै अस्तु अब

× इसको जीवनचरित्रवाले पद "प्रथमही प्रथजगात" के इनपदोंसे मिलाइये "सातएँ दिन आय यदुपति कीन आप उद्धार" दियो चखवै कही शिशु सुनु मांगु वर जो चाइ। हौं कही प्रभु भगति चाहत शत्रुनाश सुभाइ॥ दूसरो ना रूप देखौं देखि राधा श्याम। सुनत करुणासिन्धु भाषी एवमस्तु सुधाम॥ प्रबल दक्षिण विप्रकुलते शत्रुहै है नास। अमित बुद्धि बिचारि विद्यामान मानै मास॥ नाम राखे मोर सूरजदास सूर सु श्याम। भए अन्तर्धान बीते पाछली निशि याम॥

१६०७ मेंसे सरसठ वर्ष निकाल दीजिये तो १५४० सम्वत्के लगभग उनके जन्मका समय आया और इसके पीछे सम्बत् १६२० के लगभग उनकी मृत्यु मानलेनी चाहिये ॥

सूरसागरके देखनेसे विदित होताहै कि उस समयमें श्रीगोस्वामि हित हरिवंशजीको और स्वामि हरिदासजीके पूरे अभ्युदय का समयथा और उससमयके सब वैष्णवोंमें प्रेमथा सूरदासजी लिखते हैंः–

निशिदिन श्याम सेऊं मैं तोहिँ । इहै कृपा करि दीजै मोहिँ ॥ नवनिकुंज सुखपुंजमें हरिवंशी हरिदासी जहाँ । हरि करुणा करि राखहु तहां ॥ नित विहार आभार दै (पृष्ठ ३६२ पंक्ति १०)॥

ऐसा प्रतीत होताहै कि सूरदासजीने श्रीमद्भागवतको शृंखलापूर्वक एक समयमें नहीं बनाईथी क्योंकि वार्ता इत्यादिमें समय समय पर जो सबपद "खंजन नैन रूप रस माते ।" आदि लिखेहैं प्रायः वे सभी इसमें आगयेहैं, और पूरा पूरा भागवतका अनुवादभी नहीं है बहुतसी कथा छोडभीदीहै और कई एक उपासनाके अनुसार बढाभीदीहै कुछ और पुराणोंसेभी सहायता ली है. आप लिखतेहैंः–

"वंदन रज बिधि सबै कह्यो विधि दियो ऋपिन्द बताइ । व्यास त्रिपद वामनपुराण कह्यो सूर सोइ अब गाइ ॥ " (पृष्ठ ३६४ पंक्ति २३)

एक सूरदास और हुएहैं. वह अपना नाम कवितामें सूरदास मदनमोहन रखतेथे सूरदासजीका नाम भारतवर्षमें ऐसा प्रसिद्ध होगयाहै कि सभी अंधोंको लोग सूरदास कहतेहैं और बहुतसे लोग आप कविता करिके सूरदासजीकी छाप उसमें रखदेतेहैं. जिसमें वह कविता प्रसिद्ध होजाय. श्रीयुत बाबू अक्षयकुमारदत्तने भ्रमवश अपने बंगला ग्रंथ "भारतवर्षीय उपासक सम्प्रदाय" में लिख दियाहै कि जितने अंधे फकीर एकतारा लेकर गाते हुये घूमते फिरतेहैं सब सूरदासके सम्प्रदायमें हैं ॥

सूरदासजीका जीवनचरित्र आगे दियेहुये लेखोंसे प्रगट होजायगा अतएव हम यहाँ कुछ अधिक लिखना आवश्यक नहीं समझते ॥

पूज्यपाद भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्रजी लिखित नोट सूरदासजीका ।

संसारमें जो लोग भाषाकाव्य जानते होंगे वह सूरदासजीको अवश्य जानते होंगे और उसी तरह जो लोग थोडेभी वैष्णव होंगे, वे इनका थोड़ा बहुत जीवनचरित्रभी अवश्य जानते होंगे. चौरासी वार्ता, उसकी टीका, भक्तमाल और उसकी टीकामें इनका जीवन विवृत कियाहै. इन्हीं ग्रंथोंके अनुसार संसारको (और हमकोभी (१) विश्वास था कि ये सारस्वत ब्राह्मणहैं, इनके पिताका नाम रामदास, इनके माता पिता दरिद्रीथे, ये गऊ घाटपर रहतेथे, इत्यादि.) अब सुनिये एक पुस्तक सूरदासजीके दृष्टिकूट पर टीका (टीकाभी सम्भव होताहै उन्हींकीहै, क्योंकि टीकामें जहाँ अलंकारोंके लक्षण दियेहैं वह दोहे और चौपाई भी सूरनामसे अंकितहैं.) मिली है. इस पुस्तकमें ११६ दृष्टिकूटके पद अलंकार और नायिकाके क्रमसेहैं और उनका स्पष्ट अर्थ और उनके अलंकार नायिका इत्यादि सब लिखे हैं. इस पुस्तकके अंतमें कविने अपना जीवनचरित्र दियाहै, जो नीचे प्रकाश किया जाताहै. अब इसको देखकर सूरदासजीके जीवनचरित्र और

(१) कविवचनसुधा प्राचीन पुस्तकावलीकी दूसरी जिल्दमें सूरदासजीका जीवनचरित्र देखो ।

वंशको हमलोग औरही दृष्टिसे देखने लगे. वह लिखतेहैं "प्रथमजगात" (२) प्रार्थज गोत्र (?) वंशमें इनके मूल पुरुष ब्रह्मराव (३) हुए जो बडे सिद्ध और देवप्रसाद लब्ध थे. इनके वंशमें भौचंद (४) हुआ पृथ्वीराजने (५) जिसको ज्वालादेश दिया। उसके चार पुत्र जिनमें पहिला राजा हुआ. दूसरा गुणचंद्र उसका पुत्र शीलचंद्र उसका वीरचंद्र यह वीरचंद्र रत्नभ्रमर (रनथम्भौर) के राजा प्रसिद्ध हम्मीर (६) के साथ खेलताथा। इनके वंशमें हरिचन्द्र (७) हुआ उसके पुत्रके ७ पुत्र हुए जिनमें सबसे छोटा (कवि लिखताहै) मैं सूरतचन्द्रथा मेरे ६ भाई मुसलमानोंके युद्ध (८) में मारे गए। मैं अन्धा कुबुद्धिथा। एक दिन कुंए-में गिरपडा तो सात दिन तक उस (अन्धे) कुंए में पडा रहा किसीनेन निकाला सातवें दिन भगवानने निकाला और अपने स्वरूपका (नेत्र देकर) दर्शन कराया और मुझसे बोले कि बर मांग मैंने वर मांगा कि आपका रूप देखकर अब और रूप न देखूं और मुझको दृढभक्ति मिले और शत्रुओं (९) का नाशहो। भगवान्ने कहा ऐसा ही होगा तू सब विद्यामें निपुण होगा प्रबल दक्षिणके ब्राह्मण (१०) कुलसे शत्रुका नाश होगा और मेरा नाम सूरजदास, सूर, सूरश्याम इत्यादि रखकर भगवान अन्तर्धान होगये। मैं ब्रजमें बसने लगा फिर गोसाईं (११) ने मेरी अष्ट (१२) छापमें थापना की इत्यादि। इस लेखसे और लेख अशुद्ध मालूम होते हैं क्योंकि जैसे चौरासी वार्ताकी टीकामें लिखाहै कि दिल्लीके पास सीही गाँवमें इनका दरिद्री माता पिताके घर जन्म हुआ यह बात नहीं आई। यह एक बडे कुलमें उत्पन्न थे और आगरे वा गोपाचलमें इनका जन्म हुआ हो यह मान

(२) "प्रथजगात"–इस जाति वा गोत्रके सारस्वत ब्राह्मण सुननेमें नहीं आए। पंडित राधाकृष्ण संगृहीत सारस्वत ब्राह्मणोंकी जातिमालामें "प्रथजगात" "प्रथ"–वा "जगात" नामके कोई सारस्वत ब्राह्मण नहीं होते। 'जगा वा जगातिया' तो भाटको कहतेहैं।

(३) ब्रह्मराव नामसेभी सन्देह होताहै कि यह पुरुष या तो राजा रहाहो या भाट।

(४) भौ का शब्द हुआ अर्थमें लीजिए तो केवल चन्द्रनामथा। चन्द्र नामका एक कवि पृथ्वीराज की सभामेंथा। आश्चर्य!!!

(५) पृथ्वीराजका काल सन् ११७६।

(६) हम्मीर चौहान, भीमदेवका पुत्र था। रणथंभौरके किलेमें इसीकी रानी इसके अलाउद्दीन (दुष्ट) के हाथसे मारेजाने पर सहस्रावधि स्त्रीके साथ सती हुईथीं। इसका वीरत्व यश सर्वसाधारणमें हमीर हठके नामसे प्रसिद्ध है।
(तिरिया तेल, हमीरहठ, चढे न दूजीबार) इसीकी स्तुतिमें अनेक कवियोंने वीररसके सुन्दर श्लोक बनाएहैं। 'मुञ्चति मुञ्चति कोपं भजति च भजति प्रकम्प मरिवर्गम्। हम्मीरवीरखङ्गे त्यजति त्यजति क्षमामाशु।' इसका समय सन् १२९०। (एक हमीर सन् ११९२ में भी हुआहै)।

(७) सम्भवहै कि हरिचन्दके पुत्रका नाम रामचन्द्र रहाहो जिसे वैष्णवोंने अपनी रीतिके अनुसार रामदास कर लियाहो।

(८) उस समय तुगलकों और मुगलों का युद्ध होताथा॥

(९) शत्रुओंसे लौकिक अर्थ लीजिए तो मुग़लोंका कुल (इससे सम्भव होताहै कि इनके पूर्वपुरुष सदासे राजाओंका आश्रय करके मुसल्मानोंको शत्रु समझते थे या तुग़लकोंके आश्रितथे इससे मुग़लोंको शत्रु समझतेथे) यदि अलौकिक अर्थ लीजए तो काम, क्रोधादि।

(१०) शिवाजीके सहायक पेशवाका कुल जिसने पीछे मुसल्मानोंका नाश किया (अलौकिक अर्थ लीजिए तो सूरदास-जीके गुरु श्रीवल्लभाचार्य्य दक्षिण ब्राह्मण कुलके थे।

(११) "गोसाईं"–श्रीविट्ठलनाथजी श्रीवल्लभाचार्यके पुत्र।

(१२) अष्टछाप-यथा-सूरदास, कुम्भनदास, परमानन्ददास, और कृष्णदास ये चार महात्मा आचार्य्यजीके सेवक और छीत स्वामि गोविन्दस्वामि, चतुर्भुजदास और नन्ददास ये गोसाँईजीके सेवक। ये आठों महाकविथे।

लिया जाय कि मुसलमानोंके युद्धमें इनके भाइयोंके मारेजानेके पीछेभी इनके पिता जीते रहे और एक दरिद्र अवस्था पहुँच गएथे और उसी समयमें सीही गाँवमें चले गये हों तो लड मिल सक्ती है। जो हो हमारी भाषा कविताके राजाधिराज सूरदासजी एक इतने बडे वंशक हैं यह जानकर हमलोगोंको बडा आनन्द हुआ। इस विषयमें कोई और विद्वान जो कुछ और विशेष पता लगा सके तो वहभी उसे पत्र द्वारा प्रकाशित करें॥

प्रथम ही प्रथ जगाते में प्रगट अद्भुत रूप। ब्रह्मराव विचारि ब्रह्मा राखु नाम अनूप॥ पानपय देवी दियो शिव आदि सुर सुख पाय। कह्यो दुर्गा पुत्र तेरो भयो अति सुख दाय॥ पार पायन सुरनके पितु सहित अस्तुति कीन। तासुवंश प्रशंस में भौ (१) चंद*चारु नवीन॥ भूप

---

* दीपनिर्वाण नामक उपन्यासके पहले भागमें मुन्शी उदितनारायण वर्म्माने लिखाहैः-

" कविचन्द यथार्थ में एक प्रसिद्ध राजपूत महाकवि पृथ्वीराजके परमबन्धु थे, और पृथ्वीराजके सहवास ही में सर्व्वदा रहते थे। चन्दकवि पुस्तकमें कविचन्द्र के नाम से लिखे गये हैं। इङ्गलैण्डके सर फिलिपसिड्नी और सर वाल्टर रयाली-के समान वे काव्यविषयमें निपुण थे, युद्धविषय में भी वैसही दूरदर्शी थे, किन्तु काव्यही उनके यशका चिह्न है. उनका सकल महाकाव्य राजपूत लोगोंके, विशेषतः पृथ्वीराजके कीर्तिकलाप और शूरता पराक्रम में वर्णन हुआ है। सुतराम् समस्त आर्यजाति में जैसे रामायण और महाभारत आदरणीय है, ग्रीक (यूनान) लोगोंमें जैसे होमर आदरणीय है, राजपूत लोगोंमें चन्दकवि का काव्यसमूह भी वैसेही आदरणीयहै। किन्तु चन्दकविका कपोलकल्पित काव्य बहुत कमहै, प्रकृत वृत्तान्तका भाग अधिक है। दुःखका विषय यही है कि उनका समस्त जीवनचरित्र कहींभी नहीं पाया जाता और उनके काव्य समूहका अधिकांश प्रायः प्राचीन हिन्दीभाषामें छन्दोबद्ध है।

चन्दकविके विषय में शिवसिंहसरोजमें यों लिखा हैः-

चन्दकवि प्राचीन बंदीजन संभल निवासी संवत ११९६ ए. चन्दकवि महाराजा वीसल देव चौहान रनथंभार वालेके प्राचीन कवीश्वरकी औलाद में थे. संवत्११२०में राजा पृथ्वीराज चौहानकेपास आये और मंत्री कवीश्वर दोनों पदको प्राप्त हुआ और पृथ्वीराज रायसा नाम एक ग्रन्थ एक लक्ष श्लोक संख्या भाषामें रचा जिसमें ६९ खंड हैं और जिसमें पुरानी बोली हिन्दुओं की है इस ग्रन्थमें चन्दकविने संवत् ११२० से संवत् ११४९ तक पृथ्वीराज का जीवनचरित्र महाकविताईके साथ बहुत छन्दों में वर्णन किया है छप्पय छंद तो मानों इसी कविके भागमें थीं जैसा चौपाई छंद श्रीगोसाई तुलसीदासके हिस्से में पडी थीं इस ग्रन्थमें क्षत्रियोंकी वंशावली और अनेक युद्ध और आबू पहाडका माहात्म्य और दिल्ली इत्यादि राजधानियों की शोभा और क्षत्रियोंके स्वभाव चालचलन-व्यवहार बहुत विस्तारपूर्वक वर्णन किये हैं ये कवि केवल कवीश्वरही नहीं थे वरन् नीतिशास्त्र और चारनके काम काजमें महाशूरवीर थे संवत् ११४९ में साथ पृथ्वीराजके येभी मारेगए इन्हींकी औलादमें शार्ङ्गधर कवि थे जिन्होंने हमीररायसा और हमीरकाव्य भाषामें बनाया है।

शार्ङ्गधर कवि बंदीजन चंद कवीश्वर वंशी संवत् १३५७ ये प्राचीन कवि चंद कवीश्वर के वंशमें संवत् १३३० के करीब उत्पन्न हुए थे। और राजा हमीरदेव चौहान रनथंभार वालेके यहां जो राजा विशालदेवके वंशमें था रहा करते थे इन्होंने हमीररायसा १ और हमीरकाव्य २ ये दो ग्रन्थ महाउत्तम बनाएहैं हमीररायसा राजा हमीरकी प्रशंसामें लिखा है।

दोहा-सिंहगवन सपुरुष वचन, कदालि फरै इक वार। तिरिया तेल हमीर हठ, चढे न दूजी वार॥ १॥

कवित्त-तंगन समेत काटि विहित मतंगन सों रुधिरसों रंगरण मंडलसों भरिगो। सारंग सु कवि भनै भूपति भवानीसिंह पारथ समान महाभारत सों करिगो॥ मोरे देखि मुगुल तुराबखान ताहि समै काहू अग न जाना काहू नट मों उचरिगो। बाजीगर कैसी दगाबाजी करि हाथी हाथा हाथी हाथा हाथी ते सहादति उतरिगो॥ १॥

चन्दकविके विषयमें पंडित श्रीमोहनलाल विष्णुलाल पंडाने पृथ्वीराजरायसा की टिप्पणीमें लिखाहै।

चंद बरदई-इस महाकाव्य का ग्रंथकर्त्ता कि जो हिन्दुओंके अंतिम बादशाह पृथ्वीराज जी चौहानका लंगोटिया मित्र और उनके दरबारका कविराज था। वह भट्ट जाति जो आज कल राव करके कहलाते हैं उसके जगात नामक गोत्रका था और उसके पुरुषा पंजाब देश लाहौर नगरके रहनेवाले थे और उनकी यजमानी अजमेरके चौहानोंकी थी। उसकी जैसी शूरवीरता इस महाकाव्यमें विदित होती है उसका मुख्य कारण यही है कि, वह पंजाब देशकी अद्यावधि

पृथ्वी (२) राज दीनों तिन्हें ज्वाला देश। तनय ताके चार कीन्हों प्रथम आप नरेश॥ दूसरे (३) गुणचंद तासुत शीलचंद सरूप। (४) वीरचंद प्रताप पूरण भयो अद्भुत रूप॥ रंतभार

प्रसिद्ध वीरभूमिकें तत्त्वों से उत्पन्न हुआ था और राजपूतानेके हृदयरूपी अजमेर नगरमें बडा हुआ था। वह पट् भाषा, व्याकरण, काव्य, साहित्य, छंद शास्त्र, ज्योतिष, वैद्यक, मंत्रशास्त्र, पुराण, नाटक और गान आदिक विद्याओंमें अच्छा व्युत्पन्न पंडित था। उसके पिताका नाम वेण और विद्या-गुरुका नाम गुरुप्रसाद था। उसकी दो स्त्रियोंके नाम कमला अर्थात् मेवा और गौरी अर्थात् राजोरा और एक लडकीका नाम राजबाई और दश लडकोंके नाम सूर १ सुन्दर २ सुजान ३ जल्ह ४ वल्ह ५ वलिभद्र ६ केहरि ७ वीरचंद ८ अवधूत अर्थात् योगराज ९ और गुणराज १० थे। इस महाकाव्यके विषयोंको वैसे तो उसने समय २ पर बनाकर कंठ कर रक्खे थे परंतु उनको ग्रंथाकारमें उसने ६० दिनमें रचा था और अंतको उसने रायसाकी पुस्तक अपने लडके जल्ह नामकको दी थी। इस रायसेके अतिरिक्त उसके रचे और भी कईएक ग्रंथ सुनने में आतेहैं परंतु उनमें सबसे बडा ग्रंथ यह रायसा है और अन्य सब ग्रंथ अब बिल्कुल नहीं मिलते हैं। उसका सविस्तर जीवनचरित्र और वंशावली जहाँ तक हमारे जाननेमें ख्यातादिसे आई है वह हम इस ग्रंथके समाप्त होने पर छापकर प्रसिद्ध करेंगे।"

फिर लिखा है-

छप्पय-"सम वनिता वर वंदि चंद जंपिय कोमल कल। शब्द ब्रह्म यह सत्य अपर पावन कहि निर्मल॥
जिहित शब्द नहिं रूप रेख आकार ब्रह्म नहिं। अकल अगाध अपार पार पावन त्रयपुर माहिं॥
तिहिं शब्द ब्रह्म रचना करौं गुरुप्रसाद सरसे प्रसन॥ यद्यपि सु उकति चूकौं जुगति तौ कमल बदनि कवितह हसन॥
छंद॥ १३॥ रू० ॥ ८॥

८ चंद इस रूपक में अपनी स्त्रीको उसकी शंकाका उत्तर देकर समाधान करता है। शब्द ब्रह्म (सं० शब्दात्मकं ब्रह्म) शब्दका प्रयोग चंदकी व्याकरण और वेदान्त विद्याके ज्ञान का द्योतक है गुरुप्रसाद शब्द यहां श्लेषार्थमें कविने प्रयोग किया है क्योंकि ख्यातियोंके अनुसार चंदके विद्या गुरुका नाम गुरुप्रसाद था। यद्यपि कुछ विशेष वृत्त नहीं मिलते तथापि यह गुरुप्रसाद नामक पंजाब देशका रहनेवाला एक बडा पंडित हुआहै। कवितह चंदकी हिन्दीका निज प्रयोग है और उसका अर्थ कवित्त अर्थात् काव्य रचनेवाले कविका है। किसी २ पुस्तकमें जो वरवदि, अमल, अवल, त्रयपूर, मदि,तिहि और प्रसन्न पाठहैं वे अशुद्ध हैं।"

फिर लिखा है-

"विहु वाह सूर सजे समंत। वेनै विरद वंधे अनंत" ॥ छंद ॥ ६२३ ॥

यह छंद सं० १६४७। १७७० और १८४५ की पुस्तकोंमें नहीं है किन्तु सं० १८५९ की लिखी में है।

इस छंदकी अंतकी तुक में "वेनै विरद वंधे अनंत" है कि जिसका अर्थ यह होता है कि वेनने अनेक विरद बांधे अर्थात् कहे। यह वेन कवि इस महाकाव्यके रचनेवाले चंदका पिता था और वह सोमेश्वर जीके इस समय साथ था। अब तक चंदसे पहिलेका कोई काव्य किसी भी कविका किसीके जानने में नहीं है किन्तु हमने जो एक चंद छंद वर्णन की महिमा नामक पुस्तक सं० १६२९ की लिखी शोध की है उसके पीछे मेवाडराजके महाराणा जी श्री उदयसिंह जी के महाराजकुमार श्री सगतसिंहजीके पंडित विष्णुदासजीने अकबर बादशाहके भाट गंग जीसे अजमेरमें पटोलावायके मुकामपर चंदके बाप कवि राव वेनका नीचे लिखा छप्पय अर्थात् कवित्त लिखा था वह हम प्रकाश करतेहैं। इस छप्पयसे वेन ने पृथ्वीराज जीके पिता सोमेश्वर जीको आशीश दी थी-

छप्पय-अटल ठाट महि पाट, अटल तारागढ थानं। अटल नग्र अजमेर, अटल हिंदव स्थानं॥
अटल तेज परताप, अटल लंका गढ डंडिव। अटल आप चहुवान, अटल भूमि यश मंडिव॥
संभरी भूप सोमेश नृप, अटल छत्र ओपे सू सर। कविराव वेन आशीशदें, अटल युगां राजेश कर॥

इसीके साथ उसी पुस्तक में चंदके नागापत्रकरणाका कहा हुआ यह नीचे लिखा दोहा भी लिखाहैः-

दोहा-लै कूंजा नृप पीथुला, सांमत चमू समंद। वेन नँदन कनवज गमन, चंद करन कइ दंद॥

पृथ्वीराज रायसेकी प्रथम संरक्षा में लिखाहै-

इसके सिवाय फारसी और जम्मूकी तवारीख भी इस बातकी साक्षी देती है कि चंद हमारे हिन्दुओंके अंतिम बादशाहका परमप्रिय कविराज और सहचर था। यदि हम उन पुस्तकोंका मूल उद्धृत करके यहां प्रमाण में प्रवेश करें तो ग्रंथके बहुत बढ जाने का भय है। अतएव हम मेजर रेवर्टी साहबकी एक टिप्पणीको उद्धृत कर प्रमाणमें इस अभिप्रायसे देते हैं कि हमारे पाठकोंको इस विषयका अनुभव एक थोडीसी पंक्तियोंसे ही होजाय। नीचे लिखी थोडी सी पंक्तियें केवल

हमीर भूपत संग खेलत आप । तासु वंश अनूप भो हरचंद अति विख्यात ॥ आगरे रहि गोपचल में रहो ता सुत बीर । पुत्र जनमें सात ताके महाभट गंभीर ॥ कृष्णचंद (५) उदारचंद जो रूपचंद सुभाइ । बुधचंद प्रकाश चौथो चंद भे सुखदाइ ॥ देवचंद्रप्रबोध संभृत (६) चंद ताको नाम । भयो सत्तो नाम सूरज चंद मंद निकाम ॥ सो समर करि साहि सेवक गये (७) विधिक लोक । रहो सूरजचंद दृग ते हीन भर वर शोक ॥ परो कूप पुकार काहु सुनी ना संसार । सातयें दिन आइ यदुपति कियो आप उधार ॥ दियो (८) चख दै कही शिशु सुनु मांग वर जो चाइ । हों कहों प्रभु भगत चाहत शत्रु नाश सुभाइ ॥ दूसरो ना रूप देखों देखि राधा श्याम । सुनत करुणासिंधु भाषी एवमस्तु सुधाम ॥ प्रबल छद छिन विप्र कुलते शत्रु ह्वैहै बास । अपित (९) बुद्धि बिचारि विद्यामान माने मास ॥ नाम राखे मोर सूरजदास, सूर, सु श्याम । भये अंतर्धान बीते पाछली निशि याम ॥ मोहि पनसो (१०) इहै ब्रजकी बसे सुख चित थाप । थपि (११) गोसाईं करी मेरी आठ मध्ये छाप ॥ विप्र प्रथजगात को है भाव भूर निकाम । सूरहै नँदनंदजूको लयो मोल गुलाम ॥ ११८ ॥

अर्थ सुगम—सूर आपन वंश वर्णत है ॥ ११८ ॥

यही नहीं सिद्ध करती कि चंद कवि पृथ्वीराजजीके समयमें हुआ है था परन्तु रायसेमें लिखे कतिपय और वृत्तान्त भी कुछ फेरफारके साथ सिद्ध करता है ।

(मजर रेवर्टी साहबकृत तवकात नासरी पृष्ठ ४८६)

हिन्दू लोग एक भिन्न वृत्तांत लिखते हैं कि उसीको अब्बुलफज़लने और जम्मूकी तवारीख वालेने भी थोडेसे फरकके साथ वर्णन कियाहै—

यद्यपि फारसी इतिहासवेत्ता लिखते हैं किरायपिथौरा तलावरी (तराई) पर लडाई में मारा गया और मुईजुद्दीन दमयकमें एक खोखरके हाथसे मारा गया कि जो इसी कामके लिये उतारू हो रहा था, और ऐसेही वृत्तान्तका अवलंब तवकात और अकबरी और फरिश्ता के ग्रंथकर्त्ताओंने किया है, तथापि हिन्दू भटोंके जुबानी वर्णनसे कि जो प्रत्येक नामांकित शाखेकी ख्यातोंके भंडार हैं, और जो पीढियां तक कंठस्थ वृत्तान्त एक दूसरे को उपदेश करते आये हैं, यह वर्णन किया गयाहै कि राव पिथौराके लडाईमें कैदहोजाने और गज़नीको लें गये पीछे एक चंद जिसे कोई चांदा करके भी लिखते हैं कि जो राय पिथौराका स्तुतिपाठक और विश्वासी सहचर था और कोई कोई ग्रंथकर्त्ता उसे राय पिथौराका कविराज करके भी लिखतेहैं, वह अपने आपदाग्रस्त स्वामीकी खबर लेनेको गज़नी पहुँचा वह अपने अच्छे प्रयत्नोंके बलसे प्रबंध कर सुलतान मुईजुद्दीनकी सेवामें प्राप्त हुआ और बंदीगृहमें राय पिथौराके साथ बातचीत करनेमें भी सफल हुआ. यह दोनों किसी एक युक्ति पर सम्मत हुए और एक दिन चंदने अपने छलबलके द्वारा सुलतानके मनमें राय पिथौराकी बाणविद्यामें परमकुशलता देखनेकी नितान्त इच्छा उत्पन्न की और उसको चंदाने इतनी सराही कि सुलतानका मन उसे देखे बिना न रहने लगा. निदान बँधुआ राजा सन्मुख लाया गया और उससे उसकी बाण विद्याकी परमकुशलता दिखानेकी बिनती की गई । उसके हाथमें एक धनुष और बाण दिये गये । उसने अपनी स्वीकृत युक्तिके अनुसार जो निशाना सुलतानने नियत कराया था उसे छोड कर खास सुलतानके ही बाण मारा कि वह वहीं मरगया और सुलतानके पासवालोंने राय पिथौरा और चंदाको काटकर टुकडे टुकडे कर डाले ।

जम्मूकी तवारीखवाला लिखता है कि राय पिथौरा अंधाकर (देखो टिप्पण १ पृष्ठ ४६६) दिया गया था और जब वह बंदीगृह से बाहर लाया गया और उसके निज धनुष और बाण उसे दिये गये । यद्यपि वह अंधाथा तथापि उसने बाण चढाकर और साध कर सुलतानके शब्दके अनुसंधान और चंदा की सूचनाके अनुसार सीधा ऐसा मारा कि वह सुलतानके जाकर लगा । बाकी का वृत्तान्त तदनुसार ही है ।

इति श्रीपदकूट सूरदासटीका संयुक्त संपूर्णम् ।

टिप्पणी—सरदार कविने कईएक स्थान इस भजन में पाठांतर किया है वह अंक देकर नीचे लिखा है ।

(१) शुभमें (२) पृथ्वीराज (३) रंतभौर (४) सुखअवदात (५) कृतचंद (६) प्रथम (७) साहिसे सब (८) दिव्य (९) अखिल (१०) मनसा (११) श्रीसूरदासके विषयमें ग्रंथके अन्त में लिखा जायगा ।

एकसौ अठारह पदकी टिप्पणीमें लिखा है कि ग्रंथके अंतमें सूरदासके विषयमें लिखा जायगा अतएव यहाँ इस समय मुझे जहाँतक सूरदासके विषयमें लेख मिले हैं उन सबोंको यहाँ प्रकाश करताहूं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जीने चरितावली और सूरशतक पूर्वार्द्धमें जो लिखा है उसे छोड देताहूं। सूरदासके समयसे अनेक कवियोंका समय निर्णय होगा।

रामरसिकावली–महाराज रघुराजसिंहकृतस–

दोहा–सूरदासजी जग विदित, श्री उद्धव अवतार। कथा पुराणांतर कथित, वर्णन करों उदार ॥१॥

चौपाई–जब मथुरामें श्रीनँदलाला। गोपिनको विज्ञान विशाला ॥ १ ॥
सादर करन हेतु उपदेशू। पठयो उद्धव गोकुल देशू ॥ २ ॥
तहँ गोपिन पर प्रेम परेषी। उद्धव बोले ज्ञान विशेषी ॥ ३ ॥
धारि भक्तिहरि निज उरमाहीं। आवत भे पुर मथुरा काहीं ॥ ४ ॥
राखिं भाव उर गोपिन केरो। लख्यो संग हरि चरित घनेरो ॥ ५ ॥
तब उद्धवको श्री यदुराया। बदरीनाथ कान्ह पठवाया ॥ ६ ॥
यह सुबासना ऊधवके तब। रही आय ब्रज एक बार कब ॥ ७ ॥
गोपिनको अनूप अनुरागा। हरिलीला जो ब्रज सब जागा ॥ ८ ॥
सो रसनाते वर्णन करहूं। बर संतोष हियेपर धरहूं ॥ ९ ॥
कीन्हें यही बासना काही। उद्धव प्रगट भये कलि माहीं ॥१०॥
सूरदासते संत शिरोमणि। विरचन सवालाख पदको गुणि॥११॥
करि संकल्प मुदित मनसामें। हरि लीला विभूति हू तामें ॥१२॥

दोहा–वरण्यो तिमि गोपीनको, जो यथार्थ अनुराग। विरचि कृष्णपद सूर बदि, सहस पचीस अदाग ॥
पूरण कीन्हों सूर प्रण,सूरश्याम जहँ होय।सो पद विरच्यो कृष्णही,जानि लेहु सब कोय ॥३॥
महाघोर कलिकाल महँ, जन्म लेव दुख दूर। दृग विकार गुणि याहिते, सूरदास भे सूर॥४॥

चौपाई–जन्महिते हैं नैन विहीना। दिव्य दृष्टि देखिहिं सुखभीना ॥ १ ॥
लीन परीक्षा सो तेहि नारी। एक समै अस वचन उचारी ॥ २ ॥
प्रिय मोहिं सकल ग्रामकी वामा। मोसों कहहिं वचन असि वामा ॥ ३ ॥
तू केहि देखन करहि शृँगारा। तेरो पति तो अंध अपारा ॥ ४ ॥
सुनिकैं सूर कही यह वानी। आशु शृँगार भली बिधि ठानी ॥ ५ ॥
बहु इस्त्रिनको लै निज संगा। बैठहु आइ इहां सउमंगा ॥ ६ ॥
भूषण तुव बिगरो जो होई। देहैं हम बताइ सत सोई ॥ ७ ॥
सुनि यह सूरदासकी नारी। सब भूषण निज अंग सँवारी ॥ ८ ॥
बेंदी देत भये नहिं भाला। सूर बोलायो ढिग तब बाला ॥ ९ ॥
तिय भूषन सब अंग निहारी। सूरदास बोल्यो सुपधारी ॥ १० ॥
बंदी भाल दियो क्यों नांही। लखि प्रभाव यह सूर तहाँही ॥ ११ ॥
कीन्हें सकल लोग जय शोरा। ख्यात बात भै जग सब ठोरा ॥ १२ ॥

दो०—ह्वै विरक्त संसारते, दिव्यदृष्टि हरि ध्यान। सूरदास करते रहे, निशिदिन विदित जहान ॥ १ ॥
सूरदास इतिहास बहु, परचै अहैं अनेक। जानि लेहु सब संतजन कहौं नेक सविवेक ॥ २ ॥

कवित्त—कविकुल कोक कंज पाइकै किरिनि काव्य विकसे चिनोदित ह्वै नेरे और दूरके। सूखिगो अज्ञानपंक मन्दभो मयंक मोह विषय विकार अन्धकार मिटे कूरके ॥ हरिकी विमुखताइ रजनी पराई गई सूक भये कुकवि उलूक रस झूरके। छायो तेज पुहुमिमें रघुराज रूर हरिजन जीव मूर सूर उदय होत सूरके ॥ १ ॥ मतिराम* (१) भूषण (२) बिहारी (३) नीलकंठ (४) गंग (५) बेनी (६) शंभु (७) तोप (८) चिंतामणि (९) कालिदास (१०) की। ठाकुर (११) नेवाज (१२) सेनापति (१३) शुकदेव (१४) देव (१५) पजन (१६) घनआनंद (१७) घनश्यामदास (१८) की ॥ सुंदर (१९) मुरारि (२०) बोधा (२१) श्रीपति हूं (२२) दयानिधि (२३) युगल (२४) कविंद (२५) त्योंगोविंद (२६) केशवदास (२७) की। भनै रघुराज और कविन अनूठी उक्ति मोहिं लगी जूंठी जानि जूंठी सूरदास की ॥ २ ॥ अखिल अनूठी उक्ति युक्ति नहिं झूठी नेकु सुधाहूं ते सरस सरस को सुनावतो। उद्धत विराग भाग सहित अनेक राग हरिको अदाग अनुराग को सिखावतो ॥ जगत उजागर अमलपद आगर सु नट नागर ध्याय सूरसागर को गावतो। भाषै रघुराज राधा माधवको रास रस कौन प्रगटावतो जो सूर नहिं आवतो ॥ ३ ॥ साह सुन्यो सुरनसे वेगही बुलायो दिल्ली पूछ्यो कौन हो तू सूर कह्यो पूंछो वेटीसों। साह कह्यो जानो कैसे सूर कह्यो जंघ तिल साह पुछवायो सो तुरत एक चेटीसों ॥ कन्या कह्यो कहत तुरंत ही शरीर छूटी हठपरें कहि तनु तजि हरि भेटीसों। भनै रघुराज साह सूर पद शिरनाय पूछ हरिदास मोरि भवभीत मेटीसों ॥ ४ ॥ गोकुल में रास होत राधा जूने मान कीन्हों हरि मान मोरिबे को उद्धवे पठायो है। जानि गुरुमान कह्यो नेसुक कटुक बैन दीनी वृषभानुसुता शाप को पछायो है ॥ धारिये मनुज तनु तारिये जगत जाइ सकल सुनाइये जो रास रस भायो है। भनै रघुराज सोई उद्धव अवनिमें आइ रसिक शिरोमणि सो सूर कहवायो है ॥ ५ ॥

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'शिवसिंहसरोज' पढनेके समय में जिन जिन कवियोंके विषय में कुछ लिखा है उनमें अकबर और गंगके इतिहास पर अपनी राय नाम मात्रको लिखी है उसे नीचे प्रकाश करता हूं।

अकबर।

अकबर बादशाह दिल्ली सं० १५८४ में हुए इनके हालात में अकबरनामा १ आईन अकबरी २ तबकाहत अकबरी ३ तारीख अबदुल्कादिर बदाऊनी ४ इत्यादि बडी बडी किताबें लिखी गई हैं जिनसे इस महाप्रतापी बादशाहका जीवनचरित्र साफ साफ प्रगट होता है यहां केवल हमको उनकी कविता का वर्णन करना अवश्य है सो हमको कोई ग्रंथ इनका नहीं मिला दो चार कवित्त जो मिले हैं सो हमने लिखाहै- जहांगीर बादशाहने अपने जीवनचरित्रकी किताब तुजुक जहांगीरीमें लिखाहै कि अकबर बादशाह कुछ पढे लिखे न थे परंतु मौलाना अबदुल्कादिरकी किताब से प्रगट है कि अकबर शाह संस्कृत महाभारतको एक रात आपही उल्था कराने बैठे और सुल्तान मोहम्मद थानेसरी और खुदमौलाना बदायूनी और शेख फैज़ीने जहां जहां कुछ आशय छोड दियाथा उसे

* अंकवाले कवियोंका वर्णन आगे किया जायगा।

फिर तर्जुमा होनेको हुकुम दिया इनके समय में नरहरि १ करन २ हाल ३ खानखाना ४ बीरबर ५ गंग ६ इत्यादि बडे बडे कवि हुए हैं परंतु खास जो कवि नौकर थे उनके नाम इस सवैसे प्रगट होंगे।
सवैया-पूपी प्रसिद्ध पुरंदर ब्रह्म सुधारस अमृत अमृत बानी । गोकुल गोप गुपाल गणेश गुणी गुणसागर गंग सु ज्ञानी ॥ जोध जगन्नज में जगदीश जगामग जैत जगत है जानी । कोर अकब्बर सैन कथी एतने मिलिकै कविता जु बखानी ॥ १ ॥

श्रीगोसाई तुलसीदास तौ दरबार में हाजिर नहीं हुए* सूरदास जी औ बाबा रामदास उन के पिता गानवालोंमें नौकर थे ÷ जैसा कि आईन अकबरी में लिखाहै केशवदास जी उस समय में इनके मंत्री श्रीराजा बीरबरके दरबार में हाजिर हुए थे जब इन्द्रजीत राजा उडछा बुंदेलखंडी प्रवीन राइ पातुरीके लिये बादशाही कोपमें था।
दोहा-जाको यश है जगतमें, जगत सराहे जाहि । ताको जीवन सफलहै, कहत अकब्बर शाहि॥१॥

गंग ।

गंगकवि (गंगाप्रसाद ब्राह्मण एकनौर जिला इटावा अथवा बंदीजन दिल्लीवाल) सं० १५९९में हुए. गंगकविको हम सुनते रहे कि दिल्लीके बंदीजन हैं और अकबर बादशाहके यहां थे जैसा किसी कविने बंदीजनोंकी प्रशंसा में यह कवित्त लिखा है ।
कवित्त-प्रथम विधाताते × प्रगट भये बंदी तन पुनि पृथु यज्ञ ते प्रकाश सरसात है ।
मानै सूत शौनकन सुनत पुराण रहै यशको बखाने महासुख बरसात है ॥
चंद्र चौहानके केदार गोरी साह जूके गंग अकबरके बखानै गुण गात है ।
काग कैसे मास अजनास धन भाटनको लूटि धरै जाको खरा खोज मिटि जातहै ॥ १ ॥

परंतु अब जो हमने जांचा तौ विदित हुआ कि गंग कबि एकनौर गांउ जिला इटावाके ब्राह्मण थे जब गंग मरगये हैं और जैनखाँ हाकिमने एकनौर में कछु जुलुम किया तब गंगजीके पुत्रने जहांगीर शाहके यहाँ यह कवित्त अरजीके तौरपर दिया है । जैनखां जुनारदार मारे एक नौरके, । जुनारदार फारसीमें जनेऊ रखनेवालेका नामहै लेकिन् खास ब्राह्मणहीको जुनारदार कहते हैं खैर जो हो हम को इस बातमें बहुत लिखनेसे कुछ मतलब नहीं गंगजी महान् कविथे राजा बीरबलने गंगको इस छप्पयमें (भ्रमर भ्रमत) एक लक्ष रुपया इनाम दिया इसी प्रकारसे अकबर, जहाँगीर, बीरबर खानखाना, मानसिंह सवाई इत्यादि सबोंने गंगको बहुत दान मान दियाहै ।

भक्तविनोद-कवि मियांसिंह कृतसेः-

दो०-करन विमल मन हरन तम,दमन त्रिविध दुख दोष।भक्ति महातम करहुँकल,कथन ललितप्रदमोष
नाशन कुमतिकृतांत भय, भासन भानु प्रबोध। सुमति विकासन भक्तजन, दलन मदनमदक्रोध
चौपाई-कृष्ण देव जग जनन उधारा । मधुरा लीन ललित अवतारा ।
किए कृपालु चरित जस चारू । सो मनहरन विदित संसारू ॥ १ ॥
तब यादव इक भक्त प्रवीना । कृष्ण सरोज चरण मन लीना ।
सूर नयन बर वंश उजागर । उपज्यो भक्त सुष्ठ गुणसागर ॥ २ ॥

* श्रीतुलसीदासजीका काल यह नहीं है । हरिश्चंद ÷ श्रीसूरदास कहीं नौकर न हुए ।
हरिश्चंद्र सूरदास जीके पद से मिलाना । हरिश्चंद्र ।

सखा पुनीत मीत व्रतधारी। मन वच कर्म कृष्ण हितकारी।
जब मथुरा तजि करत पयाना। द्वारावती आय भगवाना॥ ३॥
ते किमि चंचरीक बड भागी। सकहिं सरोज चरण प्रभु त्यागी।
भक्ति प्रेम कल नवल उमंगा। आयो दीनदयालु कर संगा॥ ४॥
यद्यपि आनँद भवन प्रसादू। ताके तहाँ सुलभ सब साधू।
पै निवास वृंदावन चारू। बिहरन कुंज गलिन मनहारू॥ ५॥
कृष्ण संग नित नवल विलासा। सो न पलक कल बिसरत तासा।
तन मथुरा बृंदावन मनुआं। लग्यो रहत निशि दिवस अननुआं॥ ६॥
करि स्मरन कल कुंजन शोभा। होत प्रबल जिय यादव छोभा।
प्रभु सन बार बार अस बरनी। नम्रत बिनय दिवस निशि करनी॥ ७॥
कृपानिकेत जनन सुखदाई। तुव सन कवन दिवस शुभ जाई।
शुचि भंडीर विपिन मनहरना। रविजा कुंज स नख नग धरना॥ ८॥
आन ललित लावण्य तनीके। देहु देव परमप्रिय जीके।
जबलगि जियन नाथ संसारा। सो प्रमोद किमि बिसरन हारा॥ ९॥
अस प्रकार उतकंठित रहना। वृंदाविपिन अहिर निशि कहना।
काल पाय तव भक्त उबारा। लिये संग यादव परिवारा॥ १०॥

दो०—करिकौतुक करुणायतन, निज विकुंठ कलधाम। गए गमनकरि भवनमुद, रमारमन अभिराम॥

चौपाई—ते यादव हरिभक्त सुजाना। तहँपिजोरि युगल निज पाना।
वृन्दावन दरशन अनुरागा। नम्रत विनय करन अस लागा॥ १॥
चलन होहिं तुव दीन सनेहू। कब कृपालु बृन्दावन तेहू।
सो प्ररण्य कल कुंज सुहाए। दीननाथ मोरे मनभाए॥ २॥
बिसरत सो न भक्त सुखदाई। एकबार प्रभु देहु दिखाई।
तासु कथन सुनि त्रिभुवनराई। बोले बदन वचन मुसकाई॥ ३॥
सुनहु मीत पूरवत ताहीं। मोर गमन बृन्दावन माहीं।
अब न होहिं पय भक्त सुजाना। मैं परिवार सहित निज नाना॥ ४॥
कुंज कुंज राधा युत चारू। तहाँ निवास करहुँ मन हारू।
ते मथुरा बृन्दावन जोहीं। जन बैकुंठ अधिक प्रिय मोहीं॥ ५॥
जबते तज्यो मनोहर नगरी। कलित कुंज लीला निज सगरी।
तबते यद्यपि मोर सुहावा। इह बैकुंठ अखिल सुख छावा॥ ६॥
तद्यपि तिहि समान सुखदाई। उपज्यो नहिं न तनक सुखभाई।
जिमि वाराणशि शंकर काहीं। विदित विश्व प्रिय मानस माहीं॥ ७॥
तजत न तासु देव त्रिपुरारी। तिमि मथुरा मोहिं प्राणन प्यारी।
अजहुँ स्मरण होत मन भाई। ललित बाललीला सुखदाई॥ ८॥

दो०—मृतिका भक्षण पूतना, शकट विभंजन मित्र। अर्जुन जयमल मदहरन, अघ बक बदन चरित्र॥ १॥
कालीपद क्षय करन पुनि, मोह नलन भवदेन। बृंदावन बंसीबजन, चरन चारु वरवेन॥ २॥

धेनुक वधन प्रलंब पुनि, तृणावर्त वश काल। बृंदावन रक्षाकरन, नग नख धरण रसाल ॥३॥
रचन रास लीलादि पुनि, वचन सखन सखिसंग।केसि विध्वंसन नंदकल,त्रातन हृदय उमंग ॥
दावानल कर शमन पुनि, ग्वालन सन मन चाउ। वन वन विहरन सजन सुन, हनन कंसरिपु राउ॥५॥
जननि जनक बंधन मुकत, चरित चारु इत्यादि। जब जब होत स्मरण इह, उपजत हृदय दुखादि॥

चौपाई—सदा रहत मानस उतकंठा। तजि निज रुचिर धाम वैकुंठा।
पुनि कब वपुष पूर्ववत धारी। अद्भुत करहुँ चरित मनहारी ॥ १ ॥
जे जन भक्ति निरत बड भागे। मोर प्रेम पावन रस पागे।
हृदय कुतर्क कपट सब खोई। मोर रुचिर लीला कृत जोई ॥ २ ॥
यथा विधान रास विरचाई। गायन श्रवण करहिं मन लाई।
सो साक्षातविश्व शुभ चारी। मोर स्वरूप भक्त व्रत धारी ॥ ३ ॥
मथुरा धारि जन्म त्रिय जोई। मोर ललित उत्सव पर होई।
सो मोहिं यशुमति मातु समाना। सुनहु आन अब भक्त सुजाना ॥ ४ ॥
जे नर मोर जन्म दिन लेखी। धारि रुचिर व्रत भक्ति विशेषी।
बालरूप मम पूजन करहीं। आवागमन सहज श्रम हरहीं ॥ ५ ॥
करि प्रवेश मथुरापुरि माहीं। जो जन करहिं रटन मोहिं काहीं।
भक्त मोर सो प्राणन प्यारू। ताकर तरन सुमन संभारू ॥ ६ ॥
अब तोहिं जोपि भक्तबडभागा। मथुरा गमन प्रीति अनुरागा।
तो अब सुनहु कथन कल मोरा। संतत भक्त सृष्ट हित तोरा ॥ ७ ॥
जेहि ते तहां सजन तुव जाई। सोउ लेहु सुख कीरति पाई।
अस कहि कृष्ण दैव भगवाना। लागे तासु प्रबोधन ज्ञाना ॥ ८ ॥
कलीकाल सन्ध्या अवसाना। मथुरा प्रांत भक्त गुणखाना।
सुभ्रत विप्र वंश उपजाई। मथुरा मोर ललित पुर आई ॥ ९ ॥
मोर जन्म लीला गत पारू। करत करत गायन व्रत धारू।
सोउ अखंड सुशय सुख जोहीं। होहिं भक्तजन प्रापत तोहीं ॥ १० ॥
बहुरि मोर लीला मनभायन। प्राकृत वदन सफुट जब गायन।
कीन तुमहुँ संगीत प्रकारू। सुभ्रत ललित प्रेम रस सारू ॥ ११ ॥
सुनत लोक कलिकाल मँझारा। हुइहै भक्ति निरत संसारा।
बढहि मोर चरणन अनुरागा। उधरहिं तुव प्रसाद बड भागा ॥ १२ ॥
पै तुव जन्म अन्ध दृग हीना। जननि जनक अस देखि प्रवीना।

दोहा—पालहिं जन समान कछु, सुत सनेह वश तोहिं। आन शंक बांधव सुहृद, सो न करहिं हितकोइ॥

चौपाई—केवल जननि करहिं तुम सेवा। अस कहि बदन भक्त द्रुम देवा।
भए बिराम कृष्ण घन बरना। तब प्रणाम करि यादव चरना ॥ १ ॥
कलि सन्ध्या कर अंत प्रवीना। सोचन लग्यो भक्ति मन लीना।
सो जब समय आय नियराना। तजि विकुंठ यादव गुणखाना ॥ २ ॥
मथुरा प्रांत विप्र वर गेहा। भा उत्पन्न भक्त हरि नेहा।

जन्म अंध दृग ज्योति विहीना। जननि जनक कछु हर्ष न कीना॥ ३॥
रहे मौन बांधव समुदाई। करहिं प्रीति केवल इक माई।
अष्ट वर्ष कर जानि सुहावा। यज्ञोपवीत जनक तब पावा॥ ४॥
भयो प्रसिद्ध नगर अभिरामा। सूरदास ताकर अस नामा।
अवसर एक मातु पितु संगा। आन लोक पुर प्रेम उमंगा॥ ५॥
कृष्ण जन्म पुरि दरशनलागी। आए सकल सदन निज त्यागी।
करि यात्रा विधिवत अनुरागे। जब निज सदन चलन सब लागे॥ ६॥
सूरदास तब कहत उचारी। मैं अब इहां सदन नगधारी।
कछुदिनकरहुँललितनिजवासा। कृष्णप्रसाद विगत श्रम त्रासा॥ ७॥
तुव निज गवहुँ सदनशुभ काहीं। चिंता मोर करहु कछु नाहीं।
सुनिअसजननिजनकतहिबानी। सुत सनेह निज मानसबानी॥ ८॥
रुदन करत अस वचन उचारे। बसत अंध दृग युगल तुम्हारे।
करहिं कवन भोजन पट दाना। शिशु निदान तुव देश विराना॥ ९॥
कसतजिजाहि सुवनपितु माता। काहु न देखि परत तुव त्राता।
सुनिअसजननिजनकमुखबानी। कृष्ण भरोस सूर जिय मानी॥ १०॥

दो०—बोल्यो अभय प्रसन्न मन,बदनवचन सुखदान।तुवजियकरहुनसोच कछु,मोहिंविदेश असजान॥

चौपाई—मोरे कृष्ण देव भगवाना। करनहार कल पालन त्राना।
अन्ध दीन बलहीन न कोहीं। पोपन करत दैव प्रभु सोहीं॥ १॥
शरन चरन दुख हरन करीके। परे कोटि अस मोर सरीके।
दीनबन्धु जन दीननपाला। दीननाथ प्रभु दीनदयाला॥ २॥
दीनहरन भय दीन उबारन। दीन सुखद दुख दीन निवारन।
अस प्रकार जब दीन सहाए। विदित पुराण वेद श्रुति गाए॥ ३॥
मोरे कसन होहिं तब भय्या। जानि दीन दृग हीन सहय्या।
तब अस सुनत वचन वर ताहू। साधु जठर दाया वश काहू॥ ४॥
बोल्यो सूर मातु पितु काहीं। तुव न करहु चिन्ता जिय माहीं।
हर्षि जाहु सु श्रम निज गेहू। तुव दृग हीन बाल वर एहू॥ ५॥
मोरे बसहिं सदन सुख मानी। अस कहि गहत संत शुभ पानी।
चल्यो प्रसन्न लेत कल भवने। उत पितु मातु सदन निज गवने॥ ६॥
साधु सनेह प्रीति अवलोकी। भई प्रसन्न मातु गत शोकी।
सूरदास मानस अनुरागा। प्रमुदित बसन संत गृह लागा॥ ७॥
पूरब चरित कृष्ण कल गायन। रह्यो सुनत सादर मनभायन।
आपु प्रेम युत भक्ति उमंगा। वैष्णव संत जनन कर संगा॥ ८॥
नृत्य गीत गायन करि चारू। कृष्ण चरित्र विमल मन हारू।
प्रभु अद्भुत लीला जिमि कीनी। आदि उपांत श्रवन करि लीनी॥ ९॥
तासु प्रसाद कृष्ण भगवाना। सो पूरब संचित निज ज्ञाना।

अनुभव भयो विदित सब भास्यो। दैवचरित लीलादि बिलास्यो ॥ १० ॥
दो०—भयो छकत उनमत्तवत, प्रेमासवकरिपान। कृष्णचरित पदनवल नित, निज विरचितरुचिमान॥१॥
चौपाई—अस प्रकार कृत नवल सुहाई। भक्त सृष्ट कल कुंजन जाई।
करि प्रति दिवस मधुर स्वर गायन। भयो कृष्ण पद भक्ति परायन ॥ १ ॥
मथुरा निवसि सुयश सुख लय्यो। सूर विदित सब देशन भय्यो।
निर्मित तास ललित पद पावन। संसृति गाय लोक मनभावन ॥ २ ॥
वैष्णव भए भक्ति रसनागर। भक्त प्रधान सुयश धन सागर।
सूरदास हरि गुण गण गाते। जहँ जहँ फिरहिं भक्त मदमाते ॥ ३ ॥
तहँ तहँ भक्ति विवश अनुरागे। पाछे फिरहिं तासु प्रभुलागे।
सूर चरित पाछिल भगवाना। ग्वाल केलि वन धेनु चराना ॥ ४ ॥
निज अनुभव इत्यादि सुहाए। देखत रहत भक्ति सरसाए।
ब्रह्मानंद मगन दिन राती। प्रेम भक्ति कछु कही न जाती ॥ ५ ॥
दो०—एक दिवस मारगचलत, विधुन कूपकल कोय। दृगविहीन चीन्हयो न कछु, लग्यो भक्तच्युत होय
चौपाई—तत्र भगवान भक्तः रखवारे। अद्भुत गोप वेष निजधारे ॥
गहत करन कर तुरत मुरारी। भक्त कूप च्युत लीन निवारी ॥ १ ॥
करि कर हरण त्रास कर केरा। सूरस परश लेत जिय हेरा ॥
इहकर जानि परत नर नाहीं। करि बिचार करुणानिधि काहीं ॥ २ ॥
करते लीन पकरि कर संगा। कहि स वचन मन मोद उमंगा ॥
अब न तजहुँ बिन साँच बखाने। तब भगवान वदन मुसकाने ॥ ३ ॥
सुर करन कर करि बरजोरा। चले छुडाइ भक्त चितचोरा ॥
अस जिय जानि दैव चतुराई। ब्रह्मानन्द सूर सुखपाई ॥ ४ ॥
मानत भयो भूरि निज भागा। करसों कर कृपालु जब लागा ॥
गदगद गिरा प्रेम दृग वारी। बोल्यो बदन बचन मनहारी ॥ ५ ॥
बंदहुँ बार बार प्रभु तोहीं। जो अस निबल जानि जिय मोहीं ॥
केशी कंस असुर मद गंजा। लीन छुडाय सबल कर कंजा ॥ ६ ॥
दो०—काह भयो करते छुटे, कर्णधार भवसिंधु। मनते छूटन कठिन जन, भक्त कुमुद उर इंदु ॥१॥
अबतो बलकर तोरिकर, चले निबल कर मोहिं। पै मनते छूटों न जब, तब देखों प्रभु तोहिं॥२॥
चौपाई—सुनि कटाक्ष मय वचन सुहाए। सूरदास कर प्रभु मनभाए ॥
हर्षे दीनदयालु भगवाना। कीन स्परस दृगन तिहि पाना ॥ १ ॥
तत्क्षण अंग नयन युग तासा। असल विमल कल ज्योतिप्रकासा ॥
पाय दिप्ति अस सूर सुजाना। सन्मुख कृपासिंधु भगवाना ॥ २ ॥
कलित कंजलोचन घनवरना। आनन हृदय भक्ततमहरना ॥
चारु लिलाट खोर श्रीखंडन। माल जयंति जनन मनमंडन ॥ ३ ॥
यज्ञोपवीत पीतपट राजा। निज छवि कोटि मदनमद लाजा ॥
चितवनि चारु मुनिन मनमोहन। धृत गोपाल वेष बर सोहन ॥ ४ ॥

सूरति विमल बाल बल भय्या। निरत प्रवर परचारन गय्या॥
सूर विलोकि रूप मनहरना। परचो दंडवत चरणन धरना॥ ५॥
सुमिरि कृष्ण जब शीश उठाया। कीन तुरंत मुग्ध प्रभु माया॥
जानत भयो सूर मनमाहीं। गोप बाल नँदनंदन काहीं॥ ६॥
लग्यो बहुरि अस वचन उचारन। तुमहुँ कूप च्युत कीन निवारन॥
भयो सहाय अंध ताकि मोरा। अहो कीन उपकार न थोरा॥ ७॥
बंदहु बार बार अब तोहीं। कीन्ह्यो कूप त्रास गत मोहीं॥
अब वृतांत निज देहु सुनावा। केहि ते आव कवन कित जावा॥८॥
मोह विवश अस तासु निहारी। बोले गोप वेष गिरिधारी॥
मथुरा बसहुँ गोपसुत भय्या। आवा विपिन चरन हितगय्या॥९॥
तोरे देखि भक्त दृग हीना। कूप उहाँ निवरन चुत कीना॥
अब तुमजाहु सदनसुखमाना। मैं इत करहुँ विपिन निज प्याना॥१०॥

दो०–अस कहिबत्सलभक्त प्रभु,कृष्णदलनदुखक्रूर। द्रुमन ओट करुनायतन,गए कछुकजबदूर॥१॥

चौपाई–तब दर्शन हित सूर सुजाना। पाछिल चल्यो वेग अकुलाना॥
गवन्यो कहाँ बाल मृदु अंगा। हरण ललित छवि कोटि अनंगा॥ १॥
इत उत फिरहिं विथत मनमाहीं। आवत दृष्टि बाल प्रभु नाहीं॥
अतिशय क्लेश सूर तब पावा। पूँछत पथिक देखि जित आवा॥ २॥
को अस बरन श्याम मृदु चारू। वेत्रपानि गय्यन चरवारू॥
कामर कन्ध माल बन सोहा। देखा तुमहुँ बाल मन मोहा॥ ३॥
सुनतहि कथन पथिक इहि भाँती। इह कस कहत कवन तोहि भाँती॥
इहाँ न काउ धेनु वनचारी। जाहु सजन निज सदन सिधारी॥ ४॥
सूर सुनत अस पथिक बखाना। आगल चल्यो विपिन बिसमाना॥
खोजत नील जलधवत बरना। गोपबाल कानन मनहरना॥ ५॥
भ्रमत भ्रमत दारुण श्रम पाया। बैठ्यो अंत व्यथित द्रुमछाया॥
तोलो ढुरचो सूर निशि छायो। भक्त सूर व्याकुल उठि धायो॥ ६॥
जहँ तहँ लग्यो भ्रमन वन माहीं। खोजत गोपबाल मृदुकाहीं॥
गति अनन्य अस भक्त जुडाना। भा तद्रूप कृष्ण भगवाना॥ ७॥
पावन भक्ति प्रीति मनमाहीं। ताजि न जाहि कानन पुर काहीं॥
तब निशि स्वप्न रूप मृदु सोई। देखे दिवस गोपसुत जोई॥ ८॥
मंदहास युत भक्त सहय्या। बोले बदन वचन सुखदय्या॥
इहाँ न भक्त गोपसुत कोई। मैंहु कीन कौतुक कल सोई॥ ९॥
कीन्ह्यो तुमहिं कूप चुत वारन। बनत गोप बन गय्यन चारन॥
ज्योति विमल तुव दृगन प्रकासा। भक्त सृष्ट सब मोर विलासा॥ १०॥
तुव नयनन इन लीन निहारी। मोर स्वरूप भक्त व्रतधारी॥
तुव हित देन दरश मन हारू। इह मैं कीन चेष्ट निज चारू॥ ११॥

दो०-अब मथुरा तुव गवन करि, मोरचरित गुणगान। करि गायन भवपूर्ववत, विचरहु अभयसुजान॥१॥
चौपाई-सुनि प्रभुवचन सुखद अभिरामा। सूर दंडवत करत प्रणामा॥
बोल्यो आज धन्य जगदीना। जेहिइन दृगन दरश प्रभु कीना१॥
मुनि योगिन सुर दुर्लभ जोई। मोरे सुलभ आज जग सोई॥
अब न दैव कछु संसृति कामा। एक स्मरण तोर अभिरामा॥२॥
मोरे हृदय लालसा छाई। बिसरहिं सो न भक्त सुखदाई॥
अरु तुम्हार माया बलवाना। करहिं न मोहिं मुग्ध भगवाना॥३॥
हे कृपालु कल कमल विलोचन। हृदय भक्तजन सोच विमोचन॥
जिन नयनन अस रूप तुम्हारा। मैं प्रत्यक्ष प्रभु लीन निहारा॥४॥
तिनसन जगत बिलोकन काहीं। दीनदयालु मोर रुचि नाहीं॥
ताते करहु पूर्ववत मोरे। दृग विहीन बन्दहुँ प्रभु तोरे॥५॥
तुव स्वरूप नित दीन सनेहू। देखत रहहुँ दिवसनिशि एहू॥
करि अस बिनय वदन अनुरागा। भयो विराम सूर बडभागा॥६॥
बोले कृष्ण भक्त चित चोरा। सूर कथन सब सन्तत तोरा॥
होहिं सत्य संशय कछु नाहीं। भाषि वदन अस त्रिभुवन साईं॥७॥
भये लुप्त प्रभु भक्त उवारयो। उठे सूर जनु स्वप्न विचारयो॥
युगल अंध लोचन निज पायो। प्रभु पद शीश मनहिं मनभायो॥८॥
निज कल्पित पद पावन चारू। लग्यो करन गायन मन हारू॥
उदय अरुण तजि विपिन सिधाए। यमुना तीर भक्त बर आए॥९॥
करि स्नान गुण गण प्रभु गाते। मथुरा आय भक्ति मद माते॥
भजन प्रभाव देखि अधिकाई। सादर करहिं लोक सेवकाई॥१०॥
दो०-सबकर हित जिय मानिनिज, द्विज विरक्त संसार। रटन कृष्ण गुणगण निरत, सूर भक्त व्रतधार॥
चौपाई-अवसर एक मलेक्ष सुहावा। विदित दिलीश लोक सब गावा॥
संयुत भक्ति प्रीति हरषाए। तासु सूर जन लीन बुलाए॥१॥
आवत देखि भक्त अभिरामा। शाह कीन उठि दंडप्रणामा॥
सादर शुचि आसन बैठारे। भक्तीपूर्वक वचन उचारे॥२॥
तुव यादव प्रभु लोगन गाए। भक्त कृष्ण भगवान सुहाए॥
मोर प्रश्न कर दीन सनेहू। देहु उतर उर हरहु सँदेहू॥३॥
सदन मोर प्रभु अगणित भामा। इकते एक सरस अभिरामा॥
तिनहुँ मध्य यादव कुलवारी। ऐहिं कोउ किन भक्त मुरारी॥४॥
सुनि दिलीश अस कथन सुहावा। सूर वदन अस वचन अलावा॥
सुनहु धराणिनायक बडभागी। करहुँ कथन कछु तुव हितलागी॥५॥
जिहिते तोर मनोरथ एहा। अबहिं होहि फुर विगत सँदेहा॥
इह तुम्हारि संकुल वरनारी। तुमहिं देखि पुनि मोहिं निहारी॥६॥
क्रम ते एक एक अस आई। करहिं गमन इत मारगराई॥

तिनहुँ मध्य तव कर प्रिय जोई। सो निज सकुच लाज सब खोई ॥ ७ ॥
मोहिंसन करहिं रुचिर संभाषा। होहिं तुरंत बहुरि मृत तासा ॥
साह सुनत अस दीन रजाई। महिषी सुनत सकल चलिआई ॥ ८ ॥
एक एक करि लख्र प्रणामा। चली जात भामिनि निज धामा ॥
आई एक सवन ते पाछे। पतिप्रिय रूप ललित गुण आछे ॥ ९ ॥

दो०-निरखत सन्मुख हर्षवश,कहिसि वदन मुसकाय। कहितें कीन आगमनतुव,मोर मर्म कछुपाय ॥

चौपाई-देखत कहि स सूर तिंहि ओरा। शुभ्रे मोहिं मर्म सब तोरा ॥
भामिनि सुनत चरण गहि लीने। देखत सबन प्राण तजि दीने ॥ १ ॥
महिषी आन देखि अस तासा। लागी रुदन करन संभाषा ॥
साहु व्यथित मानस बिसमायो। धरत धीर पुनि बदन अलायो ॥ २ ॥
बन्दहुँ बार बार अब तोहीं। भगवन करहु कथन सब मोहीं ॥
को इह रही भवन मम भामा। जहि अस तज्यो वपुप निष्कामा ॥ ३ ॥
तब पूर्ववत कथा सुहायन। लागे सूरदास सुखगायन ॥
इह मथुरा पुरि बसहि सुहाई। बीर वधू सब लोगन गाई ॥ ४ ॥
हाव भाव कल निरत परायन। कला प्रवीन परमपटु गायन ॥
सभा महिंद्र धनक जन जाई। निज प्रभाव गुण लेत रहाई ॥ ५ ॥
काहु धनाढ्य काल शुभ पायो। पाणिग्रहण निज सुवन रचायो ॥
इहि कहँ पठ्यो बोलि सन्माना। लाग्यो होन नृत्य कलगाना ॥ ६ ॥
करि निज कला ललित चतुराई। मूर्छित सभा कीन समुदाई ॥
तब कोउ आन देशकर राई। इहि नृत गीत देखि चतुराई ॥ ७ ॥
निज पुर गयो लेत हरषाना। पावा तहाँ विविध सन्माना ॥
एक दिवस रत नृत्य अगारा। देखि सरुचिर धरणिपतिदारा ॥ ८ ॥
सजि शृंगार आभरण सोहन। ठाढी मनहु मान रति मोहन ॥
चारि ओर परिवारत दासी। सेवइ सुखद रूप गुण रासी ॥ ९ ॥
अस प्रभाव हग देखि सुहावा। तेहि कर हृदय मनोरथ छावा ॥
हमहुँ होब इहि सम कस रानी। अस विचारि मानस सकुचानी ॥ १० ॥
इन कर भूप पुण्य संसारा। हमहु अधम धिग जनम हमारा ॥
पुनि देखिस छित पत पटरानी। देत दान दीनन रति मानी ॥ ११ ॥

दो०-धन भूपण पट भक्तियुत,करत सकल सेवकाइ। अतिथि संत आवत सदन,भोजन देहुँ जिवाइ ॥
हमहुँ करब यदि पुण्य अस,कहत गुणत जियमाहिं। तो पावहुँ संशय नहीं,भूप पतनि पद काहिं ॥

चौपाई-अस प्रकार पावन शुभ तासा। ललित दान रुचि हृदय प्रकासा ॥
तब ताहिं दैवयोग कर आई। ज्वररुज उपज प्रबल दुखदाई ॥ १ ॥
पुनि पंचत्वभाव कहँ सोई। प्रापत भई व्याधि सब खोई ॥
धर्म दूत रौरव तेहि डारयो। तहाँ भोग निज कृत अगसारयो ॥ २ ॥
सुर पुर गवनि बहुरि हरषाती। अपसर नृत्य गीत कलराती ॥

मथुरा भवन भवन भगवाना। जो नृत गीत ललित पुनि गाना ॥ ३ ॥
कीन्हेसि भक्ति प्रेम सरसाए। तेहि परिणाम अमर पुर पाए ॥
अरु उपकार देखि नृप रानी। जोतहि हृदय दान रुचिमानी ॥ ४ ॥
ताहि प्रसाद भवन तुव आई। भोगे विविध भोग सुखपाई ॥
आज़ु विदित देखत तुव एहा। मृत वश भई तुरत तजि देहा ॥ ५ ॥
पै यादव वंशी त्रिय जेहू। रही सो दैव रूप सब तेहू ॥
कौतुक करन दैव पुर त्यागी। आई धरणि कृष्ण अनुरागी ॥ ६ ॥
गवनी बहुरि अमरपुर काहीं। रही सो मनुज रूप कछु नाहीं ॥
अस कहि सूरदास हरषाते। माँगि बिदाय भक्ति मदमाते ॥ ७ ॥
तब दिलीश सादर धन दीना। भक्त सृष्ट सुइकार न कीना ॥
हमरे नहिन द्रव्य कछु कामा। तव दिलीश वर्णन अभिरामा ॥ ८ ॥
धरयो शीश नम्रत कर जोरी। विनय वदन कछु कीन न थोरी ॥
चले सूर तब होत बिदाए। हर्षत कृष्ण ललित पुर आए ॥ ९ ॥
अगणित विमलभक्ति सरसावन। विरचत कृष्णचरित पदपावन ॥
रहे करत गायन संसारा। सकललोक हित हृदय बिचारा ॥ १० ॥
पदन प्रबंध सूर जन नागर। बाँध्यो जनहु सेतु भवसागर ॥
बिनु प्रयास कलिकाल मँझारा। तेहि प्रसाद उतरत सब पारा ॥ ११ ॥

दो०—सूर सूर सम विदितजग, सकलकविन शिरमोर। सूर श्याम जेहि भक्ति वश, भए भक्त चितचोर ॥१॥
जौलौं विचरे धरणि तल, पल न बिसारे श्याम। भए अंत अलचरणकल, कंजकृष्ण अभिराम ॥२॥

बाबू रघुनाथ सिंह तअल्लुकेदार भदवर ने मुझे १६ दोहे दियेथे उन दोहों में सूरदास के समय के कवियोंके नाम हैं पर कई एकमें मुझे सन्देह है जोहो वे दोहे नीचे प्रकाश किये जाते हैं।

दो०—सूरदासके समयमें, जोकवि भये महान। उन सबसे बाढिके सबै; इन्हैं करत सन्मान ॥ १ ॥
ओलिराम अकबर अगर, दासकवी करनेश। चतुरविहारी गोपकवि, घनआनँद अमरेश ॥ २ ॥
आशकरन अजबेस अरु, कादर केशवदास। टोडर गोबिंद जैतकवि, चरण चतुभुँजदास ॥३॥
जीवन केशव ताजकवि, होलराय कवि खेम। योधा जोयसी चंदसखि, कृष्णदास कवि क्षेम ४
अमृत खानखाना जगन, ऊधोराम कमाल। जमालुद्दीन जगनन्दकवि, गोबिंददास जमाल ५॥
जमालुद्दीन कल्याण कवि, फैजी ब्रह्म फहीम। अभयराम परसिद्धकवि, बिट्ठलविपुल रहीम ६॥
अमरसिंह घनश्यामहू, दील्ह नरोत्तमदास। चेतनचंद कविन्द भट, बारक विद्यादास ॥ ७ ॥
छितस्वामी भगवतरसिक, छत्र विहारीलाल। मिश्रगदाधर मानसिंह, लालन मोतीलाल ॥ ८ ॥
हरीदास हरिनाथकवि, मानराय रघुनाथ। मिश्रगणेश कबीरअरु, लीलाधर कविनाथ ॥ ९ ॥
दामोदर दिलदार कवि, दौलत नागर दास। नंदन हितहरिवंस कवि; सेन नारायणदास ॥ १० ॥
नीलकंठ नँदलाल कवि, नंददास रसखान। नाभा नरवाहन नरसि; नारायणभट तान ॥ ११ ॥
निपटनिरंजन इंद्रजित, पृथ्वीराज को जान। लक्ष्मीनारायण हरी, बलीभद्र को मान ॥ १२ ॥

३। ४—अगरदास और अगर कवि।
९१—धीर नरिन्द्रभी इनका नामहै।

विठ्ठलनाँथ विशुनाँथ कवि, पद्मनाँभ परबीनँ । भगवनँदास मनोहँरा, परमानन्द नँवीन ॥१३॥
माणिकँचंद निहाँलकवि, मुँकुँद मुबारकँ बीरँ । देवँ दिनेशँनदाँन कवि, तेही तोषी नँधीर १४
श्रीपँति यद्यपि भक्तिमें, न्यून न कछुकलखात। तद्यपिकवितामें कहों, समताकछु न दिखात १५॥
विद्याँपति आदिक कविन. जितने भये सुजान। काव्य भावमें सूरसम, तुलसी * एकप्रमान १६॥

चौरासीवार्त्ता—बालकृष्णजीसे ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभूनके सेवक सूरदासजी गऊघाट ऊपर रहते तिनकी वार्त्ता ।

सो एकसमय श्री आचार्यजी महाप्रभु अंडेलते ब्रजको पाँउ धारे सो कितनेक दिनमें गऊघाट आये सो गऊघाट आगरे और मथुराके बीचा बीच है तहां श्री आचार्य जी महाप्रभू पांवधारे सो गऊघाट ऊपर श्री आचार्य जी महाप्रभू उतरे तहां श्री आचार्य जी महाप्रभू स्नान करिके संध्यावंदन करिके पाककरन को बैठे और श्री आचार्य जी महाप्रभूनके सेवकनको समाज बहुत हुतो और सेवकहू अपने अपने श्रीठाकुर जी की रसोई करन लगे सो गऊघाट ऊपर सूरदास जीको स्थल हुतो सो सूरदास जी स्वामीहैं । आप सेवक करते सूरदास जी भगवदीय हैं गान बहुत आछो करते ताते बहुत लोग सुरदासजीके सेवक भयेहुते सो श्री आचार्य जी महाप्रभू गऊघाट ऊपर उतरे सो सूरदास जीके सेवक देखके सूरदास जीसों जाय कही जो आज श्री आचार्य जी महाप्रभू आप पधारे हैं जिनने दक्षिणमें दिग्विजय कियो है सब पंडितनको जीते हैं भक्तिमार्ग स्थापन कियो है सो श्री वल्लभाचार्य यहाँ पधारे हैं तब सूरदास जीने अपने सेवकनसों कह्यो जो तू जायके दूर बैठि जब आप भोजन करिके विराजें तब खबर करियो हम श्री आचार्य जी महाप्रभूनके दर्शनको जायँगे सो वह तनक दूर जाय बैठ्यो तब श्री आचार्य जी महाप्रभू आप पाक करत हुते सो पाक सिद्धि भयो तब श्री ठाकुर जीको भोग समर्प्यो पाछे समयानुसार भोग सराय अनोसर करके महाप्रसाद ले के श्री आचार्य जी महाप्रभु गादी ऊपर बिराजे तहां सब सेवकहू पहुँचिके श्री आचार्यजी महाप्रभून के आसपास आय विराजे हैं तब वह सुरदासको सेवक आयो सो सूरदास सों कही जो श्री आचार्यजी महाप्रभू विराजे हैं तब सूरदास जी अपने स्थल ते आय के श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन को आये तब श्री आचार्य जी महाप्रभूनने कह्यो जो सूर आवो बैठो तब सूरदास जी श्री आचार्य जी महाप्रभून को दर्शन करिके आगे आय बैठे तब श्री आचार्यजी महाप्रभूनने कह्यो जो सूर कछु भगवत् यश वर्णन करो तब सूरदासने कही जो आज्ञा तब सूरदास जी ने श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगे एक पद गायो सो पद ।

राग धनाश्री—हों हरि सब पतितन को नायक ॥ कोकरि सके बराबर मेरी इते मानको लायक॥१॥
जो तुम अजोमलसोंकीनी जो पाती लिखपाऊं।होयविश्वास भलोजिय अपने औरहु पतित बुलाऊं२
सिमिट जहां तहां ते सब कोऊ आय जुरे एकठौर।अबके इतने आन मिलाऊं वेर दूसरी और॥ २॥
होडा होडी मन हुलास करि करे पाप भरिपेट ॥ सबहिनले पाँयन तर परिहों यही हमारी भेंट ।

९९—प्रवीनराय पातुरी।
१००—भगवानदास
* अंक वाले कवियोंका आगे वर्णन किया जायगा ।

ऐसी कितनीक बनाऊंप्राणपतिसुमिरनहैभयोआडो। अवकीबेरनिवारलेउप्रभु सूर पतित काटाडो॥ फिर दूसरो और पद गायो सो पद।

रागधनाश्री–प्रभुमैं सब पतितनको टीको। और पतित सब द्यौस चारके मैंतो जन्मतहीको॥ १॥ वधिक अजामिल गणिका तारी और पूतनाहीको। मोहिंछाँडि तुम और उधारे मिटेशूल कैसेजीको कोऊ न समरथ सेव करनको खैंचकहतहौंलीको। मरियतलाज सूरपतितनमेंकहत सबनमेंनीको ऐसो पद श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगे सूरदासजीने गायो सो सुनिके श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यो जो सूरह्वैके ऐसो काहेको घिघियातहै कछु भगवत् लीला वर्णन करु तब सूरदासने कह्यो जो महाराज हों तो समझत नाहीं तब श्री आचार्यजी महाप्रभूनने कह्यो कि जा स्नान करिआउ हम तोको समझावेंगे तब सूरदासजी स्नान करिआये तब श्रीमहाप्रभूजीने प्रथम सूरदासको नाम सुनायो पाछे समर्पण करवायो और दशमस्कन्धकी अनुक्रमणिका कही सो ताते सब दोष दूर भये ताते सूरदासजीको नवधाभक्ति सिद्धभई तब सूरदासजीने भगवत् लीला वर्णन करी अनुक्रमणिकाते सम्पूर्ण लीला फुरी सो क्यों जानिये सो दशमस्कन्धकी सुबोधनीजी में मंगलाचरणको प्रथम कारका कियेहैं सो यह श्लोक सूरदासजीने कह्यो सो–श्लोक।

नमामि हृदये शेषं लीलक्षीराब्धिशायिनम्। लक्ष्मी सहस्रलीलाभिः सेव्यमानं कलानिधिम्॥१॥ और ताही समय श्रीमहाप्रभूनके सन्निधि पद किये सो पद।

रागबिलावल–चकई री चालि चरण सरोवरि जहाँ न प्रेम बियोग। यह पद सम्पूर्ण करिके सूरदासजीने गायो सो यह पद दशमस्कन्धके मंगलाचरणकी कारकाके अनुसार कियो सो यामें कह्योहै जो तहाँ श्री सहस्र सहित नित क्रीडत शोभित सूरदासने या भाँति पद किये ताते जानी जो सूरदासको सम्पूर्ण सुबोधनी स्फुरी सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने जान्यो जो लीलाको अभ्यास भयो पाछे सूरदासजीने नन्दमहोत्सव कियो सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगे गायो सो पद। राग देवगंधार–व्रज भयो महर के पूत जब यह बात सुनी।

सो यह श्रीआचार्य जो महाप्रभूनके आगे गायो सो सुनके श्री आचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये और अपने श्रीमुखते कहे जो सूरदास मानों निकटही हुते पाछे सूरदासजीने अपने सेवक किये हुते तिन सबनको नाम दिवायो पाछे सूरदासजीने बहुत पद किये पाछे श्री आचार्य जी महाप्रभूनने सूरदासजी को पुरुषोत्तम सहस्रनाम सुनायो तब सूरदासजीको संपूर्ण भागवत स्फुर्तना भई पाछे जो पद किये सो भागवत प्रथमस्कंधते द्वादशस्कंध पर्यंत (ताईं) किये ताते वे सूरदास जी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परमभगवदीय हैं पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभू गऊघाट ऊपर दिन तीन बिराजे पाछे फिर व्रजको पाँवधारे तब सूरदासजीहू श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके साथ व्रजको आये।

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥

अब जो श्रीआचार्यजी महाप्रभु व्रजको पाँव धारे सो प्रथम श्रीगोकुल पधारे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके साथ सूरदासजीहू आये तब श्रीमहाप्रभुजी अपने श्रीमुखसों कह्यो जो सूरदासजी श्रीगोकुलकोदर्शन करी सो सूरदासने श्रीगोकुलको दंडवत करी सो दंडवत करतमात्र श्रीगोकुलकी बाललीला सूरदासजीके हृदयमें फुरी और सूरदासजीके हृदयमें प्रथम श्रीमहाप्रभूने सकल लीला श्रीभागवतकी स्थापी है ताते दर्शन करत मात्र सूरदासजीको

श्रीगोकुलकी बाललीला स्फुर्तना भई तब सूरदासजीने मनमें विचारचो जो श्रीगोकुलकी बाललीलाको वर्णन करिके श्रीआचार्यजीके महाप्रभूनके आगे सुनाइये जन्मलीलाको पद तौ प्रथम सुनायो है अब श्रीगोकुलकी बाललीलाको पद गायो सो पद॥ १॥

रागबिलावल–शोभित कर नवनीत लिये। घुटुरुवन चलत रेणुतनुमंडित मुखमें लेप किये॥ १॥ चारुकपोललोललोचनछबि गोरोचनको तिलकदिये। लरलटकनमानोमत्तमधुपगनमाधुरीमधुरपिये२ कठुलाकंठवज्रकेहरिनखराजतहैंसखिरुचिरहिये। धन्यसूरएकौपलयहसुखकहाभयोसतकल्पजिये॥३॥

यह पद सूरदासने गायो सो सुनिके आप बहुत प्रसन्न भये पाछे औरहु पद गाये तब श्रीमहाप्रभुजी अपने मनमें विचारे जो श्रीनाथजीके इहां और तौ सब सेवाको मंडान भयो है पर कीर्तनको मंडान नाहीं कियो है ताते अब सूरदासजीको दीजिये तब आप श्रीजीद्वार पधारे सो सूरदासजीको साथ लिये ही सो श्रीनाथजी द्वार जाय पहुँचे तब आप स्नान करिके मन्दिरमें पधारे तब सूरदासजीसों कह्यो जो सूरदासजी ऊपर आउ स्नान करिके श्रीनाथजीको दर्शन कर तब सूरदास पर्वत ऊपर जायके श्रीनाथजीको दर्शन कियो तब आपने कह्यो जो सूरदास कछू श्रीनाथजीको सुनावो तब सूरदासने प्रथम विज्ञप्तिको पद गायो सो पद–

राग धनाश्री–अब हौं नाच्यो बहुत गुपाल॥

यह पद संपूर्ण करिके श्रीनाथजीके आगे गायो तब श्रीमहाप्रभुजीने कह्यो जो सूरदास अब तौ तुममें कछू अविद्या रही नाहीं तुम्हारी अविद्या प्रभूनने दूर कीनी ताते कछू भगवत् यश वर्णन करो तब सूरदासने माहात्म्य और लीला ऐसो यश करिके गाय सुनायो सो पद–

राग गौरी–कौन सुकृत इन व्रजवासिनको।

यह पद संपूर्ण करिके गायो सो सुनिके श्रीमहाप्रभुजी बहुत प्रसन्न भये सो जैसो श्रीआचार्यजी महाप्रभुनने मार्ग प्रकाश कियो हो ताके अनुसार सूरदासजीने पद किये श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके मार्गको कहा स्वरूपहै माहात्म्य ज्ञानपूर्वक सुदृढ स्नेहकी तौ परम काष्ठाहै और स्नेह आगे भगवान्‌को रहत नाहीं ताते भगवान बेर बेर माहात्म्य जनावतहैं नाम प्रकरणमें पूतना करि शकट तृणावर्त करि गर्गाचार्य करि यमलार्जुन करि वैकुंठ दर्शन करि ऐसे करिके भगवानने बहुत माहात्म्य जतायो परि इन व्रज भक्तनको स्नेह परमकाष्ठापन्नहै ताते ताही समय तौ माहात्म्य रहे पाछे विस्मृत होय जाय।

वार्ता प्रसंग॥ २॥

और सूरदासजीने सहस्रावधि पद कियेहैं ताको सागर कहिये सो सब जगतमें प्रसिद्ध भये सो सूरदासजीके पद देशाधिपतिने सुने सो सुनिके यह विचारचो जो सूरदासजी काहू रीत (विधि) सों मिलें तौ भलो सो भगवत् इच्छाते सूरदासजी मिले सो सूरदासजीसों कह्यो देशाधिपतिने जो सूरदासजी मैं सुन्योहै जो तुमने विष्णुपद बहुत कियेहैं जो मोको परमेश्वरने राज्य दियो है सो सब गुणीजन मेरो यश गावतहैं ताते तुमहूं कछु गावो तब सूरदासजीने देशाधिपतिके आगे कीर्तन गायो सो पद।

राग बिलावल–मना रे तू करि माधव सों प्रीति॥ यह पद देशाधिपतिके आगे संपूर्ण करिके सूरदासजीने गायो सो यह पद कैसो है जो या पदको अहर्निश ध्यान रहे तो भगवत् अनुग्रहकी सदा प्राप्ति रहे और संसारते सदा वैराग्य रहे और कुसंगको सदा भय रहे और भगवदीयके

संगकी सदा चाह रहै और श्रीठाकुरजीके चरणारविंद ऊपर सदा स्नेह रहै देशाधिक ऊपर आसक्ति न होय ऐसो पद देशाधिपतिको सुनायो सो सुनिके देशाधिपति बहुत प्रसन्न भयो और कह्यो जो सूरदासजी मोको परमेश्वरने राज्यदीनो है सो जब गुणीजन मेरो यश गावत हैं ताते मेरो यश कछु गावो तब सूरदासजीने यह पदगायो सो पद ।

राग केदारो—नाहिंन रह्यो मनमें ठौर ॥ यह पद संपूर्ण करिके गायो सो सुनिके देशाधिपति अकबर बादशाह अपने मनमें बिचारचो जो ये मेरो यश काहेको गावेंगे जो इनको मेरो कछु बातको लालच होय तौ गावें ये तो परमेश्वरके जनहैं और सूरदास जीने या पदके अंतमें गायो हो जो "सूर ऐसे दर्शको ए मरत लोचन प्यास" यह गायो हो सो देशाधिपतिने पूँछो जो सूरदासजी तुम्हारे लोचन तौ देखियत नाहीं सो प्यासे कैसे मरतहैं और बिन देखे तुम उपमाको देतहौ सो तुम कैसे देतहौ तब सूरदासजी कछु बोले नहीं तब फिर देशाधिपति बोल्यो जो इनके लोचनहैं सो तो परमेश्वरके पासहैं सो वहाँ देखतहैं सो वर्णन करते हैं तब देशाधिपतिने सूरदासजीके समाधानकी मनमें बिचारी जो इनको कछु दियो चाहिये पर यह तौ भगवदीयहैं इनको काहू बातकी इच्छा नाहीं पाछे सूरदासजी देशाधिपतिसों बिदा होयके श्रीनाथजी द्वार आये ।

वार्ता प्रसंग ॥ ३ ॥

एक समय सूरदासजी मार्गमें चले जातेहैं सो कोऊ चौपड खेलते हुते सो वा चौपड खेलमें ऐसे लीन हो जो कोऊ आवते जातेकी सुधि नाहीं ऐसे खेलमें मग्नहै सो देखके सूरदासजीके संग भगवदीयहैं तिनसों सूरदासजीने कह्यो जो देखौ वह प्राणी कैसो अपनो जमारो खोवतहै भगवानने तौ मनुष्य देह दीनी है सो तो अपनी सेवा भजनके लिये दीनीहै सो तौ या देहसों हाड कूटतहै यामें यह लौकिक सिद्ध नाहीं सो काहेते जो या लोकमें तौ अपयश और परलोकमें भगवानते बहिर्मुखता ताते श्रीठाकुरजीने इनको मनुष्य देह दीनीहै तिनको चौपड ऐसी खेलनी चाहिये सो ता समय एक पद सूरदासजीने अपने संगिनसों कह्यो सो पद ।

राग केदारो—मन तू समझ सोच बिचार । भक्ति बिन भगवान दुर्लभ कहत निगम पुकार॥१॥ साधु संगति डार पासा फेर रसना सार । दांव अबके परचो पूरो उतरि पहिली पार ॥ २ ॥ बाक सत्रे सुनि अठारे पंचहीको मार । दूरते तजि तीन काने चमकि चौकि बिचार ॥ ३ ॥ काम क्रोध जंजाल भूल्यो ठग्यो ठगनी नार । सूर हरिके पद भजन विन चल्यो दोउ करझार ॥ ४ ॥

यह पद सूरदासजीने अपने संगके भगवदीयनसों कह्यो सो या पदमें सूरदासजीने कहा कह्यो मन तू समझ शोच बिचार । ये तीनों वस्तु चौपडमें चाहिये सोई तीनों वस्तु भगवानके भजनमें चहिये काहेते जो समझ न होय तौ श्रवण कहा करेगौ ताते पहिले तौ समझ चाहिये और शोच कहिये चिन्ता सो भगवान्के प्राप्तिकी चिन्ता न होय तौ संसार ऊपर वैराग्य कैसे आवै ताते शोच चहिये और बिचार जो या जीवको बिचारही नहीं तौ संग दुसंगमें कहा करैगो ताते बिचार चहिये सो ये तीनों वस्तु होंय तौ भगवदीय होय ताते ये तीनों वस्तु भगवदीयको अवश्य चाहिये और चौपडमेंहूं तीनों वस्तु चाहिये समझ कहें गनवो न आवै तौ गोट कैसे चले और शोच अगम जो मेरे यह गोट दाँव पडे तौ यह चलूं विचार जो वाहीमें तन मन जो ये तीनों वस्तु होंय तौ चौपड खेली जाय सो वे सूरदासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके ऐसे परम भगवदीयहैं ।

वार्ता प्रसंग ४.

बहुरि श्रीसूरदासजी श्रीनाथजी द्वार आयके बहुत दिन ताईं श्रीनाथजीकी सेवा कीनी बीच बीचमें श्रीगोकुल श्रीनवनीत प्रियाजीके दर्शनको आवते सो एक समय सूरदासजी श्रीगोकुल आये श्रीनवनीत प्रियाजीके दर्शन किये और बाललीलाके पद बहुत सुनाये सो श्रीगुसाईंजी सुनिके बहुत प्रसन्न भये पाछे श्रीगोसाईंजीने एक पालना संस्कृतमें कियो सो पालना सूरदासजीको सिखायो सो पालना सूरदासजीने श्रीनवनीत प्रियाजी झूलत हुते ता समय गायो सो पद।

राग रामकली ॥

प्रेपपर्यंकशयनम्।

यह पद सूरदासजीने सम्पूर्ण करिके गायो सुनायो श्रीनवनीत प्रियाजीको पाछे या पदके भाव के अनुसार बहुत पद किये सो सुनिके श्रीगोसाईंजी बहुत प्रसन्न भये पालनाके भाव अनुसार पद गायो सो पद।

राग बिलावल—बाल विनोद आंगनमेंकी डोलनि ॥ मणिमय भूमि सुभग नंदालय बलि बलि गईं तोतरी बोलनि ॥ १ ॥ कठुलाकंठ रुचिर केहरिनख व्रजमाला बहु लई अमोलनि। वदन सरोज तिलक गोरोचन लर लटकन मनु मधु गनि लोलनि ॥ २ ॥ लीन्यो कर परसत आननं पर कछू खाय कछू लग्यो कपोलनि। कहे जन सूर कहालों वर्णों धन्य नंद जीवन जग तोलनि ॥ ३ ॥

और पद राग बिलावल—गोपाल दुरेहैं माखन खात। देख सखी शोभा जो बढी अति श्याम मनोहर गात ॥१॥ उठि अवलोकि ओट ठाढी ह्वै जिहि विधि नाहिं लखिलेत। चकृत नैन चहूँ दिश चितवत और सबनको देत ॥ २ ॥ सुंदर करे आनन समीप हरि राजत यहै अकार। जनु जलरुह तजि वेर विधीसों लाय मिलत उपहार ॥ ३ ॥ गिरिगिरि परत वदनते ऊपर द्वै दधिसुतके बिंदु। मानहुँ सुधाक न खोरवत प्रियजन विंदु ॥ ४ ॥ बाल विनोद विलोकि सूर प्रभु वित भईं व्रजकी नारि। फुरतन वचन बरजिवेको मन गहि विचार विचारि ॥ ५ ॥

राग जैतश्री—कहाँ लगि वरणों सुन्दरताई। खेलत कुँवर कतिक्ष आँगनमें नैन निरखि सुखपाई॥१॥ कुलहे लसत श्यामसुंदरके बहुविधि रंग बनाई। मानउ नव घन ऊपर राजत मघवा धनुष चढाई श्वेत पीत अरु असिततालमणि लटकनभाल रुराई। मानहुँ असुरदेवगुरुसों मिलि भूमिजसो समुदाई अतिसुदेशमृदु चिहुर हरत मनमोहनमुखबिगराई। मानहुमंजुल कंचनऊपर आलि आवलि फिरिआई दूधदंतछबि कहीनजातकछु अलिपललपझलकाई। किलकतहँसतदुरितप्रगटतमानों बिंदुमें विपुलताई खंडितवचनदेतपूरणसुख अद्भुत यहउपमाई। घुटुरुनचलत उठत प्रमुदितमन सूरदासबलिजाई ॥६॥

राग रामकली—देखो सखी एक अद्भुतरूप। एक अंबुज मध्य देखियत बीस दधिसुत जूप ॥ १ ॥ एकअवलि दोय जलचर उभे अर्क अनूप। पंजचार चढि गहि देखियत कहो कहाँ स्वरूप ॥ २ ॥ शिशुगणमें भई शोभा करो कोउ विचार। सूर श्री गोपालकी छवि राखो यह निरधार ॥ ३ ॥

ऐसे पद सूरदासजीने गाये पाछे फेर श्रीनाथजी द्वार आये ॥

वार्ता प्रसंग ॥ ५ ॥

अब सूरदासजीने श्री नाथजीकी सेवा बहुत कीनी बहुत दिनताईं ता उपरांत भगवत इच्छा जानी जो अब प्रभुनकी इच्छा बुलायवेकी है यह विचारके जो नित्य लीला फलात्मक रासलीला जो जहाँ करे है ऐसो जो परासोली तहाँ सूरदासजी आये श्रीनाथजीकी ध्वजाको दण्डवत करिके

ध्वजाके साम्है सन्मुख करिके सूरदासजी सोये. परि अंतःकरणमें यह जो श्री आचार्यजी महाप्रभु दर्शन देंयगे अब यह देह तौ थकी ताते अब या देहसों श्रीनाथजीको दर्शन होय तौ जानिये परम भाग्य है श्री गुसाईजी को नाम कृपासिंधुहै भक्तनके मनोरथ पूर्णकर्त्ता हैं ऐसे विचारके सूरदासजी श्रीं गुसाईजीको चिंतवन करते हैं और श्री गुसाईजी कैसे कृपासिंधुहैं जैसे सूरदासजी वहाँ स्मरण करते हैं तैसे श्रीगुसाईजी इनको छिनहूं नाहिं भूलत हैं. श्रीनाथजीको शृंगार हो तो ता समय सूरदासजी मणिकोठामें ठाढे ठाढे कीर्तन करते सो ता दिन श्रीगुसाईजी श्रीनाथजीको शृंगार करत हुते और सूरदासजीको कीर्तन करत न देख्यो तब श्रीगुसांईजीने पूंछो जो सूरदासजी नाहीं देखियत सो काहेते ? तब काहू वैष्णवने कह्यो जो महाराज सूरदासजी तौ आज परासोलीकी ओरी जात देखे हैं तब श्रीगुसाईजीने जान्यो जो भगवत इच्छाते अवसान समय है ताते सूरदासजी परासोली गये हैं तब श्रीगुसांईजीने अपने सेवकन सों कह्यो जो पुष्टिमार्गको जहाज जात है जाको कछू लेनो होय सो लेउ और जो भगवत् इच्छाते राजभोग आरती पाछे रहत है तौ मैंहूं आवत हों पाछे श्रीगुसाईजी बेरबेर सूरदासजी की खबरि मँगायो करें जो आवै सोई कहै जो महाराज सूरदासजी तौ अचेत हैं कछू बोलत नाहीं ऐसे करत श्रीनाथजीके राजभोगको समय भयो सो राजभोग आरती करिके श्रीगुसांईजी गिरिराजते नीचे उतरे सो आप परासोली पधारे भीतरके सेवक रामदासजी प्रभृति और कुंभनदासजी और श्रीगुसाईजीके सेवक गोविंद स्वामी चतुर्भुजदास प्रभृति और सब श्रीगुसाईजीके साथ आये सो आवतही सूरदासजीसों श्रीगुसांईजीने पूछो जो सूरदासजी कैसे हो तब सूरदासजीने श्रीगुसांई जीको दंडवत करिकै कह्यो जो महाराज आये हो महाराजकी बाट देखत हुतौ यह कहिके सूरदासजीने एक पद कह्यो सो पद ॥

रागसारंग—देखो देखो हरि जूको एक सुभाय॥अति गंभीर उदार उदधिप्रभु जानिशिरोमणिराय॥१॥
राई जितनी सेवाको फल मानत मेरु समान। समझि दास अपराध सिंधुसमबूँदनएकौ जान॥२॥
बदनप्रसन्नकमलपदसन्मुख दीखतहीहैऐसे॥ ऐसेविमुखहु भयेकृपायासुखकीजबदेखौतबतैसे॥३॥
भक्तविरहकरतकरुणामयडोलतपाछेलागे ॥ सूरदास ऐसे प्रभुको कत दीजै पीठ अभागे ॥ ४ ॥

यह पद सूरदासजीने कह्यो सो सुनिके श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भये और कह्यो जो ऐसे दैन्य प्रभु अपने सेवकनको देहिं या दैन्यके पात्र एहीहैं तब वा बेर श्रीगुसांईजीके पास ठाढ़ेहुते और चतुर्भुजदासहू ठाढे हुते तब चतुर्भुजदासने कह्यो जो सूरदासजीने बहुत भगवत् यश वर्णन कियो परि श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको वर्णन नाहीं कियो तब यह वचन सुनिके सूरदासजी बोले जो मैं तौ सब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कोही यश वर्णन कियौहै कछू न्यारो देखूं तौ न्यारो करूं परि तेरे साथ कहतहों या भांति कहिके सूरदासजीनें एक पद कह्यो सो पद ॥

राग विहागरो—भरोसो दृढ इन चरणन केरो॥श्रीवल्लभनख चंद छटा बिनु सब जग मांझ अँधेरो॥१॥
साधन और नहीं या कलिमें जासों होत निबेरो॥सूरकहा कहे दुविधि आंधरो बिनामोलको चेरो॥२॥

यह पद कह्यो पाछे सूरदासजीको मूछी आई तब श्रीगुसांईजी कहें जो सूरदासजी चित्त की वृत्ति कहां है तब सूरदासजीने एक पद और कह्यो सो पद ॥

राग विहागरो—बलि बलि बलि हों कुमरि राधिका नंदसुवन जासों रति मानी ॥ वे अति चतुर तुम चतुर शिरोमणि प्रीति करी कैसे होत है छानी ॥ १ ॥ वे जु धरत तन कनक पीतपट सो तो सब

तेरी गति ठानी ॥ तें पुनि श्याम सहजबे शोभा अंबर मिस अपने उर आनी ॥ २ ॥ पुलकित अंग अबहिं ह्वै आयो निरखि दोखि निज देह सियानी॥सूर सुजान के बूझे प्रेम प्रकाश भयो बिहँसानी३॥

यह पद कह्यो इतनो कहिकै श्रीसूरदासजीके चित्त श्रीठाकुरजीको श्रीमुख तामें करुणा रसके भरे नेत्र देखे तब श्री गुसाईंजी पूछो जो सूरदासजी नेत्रकी वृत्ति कहां है तब सूरदास जीने एक पद और कह्यो सो पद ॥

राग विहागरो—खंजन नैन रूप रसमाते ॥ अतिशय चारुचपल अनियारे पल पिंजरा न समाते ॥ चलचलजातनिकट श्रवणनके उलटपलटताटंकफँदाते॥सूरदासअंजनगुणअटकेनातरअबउडिजाते॥

इतनो कहतही सूरदासजीने या शरीरको त्याग कियो सो भगवत लीलामें प्राप्ति भये पाछे श्रीगुसाईंजी सब सेवकन सहित श्रीगोवर्द्धन आये ताते सूरदासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके ऐसे कृपापात्र भगवदीयहैं ताते (सो) इनकी वार्ताको पार नहीं पाते इनकी वार्ता कहांताईंलिखिये।

सीधीहिन्दी—पहिले भागमें गया गवर्नमेन्ट स्कूलके पंडित बलदेव मिश्रने लिखाहै कि सूरदास का घर कृष्णावेना गांवमें देवशर्म्मा ब्राह्मण का बेटा बिलमङ्गल पांडे इनका नामथा। पहले इनकी चालचलन अच्छी नहींथी। पीछे ये सुधरे और सवालाख भजनका सूरसागर बनाकर बडे नामी हुए। लोग कहते हैं कि इन्होंने अपनी आंख आपही फोडीथी।

'सुगम पंथमें पंडित गणपत लाल चौबे फर्स्ट असिस्टेंट मास्टर स्कूल रायपुरने लिखाहै कि-शूरदास किंबा सूरदास—मदनमनोहर शूरध्वज ब्राह्मण दिल्लीनगरके समीप किसी ग्रामके रहनेवाले थे। किसीसमय दिल्लीआये वहाँ एक दिन किसी स्त्रीको कोठेपर खडीदेख उसपर मोहित हुए' और कोठेकी ओर इकटक चितै रहे। लोग इनकी दशादेख धिक्कारनेलगे परंतु वह स्त्री घरसे बाहर निकल बोली "विप्रजी क्या आज्ञा होती है" विप्र बोले "क्या सचमुच मेरी आज्ञा पालेगी" वह बोली "निस्सन्देह" मुझे ईश्वर साक्षी है तबतो वह विप्रके कहनेके अनुसार दो सुइयां ले आई और जब विप्रने कहा कि मेरी छातीपर बैठ इन दोनों सुइयोंको मेरे नेत्रोंमें घुसेडदे उसने वैसाही किया और तबहींसे सूरदास कहलानेलगे। लोगोंने इनकी बडी प्रशंसाकर इनके कहनेके अनुसार मथुरा वृन्दावनमें पहुँचादिया यहाँपर इन्होंने सवालाख विष्णुपदका एक बहुत बडा सूरसागर नामीग्रंथ बनाया निदान कुछ कालतक ये अकबर बादशाहकी सभामें रहे और फिर परलोकको सिधारे।

प्राचीन मनुष्योंकी कहावतहै कि,ये उद्धवका अवतारथे वे सब कवियोंमें श्रेष्ठ गिनेजाते हैं यथा दो०—सूर सूर्य्य तुलसी शशी,उडगण केशवदास। अबके कवि खद्योत सम,जहँ तहँ करहिं प्रकाश।

रामरसिकावलीकी टिप्पणीमें लिखाहै कि 'अंक वाले कवियोंका आगे वर्णन किया जायगा।' परंतु मतिराम कविका वर्णन काव्यरत्नाकरमें लिखागयाहै अतएव यहाँ उनका कुछ काव्य लिखा जाता है।

(१) मतिराम त्रिपाठी टिकमापुरवाले।

कवित्त—पूरण पुरुषके परम दृग दोऊ जानि कहत पुराण वेद बानियो रतिगई।
कवि मतिराम दिनपति यों निशापतियों दुहुँनकी कीरति दिशान माँझ मढिगई ॥
रविके करन भये एक महादानी यह जानि जिय आनि चिंता चित्त मांझ चढिगई।
तोहि राज बैठत कुमाऊं श्रीउदोत चंद्र चंद्रमाकी करक करेजहूते कढिगई ॥ १ ॥

ललितललाम।

परम प्रवीन धीर धरम धुरीन दीनबंधु सदा जाकी परमेश्वरमें मतिहै।
दुर्जन बिहाल करि याचक निहाल करि जगतमें कीरति जगाई ज्योति अतिहै॥
राउ शत्रुशालके सपूत पूत भाउसिंह मतिराम कहै जाहि साहिबी फबतिहै।
जानपति दानपति हाडा हिन्दुवानपति दिल्लीपति दलपति बालबंद पतिहै॥ २॥
कैसे आसमानसे विमानसे घटासे गज रावरे चलत मानौ मेरुसे लहतिहै।
अतल वितल तल हलत चलत दल गज मद राजै दिगदंती चिक्करतिहै॥
कहै मतिराम शम्भु द्विरद दराज ऐसे जिन्हैं पाइ कविराज आनँद भरतिहै।
कुंभ छाये षटपद मदनि करद नद कदनि विलंद गढ गरद करतिहै॥ ३॥

छप्पय।

जबलगि कच्छप कोल सहस मुख धरणिभार धर। जबलगि आठौ दिशनि दाबि सोहत दिग्गजबर
जबलगि कबि मतिराम सगिरि सागर महिमंडल। जबलगि सुवरण मेरु सघनघन मगन अगनचल
नृप शत्रुशालनंदन नवल भावसिंह भूपाल मनि।जग चिरंजीव तबलगि सुखितकहत सकल संसार धनि
दो०—भौंह कमान कटाक्ष शर, समरभूमि बिचनैन। लाज तजेहू दुहुँनके, सजल सुहृदसे बैन॥१॥
रूपजाल नँदलालके, परिकरि बहुरि छुटैन। खंजरीट मृगमीनसे, व्रजबनितनके नैन॥ २॥
क०—बानीको बसन कैधौं बातको बिलास डोलै कैधौं मुखचंद्र चारु चांदनी प्रकास है।
कवि मतिराम कैधौं कामको सुयश कै पराग पुंज प्रफुलित सुमन सुवास है॥
नासा नथुनीके गजमोतिनके आभा कैधौं रतिवंत प्रगटित हियेको हुलास है।
सीत करिबेको पिय नैन घनसार कैधौं बालाके बदन बिलसत मृदु हास है॥ ४॥

छंदसार पिंगल।

दाता एक जैसो शिवराज भयो जैसो अब फतेसाहिसी नगर साहिबी समाजुहै।
जैसो चित्तौर धनी राना नरनाह भयो जैसोई कुमाऊं पति पूरो रज लाजु है॥
जैसे जयसिंह यशवंत महाराज भयो जिनको महीमें अजों बाढचो बलसाजुहै।
मित्रासाहि नंद सी बुंदेल कुलचंद जग ऐसो अब उदित स्वरूप महाराजु है॥५॥
लछमनही संगलिये जोबन विहार किये सीता हिये बसे कहो तासों अभिरामको।
नव दल शोभा जाकी विकसे सुमित्रे लखि कोशलै बसत कोऊ सुठि धाम ठामको॥
कवि मतिराम शोभा देखिये अधिक नित सरस निधान कवि कोविदके कामको।
कीन्होंहै कवित्त एक तामरसहीको यासों रामको कहतकै कहत कोऊ वामको॥ ६॥

रसराज।

चंदन चढारी नभ चंदन चढारी अंग चंद उजियारी देखि नकराति कैसी है।
फंद फंदफबदी गंसीली गांठि गूंदि गूंदि मूंदि मूंदि सुख मंद मंतरात कैसी है॥
मतिराम मिलन विहारी सूं तूं प्यारी चलु नितरति बारी आजु जकराति कैसीहै।
कतरात कैसी बात बतरात कैसी जात सतरात कैसी रात रत रात कैसी है॥ ७॥
चोरकीचोर छिनारछिनारकीसाहुबलीकीबली। ठगकीठगकासुककासुककीअरुछैलकीछैलछलीकीछली
प्रवीणनकीपरवीणहीजानैमतिरामनजानैकदाधौंचली।उनफेरिदईनथकीमुक्ताउनफेरिकैफूंकीगुलावकली।
गोपवधूतनतोलतडोलतबोलतबोलजुकोनलभाषैं। ऊरूनितंबनिकीगुरुतापगजातगयंदनिकीगतिनापै
आगमभोतरुणापनकोमतिरामभनैभईचंचलआंवैं। खंजनकेयुगसावकज्योंउडिआवतनाफरकावतपाँवैं

क०—येरे मतिमन्द चन्द ढिगहै अनन्द तेरो जोपै विरहीन जारिजात तेरे तापते।
तूतो दोषाकार दूजे धरेहैं कलंकउर तीसरे सखानि संग देखो शिर छापते॥
कहै मतिराम हाल जाहिर जहान तेरो वारुणीके वासी भासी राहुके प्रतापते।
वाँधोगयो मथोगयो पियोगयो खारोभयो बापुरो समुद्र ऐसे पूतहीके पापते॥ ९॥

(२) शिवसिंहसरोजमें लिखाहै भूषण त्रिपाठी टिकमापुर जिले कानपुर सं० १७३८ में हुए। रौद्र वीर भयानक ए तीनों रस जैसे इनकी काव्यमेंहैं ऐसे और कवि लोगोंकी कवितामें नहीं पाए जाते ए महाराज प्रथम राजा छत्रशाल परना नरेशके यहाँ छः महीनेतक रहे तेहि पीछे महाराज शिवराज सुलंकी सतारागढ वालेके इहां जाय बडा मानपाया और जब यह कवित्त भूषणजीने पढा (इंद्र जिमि जंघ पर) तब शिवराजने पांच हाथी औ २५ हजार रुपिया इनाम दिया इसी प्रकारसे भूषणने बहुत वार बहुत २ रुपया हाथी घोडा पालकी इत्यादि दानमें पाये ऐसे शिवराजके कवित्त बनाए हैं जिनकी बराबर किसी कविने वीरयश नहीं बनाय पाया। निदान जब भूषण अपने घरको चले तौ परना होकर राजा छत्रशालसे मिले छत्रशालने विचारा अवतो शिवराजने इन को ऐसा कुछ धनधान्य दिया है कि हम उसका दशवां हिस्सा भी नहीं दे सकते ऐसा शोच विचार करि चलते समय भूषणकी पालकीका बांस अपने कंधे पर धरि लिया ब्राह्मण कोमल हृदय तो होतेही हैं भूषणजी बहुत प्रसन्न ह्वै यह कवित्त पढा। साहूको सराहों की सराहों छत्रशाल को। और दूसरा यह कवित्त बनाया। तेरी बरछीने बरछीने हैं खलनके। औ दो दोहा बनाय छत्रशालको दै घरमें आए॥

दोहा—एक हाडा बूंदी धनी, मरद महेवावाल। शालत नौरंगजेबके, ए दोनों छत्रशाल॥ १॥
ए देखौ छत्तापत्ता, ए देखौ छत्रशाल। ए दिल्लीकी ढाल ए, दिल्ली ढाहनवाल॥ २॥

भूषणजी थोडे दिन घरमें रहि बहुत देशान्तरोंमें घूमि घूमि रजवाडोंमें शिवराजका यश प्रगट करते रहे जब कुमाऊंमें जाय राजा कुमाऊंके यशमें यह कवित्त पढा (उलदत्त मद अनुमद ज्यों जलधिजल)।

तब राजाने सोचाकि ये कुछ दान लेने आएहैं और हमने जो सुनाथाकि शिवराजनें लाखों रुपया इनको दिया सो सब झूंठहै ऐसा बिचार हाथी घोडे मुद्रा बहुत कुछ भूषणके आगे किया भूषणजी बोले इसकी अब भूँख नहीं हम इसलिये इहाँ आएथे कि देखें शिवराजका यश यहाँतक फैलाहै या नहीं—इनके बनाए हुए ग्रंथ शिवराजभूषण १ भूषणहजारा २ भूषणउल्लास ३ दूषणउल्लास ४ ए चारि ग्रंथ सुने जातेहैं कालिदासजूने अपने ग्रंथ हजाराकी आदिमें ७० कवित्त नवरसके इन्हीं महाराजके बनाएहुए लिखेहैं।

(३) विहारीलाल चौबे ब्रजवासी सम्वत् १६०२ हुए। ये कवि जयसिंह कछवाहे महाराजे आमेरके इहाँथे जयपुरकी तवारीख देखनेसे प्रगटहै कि महाराजे मानसिंह से जो संवत १६०२ में विद्यमान थे संवत १८७६ तक तीनि जयसिंह होगये हैं। पर हमको निश्चय है कि ये कवि माहराजे मानसिंह के पुत्र जयसिंहके पास थे जो महागुणग्राहकथे औ दूसरे सवाई जयसिंह इन जयसिंहके प्रपौत्र संवत् १७५६ में थे। यह बात प्रगट है कि जब महाराजे जयसिंह किसी एक थोरी अवस्था वाली रानी पर मोहित ह्वै रात दिन राजमंदिर में

रहने लगे राज्यके संपूर्ण काज काम बंद होगए तब बिहारीलाल ने यह दोहा बनाय राजाके पास तक किसी उपाय से पहुँचाया।

दो०-नहिं पराग नहिं मधुर रस,नहिं विकास यहिकाल। अली कलीहू सो विंध्यो, आगे कौन हवाल॥१॥

इस दोहा पर राजा अत्यन्त प्रसन्न ह्वै १०० मोहर इनाम दै कहा इसी प्रकार के और दोहा बनावो विहारीलालने सातसौ दोहा बनाए औ ७०० अशरफी इनाम में पाया। यह सतसई ग्रंथ अद्वितीय है बहुत कविलोगोंने इसके ढंग पर सतसई बनाकर अपनी कविता का रंग जमाना चाहा पर किसी कविको सुर्खरुई प्राप्त नहीं हुई। यह ग्रंथ ऐसा अद्भुत है कि हमने १८ तिलक तक इसके देखे हैं और आज तक तृप्ति नहीं है।लोग कहते हैं कि अक्षर कामधेनु होते हैं सो वास्तव में इसी ग्रंथके अक्षर कामधेनु दिखाई देते हैं।

सब तिलकों में सूरतिमिश्र आगरे वाले का तिलक विचित्र है और सब सतसैयों में विक्रमसतसई और चंदनसतसई इसके लगभग है।

बिहारी कवि २ सं० १७३८ इनके महासुंदर कवित्त हजारामें हैं। बिहारी कवि ३ बुंदेलखंडी सं० १८०६ सरस कविता करीहै। बिहारीदास कवि ४ ब्रजबासी सं० १६७० इनके पद रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुम में हैं।

(४) नीलकंठमिश्र अंतर्वेदी बासी संवत् १६४८ दासजीने इनकी प्रशंसा ब्रजभाषा जाननेमें करीहै।

(५)नीलकंठत्रिपाठी टिकमापुर वाले मतिरामके भाई। संवत् १७३० इनका कोई ग्रंथ हमने नहीं देखा॥

(६) बेनीकवि प्राचीन असनी जिले फतेपुरवाले। संवत् १६९० ए महान् कवीश्वर हुए हैं इनका एक ग्रंथ नायकाभेदमें अति विचित्र देखनेमें आयाहै इनकी कविताई बहुतही सरस ललित मधुरहै।

बेनीकवि २ बन्दीजन बैंती जिले रायबरेलीके निवासी संवत् १८४४ ए कवि महाराजे टिकैत राइ दीवान नवाब लखनऊ के इहाँ थे और बहुत वृद्ध ह्वै संवत् १८९२ के करीब मरगए।

बेनी प्रवीन ३ बाजपेयी लखनऊ के निवासी संवत् १८७६ ए कवि महासुंदर कविता करने में विख्यात हैं इनका ग्रंथ नायकाभेद में देखनेके योग्य है।

बेनी प्रगट ४ ब्राह्मण कविंद कवि नरवरी निवासीके पुत्र संवत १८८० इनकी काव्य महासुंदर है।

(७) एक शंभु कवि का वर्णन काव्यरत्नाकर की टिप्पणी में है उसके सिवाय यहां लिखा है। शंभुनाथ मिश्र कवि सं०१८०३ ए महाराज महान कवि भगवंत राइ खीची के यहां असोथर में रहा करते थे शिव कवि इत्यादि सैकड़ों मनुष्यों को इन्होंने कवि कर दिया। कवितामें महानिपुण थे रसकल्लोल १ रसतरंगिणी २ अलंकारदीपक ३ ए तीनि ग्रंथ इनके बनाये हुए हैं।

शंभुनाथकवि बंदीजन सं० १७९८ ये कवि सुखदेव के शिष्य थे रामविलास नाम रामायण बहुत ही अद्भुत ग्रंथ बनाया है रामचंद्रिका की ऐसी इस ग्रंथ में भी नाना छंदें हैं।

शंभुनाथकवि त्रिपाठी डौंडिया खेरेवाले सं० १८०९ ए महाराज राजा अचलसिंह बैस डौंडिया खेरे के इहांथे राव रघुनाथसिंह के नाम बैतालपचीसी को संस्कृतसे भाषा किया है और मुहूर्तचिंतामणि ज्योतिषग्रंथ को भाषा में नाना छंदों में बनाया है ए दोनों ग्रंथ सुंदर हैं।

शम्भुनाथमिश्र कवि बैसवारे वाले सं० १९०१ ए कवि राना यदुनाथसिंह बैस खजुरगांवके इहाँथे थोरी अवस्थामें अल्पायु होगया बैस वंशावली और शिवपुराणका चतुर्थखंड भाषामें बनायाहै।

शम्भुप्रसाद कवि शृंगारमें सुन्दर कवित्तहै।

(८) तोष कवि सं० १७०५ ये महाराज भाषाकाव्यके आचार्य्योंमें हैं ग्रन्थ इनका कोई हम को नहींमिला पर इनके कवित्तोंसे हमारा कुतुबखाना भराहुवाहै कालिदास तथा तुलसीजीने भी इनकी कविता अपने ग्रन्थोंमें बहुत सारी लिखीहै।

(९) चिन्तामणि त्रिपाठी टिकमापुर जिले कानपुर वाले सं० १७२९ ए महाराज भाषा साहित्यके आचार्य्योंमें गिनेजातेहैं अन्तर्वेदमें विदित है कि इनके पिता दुर्गापाठ करने नित्य देवीजीके स्थानमें जातेथे वे देवीजी बनकी भुइआं कहाती हैं टिकमापुरसे एक मैल के अंतर पर हैं एक दिन महाराज राजेश्वरी भगवती प्रसन्न ह्वै चारि मुंड दिखाय बोलीं यही चारों तेरे पुत्र होंगे निदान ऐसाही हुवा कि चिंतामणि १ भूषण २ मतिराम ३ जटाशंकर या नीलकण्ठ चारि पुत्र उत्पन्न हुए इनमें केवल नीलकण्ठ महाराज तो एक सिद्ध के आशीर्वाद से कवि हुए शेष तीनों भाई संस्कृत काव्यको पढि ऐसे पंडित हुए कि उनका नाम प्रलय तक बाकी रहैगा इन्हीं के वंश में शीतल और बिहारी लाल कवि जिनका लाल भोग है संवत १९०१ तक विद्यमान थे निदान चिंतामणि महाराज बहुत दिन तक नागपुर में सूर्य्यवंशी भोंसला मकरंदशाहिके इहांरहे और उन्हीं के नाम १ छंदविचार नाम पिंगल बहुत भारी ग्रंथ बनाया और काव्य विवेक २ कविकुलकल्पतरु ३ काव्यप्रकाश ४ रामायण ५ ए पांच ग्रंथ इनके बनाए हुए हमारे पुस्तकालय में मौजूद हैं इनकी बनाई हुई रामायण कवित्त और नाना अन्य छंदों में बहुत अपूर्व है बाबू रुद्रसाहि सुलंकी औ शाहिजहां बादशाह और जैनदी अहमद ने इनको बहुत दान दिए हैं इन्होंने अपने ग्रंथों में कहीं कहीं अपना नाम मणिलाल करिकै कहा है।

चिन्तामणि २ ललित काव्य करीहै।

(१०) कालिदास त्रिवेदी बनपुरा अन्तर्वेदके निवासी सं० १७४९ ये कवि अन्तर्वेदमें बडे नामी गिरामी हुएहैं। प्रथम औरंगजेब बादशाहके साथ गोलकुंडा इत्यादि दक्षिणके देशोंमें बहुत दिन तक रहे तेहि पीछे राजा योगाजीतसिंह रघुवंशी महाराजे जम्बूके इहाँ रहे और उन्हींके नाम बधूविनोद नाम ग्रन्थ महाअद्भुत बनाया और एक ग्रन्थ कालीदास हजारा नाम संग्रह बनाया जिस्में सं० १४८० से लेकर अपने समय तक अर्थात् सं० १७७५ तकके कवि लोगोंके एक हजार कवित्त २१२ कवि लोगोंके लिखेहैं हमको इस ग्रन्थके बनानेमें कालिदासके हजारासे बडी सहायता मिली है और एक ग्रन्थ और जंजीरा बन्दनाम महाविचित्र इन्हीं महाराजका हमारे पुस्तकालयमेंहै इनके पुत्र उदयनाथ कविन्द और पौत्र कवि दूलह बडे महानकवि हुएहैं।

(११) ठाकुर कवि प्राचीन सं० १७०० ठाकुर कविको किसीने कहाहै कि वे असनी ग्रामके बन्दीजनथे संवत् १८०० के करीब मोहम्मदशाह बादशाहके जमानेमें हुएहैं और कोई कहतेहैं कि नहीं ठाकुर कवि कायस्थ बुंदेलखण्डके बासीहैं। किसी बुंदेलखण्डी कविका बयानहै कि छत्र पुर बुंदेलखण्ड में बुंदेला लोग हिम्मति बहादुर गोसाईं के मारने को इकट्ठा थे ठाकुर कविने यह कवित्त (समयो यह बीर बरावने हैं) लिखि भेजा सब बुंदेला चले गए और हिम्मति बहादुरने ठाकुर को बहुत रुपया इनाम दिया हिम्मति बहादुर संवत् १८०० में थे और कवि कालिदास

ने हजारा संवत् १७४९ के करीब बनाया है और उसमें ठाकुरके बहुत कवित्त और ऊपर लिखा हुवा कवित्त भी लिखा है।इससे हम अनुमान करते हैं कि ठाकुर कवि बुंदेलखण्डी अथवा असनी वाले भाट या कायथ कछु होवै पर ए कवि अवश्य संवत् १७०० में थे इनकी काव्य महामधुर लोकोक्ति इत्यादि अलंकारों से भरी पुरी सर्व प्रसन्नकारी है । सवैया इनके बहुत ही चोटीले हैं इन के कवित्त तो हमारे पुस्तकालय में सैकरों हैं पर ग्रंथ कोई नहीं और न हमने किसी ग्रंथ का नाम सुना ।

ठाकुरप्रसाद त्रिपाठी किशुनदासपुर जिले रायबरेली सं० १८८२ ये महान् पंडित संस्कृत साहित्य में महाप्रवीण सारे हिन्दुस्तान में काव्य ही के हेतु फिरि ७२ बस्ते पुस्तकैं केवल काव्य की इकट्ठाकीथीं अपने हाथसेभी नानाग्रन्थ लिखेथे और बुंदेलखण्डमें तौ घर घर कवि लोगोंके इहाँ फिरि फिरि एक संग्रह भाषा कवि लोगोंकी इकट्ठाकीथी रसचन्द्रोदय ग्रन्थ इनका बनाया हुवाहै तत्पश्चात् काशीजीमें गणेश और सरदार इत्यादि कवि लोगोंसे बहुत मेल जोल रहा और अवधदेशके राजा महाराजाओंके इहाँभी गये जब इनका संवत १९२४ में देहान्त हुवा तौ इनके चारों महामूर्ख पुत्रोंने १८।१८ बस्ते बाँटिलिये और कौडियोंके मोल बेंचिडाले हमनेभी प्रायः दोसौ ग्रन्थ अन्तमें मोल लियाथा ।

ठाकुररामकवि इनके कवित्त शान्तरसमें सुंदरहैं ।

ठाकुरप्रसाद त्रिवेदी अलीगंज जिले खीरी विद्यमानहैं सतकविहैं ।

(१२) निवाजकवि जुलाहा बिलग्रामी सं० १८०४ शृंगारमें अच्छे कवित्तहैं ।

निवाज २ ब्राह्मण अन्तर्वेद वाले सं० १७३९ ये कवि महाराजै छत्रशाल बुंदेला परना नरेश के इहाँथे आजमशाहकी आज्ञानुसार शकुंतला नाटकको संस्कृतसे भाषा बनाया एक दोहासे लोगोंको शकहै कि निवाजकवि मुसल्मानथे पर हमने बहुत जांचा तौ १ निवाज मुसल्मान और २ हिन्दू पाये गये हैं ।

दो०—तुम्हैं न ऐसी चाहिये, छत्रशाल महराज । जहँ भगवत गीतापढै, तहँ कवि पढै निवाज ॥ १ ॥

निवाज ३ ब्राह्मण बुंदेलखंडी सं० १८०१ ये कवि भगवंतराइ खींची गाजीपुर वालेके इहांथे ।

(१३) सेनापति कवि वृंदावन बासी १६८० ए महाराज वृंदावनमें क्षेत्र संन्यास लै सारी वैस वहाँहीं व्यतीत किया । काव्यमें इनकी प्रशंसा हम कहांतक करैं अपने समयके भामथे काव्य कल्पद्रुम इनका ग्रंथ बहुतहीसुंदरहै हजारामें इनके बहुत कवित्तहैं ।

(१४) सुखदेव मिश्र कंपिला वासी १७२८ ए कवि भाषा साहित्यके आचार्य्योंमें गिने जाते हैं प्रथम राजा अर्जुनसिंहके पुत्र राजाराज सिंह गौरके इहाँ जाय कविराजकी पदवी पाय वृत्तविचार नाम पिंगल सब पिंगलोंमें उत्तम ग्रंथको रचा तत्पश्चात राजा हिम्मतिसिंह बंधलगोती अमेठीके इहां आय छंदविचार नाम पिंगल बनाया फिरि नवाब फाजिलअली खाँ मंत्री औरंगजेब बादशाहके नाम भाषासाहित्यमें फाजिलअलीप्रकाश नाम ग्रंथ महाअद्भुत रचा ए तीनों ग्रंथोंके सिवाय हमने कहीं लिखा देखाहै कि अध्यात्मप्रकाश १ दशरथराय २ ए दो ग्रंथ औरभी इन्हीं महाराजके किये हुये हैं ।

सुखदेव मिश्र कवि २ दौलतपुर जिले रायबरेली वाले । १८०३ ए महाराज महान् कवि

वैसवारेमें होगये हैं राव मर्दनसिंह वैस डौंडियाखेरेके इहांथे और उन्हींके नाम रसार्णव नाम ग्रंथ नायकाभेदमें बहुत सुंदर बनाया है शंभुनाथ इत्यादि कवि इन्हींके शिष्यथे।

सुखदेव कवि ३ अंतर्वेदी वाले। १७९१ ए कवि महाराजे भगवंत राय खीची असोथर वाले के इहांथे कछु आश्चर्य्य नहीं है कि ए महाराज सुखदेव मिश्र दौलतिपुर वाले न होवें।

(१५) देव कवि प्राचीन देवदत्त ब्राह्मण समानेगांव जिले मैनपुरीके निवासी सं० १६६१ ये महाराज अद्वितीय अपने समयके भाम मम्मट के समान भाषा काव्यके आचार्य होगयेहैं शब्दों में ऐसी समाई कहां है जिनमें इनकी प्रशंसा की जावे इनके बनाये ग्रंथोंकी संख्या आज तक ठीक ७२ हमको मालूम हुईहै तिनमें केवल ११ ग्रंथके नाम जो हमको मालूम हैं लिखे जाते हैं जिन्हें अक्सर हमने भी देखाहै।

१ प्रेमतरंग २ भावविलास ३ रसविलास ४ रसानंदलहरी ५ सुजानविनोद ६ काव्यरसायन पिंगल ७ अष्टयाम ८ देवमायाप्रपंचनाटक ९ प्रेमदीपिका १० सुमिलविनोद ११ राधिकाविलास

देव (काष्ठजिह्वा स्वामी) काशीस्थ। १९११ ए महाराज पंडितराज षट्शास्त्रके वक्ता प्रथम संस्कृत काशीजीमें पढि दैवयोगसे एकबार अपने गुरुसे वादकरि पीछे पछिताय काष्ठकी जीभ मुहँमें डालि बोलना बंद करिदिया पाटीमें लिखिके बातचीत करतेथे उन्हीं दिनों श्रीमन्महाराज ईश्वरीनारायणसिंह काशीनरेशने इनसे उपदेश लै रामनगरमें टिकाया तब ए महाराज भाषामें नाना ग्रंथ बिनयामृत इत्यादि बनाए इन्हींके पद आजतक काशीनरेशकी सभामें गाए जाते हैं।

(१६) पजनेशकवि बुंदेल खण्डी १८७२ ए कवि परनामें थे और मधुप्रिया नाम ग्रंथ भाषा-साहित्यमें अद्भुत बनायाहै इस कविकी अनूठी उपमा अनूठे पद अनुप्रासैं जमक तारीफके योग्य हैं पर टवर्ग शृंगार रसमें और कटु अक्षरोंसे जो अपनी कवितामें भरिदियाहै इस कारणसे इनकी काव्य कविलोगोंके तीररूपी जिह्वाकी निशाना हो रही है इनका नखशिख देखने योग्यहै इन्होंने पारसी विद्यामेंभी श्रम कियाथा।

(१७) घनआनंद कवि। १६१५ ए कवि कविलोगोंमें महाउत्तम कवि होगए हैं।

(१८) घनश्याम शुक्ल असनी वाले १६३५ ए कवि कवितामें महानिपुण बांधवनरेशके इहां थे ग्रंथ तौ पूरा हमने कोई नहीं पाया कवित्त २०० तक इनके हमारे पास हैं कालिदासने भी इनके कवित्त हजारामें लिखेहैं।

(१९) सुंदरकविब्राह्मण ग्वालियरनिवासी स० १६८८ ये महाराज शाहजहां बादशाहके कवि थे पहिले कविरायकी पदवी पाया इनका बनाया हुवा सुंदर शृंगार नाम ग्रंथ भाषासाहित्य में बहुत सुंदर है इन्हीं कविके पदमें यह अगन परा था (सुंदर कोप नहीं सपने) यह कवित्त इस ग्रंथमें है।

सुंदर कवि दादूजीके शिष्य मेवाडदेशके निवासी। इनकी कविता शांतरसमें कुछ अच्छी है सुंदर सांख्य नाम एक इनका बनाया हुआ ग्रंथभी सुना जाताहै।

(२०) सुंदरकवि बंदीजन असनीवाले रसप्रबोध ग्रंथ बनायाहै।

मुरारिदास ब्रजवासी इनके पद राग सागरोद्भवमें हैं।

(२१) बोधाकवि सं० १८०४ इनके कवित्त बहुतही सुंदर हैं।

बोधकवि बुंदेलखण्डी। सं० १८५५ ऐजन्।

(२२) श्रीपतिकवि प्रयागपुर जिले बहिरायच निवासी सं० १७००ये महाराज भाषासाहित्यके आचार्योंमें गिनेजातेहैं इनके बनाएहुए काव्यकल्पद्रुम १ काव्यसरोज २ श्रीपतिसरोज ३ ये तीन ग्रंथ विख्यातहैं हमने ये तीनों ग्रंथ नहीं देखे और न इनके कुल और न जन्मभूमिसे हमको ठीक ठीक आगाही है।

(२३) दयानिधिकवि बैसवारेके सं०१८११ राजाअचलसिंह बैसकी आज्ञानुसार शालिहोत्र ग्रंथ बनाया।

(२४) युगलकिशोरभट्ट कैथल बासी सं०१७९९ ए महाराज मोहम्मद शाह बादशाहके बडे मुसाहिबों में थे इन्होंने संवत् १८०३ में अलंकारनिधि नाम एक ग्रंथ अलंकार में अद्वितीय बनाया है जिस्में ९६ अलंकार उदाहरण समेत वर्णन किये हैं उसी ग्रंथ में ए दो दोहा अपने नाम और सभा के समाचार में कहे हैं।

दोहा—ब्रह्म भट्ट हौं जाति मैं,निपट अधीन निदान। राजा पद मोको दयो, महमद शाह सुजान॥१॥
चारि हमारी सभा में, कोविद कविमतिचारु। सदा रहत आनंद बढे, रसको करत बिचारु॥२॥
मिश्र रुद्रमणि विप्रवर, अरु सुखलाल रसाल। शतंजीव सुगुमान हैं,शोभित गुणनि निशाल॥३॥

युगलकिशोर कवि २ शृंगाररस में कवित्त नीके हैं।

जुगराज कवि बहुतही सरस काव्य इनकी है।

जुगुलप्रसाद चौबे। इनकी बनाई हुई दोहावली बहुत सुंदर काव्य है।

जुगुलदास कवि—पद बनाए हैं।

जुगुलकवि सं० १७५५ इनके बनाए हुए पद अति अनूठे महाललितहैं।

(२५) कविंद (उदयनाथत्रिवेदी) बनपुरा निवासी कविकालिदासजूके पुत्र सं० १८०४ ये कवि अपने पिताके समान महान्कवीश्वरहो गुजरेहैं प्रथम राजाहिम्मतसिंह बंधलगोत्री अमेठी महाराजके इहां बहुत दिनतक रहे और कवितामें अपना नाम उदयनाथ वर्णन करतेरहे जब राजाके नामसे रसचन्द्रोदयनाम ग्रंथबनाया तब राजाने कविंद पदवी दिया तबसे अपनानाम कविंदकरके धरतेरहे। इस ग्रंथके चारिनामहैं रतिविनोदचंद्रिका १ रतिविनोदचंद्रोदय २ रसचंद्रिका ३ रसचंद्रोदय ४ यह ग्रंथ भाषासाहित्यमें महाअद्भुतहैं तेहि पीछे कविंदजी थोरेदिन राजागुरुदत्तसिंह अमेठीके इहाँ रहि भगवंतराइखीची और गजसिंह महाराजै आमेर और राव बुद्धहाडा बूंदीवालेके यहां महामान सन्मानके साथ काल व्यतीत करतेरहे और एक कविंद त्रिवेदी बेतीगांव जिलेरायबरेलीमें भी महान्कवि होगयेहैं।

कविंद २ सखीसुख ब्राह्मण नरवर बुंदेलखंड निवासीके पुत्र सं० १८९४ इन्होंने रसदीपक नाम ग्रंथ बनाया है।

कविंद ३ सरस्वती ब्राह्मण काशीनिवासी सं० १६२२ ये कविन्दाचार्य्य महाराज संस्कृत साहित्य शास्त्रमें अपने समयके भामनु थे। शाहजहां बादशाहके हुकुमसे भाषाकाव्य बनाना प्रारंभ किया और बादशाही आज्ञानुसार कविंद कल्पलता नाम ग्रंथ भाषामें रचा जिस्में बादशाह के पुत्र दाराशिकोह और बेगम साहेबकी तारीफमें बहुत कवित्त हैं।

(२६) गोविंद अटलकवि सं० १६७० इनके कवित्त हजारामें हैं।

गोविंदजी कवि सं० १७५० ऐजन्।

गोविंददासजी व्रजवासी सं० १६१५राग सागरोद्भवमें इनकी कविताहै. ए कवि नाभाजीके शिष्यथे.

गोविंदकवि सं० १७९८ ए कवीश्वर बडे नामी कवि हो गए हैं. इनका बनायाहुवा करुणाभरण ग्रंथ बहुत कठिन और साहित्य में शिरोमणि है।

केशवदास सनाढ्य मिश्र बुंदेलखंडी सं० १६२४ इनका प्राचीन निवास टिहरीथा. राजा मधुकर शाह उडछावाले के इहां आये और वहां उनका बडा सन्मान हुवा राजा इंद्रजीतसिंहने २१ गांव संकल्प दिये तव कुटुंब सहित उडछे में रहने लगे। भाषा काव्यके तौ भाम सम्मट भरता के समान प्रथम आचार्य्य समुझना चाहिये काहेते कि काव्यके दशौ अंग पहिले पहिले इन्हींने कविप्रिया ग्रन्थमें वर्णन किये तेहि पीछे अनेक आचार्य्योंने नानाग्रन्थ भाषामें रचे प्रथम मधुकर शाहके नाम विज्ञानगीता ग्रंथ बनाया औ कविप्रिया ग्रन्थ प्रवीनराइ पातुरीके लिये रचा और रामचंद्रिका राजा मधुकरशाहके पुत्र इन्द्रजीतके नामसे बनाया और रसिकप्रिया साहित्य और राम अलंकृतमंजरी पिंगल ए दोनों ग्रन्थ विद्वज्जनोंके उपकारार्थ रचे। जब अकबर बादशाहने प्रवीनराइ पातुरीके हाजिर न होने और उदूल हुकुमी और लडाईके कारण राजा इन्द्रजीत पर एक करोड रुपया जुर्माना किए तव केशवदासजीने छिपकर राजा बीरबर मंत्रीसे मुलाकात किया और बीरवरजूकी प्रशंसामें (दियो करतार दुहूँ करतारी) यह कवित्त पढा तव राजा बीरवरने महाप्रसन्न ह्वै जुर्माना माफ कराया परन्तु प्रवीणराइको दरबारमें आनेपडा।

केशवदास २ सामान्य कविताहै।

केशवराइ बाबू बघेलखंडी सं० १७३९ इन्होंने नायकाभेदमें एक ग्रन्थ बहुत सुन्दर बनायाहै और इनके कवित्त बलदेवकविने अपने संगृहीत ग्रन्थ सतकवि गिराविलासमें लिखेहैं।

केशवरामकवि इन्होंने भ्रमरगीत नाम ग्रन्थ रचाहै।

बाबू रघुनाथ सिंहके दोहेके अनुसार कवियोंका समय 'शिवसिंह सरोजसे' निरूपण किया जाताहै।

(१) ओली रामकवि सं० १६२१ कालिदासजीने इनकी काव्य अपने हजारेमें लिखाहै।

(२) अकबरका हाल पहले लिखा गयाहै।

(३) अगर कवि सं० १६२६ नीति संबंधी कुंडलिया छप्पय दोहा इत्यादि बहुत बनाएहैं।

(४) अगरदास गलता जयपुर राज्यके निवासी सं० १६९५ इनके बहुत पद रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुममें हैं ए महाराजे कृष्णदास पयअहारीके शिष्यथे और इन महाराजके नाभादास भक्तमाल ग्रंथकर्त्ता शिष्यथे।

(५) करनेशकवि वंदीजन असनीवाले सं० १६११ ये कवि नरहरि कविके साथ दिल्लीमें अकबरशाहकी सभामें जाते आते थे इन्होंने कर्णाभरण १ श्रुतिभूषण २ भूपभूषण ३ ये तीनि ग्रन्थ बनाये हैं।

(६) चतुरविहारीकाव व्रजवासी संवत् १६०५ इनके पद राग सागरोद्भवमें बहुतहैं।

(७) गोपकवि सं० १६९० रामभूषण १ अलंकारचन्द्रिका २ ए दो ग्रन्थ बनाएहैं।

(९) अमरेशकवि सं० १६३५ इनकी कविता महाउत्तमहै कालिदासजीने अपने हजारामें इनकी कविता बहुतसी लिखीहै।

(१०) आशकरनदास कछवाह राजा भीमसिंह नरवरगढ वालेके पुत्र सं०१६१५ पद बहुत बनाए हैं जो कृष्णानंद व्यासदेवके संगृहीत ग्रन्थमें मौजूदहैं।

(११) अजबेस प्राचीन सं० १५७० ये कबि श्रीराजा बीरभानसिंह जोधपुरके इहाँथे और उसी देशके रहनेवाले बंदीजन मालूम होतेहैं।

अजबेस नवीन भाट सं० १८९२ ये कवि श्रीमहाराज बिश्वनाथसिंह बांधव रीवाँनरेशके इहाँथे।

(१२) कादर, [कादिरबख्श मुसल्मान पिहानीवाल] सं० १६३५ कवितामें निपुणथे और सैयद इब्राहीम पिहानीवाल रसखानिके शिष्यथे।

(१४) टोडर, (राजा टोडरमल खत्री पंजाबी) सं० १५८० ये राजा टोडरमल अकबर बादशाहके दीवान आला थे इनके हालातमें तारीख फारसी भरी हुई है अरबी फारसी संस्कृत विद्यामें महानिपुणथे श्रीमद्भागवतको संस्कृतसे फारसीमें उल्था कियाहै और भाषामें नीति संबंधी बहुत कवित्त कहे हैं इन महाराजने दो काम बहुत शुभ हिन्दुस्तानियोंके लिए किए हैं एक तौ पंजाब देशमें खत्रियोंके इहां रिवाज तीनि साला मातमको उठाय केवल वार्षिक रसमको नियत किया दूसरे फारसी हिसाब किताबको ईरान देशके माफिक हिन्दुस्तानमें जारी किया सं० ९९८ हिजरीमें शहर लाहौरमें देहान्त हुआ।

(१६) जैतकवि सं० १६०१ अकबर बादशाहके इहांथे।

(१७) चरणदास ब्राह्मण पंडितपुर जिला फैजाबाद सं० १५३७ सुरोदय ग्रन्थ बनाया।

(१८) चतुर्भुज सुन्दर कविता करी है।

चतुर्भुजदास सं० १६०१ रागसागरोद्भवमें इनके बहुत पद हैं ए महाराज करौलीके राजा स्वामी विठ्ठलनाथजी गोकुलस्थके शिष्यथे अष्टछापमें इनका भी नाम है।

(१९) जीवन कवि सं० १६०८ इनके कवित्त हजारामें हैं।

(२१) ताजकवि सं० १६९२ हजारामें इनके कवित्त हैं।

(२२) होलरायकवि बंदीजन होलपुर जिले बाराबंकी सं० १६४० ए महान कवि अकबरके दरबार तक राजा हरिवंशराइ दिवान कायथ बदरकावासीके वसीलेसे पहुँचे और एक चक पाइ उसीमें होलपुर नाम ग्राम बसाया एक दिन श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी अयोध्यासे लौटते समय होलपुरमें आए होलरायने गोसांईजीके लोटाकी प्रशंसामें कहा।

दोहा—लोटा तुलसीदासको, लाख टकाको मोल।—तब गोसांईजी बोले—
मोल तोल कछु है नहीं, लेहु राय कवि होल ॥ १॥

होलराइने उस लोटाको मूर्तिके समान स्थापन करि उसके ऊपर चबूतरा बांधि पूजन करते रहे हमने अपने आंखसे देखा है कि आज तक उसकी पूजा होती है इस होलपुरमें सिवाय गिरिधर और नीलकण्ठ इत्यादिके कोई नामी कवि नहीं हुए इन दिनों लछिराम और संतबकस ए दो कवि अच्छे हैं यह गाँव आज तक इन्हीं बंदीजनोंके नंबरमें है।

(२३) खेमकवि २ ब्रजवासी सं० १६३० रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुममें इनके पदहैं। एक खेमकवि बुंदेलखंडीहैं।

(२४) जोधकवि सं० १५९० अकबरबादशाहके इहांथे।

१ संवत १८९२ के अजबेस सूरदासके समयके नहीं हैं।

(२५) जोयसीकवि सं० १६९८ इनके कवित्त हजारामेंहैं।

(२६) चंद्रसखी ब्रजवासी सं० १६३८ इनके पद रागसागरोद्भवमें हैं।

(२७) कृष्णदास गोकुलस्थ वल्लभाचार्य्यके शिष्य सं० १६०१ इनके बहुत पद राग सागरोद्भवमें लिखे हैं और इनकी कविता अत्यंत ललित और मधुरहै ए कवि और सूरदास औ परमानंददास और कुंभनदास चारों श्रीवल्लभाचार्य्यके शिष्यथे कृष्णदासजीकी कविता सूरदासकी कवितासे मिलतीथी एकदिन सूरजी बोले आप अपना कोई ऐसापद सुनावो जो हमारी काव्यमें न मिले तब कृष्णदासजीने चारि पद सुनाये उन सब पदोंमें सूरजीने चोरी अपने पदोंकी साबित किया तब कृष्णदासजीने कहा कालिह हम अनूठे पद सुनावेंगे ऐसा कहि सर्व रात्रि इसी शोचमें नहीं सोये प्रातःकाल अपने सिरहाने यह पद लिखाहुवा देखि सूरजीके आगे पढा॥ आवत बने कान्ह गोप बालक संग नैचुकी खुर रेनु छुरित अलकावली॥ सूरजी जान गये कि यह करतूति किसी और ही कौतुकीकी है बोले अपने बाबाकी सहायता लीनी है इनकी गिनती अष्टछापमें है अर्थात् ब्रजमें आठ ८ बडेकवि हुए हैं जैसा तुलसीशब्दार्थप्रकाश ग्रंथमें गोपालसिंहने ब्यौरा अष्टछापका लिखा है इस भांतिसे कि सूरदास १ कृष्णदास २ परमानंद ३ कुंभनदास ४ ए चारों वल्लभाचार्य्यके शिष्य और चतुर्भुज ५ छीतस्वामी ६ नंददास ७ गोविंददास ८ ए चारों विट्ठलनाथ वल्लभाचार्य्यके पुत्रके शिष्य अष्टछाप करिके विख्यात हैं। कृष्णदासजीका बनाया हुवा प्रेमरसरासग्रंथ बहुत सुंदर है।

(२८) छेमकवि २ बंदीजन दलमऊके सं० १५८२ ए कवि हुमायूं बादशाहके इहां थे।

(२९) अमृत कवि संवत् १६०२ अकबर बादशाहके यहां थे।

(३० खानखाना नवाब अब्दुलरहीम खानखाना बैरमखांके पुत्र रहीम और रहिमन छाप है। सं० १५८० ए महाविद्वान् अरबी फारसी तुरकी इत्यादि यामनीभाषा और संस्कृत ब्रजभाषाके बडे पंडित अकबर बादशाहकी आंखकी पुतली थे इन्हींके पिता बैरमकी जवांमरदी और तदबीरसे हुमायूंको दुबारा दिल्लीका राज्य प्राप्तहुआ खानखानाजी पण्डित कवि मुल्लाशायर ज्योतिषी और सब गुणवान मनुष्योंके बडे कदरदान थे इनकी सभा रातदिन विद्वज्जनोंसे भरी पुरी रहती थी संस्कृतमें इनके बनाए श्लोक बहुत कठिन हैं और भाषामें नवोरसके कवित्त दोहा बहुतही सुंदर हैं नीति संबन्धी दोहा ऐसे अपूर्व हैं कि जिनके पढनेसे कभी पढनेवालेको तृप्ति नहीं होती फारसीमें इनका दिवान बहुत उमदा है वाकियात बाबरी अर्थात् बाबर बादशाहने जो अपना जीवनचरित्र तुरकी जबानमें आपही लिखा है उस्को इन्होंने फारसी जबानमें तर्जुमा किया है ७२ वर्षकी अवस्था में सन् १०३६ हिजरीमें सुरलोकको सिधारे।

श्लोक—आनीता नटवन्मया तव पुरः श्रीकृष्ण या भूमिका व्योमाकाशखखांबराब्धिवसवस्त्वत्प्रीतये ऽद्यावधि॥ प्रीतो यद्यसि मां निरीक्ष्य हि भगवन्मत्प्रार्थितं देहि मे नो चेद्ब्रूहि कदापि मानय पुनर्मामीदृशीर्भूमिकाः॥ १॥

शृङ्गार सोरठा—भाषा।

पलटि चली मुसक्याय, दुति रहीम उजियाय अति। बाती सीं उसकाय, मानौं दीनी दीप की॥१॥
गई आगि उरलाय, आगि लेन आई जु तिय। लागी नहीं बुझाय, भभकि भभकि वरि वरि उठै॥२॥

नीति, दोहा—खीरा शिर धरि काटिये, मलिये निमक लगाय।
करुये मुखको चाहिये, रहिमन यही सजाय॥ १॥

फारसी।

शुमार शौक नदानिस्तअमकि ताचंदअस्त, जुज ई कद्र कि दाम सख्त आरजूमन्द अस्त,
नदाना दानम्, वनैदानम्, ईकदरदानम्, कि पाय ताबसरम हचें हस्तइर बंदस्त;
एक दिन खानखानाने यह आधा दोहा बनाया--

तारायन शशि रैन प्रति, सूर होहिं शशि गैन।

औ दूसरा चरण नहीं बना रोज रात्रि को यह आधा दोहा पढा करते थे दिल्लीमें एक खत्रानी ने यह हाल सुनि आधा चरण बनाय बहुत इनाम पाया।

तदपि अँधेरो है सखी, पीव न देखे नैन॥ १॥

(३१) जगनकवि सं० १६९२ शृङ्गाररस में कवित्त चोखे हैं।

(३२) ऊधोराम कवि सं० १६१० इनकी कविता कालिदास जू ने अपने हजारामें लिखीहै।

(३३) कमाल कवि (कबीरजू के पुत्र) कायस्थ सं० १६२२ इनकी कविता कालिदासने हजारा में लिखी है।

(३४) जमालउद्दीन पिहानीवाल सं० १६२५ कवि अच्छे थे।

(३५) जगनंद कवि वृंदाबनवासी सं० १६५८ इनके कवित्त हजारा में हैं।

(३७) जमाल सं०१६०२ ए कवि गूढ कवि कूट में बहुत निपुण थे इनके दोहा बहुत सुंदर हैं।

(३८) जलालउद्दीन कवि सं० १६१५ हजारा में इनके कवित्त हैं।

(३९) कल्याणदास ब्रजवासी कृष्णदास पय अहारीके शिष्य सं० १६०७ इनके पद रागसागरोद्भव में हैं। पुनः कल्याण सिंह भट्ट एक और है।

(४०) फैजी शेख अवल फैज नागौरी शेख मुबारक के पुत्र सं० १६०८ इनको छोटे बडे विद्वान् भली भांति जानते हैं कि ए फैजी अरबी फारसी संस्कृत भाषामें महानिपुण थे इनका ग्रंथ हमने भाषामें नहीं पाया केवल दोहरा मिलेहें ए अकबरके कविथे।

(४१) ब्रह्मकवि राजा बीरबल ब्राह्मण अंतर्वेदिवाले सं० १५८५ इनका नाम प्रथम महेशदासथा ए कान्यकुब्ज दुबे ब्राह्मण जिले हमीरपुरके किसी गांवके रहनेवाले थे. काव्य पढि लिखि राजा भगवानदास आंबेर नरेश के इहाँ कवि लोगोंमें नौकर होगये राजा भगवानदास इनकी कवितासे बहुत प्रसन्न ह्वै अकबर बादशाहको नजरके तौर इनको देदिया ए कवि काव्यमें अपना नाम ब्रह्म करिके वर्णन करते थे अकबर कविताके सिवाय इनमें सब प्रकारकी बुद्धि पाय पूर्व संस्कारके अनुसार प्रथम अपना मित्र बनाय कविराइकी पदवी दिया तेहि पीछे पांच हजारीका मनसब औ मुसाहेब दानिश वरराजे बीरबरका खिताब दिया इनके जीवनचरित्र विचित्र तवारीखोंमें लिखे हैं सन ९९० हिजरीमें बिजौर इलाके काबुलमें पठानोंके हाथसे समरभूमिमें मारेगए इनका समग्र ग्रंथ तो कोई हमने देखा सुना नहीं पर इनकी कवितांई बहुतही फुटकर हमारे पुस्तकालयमें है सूरदासजी ने कहा है।

दोहा।

सुंदर पद कविगंग के, उपमाको बरबीर। केशव अर्थ गंभीर को, सूर तीनि गुण तीर॥

राजा बीरबर ने अकबरके हुक्मसे अकबरपुर गांव जिले कानपुरमें बसाय आप भी अपना निवासस्थान उसीको नियत किया और नारे नौल कसबामें इनकी पुरानी इमारतें बडी

आलीशान आज तक मौजूद हैं चौधराई का ओहदा जो बहुधा ब्राह्मणोंको मिला और गोबध बंद हुवा और हिंदू मुसलमानों में बहुत मेलजोल होगया ए सब बातें इन्हीं महाराज की कृपा से हुई थीं।

(४२) फ़हीम शेख अबदुल फजल फैजीके कनिष्ठ सहोदर सं० १५८० इनके केवल दोहरा हमने पाये हैं ग्रंथ कोई नहीं मिला ए अकबरके वजीर थे ।

(४३) अभयराम सं० १६०२ कालिदास जीने इनकी काव्य अपने हजारे में लिखा है ।

(४४) परसिद्धकवि प्राचीन सं० १५९० ए महान् कवीश्वर खानखानाके इहांथे ।

(४५) विट्ठल विपुल २ गोकुलस्थ श्रीस्वामी हरिदासके शिष्य १५८० इनके पद रागसागरोद्भवमेंहैं ए महाराज मधुबनमें बहुधा रहाकरतेथे ।

(४६) रहीम कवि ए रहीमकवि खानखानाके सिवाइ दूसरे रहीमहैं कविता इनकी सरसहै काव्यनिर्णयमें दासकविने इनका नाम एक कवित्तमें लिखाहै परंतु दोनों रहीम अर्थात् अबदुलरहीमखानखाना और इनरहीमकी फुटकर काव्यका भिन्न भिन्न करना कठिनहै ।

कवित्त—सूर केशौ मंडन बिहारी कालिदास ब्रह्म चिंतामणि मतिराम भूषण सो जानियें।नीलकंठ नीलाधर निपटि नेवाज निधि नीलकंठमिश्र सुखदेव देव मानियें ॥ आलम रहीम खानखाना रसलीनवली सुंदर अनेक गनगनती बखानियें । ब्रजभाषाहेत ब्रजसवकीन अनुमान एते एते कविनकी वाणीहूं ते जानियें ॥ १ ॥

(४७) अमरसिंह हाडा जोधपुरके राजा सं० १६२१ ए महाराज अमरसिंह श्रीहाडावंशावतंस सूरसिंहके पौत्रहैं जिन सूरसिंहने छः लाख रुपया एक दिनमें छः कवि लोगोंको इनाम दियाथा और जिनके पिता गजसिंहने राजपुतानेके कविलोगोंको धनाधीश करदियाथा राजा अमरसिंहकी तारीफ़में जो बनवारी कविने यह कवित्त कहाहै कि (हाथकी बडाई की बडाई जमधरकी) सो इसकी बाबत टाड साहेबकी किताब टाडराजिस्तानसे हम कछु लिखते हैं । प्रगटहो कि राजा अमरसिंह हाडा महागुणगाहक और साहित्यशास्त्रके बडे कदरदान और खुदभी महाकविथे । इन्हीं महाराजने पृथ्वीराजरायसा चंदकवि कृतको सारे राजपुतानेमें तलाश कराय ६९ उनहत्तर खंड तक जमा किया जो अब सारे राजपुतानेमें बडे बडे पुस्तकालयोंमें मौजूद है. शाहजहां बादशाहके इहां अमरसिंहका मनसब तीन हजारीथा जो कि अमरसिंह बहुधा सैर शिकारमें रहा करतेथे इस लिए एकदफे शाहजहांने नाराज ह्वै कछु जुर्माना किया और सलावतिखां बख्शी उलमुमालिकको जुर्माना वसूल करनेको नियत किया अमरसिंह महाक्रोधाग्निसे प्रज्वलित दरबारमें आया। पहिले एक खंजरसे सलावतिखांका काम तमाम किया पीछे शाहजहां परभी तलवार आबदार झारी तलवार सितूनमें लगी बादशाह तौ भागबचे अमरसिंहने पाँच और बडे सरदार मुग़लोंको मारि आपभी उसीजगह अर्जुन गौर अपने सालेके हाथसे मारेगये विस्तारके भयसे संक्षेपसे लिखाहै.

(४९) दीलहकवि सं० १६२५

(५०) नरोत्तमदास ब्राह्मण बाडी ज़िले सीतापुरवाले सं० १६०२ सुदामा चरित्र बनायाहै मानो प्रेमसमुद्र बहायाहै ।

(५१) चेतनचंद्रकवि सं० १६१६ राजाकुशलसिंहसेंगर वंशावतंसकी आज्ञानुसार अश्वविनोद नाम शालिहोत्र बनाया ।

(५२) बारककवि सं० १६५५

(५५) विद्यादास ब्रजबासी सं० १६९० इनके पद रागसागरोद्भवमें हैं।

(५६) छीतस्वामी ब्रजबासी सं० १६०१ इनके पद बहुत रागकल्पद्रुममेंहैं ए महाराज बल्लभाचार्य्यके पुत्र बिट्ठलनाथजीके शिष्यथे इनकी गिनती अष्टछापमेंहै।

(५७) भगवत रसिक वृंदावननिवासी माधवदास जीके पुत्र हरिदास जीके शिष्य सं० १६०१ इनकी कुंडलियां बहुत सुंदरहैं।

(५८) छत्रकवि सं० १६२९ विजयमुक्तावली नाम ग्रन्थ अर्थात् भारतकी कथा बहुतही संक्षेपसे सूचीपत्रके तौरसे नानाछंदोंमें वर्णन कियाहै।

(५९) गदाधर मिश्र ब्रजवासी सं० १५८० इनके पद रागसागरोद्भवमें हैं इनका बनाया हुवा यह पद 'सखी हौं श्यामके रंग रंगी। देखि बिकाय गई वह मूरति सूरति हाथ बिकी।' देख स्वामी जीव गोसाई जो उस समय बडे महात्मा थे गदाधर भट्टसे बहुत प्रसन्न हुए।

(६०) मानसिंह महाराजै कछवाह आमेरवाले सं० १५९२ ए महाराज कवि कोविदोंके बडे कदरदानथे हरिनाथ इत्यादि कवीश्वरोंको एक एक दोहामें लक्ष लक्ष रुपया इनाम दिया इन्होंने अपने जीवनचरित्रकी किताब बहुत विस्तारपूर्वक बनायाहै जिस्का नाम मानचरित्रहै उसी ग्रंथमें लिखाहै कि जब राजा मानसिंह काबुलकी ओर अकबरके हुकुमसे चले और अटक नदीपर पहुँचके धर्म्मशास्त्रको विचारि उतरनेमें शोच बिचार करने लगे और अकबर शाहको लिखा तब अकबरने यह दोहा लिखा।–

दोहा–सबै भूमि गोपालकी, तामें अटक कहा। जाके मनमें अटकहै, सोई अटक रहा॥ १॥

यह दोहा पढ़ि मानसिंह अटकपार जाय स्वामिकार्य्यमें बडी वीरता करी॥

(६१) लालनदास ब्राह्मण दलमऊ वाले सं० १६५२ ए महाराज बडे महात्मा हो गुजरे हैं इनके कवित्त शांतरसमें हैं और हजारामें भी कालिदासने इनका नाम लिखाहै। एक और मोतीलाल कवि हुएहैं।

(६२) मोतीलाल कवि वांसी राज्यके निवासी सं० १५९७ गणेशपुराण भाषामें बनाया। एक और मोतीलाल कवि हुए हैं।

(६३) हरिदास स्वामी वृंदावन निवासी सं० १६४० इन महाराजका जीवनचरित्र भक्तमाला में है इहां केवल हमको काव्यहीका वर्णन करना अवश्य है सो संस्कृतकाव्यमें जयदेव कवि से इनकी कविता कम नहीं है और भाषामें इनके पद सूर और तुलसीके पदोंके समान मधुर और ललित हैं इन्होंने बहुत ग्रंथ बनाये हैं पर हमने इनकी कविता केवल वही देखा है जो राग सागरोद्भव रागकल्पद्रुममें है तानसेनको इन्हीं महाराजने काव्य और संगीतविद्या पढ़ाया था।

(६४) हरिनाथ कवि महापात्र बंदीजन असनीवाले सं० १६४४ ए महान् कवीश्वर नरहरि जूके पुत्र बडे भाग्यवान् पुरुषथे जहां जिस दरबारमें गये लाखों रुपया हाथी घोडे गांव रथ पालकी पाय लौटे श्रीबांधवनरेश राजाराम बघेलेकी प्रशंसामें यह दोहा पढ़ा।

दोहा–लंका लौ दिल्ली दई; साहि विभीषण काम। भये बघेलो राम सों, राजा राजाराम॥ १॥

इस दोहा पर एक लक्ष रुपया इनाम पाया। और राजा मानसिंह सवाई आमेरवाले के पास ए दोहा पढ़ि दो लक्ष रुपया दान पाया।

दोहा। बलिबोई कीरति लता, कर्ण करी द्वै पात। सींची मान महीपने, जब देखी कुँभिलात॥१॥

जाति जातिते गुण अधिक, सुन्यो न अजहूं कान। सेतु बांधि रघुवर तरे; हेला दै नृप मान ॥ २॥

जब हरिनाथ जू ए रुपया और सब सामानलै घरको चले तौ मार्गमें एक नागापुत्र मिला और उसने हरिनाथ जू की प्रशंसामें यह दोहा पढा।

दोहा। दान पाइ दोई बढे, की हरि की हरिनाथ। उन बढि ऊंचे पग किये, इन बढि ऊंचे हाथ॥१॥

हरिनाथने सब धन धान्य जो पाया था सब इसी नागापुत्रको दै आप रीते हाथ घरको चले आए और अपनी और अपने पिताकी कमाई तमाम उमर इसी भाँतिसे लुटाते रहे।

(६६) मानराय बंदीजन असनीवाले सं० १६८० अकबरके यहांथे।

(६७) रघुनाथराय कवि सं० १६३९ यह कवीश्वर राना अमरसिंह जोधपुरके इहांथे।

(६८) गणेशजी मिश्र सं० १६१९।

(६९) कबीर (कबीरदास) जोलाहा कासीवासी सं० १६१० इनके दो ग्रंथ अर्थात् बीज १ रामैनी २ मेरे पास हैं औ इनके चरित्र तो सब मनुष्योंपर विदित हैं कालिदास जू ने हजारामें इनका नाम भी लिखाहै इसलिये हमने भी लिखदिया।

(७०) लीलाधरकवि सं० १६१९ए कवि महाराज गजसिंह जोधपुरके इहांथे और इनका प्रमाण सब कवि करते चले आए हैं।

(७१) नाथ कवि, नाथ कविके नामसे मालूम नहीं होसक्ता कि नाथ कितने हुए हैं जैसे उदयनाथ, काशीनाथ, शिवनाथ, शंभुनाथ, हरिनाथ इत्यादि कवि लोगोंने नाथ करके अपना भोग वर्णन कियाहै जहां तक हमको मालूम हुआ तहांतक हर एक नाथ की कविता अलग अलग वर्णन करी है। नाथकवि ब्रजवासी गोपालभट्ट ऊंचगांव वालेके पुत्र इनकी काव्य रागसागरोद्भवमें पट्ऋतु इत्यादि सुंदर है।

(७२) दामोदरदास ब्रजवासी सं० १६२२ इनके पद रागसागरमें हैं एक और दामोदर कवि हैं।

(७३) दीलदार कवि सं० १६९० हजारामें इनकी काव्य है।

(७४) दौलत कवि सं० १६९१।

(७५) नागर कवि सं० १६४८ हजारामें इनके कवित्त हैं।

(७६) दास (भिखारीदास कायस्थ) अरवल बुंदेलखण्डी सं० १७८० ए महान् कवि भाषासाहित्यके आचार्य्य गिने जाते हैं छंदार्णव नाम पिंगल १ रससारांश २ काव्यनिर्णय ३ शृंगारनिर्णय ४ बागवहार ५ ए पाँच ग्रंथ इनके बनाये हुए अतिउत्तम काव्यके हैं।

दास २ बेनीमाधव दास पसका जिले गोंडा सं० १६५५ ए महात्मा गोस्वामी तुलसीदास जू के शिष्य उन्हींके साथ रहते रहे हैं और गोसाईंजी के जीवनचरित्र की एक पुस्तक गोसाईंचरित्र नाम बनाया है संवत् १६९९ में देहांत हुवा।

(७७) नंदनकवि सं० १६२५ ए महाराज सतकवि होगए हैं हजारामें इनका नामहै।

(७८) हितहरिवंश स्वामी गोसाईं वृंदावननिवासी व्यास स्वामीकेपुत्र संवत् १५५९ इनके पिता व्यासजीने राधावल्लभी संप्रदायको चलाया ए देववंदके रहनेवाले गौडब्राह्मणथे हितहरिवंश जी महान्कविथे संस्कृतमें राधासुधानिधि नाम ग्रंथ और भाषामें हित चौरासीनाम ग्रंथ महासुंदर बनायाहै।

(७९) सेनकवि नापति बांधवगढके सं० १५६० हजारामें इनके कवित्तहैं ए कवि स्वामी रामानंदजीके शिष्यथे।

(८०) नारायणदास कवि सं० १६१५ हितोपदेश राजनीतिको भाषामें छंदबद्ध रचाहै।

(८२) नंदलालकवि सं० १६०१ कवित्त सुंदर हजारामें इनके कवित्तहैं।

(८४) रसखानकवि सैदय इबराहीम पिहानीवाले सं० १६३१ ए कवि मुसलमानथे श्रीवृंदावनमें जाय कृष्णचंद्रकी भक्तिभावमें ऐसे डूबे कि फिर मुसल्मानी त्याग करि माला कंठी धारण किए हुए वृंदावनकी रजमें मिलिगए इनकी कविता निपट ललित माधुर्य्यतासे भरीहुई है इनकी कथा भक्तमालमें पढने योग्य है।

(८५) नाभादास कवि नाम नाराणदास महाराष्ट्र दक्षिणी सं० १६४० इनको स्वामी अग्रदासजीने गलता नाम इलाके आमेरमें लाय अपना शिष्य बनाय भक्तमाल नाम ग्रंथ लिखने की आज्ञाकरी नाभाजी ने ११८ छप्पय छन्दमें इस ग्रंथको रचा तेहि पीछे स्वामी प्रियादास वृंदावनीने उस्का तिलक कवित्तोंमें किया तेहि पीछे लालजी कायथ कांधलाके निवासी वे सन् ११५८ हिजरी में उसीका टीका बनाय भक्त उरबासी नाम रक्खा इनदिनों उसी भक्तमालको महारसिक भगवत् भक्त तुलसीराम अगरवाले मीरापुर निवासीने उर्दूमें उल्थाकरि भक्तमाल प्रदीपन नाम धरा है नाभादासकी विचित्रकथा भक्तमालमें लिखी है।

(८६) नरवाहनजी कवि भौगाँव निवासी सं० १६०० ए कवि स्वामी हितहरिवंशजीके शिष्य थे इनके पद बहुत विचित्रहैं कथा इनकी भक्तमालमें है।

(८७) नरसिया कवि अर्थात् नरसीजी जूनागढ निवासी सं० १५९० इनके पद रागसागरोद्भवमें है।

(८८ नारायणभट्ट गोसाईं गोकुलस्थ ऊंचगांव बरसानेके समीपके निवासी सं० १६२० इनके पद रागसागरोद्भवमें हैं ये महाराज बडेभक्तथे वृंदाबन मथुरा गोकुल इत्यादिमें जे तीर्थस्थान लुप्तहोगयेथे उन सबको प्रगट करि रासलीलाकी जड इन्होंने प्रथम डालीहै।

(८९) तानसेनकवि ग्वालियर निवासी सं० १५८८ ए कवि मकरंद पाँडे गौड ब्राह्मणके पुत्रथे प्रथम श्रीगोसाईं स्वामी हरिदासजू गोकुलस्थके शिष्यहैं काव्य विद्याको यथावत् सीखा तत्पश्चात् शेख महम्मद गौस ग्वालियरवासीके पास जाय संगीतविद्याके लिये प्रार्थनाकरी शाहसाहेब तंत्रविद्या में अद्वितीयथे बरन् मुसलमानोंने इन्हींको इसविद्याका आचार्य्य सब तवारीखोंमें लिखाहै शाहसाहेबने अपनी जीभ तानसेनकी जीभमें लगाय दिया उसीसमयसे तानसेन गानविद्यामें महानिपुण होगए इनकी प्रशंसामें आईन अकबरीमें ग्रंथकर्त्ता फहींमने लिखाहै ऐसा गानेवाला पिछले हजारामें कोई नहीं हुवा निदान तानसेन दौलतिखां शेरखां बादशाहके पुत्रपर आशिकहै उनके ऊपर बहुतसीकविता करी तेहि पीछे दौलतिखांके मरनेपर श्रीबांधवनरेश रामसिंह बघेलाके इहां गए और वहांसे अकबर बादशाहने अपने इहां बुलाय लिया तानसेन और सूरदासजीसे बहुत मित्रताथी तानसेन जीने सूरदासकी तारीफमें यह दोहा बनाया।

दो०—किधौं सूरको शर लग्यो, किधौं शूरकी पीर। किधौं सूरको पदलग्यो, तनमनधुनत शरीर॥१॥

तब सूरदासजीने यह दोहा कहा।

दोहा। विधना यह जिय जानिकै,शेश न दीन्हे कान। धरा मेरु सब डोल तो, तानसेन की तान॥२

इनके ग्रंथ रागमाला इत्यादि महाउत्तम काव्यके ग्रंथ हैं।

(९०) निपट निरंजन स्वामी सं० १६५० ए महाराज गोस्वामी तुलसीदासके समान सिद्ध होगए हैं और इनके ग्रंथोंकी ठीक ठीक संख्या मालूम नहीं होती पुरानी संग्रहीत पुस्तकोंमें सैकडों कवित्त हम इनके देखतेहैं हमारे पुस्तकालयमें शांत सरसी १ और निरंजन संग्रह २ दो ग्रंथ इन महाराजके बनाये हुए हैं इनकी कवितामें बहुत बडा प्रताप यह है कि मनुष्य कैसाही काम क्रोध इत्यादि पाशोंसे बद्ध होवै इनकी वाक्यके श्रवण कीर्त्तनसे निःसंदेह मुक्त होजावे।

(९१) इंद्रजीत त्रिपाठी वनपुरा अंतर्वेदीवाले सं० १७३९ औरंगजेबके नौकरथे।

(९२) पृथ्वीराज कवि सं० १६२४ हजारामें इनके कवित्तहैं ये कवि बीकानेरके राजा संस्कृत और भाषाके बडे कविथे ❀।

(९३) लक्ष्मीनारायण मैथिल सं० १६८० ये कवि खानखानाके यहाँ थे।

(९४) हरिकवि ये महान् कविथे इन्होंने चमत्कारचंद्रिका नाम ग्रंथ भाषाभूषणका टीका १ और कविप्रियाभरण नाम ग्रंथ कविप्रियाका तिलक २ विस्तारपूर्वक बनायाहै और तीनों काण्ड अमरकोश भाषा कियाहै।

(९५) बलिभद्र सनाढ्य उडछेवाले केशवदास कविके भाई सं० १६४२ इनका नखशिख सारे कवि कोविदोंमें महाप्रमाणिक ग्रंथ है और भागवतपुराणपर टीका बहुत सुंदर किया है।

(९६) विठ्ठलनाथ गोकुलस्थ गोसाई वल्लभाचार्यके पुत्र सं० १६२४ ये महाराज वल्लभाचार्य्य जीके पुत्र परमभक्तवात्सल्यनेष्ठाके हुएहैं इनके सात पुत्रोंकी सात गादियाँ गोकुलजीमें चली आती हैं इनकी कविता पद इत्यादि बहुतसे रागसागरोद्भवमें हैं।

(९७) विश्वनाथ कवि प्राचीन सं० १६९९

(९८) पद्मनाभजी व्रजवासी कृष्णदास पयहारी गलताजीके शिष्य सं० १५६० इनके पद बहुत रागसागरोद्भवमें हैं अर्थात् कील्ह, अग्रदास, केवलराम, गदाधर, देवा, कल्याण, हठीनारायण पद्मनाभ ये सब कृष्णदासजीके शिष्य, और महान्कवि हुएहैं और अग्रदासके शिष्य नाभादासथे।

(९९) प्रवीनराइ पातुरी उडछा बुंदेलखण्डवासिनी सं० १६४० इस वेश्याकी तारीफमें केशव दासजूने कविप्रिया ग्रंथकी आदिमें बहुत कुछ लिखा है इस्के कवि होनेमें कुछ संदेह नहीं इस्का बनाया हुवा ग्रंथ तो हमको नहीं मिला केवल एक संग्रह मिली है जिसमें इसके सैकरों कवित्त बनाए हुए हैं हमने किसी तवारीखमें लिखा नहीं देखा कि बादशाह अकबरने प्रवीनको बोलाया केवल विदित है कि अकबरने प्रवीनकी प्रवीनताई सुनी दरबारमें हाजिर होनेका हुकुम दिया तो प्रवीनरायने प्रथम राजा इंद्रजीतकी सभामें जाय ये तीनि कूट कवित्त पढे (आईहौं बूझन मंत्र) तेहि पीछे जब प्रवीन सभामें बादशाहके गई तो बादशाहसे प्रश्नोत्तर हुए।

बादशाह–युवन चलत तिय देहते, चटकि चलत किहि हेतु।
प्रवीन–मन्मथ वारि मसालको, सैंति सिहारो लेतु ॥ १ ॥
बादशाह–ऊंचे ह्वै सुर वश किये, सम ह्वै नर वश कीन।
प्रवीन–अब पताल वश करनको; ढरकि पयानो कीन ॥ २ ॥

इस्के पीछे जब प्रवीनने यह दोहा पढ़ा।

विनती राय प्रवीनकी,सुनिये शाह सुजान। जूंठी पतरी भखतहैं, बारी बायस श्वान ॥ १ ॥

तब बादशाहने बिदाई दई और प्रवीन इंद्रजीतके पास आई।

(१००) भगवानदास निरंजनी भृत्यहरि सत कवित्तोंमें भाषा किया है। पुनः भगवानदास मथुरा निवासी सं० १५९० रागसागरोद्भवमें इनके पदहैं।

(१०१) मनोहर कवि (राजा मनोहरदास) कछवाहा सं० १५९२ ये महाराज अकबर शाह-के मुसाहिब फारसी संस्कृत भाषाके महान् कवि थे फारसीमें अपना नाम (तौसनी) करिके वर्णन करतेथे।

❀ मार्कंडेय कविने मुझसे यह कवित्त कहाथा–

कवित्त–जबतें सुनींहै बंन तबतें न मोको चैन पातीपढी नेकु सो विलंबनालगावैगो। लैके यमदूतसो समस्त राजपूत आज आठघडी आगरामें उद्दम मचावैगो ॥ कहै पृथ्वीराज प्रिया नेकु उर धीर धारो चिरजीव राना ये मलेछन भगावैगो। मान को मरदि मान परबल प्रतापसिंह बब्बर लौं तडपि अकब्बर पै आवैगो ॥

(१०२) परमानंददास ब्रजबासी वल्लभाचार्य्यके शिष्य सं० १६०१ इनके पद रागसागरोद्भव में बहुत हैं और इनकी गिनती अष्टछापमें है ।

(१०३) नवीनकवि बहुतही सुंदर कवित्त शृंगाररसके हैं ।

(१०४) माणिकचंद्र कवि सं० १६०८ रागसागरोद्भवमें इनके पद हैं ।

(१०५) निहाल प्राचीन सं० १६३५ ।

(१०६) मुकुंदसिंह हाडा महाराजे कोटा सं० १६३५ ये महाराजा शाहजहां बादशाहके बडे सहायक और कविताईमें महानिपुण कवि कोविदोंके चाहकथे ।

(१०७) मुबारक सैयदमुबारक अली बिलग्रामी सं० १६४० इनकी काव्य तौ विदित है इनका ग्रंथ कोई हमने नहीं पाया कवित्त सैकरों हमारे पुस्तकालयमें हैं ।

(१०८) बीरबर (बीरबर कायस्थ दिल्ली निवासी) सं० १७७७ ये महान्कविथे इनका बनाया हुवा कृष्णचन्द्रिका नाम ग्रंथ साहित्यमें बहुत सुन्दर और हमारे पुस्तकालयमें मौजूदहै ।

(११०) दिनेशकवि इनका नखशिख बहुतही विचित्रहै ।

(१११) दानकवि शृंगारमें सरस कविताई है ।

(११२) तोषीकवि ।

(११३) तेहीकवि ।

(११४) धीरज नरिंद महाराजै इंद्रजीतसिंह बुँदेला उडछावाले सं० १६१५ इन्हीं महाराजके इहाँ कवि केशवदासथे और प्रवीनराइ पातुरीभी इन्हींके सभामें विराजमानथी इनके समयमें उडछा वडी राजधानीथी । ❀

(११७) श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी सं० १६०१ ये महाराज सरवरिया ब्राह्मण राजापुर जिले परागके रहनेवाले प्रायः संवत् १५८३ के करीब उत्पन्न हुए थे और सं० १६८० में स्वर्गवास हुवा इनके जीवनचरित्रकी पुस्तक बेनीमाधवदास कवि पुसकाग्रामवासीने जो इनके साथ साथ रहे हैं बहुत विस्तारपूर्वक लिखी है उसके देखनेसे इन महाराजके सब चरित्र प्रगट होतेहैं इस पुस्तकमें ऐसे विस्तार कथाको हम संक्षेप करिके वर्णनकरैं निदान गोसाईजी बडे महात्मा रामोपासक महायोगी सिद्ध होगएहैं इनके बनाये ग्रंथोंकी ठीक ठीक संख्या हमको मालूम नहीं हुई केवल जो ग्रंथ हमने देखे अथवा हमारे पुस्तकालय में हैं उनका जिकर किया जाता है प्रथम ४९ कांड रामायण बनाया है इस तफसीलसे ।

१ चौपाई रामायण ७ कांड । २ कवित्तावली ७ कांड। ३गीतावली ७ कांड। ४छंदावली ७ कांड। ५ बरवै ७ कांड । ६ दोहावली ७ कांड । ७ कुंडलिया ७ कांड । और सिवाय इन ४९ कांडके १ सतसई । २ रामसलाका । ३ संकटमोचन । ४ हनुमतबाहुक । ५ कृष्णगीतावली । ६ जानकीमंगल । ७ पार्वतीमंगल । ८ कडकाछंद । ९ रोलाछंद । १० झूलनाछंद । इत्यादि औरभी ग्रंथ बनाएहैं अन्तमें विनयपत्रिका महाविचित्र मुक्तिरूप प्राज्ञानंद सागरग्रंथ बनायाहै चौपाई गोसाई महाराजकी ऐसी किसी कविने बनाय नहीं पाया और न बिनयपत्रिकाके समान अद्भुतग्रंथ आज तक किसी कवि महात्माने रचा इस कालमें जो रामायण न होती तौ हम ऐसे मूर्खोंका बेडा पार

* (११९) श्रीपति कविका वर्णन पहले हुआहै परंतु वह इस दोहेका नहीं है । रत्नाकर कविने हमसे कहा है कि श्रीपति कवि अकबर बादशाहके नौकर थे परंतु खुशामदी नथे कई एक कवियोंने मिलकर अकबर बादशाहके सामने [करो मिल आश अकब्बरकी] समस्या दिये परन्तु कविने स्पष्ट बादशाहको फटकारा यह कवि भक्त था वहतो कवितासे स्पष्ट ही मालूम हुआ । अबके सुलताँ फ़ुनियान समान हैं बांधत पाग अटब्बरकी । तजि एक को दूजो भजै जो कोऊ तव जीभ कटै वह लब्बरकी ॥ शरणागत श्रीपति श्रीपति की नाहिं त्रास जरा कोऊ जब्बरकी । जिनको नहिं आश कछु हरिकी सो करो मिलि आश अकब्बरकी

नहीं लगता गोसाईंजी श्रीअयोध्याजी, मथुरा, वृंदावन, कुरुक्षेत्र, पराग, वाराणशी, पुरुषोत्तमपुरी, इत्यादि क्षेत्रोंमें बहुत दिनतक घूमते रहेहैं सबसे अधिक श्रीअयोध्या; काशी, पराग और उत्तराखण्ड, बंशीबट, इत्यादि जिले सीतापुरमें रहेहैं। इनके हाथकी लिखीहुई रामायण जो राजापुरमेंथी वह खण्डित होगई है पर मलिहाबाद में आजतक सम्पूर्ण ७ काण्ड मौजूद हैं १ पत्रा नहीं है विस्तार भयसे अधिक हालात हम नहीं लिख सके दो दोहा पर इन महाराजका वृत्तांत समाप्त करते हैं।

दोहा—कविता करता तीनि हैं, तुलसी केशव सूर*॥ कविता खेती इन लुनी, सीला बिनत मजूर॥१॥
तुलसी रवि सूरज शशी, उडगण केशव दास॥ अबके कवि खद्योत सम; जहँ तहँ करत प्रकाश॥२॥

इति श्रीसूरदासजीका जीवनचरित्र समाप्त।

* बाबू रघुनाथसिंहने जो दोहे मुझे दियेथे उससे मालूम हुआ कि ११७ कवि सूरदास के समयमें वर्तमान थे। इनमेंसे दो तीन कविको छोडकर सभोंका नाम "शिवसिंह सरोज" में मिलता है पर इसमें (शिवसिंहसरोज) जो मैंने समय लिखा है सबका समय सूरदासके समयसे नहीं मिलता। सूरदास का समय संवत् १६४० "शिवसिंहसरोज" में लिखाहै और सूरदास जीने स्वयं "साहित्यलहरी" नामक पुस्तकमें "साहित्यलहरी" के बनानेका समय सं० १६०७ लिखाहै। और भारतेंदु हरिश्चंद्र-ने लिखा है कि संवत् १६२० के लगभगमें इन्होंने शरीर त्यागा अब यदि सूरदासजीके जन्मसे मरण पर्यंत १२९ वर्ष रख लेते-हैं तो भी संवत् १५०५ से लेकर १६२० तक होता है। अब यदि संवत् १७०० से अधिकके समयके कवियोंको सूरदासजीके सामयिक रघुनाथसिंहके दोहे और "शिवसिंहसरोज" के अनुसार ठहराया गया है यह यथार्थमें ठीक नहीं है। अब सोचना पडा कि बाबूरघुनाथसिंहके दोहे ठीकहैं कि नहीं। यह तो मुक्तकंठसे कहनापडेगा कि उस दोहेके अनेक कवियोंका सूरदासका सामयिक होना ठीकहै परन्तु कईएकमें भ्रमहै उसमेंभी यह नहीं कहा जा सकता है कि इस नामके और कवि न हुये हों परन्तु "शिवसिंहसरोज" से जो मैंने कवियोंका समय प्रकाश कियाहै उसमें अवश्य भ्रमहै।

हरिश्चन्द्रजीने लिखाहै सूरदासके समयमें तुलसीदासजी न हुए उसका कारण सोचनेसे यह मालूम होताहै कि नन्ददासजीके भाई तुलसीदासजीपर ध्यान गयाहै क्योंकि वैष्णवोंकी चौरासी वार्तामें लिखाहै कि तुलसीदास और नन्ददास भाईहैं और नंद-दासका समय संवत् १५८९ कहै और तुलसीदास नंददासका भाई गोसाईंचरित्र उर्दूमेंभी लिखाहै। अथवा मीराबाईके समय-पर ध्यान गया होगा क्योंकि "भक्तकल्पद्रुम" और "रामरसिकावली" तथा "हरिभक्तिप्रकाशिका" में मीराबाई और तुलसीदासकी बातचीत लिखीहै परन्तु मीराबाईका समय तुलसीदासके समयमें मेरी सम्मतिसे नहींहै।

क्योंकि "शिवसिंहसरोज" में मीराबाईके विषयमें यह लिखाहै।

मीराबाई सं० १४७५ में हुई हमने इनका जीवनचरित्र भक्तमाल तुलसीदास कायस्थकृतमें देखा और तारीख चित्तौरसे मिलाया तौ बडा फरक पायागया अब हम इनका हाल चित्तौरके प्राचीन ग्रंथोंसे लिखते हैं ये मीराबाई माडवार देशमें राना राठौरवंशावतंस मेरतिया देशाधिपतिके यहां उत्पन्न हुई थीं यह रियासत सारे मारवाडके फिरकोंमें उत्तरोत्तर है और मीराबाईका विवाह सं० १४७० के करीब राना मोकल देवके पुत्र राना कुम्भकरन चित्तौर नरेशके साथ हुवा था संवत् १५२९ ऊदारानाके पुत्रने रानाको मारडाला मीराबाई महास्वरूपवान और कवितामें अति निपुणा थीं। रागगोविंद ग्रंथ भाषामें बहुत ललित बनाया है चित्तौरगढमें दो मंदिर करीब महल राना राय मलकेथे। एक राना कुंभका और दूसरा मीराबाईका सो मीराबाई अपने इष्टदेव श्यामनाथकी उसी मंदिरमें स्थापन करि नृत्य गीत भाव भक्तिसे रिझाया करतीथीं। एक दिन श्यामनाथ मीराके प्रेमवश ह्वै चौकीसे उतरि अंकमें ले बोले हे मीरा, केवल इतनाही शब्द राधानाथके मुँहसे सुनि मीराबाई प्राणत्याग करि रसिकविहारी गिरिधारीके नित्यविहारमें जायमिली इन दोनों मंदिरोंके बनानेमें नब्बेलाख रुपया खर्च हुवा था।

मीराबाईके विषयमें 'तारीख तुहफए राजस्थान' से मौलवी मुहम्मद उबैदुल्लाह फरहतीने लिखाहै।

"सांगाको इस शिकस्तका निहायत रंज हुवा, वह इसीसालके अन्दर मेवाडके पहाडी इलाकेमें मौतसे या किसीके जहरदेनेसे इन्तिकाल करगये, और उनके साथ मेवाडकी तरक्की खत्म होगई अगर वह जिन्दह रहते तो दोबारह लडाईमें किस्मत आजमाई करते यह महाराणा जोरावर, खूबसूरत और दर्मियानी कदके आदमी थे। इन महाराणाके दो बेटे उनके सामने गुजर चुकेथे जिनमेंसे बडे भोजराजके साथ मेडतिया राठौर जयमल्लकी रिश्तहदारी यहिन मीराबाई, जिसके फकीरानह भजन अवाममें मशहूरहैं, व्याही गईथी। कर्नल टाडने गलत तौरपर उसकी शादी महाराणा कुम्भाके साथ लिखदी है, जो साँगाजीके दादा थे। एशियाई मुल्कोंमें जियादह व्याह करनेसे आदतें खराब और जिस्म जईफ होनेके सिवाय हरएक औरत अपनी औलादकी बिहतरीके वास्ते हर तरहकी तदबीर करना चाहती है, जिससे बहुत खराबियां पैदा होती हैं। इसलिये कर्नल टाडने खयाल कियाहै कि महाराणा सांगाको उनके खानदानमेंसे किसीने जहर देदिया।"

अब पं० बलदेवमिश्र और पं. गनपतलाल चौबेकी बातपर विशेष ध्यान दिया जाय तो इन्हें शुद्ध भ्रम होगया है जरा भक्तमालभी पढे होते तो सूरदास कितने हुए हैं मालूम होजाता, फिर जिस सूरदासका सूरसागर बनायाहै व्यर्थ उनमें और सूरदासका हाल न लिखते। इति।

॥ श्रीः ॥

अथ श्रीसूरसागरकी विषयानुक्रमणिका ।

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथ दशमस्कंध पूर्वार्द्ध।

अथ दशमस्कंध उत्तरार्द्ध ।

अथ एकादशस्कंध ।

अथ द्वादशस्कंध ।

इति श्रीसूरसागरकी विषयानुक्रमणिका समाप्ता ।





॥ श्रीः ॥

अथ सूरसागर.

अथ श्रीसूरदासजीरचित सूरसागर सारावली।

तथा सवालाखपदोंका सूचीपत्र।

राग कल्पद्रुम ॥ वन्दौं श्रीहरिपद सुखदाई।जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै अँधरेको सबकुछ दरशाई॥ बहिरो सुनै गूँग पुनि बोलै रंक चलै शिर छत्र धराई । सूरदास प्रभुकी शरणागत वारम्बार नमो ते पाई ॥ रागिनी काफी तालजति ॥ खेलत यहि विधि हरि होरी हो होरी हो वेद विदित यह बात ॥ टेक—अविगति आदि अनन्त अनूपम अलख पुरुष अविनासी । पूरण ब्रह्म प्रकट पुरुषोत्तम नित निज लोकविलासी ॥ १ ॥ जहँ वृन्दावन आदि अजर जहँ कुंजलता विस्तार । तहँ विहरत प्रिय प्रीतम दोऊ निगम भृंग गुंजार ॥ २ ॥ रत्न जटित कालिंदीके तट अति पुनीत जहँ नीर । सारस हंस चकोर मोर खग कूजत कोकिल कीर ॥ ३ ॥ जहँ गोवर्द्धन पर्वत मणिमय सघन कंदरासार । गोपिनमंडल मध्य विराजत निशि दिन करत विहार ॥ ४ ॥ खेलत खेलत चितमें आई सृष्टि करन विस्तार । अपने आप करि प्रकट कियोहै हरी पुरुष अवतार ॥ ५ ॥ माया कियो क्षोभ बहु विधि करि कालपुरुष के अंग । राजस तामस सात्त्विक त्रयगुण प्रकृति पुरुषको संग ॥ ६ ॥ कीन्हें तत्त्व प्रकट तेही क्षण सबै अष्ट अरु वीश । तिनके नाम कहत कवि सूरज निर्गुण सबके ईश ॥ ७ ॥ पृथिवी अप तेज वायु नभ संज्ञा शब्द परस अरु गन्ध । रस अरु रूप और मन बुधि चित अहंकार मति अन्ध ॥ ८ ॥ पान अपान व्यान उदान अरु कहियत प्राण समान । तक्षक धनंजय पुनि देवदत्त अरु पौण्ड्रक शंख द्युमान ॥ ९ ॥ राजस तामस सात्त्विक तीनों जीव ब्रह्म सुखधाम । अट्ठाईस तत्त्व यह कहियत सो कवि सूरज नाम ॥ १० ॥ नाभिकमल नारायणकी सो वेद गर्व अवतार । नाभिकमलमें बहुतहि भटक्यो तऊ न पायो पार ॥ ११ ॥ तब आज्ञाभइ यह हरिकी अज करो परमतप आप । तब ब्रह्मा तप कियो वर्षशत दूरिभये सब पाप ॥ १२ ॥ तब दर्शन दीन्हों करुणाकर परमधाम निज लोक । ताको दर्शन देखि भयो अज सब बातन निःशोक ॥ १३ ॥ जहां आदि निजलोक महानिधि रमा सहस संयुत । आंदोलन झूलत करुणानिधि रमासुखद अतिपूत ॥ १४ ॥ अस्तुति करैं विविध नाना करि परम पुरुष आनन्द । जय जय जय श्रुति गीत गायकै पढ़त हैं नानाछंद ॥ १५ ॥ आज्ञा करी नाथ चतुरानन करो सृष्टि विस्तार । होरी खेलन की विधि नीकी रचना रचे अपार ॥ १६ ॥ चौदह लोक करो नानाविधि रचि वैकुंठ पताल । नाना रचना रची विधाता होरिखेल रसाल ॥ १७ ॥ दशहीपुत्र भये ब्रह्माके जिन संच्यो संसार । स्वायंभुवमनु प्रकट तब कीन्हें अरु शतरूपा नार ॥ ॥ १८ ॥ भुवकी रक्षा करन जु कारण धरि वराह अवतार । पीछे कपिलरूप हरि धारयो कीन्हों सांख्य विचार ॥ १९ ॥ दीन्हों ज्ञान आप माताको कीन्हों भवनिस्तार । आठों लोकपाल तब

कीये अपन अपन अधिकार ॥ २० ॥ तेज, अग्नि, यम, मरुत, वरुण औ सूर्य्य चन्द्र यह नाम। मृत्यु, कुबेर, यक्षपति कहियत जहँ शंकर को धाम ॥ २१ ॥ सत्यलोक, जनलोक, तपलोक, और महर निजलोक । जहँ राजत ध्रुवराज महानिधि निशि दिन रहत अशोक ॥ २२ ॥ जननी आज्ञा पाय चले वन पांच वर्ष सुकुमार । ताको आप कृपा हरि कीन्हीं धरि आये अवतार ॥ २३॥ पाछे पृथुको रूप हरि लीन्हों नानारस दुहि काढ़े। तापर रचना रची विधाता बहु विधि यत्न बाढे ॥ २४ ॥ रचि नवखण्ड द्वीपसातों मिलि कीन्हों जोरि समाज । वन उपवन पर्वत बहुफूले सब वसन्तको साज ॥ २५ ॥ दानव देव लगे आपसमें कीन्हों युद्ध प्रकार । विविधशस्त्र छूटत पिचकारी चलत रुधिर की धार ॥ २६ ॥ दीन्हें मारि असुर हरिने तब देवन दीन्हीं राज। एकन को फगुवा इन्द्रासन इक पतालको साज ॥ २७ ॥ विद्याधर, गन्धर्व्व, अप्सरा गानकरत सब ठाढे । चारण, सिद्ध पढत बिरुदावलि लै फगुवा सुख बाढे ॥२८॥ चन्द्रलोक दीन्हों शशिको तब फगुवामें हरि आप । सब नक्षत्रको राजा दीन्हों शीशमंडल में छाप ॥ २९ ॥ मंगल बुद्ध शुक्र अरु शनि अरु राहु केतु यह जान। रवि अरु शशि सबहिन्को फगुवा दीन्हों चतुर सुजान॥ ॥ ३० ॥ अतल वितल अरु सुतल तलातल और महातल जान । पाताल और रसातल मिलि सातों भुवन प्रमान ॥ ३१ ॥ संकर्षणको धाम परमरुचि तहँ राजत निज वीर । शेषनाग ताके तर कूरम बसत महाधन धीर ॥ ३२ ॥ इलावर्त्त और किम्पुरुषा कुरु और हरिवर्ष केतुमाल। हिरन मै रमनक भद्रासन भरतखण्ड सुखपाल ॥३३॥ सातों द्वीप कहे शुक मुनिने सोइ कहत अबसूर।जंबु, प्लक्ष, क्रौंच, शाक, शाल्मलि, कुश, पुष्कर भरपूर ॥ ३४ ॥ अपने २ स्थाननपर तब फगुवा दियो चुकाय । जब जब हरि मायाते दानव प्रकट भयेहैं आय॥३५॥तब तब धरि अवतार कृष्णने कीन्हों असुर सँहार । सो चौवीस रूप निज कहियत वर्णन करत विचार ॥३६॥ प्रथम किये स्वायंभुवमनु नृप अज आज्ञा यह दीन्हीं। भूपर जाय राज तुम करिहौ सृष्टि विस्तार यह कीन्हीं ॥ ३७ ॥ स्वायंभुवमनु अरु शतरूपा तुरत भूमि पर आये । जलमें मगन भये भुवदेखे फिरि अजपै चलिआये ॥ ३८ ॥ जासों आय कही सबही विधि भुवद्रव देखियत नाहीं । तब अति ध्यान कियो श्रीपतिको केशन भये सहाहीं ॥ ३९ ॥ आई छींक नाकते प्रकटे शूकर अति लघु रूप । देखत गजसे होयगये हैं कीन्हों बृहत स्वरूप ॥ ४० ॥ जय जय करत सकल सुर नर मुनि जल में कियो प्रवेश । जाय पताल बाट गहिलीन्हीं धरणी रमानरेश ॥ ४१ ॥ ते भुवकमल कुसुमकी नाईं चले मनहुँ गजराज । कछुडर नाहिंन जियमें डरपति अति आनन्द समाज ॥ ४२ ॥ योगी साधु, सनकादिक चारों गये हरिके निज लोक । कीन्हें क्रोधमने जब कीन्हें दियो शाप अति शोक ॥ ४३ ॥ जय अरु विजय असुर योनिनको भये तीन अवतार । तिनमें प्रथम लियो कश्यप गृह दितिकी कोखि मँझार ॥ ४४ ॥ प्रथम भयो हिरण्याक्ष महाबल जिन जीते लोकपाल। नारद सीखगयो शूकरपै देखो रूप बिकराल ॥४५॥ सहस वर्षलौं जलमें जूझे कियो दनुज संहार। पाछे आय भूमिको थापी कियो यज्ञ विस्तार ॥ ४६ ॥ स्वायम्भुव शतरूपा तनया कहियत तीन प्रमान। आकूती देवहूती और परसूती चतुर सुजान ॥ ४७ ॥ परसूती दई दक्षप्रजापति तिनकी सती सयान । सो दीन्हीं महादेव देवको अति आनंद सुज्ञान ॥ ४८ ॥ तज्यो देह अपमान पायकै बहुरि दक्षगृहजाई । पातिव्रतहि धर्म जब जान्यो बहुरो रुद्र विहाई ॥ ४९॥ आकूती दई रुचि प्रजापति भये यज्ञ अवतार । इन्द्रासन बैठे सुख निलसत दूर किये भुवभार ॥ ५० ॥

T

देवहुती कर्दमको दीन्हीं तिन कीन्हीं तपभारी। बिन्दु सरोवर आये माधव किये गरुड असवारी॥ ५१॥ दियो बरदान सृष्टि करिबेको अस्तुति करी प्रमान। मेरो अंश अवतार होयगो कहि भये अन्तर्द्धान॥ ५२॥ पाछे ऋषि निज तप मनलायो कीन्हीं प्रकट विमान। तामें बैठि सकल जग देख्यो कन्यानो सुखदान॥ ५३॥ पाछे कपिलरूप हरि प्रकटे दर्शनकरि मुनिराय। कीन्हीं त्याग गये वनको तव ब्रह्म परमपदपाय॥५४॥ पाछे विविध ज्ञान जननीको दीन्हीं कपिल दृढ़ाय। सांख्ययोग अरु ज्ञानभक्ति दृढ़ वरणी विविध बनाइ॥ ५५॥ जलको रूप तुरत ह्वै गइ वह हरिके रूप समाय। चले मगनह्वै ब्रह्मध्यान कर गंगासागर न्हाय॥ ५६॥ अजहूंलौं राजत नीरधि तट करत सांख्य विस्तार। सांख्यायनसे बहुत महामुनि सेवत चरण सुचार॥ ५७॥ अत्रै पुत्रभये ब्रह्माके तिन कीन्हीं तप जाय। आये तीन देवताके ढिग ब्रह्मा शिव हरिराय॥ ५८॥ तब उन मांग्यो सुत तुमहींसे तीनों प्रकटे आय। अज, शशि, अंश, रुद्र, दुर्वासा, दत्तात्रेय, हरिराय॥५९॥ अनसूयाके गर्भ प्रकटह्वै कियो योग आराधि। यम अरु नियम प्रणाम प्रत्याहार धारण ध्यान समाधि॥ ६०॥ आसन के सब सिद्ध योगकर प्रकटकला जगदीश। दीन्हीं भोग सहस नृपको बहु करुणानिधि जगदीश॥ ६१॥ कीन्हें गुरु चौबीस सीखलै यदुको दीन्हों ज्ञान। पातंजलिसे मुनिपद सेवत करत सदा अज ध्यान॥ ६२॥ जब सृष्टिनपर किरपा कीन्हीं ज्ञानकला विस्तार। सनक सनंदन और सनातन चारों सनतकुमार॥ ६३॥ उनसे कह्यो सृष्टि नानाविधि रचना करो बनाय। उन नहिं मान्यो तब चतुरानन खीझे क्रोध उपाय॥॥ ६४॥ शंकर प्रकटभये भ्रुकुटीते करों सृष्टि निर्मान। भूत प्रेत बेताल रचो बहु दौरे विधिको खान॥ ६५॥ पूरण करो कह्यो चतुरानन सृष्टि महादुख दैन। तब शंकर तपस्या को निकसे चितै कमलदल नैन॥६६॥ मूरति त्रिया जु भई धर्मकी तिनके हरि अवतार। नारायण जब भये प्रकट वपु तिन मेट्यो भुवभार॥ ६७॥ सहस कवच इक असुर सँहारेउ बहुरि कियो तप भारी। शोच परेउ सुरपति को तब उन पठइ अप्सरा नारी॥ ६८॥ बहुत भांति उन कियो परमछल तपमें उनके काज। कछु नहिं चली ब्रह्मनारायण सुखसमाज तिय साज॥ ६९॥ इक उर्वशी हृदय उपजाई दई शक्रकोताय। ताको देखि देखि जीवतहैं अजहुँ इन्द्र सुख पाय॥ ७०॥ स्वायंभुव के द्वितिय पुत्र उत्तानपाद मतिधीर। तिनके ध्रुव बालक जो जाये औ उत्तम गंभीर॥ ७१॥ नृपके पास गये गोदीमें बैठनको सुकुमार। तब लघु मात कह्यो तब बैठो जब मेरे अवतार॥ ७२॥ सुनि कटु वचन गयो माता पै तब उन ज्ञान दृढायो। हरिकी भक्ति करो सुख नीके जो चाहो सुख पायो॥ ७३॥ पांचवर्षके निकसि चले तब मधुवन पहुँचे आय। बिच नारदमुनि तत्त्व बतायो जपैं मंत्र चितलाय॥ ७४॥ कछुदिन पत्र भक्ष करि बीते कछु दिन लीन्हीं पानी। कछु दिन पवन कियो अनुप्राशन रोंक्यो श्वास यह जानी॥ ७५॥ दारुण तप जब कियो राजसुत तब कांप्यो सुरलोक। त्राहि २ हरिसों सब भाष्यो दूर करो सब शोक॥ ७६॥ तब हरि कह्यो कोऊ जिन डरपो अबहिं तुरत मैं जैहों। बालक ध्रुव वन करत गहन तप ताहि तुरत फल दैहों॥ ७७॥ इतनी कहत गरुड पर चढिके तुरतहि मधुवन आये। कंबु कपोल परसि बालकके वाणी प्रकट कराये॥॥ ७८॥ अस्तुति करी बहुत ध्रुव सब विधि सुनि प्रसन्न भये आप। दीये राज भूमि मण्डलको सब विधि थिरकरि थाप॥ ७९॥ हरि बैकुण्ठ सिधार पुनि ध्रुव आये अपने धाम। कीन्हीं राज तीस षट वर्षन कीन्हें भक्तन काम॥ ८०॥ यक्ष प्रबल बाढे भुव मंडल तिन मारयो निज भ्रात।

तिनके काज अंश हरि प्रगटे ध्रुव जगत विख्यात ॥ ८१ ॥ बहुत वर्षलौं राज कियो भुव फिरि आये निजलोक । सबके ऊपर सदा विराजत ध्रुव सदा निःशोक ॥ ८२ ॥ सनकादिक पुछियो चतुरानन ब्रह्मजीवको बीच । प्रकट हंसवपु धरयो जगत पुर जोपै नीर सुमीच ॥ ॥ ८३ ॥ यह भुवमंडल को रसकाढयो भांति २ निज हाथ । धरि पृथुरूप कियो जगआनँद अखिल लोकके नाथ ॥ ८४ ॥ प्रियव्रत वंश धरेउ हरि निजवपु ऋषभदेव यह नाम । कीन्हें काज सकल भक्तनको अंग अंग २ अभिराम ॥ ८५॥ कीन्हों गर्व महा मघवाने वर्षा बरषो नाहिं । तब हरि आप मेघह्वै बरषे करी परम सुख छाहिं ॥ ८६ ॥ ज्ञान उपदेश कियो पुत्रन को ब्रह्मावर्त मँझार । पाछे करि संन्यास जगतमें विचरे परम उदार ॥ ८७ ॥ आठों सिद्धि भई सन्मुख जब करी न अंगीकार । जय जय जय श्रीऋषभदेव मुनि परब्रह्म अवतार ॥८८॥ ब्रह्मसभामें यज्ञकियो जब करन वेदउच्चार । प्रकटभये हयग्रीव महानिधि परब्रह्म अवतार ॥ ८९ ॥ चार वेद लैगो शंखासुर जलमें रह्यो छिपाय । धरि हयग्रीव रूप हरि मारयो लीन्हें वेद छुड़ाय ॥ ९०॥ सत्यवर्त राजा रघुवंशी प्रथम भये मनुवंश । कीन्हों तप बहु भांति परमरुचि प्रकट भये हरिअंश ॥ ९१ ॥ धरि लघुरूप मीनको मोहन आये उनके पानि । तब उन जलमें डारिदियो फिर तब बोले हरि वानि ॥ ९२ ॥ जलके बीच डारि जिन मोकों बडे मच्छ डर लाग । यह कहि बृहत रूप हरि धारेउ सत्यव्रत के भाग ॥ ९३ ॥ सतयें दिवस होयगी परलय आवेगी इकनाव । तामें बैठ सप्तऋषि अरु तुम करो भजन मम भाव ॥ ९४ ॥ इतनो कहि हरिनृप देखतही भये जो अन्तर्धान । सातैं दिवस भयो जब परलय तब कीन्हों नृप ज्ञान ॥ ९५ ॥ सबहि अन्नको बीज लियो नृप और लियो ऋषि साथ । बैठो नाव ध्यान हरिको करि दर्शन दीन्हों नाथ ॥ ९६ ॥ वासुकि नाग आय तहँ तत्क्षण बांधी दृढ़करि नाव । पूंछ्यो ज्ञान कह्यो सो सब हरि तत्त्व विधान बनाव ॥ ९७॥ बहुत काललौं विचरे जलमें तब हरि भये सुशांति । बीसै प्रलय विविध नानाकर सृष्टि रची बहुभांति ॥ ९८ ॥ यह हरि मच्छरूप जब लीन्हों कियोचरित विस्तार । जय जय जय श्रीमान महावपु जय जय जगत अधार ॥ ९९ ॥ सुर अरु असुर मथन कीन्हों निधि चौदह रत्न निकार। पर्वत पीठ धरेउ हरि नीके लियो कूर्म अवतार ॥ १०० ॥ हिरण्यकशिपु अति प्रबल दनुज है तप कीन्हों परचण्ड । तब उन वर दीन्हों चतुरानन कीन्हों अमरअखण्ड ॥ १०१ ॥ जप तप गयो तबहिं मघवाने सब संपति गहि लीन्ही । गहे जब कच कामिनि राजाकी तब नारद सिख दीन्ही॥ ॥ १०२ ॥ याके गर्भ बसतहै हरिजन सुनु सुरपति यह बात । तब तजि दई आप लै आये निज आश्रम विख्यात॥ १०३ ॥ नित प्रति ज्ञानकथा हंसनसों कहत रहत मुनिराज । सुनि प्रहलाद प्रसन्न कोपिमें अति आनंद समाज ॥ १०४ ॥ ता पाछे तपकियो असुरबहु फिरि देख्यो निजधाम तब नारद मुनि दई कथा ध्रुव लैआयो है ग्राम ॥ १०५ ॥ पाछे लोकपाल सब जीते सुरपति दियो उठाय । वरुण कुबेर अग्नि यम मारुत सुबस कियो क्षण माय ॥ १०६ ॥ हाहाकार भयो सुरलोकन गये सबै अजपास । तब अज ध्यान कियो माधवको वाणी भई अकास ॥१०७॥सकललोक यह देत असुर दुख तऊ न करौं सँहार । जब मेरे जनको दुखदेहै क्षणहिंमें डारौं मार ॥ १०८॥ जब प्रह्लाद प्रकट ताके गृह पांच वर्षके भैहैं । आदर बहु कीन्हों राजाने पढन विप्रगृह गै हैं ॥ १०९॥ जब वह विप्र पढ़ावै कुछ २ सुनके चित धरि राखै । जब वह जाय तबहिं सबहिनसों राम राम मुख भाखै ॥ ११० ॥ लरिका और पढत शालामें तिनहिं करत उपदेश । हरिको भजन करो सबही

मिलि और जगत सुखलेश ॥ १११ ॥ यहि विधि करि उपदेश सबनको किये भजन रसलीन। पण्डामर्क जो पूंछन लाग्यो तब यह उत्तर दीन ॥ ११२ ॥ राम कृष्ण अवतार मनोहर भक्तनके हितकाज। सोई सार जगत्में कहियत सुनो देव द्विजराज ॥ ११३ ॥ येही बात जगत्में नीकी सोइ पढ़त हम आज। जबहीं विप्र कहेउ जो असुरसों पुत्र पढत बिनकाज ॥ ११४ ॥ तबहिं असुर प्रह्लाद बुलाये लिये गोद भरिअंक। कहो पुत्र तुम कहा पढौहौ पूँछत कहेउ निशंक ॥ ११५ ॥ श्रवण, कीर्त्तन, स्मरणपाद, रत, अरचन, वंदनदास। सख्य और आत्मनिवेदन, प्रेमलक्षणा जास ॥ ११६ ॥ सुनो पिता हौं यही पढ्यो हूं और बात नहिं जानूं। इनते और मोहिं जो कहियत सो कबहूं नहिं मानूं ॥ ११७ ॥ दीन्हों पटकि भूप धरणीपर कहेउ विप्रसों खीझ। रे मूरख तू कहा पढायो कैसें देउँ तोहिं रीझ ॥ ११८ ॥ जो यह मेरो बैरी कहियत ताको नाम पढायो। देहु गिराय याहि पर्वततें क्षण गत जीव करायो ॥ ११९ ॥ दीन्हों डारि शैलते भूपर पुनि जल भीतर डारो। डारि अग्निमें शस्त्रनमारो नानाभांति प्रहारो ॥ १२० ॥ तऊ न घातभई अंगनकी जहँ तहँ राम बचायो। तब नृप आप शस्त्रकर गहिकै बहुतहि त्रास दिखायो ॥ १२१ ॥ कहां है राम कृष्ण वह तेरो यों कहि गर्जन कीन्हीं। घट घट जल थल व्योम धरणि में व्यापक यह ध्वनि लीन्हीं १२२॥ तब लै खड्ग खम्भमें मारो भयो शब्द अतिभारी। प्रकट भये नरहरि वपु धरि हरि कट कट करि उच्चारी ॥ १२३ ॥ पकरिलियो क्षणमांझ असुर बल डारो नखन विदारी। रुधिर पानकरि आंत मालधरि जय जय शब्द उचारी ॥ १२४ ॥ मारो दैत्य दुष्ट इकक्षणमें जय नृसिंह वपुधारे। पुष्पन वृष्टि करत सुर नर मुनि भये भक्त रखवारे ॥ १२५ ॥ रमा निकट नहिं आवत हरिके ऐसो वपु हरिधारो। अज सनकादि देव नारद मुनि जानत रूप निहारो ॥१२६॥ अपनी अपनी अस्तुति करि कै सबहिन यहै सुनायो। गन्धर्व अरु विद्याधर चारण विमल विमल यशगायो ॥१२७॥ तब प्रह्लाद आय हरि पदसों शीशनाय यह भाख्यो। जय जय जय जगदीश जगतगुरु मोर अधम प्रण राख्यो ॥ १२८ ॥ तुमहीं आदिअखंड अनूपम अशरण शरण मुरार। देव देव परब्रह्म परिपूरण भक्तहेतु अवतार ॥१२९॥ जहँ जहँ भीरपरत भक्तनको तहँ तहँ होत सहाय। अस्तुतिकरि मनहर्ष बढायो लेहनजीभ कराय ॥ १३० ॥ तब बोले नरसिंह कृपाकरि सुनहु भक्त मम बात। मन्वन्तर को राजदियो तोहिं धरचो शीशपर हाथ ॥ १३१ ॥ निर्गुण सगुणहोय मैं देख्यो तोसों भक्त न पाऊं। जहँ जहँ भीर परत भक्तनको तहां प्रकट ह्वै आऊं ॥ १३२ ॥ सुत प्रह्लाद प्रतिज्ञा मेरी तोको कबहुँ न त्यागूं। जैसे धेनु बच्छको चाटत तैसे मैं अनुरागूं ॥ १३३ ॥ जो मांगो सो देहुं तुरतही नहिं विलम्ब कछु लाग। तब प्रह्लाद यही वर मांग्यो चरण कमल अनुराग॥ १३४ ॥ करी कृपा दीन्हीं करुणानिधि अटल भक्ति थिरराज। अन्तर्धान भये हरि तहँते सफलभये सबकाज ॥१३५ ॥ नारदरूप जगत उद्धारण विचरत लोकन माय। करि उपदेश ज्ञान हरि भक्तहि अरु वैराग्यदृढाय ॥१३६॥ स्वायंभुव शतरूपा दोऊ कहियतहैं अवतार। जगको धर्म प्रचार किये ध्रुव भक्त कर्म आचार ॥ १३७ ॥ करुणाकर जलनिधिते प्रकटे सुधाकलश लैहाथ। आयुर्वेद विस्तारण कारण सब ब्रह्माण्डके नाथ ॥ १३८ ॥ क्षत्रिय दुष्टबढे जो भुवपर लियो कृष्ण अवतार। परशुराम ह्वैकै द्विजथापे दूरकियोभूभार ॥ १३९ ॥ रघुकुलवंश चतुर चूडामणि पुरुषोत्तम अवतार। दशरथके गृह जन्म लियो हरि रूपराम सुकुमार ॥ १४० ॥ रावण कुम्भकर्ण असुराधिप बढे सकल जगमाहिं। सबहिन लोकपाल उन जीतें कोऊ बाच्यो नाहिं॥ ॥ १४१ ॥ सकल देव मिलि जाय पुकारे चतुराननके पास। लै शिवसंग चले चतुरानन क्षीरसिन्धु

सुखवास ॥ १४२ ॥ अस्तुतिकरि बहुभांति जगाये तब जागे निजनाथ । आज्ञादई जाय कपिकुलमें प्रकटो सब सुर साथ ॥ १४३ ॥ तब ब्रह्मा सबहिनसों भाष्यो सोई सब सुर कीन्हों । सातों द्वीप जाय कपिकुलमें आय जन्म सुर लीन्हों ॥ १४४ ॥ अपने अंश आप हरि प्रकटे पुरुषोत्तम निजरूप । नारायण भुवभार हरेहै अति आनन्द स्वरूप ॥ १४५ ॥ वासुदेव यों कहत वेदमें हैं पूरण अवतार । शेषसहसमुख रटत निरंतर तऊ न पावतपार ॥ १४६ ॥ सहसवर्षलों ध्यान कियो शिव रामचरित सुखसार । अवगाहन करिकै सब देख्यो तऊ न पायो पार ॥ १४७ ॥ वितीसमाधि सती तब पूछ्यो कहो मर्मगुरुईश । काको ध्यान करत उरअंतर को पूरण जगदीश ॥ १४८ ॥ तब शिव कहेउ राम अरु गोविँद परमइष्ट इक मेरे । सहस वर्ष लौं ध्यान करत हौं राम कृष्ण सुख केरे ॥ १४९ ॥ तामें रामसमाधि करी अब सहसवर्ष लौं वाम । अतिआनन्द मगन मेरो मन अँग अँग पूरण काम ॥ १५० ॥ दाया करि मोको यह कहिये अमर होहुँ जेहि भांति । मोहिं नारद मुनि तत्त्व बतायो ताते जिय अकुलाति ॥ १५१ ॥ तब महादेव कृपाकरिकै यह चरितकिया विस्तार । सो ब्रह्मांडपुराण व्यासमुनि कियो वदन उच्चार ॥ १५२ ॥ मुनि वाल्मीकि कृपा सातो ऋषि राम मंत्र फल पायो । उलटो नाम जपत अघ बीत्यो पुनि उपदेश करायो ॥ १५३ ॥ रामचरित वर्णनके कारण वाल्मीकि अवतार । तीनोंलोक भये परिपूरण रामचरित सुखसार ॥ १५४ ॥ शतकोटी रामायण कीनो तऊ न लीन्हों पार । कह्यो वसिष्ठमुनि रामचन्द्र सो रामायणउच्चार ॥ १५५ ॥ कागभुशुंड गरुड सों भाष्यो रामचरित अवतार । सकल वेद अरु शास्त्र कह्यो है रामचन्द्र यश सार ॥ १५६ ॥ कछु संक्षेप सूर अब बर्णत लघुमति दुर्बल बाल । यह रसना पावनके कारण मेटन भव जंजाल ॥ १५७ ॥ तीनों व्यूह संगलै प्रकटे पुरुषोत्तम श्रीराम । संकर्षण प्रद्युम्न लक्ष्मण भरत महासुखधाम ॥ १५८ ॥ शत्रुघ्नहि अनिरुध कहियतु है चतुर्व्यूह निज रूप । रामचन्द्र प्रकटे जब गृहमें हरपे कोशलभूप ॥ १५९ ॥ पुष्य नक्षत्र नौमी जु परम दिन लग्न शुद्ध शुभवार । प्रकटभये दशरथ गृह पूरण चतुर्व्यूह अवतार ॥ १६० ॥ अति फूले दशरथ मनहीं मन कौशल्या सुख पायो । सौमित्रा कैकयी मन आनँद यह सबहिन सुत जायो ॥ १६१ ॥ गुरु वशिष्ठ नारदमुनि ज्ञानी जन्मपत्रिका कीनी । रामचन्द्र विख्यात नाम यह सुर मुनि की सुधि लीनी ॥ १६२ ॥ देत दान नृप राज द्विजनको सुरभी हेम अपार । सब सुन्दरि मिलि मंगल गावत कंचन कलश दुवार ॥ १६३ ॥ आये देव और मुनिजन सब दे अशीश सुख भारी । अपने अपने धाम चले सब परममोद रुचिकारी ॥ १६४ ॥ मनवांछित फल सबहिन पाये भयो सवन आनन्द । बालरूप ह्वैकै दशरथसुत करत केलि स्वच्छन्द ॥ १६५ ॥ घुटुरुन चलत कनक आँगन में कौशल्या छवि देखत । नील नलिन तनु पीत झँगुलिया घनदामिनि द्युति पेखत ॥ १६६ ॥ कबहुँक माखन रोटी लैकै खेल करत पुनि मांगत । मुख चुंवत जननी समझावत आय कंठ पुनि लागत ॥ १६७ ॥ कागभुशुंड दरश को आये पांच बर्षलौं देखे । स्तुति करी आपु बर पायो जन्म सफल करि लेखे ॥ १६८ ॥ कृपा करी निज धाम पठायो अपनो रूप दिखाय । वाके आश्रम कोउ बसतहै माया लगत न ताय ॥ १६९ ॥ प्रातकाल उठि जननि जगावत उठो मेरे बारे राम । उठि बैठे दँतुवन लै आई करी मुखारी श्याम ॥ १७० ॥ चारों भ्रात मिल करत कलेऊ मधु मेवा पकवान । जल आचमन आरती कारकैं फिर कीन्हों अस्नान ॥ १७१ ॥ करत शृंगार चार भइया मिलि शोभा वरणि न जाई । चित्र विचित्र सुभग चौतनिया इन्द्र धनुष छवि छाई ॥ १७२ ॥ अलकावलि मुक्तावलि

गूंथी डोर सुरंग बिराजै। मनहुँ सुरसरी धार सरस्वति यमुना मध्य बिराजै ॥ १७३ ॥ तिलक भाल पर परम मनोहर गोरोचन को दीनो। मानो तीन लोककी शोभा अधिक उदय सो कीनो॥ ॥ १७४ ॥ खंजन नैन बीच नासापुट राजत यह अनुहार। खंजन युग मनो लरत लराई कीर बुझावत रार ॥ १७५ ॥ नासाके बेसर में मोती वरण बिराजत चार। मनो जीव शनि शुक्र एक ह्वै बाढे रविके द्वार ॥ १७६ ॥ कुंडल ललित कपोल बिराजत झलकत आभागंड। इन्दी वरपर मनो देखियत रविकी किरण प्रचंड ॥ १७७ ॥ अरुण अधर दमकत दशनावलि चारु चिबुक मुसक्यान। अति अनुराग सुधाकर सींचत दाडिमबीज समान ॥ १७८ ॥ कंठसिरी बिच पदिक बिराजत बहुमणि मुक्ताहार। दहिनावर्त देत ध्रुव तारे सकल नखत बहुबार ॥ ॥ १७९ ॥ रत्न जटित कंकण बाजूबंद नगन मुद्रिका सोहै। डार डार मनु मदन बिटपतरु विकच देखि मन मोहै ॥ १८० ॥ कटिकिंकिणि रुनु झुनु सुनि तनकी हंस करत किलकारी। नूपुरध्वनि पग लालि पन्हैया उपमा कौन बिचारी ॥ १८१ ॥ भूषण बसन आदि सब राचि राचि माता लाड लडावै। रामचन्द्र की देख माधुरी दर्पण देख दिखावै ॥ १८२ ॥ निज प्रतिबिंब बिलोक मुकुर में हँसत राम सुखरास। तैसेइ लक्ष्मण भरत शत्रुहन खेलत डोलत पास ॥ १८३ ॥ दशरथ राय न्हाय भोजन को बैठे अपने धाम। लावो वेगि राम लक्ष्मण को सुनि आये सुखधाम ॥ १८४॥ बैठे सँग बाबा के चारों भैया जेंवन लागे। दशरथ राय आपु जेंवतहैं अति आनँद अनुरागे ॥१८५॥ लघु लघु ग्रास राम मुख मेलत आपु पिता मुख मेलत। बालकेलि को विशद परमसुख सुखसमुद्र नृप झेलत ॥ १८६ ॥ दाल भात घृत कढी सलोनी अरु नाना पकवान। आरोगत नृप चारिपुत्र मिलि अतिआनन्द निधान ॥ ॥ १८७ ॥ अचवनकर पुनि जलअचवायो जवनृप बीरा लीनो। राम लषण अरु भरत शत्रुहन सबहिन अचवन कीनो ॥ १८८ ॥ बीरा खायचले खेलनको मिलिकै चारों वीर। सखासंग सब मिले बराबर आये सरयू तीर ॥ १८९ ॥ तीर चलावत शिष्य सिखावत धर निशान देखरावत। कबहुँक सधे अश्व चढि आपुन नानाभांति नचावत ॥ १९० ॥ कबहुँक चारभ्रात मिलि अगिआ जात परम सुख पावत। हरिनआदि बहुजंतु किये वध निज सुरलोक पठावत ॥ १९१ ॥ यहि विधि बन उपवन बहुक्रीडा करी राम सुखदाई। वाल्मीकि मुनि कही कृपाकर कछुयक सूर जो गाई ॥ १९२ ॥ भई सांझ जननी टेरतहै कहां गए चारोंभाई। भूख लगी ह्वैहै लालन को लावो वेगि बुलाई ॥ १९३॥ इतने मांझ चार भैया मिलि आये अपने धाम। मुखचुंबत आरती उतारत कौशल्या अभिराम ॥ १९४ ॥ सौमित्रा कैकयि सुख पावत बहु विधि लाड लडावत। मधु मेवा पकवान मिठाई अपने हाथ जेंवावत ॥ १९५ ॥चारों भ्रातन श्रमित जानिकै जननी तब पौढाये। चांपत चरण जननि अप अपनी कछुक मधुर स्वर गाये ॥ १९६॥ आई नींद राम सुख पायो दिनको श्रम बिसरायो। जागे भोर दौरि जननी ने अपने कंठलगायो ॥ १९७ ॥ विश्वामित्र बडे मुनि कहियत यज्ञकरत निजधाम। मारिच और सुबाहु महासुर विघ्न करत दिनयाम ॥ १९८ ॥ परब्रह्म अवतार जानिकै आये नृपके पास। दशरथ राय बहुत पूजा विधि किये प्रसन्न हुलास ॥ ॥ १९९ ॥ भोजन कर जबहीं जु विराजे तब भाष्यो मुनिराय। यज्ञ सकल कीजै मेरो अब दीजै राम पठाय ॥ २०० ॥ तब नृप कह्यो राम हैं बालक मोको आज्ञा कीजै। तब द्विज कह्यो राम परमेश्वर वचन मान यह लीजै ॥ २०१ ॥ गुरु वशिष्ठ सब विधि समझाये राम लषण सँग दीन्हें।

मारगमें अहल्या उद्धारी नावक निज पद छीने ॥ २०२ ॥ विश्वामित्र सिखाई बहुविधि विद्या धनुष प्रकार। मारग में ताडका जु आई धाई वदन पसार ॥ २०३ ॥ छिनमें राम तुरत सो मारी नेक न लागीबार। दीन्हीं मुक्ति जानि निज महिमा आये ऋषिके द्वार ॥ २०४ ॥ कीन्हें विप्र यज्ञ परिपूरण असुर विघ्नको आये। अग्निबाण कर दहन कियोहै एक समुद्र पठाये ॥ २०५ ॥ जनक विदेह कियो जु स्वयम्वर बहु नृप विप्र बुलाये। तोरन धनुषदेव त्र्यम्बकको काहू यतन न पाये ॥२०६॥ विश्वामित्र मुनि वेग बुलाये सकल शिष्यलै संग। राम लषण सँगलिये आपने चले प्रेमरसरंग ॥ २०७ ॥ जहँ तहँ उझकि झरोखा झांकत जनक नगरकी नार। चितवनि कृपाराम अवलोकत दीन्हों सुख जो अपार ॥ २०८ ॥ कियो सन्मान विदेह नृपतिने उपवनवासी कीन्हों। देखन रामचले निजपुरको सुख सबहिन को दीन्हों ॥ २०९ ॥ सब पुरदेखि धनुषपुर देख्यो देखे महल सुरंग। अद्भुत नगर विदेह विलोकत सुखपायो सब अंग ॥ २१० ॥ कहत नारिसब जनक नगरकी विधि सों गोद पसार। सीताजूको बर यह चहिये है जोरी सुकुमार ॥ २११॥ अपने धामफिरे तब दोऊ आये जान भई कछु सांझ। कर दण्डवत परसिपद ऋषिके बैठे उपवन मांझ ॥ २१२ ॥ संध्याभई कृत्य नित करिकै कीन्हों ऋषि परणाम। पौढे जाय चरण सेवा द्विज करके अति विश्राम ॥ २१३ ॥ ब्रह्म मुहूरत भयो सबेरो जागे दोऊ भाई। कर परणाम देवगुरु द्विजको जल सुस्नान कराई ॥ २१४ ॥ आयेभूप देश देशनके जुरी सभा अतिभारी। तहां बुलाये सकल द्विजनको जनक सभा मंझारी ॥ २१५ ॥ कौशिक मुनि तहँ छबिसों पधारे लिये शिष्य सँग सात। चले नित्य आह्निक सबकर द्विज उर आनँद न समात ॥ २१६ ॥ दोनों भ्रात संगमें लीन्हें आये राजदुवार। जहँ बैठे सब भूप ओपसों बाढ्यो गर्व अपार ॥ २१७ ॥ अपने अपने भुज बल तोलत तोरन धनुषपुरार। कछुनाहिं चलत खिसायगये सब रहबहुत पचिहार॥२१८॥ सीता कहत सहेलिनसों पुनि यही कहत रघुनन्द। तब उन कह्यो सकलसुखसागर सो ये परमानन्द ॥२१९॥ बार बार जिय शोचकरत हैं विधिसों वचन उचारी। मन क्रम वचन यहै बरदीजो मांगत गोदपसारी ॥२२० ॥ एकबार सुरदेवी पूजत भयो दरश सखि मोहिं। तादिनते छिन कल न परतहै सत्य कहतहौं तोहिं ॥ २२१ ॥ सबनृपपचे धनुषनहिं टूट्यो तब विदेह दुखपायो। क्रोध वचनकरि सबसे बोले क्षत्री कोउ न रहायो ॥ २२२ ॥ यहसुनि लक्ष्मण भये क्रोधयुत विषम वचन यों बोले। सूरजवंश नृपति भूतलपर जाके बल बिन तोले ॥ २२३ ॥ कितकबात यह धनुष रुद्रको सकल विश्वकर लैहौं। आज्ञापाय देव रघुपतिकी छिनकमांझ हठगैहौं ॥ २२४ ॥ सबके मनको देख अँदेशो सीता आरत जानी। रामचन्द्र तबही अकुलाने लीन्हों शार्ङ्गपानी ॥ २२५ ॥ छिनमें करलैकै जु चढायो देखत हैं सबभूप। डारयो तोर अघात शब्दभयो जैसे कालको रूप ॥ २२६ ॥ सबही दिशा भई अति आतुर परशुराम सुनि पायो। परशुसम्हार शिष्यसँगलैकै छिनही में तहँ आयो ॥ २२७ ॥ जय जयकार भयो जगतीपर जनकराज अति हरषे। सुर विमान सब कौतुकभूले जयध्वनि सुमनन वरषे ॥ २२८ ॥ जनकराज तब विप्रपठाये वेगवरात बुलाई। दशरथराज वाजि गजलैकै सवहीं सौज तुराई ॥ २२९ ॥ चली बरात विपुल धनलैकै जुरे मनुज नहिंपार। शोभासिंधु करत नाहिं आवे वर्णन करत उचार ॥ २३० ॥ गुरु बशिष्ठ मुनि लग्न दियो शुभ शुभनक्षत्र शुभवार। आयेजान नृपति सन्माने कीन्हीं अति मनुहार ॥ २३१ ॥ व्याह केलि सुख वर्णन कीन्हों मुनि वाल्मीकिअपार। सो सुख सूर कह्यो वह

कीरति जगतकरी विस्तार ॥ २३२ ॥ वेद शास्त्र मथकरी व्याहविधि सोइ कीन्हीं नृपराय। राम लषण अरु भरत शत्रुहन चारों दिये विवाय ॥२३३॥ होम हवन द्विज पूजा गणपति सूरज शक्र महेश। दीन्हों दान बहुत विप्रनको राजा मिथिल नरेश ॥ २३४ ॥ उत्सव भयो परम आनँदको बहुत दायजो दीन्हों। भये बिदा दशरथनृप नृपसों गमन अवधपुर कीन्हों ॥२३५॥ भृगुपति आय जानि जब रघुपति मिले धाय शिरनाय ॥ दशरथराय बिनय बहु कीन्हीं जियमें अति डरपाय॥ २३६ ॥ तब मुनि कह्यो धनुष क्यों तोरेउ रुद्र परम गुरु मेरे। रामचंद्र पूरण पुरुषोत्तम नेक नयन जब हेरे ॥ २३७ ॥ लीन्हों अंश खैंचि भृगुपतिको अपनेरूप समायो। करो जाय तप शैल महेंद्रपै मुनि मुनिवर शिरनायो ॥२३८॥ अति आनन्द अयोध्या आये कियो नगर शृंगार। कदलीखंभः चौक मोतिनके बाँधी बंदनवार ॥ २३९ ॥ कियो प्रवेश राजभवननमें रामचन्द्र सुखराश। अद्भुत भवन विराजत रत्नन सूरजकोटि प्रकाश ॥ २४० ॥ द्वादश वरष विराजे बालक फिर भूभार हरो। कैकेयीके वचन प्रमान किये नृप तब यह काज करो ॥२४१॥ वचन समझ नृप आज्ञा कीन्हीं देव उपाय करो। रामचन्द्र पितुआज्ञा मानी जियमें वचन धरो ॥ २४२ ॥ यह भू भार उतारन रघुपति बहुत ऋषिन सुखदेन। वनोबासको चले सियासँग सुखनिधि राजिवनैन ॥ २४३ ॥ मारगमें हरि कृपा करीहै परमभक्त इकजान। तहँतेगये जु चित्रकूटको जहां मुनिनकी खान ॥ २४४ ॥ वाल्मीकि मुनि वसत निरंतर राममंत्र उच्चार। ताको फल यह आज भयो मोहिं दर्शन दियो कुमार॥ ॥२४५॥ पूजाकर पधराय भवनमें रामचन्द्र परनाम। कियो विविध विधि पूजाकरिकै ऋषि चरनन शिरनाम ॥ २४६ ॥ बहुत दिवसलौं बसे जगतगुरु चित्रकूट निजधाम। किये सनाथ बहुत मुनिकुलको बहुविधि पूरे काम ॥ २४७ ॥ भरतजान जियमें रघुपतिको दुःसह परम वियोग। आये धायसंग सब लैकै पुरवासी गृहलोग ॥ २४८ ॥ बिन दशरथ सब चले तुरतही कोशलपुरके बासी। आये रामचन्द्र मुख देख्यो सबकी मिटी उदासी ॥ २४९ ॥ रामचन्द्र पुनि सबजन देखे पिता न देखनपाये। पूछी बात कह्यो तब काहू मन बहुविधि बिलखाये ॥ २५० ॥ वेदरीति करि रघुपति सबविधि मर्य्यादा अनुसार। बहुतभाँति सब विधि समुझाये भरत करी मनुहार ॥ २५१ ॥ गुरु वशिष्ठ मुनि कह्यो भरतसों राम ब्रह्मअवतार। वनमें जाय बहुत मुनि तारे दूरकरै भुवभार ॥ ॥ २५२ ॥ पुनि निजविश्वरूप जो अपनो सो हरिजाय देखायो। आज्ञापाय चले निजपुरको प्रभु हि गीत समझायो ॥ २५३ ॥ कछु दिनवसे जु चित्रकूटमें रामचन्द्र सहभ्रात। तहँते चले दंडकाबनको सुख निधि साँवलगात ॥ २५४ ॥ मारगमें बहुमुनिजन तारे अरु विराध रिपुमारे। बंदनकर शरभंग महामुनि अपने दोष निवारे ॥ २५५ ॥ दरशन दियो सुतीक्षण गौतम पंचवटी पग धारे। तहां दुष्ट शूर्पणखानारी करि बिन नाक उधारे ॥२५६ ॥ यह मुनि असुर प्रबल दल आये छिनमें राम सँहारे। कीन्हें काज सकल सुर मुनिके भुवके भार उतारे ॥ २५७ ॥ मुनिअगस्त्य आश्रम जु गये हरि बहुविधि पूजा कीन्हीं। दिव्य वसन दीने जब मुनिने फिर यह आज्ञा दीन्हीं ॥ ॥ २५८ ॥ दशकंधरको वेगि सँहारो दूरकरो भुवभार। लोपामुद्रा दिव्य वस्त्र लै दीने जनक कुमार ॥ २५९ ॥ शूर्पणखा जब जाय पुकारी नाक कान ले हाथ। रावण क्रोध कियो अतिभारी अधर फरक अतिगात ॥ २६० ॥ गयो मारीच आश्रमहि तबहीं वानै बहु समझायो। तब मारीच कह्यो दशकंधर विनती बहुत करायो ॥ २६१ ॥ रामचन्द्र अवतार कहत हैं सुनि नारद मुनि पास। प्रकट भये निश्चर मारनको सुनि वह भयो उदास ॥ २६२ ॥ करगहि खड्ग तोर वध

करिहौं सुनि मारिच डर मान्यो । रामचन्द्रके हाथ मरूंगो परम पुरुष फल जान्यो ॥ २६३ ॥ कपट कुरंग रूपधरि आयो सीता बिनती कीन्हीं । रामचन्द्र कर सायक लैकै मारनकी विधि कीन्हीं ॥ २६४ ॥ मारचो धनुष बाणले ताको लक्ष्मण नाम पुकारेव । लक्ष्मण नाम सुनत तहँ आये अवसर दुष्ट विचारेव ॥ २६५ ॥ धरिकै कपट भेष भिक्षुकको दशकन्धर तहँ आयो । हरि लीन्हों छिनमें मायाकरि अपने रथ बैठायो ॥ २६६ ॥ चल्यो भाज गोमायु जंतु ज्यों लैकै हरिको भाग । इतने रामचन्द्र तहँ आये परमपुरुष बड़भाग ॥ २६७ ॥ जब माया सीता नहिं देखी जियमें भये उदास । पूंछनलगे राम द्रुमगनसों बहुत बढी दुखरास ॥ २६८ ॥ मारगमें जटायुखग देख्यो विकल भयो तनुहीन । बिनती करी राम मैं तासों बहुत लडाई कीन ॥ २६९ ॥ जब तनु तज्यो गृध्र रघुपति तब बहुत कर्म विधि कीनी । जान्यो सखा राव दशरथको अपनी निजगति दीनी ॥ २७० ॥ मारगमें कबंधरिपु मारचो सुरपति काज सँवारचो । पंपापुर हरि तुरत पधारे जलको दोष निवारचो ॥ २७१ ॥ शबरी परमभक्त रघुपति की बहुत दिनन की दासी । ताके फल आरोगे रघुपति पूरण भक्ति प्रकासी ॥ २७२ ॥ दीन मुक्ति निजपुरकी ताको तब रघुपति चले आगे । सीता सीता विलपत डोलत परम विरहसों पागे ॥ २७३ ॥ रविनन्दन जब मिले राम को अरु भेटे हनुमान । अपनी बात कहा उन हरिसों बालि बडो बलवान ॥ २७४ ॥ सप्तताल वेधन हरि कीन्हों बालि छिनकमें तारो । दीन्हों राज राम रवि नंदन सब विधि काम सँवारो ॥ २७५ ॥ सप्तद्वीप के कपिदल आये जुरी सेन अतिभारी । सीताकी सुधि लेनचले कपि ढूँढत बिपिन मँझारी ॥ २७६ ॥ जलनिधि तीरगये सब कपि मिल सुन संपतिकी बानी । लंकबसत सीता रिपु बनमें सब वानर यह जानी ॥ २७७ ॥ रामचरण कर सुमिरन मनमें चले पवनसुत धाय । रामप्रताप विघ्न सब मेटे पैठि नगर सुखपाय ॥ २७८ ॥ धरि लघुरूप प्रवेशकियो कपि लंका नगर मँझार । रामभक्त निज जान बिभीषण भेंटे हरि अँकवार ॥ २७९ ॥ तब वाने सबभेद बतायो देखी कपि सबलंक । रामचरण धरिहृदय मुदितमन विचरत फिरत निशंक ॥ २८० ॥ जाय अशोकवाटिका देखी दरशन सीता कीन्ह । कर दण्डवत बहुत बिनती कर राम मुद्रिका दीन्ह ॥ २८१ ॥ सब संदेश कह्यो कपि सियप्रति सुनि हियमें धरि राख्यो । राम संदेश कहेउ तब सीता जो बूझो सो भाख्यो ॥ २८२ ॥ लागीभूख चले उपवनमें नानाविधि फल खायो । विटप उखार उजार विपिनको सबहिनको दरशायो ॥ २८३ ॥ सुनि पुकार निश्चर बहु आये कूदि सबन संहारे । इन्द्रजीत बलनिधि जब आयो ब्रह्मअस्त्र उन डारे ॥ २८४ ॥ तासों बँधे दशानन देखत चले पवनसुत धीर । रावण बहुत ज्ञान समझायो कथ कथ कथा गँभीर ॥ २८५ ॥ चले छुडाय छिनकमें तबहीं जारदई सब लंक । कूदिचले गजवनको जयकर ज्यों मृगराज निशंक ॥ २८६ ॥ आये तीर समुद्र मिले कपि मिले आय जहँ राम । सुनि सुनि कथा श्रवण सीताकी पुलकित अति अभिराम ॥ २८७ ॥ करि कपिकटक चले लंकाको छिनमें बांध्यो सेत । उतरगये पहुँचे लंकापै विजयध्वजा संकेत ॥ २८८ ॥ पठये वालिकुमार विनयकरि समझाये बहुबार । चित नाहिं धरो कालवश जान्यो फिर आयो सुकुमार ॥ २८९ ॥ अशरण शरण उदार कल्पतरु रामचन्द्र रणधीर । रिपुभ्राता जान्यो जु विभीषण निश्चर कुटिलशरीर ॥ २९० ॥ राखिशरण लंकेशकियो पुनि जब निश्चर सब मारे । मायाकरी बहुत नानाविधि सबको राम निवारे ॥ २९१ ॥ कुंभकर्ण पुनि इन्द्रजीत यह महाबली बलसार । छिनमें लिये सोख मुनिवर ज्यों क्षत्री बली अपार ॥ २९२ ॥

कियो प्रसाद शांतना करिकै राजविभीषण दीन्ही। पुनि मंदोदरि अचल आयु दै अभयदान सबकीन्हीं ॥ २९३ ॥ समाधान सुरगणको करिकै अमृत मेघ बरपायो। कृपादृष्टि अवलोकन करिकै हतकपि कटक जियायो ॥ २९४ ॥ निश्चर किये मुक्त सब माधव ताते जिये न कोय। निर्भय किय लंकेश बिभीपण रामलपण नृप दोय ॥ २९५ ॥ सीता मिली बहुत सुखपायो धरो रूप निज मायो। पुष्पकयान बैठके नीके चले भवन सुखछायो ॥ २९६ ॥ चले पवनसुत विप्ररूप धरि भरतहि देन बधाई। जानि दूत रघुपतिको प्रमुदित भरतमिले तबधाई ॥ २९७ ॥ सुनत नगर सबहिन सुख मान्यो जहँतहँते चलेधाई। रामचन्द्र पुनि मिले भरतसों आनँद उर न समाई ॥ २९८ ॥ कियो प्रवेश अयोध्या में तब घर घर बजत बधाई। मंगल कलश धराये द्वारे बंदनवार बँधाई ॥ २९९ ॥ राजभवनमें राम पधारे गुरु वशिष्ठ दरशायो। शीशनवाय बहुत पूजाकरि सूरजवंशबढायो ॥ ३०० ॥ समाधान सबहिनको कीन्हों जो दर्शनको आयो। कौशल्या कैकयी सुमित्रा मिलि मनमें सुखपायो ॥ ३०१ ॥ बैठे राम राजसिंहासन जगमें फिरी दुहाई। निर्भय राज रामको कहियत सुर नर मुनि सुख पाई ॥ ३०२ ॥ चार मूर्तिधर दरशन आये चार वेद निज रूप। अस्तुति करी बहुत नानाविधि रीझे कोशल भूप ॥ ३०३ ॥ शिव विरंचि नारद सनकादिक सब दरशनको आये। रामराज बैठे जब जाने सबहिन मन सुखपाये ॥ ३०४ ॥ लोकपाल अतिही मन हरपे सब सुमनन बरपायो। पुष्पविमान बैठि हरि आये लै कुबेर पहुँचायो ॥ ॥ ३०५ ॥ अति आनन्द भयो अवनीपर रामराज सुखदास। कृतयुग धर्म्म भये त्रेतामें पूरण रमा प्रकास ॥ ३०६ ॥ अश्वमेध बहु यज्ञ किये पुनि पूजे द्विजन अपार। हय गज हेम धेनु पाटम्बर दीन्हें दान उदार ॥ ३०७ ॥ चरित अनेक किये रघुनायक अवधपुरी सुख दीन्हों। जनकसुता बहु लाड लडावत निपट निकट सुख कीन्हों ॥ ३०८ ॥ जो न वसंत बहुतद्रुम फूले जनकसुता अनुरागे। प्रेमप्रवाह प्रकट प्रकटायो होरी खेलनलागे ॥ ३०९ ॥ कबहुँक निकट देखि वर्षाऋतु झूलत सुरँग हिंडोरे। रमकत झमकत जनकसुता सँग हावभाव चित चोरे ॥ ३१० ॥ कबहुँक कमल सरोवर उपवन जनकसुता सँग लीन्हें। नाना जल विहार विहरतहैं सन्तजनन सुखदीन्हें ॥ ३११ ॥ कबहुँक रत्न महल चित्रसारी शरद निशा उजियारी। बैठे जनकसुता सँग विलसत मधुर केलि मनुहारी ॥ ३१२ ॥ कबहुँक अगरधूप नानाविधि लियसुगन्ध सुख कारी। कबहुँक निरतत देवनटीलखि रीझतहैं सुखभारी ॥ ३१३ ॥ रामविहार कहेउ नानाविधि वाल्मीकि मुनि गायो। वर्णत चरित विस्तार कोटिशत तऊ पार नहिं पायो ॥ ३१४ ॥ सुर समुद्रको बुन्द भई यह कवि वर्णन कह करिहै। कहत चरित रघुनाथसरस्वती बौरी मति अनुसरिहै ॥ ३१५ ॥ अपने धाम पठाय दिये तब पुरवासी सब लोग। जै जै जै श्रीराम कल्पतरु प्रकट अयोध्याभोग ॥ ३१६ ॥ दुष्ट नृपति जब बैठे भुवपर धरि भृगुपतिको रूप। क्षणमें भुवको भार उतारचो परशुराम द्विजभूप ॥ ३१७ ॥ व्यासरूप ह्वै वेद विस्तारे कीन्हें प्रकट पुराणन। नानावाक्य धर्म थापनको तिमिरहरण भुवभारन ॥ ३१८ ॥ बुद्धरूप कलिधर्म प्रकाश्यो दया सन्तनको मूल। दूर कियो पाखण्डवाद हरि भक्तनको अनुकूल ॥ ३१९ ॥ कलिके आदि अन्त कृतयुगके ह्वै कलँकी अवतार। मारि मलेच्छ धर्म्म फिर थाप्यो भयो जग जयजयकार ॥ ३२० ॥ कर्मवाद थापनको प्रकटे पृश्नि गर्भ अवतार। सुधापान दीन्हों सुरगणको भयो जग यश विस्तार ॥ ३२१ ॥ असुरनको व्यामोह कियो हरि धरो मोहनीरूप। अमृत पानकराय सुरनको कीन्हें चरित अनूप ॥ ३२२ ॥

तैसेही भुवभार उतारन हरिहलधर अवतार। कालिंदी आकर्ष कियो हरि मारे दैत्य अपार॥ ॥ ३२३ ॥ गज अरु ग्राह लडेउ जलभीतर तब हरि सुमिरण कीन्हों। छोंडिगरुड सुखधाम सांवरो भक्तनको सुख दीन्हों॥ ३२४॥ जब बहु असुर बढे पृथ्वीपर कियो अनर्थ विस्तार। सत्य सेन प्रगटे विश्वम्भर सत्य कियेहै अपार॥ ३२५॥ निज वैकुण्ठ बसाय रमापति कियो रमाको हेत। विनती सुनि कमलाकी केशव कीन्हों सुख संकेत॥ ३२६॥ ब्रह्मचर्य्य थापनके कारण धरो विभू अवतार। जहँ तहँ मुनिवर निज मर्य्यादा थापी अघट अपार॥ ३२७॥ अजित रूपह्वै शैल धरो हरि जलनिधि मथबे काज। सुर अरु असुर चकित भये देखत किये भक्तके काज॥ ॥ ३२८॥ जब बलिराजा गये देवपुर लीन्हों स्वर्ग छुडाय। अदिती दुखित भई कश्यपसों बिनती करी सुनाय॥ ३२९॥ तब कश्यप मुनि कहेउ पयोव्रत विधिसों करो बनाय। ताकी कोखि जन्म हरि लीन्हों श्रीवामन सुखदाय॥ ३३०॥ भादौं श्रवण द्वादशी शुभ दिन धरो विप्र हरिरूप। शिव विरंचि सनकादिक आये बन्दनको सुख भूप॥ ३३१॥ यज्ञोपवीत विधोक्त कियो विधि सब सुर भिक्षा दीन्हीं। वामनरूप चले हरि द्विजवर बलिकी मनसुधि कीन्हीं॥ ३३२॥ दण्डकमण्डलु हाथ विराजत अरु ओढे मृगछाला। धरि बटुरूप चले वामन जू अम्बुज नयन विशाला॥ ३३३॥ सूरज कोटि प्रकाश अंगमें कटिमेंखला विराजै। करी वेदध्वनि नृपद्वारे पै मनहुँ महाघनगाजै॥ ३३४॥ सुनिधायो तबहीं बलिराजा आय चरण शिरनायो। बिनती करी बहुत सुखमान्यो आज भयो मन भायो॥ ३३५॥ चलिये विप्र यज्ञशालामें जहँ द्विजवर सब राजैं। आये ब्रह्मसभामें वामन सूरज तेज विराजैं॥ ३३६॥ तब नृप कहेउ कछू द्विज माँगो रत्नभूमि मणिदान। हय गज हेम रत्न पाटम्बर देहौं प्रगट प्रमान॥ ३३७॥ तब बोले वामन यह वाणी सुन प्रह्लाद कुलभूप। बहुत प्रतिग्रह लेत विप्र जो जाय परत भवकूप॥ ३३८॥ तीन पैंड बसुधा हम पावैं पर्णकुटी इक कारण। जब नृप भुव संकल्प कियो है लागे देह पसारन॥ ३३९॥ एक पैंडमें वसुधा नापी एक पैंड सुरलोक। एक पैंड दीजै बलि राजा तब ह्वैहो विनशोक॥ ३४०॥ नापो देह हमारी द्विजवर सो संकलिपत कीन्हों। सुनि प्रसन्न वामन यों बोले तैं मोको वश कीन्हों॥ ३४१॥ सदा द्वार तेरे ठाढोहै दरशन देहौं तोहिं। मायाकाल कबहुँ नहिं व्यापै सुमिरन करतै मोहिं॥ ३४२॥ सुतल लोकमें थिरकरि थाप्यो जहँ विभूति अति भारी। गहिकै गदा द्वारपर ठाढे वामन ब्रह्म मुरारी॥ ३४३॥ स्वर्गलोक दीन्हों सुरपतिको पुनि थिरकर कर थाप्यो। निगम नेति कहि रटत निरन्तर देव शत्रु सब कांप्यो॥ ३४४॥ वामनरूप ब्रह्महरि प्रकटे जिनको यश जग गावै। शेष सहसमुख रटत निरंतर सूर पार किमि पावै॥ ३४५॥ पुनि बलिराजहिं स्वर्गलोकमें थापैंगे हरि राय। सर्वं भौम अवतार धरैंगे श्रीवामन सुखदाय॥ ३४६॥ पुनि विभुरूप एक हरि लेंगे सकल जगत कल्याण। कपट खण्ड पाखण्ड असुरको थापे भक्त निदान॥ ३४७॥ विष्वक्सेन रूप हरिलेंगे कीन्हों शिवको हेत। असुर मारि सब तुरत विडारे दीन्हें रुद्र निकेत॥ ३४८॥ धर्मसेतु ह्वै धर्म बढायो मुविको धारण कीन्हों। शेषरूप ह्वै धराशीश फिर सब जगको सुख दीन्हों॥ ३४९॥ अन्तर्यामी पालन कारण निज सुधर्म धरि रूप। अन्नदान दै सब जग पोष्यो किये काज सुर भूप॥ ॥ ३५०॥ योगपन्थ पातंजलि भाष्यो सोउ क्षीण सब जान्यो। योगीश्वर वपुधरि हरि प्रकटे योग समाधि प्रमान्यो॥ ३५१॥ क्रिया पंथ श्रुतिने जो भाष्यो सो सब असुर मिटायो। बृहद्भानु

ह्वैकै हरि प्रकटे क्षणमें फिरि प्रकटायो ॥ ३५२ ॥ यह अनेक अवतार कृष्णके को करिसकै बखान। सोई सूरदासने वरणे जो कहे व्यास पुराण ॥ ३५३ ॥ अंशकला अवतार श्यामके कवि पै कहत न आवै। जहँ जहँ भीर परत भक्तनको तहँ तहँ वपु धरि धावै ॥ ३५४ ॥ मायाकला ईश चतुरानन चतुर्व्यूह धरि रूप। वायु वरुण अरु यम कुबेर शशि मृत्यु अग्नि सुर भूप ॥ ॥ ३५५ ॥ रवि शशि भृगु मरीचि सुरगुरु अरु चार वेद वपु जान। जगको प्रकट करन परजापति प्रकटे कलानिधान ॥ ३५६ ॥ जो जो भूप भये भूमण्डल लोकपाल निजजान। निज महिमा हरि प्रकट करी है विधिके वचन प्रमान ॥ ३५७ ॥ सुर अरु असुर रची हरि रचना सो जग प्रगटहि कीन्हीं। क्रीडाकरी बहुत नानाविधि निगम बात दृढ़ चीन्हीं ॥ ३५८ ॥ यहि विधि होरी खेलत खेलत बहुत भाँति सुख पायो। धरि अवतार जगतमें नाना भक्तन चरित दिखायो ॥ ॥ ३५९ ॥ अंश कला अवतार बहुत विधि राम कृष्ण अवतारी। सदा विहार करत व्रज मण्डल नंदसदन सुखकारी ॥ ३६० ॥ नित्य अखण्ड अनूप अनागत अविगत अनघ अनन्त। जाको आदि कोऊ नहिं जानत कोउ न पावत अन्त ॥ ३६१ ॥ जब हरिलीलाकी सुधि कीन्हीं प्रगट करन विस्तार। श्रीवृषभानु रूप ह्वै प्रकटे पुनि व्रजराज उदार ॥ ३६२ ॥ विद्या ब्रह्म कही यशुमतिसों जाकी कोखि उदार। सोरहकला चन्द्र जो प्रकटे दीन्हों तिमिर विदार ॥ ३६३ ॥ पुनि वसुदेव देवकी कहियत पहिले हरिवर पायो। पूरण भाग्य आय हरि प्रकटे यदुकुल ताप नशायो ॥ ३६४ ॥ आठे बुद्ध रोहिणी आई शंख चक्र वपुधारो। कुण्डल लसत किरीट महाध्वनि वपु वसुदेव निहारो ॥ ३६५ ॥ अस्तुति करी बहुत नानाविधि रूपचतुर्भुज देख्यो। पीताम्बर अरु श्याम जलद वपु निरखि सफल दिन लेख्यो ॥ ३६६ ॥ तब हरि कहेउ जन्म तुम्हरे गृह तीन बार हम लीनो। पृश्नीगर्भ देव ब्राह्मण जो कृष्णरूप रँग भीनो ॥ ३६७ ॥ माँगो सकल मनोरथ अपने मन वांछित फल पायो। शंख चक्र गदा पद्म चतुर्भुज अजन जन्म लै आयो ॥ ॥ ३६८ ॥ यह भुवभार उतारन कारन हलधरके सँग लायो। क्रीडा करो लोक पावनकर करो भक्त मन भायो ॥ ३६९ ॥ प्राकृत रूप धरो हरि क्षणमें शिशुह्वै रोवन लागे। तब वसुदेव देवकी निरखत परम प्रेम रसपागे ॥ ३७० ॥ तब देवकी दीन ह्वै भाष्यो नृपको नाहिं पतीजे ॥ अहो वसुदेव जाव लै गोकुल कह्यो हमारो कीजै ॥ ३७१ ॥ तबलै हरिपलना पौढाये पीताम्बर जु उढायो। तब वसुदेव शीश धरि पलना भयो सबन मनभायो ॥ ३७२ ॥ गोकुल चले प्रेम आतुरह्वै खुलि गये कपट कपाट। सोये श्वान पहरुआ सोये सबै मुक्तभई बाट ॥ ३७३ ॥ तब वसुदेव लियो करपलना अपने शीश चढायो। रैन अँधेरी कछु नाहिं सूझत अटकर अटकर आयो ॥ ३७४ ॥ शेष सहसफण ऊपर छाये घनकी बूँद बचावें। आगे सिंह हुँकारत आवत निर्भय बाट जनावें॥ ॥ ३७५ ॥ यमुना अति जलपूर बहत है चरणकमल परशायो। मारग दीन्हों राम सिंधु ज्यों नन्दभवन चलिआयो ॥ ३७६ ॥ पहुँचेआय महर मन्दिर में नेक न शंका कीन्हीं। बालक धरि लैकै सुदेवी सुरति गवनकी कीन्हीं ॥ ३७७ ॥ लै वसुदेव तुरत घरआये काहू जिय नहिंजाने। जब वह रोवन लागी तब सब जागपरे अकुलाने ॥ ३७८ ॥ बालक भयो कह्यो नृपसों जब दौरि कंस तब आयो। करगहि खड्ग कह्यो देवकिसों बालक कहँ पहुँचायो ॥ ३७९ तब देवकी अधीन कह्यउ यह मैं नहिं बालक जायो। यह कन्या मोहिं बकस वीर तू कीजै मोमन भायो ॥ ३८० ॥ कंस वंशको नाश करत है कहा समुझ रिसयानी। मोको भई अनाहद बाणी ताते डर नहिं

जानी ॥ ३८१ ॥ कन्या मांग लई तब राजा नेकु शंक नहिं आनी । पटकत शिला गई आकाशै कंस प्रतीति न मानी ॥ ३८२ भइ अकाशवाणी सुरदेवी कंस यहीं अबआई । तेरो शत्रु प्रकट कहुँ ब्रज में काहु लख्यो नहिं जाई ॥ ३८३ ॥ जैसे मीन करत जलक्रीडा जलमें रहत समाई । त्यों तुवकाल प्रकट इक कतहूँ लखि न सकत तेहि कोई ॥ ३८४ ॥ अन्तर्द्धान भई सुरदेवी कंस प्रतीति जो मानी । तब वसुदेव देवकीके गृह कंस गयो यह जानी ॥ ३८५ ॥ क्षम अपराध देवकी मेरो लिख्यो न मेट्यों जाई । मैं अपराध किये शिशु मारे करजोरे बिललाई ॥ ३८६ ॥ पुनि गृहआय सेजपर सोयो नेकु नींद नहिं आवै । देश देशके दूतबुलाये सबहिन मतो सुनावै ॥ ॥ ३८७ ॥ दीनहीन जो असुर चढत बलि करत सकल पुनि तैसो । बूझतनाहिं तन भार उतारेउ जलको माखनजैसो ॥ ३८८ ॥ भयो भोर यशुमति गृह आनँद मंगलचार बधाई । जागी महरि पुत्र सुख देख्यो आनँद उर न समाई ॥ ३८९ ॥ जैसे शशि प्रकटत प्राचीदिशि सकल कलाभरिपूर । यशुमतिकोख आय हरि प्रकटे असुर तिमिरकर दूर ॥ ३९० ॥ नन्दराय घर ढोटा जायो महर महासुख पायो । विप्र बुलाय वेदध्वनि कीन्हीं स्वस्ती वचन पढ़ायो ॥ ॥ ३९१ ॥ जातकर्मकर पूजि पितर सुरपूजन विप्र करायो । दोइलख धेनुदई तेहि अवसर बहुतहि दानदिवायो ॥ ३९२ ॥ पर्वत सात तिलनको कीन्हों रत्नओघमिलायो । मागध सूत और बन्दीजन ठौर ठौर यश गायो ॥ ३९३ ॥ बाजे बजत विचित्र भाँतिसों रह्यउ घोष सब गाज । सुर सुमनन बरषावत गावत व्योम बिमानन साज ॥ ३९४ ॥ बांधत बन्दनवार साथिये द्वारेध्वजा सोहाई । कनक कलश प्रति पौर विराजत मंगलचार बधाई ॥ ३९५ ॥ सुरभी वृषभ सिंगारे बहुविधि हरदी तेल लगाई । सुवरण माल विचित्र धातुरंग अँग अँग चित्र बनाई॥३९६॥ आये गोप भेंट लै लैकै भूषण वसन सोहाये । नानाविधि उपहार दूध दधि आगेधरि शिरनाये ॥ ३९७ ॥ यशुमतिके गृह पुत्र प्रकटभयो सुनी सकल ब्रजनारी । मंगलसाज सँवार हाथलै घर घर मंगलकारी॥३९८॥ अति आतुरह्वै चलीं झुण्डझुरि शिर सुमनन वरसावें । मानों रीझ मधुप धरणीको रस पराग दरशावें ॥ ॥ ३९९ ॥ पहुँचीं जाय महर मन्दिरमें करत कुलाहल भारी । दरशनकरि यशुमतिसुतको सब लेनलगीं बलिहारी ॥ ४०० ॥ नाचतगोप परस्पर सब मिलि छिरकतहैं नवनीत । दूध और दधि और हरदजल सींचतहैं करप्रीत ॥ ४०१ ॥ यशुमतिकोखिसराहि बलैया लेनलगीं ब्रजनार । ऐसो सुत तेरें गृह प्रकट्यो या ब्रजको शृंगार ॥ ४०२ यशुमति रानी देति बधाई भूषण रत्न अपार । फूली फिरत रोहिणी मइया नख शिखकर शृंगार ॥ ४०३ ॥ देत अशीशचलीं ब्रजसुन्दरि जियउपज्यो सुखभारी। गृहपूजन सब कियो वेदविधि नंदराय सुखकारी॥४०४॥देशदेशते ढाढीआये मनवांछित फलपायो । को कहि सकै दशौंधी उनको भयो सवन मन भायो ॥ ४०५ ॥ तादिनते सगरे या ब्रजमें रमारूप दरशायो । निजकुल वृद्ध जानि इक ढाढी गोवर्धनते आयो ॥४०६॥परम उदार महर ब्रजपति जू ढाढी निकट बुलायो। बाजत डुडुक मँजीरा नूपुर नानाभाँति नचायो ॥ ॥ ४०७ ॥ झँगा पगा अरु पाग पिछौरी ढाढिनको पहिरायो । हरि दरियाई कंठलगाई परदरशात उठायो ॥४०८॥ बहुतदान दीन्हें उपनँदजू रतन कनक मणि हीर । धरानन्द धन बहुतहि दीन्हों ज्यों बरषत घन नीर ॥ ४०९ कुण्डल कान कंठ माला दै ध्रुवनँद अति सुखपायो । सीधो बहुत सुर सुरानँदें गाडाभरि पहुँचायो॥४१०॥कर्मधर्मानन्दकहत हैं बहुतहि दान दिवायो । ब्रजरानी ढाढिन पहिराई मनवांछित फल पायो ॥ ४११ ॥ चले भवनको दै अशीश दोउ निर्भय कीरति गावे ।

जानि यांचैं ब्रजपति उदार अति याचक फिर न कहावै ॥ ४१२ ॥ नानाविधिके विविध खिलौना रत्नन अधिक अमोले । ताको लेनगये, मथुराको आनक दुन्दुभि बोले ॥ ४१३ ॥ वेगजाव गोकुल तुम अबहीं सुनियतहै उतपात । सुनि ब्रजराज तुरत घरआये जियमें अति अकुलात ॥ ॥४१४॥ प्रथम पूतना कंस पठाई अतिसुन्दर वपु धारयउ । घसिकै गरल लगाय उरोजन कपट न कोउ निहारयउ ॥४१५॥ लिये उठाय श्यामसुन्दरको थन गहिकै मुख लीन्हों ।लीन्हें खैंचि प्राण विष पय युत देह विकल तब कीन्हों ॥ ४१६ ॥ छोडछोड कहि परी धरणिपर कर चरणन जु पसार । योजन डेढ विटप बेली सब चूर चूर करडाल ॥४१७॥ ताको जननीकी गति दीन्हीं परमकृपाल गुपाल । दीन्हीं फूंक काठतन वाको मिलके सकल गुवाल ॥ ४१८ ॥ तबहीं नन्दरायजू आये कौतुक सुनि यह भारी । विस्मित भये देवने राख्यो बालक यह सुखकारी ॥ ४१९ ॥ विप्रबुलाय वेदध्वनि कीन्हीं रक्षा बहुत कराई । आरति विविध उतार महरजू मंगल करत बधाई ॥ ४२० ॥ एक दिना हरि लई करोटी सुनिहरषी नँदरानी । विप्रबुलाय स्वस्तिवाचन करि रोहिणि नैन सिरानी ॥ ४२१ ॥ नित मंगल नित होत कुलाहल नित नित बजत बधाई । भादों देव छट्ठिको शुभ दिन प्रगटभये बलसाई ॥ ४२२ ॥ वर्ष दिवस पहिले ब्रजमण्डल शेष महा वपु लीन्हों । अपनो धाम जान प्रगटो भुव रूप प्रगट निज कीन्हों ॥ ४२३ ॥ कंसनृपतिने शकट बुलायो लेकर बीरा दीन्हों। आय नन्दगृह द्वार नगरमें रूप शकटको कीन्हों ॥ ४२४ ॥ मारी लात श्याम पलनाते परयउ धरणि भहराय । जहँ जहँते दौरे ब्रजवासी श्यामहिं लियो उठाय ॥ ४२५ ॥ बच्छपुच्छ लैदियो हाथपर मंगलगीत गवायो । यशुमति रानी कोखिसिरानी मोहन गोद खिलायो ॥४२६ ॥ इकदिन अस्तन पानकरावति यशुमति अति बडभागी । वदन पसारि विश्व दिखरायो क्षणइक मुरछा जागी ॥ ४२७ ॥ तृणावर्त विपरीति महाखल सो नृपराय पठायो । चक्रवातह्वै सकल घोषमें रज धुंधरह्वै छायो ॥ ४२८ ॥ चल्यो उठाय गुपाल व्योममें तब हरि कंठ गहायो । पटक्यो शिला खरिकके आगे क्षण निरजीव करायो ॥ ४२९ ॥ गर्गराज मुनिराज महाऋषि सो वसुदेव पठायो । नामकरण ब्रजराज महरघर अति आनन्दितआयो ॥ ४३० ॥ नामकरण कीन्हों दोहुन को नारायण समभाषे । तुम्हरेदुःख मिटावनकारण पूरणको अभिलाषे ॥ ४३१ ॥ राम कृष्ण अवतार मनोहर भक्तनके हितकाज । बहुतहि काज करैंगे तुम्हरे सुनहु महर ब्रजराज ॥ ४३२ ॥ एकदिना पलना हरि पौढ़े नन्दमहरके द्वार । नँदरानी गृह कारज लागी नाहिंन लई सँभार ॥ ४३३ ॥ कंसनृपति इक असुर पठायो धरेउ कागको रूप । सम्मुख आय नयनदोउ जोरे देख्यो श्यामको रूप ॥ ४३४ ॥ कंठ चाप बहुबार फिरायो पटक्यो नृपके पास । एक याममें वचन कह्यो यह प्रकटभयो तुवनास ॥ ४३५ ॥ यह कहिकै तनु त्याग कियो उन कंसनृपतिके आगे । भयो उदास सुहात न कुछ ये क्षण सोवत क्षण जागे ॥ ४३६ ॥ एकदिना ब्रजराज महरजू और यशोदारानी । घुटुवन चलत श्यामको देखत बोलत अमृतबानी ॥ ४३७ ॥ इतते नन्दमहर बोलतहैं उतते जननिबुलावत । सुन्दरश्याम खिलौना कीन्हों हँसि हँसि मोद बढ़ावत ॥ ४३८ ॥ शशिको देख और हरिठानी कर मनुहार मनावत । मधु मेवा पकवान मिठाई विविध खिलौना लावत ॥ ४३९ ॥ कमलनैनको महर यशोदा जलप्रातिबिंब दिखावत । फेरतहाथ चन्द्र पकरनको नाहिंनहोत लखावत ॥ ४४० ॥ बूढ़ेबाबू दरशन आये लाल चन्द्रमणि दीन्हों । ताको देख और सब छांडी, भोजनकी सुधि कीन्हों ॥ ३४१ ॥ औटयो दूध कपूर मिलायो प्यावत कनक कटोरे । पीवत देखि रोहिणी यशुमति

डारतहै तृण तोरे ॥ ४४२ ॥ कछु दिन भये संग दोउ बालक बल मोहन दोउ भाई । चोरी करत हरत दधि माखन लीला कहिय न जाई ॥ ४४३ ॥ सब ब्रजनारी उरहन आई ब्रजरानीके आगे। मैं नाहिंन दधिखायो याको शिशुह्वै रोवन लागे ॥ ४४४ ॥ एक दिना ब्रजपतिकी पौरी खेलतहरि ब्रजबाल । माटी खाय वदन दिखरायो चंचल नयन विशाल ॥४४५॥ सकल ब्रह्मांड उदरमें देख्यो ब्रज मंडल राताल । नन्द महर यशुदा रोहिणि पुनि धेनु सकल ब्रजग्वाल ॥ ४४६ ॥ हृदय ज्ञान उपज्यो तब यशुमति पूरण ब्रह्म विशेखे । हरि उपजाई माया तब सब बहुरि पुत्र करि लेखे॥ ॥ ४४७ ॥ एकदिना दधि मथन करतही महर घोषकी रानी । हरि माँग्यो माखन नहिं दीन्हों तब मनमें रिस ठानी ॥ ४४८ ॥ फोरे भांड़ दही आंगनमें फैल परेउ अति भारी । दौरी पकर देत नहिं मोहन अति आतुर महतारी ॥ ४४९ ॥ जानी विकल बहुत जननीको हरि पकराई दीनी । बहुत दामलै बांधन लागी अँगुरी द्वै भइ हीनी ॥ ४५० ॥ व्याकुल भई बँधत नहिं मोहन दया श्यामको आई । ऊखल दाम बँधेहरि जाने गोपी देखन धाई ॥ ४५१ ॥ तौलौं बँधे देव दामोदर जौलौं यह कृत कीनी । देख दुखितह्वै सुत कुबेरके कृपा दृष्टि करि दीन्हीं ॥ ४५२ ॥ नारद मुनिको शाप पायके श्याम दई गति ताय । निकसे बीच अटक ऊखलमें श्यामरहे अटकाय ॥ ४५३ ॥ चरण परसि ते पुलकि भये भुव परे वृक्ष महराय । भयो शब्द आघात स्वर्ग लौं सुनि आये ब्रजराय ॥ ४५४ ॥ अस्तुति करि वे गये स्वर्गको अभय हाथ करि दीन्हों । बंधन छोरि नंद बालकको लै उछंग कर लीन्हों ॥ ४५५ ॥ यशुमतिजूसों लैरे महर जू तुम क्यों बाँध्यो दाम । गर्गकहेउ मोहै नारायण आये हैं बलश्याम ॥ ४५६ ॥ यशुमति माय धाय उर लीन्हों राई लोंन उतारों । लेत बलाय रोहिणी नीके सुंदर रूप निहारो ॥ ४५७ ॥ कबहुँककर करताल बजावत नाना भांति नचावत । कबहुँक दधि माखनके कारण आछी आर मचावत ॥ ४५८ ॥ बड़े गोप उपनन्द बुलाये नंद महरके धाम । कीन्हें मंत्र गोपसब मिलिकै जेहि विधि पूरण काम४५९॥ बहु उत्पात रहत हैं गोकुल नित प्रति कंस पठायो । अंत जाय कहँ वास करैंगें बालक देंव बचायो ॥ ४६० ॥ अब वृन्दावन जाय रहैंगे जहँ वीरुध तृण पानी । चले गोप अति ओप विराजैं बोलत हो हो बानी ॥ ४६१॥ यमुना उत्तर आय वृन्दावन जहां सुखद द्रुम राजैं । गोवर्द्धन वृंदावन यमुना सघन कुञ्ज अति छाजैं ॥ ४६२ ॥ बसे जाय आनंद उमँगसों गइयां सुखद चरावैं। आयो दुष्ट बकासुर जान्यो हरि चित बात धरावैं ॥ ४६३ ॥ करि विचार छिनमें हरि मारो सो बछरा वनआज । तापाछे जो बकासुर आयो घात कियो ब्रजराज ॥ ४६४ ॥ बच्छ चरावत वेणु बजावत गोप सखनके संग । सो देखत चतुरानन आये हरि लीला रसरंग ॥ ४६५ ॥ छाकैं खात खवावत ग्वालन सुन्दर यमुनातीर । ग्वाल मंडली मध्य विराजत हरि हलधर दोउ वीर ॥ ४६६ ॥ गाय गोप अरु बच्छ सबै विधि छिनहींमें हरिलीन्हों । सबको रूपभये हरिआपुन नेकविलम्ब न कीन्हों ॥ ४६७ ॥ जबहीं गर्वगयो चतुरानन अद्भुत चरितहिंदेख । परोधाय हरिपांय जोरि कर नाथ कृपा करलेख ॥ ४६८ ॥ अस्तुतिकरी वेदविधि करिकै चतुरानन बहुभांति । अद्भुत चरित देख माधो को हँसत सकल किलकाति ॥ ४६९ ॥ गयेधाम अपने विधि सुखसों हरिआज्ञा सुखपाय । वर्ष दिवसलौं सर्वरूप हरि ब्रजवासिन सुखदाय ॥ ४७० ॥ धेनु चरावनचले श्यामघन ग्वालमंडलीजोई हलधरसंग छाकभरि काँवर करत कुलाहलशोर ॥ ४७१ ॥ क्रीडाकरत आप वृन्दावन धेनु समूह नचावत । गोबर्धन पर वेणु बजावत फूलनभेप सँवारत ॥ ४७२ ॥ कालीनाग नाथ हरिलाये

सुरभी ग्वालजिवाये । कनक कमलके बोझ शीशधरि मथुरा कंस पठाये ॥ ४७३ ॥ दावानलको पान कियो सुख गोपन रक्षा कीनी । वर्षा सुऋतु देख वृन्दावन क्रीडाकी सुधि लीनी ॥ ४७४ ॥ वेणु बजाय विलास कियोवन धौरी धेनु बुलावत । बरहापीड दाम गुञ्जामणि अद्भुत भेष बनावत ॥ ॥ ४७५ ॥ प्रातकाल स्नान करनको यमुना गोपि सिधारी लैकै चीर कदम्ब चढे हरि बिनवत हैं ब्रजनारी ॥४७६ ॥ दै बरदान संग खेलनको शरद रैनि जब आई । रचिकै रास सबन सुख दीन्हों रजनी अधिक कराई ॥ ४७७ ॥ गोवर्धन धरि सब ब्रज राख्यो मघवा मान मिटायो । नारायण प्रकटे सब जाने जोइ गर्गमुनि गायो ॥ ४७८ ॥ धेनुक और प्रलम्ब सँहारे शंखचूड वध कीन्हों । करिकै चरण परस प्रभु वनमें व्याल अभयपद दीन्हों ॥ ४७९ ॥ नानाविधि क्रीडा हरि कीन्हीं ब्रजवासिन सुख पायो । सबहिन यह मांग्यो विनती कर हरि वैकुंठ दिखायो ॥ ४८० ॥ अभयदान दीन्हों मघवाको नंदरायको राख्यो । वरुणलोकमें गये कृपाकरि विविध वचन उन भाख्यो ॥ ॥ ४८१ ॥ यज्ञ करत ब्राह्मण मथुराके ओदन श्याम मँगायो । उन नहिं दियो नारिपै पठये तब उन सुनि सुख पायो ॥ ४८२ ॥ षटरस थार सँवार साजसों सबही हरिपै आई । कियो मनोरथ पूरण उनको निर्भय करि जु पठाई ॥ ४८३ ॥ व्योमासुर केशी सब मारे अरु अरिष्ट वध कीनो । क्रीडा बहुत करी गोकुलमें भगतनको सुख दीनों ॥ ४८४ ॥ नारद आय कहेउ नृपसों यह कौन नींद तू सोवे । तेरो शत्रु प्रकट गोकुलमें गुप्त न जानत कोवे ॥ ४८५ ॥ यह सब देव प्रकट भये ब्रजमें जहँ तहँ ठौरहि ठौर । उग्रसेन वसुदेव देवकी यादव जे सब और ॥ ४८६ ॥ नंदगोप वृषभान यशोदा सबहि गोप कुल जानों । करो उपाय बचो जो चाहो मेरो वचन प्रमानो ॥ ४८७ ॥ यह सुनि कंस सबनको बन्धन दीनोहै त्यहिकाल । श्रीवसुदेव देवकी निज पितु बन्धन दियो विशाल ॥ ॥ ४८८ ॥ फिरि नारद गोकुल हो आये हरि चरणन शिरनाये । अस्तुति करी बहुत नानाविधि मधुरे बीन बजाये ॥ ४८९ ॥ हरि कछु इन उत्तर नहिं दीनो फिरगये अपने धाम । बल मोहन सब सखा वृन्द लै क्रीडत गोकुल ग्राम ॥ ४९० ॥ बल अक्रूर कंस यह भाष्यो सुन सुफलक सुत बात । राम कृष्णको लायो मधुपुर विलमकरो जनि जात ॥ ४९१ ॥ तब रथबैठ चले सुफलक सुत संध्या गोकुल आये । पैंडे में हरिचरण धूरिलै अपने अंग लगाये ॥ ४९२ ॥ मिले नंद बलदेव रोहिणी और यशोदारानी । पूजा करि पधराय सदनमें भोजनकी विधि ठानी ॥ ४९३ ॥ भोजन करि अक्रूर जो बैठे सब वृत्तांत सुनाये । धनुषयज्ञ कीन्हों नृपजूने सबको वेग बुलाये ॥ ४९४ ॥ चले महर ब्रजराज साज लै कौतुक देखन आज । राम कृष्ण दोउ आगे लैकै सकल घोप शिरताज । ॥ ४९५ ॥ मारगमें कालिंदीके तट कीन्हों जल असनान । निज वैकुंठ दिखायो जलमें दीन्हों पूरण ज्ञान ॥ ४९६ ॥ करि वंदन हरिके चरणनको पुनि अक्रूर यह भाख्यो । तुम यदुकुल प्रकटे पुरुषोत्तम भक्तनको प्रण राख्यो ॥४९७॥ मथुरा आय रहे उपवनमें नंदराय सब गोप । रामकृष्णके चरण परसते अधिक मधुपुरी ओप ॥ ४९८ ॥ गये नगर देखनको मोहन बलदाऊ ले साथ । पुर कुल वधू झरोखन झांकत निरख निरख मुसक्यात ॥४९९॥ मारगमें यक रजक सँहारयो सबहि वसन हरि लीन्हें । बालक मिल्यो सबहि पहिराये सबहिनको सुख दीन्हें ॥ ५०० ॥ आगे मिल्यो सुदामा माली फूल माल पहिराई । निर्भयदान दियो हरि तिनको अविचल भक्ति दृढाई ॥ ५०१ ॥ कुब्जा घिसि चन्दनलै आई मारग देखन आई । हरि माँग्यो उनलेजु समर्प्यो मन वांछित फल पाई ॥ ५०२ ॥ दियो वरदान भवन आवनको तहांते चले कन्हाई । मथुरानगर देख मनमोहन

फूले हैं दोउभाई ॥ ५०३ ॥ रीझत नारि कहत मथुराकी आपुसमें दै सैन । कोमल गात कौनको ढोटा सुन्दर राजिव नैन ॥ ५०४ ॥ यह बालक सुकुमार सरस वपु असुर प्रबल अतिभारी । कैसेकै वाको मौरेंगे शोचतहैं पुर नारी ॥ ५०५ ॥ उपवन आय कियो हरि व्यारू नन्दराय सुख दीन्हों । मधु मेवा पकवान मिठाई जो आयो सो लीन्हों ॥ ५०६ ॥ पौढेजाय दोउ शय्यापर सोवत आई निंद । स्वपनेमें मथुरा फिर देखी जागे बालगोबिंद ॥ ५०७ भयो प्रात नृप फेर बुलायो धनुष यज्ञको देखन । मल्लयुद्ध नानाविध क्रीडा राजद्वारको पेखन ॥ ५०८ ॥ गये ब्रजराज द्वार भूप तिके बहु उपहार दिवाये । तब नृप कह्यो सकल गोपनसों भलीकरी तुम आये ॥ ५०९ ॥ बैठारे सब मंच ओपसों कौतुक देखन लागे । राम कृष्ण सँग ग्वाल मण्डली नगर देख अनुरागे ॥ ५१० ॥ तोरेव धनुष टूककरिडारे दोउन आयुधकीने । तासु मारिकरि चूर पहरुआ परममोद रसभीने ॥ ॥ ५११ ॥ मद गजराज द्वार पर ठाढ़ो हरिकेहेउ नेक बचाय । उन नहिं मान्यो सन्मुख आयो पकरेउ पूंछ फिराय ॥ ५१२ ॥ दियो पठाय श्याम निजपुरको मावत सहि गजराज । आगे चले सभामें पहुँचे जहँ नृप सकलसमाज ॥ ५१३ ॥ बडेबडे राजा सब बैठे अरु पुरवासी लोग । अपने अपने भाव सु देखत मिट्यो सकल मनशोग ॥ ५१४ ॥ मल्लन सबन मल्लसे दीखे नृपन लखे नृपराय । युवतिन सबै काम वपु देखे भेंटनको ललचाय ॥ ५१५ ॥ गोपन सखाभाव करि देखे दुष्ट नृपति कृतदण्ड । पुत्रभाव वसुदेव देवकी देखे नित्य अखण्ड ॥ ॥ ५१६ ॥ विदुष जनन विराट प्रभु दीखे अति मनमें सुखपायो । पूरण तत्त्व देख योगी जन हितसों ध्यान लगायो ॥ ५१७ ॥ यदुकुलके कुल दीपक प्रकटे सब यादव सुखदाई । कंसदेखि निजकाल आपनो बहुतहि क्रोध रिसाई ॥ ५१८ ॥ जब उन कह्यो मल्लक्रीडा तुम करत गोपके संग । वृन्दावनमें हम सुनियत हैं क्रीडत हौ बहुरंग ॥ ५१९ ॥ अब तुम कंस नृपतिको दिखाओ मल्लयुद्ध करि नीके । कह्यो चाणूर मुष्टि सब मिलकै जानत हौ सब जीके ॥ ५२० ॥ तब हरि भिरि मल्ल क्रीडाकरं बहु विधि दांव देखाये । वर्णन कियो प्रथम संक्षेपन अबहूं वर्णन पाये ॥ ५२१ ॥ मुष्टिकसाथ लरे बलभाई घरेउ वृहदवपु दोउ । छिनहीं में हरि तुरत सँहारे अतिआनँदमनहोउ ॥ ५२२ ॥ और मल्ल मारे शल तोशल बहुत गये सबभाज मल्लयुद्ध हरि करि गोपनसों लखि फूले ब्रजराज ॥ ५२३ ॥ तब नृपकंस बहुत बिललायो बारबार रिसयाई । बाँधो नन्द हरो गोपन धन कीन्हों कपट दुराई ॥ ५२४ ॥ फागुनबदि चौदशको शुभदिन अरु रविवार सुहायो । नखत उत्तरा आप विचारेउ कालकंसको आयो ॥ ५२५ ॥ यह कहि कूदगये हरि ऊपर जहँ बैठे नृपराय । हरिको देखि खडग कर लीन्हों सन्मुख आयो धाय ॥ ५२६ ॥ तब हरिकेश पकरि अपने कर धरणी मांझ पछारो । ऊपर गिरे आपु तिहुँ पुरको बोझ शीश पर डारो ॥ ५२७ ॥ कचगहि आपु बहुत वह खैंच्यो हरि यमुनालौं आये । करि विश्राम सकल श्रम बीत्यो जब यमुना जल न्हाये ॥ ५२८ ॥ बंधन छोर पिता माताके अस्तुति करि शिरनायो । तुम हमको पठये गोकुलमें याते लाड लडायो ॥ ५२९ ॥ यशुमति मात और ब्रजपति जू बहुतहि आनँद दीनो । याते टहल करन नहिं पायो कहत श्याम रँगभीनो ॥ ५३० ॥ तब ब्रजराज महरपै आये बल मोहन दोउ भाई । तुम्हरी कृपा कंस मैं मारो कहँ लौं करौं बड़ाई ॥ ५३१ ॥ रोहिणि यह बोली यशुमतिसों हम तुम्हरे सुखपायो । ज्यों तुम्हरो सुत त्यों मेरो सुत बहुतहि लाड लडायो ॥ ५३२ ॥ हिल मिल चले सकल ब्रजवासी नंदगाँव फिरि आयो । सुवसबसी मथुरात

दिनते उग्रसेन बैठायो ५२३ ॥ राम कृष्ण घरआये जाने पुरवासिन सुखपायो। मंगलचार भये घर घरमें मोतिन चौक पुरायो ॥ ५२४ ॥ तब हरिमात पिता पै आये दोउ भाइन शिरनायो। बन्धन छोर विनय बहु कीन्हें तुम हम विन दुखपायो ॥ ५२५ ॥ फिर वसुदेव बसे अपने गृह परम रुचिर सुखधाम। राम कृष्णको लाड लडावत जानत नहिं दिन याम ॥ ५२६ ॥ गर्ग बुलाय वेदाविधि कीन्हों शुभ उपवीत करायो। विद्या पढ़न काज गुरु गृह दोउ पुरी अवन्ति पठायो ॥ ॥ ५२७ ॥ राजनीति सुनि बहुत पढाई गुरु सेवा करवाये। सुरभी दुहत दोहनी माँगी बाँहपसार देवाये ॥ ५२८ ॥ गुरु दक्षिणा देन जब लागे गुरुपत्नी यह माँग्यो। बालक बह्योउ सिन्धुमें हमरो सो नितप्रति चितलाग्यो ॥ ५२९ ॥ यह सुनि श्याम राम दोऊ मिलि गये जलधिके बीच। परपंचानन शंख तहँ लीन्हों मारि असुर अति नीच ॥ ५४० ॥ यमपुर जाय शंखध्वनि कीन्हों यमराजा चलिआयो। चरणधोय चरणोदक लीन्हों बालक दे शिरनायो ॥ ५४१ ॥ लै बालक गुरु आगे धरिकै राम कृष्ण सुखराशी। आज्ञालै मधुपुरी सिधारे परब्रह्म अविनाशी ॥ ५४२ ॥ क्रीडा करत विविध मथुरामें अक्रूर भवन सिधारे। अस्तुति करी बहुत नानाविधि निर्भयकर शिर धारे ॥ ५४३ ॥ कुबिजाके घर आपु पधारे सबै मनोरथ कीनो। ऊधोभक्त संगलेके अति आनँद भक्तन दीनो ॥ ५४४ ॥ उद्धव भक्त बुलाय संगले हरिइक्रांत यह भाख्यो। व्रजवासी लोगनसों मैं तो अन्तर कछू न राख्यो ॥५४५ ॥ सुर गुरु शिष्य बुद्धिमें उत्तम यदुकुल कहत प्रमान। मन्त्री भृत्य सखा मो सेवक याते कहत सुजान ॥ ५४६ ॥ मोकूं लाड लडायो उन जो कहँ लगि करौं बडाई। सुनि ऊधो तुम समझत नाहिन अब देखोगे जाई ॥ ५४७ ॥ वेग जाव व्रज मों आज्ञाते व्रजवासिन सुख देहौ। चरणरेणु शिरधरि गोपिनकी तुमहुं अभयपद लेहौ ॥ ५४८ ॥ गोपिन सों विनती करि कहियो नितप्रति मन सुधि करियो। विरह व्यथा बाढै जब तनुमें तब तब म्वाहिं चितधरियो ॥ ५४९ ॥ पाती लिखी आपकर मोहन व्रजवासी सबलोग। मात यशोदा पिता नन्दजू बाढ्यो विरह वियोग ॥ ५५० ॥ धौरी धूमरि कारी काजर मेन मजीठी गाय। ताको बहुत राखियो नीके उन पोष्यो पयप्याय ॥ ५५१॥ वनमें मित्र हमारे यक हैं हमहींसों है रूप। कमल नयन घनश्याम मनोहर सब गोधनको भूप ॥ ५५२ ॥ ताको पूजि बहुरि शिर नइयो अरु कीजो परणाम। उन हमरो व्रजसबहि बचायो सब विधि पूरे काम ॥ ५५३ ॥ आज्ञालै ऊधो श्रीपतिकी चलेवेग नँदग्राम। पुष्करमाल उतार हृदयते दीनी सुन्दरश्याम ॥ ५५४ ॥ पीताम्बर अपनो पहिरायो श्रुति कुण्डल पहिराये। अपने रथ बैठाय प्रीतिसों उद्धव व्रज पधराये ॥ ५५५ ॥ दिनमणि अस्तभये गये गोकुल नंदरायसो भेंटे। बल मोहन दोउ देख माधुरी परम विरहदुख मेटे ॥५५६॥ मिले नन्द बलराम कृष्ण दोउ हैं नीके यह भाख्यो। मारो कंस भली सब कीन्हीं यादवकुल सब राख्यो ॥ ५५७ ॥ पूजाकरि भोजन करवायो उद्धव संत सरायो। सोवत निशा नेक नहिं पाये रामकृष्ण गुणगायो ॥ ५५८ ॥ यशुदा विकल वात पूछतिहै नयन न नीर प्रवाह। तन मनमें अतिही दुखबाढ्यो अति आतुर जनुदाह ॥ ५५९ ॥ बातें करत शेष निशिआई उद्धव गये सनान सुमिरण कर फिर व्रजमें आये गोपिन देखे आन ॥ ५६० ॥ उद्धव देखि सकल गोपिनने कीन्हों मन अनुमान। रथको देखि बहुत भ्रम कीन्हों धोआये फिर कान ॥ ५६१ ॥ तब यक सखी कहै सुनरी तू सुफलक सुत फिरि आयो। प्राणगये लै पिंड देनको देह लेन मनभायो॥५६२ ॥ इतने देख कृष्ण अनुचर मुख उद्धव यह मन जानी। उद्धव कियो प्रणाम सबनको विनयकियो

मृदुवानी ॥ ९६३॥ भलीकरी तुम आये उद्धव लाये हरिकी पाती । जादिनते हरि गोकुल छांड्यो हमपर विरह बराती ॥ ९६४ ॥ इतनेमांझ मधुप यक देख्यो आय चरण लपटायो । ताको देख कहत उद्धवसों हरि गोकुल बिसरायो ॥ ९६५ ॥ रे रे मधुप कितवके बन्धू चरण परस जिन करौ । प्रियाअंक कुंकुम कर राते ताहीको अनुसरिहौ ॥९६६॥ अधर सुधारस सकृत पानदै कान्ह भये अति भोगी । विजय सखा को सखी कहतहै तासों रहत सँयोगी॥९६७॥ तीनलोक नारीको कहियत जो दुर्लभ बलबीर । कमलाहू नित पांयपै लोटत हमतो हैं आभीर ॥ ९६८ ॥ पहिलेही इन हनी पूतना बाँधे बलिको दान । शूर्पणखा ताडका सँहारी श्याम सहज यह बान ॥ ९६९ ॥ याकी कथा सुनी जिन श्रवणन बनबिहंग भये योगी।मांगतभीख फिरत घर घरही सुजन कुटुम्ब वियोगी॥९७०॥ फिर हरि आय यशोदाके गृह रिंगन लीला करिहैं । मांग्यो चन्द्र आर जब कीन्हीं उन बातन चितधरिहैं ॥ ९७१ ॥ बहुत दनुज संहार श्यामघन ब्रजकी रक्षा करिहैं। यमला अर्जुन विटप उपारे कालीको विष हरिहैं ॥ ९७२ ॥ वेणुबजाय रास वन कीन्हो अति आनँद दरशायो । लीला कथत सहसमुख तोऊ अजहूं पार न पायो ॥ ९७३ ॥ महाप्रलयके मेघ पठाये सुरपति कीन्हों कोप । छिनहीमांझ गोवर्धन धारो राखिलिये सब गोप ॥९७४॥ ऐसे बहुत चरित्र कान्हके वरणि कहत नहिंआवै । उद्धव तुम नयनन नहिंदेखो ताते भेद न पावैं ॥ ९७५ ॥ तब उद्धव कहेउ धन्य धन्य तुम धन्य धन्य ब्रजनार । तुम्हरे सुबस सदा हरि खेलो ब्रजमें करत विहार ॥९७६ ॥ तुम्हरी चरण कमल रज कारण तपकीन्हों चतुरानन । रमाशेष पुनि किनहुँ न पायो सो देखियत वृन्दावन ॥ ९७७ ॥ गुल्म लतामें जन्ममांगि तब विधिसों गोद पसारी । उद्धव कहत सदा म्वहिं दीजै चरणरेणु ब्रजनारी ॥ ९७८ ॥ एक रूप ह्वै रहे वृन्दावन गुल्मलता कर वास । वज्रनाभ उपदेश कियो जिन पूरण केल प्रकास ॥ ९७९ ॥ एक रूप उद्धव फिर आये हरिचरणन शिरनायो । कह्यो वृत्तान्त गोप वनितनको विरह न जात कहायो ॥९८०॥ म्वहिं खोजत षटमास बीतिगये तबहुँ न आयो अंत । ब्रजवनितनके नैन प्राणबिच तुमहीं श्याम वसंत ॥ ९८१ ॥ छिन नहिं दूर श्याम तुव उनसों मैं निश्चय यह कीनों । तुमरो रूप देखि गोकुलमैं बाढ्यो नेह नवीनो ॥ ॥ ९८२ ॥ तब हरि कह्यो सुनो उद्धव जू ब्रजवासी तन मोर । तिनको सपन कबहुँ नहिं छांडो सत्य कहतहौं तोर ॥ ९८३ ॥ वृन्दावनमें धेनु चरावत गोपसखनके संग । वेणुबजावत मोद बढ़ावत क्रीडा कोटि अनंग ॥९८४ ॥ अरु गोपिनसों अंग सुअँगकरि नितप्रति करो विनोद । दुष्ट कंस मारन यह आयो सदा यशोदा गोद ॥ ९८५ ॥ कुंज कुंजमें क्रीडा करि करि गोपिनको सुख देहौं । गोप सखन सँग खेलत डोलौं ब्रज तज अंत न जैहौं ॥ ९८६ ॥ मारेउ दुष्ट बहुत जो भूपर धर्मकरो विस्तार । वसुधाभार उतारन कारन यदुकुल लिय अवतार ॥ ९८७ ॥ मित्र एक वन बसत हमारो सो नयनन भरि देख्यो । ताको पूजन नित प्रति करिहौं सो तुम सुबुध विशेख्यो ॥ ९८८ ॥ नाना रत्न कंदरा कबहूं छिन नहिं मोहिं भुलावे । क्रीडा करो नित्य कुंजनमें गोपिनको सुखभावे ॥ ९८९ ॥ ताही क्षण अक्रूर बुलाये बल मोहन यह भाख्यो । तुम अब वेगि जाव हस्तिनपुर कमलनयन जिय दाख्यो ॥ ९९० ॥ तब अक्रूर बैठि हरिके रथ हस्तिनपुर जु सिधारे । कुंती मिली युधिष्ठिर अर्जुन भीम विदुर उर धारे ॥९९१॥ गांधारी दुर्योधन आदिक भीष्म कर्ण सब भेंटे । बहुत दिनाके ताप सबनके सुफलक सुत सब मेटे ॥ ९९२ ॥ तब यह कह्यउ नृपतिसों नीके बहुत भांति समुझायो । तब नृप कह्यो नहीं मेरो बश मोह प्रबल

जियछायो ॥ ५९३ ॥ तब अक्रूर विचार कियो यह हरि इच्छा जियमानी । करि प्रणाम गये मधुपुर को जहां श्याम सुखदानी ॥ ५९४ ॥ समाचार सबही कहि दीनो बल मोहनहिं सुनायो । सुन वसुदेव देवकी दोऊ बहुतहि दुख जिय पायो ॥ ५९५ ॥ अस्ती अरु प्राप्ती दोउपत्नी कंस रायकी कहियत । जरासंध पै जाय पुकारीं महा क्रोध मन दहियत ॥ ५९६ ॥ तीन बीस अक्षौहिणिलै दल जरासंध तहँ आयो । बल मोहन छिनमांझ संहारे करि विनचमू पठायो ॥ ॥ ५९७ ॥ सत्रह बार फेर फिर आयो हरि सब चमू सँहारी । अबकै फेर दुष्ट बनि आयो हरि कछु बात विचारी ॥ ५९८ ॥ अंतरिक्षते द्वै रथ उपजे आयुध तुरँग समेत । तापर बैठ कृष्ण संकर्षण जीते हैं सब खेत ॥ ५९९ ॥ नारद जाय यवनसों भाष्यो राम कृष्ण दोउ वीर । तोहिं न गनत वसतहैं मथुरा बडे बली रणधीर ॥ ६०० ॥ यह सुनि यवन तुरतही धायो जियमें अति अकुलाय । तीन कोटि भट यवन संगले मथुरा पहुँच्यो जाय ॥ ६०१ ॥ सुन बल मोहन बैठ रहसि मैं कीनो कछू विचार । मागध मगध देशते आयो साजे फौज अपार ॥ ६०२ ॥ विश्वकर्माको आज्ञा दीन्हीं रची द्वारका आय । निशिको सोये सब मथुरा में जगे द्वारका जाय ॥ ६०३ ॥ हलधर हलमूसल करलीने सभी मलेच्छ सँहारे । मारि फौज सबही मागधकी जरासंध उबारे ॥ ६०४ ॥ चले भाज दोउ भाइ उहांते जहँ सोवत मुचुकुन्द । वसन उढाय रहे छिपि आपन पूरण परमानन्द ॥ ॥ ६०५ ॥ मारी लात आय जब नृपको तब जाग्यो महराय । निकसी अग्नि नैनते तासों भस्म भयो तेहि दाय ॥ ६०६ ॥ इतने मांझ आपु हरि आये दरशन दीन्हों भूप । शंख चक्र गद पद्म चतुर्भुज सुंदर श्याम स्वरूप ॥ ६०७ ॥ तब पूछ्यो तुम कौन रूपहो कौन देव अवतार । अबलों कहुँ देखे नाहीं मैं तुम अति हौ सुकुमार ॥ ६०८ ॥ तब हरि कह्यो जन्म मेरे बहु शेष न पावैं पार । भुवकी रज नभके सब तारे तितने हैं अवतार ॥ ६०९ ॥ अब कहिये द्वापर युग सुन नृप वासुदेव ममरूप । भूतल भार उतारन आयो यदुकुल सुखद स्वरूप ॥ ६१० ॥ तब नृप अस्तुति बहु विधि कीन्हों जन्मकर्म गुणगाय । तुमहीं ब्रह्म अखिल अविनाशी भक्तन सदा सहाय ॥ ६११ ॥ नव गुण नवलरूप पुरषोत्तम जै यदुकुल अवतार । जयजयजय वैकुंठ महानिधि कमल नयन सुखसार ॥ ६१२ ॥ वेद पुराण रटतयश जाको तऊ न पावत पार । मैं मुचुकुन्द नृपति कृतयुग को सोवत भए युगचार ॥ ६१३ ॥ अब मोको आज्ञा कछु दीजै जैसे चरणन पाऊं । सदावसों निजलोक निरंतर जन्म कर्म गुणगाऊं ॥ ६१४ ॥ क्षत्री जन्म बहुत अवकीन्हों ताते मुक्ति न होय । विप्र जन्म धरि मुक्तिहोयगी करि तप साधन सोय ॥ ६१५ ॥ आज्ञा लैके चल्यो नृपति वहँ उत्तर दिशा विशाल । करि तप विप्र जन्म जब लीन्हों मिट्यो जन्म जंजाल ॥ ६१६ ॥ तहांते चले श्याम अरु हलधर परबरषन गिरि आये । पर्वत बहुत नमन करि पूजा यह विनती करवाये ॥ ६१७ ॥ नितप्रति मोशिर मघवा बरसत लागत शीत अपार । अगणित पाप महादुख मेटो मांगत यही मुरार ॥ ६१८ ॥ इतने मांझ मगध चलि आयो उन जानी यह बात । पर्वत मांझ गये दोउ भइया उन देखे दृग जात ॥ ६१९ ॥ दीन्हीं अग्नि लगाय चहूंघा उन जानी रिपु हान । राम कृष्ण दोउ कूद पधारे पुरी द्वारका जान ॥ ६२० ॥ भयो आनंद द्वारका में सब घर घर गीत गवाये । करि रिपु हानि समर सब जीत्यो रामकृष्ण घर आये ॥ ६२१ ॥ एक समय नारद मुनि आये नृपति भीष्मके गेह । पूजा करी बहुत नाना विधि नृपति जनाये नेह ॥ ६२२ ॥ लखि रुक्मिणी कह्यो मुनि नारद यह कमला अवतार ।

पूरण ब्रह्म प्रकट पुरुषोत्तम श्रीवसुदेव कुमार ॥ ६२३ ॥ उनके योग्य यही कन्या है सुनो देव महाराज । तब नृप कह्यउ करों निश्चय यह सफलहोय ममकाज ॥ ६२४ ॥ तब नारदमुनि गये द्वारका कृष्णचन्द्रके पास । बिनती करी रुक्मिणीकी सब सुनि हरि भये हुलास ॥ ६२५ ॥ करो वेग कछु बिलँब न कीजै नारद कहि यह बात । श्रवण सुनत कमलापतिको जिय तनु पुलकित सवगात ॥ ६२६ ॥ सुन नारद म्वहिं नींद न आवे करिहौं बेग उपाय । यह कहि चले आपहरि रथचढ़ि शोभा कही न जाय ॥ ६२७ ॥ देश देशके नृपति जुरे सब भीष्म नृपतिके धाम । रुक्म कह्यउ शिशुपालहि देहौं नहीं कृष्णसों काम ॥ ६२८ ॥ यतने मांझ आपु हरि आये सुनी नृपति सबबात । उपवनरहे जान जियमें यह मनमें अति अकुलात ॥ ६२९ ॥ पूजन करन चली देवी को सखी वृंद सबसंग । पूजा करि बोली यह कमला लोक लाज कृत भंग ॥ ६३० ॥ अटल शक्ति अविनाश अधिक बल एक अनादि अनूप । आदि अव्यक्त अंबिका पूरण अखिल लोक तव रूप ॥ ६३१ ॥ कृष्णचन्द्रके चरण कमल में सदा रहो अनुराग । येही पति नित होहिं हमारे जो पूरण मम भाग ॥ ६३२ ॥ तब उन कहेउ कृष्ण तुम्हरे पति ह्वै हैं अचल सुहाग । चली महावर पाय रुक्मिणी अति पूरण अनुराग ॥ ६३३ ॥ तब हरि आय बैठ रथनीके आय मिले बडभाग । कर गहि बांह लई रथनीके अति आतुर चले भाग ॥ ६३४ ॥ मानो नील मेघके सँगमें मिली दामिनी आय । चले तुरत हरि पुरी द्वारका शंख चक्र धरि धाय ॥ ६३५ ॥ दुष्ट नृपति को मान मथन करि चले द्वारकानाथ । जरासंध शिशुपाल आदि नृप पाछे लागे साथ ॥ ६३६ ॥ रथपाछे मिलि शोभित यहि विधि सकल दुष्टकीखान । महासिंह निज भागलेत ज्यों पाछे दौरैं श्वान ॥ ६३७ ॥ हल धरआय दुष्टसब मारे असुर नृपति की भीर ! भाजि चले शिशुपाल जरासंध अति व्यापित तनुपीर ॥ ६३८ ॥ आये नाथ द्वारका नीके रच्यो मांडयो छाय । व्याह केलि विधि रची सकल सुख सौंज गनी नहिं जाय ॥ ६३९ ॥ ब्रह्मा रुद्र देव तहँ आये शुक नारद सनकादि । दरशन करि मंगल सुखके सब मेटी विरह जो आदि ॥ ६४० ॥ चैत्रमास पूनो को शुभदिन शुभ नक्षत्र शुभवार व्याहि लई हरि देव रुक्मिणी बाढ्यो सुख जो अपार ॥ ६४१ ॥ यक सत्राजित यादव कहिये सूरजदेव उपास । दीन्हीं मणि आदित्य स्यमंतक कोटिक सूर्यप्रकाश ॥ ६४२ ॥ भार भार नित कनकदेतहै नृपति सुनी यह बात । तब उन मांगी इन नहिं दीनी बाढ्यो वैर अघात ॥ ६४३ ॥ एक दिवस मृगयाको निकस्यो कंठ महामाणि लाय । तब उन सिंहमारि गहि लीन्हों ऋच्छ मिल्यो यकताय ॥ ६४४ ॥ जाम्बवान महबली उजागर सिंहमारि मणि लीन्हीं । पर्वत गुफा बैठ अपने गृह जाय सुताको दीन्हीं ॥ ६४५ ॥ चर्चा परी बहुत द्वारावति कृष्णचन्द्रकी बात । तब हरि गये शैलकंदरमें अति कोमल मृदुगात ॥ ६४६ ॥ दिनअट्ठाइस युद्ध कियो जब ऋच्छ भयो बलभंग । तब पगपरेउ बहुत अस्तुति करि जानि रामपदसंग ॥ ६४७ ॥ तब हरि कहेउ भक्त तू मेरो तोसों करि संग्राम । कीन्हें शुद्ध तत्त्व सब तनुके पूरण कीन्हें काम ॥ ६४८ ॥ जाम्बवती अरपी कन्या भरि मणि राखी समुहाय । करि हरि ध्यान गयो हरिपुरको जहां योगेश्वर जाय ॥ ६४९ ॥ लै स्यमंतमणि जाम्बवतीसह आये द्वारकानाथ । अति आनंद कुलाहल घर घर फूले अँग न समात ॥ ६५० ॥ आश्विनसुदि नौमीको शुभदिन हरि आये निजधाम । तौलौं घर घर प्राति दुर्गाको पूजन कियो सब गाम ॥ ६५१ ॥ सत्राजित अपनी तनयाको दीन्हें त्रिभुवनराय । सतभामा जु नाम तेहि कहियत शोभा कही न जाय ॥ ६५२ ॥ कीन्हों व्याह परमआनँद सों सतभामा सुखरास ।

द्वारावती विराजत नित प्रति आनँद करत विलास ॥ ६५३ ॥ इन्द्रप्रस्थ हरि गये कृपाकरि पांडव कुलको तार । तहँ कालिन्दी वनमें व्याही अतिसुन्दरि सुकुमार ॥ ६५४ ॥ मित्राविंदा यक नृपति नन्दनी ताको माधव व्याये । सात बैल नाथनके कारण आप अयोध्या आये ॥६५५॥सत्या व्याहि बहुत सुख कीन्हों मथ्यो नृपतिको मान । आये फेर द्वारका मोहन मंगलकेलि निधान६५६॥ भद्रा व्याहि आप जबआये द्वारावती अनन्द । तैसेही लक्ष्मणा विवाही पूरण परमानंद ॥ ६५७ ॥ नरकासुरको मारि श्यामघन सोरह सहस त्रियलाये। एकहिलग्न सबनकर पकरेव एकमुहूर्त्त विवाये ॥ ॥६५८॥यह सुनि नारद अचरज पायो ब्रह्मलोकते धाये । कृष्णचन्द्रके चरण परस करि बीणा मधुर बजाये ॥६५९॥ तब हरि रीझि कहेउ नारदसों कहौं कहांते आये । तब उन कहेउ दरशको आयो बहुत रूपधरि व्याये ॥ ६६० ॥ यह कौतुक देखनके कारण मैं आयो जो देखावो । रूप अनंत आदि अविनाशी दरशन प्रेम बढ़ावो ॥ ६६१ ॥ तब हरि कहेउ जाव घर घर प्रति देखोगे सब ठौर । मैंही हौं सब थल परिपूरण मो बिन नाहिंन और ॥ ६६२ ॥ तब मुनि चले देख घर घर प्रति परम केलि सुख पायो । नाना क्रीडा करत निरंतर घरघर रूप दिखायो ॥६६३॥ कहुँ क्रीडत कहुँ दामबनावत कहूं करत शृंगार । कहुँ बालकन खिलावत माधव खेलत परम उदार ॥ ६६४ ॥ कहुँ चौपर खेलत युवतिन सँग पांच सात उचार।कहुँ मृगयाको चले अश्वचढ़ि श्रीवसुदेव कुमार ॥ ६६५ ॥ कहुँ कर लेकर शस्त्र सँवारत कहुँ कछु करत विचार । कहुँ कछु बात कहत सबहिन सों कहुँ ध्वनि वेद विचार । ६६६ ॥ कहुँ मिलि यज्ञकरत विप्रनसँग अति आनंद मुरार । नाना दानदेत हय गज भुव ऐसे परम उदार ॥ ६६७ ॥ कहुँ गोदान करत कहुँ देखे कहुँ कछु सुनत पुरान । कहुँ निर्त्तत सबदेख बारबधु कहुँ गँधरब गुणगान॥६६८॥कहुँ जप करत सनातन निज वपु ब्रह्म करत कहुँ ध्यान । कहुँ उपदेश कहूँ जैवेको कहूं दृढ़ावतज्ञान ॥ ६६९ ॥ कहुँभोजन नानारुचि माँगत पटरसके पकवान । आरोगत ब्रजराज सांवरो कहूँ करत जलपान ॥ ६७० ॥ कहुँ जागत दरशनदियो मुनिको करि पूजापरणाम । संध्या करत कहूँ त्रिभुवनपति स्नान करत कोउ धाम ॥ ॥ ६७१ ॥ कहुँ पौढ़े कमलाके सँगमें परम रहस्य एकान्त । कहुँ व्रत करत कहूँ निगमनको ज्ञान कर्मको अंत ॥ ६७२ ॥ कतहूँ श्राद्धकरत पितरनको तर्पणकरि बहुभांति । कहुँ विप्रनको देत दक्षिणा कहुँभोजनकी पाँति ॥ ६७३ ॥ कहुँ सुगन्ध लगावत लैके कहुँ अश्व शृंगार । कहुँ गजरथ कहुँ बाजि रथन सजि डोलतहैं गृह द्वार ॥ ६७४ ॥ कहुँ ऊधोसों ब्रजसुख क्रीडा परम प्रेम उचार । कहुँ पांडवकी कथा चलावत चिन्ता करत अपार ॥ ६७५ ॥ कहुँ मिलि विप्र कहत सबहिनसों बालक करन सगाई । कहुँ सुतव्याह कहूं कन्याको देत दायजो राई ॥ ६७६ ॥ कहुं गजराज बाजि शृंगारे तापर चढे जु आप । सँग बलभद्र चमू सब सँगलै चले असुर दल कांप ॥ ॥ ६७७ ॥ कहूं हस्तिनापुर देखनको मनमें करत विचार । कतहूं अर्घ्य देत सूरजको कहुँ पूजत त्रिपुरार ॥ ६७८ ॥ कहुँयक दुर्गादेवि जानिकै जोरि विप्र निज धाम । करतहोम बहु भांति वेदध्वनि सबविधि पूरणकाम ॥ ६७९ ॥ प्रथमपुत्रको व्याह जानिकै पूजत कहूं गणेश । कहूं ऋषिनके चरण धोयकै शिरपर धरत नरेश ॥ ६८० ॥ कहूं व्याहकी केलि परमसुख निरखत मुनि सचुपायो । शेष सहसमुख पार न पावैं कछु इक सूर जु गायो ॥ ६८१ ॥ फिर मुनि आय भवन कमलाके चरण कमल शिरनायो । मैं सब ठौर फिरेउ तुव देखन कतहूं पार न पायो ॥ ६८२ ॥ जित तित देखों तुम परिपूरण आदि अनंत अखंड । लीला प्रगट देव

पुरुषोत्तम व्यापक कोटि ब्रह्मंड ॥ ६८३ ॥ शिव विरंचि सनकादि महामुनि शेष सुरेश दिनेश ॥ इन सबहिन मिलि पार न पायो द्वारावती नरेश ॥ ६८४ ॥ तुम्हरे चरण कमलकी महिमा जानतहैं त्रिपुरारि । प्रकट गंग पावन चरणनते ताहि रहत शिरधारि ॥ ॥ ६८५ ॥ पुनि गौतम घरणी जानतहैं नावक शबरीजान । उद्धव विदुर युधिष्ठिर अर्जुन अरु भीषम सुर ज्ञान ॥ ६८६ ॥ हनूमान अरु भक्त विभीषण चरणकमल रज मांगी । सोई कृपा करो करुणानिधि मांगतहौं अनुरागी ॥ ६८७ ॥ यह कहिकै मुनि लोक सिधारे बीणबजाय रिझाय । ब्रह्मलोक पहुँचे छिनहीमें हरि आज्ञाको पाय ॥ ६८८ ॥ पहिलोपुत्र रुक्मिणी जायो प्रद्युमन नाम धरायो । कामदेव प्रकटे हरिके गृह पहिले रुद्र जरायो ॥ ६८९ ॥ नारद जाय कह्यो शंबरसों तब रिपु वपु धरि आयो । वेग उपाय करो मारनको प्रगट द्वारका जायो ॥ ६९० ॥ तब शंबर भयभीत द्वारका गयो तुरत त्यहि काल । हरिको चक्रदेख रखवारी व्याकुल भयो विहाल ॥ ६९१ ॥ तब नारदमुनि आय चक्रसों बात करन ठहरायो । इतने मांझ पुत्रलै भाज्यो निधिमें जाय दुरायो ॥ ६९२ ॥ एक मीनने भक्ष कियो तब हरि रखवारी कीनी । सोई मत्स्य पकरि मोंधुकने जाय असुरको दीनी ॥ ६९३ ॥ तब उन कह्यो पाकशालामें अबहीं यह पहुँचाओ । चीरयो उदर पुत्र तब निकस्यो उन जान्यो मम नाओ ॥ ६९४ ॥ नारद कह्यो यही तव पतिहै याकूं वेग वढ़ाय । जौलौं बडो होय तौलों यह असुरन मतिहि देखाय ॥ ६९५ ॥ सेवा कीनी बडेभये जब समरथ विपुल उदार।महाबली बलराम कृष्ण सुत कीन्हों असुर सँहार ॥ ६९६॥ मारि असुरको आय द्वारका कृष्णचरण शिरनायो।भीतर गये नये रुक्मिणिको सबहिन कंठ लगायो६९७ बर अरु बधू आय जब जाने रुक्मिणि करत बधाई । रति अरु काम प्रकट तादिनते कवि मिलि कीरति गाई ॥ ६९८ ॥ याविधि केलि करत द्वारावति पूरण परमानंद । महिमा सिंधु कहांलग वरणै सूर जु कवि मति मंद ॥ ६९९ ॥ पुनि अनिरुद्ध भेद नारदके चित्ररेखा हरि लीन्हों । चारवर्ष अरु चारमासलौं ऊपाको सुखदीन्हों ॥७००॥ तब हरि जाय संग हलधर लै सब यादव दल जोरा।सबै भुजाकरि दूर असुरकी चार हाथ दियछोर ॥ ७०१ ॥ आयें रुद्र पक्ष करि ताको युद्ध करन हरिसाथ । छिनमें जीति बधूसुत लैकै आय द्वारकानाथ ॥ ७०२ ॥ पुनि यक दिवस सुधर्मा बैठे यादव सभा अपार । उग्रसेन वसुदेव सात्यकी अरु अक्रूरउदार ॥ ७०३ ॥ इतने मांझ दूत यक आयो सबहिन कहि समुझायो । वासुदेव नृप आज्ञा करके मोको वेगि पठायो ॥ ७०४ ॥ वासुदेव यह कहत वेदमें प्रगट ब्रह्म अवतार । सोतौ मैंहीं प्रगट भयो भुव यहि विधि बढ्यो अपार ॥ ७०५ ॥ क्षणमें जाय तुरत हरि मारयो दीन्हीं मुक्ति कृपाल । फेर द्वारका तुरत पधारे गरुडचढ़े गोपाल ॥ ७०६ ॥ एक दुष्टने बहुत कियो तप सो रीझे त्रिपुरार । तब शिवने उन कृत्या दीन्हीं बाढो क्रोध अपार ॥ ७०७ ॥ कृत्याचली जहां द्वारावति हरिजानी यह बात । आज्ञाकरी चक्रको माधव छिन कृत्याकर घात ॥ ७०८ ॥ काशीजाय जराय छिनकमें गये द्वारकाफेर । अति आनन्द परम सुखसों सब दिन बीतत रसटेर ॥ ७०९ ॥ पुनि कुरुक्षेत्र गये यादवमिलि कियो तीर्थ अस्नान । यज्ञ होम करि पितर देवता विप्रनको बहु दान ॥ ७१० ॥ सूरज ग्रहण नृपन बहु जान्यो आय जुरी सब भीर । दर्शन भयो सबनको हरिको मिट्यो ताप तनु पीर ॥ ७११ ॥ भीष्म द्रोण अरु कर्ण युधिष्ठिर भीमार्जुन सहदेव । कुंती नकुल और गान्धारी कृपी विदुर सहदेव ॥ ७१२ ॥ दुर्योधन सब भ्रात

संगलै धृतराष्ट्रहि लै आयो। नारद गौतम वाल्मीकि मुनि हरि दर्शन हित धायो ॥ ७१३ ॥ भारद्वाज मरीचि अंगिरा अत्रेमुनी अनंत। पुलह पुलस्त्य अगस्त्य कश्यप पुनि अरु सनकादिक संत ॥ ७१४ ॥ हरिको दर्शन करि सुख पायो पूजा बहु विधि कीन्हीं। अति आनंद भये तन मनमें सौंज बहुत विधि दीन्हीं ॥ ७१५ ॥ व्रजवासी सब सखा संगके यशुमति अरु व्रजराज। दर्शनपाय बहुत सुख पायो सफल भये सबकाज ॥ ७१६ ॥ यशुमति मात उछंग लगाये बल मोहनको आय। बालभाव जिय में सुधि आई अस्तन चले चुचाय ॥ ७१७ ॥ गोपिन देखि कान्हकी शोभा बहुतहि मन सुखपायो। सघन निकुंज सुरत संगम मिलि मोहन कंठ लगायो ॥ ७१८ ॥ रुक्मिणि कहत कमल लोचन सों राधा हमैं देखायो। जाकी नित्य प्रशंसा तुम करि हम सबहिनकु सुनायो ॥ ७१९ ॥ तब वृषभानुसुता पगधारी रानिन मंडल मांझ। मनो सरस इन्दीवर फूले तामधि फूली सांझ ॥ ७२० ॥ देख तेज वृषभानुसुताको सबै भई छबि हीन। अति आनन्द मोद मन मान्यो हमहिं कृतारथ कीन ॥ ७२१ ॥ तब हरि कह्यो मोहिं राधा बिन पल क्षण कछु न सोहाय। सुनो रुक्मिणी कथा घोषकी मोपै कहिय न जाय ॥ ७२२ ॥ एक दिना वनमें इन मोको अपनो सुधा पिवायो। ताके बल गिरि गोवर्द्धन लै अपने हाथ उठायो॥ ॥ ७२३ ॥ अरु काली धेनुक दावानल प्रकट पूतना आई। इनकी कृपा सकल विघ्ननकों छिनमें दिये नशाई ॥ ७२४ ॥ भांति भांति करि मोहिं लडायों सघन कुंजमें जाय। ताकी कथा कहों कह तुमसे मोपै कहिय न जाय ॥ ७२५ ॥ रास केलि करि क्रीडा कीन्हीं होरी खेल खिलायो। मटुकि छुडाय लियो दधि बरसत तउ कछु मन नहिं आयो ॥ ७२६ ॥ रत्नजटित पर्यंक द्वारका पौढत हैं सुखधाम। तोहू इनको ध्यान करतही बीतत है सब याम ॥ ७२७ ॥ इन बिन मोहिं कछू नहिं भावै नन्दरायकी आन। सुनो रुक्मिणी लोचनमें ए बसी रहें मम प्राण ॥७२८॥ जागत सोवत अरु वन डोलत भोजन करत विहार। ध्यान करत नखशिख इनहींको बसि द्वारका मँझार ॥ ७२९ ॥ तब मिलिरंग बहुत भांतिनसों कीन्हें विपुल विहार। व्रजजन चले सकल गोकुलको दीन्हें दान अपार ॥ ७३० ॥ चले द्वारका यदुकुल सब मिलि भयो कुलाहल भार। पहुँचे आय द्वारका सन्मुख घर घर मंगलचार ॥ ७३१ ॥ कियो विचार यज्ञको राजा राजसूय जियजानि। कृष्णचन्द्रको वेगि बुलाओ संग सकल पटरानि ॥ ७३२ ॥ आये इंद्रप्रस्थ सब यदुकुल महा महोत्सव मान। जुरे भूप बहु सकल देशके हरिदर्शन जिय जान ॥ ७३३ ॥ चारों भ्रात चारि दिशि जीतो भारत कही बखान। ठौर ठौरके नृप सब आये लै उपहार प्रमान ॥७३४॥ बडो यज्ञ राजसूय रचायो जुरे विप्र बहु भारी। महाभाग्य राजा जु युधिष्ठिर जहँ माधव अधिकारी ॥ ७३५ ॥ सबहिन कह्यो प्रथम पूजा अब कहो कौनकी कीजे। सबमें बडो कौन भूपति है जाहि अर्चना दीजै ॥ ७३६ ॥ तब सहदेव कह्यो सबहिनसों सुनो नृपति मनलाय। पूजा योग प्रकट पुरुषोत्तम कृष्णचन्द्र यदुराय ॥ ७३७ ॥ सबहिन कह्यो साधु यह वाणी सुर मुनि मनुज सराई। यक शिशुपाल दुष्ट नृप कहिये सुनतहि उठ्यो रिसाई ॥ ७३८ ॥ गोकुल नंद अहीर गोप गृह पय पियके यह जीयो। दधि जु चुराय खाय वृन्दावन चरित विषम बहु कीयो ॥७३९॥ मातुल मारि बहुत अघकीन्हें कहांलों करों बडाई। वृन्दावन गोवर्धन कुंजन लूटी नारि पराई ॥ ॥ ७४० ॥ वन वन गाय चरावत डोलत कांध कमरिया राजे। लकुटी हाथ गरे गुँजमाला अधर मुरलिका बाजे ॥ ७४१ ॥ ऐसे ख्याल करे इन बहु विधि कहत जु आवे लाज। वेद विदित सुर

काज विगारे बहुँकाये ब्रजराज ॥ ७४२ ॥ यज्ञ करत विप्रन मथुरामें यांचे भीख न दीन्हीं। अर्पण कियो नहीं देवनको पहिले इन मति कीन्हीं ॥ ७४३ ॥ माखन चोर चोर गोपिनको दूध जु दधि लै खायो । यमुना न्हात गोपकन्यनको लै पट कदम चढायो ॥ ७४४ ॥ काली हरिकी आज्ञा को लै यमुनामांझ बसायो । ताहि निकालदियो क्षणहीमें नेक सकोच न आयो ॥ ७४५ ॥ यक पूतना पयपान करावन प्रेम सहित चलिआई । ताहि लगाय हृदय लपटानो प्राण जो लियो चुराई ॥ ७४६ ॥ जन्महोल इन मात तात को तबहीं बन्धन दीन्हों । यादव जात भाज जित तितको अनत जाय सुख कीन्हों ॥ ७४७ ॥ वेणु बजाय रास इन कीन्हों मधुप गोपकी नारि । परनारीको दोष कछूचित इन नहिं कीन्ह विचारी ॥ ७४८ ॥ दूध दहीके भाजन चाटे नेकहु लाज न आई। माखन चोरि फोरि मथनीको पीवत छाँछ पराई ॥ ७४९ ॥ छांक खाय जूंठन ग्वालिनको कछु मनमें नहिं मान्यो । परदाराकें संग आय निशि कुब्जासों सुख मान्यों ॥ ७५० ॥ बहुत प्रीति करि गोपन जाने बहुविधि लाड लडायो । ताकों यत्न कछू नहिं मान्यों मथुरामें चलि आयो ॥ ७५१ ॥ जरासन्ध इन बहुत बारही करि संग्राम पलायो । हमरे डर कर दोऊभाई नगर समुद्र बसायो ॥ ॥ ७५२ ॥ कालयवनके आगे भाज्यो जाय गुफागहि लीन्हीं । लातमारि मुचुकुन्द जगायो नेकु दया नहिं कीन्हीं ॥ ७५३॥ बातैं बहुत याहिकी लंपट सभा मांझ नहिं कहिये । जियमें समुझ आपने सन्मुख मुखते चुपकरि रहिये ॥ ७५४ ॥ अतिशयक्रोध भये पांडवसुत और नृपति हरिदास । राखे बरज सबनको माधव नेक न भये उदास ॥ ७५५ ॥ अतिहीभई अवज्ञा जानी चक्र सुदर्शन मान्यो। करि निज भाव एक कुशतनमें क्षणक दुष्ट शिरभान्यो ॥ ७५६ ॥ परम कृपालु दयालु देवकी नन्दन पावननाम । दीन्हीं मुक्त दयाकरिकै तब दियो लोक निजधाम ॥ ७५७ ॥ जयजयकार भयो वसुधापर राज युधिष्टिर हरषे । अमृतस्नान कराय वेद विधि कनक कुसुम शिर वरषे ॥७५८॥ दीन्हीं सभा बनाय पांडुकी मय मायागत अंत । ताको देख भ्रमे दुर्योधन महा मोह मतिमंत॥७५९॥ जलमें थलमति थलमें जलमति भई नृपतिको जान । अन्ध पुत्र लखि हँसे पवनसुत सुन जियमें रिसमान ॥ ७६० ॥ गयो भवन अकुलाय बहुत जिय क्रोधवंत अभिमानी । ताही दिनते पांडु पुत्रसों वैर विषम गति ठानी ॥ ७६१ ॥ सभा रची चौपर क्रीडा करि कपट कियो अति भारी। जीत युधिष्टिर भइ सब जानी तउ मनमें अधिकारी ॥ ७६२ ॥ युवती धरी जान दुष्टन ने जब द्रौपदी बुलाई । हरिको सुमिरन करत पंथमें दुश्शासन गहिलाई ॥ ७६३ ॥ अहोनाथ ब्रजनाथ नाथनिज यदुकुलके निज नाथ । गोकुलनाथ नाथ सब जनके मो पति तुम्हरे हाथ ॥ ॥ ७६४ ॥ ज्यों गजराज बचायो जलमें नेक विलंब न कीन्हीं । अपनो भक्त वचावन कारण विष अमृत करि दीन्हीं ॥ ७६५ ॥ शबरी गीध और पशु पक्षी सबकी रक्षा कीनी । अब तो सहाय करो तुम मेरी हैं पांवर मतिहीनी ॥ ७६६ ॥ चौपर खेलत भवन आपने हरि द्वारका मंझार। पासे डार परम आतुर सों कीन्हें अनत उचार ॥ ७६७ ॥ चीर बढाय दियो बहु तेहिक्षण ऐंचत पार न पायो । भीष्म द्रोण अरु कर्ण युधिष्टिर सब विस्मय मन लायो ॥ ७६८ ॥ रहेउ दुष्ट पचि हार दुशासन कछू न कला चलाई । बैठो आय सभामें पाछे बार बार पछिताई ॥ ७६९ ॥ फिर द्रौपदी भवनमें आई श्रीहरि लज्जा राखी । वेद पुराण तन्त्र भारतमें कही बहुत विधि भाखी ॥ ॥ ७७० ॥ पुनि वनवास दियो पांडवसुत हरि द्वारकामें जानी । अक्षय पात्र दिवायो रविपै बडे भक्त सुखदानी ॥ ७७१ ॥ दुर्वासा शापनको आये तिनकी कछु न चलाई । अक्षय कियो कमल

दल लोचन भक्तन भये सहाई ॥ ७७२ ॥ पांडव कुलके सहाय भये हरि जहँ तहँ संगहि डोले। दुर्योधन सों कह्यो दूत ह्वै भक्त पक्ष दृढ़ बोले ॥ ७७३ ॥ पांच गांव पाण्डवको दीजै सुनों नृपति मम बात। और राज सब तुमही करिये निपट जगत विख्यात ॥ ७७४ ॥ प्राची और प्रतीचि उदीची और अवाची मान। इन्द्रप्रस्थ बीचमें दीजै और राज तुव जान ॥ ७७५ ॥ सुनिकै क्रोध भयो दुर्योधन सब पाण्डवको राज। तुमरो कुल सब नाश होयगो कहि जो चले ब्रजराज ॥ ७७६॥ बहुत दुःख दीन्हों पाण्डवको अबलों मैं सहि लीन्हों। लाख भवन बैठार दुष्टने भोजनमें विष दीन्हों ॥७७७॥ वन वन फिरे अर्क तूलन ज्यौं वास विराटहि कीन्हों। अन्तहि गुप्त रहे ता पुरमें भेद काहु नहिं दीन्हों॥७७८॥जुरे नृपति अक्षौन अठारह भयो युद्ध अतिभारी। रथ हांकत गोविंद अर्जुन को दीन्ह शस्त्र सब डारी॥७७९॥करी प्रतिज्ञा कहेउ भीष्म मुख पुनि पुनि देव मनाऊं।जो तुम्हरे कर शर न गहाऊं गंगासुत न कहाऊं॥ ७८० ॥ चढे प्रबल दल दोउ ओरके बिच अर्जुन रथ ठाढो। इत पारथ गांगेय बली उत जुरो युद्ध अति गाढो ॥ ७८१ ॥ दशदिन लरे बली गंगासुत श्याम प्रतिज्ञा जानी। सत्य वचन हरि कियो भक्तको निगम झूंठकर बानी ॥ ७८२ ॥ धरि रथ चक्र श्याम निज करमें जबहि भीष्म पर डारो। शीतल भई चक्रकी ज्वाला जब शिर तिलक निहारो ॥ ७८३ ॥ धन्य धन्य कहि परे आय पग गुणनिधान गांगेव। तब हरि कहेउ विपुल बल तुम्हरो जीति लिये सब देव ॥ ७८४ ॥ तब उन कहेउ चरण आपनमें राख्यो निशि दिन ध्यान। मोरि प्रतिज्ञा तुम राखी है मेटि वेदकी कान ॥ ७८५ ॥ डार शस्त्र शर शय्या सोये हरि चरणन चित लायो। उत्तर दिशि रवि जान देह तजि वहां परमपद पायो ॥ ७८६ ॥ नृपति युधिष्ठिर राजतिलक दै मारि दुष्ट की भीर। द्रोण कर्ण अरु शल्य मुक्तकरि मेटी जगकी पीर ॥ ७८७ ॥ गोविंद आय द्वारका निज गृह अति आनन्द बढायो। घर घर मंगल महा कुलाहल यदुकुल होत बधायो ॥ ॥ ७८८ ॥ शल्य नृपति तपकिय पंचानन तापै यह वर पायो। दियो बनाय नगर गोपुरमें काहु न-जात लिवायो ॥ ७८९ ॥ आय द्वारका शोर कियो उन हरि हस्तिनापुर जाने। प्रद्युमन लरे सप्त दश दोदिन रंचहार नहिं माने ॥ ७९० ॥ हरि अपसगुन जानि हस्तिनपुर बैठ तुरत रथ धाये। बहुत देशको पावन करि करि सांझद्वारका आये ॥ ७९१ ॥ कीन्हों युद्ध आय शालवसों उन बहु माया कीन्हीं। जलमें थल थलमें जल देख्यो श्याम दूरकर दीन्हीं ॥ ७९२ ॥ माया दूर करी नँद-नन्दन चक्र दियो शिरडार। क्षणहीं मांझ दुष्टसंहारो भुवको भार उतार ॥ ७९३ ॥ जय जयकार करत देवांगन बरखत कुसुम अपार। कियो प्रवेश द्वारका मोहन घर घर मंगलचार ॥ ७९४ ॥ राजसूय करवाय श्यामघन जरासंध मरवायो। दन्तवक्र महिपाल महाबल विदुरथ प्राण नशायो ॥ ॥ ७९५ ॥ बालक मृतक देवकी मांगे सो छिनमें हरिलाये। दीन्हों दरश भक्त नृपबालिको तनुके ताप नशाये ॥ ७९६ ॥ बालक आय देवकी जाने अस्तन पान कराये। हरिको शेषपान करिके वे हरिके पद पहुँचाये ॥ ७९७ ॥ एकदिना यदुनाथ संग सब विप्र मण्डली लीन्हें। मिथिला चले जनक राजा पै दरश कृपाकरि दीन्हें ॥ ७९८ ॥ तहां वसत श्रुतदेव महामुनि सुनि दर्शनको धायो। तब उन कहेउ चलौ मेरे गृह हरि स्वीकार करायो ॥ ७९९ ॥ नृपति कह्यउ मेरे गृह चलिये करो कृतारथ मोय। ताहूके हरि आपु पधारे प्रकट धरे वपु दोय ॥ ८०० ॥ देख चरित्र विनोद लालके विस्मित भे द्विजराय। अद्भुत केलि कृपाकरि कीन्हीं द्विजको ज्ञान दृढ़ाय ॥ ८०१ ॥ बहुत दिवसलों कृपाकरी हरि जनकराय सुख दीन्हों। बहुरि पधारे पुरी

द्वारका यदुकुलमें सुख कीन्हों ॥ ८०२ ॥ बहिन सुभद्रा व्याह विचारो हरि अर्जुन चित धारो। श्रीबलदेव कह्यउ दुर्योधन नीको दुलह विचारो ॥ ८०३ ॥ हरिको भेद पायकै अर्जुन धरि दंडीको रूप। भिक्षाको निजभवन बुलायो श्रीबलभद्र अनूप ॥ ८०४ ॥ नयनन मिलत लई कर गहिकै फाल्गुन चले पराय। सुनि बलदेव क्रोध अति बाढ्यउ कृष्ण शान्त कियो आय ॥ ८०५ ॥ फेर बुलाय व्याह करि दीन्हों विजय बहुत सुखपायो। फिर आये हस्तिनपुर पारथ मघवा प्रस्थ बसायो ॥ ८०६ ॥ एकदिना यक विप्र भक्तमति हरिको सखा कहावे। अतिदारिद्र दुखित जब जाने तब पत्नी समुझावे ॥ ८०७ ॥ जाहु नाह तुम पुरी द्वारका कृष्णचन्द्रके पास। जिनके दरश परस करुणाते दुख दरिद्रको नास ॥ ८०८ ॥ तंदुल मांग दोंचिके लाई सो दीन्हों उपहार। फाटेवसन बांधिकै द्विजवर अति दुर्बल तन हार ॥ ८०९ ॥ आये देव द्वारका हरिपै जाय चरण शिरनायो। हरि भेंटे भ्राताकी नाईं पूजा विविध करायो ॥ ८१० ॥ अपने सुनि आसन बैठारे हँसि हँसि बूझत बात। कहो विप्र हम गये वन्तिका गुरुके सदन विख्यात ॥ ८११ ॥ वनमें वह वर्षा जब आई ताको सुधि करलेहों। गुरुआये आपुनको बोलन मंत्र थकायो मेहों ॥ ८१२ ॥ तादिनकी यह कथा तुम्हारी बिसरत नाहिन मोहिं। कीधौं कौन कार्यको आये सो पूंछत हौं तोहिं ॥ ८१३ ॥ कछु हमको उपहार पठायो भाभी तुम्हरे साथ। फाटे वसन सकुच अति लागत काढत नाहिंन हाथ ॥ ८१४ ॥ हरि अपने कर छोरि बसनको तंदुल लीन्हें हाथ। मुट्ठी एक प्रथम जब लीन्हें खान लगे यदुनाथ ॥ ८१५ ॥ द्वितीय मुष्टिका लेनलगे जब कमला गहि लियो हात। दियो द्विजहि मघवाको वैभव बाढ्यो यश विख्यात ॥ ८१६ ॥ भोर भये उठि चले भवनको हरि कछु इनहिं न दीन्हों। ताको हर्ष शोक निज मनमें मुनिवर कछू न कीन्हों ॥ ८१७ ॥ भली भई हरि दरशन पायो तनुको ताप नशायो। दुर्बल विप्र कुचील सुदामा ताको कंठ लगायो ॥ ॥ ८१८ ॥ धन्य धन्य प्रभुकी प्रभुताई मोपै वरणि न जाई। शेष सहसमुख पार न पावत निगम नेति कहि गाई ॥ ८१९ ॥ ऐसे कहत गये अपनेपुर सबहिं विलक्षण देख्यो। मणिमय महल फटिक गोपुर लखि कनकभूमि अत्र रेख्यो ॥ ८२० ॥ पत्नी मिली परमसुख पायो कृष्णचन्द्र आराधे। मघवाको सुख भयो सुदामाहिं तऊ कछुक नहिं बाधे ॥ ८२१ ॥ नौलख धेनु दई राजानृग बहुतहिं दान देवायो ॥ कृष्णभक्तिबिन विप्र शापते गिरगिटकी गति पायो ॥ ८२२ ॥ ताको चरण परशिकै माधव दुःखित शाप छुटायो। कृपाकरी यदुनाथ महानिधि जिन वैकुंठ पठायो ॥ ८२३ ॥ बलदाऊ व्रजमंडल आये व्रजवासिनको भेंटे। बहुत दिननके विरहताप दुख मिलत क्षणकमें भेंटे ॥ ८२४ ॥ सघन निकुंज सुभग वृन्दावन कीन्हें विविध विहार। गोपिन संग रासरस खेले बाढ्यो श्रम सुकुमार ॥ ८२५ ॥ कालिन्दीको निकट बुलायो जलक्रीडाके काज। लियो आकरषि एक क्षणमें हरि अति समरथ यदुराज ॥ ८२६ ॥ विविध भांति क्रीडा हरि कीन्हीं व्रजवासिन सुख दीन्हों। द्वादश वन अवलोक मधुपुरी तीरथको चित कीन्हों ॥ ८२७ ॥ शुभ कुरुक्षेत्र अयोध्या मिथिला प्राग त्रिवेनी न्हाये। पुनि शतरुद्र और चन्द्रभागा गंगाव्यास न्हवाये ॥ ८२८ ॥ निमिषारन आये बलजू जब सकल विप्र शिरनायो। करी अवज्ञा कथा कहत द्विज अपने लोक पठायो ॥ ८२९ ॥ तव द्विज कहेउ कथा कहिकै यह हमको सुख उपजायो। हम कापै अब कथा सुनैंगे बलदाऊ समझायो ॥ ८३० ॥ इनको पुत्र होय जो बालक ताको वेग

बिठावो । धरेउ हाथ शिर दीन्हीं विद्या नित प्रति कथा सुनावो ॥ ७३१ ॥ पुनि द्विज विनती करि यह भाष्यो असुर एक इहँ आवे । यज्ञ करतमें जानपरत वह आय रुधिर वर्षावे ॥ ८३२ ॥ यह सुनिके बलदेव गुसाईं हल मूसल लियो हाथ । लियो पकर हल नभ मण्डलते करमूशल सों घात ॥ ८३३ ॥ जयजयकार भयो सुरलोकन देव दुंदुभीवाजे । अस्तुति करत बहुतपूजा द्विज अति आनंद समाजै ॥ ८३४ ॥ विनती करी बहुत विप्रनने राम विप्र तुम मारेउ । तीरथ न्हाय शुद्ध तनको करि हरिद्विज वचन विचारेउ ॥ ८३५ ॥ वर्ष दिवसमें अरसठ तीरथ न्हाय करत घर आये । आय प्रभासु विप्र बहुजनको बहुतहि दान देवाये ॥ ८३६ ॥ पुन मिथिला यक दिवस पधारे हरि बलदेव गोसाईं । गदा युद्ध दुर्योधन सिखयो नानाभेद बताईं ॥ ८३७ ॥ पुनि द्वारका पधारे निजपुर अतिआनँद सुखबाढ़्यो । प्रगट ब्रह्म नित वसत द्वारका कलह भूमिको काढ़्यो ॥ ॥ ८३८ ॥ दश दश पुत्र एक यक कन्या हरि सबके उपजाईं । सुतके सुत नाती पतिनीकी महिमा कहिय न जाईं ॥ ८३९ ॥ बडे बली प्रद्युम्न कहावत कृष्ण अंश अवतार । तिन सब जगजीत्यो तिहुँ लोकन बाढ्यो सुयश अपार ॥ ७४० ॥ अश्वमेध करवाय युधिष्ठिर कुलको दोष मिटायो । करि दिग्विजय विजयको जगमें भक्त पक्ष करवायो ॥ ८४१ ॥ नानाविधि कीन्हीं हरि क्रीडा यदुकुल शाप दिवायो । जो ज्यंहि लोक छोंडिके आयो ताको तहँ पहुँचायो ॥ ८४२ ॥ ऊधोको कहि ज्ञान आपनो निगमन तत्त्व बतायो । कही कथा दत्तात्रय मुनिकी गुरु चौबीश करायो ॥ ॥ ८४३ ॥ कहि आचार भक्त विधभापी हंसधर्म प्रकटायो । कही विभूति सिद्ध साधनता आश्रम चार कहायो ॥ ८४४ ॥ सांख्यतत्त्व गीताहरि कीन्हीं गुणके भेद करायो । ऐलगीत पुनि भिक्षुगीत कहि पूजा विधि दरशायो ॥ ८४५ ॥ सदा वसत हरि पुरी द्वारका बहु विधि भोग विलासी । आदि अनन्त अघट्ट अनूपम हैं अविगति अविनाशी ॥ ८४६ ॥ एकदिना यकविप्र द्वारका वसत सुखद निजधाम । वेदरूप तपरूप महामुनि कृष्ण विप्र यह नाम ॥ ८४७ ॥ बालक दश जु भये वाके जब भूमा लिये मँगाय । चितमें यह अनुरक्त विचारत हरि दर्शनकी चाय ॥ ८४८ ॥ दश सुत भयो जानके ब्राह्मण करि पुकार हरिपास । तब हरि कहेउ देवकी गति यह करत काल जग नास ॥ ८४९ ॥ तब अर्जुन यह कहेउ मत्त हैं नृप नाहिंन भुवभार । मैं अर्जुन गांडिवधनु जाको काल लरों क्षणमार ॥ ८५० ॥ जब सुत भयो कहेउ ब्राह्मणते अर्जुन गये गृह ताह । शर पंजर रोप्यो चहुँ दिशिते जहां पवन नाहिं जाह ॥ ८५१ ॥ तब सुत गयो देहको लैके दरशन भयो न ताय । अतिही क्रोध भयो ब्राह्मणको बहुत बक्यो बिलखाय ॥ ८५२ ॥ तब अर्जुन ढूँढनको निकसे तीनलोक फिरि आयो । कहूं न पायो सुत ब्राह्मणके तब मनमें अकुलायो ॥ ८५३ ॥ कियो विचार प्रवेश अग्निको हरि आये समुझायो । लै निज संग चले पश्चिमको लोकालोक सोहायो ॥ ८५४ ॥ कनकभूमि अरु धामदेनको देखे परम सुहायो । बहुत निविड तम देख चक्र धरि धरेउ हाथ समुझायो ॥ ८५५ ॥ महाकालपुर तुरत पधारे हरिभूमाके पास । तुल्य अग्नि वर अगिन समानी भूमा तेज प्रकाश ॥ ८५६ ॥ कृष्ण तेजको देख सकल सुर तन मन भयो हुलास । अतिहीमन्द तेज भूमाको हरिके तेज प्रकाश ॥ ८५७ ॥ अतिआनन्द परस्पर बाढ़्यो जब उन विनती कीन्हीं । भलीभई भुवभार उतारेउ मेरी फिरि सुधि लीन्हीं ॥ ८५८ ॥ लै दशपुत्र द्वारका आये दीन्हें विप्र बुलाय । कीन्हों दुःख दूरि अर्जुनको महिमा प्रकट दिखाय ॥ ८५९ ॥ कीन्हीं केलि बहुत बल मोहन भुवको भार उतारेउ । प्रकट ब्रह्मराजत द्वारावति वेद पुराण विचारेउ ॥ ८६० ॥

एक दिना रुक्मिणि सों माधव करत बात सुखदाई। सुनु रुक्मिणि राधिका बिना मोहिं पल सम कल्प बिहाई ॥ ८६१ ॥ कनकभूमि रचि खचित द्वारका कुंजनकी छबिनाहीं । गोवर्द्धन पर्वत के ऊपर बोलत मोर सुहाहीं ॥ ८६२ ॥ यमुनातीर भीर खग मृगकी मोहिं नितप्रति सुधि आवै। वृन्दा विपिन राधिका मन्दिर नितप्रति लाड़लडावै ॥ ८६३ ॥ राति दिवस रस स्रवत सुधामें कामधेनु दरशाई। लूट लूट दधिखात सखनसँग तैसो स्वाद न पाई ॥ ८६४ ॥ षटरस भोजन नानाविधिके करत महलके माहीं। छाकेखात ग्वालमंडलमें वैसो तो सुखनाहीं ॥ ८६५॥जन्मभूमि देखनके कारण मेरो मन ललचावे।धौरी धेनु बुलावन कारण मधुरे बेनु बजावे ॥८६६॥ रास विलास विविध मैं कीन्हें संग राधिका लीन्हें । कीन्हें केलि विविध गोपिनसों सबहिनको सुख दीन्हें ॥ ॥८६७॥ बल मोहन फिर ब्रजहि पधारे ऊधोको सँग लीने। दीन्हों बास चरणरज गोपिन गुल्मलता रस भीने ॥८६८॥ सदा विलास करत गोकुलमें धन धन यशुमति मात। ज्यों दीपकते दीपक कीन्हों भये द्वारकानाथ ॥ ८६९ ॥ नित प्रति मंगल रहत महरके नित प्रति बजत वधाई। नित प्रति मंगल कलश धरावत नित प्रति वेद पढ़ाई॥८७०॥श्रीवृषभानु रायके आँगन नित प्रति बजत बधाई। नित प्रति मिल सुनि राजमण्डली मंगल घोष कराई॥८७१॥ बाल केलि क्रीडत ब्रज आँगन यशुमतिको सुख दीन्हों। तरुण रूप धरि गोपिनके हित सबको चित हरि लीन्हों ॥ ८७२ ॥ चन्द्रावली गोपकी कन्या चन्द्रभाग गृहजाई। भई किशोर श्यामने देखी अद्भुत प्रीति बढ़ाई ॥ ८७३ ॥ तब ललिता पूछ्यो नीके कर केहि विधि श्याम मिलाई।अब न परत मोकूं कल क्षणहूं जियमें अति अकुलाई ॥ ॥८७४॥ तब उन कहेउ शीश गोरसले बेचनके मिस आओ। गोवर्द्धन पर गोबिंद खेलत निरख परम सुख पाओ ॥ ८७५ ॥ करि शृंगार चली चन्द्रावलि नख शिख भूषण साजै । ज्यों करनी गजराज विलोकत ढूँढतहै अतिगाजै ॥ ८७६ ॥ गोवर्द्धनके शिखर चारुपर सखा वृन्द सँग लीन्हें। गोपिन देख टेर हरि कीन्हों दान लेन मन कीन्हें ॥ ८७७ ॥ राखो घेरि सकल युवतिनको सखा वृन्दसों भाख्यो। आपु जाय पकरचो कोमल कर दधि अमृत रस चाख्यो ॥ ८७८ ॥ देहो दधि को दान नागरी गहर न लायो चित। तुमरे काज नित्य हम ठाढे अरपे अपनो वित्त ॥ ८७९ ॥ वृन्दावनमों धेनु चरावत मांगत गोरस दान। नाना खेल सखन सँग खेलत तुम पायो नृपयान ॥ ८८० ॥ अरी ग्वालि मह मत्त वचनकी बोलत वचन विचार।अचलराज गोवर्द्धन मेरो वृन्दावन मंझार॥ ८८१ ॥ जो तुम राजा आप कहावत वृन्दावनकी ठौर। लूट लूट दधिखात सबनको सब चोरनके मौर ॥ ८८२ ॥ चोरी करत भक्तके चितकी अरु दधि अरु नवनीत । सखा वृन्द सब मीत हमारे बडीराज रजनीत ॥ ८८३ ॥ जो तुम राजनीत सब जानत बहुत बनावत बात। जब तुम जन्म लियो मथुरामें आये आधीरात ॥ ८८४ ॥ सुनरी ग्वालि गँवार बातकी बोलत बिना विचार । कमल कोषमें वसत मधुप ज्यों त्यों भुव रहे मुरार ॥ ८८५ ॥ दूध दहीके नात बनावत बातें बहुत गोपाल । गढि गढि छोलत कहा रावरे लूटतहौ ब्रजबाल ॥ ८८६ ॥ जो प्रभु देहधरे नहिं भुवपर दीन अधम को तारे॥ बढे असुर पुहुमी पर खल अति तिन्हें तुरतको मारे॥ ८८७॥ योग युक्तकर ध्यान लगावत योगसिद्ध कर ज्ञान । नेति नेति करि निगम बतावत ताहि होत निर्मान॥८८८॥ योगसांख्य अरु ज्ञान भामिनी माया हृदय विनास। प्रेम भक्त मेरो यश गावे तेहि घट मेरो वास ॥ ८८९ ॥ मुखऊपर कह कहों लायके अन उत्तरको खोर। जब यशुमतिने ऊखल बाँधे हमही दीन्हें छोर ॥ ८९० ॥ बालक निपट अयान ग्वालिनी कछु सुधि जानि न जाय। लेकर

चीर कदमपर बैठ्यो सबहिन हाहाखाय ॥ ८९१ ॥ बहुत भयेहो ढीठ साँवरे मुखपर गारीदेत। तुम्हरे डर हम डरपत नाहिंन कहा कँपावत बेत ॥८९२॥ श्याम सखनसों कहेउ टेरदे घेरो सब अब जाय। बहुत ढीठ यह भई ग्वालिनी मटुकी लेहु छिड़ाय ॥ ८९३ ॥ जाय श्याम कंकणकर लीनो गहि हारावलि तोर। लूट लूट दधि खात सांवरो जहां सांकरी खोर ॥ ८९४ ॥ इन्द्रा वृन्दा और राधिका चन्द्रावलि सुकुमारि । विमल विमल दधि खात सबनको करत बहुत मनुहारि ॥ ८९५ ॥ गहि वहियां ले चले श्याम घन सघन कुंजके द्वार । पहिले सखी सबै रचिराखी कुसुमन सेज सँवार ॥ ८९६ ॥ नाना केलि सखिन सँग विहरत नागर नंदकुमार। आलिंगन चुम्बन परिरंभन भेंटत भरि अँकवार ॥ ८९७ ॥ श्रम जल बिंदु इन्दु आनन पर राजत अति सुकुमार ॥ मानो विविध भाव मिल बिलसत मगन सिंधुरससार ॥ ८९८ ॥ कंजरंध्र अवलोकि सहचरी अपनो तन मन वारे। निरख निरख दंपति नेत्रन सुख तोर तोर तनडारे ॥ ८९९ ॥ यह अवलोकि देव गंध्रव मुनि बरसत कुसुम अपार। जयजय करत बार नीराजन बोलत जय जयकार ॥ ९०० ॥ गोवर्द्धनकी सघन कंदरा कीनों रैनि निवास। भोर भये निजधाम चले दोउ अतिआनन्द विलास ॥ ९०१ ॥ नन्दधामहरि बहुरि पधारे पौढरहे निज शैन। यशुमतिमात जगावत भोरहिं जागे अम्बुज नैन ॥ ९०२ ॥ करी मुखारी और कलेऊ कीनो जल असनान। करि शृंगार चले दोउ भइया खेलनको सुखदान॥ ॥ ९०३॥ कहुँ खेलत मिल ग्वाल मंडली आँख मीचली खेल। चढ़ा चढ़ीको खेल सखनमें खेलत हैं रसरेल ॥ ९०४ ॥ कहूँ आमरू डार विटपकी खेलत सखन मँझार। कूद कूद धरणी सब धावत दाँवदेत किलकार ॥ ९०५ ॥ भोजन समय जान यशुमतिने लीने दुहुँन बुलाय ॥ बैठ आय यशुमति कि गोदमें आँनद उर न समाय ॥ ९०६ ॥ बहु विधिके पकवान बनाये परसत यशुमति माय। आरोगित बलमोहन दोऊ सुख देखत ब्रजराय ॥ ९०७ ॥ कबहूं कवर खात मिरचनकी लागी दशन टकोर। भाज चले तब गहे रोहिणी लाई बहुत निहोर ९०८ ॥ भोजन करि नाना विधि दोऊ लीनों मठा सलोनो। अँचवन करि ब्रजराज पधारे बल मोहन सुख मानो ॥ ९०९॥ बीरीखाय चले खेलनको बीच मिली ब्रजनार। लै चलि पकर बाँह राधापै सघन कुंजके द्वार॥ ॥ ९१० ॥ राधासों मिलि अतिसुख उपज्यो उन पूंछी इक बात। कहो जु आज रैन कहे सोये हम देखे तुम जात ॥ ९११ ॥ तब हरि कहेउ सुनो मृगनैनी गाय गई यक दौर। ताको लेन गयो गोवर्धन सोय रहेउँ तेहि ठौर ॥ ९१२ ॥ कंद मूल फल दीने गोधन सो निशिको मैं खायो। भोर भये उठि तेरे आयो चरण कमल परसायो ॥ ९१३ ॥ निज प्रतिबिंब विलोकि राधिका हरिनख मंडलमाहँ। द्वितियरूप देखे अवलाको मान बढ्यो तनछाहँ ॥ ९१४ ॥ चली रिसाय कुंज मृग-नयनी जहँ अति करत गुंजार। बैठी जाय एकांत भवनमें जहां मानगृह चार ॥ ९१५ ॥ नन्द कुँवर विरहन राधाके विरह भये भरिपूर। बैठे जाय एकांत कुंजमें सखा कियो सब दूर ॥ ९१६ ॥ ललिता बोल कही मृदुवाणी कृष्ण विमल दलनैन । बिन राधा मोहिं कल न परत है कहत मधुर मृदु बैन ॥ ९१७ ॥ बेगजाय परि पायँ राधिका विनती करो सुनाय। दरशन देव सकल दुख मेटो तुम बिन रहेउ न जाय ॥ ९१८ ॥ तुम बिन खान पान नहिं भावत गोचारन शृंगार। रैन नींद नहिं परत निरंतर संभाषण व्यवहार ॥ ९१९ ॥ करि दंडवत चली ललिता जो गई राधिका गेह। पायँन पर पर बहुत विनय कर सफल करनको नेह ॥ ९२० ॥ बेगि चलो वृषभानुनन्दनी

बोले नन्दकुमार । तुम बिन पल छिन कल न परत है भोजन सुख व्यवहार ॥ ९२१ ॥ नव निकुंजमें मिलो श्यामसों भेंटो भरि अँकवार । कुसुम सेजपर करो केलि प्रिय गिरिधर परम उदार ॥ ९२२ ॥ तो बिन पियहिं कछू नाहिं भावे तोसों पिय आधीन । तो विन श्याम रहत हैं ऐसे जैसे जल बिन मीन ॥ ९२३ ॥ कहा सुभाव परचो सखि तेरो यह बिनवतहौं तोह । मान करत गिरिवरधर पयसों मानत नाहिंन मोह ॥ ९२४ ॥ करि शृंगार सकल ब्रज सुन्दरि नीलाम्बर तनुसाज । रैन अँधेरी कछू न दीखन नूपुर ध्वनि जिन बाज ॥ ९२५ ॥ कुबलय दल कुसुमन शय्या रचि पंथ निहारत तोर । सपन जाग अरु शयन सुमृत तुव वचन सत्यहै मोर ॥ ९२६ ॥ सित अरु पीत यूथिका वेनी गूंथो विविध बनाय । रचो भाल निज तिलक मनोहर अंजन नयन सोहाय ॥ ९२७ ॥ तू छबि सिंधु विहर ब्रजनायक क्षुद्र नदी नाहिं भावै । जबते नाम सुन्यो श्रवणन तुव रैनि नींद नहिं आवै॥९२८॥ हरि राधा राधा रटत जपत मंत्र दुरदाम । बिरह विराग महायोगी ज्यों बीतत हैं सब याम ॥ ९२९ ॥ कबहुँक किसलय सेज सँवारत तेरेही हित लाल। कबहुँक अपने हाथ सँवारत गूंथत कुसुमन माल ॥ ९३० ॥ तुव बिनवट सकेंत सदन वन देखत लगत उदास । विरह अग्नि चहुँ दिशिमें धावत फूले दिखत पलास ॥ ९३१ ॥ सारस हंस मोर पारावत बोलत अमृतबान । बैठरहे दुरसदन सघन वन ध्वनि नहिं सुनियत कान ॥ ९३२ ॥ कालिन्दी तट विमल कदमतर करत वदन तुव ध्यान । सुहृदय सखा त्यागि मनमोहन करत मधुर तुव गान ॥ ९३३ ॥ गुंजत श्रवणन मधुप सुनत हैं तुव श्रुति की सुधि आवै । कंचन बरन जात तेरो वपु पीताम्बर पहिरावै ॥ ९३४ ॥ सुनत कोकिला शब्द मधुरध्वनि कमल नयन अकुलात । तेरे बोल करत सुधि जियमें विरह मगन ह्वै जात ॥ ९३५ ॥ तुव नासापुट गात मुक्त फल अधर बिंब उनमान । गुंजाफल सबके शिर धारत प्रकटी मीन प्रमान ॥ ९३६ ॥ सिंधु सुतासुत तारिपु गमनी सुन मेरी तू बात । कामपिता बाहन भखको तनु क्यों न धरत निज गात॥ ॥ ९३७ ॥ अलि बाहन पति बाहन रिपुकी तपतबढ़ी तनुभारी । शैल सुतासुत तासुत अँगना सो तैं सबै विसारी ॥९३८॥ भृंग यूथ चतुरानन तनया ब्रह्मनाद सुरसंग । जलसुत बाहनसों जन धारत विषम लगत विषअंग ॥ ९३९ ॥ चतुराननसुत तासुत वा सुत उदित होन अब आयो । मन्मथ मात तात सुत अथयो सो तो वृथागँवायो ॥ ९४० ॥ पंकज उर पंकजजिन केरे तेरो अटल सुहाग । सुरपति बाहन तासुत शिरपर मांग भरो अनुराग ॥ ९४१ ॥ कमल पुत्र तासुत कर राजत सोहरि निज कर लीन्हें । सप्त स्वरन उपजाय बजावत रटन राधिका लीन्हें ॥ ९४२ ॥ सुत प्रह्लाद तासु सुत ता पित भ्राता वृथा गँवायो ॥ संज्ञा सुत वपु सदृश बसन तन सो तन लागत छायो ॥ ९४३ ॥ साराँग ऊपर साराँग राजत साराँग शब्द सुनावैं । साराँग देख सुने मृदुनैनी साराँग सुख दरशावे ॥ ९४४ ॥ साराँग रिपुकी वदन ओटदै कह बैठी है मौन । ब्रह्म सुता साराँगके घोखे करत सकलब्रज गौन ॥ ९४५ ॥ साराँगसुता देखि साराँगको तेरो अटल सुहाग । साराँग पति ता पति ता बाहन कीरत रट अनुराग ॥ ९४६ ॥ दधिसुत बाहन सुभग नासिका दधि सुत वाहन देख्यो । दधिसुत बाहन वचन सुनन तुव अंग अंग अवरेख्यो ॥ ९४७ ॥ शशिको भ्रात कहत ता बाहन कुन्द कुसुम ललचात । खंजन सदृश देख तुव अँखियां तन मनमें अकु- लात ॥ ९४८ ॥ मारुत सुरपति रिपु ता पतनी ता सुत बाहन वात । श्रवण सुनत अकुलात साँवरो कछुक कही नहिं जात ॥ ९४९ ॥ चतुरानन सुत ता सुत पत्नी ता सुतको जो दास ।

ता सुत बाहन पुत्र अंगधरि जलसुत करों प्रकास ॥ ९५० ॥ श्रीबलदेव रास जो कहिये तामें भान मिलाय । ताकी सुता कहत चतुरानन निगम सदा गुणगाय ॥ ९५१ ॥ सिंधु सुता तव भाग्य विलोकत मनमें रही लजाय । काम पिता माता गुरु ता वपु युवति कोट दरशाय ॥९५२ ॥ सातों रासमेल द्वादशमें ऐसे बीतत याम । द्वितिय रासमें मिलत सप्तमी सो जानत निज धाम ॥९५३॥ शैलसुता धरि ता रिपु बांधत अंग अंग पिय आज । कोटि यत्न कर सींचत तोऊ मिटत नहीं ब्रजराज ॥ ९५४ ॥ बायस अजा शब्द मन मोहन रटत रहत दिन रैन । तारापतिके रिपु पर ठाढे देखतहैं हरि नैन ॥९५५॥ गंगासुत रिपु रिपु शिप मेरी सुनत नहीं सखि काह । नारायण सुत ता सुत ता सुत लगत विषम विष ताह ॥ ९५६ ॥ जलसुत बाहन देख वदन तुव ब्रह्मसुता अकुलानी । मंगल मात तासु पति बाहन राजत सदृश भुलानी ॥ ९५७ ॥ दक्षप्रजापतिकी तनयापति ता सुत नारगई । सिंधुसुता सुत बाहनकी गति देखत विषम भई ॥ ९५८ ॥ अग्नितात तेहि तात अंगना त्यों उनमें तू राखी । बंधु कुसुम द्रुम ता रिपुको पति सारँग रिपुकर भाखी ॥ ९५९ ॥ पति पाताल लग्न तनधारन सो सुख भुजा विचारी ॥ प्रथम मथत जलनिधि जो प्रकट्यो सो लागत सबनारी ॥९६०॥ बंधु कुमुद पति पिता सुता जो तुव यश मधुरेगावै । ब्रह्मसुता सुत पदरज परसत सारँग सुता देखावै ॥ ९६१ ॥ इन्द्र सुतापति भुजा लगन लखि जलसुत हृदय लगावै । इन्द्रसुता तनया पति को सुत ताके गुनै न पावै ॥ ९६२ ॥ धरत कमलमें कमल कमल कर मधुर वचन उचार । कमलाबाहन गहत कमलसों कमलन करत विचार॥९६३॥ कालिन्दी पति नैन तासु सुत लागतहैं सबलोग । इन्द्र मात तेहि तात सो सरधत प्रकट देखियत भोग ॥ ९६४ ॥ अंबुज मात तात पति ता रिपु ता पति काम बिगारे । ताते सुन तू भाननन्दनी मेरो वचन विचारे ॥ ९६५ ॥ तीस भान द्वै मास सकल ऋतु सिंधुसुता सन जान । भूपन अंग लसत गुंजावलि और न कछू समान ॥ ९६६ ॥ इति दृष्टकूट सूचनिका सम्पूर्ण ॥ कबहुँक सेज रचत वेंदी कर हृदय होम घृत नैन । विप्र भोज बालनं तुव देखियत अंगक्लस नहिं चैन ॥ ९६७ ॥ अब तू वेग विचार वचन मम सुन वृपभानुकुमारि । मिलहौ वेग कमलदल लोचन सुन मेरी मनुहारि ॥ ९६८ ॥ गौर बरण ह्वैजात सांवरो ध्यान करत तुव अंग । पुनि ललिता हरिके ढिग आई बैठे सांवलरंग ॥ ९६९ ॥ वेग चलो तुम श्याम मनोहर आपुकाज महँ काज । लेहु मनाय प्राणप्यारीको प्रकट्यो कुंज समाज ॥ ॥ ९७० ॥ ऋतु वसंत अब आय देखियत फूले कुसुम सुरंग । मानो मदन बसंत मिले दोउ खेलतहैं रसरंग ॥ ९७१ ॥ वेगि चलो अब पिया मनावन नेक विलम्ब न लाओ । मेरी कही बात नहिं मानत ताको ज्ञान दृढाओ ॥ ९७२ ॥ परी पांय अपराध क्षमावत सुनत मिलेगी धाय । सुनत वचन दूतिका बदनमें श्याम चले अकुलाय ॥ ९७३ ॥ जहँ बैठी वृपभानुनंदनी तहँ आये धरि मौन । परेपांय हरि चरण परसकरि छिन अपराध सलौन ॥ ९७४ ॥ सुनि हरि वचन विलोकत शोभा मान गयो सब छूट । मिले धाय अकुलाय श्यामघन प्रेम काम रस लूट ॥ ९७५ ॥ रच्यो शृंगार श्याम अपने कर नख शिख प्रिया बनायो । शीशफूल वेनी नकबेसर तिलकभाल करवायो ॥९७६ ॥ युगताटंक चिबुक दशनावलि कर कंकण उरमाल । नूपुर पद कटि छुद्रघंटिका सब शृंगार रसाल ॥ ९७७ ॥ सकल शृंगार करत वर्णनको कृपा यथामति मोर । होत विलम्ब मिलनके कारण ताते वर्णत थोर ॥ ९७८ ॥ चले धाय नवकुंज दोउ मिलि किसलय सेज विराजे । परिरंभण सुख रास हास मृदु सुरत केलि सुख साजे ॥ ९७९ ॥ नाना बंध विविध रस क्रीडा खेलत श्याम अपार । रस रस

तत्त्व भेद नहिं जानत दंपति अंग सँभार ॥ ९८० ॥ सुरत सरुद्ध मगन दंपति रस झेलत अति सुखझेल । निरबधि रमन अपरमित अच्युत मनुज माय बहु खेल ॥ ९८१ ॥ नूपुर संचित किंकिनिकी ध्वनि सुनत मधुर किलकार । मदन सिंधु मधुमत्त मधुपगन फूले करत गुंजार ॥ ९८२ ॥ मधुप यूथ मिलि सबन चन्द्रमा तडित लिये आकास । खंजन मीन बजावत गावत निरतत सुख सुविलास ॥ ९८३ ॥ जलद समूह खसत उडुगण गण पै समुद्रके बीच । मकर कपोल बोल मृदु कोकिल अमृत सुधारस सींच ॥ ९८४ ॥ मोहन बेल शृंगार विटपसों उरझी आनँदवेल । कंचन बेल तमालहि लपटी रसिकरंग भरिरेल ॥ ९८५ ॥ युगल कमलसों मिलत कमल युग युगल कमल ले संग । पांच कमल मध्य युगल कमल लखि मनसा भई अपंग ॥ ९८६ ॥ किरण कदम्ब मंजुका पूरण सौरभ उडत अवेश । अगर धूप सौरभ नाशा सुख बरषत परम सुदेश ॥ ९८७ ॥ कुंतद कुसुद बंधूक मिलत पुनि मीन देख ललचात । ता पर चन्द्र देख संज्ञासुत तनमें बहुत डेरात ॥ ९८८ ॥ वरना भख करमें अवलोकत केश पास कृतबन्द । अधर समुद्र सदल जो सहसा ध्वनि उपजत सुखफन्द ॥ ९८९ ॥ मुदित मराल मिलत मधुकर सों खंजन मिलत कुरंग । कीर कीर रणधीर मिलत सम रत रस लहर तरंग ॥ ९९० ॥ सुरत समुद्र कहत दम्पतिकै निरवधि रमन अपार । भयो शेष मनमूढ कहनको राधा कृष्ण विहार ॥ ९९१ ॥ शोभा अमित अपार अखण्डित आप आतमाराम । पूरण ब्रह्म प्रकट पुरुषोत्तम सब विधि पूरण काम ॥ ९९२ ॥ आदि सनातन एक अनूपम अविगति अल्प अहार । ॐकार आदि वेद असुर हन निर्गुण सगुण अपार ॥ ९९३ ॥ चतुरानन पञ्चानन अरु पुन षटआनन सम जान । सहसानन बहु आनन गावत पार न पाय बखान ॥ ९९४ ॥ सघन कुंजमें अमित केल लख तनु सुगन्धकी रेल । मधुकर निकट आय पीवत रस सुखद सदारस झेल ॥ ९९५ ॥ मलिन भये रसमान सरोवर मुनि-जन मानस हंस । थकित विलोकि शारदा वर्णन करिवे बहुत प्रशंस ॥ ९९६ ॥ वृंदावन निज धाम परम रुचि वर्णन कियो बढाय । व्यास पुराण सघन कुञ्जनमें जब सनकादिक आय ॥ ९९७ ॥ धीर समीर बहत त्यहि कानन बोलत मधुकर मोर । प्रीतम प्रियावदन अवलोकत उठि उठि मिलत चकोर ॥ ॥ ९९८ ॥ अमित एक उपमा अवलोकत जियमें परत विचार । नहिं प्रवेश अज शिव गणेश पुनि कितक बात संसार ॥ ९९९ ॥ सहस रूप बहुरूप रूप पुनि एकरूप पुनि दोय । कुमुद कली विकसित अम्बुज मिलि मधुकर भागी सोय ॥ १००० ॥ नलिन पराग मेघ माधुरि सों मुकुलित अम्ब कदम्ब । मुनि मन मधुप सदा रस लोभित सेवत अज शिव अम्ब ॥ १००१ ॥ गुरु प्रसाद होत यह दरशन सरसठ बरप प्रवीन । शिव विधान तप करेउ बहुत दिन तऊ पार नहिं लीन ॥ १००२ ॥ सुख पर्य्यंक अंक ध्रुव देखियत कुसुम कन्द द्रुम छाये । मधुर मल्लिका कुसमित कुञ्जन दम्पति लगत सोहाये ॥ १००३ ॥ गोवर्द्धन गिरि रत्न सिंहासन दम्पति रस सुखमान । निबिड कुञ्ज जहँ कोउ न आवत रस बिलसत सुखखान ॥ १००४ ॥ निशा भोर कबहूं नहिं जानत प्रेम मत्त अनुराग । ललितादिक सींचत सुखनैनन जुर सहचरि बडभाग ॥ १००५ ॥ यह निकुञ्जको वर्णन करिदे वेद रहे पचिहार । नेति नेति कर कहेउ सहस विधि तऊ न पायो पार ॥ १००६ ॥ दरशन दियो कृपा करि मोहन वेग दियो वरदान । आगम कल्पपरमण तुव हैहै श्रीमुख कही बखान ॥ १००७ ॥ सो श्रुतिरूप होय ब्रजमण्डल कीनो रास विहार । नवल कुञ्जमें अंश बाहु धरि कीन्हीं केलि अपार ॥ ॥ १००८ ॥ पुनि ऋषि रूप राम वर पायो हरिसे प्रीतम पाय । चरण प्रसाद राधिका देवी उन

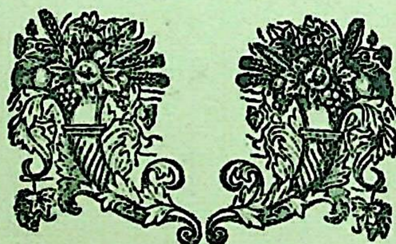
हरिकंठ लगाय ॥ १००९ ॥ वृन्दावन गोवर्धन कुञ्जन यमुना पुलिन सुदेश । नित प्रति करत विहार मधुररस श्यामा श्याम सुवेश ॥ १०१० ॥ निरखि निरखि सुख दम्पतिको यह कविकुल सब पचिहारे। भूषण खसे सुरत वश दोऊ केशन आपु सँवारे ॥ १०११ ॥ ललिता ललित बजाय रिझावत मधुर बीन कर लीने। जान प्रभात राग पञ्चम षट मालकोस रसभीने ॥ १०१२॥ सुर हिंडोल मेघ मालव पुनि सारँग सुर नट जान। सुर सांवत भूपाली ईमन करत कान्हरो गान॥ ॥ १०१३ ॥ ऊंछ अडानेके सुर सुनियत निपट नायकी लीन। करत विहार मधुर केदारो सकल सुरन सुख दीन ॥ १०१४ ॥ सोरठ गौड मलार सोहावन भैरव ललित बजायो। मधुर बिभास सुनत बेलावल दम्पति अतिसुख पायो ॥१०१५॥ देवगिरी देशाक देव पुनि गौरी श्री सुखरास। जैतश्री अरु पूर्वी टोडी आसावरि सुखरास ॥ १०१६ ॥ रामकली गुनकली केतकी सुर सुघराई गाये। जैजैवन्ती जगत मोहनी सुरसों बीन बजाये ॥ १०१७ ॥ सूआ सरस मिलत प्रीतम सुख सिन्धुवीर रसमान्यो। जान प्रभात प्रभाती गायो भोर भयो दोउ जान्यो ॥ १०१८ ॥ जागे प्रात निपट अलसाने भूषण सब उलटाने। करत शृंगार परस्पर दोऊ अति आलस शिथिलाने ॥ ॥ १०१९ ॥ जालरंध्र ह्वै सहचरि देखत जन्म सफल करि लेखे। जान प्रभात उच्छंगन दम्पति लेत प्राण रसपेखे ॥ १०२० ॥ औंट्यो दूध कपूर मिलायो लै ललिता तहँ आई। पहिले श्यामाको अँचवायो पाछे पिवत कन्हाई ॥ १०२१ ॥ करि शृंगार सघन कुञ्जनमें निशि दिन करत विहार। नीराजन बहुबिधि वारतहैं ललितादिक ब्रजनार ॥ १०२२ ॥ कबहुँक केलि करत यमुना जल सुन्दर शरद तडाग। कबहुँक मधुर माधुरी झूलत आनँद अति अनुराग ॥ १०२३ ॥ प्रथम वसन्त पञ्चमी शुभदिन मंगलचार बधाये। पञ्चानन जारचो मन्मथसो प्रकट भयो फिरि आये॥१०२४॥ यशुमति मात बधाई बाँटत फूली अँग न समाई। उबटि न्हवाय श्यामसुन्दरको आभूषण पहिराई ॥१०२५॥ घर घरते आईं ब्रज सुन्दरि मंगल साज सँवारे। हेम कलश शिर पर धरि पूरण काम मन्त्र उपचा-रे ॥ १०२६ ॥ अबिर गुलाल अरगजा सोधी लीन्हों सौंज बनाय। मनमें किये मनोरथ बहु विधि मिलवत सब मनभाय ॥ १०२७ ॥ भीर जानि सिंह पौर त्रियनकी यशुमति भवन दुराई। ढूँढ सकल त्रिय दौर मातको पकर बाँह ले आई ॥ १०२८ ॥ केसर चन्दन और अरगजा शीश महर के नाये। जो जो विधि उपजी जाके जिय सोइ सोइ भांति कराये ॥ १०२९ ॥ फगुआ दियो महर मन भायो यशुमति परम उदार। पकर लिये घनश्याम मनोहर भेंटे भरि अँकवार ॥ १०३० ॥ पहिली जान बसंत पंचमी यशुमति बहुत खिलाये। केसर चोवा और अरगजा श्याम अंग लपटा ये॥ १०३१ ॥ ता पाछे गोपिनने छिरके कनक कलश भरिडारे। मानो शीश तमाल अमृत घन सरस सुधा निधरारे ॥ १०३२ ॥ चन्दन चोवा मथत हाथ कर नील जलद तनु अरप्यो। मानो प्रकट करी अपने चित पियको प्राण समरप्यो ॥ १०३३ ॥ किये मनोरथ नाना विधिके मेवा बहु विधि लाई। सो हरिने स्वीकार कियो सब निरखि परम सुखपाई ॥ १०३४ ॥ सुबल सुबाहु तोक श्रीदामा सकल सखा जुरि आये। रत्न चौकमें खेल मचायो सरस वसन्त बधाये ॥ १०३५ ॥ करत परस्पर गोप ग्वाल मिलि क्रीडा अति मन भाई। सुरँग अबीर गुलाल उडावत रह्यो गगन सब छाई ॥ १०३६ ॥ फगुआ देन कह्यो मनभायो सबै गोपिका फूली। कंठ लगाय चलीं प्रीतमको अपने गृह अनुकूली ॥ १०३७ ॥ करत आरती विविध भांतिसों यशुमति परम सुहाई। सखावृन्द सब चले यमुन तट खेलत कुँवर कन्हाई ॥ १०३८ ॥ बैठे जाय सघन

कुंजनमें यमुनातीर गोपाल । सखी एक तहँ आय निकटही बोली वचन रसाल ॥ १०३९ ॥ वृन्दावन फूल्यो नँदनंदन सघन कुंज बहु भांत । हरि प्रतीत मुकुलित द्रुम पल्लव मुखरित मधुकर पात ॥ १०४० ॥ ठौर ठौर झिल्ली ध्वनि सुनियत मधुर मेघ गुंजार । मानो मन्मथ मिलि कुसुमाकर फूले करत विहार ॥ १०४१ ॥ अपनो सब गुण तुम्हैं दिखावन स्मर वसन्त मिलि आयो । मधुर माधुरी मुकुलित पल्लव लागत परमसुहायो ॥ १०४२ ॥ गोवर्द्धनके शिखर सुभगपर फूले कुसुम पलास । सहज सुरत सुख देत सँयोगिन विरहिन करत उदास ॥ १०४३ ॥ पुहुप पराग परस मधुकर गन मत्त करत गुंजार । मनो कामि जन देख युवति जन विषयासक्ति अपार ॥ १०४४ ॥ बीथिन विपिन विलोकि विविध मन मण्डित कुसुमित कुंज । मनहुँ हेम मंडपिका मुखरिति कल्पलता रस पुंज ॥ १०४५ ॥ वेगचलो वृन्दावन नायक राधा मारग जोवत । हिल मिल खेलो मन्मथ क्रीडा क्यों वसंत दिन खोवत ॥ १०४६ ॥ सुनत वचन ललिताके मोहन तुरत चले उठिधाय । कियो वसंत खेल वृन्दावन अद्भुत फागु मचाय ॥ १०४७ ॥ लता लता वन बन कुंजनमें खेलत फिरत वसन्त । मनहुँ कमल मण्डलमें मधुकर बिहरतहैं रसमन्त ॥ १०४८ ॥ उत श्यामा इत सखा मण्डली उत हरि इत ब्रजनार । मनो तामरस पारस खेलत मिलि मधुकर गुन्जार ॥ १०४९ ॥ खेल वसंत बहुत सुख मान्यो हर्षे गोपी ग्वाल । बिहँसि गये ब्रजराज भवन सब चञ्चल नैन विशाल ॥ १०५० ॥ होरीडांडी दिवस जानके अति फूले ब्रजराज । बैठे सिंहद्वारपै आपुन जुरिकै गोप समाज ॥ १०५१ ॥ विप्र बुलाय वेदविधि करिकै होरीडांडी रोप । आनन्दे सब गोप मण्डली मन्मथ कियो प्रकोप ॥ १०५२ ॥ पारिवा प्रथम दिवस होरीको नन्दराय गृहआई । सकल सोंज गोपीकर लेके खेलनको मनभाई ॥ १०५३ दुइज दुहूँ दिशिते होरीमचि सुरँग गुलाल उडायो । मनो अनुराग दुहुँनके अन्तर सबहिन प्रकट करायो ॥ १०५४ ॥ तीज तरुणि मिलि पकरे मोहन गहिकर अञ्जन दीनो । मत्त मधुप बैठ्यो अम्बुज पर मुखरत है सुरभीनों ॥ १०५५ ॥ चम्पक लता चौथदिन जान्यो मृगमद शीर लगायो । मनहुँ नील जलधरके ऊपर कृष्णागर लपटायो॥ १०५६ ॥ पांचै प्रमदा परमप्रीति सों केसर छिडकी घोर । मनहुँ सुधानिधि वर्षत घनपर अमृत धार चहुँओर ॥ १०५७ ॥ छठि छरागनी गाय रिझावत अति नागर बलवीर । खेलत फाग संग गोपिनके गोपवृन्दकी भीर ॥ १०५८ ॥ सातें रिजि सुगन्ध सब सुन्दरि लेआई उपहार । बल मोहनको हँसत खेलावत रीझ भरत अँकवार ॥ १०५९ ॥ आठें अति आतुर अबला प्रिय चुम्बन दीन्हों गाल । नाना विधि शृंगार बनाये वेंदा दीन्हों भाल ॥ १०६० ॥ नवमी नौसत साजि राधिका चन्द्रावलि ब्रजनार । हो हो करत पलाश कुसुम रँग बर्षतहैं जो अपार ॥ १०६१ ॥ दशमी दशौ दिशा भईं पूरित सुरँग अबीर गुलाल । मनु प्रीतम मिलिबेके कारण फूले नयन विशाल ॥ १०६२ ॥ एकादशी एक सखि आई डारचो सुभग अबीर । एक हाथ पीताम्बर पकरचो छिरकत कुमकुम नीर ॥ १०६३ ॥ द्वादशि मची दुहूँदिशि होरी इत गोपी उत ग्वाल ॥ इत नायक बल मोहन दोऊ उत राधा नवलाल ॥ १०६४ ॥ तेरस तरुणी सब मिलके यह कीन्हों कछुक उपाय । तोक सुबल मधु मंगल बोल्यो सबहिन मतो सुनाय ॥ १०६५ ॥ चौदशि चहूं दिशा सों मिलिके गठ जोरो गहि भोर । मनमोहन पिय दूलह राजत दुलहिन राधा गोर ॥ १०६६ ॥ देखि कुहूं कुसुमाकर फूल्यो मधुप करत गुंजार । चन्द्रावलि केसर ले आई छि

रके नन्दकुमार ॥ १०६७ ॥ शुक्लपक्ष परिवा पुरुषोत्तम क्रीडा करत अपार। हलधर संग सखा सब लीन्हें डोलत गृह गृह द्वार ॥ १०६८ ॥ स्रज दाम कुसुमनकी गूंथी अपने हाथ सँवार। दई पठाय भानुतनयाको पहिरत घोषकुमार ॥ १०६९ ॥ तीज तरुणि सब गावत आई नन्दराय दरबार। पकरे आय श्यामनट सुंदर भेंटत भरि अँकवार ॥ १०७० ॥ चौथ चहूँ दिशिते सब धाये सखा मंडली धाय। इतते आई कुँवर राधिका होरी अधिक मचाय ॥ १०७१ ॥ पंचमि पंच शब्द करि साजे सजि वादित्र अपार। रुंज मुरज ढफताल बाँसुरी झालरको झंकार ॥ १०७२ ॥ बाजत बीन रबाब किन्नरी अमृत कुण्डली यंत्र। सुर सुर मण्डल जलतरंग मिल करत मोहनी मंत्र ॥ १०७३ ॥ विविध पखावज आवज संचित बिच बिच मधुर उपंग। सुर सहनाई सरस सारँगी उपजत तानतरंग ॥ १०७४ ॥ कंसताल कटताल बजावत शृंग मधुर मुहचंग। मधुर खंजरी पटह प्रणव मिल सुख पावत रतभंग ॥ १०७५ ॥ निपटन केरी श्रवणन धुनि सुनि धीर न रहे ब्रजबाल। मधुर नाद मुरलीको सुनके भेंटे श्याम तमाल ॥ १०७६ ॥ छठिको पटरस सरस बनायो हरि भोजन करवायो। नानाविधि पकवान बनायो जेवत अति सुख पायो ॥ १०७७ ॥ सातें सखि मिलि बारी लाई आरोगे ब्रजराज। आठें दिशा सकल मिल ठाढो दूर करी सब लाज ॥ ॥ १०७८ ॥ नवमी नवसत साजि राधिका हरिसों खेलत फाग। दशमी दशहु दिशा परिपूरण बाढचो अति अनुराग ॥ १०७९ ॥ एकादशी राधिका मोहन दोउ मिलि खेलनलाग। बैठेजाय सघन कुंजनमें जहँ सहचरि बडभाग ॥ १०८० ॥ सघन कुंजमें डोल बनायो झूलत हैं पियप्यारी। ललितादिक बीरी जो खवावत नानाभाँति सँवारी॥१०८१॥ अति सुगंध घसलाय अरगजा छिरकत सांवलगात। हरि बारी प्यारी हरि छिरकत शोभा वरणि न जात ॥१०८२॥ द्वादश दिवस दुहूँ दिश माच्यो फागु सकल ब्रजमांझ। आलिंगन सब देत श्यामको लखै न धुन्धरमांझ ॥ १०८३ ॥ तेरस भामिनि पियो अधररस अति आनन्द अघाय। चहुँदिशिते गहिके गठ जोरी कीन्हीं सखियन आय ॥१०८४ ॥ पून्यो सुखपायो ब्रजवासी होरी हर्ष लगाय। परमराग अनुराग प्रकटभयो अतिफूले ब्रजराय ॥ १०८५ ॥ यशुमतिमाय लाल अपनेको शुभ दिन डोल झुलायो। फगुवादियो सकल गोपिनको भयो सबन मनभायो ॥१०८६॥ यमुनाजल क्रीडत ब्रजवासी संगलिये गोविंद। सिंहद्वार आरती उतारत यशुमति आनँदकंद ॥ १०८७ ॥ यहि विधि क्रीडत गोकुलमें हरि निज वृन्दावन धाम। मधुबन और कुमुदवन सुन्दर बहुलावन अभिराम ॥ १०८८ ॥ नन्दग्राम संकेत खिदरबन और काम बनधाम। लोहवन माठ बेलवन सुन्दर भद्रवृहद बन ग्राम ॥१०८९॥ चौरासी ब्रजकोश निरन्तर खेलत हैं बलमोहन। सामवेद ऋग्वेद यजुरमें कहेउ चरित ब्रजमोहन ॥ १०९० ॥ व्यास पुराण प्रगट यह भाख्यो तंत्र ज्योतिपिन जान्यो। नारदसों हरि कहेउ कृपाकर अमृत वचन परमान्यो ॥ १०९१ ॥ सनकादिकसों कहेउ आपु हरि निज वैकुंठ मँझार। व्यासदेव शुकदेव महामुनि नृपसों कियो उचार॥१०९२॥नारायण चतुरानन सों कहि नारद भेद बतायो।ताते सुनिके व्यास भागवत नृप शुकदेव जतायो ॥१०९३ ॥ शेष कहेउ जो सांख्यायनसों सुनिके सनत्कुमार। कहेउ वृहस्पति पुनि मैत्रेसों उद्धवकियो विचार ॥ १०९४ ॥ ऐसे विविध प्रमाण प्रकट बहु लीला करि ब्रजईश। सोई श्रीशुकदेव महामुनि प्रकटकही राधीश ॥ १०९५ ॥ वृन्दावनहरि यहि विधि क्रीडत सदा राधिकासंग। भोर निशा कबहूं जानतहैं सदा रहत यक रंग ॥१०९६ ॥ सघनकुंजमें खेलत गिरिधर मथुराकी सुधिआई। राखे बरजि राधिकारानी अब न सकोगे जाई ॥ १०९७ ॥

राखों कंठलगाय लालको पलक ओट नहिं करिहौं । युग कुच बीच भुजा दोउन मिल सदा प्रेमरँग भरिहौं ॥ १०९८ ॥ सदा एकरस एक अखंडित आदि अनादि अनूप । कोटिकल्प बीतत नहिं जानत विहरत युगल स्वरूप ॥ १०९९ ॥ संकर्षणके वदन अनलते उपजी अग्नि अपार । सकल ब्रह्मांड तुरत तेजसों मानो होरी दई पजार ॥ ११०० ॥ सकल तत्त्व ब्रह्मांड देवपुनि माया सब विधि काल । प्रकृति पुरुष श्रीपति नारायण सबहैं अंश गोपाल ॥ ११०१ ॥ कर्म योग पुनि ज्ञान उपासन सबही भ्रम भरमायो । श्रीवल्लभ गुरुतत्त्व सुनायो लीलाभेद बतायो ॥ ११०२ ॥ तादिनते हरिलीलागाई एक लक्ष पद बन्द । ताको सार सूर सारावलि गावत अति आनन्द ११०३॥ अथ श्रीनाथजीके वरदान ॥ तब बोले जगदीश जगतगुरु सुनो सूर मम गाथ । तू कृत मम यश जो गावै गो सदारहै मम साथ ॥ ११०४ ॥ खेलत यहि विधि हरि होरी हो होरी हो वेद विदित यह बात । ॥ * ॥ धरि जिय नेम सूर सारावलि उत्तर दक्षिण काल । मन बांछित फल सबही पावें मिटे जन्म जंजाल ॥११०५॥ सीखै सुनै पढै मनराखै लिखै परम चितलाय । ताके संग रहतहौं निशि दिन आनँद जन्म विहाय ॥ ११०६ ॥ सरस समतसर लीलागावें युगल चरण चितलावें । गर्भबास बंदीखाने में सूर बहुरि नहिं आवें ॥ ११०७ ॥

इति श्रीसूरदासजीकृत सम्मतसरलीला तथा सवालाखपदोंकासूचीपत्र समाप्त ॥



जाहिरात।

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण।

संस्कृत मूल तथा भाषाटीका सहित।

पण्डित ज्वालाप्रसाद मिश्र अनुवादित।

यदि आप रामचरितामृत पान करनेकी इच्छा करते हैं, यदि आपके हृदयमें रघुराज की भक्तिका स्रोत बहता है यदि आदि कवि वाल्मीकिजीकी मनोहारिणी चमत्कारिणी कविताका स्वाद लेनेकी इच्छा है, यदि दशरथ कुमारकी लीला इस आर्यग्रंथके द्वारा जानने की इच्छा है, यदि आपको त्रेतायुगकी वाणी का स्वाद लेना है, तो इस सटीक रामायणके स्वाद लेनेसे न चूकिये, इसमें प्रत्येक श्लोककी टीका पूर्ण आशय भावार्थ शंका समाधान पद टिप्पणी आदि ऐसी रीतिसे लिखीहैं कि सर्व साधारणके ध्यानमें सब प्रकार आजावें-पढ़नेसे पत्रे हाथमें लेकर छोड़नेको जी नहीं चाहता, भाषाकी शैली इस प्रकार रक्खीहै कि, बराबर पाठ करनेसे प्रेमसागरहृदयमें उमड़ता चला आताहै, मानो यह लीला नेत्रोंके सामने होरही है ऐसा ध्यान बँध जाताहै, बहुतकालसे महात्माओंको इसकी अभिलाषाथी, सो आपहीके निमित्त इस ग्रंथको बड़े टाईपमें चिकने मोटे कागजपर छापकर तयार कियाहै, मूल्यभी डाकव्यय समेत केवल २१ ही रुपये हैं ॥

वाल्मीकीय रामायण केवल भाषा।

और भी सुभीता है —ऊपरके सब अलंकारों से युक्त सर्गके आदि अन्तके श्लोक लिखकर शेष सब भाषा और श्लोकांक भी लगे हुए दो भागोंमें विलायती बढ़िया सुन्दर सुनहरी अक्षरोंकी जिल्द बँधी है बहुत नहीं दश रुपये १० में घर बैठे पहुँचा देंगे।

शुकसागर।

कायवर लला शालिग्रामजी अनुवादित।

लीजिये अब देर करनेका समय नहीं यदि आप कृष्णचरितामृत पान करने की इच्छा करते हो, यदि श्रीमद्भागवतका परम मनोहर अनुवाद और चारपदार्थ हस्तगत करनाचाहते हो, यदि कृष्णचन्द्र आनंदकंद गोविन्द के मन भावन सुख उपजावन पवित्रचरित्र पाठ करने की उत्कण्ठा है, यदि अन्यभी महाभारतादि बड़े बड़े ग्रंथोंके आख्यान एकही पुस्तक में देखना चाहते हो; यदि चटपटे अनूठे प्रेमरस भरे भजन दोहा चौपाई सोरठा कवित्तादि की मिठाईके स्वाद की चाहना है,यदि प्रत्येक अध्यायके शंका समाधान की इच्छा है तो इस नवीन शुकसागर के लेने में देर न कीजिये, यह ग्रंथ अनेक विषयों के होने से बहुत बढ़गया है, इस कारण अच्छे चिकने कागजपर बडे टाईप के अक्षरों में दो भागों में छापकर तयार किया है देखो अक्षरभी इतने बडे हैं कि वृद्धजनभी सुगमता से पढ़सकेंगे, मूल्य इतने परभी १०) रुपये और २॥=) डाकमहसूल रक्खाहै वजनभी पक्का १० सेरका है केवल लागतका यह दाम है पुट्ठा बढ़िया विलायती कपडेका है.

रामरसायन-रामायण।

लीजिये पाठको ! यह परमप्यारी रसिकविहारीजीकी मनोहर काव्यरचना का बहुतही सुंदर ग्रंथ लीजिये; देखिये समग्र ग्रंथ परम रोचक दोहा,चौपाई,सोरठा,कवित्त,इत्यादि छन्दोबद्ध में वर्णित है और सम्पूर्ण ग्रंथ रामकथासे विभूषित है. रामकथामृताभिलाषियोंको तो अत्यन्तही सौख्यप्रद है रामजन्म, रामविवाह, वनगमन, सीताहरण, रामरावणसंग्राम, रामराज्य रामाश्वमेध इत्यादि कथायें अत्यन्त विस्तारपूर्वक वर्णित हैं काव्यानुरागियो ! यह नूतनकाव्य प्राचीनकाव्योंसे किसीप्रकार भावगंभीर, पदरुचिरतामें न्यून नहीं है इसके पदपदमें काव्यकी छटा चित्तको हर्षित करतीहै विशेप लिखनेकी आवश्यकता नहीं है. काव्यानुरागी इसके द्वारा शीघ्र रुचि पूर्ण करें डाकव्यय सहित ४ रु० ॥

भजनामृत – इसमें मंगल गौरी होली जय ध्वनि पद विनय आरती इत्यादि अनेकप्रकार के भजनहैं साधुओंके वास्ते अतिउत्तमहै की० १रु०ट०-२ आ०

ब्रजबिहार-वृन्दाबनवासी श्रीनारायण स्वामीजीकृत-जिसमें श्रीकृष्णचन्द्र आनंदकंद वृन्दावनबिहारी तथा श्रीवृषभानुनन्दिनीराधे महारानी की सम्पूर्ण लीलाओं का वर्णन सुन्दर अनेक प्रकारके भजन दोहे कवित्त और वार्तिक में अतिमधुरतासे किया गयाहै जिसके पढने से श्रीकृष्णचरणानुरागियोंका मन प्रेम में एक दम मग्न होजाताहै इसमें अधिकतर वही लीला सम्मिलित कीगई हैं कि जिनको आज कलके रासधारी लोग करते हैं अन्तमें अनुरागरसभी है स्थान २ पर चित्र भी सुन्दर लीलानुकूल लगाये गये हैं पुस्तककी रक्षाके निमित्त विलायती कपडेकी जिल्दभी बांधी गई है जिसपर सोनेके अक्षर भी लिखे गये हैं मूल्य प्रेमियोंके निमित्त चिकनेकागजका २ रु० डाक म०।) तथा रफ् कागजका १॥। रु० डाक महसूल।)

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस--(बम्बई.)

श्रीराधाकृष्णचन्द्राय नमः ।



श्रीगणेशाय नमः ।

अथ सूरसागर ।

प्रथम स्कन्ध ।

राग विलावल ॥ चरण कमल बंदौं हरि राई । जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै अंधेको सब कछु दरशाई ॥ बहिरो सुनै मूक पुनि बोलै रंक चलै शिर छत्र धराई । सूरदास स्वामी करुणामय बार बार बन्दौं तेहि पांई ॥ १ ॥ राग कान्हरा । भक्त अंग ॥ अविगत गति कछु कहत न आवै । ज्यों गूँगे मीठे फलको रस अंतर्गतही भावै ॥ परमस्वाद सबही जु निरंतर अमित तोष उपजावै ॥ मन वाणीको अगम अगोचर सो जानै जो पावै ॥ रूप रेख गुण जाति जुगति बिनु निरालम्ब मन चकृत धावै । सब विधि अगम विचारहिं ताते सूर सगुण लीला पद गावै ॥२॥ भक्तवत्सल अंग । राग मारू ॥

वासुदेवकी बडी बडाई ॥ जगत पिता जगदीश जगत गुरु अपुन भक्तकी सहत ढिठाई ॥ भृगु को चरण राखि उर ऊपर बोले वचन सकल सुखदाई । शिव विरंचि मारनको धाए सो गति काहू देव न पाई ॥ बिनु बदले उपकार करत हैं स्वारथ बिना करत मित्राई। रावण अरिको अनुज विभीषण ताको मिले भरतकी नाई ॥ बकी कपट करि मारन आई सो हरिजू वैकुंठ पठाई । बिनु दीनेही देत सूर प्रभु ऐसे हैं यदुनाथ गुसाईं ॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥ करणी करुणासिंधुकी कछु कहत न आवै । कपट हेतु परशे बकी जननी गति पावै ॥ वेद उपनिषद यश कहै निर्गुणहिं बतावै । सोइ सगुण होय नंदकी दावरी बँधावै ॥ उग्रसेनकी आपदा सुनि सुनि बिलखावै । कंस मारि राजा कियो आपुन शिरनावै ॥ जरासंधकी बंदी काटी नृप कुल यश गावै । असमय वन निगले पिता ताको शाप नशावै ॥ उघेरे शोक समुद्र ते पांडव गृह लावै। जैसे गैया बच्छको सुमिरत उठि धावै ॥ बरुण फांस ते ब्रजपतिहिं छिन माहिं छुडावै । दुखित गयंदहि जानिकै आपुन उठि धावै ॥ कलिमें नामा प्रगटियो ताकी छानि छवावै । सूरदासकी बीनती कोउ लै पहुँचावै ॥ ४ ॥ राग मारू । ऐसी कौन करी है और भक्त काजै॥जैसे धरैं जगदीश जिय माहिं लाजै॥हिरन कश्यप बढ्यो उदय अरु अस्त लौं ग्रस्यो प्रह्लाद चित चरण लायो । भीरके परे ते धीर सब-हिन तज्यौ खंभते प्रगट कर जन छुडायो ॥ ग्रस्यो गज ग्राह लै चल्यो पातालको कालके त्रास मुख नाम आयो । छांडि सुखधाम अरु गरुडतजि सांवरो पवनके गवन ते अधिक धायो ॥ कोपि कौरव गहे केश जब सभा में पांडुकी वधू यश नेकु गायो । लाजके साज में हुती ज्यों द्रौपदी बढ्यो तनु चीर नहिं अंत पायो ॥ रोरके जोर ते शोर घरनी कियो चल्यो द्विज द्वारका जाय ठा-ढ्यो॥जोरि अंजलि मिले छोरि तंदुल लये इन्द्रके विभव ते अधिक बाढ्यो॥शक्रको दान बिन मान ग्वालिन कियो गह्यो गिरि पान यश जगत छायो । यहै जिय जानिकै अंध भव त्रास ते सूर कामी कुटिल शरण आयो ॥ ५ ॥ राग रामकली । कान कियो जन हित जदुराई ॥ प्रथम कह्यो दै वचन दयारत तेहि बस गाय चराई ॥ भक्त बछल वपु धरि नरकेहरि दनुज दहन उर डर सुरसाई । बलि बल देखि अदित सुन कारन भियदु पलवातिहुँपुर फिरि आई ॥ एहि थर बनि ब्रीडा गज मोचन और अनंत कथा श्रुति गाई । सूर दीन प्रभु प्रगट विरद सुनि अजहुँ दयाल पतित शिरनाई ॥ ६ ॥ जहां जहां सुमिरे हरि जेहि विधि तहां तैसे उठि धाये हो। दीनबंधु हरि भक्त कृपानिधि वेद पुराणनि गाये हो ॥ सुत कुबेर के मत्त मगन भए विष रस नैना छाये हो । मुनि शरापते भये जमल तरु तेहि हित आपु बँधाये हो ॥ वस्त्र कुचैल दीन द्विज देखत ताके तंदुल खाये हो । सम्पति दई वाकी पत्नीको मन अभिलाप पुराये हो ॥ जब गज गह्यो ग्राह जल भीतर तब हरि नाम पुकारयो हो। गरुड छांडि आतुर ह्वै धाये सो तत्काल उबारयो हो ॥ कलानिधान सकल गुणसागर गुरु धौं कहा पढाये हो ॥ तेहि उपकार मृतक सुत यांचि सो यमपुर ते ल्याये हो ॥ तुम मोसे अपराधी माधव कितेक मुक्ति पठाये हो । सूरदास प्रभु भक्तवछल तुम पावन नाम कहाये हो ॥ ७ ॥ राग धनाश्री ॥ प्रभुको देखो एक सुभाई । अति गंभीर उदार उदधि सरि जान शिरोमणि राई ॥ तिनका सों अपने जनको गुण मानत मेरु समान । सकुचि समुद्र गनत अपराधहि बूँद तुल्य भगवान ॥ वदन प्रसन्न कमल ज्यों सन्मुख देखत हौं हो जैसे । विमुख भये अकृपिण निमिष हूं फिर चितयो तो तैसे ॥ भक्त विरह कातर करुणामय डोलत पाछे लागे । सूरदास

ऐसे स्वामीको देहि सु पीठ अभागे ॥ ८ ॥ राग नट ॥ हरि सों ठाकुर और न जन को। जेहि जेहि विधि सेवक सुख पावे तेहि विधि राखत तिनको ॥ भूँखे बहु भोजन जु उदर को तृषा तोय पट तन को। लग्यो फिरत सुरभी ज्यों सुत सँग उचित गमन ग्रह वनको ॥ परम उदार चतुर चिंतामणि कोटि कुबेर निधनको ॥ राखत हैं जनकी परतिज्ञा हाथ पसारत कणको ॥ संकट परे तुरत उठि धावत परम सुभट निज प्रणको ॥ कोटिक करैं एक नहिं मानै सूर महा कृतघनको ॥ ९ ॥ राग धनाश्री ॥ हरिसों मीत न देखौं कोई। अंतकाले सुमिरत तेहि अवसर आनि प्रतीक्षो होई ॥ ग्राह गहे गजपति मुकरायो हाथ चक्रलै धायो। तजि वैकुंठ गरुड तजि श्री तजि निकट दासके आयो ॥ दुर्वासाको शाप निवारचो अंबरीप पति राखी। ब्रह्मलोक पर्यंत फिरचो तहँ देव मुनी जन साखी ॥ लाखागृहते जरत पांडुसुत बुधि बल नाथ उबारे। सूरदास प्रभु अपने जनके नाना त्रास निवारे ॥ १० ॥ राग धनाश्री ॥ राम भक्तवत्सल निज बानो। जाति गोत कुल नाम गनत नहिं रंक होयकै रानो ॥ ब्रह्मादिक शिव कौन जात प्रभु हौं अजान नहिं जानो ॥ महता जहाँ तहाँ प्रभु नाहीं सो द्वैता क्यों मानो ॥ प्रगट खंभ तें दई दिखाई यद्यपि कुलको दानो। रघुकुल राघो कृष्ण सदाही गोकुल कीनो थानो ॥ वरणि न जाय भजन की महिमा बारम्बार बखानो। ध्रुव रजपूत विदुर दासी सुत कौन कौन अरगानो ॥ युग युग विरद यहै चलि आयो भक्तन हाथ विकानो। राजसूय में चरण पखारे श्याम लये कर पानो ॥ रसना एक अनेक श्याम गुण कहँलौं करौं बखानो। सूरदास प्रभुकी महिमा है साखी वेद पुरानो ॥ ११ ॥ राग विलावल ॥ काहूके कुल तन न विचारत। अविगत की गति कहि न परतुहै व्याध अजामिल तारत ॥ कौन धौं जाति अरु पांति विदुरकी ताहीके प्रभु धारत। भोजन करत दुष्ट घर उनके राज मान भँग टारत ॥ ऐसे जन्म करमके ओछे ओछेही अनुसारत। यहै सुभाव सूरके प्रभुको भक्त वछल प्रण पारत ॥ १२ ॥ राग सारंग ॥ गोविंद प्रीति सबनकी मानत ॥ जेहि जेहि भाय करी जिन सेवा अंतर्गत की जानत ॥ शबरी कटुक बेर तजि मीठे भाखि गोद भरि लाई। जूँठे की कछु शंक न मानी भक्ष किये सतभाई ॥ संतन भक्त मित्र हितकारी श्याम विदुरके आये। अतिरस वाढो प्रीति निरंतर साग मगन ह्वै खाये ॥ कौरव काज चले ऋषि शापन साग पत्रही अघाये। सूरदास करुणानिधान प्रभु युग युग भक्त बढाये ॥ १३ ॥ राग रामकली ॥ शरण गये को को न उबारचो। जब जब भीर परी संतन को चक्रसुदर्शन तहां सँभारचो। भयो प्रसाद जु अंबरीप को दुर्वासाको क्रोध निवारचो। ग्वालन हेतु धरचौ गोवर्धन प्रगट इन्द्र को गर्व प्रहारचौ ॥ कृपाकरी प्रह्लाद भक्त को खंभ फारि उर नखन विदारचौ। नरहरि रूप धरचो करुणाकरि छिनक माहिं हरनाकुश मारचो। ग्राह ग्रसत गजको जल बूडत नामलेत वाको दुख टारचो। सूरश्याम विनु और करै को रंगभूमिमें कंस पछारचो ॥ १४ ॥ राग केदारा। जनकी और कौन पत राखै। जाति पांति कुल कानि न मानत वेद पुराणनि साखै ॥ जेहिकुल राज द्वारका कीनो सो कुल शापत नाश्यौ ॥ सोइ मुनि अंबरीप के कारण तीन भुवन भ्रमि त्रास्यौ ॥ जाको चरणोदक शिव शिर धरचो तीन लोक हितकारी। तिन प्रभु पांडुसुतनके कारण निजकर चरण पखारी ॥ बारह बरस बसुदेव देवकी कंस महा डर दीनों। तिन प्रभु प्रह्लादहिं सुमिरत ही नरहरि रूप जु कीनो ॥ जग जानत यदुनाथ जिते जन निज भुज श्रम सुख पायो। ऐसो को जो शरण गये ते कहत सूर इतरायो ॥ १५ ॥ जब जब दीनन कठिन परी। जानतहौं करुणामय जनको तब तब सुगम करी ॥ सभामँझार द्रौपदी आनी हरि सुदुशासन दुष्ट धरी। सुमिरत पटको कोट बढ्यो

१ विपत्काल।

तब दुख सागर उबरी ॥ ब्रह्मशापते गर्व उबारचो टेरत जरी जरी। तब तब रक्षा करी भगतपर जब जब विपति परी॥ विपतिकाल पंडव बँधुअनमें राख्यो श्याम ढरी। करि भोजन अवशेष यज्ञ प्रभु त्रिभुवनभूख हरी॥ पाय प्रसाद भक्तनपन राख्यो गजसों राखि धरी। महामोहमें परचो सूर प्रभु काहे सुधि बिसरी ॥ १६ ॥ राग रामकली ॥ और न काहुहि जनकी पीर। जब जब दीन दुखी भयो तब तब करी कृपा बलवीर॥ गज बल हीन विलोकि दशौ दिशि तब हरि शरण परचो ॥ करुणासिंधु दयालु दरश दै सब संताप हरचो॥ गोपी गाइ ग्वाल गो सुत हित सात दिवस गिरि लीनो। मागध हन्यो मुक्त नृप कीने मृतक विप्र सुत दीनो॥ श्री नृसिंह वपु धरचो असुर हित भक्त वचन प्रति पारचो। सुमिरत नाम द्रुपदतनयाको पट अनेक विस्तारचो ॥ मुनि मद मेंटि दास व्रत राख्यो अंबरीष हितकारी। लाषा गृहमें शत्रु सैनते पांडव विपति निवारी॥ वरुण फांस ब्रजपति मुकरायो दावानल दुख टारचौ। घर आए वसुदेव देवकी कंस महाखल मारचौ॥ श्रीपति युग युग सुमिरनके वश देव विमल यश गावैं। अशरण शरण सूर यांचतहै को जो सुरति करावैं॥ १७॥ राग केदारा॥ ठकुरायत गिरिधर जूकी सांची॥ कौरव जीति युधिष्ठिर राजा कीरति तीन लोक में माची॥ ब्रह्म रुद्र डर डरत कालके काल डरत भ्रुव भंग की आंची। रावण सों नृप जात न जान्यो माया विषम शीश धरि नाची॥ गुरुसुत आनि दये यमपुरतें विप्र सुदामा कियो अयाची। दुःशासन कर वसन छुड़ावत सुमिरत नाम द्रौपदी बांची॥ हरि चरणारविंद तजि लागत अनत कहूं तिनकी मति कांची। सूरदास भगवंत भजत जे तिनकी लीक चहूं युग खांची॥ १८॥ भक्त महिमा। राग सारंग॥ हरिके जन सबते अधिकारी। ब्रह्मा महादेवते को बड तिनके सेवक भ्रमत भिखारी। याचक पै याचक कहा याचे सो याचै सो रसना हारी। गणिकापूत सोभ नहिं पावत जिन कुल कोऊ नहीं पितारी॥ तिनकी साष देखि हरनाकुश रावण कुटुँब समेत भे ख्वारी। जन प्रह्लाद प्रतिज्ञा पाली विभीषण सु अजहुँ राजारी॥ शिला तरी जल माहिं सेतु बँधि बलि वहि चरण अहल्या तारी। जे रघुनाथ शरण तकि आये तिनकी सकल आपदा टारी॥ जिन गोविंद अचल ध्रुव राख्यो रवि शशि दै प्रदक्षिणा हारी। सूरदास भगवंत भजन बिनु धरनी जननि बोझ कत मारी॥ १९॥ राग सारंग॥ जापर दीनानाथ ढरे। सोइ कुलीन बडो सुन्दर सोइ जिनपर कृपा करे॥ राजा कौन बडो रावणते गर्वहि गर्व गरे। रांकव कौन सुदामाहू ते आपु समान करे॥ रूपव कौन अधिक सीताते जन्म वियोग भरे। अधिक कुरूप कौन कुबिजाते हरि पति पाइ बरे॥ योगी कौन बडो शंकरते ताको काम छरे। कौन विरक्त अधिक नारदसों निशि दिन भ्रमत फिरे॥ अधम सुकौन अजामिलहूते यम तहँ जात डरे। सूरदास भगवंत भजन बिन फिर फिर जठर जरे॥ २०॥ जाको दीनानाथ निवाजै। भवसागरमें कबहुं न झूके अभय निशाने बाजै॥ विप्रसुदामाको निधि दीनी अरजुन रनमें गाजै॥ लंकाराज विभीषण राजै ध्रुव आकाश बिराजै॥ मारि कंस केशी मथुरामें मेट्यो सबै दिवाजै। उग्रसेन शिर छत्र धरचो है दानव दुहुँ दिशि भाजै॥ अंबर गहत द्रौपदी राखी पलट अंधसुत लाजै। सूरदास प्रभु महा भक्तिते जाति अजाति हि साजै॥ २१॥ राग देवगंधार॥ जाको मनमोहन अंग करै। ताको केश खसै नहिं शिरते जो जग बैर परै॥ हिरनकशिपु परिहार थक्यो प्रल्हाद न नेकु डरै। अजहूं लौं उत्तानपाद सुत राज्य करत न मरै॥ राखी लाज द्रुपदतनयाकी कोपित चीर हरै। दुर्योधन को मान भंग करि वसन प्रवाह भरै॥ विप्र भक्त नृग अंध कूप दियो बलि पढि वेद छरै। दीन दया-

लु कृपालु कृपानिधि कापै कह्यो परै ॥ जो सुरपति कोप्यो ब्रज ऊपर कहिधौं कछु न सरे । राखे ब्रज जन नंदके लाला गिरिधर विरद धरै ॥ जाकी विरद है गर्वप्रहारी सो कैसे बिसरै । सूरदास भगवंत भजन करि शरण गहे उधरै ॥ २२ ॥ राग केदारा ॥ जाको हरि अंगीकार कियो । ताके कोटि विघ्न हरि हरिकै अभय प्रताप दियो॥दुर्वासा अंबरीष सतायो सो हरि शरण गयो । परतिज्ञा राखी मनमोहन फिरि तापै पठयो ॥ निकसि खंभते नाथ निरंतर अपनो राखि लियो । बहुत शासना दई प्रह्लादहिं ताहि निशंक कियो । मृतक भये सब सखा जिवाये विप जल जाइ पियो । सूरदास प्रभु भक्तबछल हैं उपमा कौन कियो ॥ २३ ॥ राग विलावल ॥ कहा कमी जाके राम धनी । मनसानाथ मनोरथ पूरण सुखनिधान जाको मौज घनी ॥ अर्थ धर्म अरु काम मोक्ष फल चार पदारथ देत छनी । इन्द्र समान जाके हैं सेवक मो वपुरेकी कहा गनी ॥ कहा कृपणकी माया कितनी करत फिरत अपनी अपनी । खाइ न सकै खरच नहिं जानैं ज्यों भुअंग शिर रहत मनी । आनँद मगन राम गुण गावै दुख संताप की काटि तनी ॥ सूर कहत जे भजत रामको तिनसों हरि सों सदा बनी ॥ २४ ॥ हरिजूके जनकी अति ठकुराई । महाराज ऋषिवर सुर नर मुनि देखत रहे लजाई ॥ निरभय राज ताहीकोदीनो लागनि मनानि उछाहू । काम क्रोध मद लोभ मोह मिलि भये चोरते साहू ॥ दृढ विश्वास कियो सिंहासन तापर बैठ्यो भूप । हरि जस विमल छत्र शोभित शिर राजत परम अनूप ॥ हरिपद पंकज प्रजाप्रेम वश ताहीके रँगराते । मंत्री ज्ञान न अवसर पावै कहत न बनै सकाते ॥ अर्थ धर्म दोऊ रहे वहै दुरि काम मोक्ष शिर नायो । विनय विवेक विचित्र पौरिया समय न काहू पायो ॥ अष्टमहो निधि आगे ठाढी कर जोरे उर लीने । छरीदार वैगर विनोदी छिरकि वाहिये कीने ॥ कायर काल कछू नहिं व्यापै या इस रीति हि जानै । सूरदास नर तौ जाने जो गुरु प्रसाद पहिचानै॥२५॥माया वर्णन । राग केदारा ॥ विनती सुनो दीनकी चित्त दै कैसे तव गुण गावै । माया नटिनि लकुटि करलीने कोटिक नाच नचावै ॥ दर दर लोभ लागि लै डोलति नाना स्वांग करावै । तुमसों कपट करावति प्रभु जू मेरी बुद्धि भ्रमावै ॥ मन अभिलाप तरंगनि करि करि मिथ्या निशा जगावै । सोवत स्वप्ने में ज्यों सम्पति त्यों दिखाय बौरावै ॥ महा मोहिनी मोह आत्मा मन करि अवहि लगावै । ज्यों दूती परवधू भोरिकै लै पर पुरुप दिखावै ॥ मेरे तो तुमहीं पति तुम गति तुम समान को पावै । सूरदास प्रभु तुमरी कृपा बिनु को मों दुख बिसरावै॥२६॥ राग सोरठ बिनै कासों कहों दीनबन्धो । जन्मकृत अकृत चकृत चित्त चरन सरन राखि दयासिंधो ॥ द्विज पतित मतिहीन गनिका गुन लौलीन करत अघ खीन पूतना प्रहारे । सकृत निज हरि नाम निज लियो अवशि कर दूरि करि को कौ न तारे ॥ ध्रुव तेइ थापि थिर प्रहलाद परतीत करि हिरन कश्यप उर नख विदारे । मानि गज भरि भेंटि तनकी पीर द्रुपद कन्या धरन धीर लज्या निवारे ॥ रावन मदअन्ध और नृप जरासंध किये निरबंध क्रोध वर तुल्यकारे त्रैलोक जस रह्यो यहै सब श्रुति कह्यो सोही मैं दृष्टि गह्यो शैलधारे ॥ अगिनत विक्रम शिव विरंचि भ्रमत भ्रम सकलमुनि जन अगम लोक पारे । सूर कल्यान प्रभु राखि सनमान अब देहि निज दान कलिमल ताप हारे॥२७॥ विनती करत मरत हौं लाज।नख सिखलौं मेरी यह देही है पापकी जहाज ॥ और पतित आवत न आंखितर देखत अपनो साज । तीनो पन भरि और निबाह्यो तऊ न आयो बाज॥ पाछे भयो न आगे हैहै सब पति तन सरताजै।नरकौ भज्यो नाम सुनि मेरो पीठिदई यमराजै ॥ अबलौं नान्हे रून्हे तारयो ते सब वृथा अकाजै । सांचे विरदुसूरके तारत लोकन लोक अवाजै ॥२८॥ हरि तेरी

माया कौन बिगोयो । सौ योजन मर्याद सिंधु की पल में राम विलोयो ॥ नारद मगन भये माया में ज्ञान बुद्धि बल खोयो । साठ पुत्र अरु द्वादश कन्या कंठ लगाये जोयो[1] ॥ शंकर को चित हरयो कामिनी सेज छोडि भुव सोयो । जारि मोहनी आढ आढ कियो तब नख शिखते रोयो ॥ सौ भैया राजा दुर्योधन पल मों गरद समोयो । सूरज दास कांच अरु कंचन एकहि धगा परोयो ॥२९॥ राग सारंग तुम्हरी माया महाबली जिन जग बश कीनो । नेकु चितै मुसुकाइ सबन को मन हरि लीनो । कछु कुल धर्म न जानई वाके रूप सकल जग राच्यो । बिनु देखे बिनहीं सुने ठगत न कोऊ बाच्यो ॥ सुनि याके उत्पातते शुक सनकादिक भागे । लोक लाज सब छुटि गई काम क्रोध मद जागे ॥ अकथ कथा याकी हरी कहि कहत न आई । छैलनके सँग यो फिरै जैसे तनु सँग छाई ॥ इहि विधि इन डहके सबै जल थल जिय जेते । चतुर शिरोमणि नंदके अरु कहा कहां केते ॥ पहिरे राती चूनरी शिर श्वेत उपरना सोहै कटि लहँगा लीलो बन्यो नीको जो देखि न मोहै॥ चोली चतुरानन ठग्यो अमर उपरना राते । अतरौटा अवलोकि कै सब असुर महा मद माते ॥ योग युगति बिसरी सबै उठि धाए सँग लागे । नेक दृष्टि तहँ परि गई शिव शिर टोना लागे ॥ बहुत कहां लौं वर्णियो पर पुरुष न उबरन पावै । भरि सोवैं सुखनींद में तहां जाइ जगावै ॥ एकनि को दरशन ठगै एकनि सँग सोवै । एकनि लै मन्दिर चढै इक विरचि बिगोवै ॥ यहि लाजनि मरिए सदा सब कहत तुमारी । सूरश्याम यहि बरजिकै मेटहु कुल गारी ॥ ३० ॥ राग विहागरा ॥ हरि तेरो भजन कियो न जाइ । कहा कंहूं तेरी प्रबल माया देति लहर बहाइ ॥ जबै आऊं साधु संगति कछुक मन ठहराइ । ज्यों गयंद अन्हाइ सरिता बहुरि बहै सुभाइ ॥ वेष धरि धरि हरयो परधन साधु साधु कहाइ । जैसे नटुवा लोभ कारण करत स्वांग बनाइ ॥ करौं[2] यतन न भजौं तुमको कछुक मन उपजाइ । सूर हरिकी प्रबल माया देति मोहिं लुभाई[3] ॥ ३१ ॥ माधव जू मन माया बश कीनो । लाभ हानि कछु समुझत नाहीं ज्यों पतंग तनु दीनो ॥ गृह दीपक छन तेल तूल तिय सुत ज्वाला अति जोर । मैं मतिहीन मर्म नहिं जान्यौ परचौं अधिक करि दौर ॥ विवश भयों नलिनीके शुक ज्यों बिन गुन मोहिं गह्यो । मैं अज्ञान कछू नहिं समुझों परदुख पुंज सह्यो बहुतक दिवस भए या जग में भ्रमत फिरयो मतिहीन । सूरश्याम सुंदर जो सुमिरे क्यों होवै गत दीन ॥३२॥ अविद्या वर्णन । मलार ॥माधव जू यह मेरी इक गाई । अब आजु ते आपु आगे लै आइए चराई ॥ है अति हरिहाई हटकत हूं बहुत अमारग जाती । फिरति वेद वन ऊख उखारति सब दिन अरु सब राती ॥ हितकै मिलै लेहु गोकुलपति अपने गोधन मांह । सुख सोऊं सुनि वचन तुम्हारे देहु कृपा करि बांह॥निधरक रहौं सूरके स्वामी जन्म न जाऊं फेरि । मैं ममता रुचि सों रघुराई पहिले लेउँ निबेरि ॥ ३३ ॥ रागधनाश्री ॥ कितक दिन हरि सुमिरन बिनु खोये । परनिंदा रसनाके रसमें अपने पर तर बोये ॥ तेल लगाइ कियो रुचि मर्दन वस्त्रहि मलि मलि धोये। तिलक बनाय चले स्वामी ह्वै विषयिन के मुख जोये ॥ काल बलीते सब जग कंपत ब्रह्मादिक हू रोये । सूर अधम की कहौं कौन गति उदर भरे परि सोये ॥ ३४ ॥ तृष्णा वर्णन । केदारा ॥ माधव जू नेकु हटकौ गाइ । निशि वासर यह भरमति इत उत अगह गही नहिं जाय ॥ क्षुधित बहुत अघात नाहीं निगम द्रुम दल खाइ। अष्ट दश घट नीर अचवे तृषा तउ न बुझाइ ॥ छहुं रस हूं धरत आगे बहै गंध सुहाय । और अहित अभक्ष भक्षति गिरा बरणि न जाय ॥ व्योम धर नद शैल कानन

१ रोयो । २ करौं । ३ भुलाइ ।

इते चरि न अघाइ। ढीठ निठुर न डरति काहू त्रिगुण ह्वै समुहाइ॥ हेरै न खल बल दनुज मानव सुरनि शीश चढ़ाइ। रचि विरंचि मुख भौंह छबिलौं चलति चितहिं चुराइ॥ नील खुर जाके अरुन लोचन श्वेत सींग सोहाइ।दिन चतुर्दश खेत खूंदति सु यह कहा समाइ॥ नारदादि शुकादि मुनि जन थके करत उपाइ। ताहि कहु कैसे कृपानिधि सकत सूर चराइ ॥ ३५ ॥ विनती अंग। राग केदारा॥ बन्दौं चरण सरोज तुम्हारे। सुन्दर श्याम सकल दल लोचन ललित त्रिभंगी प्राणपति प्यारे॥ जे पद पद्म सदा शिवके धन सिंधुसुता उरते नहिं टारे।जे पद कमल तातारिस त्रासत मन वच क्रम प्रहलाद सँभारे। जे पद पद्म परसि जल पावन सुरसरि दरश कटत अघ भारे॥ जे पद पद्म परसि ऋषिपत्नी बलि नृग व्याध पतित बहु तारे। जे पद पद्म रमत वृन्दावन अहि शिर धरि अगणित रिपु मारे॥ जे पद पद्म परसि ब्रज भामिनि सर्वस दै सुत सदन बिसारे॥ जे पद पद्म रमत पंडव दल दूत भये सब काज सँवारे। सूरदास तेई पद पंकज त्रिविध ताप दुख हरन हमारे ॥ ३६ ॥ ॥ धनाश्री ॥ हरि जू तुमते कहा न होई। रंक सुदामा कियो इन्द्र सम पांडव हित कौरव दल खोई॥ पतित अजामिल दासी कुबिजा तिनहूंके कलिमल सब धोई। बोलै गूँग पंगु गिरि लंघै अरु आवै अंधा जग जोई॥ बालक मृतक जिवाय दिये द्विज जो आये दरबारे रोई। सूरदास प्रभु इच्छा पूरण श्री गुपाल सुमिरत सब कोई ॥३७॥ राग सोरठ ॥ अबके राखिलेहु भगवान। हम अनाथ बैठे द्रुम डरिया पारधि सांधे बान॥ जाके डर भाज्यो चाहत है ऊपर ढुक्यो सचान। दुवौ भाँति दुख भयो आनि यह कौन उबारै प्रान॥ सुमिरतहीं अति डस्यो पारधी कर छूटे संधान। सूरदास शर लग्यो सचानहिं जय जय कृपानिधान॥ ३८॥ राग बिहागरा॥ हृदय की कबहुँ न जरन घटी। बिनु गोपाल बिथा या तनुकी कैसे जात कटी॥ अपनी रुचि जितही तित खैंचति इन्द्रिय ग्राम गटी। हो तितहीं उठि चलति कपट लगि बाँधे नयन पटी॥ झूठो मन झूठी यह काया झूठी आर भटी। अरु झूठनि के वदन निहारत मारत फिरत लटी॥ दिन दिन हीन छीन भइ काया दुख जंजाल जटी॥ चिंता गई अरु भूख भुलानी नींद फिरत उचटी॥ मगन भयो माया रस लम्पट समझत नाहिं हटी। तापर मूड चढ़ी नाचति है मीचति नीच नटी॥ खैंचत स्वाद श्वान पातर ज्यों चातक रटत ठटी। सूर जलधि सिंचै करुणानिधि निज जन जरनि मिटी॥ ३९॥ ॥ राग केदारा॥ अबके नाथ मोहिं उधारि। मग नहीं भव अम्बुनिधि में कृपासिंधु मुरारि॥ नीर अति गंभीर माया लोभ लहरति रंग।लयै जाति अगाध जल में गहे ग्राह अनंग॥ मीन इन्द्रिय अतिहि काटति मोट अघ शिर भार। पग न इत उत धरन पावत उराझि मोह सिवार॥ काम क्रोध समेत तृष्णा पवन अति झकझोर। नाहिं चितवनदेत तिय सुत नाम नौका ओर॥ थक्यो वीच बिहाल विह्वल सुनो करुणा मूल। श्याम भुज गहि काढि लीजै सूर ब्रज के कूल ॥४०॥ राग सारंग॥ माधव जू मन हठि कठिन परयो। यद्यपि विद्यमान सब निरखत दुःख शरीर भरयो॥ बार बार निशि दिन अति आतुर फिरत दशो दिशि धाये। ज्यों शुक सेंवर फूल विलोकत जात नहीं बिन खाये॥ युग युग जन्म मरन अरु बिछुरन सब समुझत मति भेव। ज्यों दिनकर उलूक नहिं मानत परी आनि यह टेव॥ हौं कुचील मतिहीन सकलविधि तुम कृपालु जग जान। सूर मधुप निशि कमल

१ इत उत।

कोश वश करो कृपा दिन भान ॥ ४१ ॥ राग धनाश्री॥आछो गात अकारथ गारचो । करी न प्रीति कमल लोचन सों जन्म जुवा ज्यों हारचो । निशि दिन विषय विलासनि विलसत फूटि गई तब चारचो । अब लाग्यो पछतान पाइ दुख दीन दईको मारचो । कामी कुटिल कुचील कुदरशन कौन कृपा करि तारचौ । ताते कहत दयालु देव मुनि काहे सूर बिसारचो ॥ ४२ ॥ राग सारंग॥ माधव जू मन सब ही विधि पोच । अति उन्मत्त निरंकुश मयगज चिंता रहित अशोच । महा मूढ अज्ञान तिमिर में मग्न होत सुख मानि । तेली केर वृषभ ज्यों भरम्यों भजत न सारँग पानि। गीध्यो ढीठ हेम तस्कर ज्यों अति आतुर मतिमंद । लुब्धौ स्वाद मीन आतुर ज्यों अवलोक्यो नहिं फंद ॥ ज्वाला प्रीति प्रगट सन्मुख हटि ज्यों पतंग तनु जारचो । विषय असक्त अमित अघ व्याकुल तब हंम कछु न सँभारचो ॥ ज्यों कपि शीत हुताशन गुंजा सिमटि होत लवलीन । त्यों शठ वृंथा तजत नहिं कबहूं रहत विषय आधीन ॥ सेंवर फूल सुरँग शुक निरखत मुदित होत खग भूप । परशत चोंच तूल उघरत सुख परत दुःख के कूप ॥ और कहां लौं कहौं एक मुख या मनके कृत काज । सूर पतित तुम पतित उधारन गहो विरद की लाज ॥ ४३ ॥ मेरो मन मतिहीन गुसाँई । सब सुखनिधि पद कमल छाँडि श्रम करत श्वान की नाईं ॥ फिरत वृथा भाजन अवलोकत सूने सदन अज्ञान । तिहिं लालच कबहूं कैसेहूँ तृप्ति न पावत प्रान ॥ जहँ जहँ जात तहीं भय त्रासत आस लकुटि पदत्रान । कौर कौर कारण कुबुद्धि जड़ किते सहत अपमान ॥ तुम सर्वज्ञ सकल विधि पूरण अखिल भुवन निजनाथ । तिन्हैं छांडि यह सूर महाशठ भ्रमत भ्रमनिके साथ॥ ४४ ॥ राग गौरी ॥ करुणामय तेरी गति लखि न परै ।धर्म अधर्म अधर्म धर्म करि अकरन करन करै ॥ जय अरु विजय कर्म कहा कीनो ब्रह्म शराप दिवायो । असुर योनि ता ऊपर दीनी धर्मउ छेद करायो ॥ पिता बचन खंडे सो पापी सो प्रह्लाद हिं कीनो । निकसे खंभ बीच ते नरहरि ताहि अभयपद दीनो ॥ दान धर्म बहु कियो भानुसुत सो तुव बिमुख कहायो । वेद विरुद्ध सकल पंडवसुत सो तुम्हरो मन भायो ॥ यज्ञ करत वैरोचन को सुत वेद विमल विधि कर्मा । सो छालि बांधि पताल पठायो कौन कृपानिधि धर्मा ॥ द्विज कुल पतित अजामिल विषयी गणिका नेह लगायो । सुत हित नाम लियो नारायण सो वैकुंठ पठायो । पतिव्रता जालंधर युवती सो पतिव्रत ते टारी । दुष्ट पुंश्चली अधम सु गणिका सुवा पढावत तारी ॥ मुक्त हेतु योगी श्रम कीनो असुर विरोधहिं पावै । अविगत गति करुणामय तेरी सूर कहा कहि गावै ॥ ४५ ॥राग सारंग ॥ अविगत गति जानी न परै । मन वच अगम अगाध अगोचर केहि विधि बुधि सँचरै ॥ अति प्रचंड पौरुष बल पाये केहरि भूख मरै । बिन आशा बिन उद्यम कीने अजगर उदर भरै ॥ रीते भरै भरे पुनि ढरै चाहै फेरि भरै। कबहुँक तृण बूडै पानी में कबहूं शिला तरै ॥ बागर ते सागर करि राखै चहुँ दिशि नीर भरै। पाहन बीच कमल विकसाही जलमें अगिनि जरै ॥ राजा रंक रंक ते राजा ले शिर छत्र धरै । सूर पतित तरिजाइ तनक में जो प्रभु नेकु ढरै ॥ ४६ ॥ राग केदारा ॥ अपनी भक्ति देहु भगवान। कोटि लालच जो दिखावहुँ नाहिनै रुचि आन ॥ जरत ज्वाला गिरत गिरि ते सुकर काटत शीश। देखिसाहस सकुच मानत राखि सकत न ईश ॥ कामना करि कोपि कबहूं करत कर पशु घात । सिंह शावक जात गृह तजि इन्द्र अधिक डरात ॥ जा दिना ते जन्म पायों यहै मेरी रीति। विषय विष हठि खात नाहीं टरत करत अनीति ॥ थके किंकर यूथ यमके टारे टरत न नेक

नरक कूपनि जाइ यमपुर परचो बार अनेक। महा माचल मारिबेको सकुच नाहिन मोहिं। परचो हौं प्रण किये द्वारे लाज प्रण की तोहिं॥ नाहिने काचो कृपानिधि करौं कहा रिसाइ। सूर तबहुं न द्वार छांडै डारिहौ कढराइ॥४७॥ राग धनाश्री॥ जनके उपजत दुख किन काटत। जैसे प्रथम अषाढ के वृक्षनि खेतहर निरखि उपाटत॥ जैसे मीन किलकिला दरशत ऐसे रहो प्रभु डाटत। पुनि पाछे अघसिंधु बढत है सूर खार किन पाटत॥४८॥ राग कान्हरा॥ कीजै प्रभु अपने विरदकी लाज। महापतित कबहूं नहिं आयो नेकु तुम्हारे काज। माया सबल धाम धन वनिता बांध्यो हौं इहि साज। देखत सुनत सबै जानत हौं तऊ न आयो बाज॥ कहियत पतित बहुत तुम तारे श्रवणनि सुनी अवाज। दई न जात खार उतराई चाहत चढ़न जहाज॥ लीजै पार उतारि सूर को महाराज ब्रजराज। नई न करन कहत प्रभु तुम सों सदा गरीबनेवाज॥४९॥ राग विलावल॥ महाप्रभु तुम्हें बिरद की लाज। कृपानिधान दानि दामोदर सदा सँवारत काज। जब गज ग्राह चरण धरि राख्यो तब तुम्हें नाथ पुकारचो। तजिकै गरुड चल्यो अति आतुर पकरि चक्र कर मारचो॥ निशि निशिही ऋपि लए सहस दश दुर्वासा पग धारचो। तत्कालहिं तब प्रगट भये हरि राजा जीव उबारचो। हरनाकुश प्रह्लाद भक्तको बहुत शासना जारचो। रहि न सके नरसिंह रूप धरि गहि कर असुर पछारचो॥ दुःशासन गहि केश द्रौपदी नगन करन को लाये॥ सुमिरत ही तत्काल कृपानिधि वसन प्रवाह बढ़ाये॥ मागधपति बहु जीति महीपति कछु जिय में गर्बाए। जीत्यो जरासंध रिपु मारचो वल करि भूप छुडाए॥ महिमा अति अगाध करुणामय भक्त हेतु हितकारी। सूरदास पर करौ कृपा अब दरशन देहु मुरारी॥५०॥ राग धनाश्री॥ शरण आयेकी लाज उर धरिये। सध्यौ नहिं धर्म शील शुचि तप व्रत कछू कहा मुख लै तुम्हैं विनय करिये॥ कछू चाहौं कहौं सोचि मनमें रहौं कर्म अपने जानि त्रासआवै। यहै निज सार आधार मेरे अहै पतितपावन बिरद वेद गावै॥ जन्मते एकटक लागि आशा रही विपय विप खात नहिं तृप्ति मानी। जो छिपा छरद करि सकल संतनि तजी तासु मति मूढ़ रस प्रीति ठानी॥ पाप मारग जिते तेव कीने तिते बच्यो नहिं कोइ जहँ सुरति मेरी। सूर अवगुण भरचो आइ द्वारे परचो तकी गोपाल अब शरण तेरी॥५१॥ प्रभु मेरे गुण अवगुण न विचारो। कीजै लाज शरण आयेकी रविसुत त्रास निवारो॥ योग यज्ञ जप तप नहिं कीयो वेद विमल नहिं भाप्यो। अति रस लुब्ध श्वान जूँठनि ज्यों कहूं नहीं चित राख्यो॥ जिहि जिहि योनि फिरचो संकटवश तिहि तिहि यहै कमायो। काम क्रोध मद लोभ ग्रसित भये विपय परम विप खायो॥ जो गिरिपति मसि घोरि उदधि में लै सुरतरु निज हाथ। मम कृत दोप लिखैं बसुधा भर तऊ नहीं मित नाथ॥ कामी कुटिल कुचील कुदरशन अपराधी मति हीन। तुम समान और नहिं दूजो जाहि भजौं ह्वै दीन॥ अखिल अनंत दयालु दयानिधि अविनाशी सुखरास। भजन प्रताप नाहिं मैं जान्यो परचो मोहकी फांस॥ तुम सर्वज्ञ सबै विधि समरथ अशरण शरण मुरारि। मोह समुद्र सूर बूडत है लीजै भुजा पसारि॥५२॥ राग सारंग॥ तुम हरि सांकरेके साथी। सुनत पुकार परम आतुर ह्वै दौरि छुडायो हाथी॥ गर्भ परीक्षित रक्षा कीनी वेद उपनिपद साखी। वसन बढ़ाय द्रुपद तनयाके सभा माँझ पत राखी॥ राज रवनि गाई व्याकुल ह्वै दै दै सुतको धीरक। मागध हति राजा सब छोरे ऐसे प्रभु परपीरक॥ कपट स्वरूप धरचो जब कोकिल नृप प्रतीति करि मानी। कठिन परी तबहीं तुम प्रगटे रिपु हति सब सुखदानी॥ ऐसे कहौं कहां लौं

गुण गण लिखत अंत नहिं पइयै। कृपासिंधु उनहीके लेखे मम लज्जा निर्वहिये॥ सूर तुम्हारी ऐसी निबही सकटके तुम साथी। ज्यौं जानो त्यों करों दीनकी बात सकल तुम हाथी॥ ९३॥ तुम विनु सांकरे को काको। तुम बिनु दीनदयालु देवमणि नाम लेउँ धौं ताको॥ गर्भ परीक्षित रक्षा कीनी हुतो नहीं वश ताको। मेटी पीर परम पुरुषोत्तम दुख मेट्यो दोउ धांको॥ हा करुणामय कुंजर टेरयो रह्यो नहीं बल जाको। लागि पुकार तुरत छुटकायो काट्यो बंधन वाको॥ अंबरीषको शाप देन गयो बहुरि पठायो ताको। उलटी गाढ़ परी दुर्वासा दहत सुदर्शन जाको। निधरक ह्वै पंडवसुत डोलैं हुतो नहीं डर काको। चारों वेद चतुर्मुख ब्रह्मा यश गावतहैं ताको। छोरी बंदि बिदा करि राजा राजा होइ कि रांको। जरासंधको जोर उधेरयो फारि कियो द्वै फांको॥ सभा माँझ द्रौपदी पति राखी पति जानै गुन जाको। बसन ओट करि कोट विश्वंभर परन न पायो झांको॥ भीर परे भीषम प्रण राख्यो अर्जुनको रथ हाँको। रथते उतर चक्र कर लीनो भक्त बछल प्रण ताको॥ गोपीनाथ सूरको स्वामी है समुद्र करुणाको। नरहरि हरि हरनाकुश मारयो काम परयो हो बांको॥ ९४॥ राग कान्हरा॥ तुम्हरी कृपा गुपाल गुसांई मैं अपने अज्ञान न जानत। उपजत दोष नयन नहिं सूझत रविकी किरनि उलूक न मानत॥ सब सुखनिधि हरि नाम महातम पायोहै नाहिन पहिंचानत। परम कुबुद्धि तुच्छ रस लोभी कौड़ी बदले मगरज छानत॥ शिवको धन संतनको सर्बस महिमा वेद पुराण बखानत। इते मान यह सूर महाशठ हरि नग वदलि विषयखरि आनत॥ ९५॥ राग विलावल॥ अपुने जान मैं बहुत करी। कौन भांति हरि कृपा तुम्हारी सो स्वामी समुझी न परी॥ दूरि गयो दरशनके ताईं व्यापक प्रभुता सब बिसरी। मनसा वाचा कर्म अगोचर सो मूरति नाहिं नैन धरी॥ गुणबिनु गुणी स्वरूप रूप बिनु नाम लेत श्री श्याम हरी। कृपासिंधु अपराध अपरमित क्षमो सूरते सब बिगरी॥ ९६॥ तुम गोपाल मोसों बहुत करी। नर देही दीनी सुमिरनको मो पापीते कछु न सरी॥ गर्भवास अति त्रास अधो मुख तहां न मेरी सुधि बिसरी। पावक जठर जरन नहिं दीनों कंचन सी मेरी देह धरी॥ जगमें जन्मि पाप बहु कीने आदि अंत लौं सब बिगरी। सूर पतित तुम पतित उधारन अपने विरद कि लाज धरी॥ ९७॥ राग धनाश्री॥ माधवजू जो जनते बिगरै। तउ कृपालु करुणामय केशव प्रभु नहिं जीय धरै॥ जैसे जननि जठर अंतगर्त सुत अपराध करै। तउ पुनि जतन करै अरु पोषै निकसे अंक भरै॥ यद्यपि मलय वृक्ष जड काटत कर कुठार पकरै। तऊ सुभाव सुगंध सुशीतल रिपु तनु ताप हरै॥ ज्यों हल गहि धर धरत कृपी बल वारि बीज बिथुरै। सहि सन्मुख त्यों शीत उष्णको सोई सुफल करै॥ द्विज रसना जो दुखित होइ बहु तौ रिस कहाकरै। यद्यपि अंग विभंग होतहै लै समीप सँचरै॥ कारण करण दयालु दयानिधि निज भय दीन डरै। इहि कलिकाल व्याल मुख ग्रासित सूर शरन उबरै॥ ९८॥ राग कान्हरा॥ दीनानाथ अब वार तुम्हारी। पतित उधारन विरद जानिकै बिगरी लेहु सँवारी॥ बालापन खेलतही खोयो युवा विषय रस माते। वृद्ध भये सुधि प्रगटी मोको दुखित पुकारत ताते॥ सुतनि तज्यो तिय तज्यो भ्रात तजि तन त्वच भई जु न्यारी। श्रवण न सुनत चरण गति थाकी नैन भये जलधारी॥ पलित केश कफ कंठ विरोध्यौ कल न परी दिन राती। माया मोह न छाडै तृष्णा ए दोउ दुख दाती॥ अब या व्यथा दूरि करिबेको और न समरथ कोई। सूरदास प्रभु करुणा सागर तुमते होइ सु होई॥ ९९॥ राग आसावरी॥ पतित पावन जानि शरन आयो। उदधि संसार शुभ

नाम नौका तरन अटल स्थान निज निगम गायो ॥ व्याध अरु गीध गणिका अजामेल द्विज चरण गौतमनारि परश पायो । अंत औसर अर्ध नाम उच्चार करि सुनत गज ग्राहते तुम छुड़ायो ॥ अबल प्रह्लाद बलदैत्य सुखही वचत दास ध्रुव चरण चित शीश नायो । पांडुसुत विपत मोचन महादास लखि द्रौपदी चीर नाना बढ़ायो ॥ भक्तवत्सल कृपानाथ अशरण शरण भार भूतल हरन यश सुहायो । सूर प्रभु चरण चित चेत चेतन करत ब्रह्म शिव शुक आदि शेष गायो ॥ ६० ॥ राग आसावरी ॥ श्रीनाथ शारंगधर कृपाकर दीनपर डरत भव त्रासते राखिलीजै । नाहिं जप नाहिं तप नाहिं सुमिरन भक्ति शरण आयेनकी लाज कीजै ॥ जीव जलधर जिते भेष धरि धरि तिते रचे लघु दीर्घ बहु अचलभोर । मुशल मुद्गर हनत त्रिविध कर्मनि गनत मोहिं दंडत धर्म दूत हारे ॥ वृषभ केशी मल्ल धेनुक अरु पूतना रजक चाणूरसे दुष्ट तारे । अजामिल गणिक ते कहा मैं घट कियो तुम जु अब सूर चितते बिसारे ॥ ६१ ॥ कबहुँ नाहीं गहर कियो । सदा स्वभाव सुलभ सुमिर न वश भक्तनि अभय दियो ॥ गाय गोप गोपी हित कारण गिरि कर कमल लियो ॥ अघ अरिष्ट केशी कालीनथ दावानलहिं पियो ॥ कंस वंश वधि जरासंध हति गुरुसुत आनि दियो । कर्षतं सभा द्रुपदतनयाको अंबर अक्षय कियो ॥ सूर श्याम सर्वज्ञ कृपानिधि करुणा मृदुल हियो । काकी शरण जाउँ करुणामय नाहिन और बियो ॥ ६२ ॥ राग सारंग ॥ ताते तुमरो भरोसो आवै । दीनानाथ पतित पावन यश वेद उपनिषद गावै ॥ जो तुम कहौ कौन खल तारचो तौ हौं बोलों साखी । पुत्र हेतु हरिलोक गयो द्विज सक्यो न कोऊ राखी ॥ गणिका किये कौन व्रत संयम शुक हित नाम पढ़ावै । मनसा करि सुमरचो गज बपुरो ग्राह परमगति पावै ॥ बकी जु गई घोष में छल करि यशुदाकी गति दीनी । और कहत श्रुति वृषभ व्याधकी जैसी गति तुम कीनी ॥ द्रुपदसुताहि दुष्ट दुर्योधन सभा माहिं पकरावै । ऐसो कौन और करुणामय वसन प्रवाह बहावै ॥ दुखित जानिकै सुत कुबेरके तिहि लगि आप बँधावै । ऐसो को ठाकुर जन कारन दुख सहि भलो मनावै ॥ दुर्वासा दुर्योधन पठयो पंडव अहित विचारी । सुमिरत तीनों लोक अघाए न्हात भज्यो कुश डारी । देवराज मख भंग जानिकै बरस्यो व्रजपर आई । सूर श्याम राखे सब निज कर गिरि लै भए सहाई ॥ ६३ ॥ राग धनाश्री ॥ दीनको दयालु सुन्यो अभय दान दाता । सांची बिरुदावलि तुम जगतके पितु माता ॥ व्याध गीध गणिका गज इहिमें को ज्ञाता । सुमिरत तुम तबहिं आये त्रिभुवन विख्याता ॥ केशी कंस दुष्ट मारि मुष्टिक कियो घाता । अपने ध्रुव राज काज केतक यह बाता ॥ तीनलोक विभव दियो तंदुलके खाता । सर्वसु प्रभु रीझि देत तुलसीके पाता ॥ गौतमकी नारि तारी नेकु परश लाता । और कुटिल तारि तारि काहे गर्वाता ॥ माँगत है सूर त्याग जिहि तन मन राता । अपुनी प्रभु भक्ति देहु जासों तुम नाता॥६४॥ राग मारू ॥ सो कहा जु मैं न कियो जो पैं सोइ सोई चित धरि हौ । पतित पावन विरद सांच कौन भांति करिहौ ॥ जब ते जग जन्म लियो जीव है कहायो। तबते छुट अवगुण इक नाम न कहि आयो ॥ साधुनिंदक स्वाद लंपट कपटी गुरु द्रोही । जितने अपराध जगत लागत सब मोही ॥ गृह गृह गृह द्वार फिरचो तुमको प्रभु छाँडे । अंध अंध टेक चलै क्यों न परे गाड़े ॥ कमलनैन करुणामय सकल अंतर्यामी । विनय कहा करै सूर क्रूर कुटिल कामी ॥ ६५ ॥ राग सारंग ॥ कौन गति करिहौ मेरी नाथ । हौंतो कुटिल कुचील कुदरशन रहत विषयके साथ ॥ दिन बीतत

मायाके लालच कुल कुटुंब के हेत। सारी रैन नींद भरि सोवत जैसे पशू अचेत॥ कागज धरनि करैं द्रुम लेखनि जल सायर मसि घोर। लिखैं गणेश जन्म भर मम कृत तऊ दोष नहिं ओर। गज गणिका अरु विप्र अजामिल अगनित अधम उधारे। अपथ चाल अपराध करे मैं तिनहूं ते अति भारे॥ लिखि लिखि मम अपराध जन्मके चित्रगुप्त अकुलाये। भृगु ऋषि आदि सुनत चकृत भये यम सुनि शीश डुलाये॥ परम पुनीत पवित्र कृपानिधि पावन नाम कहायो। सूर पतित जब सुन्यो बिरद यह तब धीरज मन आयो॥ ६६॥ राग केदारा॥ मेरी कौन गति ब्रजनाथ। भजन विमुख अरु शरण नाहीं फिरत विषयिन साथ॥ हौं पतित अपराध पूरण जरयो कर्म विकार। काम क्रोध रु लोभ चितवन नाथ तुम्हैं बिसार॥ उचित अपनी कृपा करिहौ तबै तौ बनिजाइ। सोइ करहु जो चरण सेवै सूर जूंठनि खाइ॥ ६७॥ राग धनाश्री॥ सोइ कछु कीजै दीनदयाल। जाते जन छिन चरण न छांडै करुणासागर भक्तरसाल॥ इन्द्रिय अजित बुद्धि विषयारत मनकी दिन दिन उलटी चाल। काम क्रोध मद लोभ महाभय अहनिश नाथ भ्रमत बेहाल॥ योग यज्ञ जप तप तीरथ व्रत इन में एको अंक न भाल। कहा करूं किहि भाँति रिझाऊं हौं तुमको सुन्दर नंदलाल॥ सुनि समरथ सर्वज्ञ कृपानिधि अशरण शरण हरण जग जाल। कृपानिधान सूरकी यह गति कासों कहै कृपण यहि काल॥ ६८॥ ॥ राग गूजरी॥ कृपा अब कीजिए बलि जाउं। नाहिं मेरे और कोऊ बलि चरण कमल विनु ठाउं॥ हौं असोच अकृत अपराधी सन्मुख होत लजाउं। तुम कृपालु करुणानिधि केशव अधम उधारन नाउँ॥ काके द्वार जाइहौं ठाढो देखत काहि सुहाउं। अशरण शरण नाम तुमरो हौं कामी कुटिल सुभाउं॥ कलँकी और मलीन बहुत मैं सेंतैमेंत बिकाउं। सूर पतित पावन पद अंबुज क्यों सो परिहरि जाउं॥ ६९॥ राग सारंग॥ दीनदयालु पतित पावन प्रभु विरद भुलावत कैसो। कहा भयो गज गणिका तारी जो जन तारो ऐसो॥ जो कबहूं नर जन्म पाइ नहिं नाम तुम्हारो लीनो। काम क्रोध मद लोभ मोह ताजि अंत नहीं चित दीनो॥ अकरम अबुध अज्ञान अवाग्या अनमारग अनरीति। जाको नाम लेत अघ उपजै सो मैं करी अनीति॥ इन्द्री रस वश भयो भ्रमत रह्यो जोइ कह्यो सो कीनो। नेम धर्म व्रत तप नहिं संयम साधु संग नहिं चीनो॥ दरश मलीन दीन दुर्बल अति तिन कैसे दुख दामी। ऐसो सूरदास जन हरिको सब अधमनि में नामी॥ ७०॥ राग देवगंधार॥ मोहिं प्रभु तुम सों होड परी। नाजानों करिहौ जु कहा तुम नागर नवल हरी॥ हुतीं जिती तितनी मति गाई सो मैं सबै करी।पावहुगे कहुँ मोमहि तारनकों जिय जक पकरी। मैं जु रहो राजीवनैन दुरि पाप पहार दुरी॥ पावहु मोहिं कहो तारन को गूढ गँभीर खरी। एक अधार साधु संगतिको रचि पचि कै सँचरी।ज्यों गज शुचि नहाइ निरमल करि पुनि रज शीश धरी॥मोको मुक्त विचारत हो प्रभु पूंछत पहर घरी।श्रम ते तुम्हैं पसीना ऐहै कति यह जकनि करी॥ सूरदास बिनती कहा बिनवै दोषनि देह भरी। अपनो बिरद सँभारहुगे तब यामें सब निबरी॥ ॥ ७१ ॥ राग धनाश्री॥ नाथ सकौ तौ मोहि उधारो। पतितनि में विख्यात पतितहौं पावन नाम तुम्हारो॥ बडे पतित पासंगहु नाहीं अजामिल कौन विचारो। भाजै नरक नाम सुनि मेरो यमनि दियो हठ तारो॥ क्षुद्र पतित तुम तारि रमापति जिय जु करौ जिन गारो। सूर पतित को ठौर कहूं नहिं है हरि नाम सहारो॥ ७२॥ तुम कब मोसों पतित उधारयो। काहे को प्रभु विरद बुलावत बिन मसकत को तारयो॥ गीध व्याध गज गौतम की तिय उनको कहा

निहोरो । गणिका तरी आपनी करनी नाम भयो प्रभु तोरों ॥ अजामील तो विप्र तुम्हारो हुतो पुरातन दास । नेक चूक ते यह गति कीनी फिर वैकुंठहि वास ॥ पतित जानि तुम सब जन तारे रह्यो न काहू खोट । तौ जानौं जो मोहिं तारिहौ सूर कूर कवि ठोट ॥ ७३ ॥ पतित पावन हरि बिरद तुम्हारो कौने नाम धरचो । हौंतौ दीन दुखित अति दुर्बल द्वारे रटत परचो ॥ चारि पदारथ दए सुदामा तंदुल भेंट धरचो । द्रुपदसुताकी तुम पति राखी अंबर दान करचो ॥ संदीपन सुत तुम प्रभु दीने विद्या पाठ करचो । सूर कि बिरियां निठुर भये प्रभु मोते कछु न सरचो ॥ ॥ ७४ ॥ राग धनाश्री ॥ आजु हौं एक एक करि टरिहौं । कै हमहीं कै तुमहीं माधव अपुन भरोसे लरिहौं ॥ हौं तो पतित सात पीढिनको पतितै ह्वै निस्तरिहौं । अब हौं उघरि नचन चाहत हौं तुम्हैं बिरद बिनु करिहौं ॥ कत अपनी परतीत नशावत मैं पायों हरि हीरा । सूर पतित तबहीं लैं उठिहै जब हँसि देहौ बीरा ॥ ७५ ॥ राग नट ॥ कहावत ऐसे दानी । चारि पदारथ दये सुदामहिं अरु गुरुको सुत आनी ॥ रावणके दश मस्तक छेदे शर गहि शारँग पानी । विभिपनको तुम लंका दीनी पूर बली पहिचानी ॥ विप्र सुदामा कियो अयाची प्रीति पुरातन जानी । सूरदास सों कहा निठुर भए नैनन हूकी हानी ॥ ७६ ॥ राग धनाश्री ॥ मोसों बात सकुच तजि कहिये । कत कत व्रीडत कोउ और बतावहु वाहीके ह्वै रहिये ॥ कैधौं तुम पावन प्रभु नाहीं कै कछु मोमैं भोलो । तौहौं अपनी फेरि सुधारों वचन एक जो बोलो ॥ तीनों पनमें और निबाही इहै स्वांगको काछे । सूरदासको यहै बडो दुख परत सबनके पाछे ॥ ७७ ॥ राग सारंग ॥ प्रभुहौं बडी बेरको ठाढो । और पतित तुम जैसे तारे तिनहीं में लिखि काढो ॥ युग युग यहै बिरद चलि आयो टेरि कहत हौं याते । मरियत लाज पांच पतितन में होब कहौं घटकाते ॥ कै प्रभु हार मानिकै बैठहु कै करो बिरद सही । सूर पतित जो झूठ कहत है देखौ खोजि वही ॥ ७८ ॥ प्रभु हौं सब पतितन को टीको । और पतित सब दिवस चारिके हौं जन्मांतरहीको ॥ बधिक अजामिल गणिका तारी और पूत-नाहीको । मोहिं छांडि तुम और उधारे मिटै शूल क्यों जीको ॥ कोउ न समरथ अब करिबेको खैंचि कहतहौं लीको । मरियत लाज सूर पतितनिमें हमहूंते को नीको ॥ ७९ ॥ हौंतौ पतित शिरोमणि माधो । अजामिल बातनहीं तारचो सुन्यों जो मोते आधो ॥ कै प्रभु हार मानिकै बैठहु कै अबहीं निस्तारो । सूर पतितको और ठौर नहिं है हरि नाम सहारो ॥ ८० ॥ माधो जू और न मोते पापी । घातक कुटिल चवाई कपटी महा क्रूर संतापी ॥ लंपट धूत पूत दमरीको विपय जाप को जापी ॥ भक्ष अभक्ष अपेय पान करि कबहुँन मनसा धापी । कामी विवश कामिनीके रस लोभ लालसा थापी । मन क्रम वचन दुसह सबहिन सों कटुक बचन आलापी ॥ जेतिक अधम उधारे तुम प्रभु तिनकी गति मैं नापी । सागर सूर भरचो विकार जल पतित अजामिल बापी ॥ ८१ ॥ राग कान्हरा ॥ हरिहौं सब पतितन पतितेश । और न सर करिबेको दूजो महामोह मम देश ॥ आशाके सिंहासन बैठ्यो दंभ छत्र शिरतान्यो । अपयश अति नकीब कहि टेरचो सब शिर आय समान्यो ॥ मंत्री काम क्रोध निज दोऊ अपनी अपनी रीति । दुबिधा दुंद-होत निशि बासर उपजावति विपरीति ॥ मोदी लोभ खवास मोहके द्वारपाल अहँकार । पाठ अहं ममताहै मेरी मायाको अधिकार ॥ सेवक तृष्णा भ्रमत टहल हित लहत न छिन विश्राम । अनाचार सेवक सों मिलिकै करत चवावन काम ॥ बाज मनोरथ गर्व मत्त गज असत कुमति रथ सूत । पाइक मन बानैत अधीरज सदा दुष्ट मति दूत ॥ गढ़ तजि भये नरकपति मोसों दीने रहत किंवार । सेना

साथ बहुत भाँतिनकी कीने पाप अपार ॥ निंदा जग उपहास करत मग बंदीजन यश गावत। हठ अन्याय अधर्म सूर नित नौबत द्वार बजावत ॥८२॥ राग धनाश्री ॥ सांचो सो लिख हार कहावै। काया ग्राम मसाहत करिकै जमा बांधि ठहरावै । मन यह तो करि कैद अपनेमें ज्ञान जहतिया लावै मांडि मांडि खरिहान क्रोधको पोता भजन भरावै ॥ बट्टा काट कसूर भर्म को फरद तलै लै डारै । निश्चय एक असल पै राखै टरै न कबहूं टारै ॥ करि अवारजा प्रेम प्रीतिको असल तहां खतियावै । दूजी करद दूरि करि है यत नैकत तामें आवै ॥ मुजमिल जोरै ध्यान कुछ का हरिसों तहँ लै राखे । निर्भय रूपै लोभ छाँडि कै सोई वारिज राखे ॥ जमा खर्च नीके करि राखै लेखा समुझि बतावै । सूर आप गुजरान मुहासिब लै जबाब पहुँचावै ॥ ८३ ॥ प्रभु जु मैं ऐसो अमल कमायो । साबिक जमा हुती जो जोरी मिनजालिक तल लायो ॥ वासिलबाकी स्याहा मुजमिल सब अधर्म की बाकी । चित्रगुप्त होत मुस्तौफी शरण गहूं मैं काकी ॥ पांच मुहर्रिर साथ करि दीने तिनकी बडी विपरीत । जिम्मे उनके मांगै मोते यह तौ बडी अनीत ॥ पांच पचीस साथ अगवानी सब मिलि काज बिगारे । सुनी तगीरी मेरी बिसरि गई सुधि मो तजि भये नियारे ॥ वट्ठो तुम्हार बरामद हू को लिखि कीनो है साफ । सूरदासकी यहै बीनती दस्तक कीजै माफ ॥ ८४ ॥ राग सारंग प्रभु हों सब पतितनको राजा । निंदा परमुख पूरि रह्यो जग यह निसान तब बाजा ॥ तृष्णा देश रु सुभट मनोरथ इन्द्रिय खड्ग हमारे । मंत्री काम कुमति दैवै को क्रोध रहत प्रतिहारे ॥ गज अहंकार बढ्यो दिग विजयी लोभ छत्र करि शीश । फौज असत संगतिकी मेरी ऐसो हौं मैं ईश ॥ मोह मई बंदी गुण गावत मागध दोष अपार । सूर पापको गढ दृढ कीनो मुहकमलाइ किंवार ॥ ८५ ॥ राग धनाश्री ॥ हरि हौं सब पतितनको राव । को करि सकै बराबरि मेरी सो तौ मोहिं वताव ॥ व्याध गीध अरु पतित पूतना तिनमें बढ़ि जो और । तिनमें अजामेल गणिकापति उनमें मैं शिरमौर ॥ जहँ तहँ सुनियत यहै बडाई मो समान नहिं आन । अब रहे आजु कालिके राजा मैं तिनमें सुलतान ॥ अबलौं तौ तुम बिरद बुलायो भई न मोसों भेंट । तजौं बिरद कै मोहिं उधारो सूर गही कसि फेंट ॥ ८६ ॥ राग सारंग ॥ हरि हौं सब पतितनको नायक । को करि सकै बराबरि मेरी और नहीं कोउ लायक ॥ जैसो अजामेलको दीनो सो पायौ लिखि पाऊं । तो विश्वास होइ मन मेरे औरो पतित बुलाऊं ॥ यह मारग चौगुनो चलाऊं तो पूरो व्यापारी । वचन मानि लै चलौ गाँठि दै पाऊं सुख अति भारी ॥ पतित उधारन नाम सुन्यौ जब शरन गही तकि दौर । अब कै तौ अपनी लै आयों बेर बहुर की और ॥ होडा होडी मनहि भावते किये पाप भरि पेट । सबै पतित पाँइन तर डारौ इहै हमारी भेंट ॥ वहुत भरोसो जानि तुम्हारो अघ कीनो भरि भाडो । लीजै बेगि निबेरि तुरंतहि सूर पतित को टाडो ॥ ८७ ॥ राग धनाश्री ॥ मोसों पतित न और गुसाँई।अवगुण मोते अजहुँ न छूटत भली तजी अब ताँई॥जन्म जन्म योंही भ्रमि आयो कपि गुंजा की नाँई ॥ परशत शीत जात नहिं क्योंहू लैलै निकट बनाई ॥ मोह्यो जाइ कनक कामिनि सों ममता मोह बढ़ाई । जिह्वा स्वाद मीन ज्यों उरझ्यो सूझत नहिं फंदाई ॥सोवत मुदित भयो स्वप्ने में पाई निधि जु पराई । जागि पर्यो कछु हाथ न आयो यह जगकी प्रभुताई ॥ परशे नाहिं चरण गिरिधरके बहुत करी अन्याई । सूर पतितको ठौर और नहिं राखि लेहु शरणाई ॥ ८८ ॥ हरि हौं महा पतित द्रोही अभिमानी । परमारथसों पीठि विषयरस भाव भगति नहिं जानी॥ निशि दिन दुखित मनोरथ करि करि पावत हूं तृष्णा न बुझानी। शिर

पर काल नीच नहिं चितवत आयु घटत ज्यौं अँजुरी पानी ॥ विमुखनि सों रति जोरत दिन प्रति साधुन सों न कहूं पहिचानी । तिहि बिनु रहत नहीं निशि बासर जिहि सब दिन रस विषय बखानी। माया मोह लोभं नहिं जाने ऐसो वृन्दावन रजधानी । नवल किशोर जलद तनु सुन्दर बिसरयो सूर सकल सुखदानी ॥ ८९ ॥ माधव जू मोहिं काहेकी लाज । जन्म जन्म योहीं भरमान्यो अभिमानी बे काज ॥ जल थल जीव जिते जग जीवन निरखत दुखित भये देव । गुण अवगुणकी समुझि न शंका परी आइ यह टेव ॥ सर्वस खाइ रह्यो घर बैठ्यो करयो न कछू विचारी । सूर श्वानके पालनहारे आवत है नित गारी ॥ ९० ॥ राग सारंग ॥ माधवजू सो अपराधी हौं । जन्म पाइ कछु भलो न कीनो कहो सु क्यों निबहौं ॥ सबसों रीति कहत यमपुरकी गज पिपीलिकालौं ॥ पाप पुण्यको फल दुख सुख है भोग करौ जुइगों । मोको पंथ बताओ सोई नरक कि स्वर्ग लहौं । काके बल हौं तरौं गुसांई कछु न भक्ति मो रहौं ॥ हँसि बोले जगदीश जगतपति बात तुम्हारी यों । करुणासिंधु कृपालु कृपानिधि भजो शरण को क्यों । बात सुने ते बहुत हँसोगे चरण कमल की सौं । मेरी देह छुटत यम पठये जितक दूत घर मों ॥ लैलै सब हथियार आपुने सान धराये त्यों । जिनके दारुण दरश देखिके पतित करत म्यों म्यों ॥ दांत चबात चले मधुपुरते धाम हमारे को । ढूँढि फिरे घर कोउ न बतावै श्वपच कोरिया लों ॥ रिस भरि गए परम किंकर तब पकरयो छुटि न सकों । लै लै फिरे नगरमें घर घर जहां मृतक हौं हौं ॥ ता रिसते मोहिं बहुतक मारयो कहँ लौं बराणि कहौं । हाय हाय मैं परयो पुकारयो राम नाम न बकौं ॥ ताल पखावज चले बजावत समधी सोभोकों । सूरदासकी भली बनीहै गजी गई अरु पों ॥ ९१॥ राग कान्हरा थोरो जीवन बहुत न भारो । कियो न साधु समागम कबहूं लियो न नाम तुमारो ॥ अति उन्मत्त मोह माया वश नहिं कछु बात विचारो । करत उपाव न पूंछत काहू गनत न खाटो खारो ॥ इन्द्री स्वाद विवश निशि वासर आप अपुनपो हारयो । जल उनमत्त मीन ज्यों बपुरो पांउ कुल्हारो मारयो ॥ बांधी मोट पसारि त्रिविध गुण कछू न बीच उतारयो । देख्यो सूर विचारि शीश परि तब तुम शरण पुकारयो ॥ ९२ ॥ राग धनाश्री अब मैं नाच्यों बहुत गुपाल । काम क्रोध को पहिरि चोलना कंठ विषयकी माल ॥ महामोहको नेपुर बाजत निंदा शब्द रसाल । भरम भये मन भयो पखावज चलत कुसंगत चाल ॥ तृष्णा नाद करत घट भीतर नाना विधि दे ताल । मायाको कटि फेटा बांध्यो लोभ तिलक दियो भाल ॥ कोटिक कला कांछि देखराई जल थल सुधि नहिं काल । सूरदास की सबै अविद्या दूरि करो नँदलाल ॥ ९३ ॥ ऐसी करत अनेक जन्म गये मन संतोप न आयो । दिन दिन अधिक दुराशा लाग्यो सकल लोक भरमायो ॥ सुनि सुनि स्वर्ग रसातल भूतल तहीं तहीं उठि धायो । काम क्रोध मद लोभ अग्नि ते काहु न जरत बुझायो ॥ स्त्रक चंदन वनिता विनोद सुख यह जर जरत बितायो । मैं अज्ञान अकुलाइ अधिक लै जरत मांझ घृत नायो । भ्रमि भ्रमि हौं हारयो हिय अपने देखि अनल जग छायो । सूरदास प्रभु तुम्हरि कृपा बिनु कैसे जात नशायो ॥ ९४ ॥ वादिहि जनम गयो सिराइ । हरि सुमिरन नहिं गुरुकी सेवा मधुबन वस्यो न जाइ ॥ अबकी बेर मनुष्य देह धरि भजो नँ आन उपाइ । भटकत फिरयो श्वान की नाईं नेक जूंठ के चाइ ॥ कबहुँ न रिझये लाल गिरिधरन विमल विमल यश गाइ ॥ प्रेम सहित पग बांधि घूंघुरु सक्यों न अंग नचाइ ॥ श्री भागवत सुन्यो नहिं श्रवणनि नेकहुँ रुचि उपजाइ । अनन्य भक्ति नरहरि भक्तनिके कबहुँ न धोए

पाइ ॥ कहा कहौं जो अद्भुत है वह कैसे कहूँ बनाइ। भव अंभोधि नाम निज नौका सूरहिं लेउ चढाइ॥ ९५॥ राग गौरी॥ माधव जू तुम कत जिय बिसरचो। जानत सब अंतरकी करणी जो मैं कर्म करचो॥ पतित समूह सबै तुम तारे हुते जु लोग भरचो। हौं उनसें न्यारो करि डारचो इहि दुख जात मरचो॥ फिरि फिरि योनि अनंतानि भरम्यो अब सुख शरण परचो। इहि अवसर कत बांह छुडावत इहि डर अधिक डरचो॥ हौं पापी तुम पतित उधारन डारे हो कत देत। जो जानत यह सूर पतित नहिं तौ तारो निज हेत॥ ९६॥ राग केदारा॥ जो पै तुमही विरद बिसारचो। तो कहो कहाँ जाउँ करुणामय कृपण कर्मको मारचो॥ दीनदयालु पतितपावन यश वेद बखानत चारचो॥ सुनियत कथा पुराणनि गणिका व्याध अजामिल तारचो॥ राग द्वेष विधि अविधि अशुचि शुचि जिन प्रभु जितै सँभारचो। कियो न कहूं बिलम्ब कृपानिधि सादर सोच निवारचो॥ अगणित गुण हरि नाम तुम्हारे अजा अपुनपों धारचो। सूरदास प्रभु चितवत काहे न करत करत श्रम हारचो॥ ९७॥ राग सारंग॥ जैसे और बहुत खल तारे। चरण प्रताप भजन महिमा सुख को कहि सकै तिहारे॥ दुःखित गीध दुष्ट मति गणिका नृगै कूप उधारे। विप्र बजाइ चल्यो सुतके हित काटि महाअघ भारे॥ व्याध दुरद गौतमकी नारी कहो कौन व्रत धारें। केशी कंस कुवालिया मुष्टिक सब सुख धाम सिधारे॥ उरजनिको विष बांटि लगायो यशुमतिकी गति पाई। रजक मल्ल चाणूर दवानल दुख भंजन सुखदाई॥ नृप शिशुपाल महा पद पायो सर औसर नहिं जाने। अघ बक तृणावर्त धेनुक इति गुण गहि दोष न माने॥ पंडुवधू पटहीन सभामें कोटिन बसन पुजाए। विपति काल सुमिरत छिन भीतर तहीं तहीं उठि धाए॥ गोप ग्वाल गोसुत जल त्रासत गोवर्धन कर धारचो। संतत दीन महा अपराधी काहे सूर बिसारचो॥ ९८॥ राग केदारा॥ बहुरि की कृपाहू कहा कृपाल। विद्या मन जन दुखित जगतमें तुम प्रभु दीनदयाल॥ जीबत यांचत कनकनि निर्धन दर दर रटत बिहाल। तनु छूटे ते धर्म नहीं कछु जौं दीजै मणिमाल॥ कहा दाता जो द्रवै न दीनहिं देखि दुखित कलिकाल। सूरश्यामको कहा निहोरो चलत वेदकी चाल॥ ९९॥ कौन सुनै यह बात हमारी। समरथ और न देखों तुम बिनु कासों बिथा कहौं बनवारी॥ तुम अवगत अनाथके स्वामी दीनदयालु निकुंज बिहारी। सदा सहाय करी दासनि को जो उर धरी सोइं प्रतिपारी॥ अब केहि शरण जाउँ यादवपति राखि लेहु बलि त्रास निवारी। सूरदास चरणनिके बलि बलि कौन गुसाते कृपा बिसारी॥ १००॥ राग कल्याण॥ जैसे राखहु तैसे सहि रहौं। जानत दुख सुख सब जनके तुम मुख करि कहा कहौं॥ कबहुँक भोजन लहौं कृपानिधि कबहूं भूँख सहौं। कबहुँक चढों तुरंग महागज कबहुँक भार बहों॥ कमलनयन घनश्याम मनोहर अनुचर भयो रहौं। सूरदास प्रभु भक्त कृपानिधि तुम्हरे चरण गहौं॥ १०१॥ राग धनाश्री॥ कब लगि फिरि है दीन भयो। सुरत सरित भ्रम भँवर परचो तन मन परचत न लह्यो॥ वात चक्र तृष्णा प्रकृति मिलि हौं तृण तुच्छ गहों। उरझ्यो विवश कर्म तरु अंतर श्रम सुख शरण चरचो॥ बिनती करत डरात कृपानिधि नहीं न परत रह्यो। सूर करन न रच्यो जू निज कर सो कर नाहिं गह्यो॥ १०२॥ तेऊ चाहत कृपा तुम्हारी। जेहिके वश अनमिष अनेक गण अनुचर आज्ञाकारी॥ बहत पवन भरमत दिनकर दिन फनपति शिर न डुलावै।

दाहक गुण तजि सकत न पावक सिंधु न सलिल बहावै ॥ शिव विरंचि सुरपति समेत अब सेवत प्रभु पद चाये । जो कछु करन चहत सो कीजत करत है अति अकुलाये ॥ तुम अनादि अविगत अनंत गुण पूरण परमानंद । सूरदास पर कृपा करो प्रभु श्रीवृन्दावन चन्द ॥ १०३ ॥ राग मलार ॥ तुम तजि कौन नृपति के जाऊं । काके द्वार जाय शिर नाऊं पर हथ कहां बिकाऊं ॥ ऐसो को दाताहै समरथ जाके दए अघाऊं । अंतकाल तुमरो सुमिरन गति अनत कहूं नाहिं जाऊँ ॥ रंक अयाची कियो सुदामा दियो अभयपद ठाऊं । कामधेनु चिंतामणि दीनो कल्पवृक्ष तरु छाऊं ॥ भव समुद्र अति देखि भयानक मनमें अधिक डराऊँ । कीजै कृपा सुमिरि अपनो प्रण सूरदास बलि जाऊं ॥ १०४ ॥ राग मारू ॥ मेरी तौ गति पति तुम अंतहि दुख पाऊँ । हौं कहाइ तिहारौ अब कौनको कहाऊँ । कामधेनु छांडि कहा अजा जा दुहाऊं । हय गयंद उतारि कहा गर्दभ चढि धाऊं ॥ कंचन मणि खोलिडारि कांच गर बँधाऊं । कुंकुमको तिलक मेटि काजर मुख लाऊँ ॥ पाटंबर अंबर तजि गूदर पहिराऊँ । अंबको फल छांडि कहां सेवर को धाऊं ॥ सागरकी लहर छाँडि खार कत अन्हाऊं । सूर कूर आँधरो मैं द्वार परचो गाऊँ ॥ १०५ ॥ राग आसावरी ॥ श्याम बलराम को सदा गाऊँ । श्याम बलराम बिनु दूसरे देव को स्वप्न हू माहिं हृदय न लाऊं ॥ यहै जप यहै तप यम नियम व्रत यहै यहै मम प्रेमफल यहै पाऊँ ॥ यहै मम ध्यान यह ज्ञान सुमिरन यहै सूर प्रभु देहु हौं यहै पाऊं ॥ १०६ ॥ राग देवगंधार ॥ मेरी जिये सु असी बनी । छांडि गुपाल और जो जाचौं तो लीजै जननी॥कहा कांचको संग्रह कीजे त्याग अमोल मनी । विषको मेरु कहांलों कीजै अमृत एक कनी ॥ मन वच क्रम सतभाउ कहतहौं मेरे श्याम धनी । सूरदास प्रभु तुमरी भक्ति लगि तजी जाति अपनी ॥ १०७ ॥ मेरो मन अनत कहां सुख पावै । जैसे उडि जहाजको पक्षी फिर जहाज पर आवै ॥ कमल नैनको छांडि महातम और देव को धावै । परमगंग को छांडि पियासो दुर्मति कूप खनावै ॥ जिन मधुकर अंबुज रस चाख्यो क्यों करील फल खावै । सूरदास प्रभु कामधेनु तजि छेरी कौन दुहावै ॥ १०८ ॥ राग सारंग ॥ तुम्हारी भक्ति हमारे प्रान । छूटि गये कैसे जन जीवत ज्यों पानी बिन प्रान ॥ जैसे मगन नाद सुनि सारँग बधत वधिक तनु बान । ज्यौं चितवै शशि ओर चकोरी देखतही सुखमान ॥ जैसे कमल होत परि फूलित देखत दरशन भान । सूरदास प्रभु हरि गुण मीठे नित प्रति सुनियत कान ॥ १०९ ॥ राग धनाश्री ॥ जो हम भले बुरे तौ तेरे । तुम्हैं हमारी लाज बढाई बिनती सुन प्रभु मेरे ॥ सब तजि तुम शरणागत आयो निज कर चरण गहेरे । तुम प्रताप बल बदत न काहू निडर भये घर चेरे ॥ और देव सब रंक भिखारी त्यागे बहुत अनेरे । सूरदास प्रभु तुमरि कृपाते पायो सुख जु घनेरे ॥ ११० ॥ राग बिलावल ॥ हमे नँदनंदन मोल लिये । यमके फंद काटि मुकराए अभय अजात किये ॥ भाल तिलक श्रवणनि तुलसी दल मेटे अंक बिये । मूँडे मूड कंठ बनमाला मुद्रा चक्र दिये ॥ सब कोउ कहत गुलाम श्यामको सुनत सिरात हिये । सूरदास को ओर बडो सुख जूठनि खाइ जिये ॥१११॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविंद उर धरो । हरिकी कथा होइ जब जहां । गंगाहू चलि आवै तहां॥यमुना सिंधु सरस्वति आवै।गोदावरी बिलंब न लावै॥सर्व तीर्थको वासा तहां। सूर हरि कथा होवै जहाँ ११२॥श्रीभागवत वर्णन निमित्त ॥ राग सारंग ॥श्री मुख चारि श्लोक दिये ब्रह्मा को समुझाइ । ब्रह्मा नारदसों कहे नारद व्यास सुनाइ॥व्यास कहे शुकदेव सों द्वादश स्कंध बनाइ।सूरदास सोई कहै पद भाषा करि गाइ११३॥व्याससों शुक उत्पत्ति राग बिलावल॥

व्यास कह्यो जो शुक सों गाई। कहों सु सुनो संत चित लाई॥ व्यास पुत्र हित बहुत तप कियो। तब नारायण यह वर दियो॥ ह्वै हैं पुत्र भक्त अतिज्ञानी। जाकी जग में चलै कहानी॥ यहै हृदय हरि कियो उपाई। नारद मुनि संशय उपजाई॥ तब नारद गिरिजा पै गये। तिनसों यहि विधि पूंछत भये॥ मुंडमाल शिव ग्रीवा जैसे। मोसो वरणि सुनावो तैसे॥ उमा कही मैं तो नहिं जानी। अरु शिवहू मोसों न बखानी॥ नारद कह अब पूँछहु जाई। बिनु पूँछे नहिं देइ बताई॥ उमा जाइ शिवको शिरनाई। कह्यो सुनो बिनती सुरराई। मुंडमाल कैसे तव ग्रीवा। ताकी मोहिं बतावहु सींवा॥ शिव तब बोले वचन रसाल। उमा आहि यह सुनि मुँडमाल॥ जब जब जन्म तुम्हारो भयो। तब तब मुंडमाल मैं लयो॥ उमा कह्यो शिव तुम अविनाशी। मैं तुम्हरे चरणनकी दासी॥ मेरे हित इतनो दुख भरत। मोहिं अमर काहे नहिं करत॥ तब शिव उमा गये ता ठौर। जहाँ नहीं द्वितिया कोउ और॥ सहस नाम तहाँ तिन्हैं सुनावो। जाते आप अमर पद पावौ॥ तहां हुतो इक शुकको अंग। तिन यह सुन्यो सकल परसंग॥ ताको शिव मारनको धायो। तिन उडि अपुनो आप बचायो॥ उड़त उड़त शुक पहुँच्यो तहां। नारि व्यासकी बैठी जहां॥ शिवहू ताके पाछे धाए। पै ताको मारन नहिं पाये॥ व्यास नारि तबहीं सुख बायो। तब तनु तजि सुख माहिं समायो॥ द्वादश वर्ष गर्भ में रह्यो॥ व्यास भागवत तब तिहि कह्यों॥ बहुरो जब यदुपति समुझायो। तेरी माता बहु दुख पायो॥ तू जेहि हित बाहर नहिं आवै। सो हमसों कहि क्यों न सुनावै॥ प्रभु तुव माया मोहिं सतावत। ताते हौं बाहर नहिं आवत॥ हरि कह्यो अब न व्यापि है माया। तब वह गर्भ छांडि जग आया॥ माया मोह ताहि नहिं दह्यो। सुन्यो ज्ञान सो सुमिरन रह्यो॥ जैसे शुकको व्यास पढायो। सूरदास तैसे कहि गायो॥ ११४ ॥ श्रीभागवत वक्ता श्रोता प्रस्ताव वर्णन। राग बिलावल ॥ व्यासदेव जब शुकहि पढायो। सुनिकै शुक सो हृदय बसायो॥ शुक सों नृपति परीक्षित सुन्यो। तिन पुनि भली भाँतिकै गुन्यो॥ सूत शौनकनिसों पुनि कह्यो। विदुर मैत्रेयसों पुनि लह्यो॥ सुनि भागवत सबनि सुख पायो। सूरदास सो वरणि सुनायो॥ ११५॥ सूत संवाद राग बिलावल॥ सूत व्यास सों हरि गुण सुने। बहुरो तिन निज मनमें गुने॥ बहुरौ नैमिषारपै आयो। तहां ऋषिनको दरशन पायो॥ ऋषिन कह्यों हरि कथा सुनावहु। भली भाँति हरिको गुण गावहु॥ प्रथम कह्यो तिन व्यास अवतार। सुनौ सूर सो अब चित धार॥ ॥ ११६॥ व्यास अवतार वर्णन राग बिलावल हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौ। हरि चरणारविन्द उर धरौ॥ व्यास जन्म भयो जा परकार। कहौं सो कथा सुनौ चितधार॥ सत्यवती मच्छोदरि नारी। गंगातट ठाढी सुकुमारी॥ पराशर ऋषि तहां चलि आए। विवश होइ तिनके मद धाए। ऋषि कह्यो ताहि दान रति देहि। मैं वर दीन्यो तोहिं सुलेहि॥ तू कुमारिका बहुरौ होई। तोको नाउँ धरै नहिं कोई॥ मेरो कह्यो न जो तू करि है। देउँ शराप महादुख भरि है॥ सत्यवती शाप भय मान। ऋषिको वचन कह्यो परिमान॥ व्यासदेव ताके सुत भये। होत जन्म बहुरो बन गये॥ योजनगंधा माता करी। मच्छ बास ताकी तब हरी॥ देखो काम प्रताप अधिकाई। वश कियो पराशर ऋषिराई॥ प्रबल शत्रु आहै यह मार। याते सुनौ चलौ संभार॥ या विधि भयो व्यास अवतार। सूर कह्यो भागवत अनुसार ११७॥ श्रीभागवत आदि तरण कारण राग बिलावल॥ भयो भागवत चारि प्रकार। कहौं सुनो सो अब चितधार॥ सतयुग लाख वर्षकी आई। त्रेता दश सहस्र कह गाई॥ द्वापर सहस एक रहि गई। कलियुग शत संवत रहि गई॥

सोऊ कहन सुनन को भाई। कलि मर्याद कही नहिं जाई॥ ताते हरि करि व्यास अवतार। करी संहिता वेद विचार॥ बहुरि पुराण अठारह गाए। पै तोऊ शांती नहिं पाए॥ तब नारद तिनके ढिग आय। चारि श्लोक कहे समुझाय॥ ए ब्रह्मासों कहे भगवान। ब्रह्मा मोसे कहे बखान॥ सोई अब मैं तुमसों भाषे। कहौं भागवत इहि हिय राषे॥ श्रीभागवत सुनै जो कोई। ताको हरि पद प्रापति होई॥ ऊंच नीच व्योरो न बडाई। ताकी साखी मैं सुनि पाई॥ जैसे लोहा कंचन होई। व्यास भई मेरी गति सोई॥ दासीसुत ते नारद भयो। दुःख दासपनको मिटि गयो॥ व्यासदेव तब करि हरि ध्यान। कियो भागवतको व्याख्यान॥ सुनै भागवत जो चित लाई। सूर सुहरि भजि भव तरि जाई॥ ११८॥ राग सारंग॥ कह्यो शुक श्रीभागवत विचार। जाति पांति कोऊ पूछत नाहिं श्रीपतिके दरबार॥ श्रीभागवत सुनै जो हित करि तरै सु भव जलधार। सूर सुमिरि गुण रटि निशि बासर राम नाम निज सार॥ ११९॥ नाम माहात्म्य वर्णन॥ राग कान्हरा॥ बडी है राम नामकी ओट। शरण गये प्रभु काढ़ि देत नहिं करत कृपाके कोट॥ बैठत सभा सबै हरि जूकी कौन बडो को छोट। सूरदास पारसके परसे मिटत लोहके खोट॥ १२०॥ राग धनाश्री॥ सोई भलो जु रामहिं गावै। श्वपच प्रसन्न होइ बड सेवक बिनु गुपाल द्विज जन्म न भावै॥ वाद विवाद यज्ञ व्रत साधे कतहूं जाइ जन्म डहकावै। होइ अटल जगदीश भजन में सेवा तासु चारि फल पावै॥ कहूं ठौर नहिं चरण कमल बिनु भृंगी ज्यों दशहूं दिशि धावै। सूरदास प्रभु संत समागम आनँद अभय निसान बजावै॥ १२१॥ राग सारंग॥ काहूके बैर कहा सरै। ताकी सर वरि करै सु झूठो जाहि गुपाल बडो करै॥ शशि सन्मुख जो धूर उडावै उलटि तिसिके मुख परै॥ चिरिया कहा समुद्र उलीचै पवन कहा पर्वत टरै॥ जाकी कृपा पतित होइ पावन पग परसत पाहन तरै। सूर केश नहिं टारि सकै कोउ दाँत पीसि जो जगत मरै॥ १२२॥ राग केदारा॥ है हरि भजन को परमान। नीच पावै ऊंच पदवी बाजते नीशान॥ भजनको परताप ऐसो जल तरै पाषान। अजामिल अरु भील गणिका चढे जात विमान॥ चलत तारे सकल मंडल चलत शशि अरु भान॥ भक्त ध्रुवको अटल पदवी रामके दीवान॥ निगम जाको सुयश गावत सुनत संत सुजान। सूर हरिकी शरन आयो राखि ले भगवान॥ १२३॥ भगवान विदुर गृहे भोजन करन वर्णन राग बिलावल॥ हरि हरि हरि सुमिरौ सब कोई। ऊंच नीच हरि गिनत न दोई॥ विदुर गेह हरि भोजन पाये। कौरवपतिको मन नहिं ल्याये॥ कहौं सुकथा सुनौ मन लाई। सूर श्याम भक्तनि मन आई॥ १२४॥ भए पांडवनिके हरि दूत। गये जहां कौरव पति धूत॥ उनसों जो हरि वचन सुनाये। सूर कहत जो सुनि चित लाए॥ १२५॥ सुनि राजा दुर्योधन हम तुमपै आये। पांडुसुवन जीवित मिले दै कुशल पठाए॥ क्षेम कुशल अरु दीनता दण्डवत सुनाए। कर जोरे विनती करी दुर्बल सुखदाए॥ पांच गांव पांचौ जना करि किरपा दीजै। ए तुमरे कुल वंशहैं हमरी सुनि लीजै॥ उनकी हमसों दीनता कोउ कहि न सुनावो। पांडु सुतनि अरु द्रौपदीको मारि कढावो॥ राजनीति जानो नहीं गो सुत चरवारे। पीवहु छाँछ अघाइकै कब केरे वारे॥ गई गाँउके बेटला मेरे आदि सहाई। इनकी हम लज्जा नहीं तुम राज बडाई॥ भीषम द्रोण कर्ण सुनै कोउ मुखहु न बोलै। ए पांडव क्यों काढिए धरणी डग डोलै। हम कछु लेन न देन हैं ए बीर तुम्हारे। सूरदास प्रभु उठि चले कौरवसुत हारे॥ १२६॥ उद्धव प्रति वचन राग धनाश्री॥ उद्धव चलो विदुर के जाइये। दुर्योधनके कौन काज जहां आदर भाव न पाइये॥ गुरु

सुख नहीं बडे अभिमानी कांपै सेव कराइयै। टूटी छानि मेघ जल वरषै टूटे पलँग बिछाइयै॥ चरण धोइ चरणोदक लीनो त्रिया कहै प्रभु आइयै। सकुचति फिराति जु वदन छिपावै भोजन कहा मँगाइयै॥ तुमतो तीनि लोकके ठाकुर तुमते कहा दुराइयै। हमतौ प्रेम प्रीतिके गाहक भाजी शाक चखाइयै॥ हँसि हँसि खात कहत सुख महिमा प्रेम प्रीति अधिकाइयै। सूरदास प्रभु भक्तनके वश भक्तन प्रेम बढाइयै॥ १२७॥ हरि ठाढे रथ चढे दुवारे। तुम दारुक आगे ह्वै देखहु भक्त भवन किधौं अनत सिधारे॥ सुनि सुंदरि उठि उत्तर दीनो कौरव सुत कछु काज हँकारे। तहँ आये यदुपति कहियतहै कमल नयन हरि हितू हमारे॥ तिहिको मिलन गयो मेरो पति ते ठाकुरहैं प्रभू हमारे। सूर प्रभू सुनि संभ्रम धाए प्रेम मगन तन बसन बिसारे॥१२८॥ प्रभुजू तुमहौ अंतर्यामी। तुम लायक भोजन नहिं गृह में अरु नाहीं गृह स्वामी। हरि कह्यो साग पत्र जो मोहिं प्रिय अमृत या सम नाहीं। बारंबार सराहि सूर प्रभु शाक बिदुर घर खाहीं॥ १२९॥ भगवान दुर्योधन संवाद। राग सोरठ॥ क्यों दासीसुतके पांव धारे। भीषम कर्ण द्रोण मंदिर तजि मम गृह तजे मुरारे॥ सुनियत दीन हीन वृषली सुत जाति पांतिते न्यारे॥ तिनके जाइ कियो तुम भोजन यदुवंशी सब लाजनि मारे॥ हरिजू कहैं सुनो दुर्योधन सोइ कृपण मम चरण बिसारे। वेई भक्त भागवत वेई राग द्वेष ते न्यारे॥ सूरदास प्रभु नंदनँदन कहैं हम ग्वालन जुठिहारे॥ १३०॥ राग सारंग॥ हमतें बिदुर कहाहै नीको। जाके रुचिसों भोजन कीनो सुनियत सुत दासीको॥ द्वै विधि भोजन कीजै राजा बिपति परे कै प्रीती। तेरी प्रीति न मोहिं आपदा यहै बडी बिपरीती॥ ऊँचे मंदिर कौन काजके कनक कलश जु चढ़ाये। भक्त भवन में मैं जु बसतहौं यद्यपि तृण करि छाये। अंतर्यामी नाम हमारो हौं अंतरकी जानो। तदपि सूर भक्तवछलहौं भक्तन हाथ बिकानो॥ १३१॥ हरि तुम क्यों न हमारे आए। षटरस व्यंजन छांडि रसोई साग बिदुर घर खाये॥ ताकी झुगिया में तुम बैठे कौन बडापन पायो। जाति पांति कुलहूते न्यारो है दासीको जायो॥ मैं तुहि कहौं अरे दुर्योधन सुन तू बात हमारी। बिदुर हमारो प्राण पियारो तू विषया अधिकारी॥ जाति पांति हौं सबकी जानौं बाहिर छाक मँगायो। ग्वालनिके सँग भोजन कीनो कुलके लाज लगायो॥ जहँ अभिमान तहां मैं नाहीं यह भोजन विष लागे। सत्य पुरुष बैठे घटहीमें अभिमानीको त्यागे॥ जहँ जहँ भीर परे भक्तनको तहां तहां उठि धाऊँ। भक्तनके हौं संग फिरत हौं भक्तन हाथ बिकाऊं॥ भक्तवछल है विरद हमारो वेद स्मृती हूं गाये। सूरदास प्रभु यह निज महिमा भक्तन काज बढ़ाये॥ १३२॥ द्रौपदी सहाय॥ राग बिलावल॥ हरि हरि हरि सुमिरौ सब कोई। नारि पुरुष हरि गनत न दोई॥ द्रुपदसुताकी राखी लाज। कौरवपतिको पारचो ताज॥ कहौं सु कथा सुनौ चित लाई। सूरश्याम भक्तन बनिआई॥ १३३॥ कौरव पांसा कपट बनाये॥ धर्मपुत्रको जुवा खिलाये॥ तिन हारचो सब भूमि भँडारी। हारी बहुरि द्रौपदी नारी॥ ताको पकरि सभामें लाये। दुःशासन करि बसन छुडाये॥ तब वह हरिसों रोइ पुकारी। सूर राखि मम लाज मुरारी॥ १३४॥ राग सारंग॥ अब कछु नाहीं नाथ रह्यो। सकल सभामें बैठि दुशासन अम्बर आनि गह्यो॥ हारचो सब भंडार भूमि अरु अब बनवास लयो। एकै चीर हुतौ मेरे पर सो इन हरन चह्यो॥ हा जगदीश राखि यहि अवसर प्रगट पुकारि कह्यो। सूरदास उमँगे दोउ नयना बसन प्रवाह बह्यो॥ १३५॥ राग बिलावल॥ जेती लाज गोपालहि मेरी॥ तितनी नाहिं वधू हौं जाकी

अंबर हरत सबन तन हेरी ॥ पति अति रोप मारि मन महियां भीषम दई वेद विधि टेरी । हा जगदीश द्वारका स्वामी भई अनाथ कहत हौं टेरी ॥ बसन प्रवाह बढ्यो जब जान्यो साधु साधु सबहुन मति फेरी । सूरदास स्वामी यश प्रगट्यो जानी जनम जनमकी चेरी ॥ १३६ ॥ राग धनाश्री ॥ निबहो बाँह गहेकी लाज । द्रुपदसुता भाषत नँदनन्दन कठिन भई है आज ॥ भीषम कर्ण द्रोण दुर्योधन बैठे सभा विराज । तिहिं देखत मेरो पट काढत लीक लगी तुम काज ॥ खंभ फारि हिरनाकुश मारचो ध्रुव नृप धरचो निवाज ॥ जनकसुता हित हत्यो लंकपति बांधो साइर गाज ॥ गद्गद सुर आतुर तनु पुलकित नैननि नीर समाज । दुखित द्रौपदी जानि प्राणपति आये खगपति त्याज ॥ पूरे चीर बहुरि तनु कृष्णा ताके भरे जहाज । काढि काढि थाक्यो दुःशासन हाथनि उपजी खाज ॥ विकल अमान कह्यो कौरवपति पारचो शिरको ताज । सूर प्रभु यह रीति सदाही भक्त हेतु महाराज ॥ १३७ ॥ राग बिहागरा ॥ ठाढी कृष्ण कृष्ण यों बोले ॥ जैसे कोई बिपति परे ते दूरि धरचो धन खोले ॥ पकरचो चीर दुष्ट दुःशासन बिलख बदन भइ डोलै । जैसे राहु नीच ढिग आये चंद्र किरन झक झोलै ॥ जाके मीत नन्दनन्दनसें ढकि लइ पीत पटोलै । सूरदास ताको डर काको हरि गिरिवरके ओलै ॥ १३८ ॥ राग धनाश्री ॥ तुमरी कृपा बिनु कौन उबारै । अर्जुन भीम युधिष्ठिर राजा सुमति नकुल बल भारै ॥ केश पकरि लायो दुःशासन राखौ लाज मुरारे । नाना बसन बढाइ दियो प्रभु बलि बलि नंददुलारे ॥ नग्न न होति चकित भयो राजा शीश धुनै करसों कर मारे । जापै कृपा करैं करुणामय को ताकी दिशि सकै निहारे ॥ जो जो जन निश्चय करिसेवै हरि प्रभु अपनो विरद सँभारे । सूरदास प्रभु अपने जननको कबहूं उरते नेकु न टारै ॥ १३९ ॥ सूत वचन शौनकनि प्रति ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविंद उर धरौ ॥ हरि पंडवको ज्यों दियो राज । अरु पुनि गयो राज्य ज्यों त्याज ॥ बहुरो भयो परीक्षित राजा । तिनको शाप विप्र सुत साजा ॥ सुनि हरि कथा मुक्ति सो भयो ॥ सूत शौनकनिसों सो कह्यो ॥ कहौं सो कथा सुनो चित धारः। सूर कहै भागवत अनुसार ॥ ॥ १४० ॥ भीष्मोपदेश युधिष्ठिर प्रति ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौ । हरि चरणारविंद उर धरौ ॥ भारत युद्ध होइ जब बीता । भयो युधिष्ठिर अति भयभीता ॥ कुरु कुल हत्या मोते भई । धौं अब कैसे करिहै दई ॥ करौं तपस्या पाप निवारौं । राजछत्र नाहीं शिर धारौं ॥ लोगन तिहि बहुविधि समझायो । पै तिहि मन संतोष न आयो ॥ तब हरि कह्यो टेक परिहरौ । भीष्म पितामह कहै सुकरौ ॥ हरि पांडवरण भूमि सिधाए । भीषम देखि बहुत सुख पाए ॥ हरि कह्यो राज्य न करत धर्मसुत । कहत हते मैं भ्रात भ्रात सुत ॥ गुरुहत्या मोते ह्वै आई । कहो सु छूटे कौन उपाई ॥ राजधर्म भीषम तब गायो । दान आपदा मोक्ष सुनायो ॥ पै नृपको संदेह न गयो । तब भीषम नृप सों पुनि कह्यो ॥ धर्मपुत्र तू देखि विचार । कारन करनहार करतार ॥ नरके किए कछू नहिं होई । करता हरता आपु हि सोई ॥ ताको सुमिरि राज्य तुम करौ । अहंकार चित ते परिहरौ ॥ अहंकार किये लागत पाप । सूरश्याम भजि मिटै संताप ॥ १४१ ॥ राग धनाश्री ॥ करी गोपालकी सब होई । जो अपनो पुरुषारथ मानत अति झूठोहै सोई ॥ साधन मंत्र यंत्र उद्यम बल यह सब डारहु धोई । जो कछु लिखि राखी नँदनंदन मेटि सकै नहिं कोई ॥ दुख सुख लाभ अलाभ समुझि तुम कतहिं मरत हौं रोई । सूरदास स्वामी करुणामय श्याम चरण मन पोई ॥ १४२ ॥ राग कान्हरा ॥ होत सुजो रघुनाथ ठटी । पचि पचि रहे सिद्ध साधक मुनि तऊ बढी

न घटी ॥ योगी योग धरत मन अपने औ शिर राखि जटी। ध्यान धरत महादेव अरु ब्रह्मा तिनहूं सों न छटी ॥ जपि तपि तपसी आराधन कर चारों वेद रटी। सूरदास भगवंत भजन बिनु कर्म रेख न कटी ॥ १४३ ॥ राग सारंग ॥ भावी काहू सों न टरै। कहां वह राहु कहां वह रवि शशि आनि संयोग परै ॥ मुनि वशिष्ठ पंडित अतिज्ञानी रचि पचि लग्न धरै। तात मरन सिय हरन राम बन वपु धरि बिपति भरै ॥ रावण जीति कोटि तेतीसों त्रिभुवन राज्य करै। मृत्यु बांधि कूप में राखै भावीवश सुमरै ॥ अर्जुनके हरि हितू सारथी सोऊ वन निकरै। द्रुपदसुता के राजसभा दुःशासन चीर हरै ॥ हरिश्चंद्रसो को जग दाता सो घर नीच भरै। जो गृह छांडि देश बहु धावै तऊ वह संग फिरै ॥ भावीके वश तीनि लोकहै सुर नर देह धरै। सूरदास प्रभु रची सु ह्वैहैं को करि सोच मरै ॥ १४४ ॥ राग कान्हरा ॥ ताते सेइए यदुराई। संपति बिपति विपति सों संपति देह धरेको यहै सुभाई ॥ तरुवर फूलै फलैं परिहरै अपने कालहिं पाई। सरवर नीर भरै पुनि उमड़ै सूखे खेह उडाई ॥ द्वितिय चंद्र बाढ़त ही बाढै घटत घटत घटि जाई। सूरदास संपदा आपदा जिनि कोऊ पतिआई ॥ १४५ ॥ मलार ॥ इहि विधि कहा घटैगो तेरो। नंदनँदन करि घर को ठाकुर आपुन ह्वै रहु चेरो ॥ कहा भयो जो संपति बाढी कियो बहुत घर घेरो। कहुँ हरि कथा कहूं हरि पूजा कहुँ संतनिको डेरो ॥ जो वनितासुत यूथ सकेलै हैं गै रथनि घनेरो। सब तजि सुमिरण सूर श्याम गुण यहै सांच मत मेरो ॥ १४६ ॥ भारत वर्णन राग सारंग ॥ भक्तवछल श्रीयादवराई। भीषमकी परतिज्ञा राखी अपनो वचन फिराई। भारत माहि कथा यह विस्तृत कहत होय विस्तार। सूर भक्त वत्सलता वरणौं सर्व कथाको सार ॥ १४७ ॥ अर्जुन दुर्योधनको गवन कृष्ण गेह ॥ भक्त वत्सलता प्रगट करी। सत संकल्प वेदकी आज्ञा जनके काज प्रभु दूरि धरी ॥ भारतादि दुर्योधन अर्जुन भेटन गए द्वारकापुरी। कमल नैन बैठे सुखशय्या पारथ पाइ तरी ॥ प्रभु जागे अर्जुन तन चितयो कब आये तुम कुशल घरी ॥ ता पाछे दुर्योधन भेटहि शिर दिशते मन गर्व धरी ॥ दुहूँ मनोरथ अपनो भाष्यो तब श्री पति बातें उचरी। युद्ध न करौं शस्त्र नहिं पकरौं एक ओर सेना सिगरी ॥ हरि प्रभाव राजा नहिं जान्यों कह्यो सेन मोहिं देहु हरी। अर्जुन कह्यो जानि शरणागत कृपा करो ज्यों पूर्व करी। निज पुर आइ राई भीषम सों कही जु बातें हरि उचरी। सूरदास भीषम परतिज्ञा शस्त्र लिवाऊं पैज करी १४८ दुर्योधन वचन भीष्म प्रति ॥ राग धनाश्री ॥ मैं तोहि पूछौं भूतलराई। सुनहु पितामह भीषम मम गुरु कीजै कौन उपाई ॥ उत अर्जुन अरु भीम पंडुसुत दोउ करवार गहै गंभीर। इतै भगदत्त द्रोण भूरिश्रव तुम सेनापति धीर ॥ जे जे जात परत ते भूतल ज्यों ज्वालागत चीर। कौन सहाय जानियत नाहिन होत वीर निर्वीर ॥ जब तोसों समुझाय कही नृप तबतैं करी न कान। पावक किरण दहत सबहीं दल तूल सुमेरु समान ॥ अवगत अविनाशी पुरुषोत्तम हांकत रथकी क्यान। अचरज कहा पार्थ जो वेधे तीनलोक इक बान। तेरे काज करौं पुरुषारथ यथा जीव घट माहीं। यह न कहौं हौं रन चढि जीतौं मो मति नहिं अवगाही ॥ अजहूं समुझि कह्यो करि मेरो कहत पसारे बाहैं। कहो ताहिको सरिवर पूजै प्रभु पारथ दोउ माहैं ॥ अबतो सूर शरण तकि आयो सोइ रजायसु दीजै। जिहिते रहै छत्रपन मेरो वहै मतौ कछु कीजै ॥ १४९ ॥ भीष्म प्रतिज्ञा ॥ राग मलार ॥

१ इतहि करण।

आज जो हरिहि न शस्त्र गहाऊं ॥ लाजौं हौं गंगा जननी को शंतनुसुत न कहाऊं ॥ स्यंदन खंड महारथ खंडो कपि ध्वज सहित डुलाऊं । इती न करौं शपथ मोहिं हरिकी क्षत्रिय गतिहि न पाऊं ॥ पांडवदल सन्मुख ह्वै धाऊं सरिता रुधिर वहाऊं ॥ सूरदास रणभूमि विजय बिन जियत न पीठि दिखाऊं ॥ १६० ॥ राग मारू ॥ सुरसरि सुवन रणभूमि आये । वाणवर्षा लगे करन अति क्रोध ह्वै पार्थ औसान तब सबै भुलाये । कह्यो करि कोप प्रभु अब प्रतिज्ञा तजो नहीं तो मरत रण हम हराए । सूर प्रभु भक्तवत्सल बिरद आनि उर ताहि या विधि वचन कहि सुनाये ॥ १६१ ॥ भगवत वचन अर्जुन प्रति ॥ राग बिलावल ॥ हम भक्तनके भक्त हमारे । सुन अर्जुन परतिज्ञा मेरी यह व्रत टरत न टारे ॥ भक्तैकाज लाज जिय धारिकै पाँइ पयादे धाऊं । जहँ जहँ भीर परै भक्तनको तहँ तहँ जाइ छुडाऊं ॥ जो मम भक्तसों बैर करत है सो निज वैरी मेरो । देखि विचारि भक्त हित कारण हांकतहों रथ तेरो ॥ जीते जीत भक्त अपनेकी हारे हारि विचारों । सूरदास सुनि भक्त विरोधी चक्र सुदर्शन जारों ॥ १६२ ॥ राग सारंग ॥ गोबिंद कोपि चक्र कर लीनो । छांडि आपनो प्रण यादवपति जनको भायो कीनो ॥ रथते उतरि अवनि आतुर ह्वै चले चरण अति धाए । मनु शंकित भूभार उतारन चलत भए अकुलाए ॥ कछुक अंगते उडत पीतपट उन्नत बाहु विशाल । स्वेद स्रोत तनु शोभा कन छबि घन वर्षत जनु लाल ॥ सूर सुभुजा समेत सुदर्शन देखि विरंचि भ्रम्यो । मानो आनि सृष्टि करिवेको अंबुज नाभ भज्यो १६३ ॥ राग मलार ॥ मेरी प्रतिज्ञा रहै कि जाउ । इत पारथ कोप्यो है हम पर उत भीषम भटराउ ॥ रथते उतरि चक्र धरि कर प्रभु सुभट हि सन्मुख आए । ज्यों कंदर ते निकसि सिंह झुकि गज यूथनिपर धाये ॥ आइ निकट श्रीनाथ विचारी परी तिलक पर दीठि । शीतल भई चक्रकी ज्वाला हरि हँस दीनी पीठि ॥ जय जय जय चिंतामणि स्वामी शंतनुसुत यों भाखै । तुम बिनु ऐसो कौन दूसरो जो मेरो प्रण राखै ॥ साधु साधु सुरसरीसुवन तुम मैं प्रण लागि डराऊं । सूरजदास भक्त दोनों दिशि कापर चक्र चलाऊं ॥ ॥ १६४ ॥ अर्जुन भीष्म संवाद । राग धनाश्री ॥ कहो पितु मोसों सोइ सतभाव । जाते दुर्योधन दल जीतों कहि विधि कवन उपाव ॥ जब लगि जी अंतर घट मेरे को सरिवर करि पावै । चिरंजीव जौलौं दुर्योधन जियत न पकरहिं आवै ॥ कौरव छांडि भूमिपर कैसे दूजो भूप कहावै । तो हम कछु न बसाई पार्थ जो श्रीपति तोहि जितावै॥ अब मैं शरण तुम्हें ताकि आयो हमैं मंत्र कछु दीजै । नातर कुटुँब सैन संहारि कर कौन काजको जीजै । द्रुपदकुमार होइ रथ आगे धनुप गहो तुम बान। ध्वजा बैठि हनुमत कलगाजै प्रभु हांके रथ जान । केतिक जीव कृपण मम वपुरो तजै काल ह्वै प्रान । सूर एकही वाण विडारे श्रीगोपालकी आन ॥ १६५ ॥ भीष्म देह त्याग । राग सारंग ॥ पारथ भीषमसों मति पाई । कियो सारथी शिखंडि आई ॥ भीषम ताहि देखि मुख फेरचो । पारथ युद्ध हेतु रथ प्रेरचो ॥ कियो युद्ध अतिही विकरार । लागी चलनि रुधिरकी धार ॥ भीषम शरशय्यापर परचो । पै दक्षिणायन लगि नहिं मरचो । हरि पांडव समेत तहँ आए।सूरज प्रभु भीषम मनभाए १६६ राग सारंग । हरिसों भीषम विनय सुनाई । कृपा करी तुम यादवराई ॥ भारतमें मेरो प्रण राख्यो। अपनो कियो दूरिकर नाख्यो ॥ तुम विन प्रभु ऐसी को करै । जो भक्तनके वश अनुसरै ॥ तुम दर्शन सुर नर मुनि दुर्लभ । मोको भयो सो अतिही सुलभ ॥ दूरि नहीं गोविंद वह काल । सूर कृपा कीजै गोपाल ॥ १६७ ॥ गोविंद अब न दूरि वह काल। दीनानाथ देवकीनन्दन भक्तवत्सल गोपाल ॥ मैं भीषम तुम कृष्ण सारथी किये पीत पट लाल । बहुत सनाह समर शर

T

बेधे कनक बेल ज्यौं ताल ॥ तुमरे चरणकमल मम मस्तक कत ताको शर जाल । सूरदास जन जानि आपनो देहु अभयकी माल ॥ १५८ ॥ राग मलार ॥ वा पट पीतकी फहरान । कर धरि चक्र चरणकी धावनि नाहीं विसरति वह बान ॥ रथते उतरि अवनि आतुर ह्वै कच रजकी लपटान । मानों सिंह शैलते निकस्यो महामत्तगज जान ॥ जिन गुपाल मेरो प्रण राख्यो मेटि वेदकी कान । सोई सूर सहाय हमारे निकट भये हैं आन ॥१५९॥ राग सारंग ॥ भीषम धरि हरिको उर ध्यान । देखत हरिके तजे परान ॥ तासु क्रिया करि सब गृह आए । राजा सिंहासन बैठाए ॥ हरि पुनि द्वारावती सिधाये । सूरदास हरिको गुण गाये ॥ १६० ॥ अथ भगवान्‌को द्वारका गमन ॥ राग बिलावल ॥ धर्मपुत्रको दै हरि राज । निज पुर चलिबेको कियो साज ॥ तब कुन्ती बिनती उच्चारी । सुनौं कृपा करि कृष्ण मुरारी ॥ जब जब हमको विपदा परी । तब तब प्रभु सहाय तुम करी ॥ तुमते विमुख राज्य किहि काम।सूर बिसारहु हमैं न श्याम॥ १६१ ॥ अथ कुंतीकीविनय ॥ राग कान्हरा । प्रभु जू बिपदा भली बिचारी । धिक यह राज्य विमुख चरणनते कहति पंडुकी नारी ॥ लाक्षामंदिर कौरव बिरच्यो तहँ राखे वनवारी । दुर्योधनकी सभा द्रौपदी अंबर दए उबारी ॥ अतिथि ऋषीश्वर शापन आए शोक भयो जिय भारी । स्वल्प शाकते तृप्त किए सब कठिन आपदा टारी ॥ परतिज्ञा प्रहलादकि राखी श्री नरहरि वपुधारी । सोई सूर सहाय हमारे संतनको हितकारी ॥ १६२ ॥

अथ विदुरको उपदेश राजा धृतराष्ट्र गांधारी प्रति वन गमन राजा युधिष्ठिरको वैराग्य वर्णन ।

राग बिलावल ॥ कुरुपति ज्यों वनगमन कियो।धर्मसुवन विरक्त ज्यों भयो । वरणि सुनाऊं ता अनुसार॥ सूत कही जैसे परकार ॥ भारतादि कुरुपतिकी जथा । चली पांडवनकी जब कथा ॥ विदुर कह्यो मत करो अन्याई । देहु पांडवन राज्य बटाई ॥ कुरुपति कह्यो धान मम खाइ । पंडुसुतनकी करत सहाइ ॥ याको ह्यांते देहु निकारी । बहुरि न आवै मेरे द्वारी ॥ बिदुर शस्त्र सब तहीं उतारी । चल्यो तीरथनि मुंड उघारी ॥ भारतके बीते पुनि आयो। लोगन सब वृत्तांत सुनायो ॥ तब पूँछो कुरुपति है कहां। कह्यो पंडुसुत मंदिर जहां ॥ राजा सेवा भालि विधि करत । दिन प्रति सुख संपति तहँ भरत ॥ विदुर कह्यो देखो हरिमाया । जिन इह सकल लोक भरमाया ॥ जिह हरि कृपा कर्‌यो सो छूटयो । इन माया सब लोगनि लूटयो ॥ इहिके पुत्र एकसौ भए । तिनै बिसारि सुखी ए हुए ॥ अब मैं उनको ज्ञान सुनाऊँ। जिहिं तिहिं विधि वैराग्य उपाऊँ॥ बहुरो धर्मपुत्र पै आयो । राजा देखि बहुत सुख पायो ॥ करि सन्मान कह्यो आ भाई । करी हमारी बहुत सहाई ॥ लाक्षागृहते जरत उबारे । अरु बालापनते प्रतिपारे॥कौन कौन तीरथ फिरि आए। विदुर सकल वृत्तांत सुनाए॥ बहुरि कह्यो हरि सुधि कछु पाई । कह्यो न कछू रह्यो शिरनाई॥ बहुरो कौरवपति ढिग आए। पूछे समाचार सतभाए ॥ कह्यो युधिष्ठिर सेवा करत । ताते बहुत अनंदित रहत ॥ कह्यो पुत्रसुधि आवत कबहीं । कह्यो भाविएके वश सबहीं ॥ विदुर कह्यो शत पुत्र तिहारे । पंडव सुतनि कलंक संहारे ॥ तिनके गृह तुम भोजन करत । अरु पुनि कहत सुखै हम धरत ॥ धिक तुम धिक या कहिवे ऊपर । जीवत रहिहो कौलौं भूपर ॥ श्वान तुल्य है बुद्धि तुम्हारी । जूंठन काज सहत दुख भारी ॥ द्रौपदिके तुम बसन छिनाए । इन तुम राज बहुत दुख पाए ॥ इनके गृह रहि सुख तुम मानत।अति निलज्जको लाज न आनत॥जीवन आश प्रबल तुम लेखी । साक्षात सो तुममें देखी । काल अग्नि सबही जग जारत । तुम कैसे जीवन न विचारत ॥ आयु तुम्हारी गई सिराइ । वन चलि भजो द्वारकाराइ ॥ कुरुपति कह्यो अंध हम दोई । धनमें भजन कौन विधि होई ॥ विदुर कहै सेवामैं

T

करिहौं । सेवा करत नेक नाहिं टरिहौं॥अर्धनिशा ताको लै गयो।प्रात भए नृप विस्मय भयो॥बूड सुए के कहुँ उठि गये । तिनके ताप नृपति बहु तए ॥ वहां जाइ कुरुपति बल योग । दियो छांडि तनुको संयोग ॥ गांधारी सहगामिनि कियो । बिदुरभक्त तीरथ मग लियो ॥ इहि अंतर नारद इहँ आयो। नृपको सब वृत्तांत सुनायो ॥ नृपके मन उपजो बैराग । भजो सूर प्रभु अब सब: त्याग ॥१६३॥ अथ हरि बियोग पांडवनको उत्तर गमन ॥ राग सारंग ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो।हरि चरणारविन्द उर धरो॥हरि बियोग पांडव तजि राज।गमन कियो परीक्षित राज॥कहौ सु कथा सुनौ चितधार।सूर कह्यो भागवत अनुसार ॥१६४॥ राग बिलावल॥राजासों अर्जुन शिरनाई । कह्यो सुनो बिनती महाराई ॥ बहुदिन भे हरिसुधि नहिं पाई । आज्ञा होइ तौ देखहुँ जाई ॥ यह कहि पारथ हरिपुर गए । सुन्यो सकल यादव क्षय भए ॥ अर्जुन सुनत नयन जलधार । पर्यो धरणि पर खाइ पछार । तब दारुक संदेश सुनायो । कह्यो हरिजू जो गीता गायो॥ सो स्वरूप मम हृदये आन । रहियो सदा करत मम ध्यान॥ तब अर्जुन मन धीरज धारि ।चल्यो संग लै जे नर नारि॥तहँ भिल्लनिसों भई लराई । लूटे बिन सब श्याम सहाई ॥ अर्जुन बहुत दुखित तब भए । इह अपसगुन होत दिन नए ॥ रोवैं वृषभ तुरंग अरु नाग । श्याल दिवस निशि बोलैं काग ॥ कंपै भुव बर्षा नाहिं होई । भए सोच चित यह नृप जोई ॥ इहि अंतर अर्जुन फिरि आयो । राजाके चरणन शिर नायो ॥ राजा ताको कंठ लगाई । कह्यो कुशल है यादवराई ॥ बल वसुदेव कुशल सब लोई । अर्जुन यह सुनि दीने रोइ॥ राजा कह्यो कहा भयो तोहिं! तू क्यों कहि न सुनावै मोहिं न॥काहू असत्कार तोहिं कियो । कै कहि दान न द्विजको दियो ॥ कै शरणागतको नाहिं राख्यो । कै तुमसों काहू कटु भाख्यो ॥ कै हरिजू भए अन्तर्ध्यान। मोसों कहि तू प्रकट बखान ॥ तब अर्जुन नैनन जल डारि । राजासों किय वचन उचारि ॥ सूरज प्रभु बैकुंठ सिधारे । तेहि बिन को मम काज सँवारे ॥ १६५ ॥ राग धनाश्री ॥ हरि बिनु को पुरवै मेरो स्वारथ ।मुंडहि धुनत शीश कर मारत रुदन करत नृप पारथ । थाके हस्त चरणगति थाकी अरु थाक्यो पुरुषारथ। पांच बाण मोहि शंकर दीनें तेऊ गए अकारथ॥ जाके संग सेतुबन्ध कीनो अरु जीत्यो महभारथ। गोपी हरी सूरके प्रभु बिन घटत न प्राण पदारथ ॥ १६६ ॥ राग बिलावल। यह सुनि राजा रोइ पुकारे। भीमादिक रोये पुनि सारे। रोवत सुनि कुंती तहां आई। कह्यो कुशल हैं यादवराई ॥ अर्जुन कह्यो सबै लरि मुए । हरि बिनु सब अनाथ हम हुए॥ कुंती प्राण तजे धरि ध्यान। जीवन मरन उतै भल जान। राज्य परीक्षित को नृप दीना। वज्रनाभ मथुरापति कीना । द्रुपदसुता समेत सब भाई।उत्तर दिशा गए हर्षाई ॥ योग पंथ करि उन तनु तजे। सूर सबै ते हरिपद भजे ॥ १६७ ॥ अथ श्री भगवान् परीक्षित गर्भ रक्षा, जन्म वर्णन॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौ। हरि चरणारविन्द उर धरौ ॥ हरि परीक्षितै गर्भ मँझार। राखि लियो निज कृपा अधार। कहौं सु कथा सुनौ चितलाई। जो हरि भजै रहै सुख पाई॥ भारत युद्ध वितत जब भयो। दुर्योधन अकेल तहँ रह्यो ॥ अश्वत्थामा तापै जाई। ऐसी भांति कह्यो समुझाई ॥ हमसों तुमसों बाल मिताई। हमसों कछु न भई मित्राई ॥ अब जो आज्ञा मोको होई । छांडि बिलंब करों अब सोई ॥ राज्य गयेको दुःख न सोई। पांडव राज भयो जो होई॥ उनके मुएहीय सुख होई। जो करि सकौ करौ अब सोई॥ हरि सर्वज्ञ बात यह जान । पांडु सुतनि सों कह्यो बखान ॥ आज सरस्वति तट रहौ सोई । पै यह बात न जानै कोई॥ पांडव हरिकी आज्ञा पाइ । तजि गृह रहे सरस्वति जाइ॥ काहूसों यह कहि न सुनाई। वहां जाइ सब रैन बिताई। अश्वत्थामा तब इहां आए । द्रौपदीसुत तहां

सोवत पाए ॥ उनको शिर लै गयो उतारि। कह्यो दुर्योधन आयो मारि ॥ बिन देखे ताको सुख छयो। देखेते दूनो दुख भयो ॥ ए बालक तैं वृथा जु मारे। पुनि कुरुपति तजि प्राण सिधारे ॥ अश्वत्थामा भय करि भग्यो। इहां लोग सब सोवत जग्यो। द्रौपदि देखि सुतन दुख पायो। अर्जुनसों यह वचन सुनायो ॥ अश्वत्थामा जब लगि मारों। तब लगि अन्न न सुखमें डारों ॥ हरि अर्जुन रथपर चढ़ि धाये। अश्वत्थामापै चलि आये ॥ अश्वत्थामा अस्त्र चलायो। अर्जुनहू ब्रह्मास्त्र पठायो ॥ उन दोनों से भई लराई। तब अर्जुन दोउ लए बुलाई ॥ अश्वत्थामाको गहि लाए। द्रौपदि शीश सुठी सुकराए ॥ याके मारे हत्या होई। सूयो जिवत न देख्यो कोई ॥ अश्वत्थामा बहुरि खिसाई। ब्रह्मअस्त्रको दियो चलाई ॥ गर्भ परीक्षित जारन गयो। तब हरि ताहि जरन नहिं दियो ॥ रूप चतुर्भुज गर्भ मँझार। ताको तासों लियो उबार ॥ जन्म परीक्षित को जब भयो। कह्यो चतुर्भुज अब कहँ गयो ॥ पुनि जब हरिको देखौं जोई। पाइ संतोष सुखी होउ सोई। राजा जन्म समय को देखि। मनमें पायो हर्ष बिशेखि ॥ गर्भ परीक्षित रक्षा करी। सोई कथा सकल बिस्तरी ॥ श्रीभगवान कृपा जिहि करै। सूर सो मारे काके मरै ॥ १६८ ॥ अथ परीक्षित राजाको कलियुग दंड। ऋषि शाप। राग सारंग ॥ हरि हरि भक्तनको शिरनाऊं। हरि हरि भक्तनके गुण गाऊं ॥ हरि हरि भक्त एक नहिं दोई। पै यह जानत बिरला कोई ॥ भक्त परीक्षित हरिको प्यारो। गर्भमाह होतो जब बारो ॥ ब्रह्म अस्त्रते ताहि बचायो। युग युग बिरद यहै चलि आयो ॥ बहुरि राज्य ताकहँ जब भयो। मिस दिग्विजय चहूं दिशि लयो ॥ सकल प्रजा सु धर्म रत देखे। ताके मन बहु हर्ष विशेखे ॥ कुरुक्षेत्रमें पुनि जब आयो। गाय वृषभ तहँ दुःखित पायो ॥ तासु वृषभके पग त्रय नाहीं। रोवत गाय देखके ताहीं ॥ वृषभ धर्म पृथ्वीसों गाइ। वृषभ कह्यो तासों या भाइ ॥ मेरे हेतु दुखी तू होत। कै अधर्म तुमपर अच्छोत ॥ गो कह्यो हरि बैकुंठ सिधारे। शम दम उनहीं संग पधारे ॥ तप संतोष दया अरु गयो। ज्ञान यमादिक सब लय भयो ॥ यज्ञ साधना कोऊ करै। कोऊ धर्म न मनमें धरै ॥ अरु तुमको बिन पाँइन देखि। मोहिं होतहै दुःख विशेखि ॥ इह अंतर राजा शूद्र आयो। वृषभ गऊको पांव चलायो ॥ ताहि परीक्षित खड्ग उठाइ। बहुरो वचन कह्यो या भाइ ॥ तू को कौन देशहै तेरो। कै छल गह्यो राज्य सब मेरो ॥ या विधि नृपति परीक्षित कह्यो। पै वासों उत्तर नाहिं लह्यो ॥ कह्यो वृषभसों को दुखदाई। तासु नाम मोहिं देहु बताई ॥ इंद्र होइ ताहूको मारों। तुमरो यह संताप निवारों ॥ वृषभ कह्यो तुम ऐसेइ राव। पै मैं लेउं कौन का नाँव ॥ कोउ कह हरिइच्छा दुख होई। द्वितिया दुखदायक नहिं कोई ॥ कोउ कह कर्म दुःखके दाता। काहू दुख नाहिं देत बिधाता ॥ कोउ कह शत्रु होत दुखदाई। सुतौ मैं न कीनी शत्राई ॥ काके नाम बताऊं तोको। दुख दायक अरिष्ट सम मोको ॥ लहत आपने दुख दातार। तुमही देखौ करिय विचार ॥ तब विचारि करि राजा देख्यो। शूद्र नृपति कलियुग करि लेख्यो ॥ वृषभ धर्म अरु पृथ्वी गाइ। इनको भयो इहौ दुखदाइ ॥ ताहि कह्यो तुम बडा अधर्मी। तो समान नाहिं और कुकर्मी ॥ क्षमा दया तप पग तैं काट्यो। छांडि देश मम यह कहि डाट्यो ॥ तिन कह्यो मोमें एक भलाई। तुमसों कहों सुनो चितलाई ॥ धर्म विचारत मनमें होई। मनसा पाप न लागत कोई ॥ राज तुम्हारो है सब ठौर। तुम बिनु नृपति न द्वितिया और ॥ जौन ठौर मोहिं आज्ञा होई। ताहि ठौर रैहौं मैं जोई ॥ हो हरि बिमुख रु वेश्या जहां। सुरापान वधिकन गृह तहां ॥ जूवा खेलत जहां जुवारी। ए पांचों हैं ठौर तुमारी ॥ पांचौं होइँ नृपति ए जहां। मोको ठौर बता

T.

बहु तहां ॥ तब नृप याको कनक बतायो । कनक मुकुट लखि सो लपटायो ॥इक दिन राव अखेटे गयो । ता बनमाँह पियासा भयो ॥ ऋषि शमीकके आश्रम आयो । ऋषि हरिपदको ध्यान लगायो ॥ राजा जल ता ऋषिनसों मांग्यो । ताको मन हरिपदसों लाग्यो ॥ राजाको उत्तर नहिं दियो । तब मनमाहिं क्रोध नृप कियो ॥ यह सब कलियुगको परभाव॥जो नृपके मन भयो कुठाव ॥ ऋषिकी कपट समाधि विचारी । दियो भुजंग मृतक गर डारी ॥ ऋषि समाधि महँ त्योंहीं रह्यो । शृंगीऋषि सों लरिकन कह्यो ॥ शृंगीऋषि तब कियो विचार । प्रजा दुःख कर नृपति गुहार ॥ नृपति दुःख कहिये किहि जाई। दियो शाप तोहिं तक्षक खाई॥दैकरि शाप पितापै आयो । देख्यो सर्प पिता गर नायो ॥ रोवन लाग्यो सु मृतक जान । रुदन करत छूट्यो ऋषि ध्यान । सुतसों कह्यो कहा भयो तोहिं । कहि न सुनावत निज दुख मोहिं ॥ शृंगीऋषि सब कहि समुझायो । नृप भुजंग सो ग्रीवा नायो ॥ यह अपराध बडो उन कीनो । तक्षक डसन शाप मैं दीनो ॥ ऋषि कह्यो बहुत बुरो तुम कीनो । जो यह शाप नृपतिको दीनो ॥ तुव शरापते मरि है सोई । यह अपराध मोहिं सब होई ॥ सुख सोवत राज याके सब । दुख पैहैं सो सकल प्रजा अब ॥ ताकी रक्षा हरिजू करी । हरि अवज्ञा तुम अनुसरी ॥ इहां राजा मनमें पछताई । मैं यह कियो बडा अन्याई ॥ जाके हृदय बुद्धि यह आवै । ताको फल सो भलो न पावै ॥ ऋषि शिष्यको भेज्यो समझाई । नृपसों कह तुम ऐसे जाई ॥ मम सुत शाप दियो या भाई । सप्तम दिन तोहि तक्षक खाई ॥ शृंगीऋषि यह किय बिन जाने । होत कहा अबके पछताने । ताते तुम उपाव सो करो । जाते भव सागरको तरो ॥ नृप सुनि लाग्यो करन विचार । सप्तम दिन मरिबो निर्धार ॥ यज्ञ दान करि सुर पुर जैये । तहां जाइके सुख बहु लहिये ॥ बहुरि कह्यो सुरपुर कछु नाहिं । पुण्य क्षीण तिहिं ठौर गिराहिं ॥ ताते सुत कलत्र सब त्याग । गहों एक हरिपद अनुराग॥बहुरि कह्यो अब हो कहा त्याग । खोयो जन्म विषय सुख लाग ॥ सूर न हरि पदसों चित लायो । इत उत देखत जन्म गँवायो ॥ ॥ १६९ ॥ वैराग्य उपदेश परीक्षित मन प्रति । राग धनाश्री ॥ इत उत देखत जन्म गयो।या माया झूठीके लालच दुहुँ दृग अंध भयो ॥ जन्म कष्टमें पाय दुखित भये अति दुख प्राण सह्यो । वे त्रिभुवनपति बिसरि गए तुहि सुमिरत क्यों न रह्यो । श्रीभागवत सुनों नहिं श्रवणनि बीचहि भटक मुयो । सूरदास कहि सब जग पूज्यौ युग युग भक्त जियो ॥ १७० ॥ राग सारंग ॥ जन्म सिरानो अटके अटके । राज काज सुत पितुकी डोरी बिन विवेक फिरयो भटके ॥ कठिन जु ग्रंथि परी मायाकी तोरी जात न झटके । ना हरिभजन ना संत समागम रह्यो बीचही लटके । ज्यों बहु कला काच दिखरावै लोभ न छूटत नटके । सूरदास शोभा क्यों पावै पिय विहीन धन मटके ॥ ॥ १७१ ॥ जन्म सिरानो ऐसे ऐसे । कै घर घर भरत यदुपति विन कै सोवत कै वैसे ॥ कै कहुँ खान पान रसनादिक कै कहुँ बाद अनैसे । कै कहुं रंक कहूं ईश्वरता नट बाजीगर जैसे ॥ चेत्यो नहीं गयो टरि अवसर मीन बिना जल जैसे । यह गति भई सूरकी ऐसी श्याम मिलैं धौं कैसे ॥ १७२ ॥ राग देवगंधार ॥ विरथा जन्म लियो संसार । करी न कबहूं भक्ति हरिकी मारि जननी भारि ॥ यज्ञ जप तप नाहिं कीनो अल्पमति विस्तारि । प्रगट ब्रह्म दुरयो नहीं तू देखि नैन पसारि ॥ प्रबल अविद्या ठग्यो सब जग जन्म जूवा हारि । सूर हरिको सुयश गावहु जाहि मिटि भव भारि ॥ १७३ ॥ राग सोरठ ॥ काया हरिके काम न आई ॥ भाव भक्ति जहँ हरियश सुनयत तहां जात अलसाई । लोभातर ह्वै काम मनोरथ तहां सुनत उठि धाई ॥ चरण कमल

T

सुंदर जहँ हरिको क्यों हू न जात नवाई ॥ जब लगि श्याम अंग नहिं परसत अंधहि ज्यों भरमाई । सूरदास भगवंत भजन तजि विषय परम बिष खाई ॥ राग धनाश्री ॥ १७४ ॥ सबै दिन गए विषयके हेत । तीनोंपन ऐसेही बीते केश भये शिर श्वेत ॥ आंखिनि अंध श्रवण नाहिं सुनियत थाके चरण समेत । गंगाजल तजि पियत कूपजल हरितजि पूजत प्रेत ॥ रामनाम बिन क्यों छूटोगे चंद ग्रहे ज्यौं केत । सूरदास कछु खर्चै नः लागत रामनाम मुख लेत ॥ १७५ ॥ राग सारंग ॥ जो तू राम नाम चित धरतो । अबको जन्म आगलौं तेरो दोऊ जन्म सुधरतो ॥ यमको त्रास सबै मिटि जातो भक्त नाम तेरो परतौ । तंडुल घृत सँवारि श्यामको संत परोसो करतो ॥ हो तो नफा साधु की संगति मूल गांठ नहिं टरतो । सूरदास वैकुंठ पंथमें कोउ न फेंट पकरतौ ॥ १७६ ॥ राग मलार ॥ दोमें एकौतो न भई । ना हरि भजे न गृह सुख पावे वृथा विहाइ गई ॥ ठानी हुती और कछु मन में औरै आनि ठई । अबिगत गति कछु समुझि परत नहिं जो कछु करत दई ॥ सुत सनेह तिय सकल कुटुंब मिलि निशि दिन होत खई । पद नख चंद चकोर बिमुख मन खात अँगार मई ॥ बिषय बिकार दावानल उपजी मोह बयार बई । भ्रमत भ्रमत बहुते दुख पायो अजहुँ न टेव गई ॥ कहा होत अबके पछताने होनी शिर बितई । सूरदास सेये न कृपानिधि जो सुख सकल मई ॥ १७७ ॥ राग सारंग ॥ यह सब मेरियै कुमति । अपनेही अभिमान दोष दुख पावत हों मैं अति ॥ जैसे केहरि उझक कूपजल देखे आप परत । कूप परचो पुनि मर्म न जान्यो भई आय सुई गत ॥ जों गज फटिक शिला में देखत दशनन जाइ अरत । जो तू सूर सुखहि चाहत है तौ क्यों विषय परत ॥ १७८ ॥ राग केदार ॥ झूठहि लगि जन्म गँवायो । भूल्यो कहां स्वप्नके सुखको हरिसों चित न लगायो ॥ कबहुँक बैठ्यो रहसि रहसिकै ढोटा गोद खिलायो । कबहुँक फूलि सभामें बैठ्यो मूँछनि ताव दिवायो ॥ टेढी चाल पाग शिर टेढी टेढे टेढे धायो । सूरदास प्रभु क्यो नहिं चेतत जब लगि काल न आयो ॥ १७९ ॥ राग केदार ॥ जगमें जीवतहीको नातो । मन बिछुरे तनु छार होइगो कोउ न बात पुछातो ॥ मैं मेरी कबहूं नहिं कीजे कीजे पंच सुहातो । विषय असक्त रहत निशि बासर सुख सीरो दुख तातो ॥साँच झूठ करि माया जोरी आपुन रूखो खातो । सूरदास कछु थिर नहिं रहई जो आयो सो जातो ॥ १८० ॥ राग धनाश्री ॥ कहा लाइ तैं हरि सों तोरा । हरिसों तोरि कौनसों जोरी ॥ शिरपर धरि न चलेगो कोऊ अनेक जतन करि माया जोरी । राज पाट सिंहासन बैठे नील पदम हूं सों कहै थोरी ॥ मैं मेरी करि जन्म गँवावत जब लगि नाहिं परत यमकी डोरी । धन जोबन अभिमान अल्प जल कहै कूर आपुनी बोरी ॥ हस्ती देखि बहुत मन गर्बित ता मूरखकी मति है थोरी । सूरदास भगवंत भजन बिनु चले खेलि फागुनकी होरी ॥ १८१ ॥ बिचारतही लागे दिन जान । सजल देह कागज ते कोमल किहि बिधि राखें प्रान ॥ योग न यज्ञ ध्यान नहिं सेवा संत संग नहिं ज्ञान । जिह्वास्वाद इंद्रियन कारन आयु घटत दिन मान ॥ और उपाय नहीरें बोरे सुनि तू यह दे कान । सूरदास अब होत बिगूचन भजिले शारंगपान ॥ १८२ ॥ अब मैं जानी देह बुढानी । शीश पाउँ धर कह्यो न मानत तनुकी दशा सिरानी ॥ आन कहत आनै कहि आवत नाक नैन बहै पानी । मिटिगइ चमक दमक अँग अँगकी दृष्टि रु मतिउ हिरानी ॥ नारी गारी बिन नहिं बोले पूत करे कलकानी । घरमें आदर कादर कोसों खीझत रैनि बिहानी ॥ नाहिं रही कछु सुधि तन मनकी भई है बात पुरानी । सूरदास अब होत बिगूचन भजिलै शारंगपानी ॥ १८३ ॥ चित बुद्धिको संवाद । राग देवगंधार ॥ चकई री चलि चरण सरोवर

जहां न प्रेम वियोग । जहँ भ्रम निशा होत नहिं कबहूं वह सायर सुख जोग ॥ जहां सनकसे मीन हंस शिव मुनिजन नख रवि प्रभा प्रकाश । प्रफुलित कमल निमिष नहिं शशि डर गुंजत निगम सुवास ॥ जिहि सर सुभग मुक्ति मुक्ताफल सुकृत अमृत रस पीजै । सो सर छांडि कुबुद्धि विहंगम इहां कहा रहि कीजै ॥ लछमी सहित होत नित क्रीडा शोभित सूरजदास । अब न सुहात विषय रस छीलर वा समुद्रकी आस ॥ १८४ ॥ राग देवगंधार ॥ चलि सखि तिहि सरोवर जिहि जाहि।जिहि सरोवर कमल कमला रवि बिना बिकसाहि॥ हंस उज्वल पंख निर्मल अंग मलि मलि न्हाहि। मुक्ति मुक्ता अंबुके फल तिन्हैं चुनि चुनि खाहि ॥ अतिहि मगन महा मधुररस रसन मध्य समाहिं। पद्म बास सुगंध शीतल लेत पाप नशाहिं ॥ सदा प्रफुल्लित रहैं जल बिनु निमिष नाहिं कुम्हलाहि। देखि नीर जो छिल छिलो अति समुझि कछु मन माहिं ॥ सघन गुंजत बैठि उनपर भौंर हैं बिरमाहिं। सूर क्यों नाहिं चलो उडि तहां बहुरि उडिबो नाहिं ॥ १८५ ॥ राग रामकली ॥ भृंगी री भजि चरण कमल पद जहँ नाहिं निशिको त्रास । जहां बिधु भानु समान प्रभानख सो बारिज सुखरास ॥ जिहिं किंजल्क भक्ति नव लक्षण काम ज्ञान रस एक। निगम सनक शुक नारद शारद मुनिजन भृंग अनेक ॥ शिव विरंचि खंजन मनरंजन छिन छिन करत प्रवेश । अखिल कोश तहां वसत सुकृत जन प्रगटत श्याम दिनेश ॥ सुनु मधुकरी भरम तजि निर्भय राजिव रविकी आश ॥ सूरज प्रेमसिंधुमें प्रफुलित तहां चलि करै निवास ॥१८६॥ मन बुद्धिको संवाद राग देवगंधार ॥ सुवा चलि ता बनको रस पीजै । जा बन राम नाम अमृतरस श्रवणपात्र भरि लीजैं ॥ को तेरो पुत्र पिता तू काको घरनी घर को तेरो । काम कराल श्वानको भोजन तू कहै मेरो मेरो ॥ बडी वाराणसि मुक्तिक्षेत्रहै चलि तोको दिखराऊं । सूरदास साधुनकी संगति बडो भाग्य जो पाऊँ ॥१८७॥ अथ मन प्रबोध ॥ रे मन सुमरि हरि हरि हरि । शत यज्ञ नाहीं नाम सम परतीति करि करि करि ॥ हरिनाम हिरणाकुश बिसारयो उठयो बरि बरि बरि।प्रह्लाद हित जिन असुर मारयो ताहि डरि डरि डरि॥गज गृध्र गणिका व्याधके अघ गये गरि गरि गरि।चरण अंबुज बुद्धि भाजन लेहु भरि भरि भरि॥द्रौपदीकी लाज कारण दाव परि परि परि।पंडुसुतके बिघ्न जेते गए टरि टरि टरि।कर्ण दुर्योधन दुःशासन शकुनि अरि अरि अरि। सुतहित अजामिल नाम लीनो गयो तरि तरि तरि॥चारि फलके दानिहैं प्रभु रहे फरि फरि फरि । सूर श्रीगोपालके गुण हृदय धरि धरि धरि ॥१८८ ॥ राग केदार ॥ करि मन नंदनंदन ध्यान । सेवि चरण सरोज शीतल तजि विषय रस पान ॥ जानु जंघ त्रिभंग सुंदर कलित कंचन दंड । काछनी कटि पीत पट द्युति कमल केसर खंड ॥ जनु मराल प्रवाल छीना किंकिणी कल राव । नाभि हृदय रोमावली अलि चारु सहज सुभाव ॥ कंठ मुक्तामाल मलयज उर बनी वनमाल । सुरसरी शशि तीर मानो लता श्याम तमाल ॥ बाहु पाणि सरोज पल्लव धरे मृदु मुख वेणु। अति विराजति वदन विधुपर सुरभि मंडित रेण॥ अधर दशन कपोल नासा परम सुंदर नैन । चलत कुंडल गंड मंडल मनो निरतन मैन ॥ कुटिल कच भ्रुव तिलक रेखा शीश शिखी शिखंड । मदन धनु मनो शर संधाने देखि घन कोदंड ॥ सूर श्रीगोपालकी छवि दृष्टि भरि भरि लेहीं । प्राणपतिकी निरख शोभा पलक परन न देहीं ॥ १८९ ॥ भजि मन नंद नंदन चरण। परम पंकज अति मनोहर सकल सुखके करण। सनक शंकर ध्यान ध्यावत निगम अवरन वरन। शेष शारद ऋषिसुनारद संत चिंतत चरण ॥ पद पराग प्रताप दुर्लभ रमालो हित करण। परशि गंगा भई पावन तिहूं पुर घर घरन ॥ चित्त चिंतन करति जग अघहरन

T

तारन तरन। गये तरि ले नाम केते पतित हरि पुर घरन ॥ जासु पदरज परशि गौतम नारि गति उद्धरण। तासु महिमा प्रगट केवट धोइ पग शिर धरण ॥ सोइ पद मकरंद पावन अरु नहीं सर वरण। सूर भजि चरणारविंदनि मिटै न जनम मरण ॥ १९० ॥ रे मन समुझि सोच विचारि। भक्ति बिनु भगवंत दुर्लभ कहत निगम पुकारि ॥ ढारि पासा साधु संगति केरि रसना सारि। दांव अबके परचो पूरो कुमति पिछली हारि ॥ राखि सत्रह सुनि अठारह चोर पांचो मारी। डारिदै तू तीन काने चतुर चौक निहारि ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह्यो पग्यो नागनि नारि। सूर श्रीगोविंद भजन बिनु चले दोउ कर झारि ॥ १९१ ॥ ॥ राग सारंग ॥ हो मन रामनामको गाहक। चौरासीलख जिया योनि में भटकत फिरत अनाहक। भक्तन हाट बैठि तू स्थिर ह्वै हरि नग निर्मल लेहि। काम क्रोध मद लोभ मोह तू सकल दलाली देहि। करि हियाव सो सो जलादि यह हरिके पुर लेजाहिं। घाट बाट कहुँ अटक होइ नाहिं सब कोउ देहि निबाहिं। और बनजमें नाहीं लाहा होत मूलमें हानि। सूरस्वामिको सौदो सांचो कहौ हमारो मानि ॥ १९२ ॥ राग केदारा ॥ रे मन रामसों करि हेत। हरिभजन की वारि करिले उबरै तेरो खेत ॥ मन सुआ तनु पिंजरा तिहि माहिं राख्यो चेत। काल फिरत बिलारतन धरि अब घरी तुम लेत ॥ सकल बिषय विकार तजि तू तरै सायर सेत। सूर भजि गोपाल गुणको गुरु बताए देत ॥ १९३ ॥ राग कान्हरा ॥ मन वच क्रम मन गोविंद सुधि करि। शुचि रुचि सहज समाधि साजि शठ दीनबंधु करुणामय उर धरि ॥ मिथ्यावाद विवाद छांडिदे काम क्रोध मद लोभै परिहरि। चरण प्रताप आनि उर अंतर और सकल सुख या सुख तर हरि ॥ वेदन कह्यो स्मृतिहू भाष्यो पावन पतित नाम निज नरहरि। जाको सुयश सुनत अरु गावत पाप वृन्द जैहैं भजि भर हरि ॥ परमउदार श्याम घन सुंदर सुखदायक संतन हित कर हरि। दीनदयाल गोपाल गोपपति गावत गुण आवत ढिग ढर हरि ॥ अति भयभीत निरख भवसागर घन ज्यों घेरि रह्यो घट घर हरि। जब यमजाल पसार परैगो हरिबिनु कौन करैगो घर हरि ॥ अजहूँ चेत मूढ चहुँ दिशिते कालअग्नि उपजत झुकि झर हरि। सूर काल बलिव्याल ग्रसत है श्रीपति शरन परत क्यों न फर हरि ॥ १९४ ॥ तिहारो कृष्ण कहत कहा जात। बिछुरे मिलन बहुरि कब ह्वैहै ज्यों तरुवरके पात शीत पित्त कफ कंठ विरोधे रसना टूटे बात। प्राण लए जम जाइ मूढमति देखत जननी तात ॥ छिन इक माहिं कोटि युग बीतत नरकी केतक बात। इह जग प्रीति सुवा सेमर ज्यों चाखत ही उड़जात ॥ जबलगि यमको फंद परचो नहिं चरणन चित्त लगात ॥ कहत सूर वृथा यह देही इतो कहा इतरात ॥ १९५ ॥ दिन दश लेहु गोविंद गाइ। छिन न चेतत चरण अंबुज बाद जीवन जाइ ॥ दूरि जवलों जरा रोग रु चलत इंद्री भाइ। आपुनो कल्याण करिले मानुषीतनु पाइ ॥ रूप यौबन सकल मिथ्या देखि जिन गरवाइ। ऐसेही अभिमान आलस काल ग्रसिहै आइ ॥ कूप खनि कत जाइरे नर जरत भवन बुझाइ। सूर हरिको भजन करिलै जन्म मरण नशाइ ॥ १९६ ॥ ॥ राग धनाश्री ॥ मन तोसों केतिकही समुझाई। नंदनँदनके चरण कमल भजि तजि पखंड चतुराई॥ सुख संपति दारा सुत हय गय झूठ सबै समुदाइ। क्षणभंगुर ए सबै श्याम बिनु अंत नाहिं सँग जाइ॥ जन्मत मरत बहुत युग बीते अजहूं लाज न आई। सूरदास भगवंत भजन बिनु जैहै जन्म गँवाई ॥ ॥ १९७ ॥ राग मलार ॥ अब मन मान धौं राम दुहाई। मन वच क्रम हरिनाम हृदय धरि जो गुरु वेद बताई। महाकष्ट दश मास गर्भबसि अधोमुख शीश रहाई। इतनी कठिन सही तू निकस्यो अजहूं न तू समुझाई ॥ मिटि गए राग द्वेष सब तिहिके जिन हरि प्रीति लगाई। सूरदास प्रभु

नामकी महिमा पतित परमगति पाई ॥ १९८ ॥ राग आसावरी ॥ बौरे मन रहन अटल कर जाना । धन दारा सुत बंधु कुटुँब कुल निरखि निरखि बौराना ॥ जीवन जन्म अल्प सपनोसो समुझि देखि मन माहीं । बादर छांह धूम धौराहर जैसे थिर न रहाही । जब लगि डोलत बोलत चितवत धन दारा हैं तेरे । निकसत हंस प्रेत कहि भजिहैं कोउ न आवै नेरे ॥ मूरख मुग्ध अज्ञान मूढ़मति नाहीं कोऊ तेरो । जो कोऊ तेरो हितकारी सो कहे कढ़ू सबेरो ॥ घरी एक सजन कुटुंब मिलि बैठे रुदन कराहीं । जैसे काग कागको मूये कां कां कहि उडि जाहीं ॥ कृमि पावक तेरो तन भखिहैं समुझि देखि मन माहीं । दीनदयालु सूर हरि भजिले यह औसर फिरि नाहीं ॥ १९९ ॥ ॥ राग गौरी ॥ ते दिन बिसारि गये इहां आये । अति उन्मत्त मोह मद छाक्यो फिरत केश बगराए । जिन दिवसनिते जननि जठरमें रहत बहुत दुख पाए । अति संकटमें भरत भटालौं मलमें मूड गडाए । बुध विवेक बल हीन छीन तन सबही हाथ पराए । तिहि न करत चित अधम अजहुँलौं जीवत जाके ज्याए ॥ कहिधों साथ कौन है तेरे खान पान पहुँचाए । सूर सुमृग ज्यों बाण सहत नित विषय व्याधके गाए ॥ २०० ॥ राग धनाश्री ॥ रे मन निपट निलज्ज अनीति । जियतकी कहि को चलावै मरत विषया प्रीति ॥ श्वान कुब्ज कुपंगु कानो श्रवण पुच्छत्रा हीन । भगन भाजन कंठ कृमि शिर कामिनी आधीन ॥ निकट आयुध धरे बंधक करत तीक्षण धार । अजानायक मग्न क्रीडत चढ़त बारंबार ॥ दह छिन छिन होत छीनी दृष्टि देखत लोग । सूर स्वामीसों विमुख ए सती केसे भोग २०१ ॥ राग गौरी ॥ बौरे मन समुझि समुझि कछु चेत । इतनो जन्म अकारथ खोयो श्याम चिकुर भए श्वेत ॥ तबलगि सेवा कर निश्चय करि जब लगि हरवा खेत । सूरजदास भरम जिन भूलो करि विंघनासे हेत ॥ २०२ ॥ राग धनाश्री ॥ रे शठ बिन गोबिंद सुख नाहीं । तेरो दुःख दूर करिबेको ऋद्धि सिद्धि फिरि जाहीं ॥ शिव विरंचि सनकादिक मुनिजन उनकी गति अवगाहीं । जगतपिता जगदीश शरण बिनु सुख तीनों पुर नाहीं ॥ और सकल मैं देखे झूठे बादरकी सी छाही । सूरदास भगवंत भजन बिनु दुख कबहूं नाहिं जाहीं ॥ २०३ ॥ राग कान्हरा ॥ मन तोसों कोटिक बार कही । समुझ न चरण गहत गोविंदके उर अघ शूल सही ॥ सुमिरन ध्यान कथा हरि जूकी यह एको न भई । लोभी लंपट विषयनसों हित यह तेरी निबही ॥ छांडि कनकमणि रत्न अमोलक कांचकी किरच गही । ऐसो तू है चतुर विवेकी पय तजि पियत मही ॥ ब्रह्मादिक रुद्रादिक रवि शशि देखे सुर सबही । सूरदास भगवंत भजन बिनु सुख तिहुँ लोक नहीं ॥ २०४ ॥ राग परज ॥ मनारे माधव सों कर प्रीति । काम क्रोध मद लोभ मोह तू छांडि सबै विपरीति ॥ भौंरा भोगी वन भ्रमै, मोद न मानै ताप । सब कुसुमनि मिलि रस करै, कमल बँधावै आप ॥ सुनि परमित पिय प्रेमकी, चातक चितवत पारि । घन आशा सब दुःख सहै, अंत न याचै वारि ॥ देखो करनी कमलकी, कीनो जलसों हेत । प्राण तज्यो प्रेम न तज्यो, सूख्यो सरहि समेत ॥ दीपक पीर न जानई, पावक परत पतंग । तनुतो तिहि ज्वाला जरचो चित न भयो रस भंग ॥ मीन वियोग न सहिसकै, नीर न पूंछै बात । देखि जु तू ताकी गतिहि, रति न घटै तन जात ॥ प्रीति परेवाकी गनो, चाहन चढत अकाश । तहँ चढि तीय जु देखिये, परत छांड उरश्वास ॥ सुमर सनेह कुरंगकी, श्रवन न राच्यो राग । धरि न सकत पग पछमनो, सरसन सुख उर लाग ॥ देखि जरनि जड़ नारिकी, जरत प्रेतके संग । चिता न चित फीको भयो, रची जु पियके रंग ॥ लोक वेद बरजत सबै नयन न देखत त्रास । चोर न जिय चोरी तजै, सरवस सहै विनास ॥ सब रसको रस प्रेमहै, विषयी खेले

T

सार । तन मन धन यौबन खिसै, तऊ न मानै हार ॥ तैं जु रत्न पायो भलो, जान्यो साधु समाज ॥ प्रेम कथा अनुदिन सुनी, तऊ न उपजी लाज ॥ सदा संघाती आपनों, जियको जीवन प्रान । सो तू बिसरयो सहजही, हरि ईश्वर भगवान ॥ वेद पुराण स्मृति सबै, सुर नर सेवत जाहि । महामूढ अज्ञानमति, क्यों न सँभारत ताहि॥खग मृग मीन पतंग लौं, मैं शोधे सब ठौर । जल थल जीव जिते तिते, कहौं कहां लगि और ॥ प्रभु पूरण पावन सखा, प्राणनहूंको नाथ । परम दयालु कृपालु प्रभु, जीवन जाके हाथ ॥ गर्भवास अति त्रासमें, जहां न एको अंग । सुनि शठ तेरो प्राणपति, तहां न छांड्यो संग ॥ दिना राति पोषत रहै, ज्यों तंबोली पान । वा दुखते तोहिं काढके, लै दीनो पयपान ॥ जिन जड़ते चेतन कियो, रचि गुण तत्त्व बिधान । चरण चिकुर कर नख दिए, नैन नासिका कान॥ अशन वसन बहु विध दिये, औसर औसर आनि । मात पिता भय्या मिलै, नई रुचइ पहिचानि। सजन कुटुंब पारिजन बढ़े, सुत दारा धन धाम । महामूढ़ विषयी भयो, चित आकर्ष्यौं काम ॥ खान पान परिधान रस, यौबन गयो बितीत । ज्यों विट परि परतीय वश, भोर भये भय भीत ॥ जैसे सुखही मन बढ़्यो, तैसे बढ़्यो अनंग । धूम बढ़्यो लोचन खस्यो, सखा न सूझ्यो संग ॥ जम जान्यौ सब जग सुन्यो, बाढ़्यों अयश अपार । बीच न काहू तब कियो, जब दूतनि काढ़्यो बार॥ कह जानो कहँवा मुवो, ऐसे कुमति कुमीच । हरिसों हेतु बिसारिकै, सुख चाहत है नीच ॥ जो पै जिय लज्जा नहीं, कहा कहौं सौ बार । एकहु अंक न हरि भजे, रे शठ सूर गँवार ॥ २०५ ॥ राग कल्याण ॥ धोखेही धोखे डहकायो । समुझि न परी विषयरस गीध्यो हरि हीरा घर मांह गँवायो ॥ ज्यों कुरंग जल देखि अवनिको प्यास न गई चहूं दिशि धायो । जन्म जन्म बहु कर्म किये हैं तिनमें आपुन आपु बँधायो ॥ ज्यों शुक सेमर सेव आश लगि निशि वासर हठ चित्त लगायो ॥ रीतो परचो जबै फल चाख्यो उड़ि गयो तूल तावरो आयो ॥ ज्यों कपि डोरी बांध बाजिगर कनकनको चौहटे नचायो । सूरदास भगवंत भजन बिनु काल व्यालले आप डसायो ॥ २०६ ॥ राग धनाश्री ॥ जन्म गँवायो ऊआबाई ॥ भजे न चरण कमल यदुपतिके रह्यो बिलोकत छाई ॥ धन जोबन मद ऐंडो ऐंडो ताकत नारि पराई । लालच लुब्ध श्वान जूंठनि ज्यों सोऊ हाथ न आई ॥रंच कांच सुख लागि मूढ़मति कंचन राशि गँवाई ॥ सूरदास प्रभु छांड़ि सुधारस विषय परम विष खाई ॥ २०७ ॥ भक्ति कब करिहो जन्म सिरानो । बालापनमें खेलत खोयो तरुणापै गरबानो ॥ बहुत प्रपंच करै मायाको तऊ न पेट अघानो । जतन जतन करि माया जोरै लैगये रंक न रानो ॥ सुत बित वनिता मोह लगायो झूठे भरम भुलानो । लोभ मोहमें चेत्यो नाहीं सुपने ज्यों डहकानो ॥ वृद्ध भये कफ कंठ निरोध्यो शिर धुनि धुनि पछतानो । सूरदास भगवंत भजन बिनु यमके हाथ बिकानो ॥ २०८ ॥ मन रामनाम सुमिरन बिनु वाद जनम खोयो । रंचक सुख कारणते अंतकाल बिगोयो ॥ साधु संगति भक्ति बिना तन अकारथ जाई । ज्ञानी ज्यों हाथ झारि चलै झटकाई ॥ सुत दारा देह गेह संपति सुखदाई । इनमें कछु नाहिं तेरी काल अवधि आई॥काम क्रोध लोभ मोह मनमें तू जोयो।गोविंद गुण चित बिसारि कौन नींद सोयो॥सूर कहै शुचि विचारि भ्रम भूल्यो अंधा । रामनामले तजिकरि और सकल धंधा२०९॥राग कल्याण॥भक्ति बिनु बैल बिराने हैहो। पाँउ चारि शिर शृंग गुंग मुख तब कैसे गुण गैहो॥चारि पहर दिन चरत फिरत वन तऊ न पेट अघैहो। टूटे कंध सुफूटी नाकनि कौलौं धौं भुस खैहो ॥ लादत जोतत लकुट बाजिहै तब कहँ मूंड दुरैहो । शीत घाम घन विपति बहुत विधि भार तरे मरिजैहो ॥ हरि संतनको कह्यो न मानत कियो

आपुनो पैहो । सूरदास भगवंत भजन बिनु मिथ्या जन्म गवैहो ॥ २१० ॥ राग सारंग ॥ छाँडि मन हरि बिमुखनको संग । जिनके संग कुबुद्धि उपजतिहै परत भजनमें भंग ॥ कहा होत पयपान कराये विष नहिं तजत भुजंग । कागहि कहा कपूर चुगायो श्वान न्हवाये गंग ॥ खरको कहा अरगजालेपन मर्कट भूषण अंग । गजको कहा न्हवाये सरिता बहुरि धरै खहि छंग ॥ पाहन पतित बाँस नहिं बेधत रीतो करत निखंग । सूरदास खल कारी कामरि चढत न दूजो रंग ॥ २११॥ राग सोरठ ॥ रे मन जन्म अकारथ खोइस । हरिकी भक्ति कबहुं नहिं कीनी उदर भरचो पर सोइस॥ निशि दिन रहत फिरत मुँह बांधे अहंकार करि जन्म बिगोइस । गोड पसार परचो दोउ नीके अबके कीये कहा होइस ॥ काल यमनिसों आनि बनेहै देखि देखि मुख रोइस । सूरश्याम बिनु कौन छुडावै चले जाहु भाइ पोइस ॥ २१२ ॥ तबते गोविंद क्यों न सँभारे । भूमि परेते सोवन लाग्यो महाकठिन दुखभारे ॥ अपने पिंड पोषिवे कारण कोटि सहस जिय मारे । इन पापिनते क्योंहुन उबरौगे दामनगीर तिहारे ॥ आप लोभ लालच के कारण कहूं न पाप तिहारे । सूरदास यम कंठ गहेते निकसत प्राण दुखारे ॥ २१३ ॥ राग धनाश्री ॥ रे मन मूरख जन्म गँवायो । करि अभिमान विषय रस गीध्यो श्याम शरण नहिं आयो ॥ यह संसार सुवा सेंवर ज्यों सुंदर देखि लुभायो। चाखन लाग्यो रुई उडि गई हाथ कछू नहिं आयो॥ कहा होत अबके पछताये पहिले पाप कमायो । कहत सूर भगवंत भजन बिनु शिर धुनि धुनि पछतायो ॥ २१४ ॥ राग मारू ॥ औसर हारचो रे तैं हारचो । मानुष जन्म पाइनर बौरे हरिको भजन बिसारचो ॥ रुधिर बुंदते साजि कियो तन सुंदर रूप सवारचो । जठर अग्नि अंतर ऊरधमुख जिन दश मास उबारचो ॥ जबते जन्म लियो जगभीतर तबते प्रभु प्रतिपारचो । अंध अचेत मूढ मतवारे सो प्रभु क्यों न सँभारचो ॥ पहिरि पितंबर करि आडंबर यह तनु ठाठ शृंगारचो । काम क्रोध मद लोभ त्रिया रति बहु विधि काज बिगारचो ॥ मरन बिसारि जीवन स्थिर जान्यो बहु उद्यम जिय धारचो । सुत दाराको मोह अजय विष हरि अमृतफल डारचो ॥ झूंठ सांच करि माया जोरी रचि पचि भवन उसारचो । कालअवधि पूरण भई जादिन बिनहूं त्यागि सिधारचो ॥ प्रेत प्रेत तेरो नाम परचो जब जेवरि बांधि निकारचो । जा सुतके हित बिमुख गोविंदते प्रथमहि तिन मुख जारचो ॥ भाई बंधु कुटुंब सहोदर सब मिलि यहै बिचारचो । जैसे कर्म लहो फल तैसे तिनुका तोरि उचारचो ॥ सतगुरुको उपदेश हृदय धरि जिन भ्रम सकल निवारचो । हरिभज बिलम्ब छांडि सूरज प्रभु ऊंचे टेरि पुकारचो ॥ २१५ ॥ राग बिलावल ॥ या विधि राजा करि विचार । राज साज सबहीको डार । जीरणपट कुपीन तनु धारि । चल्यो सुरसरी तीर उधारि ॥ पुत्र कलत्र देखि सब रोवे । राजा तिनके ओर न जोवे ॥ राजा चलत चले सब लोग । दुखित भये सब नृपति बियोग ॥ नृपति सुरसरीके तट आये । कियो स्नान मृत्तिका लगाये ॥ करि संकल्प अन्नजल त्याग्यो। केवल हरि पदसों अनुराग्यो॥ अत्रि वसिष्ठादिक तहँ आये । नारदादि मुनि बहुरि सिधाये ॥ कुश आसन दै तिनहि बैठायो। पुनि कह्यो तिनके पद शिरनायो ॥ धन्यभाग्य तुम दर्शन पायो । मम उधार कारण तुम आयो ॥ तुम देखत हरि सुमिरन होई । और प्रसंग चले नहिं कोई ॥ आज्ञा होइ करौं अब सोई । जाते मोरी शुद्धगति होई ॥ कोउ कह तीरथ सेवन करो। कोउ कहै दान यज्ञ विस्तरो ॥ काहू कहै मंत्र जप करना । काहू कछु काहू कछु वरना ॥ राजा कह्यो सप्त दिन माहीं । इति इहिको मोहिं सूझत नाहीं ॥ इहि अंतर शुकदेव तहाँ आये । राजा

देखि तुरत उठि धाये ॥ करि दंडवत कुशासन दीनो । पुनि सन्मान ऋषिन सब कीनो ॥ शुकको रूप कह्यो नहिं जाई । शुक हिय रह्यो कृष्णरस छाई ॥ शुककी महिमा शुकही जाने । सूरदास कहि कहा बखानै ॥ २१६ ॥ हरिके जनकी अति ठकुराई । महाराज ऋषिराज राजहूं देखत रहे रजाई ॥निर्णय देश राज्य करि ताको लोगन मन उत्साह । काम क्रोध मद लोभ मोह ए भये चोरते साह ॥ दृढ़ बिश्वास कियो सिंहासन तापर बैठे भूप । हरियश बिमल छत्र शिर ऊपर राजत प्रेम अनूप ॥ हरिपदपंकज पियो प्रेमरस ताहीके रँगराते । मंत्री ज्ञान न औसर पावै कहत बात सकुचाते ॥ अर्थ काम दोऊ रहैं द्वारें धर्म मोक्ष शिरनावै । बैठि बिवेक बिचित्र पौरिया समय न कबहूं पावै ॥ अष्ट महासिधि द्वारे ठाढीं करजोरे डरलीने । छरीदार वैराग्य बिनोदी हिरकि बाहरे कीने ॥ माया काल कछू नहिं व्यापै यह रस रीति जु जानी । सूरदास यह सकल समग्री गुरुप्रताप पहिंचानी ॥ २१७ ॥ शुक नृप ओर कृपा करि देख्यो । धन्य भाग्य तिन अपनो लेख्यो ॥ बिनती करी चरण शिरनाई । सप्त दिवस सभ मेरी आई ॥ तऊ कुटुंबको मोह न जात । पुनि धनलोभ आइ लपटात॥जानि बूझि मैं होत अजान।उपजत नाहीं मनमों ज्ञान । अरु तनु छूटत बहु दुख होई॥ ताते सोचरहे नहिं कोई।विना त्वचा सुमिरन क्यों होई।आज्ञा होइ करों अबसोइ॥ शुक कह्यो तन धन कुटुंब बिहाई । हरिपद भजो न और उपाई ॥ आयु भग्नघट जलसी छीजै । अह निश हरि हरि सुमिरन कीजै ॥ नृप खट्वांग पूर्व इक भयो। सुतौ द्वैघरीमें तरिगयो ॥ तेरी सप्त दिवसहै आई । कहौं भागवत सुन चित लाई ॥ सुनि हरि कथा धरौ हरि ध्यान । जग सब जानो स्वप्न समान ॥ या विधि जो हरिपद उर धरिहौ । निस्संदेह सूर तब तरिहौ ॥ २१८ ॥ हरि यश कथा सुनौ चित लाई । जो खट्वांग तरचो गुण गाई ॥ नृप खट्वांग भयो भुव माहीं । ताके सम द्वितिया जग नाहीं ॥ इक दिन इन्द्र तासु घर आयो । राजा उठिकरि शीश नवायो ॥ धन मम गृह धन भाग्य हमारो । जो तुम चरण कृपा करि धारो ॥ अब मोको जो आज्ञा होई । आयसु मान करौं सब सोई॥ इन्द्र कह्यो मम करो सहाई । असुरनसों भइ मोहिं लराई ॥ इन्द्रपुरी खट्वांग सिधाये । नाम सुनत सो सकल पराये । सुरपतिसों नृप आज्ञा मांगी । उन कह्यो लेहु कछू वर मांगी ॥ नृपति कह्यो कहो मेरी आय । बर लेहौं पुनि शीश चढ़ाय ॥ दोइ मुहूरति आयु बताई । नृप बोल्यो तब शीश नवाई ॥ तुरंत देहु मोहि घर पहुँचाय । तरो जाइ तहं हरिगुण गाय ॥ एक मुहूरतमें फिर आयो । एक मुहूरत हरिगुण गायो ॥ हरिगुण गाय परमपद लहचो । सूर नृपति सुनि धीरज गहचो ॥२१९॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवरश्रीसूरदासकृतप्रथमः स्कंधः समाप्तः ॥

अथ कविवर सूरदास कृत–



श्रीसूरसागर.

द्वितीयस्कन्ध ।

राग विलावल ॥ हरि हरि हरि सुमिरन करौ । हरिचरणारविंद उर धरौ ॥ शुकदेव हरिचरणन चिंत लाई । राजासों बोल्यो या भाई ॥ तुम कह्यो सप्तदिवस मम आय । कहो हरिकथा सुनौ चितलाय ॥ चिंता छांडि भजो यदुराई । सूर तरो हरिके गुण गाई ॥ १ ॥ राग सारंग ॥ जो सुख होत गोपालहि गाये । सो नहिं होत जप तपके कीने कोटिक तीरथ न्हाये ॥ दिये लेत नहिं चारि पदारथ चरण कमल चित लाये । तीनि लोक तृण सम करि लेखत नंदनँदन उर आये ॥ बंशीबट बृन्दावन यमुना तजि वैकुंठको जाये । सूरदास हरिको सुमिरन करि बहुरि न भव चलि आये ॥ २ ॥ राग केदारा ॥ सोइ रसना जो हरिगुण गावै । नैनकी छवि यहै चतुरता ज्यों मकरन्द मुकुन्दहि ध्यावै ॥ निर्मल चित्त तौ सोई सांचो कृष्ण विना जिय और न भावै । श्रवणनिकी जु यहै अधिकाई सुनि रसकथा सुधारस प्यावै ॥ कर तेई जो श्यामहिं सेवैं चरणनि चलि वृन्दावन जावै । सूरदास जैये बलि ताके जो हरिजूसे प्रीति बढ़ावै ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ जबते रसना राम कह्यो । मानो धर्म साधि सब बैठ्यो पढिबेमें धौं कहा रह्यो ॥ प्रगट प्रताप ज्ञान गुरु गमते दधिमथि घृत लै तज्यो मह्यो । सारको सार सकल सुखको सुख हनूमान शिव जानि कह्यो ॥ नाम प्रतीत भई जा जनकी लै आनन्द दुःख दूरि दह्यो । सूरदास धन धन वे प्राणी जो हरिको व्रत लै निवह्यो ॥ ४ ॥ अनन्यभक्तिमहिमा राग सारंग ॥ गोविंदसो पति पाइ कहा मन अनत लगावै । गोपाल भजन विनु सुख नहीं जो चहुँ दिश धावै ॥ पतिको व्रत जो धरै त्रिया सो शोभा पावै । आन पुरुषको नाम लेत तियं पतिहि लजावै ॥ गणिकाते उपजै सुपूत कौनको कहावै ॥ बसत सुरसरीतीर मंदमति कूपं खनावै ॥ जैसे श्वान कुलालके पाछे उठि धावै । आन देव हरि तजि भजै सो जन्म गँवावै ॥ फलकी आशा चित्त धारि जो वृक्ष बढावै । महामूढ सो मूल तजि शाखा जल नावै ॥ सहज भजे नंदलालको सो सब शुचि पावै । सूरदास हरिनाम लिये दुखनिकट न आवै ॥ ५ ॥ राग कान्हरा ॥ जाको मन लाग्यो नँद लालहिं ताहि और नहिं भावै हो । ज्यों गूँगो गुरखाइ अधिक रस सुख सवाद न बतावै हो ॥ जैसे सरिता मिलै सिंधुको बहुरि प्रवाह न आवै हो । ऐसे सूर कमल लोचनते चित नाहिं अनत डुलावै हो ॥ ६ ॥ राग विहाग ॥ जो मन कबहुँक हरिको जाँचै । आनप्रसंग उपासना छाँडै मन वच क्रम अपने उर सांचै ॥ निशि दिन श्याम सुमिरि यश गावै कल्पन मेटि प्रेमरस पाचै । यह व्रत धरै लोकमें विचरै सम करि गनै महामणि काचै ॥ शीत उष्ण सुख दुःख नाहिं मानै हानि भये कछु शोच न राचै । जाइ समाइ सूर वा निधिमें बहुरि न उलटि जगतमें नाचै ॥ ७ ॥ राग सारंग ॥कह्यो

शुक श्रीभागवत विचारि। हरिकी भक्ति विरद है युग युग आन धर्म दिन चारि॥ चिंता तजौ परीक्षित राजा सुन सुख साखि हमारि। कमल नयनकी लीला गावत कटत अनेक बिकारि॥ सतयुग सत-त्रेता तप कीनो द्वापर पूजा चारि। सूर भजन कलि केवल कीजै लज्जा कानि निवारि॥ ८॥

राग बिलावल॥ गोविन्द भजन करो इहि बारा। शंकर पार्वती उपदेशत तारक मंत्र लिख्यौ श्रुतिद्वारा॥ अश्वमेध यज्ञ जो कीजै गया बनारस अरु केदारा। रामनाम सरि तऊन पूजै जो तनु गारो जाइ हिवारा॥ सहसबार जो बेनी परसौ चन्द्रायण सौ बारा। सूरदास भगवंत भजन बिनु यमके दूत खरेहैं द्वारा९॥

॥ राग केदारा॥ है हरि नामको आधार। और इहि कलिकाल नाहीं रह्यो विधि व्यवहार॥ नारदादि शुकादि मुनि मिलि कियो बहुत बिचार। सकल श्रुति दधि मथित काढ्यो इतोई घृतसार॥ दशो दिशते कर्म रोक्यो मीनको ज्यों जार। सूर हरिको सुयश गावत जाहि मिटै भव भार॥ १०॥

॥ अथ नाममहिमा॥ राग बिलावल॥ हरि हरि हरि सुमिरो सब कोई। हरि हरि सुमिरत सब सुख होई॥ हरि समान द्वितीय नहिं कोई। हरि चरणनि राखो चित गोई॥ श्रुति स्मृति सब देखो जोई। हरि सुमि-रत होई सो होई॥ हरि हरि हरि सुमिरो सब कोई। बिन हरि सुमिरन मुक्ति न होई॥ कोटि उपाय करै जो कोई। हरि हरि हरि सुमिरो सब कोई॥ शत्रु मित्र हरि गिनत न दोई। जो सुमिरै ताकी गति होई॥ हरि हरि हरि सुमिरो सब कोई। हरिके गुण गावत सब कोई॥ राव रंक हरि गिनत न दोई। जो गावै ताकी गति होई॥ हरि हरि हरि सुमिरयो जिन जहाँ। हरि तिहिं दरशन दीनो तहां॥ हरि बिनु सुख नहिं इहां न वहां। हरि हरि हरि सुमिरो जहां तहां। हरि हरि हरि सुमिरो दिन रात। नातर जन्म अकारथ जात। सौ बातनिकी एकौ बात॥ सूर सुमिरि हरि हरि दिन रात॥ ११॥ जन्म जन्म जब जब जिहिं जिहिं युग जहां जहां जन जाइ। तहां तहां हरि चरणकमल रति जो दृढ़ होइ रहाइ॥ श्रवण सुयश सारंग नाद विधि चातक विधि मुख नाम। नैन चकोर संत संतति शशि करि अर्चन अभिराम॥ सुमति स्वरूप सचै सर घालो उर अंबुज अनुराग। नित प्रति अलि जिमि गुंज मनोहर आवत प्रेम पराग॥ औरौ सकल सुकृत श्रीपति हित तन मन रहत सुप्रीति। नाक निरै सुख दुख न सूर प्रभु जिहिके भजन प्रतीति॥ ॥ १२॥

अथ हरिविमुख निंदा॥ राग सारंग॥ अचंभो इन लोगनिको आवे। छांडे श्याम अमीरस फलको माया विष फल भावे॥ निंदत मूढ़ मलय चन्दनको राख अंग लपटावे। मान सरोवर छांडि हंस तट काग सरोवर न्हावै॥ पगतर जरत न जानै मूरख घर तजि घूर बुझावै। चौरासी लख योनि स्वांग धरि भ्रमि भ्रमि यमहिं हँसावे॥ मृग तृष्णा आचार युक्ति जल ता सँग मन ललचावे। कहत जु सूरदास संतनि मिल हरियश काहे न गावै॥ १३॥ भजन बिनु कूकर शूकर जैसो। जैसे घर बिलाव के मूसा रहत विषय वश तैसो॥ बकी बकुला अरु गीध गीधनी आइ जन्म लियो वैसो। उनहूंके यह सुत दाराहैं इन्हें भेद कहो कैसो॥ जीव मारिकै उदर भरत है तिनके लेखे ऐसो। सूरदास भगवंत भजन बिनु ज्योंव ऊंट खर जैसो॥१४॥ भजन बिनु जीवत जैसे प्रेत। मलिन मंदमति डोलत घर घर उदर भरनके हेत॥ मुख कटु वचन नित प्रति निन्दा सगुंन सुयश सुखलेत। कबहुँ पाप करैं पावत धन गांठि धूत तहां देत॥ गुरु ब्राह्मण संतजन सज्जन जात न कबहुँ निकेत। सेवा नहिं भगवंत चरणकी भवन नीलको खेत॥ कथा नहीं गुणगीत सुयश हरि साधत देव अचेत। ताकी कहा कहौं सुनि सूरज बूडत कुटुंब समेत॥ १५॥ जिहितनु हरि भजबो न कियो। सो तनु शूकर श्वान मीन ज्यों इहि सुख कहा जियो॥ जो जगदीश

ईश सबहूंको ताहि न चित्त दियो । प्रगट जानि यदुनाथ बिसारै आशामद जु पियो ॥ चारि पदारथको प्रभु दाता तिनै न मिलै हियो । सूरदास रसना वश अपने टेरि न नाम लियो ॥ १६ ॥ ॥ अथ सत्संग महिमा ॥ राग केदारा ॥ जादिन संत पाहुने आवत । तीरथ कोटी स्नान करे फल जैसो दरशन पावत ॥ नेह नयो दिन दिन प्रति उनको चरण कमल चित लावत । मन वच कर्म और नहिं जानत सुमिरत औ सुमिरावत ॥ मिथ्याबाद उपाधि रहित ह्वै विमल विमल यश गावत । बंधन कर्म कठिन जे पहिले सोऊ काटि बहावत ॥ संगति रहै साधुकी अनुदिन भव दुख दूरि नशावत । सूरदास या जन्म मरण ते तुरत परमगति पावत ॥ १७ ॥ अथ भक्ति साधन ॥ राग धनाश्री ॥ हरि रसतो कबहुँ जाइ लहिये । गये सोच आये नहिं आनँद ऐसो मारग गहिये ॥ कोमल वचन दीनता सबसों सदा अनंदित रहिये । बाद विवाद हर्ष आतुरता इतो दंड जिय सहियै ॥ ऐसी जो आवै या मनमें यह सुख कहँ लौं कहिये । अष्ट सिद्धि नव निद्धि सूरप्रभु पहुँचे जो कछु चहियै ॥१८॥ ॥ राग धनाश्री ॥ जौलौं मन कामना न छूटै । तौ कहा योग यज्ञ व्रत कीने बिनु कन तुस को कूटै ॥ कहा स्नान किये तीरथके अंगभस्म जटजूटै । कहा पुराणन पढै जु अठारह ऊर्ध्व धूमके घूटै ॥ जग सोनाकी सकल बडाई इहिते कछू न खूटै । करनी और कहै कछु औरै मन दशहूं दिश लूटै ॥ काम क्रोध मद लोभ शत्रु हैं जो इतनो सुनि छूटै । सूरदास तबहीं तम नाशै ज्ञान अग्नि झर फूटै ॥ १९ ॥ राग बिलावल ॥ भक्तिपंथको जो अनुसरै । सुत कलत्र सो हित परिहरै ॥ अशन बसन की चित्त न करै । विश्वंभर सम जगको भरै ॥ पंगु जाके द्वारे पर होई । ताको पोषत अह निशि सोई ॥ जो प्रभुके शरणागत आवै । ताको प्रभु क्योंकरि विसरावै ॥ मात उदरमें रस पहुँचावत । बहुरि रुधिरते क्षीर बनावत ॥ अशन काज प्रभु वनफल करै । तृषा हेतु जल झरना झरै ॥ पात्र स्थान हाथ हरि दीने । वसन काज बल्कल प्रभु कीने ॥ शय्या पृथ्वी करि विस्तार । गृह गिरि कंदर करे अपार ॥ ताते चिंता सकल तयागः । सूरश्याम पदकरि अनुराग ॥ २० ॥ भक्तिपंथको जो अनुसरै । सो अष्टांग योगको करै ॥ यम नियमासन प्राणायाम । करि अभ्यास होइ निष्काम ॥ प्रत्याहार धारना ध्यान । करै जु छांडि वासना आन ॥ क्रम क्रम करिकै करै समाधि । सूरश्याम भजि मिटै उपाधि ॥ २१ ॥ राग धनाश्री ॥ सबै दिन एकैसे नहिं जात । सुमिरन ध्यान कियो करि हरिको जबलगि तन कुशलात ॥ कबहूं कमला चपला पाके टेढे टेढे जात । कबहुँक मग मग धूरि टटोरत भोजन को बिलखात ॥ या देहीके गर्व बावरो तदपि फिरत इतरात । बाद विवाद सबै दिन बीते खेलतही अरु खात ॥ हौं बड हौं बड बहुत कहावत सूधे कहत न बात । योग न युक्ति ध्यान नहिं पूजा वृद्ध भये अकुलात ॥ बालापन खेलतही खोयो तरुणापन अलसात । सूरदास औसरके बीते रहिहौ पुनि पछितात ॥ २२ ॥ राग सारंग ॥ गर्व गोविंदहि भावत नाहिं । कैसी करी हिरण्यकशिपुसों प्रगट होइ छिनमाहिं ॥ जग जानी करतूत कंसकी नरकासुर मार्यो पलमाहिं । ब्रह्मा इन्द्रादिक पछताने गर्व धारि मनमाहिं ॥ यौवन रूप राज धन धरती जान जलदकी छाहिं । सूरदास हरि भजो गर्व तजि विमुख अगतिको जाय॥२३॥ राग कान्हरा ॥ विषया जात हर्ष्यो गात । ऐसे अंध जानि तैं मूरख जो परत्रिय लपटात ॥ बरजिरहे सब कहे न मानत करि करि जतन उडात । परे अचानक त्यौं रसलंपट तनु तजि यमपुर जात ॥ यहतौ सुनी व्यासके मुखतें परदारा दुखदात ॥ रुधिर मेद मल मूत्र कठिन कुच उदर गंधगंधात । तन धन यौबन ताहित खोवत नरककी पाछे बात ॥ जो नर भले चहत तो सो तजि

सूर प्रभु गुण गात ॥ २४ ॥ अथ आत्मज्ञान ॥ राग नट ॥ जौलौं सतस्वरूप नहिं सूझत । तौलौं मृगमद नाभि बिसारे फिरत सकल वन बूझत ॥ अपनोही मुख मलिन मंदमति देखत दर्पण माहिं । ता कालिमा मेटबे कारण पचत पखारत छाहिं ॥ तेल तूल पावक पुट भरि धरि बनै न बिना प्रकाशत । कहत बनाइ दीपकी बतियां कैसे धौं तम नाशत ॥ सूरदास यह गति आपे बिनु सब दिन गने अलेखे । कहा जाने दिनकरकी महिमा अंध नयन बिनु देखे ॥ २५॥ अपुनपो आपुनही बिसरयो । जैसे श्वान काँच मंदिरमें भ्रमि भ्रमि भूसि मरयो ॥ हरि सौरभ मृग नाभि बसतहै द्रुम तृण सूंघि मरयो। ज्यों सपने में रंक भूप भयो तस करि अरि पकरयो ॥ ज्यों केहरि प्रतिबिंब देखिकै आपुन कूप परयो । ऐसे गज लखि स्फटिक शिला में दशननि जाइ अरयो ॥ मर्कट मुष्टि छाँडि नहिं दीनी घर घर द्वार फिरयो ॥ सूरदास नलनीको सुबटा कहि कौने जकरयो ॥ २६ ॥ अथ विराट् रूप वर्णन राग केदारा ॥ नैननि निरखि श्यामस्वरूप । रह्यो घट घट व्यापि सोई ज्योतिरूप अनूप ॥ चरण सप्त पताल जाके शीश है आकाश । सूर चंद्र नक्षत्र पावक सर्व तासु प्रकाश ॥ २७ ॥ अथ आरती । हरिजूकी आरती बनी । अति विचित्र रचना रचि राखी परति न गिरा गनी ॥ कच्छप अध आसन अनूप अति डांडी शेष फनी । मही सराव सप्तसागर घृत बाती शैल घनी ॥ रवि शशि ज्योति जगत परिपूरण हरत तिमिर रजनी। उडत फूल उडगन नभ अंतर अंजन घटा घनी ॥ नारदादि सनकादि प्रजापति सुर नर असुर अनी । काल कर्म गुण अरुण अंत कछु प्रभुइच्छा रचनी ॥ यह प्रताप दीप सु निरंतर लोक सकल भजनी । जाके उदित नचत नाना विधि गति अपनी अपनी ॥ सूरदास सब प्रकृति धातुमय अति विचित्र सजनी ॥ २८॥ अथ नृपविचार रागगूजरी ॥ श्रीशुकके सुनि वचन नृप लाग्यो करन विचार । झूठे नाते जगतके सुत कलत्र परिवार ॥ चलत न कोऊ सँग चलै मोरि रहैं मुख नार । आवत गाढे कामहरि देखो सूर विचार ॥ २९ ॥ राग गूजरी ॥ हरि बिनु कोऊ काम न आयो । यह माया झूठी प्रपंच लगि रतनसों जन्म गवायो॥ कंचन कलश विचित्र चित्र करि राचि पचि भवन बनायो । तामें ते तिहि छिन हीं काढ्यौ पलभर रहनि न पायो ॥ हौं तेरेही संग जरोंगी यह कहि त्रिया धूति धन खायो ॥ चलत रही चित चोरि मोरि मुख एक न पग पहुँचायो ॥ बोलि बोलि सब बोलि मित्रजन लीनो सो जिहि भायो । परयो काज अंतको बिरिया तिनिहीं आनि बँधायो ॥ आशा करि करि जननी जायो कोटिक लाड लडायो । तोरि लयो कटिहूँको डोरा तापर बदन जरायो ॥ पतित उधारन गणिका तारन सों मैं शठ बिसरायो । लियो न नाम नेकहूं धोखे सूरदास पछतायो ॥ ३० ॥ राग देवगंधार ॥ सकल ताजि भजि मन चरण मुरारि। श्रुति स्मृति अरु मुनिजन भाषत हैं मैं हूं कहत पुकारि ॥ जैसे स्वप्ने सोइ देखियत तैसे यह संसारि । जात बिलै है छिनक मात्रमें उघरत नैन किवारि ॥ बारंबार कहत मैं तोसों जन्म न जूवा हारि । पाछे भई सु भई सूरजन अजहूं समुझि सँभारि ॥ ३१ ॥ राग गूजरी ॥अजहूँ सावधान क्यों न होई । माया बिषम भुजंगनिको विष उतरयो नाहिं न तोई॥ कृष्ण सुमंत्र जियावन मूरी जिंन जग मरत जिवायो । बारंबार निकट श्रवण नि ह्वै गुरु गारुडी सुनायो॥ भौतिक देह जीय अभिमानी देखत ही दुख लायो। कोउ कोउ उबरयो साधु संगति जिंन राम जीवन पायो ॥ जाग्यो मोह मयूर प्रति छूटे सुयश गीतके गाये । सूर मिटै अज्ञान मूरछा ज्ञान मूलके खाये ॥ ३२ ॥ नृपको वचन शुकदेव प्रति ॥ नमो नमो करुणा निधान । चितवत कृपाकटाक्ष तुम्हारी मिटिगयो तम अज्ञान ॥ मोहनिशाको लेश रह्यो नहिं भयो विवेक

विहान । आतमरूप सकल घट दरश्यो उदय कियो रवि ज्ञान ॥ मैं मेरी अब रही न मेरें छुट्यो देह अभिमान । भावै परो आजुही यह तनु भावै रहो अमान ॥ मेरे जिय अब यहै लालसा लीला श्रीभगवान । श्रवण करौं निशि बासर हित सों सूर तुम्हारी आन ॥ ३३ ॥ अथ शुकदेववचन राग सारंग ॥ कह्यो शुक सुनो परीक्षितराव । ब्रह्म अगोचर मन बाणीते अगम अनंत प्रभाव ॥ भक्तन हित अवतार धारि जो करि लीला संसार । कहौं ताहि जो सुनै चित्त दै सूर तरै सो पार ॥ ३४ ॥ अथ नारद ब्रह्मा संवाद रागविलावल ॥ नारद ब्रह्माको शिरनाई । कह्यो सुनो त्रिभुवन पति राई ॥ सकल सृष्टि यह तुमते होई । तुम सम द्वितिया और न कोई ॥ तुम हौ धरत कौनको ध्यान । यह तुम मोसो कहो बखान ॥ कह्यो कर्ता हर्ता भगवान । सदा करत मैं तिनको ध्यान ॥ नारदसों कह्यो विधि या भाई । सूर कह्यो त्योंहीं शुक गाई ॥ ३५ ॥ अथ चतुर्विंशति अवतार वर्णन ॥ राग धनाश्री ॥ जो हरि करै सो होई कर्ता नाम हरी । ज्यों दर्पण प्रतिबिंब त्यों सब सृष्टि करी ॥ आदि निरंजन निराकार कोउ हुतो न दूसर । रचो सृष्टि विस्तार भई इच्छा इक औसर ॥ त्रिगुण तत्त्वते महातत्त्व महातत्त्वते अहंकार । मन इंद्रिय शब्दादि पंची ताते किये विस्तार ॥ शब्दादिकते पंचभूत सुन्दर प्रगटाये । पुनि सबको रचि अंड आपमें आप समाये ॥ तीनलोक निजदेहमें राखे करि विस्तार । आदि पुरुष सोई भयो जो प्रभु अगम अपार ॥ नाभिकमलते आदिपुरुष मोको प्रगटायो । खोजत युग गए बीति नालको अंत न पायो ॥ तिन मोसों आज्ञा करी रचि सब सृष्टि उपाई । स्थावर जंगम सुर असुर रचे सबै मैं आई ॥ मच्छ कच्छ बाराह बहुरि नरसिंह रूप धरि । बामन बहुरो परशुराम पुनि राम रूप करि ॥ बासुदेव सोई भयो बुध भयो पुनि सोई सोई । कल्की होइहै और न द्वितिया कोई ॥ ए दश हैं अवतार कहौं पुनि और चतुर्दश । भक्तबछल भगवान् धरे वपु भक्तनिके वश ॥ अज अविनाशी अमर प्रभु जन्मै मरै न सोई । नटवर कला करत सकल बूझै विरला कोई ॥ सनकादिक पुनि व्यास बहुरि भए हंसरूपहरि । पुनि नारायण ऋषभदेव बहुरचो धन्वंतरि ॥ नारद दत्तात्रेय हरि यज्ञ पुरुष वपु धारि ॥ कपिल मोहनी पृथु हयग्रीव सुधुव उद्धारि ॥ भूमिरेणु कोऊ गनै और नक्षत्रन ससुझावै । कह्यो चहे अवतार अंत सोऊ नहिं पावै ॥ सूर कहौ क्यों कहि सकै जन्म कर्म अवतार । कहे कछुक गुरुकृपाते श्रीभागवत अनुसार ॥ ३६ ॥ ब्रह्मा उत्पत्ति चतुः श्लोक प्रति राग विलावल ॥ ब्रह्मा यों नारदसों कह्यो । जब मैं नाभिकमलते भयो ॥ खोजत नाल कितो युत गयो । तउ मैं कछू मरम ना लह्यो ॥ भई आकाशवाणी तिहिं बार । तू ए चारि श्लोक विचार ॥ इनैं विचारिते ह्वै है ज्ञान । ऐसी भाँति कह्यो भगवान ॥ ब्रह्मा जो नारदसों कही । व्यास सोई नारदसों लही ॥ व्यास कही मोसों विस्तार । भयो भागवत या प्रकार ॥ सोई मैं अब तोसों भाखौं, तेरे हृदय न संशय राखौं ॥ मूल भागवत को एइ चार सूर भली विधि इन्हैं विचार ॥ ३७ ॥ अथ चतुःश्लोकी श्रीमुखवाक्य । राग कान्हरा ॥ पहिले होहिं हौं तब एक । अमल अकल अज भेद विवर्जित सुनि विधि विमल विवेक ॥ सो हौं एक अनेक भाँति करि शोभित नाना भेष । ता पाछे इन गुणनि गएते हौं रहिहौं अवशेष ॥ झूठोहै सांची सी लागति मम माया सो जानि । रवि शशि राहु संयोग बिना ज्यों लीजत है मन मानि । ज्यों गज स्फटिक मध्य न्यारो बसि पंच प्रपंच बिभूत ॥ ऐसे मैं सबहुनतै न्यारो मणि ग्रंथित ज्यों सूत ॥ पहिले ज्ञान विज्ञान द्वितिया पद तृतीय भक्तिको भाव । सूरदास सोई समष्टि करि व्यष्टि दृष्टि मन लाव ॥ ३८ ॥

इति श्रीकविवरसूरदासकृते श्रीमद्भागवते सूरसागरे द्वितीयः स्कन्धः समाप्तः ॥

अथ कवि सूरदास कृत—

श्री सूरसागर।

तृतीय स्कन्ध।

अथ शुकवचन ॥ राग विलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमरन करौ। हरि चरणारबिंद उर धरौ ॥ शुकदेव हरिचरणन चितलाई। राजासों बोल्यो या भाई ॥ कहौं हरि कथा सुन चित लाई। सूर तरौ हरिके गुण गाई ॥ १ ॥ उद्धव विदुर संवाद। कृष्णज्ञान संदेश मैत्रेय निकट बतावन राग विलावल ॥ जब हरिजू भए अंतर्ध्यान। कहि उद्धवसों तत्त्व ज्ञान ॥ कह्यो मैत्रेयसों समुझाई। यह तुम विदुरहि कहियो जाई। बद्रिकाश्रम दोऊ मिलि आए। तीरथ करत गए अकुलाए ॥ उद्धव बिदुर तहां मिलि गए। दोऊ कृष्ण प्रेम वश भए ॥ उद्धव कह्यो हरि कह्यो जो ज्ञान। कहिहैं तुम्हैं मैत्रेय आन ॥ यह कहि उद्धव आगे चले। बिदुर मैत्रेय बहुरो मिले ॥ जो कछु हरिसों सुनियो ज्ञान। कह्यो मैत्रेय ताहि बखान ॥ सोइ मोहिं दियो व्यास सुनाई। कहौं सो सूर सुनो चितलाई ॥ २ ॥ अथ विदुर जन्म वर्णन ॥ विदुर सुधर्मराइ अवतार। ज्यों भयो कहौं सुनो चितधार ॥ मांडव्य ऋषि जब शूली दयो। तब सो काठ हरचो ह्वै गयो ॥ माँडव्य धर्मराजपै आयो। क्रोधवंत यह बचन सुनायो ॥ कौन पाप मैं ऐसो कियो। जाते मोकूं शूली दियो ॥ धर्मराज कह सुन ऋषिराई। क्षमा करौ तौ देउँ सुनाई ॥ बाल अवस्थामें तुम धाई। उडत भँभीरी पकरी जाई ॥ ताहि शूलपर शूली दियो। ताको बदलो तुमसों लियो ॥ ऋषि कहै बाल दशा अज्ञान। भयो पाप मोते बिन जान ॥ बालापनको लगत न पाप। ताते देउँ मैं तुम्हें शराप ॥ दासीसुत तू ह्वै है जाई। सूर विदुर भयऊसो आई ॥ ३ ॥ अथ सनकादिकावतार ॥ ब्रह्मा ब्रह्मरूप उर धारि। मनसों प्रगट कियो सुत चारि ॥ सनक सनंदन सनतकुमारि। बहुरि सनातन नाम ए चारि ॥ ए चारों जब ब्रह्मा किये। हरिको ध्यान धरचो तिहिं हिये ॥ ब्रह्मा कह्यो सृष्टि विस्तारो। उन यह बचन हृदय नहिं धारो ॥ कह्यो यहै हम तुमसों चहैं। पांच बरसके नितही रहैं ॥ ब्रह्मासों यह वर तिहि पाई। हरि चरणन चित्त राख्यो लाई ॥ शुकदेव कह्यो जैसे प्रकार। सूर कहै ताही अनुसार ॥ ४ ॥ अथ रुद्र उत्पत्ति वर्णन। सनकादिकनि कह्यो नहिं मान्यो। ब्रह्मा क्रोध बहुत मन आन्यो ॥ तब इक पुरुष भौंहते भयो। होत समय तिहि रोवन ठयो ॥ ताको नाम रुद्र बिधि राख्यो। ताको सृष्टि करन को भाख्यो ॥ तिन बहु सृष्टि तामसी करी। सो तामस करि मन अनुसरी ॥ ब्रह्मा मनसों भली न भाई। सूर सृष्टि तब अवर उपाई ॥ ५ ॥ अथ सप्तऋषि चार मनु उत्पत्ति वर्णन ॥ ब्रह्मा सुमिरन करि अभिराम। प्रगट किये ऋषि सप्त अभिराम ॥ भृगु मरीचि अंगिरा वसिष्ठ। अत्रि पुलह पुनि भयो पुलस्त्य ॥

पुनि दक्षादि प्रजापति भये । स्वयंभू आदि चार मनु जये ॥ इनते उपजी सृष्टि अपार । सूर कहां लौं करै विस्तार ॥ ६ ॥ अथ सुर असुर उत्पत्ति वर्णन ॥ राग बिलावल ॥ ब्रह्मा ऋषि मरीचि निर्मायो । ऋषि मरीचि कश्यप उपजायो ॥ सुर अरु असुर कश्यपके पुत्र । भ्रात विमात आप में शत्रु ॥ सुर हरि भक्त असुर हरि द्रोही । सुर अति क्षमी असुर अति कोही ॥ उनमें नित उठि होइ लराई । करै सुरन की कृष्ण सहाई ॥ तिन हित जो जो किये अवतार।कहौं सूर भागवत अनुसार॥७॥ अथ बाराह रूप वर्णन । राग बिलावल ॥ ब्रह्माते स्वयंभू मनु भयो ॥ तासों सृष्टि करनको कह्यो ॥ तिन ब्रह्मासों कहो शिर नाई । सृष्टि करौं सुरहै किहि भाई ॥ ब्रह्मा हरिपद ध्यान लगायो ॥ तब हरि वपु बराह धरि आयो ॥ ह्वै वराह पृथ्वी जब लायो । सूरदास शुक त्यौंहीं गायो ॥ ८ ॥ राग धनाश्री ॥ हरि गुण कथा अपार पार नाहिं पाइये ॥ हरि सेवत सुख होइ हरी गुण गाइये ॥ ब्रह्मपुत्र सनकादि गये बैकुंठ एक दिन । द्वारपाल जय विजय हुते बरज्यो तिहिको पुन ॥ शाप दियो तब क्रोध ह्वै असुर होउ संसार । हरि दर्शनको जात क्यों रोक्यो बिना विचार ॥ हरि तिनसों कह्यो आइ भली शिक्षा तुम दीनी । बरज्यौ आवत तुम्हैं असुर बुद्धी इन कीनी ॥ तिन्हैं कह्यो संसारमें असुर होउ अब जाइ । तृतियहि जन्म विरुद्ध करि मोसों मिलिहौ आइ ॥ कश्यप की दिति नारि गर्भ ताके दोउ आइ । तिनके तेज प्रताप देवतनि बहु दुख पाए ॥ गर्भ माहिं शत वर्ष रहि प्रगट भये पुनि आइ । तिन दोउनको देखिकै सुर सब गए डराइ ॥ हिरण्याक्ष इक भयो हिरण्यकशिपु भयो दूजो । तिनके बलको इंद्र वरुण कोऊ नहिं पूजो ॥ हिरण्याक्ष तब पृथ्वी को ले राख्यो पाताल । ब्रह्मा विनती करि कह्यो दीनबंधु गोपाल ॥ तुम बिन दुतिया और कौन जो असुर सँहारै । तुम बिन करुणासिंधु कौन पृथ्वी उद्धारै । तब हरि धरि बाराह वपु ल्याए पृथ्वी उठाइ । हिरण्याक्ष लेकर गदा तुरतहि पहुँच्यो आइ ॥ असुर कोप ह्वै कह्यो बहुत तुम असुर संहारै । अब लेहौं वह दांव छांडिहौं नहिं बिन मारे ॥ यह कहिकै मारी गदा हरिजू ताहि सँभारि । गदा युद्ध तासों कियो असुर न मानी हारि ॥ तब ब्रह्मा करि विनय कह्यो हरि ताहि सँहारचो । तुम तौ लीला करत सुरन मन परो धकारो ॥ मारचो ताहि विचारि हरि सुर सुनि भयो हुलास । सूरदासके प्रभु बहुरि कियो बैकुंठ निवास ॥ ९ ॥ अथ कपिल देवमुनि अवतार वर्णन ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमरनि करौ ॥ हरिको ध्यान सदा हिय धरौ ॥ ज्यों भयो कपिलदेव अवतार । कहौं सो कथा सुनौ चित धार ॥ कर्दम पुत्र हेतु तप कियो । तासु नारि हूं इक व्रत लियो ॥ हरिसों पुत्र हमारे होई । और जगत सुख हूं पुनि होई ॥ नारायण तिनको वर दियो । मोसों और न कोई वियो ॥ मैं लेहौं तुम गृह अवतार । तप तजि करो भोग संसार ॥ दुहुँ तब तीरथ माहिं न्हवायो । सुंदर रूप दुहूं जन पायो ॥ भोग समग्री जुरी अपार । विचरन लागे सुख संसार ॥ तिनके कपिलदेव सुत भये । परम भाग्य मानि तिहिं लये ॥ १० ॥ अथ कर्दम प्रसंग राग बिलावल ॥ कर्दम कह्यो तिन्हैं शिरनाई ॥ आज्ञा होइ करौं तप जाई ॥ अभय अछेद रूप मम जान । जो सब घटहै एक समान ॥ मिथ्या तनुको मोह बिसारि । जाइ रह्यो भावै गृह दारि ॥ करत इंद्रिय नि चेतन जोई ॥ मम स्वरूप जानो तुम सोई ॥ तनु अभिमान जाको नश जाई । सो नर रहै सदा सुख पाई ॥ जब मम रूप देह तजि जाई । तब सब इंद्री सक्त नशाई ॥ ताकों जानि मग्न ह्वै रहै । देह अभिमान ताहि नहिं दहै ॥ और जो ऐसी जानै नाहीं । रहै सो सदा काल भय माहीं ॥ यह सुनि कर्दम वनहिं सिधाए । वहां जाय हरिपद चित लाए ॥ हरि स्वरूप सब घट पुनि जान्यो । ऊंख

माहिं ज्यों रस है सान्यों ॥ जोयो तिनि आतम रस सार। ऐसी विधि जान्यो निरधार ॥ य लखि गहि हरिपद अनुराग। मिथ्या तनुको कीनो त्याग ॥ तनुही त्यागिकै हरि पद पायो। नृप सुनि हरि स्वरूप उर लायो ॥ ११ ॥ अथ देवहूति माताको प्रश्न कपिल मुनिसों ॥ इहाँ कपिल सो माता कहो। प्रभु मेरो अज्ञान तुम दहो ॥ आतमज्ञान देहु समुझाई। जाते जन्म मरण दुख जाई ॥ कह्यो कपिल कहों तुमसों ज्ञान। मुक्त होइ नर ताको जान ॥ मुक्त त्रिविधके लक्षण कहौं। तेरे सब संदेहै दहौं ॥ मम सो रूप जो सब घट जान। मग्न रहे तजि उद्यम आन ॥ अरु सुख दुख कछ मन नहिं ल्यावै। माता सो नर मुक्त कहावै ॥ और जु मेरो रूप न जानै। कुटुंब हेत नित उद्यम ठानै ॥ जाको इहि विधि जन्म सिराई। सो नर मरिकै नरक सिधाई ॥ ज्ञानी संगति उपजै ज्ञान। अज्ञानी सँग हो अज्ञान ॥ ताते साधु संग नित करना। जाते मिटै जन्म अरु मरना ॥ स्थावर जंगममें मोहिं जानै। दयाशील सबसों हित ठानै ॥ सत संतोष दृढ करै समाध। माता ताको कहिये साध ॥ काम क्रोध लोभ परिहरै। द्वंद्व रहित उद्यम नहिं करै ॥ ऐसे लक्षण हैं जिहि माहीं। माता तिनको साधु कहाहीं ॥ जाको काम क्रोध नित व्यापै। अरु पुनि लोभ सदा संतापै ॥ ताहि असाधु कहत कवि सोई। साधु भेष धरि साधु न होई ॥ संत सदा हरिके गुण गावैं। सुनि सुनि लोग भक्तिको पावैं ॥ भक्ति पाइ पावैं हरि लोक। तिन्हैं न व्यापै हर्ष न शोक ॥ देवहूति कह भक्ति सु कहिये। जाते हरिपुर बासा लहिये ॥ १२ ॥ भक्ति प्रश्न ॥ अरु सु भक्ति कीजै किहिं भाई ॥ सोऊ मोको देहु बताई ॥ माता भक्ति चारि परकार। सत रज तम गुण सुधा सार॥ भक्ति एक पुनि बहुविधि होई। ज्यों जल रंग मिलि रंगसु होई॥ भक्ति सात्त्विकी चाहत मुक्त। रजोगुणी धन कुटुँबअनुरक्त ॥ तमोगुणी चाहै या भाई। ममबैरी क्योंही मरजाई ॥ सुधा भक्ति मोक्ष को चाहे। मुक्तिहूंको नाहीं अवगाहै। मन क्रम वच मम सेवा करै ॥ मनते भव आशा परिहरै ॥ ऐसो भक्त सदा मोहिं प्यारो। इक छिन जाते रहौं न न्यारो ॥ ताके मैं हित मम हित सोई ॥ जा सम मेरो और न कोई। त्रिविध भक्ति मेरे है जोई॥ जो माँगै तिहि देहुँ मैं सोई ॥ भक्त अनन्य कछू नहिं माँगै ॥ ताते मोहिं सकुच अति लागै ॥ ऐसो भक्त जानि है जोई। जाके शत्रु मित्र नहिं दोई ॥ हरिमाया सब जग संतापै। ताको माया मोह न व्यापै ॥ १३ ॥ हरि माया प्रश्न। कपिल कहो हरिको निजरूप ॥ अरु पुनि माया कौन स्वरूप ॥ देवहूति जब याविधि कह्यो। कपिलदेव सुनि अति सुख लह्यो ॥ कह्यो हरिके भय रवि शशि डरै। वायु वेग अतिशय नहिं करै ॥ अगिनि रहै जाके भय माहीं। सो हरिमाया जा वश माहीं ॥ मायाको त्रिगुणातम जानो। सत रज तम ताको गुण मानों ॥ तिन प्रथमे महतत्त्व उपायो। ताते अहंकार प्रगटायो ॥ अहंकार कियो तीन प्रकार। मनते ऋषि मन सात रु चार ॥ रजगुणते इंद्रिय विस्तारी। तम गुण ते तन्मात्रा सारी ॥ तिनते पांच तत्त्व प्रगटायो। इहि सबको इक खंड बनायो ॥ अंड सु जड़ चेतन नहिं होई। तब हरिपद माया मन पोई ॥ ऐसी विधि बिनती अनुसारी। महाराज बिनु शक्ति तुम्हारी ॥ यह अंडा चेतन नहिं होई। करौ कृपा हरि चेतन सोई॥ तामें शक्ति आपुनी धरी। चक्ष्वादिक इंद्री विस्तारी ॥ चौदह लोक भये तामाहिं। ज्ञानी तिहि वैराट कहाहिं ॥ आदि पुरुष चैतन्य को कहत। जोहै तिहूं गुननते रहित ॥ जड स्वरूप सब माया जानो। ऐसो ज्ञान हृदयमें आनो ॥ जबलगि है जियको अज्ञान। चेतनको सो सकै न जान ॥ सुत कलत्र को अपनो मानै। अरु तिनसों ममत्व बहु ठानै ॥ जो कोइ सुख दुख सपने जोई। सत्य मानले तिनको सोई ॥ जब

जागै तब सत्त न मानै। ज्ञान भए त्योहीं जग जानै ॥ चेतन घट घट है या भाई। ज्यों घट घट रवि प्रभा लखाई ॥ घट उपजो बहुरो नाशि जाई। रवि नित रहै एक ही भाई ॥ जा तनको है जन्म रु मरना। चेतन पुरुष अमर अज बरना ॥ ताको ऐसो जानै जोई। ताके तिनसों मोह न होई ॥ जबलौं ऐसो ज्ञान न होई। वर्ण धर्म को तजै न सोई ॥ संतनकी संगत नित करै। पापकर्म मनते परिहरै ॥ अरु भोजन सो इहि विधि करै। आधा उदर अन्नसों भरै ॥ आधेमें जल वायु समावै। तब तिहिं आलस कबहुँ न आवै ॥ और जु परालब्ध सों आवै। ताहीको सुखसों बरतावै ॥ बहुतेको उद्यम परिहरै। निर्भय ठौर बसेरो करै ॥ तीरथहूमें जो भय होई। ताहूको तू परिहरै सोई ॥ बहुरो धरै हृदय महँ ध्यान। रूप चतुर्भुज श्याम सुजान ॥ प्रथमै चरण कमलको ध्यावै। तासु महातम मनमें ल्यावै ॥ गंगा परसि उनहिंको भई। शिव शिवता इनहींसो लही ॥ लक्ष्मी इनको सदा पलोवै। बारंबार प्रीतिको जोवै। जंघनको कदली सम जानै। अथवा कनक थंभ सम मानै ॥ उर अरु ग्रीव बहुरि हिय धारै। तापर कौस्तुभमणिहि बिचारै ॥ भृगुलत्ता लक्ष्मी तहँ जानी। नाभि कमल चित धारै ध्यानी ॥ मुख मृदुहास देख सुख पावै तासों प्रेम सहित मन लावै ॥ नैन कमल दलसे अनियारे। दरशत तिनै कटै दुख भारे ॥ नासा कीर परम अति सुंदर। दरशत ताहि मिटै दुख द्वंदर ॥ कूप समान श्रौन दोउ जानै। मुखको ध्यान इसी विधि ठानै ॥ केसर तिलकरेख अति सोहै। ताके पटतर को जगको है ॥ मृगमद बिंदा तामें राजै। निरखत ताहि काम शत लाजै ॥ मोर मुकुट पीतांबर सोहै। जो देखे ताको मन मोहै। श्रवणनि कुंडल परम मनोहर। नख शिख ध्यान धरै यों उर धर ॥ क्रम क्रम करि यह ध्यान बढ़ावै। मन कहुँ जाय फेरि तहँ आवै ॥ ऐसे करत मगन होइ सोई ॥ बहुरो ध्यान सहजही होई ॥ चितवत चलत न चितते टरै ॥ सुत त्रिय धनकी सुधि बिसमरै ॥ तब आतम घट घट दरशावै। मग्न होइ तन मन बिसरावै ॥ भूंख प्यास ताके नहिं व्यापै। सुख दुख तमिको नहिं संतापै ॥ जीवनमुक्ति रहै या भाई। ज्यों जल कमल अलिप्त रहाई ॥ १४ ॥ देवहूतीप्रश्न सुगम उपाय राग बिलावल ॥ देवहूति यह सुनि पुनि कह्यो। देह ममत्व ढेर मुहिं रह्यो ॥ कर्दम मोहन मनतें जाई। ताते कहिये सुगम उपाई ॥ कपिल कह्यो तोहिं भक्ति सुनाऊं। अरु ताको बेवरो समुझाऊं ॥ मेरी भक्ति चतुर विधि करै। सुने सुने ते सब निस्तरै ॥ जो कोउ दूरि चलनको करै। क्रम क्रम करि डग डग पग धरै ॥ इक दिन सुबहां पहुँचे जाई ॥ त्यों मम भक्त मिलै मोहिं आई ॥ चलत पंथ कोउ थाक्यो होई। कहै दूरि डरि मरिहै सोई ॥ जो कोउ ताको निकट बतावै। धीरज धरि सु ठिकाने आवै ॥ तमोगुणी रिपु मरनो चाहै॥ रजोगुणी धन कुटुँब अवगाहै॥ भक्त सात्विकी सेवै संत। लखै तबै मूरति भगवंत॥ मुक्ति मनोरथ मनमें ल्यावै॥ मम प्रसादते सो वह पावै॥ निर्गुण मुक्तिहुको नहिं चहै। मम दर्शनहीते सुख लहै॥ ऐसो भक्त सुमुक्त कहावै॥ सो बहुरचो चलि भवनहिं आवै॥ क्रम क्रम ही करि सब गति होई। मेरो भक्त नष्ट नाहिं होई ॥ १५ ॥ हरिते बिमुखै होइ नर जोई॥ मरिकै नरक परत है सोई ॥ तहां जातना बहुविधि पावै। बहुरौ चौरासीमें आवै ॥ चौरासी भ्रमि नरतन पावै। पुरुष-वीर्य सों तिय उपजावै ॥ मिलि रज वीरज ऐसी होई। द्वितिय मास शिर धारै सोई ॥ तीजे मास हस्त पग होवै। मास चौथि कटि अँगुरी सोवै। प्राणवायु पुनि आय समावै ताको इत उत पवन चलावै। पंचम मास हाड बलपावै॥ छठे मास इन्द्री प्रगटावै॥ सप्तम चेतनता लहै सोई। अष्टमास सम्पूरण होई॥ नीचे शिर अरु ऊंचे पांई॥ जठर अग्नि को व्यापै ताई॥ कष्ट बहुत सो पावैजहां॥ पूर्व जन्म

सुधि आवै तहां ॥ नवम मास पुनि बिनती करै।महाराज यह दुख मम टरै॥यांते जो मैं बाहर परौं। अहर्निश भक्ति तुम्हारी करौं ॥ अरु मोपै प्रभु किरपा कीजै। भक्ति अनन्य आपुनी दीजै ॥ अरु यह ज्ञान न चितते टरै। बार बार यों बिनती करै॥दशम मास पुनि बाहरआवै।तब यह ज्ञान सकल बिसरावै ॥ बालापन दुख बहुविधि पावै। जीभ बिना कहि कहा सुनावै ॥ कबहूं विष्ठामें रहजाई कबहूं माखी लागै आई ॥ कबहूं जुवां देइ दुखभारी।तिनको सो नाहिं सकै निवारी ॥ पुनि जब षष्ठ वर्षको होई। इत उत खेलन चाहत सोई॥माता पिता निवारैं जबहीं। मनमें दुख पावै सो तबहीं। माता पिता पुत्र तेहि जानै। वह उनसे तब नातो मानै॥वरसैं दश व्यतीत जब होई। बहुरि किशोर होय पुनि सोई ॥ सुंदर नारी ताहि विवाहै। अशन बसन बहुविधि सो चाहै ॥ विना भाग सो कहँते आवै। तब वह मनमें बहु दुख पावै ॥पुनि लक्ष्मी हित उद्यम करै ॥ अरु जब उद्यम खाली परै ॥ तब वह रहै बहुत दुखपाई ॥ कहँ लौं कहौं कह्यो नहिं जाई ॥ बहुरो ताहि बुढापो आवै। इन्द्री शक्ति सकल मिट जावै॥कान न सुनै आँखि नाहिं सूझै।बात कहै सो कछु नाहिं बूझै ॥ खैबेको जब नाहिंन पावै। तब बहु बिधि मनमें पछतावै ॥ पुनि दुख पाइ पाइ सो मरै। बिनु हरि भक्ति नरकमें परै। नरक जाइ पुनि बहु दुख पावै। पुनि पुनि योंहीं आवै जावै ॥ तऊ नहीं हरि सुमिरण करै। ताते बार बार दुख भरै ॥ १६ ॥ भक्त महिमा ॥ भक्त सकामीहूँ जो होई। क्रम क्रम करिकै उधरै सोई ॥ शनै शनै विधि पावै जाई। ब्रह्म संग हरिपदहि समाई ॥ निष्कामी वैकुंठ सिधावै। जन्म मरन तिहि बहुरि न आवै ॥ त्रिविध भक्ति अब कहों सुनु सोई। जातेंहरिपद प्रापति होई ॥ एक कर्मयोगको करै। वर्ण आश्रम धरि निस्तरै ॥ अरु अधर्म कबहूं नहिं करै। ते नर याही विधि निस्तरै ॥ एक भक्ति योग को करै। हरि सुमिरन पूजा विस्तरै ॥ हरि पद पंकज प्रीति लगावै। क्रम क्रम करि हरि पदहि समावै। ते हरिपद को याविधि पावै ॥ क्रम क्रम करि हरिपदहि समावै ॥ एक ज्ञान योग विस्तरै। ब्रह्म जानि सबसों हित करै ॥ कपिलदेव बहुरो यों कह्यो। हमैं तुमैं संवाद जु भयो ॥ कलियुगमें यहि सुनिहै जोई। सो नर हरिपद प्रापति होई ॥ १७ ॥ देवहूति हरिपदप्राप्ति देवहूति ज्ञानको पाई। कपिलदेवको कह्यो शिरनाई ॥ आगे मैं तुमको सुत मान्यो। अब मैं तुमको ईश्वर जान्यो ॥ तुम्हरी कृपा भयो मुहिं ज्ञान। अब न व्यापिहै मोहिं अज्ञान ॥ पुनि बन जाइ दियो तनु त्याग। गहिकै हरिपदसों अनुराग ॥ कपिलदेव सांख्य जो गायो। सो राजा मैं तुम्हैं सुनायो ॥ याहि समुझि जु रहै लवलाई। सूर बसै सो हरिपुर जाई ॥१८॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवरश्रीसूरदासकृते तृतीयस्कंधः समाप्तः ॥ ३ ॥





अथ कविवर सूरदास कृत-

श्रीसूरसागर.

चतुर्थस्कन्ध।

(राग बिलावल) हरि हरि हरि हरि सुमिरन करों। हरिचणारविन्द उर धरों॥ कहौं अब दत्तात्रेय अवतार। राजा सुनौ ताहि चित धार॥ अत्रि पुत्र हित बहु तप कियो। तासु नारिहूँ यह व्रत लियो॥ तीनो देव तहां मिलिआयो। तिनसों ऋषि यह वचन सुनायो॥ मैं तो एक पुरुषको ध्यायो। अरु एकहि सों मैं चित लायो॥ अपने आवनको कहो कारण। तुम हौ सकल जगत निस्तारण॥ कह्यो तुम एक पुरुष जे ध्यायो। ताको दरशन काहू पायो॥ ताकी शक्ति पाइ हम करैं। प्रतिपालो बहुरो संहरैं॥ हम तीनोंहैं जग करतार। मांग लेहु हमसों वर सार॥ कह्यो विनय मेरी सुनि लीजै। ज्ञानमान पुत्र मोहिं दीजै॥ विष्णुअंश दत्त अवतरे। रुद्र अंश दुर्वासा ढरे॥ ब्रह्म अंश चंद्रमा भयो। अत्रि अनसूयाको सुख दयो॥ यों भए दत्तात्रेय अवतार। सूर कह्यो भागवत अनुसार॥ १॥ शुकदेव वचन॥ हरि हरि हरि सुमिरन करों। हरि चरणारविन्द उर धरों॥ शुकदेव हरि चरणन चित लाई। राजासों बोल्यो या भाई॥ कहौं हरिकथा सुनौ चित लाई। सूर तरचो हरिके गुण गाई॥ २॥ यज्ञ पुरुष अवतार वर्णन॥ दक्षके उपजीं पुत्री सात। तिनमें सती नाम विख्यात॥ महादेव को सो पुनि दई। यज्ञ दक्षकेमें सो मुई। तहां कियो हरि यज्ञ अवतार॥ सूर कह्यो भागवत अनुसार॥ ३॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौ। हरि चरणारविन्द उर धरौ॥ कहौं अब यज्ञ पुरुष अवतार। राजा सुनौ ताहि चित धार॥ सती दक्षके पुत्री भई। दक्ष सुमहादेवको दई॥ ब्रह्मा महादेव ऋषि सारे। एक दिन बैठे सभा मँझारे॥ दक्ष प्रजापति हूँ तहां आए। करि सन्मान सबनि बैठाये॥ काहू समाचार कछु पूछे। काहूसे बहुरो उन पूँछे॥ शिवकी लागी हरिपद तारी। ताते नहिं शिव आँख उघारी॥ महादेव बैठे रहि गए। दक्ष देखिके तिहि दुख तए॥ महादेवको भाषत साधु। मैं तो देखो बहुत असाधु॥ यज्ञ भाग ताको नहिं दीजै। मेरो कह्यो मान करि लीजै॥ नन्दी हृदय भयो सुनि ताप। दियो ब्राह्मणनको तिन शाप॥ श्रुति पढिके तुम नहिं उद्धरि हौ। विद्या बेंचि जीविका करिहौ॥ भृगु तब कोप होय तहँ कह्यो। तै शराप सबहुनको दियो॥ महादेव हित जो तप करिहै। सोऊ भव जलते नहिं तरिहै॥ दक्ष प्रजापति यज्ञ रचायो। महादेवको नहीं बुलायो॥ सुर गंधर्व जे नेवति बुलाये। ते सब वधू सहित तहां आये॥ सती सबनि तिन्ह आवत देखी। शिवसों बोली वचन विशेखी॥ चलिए दक्ष-गेह हम जाहीं। यद्यपि हमें बुलायो नाहीं॥ मोको तो यह अचरज आयो। उन हमको कैसे विसरायो॥ गुरु पितु गृह विनु बोले जैये। यहै नीति नाहीं सकुचैये॥ शिव कह्यो तुम भली नीति

T

सुनाई। पै वह मानतहै शत्रुताई॥ वहां गये ते होइ अपमान। तौ यह भली बात नहिं जान॥ दुर्जन वचन सुनत दुख जैसो। बाणलगे दुख होय न तैसो॥ मम सतराई हृदये आन। करिहै तेरोऊ अपमान॥भये अपमान वहांतू मरिहै। जो मम वचन हृदय नहिं धरिहै॥सती कह्यो मम भगनिनि सात। सबै बोलाई हैंहै मात॥ मोहूंको अब आज्ञा दीजै। महाराज अब बिलँब न कीजै॥बारंबार सती जब कह्यो। तब शिव अंतर्गत यों लह्यो॥ सती सदा मम आज्ञाकारी। कहत जु या विधि बारंबारी॥ देखत है कछु होवनहारी। सो काहू पै जाइ न टारी॥ गणन समेत सती तहँ गई। तासों दक्ष बात नहिं कही॥ सती जानि अपनो अपमान। शिवको वचन कियो अनुमान॥ कह्यो वहां अब गयो न जाई। बैठ गई शिर नीचे नाई॥ शिव आहुतिकि बैर जब आई। विप्रन दक्ष पूंछियो जाई॥ शिवनिन्दा कहि तिनसों भाष्यो। मैं तुमही पहिलेहि कहि राख्यो॥ मेरो वचन मान करि लेहू। शिव निमित्त आहुति मत देहू॥ तब ह्वै क्रोध सती तिहि कही। तैं शिवकी महिमा नहिं लही। महादेव ईश्वर भगवान। शत्रु मित्र वहि एक समान॥ तैं अज्ञान जो करि शत्रुताई। उनकी महिमा तैं नहिं पाई॥ पिता जानि तोको नहिं मारों। अपनोही मैं आप सँहारों॥ योगधारणाकरि तनु त्यागो। शिवपद कमल माहिं अनुरागो॥ बहुरि हिमालय के अवतरीं। समयांतर हर बहुरो बरी॥ह्यां शिवगणनि उपद्रव कियो। तब भृगुऋषि उपाय यह ठयो॥ आहुति यज्ञकुंडमें डारि। कह्यो पुरुष उपजै बल भारि॥ पुरुष कुंडते प्रगट जु भए। भृगुके निकट चले सब गए॥ भृगु कह्यो करत यज्ञको नास। इनको ह्यांते देहु निकास॥ शिवके गण तिहि बहुतै मारे। ते गण शिवते जाइ पुकारे॥ शिव ह्वै क्रोध इक जटा उपारी। वीरभद्र उपज्यो बल भारी॥ वीरभद्रको तहां पठायो। तासों इहि विधि कहि समुझायो॥ दक्ष शिरकाटि कुंडमें डारी। आवौ बेगि न करौ अबारी॥ वीरभद्र दक्षको मारचो। अरु भृगु ऋषिको केश उपारचो॥ हाथ पाँय बहुतनके काटे। आइ नवायो शिवहिं ललाटे॥ तब सुर ऋषि ब्रह्मापै जाय। दियो सकल वृत्तान्त सुनाय॥ कह्यो ब्रह्मा शिवनिन्दा जहां। बुरो कियो तुम बैठे तहां॥ ब्रह्मा तिहिलै शिवपै आये। शिव प्रणाम करि ढिग बैठाये॥ शिवको सबन कियो परमान। भोलानाथ लियो सो मान॥ ब्रह्मा शिवको वचन सुनायो। दक्ष तुम्हारो मर्म न पायो॥ जैसो करचो सो तैसो पायो। अब वाको तुम फेरि जिवायो॥ शिव कह्यो मेरे नहिं शत्रुताई॥सती मुई यह मनमें आई॥ अब जो तुमरी आज्ञा होई। छांडि विलंब कीजिए सोई। ब्रह्मा विष्णु रुद्र तहँ आए। भृगु ऋषिकेश आपुने पाए॥ घायल सब नीके ह्वै गए। सुर ऋषि सबके भाए भए॥ दक्ष शीश कुंडमें जरचो। ताके बदले अज शिर धरचो॥ महादेव तेहि फेरि जिवायो॥ दक्षजानि यह शीश नवायो॥ बिप्रन यज्ञ बहुरि विस्तारचो। वेद भली विधिसों उच्चारचो॥ यज्ञपुरुष प्रसन्न जब भए। निकसि कुंडसे दरशन दए॥ सुंदर श्याम चतुर्भुज रूप। ग्रीवा कौस्तुभमाल अनूप॥ उठिके सबहुन माथो नायो। दक्ष बहुरि यह बिनय सुनायो॥ मैं अपमान रुद्रको कियो। तब मम यज्ञ सांग नहिं भयो॥ अब मोहिं कृपा कीजिए सोई। फिर दुर्बुद्धि न ऐसी होई॥ बहुरो भृगु ऋषि अस्तुति कीनी। महाराज मम बुधि भइ हीनी॥ दियो क्रोध करि शिवहि शराप। करौ कृपा जु मिटै यह दाप॥ पुनि शिव ब्रह्मा अस्तुति करी। यज्ञपुरुष वाणी उच्चरी॥ दक्षतैं कियो शिवहि अपमान। ताते भई यज्ञकी हान॥ विष्णु रुद्र विधि एकहि रूप। इन्हैं जान मत भिन्न स्वरूप॥ जाते यह परगट भइ आई। ताको तू मनमाहिं धिआई॥ यों कहि पुनि बैकुंठ

सिधारे । सुर गंधर्व गये पुनि सारे ॥ या विधि भयो यज्ञ अवतार । सूर कह्यो भागवत अनुसार ॥ ॥ ४ ॥ अथ संक्षिप्त यज्ञपुरुष अवतार कथा॥ राग मारू ॥ यज्ञ प्रभु प्रगट दरशन दिखायो ॥ विष्णु विधि रुद्र मम रूप ए तीनि हूं दक्षसों वचन यह कहि सुनायो ॥ दक्ष ऋषि मानि जब यज्ञ आरंभ कियो सबनको सहित पत्नी हँकारचो । रुद्र अपमान कियो सती तब जिय दियो रुद्रके गणनि ताको सँहारचो ॥ बहुरि विधि जाइ क्षमवाइ कै रुद्रको विष्णु विधि रुद्र तहां तुरत आये । यज्ञ आरंभ मिलि ऋषिन बहुरो कियो शीश अज राखिकै दक्ष जिवाये ॥ कुंडते प्रगट यज्ञपुरुष दरशन दयो श्यामसुंदर चतुर्भुज मुरारी । रूप प्रभु निरखि दंडवत सबहिनि कियो सूर ऋषि सबनि अस्तुति उचारी ॥ ५ ॥ पार्वती विवाह वर्णन ॥ सती हिए धरि शिवको ध्यान । दक्ष यज्ञमें छाड्यो मान ॥ बहुरि हिमालयके शुभ घरी । नाम पार्वती ह्वै अवतरी । पार्वती वर प्रापत भई । तबहिं हिमाचल तासों कही ॥ तेरो कासों कीजै व्याह । तिन कह्यो मेरो पति शिव आह ॥ कह्यो हिमालय शिव प्रभु ईश । हमको उनसों कैसी रीस ॥ पार्वती शिव हित तप करचो । तब शिव आइ तहां तिहि वरचो ॥ पार्वती विवाह व्यवहार । सूरकह्यो भागवत अनुसार ॥ ६ ॥ ध्रुव कथा॥राग विलावल ॥ स्वयंभू मनुके सुत भए दोई । तिनकी कथा कहौं सुन सोई। उत्तानपाद इक नृप को नाम । द्वितिय प्रियव्रत अति अभिराम ॥ उत्तानपादके ध्रुव सुत भए । हरि जू ताकों दरशन दए ॥ बहुरि दियो ताको अस्थान । जहां प्रदक्षिण दे शशि भान ॥ कहौं सुकथा सुनो चितधार । सूर कह्यो भागवत अनुसार ॥ ७ ॥ ध्रु वरदेन अवतार वर्णन ॥ राग विलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमरन करो । हरि चरणारविन्द उर धरो ॥ कहौं अब ध्रुव वर देन अवतार । राजा सुनो ताहि चितधार ॥ उत्तानपाद पृथ्वीपति भयो । ताको यश तीनों पुर छयो ॥ नाम सुनीति बडी तिहि नारि। सुरुचि दूसरी ताकी नारि ॥ भयो सुरुचितै उत्तम वार । सुनीति नारिके ध्रूव कुमार ॥ राजा को सु सुरुचिसों नेह । बसै सुनीति दूसरी गेह ॥ इक दिन नृपति सुरुचि गृह आए । उत्तम कुँवर गोद बैठाए ॥ ध्रुव खेलत खेलत तहँ आए । गोद बैठिबेको पुनि धाए ॥ राजा त्रियडर गोद न लीनो । ध्रुव कुमार रोइ तब दीनो ॥ तबहि सुरुचि ध्रुवको समुझायो । तैं गोविंद चरण नहिं ध्यायो ॥ जो हरिको सुमिरन तू करतो । मेरे गर्भ जानि अवतरतो ॥ राजा तब तोहिं लेतो गोद । तबहिं गोदमें करतो मोद ॥ अजहूं तू हरिपद चित लाई । होहिं प्रसन्न तोहिं यदुराई ॥ वचन सुरुचि बाण सम लागे । ध्रुव आयो मातापै भागे ॥ माता ताको रोदन देखि । दुख पायो मन माँह विशेखि ॥ कह्यो पुत्र तोको केहि मारचो । ध्रुव अति दुखित वचन उच्चारचो ॥ माता ताको कंठ लगायो । तब ध्रुव सब वृत्तांत सुनायो ॥ कह्यो सुत सुरुचि सत्य यह कह्यो । बिनु हरिभक्ति पुत्र मम भयो॥अजहूं जो हरिपद चित लैहो । सकल मनोरथ मनको पैहो ॥ जिन जिन हरि चरणन चितलाए । तिन तिन सकल मनोरथ पाए ॥ पितृ तुव ब्रह्मा तप कियो । हरि प्रसन्न ह्वै तिहि वर दियो ॥ तिहिको सर्व जगत विस्तार । जाकी नाहीं पारावार ॥ बहुरि स्वयंभू मनु तप कीनो । ताहूको हरिजू वर दीनो ॥ ताको भयो बहुत परिवार । नर पशु कीट गनत नहिं पार ॥ तू हू जो हरिहित तप करिहै । सकल मनोरथ तेरो पुरिहै ॥ ध्रुव एहि सुनि वनको उठि चले । पंथमाहिं तेहि नारद मिले ॥ देख्यो पांच बरसको बाल । वचन सुरुचि नहिं सक्यो सँभाल ॥ अब मैंहूं याको दृढ देख्यो दृढविश्वास बहुरि उपदेशों ॥ ध्रुवसे कह्यो क्रोध परिहरौ । मैं जो कहौं सो चितमें धरौ ॥ मेरे संग राजापै आवौ । दे आवौं तोहि राज्य धन गावो ॥ भक्तिभावको जो तोहिं चाह । तोसों नहिं है है निर्वाह ॥ बहुतक तपसी पचि पचि मुए । पै तिहि हरि दरशन नहिं हुए ॥ मैं हरिभक्त नाम

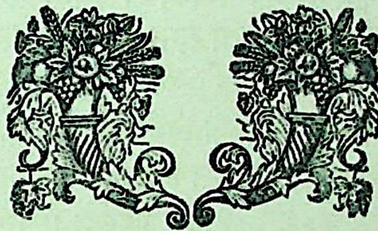
मम नारद। मोसों कहो सु अपनो हारद॥ राजा पास कहों सो जाई। लेहै मान नृपति सुत भाई॥ ध्रुव विचार तब मनमें कियो। सुमिरत नारद दरशन दियो॥ जब मैं भक्ति श्यामकी करिहौं। नहिं जानत जु कहा मैं पैहौं॥ कह्यो सो नारद करो सहाई। करो भक्ति हरिकी चित लाई॥ तुम नारायण भक्त कहावत। काहेको तुम मोहिं फिरावत॥ तब नारद ध्रुवको दृढ़ देखि। कह्यो देउँ मैं ज्ञान विशेखि॥ मथुरा जाय सु सुमिरन करो। अरु हरिध्यान हृदयमें धरो॥ मथुरा जाइ सोई उन कियो। तब नारायण दरशन दियो॥ ध्रुव अस्तुति कीनी बहु भाई। तब हरि जू बोले मुसुकाई॥ ध्रुव जो तेरी इच्छा होई। माँग लेहु मोसों अब सोई॥ प्रभु मैं तुमरो दरशन लह्यो। माँगनको पाछे कहा रह्यो॥ हरि कह्यो राज्य हेतु तप कियो। ध्रुव प्रसन्न होइ मैं तोहिं दियो॥ अरु तेरे हित कियो स्थान। देहि प्रदक्षिण जहँ शशि भान॥ ग्रह नक्षत्र हूँ त्योंही फिरै। तू भव अटल न कबहूं टरै॥ अरु पुनि महाप्रलय जब होई। मुक्तिस्थान पाइहौ सोई॥ यह कहि हरि निज लोक सिधारे। ध्रुव निजपुरको पुनि पग धारे॥ जब ध्रुव पुरके बाहर आये। लोगन नृपको जाइ सुनाये॥ उनके कहे न मनमें आई। तब नारद कह्यो नृपसों जाई॥ ध्रुव आयो हरिसों वर पाई। राजा ताहि जाहि मिलि धाई॥ नृप सुनि मन आनन्द बढ़ायो। अंतःपुरमें जाइ सुनायो॥ पुनि नृप कुटुंब सहित तहँ आये। नगर लोग सब सुनि उठि धाये॥ ध्रुव राजाके चरणन पर्यो। राजा कंठ लगाइ हित कर्यो॥ पुनि सु सुरुचिके चरणन पर्यो। तासों वचन ध्रुव उचर्यो॥ तुम उपदेश मैं हरिहि धियायो। यह उपकार न जात मिटायो॥ पुनि माताके पाँइन पर्यो। माता ध्रुवको अंकम भर्यो॥ ध्रुव नृप सिंहासन बैठाए। नृपतप कारण बनहिं सिधाये॥ सप्तद्वीप राज्य ध्रुव कियो। शीतल भयो मातको हियो॥ यों भयो ध्रुव बर देन अवतार। सूर कह्यो भागवत अनुसार॥ ८॥ राग आसावरी॥ ध्रुव विमाता वचन सुनि रिसायो। दीनके द्याल गोपाल करुणामई मातुसों सुनि तुरत शरन आयो॥ बहुरि जब बन चल्यो पंथ नारद मिल्यो कृष्ण निज धाम मथुरा बतायो। मुकुट शिर धरे बनमाल कौस्तुभ गरे चतुर्भुज श्याम सुंदर धियायो॥ भये अनुकूल हरि दियो तेहि तुरत बर जगत करि राज पद अटल पायो॥ सूरके प्रभुकी शरन आयो जु नर करि जगत भोग वैकुंठ सिधायो॥ ९॥ पृथु अवतार वर्णन राग बिलावल॥ धारि पृथु रूप हरि राज्य कियो। विष्णुकी भक्ति परमान जगमें करी प्रजाको सुख सकल भांति दियो॥ वेन नृप भयो बलवंत जब पृथ्वी पर ऋषिनसों कह्यो जप तप निवारो। होइ तिहिको पतन शाप ताको दयो मारिकै ताहि जगदोष ढार्यो॥ भयो प्रगट आराज तब सब ऋषिन मंत्र करि वेनकी जांघको मथन कीनो। जांघके मथेते पुरुष परगट भयो श्याम तिहि भीलको राज्य दीनो॥ बहुरि जब ऋषिन भुजदक्षिन मथ कियो लक्ष्मी सहित पृथु दरश दीयो। पहिरि आभरन पुनि राज्य लागे करन आनि सब प्रजा दंडवत कीयो॥ बहुरि बंदी जननि आय अस्तुति करी इन्द्र अरु बरुन तुम तल नाहीं। कह्यो नृप बिना प्राक्रम न स्तुति करौ बिना किए मूढ़ सुनि हर्ष जाहीं॥ करो भगवानको यश सदा गुणीजन जो जगत सिंधुते पार तारैं। किये नरकी अस्तुति कौन कारज सरै करै सु आपनो जन्म हारैं॥ कह्यो तिन तुम्हैं हम मनुप जानत नहीं जगतपितु जगतहित देह धार्यो। करोगे काज जो कियो न काहू नृपति किए जस जाय हम दोष सारो॥ बहुरि सब प्रजा मिलि आय नृपसों कह्यो बिना आजीविका मरत सारी। नृप धनुष बाण धरि पृथ्वीपर कोप किया तिन गऊरूप विनती

उचारी ॥ बेनके राज्यमें औषधी गिलगई होइहै सकल किरपा तुम्हारी। पर्वतनि जहां तहां रोकि मोकों लियो देहु करि कृपा एक दिशा टारी ॥ धनुषसों टारि पर्वत कियो एक दिश पृथ्वी सम करी प्रजा सब बसाई । सुर ऋषिन नृपति यों पृथ्वी दोहन करी आपुनी जीविका सबन पाई ॥ बहुरि नृप यज्ञ निन्यानवे करी शतयज्ञको जबहिं आरंभ कीनो । इन्द्र भय मान हय गहन सुतसों कह्यो सों न लै सक्यो तब आप लीनो ॥ नृपति सुतसों कह्यो जाइ हय ल्याव अब इंद्र तिहि देखि हय छांड दीनो । नृप कह्यो सुरनके हेतु मैं यज्ञ करत इन्द्रमम अश्व किहि काज लीनो॥ऋषिन कह्यो तुव शतमूयज्ञ आरंभ लखि इन्द्रको राज्य हित कँप्यो हीयो। नृप कह्यो इन्द्रपुरकी न इच्छा मुझे ऋषिन तब पूर्ण आहुती दीयो ॥ यज्ञ पुरुष कह्यो कुंडते निकसि यज्ञ पूर्ण भयो इन्द्र जिमि वर कछू मांगि लीजे । पृथु कह्यो नाथ मेरे न कछु शत्रुता अरु न कछु कामना भक्ति न दीजै ॥ यज्ञपुरुष गए वैकुंठ धामै जबै नौति नृप प्रजाको तब हँकारो । तिन्हैं संतोषि कह्यो देहु मांगै मुझे विष्णुकी भक्ति सब चित्त धारो ॥ सुनत यह बात सनकादि आए तहां मानदै कह्यो मोहि ज्ञान दीजै । कह्यो यह ज्ञान यह ध्यान सुमिरन यह निरखि हरि रूप मुख नाम लीजै ॥ पुनि कह्यो देहु आशीश मम प्रजाको सबै हरि भक्ति नित चित्त धारै । कृपा तुम करी मैं भेदको मन धरी नहीं कछु वस्तु ऐसी हमारे ॥ बहुरि सनकादि गए आपुने धामको नृपति सब लोग हरि भक्ति लाए । सूर प्रभु चरित अगनित न गने जाँय कछुयथा मति आपुने कहि सुनाए ॥ १० ॥ पुरंजन कथा वर्णन ॥ राग विलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करों । हरि चरणारविन्द उर धरों॥कथा पुरंजन की अब कहौं । तेरे सब संदेहै दहौं ॥ प्राचिनबर्हि भूप इक भए । आयु प्रयंत यज्ञ तिहि ठये ॥ ताके मन उपजी गिल्यान । मैं कीनी वहु जियकी हानि ॥ यह मम दोष कवनविधि टरै । ऐसी भाँति सोच मन करै ॥ इहि अंतर नारद तहँ आए । नृपसों यों कहि वचन सुनाए ॥ मैं अबहीं सुरपुर ते आयो । मगमें अद्भुत चरित लखायो ॥ यज्ञमाहिं जो पशु तुम मारे । ते सब ठाढ़े शस्त्रनि धारे ॥ जोहतहैं ये पंथ तुम्हारो । अब तुम अपनो आप सँभारो ॥ नृप कह्यो मैं ऐसोई कियो। यज्ञकाज मैं तिहि दुख दियो ॥ रसनाहीको कारज सारचो । मैं यों अपनो काज बिगारचो ॥ अब मैं यहै विनय उचरौं ।जो कछु आज्ञा होइ सो करौं ॥ कह्यो कहौ एक नृपकी कथा । उन जो कियो करो तुम तथा ॥ ताहि सुनौ तुम भली प्रकार । पुनि मनमें देखो जु विचार ॥ ता नृपको परमातम मित्र । इक छिन रहै नहीं सो अत्र ॥ खान पान सो सब पहुँचावे । पै नृप तासों हित न लगावे ॥ नृप चौरासि लक्ष फिरि आयो । तब एहि पुर मानुष तनु पायो ॥ पुरको देखि परमसुख लह्यो । रानीसों मिलाप तहां भयो ॥ तिन पूँछचो तुम काकी अही । उन कह्यो मम सुमिरन नहिं रही ॥ पुनि कह्यो नाम कहा है तेरो । कह्यो न आवै नाम मोहिं मेरो ॥ तन पुरजाय पूरंजनि राव । कुमति तासु रानीको नाव ॥ आँख नाक मुख मूलद्वार । मूत्र शौच नव पुरको द्वार ॥ लिंग देह नृपको निज गेह । दश इन्द्रिय दासीसों नेह ॥ कारण तन सुसैन स्थान । तहां अविद्या नारि प्रधान ॥ कामादिक पांचो प्रतिहार । रहैं सदा ठाढे दरबार ॥ संतोषादि न आवै पावै । विषयी भोंग आइ हरपावै ॥ जा द्वारे पर इच्छा होय । रानी सहित जाइ नृप सोइ ॥ तहां तहांको कौतुक देखि । मनमें पावै हर्ष विशेखि ॥ इन्द्री दासी सेवा करै । तृप्ति न होइ वहुरि विस्तरै ॥ यहि इन्द्रीको यहै सुभाइ । तृप्ति न होइ कितोई खाइ ॥ निद्रावश जो कबहूं सोवै । मिलि अविद्यासों सुधि बुधि खोवै ॥ उनमत ज्यौं सुख दुख नहिं जानै । जागै वहै रीति पुनि ठानै ॥ संत दरश कबहूं जो होई । जग सुख मिथ्या जानै

सोई ॥ पै कुबुद्धि ठहरान न देइ । राजाको अंकम भरिलेइ । राजा पुनि तब क्रीडा करै । छन भर हू अंतर नहिं धरै ॥ जब अखेट पर इच्छा होइ । तब रथ साजि चलै नृप सोइ ॥ जा द्वारे नृप इच्छा करै । ताही द्वार होइ निःसरै ॥ चक्ष्वादिक इन्द्री दर जानो । रूपादिक सब वनसम मानो । मन मंत्री सो रथ हँकवैया । रथमें पुण्य पाप दोउ पहिया ॥ अश्व पांच ज्ञानेन्द्रिय पांच । विषय अखेटक नृप मनरांच ॥ राजा मंत्रीसों हित मानै । ताके दुख सुख दुख सुख जानै ॥ नरपति ब्रह्म अंश सुख रूप । मन मिलि पर्यो दुःखके कूप ॥ ज्ञानी संगति उपजै ज्ञान । अज्ञानी सँग होइ अज्ञान ॥ मंत्री कहै अखेट सो करै । विषय भोग जीवनि संहरै ॥ निशिभय रानी पै फिर आवै । सोवतसो तिहि बात सुनावै ॥ आजु कहा उद्यम करि आए । कहै वृथा भ्रमि भ्रमि श्रम पाए ॥ काल्हि जाय अस उद्यम करौं । तेरे सब भंडारनि भरौं ॥ सब निशि याही भांति विहाई । दिन भये बहुर अखेटक जाई ॥ तहां जीव नाना संहरै । बिषय भोग तिहिको हत करै ॥ विषय भोग कबहूं न अघाई । यों हीं नृप नित आवै जाई ॥ एक दिन नृप निज मंदिर आयो । रानीसों अह-निशि मन लायो ॥ ताके पुत्र सुता बहु भए । विषय बासना नाना रये ॥ कान लागिके अस कह्यो जाइ । जरा काल कन्या पुर आइ ॥ कह्यो प्रिया अब कीजै सोइ । देखे नृपति कहा धौं होइ ॥ देह शिथिल भई उठ्यो न जाई । मानौं दीनो कोट गिराई॥कह्यो प्रिया अब कीजै सोइ । देखो नृपति कहा धौं होइ ॥ पुनि ज्वर दौ दीनी पुर लाई । जरन लगे पुरलोग लोगाई ॥कह्यो प्रिया अब कीजै सोइ । देखो नृपति काह धौं होइ ॥ पुनि ज्वर दीनी दौपुरलाई । जरन लगे सब लोग लोगाई ॥ मरन अवस्थाको नृप जानै । तौहू धरै न मनमें ज्ञानै ॥ मम कुटुंबकी कहा गति होई । पुनि पुनि मूरख सोचै सोई ॥ कालभए तिहि पकर निकार्यो । सखा प्राणपति तऊ न सँभार्यो॥ रानीहीमें मन रहिगयो । मरि विदर्भकी कन्या भयो ॥ बहुरो तिन सतसंगति पाई । कहौं सु कथा सुनौं चित लाई ॥ मेघ ध्वजसों भयो विवाह । विष्णु भक्तिको तिहि उत्साह ॥ ता संगति नव सुत तिन जाये । श्रवणादिक मिलि हरि गुण गाये॥या विधि तिहि निज आयु बिताई । पूर्व पाप सब गए बिलाई ॥ मरण अवस्था जबनजिकाई । ईश सखाके मन यह आई । बहुत जन्म इन भ्रम भ्रम कीनो । पै इन मोकों कबहुँ न चीनो ॥ तब दयालु ह्वै दरशन दीनो । कबहुँ मूढ तैं मोहिं न चीनो ॥ विषय भोगहीमें पगरह्यो । जान्यो मोहिं और कहुं गयो ॥ मैंतो निकट सदाही रहौं । तेरे सकल दुख नको दहौं ॥ यह सुनिकै तिहि उपज्यो ज्ञान । पायो पुनि तिहि पद निर्वान ॥ यह कहि नारद नृपसों कही । तेरीहू तैसी गति भई ॥ मैं जु कहों सो देखि विचार । बिन हरि भजन नहीं निस्तार । हरिकी कृपा मनुष्य तनु पावै मूरख विषय हेतु सुगँवावै ॥ तिन अंगनको सुनो विवेक ॥ खरची लाख मिलै नहिं एक ॥ नैन दरश देखनको दिये । मूरख लखि परनारी जिए ॥ श्रवण कथा सुनिवेको दीने । मूरख परनिंदा हित कीने ॥ हाथ दए हरि पूजा हेत । तिहि कर मूरुख पर धन लेत ॥ पग दए तीरथ जैबे काज । तिनसों चलि नित करत अकाज ॥ रसना हरि सुमिरन को करी । ताकर परनिन्दा उच्चरी ॥ यह सुनि नृप कीनो उनमान । मैं सुई नृपति न दूसर आन ॥ नारद जू तुम कियो उपकार । डूबत मोहिं उतार्यो पार ॥ नृपति पाइ पुनि आतमज्ञान ॥ राज्य छांडि करि गए उद्यान । यह लीला जो सुनै सुनावै ॥ सूर हरि कृपा ज्ञानको पावै । शुक ज्यों राजाको समुझायो । मैं हूँ ता अनुसार सुनायो ॥ ११ ॥ राग बिलावल ॥ अपुनपो आपुनहींमें पायो । शब्दहिं शब्द भयो उजियारो सतगुरु भेद बतायो ॥ ज्यों कुरंग नाभी कस्तूरी ढूँढत

फिरत भुलायो। फिरि चेत्यो जब चेतन ह्वै करि आपुनही तनु छायो ॥ राजकुँआर कंठ मणि भूषण भ्रम भयो कहूं गँवायो ॥ दियो बताइ और सत जन तब तनुको पाप नशायो। सपने माहिं नारिको भ्रम भयो बालक कहूं हिरायो। जागि लख्यो ज्यों को त्योंहीं है ना कहुँ गयो न आयो। सूरदास समुझे की यह गति मनही मन मुसकायो। कहि न जाइ या सुख की महिमा ज्यों गूँगो गुर खायो ॥ १२ ॥

इति श्रीमद्भागते--सूरसागरे श्रीसूरदासकृते चतुर्थःस्कन्धः समाप्तः।



अथ कविवर सूरदास कृत—



श्रीसूरसागर.

पंचमस्कंध।

राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारबिंद उर धरो ॥ हरि चरणन शुकदेव शिरनाई। राजासों बोल्यो या भाई ॥ कहौं हरि कथा सुनौ चित धार। जाते तरो उदधि संसार ॥ ज्यों भयो ऋषभदेव अवतार। कहौं सुनो सो अब चितधार। शुक वरण्यो जैसे परकार। सूर कह्यो ताही अनुसार॥ १ ॥ ऋषभदेव अवतार वर्णन। राग बिलावल। ब्रह्म स्वयंभू मनु उपजायो। ताते जन्म प्रियव्रत पायो ॥ प्रियव्रतके अग्नीध्र भयो। नाभि जन्म ताही ते लयो ॥ नाभि नृपति सुत हित जग कियो। यज्ञपुरुष तब दरशन दियो ॥ विप्रन अस्तुति वेद सुनाई। पुनि कह्यो सुन त्रिभुवनके राई ॥ तुम सम पुत्र नाभिके होई। कह्यो मो सम जग और न कोई ॥ मैं हर्त्ता कर्त्ता संसार। मैं लैहौं नृप गृह अवतार॥ऋषभदेव तब जन्मे आई। राजाके मन भये बधाई ॥ बहुरो ऋषभ बडे जब भए। नाभि राज्य दे वनको गए ॥ ऋषभ राज परजा सुख पायो ॥ यश ताको सब जगमें छायो॥इन्द्र देखि ईर्षा मन लायो। करिकै क्रोध न जल बरषायो॥ऋषभदेव तबहीं यह जानि। कह्यो इन्द्र यह कहा मन आनि॥निजबल योग नीर वरषायो। प्रजा लोग अतिहि सुख पायो। ऋषभ राज मन सब उत्साह। कियो जयंतीसों पुनि व्याह ॥ तासों सुत निनानवे भए। भरतादिक सब हरि रँग रए॥तिनमें नव नव खंड अधिकारी। नव योगेश्वर ब्रह्म विचारी। असी और इक द्विज व्रत लियो। ऋषभ ज्ञान सबहिनको दियो ॥ दृष्टमान नाश सब होई। साक्षी व्यापक नशै न सोई ॥ ताहीसों तुम चित्त लगावहु। ताको सेवि परमगति पावहु ॥ संत संग सेवो हरि चरना। ताते संत संग नित करना ॥ बहुरो देकर भरतहिं राज। ऋषभ ममत्व देह को त्याज ॥ उनमतभै ज्यों बिचरन लागे। अशन वसनकी सुरति तियागे ॥ कोउ खवावै तौ कछु खाहीं। नातरु बैठेई रहि जाहीं ॥ मूत्र पुरीष अंग लपटावै। सुगंध वास दश योजन जावै ॥ अष्ट सिद्धि बहुरो तहँ आई। ऋषभदेव पै मुख न लगाई ॥ राजा रहत हुतो तहां एक। भयो श्रावगी ऋषिको देख ॥ वेद पुराने तजि न अन्हावै। प्रजा सकलको यहै सिखावै ॥ अबहूं श्रावग ऐसो करै। ताही को मारग अनुसरै ॥ अंतः क्रिया रहित नहिं जानै। बाहर क्रिया देखि मन मानै ॥ वरण्यो ऋषभ देव अवतार। सूरदास भागवत अनुसार ॥ २ ॥ जड भरत कथा वर्णन राग बिलावल॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविन्द उर धरो ॥ ऋषभ देव जब बनको गए। नव सुत नवो खंड नृप भए ॥ भरत सुभरत खंडको राव। करै सदाहि धर्म अरु न्याव ॥ पालै प्रजा सुतनकी नाईं। पुरजन बसैं सदा सुख पाईं ॥ भरतहु दे पुत्रनको राज। गये बनको तज राजसमाज ॥ तहां करी नृप हरिकी सेवा। भए प्रसन्न देवन को देवा ॥ एक दिवस गंडकि तट जाई। करनलग्यो सुमिरन चित लाई ॥ गर्भ

वती हरिनी तहां आई। पानी सो पीवन नहिं पाई॥ सुनी सिंह भय मान अवाजि। मारि फलाँग चली वह भाजि॥ कूदत ताको तनु छुटि गयो। ताके छौना सुन्दर भयो॥ भरत दया ता ऊपर आई। ल्याये आश्रम ताहि लिवाई॥ पोपे ताहि पुत्रकी नाई। खाइ आप तब ताहि खवाई॥ सोवैं जब तब ताहि सोआवैं। तासों क्रीडत अति सुख पावैं॥ सुमिरन भजन बिसरि सब गयो। एक दिन मृगछोना कहिं गयो॥ ताके मोह भरत सब भयो। सब दिन विरह अग्नि अति तयो॥ संध्या समय निकट नहिं आयो। ताके ढूँढन हित उठि धायो॥ पग को चिह्न पृथ्वी पर देखि। कह्यो पृथ्वी जहां धन पग रेखि॥ बहुरौ देख्यो शशिकी ओर। तामें देख्यो श्यामता कोर॥ कहन लगो मम सुत शशि गोद। तासेती शशि करत विनोद॥ ढूँढत २ बहु श्रम पायो। पै मृगछौना नहिं दरशायो॥ मृगको ध्यान हृदय नहिं गयो। भरत देहतजिके मृग भयो॥ पूरब जन्म ताहि सुधि रही। आप आपसों तब यह कही॥ मैं मृगछौनामें चित दयो॥ ताते मैं मृगछौना भयो॥ अब काहूसे संग न करौं। हरि चरणारविन्द उर धरौं॥ संग मृगनिहू को नहिं करै। हरे घासहू सो नहिं चरै॥ सूखे पात रु तिनके खाई। या विधि डारयौ जन्म बिताई॥ मृग तनुतजि ब्राह्मण तनु पायो। पूर्व जन्म तहां सुमिरन आयो॥ मनमें यहै बात ठहराई। होय असंग भजौं यदुराई॥ पिता पढावै सो नहिं पढै। मनमें रामनाम नित रटै॥ पिता तासु कालबश भयो। भ्रातनिहूं श्रम बहु विधि ठयो॥ पै सो हरि हरि सुमिरत रहै। और कछू विद्या नहिं गहै॥ जड़ स्वरूपसो जहँ तहँ फिरै। अशन बसनकी सुधि नहिं धरै॥ जैसो देहि सु तैसो खाई। नाहिं तो भूखोई रहि जाई॥ कृषिरक्षक भाइन तब कीनो। उन तहां हरिचरणन न चित दीनो॥ तहँ हीं अन्न देहिं पहुँचाई। जो न देहिं भूखो रहिजाई॥ भीलराव निज लोगनि कह्यो। मैं कालीसो यह प्रण गह्यो॥ तुव प्रसाद मम गृह सुत होई। नरबलि देहुँ भयो वर सोई॥ तुम काहू धन दै लै आनहु। मेरे मनकी आश पुजावहु॥ ते खोजत खोजत तहँ आए। जहां जड भरत कृषी में छाए॥ देख्यो भरत तरुण अति सुंदर। स्थूल शरीर रहित सब द्वंदर॥ निज नृप पास बांधि लै आए। नृप तेहि देखि बहुत सुख पाए॥ बिप्रन कह्यो ताहि अन्हवावहु। याके अंग सुगंध लगावहु॥ तिहि देवी मंदिर लै गए। खड्ग रावके कर तिहिं दए॥ जब राजा तिहिं मार न लाग्यो। देवी काली मन धग धाग्यो॥ हरि जन मारे हत्या होई। ज्यों नहिं मरै करौं अब सोई॥ देवी निकसि रावकों मारचो। भरत साथ यह वचन उचारचो॥ जाने विना चूक यह भई। मैं उनसों ऐसी नाहिं कही॥ विप्रन वेद धर्म नहिं जान्यो। ताते उन ऐसो बलि ठान्यो॥ यह सुनि ह्वांते भरत सिधायो। राजासों शुक कहि समुझायो॥ नहीं त्रिलोकी ऐसो कोई। भक्तनको दुख दैसकै जोई॥ ज्यों शुक नृपको कहि समुझायो। सूरदास त्योंहीं करिगायो॥ ३॥ जड भरतरहूगण गोष्ठ वर्णन राग बिलावल॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारबिंद उर धरो॥ नृपति रहूगणके मन आई। सुनिए ज्ञान कपिलसों जाई॥ चढि सुख आसन नृपति सिधायो। तहां कहार एक दुख पायो। भरत पंथ पर देख्यो खरचो। ताके बदले ताको धरचो॥ तिनसों भरत कछू ना कह्यो। सुख आसन कांधे पर गह्यो॥ भरत चले पथ जीवनिहार। चलै नहीं ज्यों चलैं कहार॥ नृपति कह्यो मारग सम आह। चलत न क्यों तुम सूधो राह। कह्यो कहारनि हमैं न खोरि। नयो कहार चलत पग झोरि॥ कह्यो नृपति मोटो तू आहि। बहुत पंथ हू आयो नाहिं॥ तू जो टेढो टेढो चलत। मरिवेकी नहिं भय हिय धरत॥ ऐसी भांति नृपति बहु भाखी। सुनि जडभरत हृदयमें राखी॥ मन मन

लाग्यो करम विचार। हर्ष शोक तनुको व्यवहार॥ जैसो करै सो तैसो लहै। सदा आत्मा न्यारो रहै॥ नृप कह्यो मैं उत्तर नहिं पायो। मेरो कह्यो न मनमें लायो॥ नृप दिशि देखि भरत मुसुकाये। बहुरो याविधि कहि समुझाए॥ तुम कह्यो तैं है बहुत मोटायो। और बहुत मारग नहिं आयो॥ टेढ़ो टेढ़ो क्यों तू जात। सुनौ नृपति मोसों यह बात॥ जिय कर कर्म जन्म बहु पावै। फिरत फिरत बहुते श्रम आवै॥ अरु अजहूं न कर्म परिहरै। जाते इहिको फिरिबो टरै। तनु स्थूल अरु दूबर होइ। परम आत्मको ए नहिं दोइ॥ तनु मिथ्या क्षण भंगुर जानो। चेतनजीव सदा थिर मानो॥ जीवको सुख दुख तनु सँग होई। जोरविजोर तनके सँग सोई॥ देह अभिमानी जीवहिं जानै। ज्ञानी जीव अलिप्तकरि मानै॥ तुम कह्यो मरिवेको तोहिं चाह। सब काहूको है यह राह॥ कहा जानि तुम मोसों कह्यो। यह सुनि ऋषि स्वरूप नृप लह्यो॥ तजि सुखपाल रह्यो गहि पाइ। मैं जान्यो तुम हौ ऋषिराइ॥ भृगु कै दुर्वासा तुम होहु। कपिल कै दत्त कहो तुम मोहु॥ कबहूं सुर कबहूं नर होई। कबहूं राव रंक जिय सोई॥ जीव कर्म करि बहु तनु पावै। अज्ञानी तिहि देखि भुलावै॥ ज्ञानी सदा एक रस जानै। तनके भेद भेद नहिं मानै॥ आत्म सदा अजन्म अविनासी। ताको देह मोह बड़ फासी॥ ऋषभ पुत्र भरत मम नाम। राज्य छांडि लियो वन विश्राम। तहँ मृगछौनासों हित भयो। नर तनु तजिकै मृगतनु लह्यो॥ अब मैं जन्म विप्रके पायो। सब ताजि हरि चरणन चित लायो॥ ताते ज्ञानी मोह न करै। तनु कुटुंबसों हित परिहरै॥ जबलगि भजै न चरण मुरारी। तब लगि होइ न भवजल पारी॥ भव जलमें नर बहु दुख लहै। पै बैराग तबहुँ नहिं गहै॥ सुत कलत्र दुर्वचन जु भाषै। तिन्हैं मोहवश मन नहिं राखै॥ जो वै वचन और कोउ कहैं। तिनको सुनिकै सहि नाहिं रहैं॥ पुत्र अन्याय करै बहु तेरे। पिता एक अवगुण नहिं हेरे॥ औंर जु एक करै अन्याई। तिन बहु अवगुण देइ लगाई॥ इक मन अरु ज्ञानेन्द्री पांच। नरको सदा नचावैं नाच॥ ज्यों मग चलत चोर धन हरै। त्यों एक सुकृत धनहीं परिहरै॥ तस्कर ज्यों सुकृती धन लेही। अरु हरि भजन करन नहिं देही॥ ज्ञानी इनसों संग न करै। तस्कर जानि दूरि परिहरै॥ नृप यह सुनि भरतै शिरनाई बहुरि कह्यो या भांति सुनाई॥ नर शरीर सुर ऊपर आहि। कहै ज्ञान कहिए कहँ ताहि॥ ताते तुमको करत दंडौत। अरु सब नरहूंको परनौत॥ शुक कह्यो सुन यह नृपति सुजान। लेहु ज्ञान तजि देह अभिमान॥ जो यह लीला सुनै सुनावै। सोऊ ज्ञान भक्तिको पावै॥ शुकदेव ज्यों दियो नृपति सुनाइ। सूरदास कह्यो याही भाइ॥ ४॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवरश्रीसूरदासकृते पंचमः स्कंधः समाप्तः।





अथ कविवर सूरदास कृत-

श्रीसूरसागर.

षष्ठस्कन्ध ।

॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । आधे पल कहुँ जिन बिस्मरो॥शुक हरिचरणन को शिर नाइ । राजासों बोल्यो या भाइ ॥ कहौं हरिकथा सुनौ चित लाइ । सूर तरचो हरिके गुण गाइ ॥ १ ॥ अजामिल उद्धार वर्णन । रागबिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो ॥ हरिचरणारविंद उर धरो ॥ हरि हरि कहत अजामिल तरचो ॥ ताको यश सब जग बिस्तरचो ॥ कहौं शुक कथा सुनो चितलाइ । कहै सुनै सो नर तरि जाइ॥ अजामिल विप्र कनौज निवासी । सो भयो वृपलीके गृहवासी ॥ जाति पाँति तिन सब बिसराई । भक्ष अभक्ष मिलै सो खाई ॥ ता वृपलीके दश सुत भए । पहिले पुत्र भूलि तिन गए ॥ लघु सुत नाम नरायण धरचो । तासों हेतु अधिक करि करचो ॥ काल अवधि जब पहुँची आई । तब यम दीने दूत पठाई नारायण सुत नाम उचारचो । यमदूतनि हरि गुणनि निवारचौ ॥ दूतन कह्यो वडो यह पापी । इनतो पाप किए हैं धापी । विप्र जन्म इन जूवे हारचो । काहेते तुम हमें निवारचो । गुणनि कह्यो इन नाम उचारचो । नाम महातम तुम न बिचारचो॥जान अजान नाम जो लेई । हरि तिहि वैकुंठ वासा देई ॥ बिन जाने कोउ औषधि खाई । ताको रोग सकल नाशि जाई ज्यों ॥ त्यों हरि बिनु जाने कहै । सो सब अपने पापनि दहै ॥ अग्नि बिना जाने कोउ गहै । तातकालसो ताको दहै ॥ दोउ पुरुषको नाम एक होई । एक पुरुपको बोलै कोई ॥ दोऊ ताके ओर निहारैं । हरि हूँ ऐसे भाव विचारैं ॥ हांसीमें कोउ नाम उचारै । हरि जू ताको सत्य विचारै ॥ मैंहूं करि कोउ लहै जुनाम । हरि जू देहिं तिन्हैं निज धाम ॥ जावनके हरि शब्द सुनावै । तावनते मृग जाहि परावै ॥ नाम सुनत यों पाप पराहीं । पापी हूं वैकुंठ सिधाहीं ॥ यह सुनि दूत चले खिसिआई । कह्यो तिन्हि धर्म राजसों जाई ॥ अवलौं हम तुमहींको जानत ॥ तुमहीको दंडदाता मानत ॥ आज गह्यो हम पापी एक । तिन भय मानत हमको देख ॥ नारायण सुत हेत उचारचो । पुरुप चतुर्भुज हमें निवारचो ॥ उनसों हमरो कछु न बसायो । ताते तुमको आनि सुनायो ॥ औरो दंडदाता कोउ आही । हमसों क्यों न बतावै ताही ॥ धर्मराज करि हरिको ध्यान । निज दूतनसों कह्यो बखान ॥ नारायण सबके करतार । पालत अरु पुनि करत संहार ॥ ता सम द्वितिया और न कोई । जब चाहे पुनि साजै सोई ॥ ताको जब उन नाम उचारचो । तब हरि दूतन तुमें निवारचो ॥ हरिके दूत जहां तहँ रहैं । हम तुम उनकी सुधि नहिं लहैं॥ जो जो मुख हरि नाम उचारै । हरि गन तिहिं तिहिं तुरत उधारै ॥ नाम महातम तुम नहिं जानो । नाम महातम सुनो बखानो ॥ ज्यों त्यों कोउ हरि नाम ऊचरै । निश्चय करि सो तरै पै तरै ॥ जाके गृहमें हरि जन जाई । नाम कीर्तन करै सो गाई ॥

T

यद्यपि वै हरि नाउँ न लेहीं।तद्यपि तिहि हरि निज पद देहीं॥कैसोइ पापी क्यों नहिं होई। राम नाम चित उचरैं सोई॥तुमरो नहिं ता ठौर अधिकार। मैं तुमसों यह कही पुकार॥अजामेल हरिभक्तन देखि। मनमें कीनो हर्ष विशेखि॥ यमदूतनको इनहिं निवारचो। वा भयते मोहिं इन्हीं उबारचो॥ तब मन माहिं आनि वैराग।पुत्र कलत्र मोह सब त्याग॥हरिपदसे उन ध्यान लगायो।तातकाल वैकुंठ सिधायो॥ अंतकाल जो नाम उचारै। सो सब अपने पापन जारै॥ज्ञान विराग तुरत तिह होई।मूर विष्णु पद पावै सोई॥२॥श्री गुरुमहिमा वर्णन, बृहस्पति अनादरते विश्वरूप वृत्रासुर ब्राह्मण हत्या इन्द्र प्रति, पुनि गुरुकृपासे इन्द्रासन प्राप्ति॥ राग बिलावल॥हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो।हरि चरणारविंद उर धरो॥हरि गुरु एक रूप नृपजानि।तामेंकछु संदेह न आनि॥गुरु प्रसन्न हरि प्रसन्न जोई।गुरुके दुखित दुखित हरि होई॥कहौं सो कथा सुनो चित धारि। कहै सुनै सो तरै भवपारि॥ इन्द्र इक दिन निजसभा मँझारि। बैठचो हुतो सिंहासन डारि॥ सुर ऋषि सब गंधर्व तहां आए। पुनि कुबेरहू तहां सिधाए। सुरगुरुहूं तेहि औसर आयो। इन्द्र उठि तिन्हैं न शीश नवायो॥ सुर गुरु लख्यो गर्व तिहिं भयो। तहँतें फिर निज आश्रम गयो॥ सुरपति तब लागे पछतान। मैं यह कहा कियो अज्ञान॥ पुनि निज गुरु आश्रम चलिगयो। तिहि सुर गुरु दरशन नहिं दयो॥ यह सुनि असुर इंद्र पुर आए। किए इंद्रसों युद्ध बनाये॥ इंद्र सहित तब सब सुर भागे। आश्रम अपने सबहिन त्यागे॥पुनि सब सुर ब्रह्मापै जाई। कह्यो वृत्तांत सकल शिरनाई॥ ब्रह्मा कह्यो बुरो तुम कियो। निज गुरुको आदर नहिं दियो॥अब तुम विश्व रूप गुरु करो। ता प्रसाद या दुखसों तरो॥ सुरपति विश्वरूप पै जाइ। दोउ कर जोर कह्यो शिरनाइ॥ कृपा करो मम प्रोहित होहु। कियो बृहस्पति मोपर कोहु॥ कह्यो पुरोहित होत न भलो। जात तेज तप जप नशि सकलो॥पै तुम बिनती बहु विधि करी। ताते मैं मनमें यह धरी॥यह कहि इंद्रहि यज्ञ करायो। गयो राज्य अपना तिन पायो। असुरनि विश्वरूपसो कह्यो। भलो भाइ तू सुरगुरु भयो॥ तुव ननसालमाहिं हम आहिं॥ आहुति हमैं देत क्यों नाहिं॥ तिह निमित्त तिन्ह आहुति दई। सुरपति बात जानि यह लई॥ करिकै क्रोध तुरत तिहि मारचो। हत्याहेत न मंत्र विचारचो॥ चारि अंश हत्याके किए। चारों अंश बांटि पुनि दिए॥ एक अंश धरतीको दियो। ऊसर माहिं अन्न नहिं भयो॥ एक अंश वृक्षनको दीनो। गोंद होइ प्रकाश तिन कीनो॥ एक अंश जलको पुनि दयो। ह्वैकरि काई जलको छयो॥ एक अंश सब नारिन पायो। तिनको ह्वै रजस्वला छायो। त्वष्टा विश्वरूपको बाप। दुखित भयो सुनि सुत संताप॥ तिन करि क्रोध इक जटा उपारी। वृत्रासुर उपज्यो बल भारी॥ सो सुरपतिको मारन धायो। सुरपतिहूं ता सन्मुख आयो॥ जेतक शस्त्र किए प्रहार। सो करि लिए असुर आहार॥ तब सुरपति मनमें भय मान। गयो तहां जहां श्रीभगवान॥ नमस्कार करि बिनय सुनाई। राखि राखि अशरन शरनाई॥ कह्यो भगवान उपाय न आन। ऋषिदधीचि हाड़ लै दान॥ ताको तुम निज वज्र बनाव। मरिहै असुर तिसीके घाव॥ तब सुरपति ऋषिके ढिग जाई। करी बिनय बहु शीश नवाई॥ बहुरि कही अपनी सब कथा। हरि ज्यों कह्यो कह्यो पुनि तथा॥ तिन कह्यो देह मोहि अति प्यारी। सुरपति हू यह देखि विचारी॥ यह तनु क्योंहीं दियो न जावै। और देत कछु मन नहि आवै॥ पै यह अंत न रहिहै भाई। परहित देहु तो होइ भलाई॥ तनु देवे ते नाहिन भजों। योगधारना करि यह तजों॥ गउ चटाइ मम त्वचा उपारो। हाड़नको तुम वज्र सँवारो॥ सुरपति ऋषिकी आज्ञा पाई। लियो हाड़ कियो वज्र बनाई॥ गो मुख अशुचि तबै ते भयो। ऋषिशुकदेव

नृपतिसो कह्यो । इंद्र आइ तब असुर प्रचारचो । कियो युद्ध पै असुरन मारचो ॥ इन्द्र हाथते बज्र छिनाई । मारचो ऐरावतको जाई ॥ ऐरावत घायल जब भयो । तब वृत्रासुर को सुख भयो ॥ ऐरावत अमृतको ल्याए । भयो सुचेत इंद्र तब धाए ॥ वृत्रासुरको वज्र प्रहारचो ॥ तिन तिरशूल इंद्रको मारचो । लगत त्रिशूल इंद्र मुरझायो ॥ करते अपनो वज्र गिरायो ॥ कह्यो असुर सुरपति संभारि । लैकर वज्र मोहिं परिहारि ॥ जो मरिहौं तौ सुरपुर जैहौं । जीते जगत माहिं यश लेहौं ॥ हारि जीति नहिं जयके हाथ । कारण करता आपहि साथ ॥ हमें तुमें पुतरीके भाइ । देखत कौतुक विविध नचाइ ॥ तब सुरपति लै वज्र संहारचो । जैजै शब्द सुरन उचारचो ॥ पै इंद्रहि संतोष न भयो । ब्राह्मणहत्यादुःखहि तयो ॥ सो हत्या तिहि लागी धाइ । छपो सुकमलनालमें जाइ ॥ सुरगुरु जाइ तहांते ल्यायो । तासों हरि हित यज्ञ करायो ॥ यज्ञ किए हत्या गइ बिलाय । यों नृप बहुरि इंद्रपुर आइ ॥ नृप यह सुनि शुकसों पुनि कही । ज्ञान बुद्धि असुरहिको भई । शुक कह्यो सुनो परीक्षितराइ । देहुँ तोहिं वृत्तान्त सुनाइ ॥ चित्रकेतु पृथ्वीपतिराव । सुत हित भयो तासु हित चाव ॥ यद्यपि रानी बरीं अनेक । पै तिहिते सुत भयो न एक ॥ तागृह ऋषि अंगिरा सिधाये । अर्घ्यासन दै तिन बैठाए ॥ ऋषिसों नृप निज व्यथा सुनाई । कह्यो मोहिं सो करो उपाई ॥ ऋषि कह्यो पुत्र न तेरे होई । होइ कहूँ तो दुखदै सोई ॥ नृप कह्यो एक बार सुत होई।पाछे होनी होइ सो होई ॥ ऋषि ता नृपसों यज्ञ करायो । दै प्रसाद यह वचन सुनायो ॥ जा रानीको तू यह दैहै । ता रानी सेती सुत ह्वैहै ॥ तब रानीको सो नृप दियो । तिन प्रणाम करि भोजन कियो ॥ ऋषि प्रसादते सुत तिन जायो । सुत लडाइ दंपति सुख पायो ॥ विप्र याचकन दीनो दान । कियो उत्सव कहा करों बखान ॥ ता रानी सों नृप हित भयो । और तियनिको मन अति तयो॥तिन सबहिन करि मंत्र उपाई । नृपतिकुँवरको जहर पिआई ॥ बहुत बेर भइ कुँवरन जाग्यो । दासीसों रानी तब भाष्यो । ल्याव कुँवरको वेगि जगाय । दूध प्यायके बहुरि सोआय ॥ दासी कुँवर जगावन आई । देख्यो कुँवर मृतककी नाई । दासी बालक मृतक निहारी ॥ परी धरणिपै खाइ पछारी ॥ रानी तब तहां धाई आई । सुत मृत देखि गिरी मुरछाई । पुनि रानी जब सुरति सँभारी । रुदन करन लागी अति भारी ॥ रुदन सुनत राजा तहँ आयो । देखि कुँवरको अति दुख पायो ॥ तबही मूर्छित हो नृप गिरे । कबहुँक सुतको अंकम भरे ॥ ऋषि नारद अँगिरा तहँ आये । राजासों यह वचन सुनाये ॥ को तू को यह देखि विचार । स्वप्न स्वरूप सकल संसार ॥ सोयो होय होय सत मानै । जो जागै सो मिथ्या जानै ॥ ताते वृथा मोह बिसारि । श्रीभगवान चरण उर धारि ॥ हम तुमसों पहिले ही कही । नृप सो बात आज भइ सही ॥ नृपको सुनि उपज्यो वैराग । बनको गयो राज सब त्याग ॥ बनमें जाइ तपस्या करी । मरि गंधर्व देह तिन धरी ॥ इक दिन सो कैलास सिधायो ॥ शिवको दरशन तहां न पायो ॥ उमा नग्न देखी तिन जाई । दियो शाप ताहि या भाई ॥ तू अब असुर देह धरि जाई । मेरो कह्यो वृथा नहिं जाई ॥ उमाशाप ताको जब भयो । वृत्रासुरसों या विधि भयो ॥ हरिकी भक्ति वृथा नहिं जाई । जन्म जन्म सो प्रगटै आई ॥ ताते हरि गुरु सेवा कीजै । मेरो वचन मानि यह लीजै ॥ ज्यों शुक नृपसों कहि समुझायो। सूरदास त्योंही कहिगायो ॥ ३ ॥ गुरुमहिमा ॥ राग सारंग ॥ गुरु बिनु ऐसी कौन करै । माला तिलक मनोहर बाना लै शिर छत्र धरै ॥ भव सागरसे बूडत राखै दीपक हाथ धरै । सूरश्याम गुरु ऐसो समरथ छिनमें लै उधरै ॥ ४ ॥

इति श्रीमद्भागवते-सूरसागरे कविवरश्रीसूरदासकृते षष्ठःस्कन्धः समाप्तः ॥ ६ ॥

अथ कविवर सूरदासकृत-

श्रीसूरसागर.

सप्तमस्कन्ध।

श्रीनृसिंहरूप अवतार वर्णन ॥ राग विलावल ॥

हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविंद उर धरो ॥ हरि चरणन शुकदेव शिर नाई। राजासों बोल्यो या भाई ॥ कहौं सुकथा सुनो चितलाइ । सूर तरो हरिके गुणगाइ ॥ १ ॥ नरहरि नरहरि सुमिरन करो। नरहरि पद नित हृदय धरो ॥ नरहरि रूप धरचो जो भाई। कहों सु कथा सुनो चितलाई ॥ हरि जब हिरण्याक्षको मारचो। दशन अग्र पृथिवीको धारचो ॥ हिरण्यकशिपु दुःसह तप कियो। ब्रह्मा आइ दरश तब दियो ॥ कछू तोहिं इच्छा जो होई। माँगिलेहि वरदेहुँ अब सोई ॥ राति दिवस नभ धरणि न मरौं। अस्त्र शस्त्र परिहारन धरौं ॥ तेरी सृष्टि जहाँ लगि होई। मोको मारिसकै नाहिं कोई॥कह्यो ब्रह्मा ऐसेही होई। पुनि हरि चाहै करिहैं सोई॥यह कह ब्रह्मा निज पुर आए। हिरण्यकशिपु निज भौन सिधाए ॥ भुवन आइ त्रिभुवनपति भए। इंद्रवरुण सबही भजि गए ॥ ताके पुत्र भए प्रह्लाद। भयो असुर मुनि अति अह्लाद ॥ पांच बरषकी भई आइ। षंडामर्का लिए बुलाइ ॥ तिनके सँग चटशाल पठायो। राम नामसों तिन चित लायो ॥ षंडामर्क रहे पचिहाल। राजनीति कह्यो बारंबार ॥ कह्यो प्रह्लाद पढत मैं सार। कहां पढावत और जंजार ॥ जब पांडे इत उत कहिं गए। बालक सब इकठौरे भए ॥ कह्यो यह ज्ञान कहां तुम पायो। नारदमाता गर्भ सुनायो ॥ सबनि कह्यो देहु हमैं सिखाइ। सबहुनकै मति ऐसी आइ ॥ कह्यो सबनिसे तब समुझाई। सब तजि भजो चरण रघुराई ॥ रामहि राम पढो रे भाई। रामहिं जहँ तहँ होत सहाई ॥ इहाँ कोऊ काहूको नाहिं। असंबंध मिलत जगमाहिं॥ काल अवधि जब पहुँचे आई। चलते बेर कोउ संग न जाई ॥ सदा संघाती श्रीयदुराई। भजिये ताहि सदा लवलाई ॥ हर्ता कर्ता आपै सोई। घट घट व्यापि रह्योहै जोई ॥ ताते द्वितिया और न कोई। ताके भजे सदा सुख होई॥ दुर्लभ जन्म सुलभही पाई। हरि न भजै सो नरकहि जाई॥ यह जिय जानि विषय परिहरो। राम नाम ही सदा उच्चरो ॥ शत संवत मनुष्यकी आई। आधी तो सोवत ही जाई ॥ कछु बालापनहीं में बीते। कछु विरधापन माहिं व्यतीते ॥ कछ नृप सेवा करत विहाई। कछुइक विषय भोगमें जाई ॥ ऐसेही जो जन्म सिराई। विन हरि भजन नरकमें जाई ॥ बालपनो गए ज्वानी आवै। वृद्ध भये मूरख पछतावै ॥ तीनों पन पुनि ऐसहि जाई। ताते अबहिं भजो यदुराई ॥ विषय भोग सब तनमें होई। बिनु नर जन्म भक्ति नहिं होई ॥ जाने करै सो पशुसम होई। ताते भक्ति करो सब कोई ॥ जब लगि काल न पहुँचे आई। हरिकी भक्ति करो चितलाई ॥ हरि व्यापकहै सबसंसार। ताहि भजो ऐसी बिचार ॥ शिशु किशोर वृद्ध तनु

होई । सदा एक रस आतम सोई ॥ जानि ऐसो तनु मोहै त्यागो । हरि चरणारविंद अनुरागो ॥ माटीमें जो कंचन परै । त्योंही आतमतनु संचरै ॥ कंचनते जो माटी तजै । त्यों तनु मोह छांडि हरि भजै ॥ नर सेवाते जो सुख होई । क्षणभंगुर थिर रहै न सोई ॥ हरिकी भक्ति करो चित लाई । होइ परमसुख कबहुँ न जाई ॥ नीच ऊंच हरि गिनत न दोइ । यह जिय जानि भजो सब कोइ ॥ असुर होइ सुर भावै होई । जो हरि भजै पिआरो सोई ॥ रामहि राम कहो दिन रात । नातर जन्म अकारथ जात ॥ सौ बातनकी एकै बात । सब तजि भजो द्वारकानाथ ॥ सब चेटियन ऐसी मन आई । रहे सबै हरिपद चित लाई ॥ हरि हरि नाम सदा उचारैं । विद्या और न मनमें धारैं ॥ तब पंडामर्का संक्याय । कह्यो असुरपतिसों पुनि जाय ॥ तव सुतको पढाय हम हारे । आप न पढै अरु और बिगारे । राम नाम नित रटिबोकरै । राजनीति नाहिं मनमें धरै ॥ ताते कह्यो तुमै हम आइ । करनी होय सो करो उपाइ ॥ हिरनकशिपु तब सुतहि बुलायो । कछुक प्रीति कछु डर देखरायो ॥ बहुरो गोदमाहिं बैठारि । कह्यो कहा पढचो विद्यासारि ॥ सार वेद चारोंको जोई । छहों शास्त्र सार पुनि सोई ॥ सर्व पुराण माहिं जु सार । राम नाम मैं पढचों सँभार ॥ कह्यो याको लेजाइ उठाई । सुमिरत मम रिपुको चितलाई ॥ मेरी ओर न कछू निहारो । याको पावक भीतर डारो ॥ जो ऐसे करते नाहिं मरै । डारि देहु गज मैंमत तरे ॥ पर्वत से इहि देहु गिराई । मरै जौन विधि मारो जाई ॥ असुर चले तब कुँवर लिवाय । हरि जू ताकी करै सहाय ॥ करै उपाउ सो वृथा जाइ । नृपकी आज्ञालियो उठाइ ॥ कुँवर रह्यो हरि पद चितलाइ । असुरनि गिरिते दियो गिराइ ॥ राखि लियो तिन त्रिभुवन राइ । तव गज मैमत आगे डारचो ॥ राम नाम तब कुँवर उचारचो । गज दोउ दंत टूटि धर परै । देख असुर यह अचर ज टरै ॥ बहुरो नाग दयो लपटाइ । जिनके ज्वाला गिरि जरि जाइ ॥ हरिजू तहँहू करी सहाइ नाग रह्यो शिर नीचे नाइ ॥ पुनि पावकमें दियो गिराय । हरि जू ताकी कियो सहाय ॥ करै उपाइ सु वृथा जाइ । तब सब असुर रहे खिसियाइ ॥ कह्यो असुरपतिसों पुनि जाइ । मरत नहीं यह कियो उपाइ ॥ हम तो बहुत भांति पचि हारे । यह तो रामहि राम उचारे ॥ नृपकह्यो मंत्र यंत्र कछु आहि । कै छल करत कछू तू आहि ॥ तोको कौन बचावत आइ । सो तू मोको देहि बताइ ॥ मंत्र यंत्र मेरे हरि नाम । घट घटमें जाकों विश्राम ॥ जहां तहां सोइ करत सहाइ । तासों तेरो कछु न बसाइ ॥ कह्यो कहाँ सो मोहिं बताइ । नातर तेरो जिय अब जाइ ॥ जो सब ठौर खंभहू होइ । कह्यो प्रह्लाद आहि तू जोहि ॥ हिरण्यकशिपु क्रोध मन धारचो । जाइ खंभको मुक्का मारचो ॥ फटि तब खंभ भयो द्वै फारि ॥ निकसे हरि नर हरि वपुधारि ॥ निरखि असुर चकृत ह्वै गयो । बहुरि गदालै सन्मुख भयो ॥ हरि तासों कियो युद्धबनाइ । तब सुर मनमें गये डराइ ॥ संध्या समय भयो जो आइ । हरिजू ताको पकरचोधाइ ॥ निज जांघन पर, ताहि पछारचो । नखन साथ तब उदर बिदारचो ॥ जय. जयकार दशोंदिश भयो । असुर प्राण तजि हरिपुर गयो ॥ ब्रह्मादिक सब रहे अरगाइ । क्रोध देखि कोउ निकट न जाइ ॥ बहुरो ब्रह्मा सुरन समेत । नरहरि जूके जाइ निकेत ॥ करि दंडवत विनय उचारि । तुम अनंत पराक्रम बनवारि ॥ तुमहीं करत नरक निस्तार । उत्पति भरत करत संहार ॥ करो क्षमा कियो असुर सँहार । गयो न क्रोध भरो सोभार । महादेव पुनि विनय उचारी । नमो नमो भक्तन भयहारी ॥ भक्त हेतु तुम असुर सँहारो । श्री नर-हरि अब क्रोध निवारो ॥ क्रोध न गयौ तब ऐसे कह्यो । क्षमो प्रलयको समय न भयो ॥

तौहूं क्रोध न गयो विकारि। महादेवहू फिरे निहारि ॥ बहुरि इन्द्र अस्तुती उचारी। सुयो असुर सुर भये सुखारी॥ ह्वैहै यज्ञ अब देवपुरारी। क्षमिए क्रोध सुरन सुखकारी॥ पुनि लक्ष्मी यों बिनय सुनाई। डरौं देखि यह रूप निवाई॥ महाराज यह रूप दुरावहु। रूप चतुर्भुज मोहिं दिखावहु॥ बरुन कुबेरादिक पुनि आए। करी बिनय तिनहूं बहु भाए॥ तौहूँ क्रोध क्षमा नहिं भयो। तब सब मिलि प्रह्लादहिं कह्यो॥ तुमरे हेतु हरि लियो अवतार। तुम अब जाइ करो मनुहार तब प्रह्लाद हरि निकट आइ। करि दंडवत परो गहि पाइ॥ तव नरहरि जू ताहि उठाइ। ह्वै कृपालु बोल्यो या भाइ॥ कहु जु मनोरथ तेरो होइ। छांडि बिलंब करौं अब सोइ॥ दीनानाथ दयालु मुरारी। मम हित तुम लीनो अवतारी॥ असुर अशुचि है मेरी जात। मोहिं सनाथ कियो तुम नाथ॥ भक्त तुम्हारी इच्छा करै। ऐसो असुर कह्यो क्यों मरै॥ भक्तन हित तुम धारी देह। तरिहैं गाइ गाइ गुण एह॥ जग प्रभुत्व प्रभु देखा जोई। सो बिन तुम क्षणभंगुर होई॥ इन्द्रादिक जाते भय करचो। सो मम पिता मृतक होइ परचो॥ साधु संग प्रभु मोको दीजै। तिहि संगत तुम भक्ति करीजै॥ और न मेरी इच्छा कोइ। भक्ति अनन्य तुम्हारी होइ॥ और जु मोपर कृपा करो। जो सब जीवनको उद्धरो॥ जो कहो कर्मभोग जब करिहैं। तब ए जीव सकल निस्तारि हैं॥ मम कृत इनके बदले लेहु। इनके कर्म सकल मोहिं देहु॥ मोको नरक माहि लै डारो। पै प्रभुजू इनको निस्तारो॥ पुनि कह्यो जीव दुखित संसारा। उपजत बिनशत बारंबारा॥ बिना कृपा निस्तार न होई। करो कृपा मैं माँगत सोई॥ प्रभु मैं देखि तुम्हैं सुख पावत। पै सुर देखि सकल डरपावत॥ ताते महा भयानक रूप। अन्तर्ध्यान करो सुर भूप॥ हरि कह्यो मोहिं बिरद कीलाज। करो मन्वन्तरलो तुम राज॥ राजलक्ष्मी मद नहिं होइ। कुल इकीसले उधरे सोइ॥ जो मम भक्त नरकमें जाइ॥ होइ पवित्र ताहि परसाइ॥ जा कुल माहि भक्त मम होइ। सप्त पुरुष लै उधरै सोइ॥ पुनि प्रह्लाद राज बैठाए। सब असुरन मिलि शीश नवाए॥ नरहरि देखि हर्ष मन कीनो। अभयदान प्रह्लादहिं दीनो॥ तब ब्रह्मा बिनती अनुसारी। महाराज नरसिंह मुरारी॥ सकल सुरनको कारज सरो। अंतर्ध्यान रूप अब करो॥ तब नरहरि भे अंतर्ध्यान। राजासों शुक कह्यो बखान॥ जो यह लीला सुनै सुनावै। सूरदास हरि भक्ति सुपावै॥ २॥ राग रामकली॥ पढ़ौ भैया कृष्ण गोविंद मुरारी। कहै प्रह्लाद सुनो रे बालक लीजै जन्म सुधारी॥ को है हिरण्यकशिपु अभिमानी जोर सकै तुम मारि। राखनहार वहै कोउ औरै श्याम धरे भुज चारि॥ कर्मरूप सुदेव नारायण नहिं दीजै सुबिसारि॥ सूरदास ता हरिसे मीता कबहूं न आवैहारि॥ ३॥ राग कान्हरा॥ जो मेरे भक्तन्ह दुखदाई। सो मेरे इहि लोक बसै जिन त्रिभुवन छांडि अनत कहुँ जाई॥ शिव बिरंचि नारद मुनि देखत तिनहुँ न मोको सुरति दिवाई। बालक अबल अजान रहै वह दिन दिन देत त्रास अधिकाई॥ खंभ फारि गलगाजि मत्त बल क्रोधमान छवि बरणि न जाई॥ नैन अरुन बिकाल दशन अति नखसों हृदय बिदारन आई॥ कर जोरे प्रह्लादजू बिनवैं बिनय सुनो अशरन शरनाई॥ अपनी रिसैं बिसारि तात मम अपराधी सुपरमगति पाई॥ दीनदयालु कृपानिधि नरहरि अपनो जानि हृदय लियो लाई। सूरदास प्रभु पूरण ठाकुर कह्यो सुकहीन मैं नियराई॥ ४॥ राग मारू॥ ऐसी को सकै करि बिना मुरारी। कहत प्रह्लादके धारि नरसिंह वपु निकसि आए तुरित खंभ फारी॥ हिरण्यकश्यपु निरखि रूप चकृत भयो बहुरि कर लै गदा असुर धायो। हरि गदायुद्ध तासों कियो भली बिधि बहुरि संध्या समय होन आयो॥ गहि असुर

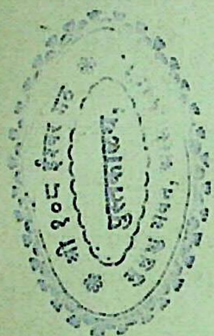
धाइ पुनि जाइ निज जंघपर नखनिसों उदर डारचो विदारी। देखि यह सुरन वर्षा करी पुहुपकी सिद्ध गंधर्व जय ध्वनि उचारी ॥ बहुरि बहु भाइ प्रह्लाद अस्तुति करी ताहि दै राज बैकुंठ सिधाए। भक्तके हेत हरि धरचो नरसिंह बपु सूर जन जानि यह शरन आए ॥ ५ ॥ राग धनाश्री ॥ तब लगि हौं बैकुंठ न जैहौं। सुनु प्रहलाद प्रतिज्ञा मेरी जब लगि तुम शिर छत्र न दैहौं॥मन बच क्रम जान जिय अपने जहां जहां जन तहांतहां ऐहौं ॥ निर्गुण सगुण होइ सब देख्यो तोसों भक्त कहुं नहिं पैहौं ॥ मो देखत मो दास दुखित भयो यह कलंक हौं कहां गवैहौं॥ हृदय कठोर कुलिशते मेरो अब नाहिं दीनदयालु कहैहौं ॥ गहि तनु हिरनकशिपुको चीरो फारि उदर तब रुधिर न्हैहौं ॥ इहि हत मिटै कहै सूरज प्रभु या कृत को फल तुरत चखैहौं ॥ ६ ॥ श्रीभगवान शिव सहाय वर्णन ॥ राग विलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणाविन्द उर धरो ॥ हरि ज्यों शिव को करी सहाई।कहौ सुकथा सुनो चितलाई ॥ एक समैं सुर असुर प्रचारि।लरे भये असुरन की हारि तिन ब्रह्माकै हित तप कीनो। ब्रह्मा प्रकटि दरश तब दीनो ॥ तब ब्रह्मासों कह्यो शिर नाइ । जे हैं ह हमरी किहि भाइ ॥ ब्रह्मा तब यह वचन उचारचो। मय माया मय कोट सँवारचो॥तामें बैठि सुरन जय करो। तुम उनके मारे नहिं मरो॥असुरन यह मय को समुझाई।तब मय दीनो कोट बनाई॥ लोहतले मधरूपा लायो। ताके ऊपर कनक लगायो॥जहँ ले जाहि तहां वह जावै। त्रिपुर नाम सो कोट कहावै ॥ गढके बल असुरन जय पाई। लियो सुरनसों अमृत छिनाई ॥ सुर सब मिलि गए शिवशरनाई। शिव तब कीन्ही तिनैं सहाई ॥ पै शिव जाको मारत धाई। अमृत पिआइ तिंहि लेहिं जिवाई ॥ तब शिव कीनो हरिको ध्यान।प्रगट भये तहांश्रीभगवान ॥ शिव हरिसों सब कथा सुनाई । हरि कह्यो अब मैं करों सहाई॥सुंदर गऊरूप हरि कीनो। बछरा करि ब्रह्मा सँग लीनो ॥ अमृत कुंडमें पैठी जाय । कह्यो असुरन मारो या गाय ॥ एकनि कह्यो याहि मत मारो। याको सुंदर रूप निहारो ॥ कितक अमृत पीवै यहि भाई । हरि मति तिनकी फिर भरमाई ॥ हरि अमृत पिय गए अकास । असुर देखि यह भए उदास॥कह्यो इनहिं हिरणाक्ष सुमारचो। हिरण्यकशिपु इनहिं संहारचो ॥ यासों हमरो कछु न बसाई । यह कहि असुर रहे खिसियाई ॥ शिव तब कीनो युद्ध अपार। पै असुरन नहिं मानी हार ॥ बाण एक हरि शिवको दियो। तासों सब असुरन क्षय कियो ॥ या विधि हरिजू करी सहाय। मैं सो तुमसों दई सुनाय ॥ शुक ज्यों नृपको कहि समुझायो। सूरदास जन त्योंही गायो ॥ ७ ॥ नारद उत्पत्ति कथा वर्णन । राग विलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविंद उर धरो ॥ हरि भजि जैसो नारद भयो। नारद व्यासदेवसों कह्यो ॥ कहौं सुकथा सुनो चित धार। नीच ऊंच हरिके इक सार ॥ गंधर्व ब्रह्मासभा मँझार। हँस्यो अप्सरा ओर निहार ॥ कह्यो ब्रह्मा दासी सुत होहि । सकुच न करी देखि तैं मोहिं ॥ भयो दासीसुत ब्राह्मण गेह । तुरत छाँडिकै गंधर्व देह ॥ ब्राह्मण गृह हरिके जन छाए। दासी दास सेवहित लाये ॥ हरि जन हरि चरचा जो करै। दासीसुत सो हृदय धरै ॥ सुनत सुनत उपज्यो वैराग। कह्यो जाउँ क्यों माता त्याग ॥ ताकी माता खाई कारे। सो मरगई शापकी मारे ॥ दासी सुत वन भीतर जाई। करी भक्ति हरिपद चित लाई ॥ ब्रह्मा पुत्र तनु तजि सो भयो। नारद यों अपने मुख कह्यो ॥ हरिकी भक्ति करै जो कोई। सूर नीच सो ऊंच सु होई ॥८॥

इति श्रीभागवते सूरसागरे सूरदासकृते सप्तमस्कंधः समाप्तः ॥ ७ ॥

अथ कविवर सूरदास कृत—

श्रीसूरसागर।

अष्टमस्कन्ध।



राग विलावल ॥ चालि ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविन्द उर धरो॥ हरि चरणन शुकदेव शिर नाई। राजासों बोल्यो या भाई॥ कहो हरि कथा सुनो चितलाई। सूरदास हरि के गुण गाई॥ १॥ गजमोचन अवतार। रागविलावल॥ गज मोचन ज्यौं भयो अवतार। कहौं सुनौ सो अब चित धार॥ गंधर्व एक नदीमें जाइ। देवलऋषिके पकरचो पाइ॥ देवल कह्यो ग्राह तुम होहि। कह्यो गंधर्व दया करि मोहिं॥ जब गजेंद्रके पग तू गहि है। हरि जू ताको आनि छुडै है॥ भए स्पर्श देवतनु धरि है। मेरो कह्यो नहीं यह टरि है॥ राजा इंद्रदुम्न कियो ध्यान। आयो अगस्त्य नहीं तिन जान॥ दियो शाप गजेंद्र तू होहिं। कह्यो नृप दया करो ऋषि मोहिं॥कह्यो तुहि ग्राह आन जब धरि है। तू नारायण सुमिरन करि है॥ याही बिधि तेरी गति होई। भयो त्रिकूट पर्वत गज सोई॥ कालहि पाइ ग्राह गज गह्यो। गज बल करि करिके थकि रह्यो॥ सुत पत्नी हूं बलकरि रहे। छूट्यो नहीं ग्राहके गहे॥ ते सब भूखे दुःखित भये। गजको मोह छाँडि उठि गए॥ तब गज हरिकी शरणहि आयो। सूरदास प्रभु ताहि छुटायो॥ २॥ माधवजू गज ग्राह ते छुड़ायो। निगमनि हूं मन वचन अगोचर प्रगटि स्वरूप दिखायो॥ शिव विरंचि सब देखत ठाढ़े बहुत दीन दुख पायो। बिन बदले उपकार करैको काहू कहत न आयो॥चितवत चितहीमें चिंता मणि चक्र लये कर धायो॥ अति करुणा करि करुणामै हरि गरुडहिहूँ छुटकायो। सुनियत सुयश जु निज जन कारन कहूं न गहर लगायो॥ ना जानों जु सूर इहि औसर कौन दोष बिसरायो३॥ राग विलावल॥ हरि कर चक्र धरे धर धावत॥ गरुड समेत सकल सेनापति पाछे लागे आवत॥ चलि ना सकत गरुड मन डरपत बुधि बल बलहि बढावत। मनो पवन वश पत्र पुरातन अपनो चरण चलावत॥ को जानैं प्रभु कहां चलैहैं काहू कछु न जनावत॥ अति व्याकुल गति देखि देवगण सोचि सकल दुख पावत॥ गजहित धावन जन सुकरावन वेद विमल यश गावत। सूर समुझि समुझाव अनाथनि इहि विधि नाथ छुडावत॥ ४॥ राग सारंग॥ झांई न मिट न पाई आए हरि आतुर ह्वै जब जान्यौं गज ग्राह लये जात जलमें। यादवपति यदुनाथ खगपति साथ जन जान्यो विहबल तब छांडि दयो थलमें॥ नीरहूते न्यारो कीनो चक्रन चक्र शीश छीनो देवकीके नन्दलाल ऐंचि भुवतलमें। कहै सूरदास देखि नैननकी मिटी प्यास कृपा कीनो गोपीनाथ आइगए पलमें॥ ५॥ राग बिलावल॥ अब हौं सब दिशि हेरि रह्यो। राखत कोउ न नाथ कृपानिधि अति बल ग्राह गह्यो॥ सुर नर सब स्वारथके गाहक कत श्रम आन करै। उडगण उदित तिमिर नाहिं नाशत बिन रविरूप धरे। इतनी बात सुनत करुणामय चक्र

गहे करधाए ॥ हत गज शत्रु सूरके स्वामी ताछिन सुख उपजाए॥ ६ ॥ कूर्म अवतार समुद्रमथन अमृतादि निमित्त॥ राग बिलावल ॥ जैसे भयो कूर्म अवतार । कहौं सुनो सो अब चितधार ॥ नरहरि हिरण्यकशिपु जब मारचो । अरु प्रह्लाद राज्य बैठारचो ॥ ताको सुत वैरोचन भयो । ताके बहुरि पुत्र बलि हुयो ॥ बलि सुरपतिको बहु दुख दयो । तब सुरपति हरि शरणनि गयो ॥ हरिजू अपनी बिरद सँभारचो । सूरज प्रभु कूरमतनु धारचो ॥ ७ ॥ राग मारू ॥ सुरन हेतु हरि कच्छपरूप धारचो । मथन करि जलधि अमृत निकारचो ॥ चतुर्मुख त्रिदश तब बिनय हरिसों करी बलि असुर सों सुरनि दुःख पायो । दीनबंधु कृपाकरन अशरन शरन मंत्र यह तिनै निज सुख सुनायो ॥ बासुकी नेति अरु मंदराचल रई कमठमें आपनी पीठ धारचो । असुरसों हेतु करि करो सागर मथन तहांते अमृत को पुनि निकारचो ॥ रत्न चौदह बहुरि तहांते प्रगट होहिं असुरको सुरा तुम अमृत प्याऊं । जीतिहौ तब महा असुर बलबंतको मरैं नहिं देवता यों जिवाऊं । इन्द्र मिलि सुरन बलिपास गयो बहुरि उन कह्यो कहो किहि काज आयो । त्रिदश तब समुद्रके मथनकी बात जो हुती सो सकल कहिकै सुनायो॥ बलि कह्यो बिलंब अब नेकु नाहिं कीजिए मंदराचल अचल चलो धाई । दोउ इक मंत्रकरि जाइ पहुँचे तहां कह्यो अब लीजिए इहि उँचाई ॥ मंदराचल उपारत भयो बहुत श्रम बहुरि लै चलनको जब उठायो । सुर असुर बहुत ता ठौरही मरिगए दुहूंको गर्व हरि यों नशायो ॥ तब दुहूं ध्यान भगवानको धरि कह्यो बिनु तुम्हारी कृपा गिरि न जाई । वाम करसों पकरि गरुड पर राखि हरि क्षीरके जलधितट धरचो जाई ॥ कह्यो भगवान अब बासुकी ल्याइए जाइ तिहि बासुकीसों सुनायो । मान भगवान आज्ञा सुआयो तहां नेति करि अचलको समुद्र पायो॥ मंदराचल समुद्रमाहिं बूडन लग्यो तब बहुरि सबन अस्तुति सुनाई । कूर्म को रूप धरि धरि अचल पीठपर सुर असुर सकल मन भई बधाई ॥ पूंछको ताजि असुर दौरिकै मुख गह्यो सुरन तब पूंछकी ओर लीनो । मथतभए छीन तब अस्तुति करी श्रीमहाराज निज शक्ति दीनी ॥ भयो हलाहल प्रकट प्रथमही मथत जब रुद्रको दयो तिहि कंठधारी । चन्द्रमा बहुरि जब मथत पायो प्रगट सोउ करि कृपा दीनो मुरारी ॥ कामनाधेनु तब सप्त ऋषिको दई लई उन बहुत आनन्द कीने । अप्सरा पारजातक धनुष अश्व गज श्वेत ए पांच सुरपतिहि दीने । शंख अरु कौस्तुभमणिं लई आप हरि बहुरि पुनि लक्ष्मीदई दिखाई । परमसुन्दर मनो तडित है दर्शनीय कमलकी माल करलए आई ॥ सकल भूपन मनिनके बने सकल अंग अरु बसन अरुन सुंदर सुहाये । देखि सुर असुर सब दौरि लागे गहन कह्यो मैं बरवरों आप भाए । जो मुझे चहै मैं ताहि नाहीं चहौं असुरको राज थिर नाहिं देखों । तपसियन देखि कह्यो क्रोध इनमें बहुत ज्ञानियनिमें न आचार पेखों ॥ सुरनको देखि कह्यो ए पराधीन सब देखि विधको कह्यो यह बुढायो । चिरंजीवनि देखि कह्यो न डराइ ए लोक तिहुँ माहिं कोउ चित न आयो ॥ बहुरि भगवानको निरखि सुंदर परम कह्यो इहिमाहिं है सबै भलाई । पै न इच्छा इनैहै काहू बस्तुकी अरु न ए देखिकै मोहिं लोभाई ॥ कबहूं किये भक्ति हूके नए रीझि हैं कबहूंके बैर ए रीझि जाहीं । और गुण चाहिये सो सकल हैं इन्है डारि दई माल कहि गेर माहीं ॥ हरि कह्यो मम हृदय माहिं तुम रहो सदा सुरन मिलि देव दुन्दुभी बजाई । धन्य धनि कह्यो पुनि लक्ष्मी सो सकल सिद्ध गंधर्व जे ध्वनि सुनाई ॥ बहुरि धन्वंत्रि आयो समुद्र से निकसि सुरा अरु अमृत पुनि संग लायो । भयो आनँद सुर असुरको देखिकै असुर करि बलहि अमृत छिनायो ॥ सुरन भगवानसों आइ बिनती करी

असुर सब अमृत लै गए छिनाई । कह्यो भगवान चिंता न कछू मन धरो मैं करों अब तुम्हारी सहाई ॥ परस्पर असुर तब युद्ध लागे करन होय बलवंत सोइ लै छिनाई । मोहिनी रूप धरि श्याम आए तहां देखि सुर असुर सबहीं लोभाई ॥ आइ असुरन कह्यो लेहु यह अमृत तुम सबन देहु बाँटि मेटो लराई ॥ हँसि कह्यो नहीं हम तुम कछू मित्रता बिना विश्वास बाँट्यो न जाई ॥ कह्यो तोहि बाँट पर हमैं विश्वास है देहु तुम बाँट जो धर्म होई ॥ कह्यो सब सुर असुर मिलि कियो दधि मथन देउ सब बांट है धर्म सोई ॥ कह्यो जो करो सो हमैं परमान है असुर सुरपांति करि तब बिठाई । असुर दिश जिते मुसकाइ मोहे सकल सुरनको अमृत दीनो पिलाई ॥ राहु शशि सूर्यके बीचमें बैठिकै मोहनीसों अमृत मांगि लीनो । सूर्य शशि कह्यो जब असुर यह कृष्ण जू लै सुदर्शन सु द्वै टूक कीनो ॥ राहु शिर केतु धरको भयो तबहिंते सूर शशिको सदा दुखदाई । करत भगवान रक्षा शशिउ सूरकी होत है सुदर्शन तब सहाई ॥ करि अंतर्ध्यान तब मोहनीरूपको गरुड़ असवार ह्वै तहां आए । असुर चक्रत भए कहां गइ नारि वह सुर असुर युद्ध हेतु दोउ धाए ॥ सुरनकी जीति भई असुर मारे बहुत जहां तहां गए सबही पराई । सूर प्रभु जिहि करे कृपा जीतै सुई बिनु कृपा जाइ उद्यम बृथाई ॥ ८ ॥ मोहिनी रूप । राग मारू ॥ हरि कृपा करै जीतै सोई । वाद अभिमान जिन करो कोई । पाइ सुधि मोहनीकी सदाशिव चले जाइ भगवानसों कहे सुनाई॥असुर अजितेंद्रिय देखि मोहित भये रूप सों मोहिं दीजै दिखाई।हरि कह्यो ब्रह्म व्यापक निराकार सो निर्गुण तुम सगुणलै कहा करिहौ॥पुनि कह्यो बीनती मान लीजै प्रभू उमा देख्यो चहत कृपा धरिहो । हरि कह्यो तुमैं दिखराइ हौं रूप वह करो विश्राम इक ठौर जाई । बैठि एकांत जोहन लग्यो पंथ शिव मोहनी रूप कब दै दिखाई ॥ होइ अंतर्ध्यान मोहनी रूप धरि जाइ बन माहिं दीनो देखाई । सूर शशि किधौं चपला परमसुंदरी अंग भूषनानि छबि कहि न जाई ॥ हाव अरु भावकरि चलत चितवत जबै कौन ऐसो जो मोहित न होई ॥ उमाको छांड़ि अरु डारि मृगचर्मको जाइके निगट रह्यो रुद्र जोई ॥ रुद्रको देखि करि मोहनी लाज करि लियो अंतर रुद्र अधिक मोह्यो । उमा हूं देखि पुनि ताहि मोहित भई तासु सम रूप अपनो न जोह्यो ॥ रुद्र धीरज तज्यो जाइ ताको गह्यो सो चली आपको तव छडाई ॥ रुद्रको बीर्य छुटिकै पर्यो धरणि पर मोहनी रूप हरि लियो दुराई ॥ देखिकै उमाको रुद्र लज्जित भए कह्यो मैं कौन यह काम कीनो । इंद्रीजित कहावत हौं तो आपुको समुझि मनमाहिं ह्वै रह्यो खीनो । चतुर्भुज रूप हरि आइ दरशन दियो कह्यो शिव शोच दीजै बिहाई॥सम तुमारो नहीं दूसरो जगतमें कह्यो तुम रूप तब दियो दिखाई ॥ नारिके रूपको देखि मोहै न जो सो नहीं लोक तिहुँ माहिं भावे । सूरस्वामी शरन रहित माया सदा को जगत जौन कपि ज्यों नचावै ॥ ९ ॥ राग विलावल ॥ असुर द्वै हुते बलवंत भारी । सुंद उपसुंद स्वेच्छा विहारी ॥ भगवती तबै दीनी देखाई । देखि सुंदरी दोउ रहे लुभाई ॥ भगवती कह्यो तिनको सुनाई । युद्ध जीतै सु मुहि वरै आई ॥ तब दुहूं युद्ध कीनो तहांई । करि मुये तुरंतहि दोउ भाई ॥ देखिकै नारि मोहित जो होवै । आपुनो मूल या विधि सुखोवै ॥ शुक नृपति पास जेहि विधि सुनाई । सूर ज्यों ही तेहि भांति गाई ॥ १० ॥ वामन अवतार वर्णन ॥ राग विलावल ॥ जैसे भयो वामन अवतार । कहौं सुनो सो अब चित धार ॥ हरि जब अमृत सुरन पियायो । तब बलि असुर बहुत दुख पायो ॥ शुक्र ताहि पुनि यज्ञ करायो । सुर जै राज्य त्रिलोकी पायो ॥ निन्यानवे यज्ञ पुनि किये । तब दुख भयो अदितिके हिये ॥ हरि हित उन पुनि बहुत पुकार्यो । सूरश्याम वामन वपु धार्यो ॥ ११ ॥ राग मलार ॥ द्वारे ठाढ़े हैं द्विज वामन । चारों वेद पढ़त मुख आगर अति सुगंध सुर गावन ॥ वाणी सुनि बलि पूछन लागे इहां विप्र करो आवन ।

चर्चित चन्दन नील कलेवर बरसति बुंदन सावन ॥ चरण धोइ चरणोदक लीनो मांगि देउँ मन भावन । तीन पैड वसुधा हौं चाहौं परण कुटीको छावन ॥ इतनो कहा विप्र तैं मांग्यो बहुत रत्न देउँ गावन । सूरदास प्रभु बोल छले बलि धरचो पीठि पद पावन ॥ १२ ॥ राग मलार॥राजा इक पंडित पौरि तुमारी । चारों वेद पढे सुख आगर रहै वामन वपुधारी ॥ अपद दुपद पशुभाषा बूझै अविगत अल्प अहारी । नगर सकल नर नारी मोहे सूरज ज्योति बिसारी ॥ सुनि आनंद चले बलि राजा आहुति यज्ञ बिसारी । देखि स्वरूप सकल कृष्णाकृत कीनी चरण जुहारी ॥ चलिए विप्र जहां यज्ञवेदी बहुत कही मनुहारी । जो माँगो सोइ देहुँ तुरतही हीरा रतन भँडारी ॥ रहु रहु राजा यों नाहिं कहिये दूषण लागै भारी । हूंठ पैंड दे वसुधा हमको तहां रचौं धर्मसारी ॥ शुक्र कह्यो सुन हो बलिराजा भूमिको दान निवारी । ए तो विप्र न होंवे राजा आए छलन मुरारी ॥ कहि धौं शुक्र कहां धों कीजै आपुन भए भिखारी । सबही उदक दियो बलिराजा वामन देह पसारी ॥ जैजैकार भयो भुव मापति तीन पैंड भइ सारी ॥ आध पैंड दै वसुधा राजा नातरि चल सतहारी । अब सत क्यों हारों जगस्वामी नापो देह हमारी ॥ सूरदास बलि सर्वस दीनो पावो राज्य पतारी ॥ ॥ १३ ॥ मत्स्यअवतार वर्णन ॥ राग मारू ॥ सुरनहेतु हरि मत्स्यरूप धारचो । सदाही भक्त संकट निवारचो ॥ चतुर्मुख कह्यो श्रुति चतुर शंखा असुर लै गयो तवै परलै दिखायो। भक्तवछल कृपाकरन अशरन शरन मत्स्यको रूप तहां धारि आयो ॥ स्नान करि अंजली जल जबै नृप लियो मच्छको देखि कह्यो डार दीजे । मच्छ कह्योमैं गही आय तुमरी शरन करि कृपा अब मोहिं राखिलीजे ॥ नृप सुनत वचन चकृत प्रथम ह्वै रह्यो कह्यो मछ वचन किहि भांति भाख्यौ पुनि कमंडलु धरचो तहां सो बढिगयो कुंभ धरि बहुरि पुनि मांट राख्यो ॥ पुनि धरचो खाइ तालाबमें पुनि धरचो नदीमें बहुरि तिहि डारि दीनो।बहुरि जब बढिगयो सिंधु तब लैगयो तहां हरि रूप तब चीन्हलीनो ॥ कह्यो करि विनय तुमं ब्रह्म अनु अंतहौ मत्स्यको रूप किहि काज कीन्हो॥ वेद विधि चहत तुम प्रलय देखन कहत तुम दोऊ हेतु अवतार लीनो ॥ कबहुँ बराह नरसिंह कबहुँ भयो कच्छको रूप लीनों ॥ कबहुँ भयो राम वासुदेव कबहुँ भयो ओर बहु रूप हित भक्त कीनो।सातवें दिवस दिखराय हों प्रलय तुहिं सप्तऋषि नावमें बैठि आवें। तोहिं बैठारिहैं नावमें हाथ गहि बहुरि हम ज्ञान तुहि कहि सुनावें । सर्प इक आइहै बहुरि तुमरे निकट ताहिसों नाव मम शृंग बांधो । यहै कहि मत्स्य प्रभु भए अंतर्ध्यान नृप तबै आपनों कर्म साधो ॥सातवें दिवस आयो निकट जलधि जब नृपति कह्यो अब कहीं नाव पावै । आइ गई नाउ तब ऋपिन तासों कह्यो आध हम नृपति तुमको बचावें ॥ पुनि कह्यो मत्स्य हरि अब कहां पाइये ऋपिन कह्यो ध्यान जियमांहिं धारचो । मत्स्य अरु सर्प ता ठौर प्रगटित भए तबै तिनसों नृपति कहि उचारचो। ज्यों महाराज या जलधिते पार कियो भव जलधि हूं पार करो स्वामी । अहं ममता हमें सदा लागी रहति मोह मद क्रोधयुत मंद कामी ॥ कर्म सुख हित करत होत तहां दुःख तब इतेपर मूढ़ नाहीं सँभारत । करन कारन महाराजहैं आपही ध्यान प्रभु कौन मनमांहिं धारत॥बिनु तुमारी कृपा गति न-हीं नरनको जानि मोहिं आपनो कृपा कीजै । जन्म अरु मरनमें सदा दुःखित रहत देहु मोहिं ज्ञान जो सदा जीजै । मत्स्य भगवान कह्यो ज्ञान पुनि नृपतिसों भयो सुपुराण सब जगत जान्यो । लेहु अब ज्ञान कह्यो आंखि अब मीचि तू मत्स्य जो कह्यो सो नृपति मान्यो ॥ आंखिको खोलि जब नृपति देख्यो बहुरि कह्यो हरि प्रलय माया दिखाई । कह्यो जो ज्ञान भगवान सो आनि नृपति उर निज आयु इहिविधि बिताई॥ बहुरि शंखासुरै मारि वेद आनिद्यो चतुर्मुख विविध अस्तुति सुनाई ॥ सूरके प्रभूकी नित्य लीलावनी सकै कहि कौन यह कछुक गाई ॥ १४ ॥

इति श्रीमद्भागवते–सूरसागरे कविवर श्रीसूरदासकृते अष्टमः स्कंधः समाप्तः ॥ ८ ॥



अथ कविवर सूरदास कृत-

श्रीसूरसागर.

नवमस्कन्ध।

राजा पुरूरवाको वैराग्य वर्णन। राग बिलावल ॥ शुकदेव कह्यो सुनो हो राउ। नारी नागिनि एक स्वभाउ॥ नागिनिके काटे विष होइ। नारी चितवत नर रहे भोइ॥ नारीसों नर प्रीति लगावै। पै नारी तिहि मनहिं न ल्यावै॥ नारी संग प्रीति जो करै। नारी ताहि तुरत परिहरै॥ नृपति एक पुरूरवा भयो। नारीसंग हेत तिन ठयो॥ तासों उन कटु वचन सुनाए। पै ताके मन कछू न आए॥ बहुरो तिहि उपज्यो वैराग। गयो उरबशीको सो त्याग॥हरिकी भक्ति करत गति पाई। कहों सुकथा सुनो चित लाई॥ एकबार महाप्रलय भयो। नारायण आपे रहिगयो॥नारायण जलमें रहे सोई। जागि कह्यौ बहुरो जग होई॥ नाभिकमलते ब्रह्मा भयो॥तिन मनते मरीचिको ठयो॥पुनि मरीचि कश्यप उपजायो। कश्यपकी तिय सूरज जायो॥ सूरजके वैवस्वत भयो। सुत हित सो वशिष्ठ पै गयो॥ ताकी नारि सुता हित भाष्यो।सुनि वशिष्ठ अपने मन राख्यो॥ऋषि नृपसों यज्ञ विधि करवाई।इला सुता ताके गृह आई॥ नृप कह्यो पुत्र हेतु यज्ञ कियो। पुत्री भई यह अचरज भयो॥ ऋषि कह्यो रानी पुत्रीकही। मेरे मनमें सोई रही॥ ताते पुत्री उपजी आइ। करिहै पुत्र ताहि हरि राइ॥ हरि ता पुत्रीसों सुत करचो। नाम सुद्युम्न ताहि ऋषि धरचो॥ एक दिवस सु अखेटक गयो। जाइ अंबिका बन तिय भयो॥बुधके आश्रम सो पुनि आयो। तासों गंधर्व ब्याह करायो॥ बहुरो एक पुत्र तिन जायो। नाम पुरूरवा ताहि धरायो॥ पुनि सुद्युम्न वशिष्ठसो कह्यो। अंबाबनमें तिय है गयो॥ ऋषि शिवसो बहु बिनती करी। तब शिव यह वाणी उच्चरी॥ एक मास यह हैहै नारि। द्वितीय मास पुरुष आकारि॥ तब सुद्युम्न अपने गृह आयो। राज समाज माहिं सुख पायो॥ तीनि पुत्र तिन और उपाए। दक्षिण राज करन सुपठाए॥ दश सुत ताके उपजे और। भयो इक्ष्वाकु सबन शिरमौर॥ सूरज वंशी सो कहवायो। रामचंद्र ताही कुल आयो॥ सोम वंश पुरूरवासों भयो॥ सकल देश नृप ताको दयो॥ तिहि वंश लियो कृष्ण अवतार। असुर मारि कियो सुरन उद्धार॥ कहिहौं कथा सुकरि विस्तार। पुरूरवा कथा सुनो चितधार॥ पुरूरवा गेह उरबशी आई। मित्रवरुनते शापहिं पाई॥ नृपति देखि तेहि मोहित भयो। तिन यह वचन नृपतिसों कह्यो॥ बिन रतिकाल नग्न नहिं होवहु। मम मेंढनि को कहूं न खोवहु॥ तबलौं मैं तुमरो सँग करौं। वचन भंग भयते परिहरौं॥ नृपति कह्यो तुम कह्यो सु करिहौं। तुमरी आज्ञा मैं अनुसरिहौं॥ तासों मिलि नृप बहु सुख माने। षष्ठ पुत्र तासों उतपाने॥ सुरपुरसों गंधर्व पुनि आयो। उरबशी सों यह वचन सुनायो॥ अब तुम इंद्रलोकको चलो। तुम बिनु सुरपुर लगत न भलो॥ तिन उरबशी कह्यो या भाइ। छल बल करिसकौ तौ लैजाइ॥ मम चलिबेको यहै उपाव। छल करि मेढ़नि

नभ लै जाव ॥ गंधर्व मेढनि नभ लै धाए । सोवत नृप उरवशी जगाए ॥ मम मेढनिको लै गयो कोई । देखो तुम पुरुपै तिहिं जोई ॥ अर्ध निशा नृप ताको धायो । पै मेढनिको कहूँ न पायो ॥ इत उत देखि नृपति जबै आयो । तब उरवशी यह वचन सुनायो ॥ राजा वचन तुमारो टरचो । ताते मैं तुमको परिहरचो ॥ यह कहिकै सो चली पराय । जैसे तडित अकासै जाय ॥ ताके विरह नृपति बहु तयो । नग्न नग्न ता पाछे धयो ॥ भ्रमत भ्रमत नृप बहु श्रम पायो । बहुरो कुरुक्षेत्रमें आयो ॥ तहां उरबशी सखिन समेत । आइ गई सुस्नानके हेत ॥ पै उनको कोउ देखै नाहिं । उनको सकल लोक दरशाहिं ॥ उरबशीसों तिलोत्तमा कह्यो । कौन पुरुष तुम भुवमें लह्यो ॥ ताके देखनकी मोहिं चाह । कह्यो पुरुष वह ठाढो आह ॥ नृपको देखि सु विस्मय भई । कह्यो विरह तोहिं नृप सुधि गई ॥ बहुत दुखित है तेरे नेह । एक बेर इहि दरशन देह ॥ तिन माया आकर्षण करी । तब वह दृष्टि नृपतिकी परी ॥ राजा निरखि प्रफुल्लित भयो । मानो मृतक बहुरि जिय लह्यो ॥ उरबशी निकट नृपति चलि आयो । करि बिनती यह वचन सुनायो ॥ तैं मोको काहे बिसरायो । मैं तुम बिनु बहुतै दुख पायो ॥ तुम बिनु भूख नींद नाहिं आवै । पल पल युग सम मोहिं बिहावै ॥ मेरे गेह कृपा करि चलो । वाही विधि मोसों हिल मिलो ॥ कह्यो नेह हम कामसों आ-हि । बिना काम हमरे नाहिं चाहि ॥ हमसों सहस बरस हित धरै । हम तिहिको छिनमें परिहरै ॥ बिन अपराध पुरुष हम मारे । माया मोह न मनमें धारे ॥ हमैं कहौ केतौ किन कोई । चाहैं करन करैं हम सोई ॥ नृप पुनि बिनती बहु विधि करी । तब उरबशी बात उचरी ॥ वर्ष सात बीते हौं ऐहौं । एक रात्रि तोको सुख देहौं ॥ बर्ष सप्त बीते सो आई । नरपतिसों मिलि रैन विताई ॥ प्रात होत चलिबे को चह्यो । तब राजा तासों यों कह्यो ॥ तू मोको छांडि कित जात । मोको तुम बिनु छिन न विहात ॥ जब या भांति नृपति बहु कह्यो । तब उरबशी यह उत्तर दयो ॥ यह तो होनहार है नाहीं । सुरपुर छांडि रहौं भुव माहीं ॥ जो तुम मेरी इच्छा धरौ ॥ गंधर्वनीके हित तप करौ ॥ तप कीनेसे देहैं आग । ता सेती तुम कीजो जाग ॥ यज्ञ किये गंधर्वलोक सिधैं हो । तहां आइ मोको तुम पैहो ॥ नृप यज्ञ करि ता लोक सिधायो । मिलि उरबशी बहुत सुख पायो ॥ जब या विधि बहु काल बितायो । तब वैराग्य नृपति मन आयो ॥ बहुत काल भोग में कीए । पै संतोष न आए हीए । श्री नारायणको बिसरायो । बिषय हेत सब जन्म गँवायो ॥ याविधि जब विरक्त नृप भयो । छांडि उरबशी वनको गयो ॥ बनमें जाइ तपस्या करी । विषय बासना सब परिहरी ॥ हरिपदसों नृप ध्यान लगायो । मिथ्या तनुको मोह भुलायो ॥ हरि व्यापक सब जगमें जान । हरि प्रसाद पायो निर्वान ॥ ताते बुधि त्रियसे गति तजै । श्रीनारायणको नित भजै ॥ शुक जैसे नृपको समुझायो । सूरदास त्योंही कहि गायो ॥ १ ॥ च्यवन ऋषि कथा वर्णन ॥ राग बिलावल ॥ शुकदेव कह्यो सुनो हो राव । जैसो है हरिभक्त प्रभाव ॥ हरिको भजन करै जो कोई । जग सुख पाइ मुक्ति फल सोई ॥ च्यवन ऋषीश्वर बहु तप कियो । ता सम और जगत नहिं वियो ॥ बांमी ताको लियो छिपाई । तासों ऋषि नाहिं दई दिखाई ॥ ता आश्रम सरजात नृप गये । तहां जाइके डेरा दये ॥ छांडि तहीं सब राज समाज । राजा गयो अखेटक काज ॥ नृप कन्या तहँ खेलन गई । ऋषि दृग चमकत देखत भई ॥ पै तिहि ऋषि दृग जाने नाहिं । खेलत शूल दये तेहि माहिं ॥ रुधिर धार ऋषि आँखिन ढरी । नृपकन्या सु देखि तब डरी ॥ शूल व्यथा सब लोगन भई । राजा कह्यो कहा भइ दई ॥ तहँके बासी नृपति बुलाये । बूझो तब तिहि कह्यो

बुझाये ॥ च्यवन ऋषि आश्रम है इहां राई । करौ बीनती उनसों जाई ॥ नृप खोजत ऋषि आश्रम आयो । ऋषि दृग देखत बहुत डरायो ॥ कह्यो कियो किन ऐसों काज । कन्या कह्यो सुनौ महाराज ॥ मोतें बिन जाने यह भई । ऋषिके दृगनि शूल हौं दई ॥ नृप मनही मन बहु पछतायो । ऋषिसों पुनि यह वचन सुनायो । महाराज तुम तो हौ साध । मम कन्याते भयो अपराध ॥ या कन्याको प्रभु तुम बरो । कष्ट शूल कृपा करि हरो ॥ लोग सकल नीको जब भयो । नृप कन्या दै गृहको गयो ॥ ऋषि समाधि हरि चरण लगाई । कन्या ऋषि हरि चरण लव लाई ॥ सुरपति ताके रूप लुभायो । बहुरि कुबेर तहां चलि आयो ॥ पै तिहिं दिशि तिन देख्यो नाहीं । गये खिस्याइ दोऊ मन माहीं ॥ चौदह वर्ष भये या भाई । तब ऋषि देख्यो शीश उठाई ॥ हाड चाम तनु पर रहि गये । कृपावंत ऋषि तापर भये ॥ अश्विनी सुत इहि अवसर आयो । करि प्रणाम यह वचन सुनायो ॥ जो कछु आज्ञा मोको होइ । छांडि बिलंब करौं अब सोइ ॥ कह्यो दृगनि को करौ उपाय । तुरत नेत्र तिन दिये बनाय ॥ कह्यो मैं यज्ञ भाग नाहिं पावत । वैद्य जानि मोहिं सुर बहरावत ॥ ऋषि कह्यो मैं करिहौं जहां जाग । दैहौं तोहिं अवश करि भाग ॥ नृपकन्यासों ऋषि यों कह्यो । तुहि ऊपर प्रसन्न मैं भयो ॥ यद्यपि कछु इच्छा नहिं मेरे । तदपि उपाय करौं हित तेरे ॥ दुउ मिलि तीरथ माहिं अन्हाये । सुन्दर रूप दुहूँ जन पाये ॥ दासी सहस प्रगट तहां भई । इन्द्रलोक रचना ऋषि ठई ॥ तियको सुख ऋषि बहु विधि दियो । तासु मनोरथ पूरण कियो ॥ तब सरजात रानीसों कही । जबते कन्या ऋषिको दई ॥ तब ते सुधि कुछ नाहीं पाई । बिनु प्रसंग तहां गयो न जाई ॥ यज्ञारंभ नृपति तहँ गयो । देखि ऋषाश्रम विस्मय भयो ॥ कह्यो यह विभव कहांते आई । किन यह ऐसी बनत बनाई ॥ इहि अंतर नृप कन्या आई । पिता देखि मिलिबे को धाई ॥ नृप ताको आदर नहिं दियो । तैं यह कौन कर्म है कियो ॥ वृद्ध ऋषीश्वरको कहा भयो । कुल कलंक तैं किहि मिलि लयो ॥ कह्यो योग बल ऋषि सब कीनो । मुहिं सुख सकल भांति करि दीनो ॥ नृप प्रसन्न हो ऋषि पै आए । यज्ञ प्रसंग कहिकै गृह लाए ॥ रानी सुता देखि सुख मान्यो । धन्य जन्म करि अपनो जान्यो ॥ च्यवन नृपति को यज्ञ करवायो । अश्विनी सुत हित भाग उठायो ॥ इन्द्र कोप ह्वै ऋषिसों कह्यो । ताहि भाग तुम काहे दयो ॥ पुनि मारनको वज्र उठायो । पै ऋषिको मारन नाहिं पायो ॥ इन्द्र हाथ ऊपर रहि गयो । तिन कह्यो दई कहा यह भयो ॥ कह्यो सुरन तुम ऋषिहिं सतायो । ताते कर रहिं गयो उँचायो ॥ इन्द्र विनय ऋषि सों बहु करी । तब ऋषि कृपा ताहि पर धरी ॥ सुरपति कर जब नीचे आयो । अश्विनी सुत बलि सुरमें पायो ॥ ऐसो हरिको भक्त प्रभाव । बरनि कह्यो मैं तुमसों राव । हरि की भक्ति करै जो कोई । दुहूं लोकको सुख तेहि होई ॥ शुक ज्यों नृपसों कहि समुझायो । सूरदास योंही कहि गायो ॥ २ ॥ हलधर विवाह कथा वर्णन । राग भैरों ॥ द्वारावति पति रेवत राजा । तासम जग दुतिया न विराजा ॥ ता गृह जन्मरेवती लयो । ताको लै सु ब्रह्मपुर गयो ॥ विधि तिहि आदर दै बैठायो । तब नृप मन में अति सुख पायो ॥ तहां देखि अप्सरा अखारा । नृप कछु नहीं वचन उच्चारा ॥ जब अप्सरा नृत्य करि रही । तब राजा ब्रह्मासों कही ॥ मम पुत्री वर प्रापति आहि । आज्ञा होइ देउँ तेहि व्याहि ॥ ब्रह्मा कह्यो सुनो नरनाह । ते नृप तो अब जगमें नाह । हलधरको तुम देहु विवाह । व्याह योग अब सोई आह ॥ रेवत व्याह कियो जग आइ । आप कियो तप तप बनमें जाइ ॥ हलधर व्याह भयो या भाइ । सूरदास जन दियो सुनाइ ॥ ३ ॥ राजा अंबरीपकीकथा।

॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविंद उर धरो ॥ हरि पद अंबरीप चित लायो । ऋषि शरापते ताहि बचायो ॥ ऋषिको तापै फेरि पठायो । शुक नृपको यों कहि समुझायो ॥ अंबरीष राजा हरिभक्त । रहै सदा हरिपद अनुरक्त ॥ श्रवण कीरतन सुमिरन करै । पद सेवन अरचन उर धरै ॥ बंधन दासीपन सो करै । भक्तन शिष्यभाव अनुसरै ॥ काय निवेदन सदा उचारै । प्रेम सहित नवधा विस्तारै ॥ नवमी नेम भली विधि करै । दशमीको संयम विस्तरै ॥ एकादशी करै निरहार । द्वादशी पोषै लै आहार ॥ पतिव्रता वा नृपकी नारी । अहनिशि नृपकी आज्ञाकारी । इन्द्री सुखको दोऊ त्याग ॥ धरै सदा हरिपद अनुराग । ऐसी विधि हरि पूजै सदा ॥ हरि हित लावै सब संपदा ॥ राजकाज कछु मन नहिं धरै । चक्र सुदर्शन रक्षा करै ॥ घटिका दोइ द्वादशी जान । ऋषि आयो नृप कियो सन्मान ॥ कह्यो भोजन कीजै ऋषिराई । ऋषि कह्यो आवतहौं मैं न्हाई ॥ यह कहिकै ऋषि गये अन्हान । काल बितायो करत अस्नान ॥ राजा कहै कहा अब कीजै । द्विजन कह्यो चरणोदक लीजै ॥ राजा तब करि देख्यो ज्ञान । या विधि होइ न ऋषि अपमान ॥ लै चरणोदक निज व्रत साध्यो । ऐसी विधि हरिको अवराध्यो ॥ इहि अंतर दुर्वासा आए । अंबरीषसों वचन सुनाये । सुन राजा तेरो व्रत टरो । क्यों कर तेरे भोजन करों ॥ कह्यो नृपति सुनिये ऋषिराई । मैं व्रत हित यह करचो उपाई ॥ चरणोदक लै व्रत प्रतिपारचो । अबलौं अन्न न मुखमें डारचो ॥ ऋषि करि क्रोध इक जटा उपारी । सो कृत्या भइ ज्वाला भारी । जब नृप ओर दृष्टि उन करी । चक्र सुदर्शन सो संहरी ॥ पुनि ऋषि हू को जारन लाग्यो । तब ऋषि आपन जिय लै भाग्यो ॥ ब्रह्मा रुद्र लोकहू गयो । उनहूं ताहि अभय नहिं दयो ॥ बहुरो ऋषि बैकुंठ सिधायो । करि प्रणाम यह वचन सुनायो ॥ मैं अपराध भक्तको कीनो । चक्र सुदर्शन अति दुख दीनो ॥ और कहूं मैं ठौर न पायो । अशरण शरण जानिकै आयो ॥ महाराज अब रक्षा कीजै । मोको जरत राखि प्रभु लीजै ॥ हरि जू कह्यो सुनो ऋषिराई । मोपै तुहि राख्यो नहिं जाई ॥ तैं अपराध भक्तको कीन । मैं निज भक्तनके आधीन ॥ ममहित भक्त सकल सुख तजैं । और सकल तजि मोको भजैं ॥ बिन मम चरण न उनके आशा । परम दयालु सदा मम आशा ॥ उनके मन नाहीं शत्राई । ताते कहौ उन्हीं पै जाई ॥ तुमको लेहैं वेइ बचाई ।नाहीं या बिन और उपाई ॥ इहां राजा अतिही दुख लयो । ऋषि मम द्वारे ते फिरि गयो ॥ ऋषि मग जोवत वर्ष बितायो । पै भोजन तौहू न सिरायो ॥ अंबरीष पै तब ऋषि आयो । हाथ जोरि पुनि शीश नवायो ॥ ऋषिहि देखि नृप कह्यो या भाई । लेहु सुदर्शन याहि बचाई ॥ ब्राह्मण हरि हरि भक्त पियारो । ताते अब याको मति जारो ॥ चक्र सुदर्शन शीतल भयो । अभयदान दुर्वासा लह्यो ॥ पुनि नृप तिहिं भोजन करवायो । ऋषि नृपसों यह वचन सुनायो ॥ मैं नहिं भक्त महातम जान्यों । अबते भली भांति पहिचान्यो ॥ जो यह लीला सुनै सुनावै । सो हरि भक्ति पाइ सुख पावै ॥ शुक राजासों ज्यों समझायो । सूरदास त्योंही करि गायो ॥ ४ ॥ राग गूजरी ॥ फिरत फिरत बल हीन भयो । कहा करों यहि त्रास कृपानिधि जप तपको अभिमान गयो ॥ धायो घर शरशैल विदिशि दिशि तहां चक्रहूं चाहि लयो।जासे शिव विरंचि सुरपति सब कांहू नेक न शरन दयो॥ भाज्यो फिरयो लोक लोकनमें पुत्र पुरातन पवन हयो । सूरदास मुनि दीन जानि प्रभु तब निजजन सन्मुख पठयो ॥ ५ ॥ सौभरि ऋषि कथा वर्णन ॥ राग बिलावल ॥ शुकदेव कह्यो सुनोहो राव । जैसो है हरिभक्त प्रभाव ॥ हरिको भजन करै जो कोई । जग सुख पाइ मुक्ति लहै सोई ॥ सौभरि ऋषि यमुनातट गयो । तहां

मच्छ इक देखत भयो ॥ सहित कुटुंब सो क्रीडा करै ॥ अति उत्साह हृदयमें धरै ॥ ताहि देखिकै ऋषिमन आई। गृहआश्रम है अति सुखदाई ॥ तप तजिके गृह आश्रम करौं। कन्या एक नृपतिकै बरौं ॥ कह्यो मान्धातासों जाइ। पुत्री एक देहु मोहिं राइ ॥ नृप कह्यो देखि वृद्ध ऋषि देह। हैं पचास पुत्री मम गेह ॥ अंतःपुर भीतर तुम जाउ। बरै तुम्हैं सो देहु विवाहु ॥ तब ऋषि मनमें करैं विचार। वृद्ध पुरुषको वरै न नार ॥ तप बल कियो रूप अति सुन्दर। गयो सु तहाँ जहाँ नृप मन्दिर ॥ सब कन्या सौभरिको बरचो। ऋषि विवाह सबहिनसों करचो ॥ ऋषि तिनके हित गेह बनाये ॥ तिनके भीतर बाग लगाये ॥ भोग समग्री भरे भंडार ॥ दासी दास गनत नाहिं पार ॥ ऋषि नारी मिलि बहु सुख पाये। सहस पचास पुत्र उपजाये ॥ तिनके बहुत भई संतान। कहँलौं तिनको करौं बखान ॥ बहुत काल या भांति बितायो। पै ऋषि मन संतोष न आयो ॥ कह्यो विषयते तृप्ति न होय। केतो भोग करौ किन कोय ॥ या विधि जब उपज्यो बैराग। तब तप करि कीन्यौं तनु त्याग ॥ सब नारिन सहगामिनि कियो। हरिजू तिनको निज पद दियो ॥ ताते बुध हरि सेवाकरै। हरि चरणन नितही चित धरै ॥ शुक नृपसों ज्यों कहि समुझायो। सूरदास त्योंही कहि गायो ॥ ६ ॥ श्री गंगा भुवलोक आगमन कथा ॥ राग भैरों ॥ शुकदेव कह्यो सुनौं नरनाह। गंगा ज्यों आई जग मांह ॥ कहौं सु कथा सुनौ चित लाई। सुने सु भवतरि सुरपुर जाई॥ शतमों यज्ञ सगर जब ठयो। इन्द्र अश्वको हरि लै गयौ ॥ कपिलाश्रम लै ताको राख्यो। सगर सुतन तब नृपको भाष्यो॥ हम सब लोक माहिं फिरि आये। हयकै खोज कहूं नहिं पाये ॥ आज्ञा होइ जाहिं पाताल। जाहु तिन्हैं भाष्यो भूपाल। तिनके खोदे सागर भये। कपिल आश्रम ते पुनि गये ॥ अश्व देखि कह्यो धावहु धावहु। भागि जाहि मति बिलम लगावहु ॥ कपिल कुलाहल सुनि अकुलायो।कोप दृष्टि करि तिन्हैं जरायो ॥ सगर नृपति जब यह सुधि पाई। अंशुमानको दियो पठाई ॥ तिन कपिल स्तुति बहु विधि कीनी। कपिल ताहि यह आज्ञा दीनी ॥ यज्ञ हेतु अश्व यह लेहु। भ्रात तुमारे भये जु खेहु ॥ सुरसरि जब भुव ऊपर आवै। उनको अपनो जल परसावै ॥ तबहीं उन सबकी गति होई। ता बिन और उपाव न कोई ॥ अश्व लाइ यज्ञ पूरण कियो। अंशुमान राजा पुनि भयो ॥ अंशुमान पुनि राज बिहाई। गंगा हेतु कियो तप जाई ॥ याही बिधि दिलीप तब कीनो। पै गंगा जू वर नहिं दीनो ॥ भागीरथ जब बहु तप कियो। तब गंगाजू दर्शन दियो ॥ कह्यो मनोरथ तेरो करौं। पै मैं जब अकासते परौं ॥ मोको कौन धारना करै। नृप कह्यो शंकर तुमको धरै ॥ तब नृप शिवकी सेवा कीनी। शिव प्रसन्न ह्वै आज्ञा दीनी ॥ गंगासों नृप जाइ सुनाई। तब गंगाजू भुवमें आई ॥ साठ सहस्र सगरके पुत्र। कीने सुरसरि तुरत पवित्र ॥ गंग प्रवाह माहिं जु अन्हाई। सो पवित्र ह्वै हरिपुर जाई ॥ गंगा इहिविधि भुव पर आई। नृप मैं तुमसों भाषि सुनाई ॥ शुक नृपसों ज्यों कहि समुझायो। सूरदास त्योंहीं कहि गायो ॥ ७॥ श्रीगंगा विष्णु पादोदककी स्तुति वर्णन॥राग बिलावल॥ हरिपद कमलको मकरंद। मलिन मति मन मधुप परिहरि विषय नीरस फंद ॥ परम शीतल जानि शंकर शिर धरचो तजि चंद। नाक सरवसु लैन चाहो सुरसरीको बिंद ॥ अमृतहूते अमल अति गुण स्रवति निधिआनंद। सूर तीनों लोक परस्यो सुर असुर जस छंद ॥८॥ राग भैरों ॥ जय जय जय जय माधव बेनी। जगहित प्रगट करी करुणामय अगतिनको गति देनी ॥जानि कठिन कलिकाल कुटिल नृप संग सजी अघ सैनी। जनु ता लगिं तरवार त्रिविक्रम धरि करि कोप उपैनी ॥ मेरु मूठि वर वारि पाल क्षिति बहुत वित्तकी लैनी। शोभित अंग तरंग त्रिसंगम धरी धार अति

पैनी ॥ दरशनहूं नाशे यम सैनिक जिमि नेह बालक सैनी । एक नाम लेत सब भाजै पीर सुभूमि रसैनी ॥ जा जल युद्ध निरखि सन्मुख ह्वै सुन्दर सैना बैनी ॥ सूर परस्पर करत कुलाहल गर सृगपहरावैनी ॥ ९ ॥ राग बिलावल ॥ गंग तरंग बिलोकत नैन । अति पुनीत विष्णु पादोदक महिमा निगम पढ़त गुन चैन ॥ परम पवित्र सुक्तिकी दाता भागीरथी भई वर दैन । द्वादश वर्ष सेये निशि वासर तब शंकर भाषी है लैन ॥ त्रिभुवन हार सिंगार भगवती सलिल चराचर जाके ऐन । सूरजदास विधाताके तप प्रगट भई संतन सुख दैन ॥ १० ॥ परशुराम अवतार वर्णन । राग बिलावल ॥ ज्यों भयो परशुराम अवतार । कहौं सु कथा सुनौ चितधार ॥ सहसबाहु रवि बंशी भयो । सरिता तिर इक दिन सो गयो ॥ निज भुजबल तिन सरिता गही । बढ़ि गयो जल तब रावण कही ।नृप तुम हमसों करी लराई।कह्यो करौं मध्यान बिताई॥बहुरौ क्रोधवंत युध छयो।सहसबाहु तब ताको गह्यो॥ बहुरौ नृप करिकै मध्यान । दीनो ताको छांडि निदान॥फिर नृप जमदग्न्याश्रम आयो । कामधेनु बल करि लै धायो ॥परशुराम जब यह सुधि पाई । मारचो ताहि तुरंतहि धाई ॥ तासु सुतनि जमदग्निहि मारचो । परशुराम रेणुका हँकारचो ॥ मारचो क्षत्री इकइस बार । यो भयो परशुराम अवतार ॥ शुक नृपसों ज्यों कहि समुझायो । सूरदास त्योंहीं कहि गायो ॥ ११ ॥ राग धनाश्री ॥ परशुराम जमदग्नि गह लीनो अवतार । माता ताकी यमुन जल लेन गई इक बार ॥ लागी तहां अबार तिहि ऋषि करि क्रोध अपार । परशुरामसों यों कही माको वेगि संहार ॥ और सुतन तब कही पिता नाहिं कीजै ऐसी । क्रोधवंत ऋषि कह्यो करौ इनसों हूं वैसी ॥ परशुराम तिन सबनको मारचो खड्ग प्रहार । ऋषि कह्यो होइ प्रसन्न वर मांगौं देउँ कुमार ॥ परशुराम तब कह्यो यहै वर देहु तात अब । जाने नाहिन मुए फेरिकै जीवैं ये सब ॥ ऋषि कह्यो यह वर दियो मैं इनको देहु उठाइ । परशुराम उनको दियो सोवत मनो जगाइ ॥ परशुराम बन गए तहां दिन बहुत लगाये । सहसबाहु तिहि समय जमदगिन आश्रम आए ॥ कामधेनु जमदग्निकी लै गयो नृपति छिनाय । परशुरामसों बोलि ऋषि दियो वृतान्त सुनाय ॥ परशुराम सुनि पिता वचन ताको संहारचो ॥ कामधेनु दई आनि बचन ऋषिको प्रतिपारचो । सहसबाहुके सुतन पुनि राखी घात लगाइ । परशुराम जब बन गयो मारचो ऋषिको धाइ ॥ ऋषिकी यह गति देखि रेणुका रोइ पुकारी ॥ परशुराम तुम आइ लगत क्यों नहीं गोहारी ॥ यह्न सुनिकै आयो तुरत मारचो तिन्हैं प्रचार । बहुरो जिय धरि क्रोध हति क्षत्री बीसिकबार ॥ जग अराज ह्वै गयो ऋषिन तब अति दुख पायो । लै पृथ्वीको दान ताहि फिर बनहिं पठायो ॥ बहुरि राज्य दियो क्षत्रियनि भयो ऋषिन आनंद । सूरदास पावत हरष गावत गुण गोविंद ॥ १२ ॥रामअवतार कारण ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविंद उर धरो ॥ जय अरु विजय पार्षद दोइ । विप्र शराप असुर भये सोइ ॥ एक बराह रूप धरि मारचो । एक नृसिंह रूप संहारचो ॥ रावण कुंभ कर्ण सोइ भये । राम जन्म तिनके हित लए ॥ दशरथ नृपति अयोध्या राव । ताके गृह कियो आविर्भाव ॥ नृपसों ज्यों शुकदेव सुनायो । सूरदास त्योंही कहि गायो ॥ १३ ॥ बालकांड श्रीरामजन्म वर्णन ॥ राग कान्हरा॥ आजु दशरथके आँगन भीर । आए भुव भार उतारन कारन प्रगटे श्याम शरीर ॥ फूले फिरत अयोध्या बासी गनत न त्यागत चीर । परिरम्भण हँसि देत परस्पर आनँद नैननि नीर ॥ त्रिदश नृपति ऋषि व्योम विमाननि देखत रहे न धीर ॥ त्रिभुवन नाथ दयालु दरश दै हरी सबनकी पीर ॥ देत दान राख्यो न भूप कछु महा बडे नग हीर। भये निहाल सूर सब याचक जे याचे

रघुबीर ॥ १४ ॥ अयोध्या बाजत आज बधाई। गर्भ सुच्यो कौशल्या माता रामचन्द्र निधि आई ॥ गावैं सखी परस्पर मंगल ऋषि अभिषेक कराई। भीर भई दशरथके आँगन साम वेद ध्वनि गाई ॥ पूछत ऋषिहि अयोध्याको पति कहि हो जन्म गुसाईं। बुद्धवार नौमी तिथि नीकी चौदह भुवन बड़ाई ॥ चारि पुत्र दशरथ के उपजे तिहूं लोक ठकुराई। सदा सर्वदा राज रामको सूर दादि तहां पाई॥ १५ ॥ रघुकुल प्रगटेहैं रघुबीर। देश देशते टीका आयो रतन कनक मनि हीर ॥ घर घर मंगल होत बधाई अति पुरबासिन भीर। आनँद मगन भये सब डोलत कछू न शोध शरीर ॥ मागध बंदी सूत लुटाए गउ गयंद हय चीर। देत अशीश सूर चिरजीयो रामचन्द्र रणधीर ॥ १६ ॥ शर क्रीडा वर्णन। राग बिलवल ॥ करतल शोभित बान धनुहियां। खेलत फिरत कनक मय आँगन पहिरें लाल पनहियां ॥ दशरथ कौशल्याके आगे लसत सुमनकी छहियां। मानो चारि हंस सरवर ते बैठे आइ सदहियां ॥ रघुकुल कुमुद चंद चिंतामणि प्रगटे भूतल महियां। यहै देन आए रघुकुलको आनँद निधि सब गहियां ॥ ये सुख तीन लोकमें नाहीं जो पाए प्रभु पहियां। सूरदास हरि बोलि भगतको निरबाहत गहि बहियां॥ ॥ १७ ॥ राग बिलावल ॥ धनुही बान लये कर डोलत। चारों बीर संग इक सोहत वचन मनोहर बोलत लछिमन भरत शत्रुघन सुंदर राजिवलोचन राम। अति सुकुमार परम पुरुषारथ मुक्ति धर्म धन काम ॥ कटि पट पीत पिछौरी बांधे काग पच्छ धरि शीश। शर क्रीड़ा दिन देखत आवत नारद सुर तैंतीस॥ शिवमन शोच इन्द्रमन आनँद सुख दुख ब्रह्म समान ॥ दिति दुर्बल अति अदिति हृष्ट चित देखि सूर संधान ॥ १८ ॥ विश्वामित्र यज्ञ रक्षा ताडका वध सीतास्वयंवर। वन। ॥ राग सारंग ॥ दशरथसों ऋषि आनि कह्यो। असुरनसों यज्ञ होन न पावत राम लछन तब संग दयो ॥ मारि ताड़का यज्ञ करायो विश्वामित्र आनंद भयो। सीय स्वयंबर जानि सूर प्रभुको ऋषिलै ता ठौर गयो ॥ १९ ॥ सीतापति दर्शन ॥ राग बिलावल ॥ देखनको मंदिर आनि चढ़ी। रघुपति पूरनचंद बिलोकत मानो उदधि तरंग बढी ॥ पिय दरशन प्यासी अति आतुर निशि बासर गुन आन रढ़ी। तजि कुलकानि पीय सुख निरखत शीश नाइ आशीश पढ़ी ॥ भई देह जों खेह करम-वश ज्यों तट गंगा अनल दढ़ी। सूरदास प्रभु दृष्टि सुधानिधि मानो फेरि बनाइ गढ़ी ॥ २० ॥ सीता मनोरथ पूरण ॥ राग सारंग ॥ चितै रघुनाथ बदनकी ओर। रघुपतिसों अब नेम हमारो बिधि सों करति निहोर ॥ यह अति दुसह पिनाक पिताप्रण राघव वयस किशोर। इहते परिघ धनुप चढै क्यों यह सखि संशय मोर ॥ सिय अंदेश जानि सूरज प्रभु लियो करजकी कोर। टूटत धनु नृप लुके जहां तहां ज्यों तारागण भोर ॥ २१ ॥ दशरथको जनकपुर आगमन रामजूके विवाहहेतु ॥ महाराज दशरथ तहँ आये। ठाढे जाय जनक मंदिरमें मोतिन चौक पुराये ॥ विप्र लगे ध्वनि वेद उचारन युवतिन मंगल गाये। सुर गंधर्बगन कोटिक आए गगन विमानन छाये ॥ राम लक्ष्मण भरथ शत्रुहन व्याह निरखि सुखपाये। सूर भयो आनंद नृपतिमन दिवि दुंदुभी बजाए॥ ॥ २२ ॥ कंगना खोलन ॥ राग आसावरी ॥ कर कंपै कंगन नहिं छूटै। राम सुपरस मगन मय कौतुक निरखि सखी सुख लूटै ॥ गावत नारि गारि सब दैदै तात भ्रातकी कौन चलावै। तब कर डोर छुटै रघुपति जू जो कौशल्या माइ बुलावै ॥ पूंगीफल युत जल निर्मल धरि आनी भरि कुंडी जु कनककी। खेलत जूप युगन युवतिनमें हारे रघुपति जीति जनककी ॥ घेरे निशान अजिर गृह मंगल विप्रवेद अभिषेक करायो। सूर अमित आनंद कुशल पुर सोई शुकदेव पुराणनि गायो॥२३॥

धनुभंग पाणिग्रहणलीला ॥ राग नट ॥ ललितगति राजत अति रघुबीर । नरपति सभा मध्य भये ठाढ़े युगल हँसत मतिधीर ॥ अलख अनंत अमित महिमाबल कटि कासि रख्यो तुनीर । लघु धनु काकपक्ष शिर शोभित इक इक द्वै द्वै तीर ॥ भूषण विविध विशद अंबर युत सुन्दर श्याम शरीर । देखत मुदित चरण परसे सुर व्योम विमानन भीर ॥ प्रमुदित जनक निरखि अंबुज मुख बिगत नयन मनपीर । तात कठिन प्रण मानि जानि जिय जनकसुता आधीर ॥ करुणामय जब चाप लियो कर बाँधि सुदृढ़ कटि चीर । भुवभृत शीश नमित जु गर्वगत पावक संच्यो नीर ॥ डुलत महीधर भौ फनपति चल कूरम अति अकुलान । दिग्गज चलित खलित मुनि आसन इन्द्रादिक भयमान ॥ रवि मग तज्यो तरकि ताके इत उत पथ गएकी आन ॥ शिव बिरंचि व्याकुल भये ध्वनि सुनि जब तोरचो भगवान ॥ भनन शब्द प्रगटित अति अद्भुत अष्ट दिशा नभ पूर । श्रवण हीन सुनि भये अष्टकुल नाग बगरि भयचूर ॥ अष्ट श्रवण पूरित ब्रह्मा सुनि सदा सुभट बड भूर । मोहित सकल सयान जानि जिय महाप्रलयको पूर ॥ पाणिग्रहण रघुबर वर कीनो जनकसुता सुख दीन । जय जय धुनि सुनि करत अमर गन नर नारी लवलीन ॥ दुष्टन दुष्ट संत संतनको नृप व्रत पूरण कीन ॥ रामचंद्र दशरथहिं विदा करि सूरदास आधीन॥२४॥ जनक दशरथ रामजी सीता समेत विदा करण । राग सारंग ॥ दशरथ चले अवध आनन्दत । जनकराइ बहु दाइज दै करि बार बार पद बंदत ॥ तनया जामातनिको समुदत नैन नीर भरि आए । सूरदास दशरथ आनन्दित चले निशान बजाए ॥ २५ ॥ मार्ग विषे परशुरामको रामजीसों मिलाप परस्पर विवाद ॥ परशुराम तेहि अवसर आयो । कठिन पिनाक कह्यो किन तोरचो क्रोधवंत यह वचन सुनायो ॥ बिप्र जानि रघुबीर धीर दोउ हाथ जोरि शिर नायो । बहुत दिननको हुतो पुरातन हाथ छुअत उठि आयो ॥ तुम तौ द्विज कुल पूज्य हमारे हम तुम कौन लराई । क्रोधवंत कछु सुन्यो नहीं लयो सायक धनुप चढ़ाई ॥ तबहूं रघुपति क्रोध न कीनो धनुप बान सँभारचो । सूरदास प्रभु रूप समुझि पुनि परशुराम पग धारचो ॥ २६ ॥ अवधपुरी प्रवेश । राग सारंग ॥ अवधपुर आए दशरथ राइ । राम लक्ष्मण भरत शत्रुघन शोभित चारों भाइ ॥ घुरत निसान मृदंग शंख ध्वनि भेरे झाँझ सहनाइ । उमँगे लोग नगरके निरखत अति सुख सबहनि पाइ ॥ कौशल्या आदिक महतारी आरति करति बनाइ । यह सुख निरखि मुदित सुर नर मुनि सूरदास बलि जाइ । ॥ २७ ॥ दशरथ विचार रामजीको राज्य दे आप वन गमन, कैकेयी विनती, भरत राज ॥ महाराज दशरथ मन धारी । अवधपुरीको राज राम दै लीजै व्रत वनचारी ॥ यह सुनि बोली नारि कैकयी अपनो बचन सँभारो । चौदह वर्ष रहैं वन राघव छत्र भरत शिर धारो ॥ यह सुनि नृपति भयो अतिव्याकुल कहत कछू नहिं आई । सूर रहे समुझाइ बहुत पै कैकयि हठ नहिं जाई ॥ २८ ॥ दशरथ कौशल्या विनय । राग कान्हरा ॥ महाराज दशरथ पुनि सोचत । हा रघुपति लछिमन वैदेही सुमिरि सुमिरि गुण रोवत ॥ त्रिय चरित्र मयमत्त न समुझत उठि पखाल मुख धोवत । महा विपरीत रीति कछु औरे बार बार मुख जोवत ॥ परम कुबुद्धि कह्यो नहिं समुझत राम लषन हँकराये।कौशल्या अति परम दीन ह्वै नैन नीर भरि आये । विह्वल तन मन चकित भई सुनि सो प्रतच्छ सुपिनाये । गदगद कंठ सूर कोशलपुर शोर सुनत दुख पाये ॥ २९ ॥ दशरथ पश्चात्ताप कैकेयी प्रति वचन ॥ फिरि फिरि नृपति चलावत बात । कहो सुमति कहा तोहिं पलटी प्राण जीवन कैसे वन जात ॥ हाहा राम लक्ष्मण अरु सीता फल भोजन जु डसावैं पात । ह्वै वियोग

शिर जटा धरैं द्रुम चर्म भस्म सब गात ॥ बिन रथ रूढ़ दुसह दुख मारग बिन पदत्रान चलैं दोउ भ्रात । एहि बिधि सोच करत अतिही नृप जानकि ओर निरखि बिलखात ॥ इतनी सुनत सिमिटि सब आये प्रेम सहित धारे अश्रुपात । तादिन सूर शहर सब चकृत सब रस नेह तज्यो पितु मात ॥ ३० ॥ कैकेयी वचन राम प्रति । राग सारंग ॥ सकुचनि कहत नहीं महाराज । चौदह वर्ष तुम्हें बन दीनो मम सुतको निज राज ॥ तब आयसु शिर धरि रघुनायक कौशल्या ढिग आए । शीश नाइ बन आज्ञा माँग्यो सूर सुनत दुख पाये ॥ ३१ ॥ राम जू प्रति दशरथ विलाप ॥ रघुनाथ पियारे आजु रहो हो । चारि याम विश्राम हमारे छिन छिन मीठे वचन कहो हो ॥ बृथा होइ वर वचन हमारो री कैकयी जीव कलेश सहो हो । आतुर ह्वै अब छांडि कुशल पुर प्राणजिवन कित चलन कहो हो ॥ बिछुरत प्राण पयान करैंगे रहो आजु पुनि पंथ गहो हो । अब सूरज दिन दर्शन दुर्लभ कलपि कमल कर कंठ गहो हो ॥ ३२ ॥ राग गूजरी। श्रीराम जू वचन जानकी प्रति ॥ तुम जानकी जनकपुर जाहु । कहां आनि हम संग भरमिहो बन दुख सिंधु अथाहु ॥ तजि वह जनकराज भूषण सुख कत तृण तलप बिपिन फल खैहो । ग्रीषम कमल बदन कुम्हिलैहै तजि सर निकट दूर कित न्हैहो ॥ जिन कछु बृथा सोच मन करिहौ मातु पिता सुख दैहौ। तुम फिरि रहौ संग मैं तेरे जो बन बसि पछितैहौ ॥ होनी होइ कर्मकृत रेखा करिहौं तासु वचन निरबाहु । सूर सत्य जो पतिव्रत राखो तौ उठि संग चलौ जिन जाहु ॥ ३३ ॥ जानकी वचन श्रीराम जू प्रति राग केदारा ॥ ऐसी जिय जिनि धरो रघुराई । तुमसों तजि प्रभु मोसी दासी अनत न कहूं समाई ॥ तुमरो रूप अनूप भानु ज्यों जब नैननि भरि देखौं । ता छिन हृदय कमल परिफुल्लित जन्म सफल करि लेखौं ॥ तुमरे चरन कमल सुखसागर यह व्रत हौं प्रतिपलिहौं। सूर सकल सुख छांड़ि आपुनो वन बिपदा सँग चलि हौं ॥ ३४ ॥ श्रीराम वचन लक्ष्मण प्रति विदा करन हेतु।राग गूजरी ॥ तुम लछमन निज पुरहि सिधारो । बिछुरन भेंट देहु लघु बंधू जियत न जैहै शूल तुम्हारो ॥ यह भावी कछु और काज है सु को जो याको मेटन हारो ॥ तुम मति करो अवज्ञा नृप की यह दूषण तो आगे भारो ॥ याको कहा परेखो हरषो मधु छीलर सरितापति खारो । सूर सुमित्रा अंक दीजियो कौशल्या परणाम हमारो ॥ ३५ ॥ लक्ष्मण संगलेन ॥ राग सारंग ॥ लछमन नैन नीर भरि आयो । उत्तर कहत कछू नहिं आयों रह्यो चरण लपटायो ॥ अंतर्यामी प्रीति जानिकै लक्ष्मण लीनो साथ । सूरदास रघुनाथ चले बन पिता वचन धरि माथ ॥ ३६ ॥ अहल्या तरन ॥ राग सारंग ॥ गंगा तट आए श्रीराम । तहां पषाण रूप पग परसे गौतम ऋषिकी वाम ॥ गई अकास देव तनु धरिकै अतिसुन्दर अभिराम । सूरदास प्रभु पतित उधारन विरद कितक यह काम ॥ ३७ ॥ लक्ष्मण केवट संवाद ॥ राग मारू ॥ रे भैया केवट ले उतराई । रघुपति महाराज इत ठाढे तैं कित नाव दुराई ॥ अबहिं शिलाते भई देव गति जब पगु रेणु छुआई । हौं कुटुंब काहे प्रतिपारौं वैसी यह ह्वै जाई ॥ जाके चरन रेणुकी महिमा सुनियतु अधिक वडाई । सूरदास प्रभु अगनित महिमा वेद पुराननि गाई ॥ ३८ ॥ केवट विनय॥राग कान्हरा ॥ नवका नाहीं हौं लै आऊं । प्रगट प्रताप चरणको देखों ताहि कहां लौ गाऊं ॥ कृपासिंधुपै केवट आयो कंपत करत जु बात । चरण परसि पाषान उडत है मति मेरी उडि जात ॥ जो यह बधू होय काहू की दार स्वरूप धरे । छूटे देह जाइ सरिता तजि पगसों परस करे ॥ मेरी सकल जीविका यामें रघुपति मुक्ति न कीजै । सूरजदास चढो प्रभु पाछे रेणु पखारन दीजै ॥ ३९ ॥ केवट वचन राम

प्रति । राग रामकली ॥ मेरी नवका जिन चढो त्रिभुवन पति राई । मो देखत पाहन उडे मेरी काठ कि नाई ॥ मैं खेवीही पारको तुम उलटि मँगाई । मेरो जिय योंहीं डरै मति होहि शिल्हाई ॥ मैं निर्बल मेरे बलनहीं जो और गढ़ाऊँ । मेरो कुटुंब माहीं लग्यो ऐसी कहां पाऊँ ॥ मैं निर्धन मेरे धन नहीं परिवार घनेरो । सेमर ढाक पलाश काटि बांधो तुम बेरो ॥ वार बार श्रीपति कहै केवट नहिं मानै । मन परतीति न आवै उडतीही जानै ॥ नियरेहीं जल थाह है चलो तुमैं बताऊँ । सूरदासकी बीनती नीके पहुँचाऊं ॥ ४० ॥ पुरवासी वचन जानकी प्रति ॥ सखीरी कौन तिहारी जात । राजिव नैन धनुष कर लीने वदन मनोहर गात ॥ लज्जित रहीः पुर बधू पूँछे अंग अंग मुसक्यात । अति मृदु वचन पंथ बन विहरत सुनियत अद्भुत बात ॥ सुन्दर नैन कुँवर सुन्दर दोउ सूर किरन कुम्हिलात । देखि मनोहर तीनों मूरति त्रिविध ताप तनु जात ॥ ॥ ४१ ॥ सीतासैन, पति जतावन । राग धनाश्री ॥ कहि धौं सखी बटोही को हैं । अद्भुत बधू लिये संग डोलत देखत त्रिभुवन मोहैं ॥ परम सुशील सुलक्षण जोरी विधिकी रची न होई । काकी अब उपमा यह दीजै देह धरे धौं कोई ॥ इहिमें को पति त्रिया तुम्हारो पुरजन पूछै धाई । राजिवनैन मैनकी मूरति सैनन माहिं बताई ॥ गए सकल मिलि संग दूरि लों मन न फिरत पुरवास । सूरदास स्वामीके बिछुरत भरि भरि लेत उसाँस ॥ ४२ ॥ दशरथ प्राणतजत श्रीरामहेतु ॥ तात वचन रघुनाथ जबै बन गौन कियो । मंत्री गयो फिरावन रथ लै रघुवर फेरि दियो ॥ भुजा छुडाइ तोरि तृण ज्यों हित करि प्रभु निठुर हियो । सुरत साल ज्वाला उर अंतर ज्यों पावकहिं पियो ॥ यह सुनि तात तुरत तनु त्यागो बिछुरत तात वियो । इहि विधि विकल सकल पुरवासी नाहीं चहत जियो ॥ पशु पंछी तृण कण त्याग्यो अरु बालक पय न पियो । सूरदास सियनाथ बोल हित पतिव्रता सुख जु कियो ॥ ४३ ॥ राजाको तेल घट स्थापनं, मंत्रीगमन भरत निकट ॥ राग सारंग ॥ राजा तेल द्रोनि में डारे । सात दिवस मारग में बीते देखे भरत पियारे ॥ जाइ निकट हियं लाइ दोउ शिशु नैन उमँग जलधारे । कुशल क्षेम पूँछत कौशल्या राजा कुशल तिहारे ॥ कुशल राम लछमन वैदेही ते हैं प्राण हमारे । कुशल क्षेम अवधके पुरजन दासि दास प्रतिहारे ॥ कुशल राम लछमन वैदेही तुम हित काज हँकारे । सूर सुमंत ज्ञानि ज्ञानाद्भुत महिमा समय बिचारे ॥ ४४ ॥ कौशल्या विलाप, भरतं आवन, मातापर अतिक्रोध ॥ राग गूजरी ॥ रामहिं राखौ कोऊ जाई । जबलौं भरत अयोध्या आवै कहत कौशल्या माई ॥ पठवो दूत भरतको ल्यावन वचन कह्यो शिरनाई । दशरथ वचन राम वन गवने यह कहियो अरथाई ॥ आए भरत दीनह्वै बोले कहा कियो कैकयि माई । हम सेवक वा त्रिभुवनपतिके सिंहहि बलि कौवा क्यों खाई ॥ आजु अयोध्या जल नहिं अचवों ना मुख देखौं माई । सूरदास राघवके बिछुरे मरों भवन दौलाई ॥ ॥ ४५ ॥ भरत शत्रुघ्न वचन माता प्रति।राग केदारा ॥ तैं कैकयी कुमंत्र कियो । अपने मुख करि काल हँकार्‌यो हठ करि नृप अपराध लियो ॥ श्रीपति चलत रह्यो कहि कैसे तेरो पाहन कठिन हियो । हम अपराधिनके हित कारन तैं रामहिं वनवास दियो ॥ कौन काज यह राज हमारे इहि पावक परि कौन जियो । लोटत सूर धरणि दोउ बंधू मनो तपत विप विषय पियो ॥ ४६ ॥ राग सोरठ ॥ राम कहां गएरी माता । सूनो भवन सिंहासन सूनो नाहीं दशरथ ताता ॥ धिग तेरो जन्म जिवन धृग तेरो कही कपट मुख बाता । सेवक राज साहिब वन पठये यह कब लिखी बिधाता ॥ मुखारविंद हम देखिं जीवते ज्यों चकोर शशिराता । सूरदास कौशल्यानंद वन कहा अयोध्या तेरो नाता ४७ ॥

॥ राग कान्हरा॥ गुरू वशिष्ठ भरत समुझायो॥ राजाको परलोक सँवारो युग युग यह चलि आयो॥ चंदन अगर सुगंध और सब विधि करि चिता बनायो। चले बिमान संग गुरु पुरजन तापर राज पुढायो॥ दिन दश लौं जल कुंभ साजि शुचि दीपदान करवायो। भस्म अंत तिल अंजलि दीनों देव बिमान चढ़ायो॥ जानि एकादश बिप्र बुलायो भोजन बहुत करायो। दीनो दान बहुत नाना बिधि इहि बिधि कर्म पुजायो॥ सब करतूति कैकयीके शिर जिन अभिलाष उपायो। इहि बिधि सूर अयोध्यावासी दिन दिन काल गँवायो॥ ४८॥ भरत गमन रामजी निकट वन विषे परस्पर संवाद॥ राग सारंग॥ राम पै भरत चले अकुलाई। मनही मन सोचत मारगमें इई फिरै क्यों राघवराई॥ देखि दरश चरणन लपटानो गदगद कंठ न कछु कहि आई। लीनो हृदय लगाइ सूर प्रभु पूंछत भद्र भए क्यों भाई॥ ४९॥ राम सीतामिलाप दशरथ परलोक श्रवण राग केदारा॥ भरत मुख निरखि राम बिलखाने। मुंडित केश शीश बिहबल दोउ उमँगि कंठ लपटाने॥ तात मरन सुनि श्रवण कृपानिधि धरणि परे मुरझाई। मोह मगन लोचन जलधारा बिपति हृदय न समाई॥ लोटति धरणि परी सुनि सीता समुझति नहिं समुझाई। दारुण दुःख दया ज्यौं तृणवन नाहीं बुझति बुझाई॥ दुर्लभ भयो दरश दशरथको भयो अपराध हमारे। सूरदास स्वामी करुणामय नैन न जात उघारे॥ ५०॥ ॥ श्रीराम भरतसंवाद। राग केदारा॥ तुम बिमुख रघुनाथ कौन बिधि जीवन कहा बनै॥ चरण सरोज बिना अवलोके को सुख धरणि गनै॥ हठ करि रह्यो चरण नहिं छांडे नाथ तजौ निठुराई। परमदुखी कौशल्या जननी चलो सदन रघुराई॥ चौदह वर्ष तातकी आज्ञा मोपै मेटि न जाई। सूरस्वामी पावरी शीश धरि भरत चले बिलखाई॥ ५१॥ राम उपदेश भरत प्रति। राग मारू॥ बंधू करियो राज सँभारे। राजनीति अरु गुरुकी सेवा गाइ विप्र प्रतिपारे॥ कौशल्या कैकयी सुमित्रा दरशन सांझ सवारे। गुरु वसिष्ठ अरु मिलि सुमंतसों परजा हेतु बिचारे॥ भरत गात शीतल ह्वै आयो नैन उमँगि जलधारे॥ सूरदास प्रभु दई पाँवरी अवधपुरी पग धारे॥ ५२॥ भरत विदा करण। राग सारंग॥ राम यों भरत बहुत समुझायो। कौशल्या कैकयी सुमित्राको पुनि पुनि शिर नायो॥ गुरु वशिष्ठ अरु मिलि सुमंतसों अतिहीं प्रेम बढ़ायो। बालक प्रतिपालक तुम दोऊ दशरथ लाड लडायो॥ भरत शत्रुघन करि प्रणाम रघुवर हिंत कंठ लगायो॥ गद्गद गिरा सजल अति लोचन हिय सनेह जल छायो॥ कीजै यहै बिचार परस्पर राजनीति समुझायो। सेवा मात प्रजा प्रतिपालन यह युग युग चलिआयो॥ चित्रकूटते चले तिही वन मन विश्राम न पायो। सूरदास बलि गयो रामके निगम नेति जेहि गायो॥ ५३॥ दंडकवनमें शूर्पणखाको नाकछेदन। राग मारू॥ दंडकवन आए रघुराई। काम विवश व्याकुल उर अंतर राक्षसि इक तहां आई॥ हँसि करि राम कह्यो सीतासों इहि लक्ष्मण के निकट पठाई॥ भ्रुकुटी कुटिल अरुण अति लोचन अग्निशिखा मुख कह्यो फिराई। एं बौरी भई मदन विवश मेरे ध्यान चरण रघुराई। विरह व्यथा तनु गई लाज छुटि बारबार अकुलाई॥ रघुपति कह्यो निलज्ज निपट तू नारि राक्षसी भ्रांते जाई। सूरज प्रभु पत्नीव्रत एकै कास्यो नाक गई खिसिआई॥ ५४॥ खर दूपण बध मारीच रावणको वनमें आवन। राग सारंग॥ खर दूपण यह सुनि उठि धाए। तिनके संग अनेक निशाचर रघुपति आश्रम आये॥ श्री रघुनाथ लछन ते मारे कोउ एक गए पराए। शूर्पणखा ये समाचार सब लंका जाय सुनाये॥ दशकंधर मारीच निशाचर यह सुनिकै अकुलाये। दंडकवन आये छलके हित सूर ठग्यो रघुराये॥ ५५॥ मारीचवध सीताहरण मार्गमें गृध्रसों युद्ध॥ राग केदारा॥ सीता पुहुप बाटिका लाई। नानाविधि

पांति पांति सुन्दर मनु कंचनकीहै लता बनाई ॥ बार बार शोकादिकके तरु प्रेम प्रीति सींचे रघुराई ॥ अंकुर मूल भए सो पोषे कर्म भोगफल लागे आई॥ मृग स्वरूप मारीच धरयो तब फेरि चल्यो मारग जु दिखाई । श्रीरघुनाथ धनुष कर लीनो लागत बाण देवगति पाई॥ टेर लषण सुनि विकल जानकी अति आतुर उठि धाई । रेखा खैंची बार बधनकी हा रघुबीर कहांहौ भाई ॥ रावण तुरत विभूति लगाए कहत हस्त भिक्षा दै माई । दीन जानि सुधि आनि भजनकी प्रेम प्रीति भिक्षा लै जाई । हरि सीता लै चल्यो डरत जिय मानो रंक महानिधि पाई ॥ सूर संग पछतात यहै कहि कर्मदशा मेटी नाहिं जाई ॥५६॥ राम स्वरूप वर्णन ॥ मृग पाछे धावन समय ॥ राग सारंग ॥ राम धनुष अरु सायक साधे । सियहित मृग पाछे उठि धाए वसन बहुत ढिग बांधे ॥ नव घननील सरोज वरण वपु विपुल बाहु क्षत्री गुन कांधे ॥ इन्दु बदन राजीव नैन वर शीश जटा शिवसम शिर बांधे ॥ पालत सृजत संहारत संतत अंड अनेक अवधि पल आधे ॥ सूर भजन महिमा दिखरावत इमि अति सुगम चरण अवराधे ॥ ५७ ॥ सीता छाया हरन राघव गिद्धसे युद्ध॥ राग मारू ॥ इहि बिधि बन बसे रघुराई । डासिकै तृण भूमि सोवत द्रुमनिकै फल खाइ।जगत जननी करी वारी मृगा चरि चरि जाइ।कोपिकै प्रभु बान लीनो तबहिं धनुष चढाइ ॥ जनक तनया धरि अगिनिमें छायारूप बनाइ ॥ इह कोऊ नाहिं भेद जानैं बिना श्रीरघुराइ ॥ कह्यो अनुजसों रहौ यहां तुम छांडि जिनि कहुँ जाइ । कनक मृग मारीच मारयो गिरयो लक्षण सुनाइ॥खोदि दई सुरेख सीता कह्यो सु कह्यो न जाइ॥तबहिं निशिचर कियो यह छल लियो सीय चुराइ॥गिद्ध ताको देखि धायो लरयो सूर बनाइ।कटे पंख गिरयो असुर तब गयो लंका धाइ९८॥ अशोकवन में सीताको स्थापन।राग सारंग॥वन अशोकमें जनकसुताको रावण राख्यो जाइ। भूख रु प्यास नीद नाहिं आवै गई बहुत मुरझाइ।रखवारीको बहुत निशिचरी दीनी तुरत पठाइ ॥ सूरदास सीता तेहि निरखत मनही मन सकुचाइ ॥ ५९ ॥ राम विलाप सीता वियोग ॥ राग केदार ॥ रघुपति कहि प्रियनाम पुकारत।हाथ धनुष लै मुक्त मृगाहिं किये चकृत भये दिशि विदिश निहारत ॥ निरखत सून भवन जड ह्वै रहे खन लोटत धर वपु न सँभारत।हा सीता सीताकहि श्रीपति उमगि नयनजल भरि भरि ढारत ॥ लागि शेष उर बिलखि जगत गुरु अद्भुतगति नहिं परत बिचारत॥ चेतत चेतत सूर सीता हित मोह मेरु दुख टरत न टारत ॥६०॥सुनो अनुज इहिवन इतनानि मिलि जानकी प्रिया हरी । कछु इक अंगनिकी सहिदानी मेरी दृष्टि परी ॥ कटिकेहरि कोकिल वाणी अरु शशि मुख प्रभा धरी।मृगमूसी नैननिकी शोभा जाति न गुप्तकरी ॥ चंपक बरन चरन करि कमलनि दाडिम दशन लरी । गति मराल अरु बिंब अधर छबि अहि अनूप कबरी ॥ अति करुणा रघुनाथ गुसाईं युगभर जात घरी॥ सूरदास प्रभु प्रिया प्रेम वश निज महिमा बिसरी ॥ ६१ ॥ फिरत प्रभु पूछत बन द्रुम बेली । अहो बंधु काहू अवलोकी इहि मग बधू अकेली ॥ अहो विहंग अहो पन्नग नृप या कंदरके राई । अबकी बार मम विपति मिटाओ जानकी देहु बताई ॥ चंपक पुहुप बरन तनु सुन्दर मनो चित्र अवरेखी । हो रघुनाथ निशाचर के संग चली जाति हौं देखी ॥ यह सुनि धावत धरनि चरनकी प्रतिमा खगी पंथ में पाई । नैन नीर रघुनाथ सानिकै शिव ज्यों गात चढाई ॥ कहुँ हियहार कहूँ कर कंकन कहुँ अंचर कहुँ चीरा । सूरदास बन बन अवलोकत बिलखि बदन रघुबीरा ॥ ६२ ॥ रामजीको गृध्रसों मिलाप सीताको समाचार श्रवण ॥ राग केदारा ॥ तुम लक्ष्मण या कुंज कुटीमें देखो नैन निहारि । कोउ एक जीव नाम मम लैलै उठत पुकारि पुकारि ॥ इतनी कहत कंधते करगहि लीनो

T

धनुष सँभारि। कृपानिधान नाम हित धाए अपनी बिपति बिसारि॥ अहो बिहंग कहो अपनो दुख पूँछत तब जु सुरारि। किहि मतिमूढ बध्यो तनु तेरो किधौं बिछोही नारि॥ श्रीरघुनाथ रमनि जगजननी जनक नरेश कुमारि। ताको हरण कियो दशकंधर हौं जो लग्यो गुहारि॥इतनी सुनि कृपालु कोमल प्रभु दियो धनुष कर झारि। मानो सूर प्रान ले रावन गयो देहको डारि॥६३॥ गिद्ध हरि पद प्राप्ति ॥ राग केदारा ॥ रघुपति निरखि गिद्ध शिर नायो। कहिकै बात सकल सीता की तनु तजिं चरण कमल चित लायो॥ श्रीरघुनाथ जानि जन अपनो अपने कर करि ताहि जरायो। सूरदास प्रभु दरश परश करि हरिके लोक सिधायो॥ ६४॥ शवरीको हरिपद प्राप्ति ॥ शबरी आश्रम रघुवर आए। अर्घ्यासन दै प्रभु बैठाए॥ खाटे तजि फल मीठे लाई। जूँठे भये सु सहज सुनाई॥ अंतर्यामी अति हित जानैं। भोजन कीने स्वाद बखानैं॥ जात न काहूकी प्रभु जानत। भक्त भाव हरि युग युग मानत॥ करि दंडवत भई बलिहारी। पुनि तनु तजि हरिलोक सिधारी॥ सूर प्रभू करुणामय भये। निज कर करि तिल अंजलि दये॥ ६५॥ किष्किंधा काण्ड ॥ सुग्रीव आज्ञा हनुमान रामको मिलाप ॥ राग सारंग ॥ ऋष्यमूक पर्वत विख्याता। इक दिन अनुज सहित तहां आये सीतापति रघुनाथा॥ कपि सुग्रीव बालिके भयते बस्यो हुतो तहँ आई। त्रासमानि तब पवनपुत्रको दीनो तुरत पठाई॥ को यह बीर फिरै वन भीतर किहि कारण इहां आए। सूर प्रभूके निकट आइ कपि हाथ जोरि शिरनाए६६॥हनुमान राम संवाद। सुग्रीवको रामजीका दर्शन॥ राग मारू॥ मिले हनु पूछी असि प्रभु बात। महा मधुर प्रियवाणी बोलत शाखामृग कौनै ते तात॥ अंजनिकोसुत केसरिके कुल पवन गवन उपजायो गात।तुमको बीर नीरभरि लोचन मीन हीन जल ज्यों मुरझात॥ दशरथ कुल कोशलपुर बासी त्रियाहरी ताते अकुलात। ये गिरिपति कपिपति सुनियतहै बालि त्रास कैसे दिन जात॥ महादीन बलछीन विकल अति पवनपूत देखत बिलखात। सूर सुनत सुग्रीव चले उठि चरण गहे पूछो कुशलात॥ ६७॥ वालिवध सीता भूषण दर्शन सप्तताल भेद ॥ राग मारू ॥ भाग्य बडे इहि मारग आये। गदगद कंठ शोकसों रोवत वारि बिलोचन छाए। महाधीर गंभीर बचन सुनि जाम्बवंत वचन समुझाए। बढ़ी परस्पर प्रीति रीति तब भूषण सिया दिखाए॥ सप्त ताल शर साधि बालि हति मन अभिलाष बढाए। सूरदास प्रभु भुजनिके बलि बलि बिमल बिमल यश गाए॥ ६८॥ सुग्रीव राज अंगद समाधान। राग सारंग ॥ राज दियो सुग्रीवको तिन हरि यश गायो। पुनि अँगदको बोलि ढिग या विधि समुझायो॥ होनिहार सोइ होति है नहिं जात मिटायो। सूरदास प्रभु चतुर मास ता ठौर बितायो॥ ६९॥ पवनपुत्र अंगदादि मुद्रिका सहित सीता सुधि हित संपाति मिलाप। राग सारंग॥ श्रीरघुपति सुग्रीव को निज निकट बुलायो। लीजै सुधिं अब सीयकी यह कहि समुझायो॥ जाम्बवंत अंगद हनू उठि माथो नायो। हाथ मुद्रिका दई प्रभु संदेश सुनायो॥ आए तीर समुद्रके कछु शोध न पायो। संपाती तहँ मिल्यो सूर यह वचन सुनायो॥ ७०॥ संपातीका सीता अवस्था वर्णन कपिन प्रति। राग सारंग॥ बिछुरी मनो संगते हिरनी। चितवति रहति चकित चारों दिशि उपजी बिरह तनु जरनी॥ तरुवर मूल अकेली ठाढी दुखित राम की घरनी। बसन कुचील चिहुर लपटाने देह पीतांबर बरनी ॥ लेत उसास नयन जल भरि भरि धुकि जु परी धरि धरिनी। सूर शोच जिय पोच निशाचर राम नाम की शरनी७१॥ सुंदर कांड। समुद्र तीर परस्पर मंत्र हनु बिदा, सुरसा मुख प्रवेश राग केदारा॥ तब अंगद इक वचन कह्यो। को तरि सिंधु सिया सुधि लावै किहि बल इतो लह्यो॥ इतनो वचन श्रवन सुनि हरष्यो हँसि बोल्यो

जसुवंत। यादल मध्य प्रगट केशरि सुत जाहि नाम हनुमंत ॥ वहै लाइ है सिय सुधि छिनमें अरु आइ है तुरंत। उन प्रभाव त्रिभुवन को पायो वाके बलहिं न अंत ॥ जो मन करै एक वासर में छिन आवै छिन जाइ। स्वर्ग पताल महागम ताको कहिये कहा बनाइ ॥ केतिक लंक उपारि वामकर लै आवै उचकाइ। पवनपुत्र बलवंत वज्र तन काके होय समुदाइ ॥ लियो बुलाय मुदित चित ह्वैके बच्छ तंबोलहिं लेहु। ल्यावहु जाइ जनकतनया सुधि रघुपतिको सुख देहु ॥ पौरि पौरि प्रति फिरौ बिलोकत गिरि कंदर बन गेह। समय बिचारि मुद्रिका दीजो सुनौ मंत्र सुत येह ॥ लयो तंबोल माथ धरि हनुमत कियो चतुर्गुण गात । चढि गिरि शिखर शब्द इक उचरयो गगन उठयो आघात॥ कंपत कमठ शेष वसुधा नभ रवि रथ भयो उतपात । मानो पच्छ सुमेरहि लागे उडयो अकासहि जात ॥ चकृत सकल परस्पर वानर बीच करी किलकार। तहां इक अद्भुत देखि निशिचरी सुरसा मुख विस्तार ॥ पवनपुत्र मुख पैठि पधारे तहां लगी कछु वार। सूरदास स्वामी प्रताप बल उतरयो जलनिधि पार ॥ ७२ ॥ हनुमत लंका दर्शन, सीता मिलाप हित अशोकवन प्रवेश॥राग धनाश्री ॥ लखि लोचन सोचे हनुमान। चहुँ दिशि लंक दुर्ग दानव दल कैसे पाऊं जान ॥ सौ योजन विस्तार कनक पुरि चकरी योजन बीस। मनो विश्वकर्मा कर अपुने रचि राखी गिरि शीश ॥ गरजत रहत मत्त गज चहुँ दिशि छत्र ध्वजा चहुं दीस। भरमत भयो देखि मारुतसुत दई महाबल ईश ॥ उडि हनुमंत गयो आकासहि पहुँच्यो नगर मँझारि। वन उपवन गम अगम अगोचर मंदिर फिरयो निहारि ॥ भई पैज अब हीन हमारी जिय में करै बिचारि। पटकि पूंछ माथो ध्वनि लोटै लखी न रावव नारि ॥ नाना रूप निशाचर अद्भुत सदा करत मद पान। ठौर ठौर अभ्यास महामल नटपेपने पुरान ॥ जिय जिय शोच करत मारुतसुत जियत न मेरे जान। कै वह भाजि समुद्रमें बूडी कै उन तज्यो पिरान ॥ कैसे नाथ बदन दिखराऊं जो बिन देखे जाऊँ। वानर वीर हँसेंगे मोसों तैं बोरयो पितु नाऊँ ॥ ते सब तर्क बोलि हैं मोको तासों बहुत डराउँ ॥ भली रामको सिया मिलाई जीति कनकपुर गाउँ ॥ जब मोहिं अंगद कुशल पूछिहै कहा कहौंगो वाहि। या जीवनते मरन भलोहै मैं देख्यों अवगाहि॥ मारौं आजु लंक लंकापति लै दिखराऊं ताहि। चौदहसहस अंतः पुर ते लेहैं रावव चाहि ॥ बहुरि बीर जब गयो अवासहिं जहां बसै दशकंध। कनक जटि मणि खंभ बनाए पूरण वास सुगंध ॥ श्वेत छत्र फहरात शीशपर मनो लच्छको बंध। दश सिर मुकुट विराजत मणिकृत भानु उदय दससंध ॥ चौदह सहस नागकन्या रति परयो सुरत मत अंध ॥ वीणानाद पखावज आवज और राजको भोग। पुहुप प्रयंक परी नव योबन सुख परिमल रस जोग॥ जिय जिय गढै करै विश्वासहि जानै लंका लोग। इहि सुख सेज परीहै सीता राघव विपति वियोग ॥ बैठयो जाइ एक तरुवर पर जाकी शीतल छांहि॥ बहु निशाचरी मध्य जानकी मलिन बसन तनु माहिं ॥ पुनि आयो सीता जहां बैठी बन अशोकके माहिं। चारहु ओर निशिचरी घेरे नर जेहि देखि डराहिं ॥ वारंबार बिसूरि सूर दुख जपति नाम रघुनाह। मलिन अर्धपट देखि बदन पर चन्द्र गह्यो ज्यों राह ॥ ७३ ॥ आकाश वाणी हनुमति, सीय निश्चय, । राग मारू ॥ गयोकूदि हनुमंत जब सिंधुपारा। शेषके शीश लागै कमठ पीठिसों धस्यो गिरिवर सबै ता संभारा ॥ शोच लाग्यो करन यहै धौं जानकी कै कोऊ और मोहिं नहिं चिन्हारा।लंकगढ़ माहिं आकास मारग गयो चंहूदिश वज्रलागे किंवारा॥पौरि सब देखि आशोक वनमें गयो निरखिं सीता छप्यो वृक्षडारा। सूर आकाश वाणी भई तब तहां है यहै है यहै करिजुहारा ॥७४ ॥ निशिचरी रावणं बडाई, सीताकी निंदा ॥ समुझि अब निरखि

जानकी मोहि। बडोभाग्य गुण अगम दशानन शिव वर दीनो तोहिं ॥ केतक राम कृपण ताकी पितुमातु घटाई कानि।तेरे पिता जनककी सीता कीरति कहौं बखानि॥ विधि संयोग टरत नहिं टारचो बन दुख देख्यो आनि। अब रावण घर विलसि सहज सुख कह्यो हमारो मानि ॥ इतनो वचन सुनत सिरधुनिकै बोली सिया रिसाइ। अहो ढीठ मति मुग्ध निशिचरी सम्मुख बैठी आइ ॥ तब रावण को बदन देखिहौं दश शिर शोणितहाइ॥ कै तन देउँ मध्य पावकके कै बिलसैं रघुराइ॥ जो पै पतिव्रता व्रत तेरे जीवत बिछुरी काइ ॥ तब किन सुई कहौ तुम मोसों भुजागही जब राइ ॥ अब झूठो अभिमान करति सिय झुकति हमारे ताइ। सुखहीं रहसि मिलो रावणको अपने सहज सुभाइ॥ जो तू रामहि दोष लगावै करौं प्राणके घात।तुमरो कुलको बेर न लागै होत भस्म संघात॥ उनके क्रोध जरै लंकापति तेरे हृदय समाई। तोपै सूर पतिव्रत सांचो जो देखौं रघुराई ॥ ७५॥

निशिचरी सीता सत प्रगट करन रावण निज उद्धार ज्ञान ॥ राग धनाश्री ॥ सुनो क्यों न कनकपुरीके राइ। हौं बुधि बल छल करि पचि हारी लख्यो न शीश उचाइ। डोलै गगन सहित सुरपति अरु पुहुमि पलटि जगजाइ॥ नशै धर्म मम वचन काय करि शंभु अचंभुकराइ।अचला चलै चलत पुनि थाकै चिरंजीव सो मरई। श्रीरघुनाथ प्रताप पतिव्रत सीता सत नहिं टरई॥ ऐसी त्रिया हरित क्यों आई जाके यह सतभाइ।मन वच क्रम और नाहिं दूजो तजि रघुनन्दनराइ॥ इनके क्रोध भस्म ह्वै जैहो करहु न सीता चाउ। अब तुम काकी शरन उबरिहौ सो बल मोहिं बताउ॥ जो सीता सतते बिचलै तौ श्रीपति काहि सँभारै। मोसे मुग्ध महापापीको कौन क्रोध करि तारै॥ यह जननी वे प्रभु रघुनंदन हम सेवक प्रतिहार। सीताराम सूर संगम बिनु कौन उतारै पार ॥ ७६ ॥

रावण लोभ दिखावन जानकी निरादर करन। राग मारू ॥ जनकसुता तू समुझि चित्त में निरखि मोहि तन हेरी। चौदह सहस किन्नरी जेती सब दासी हैं तेरी॥ कहै तो जनक गेह दै पठवौं अर्ध लंकको राज। तोहिं देखि चतुरानन मोहे तू सुन्दरि शिरताज॥ छाडि राम तपसीके मोहैं उठि आभूषण साजु। चौदह सहस तिया मैं तोको पटा बँधाऊं आज॥ कठिन वचन सुनि श्रवन जानकी सकी न वचन सहार। तृण अंतर दै दृष्टि तिरौछी दई नैन जलधार ॥ पापी जाउ जीभ गलि तेरी अजुगत बात बिचारी। सिंहको भक्ष शृगाल न पावै हौं समरथ की नारी॥ चौदह सहस दुष्ट खर दूषण रघुपति एकहि बान। लक्ष्मण राम धनुप सन्मुख करि काके रहि हैं प्राण॥ तेरी अवधि कहत सब कोऊ तातें कहियत बात। बिन विश्वास मारिहैं तोको आजु रैनिकै प्रात॥ मेरो हरन मरन है तेरो सो कुटुंब संतान। जरि है लंक कनकपुर तेरो उदित रघूकुल भान॥ यह राक्षसकी जाति हमारी मोह न उपजै गात। परत्रिय रमै धर्म कहां जानै डोलत मानुप खात॥ मनमें डरी कानि जिनि तोरै सुहि अबला जिय जानि। नख शिख वसन संभारि सकुचि तनु कुच कपोल गहि पानि॥ रे दशकंध अंध मति तेरी आयु तुलानी आनि। सूर राम को विरद गर्व हत डारैं शंभु भुज भानि॥७७॥

त्रिजटाने सीताको समाधान किया। राग मारू॥ त्रिजटा सीता पै चलि आई। मनमें सोच न कर तू माता यह कहिके समुझाई॥ नल कूवरको शाप रावनहिं तोपर बल न बसाई। सूरदास मनु जरी सजीवन श्रीरघुनाथ पठाई॥ ७८॥

त्रिजटा प्रति सीता मनोरथ वर्णन राग कान्हरा ॥ सो दिन त्रिजटी कहि कब ह्वै है। जादिन चरन कमल रघुपतिके हरपि जानकी हृदय लगै है॥कबहुँक लक्ष्मण पाइ सुमित्रा माइ माइ कहि मोहिं सुनै है।कबहुँक कृपावंत कौशल्या वधू वधू कहि मोहिं बुलै हैं॥ जादिन राम रावणहिं मारैं ईशहिं दै दशशीश चढै हैं। तादिन जन्म

सफल करि जानो मेरे हृदयकी कालिम जैहै ॥ जा दिन कंचनपुर प्रभु ऐहैं विमल ध्वजा रथ पर फहरै हैं । तादिन सूर राम पर सीता सरबसु वारि बधाई दैहैं ॥ ७९ ॥ राग सारंग ॥ मैं रामके चरणन चित दीनो । मनसा वाचा और कर्मणा बहुरि मिलन को आगमन कीनो ॥ डुलै सुमेरु शेष शिर कंपै पश्चिम उदै करै बासर पति । सुनि त्रिजटी तौहू नहिं छोडौं मधुर मूर्ति रघुनाथ गात रति ॥ सीता करति विचार मनै मन आजु कालिह कोशलपति आवै । सूरदास स्वामी करुणामय सो कृपालु मोहिं क्यों बिसरावै ॥ ८० ॥ सीता प्रति त्रिजटी स्वप्न वर्णके हनू सिय दरश परस्पर संवाद मुद्रिका अर्पण ॥ राग धनाश्री ॥ सुन सीता सपनेकी बात । रामचंद्र लछमन मैं देखे ऐसी बिधि परभात ॥ कुसुमबिमान बैठि बैदेही देखी रावव पास । श्वेतछत्र रघुनाथ शीशपर दिनकर किरण प्रकाश ॥ भयो पलायमान दानवकुल व्याकुलता इक त्रास । पंजरत ध्वजा पताका छत्र रथ मनिमैं कनक अवास ॥ रावन शीश पुहुमिपर लोटत मंदोदरि बिलखाइ । कुम्भकर्ण तनु खंग लगाई लंक बिभीषण पाइ ॥ प्रगट्यो आइ लंकदल कपिको फिरि रघुवीर दुहाई । यह सपनेको भाव सखीरी क्योंहूँ बिफल न जाई ॥ त्रिजटी वचन सुनत बैदेही अति दुख लेत उसांस । हाहा रामचन्द्र हा लछिमन हा कौशल्या सास ॥ त्रिभुवन नाथ नाह ज्यों पायो सुन्यो रहै बनबास । हा कैकयी सुमित्रा रानी कठिन निशाचर त्रास ॥ कौन पाप मैं पापिन कीनो प्रगट्योहै इहिबार ॥ धिग धिग जीवन है अब इहि तनु क्यों न होइ जरि छार । द्वै अपराध मोहिं ये लागे मृगके हित दीने हथियार ॥ जान्यो नहीं निशाचरके छल नाघी धनुप अकार । पंछी एक सुहृद जानतहो करचो निशाचर भंग । ताते बिरमि रह्यो रघुनंदन करि मनसा मंन पंग ॥ इतनो कहत नैन उर फरके सगुन जनायो अंग । आज लहौं रघुनाथ सँदेशो मिटै बिरह दुखसंग ॥ तिहि छिन पवनपूत तहँ प्रगटेउ सिया अकेली जानि । श्री दशरथकुमार दोउ बंधू धरे धनुप दोउ पानि ॥ प्रिया बियोग फिरत मारे मन परे: सिंधु तट आनि । ता सुन्दरि हित मोहिं पठायो सकौं न हौं पहिचानि ॥ बारंबार निरखि तरुवर तन कर मीड़ति पछिताइ । देव जीव पशु पक्षी को तू नाम लेत रघुराइ ॥ बोलै नहीं रह्यो दुरि वानर द्रुममें देह छुपाइ । कै अपराध ओढ अब मेरो कै तू देहि दिखाइ ॥ तरुवर त्यागि चपल शाखामृग सन्मुख बैठचो आइ । माता पुत्र जानि दै उत्तर कहु किहि विधि बिलखाइ ॥ किन्नर नाग देवि सुरकन्या कासों हित उपजाई । कै तू जनककुमारि जानकी राम बियोगिनि आई ॥ राम नाम सुनि उत्तर दीनो पिता बंधु तू होहि । मैं सीता रावन हरि ल्यायो त्रास दिखावत मोहि ॥ अब मैं मरों सिंधुमें बूडौं चित में आवै कोह । सुनो बच्छ जीवन धिग मेरो लक्ष्मण राम बिछोह ॥ कुशल जानकीजू रघुनंदन कुशल लक्ष्मण भाई । तुम हित नाथ कठिन व्रत कीनो नहिं जल भोजन खाई ॥ सुरै न अंग कोऊ जो काटै निशि बासर सम जाई । तुम घट प्राण देखियत सीता बिना प्राण रघुराई ॥ वानर वीर चहूँ दिशि धाए ढूँढैं गिरि बनचारी । सुभट अनेक सबल दल साजे परे सिंधुके पारी ॥ उद्यम मेरो सफल भयो अब मैं देखो तुम आइ । अब रघुनाथ मिलाऊं तुमको सुन्दरि सोग सिराइ ॥ यह सुनि सिय मन शंका उपजी रावन दूत बिचारि । छल करि आयो निश्चर कोऊ नाना रूपनि धारि ॥ श्रवण मूंदि अंचर मुख ढाँप्यो अरे निशाचर चोर । काहेको छल करि करि आवत धर्म बिनाशन मोर ॥ पावक परौं सिंधु महँ बूडौं नहिं मुख देखौं तोर । पीपी क्यों न पीठि दै मोको पाहन सरिस कठोर ॥ जियमें डरचो मोहिं मति शापै व्याकुल वचन कहंत । जो वर दियो सकल

देवन मोहिं नाउँ धरचो हनुमंत ॥ सुग्रीवको तारका मिलाई बध्यो बालि भयमंत । अंजनि कुँवर रामको पाइक ताके बल गर्जंत ॥ लेहु मातु मुद्रिका निसानी: दई प्रीति करि नाथ। सावधान ह्वै शोक निवारो ओडहु दक्षिण हाथ॥खिन मुँदरी खिनही हनुमतसों कहति बिसूरि बिसूरि। कहि मुद्रिकैं कहां तैं छांडे मेरे जीवनमूरि ॥ कहियो वच्छ सँदेशो इतनो जब हम एकत थान।सोवत काग छुयो तनु मेरो बाहिर कीनो बान॥फोरचो नयन काग नहिं छाँडचो सुरपतिके विदमान । अब वह कोप कहा रघुनन्दन दशशिर कंठ बिरान॥निकट बुलाइ बैठाइ निरखि मुख अंचर लेत बलाइ। चिरजीयो सुकुमार पवनसुत गहति दीन ह्वै पाइ ॥ बहुत भुजनि बल होइ तुमारे ये अमृत फल खाहु । अबकी बेर सूर प्रभु मिलिहो बहुरि प्राण किनि जाहु ॥८१॥ हनुमत सीता समाधान ॥ राग मारू॥ जननी हौं अनुचर रघुपति को । मति माता करि क्रोध शरापै नहिं दानव धिग मति को ॥ आज्ञा होइ देउँ कर मुँदरी कहौं संदेशो पतिको । मति हिय बिलख करो सिय रघुवर बधि हैं कुल दैयत को ॥ कहौ तु लंक उखारि डारि देउँ जहां पिता संपति को । कहो तु मारि सँहारि निशाचर रावण करौं अगति को ॥ सागर तीर भीर बनचरकी देखि कटक रघुपतिको । लै मिलइहौं अबहिं सूर प्रभु राम रोष डर अतिको ॥ ८२ ॥ राग मारू ॥ अनुचर रघुनाथ तेरे दरश काज आयो । पवनपूत कपि स्वरूप भक्तनमें गायो ॥ तपसी जहां तपन करै सोइ बनमें झांक्यो। जाकी तुम छांह बैठी सोई द्रुम मैं राख्यो ॥ आयसु जो होइ जननी सकल असुर मारौं । लंकेश्वर बांधि राम चरणन तर डारौं ॥ चढ़ि चलो जु पीठि मेरी अबहीं ले मिलाऊं । सूर श्रीरघुनाथ जूके लीला गुण गाऊं ॥ ८३ ॥ हनुमत निरखि सीता संदेह मुद्रिका अर्पते प्रतीति । राग मारू ॥ तुम्हैं पहिचानति नाहीं वीर । इहि नैननि कबहूं नहिं देख्यो रामचन्द्रके तीर ॥ लंका बसत दैत्य अरु दानव उनके अगम शरीर । तोहिं देखि मेरो जिय डरपत नैननि आवत नीर ॥ जब कर काढ़ि अँगूठी दीनी तौ जिय उपजी धीर । सूरदास प्रभु लंका कारण आए सागर तीर ॥ ८४ ॥ हनूका रामलक्ष्मणके समाचार कहना, अपनो पराक्रम वर्णन ॥ राग सारंग ॥ जननी हौं रघुनाथ पठायो । रामचन्द्र आयेकी तुमको देन बधाई आयो ॥ हौं हनुमंत कपट जिनि समुझो बात कहत समुझाई ॥ मुँदरी दूब धरीलै आगे तब प्रतीति जिय आई ॥ अति सुख पाइ उठाइ लई तब बार बार उर भेंटति।ज्यों मलया गिरि पाइ आपनी जरनि हृदयकी मेटति ॥ लक्ष्मण पालागन करि पठयो हेतु बहुत करि माता। दई अशीश तरनि सन्मुख ह्वै चिरजीयो दोउ भ्राता ॥ बिछुरनको संताप हमारो तुम दरशन ते काटचो । ज्यों रवि तेज पाइ दशहूं दिशि दोष कुहरको फाटचो ॥ ठाढे बिनती करत पवनसुत अब जो आज्ञा पाऊं ॥ अपने देख चलेको यह सुख उनहूं जाइ सुनाऊं । कल्प समान एकछन राघव कर्म कर्म करि बितवत । ताते हौं अकुलात कृपानिधि ह्वैहैं पैंडो चितवत ॥ रावण हतिलै चलौं साथही लंका धरौं अपूठी॥याते जिय अकुलात कृपानिधि करौं प्रतिज्ञा झूठी । यहां जो सब दशा हमारी सूर सों कहियो जाई ॥ बिनती बहुत कहा कहौं रघुपति जिहि बिधि देखौं पाई ॥८५॥ सीता आगमन प्रसन्न हनु धीरजदेन॥राग मलार ॥ वनचर कौन देशते आयो । कहँ वे राम कहां वे लक्ष्मण क्यों करि मुद्रा पायो ॥ हौं हनुमंत रामके सेवक तुव सुधि लेन पठायो । रावण मारि तुम्हैं लै जातो राम निदेश न पायो ॥ तुम मति डरियो मेरी मैया राम जोरि दल ल्यायो । सूरदास रावण कुल खोवन सोवत सिंह जगायो ॥ ८६ ॥ अन्यच राग सारंग ॥ कहो कपि कैसे उतरचो पार । दुस्तर अति गंभीर वारिनिधि शतयोजन विस्तार ॥ इत उत क्रोध दैत्य कपि मारत महा अबुधि अधिकार ।

हाटकपुरी कठिन पथ वानर आये कौन अधार ॥ राम प्रताप सत्य सीताको यहै नाउँ कंधार । बिन अधार छनमें अवलंब्यो आवत भई न बार ॥ पृष्ठभाग चढ़ि जनकनन्दिनी पौरुष देख हमार । सूरदास लै जाउँ तहाँ जहँ रघुपति कंत तुम्हार ॥ ८७ ॥ हनू मिलापते सीता आनंद । राग मारू ॥ हनुमत भली करी तुम आए । बार बार कहती बैदेही दुख संताप मिटाए ॥ श्रीरघुनाथ और लक्ष्मणके समाचार सब पाये । अब परतीति भई मन मेरे संग मुद्रिका लाये ॥ क्यों करि सिंधु पार तुम उतरे क्योंकरि लंका आये । सूरदास रघुनाथ जानि जिय तो बल इहाँ पठाए ॥ ८८ ॥ सीताराम पराक्रम वर्णन उराहना समेत बेगि मिलाप हित । राग कान्हरा ॥ सुन कपि वे रघुनाथ नहीं । जिन रघुनाथ पिनाक पितान्यो तोरचो निमिष महीं॥जिन रघुनाथ फेरि भृगुपति गति डारी काटि तहीं॥ जिहिं रघुनाथ हार खरदूषण हरे प्राण शरहीं॥कै रघुनाथ तज्यो प्रण अपनो योगिन दशा गही॥कै रघुनाथ दुखित कानन कै नृप भये रघुकुलहीं॥कै रघुनाथ अतुल राक्षस बल दशकंधर डरहीं ।छाँडी नारि बिचारि पवनसुत लंक बाग बसहीं ॥ किधौं कुचील कुरूप कुलक्षण तौ कंतहि न चही ॥ सूरदास स्वामीसों कहियो अब बिरमियो नहीं ॥ ८९॥ सीता निज दुःख वर्ण्यो हनूमाति ॥ राग मारू ॥ देखे यह गति जात सँदेशो कैसे कै जु कहौं । सुन कपि इन प्राणनको पहरो कबलों देति रहौं ॥ ये अति चपल चल्यो चाहत हैं करत न कछू बिचार ॥ कहि धौं प्राण कहां लौं राखौं रोकि रोकि मुख द्वार । अपनी बात जनावति तुमसों सकुचतिहों हनुमंत।नाहीं सूर सुन्यों दुख कबहूं प्रभु करुणामय कंत॥९०॥ सीता बिनय निज दुःख निवारण निमित्त श्रीराम प्रति ॥ राग मारू ॥ कहियो कपि रघुनाथ राज सों यह इक बिनती मेरी । नाहीं सही परति यह मोपै दारुण आश निशाचर केरी॥यह जो अंध बीसहूँ लोचन छल बल करत आनि मुख हेरी । आइ शृगाल सिंह बलि माँगत यह मरजाद जात प्रभु तेरी ॥ जेहि भुज परशुराम बल करष्यो ते भुज क्यों न सँभारत फेरी । सूर सनेह जानि करुणामय लेहु छुडाइ जानकी चेरी ॥ ९१ ॥ सीता निज अपराध प्रगटन । राग मारू ॥ मैं परदेशिन नारि अकेली । बिनु रघुनाथ और नहिं कोऊ मातु पिता न सहेली ॥ रावण भेष धरचो तपसीको कत मैं भिक्षा मेली । अति अज्ञान मूढ मति मेरी राम रेख पाइन मैं पेली ॥ बिरह ताप तनु अधिक जरावत जैसे दौ द्रुम बेली । सूरदास प्रभु बेगि मिलाओ प्राण जात हैं खेली ॥ ९२ ॥ हनुमत बचन राग मारू॥ तू जननी जिय दुख जिन मानहि । रामचन्द्र नाहिं दूरि कहूं पुनि भूलिहु चितचिंता मति आनहि ॥ अबहिं लिवाइ जाउँ सब रिपु हति डरपत हौं आज्ञा अपमानहि। राख्यो सुफल सँवारि सान दै कैसे निफल करौं वा बानहि ॥ हैं केतेक यह तिमिर निशाचर उदित एक रघुकुल के भानहि । काटन दे दशशीस समर मुख अपनो कृत एऊ जो जानहि ॥ देहिं दरश शुभ नैन निकट निज रिपु को नाश सहित संतानहिं । सूर सत्त मोहिं इनहिं दिननिमें लै जु आइ हौं कृपानिधानहि ॥ ९३ ॥ अशोकवन भंग इन्द्रजीत हनुमत प्रति ब्रह्म शर बंधन। राग मारू ॥ हनुमत बल प्रगट भयो सीता जब पाई । जनकसुता चरण बंदि फूल्यो न समाई ॥ अगणित तरु फल सुगंध मधुर मिष्ट खाटे । मनसा करि प्रभुहिं अर्पि भोजनको डाटे॥ द्रुमन गहि उपाटि लिये दै दै किलकारी । दानव बिन प्राण भये देखि चरित भारी ॥ बिह्वल मतिहीन गए जोरे सब हाथा। बानर बन बिघ्न कियो त्रिभुवनके नाथा॥ ह्वै निशंक अतिहि ढीठ बिडरे नहिं भाजै । मानो वन कदलि मध्य उनमत्त गज गाजै ॥ भाने मठ कूप वाय सरवरको पानी । गौरी कंत पूजत जहां नव तन दल आनी ॥ कांप्यो मुनि असुर सैन शाखामृग जान्यो । मानो जल जीव सिमिटि जाल मैं समान्यो॥

तरुवर तहँ इक उपारि हनुमतकर लीनो। किंकर कर पकरि बाण तीन खंड कीनो॥ योजन विस्तार शिला पवनसुत उपाटी। किंकर करि लक्ष्मान अंतरिक्ष काटी॥ आगर इक लोह जरित लीनो बलबंड। दुहूं करनि असुर हयो भयो मानस पिंड॥ दुर्धर परहस्त संग आई सैन भारी। पवनपूत दानव बल बाहर चल कारी॥ रोम रोम हनूमंत लच्छ लच्छ बान। जहां तहां देखत कपि करत राम आन॥ मंत्री सुत पांच सैन अक्षय कुँवर सूर। धीर सहित सबै हते झपटिकै लंगूर॥ चतुरानन बल सँभारि मेघनाद आयो। मानो घन पावस में नगपति है छायो॥ देख्यो जब दिव्य बान नागफांस आन्यो। छांड्यो तब सूर हनू ब्रह्म तेज मान्यो॥ ९४॥ हनुमान रावण संवाद ब्रह्मशर मुक्ति। राग मारू॥ सीतापति सेवक तोहिं देखनको आयो। काके बल बैर तैं जु राम ते बढायो॥ जे जे तुव सूर सुभट कीट सम न लेखौं। तेरे दशकंध अंध प्राणनि बिनु देखौं॥ नख शिख ज्यों मीन जाल जड्यो अंग अंगा। अजहुँ नाहिं शंक धरत बनचर मति अंगा॥ जोई सोई मुखहि कहत मरण निज न जानै। जैसे नर सन्निपात हिये बुधि बखानैं॥ तब तू गयो सून भवन भस्म अंग पोते। करितो बिनु प्राण तोहिं लक्ष्मण जो होते॥ पाछे तैं सीय हरी बिधि मर्याद राखी। जो पै दशकंध बली रेखा क्यों न नाखी॥ अजहूं सिय सौंपि नतरु बीस भुजा भानै। रघुपति यह पैज करी भूतल धरि पानै॥ ब्रह्म बाण कानि करी बल करि नहिं बांध्यो॥ कैसे यह ताप मिटै रघुपति आराध्यो॥ देखत कपि बाहुदंड तनु प्रस्वेद छूटै। जैजै रघुनाथ नाथ कहत बंध टूटै॥ देखत बल दूरि कर्‍यो मेघनाद गारो। आपुन भयो सकुचि सूर बंधन ते न्यारो॥९५॥ हनुमान लंका जारन॥ राग मारू॥ मंत्रिन नीको मंत्र बिचार्‍यो। राजन् कहो दूत काहूको कौन नृपतिहै मार्‍यो॥ इतनी कहत विभीपण बोल्यो बंधू पांइ परौं। यह अनरीति सुनी नहिं श्रवणानि अब पै कहा करौं॥ तेल तूल पावक वपु धरिकै देखत तुसै जरौं। अब मेरे जिय यहै बसीहै रघुपति काज करौं॥ हरी विधाता बुद्धि सबनिकी अति आतुर ह्वै धाये। सन अरु सूत चीर पाटंबर लै लंगूर बँधाये। बंधनि तोरि मोरि मुख असुरनि ज्वाला प्रगट करी। रघपति चरण प्रताप सूरप्रभु लंका सकल जरी॥ ९६॥ आकाशवाणी, सीता कुशल॥ राग धनाश्री॥ सोचि जिय पवनपूत पछिताई। अगम अपार सिंधु दुस्तर तरि कहा कियो मैं आई॥ सेवकको सेवापन इतनो आज्ञाकारी होई। या भय भीति देखि लंकामें सीय जरी मति होई॥ बिनु आज्ञा मैं भवन प्रजारे अपयश करिहै लोइ। वे रघुनाथ चतुर कहियत हैं अंतर्यामी सोइ॥ इतनी कहत गगनवाणी भई हनू सोच कत करिहै। चिरंजीव सीता तरुवर तर अटल न कबहूं टरिहै॥ फिर अवलोकि सूर सुख लीजै भुवमें रौम न परिहै। जाके हिय अंतर रघुनंदन सो क्यों पावक जरिहै॥ ९७॥ लंका दग्धि पुनः सिय दर्शन राग मारू॥ लंका हनूमान सब जारी। रामकाज सीताकी सुधि लगि अंगद प्रीति बिचारी॥जा रावणकी शक्ति तिहूंपुर कहूं न आज्ञा टारी। ता रावणके अछत अक्षय सुत पालक सृष्टि पछारी॥ पूंछ बुझाइ गये सागर तट है जहँ सीतावारी। करि दंडवत प्रेम पुलकित ह्वै सुनि राघवकी प्यारी॥ तुमही तेज प्रताप रहीहै तुमरी यहै अटारी। सूरदास स्वामीके आगे जाइ कहौं सुख भारी॥ ९८॥ रामचन्द्र प्रति सीता संदेश हनुमंत बिदा॥ राग सारंग॥ मेरी केती बिनती करनी। पहिले करि परणाम पाँइ परि मणि रघुनाथ हाथलै धरनी॥ मंदाकिनि तट फटिकशिला पर सुख मुख जोरि तिलककी करनी।कहा कहौं कपि कहत न आवै सुमिरत प्रीति होइ उर अरनी॥ तुम हनुमंत पवित्र पवनसुत कहियो जाइ जोइ मैं बरनी। सूरदास प्रभु आनि मिलावहु मूरति

दुसह दुःख भय हरनी ॥९९॥ अंगदादि निकट हनुमानका पुनः आगमन सीता सुधि देन ॥ राग मारू ॥ हनूमान अंगदके आगे लंक कथा सब भाषी । अंगद कह्यो भली तुम कीनी हम सबकी पति राखी ॥ हर्षवंत ह्वै चले तहां ते मगमें बिलम न लाई । पहुँचे आइ निकट रघुवरके सुग्रीव आयो धाई ॥ सबन प्रणाम कियो रघुपति को अंगद वचन सुनायो । सूरदास प्रभु पदप्रताप करि हनू सिया सुधि ल्यायो ॥ ॥ १०० ॥ सुग्रीवादि कृत हनुमान प्रशंसा ॥ राग मारू ॥ हनू तैं सबको काज सँवारचो । बार बार अंग यों भाषै मेरो प्राण उबारचो ॥ तुरतहि गमन कियो सागर ते बीचहि बाग उजारचो । कियो मधुवनको चौर चहूं दिशि माली जाइ पुकारचो ॥ धनि हनुमंत सुग्रीव कहतहै रावणको दल मारचो । सूर सुनत रघुनाथ भयो सुख काज आपनो सारचो ॥ १०१ ॥ श्रीरामचन्द्र हनुमान गोष्ठी । राग मारू ॥ कहौ कपि जनकसुता कुशलात । आवागमन सुनावहु अपनो देहु हमैं सुख गात ॥ सुनो पिता जल अंतर ह्वै कै रोक्यो मग इक नारि । धर अंबर घन रूप निशाचरि गरजी बदन पसारि ॥ तब मैं डरपि कियो छोटो तनु पैठ्यो उदर मंझारि । खरभर परी देव आनंदे जीत्यो पहिली रारि ॥ गिरि मैनाक उदधि में अद्भुत आगे रोक्यो जात । पवनपिताको मित्र न जानत धोखे मारी लात ॥ तबहीं और रह्यो सरितापति आगे योजन सात । तुव प्रताप पेलि दिशि पहुँच्यो कौन बढावै बात । लंका पौंरि पौंरि मैं ढूँढी अरु बन उपबन जाइ । तरुवर तर अवलोकि जानकी तब हौं रह्यो लुकाइ ॥ रावण कह्यो सु कह्यो न जाई रह्यो क्रोध अति छाई । तबहीं अवध जानिकै राख्यो मंदोदरि समुझाई ॥ तब हौं गयो सुफल बारी में देखी दृष्टि पसारि । असी सहस किंकर दल जिहिके दौरे मोहिं निहारि । तुम परताप देव छिन भीतर जुरत भई नहिं बार । तिनको मारि तुरंतहि कीनो मेघनादसों रार ॥ ब्रह्म फांस जब लई हाथ करि मैं चेत्यो कर जोरि । तज्यो कोप मर्यादा राखी बँध्यो आपही मोर ॥ रावणपै लैगयो सकल मिलि ज्यों लुब्धक पशु जाल । करुवो वचन श्रवण सुनि मेरो तब रिस गही भुवाल ॥ आपुनही मुद्गर लै धायो करि लोचन बिकराल । चहुँदिशि सूर शोर करि धावै ज्यौं केहरिहि सियाल ॥१०२॥ राम वचन।राग मारू ॥ कैसे पुरी जरी कपिराय । बडे दैत्य कैसे करि मारे ईश्वर तुमै बचाइ ॥ प्रगट कपाट बडे दीने हैं बहु जोधा रखवारे । तेंतिस कोटि देव वश कीने ते तुमसे क्यों हारे ॥ तीनिलोक डर जाके कंपै तुम हनुमान न पेखे । तुमरे क्रोध शाप सीताके दूरि जरत हम देखे ॥ हो जगदीश कहा कहौं तुमसों तुम बर तेज मुरारी । सूरजदास सुनो सब संतो अवगतिकी गति न्यारी१०३॥ सेना समेत सिन्धु तट राग पयान।राग मारू ॥सीय सुधि सुनत रघुवीर धाये । चल्यो तब लक्ष्मण सुग्रीव अंगद हनू जाम्बवंत नील नल सबै आये॥ भूमि अति डगमगी योगनी सुनि जगी सहसफन शेष सो शीश कांप्यो । कटक अगणित जुरचो लंक खरभर परचो सूरको तेज धर धूर ढाप्यो ॥ जलधि तट आइ रघुराइ ठाढे भए ऋच्छ कपि गरजि ह्वै ध्वनि सुनायो । सूर रघुराइ चितये हनूमान दिशि आइ तिन तुरतही शीश नायो ॥ १०४ ॥ हनुमान निज शरीर बल कथन ॥ राग केदारा॥राघव जू कितक बात तजि चिंत।केतक रावण कुंभकर्ण दल सुनिहो देव अनंत॥कहो तु लंक लकुट ज्यों फेरो फेरि कहूं लै डारों कहो।तु पर्वत चापि चरण तर नीर खारमें गारो॥कहो तोअसुर लंगूर लपेटौं कहौ तु नखन बिदारौं।कहो तु शैल उपारि पेडते दै सुमेरु सो मारौं॥जेतक शैल सुमेरु धरणिमें भुजभरि आनिमिलाऊं।सप्त समुद्र देहुँ छातीतर इतनक देह बढाऊं चली जाहु सेना सब मोपर धरो चरण रघुवीर॥ मोहिं अशीश जगत जननीकी तुव तनु वज्र शरीर। जितक बोल बोले तुम आगे रामप्रताप तुमारे । सूरदास प्रभुकी सब साँची जनकी पैज पुकारे॥

T

॥१०५॥ हनुमानका निज पराक्रम युद्ध निमित्त कथन ॥ राग मारू ॥ रावणसे गहि कोटिक मारों। जो तुम आज्ञा देहु कृपानिधि तो यह परहित सारों॥ कहो तु जननि जानकी ल्याऊं कहो तो लंक उदारौं। कहो तु अबहीं पैठि सुभट हति अनल सकल परजारों॥ कहो तु सचिव सबंधु सकल अरि एकहि एक पछारौं। कहो तु तुम प्रताप श्रीरघुबर उदधि पषाननि तारों॥ कहो तु दशो शीश बीसों भुज काटि छिनकमें डारौं। कहो तु ताको तृण गहाइकै जीवत पाँइन डारौं॥ कहो तु सेना चारि रचौं कपि धरनी व्योम पतारों। शैल शिला द्रुम वरषि व्योम चढि शत्रु समूह सँहारौं॥ बार बार पद परसि कहतहौं हौं कबहूं नहिं हारौं। सूरदास प्रभ तुमरे वचन लगि शिव वचननको टारौं॥ ॥ १०६ ॥ अन्यच्च ॥ राग मारू ॥ हौं हरिजूको आयसु पाऊं। अबहीं जाइ उपारि लंकगढ़ उदधि पार लैं आऊं॥ अबहीं जंबूद्वीपइहांते लै लंका पहुँचाऊं। सोखि समुद्र उतारों कपिदल छिनक विलंब न लाऊं॥ अब आवै रघुवीर जीति दल तौ हनुमंत कहाऊं। सूरदास शुभ पुरी अयोध्या राघव सुयश बसाऊं॥ १०७ ॥ सिंधु सेतु निमित्त हनुमान विनय॥ राग सारंग ॥ रघुपति बेगि जतन अब कीजै।बांधैं सिंधु सकल सैना मिलि आपुन आयसु दीजै॥तबलगि तुरत एकतौ बांधौं द्रुम पाषाननि छाई। द्वितिय सिंधु सिय नैन नीरह्वै जबलौं मिलै न आई॥ यह विनती हौं करौं कृपानिधि बार बार अकुलाई। सूर ज दास अकाल प्रलय प्रभु मेटो दरश दिखाई॥१०८॥ सीता देन निमित्त विभीषण वचन रावण प्रति। राग मारू ॥ लंकपतीको अनुज शीश नायो। परम गंभीर रणधीर दशरथ तनय कोपि करि सिंधुके तीर आयो॥ सियको लै मिलो यह मतो है भलो कृपा करि मम वचन मानि लीजै। ईशको ईश करतार करुणामयी तासु पदकमल पर शीश दीजै॥ कह्यो लंकेश दै शीशपग तासुके जाहि मत मूढ कायर डरानो। जानि अशरण शरण सूरके प्रभुको तुरंतहि जाइ द्वारे बुझानो॥ ॥ १०९ ॥ रामचन्द्रसों विभीषण मिलाप। राग सारंग ॥ आइ विभीषण शीश नवायो। देखत ही रघुवीर धीर कहँ लंकपती तिहि नाम बुलायो॥ कह्यो सु बहुरि कह्यो नहिं रघुवर यहै बिरद चलि आयो। भक्तबछल करुणामय प्रभुको सूरदास यश गायो॥ ११० ॥ सभामध्य श्रीरामचन्द्र वचन। राग मारू ॥ तब हौं नगर अयोध्या जैहौं। एक बात सुन निश्चय मेरी रावण राज्य विभीषण दैहौं॥ कपिदल जोरि और सब सेना सागर सेतु बंधैहौं। काटि दशों शिर बीस भुजा तब दशरथ सुत जु कहैहौं॥ छन इक माँहि लंक गढ तोरौं कंचन कोट ढहैहौं। सूरदास प्रभु कहत विभीषण रिपुहति सीता लैहौं॥१११॥ सिय दे मिलन निमित्त मंदोदरी शिक्षा रावण प्रति ॥ राग मारू ॥ वे देखि आये राम राजा। जलके निकट आइ भये ठाढे दीसत बिमल ध्वजा॥ सोवत कहा चेतहो रावण मैं जु कहति कत खात दगा। कहति मँदोदरी सुनु पिय रावण मेरी बात अगा॥ तृण दशनन लै मिल दशकंधर कंठहिं मेलि पगा। सूरदास प्रभु रघुपति आये दहपट होइ लंका॥ ११२ ॥ अन्यच्च। शरण परि मन वच कर्म बिचारि। ऐसो कौन और त्रिभुवन में जो अब लेइ उबारि॥ सुनि शिष कंत दंत तृण धरि कै स्यो परिवार सिधारो। परम पुनीत जानकी सँग लै कुल कलंक किन टारो॥ ये दशशीश चरण तर राखो मेटो सब अपराध। महाप्रभु कृपाकरन रघुनंदन रिस न गहैं पल आध॥ तोरि धनुष सुख मोरि नृपनि को सीय स्वयंबर कीनो। छिन इकमें भृगुपति प्रताप बल करषि हृदय धरि लीनो॥ लीला करत कनकमृग मारचो बध्यो बालि अभिमानी। सोइ दशरथ कुलचन्द अमित बल आए शारँगपानी॥ जाके दल सुग्रीव सुमंत्री प्रबल यूथपति भारी। महासुभट रणजीत पवनसुत बडो वज्र बपुधारी॥ करिहै लंक पंक छिन भीतर वज्र

शिला लै धावै। कुल कुटुंब परिवार सहित तुहिं बांधत बिलम न लावै ॥ अजहूं जिन बल कर शंकरको मान वचन हित मेरो। जाइ मिलो कौशल नरेशको भ्रात विभीण तेरो। कटक शोर अति दूरि दशों दिश देखत बनचर भीर। सूर समुझि रघुवंश तिलक दोउ उतरे सागर तीर ११३॥ अन्यच ॥ काहे परतिरिया हरि आंनी। यह सीता जू जनककी कन्या रमा अपुन रघुनंदन रानी॥ रावण मुग्ध कर्मको हीनो जनकसुता तैं त्रिय करि मानी। जाके क्रोध भूमि जल पटके कहा कहैगो सिंधुज पानी॥ मूरखं सुखहिं नीद नहिं आवै लेहैं लंक बीस भुज भानी। सूर न मिटत भागकी रेखा अलप मृत्यु तेरी आइ तुलानी॥ ११४॥ अन्यच राग मारू॥ तोहिं कौन मति रावण आई। आजु काल्हि दिन चारि पांचमें लंका होति पराई॥ लंका कोट देखि जिन गर्वहि अरु समुद्र सी खाई। जाकी नारि सदा नव यौवन सो क्यों हरै पराई॥ काके हित सीतापति आये राम लक्षण दोउ भाई। सूरदास प्रभु लंका तोरैं फेरैं राम दुहाई॥ ११५॥ मंदोदरी रावण संवाद। राग मारू॥ आयो रघुनाथ बली सीख सुनो मेरी। सीता लै जाइ मिलो पति जु रहै तेरी॥ तैं जु बुरे कर्म किये सीता हरि ल्यायो। घर बैठे वैर कियो कोपि राम आयो॥ चेतत क्यों नाहिं मूढ एक बात मेरी। अजहूं सिंधु नाहिं बंध्यो लंका है तेरी॥ सागरको पाजि बांधि पार उतरि आवैं। सैनां कछु अंत नहिं इतनो दल ल्यावैं॥देखि त्रिया करिकै बल कैसी दिखराऊं।रीछ कीश वश्य करौं रामहिं गहि ल्याऊं॥ जानति हौं बलहिं बालिसों न छूटि पाई। तुम्हें कहा दोप दीजै काल अवधि आई॥ बलि जब बहु यज्ञ करे इन्द्र सुनि सुखायो। छल करि लई छीनि मही वामन ह्वै धायो॥ हिरणकशिपु अति प्रचंड ब्रह्मा वर पायो। नरसिंह रूप धरे छिन न विलम लायो॥ पाहनसों बांधि सिंधु लंका गढ तोरैं। सूरदास मिलि विभीषण राम देहि फोरैं॥ ११६॥ सेतुबंध आरंभ सिंधुमिलन॥ राग धनाश्री॥ रघुपति चन्द्र विचार करयो। नातो मानि सगर सागरसों कुश साथरे परचो॥ तीनि याम अरु बासर बीते सिंधु गुमान भरचो। कीन्यो कोप कुवँर कमलापति तब कर धनुप धरचो॥ ब्रह्म भेप आयो अति व्याकुल देख्यो बान डरचो। द्रुम पपान प्रभु बेगि मँगायो रचना सेतु करचो॥ नल अरु नील सुत विश्वकर्माके छुवत पपान तरचो। सूरदास स्वामी प्रतापते सब संताप हरचो॥ ११७॥ सेतु बंधन॥ राग मारू॥ आपुन तरि तरि औरन तारत। असम अचेत पाषाण प्रगट पानी में बनचर डारत॥ इहि विधि उपलैं सुतरु पात ज्यों यदपि सेन अति भारत। बुडि न सकेतु सेतु रचना राचि राम प्रताप विचारत॥ जिहि जल तृण पशु बार बूडि आपुन सँग औरन बोरत। तिहि जल गाजत महावीर सब तरत अंग नहिं मोरत॥रघुपति चरण प्रताप प्रगट सुर व्योम विमानानि गावत। सूरदास प्रभु सकल कलाविधि सयर पैज बढ़ावत११८॥ (लंकाकाण्ड) रावण दूत ग्रहण, पहिरावनि दे विदाकरन। राग सारंग॥ शुक सारन द्वै दूत पठाये।वानर वेप फिरत सेनामें सुनत विभीषण तुरत बँधाये॥ बीचहि मार परी अतिभारी राम लछन जब दरशन पाये। दीन दयालु बिहाल देखिकै छोरी भुजा कहांते आये। हम लंकेश दूत प्रतिहारी समुद्र तीरको जात अन्हाये। सूर कृपालु भये करुणामय आपुन हाथ दूत पहिराये॥ ११९॥ राम सागर संवाद, रावण दूत पुनः लंका गमन, युद्ध निमित्त कुंभकर्ण मंत्र। राग धनाश्री॥ रघुपति जबै सिंधु तट आये। कुश साथरी बैठि इक आसन बासर तीनि गँवाये॥ सागर गर्व धरचो उर भीतर रघुपति नर करि जान्यो। तब रघुवीरं तीर अपने कर अग्नि बरण गहि तान्यो। तब जलधर खरभरो त्रास गहि जंतु उठे अकुलाई। कह्यो न नाथ बाण मोहिं जारो शरण परचो हौं आई॥

आज्ञा होइ एक छिन भीतर जल दश दिशि करि डारौं। अंतर मारग होइ सबनिको इहि विधि पार उतारौं॥ और मंत्र जो करै देवमणि बांधौ सेतु बिचार। दीन जानि धरि चाप बिहँसिकै दियो कंठते हार॥ यहै मंत्र सबहिन मन आयो सेतु बंध प्रभु कीजै। सब दल उतरि होइ पारंगत ज्यों न कोऊ इक छीजै॥ यह सुनि दूत गयो लंकामहँ सुनत नगर अकुलानो। रामचन्द्र प्रताप दशौं दिशि जल पर तरत पषानो॥ दशशिर बोलि निकट बैठायो कहि धावन सतभाउ। उद्यम कहा होत लंकाको कौने कियो उपाउ॥ जाम्बवंत अंगद बंधू मिलि कैसे इहि पुर ऐहैं। मो देखत जानकी नैन भरि कैसे देखन पैहैं॥ हौं सतभाउ कहत लंकापति जो जिय उत्तम मानो। सकल कहों व्योहार कटकको कपि उमहे सो मानो॥ बार बार यों कहत सकत नहिं तो हति लैहैं प्राण। मेरे जान कनकपुर फिरिहैं रामचन्द्रकी आन॥ कुंभकर्ण हँसि कह्यो सभामें सुनौ आदि उत्पात। एक दिवस हम ब्रह्मसभामें चलत सुनी यह बात॥ कामअंध ह्वै सब कुटुंब धन खोवै एकहि बार। सो अब सत्य होत एहि अवसर कौन जु मेटनहार॥ और मंत्र कछु उर जिनि आनो आजु सुकपि रण मांड़हि। गहै बांह रघुपतिके सन्मुख ह्वैकरि यह तनु छांडहि॥ यह यश जीति परमपद पावहु उर संशय सब खोई। सूर सकुचि जो शरन सँभारौ क्षत्री धर्म न होई॥ १२०॥ रघुपति सेतु उलंघन॥ राग धनाश्री॥ सिंधु तट उतरत राम उदार। रोष विषम कीनो रघुनंदन सब विपरीत बिचार॥ सागर पर गिरि गिरि पर अंबर कपि घनके आकार। गरज किलक्क आघात उठत मनु दामिनि पावक झार॥ परत फिराइ पयोनिधि भीतर सरिता उलटि बहाई। मनु रघुपति भयभीत सिंधु पत्नी प्योसार पठाई। बाला विरह दुसह सबहुनको जान्यो राजकुमार। बाण वृष्टि शोणित करि सरिता व्याहत लगी न बार॥ श्रवणनि कनक कलश आभूषन मनि मुक्ता गन हार। सेतुबंध करि तिलक कृपानिधि रघुपति उतरे पार॥ १२१॥ मंदोदरी वचन॥ राग धनाश्री॥ देखि रे वह शारंगधर आयो। सायर तीर भीर वानरकी शिरपर छत्र बनायो॥ शंख कुलाहल सुनियत लागे लीला सिंधु बँधायो। सोयो कहा लंक गढ़ भीतर अधिको कोप दिखायो॥ पद्मकोटि जाकी सेना सुनियत जंतु जु एक पठायो। सूरदास रघुनाथ बिमुख भये तिहि केतक सुख पायो॥ १२२॥ ॥ अन्यच्च॥ राग मारू॥ मेरे जान अजहूं जानकी दीजै। लंकापति पिय कहत पियासों यामें कछू न छीजै॥ पाहन तारे सागर बाँध्यो तापर चरण न भीजै। वनचर एक लंक तिहि जारी ताकी सरि क्यों लीजै॥ चरण टेकि दोउ हाथ जोरिकै बिनती काहे न कीजै। वे त्रिभुवनपति करैं कृपा अति कुटुँब सहित सुख जीजै॥ आवत देखि बाण रघुपतिके तेरो मन न पतीजै। सूरदास प्रभु लंक जारिकै राज्य विभीषण दीजै॥ १२३॥ मंदोदरी प्रति रावण गर्व वचन॥ कहा तू कहति त्रिया बार बारी। कोटि तैंतिस सुर सेव अहनिशि करत राम अरु लक्ष्मण हैं कहा री॥ मृत्युको बांधि मैं राखियो कूपमें देन आवत कहा डरत नारी॥ कहत मंदोदरी मेटि को सकै तेहि जो रची सूर प्रभु होनहारी॥ १२४॥ रावणके पास अंगद दूतत्व॥ लंकपति पास अंगद पठायो। सुन अरे अंध दशकंध लै सिया मिलि सेतु करि बंध रघुबीर आयो॥ वह सुनत परिजरचो वचन नहिं मन धरचो कहा तैं राम ते मुहि डरायो। सुर असुर जीति मैं सब कियो आपु वश सूर मम सुयश तिहुँलोक गायो॥ १२५॥ रावण तबलौं है रण गाजत। जबलौं कर शारंगपानीके नाहीं बाण विराजत॥ यम कुबेर इन्द्र हैं जानत रचि पचिके रथ साजत॥ रघुपति रवि प्रकाश सो देखौ उड़गन ज्यों तोहि भाजत॥ ज्यों सह गवन सुन्दरीके सँग बहु बाजन

हैं बाजत। तैसे सूर असुर आदिक सब सँग तेरे हैं लाजत ॥ १२६ ॥ रावण प्रति श्रीराम संदेश ॥ जानिहौं बल तेरो रावण। पठवौं कुटुम सहित यम आगे नेक देहि धौं मोको आवन॥ दारुण कीश सुभट वर सन्मुख लैहौं संग त्रिदश बल पावन॥ अगिनि पुंज सित वाण धनुष धरि तोहिं असुर कुल सहित जरावन॥ करिहौं नाम अचल पशुपतिको पूजा विधि कौतुक देखरावन। असुर मुख छेदि सुपक्क नवफल ज्यों अरु शंकर दशशीश चढ़ावन॥ देहौं राज्य विभीषण जनको लंकापुर रघु आन चलावन। सूरदास निस्तरिहैं इहि यश कृपन दीन जन नव यश गावन ॥ १२७ ॥ रावण प्रति अंगद उत्तर ॥ मोको राम रजायसु नाहीं। नातर सुन दशकंध निशाचर प्रलय करौं छिन माहीं॥ पलटि धरौं नवखंड पुहुमि पर जो बल भुजा सँभारौं। राखौं मेलि भंडार सूर शशि नभ कागद ज्यों फारौं॥ जारौं लंक छेदि दशमस्तक सुर संकोच निवारौं॥ श्रीरघुनाथ प्रताप चरणते उर-ते भुजा उपारौं॥ रे रे चपल स्वरूप ढीठ तू बोलत वचन अनेरो। चितवै कहा पान पल्लव पुट प्राण प्रहारौं तेरो॥ गये सशंक युगल बंधू बन जान्यो असुर अहेरो॥ तीनि लोक विख्यात विशद यश प्रलय नामहै मेरो॥ रे रे अंध बीसहू लोचन परत्रियहरन विकारी। सूने भवन गवन तैं कीनो शेष रेख नहिं टारी॥ अजहूं कह्यो सुनै जो मेरो आये निकट मुरारी। जनकसुता लै चालि पाँइनि पर श्रीरघुनाथ पियारी॥ संकट परे जु शरण पुकारौं तौ क्षत्री न कहाऊं। जन्महिते तापस आराध्यो कैसे हित उपजाऊं॥ अब तो सूर यहै बनिआई हरिको निज पद पाऊं॥ ये दशशीश ईश निर्मायल कैसे चरण छुआऊं॥ १२८ ॥ अंगद वचन॥ राग मारू ॥ मूरख रघुपति शत्रु कहावत। जाके नाम ध्यान सुमिरणते कोटि यज्ञ फल पावत॥ नारदादि सनकादि महामुनि सुमिरत मन शुचि ध्यावत। अंबरीष प्रहलाद भक्त बलि निगम नेति जिहि गावत॥ जाकी घरनि हरी छल बल करि ताते बिलम न लावत। दश अरु आठ शंख बनचर लै लीला सिंधु बँधावत॥ जाइ मिलौ कौशलनरेशको मन अभिलाप बढ़ावत। दै सीता लंकेश पाइ परि तब लंकेश कहावत॥ तू भूल्यो दश शीश बीस भुज मोहिं गुमान दिखावत। कंध उपारि डारि भूतलमें सूर सकल दुखपावत॥ ॥ १२९ ॥ रावण भेद उपजावन अंगद राम प्रशंसा। राग मारू ॥ रे कपि क्यों पितु वैर विसारचो। तो समतुल कन्या किन उपजी जो कुलशत्रु न मारचो॥ ऐसो सुभट नहीं इहि मंडल देख्यो वालि समान। तासों कियो वैर मैं हारचो कीनी पैज प्रमान॥ ताको वधन कियो इहि रघुपति तो देखत विदमान। ताकी शरण रह्यो क्यों भावै शब्द सुनौ दै कान॥ रे दृशकंध अंध मति मूरख क्यों भूल्यो इहि रूप। सूझत नहीं बीस हू लोचन परचो तिमिरके कूप॥ धन्य पिता जापर परिफुल्लित राघव भुजा अनूप। वा प्रतापकी मधुर विलोकनि गहि वारौं सतरूप॥ जो तुहि नाहिं बाँह बल पौरुष अर्ध राज देउँ लंक। मो समेत ये सकल निशाचर लरत न मानै शंक॥ जब रथ साजि चढौं रणसन्मुख जीय न आनो दंग। राघव सैन समेत सँहारौं करौं रुधिर मय अंग॥ श्री रघुनाथ चरण व्रत उर धारि क्यों नहिं लागत पाइ। सबके ईश परम करुणामय सबहीको सुखदाइ॥ हौं जु कहत लै चलो जानकी छांडि सबै दंभान। सन्मुख होइ सूरके स्वामी भक्तन कृपानिधान॥ ॥ १३० ॥ इन्द्रजीत युद्ध आज्ञा अंगद पाय रोपना राग मारू॥ लंकपती इन्द्रजीतको बुलायो। कह्यो तिहि जाहु रणभूमि दल साजिकै कहा भयो राम दल जोरि ल्यायो॥ कोपि अंगद कह्यो धरो धर चरण मैं ताहि जो सकै कोऊ उठाई। तौ विना युद्ध किये जाहि रघुबीर फिरि यह सुनत उठे जोधा रिसाई॥ रहे पचिहारि नहिं पार कोऊ सक्यो उठ्यो तब आप रावण खिसाई। कह्यो

अंगद कहा मम चरणको गहत चरण रघुवीर गहु क्यों न जाई॥ सुनत यह सकुच कियो गवन निज भवनको बालिसुत हूँ वहां ते सिधायो। सूरके प्रभुको पाँइ परि यों कह्यो अंध दशकंधको काल आयो॥ १३१ ॥ अंगद आवन राघव निकट॥ बालिनन्दन आइ शीश नायो। अन्ध दशकंधको काल सूझत प्रभू मैं कई भेद बिधि कहि जनायो॥इन्द्रजित चढ्यो निज सैन सब साजिकै रावरी सैन हू साज कीजै। सूर प्रभु मारि दशकंध थपि बंधु तिहि जानकी छोरि यश गात लीजै ॥१३२॥श्रीरघुनाथ प्रति लक्ष्मण प्रतिज्ञा युद्ध निमित्त॥ रघुपति जो न इंद्रजित मारौं। तो न होउँ चरणनको चेरो जो न प्रतिज्ञा पारौं॥ जो दृढ़ व्रात जानिये प्रभुजू धर्मगयेकहि बान निवारौं। शपथ राम परताप तिहारे खंड खंड करि डारौं॥ कुंभकर्ण दशशीश बीसभुज दानव दलहि बिडारौं। तबै सूर संधान सफल है रिपुको शीश उपारौं ॥ १३३ ॥ लक्ष्मणका सेना सहित युद्ध गवन॥ लछन दल संग लये लंक घेरी। वसुमति षष्ठ अरु अष्ट आकाश भये दिश विदिश कोउ नहिं जात हेरी॥ ऋच्छ पलवंग किलकार लागे करन आन रघुनाथकी जाइ फेरी। पाट गये टूटि परी लूट सब नगर में सूर दरवान कह्यो जाइ टेरी॥ १३४ ॥ मंदोदरी वचन रावण प्रति॥ रावण उठि निरखि देखि आजु लंक घेरी। कोटि जतन करि रही नहिं सीख सुनी मेरी॥ गहि गहात किलकात अन्ध कार आयो। रविको रथ सूझत नहिं धरनि गगन छायो॥ तोरि पाट लूट परी भागे दरवाना। लंकामें शोर परयो अजहूं तैं न जाना॥ फोरि फारि तोरि तारि गगन होत गाजै। सूरदास लंका पर चक्र शंख बाजै॥ १३५॥अन्यच्च॥ लंका फिरि गई राम दुहाई। कहति मंदोदरि सुन पिया रावण तैं कहा कुमति कमाई॥ दश मस्तक मेरे वीस भुजा हैं सौ योजनकी खाई। मेघनाद से पुत्र महाबल कुम्भकर्णसे भाई॥ रहु रहु अबला बोल न बोलौ उनकी करत बडाई। तीनि लोकते पकरि मँगाऊं वै तपसी दोउ भाई॥ तुम्हैं मारि महारावण मारै देय बिभीषण राई। पवनको पूत महाबल जोधा पलमें लंक जराई॥ जनकसुतापति हैं रघुवर से संग लक्ष्मण से भाई॥ सूरदास प्रभुको यश प्रगट्यो देवनि बंदि छुडाई ॥ १३६॥ मेघनाद युद्ध नारद शिक्षा नाग फाँस मोचन। राग मारू॥ मेघनाद ब्रह्मा वर पायो। आहुति अगिनि जिवाइ सँतोषी निकस्यो रथ बहु रतन बनायो॥आयुध धरे समेत कवच सजि गर्जि चढयो रण भूमिहि आयो। मनो मेघनायक ऋतु पावस बाण वृष्टि करि सैन खपायो॥ कीनो कोप कुँवर कोशलपति पंथ अकास सायकनि छायो॥ हँसि हँसि नागफांस शर साधन बंधन बंधु समेत बँधायो॥ नारदस्वामी कह्यो निकट है गरुडा-सन काहे बिसरायो। भयो तोप दशरथके सुतको सुनिको ज्ञान लखायो॥ सुमिरन ध्यान जानिकै अपनो नाग फाँसते सैन छुडायो। सूर विमान चढे सुरपुर लौं आनँद अभय निसान बजायो॥ १३७॥ कुम्भकर्ण रावण संवाद। राग मारू॥ लंकपति अनुज सोवत जगायो। लंकपुर आइ रघुराइ डेरो दियो त्रिया जाकी सिया मैं ले आयो॥ तैं बुरी बहुत कीनी कहा तोहिं कहौं छांडि यश जगत अपयश बढ़ायो। सूर अब डर न करि युद्ध को साज करि होइ है सोइ जो दई भायो॥ १३८॥ लक्ष्मण वचन खड्गधारण राग मारू॥ लछन कह्यो करवार सँभारौं। कुम्भकर्ण अरु इन्द्रजीतको टूक टूक करि डारौं॥ महाबली रावण जिहि बोलत पलमें शीश सँहारौं। सब राक्षस रघुवीर कृपाते एकहि बाण निवारौं॥ हँसि हँसि कहत विभीषणसों प्रभु महाबली रण मारौं। सूर सुनत रावण उठि धायो क्रोध अनल तन धारौं॥ १३९॥ रावण लक्ष्मण युद्ध,लक्ष्मण मूर्छा॥ राग मारू॥ रावण चल्यो गुमान भरयो। श्रीरघुनाथ अनाथ बंधु सो सन्मुख कहत खरयो॥ कोप

धरो रघुवीर धीर तब लक्ष्मण पाँइ परचो । तेरे तेज प्रताप नाथ जू मैं कर धनुप धरचो । सारथिं सहित असुर बहु मारे रावण क्रोध जरचो । इन्द्रजीत लीनी जब सेंथी देवन हहा करचो ॥ छूटी बिज्जु राशि वह मानों भूतल बंधु परचो । करुणा करत कुँवर कौशलपति नैनन नीर झरचो । सूरदास हनुमान दीन ह्वै अंजलि जोरि खरचो । आज्ञा देहु सजीवनि लाऊं गिरि उचाइ सिगरचो ॥ १४० ॥ श्रीराम करुणा ॥ राग मारू ॥ निरखि मुख राघव धरत न धीर । भये अरुण विकराल कमलदल लोचन मोचत नीर ॥ बारह बरस नींद है साधी ताते विकल शरीर । बोलत नहीं मौन कहा साधी बिपति बटावन वीर ॥ दशरथ मरन हरन सीता को रन वीरनकी भीर । दूजो सूर सुमित्रा सुतबिनु कौन धरावै धीर ॥१४१॥ अन्यच्च ॥ अवहीं कौन को मुख हेरों । रिपुसैना समूह जल उमडे काहि संगलै फेरों ॥ दुख समुद्र जिहि वार पार नहिं तामें नाव चलाई । केवट थक्यो रह्यो अध बीचक कौन आपदा आई ॥ नाहिंन भरत शत्रुघन सुन्दर जासों चित्त लगायो ॥ बीचहि भई औरकी औरै भयो शत्रुको भायो ॥ मैं निज प्राण तजौंगो सुन कपि तजिहैं जानकी सुनिकै । ह्वैहै कहा बिभीषणकी गति यहै सोच जिय गुनिकै ॥ बार बार शिर लै लक्ष्मणको निरखि गोदपर राखैं । सूरदास प्रभु दीन वचन यों हनूमानसों भाखैं ॥ १४२ ॥ श्रीराम हनू प्रशंसा ॥ कहां गयो मारुतपुत्र कुमार । ह्वै अनाथ रघुनाथ पुकारैं संकट मित्र हमार ॥ इतनी बिपति भरत सुनिपावै आवै दलहि सजूथ । करगहि धनुप जगतको जीतै कितक निशाचर यूथ ॥ नाहिंन और वियो कोउ समरथ जाहि पठाऊं दूत । वह अबहीं पौरुप दिखरावै होइ पवनके पूत ॥ इतनो वचन श्रवण सुनि हरष्यो फूल्यो अंग न मात । लै लै चरण रेणु निज प्रभुकी रिपुके शोणित न्हात ॥ हो परबल पुनीत केशरि सुत तुम हित बंधु हमारो ॥ जिह्वा रोम रोम प्रति नाहीं पौरुप गनो तुम्हारो ॥ जहां जहां जेहि काल सँभारे तहां तहां त्रास निवारे । सूर सहाय कियो बन बसिकै वन बिपदा दुख टारे ॥ १४३ ॥ राघव प्रति हनुमत वचन लक्ष्मण मूर्छा उपाय ॥ रघुपति मन संदेह न कीजे । मो देखत लक्ष्मण क्यों मरिहै मोको आज्ञा दीजे ॥ कहो तु सूरज उगत देहुँ नहिं दिशि दिशि बाढ़ै ताम । कहो तु गन समेत ग्रसि खाऊं यमपुर जाइ न राम ॥ कहो तु कालहि खंड खंड करि टूक टूक करि काटों । कहो तु मृत्युहि मारि डारि कै खोदि पतालहिं पाटों ॥ कहो तु चन्दहि लै अकाशते लक्ष्मण मुखहि निचोरों । कहो तु पैठि सुधाके सागर जल समेत मैं चोरों । श्रीरघुवर मोसों जन जाके ताहि कहा सकराई । सूरदास मिथ्या नहिं भाषत मोहिं रघुनाथ दुहाई ॥ १४४ ॥ सजीवन निमित्त हनूमत गवन ॥ कह्यो तब हनुमतसों रघुराई । द्रोणागिरि पर आहि सजीवनि वैद सुषेन बताई ॥ तुरत जाइ लै आवौ ह्वांते बिलँब न करि अब भाई ॥ सूरदास प्रभु वचन सुनत हनुमंत चल्यो अतुराई ॥ १४५ ॥ हनू पर्वत लावन भरत मिलाप ॥ राग मारू ॥ द्रौनागिरि हनुमान सिधायो । संजीवनिको भेद न पायो तब सब शैल उचायो ॥ चितै रह्यो तब भरत देखिकै अवधपुरी जब आयो । मनमें जानि उपद्रव भारी बाण अकास चलायो । राम राम यह कहत पवनसुत भरत निकट तब आयो । पूछ्यो सूर कौन है कहि तू हनुमत नाम सुनायो ॥ १४६ ॥ भरत कुशल प्रश्न पूछन हनू लक्ष्मण मूर्छा कथन, करुणामें सुमित्रा धैर्य ॥ कहो कपि रघुपतिको संदेश । कुशल बंधु लक्ष्मणवैदेही श्रीपति सकल नरेश । जिन पूछो तुम कुशल नाथकी सुनो भरत बलवीर ॥ बिलख वदन दुख धरे सियाको हैं जलनिधिके तीर ॥ बनमें बसत निशाचर छल करि हरी सिया मम मात । ता कारन लक्ष्मण शर लाग्यो भये राम बिनु भ्रात ॥ इतनो वचन श्रवन सुनि सुनिकै सबनि पुहुमि तन जोयो । त्राहि त्राहि कहि

पुत्र पुत्र कहि लोटि सुमित्रा रोयो ॥ धन्य सुपुत्र पितापन राख्यो धन्य सुकुल जिहि लाज । सेवक धन्य अंतके अवसर आवै प्रभुके काज ॥ कत रघुनाथ सूरके कारण मोको लैन पठाये । थक्यो सुमध्य अर्ध निशि बीती को लक्ष्मणहि जियावै ॥ पुनि घरि धीर कह्यो धनि लक्ष्मण राम काज जो आवै।सूर जियै तौ जग यश पावै मरि सुरलोक सिधावै ॥१४७॥धैर्य सहित सुमित्रा वचन राग मारू ॥धनि जननी जो सुभटहि जावै।भीर परे रिपुको दल दलि मलि कौतुक करि दिखरावै ॥कौशल्यासों कहति सुमित्रा जिंनि स्वामिनि दुख पावै । लक्ष्मण जनि हौं भई सपूती राम काज जो आवै ॥ जीये तौ सुख विलसै जगमें कीरति लोगनि गावै । मरै तु मंडल भेदि भानु को सुरपुर जाइ बसावै ॥ लोह गहे लालच करि जियको औरौ सुभट लजावै । सूरदास प्रभु जीति शत्रुको कुशल क्षेम घर आवै ॥ ॥ १४८ ॥ हनुमत भरत प्रति उत्तर॥राग मारू ॥ पवनपुत्र बोल्यो सतभाय । जाति सिराति राति बातनि हौं सुनो भरत चितलाय ॥ श्रीरघुनाथ सजीवन कारण मोको इहां पठायो । भयो अकाज अर्ध निशि बीती लक्ष्मण काज नशायो ॥ स्यों पर्वत शर बैठि पवनसुत हौं प्रभुपै पहुँचाऊं । सूरदास पांवरि मम शिरहै इहि बल भरत कहाऊं ॥ १४९ ॥ कौशल्या संदेश राम प्रति ॥ राग मारू ॥ सुनो कपि कौशल्याकी बात । इहि पुर जनि आवहु बिनु लछमन सुनो बच्छ रघ[illegible] राज काज माता हित तुम चरननि चित मानै । कहा कहौं कछु कहत न[illegible] । गहि गहात किलकात अंध सहित सकल सेनापति आनि राज पुर कीजै।नात रु सूर[illegible] तोरि पाट लूट परी भागे दरवाना । बिनती जाइ कहिये पवनसुत तुम रघुपतिके आगे।या[illegible]रि तारि गगन होत गाजै । सूरदास लंका लागे ॥ मारुतसुत संदेश हमारो सुमित्रा कहि स[illegible]फिरि गई राम दुहाई । कहति मंदोदरि घर आवै ॥ जबते तुम गौने काननको भरत भोगमस्तक मेरे वीस भुजा हैं सौ योजनकी खाई । समूह उर गाडे ॥ १५१॥ हनुमान सजीवन लावन, लक्ष्मण: अबला बोल न बोलौ उनकी करत बडाई । महाराज रघुवीर धीरको हाथ जोरि शिर नायो ॥ पैं मारि महारावण मारै देय बिभीषण राई । सुनायो ॥ सूर सजीवन दै लक्ष्मणको मूर्छित फिरैं जसुतापति हैं रघुवर से संग लक्ष्मण से सहित । राग कान्हरा ॥ दूसरे कर बाण न लेहौं । सुन सुग्रीव प्र. १३६ ॥ मेघनाद युद्ध नारद शिक्षा नाग फाँस हौं ॥ शिवपूजा जिहि भांति करीहै सोइ पद्धति परतक्ष जिवाइ सँतोषी निकस्यो रथ बहु वर्जित शिरमाला कुल सहित चढैहौं ॥ मनो तूलगन परत अमिहि आयो । मनो मेघनायक ऋतु पठैहौं । करिहौं नहीं बिलंब कछू अब उठि रावण सन्मुख ह्वै धैहौं [illegible] पंथ अकास सायकनि छायो ॥ लंक विभीषण तुमको दैहौं । लक्ष्मण सिया समेत सूर कपि सब भूमी कह्यो निकट ह्वै गरुडा- ॥ १५३ ॥ रावण कुल वध ॥ राग मारू ॥ आजु अति कोपे हैं रन राम । ब्रह्मा[illegible]ायो ॥ सुमिरन ध्यान सुर संग्राम ॥ धन तन दिव्य कवच सजि करि अरु कर धारचो शारंग आनँद अभय निसान सूधे करि कटि तट कस्यो निषंग ॥ सुरपुरते आयो रथ सजिके रघुपति [illegible] जगायो । लंकपुर कहा अब ह्वैहै सुमिरत नाम मुरारि । क्षोभित सिंधु शेष शिर कंपित पवनग[illegible]हा तोहिं कहौं हँस्यो हर हँसि बिलखान्यो जानि वचन भयो भंग ॥ धर अंबर दिशि विदिशि [illegible] सोइ जो दई किरन समान । मानो महाप्रलयके कारन उदित उभय षटभान ॥ टूटत ध्व[illegible] कुम्भकर्ण रथ चाप चक्र शिर त्रान । जूझत सुभट जरत ज्यों दौ द्रुम बिनु शाखा बि[illegible] । सब शोणित छिछ उछरि आकाशहि गज बाजिन शर लागी । मनो नगर रन तननि रण उपजी है अति आगी ॥ उठि कबंध भहरात भीत ह्वै निकसत है जारि जागि । फिरत शृगाल सो काटत चलत बिसरि लै भागि ॥ रघुपति रिस पावक प्रचंड अति सीता श्वास समीर । [illegible] कुल अरु कुम्भकर्ण वन सकल सुभट रणधीर ॥ भये भस्म कछु बार न लागी ज्यों ज्वाला [illegible]

चीर। सूरदास प्रभु अपुने बाहुबल कियो निमिष मय कीर॥ १६४॥ रघुपति अपुनो प्रण प्रतिपारचो। तोरचो कोपि प्रबल गढ़ रावण टूक टूक करि डारचो॥ कहुँ भुज कहुँ धर कहुँ शिर लोटत मनो मदय मतवारो। डरपत वरुण कुवेर इन्द्र यम महा सुभट तन भारो॥ रह्यो मांस को पिंड प्राण लै गयो बाण अनियारो। जाके नव ग्रह परे पाटि तर कूपे काल उसारचो॥ सो रावण रघुनाथ छिनकमें कियो गिद्धको चारो। शिर सँभारि लै गयो उमापति रह्यो रुधिरको गारो॥ छोरे और सकल सुखसागर बाँधि उदधि जल खारो॥ सुर नर मुनि सब सुयश बखानत दुष्ट दशानन मारचो॥ दियों बिभीषण राज्य सूर प्रभु कियो सुरनि निस्तारचो। बंधु सहित जानकी संग लै अवधपुरी पग धारचो॥ १६५॥ रावण मरण समय मंदोदरी आदि विलाप॥ करुणा करति मंदोदरी रानी। चौदह सहस सुंदरी ऊभी उठै न कंत महा अभिमानी॥ बार बार बरज्यो नहिं मानत जनकसुता तैं कत घर आनी। ये जगदीश ईश कमलापति सीता तिया तैंजु करि जानी॥ लीन्हें गोद विभीषण रोवत कुल कलंक ऐसी मति ठानी। चोरी करी राजहू खोयो अल्प मृत्यु तेरी आइ तुलानी॥ कुंभकर्ण समुझाइ रहे पचि दे सीता मिलि शारंगपानी। सूर सबनि को कह्यो न मान्यो त्यों खाई अपनी रजधानी॥ १६६॥ आकाशसे अमृत वर्षा॥ सुर पतिहि बोलि रघुवीर बोले। अमृतकी वृष्टि रणखेत ऊपर करो सुनत तिन अमिय भंडार खोले॥ उठे कपि भालु तत्काल जय जयं करत असुर भये मुक्त रघुवर निहारे। सूर प्रभु अगम महिमा न कछु कहि परत सिद्ध गंधर्व जय जय पुकारे॥ १६७॥ सीता मिलाप॥ लक्ष्मण सीता देखी जाई। अति कृष दीन छीन तन प्रभु बिनु नैननि नीर बढाई॥ जाम्बवंत सुग्रीव विभीषण करी दंडवत आई। आभूषण बहु मोल पटंबर पहिरो मात बनाई॥ बिनु रघुनाथ मोहिं सब फीके आज्ञा मेटि न जाई। पुहुप विमान वैठि बैदेही त्रिजटी तब गुहराई॥ देखत दरश राम मुख मोरचो सिया परी मुरछाई। सूरदास स्वामी तिहुँपुरके जग उपहास डराई॥ १६८॥ परीक्षा हेतु सीता अग्नि प्रवेश। राग सोरठ॥ लक्ष्मण रचो हुताशन भाई। यह सुनि हनूमान दुख पाये मोपै लख्यो न जाई॥ आसन एक हुताशन बैठी मानो कुंदनकी अरुणाई। जैसे रवि इक पल घन भीतर बिनु मारुत दुरिजाई॥ लै उछंग उत्संग हुताशन निष्कलंक रघुराई। लै विमान बैठारि जानकी कोटि बदन छवि छाई॥ दशरथ कही देवहू भाषी व्योम विमान निकाई। सिया राम लै चले अवधको सूरदास बलि जाई॥ १६९॥ कौशल्या शकुन विचार काग वचन। राग सारंग॥ बैठी जननि करति शगुनौती। लक्ष्मण राम अब मिलैं मोको दोउ अमोलक मोती॥ इतनी कहत सु काग उहांते हरीडार उडि बैठ्यो॥ अंचल गांठ दई दुख भाज्यो सुख जो आनि उर पैठ्यो। जौलों हौं जीवन भर जीवों सदा नाम तुव जपिहौं। दधि ओदन दोना करि देहौं अरु माइनमें थपिहौं॥ अबके जो परचो करि पाऊं अरु देखौं भरि आँखैं। सूरदास सोनेके पानी मढि हौं चोंच अरु पांखैं॥ १६०॥ अंगद वसीठी रावण वध आदि:पर्य्यन्त लीला। राग मारू॥ बालिनंदन बली विकट वनचर महा द्वार रघुवीर को वीर आयो। और ते दौर दरवान दशशीशसों जाय शिरनाय यों कह सुनायो॥ सुनि श्रवण दशवदन दशन अभिमान कर नैनकी सैन अंगद बुलायो। देखि लंकेश कपिभेश दर दर हँस्यो सुन्यो भट कटक को पार पायो॥ विविध आयुध धरे सुभट सेवत खरे छत्रकी छांह निर्भय जनायो। देव दानव महाराज रावण सभा कहन को मंत्र तहां कपि पठायो॥ रंक रावण कहा टेक तेरो इतो दोउ कर जोरि विनती विचारो। परम अभिराम रघुनाथ के रोमपर बीस भुज शीश दश वारि डारो। झटकि हाटक मुकुट

पटकि भट भूमिसों झारि तरवारि तेरो शिर संहारों । जानकीनाथके हाथ तेरो मरण कहा मतिमंद तोहिं मध्य मारों ॥ पाक पावक करै वारि सुरगति भरै पवन पावन करै द्वार मेरे । गान नारद करैं ज्ञान सुरगुरु कहै वेद ब्रह्मा पढै पौरि टेरे ॥ शेष बासुकि प्रभृति नाग गंधर्व गण सकल वसुजीति मैं करे चेरे । सुनि अरे शठ दशकंधको कौन भय राम तपसी दये आनि डेरे ॥ तप बली सत्य तापस बली तप बिना वारि पर कौन पाषाण तारै । कौन ऐसो बली सुभट जननी जन्यो एकही बाण तकि वालि मारै ॥ परमगंभीर रणधीर दशरथ तनय शरण गये कोटि अवगुण बिसारै । जाइ मिलि अंध दशकंध गहि दंत तृण तौ भलै मृत्यु मुखते उबारै ॥ कोपि करि वार गहि काल लंकाधिपति मूढ कहा रामको शीश नाऊं । शंभुकी सप्त सुनि कुकपि कायर कृपण श्वास आकाश वनचर उड़ाऊं ॥ होइ सन्मुख भिरों शंक नहिं मन धरों मारि सब कटक सागर बहाऊं । कोटि तेंतीस मम सेव निशि दिन करत कहा अब राम नरसों डराऊं॥परो महराय भभकत रिपु घायसों करि कदन रुधिर भैरों अघाऊं । सूर साजैं सबै देव दुंदुभि अबै एकते एक रण करि बिताऊं॥१६१॥बद्यो रावण सुन्यौं शीश तब शिव धुन्यो उमडि रण रंग रघुवीर आये।रुंड भक रुंड धुकि धकत धरणी परै रुधिर सरिता नहीं पार पाये ॥ राम शर लागि मनु आगि गिरिपर जरी उछलि छिछिन शरनि भानु छाये ॥ मारि दशकंध पथ बंधुको सूर प्रभु राजीवनैन घर सिया ल्याए ॥ १६२ ॥ (उत्तर कांड) अयोध्या प्रशंसा ॥ राग मारू ॥ हमारो जन्मभूमि यह गाउँ । सुनहु सखा सुग्रीव विभीषण अवनि अयोध्या नाउँ ॥ देखत बन उपबन सरिता सर परम मनोहर ठाउँ । अपनी प्रकृति लिये बोलतहौं सुरपुरमें न रहाउं ॥ ह्यांके बासी अवलोकत हौं आनँद उर न समाउँ । सूरदास जो बिधि न सकोचे तो वैकुंठ न जाउँ ॥ १६३ ॥ राम आगमन श्रवण सुनि भरत रचना करन उत्सव प्रकाश । राग वसंत ॥ राघव आवति हैं अवधि आजु।रिपु जीते साधे देव काजु ॥ प्रभु कुशल बधू सीतासमेत।जस सकल देश आनंद देत ॥कपि शोभित सकल अनेक संग । ज्यौं पूरण शशि सागर तरंग॥सुग्रीव विभीषण जाम्बवंत । अंगद केदार सुखेन संत ॥ नल नील द्विविद केसरि गवछ । कपि कहे मुख्य और अनेक लछ ॥ जब कही पवनसुत विविध बात । तब उठी सभा सब हर्ष गात ॥ ज्यों पावस ऋतु घन प्रथम घोर । जल जीवक दादुर रटत मोर ॥ जब सुने भरत पुर निकट भूप । तब रच्यौ नगर रचना अनूप ॥ प्रति प्रति गृह तोरण ध्वजा धूप । सजे सकल कलश अरु कदली जूप ॥ दधि हरद दूब फल फूल पान । कर कनकथार त्रिय करत गान ॥ सुनि भरे वेद ध्वनि शंख नाद । सुनि निरखि पुलक आनँद प्रसाद ॥ देखत प्रभुकी महिमा अपार । सब बिसरि गये मन बुधि बिकार ॥ जय जय दशरथ कुल कमल भान । जय कुमुद जननि शशि प्रजा प्रान ॥ जय दिव भूतल शोभा समान । जय जय जय सूर न शब्द आन ॥१६४ ॥ श्रीराम वचन सुग्रीव प्रति भरत दरशावन परस्पर मिलाप। राग मारू ॥ देखो कपिराज भरत वे आये । मम पांवरी शीश पर जाके कर अँगुरी रघुनाथ बताए ॥ क्षीन शरीर बीरके बिछुरे राग भोग चितते बिसराए ॥ लघु दीरघ तपसा अरु सेवा स्वामी धर्म सब जगहिं सिखाये । पुहुप विमान दूरिही छांडे चरण चपल प्रभु प्रण करिधाये । आनँद मगन सदन सुत कैकयी कनक दंड ज्यों गिरत उठाये । भेंटत आंसू परत पीठिपर गद्गद गिरा नैन जल छाए ॥ ऐसे मिली सुमित्रासुतको विरह अग्नि ततु जरत बुझाए ॥ यथायोग भेंटे पुरवासी शूल मिटी सुखसिंधु पठाए । सिया राम लक्ष्मण मुख निरखत सूरदासके नैन सिराए ॥ १६५ ॥ कौशल्या सुमित्रा आदि आरती मंगलाचार ॥ राग मारू ॥ अति

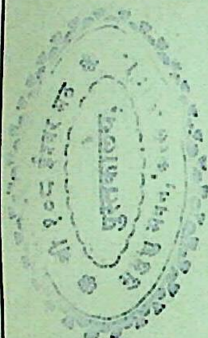
सुख कौशल्या उठि धाई । उदित वदन अरु मुदित सदनते आरति साजि सुमित्रा ल्याई ॥ ज्यों सुरभी बन वसति बच्छबिनु परवश पशुपनिकी बहराई । चली साँझ समुहाय स्रवत थन उमँगि मिलन जननी दोउ आई ॥ अमी वचन सुनि होत कुलाहल देवन दिव्य दुंदुभी बजाई । दधि फल दूब कनकके कोपर आरति युवति विचित्र बनाई ॥ वरण वरण पट पडत पाँवडे नैनानि सकल सुखद ही छाई । पुलकित रोम हर्ष गदगद सुर युवतिन मंगल गाथा गाई ॥ निज मन्दिरमें आनि तिलक दै द्विजन अशीश सुनाई । सिया सहित सुख लेहो ह्यां तुम सूरदास बलि जाई॥१६६॥ श्रीराम राज्याभिषेक ॥ राग मारू ॥ मणि मय आसन आनि धरे । दधि मधु नीर कनकके कोपर आपुन भरत भरे ॥ प्रथम भरत बैठाइ बंधुको यह कहि पाँइ परे । हौं पावन प्रभुचरण पखारों रुचि करि आप करे ॥ निजकर चरण पखारि प्रेम रस आनँद आँसु ढरे । ज्यौं शीतल संताप सलिल दै शुद्धि समूह करे ॥ परसत पाणि चरण पावन दुख अँग अँग सकल हरे । सूर सहित आमोद चरण जल लैकर शीश धरे ॥ १६७ ॥ राग आसावरी ॥ राज समाज वर्णन ॥ बिनती केहि बिधि प्रभुहि सुनाऊं । महाराज रघुवीर धीरको समय न कबहूँ पाऊं ॥ याम रहत यामिनके बीते तिहि औसर उठि धाऊं । सकुच होत सुकुमार नींदसे कैसे प्रभुहि जगाऊं ॥ दिनकर किरण उदित ब्रह्मादिक रुद्रादिक इक ठाऊं । अगणित भीर अमर मुनिगनकी तिहिते ठौर न पाऊं ॥ उठतसभा दिन मध्य सियापति देखि भीर फिरि आऊं । न्हात खात सुख करत साहिबी कैसे कर अनसाऊं ॥ रजनी मुख आवत गुण गावत नारद तुम्बर नाऊं । तुमहीं कहा कृपण हौं रघुपति किहिविधि दुख समझाऊं ॥ एक उपाय करौं कमलापति कहो तो कहि समझाऊं । पतित उधारण सूर नाम प्रभु लिखि कागद पहुँचाऊं ॥ १६८ ॥ इन्द्र दुराचार, इन्द्र अहल्या प्रति गौतम शाप ॥ राग बिलावल ॥ सुरपति गौतम नारि निहार । आतुर ह्वै गयो बिना बिचार॥काग रूप करि ऋषि गृह आयो ।अर्ध निशा तेहि बोल सुनायो ॥ गौतम लख्यो प्रात है भयो । न्हान काज सो सरिता गयो ॥ तब सुरपति मन माहिं बिचारी । पतिव्रता है गौतम नारी ॥ गौतम रूप बिना जो जैये । ताके शाप अग्निसों दहिये ॥ गौतम रूप धारि तहँ आयो । मूर्छित भयो अहिल्या पायो ॥ कह्यो अहिल्या तू को आहि । बेगि यहाँते बाहिर जाहि॥यहि अंतर गौतम ऋषि आयो । इन्द्र जानि यह बचन सुनायो ॥ तू इन्द्राणी तजि ह्यां आयो । मूरख तैं परत्रिय मन लायो ॥ इक भगकी तोहिं इच्छा भई ।भग सहस्र मैं तो तन दई ॥ इन्द्र शरीर सहसतन भई । छप्यो सो कमल नालमें जई ॥ काल बहुत ता ठौर बितायो । सुनि गुरु ऋषिन सहित तब आयो॥ यज्ञकराइ प्रयाग न्हवायो । तौहू पूरव तनु नाहिं पायो॥तब सब ऋषिन दई आशीश।भगते नेत्र करो जगदीश ॥ भगअस्थान नेत्र तब भये। ऋषि इन्द्रहि लै सुरपुर गये ॥ परत्रिय मोह इन्द्र दुख पायो । सो नृप मैं तोहि कहि समझायो ॥ परत्रिय नेह करै जो कोई । जीवत नरक परत है सोई ॥ शुक नृपसों ज्यों कहि समुझायो । सूरदास त्योंही कहि गायो॥१६९॥ राजा नहुष राज्य प्राप्ति । इन्द्राणी चाह । ब्रह्म शापते सर्प देह पावन ॥ राग बिलावल ॥ सुरपतिको शाप जब भयो । सो सुरपुर लज्जित नाहिं पायो ॥ नहुष नृपतिपै ऋषि सब आई । कह्यो सुरराज करौ तुम जाई ॥ नहुष इन्द्र राज जब पायो । इन्द्राणीको देखि लुभायो ॥ कह्यो इन्द्राणी मोपै आवै । नृपसों ताको कहा बसावै ॥ सुरगुरुसों यह बात सुनाई । अवधि करन तिहि कहि समुझाई ॥ शची नृपतिसों सोई भाषी । नृप सुनिकै हृदयमें राखी ॥ शची अग्निको तुरत पठायो । सुरपति दशादेखि सो आयो ॥ इन्द्राणी सुनि व्याकुल भई । अवधि घरी व्यतीत ह्वै गई ॥ तब तिन ऐसी बुधि

१ गुर ।

उपजाई । इहि अंतर सो नहुष बुलाई ॥ कह्यो तुम अश्वमेध नहिं कियो । ऋषि आज्ञा तुम सुरपति भयो ॥ विप्रन पर चढ़िकै जो आवहु । तो तुम मेरो दर्शन पावहु ॥ नृपति ऋषिन पर ह्वै असवार। चलियो तुरत शचीके द्वार ॥ काम अंध कछु रहि न सँभार । दुर्वासा ऋषिको पग मार ॥ सर्प सर्प कहि बारंबार । तब ऋषि दीन्हो ताको डार ॥ कह्यो सर्प तैं भाष्यो मोहि । सर्प रूप तू ही नृप होहि ॥ जबै शाप ऋषिसों नृप पायो । तब ऋषि चरणन माथो नायो ॥ इह शराप मुक्ति ज्यों होइ। ऋषि मोको अब भाषो सोइ ॥ कह्यो युधिष्ठिर देखै जोइ । तब उद्धार तेरो नृप होइ ॥ नृप ऐसो है पर त्रिय प्यार । मूर्ख करत सो बिना बिचार ॥ जो शुक नृपसों कहि समुझायो । सूरदास त्योंही कहि गायो ॥ १७० ॥ कच संजीवनी विद्या हेतु शुक्र गेह गवन, देवयानीलोभावन परस्पर शाप। राग भैरव॥ अविगति गति कछु समुझि न परै । जो कछु प्रभु चाहै सो करै ॥ जिवको किये कछू नहिं होइ । कोटि उपाय करो किन कोइ ॥ एक बार सुरपति मन आई । शुक्र असुरको लेत जिवाई ॥ मम गुरु हू विद्या पढि आवैं । मृतक सुरनको फेरि जिआवैं ॥ निज गुरुसों भाष्यो तिन जाई । शुक्र असुर को लेत जिवाई ॥ तुमहू यह विद्या सिखि आवहु । मृतक सुरनको तुमहु जिआवहु ॥ तब तिन कचको दियो पठाइ । कह्यो शुक्रको तिन शिर नाइ ॥ मैं आयो तुम पै शिर नाइ । तुम मुहिं विद्या देहु पढाइ ॥ शुक्र कह्यो तासों या भाई । देहौं विद्या तोहिं पढाई ॥ विद्या पढै करै गुरुसेव । सब बिधि सुधरै ताके टेव ॥ शुक्रसुता देवयानी नाम । सब गुण पूर्ण रूप अभिराम ॥ सुरगुरु सुतको देखि लुभाई । देखै ताहि पुरुषकी नाईं ॥ कितक काल व्यतीत जब भयो। गाइ चरावनको सो गयो॥ असुरनमिलि यह कियो बिचार । सुरगुरु सुतको डारैं मारि ॥ जो यह संजीवनि पढ़ि आई । तौ हम शत्रुनि देय जिआई ॥ यह विचार करि कचको मारचो । शुक्रसुता दिन पंथ निहारचो ॥ साँझ भये हू जब नहिं आयो । शुक्र पास तिन जाइ सुनायो ॥ शुक्र हृदयमें करी बिचार । कह्यो असुरन वहि डारो मार ॥ सुता कह्यो तिहि फेरि जिवावहु । मेरे जियके सोच मिटावहु ॥ शुक्र ताहि पढि मंत्र जिवायो । भयो तासु तनयाको भांयो॥ पुनि हाति मदिरा माहिं मिलाई । दिये दानव तिहि शुक्र पियाई ॥ तबते हत्यामदको लागी । यहै जानि सब देवन त्यागी ॥ शाप दिये ताको या भाई। जो तोहि पियें सु नरकहिं जाई ॥ कचबिनु शुक्रसुता दुख पायो । तब ऋषि तासों कहि समुझायो॥ मारचो कचको असुरन धाई । मदिरामें मुहि दियो पियाई ॥ ताहि जिवाऊं तौ मैं मरों । जो तुम कहो सु अब मैं करों ॥ कह्यो बिनयकरि सुनि ऋषिराई । दोऊ जिवैं सो करो उपाई ॥ संजीवनि तब कचहिं पढाई । तासेती यों कह्यो समुझाई ॥ जब तुम निकारि उदरते आवहु । याविद्याकरि मोहिं जिवावहु ॥ उदर फारि तिहिं बाहर कियो । मृतक कच ऐसी विधि जियो ॥ सु जब उदरते बाहर आयो । संजीवनि पढि शुक्र जिवायो ॥ बहुत काल व्यतीत जब भयो । कच ऋषि ऋषि तन यासों कह्यो ॥ जो तुमरी मोहिं आज्ञा होई । तात मातको देखौं जोई ॥ ऋषितनया कह्यो मोहिं विवाहि । कच कह्यो तू गुरु भगनी आहि । तब तिन शाप दियो या भाई । विद्या पढी सु वृथा जाई ॥ कचहूं ताहि कहचो या भाई । विप्र पुरुष तोहि मिले न आई ॥ यह कहि कच अपने गृह आयो । पिता पास वृत्तान्त सुनायो ॥ शुक नृपसों ज्यों कहि समुझायो । सूरदास त्योंही कहि गायो ॥ १७१ ॥ देवयानी कूप निपातन, राजा ययाति पाणिग्रहण, शुक्र शाप, राजपुत्र यौवन भोग, वैराग्य करि मोक्ष प्राप्ति । राग भैरों ॥ दानव वृषपर्वा बलभारी । नाम शरमिष्ठा तासु कुमारी ॥ ताहि देवयानीसों प्यार । रहै न तासों पल भरि न्यार ॥ एक बार ताके मन आई । न्हावन काज प्रयाग सिधाई ॥

तासँग दासी गई अपार । न्हान लगी सब कपडे डार ॥ दनुजसुता तिहि नहीं निहारी । अँधियारी आई अति भारी ॥ बसन शुक्रतनयाके लीने । करत उतानलि परत न चीने ॥ शुक्रसुता जब आई बाहर । बसन न पाए तिन तिहि ठाहर ॥ असुरसुताको पहिरे देखि । मनमें कीनो क्रोध विशेखि ॥ कह्यो मम बसन नहीं तुव योग । तुम दानव हम तपसी लोग ॥ मम पितु दियो राज नृप करत । तू मम बसन हरत नहिं डरत ॥ तिन कह्यो तुव पितु भिक्षा खात । बहुरि कहति हमसों ये बात ॥ या बिधि कहि करि क्रोध अपार । दीनों ताहि कूपमें डार॥ नृपति ययाति अचानक आयो । शुक्रसुताको दरशन पायो ॥ दियो तब बसन आपनो डारि । हाथ पकरिकै लियो निकारि ॥ बहुरो नृप निज गेह सिधायो । सुता शुक्रसों जाइ सुनायो ॥ शुक्र क्रोध करि नगर तियाग्यो । असुर नृपति सुनि ऋषि सँग लाग्यो ॥ जब बहुभाँति बिनय नृप करी । तब ऋषि यह वाणी उच्चरी ॥ मम कन्या प्रसन्न ज्यों होय । करो असुरपति अब तुम सोय ॥ शुक्रसुतासों कह्यो तिन आई । आज्ञा होइ करौं सु उपाई ॥ जो तुम कहौ करौं अब सोइ । तब पुत्री मम दासी होइ॥दासीसहस ताहि सँग भई। नृप पुत्री दासी करिदई॥ सो सब ताकी सेवा करैं । दासी भाव हृदयमें धरैं ॥ इकदिन शुक्रसुता मन आई । देखौं जाइ फूल फुलवाई ॥ लै दासी फुलवारी गई । पुहुपसेज रचि सोवत भई ॥ असुरसुता तेहि व्यजन डुलावै । सोवत सेज सु अति सुख पावै ॥ तेहि अवसर ययाति नृप आयो । शुक्रसुता तेहि वचन सुनायो ॥ नृप मम पाणिग्रहण तुम करो । शुक्र सकुच हृदय मति धरो ॥ कचको प्रथम दियो मैं शाप ॥ उनहू मोहि दियो करि दाप ताको कोइ न सकै मिटाई । ताते व्याह करो तुम राई । नृप कह्यो कहो शुक्रसों जाइ । करिहैं जो कहिहैं ऋषिराइ ॥ तब तिन कह्यो शुक्रसों जाइ । कियो व्याह ऋषि नृपति बुलाइ ॥ असुरसुता ताके सँग दई । दासी सहस तासु सँग भई ॥ दंपति भोग करत सुख पाए । शुक्रसुता यों द्वै सुत जाए ॥ कह्यो शरमिष्ठा अवसर पाइ । रतिको दान देहु मोहिं राइ ॥ नृप ताहूसों कीनो भोग । तीन पुत्र भये बिधि संयोग ॥ शुक्रसुता तिहि पुत्रन देखि । मनसों कीनो क्रोध विशेखि ॥ कह्यो शरमिष्ठा सुत कहां पायो । उन कह्यो ऋषि किरपा ते जायो ॥ बहुरि कह्यो ऋषिको कह नाम । कह्यो स्वप्न देख्यो अभिराम ॥ पुनि पुत्रन सों पूछ्यो जाई । पिता नाम मोहिं कहो बुझाई ॥ बडे पुत्र भाष्यो पुनि ताहि । नृपति पिता ययाति मम आहि ॥ सुनि नृपसों कियो युद्ध बनाई । बहुरि शुक्र सेती कह्यो जाई ॥ पाछे ते ययाति हू आयो । ऋषि तासों यह वचन सुनायो ॥ तैं यौबन मदते यह कीनो । ताते शाप तोहिं मैं दीनो ॥ जरा अबहिं तोहिं व्यापै आइ । भयो वृद्ध तब कह्यो शिर नाइ ॥ ऋषि तुम तो शराप मोहिं दियो । पूरण काम नाहिं मैं कियो ॥ ताते जो मोहिं आज्ञा होइ । आयसु मानि करौं अब सोइ ॥ कह्यो जरा तेरी सुत लेय । अपुनो तरुनापा तोहिं देय ॥ भोग मनोरथ तब तू पावै । मेरे वचन मृथा नाहिं जावै ॥ बडे पुत्र यदुसों कह्यो आइ । उन कह्यो वृद्ध भयो नहिं जाइ ॥ नृप कह्यो तोहि राज नाहिं होई । वृद्धपनो लै राजा सोई ॥ औरनहू सों जब नृप भाख्यो । नृपति वचन काहू नहिं राख्यो ॥ लघु सुत नृपति बुढापो लयो । अपुनो तरुनापो तेहि दयो ॥ वर्ष सहस्र भोग नृप कियो । पै संतोष न आयो हियो ॥ कह्यो विषय ते तृप्ति न होई । भोग करौ कैसो किन कोई ॥ तब तरुनापा सुतको दीनो । वृद्धपनो अपनो फिरि लीनो ॥ बनमें करी तपस्या जाइ । रह्यो हरिचरणनसों चित लाइ ॥ या बिधि नृपति कृतारथ भयो । सो राजा मैं तुमसों कह्यो ॥ शुक ज्यों नृपको कहि समुझायो । सूरदास त्योंही कहि गायो ॥ १७२ ॥

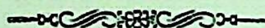
इति श्रीमद्भागवते–सूरसागर कविवर श्री सूरदासकृते नवमः स्कंधः समाप्तः ॥ ९ ॥



अथ कविवर सूरदासकृत-

श्रीसूरसागर.

दशमस्कन्ध।



राग सारंग ॥ व्यास कह्यो शुकदेवसों, श्रीभागवत बखान। द्वादशस्कंध परम सुभग, प्रेम भक्तिकी खान ॥ नवस्कंध नृप सों कही, श्रीशुकदेव सुजान। सूर कहत अब दशमको, उरमें धरि हरि ध्यान ॥ १ ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौ। हरि चणारविंद उर धरौ ॥ जय अरु विजय पार्षद दोई। विप्रन शाप असुर भये सोई॥ दोइ जन्म ज्यों हरि उद्धारी। सो शुक तुमसौं कहि उच्चारी ॥ दंतवक्र शिशुपाल जो भये। वासुदेव होइ सो पुनि हए ॥ औरौ लीला बहु विस्तार। कीन्हें जीवन ज्यों निस्तार ॥ सो अब तुमसों सकल बखानौं ।।प्रेम सहित सुनि हृदये आनौं ॥ जो यह कथा सुनै चित लाई। सो भव तरि बैंकुंठहि जाई ॥ जैसे शुक नृपको समझायो। सूरदास त्योहीं॥ कहि गायो॥२॥भगवान जन्म लीला ॥ राग सारंग॥बालविनोद भावती लीला अति पुनीत मुनि भाखीहो। सावधान ह्वै सुनहु परीक्षित सकलदेव मुनि साखीहो ॥ १॥ कालिंदीके कूल बसत एक मधुपुरी नगर रसाला हो। कालनेमि उग्रसेन वंश कुल उपजे कंस भुवाला हो ॥ २ ॥ आदिब्रह्म जननी सुर देवी नामदेवकी बाला हो। दई विवाहि कंस वसुदेवको अघभंजन उरमाला हो ॥ ३॥ हय गज रत्न हेम पाटंबर आनँद मंगलचारा हो। समदत भई अनाहद वाणी कंसकान झनकारा हो ॥ ४ ॥ याके गर्भ अवतरें जे सुत करिहै प्राण प्रहारा हो। रथते उतरि केश गहि राजा कियो खड्ग पटतारा हो ॥ ५ ॥ तब वसुदेव दीनह्वै भाष्यो पुरुष न त्रियवध करई हो ॥ मैं सुनी कान मंद बिधि वाणी ताते संच न परई हो ॥ ६॥ आगे वृक्ष फरै जो विषफल वृक्षहि बिन किन सरई हो। ताहि मारि तोहि और विवाहों अग्रसोच क्यों मरई हो ॥ ७ ॥ बालक काज धर्म जनि छाँडौ राय न ऐसी कीजै हो। तुम मानी वसुदेव देवकी जीयदान इन दीजै हो ॥ ८॥ कीन्हो यज्ञ होत है निःफल वेद भंग नहिं कीजै हो। याके गर्भ अवतरें जे सुत सावधान ह्वै लीजै हो ॥ ९ ॥ वाचाबंध कंस करि छाँड्यो तब वसुदेव पतीजे हो। मानौ मृगी चरत गहि वनमें नैन नीर उर भीजे हो॥ ॥ १०॥ प्रथम पुत्र देवकी जु जायो लै वसुदेव दिखायो हो। बालक देखि कंस हँसि दीन्हें सब अपराध क्षमायो हो ॥ कंस कहा लरिकाई कीन्ही कहि नारद समझायो हो। जाको भरम करतहो राजा मति पहिले सो आयो हो ॥ ११ ॥ यह सुनि कंस पुत्र फिरि मारयो येहिबिधि सबनि संहारो हो। तब देवकी भई तनु व्याकुल कहँ ले प्राणप्रहारो हो ॥ १२ ॥ कंस वंशको नाश करतहै कहाँलै जीव उबारौं हो। इह दुख कहा मेटिहै श्रीपति अरु हौं काहि पुकारौं हो ॥ १३ ॥ धेनुरूप धरि पुहुमि पुकारी शिव विरंचिके द्वारा हो। सब मिलि गये जहां पुरुषोत्तम सोवत अगम अपारा हो ॥ १४ ॥ क्षीर समुद्र मध्यते यों कहि दीरघ वचन उचारा हो ॥ उधरौ धरणि असुर कुल-

मारौं धरि नरतनु अवतारा हो ॥ १५ ॥ छूँछी मसक पवन पानी ज्यों तैसोइ जन्म विकारी हो। पाखंड धर्म करतहैं पाँवर नाहिन चलत तुम्हारी हो ॥ १६ ॥ मारग छाँडि कुमारगसों रत बुधि विपरीति विचारी हो। अमृत छाँडि विषय विष अचवत देत अधमपति गारी हो ॥ १७ ॥ सुर नर नाग तथा पशु पंछी सबको आयसु दीन्हों हो । गोकुल जन्म लेहु मेरे सँग जो चाहत सुख कीन्हों हो ॥ १८ ॥ दैवेकोप अकर्षे रोहिणी आपुन अंश जो लीन्हों हो।जेहि माया विरंचि शिव मोह्यो वोहि वाणि करि चीन्हो हो ॥ १९ ॥ अपनेहि गेह मधुपुरी आवन देवकि प्राणअधारा हो । असुर मारि सुरसाध बढावन व्रजजन सुखदातारा हो ॥२०॥ हरिके गर्भवास जननीको बदन उजारो लाग्यो हो। मानहु शरदचंद्रमा प्रगट्यो शोच तिमिर तनु भाग्यो हो ॥२१॥ तेहि खन कंस आनि भयो ठाढो देखि महातम जाग्यो हो। अबकी बार अरी आयोहै आपु अपनपो त्याग्यो हो ॥२२॥ दिन दश गए देवकी अपनो वदन बिलोकन लागी हो । कंसकाल जिय जानि गर्भमें अति आनंद सभागी हो ॥ २३ ॥ सुर नर देव वंदना आये सोवत ते उठि जागी हो। अविनाशीको आगम जानी सकल देव अनुरागी हो ॥ २४ ॥ कछु दिन गए गर्भको आगम उर देवकी जनायो हो। कासों कहौं सखी कोउ नाहीं चाहत गर्भ दुरायो हो ॥ २५ ॥ बुध रोहिणी अष्टमी संगम वसुदेव निकट बुलायो हो । सकल लोकनायक सुखदायक अजन जन्म धरि आयो हो ॥ २६ ॥ माथे मुकुट सुभग पीतांबर उर शोभित भृगुरेखा हो। शंख चक्र भुज चारि बिराजत अति प्रताप शिशुभेषा हो ॥ २७ ॥ जननी निरखि भई तनु व्याकुल यह न चरित कहुँ देखा हो। बैठी सकुच निकट पति बोले दुहुँन पुत्र मुख पेखा हो ॥ २८ ॥ सुनि देवै एक आन जन्मकी तोसों कथा चलाऊं हो ॥ तुम माँग्यो मैं दियो नाथ हौ तुमसों बालक पाऊँ हो ॥ २९ ॥ शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक योग जापहू न आऊं हो ॥ भक्तवछल बानो है मेरो बिरदहि कहा लजाऊं हो ॥ ३० ॥ यह कहि माया मोह अरुझायो शिशुह्वै रोवन लागे हो । अहो वसुदेव जाहु लै गोकुल तुमहो परम सभागे हो ॥ ३१ ॥ घनदामिनि धरणीमिलि गरजै महाकठिन दुखभारे हो। आगे जाउँ यमुन जल बूडों पाछे सिंह दहारे हो ॥३२॥ लै वसुदेव धँसे दह सामुहि तिहूँलोक उजियारे हो । जानु जंघ कटि ग्रीव नासिका वसुदेव मनहि बिचारे हो ॥ ३३ ॥ चरणपसारि परसि कालिंदी तरवा नीरते आगे हो । शेष सहसफन ऊपर छायो लै गोकुलको भागे हो ॥ ३४ ॥ पहुँचे जाइ महर मंदिरमें मनहि न शंका कीनी हो। देखी परी योगमाया वसुदेव गोद करि लीनी हो ॥ ३५ ॥ तुरत वेग मधुपुरी पहूँचे सकल प्रगट पुर कीनी हो। देवै गर्भ भईहै कन्या राइ न बात पतीनी हो ॥ ३६ ॥ यह सुनि कंस खड्गलै धायो तब देवै आधीनी हो। यह कन्या जू बकसु बंधुमोहिं दासी जान करिदीनी हो ॥ ३७ ॥ क्रूर कंस अघवंश न समुझै नवै नहीं रिसि कीनी हो । ना जानी होई छल कीन्हे अविगति गति को चीन्ही हो ॥ ३८ ॥ पटकत शिला गई आकाशहि दोउ भुज चरण लगाई हो॥ गगन गई बोली सुरदेवी कंस मृत्यु नियराई हो ॥ ३९ ॥ जैसे मीन जालमों कूदत गनै न आपु लखाई हो ॥ तैसे कंस काल ठूक्योहै व्रजमें यादवराई हो ॥ ४० ॥ जैसे व्यालवेग को ठूकै वेग पखारी ताकै हो। जैसे सिंह आपु मुख निरखै परे कूपमें दाके हो ॥ ४१ ॥ तैसेहि कंस परम अभिमानी भूल्यो राज सभाके हो। गतिकी गति पतिकी पति तेरी हाथ मींजु है ताके हो ॥ ४२ ॥ यह सुनि कंस देवकी आगे रह्यो चरण शिरनाई हो । बहु अपराध करी शिशु मारे लिख्यो न मेट्यो जाई हो ॥४३॥ काके शत्रु जन्म लीनोंहै बूझहु मतो बुलाई हो। चारि पहर सुख सेज परे निशि नेक नींद नहिं आई हो॥४४॥

देश देशके दूत बुलावहु कासों है छल कैसो हो। अविगत अजर अजीत अमरता करताको बल जैसो हो ॥ ४५ ॥ दिनही दिन सो पुरुष होतहै बढत असुर बल जैसो हो। बूझतमहि तृणभार बुझायो षवली कार्पन नैसो हो ॥ ४६॥ जागी महरि पुत्र मुख देख्यौ आनँद तूर बजायो हो। कंचन कलश होम द्विज पूजा चंदन भवन लिपायो हो॥ ४७॥ वरण वरण रँग ग्वाल बने मिलि गोपिन मंगल गायो हो। बहुबिधि व्योम कुसुम सुर बर्षत फूलन मंडप छायो हो ॥ ४८ ॥ आनँद भरे करत कौतूहल प्रेममगन नर नारी हो। अभय निभय नीसान बजावत देत महरिको गारी हो ॥ ४९ ॥ नाचत महर मुदित मन कीन्हे ग्वाल बजावत तारी हो। सूरदास प्रभु गोकुल प्रगटे मथुरा गर्वप्रहारी हो। ॥ ५० ॥ अथ प्रथम लीला मथुराते गोकुल आए। राग बिलावल ॥ हरिमुख देखिये वसुदेव। कोटिकाम स्वरूप सुंदर कोउ न जानत भेव ॥ चारि भुजा जाके चारि आयुध निरखि लैकर ताउ। जोपै मन परतीत आवै बाबा नंद घर लैजाउ ॥ श्वान सूते पहरुआ सब नींद उपजी गेह। निशि अँधेरी बीजु चमकै सघन बरषै मेह ॥ झरे ताला पहरु पौढे खुलिगये वज्रकेंवार। बांदिबेरी सबै छूटी कहौ कौन बिचार ॥ सिंह आगे शेष पाछे यमुनाभई भरपूर ॥ नासिका बहु नीर आए पार पहिलो दूर ॥ कृष्णने हुंकार छोड्यो यमुना मान्योहेत। चरण परसत थाह दीन्हीं वसुदेव उतरे सेत ॥ देत अंमर और कंमर फूली अँग न समाइ। भिक्षुक भाट सब द्वार ठाढे देखै यशोमति आइ ॥ नंदसों मनुहार करिहौ सुनि न लेहु वसुदेव। सूर सुतही जानि अपनो कृष्णको करि सेव ॥१॥२॥३॥४॥ राग केदारो ॥ हो पिय सो उपाय कछु कीजै। जेहि तेहि बिधि दुराय इह बालक राखि कंससों लीजै ॥ मनसा वाचा कहत कर्मना नृपतिहि नहीं पतीजै। बुधि बल छल कल कैसेहूँ करिकै काटि अनत लैदीजै ॥ नाहिन यतनो भाग सो यह रस नित लोचन पट पीजै। सुनहु सूर ऐसे सुतको मुख निरखि निरखि जग जीजै ॥ ५ ॥ राग केदारा ॥ सुन देवकीको हितू हमारे। असुर कंस अपवंश बिनाशन शिरपर बैठेहैं रखवारे॥ऐसो को समरथ त्रिभुवनमें जो यह बालक नेक उबारै। खड्गधरे आयो तो देखत अपने कर क्षणमाह पछारे ॥ यह सुनतहि अकुलाइ गिरीधर नैन नीर भरिभरि दोउ डारे। दुखित देखि वसुदेव देवकी प्रगट भये धरिकै भुज चारे ॥ बोलत उठे प्रतिज्ञा प्रभु यह मति उबरै तब मोहिं मारे। अति दुखमें सुख दै पितु मातहि सूरको प्रभु नन्दभवन सिधारे ॥ ६ ॥ भादोंभरकी राति अँधियारी। द्वारकपाट कोटभट रोके दशहुँदिशि कंस भय भारी ॥ गर्जत मेघ महा डर लागत बीच बढी यमुना जल कारी। तबते इहै शोच जिय मेरे क्यों दुरिहै शशिवदन उज्यारी॥कतपिय बोल बचन करिराखी वरु ताहीदिन जीवनमारी। कहि जाको ऐसो सुत बिछुरै सो कैसे जीवै महतारी ॥ करि न बिलाप देवकीसों कहिं दीनदयालु भक्त भयहारी। छुटिगयो निबिड तबहि गए गोकुल सूर सुमति दै बिपति निवारी ॥ ७ ॥ राग धनाश्री ॥ अँधियारी भादौंकी राति। बालकको वसुदेव देवकी पठै पठै पछिताति ॥ बीच नदी घन गर्जत वर्षत दामिनि कौंधत जाति। बैठत उठत सेज सोवरिमें कंस डरानि अकुलाति ॥ गोकुल बाजत सुनी बधाई लोगन हेरि सिहाति। सूरदास आनंद नंदके देत कनक नगदाति ॥८॥ बिहागरो ॥ देवकी मन मन चकृत भई। देखहु आइ पुत्र मुख काहेन ऐसी कहूं देखि नदई ॥ शिरपर मुकुट पीत उपरेना भृगुपद उर भुजचारि करे। पूरबकथा सुनाइ कही हरि तुम माँग्यो वह वेषधरे। छूट निगड सो आये पहरू द्वारेको कपाट उघारचो। तुरत मोहिं गोकुल जावहु ले यह कहति शिशुभेष धरचो ॥ वसुदेव तबहिं उठे यह सुनतहि हर्षवंत नन्दभवन गये ॥ बालक धरचो लाई सुरदेवी आइ सूर मधुपुरी भये॥९॥ राग बिलावल ॥ आनंदे आनंद बढ्यो अति।देवन

दइ दुंदुभी बजाई सुनि मथुरा प्रगटे यादवपति ॥ विद्याधर किन्नरी कंठधर उपजावत अनुराग अमित अति। गावत गगन धरणि ध्वनि सुनियत गर्जत घन तेहि काल जतनजति ॥ वर्षत सुमन सुदेश सूर सुर जयजयकार करत मानत रति ॥ शिव विरंचि इंद्रादि सनक मुनि फूले सुख न समात मुदितमति ॥ १० ॥ कमलनयन शशिवदन मनोहर देखिए होपति अति विचित्रगति । श्याम सुभगतनु पीतवसन दुति उर वाने सोहै अद्भुत अति ॥नख मणि मुकुट प्रभा अति उदित चितै चकृत उनमान नयावति।अति प्रकाश निशि बिमल तिमिर छुटि कलमलि मलि पतिहि जगावति॥ दरशन सुखी दुखी अति शोचत पटसुत शोक सुरति उर आवति । सूरदास प्रभु लेहु पुराकृत भुजके चिह्न दुरावति॥ ११ ॥ गोकुल प्रगटभए हरि आई । अमर उधारन असुर सँहारन अंतर्यामी त्रिभुवनराई ॥ माथेपर धरि वसुदेव ल्याए नंदमहर घरगे पहुँचाई ॥ जागी महरि पुत्रमुख देखत पुलक अंग उरमें न समाई । गद्गद कंठ बोल नहिं आवै हर्षवंत ह्वै नंद बुलाई ॥ आवहु कंत देव परसन भए पुत्र भयो मुख देखोधाई । दौरि नंद गए सुतमुख देख्यो सो शोभा सुख बराणि न जाइ ॥ सूरदास पहिले यह माँग्यो दूध पिआवन यशुमति माइ ॥ १२ ॥ जागी महरि पुत्रमुख देख्यो आनँद तूर बजाइ । कंचन कलश हेम द्विजपूजा चंदन भवन लिपाइ ॥ दिनदशहीते वर्षे कुसुमनि फूलन गोकुल छाइ । नंद कहै इच्छा सब पूजी मनवांछित फल पाइ ॥ आनँदभरे करत कौतूहल उदित मुदित नर नारी। निर्भय भए निशान बजावत देत निशंके गारी ॥ नाचत महर मुदित मन कीनो ग्वाल बजावत तारी। सूरदास प्रभु गोकुल प्रगटे मथुरा कंस प्रहारी ॥ १३ ॥ नंदराइके नवनिधि आई । माथे मुकुट श्रवण मणि कुंडल पीतबसन भुजचारु सुहाई ॥ बाजत ताल मृदंग यंत्रगति चरचि अरगजा अंग चढाई । अक्षत दूब लिए शिरबंदत घर घर बंदनवार बधाई ॥ छिरकत हरद दही हिय हर्षत गिरत अंक भरि लेत उठाई । सूरदास सब मिलत परस्पर दान देत नहिं नंद अघाई ॥ १४ ॥ आजु वन कोउ जिनि जाइ । सबै गाइ और बछरा समेत सब आनहु चित्र बनाइ ॥ ढोटा है रे भयो महरिके कहत सुनाइ सुनाइ । सबहिं घोषमें भयो कोलाहल आनँद उर न समाइ ॥ कतहौ गहर करत रे भैया वेगि चलो उठि धाइ । अपने अपने मनको चीत्यौ नैननि देखौ आइ ॥ एक फिरत दधि दूब बँधावत एक रहत गहि पाइ । एक परस्पर करत बधाई एक उठत हँसि गाइ॥ तरुण किशोर वृद्ध अरु बालक बैठ चौगुने चाइ । सूरदास सब प्रेम मगन भए गनत न राजा राइ ॥ ॥ १५ ॥ राग रामकली ॥ हौं एक बात नई सुनि आई । महरि यशोदा ढोटा जायो घर घर होत बधाई ॥ द्वारे भीर गोप गोपिनके महिमा वरणि न जाई । अति आनंद होत गोकुलमें रत्न भूमि सब छाई॥नाचत तरुण वृद्ध अरु बालक गोरस कीच मचाई । सूरदास स्वामी सुखसागर सुन्दर श्याम कन्हाई ॥ हौं सखी नई चाह एक पाई । ऐसे दिनन नंदके सुनियत उपजे पूत कन्हाई ॥ बाजत पवन निशान पंचबिधि रुंज मुरज सहनाई । महर महरि ब्रज हाट लुटावत आनँद उर न समाई ॥ चलौ सखी हमहूं मिलि जैये वेगि करो अतुराई । कोउ भूषण पहिरचो कोउ पहरति कोउ वैसेहि उठि धाई॥कंचन थार दूब दधि रोचन गावत चलीं बधाई।भाँति भाँति बनि चली युवति गण यह उपमा मोपै नहिं आई ॥ अमर बिमान चढे सुर देखत जयध्वनि शब्द सुनाई । सूरदास प्रभु भक्त हेतु हित दुष्टनके दुखदाई ॥१६॥ राग गूजरी ॥ सखी री काहेको गहरु लगावति । सुतको जन्म यशोदाके गृह तालगि तुमहिं बुलावति ॥ कनकथार भरि लै दधि रोचन वेगि चलौ मिलि गावति । साँचहु सुत भयो नँदनायकके हौं नाहिन बौरावति ॥ आनँद उर अंचल न सँभारति शीश सुमन बरषावति।

सूरदास शोभा तेहि अवसर जहाँ तहाँते आवति ॥ १७ ॥ राग आसावरी ॥ ब्रज भयो महरके पूत जब यह बात सुनी । सुनि आनंदे सब लोग गोकुल गनक गुनी ॥ अति पूरब पूरे पुण्यरूपी कुल अटल थुनी । ग्रहलग्न नक्षत्र बल शोधि कीनी वेद ध्वनी ॥ सुनि धाईं सबै ब्रजनारि सहज शृंगार किए । तनु पहिरे नौतन चीर काजर नैन दिये ॥ कसि कंचुकि तिलक लिलार शोभित हार हिये । करकंकन कंचनथार मंगलसाज लिये ॥ शुभ श्रवणनि तरल बनाइ वेनी शिथल गुही । सुर वर्षत सुमन सुदेश मानौ मेघ फुही ॥ सुखमंडित रोरी रँग सेंदुर माँग छुही ॥ ते अपने अपने मेलि निकसी भांति भली ॥ मनु लाल मनिनकी पाँति पिंजर चूरि चलीं । गुण गावहिं मंगल गीत मिलि दश पांच अली । मनु भोर भए रवि देखि फूली कमलकली ॥ पिय पहिले पहुँची जाइ अति आनंद भरी । लई भीतर भवन बुलाय सबै शिशुपाइ परी ॥ एक वदन उघारि निहार देहि अशीश खरी । चिरजिवो यशोदानंद पूरणकामकरी ॥ धनि धनि दिन धनि राति धनि यह पहर घरी । धन धन्य महरिकी कूख भाग सुहाग भरी ॥ जिन जायो ऐसो पूत सब सुखफलनि फरी । थाप्यो थिर परिवार मनकी शूल हरी ॥ सुनि ग्वालनि गाइ बहोरि बालक बोलि लये । गुहि गुंजा घसि वनधातु अंगनि चित्र ठये ॥ शिर दधि माखनके माट गावत गीत नये । कर झाँझ मृदंग बजाइ सब नंद भवन गये ॥ मिलि नाचत करत कलोल छिरकत हरद दही । मानो वर्षत भादों मास नदी घृत दूध बही ॥ जाको जहीं जहीं चित जाइ कौतुक तहीं तहीं ॥ सब आनंद मगन गुवाल काहू वदत नहीं ॥ एक धाय नंदपै जाइ पुनि पुनि पायँ परै । एक आपुन आपुहि माहिं हँसि हँसि अंक भरै ॥ एक अंबर उतारत अंगदेत न शंक करै । इक दधि अक्षत अरु दूब सबनके शीश धरै ॥ तब न्हाइ नंदभए ठाढे अरु कुश हाथ लिये । घसि चन्दन चारु मँगाइ विप्रन तिलक किए ॥ नान्दीमुख पित्र पुजाइ अंतर शोच हरे । गुरुजन द्विजन पहिराइ सबनिके पांइ परे ॥ गैयां गनी न जाहिं तरुणि सब बच्छबढीं । ते चरहिं यमुनके कच्छ दूने दूध चढीं ॥ खुर ताँबे रूपे पीठि सोने शृंग मढीं ॥ ते दीनी द्विजन अनेक हरषि अशीश पढीं ॥ तब अपने मित्र सुबंधु हँसि हँसि बोलि लिए । मथि मृगमद मलय कपूर सबनके तिलक किए । उर मणिमाला पहिराय सबन विचित्र ठए ॥ दान मान परधान पूरणकाम किए ॥ वरमागध बंदी सूत आँगन भवन भरे । ते बोले लैलै नाम क्रीडत विवशपरे ॥ जिन याँच्योजोइ दीन रस नँदराय ढरे । मानो वर्षत मास अषाढ दादुर मोर ररे ॥ तब अंमर और मँगाइ सारी सुरंग घनी । ते दीनी वधुन बोलाइ जैसी जाहि बनी । ते बहुरी अति आनंद निज गृह गोप घनी ॥ ते निकसीं देत अशीश रुचि अपनी अपनी । घर घर भेरि मृदंग पटह निशान बजे ॥ वारन बंदनवार अरु ध्वज कलश सजे ॥ तादिनते वे लोग सुख संपति नतजे । कहि सूर सबनकी यह गति जे हरिचरण भजे ॥ १८ ॥ राग धनाश्री ॥ आजु नंदके द्वारे भीर । एक आवत एक जात बिदा होइ एक ठाढे मंदिरके तीर ॥ कोउ केसर कोउ तिलक बनावत कोउ पहिरत कंचुकी चीर ॥ एकनको दै दान समर्पित एकनको पहिरावत चीर ॥ एकनको भूषण-पाटम्बर एकनको जो देत नग हीर । एकनको पुहुपनकी माला एकनको चंदन घसि वीर ॥ एकनको तुलसीकी माला एकनको राखत दै धीर । सूरश्याम घनश्याम सनेही धन्य यशोदा पुण्य शरीर ॥ १९ ॥ गौरी ॥ गोपी गावहिं मंगलचार बधायो ब्रजराजको ॥ अब भयउ अमर सब काज बधायो ब्रजराजको ॥ रानी जायोहै मोहनपूत बधायो ब्रजराजको । बहुत नारि सुभाग सुंदरि और घोषकुमारि । सजन प्रीतम नाउ लैलै देहिं परस्पर गारि ॥ आनंद स्तुति अतिशय भयो घर घर नृत्य कामहि ठाउँ । नंदद्वारे भेट लैलै उमह्योहै गोकुल गाउँ ॥ साथि ये बनाइकै देहिं द्वारे सात सींक

बनाय । नवकिशोरी मुदितह्वै ह्वै गहति यशुदाजीके पाँय ॥ चौके चंदन लीपिकै आरति धरी सँजोइ। कहत घोषकुमारि ऐसो आनँद जो नितहोइ ॥ करि करि अलंकृत गोपिका पहिरे सुभूषण चीर । गाइ बच्छ सँवारि ल्याये ग्वालनकी भै भीर ॥ मुदित मंगल सहित लीला करहिं गोपी ग्वाल । हरद अक्षत दूब दधि लै तिलक करहिं ब्रजबाल ॥ एक हेरी देहि गावहिं एक भेटहिं धाइ । एक एक न गनै काहू इक खेलावत गाइ ॥ एक बिरध किशोर बालक एक यौबन योग । कृष्ण जन्म सुप्रेमसागर क्रीडत सब ब्रजलोग ॥ प्रभु मुकुंदके हेतु नवतनु होहि घोष विलास । देखि ब्रजकी संपदाके फूलैहैं सूरजदास ॥ २० ॥ आजु बधायो नंदराइके गोपी गावहिं मंगलचार ॥ आई मंगल कलश साजिकै ता ऊपर फलदार । अक्षत रोचन दूब लै चलीं बहु विधि फल भरे थार॥ घरन घरनते गावत चलीं ब्रजवधूझुंड अपार ॥ चलीं सब मिलि महरके घर देखन नंदकुमार। देखि मोहन आश पूरी सबै देति अशीश । नंदमहरके लाडिले तुम जिऔ कोटि बरीश ॥ उरमें लैहैं नंदरायके गोप सखन मिलि हार । मागध बंदी जन अति क्रीडत बोलत जैजैकार॥महरि दान जु बहुत दीनो अरु दियो नंदराइ। ऐसो सुख देखौ सखी जन सूरदास बलि जाइ॥ २१ ॥ धनि धनि नंद यशोमति धनि जग पावनि रे। धनि हरिलियो अवतार सुधनि दिन आवन रे । दशयें मास भयो पूत पुनीत सुहावन रे । शंख चक्र गदापद्म चतुर्भुज भावन रे ॥ बनि बनि ब्रजसुंदरि चलीं सुगाइ बधावन रे । कनकथार रोचन दधि तिलक बनावन रे ॥ नंद घरहिं चलि गाइ गहरि जहां पावन रे । पाँइनि परि सब वधू महरि बैठाव न रे ॥ यशुमति धनि यह कोखि जहां रहे बावन रे । भले सुदिन भयो पूत अमर अज रावन रे ॥ युग युग जीवहु कान्ह सबनि मनभावन रे । गोकुल हाट बजार करत जु लुटावन रे॥ घर घर बजै बधाव नगर हरि आवन रे॥अमर नगर उत्साह अप्सरा गावन रे॥ब्रह्म लियो अवतार दुष्टके दावन रे॥दान सबै जो देत वर्षि जनु सावन रे॥मागध सूत भाट धन लेत जु रावन रे । चोवा चंदन अबीर गली छिरकावन रे ॥ब्रह्मादिक सनकादिक गगन भरावन रे । कश्यप ऋषि सुर तात सुलगन गनावन रे॥ तीनि भुवन आनंद कंसहि डरावन रे । सूरदास प्रभु जन्मे भक्त हुलसावन रे ॥२२॥ राग कल्याण ॥ शोभासिंधु न अंत रही री । नंदभवन भरिपूर उमंग चली ब्रजकी बीथिनि फिरति बही री ॥ देखी जाइ आजु गोकुलमें घर घर बेचत फिरति दही री । कहाँलगि कहौं बनाइ बहुत बिधि कहत न मुख सहसहु निबही री ॥ यशुमति उदर अगाध उदधिते उपजी ऐसी सबन कही री । सूरश्याम प्रभु इन्द्र नील मणि ब्रजवनिता उरलाइ गुहोरी ॥ २३ ॥ राग काफी ॥ आजु निशान बाजै नंद महरिके । आनंद मगन नर गोकुल शहरके । आनँदभरी यशोदा उमँगि अंग न समाति आनंदित भई गोपी गावति चहरके ॥ दूब दधि रोचन कनकथार लैलै चलीं मानों इंद्रवधू जुरि पांतिनि बहरके । आनंदित भए ग्वाल बाल करत विनोद ख्याल भुजभरि धरि अंकमदे वरहरिके ॥ आनंदमगन धेनु थन स्रवै पय फेनु उमँग्यो यमुनजल उछलै लहरके । अंकुरित तरु पात उकठि रहे जे गात वनवेली प्रफुलित कलिन कहरके । आनंदित विप्रसुत मागध याचक गण उमँगे अशीश देत तरह तरह हरिके ॥ आनंदमगन सब अमर गगन छाए पुहुप विमान चढ़े पहर पहरके । सूरदास प्रभु आइ गोकुल प्रगट भए संतन भयो हरष दुष्टजन मनदहरके ॥ २४ ॥ माई आजु हो बधायो बाजै नंदगोपराइके । यदुकुल यादव जन्मेहैं आइके॥आनंदित गोपी ग्वाल नाचैं करदेदै ताल अति अहलाद भयो यशुमति माइके । शिर पर दूब धरि बैठे नंद सभा मधि द्विजनको गाइ दीनी बहुत मँगाइके । कनकमाट मँगाइ हरद दही मिलाय छिरकैं परस्पर छलबल धाइके ॥ आठैं कृष्णपक्ष भादौं महरके दधिकादौं मोतिन बँधायो

वार महलमें जाइकै ॥ ढाढी और ढाढिनि गावै हरिके ठाढे बजावै हरषि अशीश देत मस्तक नवाइकै। जोई जोई माँग्यो जिनि सोई सोई पायो तिनि दीजै सूरदास दर्श भक्तन बुलाइकैं॥२५॥ राग जैतश्री ॥ आजु बधाई नंदके माई। सुन्दर नंद महरके मंदिर। प्रगट्यो पूत सकल सुखकंदर ॥ यशुमति ढोंटा व्रजकी शोभा। देखि सखी कछु औरै लोभा॥ लक्ष्मीसी जहां मालिनबोलै। बंदन माला बांधत डोलै॥ द्वार बुहारत फिरत अष्टसिधि। कौरेन सथिया चींतत नवनिधि ॥ गृह गृहते गोपी गावतीं जब। रंगीली गलिनबिच भीर भई तब ॥सोवरनथाल रही हाथन लसि। कमलन चढि आए मानो शशि॥उमँगे प्रेमनदी छबि पावै। नंद नंद सागरको धावै॥ कंचन कलश जगमगे नग के।भागे सकल अमंगल जगके॥ डोलत ग्वाल मानो रणजीते। भये सबहिंके मनके चीते॥ अति आनंद नंद रस भीने। पर्वत सात रत्नके दीने ॥ कामधेनुते नेक नवीने। द्वैलख धेनु द्विजनको दीने॥ नंदद्वार जे याचन आए। बहुरो फिरि याचक न कहाए ॥ घरके ठाकुरके सुत जायो। सूरदास तब सब सुख पायो॥ २६॥ राग बिलावल ॥ आज गृहनंद महरिके बधाई। प्रात समय मोहन मुख निरखत कोटि चंद्र छबिपाई॥ मिलि ब्रजनारी मंगल गावत नंदभवन मैं आई। देति अशीश जियो यशुदासुत कोटि वर्ष कुँवरकन्हाई॥ अति आनंद बढ्यो गोकुलमें उपमा कही न जाई। सूरदास धनि नंदघरनिहि देखत नैन सिराई॥ २७॥ राग जैजैवंती ॥ माई आजु तो बधाई बाजै मंदिर महरके। फूले फिरैं गोपी ग्वाल ठहर ठहरके॥ फूली धेनु फूले धाम फूली गोपी अंग अंग। फूले फिरि तरुवर आनंद लहरके॥ फूले वंदीजन द्वारे फूले फूले बंदनेवारे। फूले जहां जोइ सोइ गोकुल शहरके॥फूले फिरैं यादव कुल आनंद समूल मूल। अँकुरित पुण्य फूले पिछले पहरके॥ उमँगे यमुनाजल प्रफुलित कुंज पुंज। गर्जत कारे भारे यूथ जल धरके॥ नृत्यत मदन फूले फूली रति अंग अंग॥ मनके मनोज फूले हलधर हरिके। फूले द्विज संत वेद मिटिगयो कंस खेद॥ गावत बधाई सूर भीतर बहरके॥ फूलीहै यशोदा रानी सुत जायो शारंग पानी भूपति उदार फूल भार फरे घरके॥ २८॥ जैतश्री ॥ नंदजू मेरे मन आनन्द भयो हौं गोवर्धनते आये। तुमेरे पुत्र भयो मैं सुनिकै अतिआतुर उठिधायो॥बंदीजन अरु भिक्षुक सुनि सुनि दूरि दूरिते आयो। इक पहिलेही आशा लागे बहुत दिननके छाये॥ तें पहिरे कंचन मणि भूषण नानावसन अनूप। मोहिं मिले मारगमें आवत मानों जात कहूके भूप॥ तुमतौ परम उदार नंदजू जिन जो मांग्यो सो दीनो ऐसो और कौन त्रिभुवनमें तुम सरि साको कीनो॥कोटि देहु तौ रुचि नाहिं मानों बिन देखे नहिं जैहौं नंदराय सुनि बिनती मेरी तबहिं बिदाभले ह्वैहौं॥दीजै मोहिं कृपा करी सोई जो हों आयो मांगन।यशुमति सुत अपने पाँइन जब खेलत आवै आंगन॥जब तुम मदन मोहन करि टेरो इहि सुनिकै घरजाऊं। हों तो तेरो घरको ढाढ़ी सूरदास मेरो नाऊं॥२९॥मैं घरको ढाढ़ी हौं तिहारो को मोसर करै आन। सोई लैहौं जो मो मनभावै नंदमहरकी आन॥धन्य नंद धनि धन्य यशोदा धनि धनि जायो पूत। धन्य भूमि ब्रजबासी धनि धनि आनँद करत अकूत॥ घर घर होत अनंद बधाई जहाँ तहाँ मागध सूत। मणि माणिक पाटंबर देते लेत न बनत बहूत॥हय गय सबन भंडार दिये सब फेरिभरेसेभाति। जबहिं देत तबहीं फिरि देखत संपति घर न समाति॥ ते मोहिं मिले जात घर अपनें मैं बूझी तब जाति। हँसि हँसि दौरि मिले अंकम भरि हम तुम एकै ज्ञाति॥ संपति देहु लेहु नहिं एकौ अन्न वस्त्र केहि काज। जोहों तुमसों मांगन आयो सो लेहौं नँदराज॥ अपने सुतको वदन देखावहु बडे महर शिरताज। तुम साहब मैं ढाढ़ी तेरो प्रभु मेरे ब्रजराज॥ चन्द्रवदन दरशन संपति दै सो

मैं लै पुरजाउँ । सो संपति सनकादिक दुर्लभ सो है तुमरे ठाउँ ॥ जाको नेति नेति श्रुति गावत तेउ कमलपद धाऊं।हौं तेरो जन्म जन्मको ढाढी सूरदास कहि गाऊं ॥ ३० ॥ राग केदारो ॥ नंद उदौ सुनि आयोहो वृषभानुको जगा । देवेको बडो महर देत न लावै गहर लालकी बधाई पाऊं लालको झगा ॥ प्रफुलित ह्वैकै आन दीनहै यशोदा रानी झीनीए झगुली तामें कंचनको तगा । नाचै फूल्यो आँगनाइ सूर बखशीश पाइ माथेकै चढाइ लीनो लालको वगा ॥ ३१ ॥ राग धनाश्री ॥ यशोमति लटकति पाँइ परै । तेरो भलो मनाइहौं झगरी न तूमति मनहि डरै ॥ दीन्हों हार सबै कर कंकण मोतिन थार भरै । सूरदास स्वामी प्रगटेहैं अवसर पाइ झगरै ॥ नंद जु दुःख गयो सुख आयो सबन्हको दियो पुत्र फल मानौ । तुमरो पुत्र प्राण सबहिनको भवन चतुर्दश जानौ ॥ हौंतो तुम्हारो घरको ढाढी नावसेन सजपाउँ । गृह गोवर्धन वास हमारो घर तजि अनत न जाउँ । ढाढिनि मेरी नाचै गावै हौंही ठाढो बजावौं॥हमरो चीत्यो भयो तुम्हारे जो मांगौं सो पावौं । अब तुम मोको करो अयाची जो ग्रह गेह बिसारौं॥द्वारे रहौं देहु एक मंदिर श्यामस्वरूप निहारौं । हँसि ढाढिनि ढाढी सों बोली अब तू वरणि बधाई । ऐसो दियो न देहै सूर कोउ यशोमति हौं पहिराई ॥३२ ॥ ढाढिनि दान मानकी भाई । नंद उदार भए पहिरावत बहुत भलै बनिआई ॥ जब जब जन्म धरौं ढाढीको जन्म कर्म गुण गाऊं । अर्थ धर्म कामना मुक्तफल चार पदारथ पाऊं ॥ लै ठाढिनि कंचनमाणि मुक्ता नाना वसन अनूप । हीरा रतन पाटंबर हमको दीन्हें ब्रजके भूप ॥ अब तो भली भई नारायण दरशे नैन निरखि निधि पाई । जहां तहां वंदनवार विराजत घर घर बजत बधाई ॥ जो याच्यो सोई तिन पायो तुमरवि भई बिदाई ॥ भक्ति देहु पालने झुलावौं सूरदास बलिजाई ॥ ३३ ॥ छठीव्यवहार ॥ ६॥ राग सारंग ॥ गौरि गणेश बिनऊं हो देवी शारद तोहि ॥ गाऊं हरिजीको साहेलो मन और आवै मोहि । बधावो हरिको मन रहिवो रानी जायोहै मोहन पूत ॥ घर आँगन बाहेर सब मांगे ठाढे मागध सूत । आठ मास चंदन पियोहो नवए पियो कपूर ॥ दशयें-मास मोहनभए मेरे आंगन री बाजै घतूर । हर्षी पार परोसिनि भए हरष नगरके लोग ॥ हर्षी सखी सहेलरी सब आनँद भयो सुखयोग॥ बाजन बाजे गहगहे मिलि बाजै शारद भेरी ॥ मालिंनि बांधै तोरन मेरे आँगन री रोपै आछेकरी । आने गढ़ि सोना ढोलना पढिलाये चतुर सुनार ॥ बिच बिच हीरा लगे नंदलाल गरेको हार । यशुमति भाग सुहागिनी जिन जायो हरिसों पूत । करहु ललनकी आरती री अरु दधिकाँदौ सूत । नाउनि बोलहु नवरंगी लै आवहु महावर वेग ॥ लाखटका अरु झूमकसारी देहु दाईको नेग । अगर चंदनको पालनो गढई गुर ढार सुढार ॥ लै आयो गढि ढोलनी विश्वकर्मा सो सुतधार।धन्य सो दिन धन्य सो घरी धन्य सो जोतिक जाग॥धन्य धन्य मथुरापुरी हो धनि धनि महरिको भाग ॥ धनि धनि मातु देवकी धनि धनि वसुदेव सुजान ॥ धनि धनि भादौं अष्टमी धनि जन्म लियो जब कान्ह । काढहु कोरे कापर हो अरु काढौ घीकी मौन ॥ जाति पाँति पहिरायकै सब समदि छतीसौ पौन । काजर रोरी आनोरी मिलि करौ छठीको जार ॥ एपनकीसी पूतरी सब सखियन कियोहै शृंगार । क्रीट मुकुट शोभावनी शुभअंग बनी वनमाल ॥ सूरदास प्रभु गोकुल जनमे मोहन मदन गोपाल ॥ ३४ ॥ राग काफी ॥ अति परम सुंदर पालनागढि ल्याव रे बढैया । शीतल चंदन कटाउ धरि खरादि रंग लगाउ विविध चौकी बनाउ रंग रेशम लगाउ हीरा मोती लाल मढैया ॥ विश्वकर्मा सुढार रच्या है काम सुनार मणि गणि लागे अपार नंदमहर सुत काज अढैया । आनि धरचो नंदद्वार अतिही

सुंदर सुढार ब्रजबधू देखैं बारबार शोभा नहिं वारपार धनि धनि धन्यहै गढैया ॥ पालनो आन्यो सबहि अति मनमान्यो नीको सो दिन धराइ सखिन मंगल गवाय रंगमहलमें पौढ्योहै कन्हैया ॥ सूरदास प्रभुकी मैया यशुमति नंदरानी जोई माँगत सोई लेत बधैया ॥ ३५ ॥ राग जयतश्री ॥ ब्रजको जीवन नँदलाल । असुर निकंदन भक्तपाल ॥ कनकरतन मणि पालनौ अति गढ्यो काम सुतहार । विविध खेलौना भाँति भाँतिके गजमुक्ता बहुधार । सुभग पालने झूलैं हो नँदलाल। मात पिता सुकृत फल जगपाल । जननि उबटि अन्हवायकै अतिक्रमसों लीनों गोद । पौढाये पट पालने शिशु निरखि जननि मनमोद ॥ अतिकोमल दिन सातके अधर चरण कर लाल । सूरश्याम छबि अरुणता निरखि हरषि ब्रजबाल ॥ ३६ ॥ राग धनाश्री ॥ यशोदा हरि पालने झुलावै । हल रावै दुलराइ मल्हावै जोइ सोई कछु गावै ॥ मेरे लालको आउ निदरिया काहे न आनि सुवावै। तू काहे न वेगीसी आवै तोको कान्ह बुलावै ॥ कबहूँ पलक हरि मूंदिलेतहैं कबहूँ अधर फरकावै। सोवत जानि मौन है है रही कर करि सैन बतावै ॥ इहि अंतर अकुलाइ उठे हरि यशुमति मधुरे गावै। जो सुख सूर अमर मुनि दुर्लभ सो नंदभामिनि पावै ॥ ३७ ॥ राग गौरी ॥ हालरो हलरावै माता । बलि बलि जाउँ घोष सुखदाता ॥ यशुमति अपनो पुण्य बिचारै । बारबार शिशु वदन निहारै ॥ अँग फरकाय अलप मुसकानो । या छबि पर उपमाको जानो ॥ हलरावति गावति कहि प्यारे । बालदशाके कौतुक भारे । महरि निरखि मुख हिय हुलसानी।सूरदास प्रभु शारंगपानी॥ ॥ राग धनाश्री ॥ कन्हैया हालरुरे । गढि गुढिल्यायो बढई बलि हालरु रे ॥ धरनि पर डिलाइ एक लख माँगे बढई बलि हालरुरे । दुइ लख बाबा नंदजी देहीं ॥ काहेको तेरो पालना बलि हाल रुरे॥ कहिलागी डारे । रतन जडितको पालना बलि हालरुरे ॥ रेसम लागी डोर॥ कबहुंक झूलै पाल-ना बलि हालरुरे । कबहुंक नंदजीकी गोद। झूलैं सखी झुलावहीं बलि हालरुरे॥ सूरदास बलि जाहीं ॥ ३८ ॥ अथ पूतनावध ॥ आजु हौं राजकाज करि आऊँ । बेगि सँहारौं सकल घोष शिशु जो मुख आयसु पाऊँ ॥ तौ मोहन मूर्छन बशीकरन पढ़ि अमित देह बढाऊँ । अंगसुभग सजिकै मधु मूरति नयननि माहँ समाऊँ ॥ घसिकै गरल चढ़ाइ उरोजनि लै रुचिसों पयप्याऊँ । सूरदास प्रभु जीवत ल्याऊं तौ पूतना कहाऊं ॥ ३९ ॥ विहागरो ॥ कंसराय जिय शोच परी । कहाकरौं काको ब्रज पठऊं विधना कहा करी ॥ बारंबार विचारत मनमें भूप नींद बिसरी । सूर बुलाइ पूतनासों कह्यो करु न विलंब घरी ॥ ४० ॥ राग धनाश्री ॥ रूप मोहनी धरि ब्रज आई। अद्भुत साजि शृंगार मनोहर असुर कंसदै पान पठाई॥ कुच विषबाँटि लगाइ कपटकरि बालघातिनी परम सुहाई । बैठी हुती यशोदामंदिर दुलरावति सुत श्याम कन्हाई । प्रगटभई तहां आइ पूतना प्रेरितकाल अवधि नियराई॥ आवतपीढा बैठन दीनो कुशलबूझि अति निकट बुलाई ॥ पौढाये हरि सुभगपालने नंदघरनि कछु काज सिधाई ।बालक लियो उछंग दुष्टमति हर्षितअस्तनपान कराई ॥ वदन निहारि प्राण हरिलीनो परी राक्षसी योजनताई। सूरज दै जननीगति ताको कृपाकरी निजधाम पठाई॥४१॥ प्रथम कंस पूतना पठाई । नंदघरनि जहँ सुतलिए बैठी चलि तेहि धामहि आई ॥ अति मोहनी रूप धरि लीनो देखत सबहीके मन भाई । यशुमति रही देखि वाको मुख काकी बधू कौनधौं आई। नंदसुवन तबहीं पहिचानी असुर घरनि असुरनकी जाई॥ आपुन वज्र समान भए हरि माता दुखित भई भरपाई । अहो महरि पालागन मेरो हों तुम्हरो सुत देखन आई । यह कहि गोद लियो अपने तब त्रिभुवनपति मनमन मुसकाई । मुख चूँव्यो गहि कंठ लगाए विष लपट्यो अस्तन मुख

लाई ॥ पयसँग प्राण ऐंचि हरि लीन्हें योजन एक परी मुरझाई । त्राहि त्राहि कहि व्रजजन धाए अति बालक क्यों बच्यो कन्हाई । अति आनंद सहित सुत पायो हृदये माँझ रहे लपटाई ॥ करवर टरी बडी मेरेकी घर घर आनँद करत बधाई। सूरश्याम पूतना पछारी यह सुनि जिय डरप्यो नृपराई ॥ ४२ ॥ राग सारंग ॥ कपटकरि व्रजहि पूतना आई । रूप स्वरूप विषम स्तन लाए राजा कंस पठाई ॥ मुख चूँबत अरु नैन निहारत राखत कंठ लगाई । भाग्य बडे तुमरे नँदरानी जिनके कुँवर कन्हाई ॥ करगहि क्षीर पियावत अपनो जानत केशव राई । बाहर होइकै असुर पुकारी अब बलि लेहु छोडाई ॥ गई मुर्च्छाइपरी धरनीपर मानों भुवंगम खाई । सूरदास प्रभु तुमरी लीला भक्तन गाइ सुनाई ॥ ४३ ॥ राग धनाश्री ॥ देखो यह बिपरीत भई। अद्भुत रूप नारि करि आई कपट हेतु क्यों सहै दई ॥ कान्हे लै यशुमतिकोरातें रुचिकरि कंठ लगाई । तब वह देह धरी योजनलौं श्याम रहे लपटाई ॥ बडे भाग्यहैं नँदमहरके बडभागिन नँदरानी । सूर श्याम उर ऊपर वारे यह सब घर घर जानी ॥ ४४ ॥ विहागरो ॥ नेक गोपालै मोको दै री ॥ देखों कमलवदन नीके करि ता पाछे तू कनियां लै री ॥ अति कोमल कर चरण सरोरुह अधर दशन नासा सोहै री। लटकन शीश कंठमणि भ्राजत मन्मथ कोटि वारने गैरी ॥ वासर निशा विचारतहौं सखि यह सुख कबहुं न पायो मैं री । निगमन धन सनकादिक सर्वसु भाग्य बडे पायो तैं है री॥ जाको रूप जगतके लोचन कोटि चंद्र रवि लाजत भैरी ॥ सूरदास बलिजाइ यशोदा गोपिन प्राण पूतना बैरी ॥४५॥ राग जैतश्री ॥ कन्हैया हाल रोहाल रोई । हौं बारी तेरे इंदु वदनपर अति छबि अलसनि रोई॥ कमलनयनको कपट किये माई इहि व्रज आवै जोई । पालागों विधि ताहि वकीजौं तू तिह तुरत बिगोई ॥ सुन देवता बडे जगपावन तू पतिया कुल कोई ॥ पय पूजिहौं बेगि यह बालक करिदै मोहि बडोई । द्वितियेके शशिलौं बाढै शिशु देखै जननि जसोई । यह सुख सूरदासके नयनन दिन दिन दूनो होई॥ ४६ ॥ राग कान्हरो ॥ पालने श्याम हलावति जननी । अति अनुराग परस्पर गावत प्रफुलित मगन मुदित नँद घरनी ॥ उमँगि उमँगि प्रभु भुजा पसारत हरष यशोमति अंकम भरनी । सूरदास प्रभु मुदित यशोदा पूरण भई पुरातन करनी ॥ ४७ ॥ राग बिलावल॥गोपाल माई पालने झुलाए । सुर मुनि कोटि देव तेतीसौं देखन कौतुक अंमर छाए ॥ जाको अंत न ब्रह्मा जानत शिव सनकादि न पाए । सो अब देखो नंद यशोदा हरषि हरषि हलराये ॥ हुलसत हुलसि करत किलकारी मन अभिलाख बढ़ाए॥ सूरश्याम भक्तन हितकारन नाना वेष बनाए॥४८॥सिद्धर बाँभन करम कसाई कह्यो कंससों वचन सुनाई। प्रभु मैं तुम्हरो आज्ञाकारी । नंदसुवनको आवों मारी ॥ कंस कह्यो तुमते इह होई । तुरत जाहु कर विलँब न कोई ॥ शिरधर नंदभवन चलि आयो । यशोदा उठिकै माथो नायो ॥ करो रसोई मैं चलि जावो । तुम्हरे हेतु यमुनजल ल्यावो ॥ इह कहि यशुदा यमुना गई । सिद्धर कही भली इह भई । उन अपने मनमारन ठानो । हरिजी ताको तबही जानो ॥ ब्राह्मण मारे नहीं भलाई । अंग याको मैं देउँ नशाई ॥ जबहीं ब्राह्मण हरिढिग आयो। हाथ पकर हरि ताहि गिरायो ॥ गोड चाप लै जीभ मरोरी। दधि ढरकायो भाजन फोरी ॥ राख्यो कछु तेहि मुख लपटाई ॥ आपु रहे पलनापर आई ॥ रोवन लागे कृष्ण विनानी। यशुमति आइगई लै पानी ॥ रोवत देखि कहचो अकुलाई ॥ कहा करचो तैं विप्र अन्याई ॥ ब्राह्मणके मुख बात न आवै । जीभ होइ तौ कहि समुझावै ॥ ब्राह्मणको घरबाहर कीन्हों । गोद उठाइ कृष्ण को लीन्हों ॥ पुरवासी सब देखन आए । सूरदास हरिके गुण गाए ॥४९॥ सुन्यो कंस पूतना मारी। शोच भयो ताके जिय

भारी ॥ कागासुरको निकट बुलायो । तासों कहि सब वचन सुनायो ॥ मम आयसु तुम माथे धरौ । छल बल करि मम कारज करौ ॥ इह सुनिकै तिन्ह माथो नायो । सूर तुरत ब्रजको उठिधायो ॥ ५० ॥ अथ कागासुरको आयबो ॥ राग सारंग ॥ कागरूप एक दनुज धरयो । नृप आयसु लैकर माथे पर हर्षवंत उर गर्व भरयो ॥ कितिक बात प्रभु तुम आयसु लै यह जानो मो जात मरयो । इतनी कहि गोकुल उठि आयो आइ नंदघर छाजरह्यो ॥ पलना पर पौढ़े हरि देखे तुरत आइ नैननिसौं अरयो । कंठ चापि बहु बार फिरायो गहि पटक्यो नृपपास परयो ॥ तुरत कंस पूछन तेहि लाग्यो क्यों आयो नहिं काज सरयो । बीत्यो जाम ज्वाब जब आयो सुनहु कंस तेरो आयु सरयो ॥ धरि अवतार महावल कोऊ एकहि कर मेरो गर्व हरयो। सूरदास प्रभु कंसनिकंदन भक्तहेतु अवतार धरयो ॥ ५१ ॥ राग विलावल ॥ मथुरापति जिय अतिहि डेरान्यौ ।सभामाँझ असुरनिके आगे बार बार शिर धुनि पछितान्यौ । ब्रज भीतर उपज्यो मेरो रिपु मैं जानी यह बात । दिनही दिन बहु बढ़त जातुहैं मोको करिहै घात ॥ दनुजसुता पूतना पठाई छिनकहि माँझ सँहारी । घीच मरोरि कागसुर दीनो मेरे ढिग फटकारी ॥ अबहींते यह हाल करतुहै दिन दिन होत प्रकाश । सेनापतिन सुनाइ बात यह नृपमन भयो उदास ॥ ऐसो कौन मारिहै ताको मोहिं कहै सो आय । वाको मारि अपनपौ राखै सूर ब्रजहि सो जाइ ॥ ५२ ॥ अथ शकटासुरको कंस आज्ञा माँगन । गौड मलार ॥ नृपति बात यह सबनि सुनायो । सुहांचही सेनापति कीनो शकटासुर मन गर्व वढायो ॥ दोउ कर जोरि भयो तब ठाढो प्रभु आयसु मैं पाऊं । ह्यांते जाइ तुरतही मारों कहौ तो जीवत ल्याऊं ॥ यह सुनि नृपति हर्ष मन कीनो तुरतहि बीरा दीनों । बारंबार सूर कहि ताको आपु प्रशंसा कीनो ॥ ५३ ॥ गौड मलार ॥ पान लै चल्यो नृप आन कीन्हों । गयो शिरनाइकै गर्वही वढाइकै शकटको रूपधरि असुर लीन्हों ॥ सुनत घहरानि ब्रजलोग चक्रतभए कहा आघात ध्वनि करतु आवै । देखि आकाश चहुँपास दशहूँ दिशा डरे नर नारि तनुसुधि भुलावै ॥ आपु गयो तहीं जहँ प्रभु रहे पालने करगहे चरण अंगुठ चचोरहि । किलकि किलकि हँसत बाल शोभा लसत जानि तिहि कसत रिपु आयौ भोरहि । नेक फटक्यो लात शब्द भयो आघात गिरयो भहरात शकटा संहारयो ॥ सूर प्रभु नंदलाल दनुज मारयो ख्याल मेटि जंजाल ब्रजजन उबारयो ॥ राग विभास ॥ देखो सखी अद्भुत रूप अतूथ । एक अंबुज मध्य देखियत बीस उदधि सुत यूथ ॥ एकशुकहै जलचर उभय अर्क अनूप । पंच विराजे एकहि ढिग बहु सखि कौन स्वरूप ॥ शिशुतामैं शोभा भई करो अर्थ बिचारी । सूर श्रीगोपालकी छबि राखिय उरधारी ॥ ५४ ॥ राग विलावल ॥ कर पग गहि अँगुठा मुख मेलत । प्रभु पौढे पालने अकेले हरषि२अपने रँग खेलत॥शिव शोचत बिधि बुद्धि बिचारत वटबाढ्यो सागर जल झेलत । बिडरि चले घन प्रलय जानिकै दिगपति दिग दंतौन सकेलत॥ मुनि मन भीत भए भव कंपित शेष सकुचि सहसौ फन पेलत । उन ब्रजवासिन बात न जानी समुझे सूर शकट पगु पेलत ॥ ५५ ॥ चरणगहे अँगुठा मुख मेलत। नंदघरनि गावति हलरावति पलना पर किलकत हरि खेलत ॥ जो चरणारविंद श्रीभूषण उरते नेकु न टारति ॥ देखो धौकार सु चरणनमें मुखमेलत करि आरति । जा चरणारविंदके रसको सुर नर करत विवाद ॥ यह रस है मोको दुर्लभता ताते लेत सवाद । उछलत सिंधु धराधर कांप्यो कमठपीठ अकुलाइ । शेष सहसफन डोलन लाग्यो हरि पीवत जब पाइ ॥ बढयो वृक्षवर सुर अकुलाने गगनभयो उत्पात । महाप्रलयके मेघ उठे करि जहाँ तहाँ आघात ॥ करुणा करी

छांडि पशु दीनो जानि सुरन मन संस ॥ सूरदास प्रभु असुर निकंदन दुष्टनके उर गंस ॥९६ ॥ राग विहाग ॥ यशोदा मदनगुपाल सुवावै । देखि स्वप्न गति त्रिभुवन कंप्यो ईश विरंचि भ्रमावै ॥ असित अरुण सित आलस लोचन उभै पलक पर आवै । जनु रवि गति संकुचित कमल युग निशि अलि उडन न पावै ॥ चौंकि चौंकि शिशुदशा प्रगटकरि छवि मनमें नहिं आवै। जानौ निशिपति धरि करि अंमृत श्रुतिभंडार भरावै ॥ श्वास उदर उर सति यों मानो दुग्धसिंधु छबि पावै । नाभि सरोज प्रगट पद्मासन उतरि नाल पछितावै ॥ कर शिर तर करि श्याम मनोहर अलक अधिकसों भावै । सूरदास मानौ पन्नगपति प्रभु ऊपर फन छावै॥९७॥ राग बिलावल ॥अजिर प्रभा तेहि श्यामको पलका पौढाए । आपु चली गृहकाजको तहाँ नंद बुलाए ॥ निरखि हरषि मुख चूमिकै मंदिर पग धारी । आतुर नंद आए तहां जहँ ब्रह्म मुरारी ॥ हँसे तात मुख हेरिकै कर पग चतुराई । किलकि झटकि उलटे परे देवन मुनि पाई ॥ सो छवि नंद निहारिकै तहाँ महरि बुलाई ॥ निरखि चरित गोपालके सूरज बलि-जाई ॥९८॥ रामकली ॥ हरपे नंद टेरत महरि । आइ सुत मुख देखि आतुर डारिदै दधि टहरि॥ मथति दधि यशुमति मथानी ध्वनि रही घर गहरि । श्रवन सुनति न महरि वातैं जहाँ तहाँ गई चहरि ॥यह सुनत तव मातु धाई गिरे जाने झहरि । हँसत नंदमुख देखिधीरज तव कह्यो ज्यों ठहरि॥ श्याम उलटे परे देखे बढी शोभा लहरि । सूर प्रभु कर सेज टेकत कवहूँ टेकत ढहरि ॥ ९९ ॥ महरि मुदित उलटाइकै मुख चूंबन लागी । चिरु जीवो मेरो लाडिलो मैं भई सभागी ॥ एकपाख त्रयमासके मेरो भयो कन्हाई । पटक रानि उलटे परे मैं करौं बधाई॥ नंद घरनि आनँदभरी बोली ब्रजनारी । यह सुख सुनि आईं सबै सूरज बलिहारी ॥६०॥ यह सुख सुनि आईं ब्रजनारी। देखनकों धाईं वनवारी ॥ कोइ युवती आईं कौइ आवति । कोउ उठि चलति सुनत सुख पावति ॥ घर घर होत अनंद बधाई सूरदास प्रभुकी बलिजाई ॥ ६१ ॥ रामकली ॥ जननी देखि छबि बलिजाति॥ जैसे निधनी धनहि पाइ हरष दिन अरु राति ॥ बाललीला निरखि हरखि धनि धनि धनि ब्रजनारी ॥ निरखि जननी वंदन किलकत त्रिदश पति दैतारि॥धन्य नंद धनि धन्यगोपी धन्य ब्रजके वास। धन्य धरनी करन पावन जन्म सूरजदास ॥ ६२ ॥ राग बिलावल॥ यशुमति भाग सुहागिनी हरिको सुत जानै। मुख मुख जोरि वतावई शिशुताई ठानैं ॥ मो निधनीके धन रहै किलकत मनमोहन ॥ बलिहारी छविपर भई ऐसी बिधि जोवन॥लटकत वेसरि जननिकी इकटक चख लावै॥ पकरत वदन उठाइके मनही मन भावै॥ महरि मुदित हित उर भरे यह कहि मैं वारी । नंदसुवनके चरित पर सूरज बलिहारी॥६३॥ राग अ-सावारी ॥ गोद लिये हरिको नँदरानी अस्तन पान करावतिहै । बार बार रोहिणिको कहि कहि पलिका अजिर मँगावतिहै ॥ प्रातसमय रवि किरण कौवरी सो कहि सुतहि बतावतिहै । आउ धाम मेरे श्यामलाल आँगन बालकेलिको गावतिहै॥रुचिर सेज लै गई मोहनको भुजा उछंगि सुवा वतिहै ॥ सूरदास प्रभु सोई कन्हैया लहरावतिमलहरावति है ॥ ६४ ॥ राग बिलावल ॥ नंदघरनि आनंदभरी सुत श्याम खिलावै । कबहुँ घुटुरुवनि चलहिंगे कहि बिधिहि मनावै ॥ कबहूं दंतुली द्वै दूधकी देखों इननैननि।कबहूँ कमल मुख बोलिहैं सुनिहौं इन बैननि॥चूमति कर पग अधर पान लटकति लटचूमति । कहा वरणि सूरज कहै कहा पावै सोमति ॥ ६५ ॥ राग बिलावल ॥ मेरो नान्हरिया गोपाल वेगि बडो किनि होहि । इहि मुख मधुरे वयनहँसि कबहूं जननि कहोगे मोहि ॥ यह लालसा अधिक दिन दिनप्रति कबहूँ ईश करै॥मो देखत कबहूं हँसि माधव पगु द्वै धरनि धरै।हल धर सहित फिरै जव आँगन चरण सब्द सुख पाऊं ॥ छिन छिन क्षुधित जात पयकारन हौं हठि

निकट बुलाऊं। आगम निगम नेति करि गायो शिव उनमान न पायो। सूरदास बालक रस लीला मन अभिलाष बढ़ायो॥ ६६॥ अथ सप्तम अध्याय तृणावर्त वध गोडा तोरन॥ राग बिलावल॥ यशुमति मन अभिलाष करै। कब मेरोलाल घुटुरुवन रेंगै कब धरनी पग द्वैक धरै। कब द्वै दंत दूधके देखौं कब तुतरे मुख बैन झरै॥कब नंदहि कहि बाबा बोलै कब जननी कहि मोहि ररै।कब मेरो अचरा गहि मोहन जोइ सोइ कहि मोसों झगरै।कब धौं तनक तनक कछु खैहै अपने करसों मुखहि भरै॥कब हँसि बात कहैंगे मोहिसों छबि पेखत दुख दूरि करै। श्याम अकेले आँगन छाडे आपु गई कछु काज घरै। एहि अंतर अंधवाइ उठी इक गरजत गगन सहित घहरै॥ सूरदास ब्रज लोग सुनत ध्वनि जो जहाँ तहाँ सब अतिहि डरै॥ ६७॥ राग सूही॥ अति विपरीत तृणावर्त आयो। बात चक्र मिस ब्रजके ऊपरि नंद पँवरिके भीतर धायो॥पौढे श्याम अकेले आँगन लेत उड्यौ आकाश चढायो। अंधधुंध भयो सब गोकुल जो जहाँ रह्यो सो तहाँ छपायो॥ यशुमति आइ धाइ जो देखै श्याम श्याम करि शोर उठायो। धावहु नंद गोहारी लागौ किनि तेरो सुत अधवाइ उडायो॥ इहि अंतर आकाश ते आवत पर्वतसम कहि सबनि बतायो। मारचो असुर शिलासों पटक्यो आप चढे ता ऊपर भायो। दौरे नंद यशोदा दौरी तुरतहि लै हित कंठ लगायो। सूरदास यह कहत यशोदा ना जानौं बिधिनहिं कह भायो॥ ६८॥ राग बिलावल॥ शोभित सुभग नंदजूकी रानी।अति आनँद आँगनमें ठाढी गोदलिये सुत शारँगपानी॥तृणावर्तकी सुरति आनि जिय पठयो असुर कंस अभिमानी।गरू भये महिमें बैठाए सहि न परै जननी अकुलानी॥ आपुन गई सदनही दौरी काहू एक काज लपटानी।वोडरु महा भयावन आयो गोकुल सबै प्रलयकै जानी॥ महादुष्ट लै उडचो गोपालहिं चल्यो अकाश कृष्ण यह ठानी। चापि ग्रीव हरि प्राण हरे हग करत प्रवाह चल्यो अधिकानी॥पाहन शिला निरखि हरि डारचो ऊपर खेलत श्याम बिनानी। देति अभूषण वारि वारि सब सूरज पियत बारि सब पानी। ॥६९॥ राग धनाश्री ॥उबरचो श्याम महरि बडभागी।बहुत दूरिते आइ परचो घर देखहुँ मैं कहुँ चोट न लागी॥ रोगलेउँ बलिजाउँ कन्हैया यह कहि कंठ लगाई॥ तुमहींहौ ब्रजके जीवन धन देखत नैन सिराई। भली नहीं तेरी प्रकृति यशोदा छाँडि अकेलो जाति॥ गृहको काज इनहुते प्यारो नेकहु नहीं डेराति। भली भई अबकै हरि बाच्यो अबहूँ सुरति सम्हारि। सूरदास खिझि कहति ग्वालिनी मनमें महरि बिचारि॥ ७०॥ राग बिलावल॥ अब हौं श्याम बलिजाउँ हरी। निशि दिन रहति बिलोकति हरिमुख छाँडि सकति नहिं एक घरी॥हौं अपने गोपाल लडैहौं भौन चाउ सब रहौं धरी। पाए कहा खेलावनको सुख मैं दुखिया दुख कोटि भरी॥ जा सुखको शिव गौरि मनाई त्रिय व्रत नेम करी। सूर श्याम पाए पैडेमें मैं निधि राँक परी॥ ७१॥ राग धनाश्री॥ हरि किलकत यशुदाकी कनियां। निरखि निरखि मुख हँसति श्यामसों मो निधनीके धनियां॥ अति कोमल तनु श्यामको बार बार पछितात॥कैसे बच्यो जाउँ बलि तेरी तृणावर्तके घात।ना जानौं धौं कौन पुण्यते को करिलेत सहाइ॥ वैसो काम पूतना कीनो इहि ऐसो करि आइ। माता दुखित जानि हरि विहँसे नान्ही दँतुली दिखाइ। सूरदास प्रभु माता चितते दुख डारचो बिसराइ॥ ७२॥ सुत मुख देखि यशोदा फूली। हर्षित देखि दूधकी दँतिया प्रेममगन तनुकी सुधि भूली॥ बाहिरते तब नंद बुलाए देखौं धौ सुंदर सुखदाइ। तनक तनकसी दूधकी दंतियाँ देखौं नैन सुफल करौं आइ। आनँद सहित महर तब आए मुख चितवत दोउ नैन अघाइ। सूरश्याम किलकत द्विज देख्यो मानो कमल पर बीज जमाइ॥ ७३॥ रागनी श्रीहठी॥ जननी

बलिजाय हालरु हालरो गोपाल। दधिहि बिलोइ सदमाखन राख्यो मिश्री सानि चढावै नँदलाल ॥ कंचनके खंभ मयारि मरुवाडांडी खचि हीरा बिच लाल प्रवाल। रेशम बुनाइ नव रतन लाइ पालनो लटकन बहुत पिरोजालाल ॥ मोतिन झालरि नानाभाँति खिलौना रचे विश्वकर्मासुतिहार। देखि देखि किलकत दँतिया दो राजत क्रीडत विविध विहार। कठुला कंठ वज्रके हरिनख राजैं मसबिंदुका मृगमद भाल ॥ देखत देत अशीशब्रजजन नर नारी चिरजीवो यशोदा तेरो बाल। सुर नर मुनि कौतूहल फूले झूलत देखत नंदकुमार ॥ हरषत सुमन अपार वर्षत नभ ध्वनि छायो जैजैकार ॥ ७४ ॥ अथ अष्टम अध्यायनामकर्म। राग बिलावल ॥ महर भवन ऋषिराज गए। चरणधोइ चरणोदक लीनो अरघ आसन करि हेत दए ॥ धन्य आजु बडभाग्य हमारे ऋषि आए अतिकृपाकरी ॥ हमकहँ धनि धनि नंद यशोदा धनि यह ब्रज जहां प्रगट हरी। आदि अनादि रूप रेखा नहिं इनते प्रभु नहिं और बियो ॥ देवकी उदर अवतार लेनकह्यो दूध पीवन तव माँगिलियो। बालक करि इनको जिनि जानौ कंसको वध एकरिहैं ॥ सुर देह धरि सुरन उधारन भूमिभार ए हरिहैं ॥ ७५ ॥ धन्य यशोदा भाग्य तुम्हारो जिनि ऐसो सुतजायो। जाके दरशपरस सुख तन मन कुलको तिमिर नशायो ॥ विप्र सुजन चारण बंदीजन सकल नंद गृह आए। नौतम सुभग हरद दूब दधि हर्षित शीश बँधाए॥ गर्ग निरूप कहैं सब लक्षण अविगतिहैं अविनाशी सूरदास सुनतै यश हरिके आनंदे ब्रजवासी॥ ७६ ॥ अन्नप्राशनलीला ॥ कान्ह कुँवरकी करहु अन्नप्राशनी कछु दिन घटि षटमास गए। नंदमहर यह सुनि पुलकित जिय हरि अन्नप्राशन योग भए ॥ विप्र बुलाइ नाम लै बूझ्यो राशि शोधि इक दिनहि धरौ। आछो दिन सुनि महर यशोदा सखिन बोलि शुभ गान करौ ॥ युवति महरिको गारी गावति और महरको नाम लियो। ब्रज घर घर आनंद बढ्यो अति प्रेमपुलक न समात हियो ॥जाको नेति नेति श्रुति गावत ध्यावत शिव मुनि ध्यान धरे सूरदास तिनको ब्रज युवती झकझोरति उर अंक भरे ॥ ७७ ॥ राग सारंग ॥ आजु कान्ह करिहैं अनप्राशन।मणिकंचनके थार भराए भाँति भाँतिके वासन॥ नंदघरनि सब वधू बुलाई जे सब अपनीजाति। कोउ जिवनार करति कोउ घृत पक षटरसके बहुभांति॥ बहुत प्रकार किये सब व्यंजन अनेक वरन मिष्ठान। अति उज्ज्वल कोमल सुठि सुंदर महरि देखि मनमान॥यशुमति नंदहि बोलि कह्यो तब महर बुलाइ बहु जाति। आप गए नँद सकल महर घर लै आये सब ज्ञाति ॥ आदर करि बैठाइ सबनिको भीतर गये नँदराइ। यशुमति उबटि न्हवाइ कान्हको पटभूषण पहिराइ ॥ तन झँगुली शिरलाल चौतनी करचूरा दुहुँ पाइ। बारबार मुख निरखि यशोदा पुनि पुनि लेत बलाइ ॥घरी जानि सुत मुख जुठरावन नंद बैठे लै गोद। महर बोलि बैठारि मंडली आनँद करत विनोद॥ कंचनथार लै खीर धरी भरि तापर घृत मधु नाइ। नंद लैलै हरिमुख जुठरावत नारि उठीं सब गाइ ॥ षटरसके परकार जहांलगि लैलै अधर छुवावत। विश्वंभर जगदीश जगतगुरु परसत मुख करुवावत ॥ तनक तनक जल अधर पोंछिकै यशुमति पै पहुँचाए। हर्षवंत युवती सब लैलै मुख चूमति उर लाए॥महर गोप सबही मिलि बैठे पनवारे परुसाए। भोजन करत अधिक रुचि उपजी जो जेहिके मन भाए॥इहिविधि सुख विलसत ब्रजवासी धनि गोकुल नर नारी। नंदसुवनकी या छबि ऊपर सूरदास बलिहारी ॥ ७८ ॥ राग सारंग ॥ हरिको मुख माई मोहिं अनुदिन अति भावै। चितवत चित नैननिकी मति सबगति बिसरावै ॥ ललना लैलै उछंग अधिक लोभ सो लागे। निरखति निंदति निमिष करत ओट आगे ॥ शोभित शुभ कपोल अधर अल्प अल्प दशना।

किलकि बैन कहत मोहन मृदु रसना ॥ नासिका लोचन विशाल संतत सुखकारी । सूरदास धन्य भाग्य देखत व्रजनारी ॥ ७९ ॥ लालन तेरे मुखपरहो वारी । बालगोपाल लगौ इन नैननि रोगु बलाइ तुम्हारी ॥ लटलटकनि मोहन मिस बिंदुका तिलक भाल सुखकारी । मनहुं कमल अलि सावक पंगति उठत मधुप छबि भारी ॥ लोचन ललित कपोलनि काजर छबि उपजत अधिकारी । मुखमें सुख औरै रुचिबाढ़ति हँसत दैदै किलकारी ॥ अल्प दशन कलबल करि बोलनि विधि नहिं परत बिचारी । निकसति ज्योति अधरनिके विचह्वै मानौं विधुमें बीजु उज्यारी ॥ सुंदरताको पार न पावति रूपदेखि महतारी । सूरसिंधुकी बूंद भई मिलि मति गति दृष्टिहमारी ॥८०॥ राग धनाश्री ॥ लाल तेरे मुख ऊपर वारी ॥ बलि कैसे मेरे नैननि लागै लेउँ बलाइ तिहारी ॥ सुंदरताको पार न आवति रूप देखि महतारी । उरअंतर आनंद बढ़ावत हँसत देत किलकारी ॥ अल्पदशन तोतरावत बोलत छबि चितहु न जात बिचारी । सूर सिंधुकी बूँदभई मिलि मनसा मगन हमारी । ॥ ८१ ॥ राग जैतश्री ॥ लालन हौं वारी तेरे या मुख ऊपर । माई मेरिहि डीठि न लागै ताते मसि बिंदा दयो भ्रूपर ॥ सर्वसु मैं पहिलेही दीनी नान्हीं नान्हीं दँतुली दूपर । अब कह करौं निछावरि सूर यशोमति अपने लालन ऊपर ॥ ८२ ॥ लाला हौं वारी तेरे मुखपर । कुटिल अलक मोहन मन बिहँसत भ्रुकुटी बिकट नैननिपर । दमकति द्वैद्वै दँतुलिया बिहँसति मानौ सीपिज घरु कियो वारिजपर ॥ लघु लघु शिर लट घूँघरवारी लटकि २ रह्यो लिलार पर॥यह उपमा कहि कांपै आवै कछुक कहौं सकुचतिहौं हियपर ॥ नूतनचंद्र रेखमधि राजति सुरगुरु शुक्र उदोत परस्पर ॥ लोचन लोल कपोल ललित अति नासिकको मुक्तारद छंदपर । सूर कहा न्यौछावरि करिये अपने लाल ललित लर ऊपर ॥ ८३ ॥ अथ वरसगांठि-लीला ॥ राग बिलावल ॥ आजु भोर तमचरकी रोल । गोकुलमें आनंद होतहै मंगल ध्वनि महराने टोल ॥ फूले फिरत नंद अति सुख भयो हर्षि मँगावत फूल तमोल ॥ फूली फिरत यशोदा घर घर उबटि कान्ह अन्हवाइ अमोल ॥ तनक वदन दोउ तनक तनक कर तनक चरन पोंछत पट झोल ॥ कान्हगले सोहै कंठमाला अंग अभूषण अँगुरिन गोल ॥ शिर चौतनी दिठौना दीनें आँखि आंजि पहिराइनि चोल ॥ श्याम करत मातासों झगरो अटपटात कलबल कर बोल ॥ दोउ कपोल गहिकै मुख चुंबति वर्षदिवस कहि करत कलोल । सूर श्याम व्रजजन मन मोहन वरषगांठिको डोरा खोल ॥ ८४ ॥ राग धनाश्री ॥ अलि मेरे लालनकी आजु वरषगांठि सब सखनि बोलावो । शुभकरि मंगल गान करावो । चंदन आंगन सबनलिपावो । मोतिअनको तुम चौक पुरावो ॥ उमँग अंगनि आनँद तूर बजावो । मेरे कहे तुम विप्र बुलावो ॥ शुभ घरि एक आनि धरावो ॥ वागे वीरे बनि ठनि बनावो ॥आभूषण पहिरावो । अक्षत दूब बधावो॥ लालनकी वर्षगांठि जुरावो । इहै मोहि नैनन लाहो देखावो ॥ पंचरंग सारी मँगावो । बंधुजन सब पहिरावो॥नचैं सब उमँगि अंग बढावो । नंद रानी सब ग्वाल बुलावो ॥ इहै रीति कहि कहि सुनावो। वेगि करौ किनि विलँब लगावो । यशुमति तब नंद बोलावो ॥ लाल लिए कनियां देखरावो ॥ लग्नकी घरी तुरत अब आवो । मैंतो अन्हवाय बनावो ॥ अति सुख भयो वर गांठि जुरावो । सूरश्याम मुख छबिहि निहारति । तनमन धन युवती जन वारति ॥ ८५ ॥ राग आसावरी ॥ उमँगनि उमँगीहै व्रजनारी कान्हकी बरषगांठि बरष वरषनि । गावहिं मंगलगान नीके सुर नीकी तान आनंद हरषनि॥कंचनमणि जटित थार दधिरोचन फूल डार देखन चली नंदकुमार मिलिबेकी तर्सनि ॥ सूरदास प्रभुकी वरषगांठि जोरति यह छबिपर

तृन तोरति अरस परसनि ॥ ८६ ॥ श्रीकृष्णजीको कनछेदन लीला राग धनाश्री ॥ कान्ह कुँवरको कनछेदनोहै हाथ सुहारी भेली गुरकी। विधि विहँसत हरि हँसत हेरि हरि यशुमतिके धकधुकी उरकी ॥ रोचन भरि लै देत सींकसों श्रवण निकट अतिही चतुरकी ॥ कंचनके द्वै दुर मँगाइलिये कहै कहा छेदन आतुरकी। लोचन भरि भरि दोउ माताके कनछेदन देखत जिय मुरकी ॥ रोवत देखि जननि अकुलानी लियो तुरत नौवाको झरकी। हँसत नंदयुवती सब बिहँसी झमकि चली सब भीतर दुरकी॥ सूरदास नँद करत बधाई अतिआनंद बाला ब्रज पुरकी॥ जबहि भयो कनछेदन हरिको । सुरवनिता सब कहत परस्पर ब्रजवासी दासी समसरि को॥ गोपी मगन भई सब गावति हलरावत सुत महर महरि को॥ जो सुख मुनिजन ध्यान न पावत सो सुख नंद करत सब घरको॥मणि मुक्ता गण करत न्यवछावरि तुरत देत बिलम नहिं घरिको। सूर नंद ब्रजजन पहिरावत उमँगि चल्यो सुखसिंधु लहरको ॥ ॥ ८७ ॥ अथ घुटुरुवनिचलिबो ॥ खेलत नंद आंगन गोविंद । निरखि निरखि यशुमति सुख पावति वदन मनोहर चंद ॥ कटि किंकिनी कंठ मणिकी द्युति लट मुकुता भरि भाल । परम सुदेश कंठ केहरि नख बिच बिच वज्र प्रवाल ॥ कर पहुँचियाँ पांयन पैंजनी सुरतन रंजित रजपीत। घुटुरुनि चलत अजिर में विहरत सुखमंडित नवनीत ॥ सूर विचित्र कान्हकी बानक वाणी कहत नहीं बनिआवै। बालदशा अवलोकि सकल मुनि योग बिरति बिसरावै॥८८॥ राग आसावरी ॥ घुटुरुवन चलत श्याम मणि आंगन मात पिता दोउ देखत री॥ कबहुँक किलकिलात मुख हेरत कबहुँ जननि मुखपेखत री॥लटकन लटकत ललित भालपर काजरबिंदु भ्रुव ऊपर री। यह शोभा नैननि भरि देखैं नाहिं उपमा तिहुँ भूपर री। कबहुँक दौरि घुटुरुवन लटकत गिरत परत फिरि धावति री। इतते नंद बुलाइ लेतहैं उतते जननि बुलावत री॥ दंपति होड करत आपसमें श्याम खिलौना कीनो री॥ सूरदास प्रभु ब्रह्म सनातन सुत हित करि दोउ लीनो री ॥ ८९ ॥ राग सारंग॥ निरखि छबि फूलतहै ब्रजराज। उत यशुदा इत आपु परस्पर आडे रहे कर पाज ॥ किंकिंनि कटि मध्य प्रसारित भुज उभय मिलत फुनि लाज। झुमित लरत अलि सैन सरोज पर मन मकरंदके काज॥ अर्धगिरा मृदु स्रवत सुधा जनु पिवत श्रुति निपट आज। सूरदास प्रभु सुत रति २ करि लैलै ऊपर भ्राज ॥ ९० ॥ राग विलावल ॥ शोभित कर नवनीत लिये ॥ घुटुरुन चलत रेणु तनुमंडित मुख दधिलेप किये ॥ चारु कपोल लोल लोचन गोरोचन तिलक किये ॥ लट लटकनि मनो मत्त मधुप गन मादक मदहि पिये॥ कठुला कंठ वज्र केहरि नख राजत रुचिर हिये। धन्य सूर एको पल या सुख का शत कल्प जिये॥ ९१ ॥ राग ललित ॥ माई विहरत गोपाललाल मणिमय रच्यो अंगना परिरांगना घुटुरुवनि डोलै। निरखि निरखि अपनो प्रतिबिंब हँसत किलकत पाछे फिर फिर चितै मैया मैया बोलै॥ज्यों ज्यों अलिगण सहित विमल जल धाइ रहे कुटिल अलक वहनकी छबि अवनी प्रति लोलै ॥ सूरदास छबि निहारि थकित रहे सब घोपनारि तन मन धन देति वारि वारि ओलै॥ ९२ ॥ राग बिलावल॥ बाल विनोद खरो जिय भावत।मुख प्रतिबिंब पकरिबे कारन हुलसि घुटुरुवनि धावत ॥ छिनक माँझ त्रिभुवनकी लीला शिशुता माहँ दुरावत ॥ शब्दएक बोल्यो चाहतहैं प्रगट वचन नहिं आवत ॥ कमलनैन माखन माँगतहैं ग्वालनि सैन बतावत ॥ सूर श्याम सु सनेह मनोहर यशुमति प्रीति बढावत ॥९३॥राग सारंग॥बलिजाउं श्याम मनोहर नैन।अब चितवत मोहन करि अँखियन मधुप देत मनौं सैन ॥ कुंचित अलक तिलक गोरोचन शशिपूर ह-

रपे ऐन॥ कबहुंक खेलत जात घुटुरुवनि उपजावत सुख चैन॥ कबहुँक रोवत हँसतहैं बलिगई बोलत मधुरे बैन॥ कबहुँक ठाढे होत टेकि कर चालि न सकत इत गैन॥ देखत वदन करौं न्योछावरि तात मात सुखदैन॥ सूर बाललीलाके ऊपर वारौं कोटिक मैन॥ ९४॥ कान्हरो॥ आँगन चलत घुटुरुवन धाए। नीलजलद तनु श्यामसुख निरखि जननि दोउ निकट बुलाए॥ बंधुक सुमन अरुण पदपंकज अंकुश राम चिह्न बसिआए॥ नूपुर कलरव मनों सुतहँशनि रचे नीठ दै बाँह वसाए॥ कटि किंकिनि वरहार ग्रीवदर रुचिर बाहु भूषण पहिराए। उर श्रीवक्ष मनोहर केहरि नखनमें मध्य मणिगण बहु लाए॥ सुभग चिबुक द्विज अधर नासिका श्रवण कपोल मोहिं सुठि भाए॥ भ्रुव सुंदर करुणारस पूरन लोचन मनहु युगल जलजाए॥ भाल विशाल ललित लटकन मणि बालदशाके चिकुर सुहाए॥ मानो गुरु शनि कुज आगे करि शशिहि मिलन तमके गणभाए॥ उपमा एक अभूत भई तब जब जननी पट पीत उढाए॥ नील जलद पर उडगन निरखत तजि सुभाउ मनौ तडित छपाए॥ अंग अंग प्रति मार निकरि मिलि छबि समूह लैलै जनु छाए॥ सूरदास सो क्योंकरि वरणैं जो छबि निगम नेति करि गाए॥ ९५॥ धनाश्री॥ हौं बलि जाउँ छबीले लालकी॥ धूसरि धूरि घुटुरुवन रेंगनि बोलन वचन रसालकी॥ छिटकिरहीं चहुँदिशि जु लटुरियां लटकन लटकत भालकी॥ मोतिन सहित नासिका नथुनी कंठकमलदल मालकी॥ कछुक हाथ कछू सुखमाखन चितवनि नैन विशालकी॥ सूर सु प्रभुके प्रेम मगन भई ढिग न तजति व्रजबालकी॥ ९६॥ कान्हरो॥ सादर सहित विलोकि श्यामसुख नंदरूपलिये कनियाँ॥ सुंदर श्याम सरोज नील तनु अँग अँग सकल सुभग सुखदनियाँ॥ अरुण तरनि नखज्योति जगमगति झुनझुन करत पाइँ पैंजनियाँ॥ कनकरतन मणि जटित रचित कटि किंकिनि कलित पीतपट तनियाँ॥ पहुँची करनि पदिक उर हरिनख कठुला कंठ मंजु गजमनियाँ॥ रुचिर चिबुक द्विज अधर नासिका अतिसुंदर राजत सोंवनियाँ॥ कुटिल भ्रुकुटि सुखकी निधि आनन कपोलकी छबि नउ पनियाँ॥ भाल तिलक मसि बिंदु बिराजत शोभित शिश लाल चौतनियाँ॥ मनमोहन तुतरी बोलन मुनि मन हरत सु हँसि मुसकनियाँ॥ बाल स्वभाउ विलोकि विलोचन चोरत चितहि चारु चितवनियाँ॥ निरखति व्रज युवती सब ठाढी नंदसुवन छवि चंद्र वदनियाँ॥ सूरदास प्रभु निरखि मगनभए प्रेमविवश कछु सुधि न अपनियाँ॥ ९७॥ कान्हरो॥ बोलि लिए यशुमति यदुनंदहि॥ पीत झँगुलियाकी छबि छाजति विद्युलता सोहति मनौ कंदहि॥ वाजापति अग्रज अंवाते अरजथान सुत मालागंदहि॥ मनौ सुरग्रहते सुररिपु कन्या सौंते आवति ढुरिसंदहि॥ आरि करत कर चपल करतुतो नंदनारि आनन छुवै मंदहि। मनो भुजंग अरि परमलालची फिर फिर फिर चाटत सुभग सुचंदहि॥ ग्रुंगी बातनि यों अनुरागति भँवर गुंजरत कमलमौ बंदहि। सूरदास प्रभु सुतप किये बडे भाग्य यशोदा अरु नंदहि॥ ९८॥ राग धनाश्री॥ कहांलौं वरनौं सुंदरताइ॥ खेलत कुँवर कनक आँगनमें नैन निरखि छबि छाइ॥ कुलहि लसत शिर श्याम सुभग अति बहुबिधि सुरंग बनाइ। मानो नवघन ऊपर राजत मघवा धनुष चढाइ॥ अति सुदेश मृद हरत चिकुर मन मोहन मुख वगराइ। मानो प्रगट कंज पर मंजुल अलि अबली फिरि आइ॥ नील श्वेत परपीत लालमणि लटकनि भालरु नाइ॥ शनि गुरु असुर देवगुरु मिलि मनौ भौम सहित समुदाइ॥ दूधदंत दुति कहि न जाति अति अद्भुत एक उपमाइ॥ किलकत हँसत दुरत प्रगटत मनौ घनमें विद्युछपाइ॥ खंडित वचन देत पूरन सुख अल्प जल्प जलपाइ॥ घुटुरुन चलत रेणु तनु मंडित सूरदास बलिजाइ॥ ९९॥ नटनारायण॥ हरिजूकी बालछबि कहौं वरनि।

सकल सुखकी सींव कोटि मनोज शोभा हरनि ॥ भुज भुजंग सरोजनयननि वदन विधु जित लरनि ॥ रहे विवरन सलिल नभ उपमा अपर दुति उरनि ॥ मंजु मेचक मृदुल तनु अनुहरत भूषण भरनि ॥ मनहुँ सुभग शृंगार शिशु तरु फरचौ अद्भुत फरनि । चलत पद प्रति बिंब मणि आँगन घुटुरुवन करनि ॥ जलजसंपुट सुभग छबि भरि लेत उर जनु धरनि । पुण्यफल अनुभवति सुतहि विलोकिकै नंदघरनि ॥ सूर प्रभुकी बसी उर किलकनि ललित लरखरनि ॥ १०० ॥ राग धनाश्री ॥ किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत । मणिमय कनक नंदके आँगन मुख प्रतिबिंब पकरवेहि धावत ॥ कबहूं निरखि हरि आप छांहको करसों पकरनको चित चाहत। किलकि हँसत राजत द्वै दतियां पुनि पुनि तिहि अवगाहत ॥ कनक भूमि पर कर पग छाया यह उपमा एक राजत । कर कर प्रति पद प्रति मणि वसुधा कमल बैठकी साजत ॥बालदशासुख निरखि यशोदा पुनि पुनि नंद बुलावत।अचरा तर लै ढाकि सूरके प्रभुको जननी दूध पियावत॥१०१॥राग बिलावल। नंद धाम खेलत हरि डोलत । यशुमति करत रसोंई भीतर आपुन किलकत बोलत ॥टेरि उठी यशुमति मोहनको आवहुँ घुटुरुवन धाए । बैन सुनत माता पहिचानी चलै घुटुरुवनि पाए।लै उठाय अंचल गहि पोंछे धूर भरी सब देह । सूरज प्रभु यशुमति रज झारति कहां भरी यह खेह ॥ २ ॥ अथ पाँयन चलन समय ॥ सुहो बिलावल॥धनि यशुमति बडभागिनी लिये श्याम खिलावै।तनक तनक भुज पकरिकै ठाढो होन सिखावै॥लरखरात गिरि परतहैं चलि घुटुरुवनि धावै । पुनि क्रमक्रम भुजटेकिकै पग द्वैक चलावै ॥ अपने पाँयन कबहिंलौं मो देखत धावै । सूरदास यशुमति यह विधि सौंज मनावै ॥ ३ ॥ कान्हरो ॥ हरिको विमल यश गावत गोपंगना । मणिमय आँगन नंदरायके बाल गोपाल तहां करैं रंगना ॥ गिरि गिरि परत घुटुरुवनि टेकत खेलतहैं दोउ छगन मंगना । धूसरि धूरि धौत तनु मंडित मानु यशोदा लेत उछंगना ॥ वसुधा त्रयपद करत न आलस भयो कठिन परचौ देहरी उलंघना । सूरदास प्रभु व्रजवधू निरखत रुचिर हार हिए सोहतु बंधना ॥ ४ ॥ सुहो बिलावल ॥ चलन चहत पाँइन गोपाल । लै लगाइ अँगुरी नँदरानी मोहन सूरति श्याम तमाल॥ डगमगात गिरि परत पाँइनि पर भुज भ्राजत नँदलाल । जनो श्रीधरत श्रीधर अधोमुख धुकत धरनि मानौ नमिनाल॥ धूरि धौति तनु नैननि अंजन चलत लटपटी चाल । चरणरुणित नूपुर ध्वनि मानो सर विहरतहैं बाल मराल ॥ लट लटकनि शिर चारु चपोडा सुठि शोभा सोहै शिशु भाल । सूरदास ऐसो सुख निरखत जो जीजै जगमें बहुकाल॥५॥ बिलावल ॥ सिखवत चलन यशोदा मैया।अरबराइ कर पाणि गहावत डगमगाइ धरणी धरै पैया॥ कबहुँक सुंदर वदन विलोकति उर आनँद भरि लेत बलैया । कबहुँक बलिको टेरि बुलावति इहि अंगन खेलो दोउ भैया ॥ कबहुँक कुलदेवता मनावत चिरजीवै मेरो बाल कन्हैया । सूरदास प्रभु सब सुखदायक अति प्रताप बालक नँदरैया ॥ ६ ॥ सूहो बिलावल ॥मणिमयआंगन नंदके खेलत दोउ भैया ।गौर श्याम जोरी बनी बलराम कन्हैया॥लटकन ललित लटुरियाँ मसि बिंदु गोरोचन। हरि नख उर अति राजहिं संतनि दुखमोचन ॥ संग संग यशुमति रोहिणी हितकारनि मैया ।चुटकी देहि नचावहि सुत जानि नन्हैया॥नील पीत पट ओढनी देखत जिय भावैं । बालविनोद अनंदसों सूरज जन गावै ॥७॥ राग धनाश्री ॥ आँगन खेलें नंदके नंदा । यदुकुल कुमुद सुखद चारु चंदा ॥ संग संग बलमोहन सोहैं । शिशुभूषण सबको मन मोहै॥ तनुद्युति मोरचंद्र जिमि झलकै ।उमँगि उमँगि अँग अँग छवि छलकै॥कटि किंकिनि पग नूपुर बाजै पंकज पाणि पहुँचिया राजै ॥ कठुला कंठ बघनहा नीके । नयन सरोज मयन सरसीके ॥ लटकन

ललित ललाट लटूरी। दमकत द्वैद्वै दँतुरियारूरी। मुनिमन हरत मंजु मसिबिंदा। ललित वदन बल बाल गोविंदा॥ कुलही चित्र बिचित्र झगूली। निरखि यशोदा रोहिणिफूली॥ गहि मणिखंभ डिंभ डग डोलैं। कलबल वचन तोतरे बोलैं॥ निरखत छबि झाँकत प्रतिबिंबै। देत परमसुख पितु अरु अंबै॥ व्रजजन देखत हिय हुलसाने। सूरश्याम महिमा को जाने॥ ८॥ राग नटनारायण॥ बलिगई बालरूप मुरारि। पाँयपैजन रुनु झुन नचावति नंदनारि॥ कबहूँ हरिको लाइ अंगुरी चलन सिखावति ग्वारि। कबहूँ हिरदै लगाइ हितकरि लेति अंचल डारि॥ कबहुँक हरिको चितै चूमति कबहूँ गावति गारि। कबहूँ लै पाछे दुरावति ह्यां नहीं बनवारि॥ कबहूँ अंग भूषण बनावति राई लोन उतारि। सूर सुर नर सबै मोहे निरखि यह अनुहारि॥ ९॥ बिलावल॥ भावत हरिको बाल विनोद। श्याम राम मुख निरखि प्रमोदित रोहिणि जननि यशोद॥ आँगन पंकराग तनु शोभित चले नूपुर ध्वनि सुनि मन मोद। परमसनेह बढावत मातनि रवाकिरहरि बैठत गोद॥ अति श्रीचपल सकल सुखदायक निशिदिन रहत केलिरस श्रोद। सूरश्याम अंबुज दल लोचन फिरि चितवत व्रजवनिता कोद॥ बालविनोद आँगनकी डोलनि। मणिमय भूमि नंदके आलय बलि बलि जाउँ तोतरी बोलनि॥ कठुला कंठ रुचिर केहरि नख वज्रमोल बहुलाल अमोलनि। बदनसरोज तिलक गोरोचन लट लटकन मधु पंकति लोलनि॥लौनी कर आनन परसतहैं कछुक खाइ कछु लग्यो कपोलनि। कहि जन सूर कहांलौं वरणौं धन्य नंद जीवन युग तोलनि॥ १०॥ राग बिलावल॥ गहे अंगुरिया तातकी नंद चलन सिखावत। अरबराइ गिरिपरतहैं करटेकि उठावत॥ बारबार बकि श्यामसों कछु बोल बकावत। दुहुंघा द्वै दँतुली भई अति मुखछबि पावत॥ कबहुँ कान्ह कर छाँडि नंदपग द्वै करि गावत।कबहूं धरणिपर बैठिकै मनमें कछु गावत॥ कबहूँ उलटि चलैं धामको घुटुरुन करि धावत। सूरश्याम मुख देखि महरमन हर्ष बढ़ावत॥ ११॥ धनाश्री॥ कान्ह चलत पग द्वैद्वै धरनी।।जो मनमें अभिलाप करतही सो देखत नँदघरनी॥ रुनुक झुनुक नूपुर बाजत पग यह अतिहै मन हरनी। बैठजात पुनि उठत तुरतही सो छबि जाइ न बरनी॥ व्रजयुबती सब देखि थकित भई सुंदरताकी सरनी। चिरजीवो यशुदाको नंदन सूरदासको तरनी॥ १२॥ राग बिलावल॥ चलत श्याम घन राजति पैंजन पग पग चारु मनोहर। डगमगात डोलत आंगनमें निरखि विनोद मोहे सुर मुनि नर॥ अरु मन मुदित यशोदा जननी पाछे फिरत गहे अंगुरी कर। मनो धेनु तृण छांडि बच्छहित प्रेम पुलकि चित स्रवत पयोधर॥ कुंडल लोल कपोल विराजत लटकन ललित लटुरिया भूपर। सूर श्याम सुंदर बिलोकनि रहत बालगोपाल नंदघर॥ १३॥ राग गौरी॥ भीतरते बाहरलौं आवत घर आंगन अति चलत सुगम भयो देहरीमें अटकावत॥ गिरि गिरि परत जात नहिं उलंघी अति श्रम होत न धावत। अहुठपैर वसुधा सब कीन्ही धाम अवधि बिरमावत॥ मनहीमन बलबीर कहतहैं ऐसे रंग बनावत। सूरदास प्रभु अगणित महिमा भक्तनके मन भावत॥ १४॥ राग धनाश्री॥ चलत देखि यशुमति सुख पावै। ठुमुकु ठुमुकु धरनी धर रेंगत जननी देखि दिखावै॥ देहरीलौं चालि जात बहुरि फिरि फिरि इतहीको आवै। गिरि गिरि परत बनत नहिं नांघत सुर मुनि शोच करावै॥ कोटि ब्रह्मांड करत छिन भीतर हरत विलंब न लावै। ताको लिए नंदकी रानी नानारूप खिलावै॥ तब यशुमति कर टेकि श्यामको क्रमक्रमकै उतरावै। सूरदास प्रभु देखि देखि सुर नर मुनि मन बुद्धि भुलावै॥ १५॥ राग भैरव॥ सो बल कहाँ गयो भगवान। जिहि बल मीनरूप जल थाह्यो लियो निगम हति असुर पुरान॥ जेहि बल कमठपीठ पर गिरिधर सजलसिंधु नथि

कियो विमान ॥ जिहिबल रूप वराह दशनपर राखी पुहुमी पुहुप समान ॥ जेहि बल हिरणकशिपु तनु फारचो भए भक्तको कृपानिधान ॥ जेहि बल बलि बंधन करि पठयो त्रैपद वसुधा करी प्रमान। जेहि बल विप्र तिलकदै थापे रक्षा आपु करी विदमान ॥ जेहि बल रावणके शिर काटे कियो विभीषण नृपति समान ॥ जेहि बल जाम्बवंत मद मेट्यो जेहि बल ध्रुवबिनती सुनि कान । सूरदास अब धाम देहरी चढ़ि न सकत हरि खरेई अयान ॥ १६ ॥ आसावरी ॥ देखो अद्भुत अविगतिकी गति कैसो रूप धरयोहै हो॥तीन लोक जाके उदर भवन सो सूपके कोन परचो है हो ॥ जाके नालरुद्र ब्रह्मादिक सकल योग व्रत साधैं हो।तिनको नालछीनि व्रजयुवती बाँटि तगासों बाँधें हो जाके मुख सनकादिक तप कियो सकल चतुरई ठानीहो । सो मुख चूमति महरि यशोदा दूध लार लपटानी हो ॥ जिन काननि गजसंकट सुनिकै गरुडासन बिसरावै हो ॥ तिन कानन ह्वै निकट यशोदा हलरावै (दुलरावै) गुन गावै हो । विश्वभरण पोषण सब समरथ माखनकाज अरे है हो ॥ रूप विराट रोम प्रति कोटि सुपलना माँझ परेहैं हो ॥ जिन्हहिं भुजा प्रहलाद उवारचो हिरणकशिपु तनु फारे हो ॥ सो भुज पकरि कहत व्रज युवती ठाढी होहु ललारे हो ॥ जाको ध्यान धरें सुर मुनि जन शंभु समाधि न टारी हो ॥ सो ठाकुरहै सूरदासको गोकुल गोप विहारी हो ॥ १७ ॥ आसावरी ॥ आनंद प्रेम उमँगी यशोदा लालरी खिलावै॥शिव सनकादि शुकादि ब्रह्मादिक खोजत अंत न पावै॥गोद लिए हँसिकै हलरावत तोतरे बोल बोलावै ।। दैकर ताल बजावति गावति राग अनूपम ल्हावै । कबहूँक करपल्लव आनि गहावति आँगन माँझ रिझावै। मोहिलियो सुरव्योम विमानन रवि नहिं रथहि चलावै ॥ कबहुँ कहिलकै किलकै जननी मन सुखसिंधु बढावै । मोहिरही व्रजकी युवती सब सूरदास यश गावै॥ १८॥ राग कान्हरो ॥ हरिहित मेरो माधैया । देहरी चढत परत गिरि गिरि कर पल्लव जो गहत है री मैया।भक्ति हेतु यशुदाके आये चरण धरणिपर धारैया । जिनहि चरण छलिबो बलिराजा नखप्रसेद गंगा जो बहैया॥जिहि स्वरूप मोहे ब्रह्मादिक कोटि भानु शशि उगैया।सूरदास प्रभु इन चरणनकी मैं बा लि मैं ब लिजैया ॥१९॥ राग सूहो॥आँगन श्याम नचावहि यशोमति नंदरानी।तारी दैदै गावही मधुरी मृदुवानी॥ पाँयन नूपुर बाजई कटिकिंकिनी कूजै।नन्ही नन्ही एडिअन अरुणता फलबिंबन पूजै॥यशुमति गान सुनै श्रवण तव आपुन गावै॥तारी बजावत देखहि पुनि तारी बजावै ॥ केहरि नख उरपर सुठि शोभा कारी । मानौ श्याम घन मध्यमें नौ शशि उजियारी ॥ गभुआरे शिर केशहैं ते बधू सँवारे । लटकन लटकै भालपर विधु मधि गण तारे ॥ कठुला कंठ चिबुक तरे मुख हँसनि विराजै । खंजन मीन शुक आनिकै मानौ परे दुरावै ॥ यशुमति सुतहि नचावई छबि देखत जियते। सूरदास प्रभु श्यामके सुख टरत न हियते ॥२०॥ राग बिलावल ॥ त्यों त्यों नाचोरी मनमोहन धाम मधुर सुर होई । तैसियै किंकिनि हरि पग नेपुर रसहि मिले सुर दोई ॥ कंचनको कठुला मनमोहत तिन बघनहा बिचपोई। निरखि निरखि सुख नंद सुवनको सुर मन आनँद होई ॥ देखत बनै कहत नहिं आवै उपमा को नहिं कोई । सूर भवनको तिमिर नशायो निरखत जननि यशोई ॥ २१ ॥ राग आसावरी ॥ जबते मैं खेलत देखो आँगन री यशुदाको पूत री । तबते गृहसों नाहिन नातो टूट्यो जैसो काचो सूत री॥ अतिविशाल वारिजदल लोचन राजति काजर रेख री । इच्छासौं मकरंद लेत मनों आलि गोकुलके वेषरी ॥ श्रवणन नहि उपकंठ रहतहै अरु बोलत तुतरात री । उमँगे प्रेम नैन मगनह्वैकै काँपे रोके जात री ॥ दमकत दोउ दूधकी दतियाँ जग मग जग मग होत री । मानौं सुंदरता मंदिरमें रूपरतनकी ज्योति री॥सूरदास देखौ सुंदर मुख आनँद उर न समाइ री॥मानौं कुमुद कामना पूरण पूरण इंदुहि पाइ री॥२२॥अद्भुत एक चितयो हौं सजनी नंदमहरके आँगन री।सो मैं निरखि अपनपो खोयो

गई मथनियां मागन री ॥ बालदशा मुखकमल विलोकत कछु जननीसों बोलै री।प्रगटत हँसत दँतिया मानौ सीप दुरेदल ओलै री ॥ सुंदरभाल तिलक गोरोचन मिलि मसिबिंदुक लाग्यैरी । मनो मकरंद अचै रुचिके अलि सावक सोई न जाग्यौ री ॥ कुंडललोल कपोलन झलकत मनो दर्पणमें झाई री ॥ रही विलोकि बिचारि चारु छबि परमिति काहु न पाई री । मंजुल तारनकी चपलाई चितु चतुरानन करपै री ॥ मनो शरासन समर धरे कर भौंह चढे शरवरषै री । जलधि थकित जनौं काग कपोत ज्यों कुलन कबहूं आयो री । ना जानौं केहि अंग मगन मन चाहि रह्यो नहिं पायो री ॥ कहां लगि कहौं बनाइ वरणि जितनी छबि निरखत हारी री । सूर श्यामके एक रोमपर देहु प्राण बलि हारी री ॥ २३ ॥ राग धनाश्री ॥ यशोदा तेरो चिरजीवहु गोपाल । बेगि बढोबल सहित वृद्धलठ महरि मनोहर बाल ॥ उपजि पर्‍यो इह कोख कर्मवश सुँदी सीप ज्यों लाल । या गोकुलके प्राणजीवन वैरिनके उर शाल ॥ सूर कितो मन सुख पावतहै देखे श्याम तमाल ॥ रुजि आरति लागो मेरी अँखियन रोग दोष जंजाल ॥ २४ ॥ सांरग असावरी ॥ आजु गई हौं नंदभवनमें कहा कहों ग्रहचैनु री । बहुअंग चतुरंग छलमो कोटिक दुहियतु धेनु री ॥ घूमिरहे जित तित दधि मथना सुनत मेघ ध्वनि लाजै री।वरणौं कहा सदनकी शोभा वैकुंठहूते राजै री ॥ बोलिलई नववधू जानिकै खेलत जहाँ कन्हाई री । मुख देखत मोहनीसी लागत रूप न वरण्यो जाई री ॥ लटकन लटकि रहे भ्रू ऊपर पँचरँग मणिगण पोहै री । मनहु गुरु शनि शुक्र एक होइ लाल भाल पर सोहै री ॥ गोरोचनको तिलक निकटही काजर बिंदुकु लाग्यौ री । मानहु कमल गुनपीयराग रस निशिअलिसुत सोइ जाग्यौ री॥ विधु आनन पर दीरघ लोचन नासा लटकत मोती री । मानौं सोम संग करिलीनो जानि आपनो गोती री ॥ सीपजमाल श्याम उर सोहै बिच बचना छबि पावै री । मानौं द्वैजशशि नखत सहितहै उपमा कहत न आवै री ॥ वरणो कहा अंग अंग शोभा भाव धरौ जलराशी री ॥ बाल लाल गोपाल हि वर्णत कविकुल करिहै हांसी री॥शोभासिंधु अगाधबोध बुधउपमा नाहिन और री । रूपदेखि तनु थकित रहीहो मनौ भेइभरेकौ चोर री॥ जो मेरी अँखियां रसना होती कहती रूप बनाइ री । चिरजीवो यशुदाको नंदन सूरदास बलिजाइ री ॥२५॥ वलभद्रवचन ॥ राग बिलावल ॥ कलबलते हरि हारपरे । नवरँग विमल जलद पर मानौं द्वै शशि आनि अरे ॥ तब गिरि कमठ सुरासुर सर्पहि धरत न मनमें नेक डरे । तिन भुज भूषण भार परत कर गोपिनके आधार धरे ॥ चंद्रवदन मानौं मथि काढ्यो विहँसनि मनहु प्रकाश करै ॥ सूरश्याम दधि भाजन भीतर निरखत मुख मुखते न टरै ॥ २६॥ मथत दधि मथनी टेक रह्यो। आरि करत मटुकी गहि मोहन वासुकि शंभु डरप्यो । मंदर तरत सिंधु पुनि कांपत फिरि जनि मथन करै । प्रलय होत जानि गहो मथानी प्रभु मर्याद टरै॥ सुर अरि सुर ठाढे सब चितवैं नैनानि नीर ढरै । सूरदास प्रभु मुग्ध यशोदा मुख दधिबिंदु गिरै ॥ २७ ॥ जब दधिरिपु हरि हाथलियो खगपति अरिडर लै शंकत बासर पति आनंद कियो ॥ बिधि शिर धुनि सकुचत शिव सोचत गरलादिक कैसे जात पियो ॥ अति अनुराग संग कमलातान प्रफुलित अंगन अमित हियो ॥ एकन दुख एकन सुख उपजत को ऐसो न विनोद कियो । सूरदास प्रभु तुमरे महतहि एक एकते होत बियो ॥ २८ ॥ राग धनाश्री ॥ जब मोहनकर गही मथानी । परसतवार दधि माट नेत चित उदधि शैल वासुकि भय मानी ॥ कबहुँक अहुठ परग करि वसुधा कबहुँक देहरी उलंघि न जानी ॥ कबहुँक सुर मुनि ध्यान न पावत कबहुँ खिलावति नंदकी रानी । कबहुँक अपर खिरनही भावत कबहूँ मेखली उदर समानी ॥ कबहुँक आर करत माखन की कबहुँक भेष दिखाइ बिनानी । कबहुँक अखिल उदर नहिं तर्पित कबहुँक दल माखन रुचि मानी॥सूरदास प्रभुकी यह लीला परत न महिमा शेष बखानी ॥२९॥ राग बिलावल नंदजूके वारे कन्हैया छांडिदे मथनियाँ । बार बार कहै मात यशोमति रनियाँ ॥ नेक रहौ माखन देउँ

मेरे प्राण धनियां। आरि जिनि करौ बलिजाउँहौ निधनीके धनियां ॥ सुर नर जाको ध्यान धरैं गावैं मुनि जनियां ॥ ताको नँदरानी मुख चुंबतिहै लिए कनियां।सहसानन गुणगाने गनत नहीं बनियां। सूरश्याम देखि सब भूली गोप धनियां ॥ १२० ॥ यशुमति दधि मथन करति बैठी वरधाम अजिर ठाढे हरि हँसत नान्हीसी दतिआन छबिछाजै ॥ चितवत चित लेइ चोराई शोभा बरणि न जाई मुनि नके मनहरनको मनमोहनि दलसाजै ॥ जननि कहति नाचौ तुम देहौं नवनीत मोहन रुनुकु झुनुकु चलत पांइन चायन नूपुर बाजै। गावत गुण सूरदास यश बाढ्यो भुव अकाश नाचत त्रैलोक नाथ माखनकेकाजै ॥१२१॥ प्रात समय दधि मथत यशोदा अति सुख कमलनयन गुणगावति ॥ अतिहि मधुरगति कंठ सुघर अति नंदसुवन चित हितहि करावति ॥ नीलवसन तनु सजल जलद मानौ दामिनि विविभुजदंड चलावति। चंद्रवदन लट लटकि छबीली मनहुँ अमृतरस राहु चुरावति॥ गोरस मथत नाद इक उपजत किंकिनि धुनि सुनि श्रवण रमावति। सूरश्याम अचराधरे ठाढे काम कसौटी कसिदेखरावति ॥ २२ ॥ ललित ॥ छोटी छोटी गुडियां अंगुरियां छोटी छबीली नख ज्योति मोती मानौ कंजदलनपर ॥ ललित आँगन खेलै ठुमुकु ठुमुकु डोलै झुनुक झुनुक बाजै पैजनी मृदुमुखर। किंकिनी कलित कटि हाटक रतन जटित मृदु कर कमल पहुचिया रुचिर वर ॥ पियरी पिछौरी झीनी और उपमा भिनी बालक दामिनि मानौं ओढे वारो वारिधर ॥ उरबघनहा कंठकठुला झडूले वार बेनी लटकन मस बिंदु मुनि मनहर ॥ अंजन रंजित नयना चितवनि चितचोरैमुखशोभा परवारौं अमित असमसर। चुटुकी बजावति नचावति नंद घरनि बालकेलि गावत मल्हावति प्रेम सुघर ॥ किलकि किलकि हँसै द्वैद्वै दँतुरिया लसैं सूरदास मनवसै तोतरे वचनवर ॥ २३ ॥ राग बिलावल ॥माधव तनकसे वदन तनकसे चरन भुज तनकसे करन पर तनक माखन॥तनकसीबातजो कहत तनकसे तनक रिझि रहे तनक सुधन ॥ तनक कपोल तनकसी दंतुलिया तनक अधर अरु तनक हँसन पर हरत हो मन। तनकहि तनक जो सूर निकट आवै तनक कृपाकरि दीजै तनक शर नन॥माधव तनक चरन अरु तनक तनक भुज तनक बदन बोलै तनकसे बोल। तनक कपोल तन कसी दँतिया तनक हँसन पर लेतहौ मन मोल ॥ तनक करनपर तनक माखन लिये देखत तनक जाके सकल भुअन। तनक सुनै सुयश पावत परमगति तनक कहत तासों नंदसुवन ॥ तनक रीझ पर देत सकल तन तनक चितै चितवन चितके हरन ॥ तनकहि तनक तनक करि आवै सूर तनक तनक दीजै तनक शरन॥ २४ ॥ राग कान्हरो ॥ गोद खिलावति कान्हसुनो बडभागिनिहो नँदरानी ॥ आनँदकी निधि मुख लालको ताहि निरखि निशिवासर सोतो छवि क्योंहूँ नजाति बखानी ॥ गुणअपार बहु विस्तार कहि न परत निगमागमवानी। सूरदास प्रभुको लिये यशुमति गोदखिलावति चितै मुसुक्यानी ॥ २५ ॥ राग गौरी ॥मेरे माई श्याम मनोहर जीवनि॥ निरखि नयन भूलेते वदन छबि मधुर हँसनि पेपीवनि। कुंतल कुटिल मकर कुंडल भ्रुव नैनविलोकनि वंक। सिंधुसुधाते निकसि नयो शशि राजत मनौ मृगअंक॥ शोभित सुमन मयूर चंद्रिका नीलनलिन तनुश्याम। मानहुनक्षत्र समेत इंद्र धनु सुभग मेघ अभिराम॥परमकुशलकोविद लीलानट मुसुकनि मन हरिलेत। कृपा कटाक्ष कमल कर फेरत सूर जननि सुखदेत॥ २६ ॥ राग आसावरी ॥ वेद कमल मुख परसत जननी अंक लिये सुतरति करि श्याम। परमसुभग जु अरुन कोमल रुचि आनंदित मनु पूरणकाम ॥ आलंबितजु पृष्ठ बल सुंदर परस्पर चितवत हरि राम। झाँकि उझकि हँसत दोऊ सुत प्रेम मगन भई इकटक जाम॥ देखिस्वरूप न रही कछू सुधि टूरी तबहिं कंठते दाम। सूरदास प्रभु शिशुलीला रस आवहु नंद देखि सुखधाम ॥ २७ ॥ राग गौरी ॥ शोभा मेरे श्यामहिपै

सोहै। बलि बलि जाउं छबीले मुखकी या पटतरको को है॥ या बानक उपमा दीबेको सुकबिक हाटक टोहै। देखत अंग थके मनमें शशि कोटि मदन छबि मोहै॥ शशिगण गारि कियो विधि आनन बंकभौंह मिलि जोहै। सूर श्याम सुंदरता निरखत मुनिजनको मन मोहै॥३८॥ राग बिलावल॥ बाल गोपाल खेलौ मेरे तात। बलि बलि जाउँ मुखारविंदकी अमी वचन बोलत तुतरात॥ उनींदे नयन बिशालकी शोभा कहत न बनि आवै कछु बात। दूर खरे सब सखा बुलावत नयन मीडि उठि आए प्रभात॥ दुहुँकर माठ गह्यो नँदनंदन छिटकि बूंद दधि परत अघात॥। मानहुं गजमुक्ता मर्कत पर शोभित सुभग साँवरे गात॥ जननी प्रति माँगत मनमोहन दे माखन रोटी उठि प्रात। लोटंत पुहुमि सूर सुंदर घन चारि पदारथ जाके हाथ॥ ३९॥ पालने झूलो मेरे लाल पियारे॥ मुसकनिकी हौं बलि बलि करौं तिल तिल हठ न करहु जे दुलारे। काजर हाथ भरो जिनि मोहन ह्वैहैं नैन अतिही रतनारे। शिर कुलही पहिराय पैंजनी तहाँ जाहु जहाँ नंदबबा रे॥ यह विनोद देखत धरणीधर मात पिता बलभद्र ददा रे॥ सुर नर मुनि कौतूहल भूले देखत सूर श्याम हैं कारे॥ ४०॥ क्रीडत प्रात समय दोउ बीर॥ माखन माँगत बात न मानत झकत यशोदा जननी तीर॥ जननी मध्य सन्मुख संकर्षण ऐंचत कान्ह खस्यो तनु चीर॥ मनो सरस्वती संग उभै द्विज राम कृष्ण अरु नील कंठीर॥ सूरश्याम गही कुबरी कर मुक्ता मांग गही बलबीर। ताहन भखुलीनो अप अपनो मानहु लेत निबैरनि सीर॥४१॥ गोपाल राइ दधि मांगत अरु रोटी। माखन सहित देहि मेरि जननी सुपक समंगल मोटी॥ कतहो आरि करत मेरे मोहन कहत तुम आँगन लोटी। जो माँगहु सो देहुँ मनोहर यहै बात तेरी खोटी॥ प्रातकाल उठि देहुँ कलेऊ वदन चुपरि अरु चोटी। सूरदासको ठाकुर ठाढो हाथ लकुट लिये छोटी॥ ४२॥ हरिकर राजत माखन रोटी। मनौ वारिज शनि वैरु जानि जिय गह्यो सुधा शिशु घोटी॥ मनौ वराह भूधर सहपति धरी दशननकी कोठी। शनि शिशु मेलि मुख अंबुज भीतर उपजी उपमा मोठी॥ नम्र गात मुसक्यात तात ढिग निरत करत गहि चोटी। सूरज प्रभुकी इहै जु जूठनि लालन ललित लपेटी॥४३॥ दोउ भैया मैयापै माँगत दे माँ माखन रोटी। सुनी भावती एक बात सुतनकी झूठेहि धामके काम अगोटी॥ बलजू गह्यो नासिका मोंती कान्हकुँवर गही दृढ़ कर चोटी। मानहु हंस मोर भख लीने कविजन कहै उपमा कछु छोटी॥ यह छबि देखत महरि अनंदित महर हँसत लोटि लोटी॥ सूरदास प्रभु मुदित यशोदा भाग बडे करमनिकी मोटी॥४४॥ राग आसावरी॥ तनिक दैरी माइ। माखन तनक दैरी माइ॥ तनिक करपर तनिक रोटी मांगत चरन चलाइ॥ कनक भूपर रतनकी रेखा नेक पकरयो धाइ॥ कंपिआगिरि शेष शक्यो उदधि चलो अकुलाइ॥ जा मुखको ब्रह्मादिक लोचैं सो मांगत ललचाइ। ईशके वेग दरशदीजै व्रज बालक लेत बलाइ॥ माखन मांगत श्याम सुंदर देत पग पटकाइ॥ तनक मुखकी तनक बतियां मांगतहैं तोतराइ॥ मेरे मनको तनिक मोहन लागु मोहि बलाइ॥ श्याम सुंदर गिरिधरनि ऊपर सूर बलि बलि जाइ॥४५॥ राग बिलावल॥ निक रहौ माखनद्यों तुमको। ठाढी मथति जननि दधि आतुर लवनीं नंद सुअनको॥ मैं बलि जाउँ श्याम घन सुंदर भूख लगी तुम भारी। बात कहूंकी बूझति श्यामहि फेर करत महतारी॥ कहत बात हरि कछू न समुझत झूठेहि देत हुंकारी। सूरदास प्रभुके गुण गावत तुरतहि बिसरिगई नँदनारी॥ ॥ ४६॥ बातनहीं सुत लाइ लियो। तबलौं मथि दधि जननी यशोदा माखन करि हरि हाथ दियो॥ लैले अधर परसकरि जेंवत देखत फूल्यो गात हियो। आपुहिं खात प्रशंसत आपुहिं माखन

रोटी बहुत प्रियो ॥ जो प्रभु शिव सनकादिक दुर्लभ सुतहित वशकरि नंदप्रियो । यह सुख निरखत सूरज प्रभुको धन्य धन्य फल सुफल जियो ॥४७॥ अथ बालवेष वर्णन ॥ वरनों बालभेष मुरारि । थकित जित कित अमर मुनिगण नंदलाल निहारि॥केश शिर बिन पवनके चहुँ दिशा छिटके झारि । शीश पर धरे जटा मानौ रूप कियो त्रिपुरारि ॥ तिलक ललित ललाट केशर बिंदु शोभा कारि । रेखा अरुन ज्योति तिय लोचन रह्यों जनु रिपु जारि ॥ कंठ कठुला नीलमणि अंभोजमाल सँवारि । गरल गिरि बकपाल उर अहि भाय भए मदनारि ॥कुटिल हरिनख हिये हरिके हरष निरखति नारि । ईश जनु रजनीश राख्यो भालहूते उतारि ॥ सदन रज तन श्याम शोभित सुभग इहि अनुहारि । मनहुँ अंग विभूति राजत शंभुसो मधुहारि ॥ त्रिदशपति पति अशनको अति जननिसों करै आरि । सूरदास विरंचि जाको जपत निज मुख चारि॥४८॥ सखीरी नंदनंदन देखु । धूरि धूसरि जटाजु टली हरि किए हरभेषु ॥ नीलपाट परोइ मणिगण फणिग धोखे जाइ । खुनखुना करि हँसत मोहन नचत डौंरु बजाइ ॥ जलजमाल गोपाल पहिरे कहौं कहां बनाइ । मुंडमाला मनोहर गर ऐसी शोभा पाइ॥ स्वातिसुत माला बिराजत श्यामतन यों भाइ । मनौं गंगा गौरि डरहरि लिए कंठ लगाइ ॥ केहरीके नखहि निरखत रही नारि बिचारि । बालशशि मनौ भालते लै उर धरयो त्रिपुरारि ॥ देखि अंग अनंग डरप्यो नंदसुतको जान । सूरदासके हृदय बसिरहयो श्याम शिवको ध्यान॥४९॥ राग नटनारायण ॥ विहरत विविध बालक संग।डगर डग डोलत मगनि मग धूरि धूसर अंग॥ललित गति पग परत पैंजनि परस्पर किलकानि । मानहु मधुर मराल शावक सुभग बैन बिहानि॥ललित श्रीगोपाल लोचन श्याम शोभा दून।मनौ मयंकहि अंक दीन्ही सिंहकाके सून ॥ दूर दमकत श्रवण शोभा जलज युग डहडहत। मनहुं वासव बलि पठाए जीव कवि कछु कहत ॥ कबहुँ द्वारे दौरि आवत कबहुँ नंदनिकेत । सूर प्रभुको गहत ग्वालिनि चारु चुंबन हेत ५० ॥ राग बिलावल ॥देखो मैं दधिसुतमें दधि जात।एक अचंभो देखि सखी री रिपुमें रिपु जु समात॥ दधिपर कीर कीरपर पंकज पंकजके द्वै पात।यह शोभा देखत पशुपालक फूले अँग न समात॥ सुंदर बदन विलोकि श्यामको नंद निरखि मुसकात ।ऐसो ध्यान धरै जो हरिको सूरदास बलिजात॥५१ ॥ राग धनाश्री ॥दधिसुत जामें नंददुवार।निरखि नैन अरुझ्यो मनमोहन रटत देहु कर बारंबार ॥ दीरघ मोल कह्यो व्यापारी रहे ठगेसे कौतुक हार । कर ऊपर लै राखिरहे हरि देत न मुक्ता परम सुढार ॥ गोकुलनाथ बए यशुमतिके आँगन भीतर भवन मँझार । शाखापत्र भए जलमेलत फूलत फरत न लागी बार ॥ जानत नहीं मर्म सुर नर मुनि ब्रह्मादिक नहिं परत विचार । सूरदास प्रभुकी यह लीला ब्रजवनिता गुहि पहिरे हार ॥ ५२॥कजरीको पय पिअहु लाल तेरी चोटी बढै । सब लरिकनमें सुन सुंदर सुत तो श्री अधिक चढै ॥ जैसे देखि और ब्रजबालक त्यों बलवैस बढै । कंस केशि बक बैरिनके उर अनुदिन अनल उठै ॥ यह सुनिकै हरि पीवन लागे त्योंत्यों लियो लटै । अचवन पै तातो जब लाग्यो रोवत जीभ उठै ॥ पुनि पीवतही कच टकटोवै झूठे जननि रढै । सूर निरखि मुख हँसत यशोदा सो सुख उर न कढै ॥ ५३ ॥ रामकली ॥ यशोदा कबहिं बढैगी चोटी । किती बार मोहिं दूध पिवत भई यह अजहूँ हैं छोटी ॥ तू जो कहति बलकी बेनी ज्यों ह्वैहै लाँबी मोटी । काढत गुहत न्हवावत ओछत नागिनि सी भ्वै लोटी ॥ काचो दूध पिवावत पचिपचि देत न माखन रोटी । सूर श्याम चिर जीवौ दोउ भैया हरि हलधरकी जोटी ॥ ५४ ॥ देवगंधार ॥ कहन लगे मोहन मैया मैया । पितानंदसों बाबा बाबा अरु हलधरसों भैया ॥ ऊंचे चढ़ि चढि कहत यशोदा लैलै नाम कन्हैया । दूरि कहूं जिन जाहु ललारे मारैगी काहूकी गैया ॥

गोपी ग्वाल करत कौतूहल घर घर लेत बधैया । मणि खंभन प्रतिबिंब विलोकत पुनि नवनीत कुँवर हरि पइया ॥ नंद यशोदाजीके उरते इह छबि अनत न जइआ ॥ सूरदास प्रभु तुमरे दरशको चरणनकी बलि गइआ ॥ ९५॥ राग सारंग ॥ मैया मोहिं बडो करिबे री।दूध दही घृत माखन मेवा जो मांगों सो दे री ॥ कछू हवस राखै जिन मेरी जोइ जोइ मोहिं रुचै री ॥ रंगभूमिमें कंस पछारौं कहाँ कहाँ लौं मैं री । सूरदास स्वामीकी लीला मथुरा राखौ जो री ॥ सुंदर श्याम हँसत जननीसों नंदवबाकी सौं री ॥ ९६ ॥ राग रामकली ॥ हरि अपने आगे कछु गावत । तनक तनक चरणनसों नाचत मनही मनहि रिझावत ॥ बाहँ उँचाइ काजरी धौरी गैयन टेरि बुलावत। कबहुँक बाबा नंद बुलावत कंबहुँक घरमें आवत ॥ माखन तनक आपने कर लै तनक बदनमें नावत । कबहुँ चितै प्रतिबिंब खंभमें लवनी लिए खावावत॥ दुरि देखत यशुमति यह लीला हर्ष अनंद बढावत।सूर श्यामके बालचरित नितही नित देखत भावत ॥९७॥ राग बिलावल ॥आजु सखी हौं प्रात समय दधि मथन उठी अकुलाइ । भरि भाजन मणिखंभ निकट धरि नेत लियो करजाइ ॥ सुनत शब्द तेहि छिन समीप में महरि हँसि आए धाइ । मोहे बालविनोद मोदकरि नयनन नृत्य देखाइ ॥ चितवनि चलनि हरयो चित चंचल चितैरही चितलाइ । पुलकित तब प्रतिबिंब देखि करि सबही एक सुभाइ ॥ माखन पिंड विभाग दुहूँकर आपत मुँह मुसुकाइ ।सूरदास प्रभुता सुतके सुख सकै न हृदय समाइ ॥ ९८ ॥ बलि बलि जाउँ मधुर सुर गावहु । अबकी बार मेरे कुँवर कन्हैया नंदहि नाचि देखावहु ॥ तारी देहु आपने करकी परम प्रीति उपजावहु । आनयंत्र ध्वनि सुनि डरपत कत मो भुज कंठ लगावहु ॥ जिन शंका जियकरो लाल मेरे काहेको भरमावहु । बांह उँचाइ कालिकी नाईं धौरी धेनु बुलावहु ॥ नाचहु नेकु जाउँ बलि तेरी मेरी साधं पुरावहु । रत्न जटित किंकिणि पग नूपुर अपने रंग बजावहु ॥ कनक खंभ प्रतिबिंबत शिशु इक लौनी ताहि खवावहु । सूर श्याम मेरे उरते कहुं टारे नेक न भावहु ॥ ९९ ॥ राग सारंग ॥ कान्ह बलिजाउँ ऐसी आरि न कीजै । जोइ जोइ भावै सोइ सोइ लीजै ॥ कहत यशोदा रानी । को खिझवै शारँगपानी॥ मेरे जो लाल खिजावै । सो अपनो कियो भलो पावै ॥ तिहि देहौं देश निकारो । ताको ब्रज नाहिं नगारो ॥ अति रिसही ते तनु छीजै । सुठि कोमल अंग पसीजै ॥ बर्जत बर्जत बिरुझाने । करि क्रोध मनहि अकुलाने ॥ धरत धरणि धर लोटे । माताको चीर नखोटे ॥ अंग आभूषण सब तोरे । लवनी दधि भाजन फोरे ॥ देखि तप्त जल तरसै । यशुदाके चरणन परसै ॥ महरि बाँह गहि आने। तब तेल उबटने साने ॥ तब गिरत परत उठि भागे । कहुं नेक निकट नहिं लागे ॥ तब नंदघरनि चुचकारे । आवहु बलि जाउँ तुम्हारे ॥ नाहिं आवहु तो भले लाल । पुनि जानहुगे मदन गोपाल ॥ तुम मेरी रिस नहिं जानौ । मोको नहिं तुम पहिचानौ ॥ मैं आजु तुम्हैं गहि बांधौं । हाहा करि करि अनुराधौं ॥ बाबा नंद उतहिते आए । कौने हरि अतिहि खिझाए ॥ मुख चूमि हरखि लै आए । यशुमतिपै पहुँचाए ॥ मोहन कत खिझत अयानी। लिये लाइ हिये नँदरानी ॥ क्योंहूं जतन जतन करि पाए। तब उबटन तेल लगाए॥ ताती जल आनि समोयो । अन्हवाइ दियो मुख धोयो ॥ अति सरस वसन तन पोंछे । लैकै मुख कमल अँगोछे ॥ अंजन दोउ दृग भरि दीनों ॥ भ्रुव चारु चखोडा कीनों ॥ अँग आभूषण जे बनाए। लालहि क्रम क्रम ले पहिराए॥ऐसी रिस न करो मेरे कान्हा । अब खाहु कुंवर कछु नान्हा॥तुतरात कह्यो काहे री । जो मोहिं भावै सो दै री॥जोइ जोइ भावे मेरे प्यारे।सोइ सोइ देहौं ज़ु लला रे॥कह्योहै

सिरावन सीरा।कछु हठ न करौ बलवीरा॥सद दधि माखन दै आनी।तापर मधु मिश्री सानी॥खोवामें मधुर मिठाई। सो देखत अतिरुचि पाई॥ कछु बलदाऊको दीजै।अरु दूध अधावट पीजे॥ सब हेरि धरी है साढी। लै उपर उपरते काढी॥ अति प्योस्रसरिस बनाई।तेहि सोंठ मिरच रुचिताई।दूध बरा दही बोरी। सो खात अमृत इक कोरी॥सुठि सरस जलेबी बोरी। जेहि जेंवत रुचि नहिं थोरी॥अरु खुरमा सरस सँवारे। ते परसि धरेहैं न्यारे॥संकरपालेसद पागे।ते जेंवत परमसभागे॥सेव लाडू रुचि रसवारे। जे मुख मेलत सुकुमारे॥ सुतिलाडू हैं सुठि मीठे॥वै खात न कबहुँ उबीठे॥ खीर लाडू लै गए नाए।ते करि बहु जतन बनाए॥गोझा बहु पूरन पूरे। भरि भरि कपूररस चूरे॥ अरु तैसिय गाल मसूरी। जो खातहि सुख दुख दूरी॥ अरु है सामि सरस सँवारी। अति खात परम सुखकारी। पापर बरणे नाहिं जाही। जेहि देखत अतिसुख पाही॥मालपुवा मधुसाने। ते तुरत तपत करि आने॥सुंदर अतिसरस अँदरसे। ते घृत मधु दधि मिलि सरसे॥ घेवर अति विरत चभोरे। लै खांड उपर तर बोरे॥ माधुरि अति सरस सजूरी। सद परसि धरी घृतपूरी॥ जब पूरी सुनी हरि हरष्यो। तब भोजन पर मन करष्यो॥सुनि तुरत यशोदा ल्याई। अति रुचि समेत हरि खाई॥ बलदाऊको टेरि बुलाए। यह सुनि हलधर तहां आए॥षटरस परकार मँगाए॥ जे वरणि यशोदा गाए॥ मनमोहन हलधर वीरा। जेंवत रुचिराख्यो सीरा॥शीतलजल लियो मँगाई। भरि झारी यशुमति ल्याई॥अचवत तब नयन जुडाने। दोऊ हरषि हरषि मुसकाने॥ हँसि जननी चुरु भरवाए। तब कछु कछु मुख पखराए॥ तब बीरी तनक मुख नाए। अति लाल अधर ह्वै आए॥ तब सूरदास बलिहारी॥ माँगत कछु जूंठनि थारी॥ हरि तनक तनक कछु खाये।जूंठनि सब भक्तनि पाए॥ १६०॥ राग धनाश्री॥ पाहुनी करिदै तनक मह्यो। हौं लागी गृहकाज रसोंई यशुमति बिनय कह्यो॥ आरि करै मनमोहन मेरो अंचल आनि गह्यो। व्याकुल मथति मथनियां रीती दधि भ्वैं ढरकि रह्यो॥ माखन जात जानि नँदरानी सखिन सम्हारि कह्यो। सूर श्याम मुख निरखि मगन भई दुहुनि सकोच सह्यो॥ ॥ ६१॥ आसावरी॥यशुमति जबहि कह्यो अन्हवावन रोइगए हरि लोटत री। लेत उबटनो लै आगे दधि कहि लालहि चोटत पोटत री॥ मैं बलिजाउँ न्हाउ जिनि मोहन कत रोवत बिनकाजै री। पाछे धरि राखौ छपाइकै उबटन तेल समाजै री॥ महरि बहुत बिनती करि राखति मानत नहीं कन्हाईरी। सूरश्याम अतिही बिरुझाने सुर मुनि अंत न पाई री॥ ६२॥ अथ चंद्रप्रस्ताव॥ कान्हरो॥ ठाढी अजिर यशोदा अपने हरिहि लिये चंदा देखरावत। रोवत कत बलिजाउँ तुम्हारी देखौ धौं भरि नयल जुडावत॥ चितैरहे तब आपुन शशितन अपने कर लै लै जु बतावत। मीठो लगत किधौं यह खाटो देखत अति सुंदर मनभावत॥मनमनही हरि बुद्धि करतहैं माताको कहि ताहि मँगावत। लागी भूख चंदमै खैहौं देहु देहु रिसकरि बिरुझावत॥ यशुमति कहत कहा मैं कीनो रोवत मोहन अति दुखपावत।सूर श्यामके यशुदा बोधति गगन चिरैयां उडत लखावत॥६३॥ राग कान्हरो॥ किहिबिधि करि कान्है समुझैहौं। मैंही भूलिचंद्र दिखरायो ताहि कहत मोहि दै मैं खैहौं॥अनहोनी कहुँ होत कन्हैया देखी सुनी न बात। यह तौ आहि खिलौना सबको खान कहत तेहि तात॥ यहै देत लवनी नित मोको छिन छिन साँझ सवारे। बार बारं तुम माखन माँगत देउ कहांते प्यारे॥ देखतरहौ खिलौना चंदा आरि न करौ कन्हाई॥ सूर श्याम लियो महरि यशोदा नंदहि कहत बुझाई॥६४॥ राग धनाश्री॥आछे मेरे लालहो ऐसीआरि न कीजै।मधु मेवा पकवान मिठाई जोइ भावै सोइ लीजै॥ सद माखन घृत दह्यो सजाये अरु मीठो पय पीजै। पालागौं हठ अधिक करो जिनि

अति रिसमें तनु छीजै ॥ आन बतावत आन दिखावत बालक तौ न पतीजै। खिझ खिझ कान्ह खसत कनियाँते सुसुकि सुसुकि मन खीजै ॥ जलपुट आनि धरचो आँगनमें मोहननेक तौ लीजै। सूर श्याम हठि चंदहि माँगै चंद कहाँते दीजै ॥६५॥ राग कान्हरो ॥ बार बार यशुमति सुत बोधति आउ चंद तोहिं लाल बुलावै। मधु मेवा पकवान मिठाई आपु न खैहै तोहिं खवावै ॥ हाथहि पर तोहिं लीने खेलै नहिं धरणी बैठावै। जलभाजन करलै जु उठावति याहीमें तू तनुधरि आवै॥ जलपुट आनि धरणि पर राख्यो गहि आन्यो वह चन्द्र दिखावै । सूरदास प्रभु हँसि मुसुकाने बार बार दोऊ कर नावै ॥६६॥ राग रामकली॥ मेरो माई ऐसो हठी बालगोविंदा ॥ अपने करगहि गगन बतावत खेलनको माँगै चंदा॥ बासनके जल धरचो यशोदा हरिको आनि दिखावै। रुदन करत ढूँढै नहिं पावत धरणि चन्द कैसे आवै ॥ दूध दही पकवान मिठाई जु कछु माँगु मेरे छौना। भौंरा चकई लाल पाटको लेंडुवा माँगु खिलौना॥ दैत्यदलन गजदंत उपारन कंसकेश धरि फंदा। सूर दास बलिजाइ यशोमति सुखके सागर दुखके खंदा ॥ ६७ ॥ लेहौं री मा चंदा चहौंगो । कहा करौं जलपुट भीतरको बाहर ओकि गहौंगो ॥ इहतौ झलमलात झकझोरत कैसेकै जु लहौंगो। वहतो निपट निकटही देखत वरज्योहौं न रहौंगो॥ तुमरो प्रेम प्रगट मैं जान्यो बौराए न बहौंगो। सूर श्याम कहै करगहि ल्याऊं शशि तनु दाप दहौंगो ॥६८॥ राग धनाश्री ॥ लाल यह चंदा लेलैहो। कमलनयन बलिजाइ यशोदा नीचे नेक चितैहो ॥जा कारण सुन सुत सुंदर वर कीन्हो इतीअनैहो। सोइ सुधाकर देखि दमोदर या भाजनमें हैहो ॥ नभते निकट आनि राख्योहै जलपुट जतननजो गैहो। लै अपने कर काढ़ि दमोदर जो भावै सो कैहो ॥ गगनमँडलते गहि आन्यो है पंछी एक पठै हो। सूरदास प्रभु इती बातको कत मेरो लाल हठैहो ॥६९॥ राग बिहागरो ॥ तुम मुख देखि डरतु शशि भारी। कर करिके हरि हेरचो चाहत भाजि पताल गयो अपहारी ॥वह शशितौ कैसेहु नहिं आवत यह ऐसी कछु बुद्धि बिचारी।वदन देखि बिधु बिधि सकात मन नैन कंज कुंडल उजियारी॥ सुनहु श्याम तुमको शशि डरपत है कहत ए शरन तुम्हारी। सूर श्याम विरुझाने सोए लिए लगाइ छतियाँ महतारी॥७०॥राग केदारो॥यशुमति लै पलिका पौढावति।मेरो आजु अनिही बिरुझानो यह कहि कहि मधुरे सुर गावति॥पौढिगई पुनि हरुये करिकै अंगमोरि तब हरि जमुहाने। करसों ठोंकि सुतहि दुलरावति चटपटाइ बैठे अतुराने ॥पौढो लाल कथा एक कहिहौं अतिमीठी श्रवणनको प्यारी। यह सुनि सूरश्याम मनहरषे पौढिगए हँसि देत हुँकारी ॥ ७१ ॥ सुन सुत एक कथा कहौं प्यारी। कमलनयन मनआनँद उपज्यो चतुर शिरोमणि देत हुँकारी॥ नगर एक रमणीक अयोध्या बडे महल जहँ अगम अटारी। बहुत गली पुर बीच विराजत भाँति भाँति सब हाट बजारी॥तहाँ नृपति दशरथ रघुवंशी जाके नारि तीन सुखकारी। कौशल्याकैकयी सुमित्रा तिनके जन्म भए सुत चारी ॥ चारि पुत्र राजाके प्रगटे तिनमें एक राम व्रतधारी। जनक धनुष व्रत देखि जानकी त्रिभुवनके सब नृपति हँकारी॥ राजपुत्र दोउ ऋषि लै आए सुनि जनक व्रत तहाँ पगधारी। धनुपतोरि सुखमोरि नृपनको जनक सुता तिनकी वरनारी ॥ पग अँगुठा जब पीर नृपतिके तब कैकयी सुखमेलि निवारी । वचन माँगि नृपसों तब लीनो रघुपतिके अभिषेक सँवारी॥ तात वचन सुनि तज्यो राज्य तिन भ्राता सहित घरनि वनचारी। उनके जात पिता ततुत्याग्यो अतिव्याकुल करि जीव बिसारी ॥ चित्रकूट गए भरत मिलन जब पगपाँवरी दे करी कृपारी। युवती हेतु कनकमृग मारी राजिवलोचन गर्वप्रहारी॥ रावण हरण करचो सीताको सुनि करुणामय नींद बिसारी। सूर श्याम कर उठे चापको लछिमन देहु

जननि भ्रमभारी ॥७२॥ राग बिहागरो ॥ नंदनँदन तुम सुनहु कहानी । पहिली कथा पुरातन सुन सुत जननी पास सुखवानी ॥ रामचंद्र राजा दशरथसुत जनकसुता ताके गृहरानी । कहि पंचतत्त्व अरु पंचवटी वन छाँडि चले रजधानी ॥ तहां वसत सीता हरलीनो रजनीचर अभिमानी । लछिमन धनुष देहु करि उठि हरि यशुमति सूर डरानी॥७३॥ राग केदारो ॥ यशुमति मनमें यहै विचारति । झझकि उठ्यो सोवत हरि अबहीं कछु पढ़ि पढ़ि तनु दोष निवारति ॥ खेलतमें कहुँ डीठि लगाई लैलै राई लोनु उतारति । सांझहिते मेरो विरुझान्यो चंदहि देखि करी अतिआरति ॥ बार बार कुलदेव मनावति दोउ कर जोरि शिरहि ले धारति । सूरदास यशुमति नँदरानी निरखि वदन त्रयताप बिसारति ॥ ७४ ॥ नहिन जगाइ सकति सुनि सोवावत सजनी । अपने जान अजहुँ कान्ह मानत हैं रजनी ॥ जब जब हौं निकट जाति रहति लागी लोभा । तनुकी गति बिसरिजाति निरखत मुखशोभा ॥ वचननिको बहुत करति साजति जिय ठाढी । नैननि बिचार परति देखत रुचि बाढी ॥ इहिविधि वदनारविंद यशुमति मनभावै । सूरदास सुखकी राशिकहत न बनिआवै॥७५॥ राग बिलावल ॥ जागिये ब्रजराज कुँवर कमल कुसुम फूले । कुमुद वृंद सकुचत भए भृंगलता भूले ॥ तमचुर खग रौर सुनहु बोलत वनराई ॥ राँभति गौ खिरकनमें बछराहित धाई । विधु मलीन रविप्रकाश गावत नर नारी । सूर श्याम प्रात उठौ अंबुज करधारी ॥ ७६ ॥ राग रामकली ॥ प्रात समय उठि सोवत हरिको वदन उघारयो नंद । रही न सकत देखनको आतुर नैन निशाके द्वंद ॥ स्वच्छ सेजमें ते मुख निकसत गयो तिमिर मिटि मंद । मानौं मथि सुरसिंधु फेन फटि दरश दिखाई चंद ॥ धायो चतुर चकोर सूर सुनि सब सखि सखा सुछंद ॥ रही न सुधि शरीर धीरमति पिवत किरन मकरंद ॥ ७७ ॥ भोरभए निरखत हरिको मुख प्रमुदित यशुमति हरषित नंद । दिनकर किरन नलिन ज्यों विकसत उर उपजत आनंद ॥ वदन उघारि निहारत जननी जागहु बलिगइ आनंद कंद । मानहु मथत सुर सिंधु फेनफटि दई देखाई पूरन चंद ॥ जाको यश ब्रह्मादिक मुनिजन नेति नेति गावत श्रुति छंद । सो गोपाल ब्रजके सुनि सूरज प्रगटे पूरण परमानंद ॥ ७८ ॥ ललित ॥ जागिये गुपाल लाल आनँदनिधि नंदबाल यशुमति कहै बार बार भोर भयो प्यारे । नैन कमलसे विशाल प्रीति वापिका मराल मदन ललित वदन ऊपर कोटि वारिडारे । उगत अरुन विगत शर्वरी शशांक किरनहीन दीन दीपक मलीन छीन दुति समूह तारे ॥ मनहु ज्ञान घनप्रकाश बीते सब भवविलास आस त्रास तिमिर तोष तरनि तेज जारे। बोलत खग मुखर निकर मधुर ह्वै प्रतीति सुनहु परम प्राण जीवन धन मेरे तुम बारे । मनौ वेद बंदी मुनि सूत वृंद मागधगण बिरद वदत जैजैजैजैत कैटभारे॥ विकसत कमलावलीय चलि प्रफंद चंचरीक गुंजत कल कोमल ध्वनि त्यागि कंज न्यारे । मानो वैरागपाइ सकल कुलग्रह विहाइ प्रेमवंत फिरत भृत्य गुनत गुन तिहारे ॥ सुनत वचन प्रियरसाल जागे अतिशय दयाल भागे जंजाल विपुल दुख कदम टारे ॥ त्यागे भ्रमफंद द्वंद निरखिके मुखारविंद सूरदास अति अनंद मेटे मद भारे ॥ ७९ ॥ प्रातभयो जागो गोपाल । नवल सुंदरी आई बोलत तुमहि सबै ब्रजबाल ॥ प्रगटो भानु मंद उडुपति भयो फूले तरुन तमाल । दरशनको ठाढी ब्रजवनिता ल्याई कुसुम गुंज वनमाल ॥ मुखहि धोइ सुंदर बलिहारी करहु कलेऊ मोहन लाल । सूरदास प्रभु आनँदके निधि अंबुजलोचन नयन विशाल ॥१८०॥ ललित ॥ जागो जागोहो गोपाल। नाहिन इतो सोइये सुनु सुत प्रातसमय शुचिकाल॥ दिन विकसत मनौ कमलकोशप्रति छवि ज्यों मधुपनके माल।फिरि फिरि निरखि निरखि छिन छिन छिनं सब गोपनके बाल ॥तौ

तुमहीं आपुन उठि देखौ निद्रा नैन विशाल । ज्यों तुम मुहिं न पत्याहु सूर प्रभु सुंदर श्याम तमाल ॥८१॥ राग भैरव ॥ उठौ नंदकुमार भयो भिनुसार जगावत नंदकी रानी । झारीकै जल बदन पखारौ कहि कहि शारँगपानी ॥ माखन रोटी अरु मधु मेवा जो भावे सो लेउ आनी । सूर श्याम मुख निरखि यशोदा मनही मनहि सिहानी ॥ ८२ ॥ राग बिलावल ॥ नंदके लाल उठे जब सोइ । निरखि मुखारविंदकी शोभा कहि काके मन धीरज होइ ॥ मुनि मन हरन हरन युवतीके रतिमनि जाइ सब खोइ । ईषदहास दशन द्युति दामिनि मनि गनि ओपि धरे जनु पोइ ॥ नागर नवल कुवँर वर सुंदर मारग जात लेत मनगोइ । सूर श्याम मनहरण मनोहर गोकुल वसि मोहे सब लोइ ॥८३॥ अथ कलेवाभोजनसमय ॥राग भैरव ॥ उठिये श्याम कलेऊ कीजै । मन मोहन मुख निरखत जीजै ॥ खारिक दाख खोपरा खीरा । केरा आम ऊखरस सीरा ॥ श्रीफल मधुर चिरौंजी आनी । सफरी चिरुआ अरुन खुबानी ॥ घेवर फेनी खौर सुहारी । खोवा सहित खाहु बलिहारी ॥ रचि पिराक लाडू दधि आनों । तुमको भावत पुरी सधानों ॥ तब तमोर रुचि तुमहिं खवावों । सूरदास पनवारो पावों ॥ ८४ ॥ कमलनयन हरि करौ कलेवा । माखन रोटी सद्य जम्यो दधि भाँति भाँतिके मेवा ॥ चारक दाख चिरौंजी किसिमिस मिश्री उज्ज्वल गरी बदाम । सफरी सेव छुहारे पिस्ता जे तरबूजा नाम ॥ अरु मेवा बहु भांति भांतिहैं षटरसके मिष्टान । सूरदास प्रभु करत कलेऊ रीझे श्याम सुजान ॥८५॥ अथ खेलन समय ॥ राग रामकली॥खेलत श्याम ग्वालन संग । सुबल हलधर अरु सुदामा करत नानारंग ॥ हाथ तारीदेत भाजत सबै करि करि होड । बरजै हलधर श्याम तुम जिनि चोट लगिहै गोड ॥तब कह्यो मैं दौरि जानत बहुतबल मो गात । मेरी जोरीहै सुदामा हाथ मारे जात ॥ बोलि तबै उठे श्रीसुदामा जाहु तारी मारि।आगे हरि पाछे सुदामा धरचो श्याम हँकारि॥ जानिकै मैं रह्यो ठाढ़ो छुवत कहा जु मोहि । सूर हरि खीझत सखासों मनहिं कीनो कोहि ॥ ८६ ॥ ॥ राग गौरी ॥ सखा कहतहैं श्याम खिसाने । आपुहि आपु ललकिभये ठाढे अब तुम कहा रिसाने॥ बीचहि बोलि उठे हलधर तब इनके माय न बाप।हारि जीति कछु नेक न जानत लरिकन लावत पाप॥ आपुन हारि सखासों झगरत यह कहि दिये पठाई । सूर श्याम उठिचले रोइकै जननी पूँछति धाई॥ ॥ ८७ ॥ मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायो । मोसों कहत मोलको लीनो तू यशुमति कब जायो ॥ कहा कहौं एहि रिसके मारे खेलन हौं नहिं जातु । पुनि पुनि कहत कौन है माता कोहै तुमरोतातु ॥ गोरेनंद यशोदा गोरी तुम कत श्याम शरीर । चुटुकी दैदै हँसत ग्वाल सब सिखै देत बल वीर ॥ तू मोहीको मारन सीखी दाउहि कबहुँ न खीझै । मोहनको मुख रिस समेत लखि यशुमति सुनि सुनि रीझै॥ सुनहु कान्ह बलभद्र चबाई जनमतहीको धूत।सूर श्याम मो गोधनकी सौं हौं माता तू पूत८८॥ ॥ राग नट ॥ मोहन मान मनायो मेरो । मैं बलिहारी नंदनंदनकी नेक इतै हँसि हेरो ॥ कारो कहि कहि मोहिं खिझावत बरजत खरो अनेरो । आनँद बिमल शशिते तनु सुंदर कहाँ कहै बलि चेरो ॥ न्यारो जो पै हठै हाँकलै अपनो न्यारी गइयां तेरो । मेरो सुत सरदार सबनको इहुते कान्है ही मेरो॥ बनमें जाइ करौ कौतूहल इह अपनोहै खेरो । सूरदास द्वारे गावतहैं विमल विमल यश तेरो ॥ ८९॥ राग गौरी ॥ खेलन अब मेरी जात बलैया।जबहिं मोहिं देखत लरिकन सँग तबहिं खिझत बल भैया॥ मोसों कहत तात वसुदेवको देवकी तेरी मैया । मोल लियो कछु दे वसुदेव को करि करि जतन बढ़ैया ॥ अब बाबा कहि कहत नंद सों यशुमतिको कहै मैया । ऐसेही कहि सब मोहिं खिझावत तब उठि चलो खिसैया ॥ पाछे नंद सुनतहैं ठाढे हँसत हँसत उर लैया । सूर नंद बलि रामहि धिरयो सुनि मनहरप कन्हैया ॥९०॥ राग रामकली॥खेलन चलिये बाल गोविंद । सखा प्रिय द्वारे बुला

वत घोष बालक वृंद ॥ तृषितहैं सब दरश कारन चतुर चातकदास । बरषि छबि नव वारि धरही हरहु लोचन प्यास ॥ बिनय वचन सुने कृपानिधि चले मनोहर चाल । ललित लघु लघु चरन कर उर बाहु नयन विशाल ॥ अजिरपद प्रतिबिंब राजत चलत उपमा पुंज । प्रतिचरण मानहु हेमवसुधा देत आसन कंज ॥ सूर प्रभुकी निरखि शोभा रहे सुर अवलोकि । शरद चंद चकोर मानों रहे थकित विलोकि ॥ ९१ ॥ राग धनाश्री ॥ खेलनको हरि दूरिगयो । संग संग धावत डोलत हैं कहाँ धौं बहुत अबेर भयो ॥ पलकओट भावत नहिं मोको कहा कहौं तोको बात । नंदहि तात तात कह बोलत मोहिं कहतहैं मात ॥ इतनी कहत श्यामघन आए ग्वाल सखा सब चीन्हें । दौरिजाइ उरलाइ सूर प्रभु हरषि यशोदा लीन्हें ॥९२॥ बिहागरो ॥ खेलन दूरि जात कित कान्हा । आजु सुन्यो बन हाऊ आयो तुम नहिं जानत नान्हा ॥ इक लरिका अबहीं भजिआयो बोलि बुझावहु ताहि । कान तोर वह लेत सबनके लरिका जानत जाहि ॥ चलहु वेग सबेरे जैये भजि अपने अपने धाम । सूरदास यह बात सुनतही बोलि लिए बलराम॥९३॥ जैतश्री ॥ दूरिखेलनजनि जाहु लला वन मेरे हाऊ आयोहै ।तब हँसि बोले कान्हरि मैया इनको किनहि पठायोहै॥ अब डरपत सुनि सुनि ये बातैं कहत हँसत बलदाऊ। सप्तरसातल शेष सनरहे तबकी सुरत भुलाऊ ॥ चारिवेद लेगयो शंखासुर जलमें रहे लुकाऊ । मीनरूप धरिकै जब मारयो तबहि रहे कहँ हाऊ ॥ मथि समुद्र सुर असुरनके हित मंदर जलधि धसाऊ । कमठरूप धरि धरनि पीठपर सुखपायो सहिराऊ॥ जब हिरणाक्ष युद्ध अभिलाष्यो मनमें अति गरवाऊ। धरिवाराहरूप रिपुमारयो ले क्षितिदंत अगाऊ॥ बिकटरूप अवतार धरयो जब सो प्रहलादहि नाऊ । धरि नरसिंह जब असुर विदारयो तहां न देख्यो हाऊ ॥ वामनरूप धरयो बलि छलिकै तीनपरग वसुधाऊ । श्रमजल ब्रह्म कमंडलु राख्यो दरशचरण परसाऊ ॥ मारयो मुनि बिनही अपराधहि कामधेनु लेआऊ । इकइस बार निछत्र जब कीनी तहां न देखेहाऊ ॥ शूर्पणखा तारका मारी हिमकुल सहित सोबहाऊ । सिंधुसेतु बांध्यो पषाणसों तहां न देखेहाऊ ॥ राम रूप रावन जब मारयो दशशिर बीस भुजाऊ । लंकजराय छार जबकीनी तहाँ न देखे हाऊ ॥ नृपति भीमसों युद्ध परस्पर तहाँ वह भाव बताऊ । तुरतचीरद्वै टूककियो धरि ऐसे त्रिभुवन राऊ ॥ यमुना के तट धेनु चरावत तहाँ सघनवन झाऊ ॥ पैठिपताल व्यालगहिनाथ्यो तहाँ न देखे हाऊ ॥ माटीके मिस वदन बिगारयो जब जननी डरपाऊं । मुखभीतर त्रैलोक दिखायो तबउ प्रतीत न आऊ ॥ भक्तहेतु अवतार धरे सब असुरन मारि बहाऊ। सूरदास प्रभुकी यह लीला निगम नेति नितगाऊ ॥ ९४ ॥ रामकली ॥ यशुमति कान्हहि यहै सिखावति । सुनहु श्यामअब बडे भए तुम अस्तन पान छुडावति ॥ ब्रजलरिका तोहिं पीवत देखें हँसत लाज नहिं आवति । जैहैं विगरि दांतहैं आछे ताते कहि समुझावति॥अजहुँ छांडि कह्यो करि मेरो ऐसी बात न भावति । सूर श्याम यह सुनि मुसिकाने अंचल मुखहि लुकावति ॥ ९५ ॥ नंद बुलावतहैं गोपाल । आवहु वेगि बलैया लेहौं सुंदर नैन विशाल ॥ परस्यो थार धरयो मग चितवत वेगि चलौ तुम लाल।भात सिरात तात दुखपावत क्योंनचलौ ततकाल ॥ हौं बलिजाऊं नान्हे पाइनि की दौरि दिखावहु बाल । छाँडिदेहु तुम ललित अटपटी यहगति मंद मराल ॥ सो राजा जो आगमदौरै सूर सुभौन उताल । जो जैहै बलदेव पहिलेही तौ हँसिहैं सब ग्वाल ॥९६॥ राग सारंग ॥ जेंवत कान्ह नंद इक ठौरे। कछुक खात लपटात दुहूंकर बालकहै अतिभोरे ॥ बडो कौर मेलत मुख भीतर मिरिच दशन

टकटौरे । तीक्षणलगी नयन भरि आए रोवत बाहर दौरे ॥ फूँकति वदन रोहिणी ठाढी लिये लगाइ अकोरे । सूर श्याम को मधुर कौरदै कीन्हे तात निहोरे ॥ ९७ ॥ रागनट ॥ हरिके बालचरित्र अनूप।निरखिरही ब्रजनारी एकटक अंग अंग प्रतिरूप ॥ बिथुरी अलकैं रहीवदनपर बिनही बिपिन सुभाइ । देखिं खंजन चंदके वश मधुप करत सहाइ ॥ सुलछ लोचन चारु नासा परमरुचिर बनाइ। युगल खंजन लरत अवनित बीच कियो बनाइ ॥ अरुण अधरनि दशन भाई कहौं उपमा थोरि। नीलपट बिच मोतिमानौं धरे चंदन वोरि ॥ सुभगबाल मुकुंदकी छबि बरणिकापै जाइ । भृकुटि पर मसि बिंदु सोहे सकै सूर न गाइ ॥ ९८ ॥ राग कान्हरो ॥ सांझभई घर आवहु प्यारे । दौरत कहाँ चोट लगिहै कहुँ पुनि खेलौगे होत सकारे ॥ आपुहि जाइ बाँह गहि ल्याई खेह रही लपटाई। धूरि झारि तातो जल ल्याई तेल परसि अन्हवाई ॥ सरसवसन तनु पोंछि श्यामको भीतर गई लिवाइ । सूर श्याम कछु करौ बियारू पुनि राख्यो पौढाइ ॥९९॥ राग विहागरो ॥ कमल नयन कछु करौ बियारी।लुचुई लपसी सद्य जलेबी सोई जेवहु जो लगै पियारी॥घेवर मालपुवा सुतिलाडू संबरस जूरी सरस सवारी । दूध बरा उत्तम दधिबाटी दालममूरीकी रुचिन्यारी ॥ आछोदूध औटि धौरीको ल्याई है रोहिणि महतारी।सूरदास बलराम श्याम दोउ जेवै हैं जननि जाहि बलिहारी॥२००॥ विहागरो बलमोहन दोउ करत बियारी । प्रेम सहित दोउ सुतनि जिमावति रोहिणि अरु यशुमति महतारी॥ दोउ भैया मिलि खात एकसँगरतनजटित कंचनकी थारी । आलससों कर कौर उठावत नैननि नींद झमकि रही भारी॥दोउमाता निरखत आलससों छबि पर तन मन डारति वारी।बारबार जमुहात सूर प्रभु इह उपमा कवि कहै कहारी॥ १॥राग केदारो॥कीजै पयपान ललारे ल्याईहै दूध यशुमति मैया। कनक कटोरा भरिलीजै यह पीजै अतिसुख दीजै कन्हैया॥आछो मैं औट्यो सुठि नीको अरु मिठाई रुचिकरि अचवत क्यों न नन्हैया।बहुत जतन करि करि राख्यो ब्रजराज लडैते तुम कारण बल भैया॥ फूँकि फूँकि जननी पय प्यावति सुख पावति आनँद उर न समैया। सूरदास प्रभु पय पीवत बलराम श्याम दोऊ जननी लेत बलैया ॥ २ ॥ बल मोहन दोऊ अलसाने । कछुक खाइ दूधलै अचयो मुखजँभात जननी जिय जाने॥उठहु लाल कहि मुख पखरायो तुमकोलै पौढाऊँ।तुम सोवहु मैं तुमहिं सुवाऊँ कछु मधुरे रसु गाऊं॥तुरत जाय पौढे दोनों भैया सोवत आई नींद।सूरदास यशुमति सुखपावति पौढे बालगोबिंद ॥३॥ माखन बाल गोपालहि भावै । भूखेछिनु न रहत मनमोहन ताहि बदौ जो गहरु लगावै ॥ आनि मथानी दह्यो बिलोये जौलगि लालनउठन न पावै। जागतही उठि रारि करत अति नहिं मानै जो इंदु मनावै॥हौं यह जानति वानि श्यामकी अँखियां मीचें वदन चलावै । नंदसुवनकी लगै बलैया यह जूठनि कछु सूरज पावै॥४॥राग बिलावल भोर भयो मेरे लाडिले जागौ कुँवर कन्हाई।स खाद्वार ठाढे सबै खेलौ यदुराई ॥ मोको मुख देखरावहु त्रयताप निवारहु । तुव मुखचंद्रचकोरनैनमधु पानकरावहु ॥ तब हरि पट मुख दूरिकै भक्तन सुखकारी । हँसत उठे प्रभु सेजते सूरज बलिहारी॥५॥ राग बिलावल॥भोरभयो जागौ नँदनंदन। संग सखा ठाढे जगवंदन॥सुरभी पयहित वच्छपियावै।पंछी तरुत जि दुहुँदिश धावै॥अरुन गगन तमचुरनि पुकारे । शिथिल धनुकरति पति गहि डारे ॥ निशि निघटी रवि रथ रुचि साजी । चंद मलिन चकई रति राजी ॥ कुमुदिनि सकुची वारिज फूले । गुंजत फिरत अलीगन झूले ॥ दरशन देहु मुदित नर नारी । सूरज प्रभु दिन देव मुरारी ॥ ६ ॥ राग नट ॥ खेलत श्याम अपने रंग । नंदलाल निहारि शोभा निरखि थकित अनंग ॥ चरणकी छबि निरखि डरप्यो अरुन गगन छपाइ । जनु रंभाकी सबै छबि निदरि लई छडाइ ॥ युगल जंघनिखंभ रंभा नहिन

सम सरि ताहि । कटि निरखि केहरि लजाने रहे वन घन चाहि ॥ हृदय हरि नख अति बिराजति छबि न वरनी जाइ । मनौं बालक वारिधर नव चंद्र लई छपाइ॥मुकुतमाल विशाल उरपर कछु कहौं उपमाइ।मनौं तारा गगन पूष्टित गगन रह्यो छपाइ॥अधर अरुन अनूप नासा निरखि जन सुखदाइ । मनौ शुकफल बिंब कारन लेन बैठो आइ । कुटिल अलक बिना विपिनके मनौं आलि शशि जाल । सूर प्रभुकी ललित शोभा निरखिरही ब्रजबाल॥७॥ राग सारंग॥न्हात नंद सुधि करी श्यामकी ल्यावहु वोलि कान्ह बलराम । खेलत कान्ह वार बडि लागी व्रज भीतर काहूके धाम ॥ मेरे संग आइ दोउ वैठैं उन बिनु भोजन कौने काम । यशुमति सुनत चली आतुरह्वै ब्रज घर घर टेरत लै नाम ॥ आजु अबेर भई कहुँ खेलत बोलि लेहु हरिको कोउ वाम । ढूँढिफिरी नहिं पावत हरिको अति अकुलानी आवत धाम ॥ बारबार पछिताति यशोदा वासर वीतिगए युग याम । सूर श्यामको कहूँ न पावत देखे बहु बालक इक ठाम॥ ८ ॥ राग सारंग ॥ कोउ माई बोलि लेहु गोपालहि । मैं अपनेको पंथ निहारति खेलत बेर भई नँदलालहि ॥ हेरत बेर बडी भई मोकहुँ नहिं पावत घनश्याम तमा-लहि । सिध जेंवन सिरात नँद बैठे ल्यावहु बोलि कान्ह ततकालहि ॥ भोजन करहिं नंद सँग मिलि कै भूँखलगी ह्वैहै मेरे बालहि । सूर श्याम मग जोवति यशोदा आइगए सुनि वचन रसालहि ॥९॥ राग नटनारायण॥हरिको टेरतहै नँदरानी । बहुत अबार कतहुँ खेलत भइ कहां रहे मेरे शारँगपानी ॥ सुनतहि टेर दौरि तहाँ आए कबके निकसे लाल । जेंवत नहीं नंद जू तुम बिनु वेगि चलो गोपाल॥श्यामहि ल्याई महरि यशोदा तुरतहि पाँइपखारे । सूरदास प्रभु संग नंदके बैठेहैं दोउ बारे॥१०॥राग सारंग॥ जेंवत श्याम नँदकी कनियाँ । कछुक खात कछु धरणि गिरावत छवि निरखत नँदरनियाँ ॥ बरी बरा बेसन बहु भाँतिन व्यंजन विविध अनगनियाँ । डारत खात लेत अपने कर रुचि मानत दधि दनियाँ ॥ मिश्री दधि माखन मिश्रित करि मुख नावत छवि धनियाँ । आपुन खात नंदमुख नावत सो सुख कहत न बनियां ॥ जो रस नंद यशोदा बिलसत सो नहिं तिहूं भुवनियाँ । भोजन करि नंद अचवन कियो माँगत सूर जुठनियाँ ॥११॥ राग कान्हरो॥ बोलि लेहु हलधर भैयाको । मेरे आगे खेल करौ कछु नैननि सुख दीजै मैयाको ॥ मैं मूँदौं हरि आँखि तुम्हारी बालक रहे लुकाई । हरपि श्याम सब सखा बुलाए खेलो आंखि मुँदाई ॥ हलधर कहै आंखि को मूँदे हरि कह्यो जननी यशोदा । सूर श्याम लिय जननी खेलावति हर्ष सहित मन मोदा॥१२॥राग गौरी॥हरि तब आपनि आंखि मुँदाई। सखा सहित बलराम छपाने जहाँ तहाँ गए भगाई॥ कान लागि कहेउ जननी यशोदा वा घरमें बल-राम । बलदाऊको आवनं देहौं श्रीदामासों है कामः॥ दौरि दौरि बालक सब आवत छुवत महरिके गात।सब आए रहे सुबल श्रीदामा हारे अबके तात॥शोर पारि हरि सुबलहि धाए गह्यो श्रीदामा जाइ। दैदै सौंहैं नंद बबाकी जननीपै लै आइ ॥हँसि हँसि तारी देत सखा सब भए श्रीदामा चोर । सूरदा-स हँसि कहति यशोदा जीत्योहै सुत मोर ॥ १३ ॥ राग केदारो॥चलौ लाल कछु करौ बियारी । रुचि नाहीं काहू पर मेरे तू कहि भोजन करचो कहा री ॥ बेसन मिलै उरस मैदासों अति कोमल पूरी है भारी । जेंवहु श्याम मोहिं सुख दीजै ताते करी तुमहिं पियारी ॥ निंबुवा चूरन आँव सँधानो और करौंदनकी रुचि न्यारी । बार बार तूँ कहति यशोदा कहि ल्याए रोहिणि महतारी ॥ जननी सुनत तुरत लै आई तनक तनक धरि कंचन थारी । सूर श्याम कछु कछु लै खायो जल अचयो अरु वदन पखारी ॥ १४ ॥ पौढिए लाल मैं रचि सेजः विछाई । अति उज्ज्वल है सेज तुम्हारी सोवत सुखदाई ॥खेलत तुम निशि अधिक गई सुत नैननि नींद झमाई । वदन जँभात अंग ऐंडावत जननी

पलोटत पाँई ॥ मधुरे सुर गावत केदारो सुनत श्याम चितलाई । सूर श्याम प्रभु नंदसुवनको नींद गई तब आई ॥ १५ ॥ राग सारंग ॥ खेलन जाहु बाल सब टेरत। यह सुनि कान्ह भए अति आतुर द्वारे तन फिरि हेरत ॥ बार बार हरि मातहि कहि कहि मेरी चौगान कहाँहै । दधि मथनीके पाछे देखो लै मैं धरी तहाँहै ॥ लै चौगान बटाकर आगे प्रभु आए जब बाहर। सूर श्याम पूँछत सब ग्वालन खेलौगे केहि ठाहर ॥ १६ ॥ खेलत बनै घोष निकास । सुनहु श्याम तुम चतुर शिरोमणि इहाँ है घरपास ॥ कान्ह हलधर वीर दोऊ भुजाबल अतिजोर। सुबल श्रीदामा और सुदामा वै भए इक और ॥ और सखा बटाइ लीन्हें गोप बालक वृंद । चले ब्रजकी खोरि खेलन अति उमँग नँदनंद ॥ बटा धरणी डार दोनों लेचले ढरकाइ । आपु अपनी घात निरखत खेल जम्यो बनाइ ॥सखा जीतत श्याम जाने तब करी कछु पेल। सूरदास तब कहत सुदामा कौन ऐसो खेल ॥ १७ ॥ खेलतमें को काको गोसैयां । हरि हारे जीते श्रीदामा वरबसही कत करत रिसैयाँ ॥ जाति पाँति हमते कछु नाहिन वसत तुम्हारी छहियाँ । अति अधिकार जनावत याते अधिक तुम्हारेहैं कछु गइयाँ॥ रुहठि करै तासों को खेलै रहे पौढि जहां तहां सब ग्वैयाँ । सूरदास प्रभु खेलोई चाहत दाँव दबो करि नंद दोहैयां ॥१८॥ राग कान्हरो ॥ आवहु कान्ह साँझकी बिरियाँ । गाइन माँझ भएहौ ठाढ़े कहत जननि यह बड़ी कुबेरियाँ ॥ लरिकाई कहुँ नेकन छांडत सोइ रहो सुथरी सेजरियाँ । आए हरि यह बात सुनतही धाइ लिये यशुमति महतरियां ॥ लै पौढी आँगनही सुतको छिटकि रही आछी उजियरियां । सूरदास कछु कहत कहतही वशकरि लिए आइ नींदरियां ॥ ॥ १९ ॥ आँगनमें हरि सोइ गयो री । दोउजननी मिलिकै हरुये करि सेज सहित तब भवन लियो री ॥ नेकनहीं घरमें बैठतहै खेलहिके अब रंग रए री । इहिंविधि श्याम कबहुँ नहिं सोए बहुत नींदके वशहि भए री ॥ कहत रोहिणी सोवन देहु न खेलत दौरत हारि गए री । सूरदास प्रभुको मुख निरखत यह छबि नित नित होत नए री ॥२०॥ अथ ब्राह्मणको प्रस्ताव॥राग धनाश्री ॥महरानेते पांडे आयो। ब्रज घर घर बूझत नँदरावर पुत्र भयो सुनिकै उठि धायो॥ पहुँच्यो आइ नंदके द्वारे यशुमति देखि अनंद बढायो।पाय धोइ भीतर बैठायो भोजनको निज भवन लिपायो ॥ जो भावै सो भोजन कीजै विप्र मनहि अति हर्ष बढ़ायो । बडी वयस बिधि भयो दाहिनो धनि यशुमति ऐसो सुत जायो ॥ धेनु दुहाइ दूध लैआई पांडे रुचिकै खीर चढ़ायो । घृत मिष्टान खीर मिश्रित करि परुसि कृष्ण हित ध्यान लगायो॥ नैन उघारि विप्र जो देखै खात कन्हैया देखन पायो । देखो आइ यशोदा सुत कृत सिद्ध पाक इहि आइ जुठायो ॥ महरि बिनय दोऊ कर जोरे घृत मिष्टान पय बहुत मँगायो । सूर श्याम कत करत अचगरी बारबार ब्राह्मणहि खिझायो ॥ २१ ॥ रामकली ॥ पांडे नहिं भोग लगावन पावै । करि करि पाक जबै अर्पतहै तबहिं तबहिं छ्वै आवै ॥ इच्छा करि मैं ब्राह्मण न्योत्यौं तू गोपाल खिझावै । वह अपने ठाकुरहि जेंवावत तू ऐसे उठि धावै ॥ जननी दोष देहु जनि मोको करि विधान बहु ध्यावै । नैन मूँदि कर जोरि नामलै बारहि बार बुलावै ॥ कह अंतर क्यों होइ भक्तको जो मेरे मन भावै । सूरदास बलिहौं ताकी जो जन्म पाइ यश गावै ॥ २२ ॥ राग विलावल ॥ सफल जन्म प्रभु आजु भयो । धनि गोकुल धनि नंद यशोदा जाके हरि अवतार लयो ॥ प्रगट भयो अब पुण्य सुकृत फल दीनबंधु मोहिं दरश दियो । बारंबार नंदके आंगन लोटत द्विज आनंद भयो ॥ मैं अपराध कियो विन जाने को जानै केहि भेष जयो । सूरदास प्रभु भक्त हेत वश यशुमति हित अवतार लयो ॥२३॥ राग धनाश्री ॥ अहो नाथ जेई जेई तेरे शरण आए तेई तेई भए पावन । महापतित कुलतारन एक नाम

अघ जारन कारन दुख बिसरावन ॥ मोते को हो अनाथ दरशनते भयो सनाथ देखत नैन जुडावन। भक्त हेत देह धरण पुहुमीको भार हरण जन्म जन्म जन मुक्तावन ॥ अशरन शरन दीनबंधु यशुमति सुखकारन देह धरावन। हितके चितकी मानत सबके जियकी जानत सूरदास प्रभु मनभावन॥ ॥२४॥ राग बिलावल ॥मया करिये कृपाल प्रतिपाल संसार उदधि जंजालते पारपारं। काहूके ब्रह्मा काहू के महेश काहूके गणेश प्रभु मेरे तो तुमहि आधारं ॥ दीनदयालु कृपा करि मोकों यहकहि कहि लोटत बार बारं। सूरश्याम अंतर्यामी स्वामीहो जगतके कहा कहो करो निरवारं॥ २५॥ अथ माटीकोप्रसंग ॥ राग बिलावल ॥ खेलत श्याम पौरिके बाहर ब्रज लरिका सोहत सँग जोरी । तैसेइ आपु तैसेई लरिका सब अति अज्ञ सबनिमति थोरी ॥ गावत हांक देत किलकारत दुरि देखत नँदरानी। अति पुलकित गद गद मृदुवानी मन मन महरि सिहानी ॥ माटी लै मुख मेलि दई हरि तबहिं यशोदा जानी । साँटी लिये दौरि भुज पकरे श्याम लँगरई ठानी॥ लरिकनको तुम सब दिन झुठवत मोसों कहा कहोगे। मैया मैं माटी नहिं खाई मुख देखे निबहोगे ॥ वदन उघारि देखायो त्रिभुवन वन घन नदी सुमेर। नभ शशि रवि मुख भीतरहै सब सागर धरनी फेर ॥ यह देखत जननी जिय व्याकुल बालक मुखका आहि। नैन उघारि वदन हरि मूँद्यो माता मन अवगाहि ॥ झूठेहि लोग लगावत मोको माटी मोहिं न सुहावै। सूरदास तब कहति यशोदा ब्रजलोगन इह भावै॥ २६॥ राग धनाश्री ॥ मोहन काहेन उगिलो माटी। बार बार अनरुचि उपजावत महरि हाथ लिये साँटी । महतारीको कह्यो न मानत कपट चतुराई ठाटी । वदन पसारि दिखाइ आपनो नाटककी परिपाटी ॥ बडी बार भई लोचन उघरे भ्रम यामनकी फाटी । सूरदास नँदरानी भ्रमित भई कहत न मीठी खाटी ॥ २७ ॥ रामकली॥मो देखत यशुमति तेरे ढोटा अबहीं माटी खाई। इह सुनिकै रिस करि उठि धाई बांह पकरि ले आई॥ इक करसों भुज गहि गाढे करि इक कर लीने साँटी । मारतिहौं तोहिं अबहि कन्हैया वेग न उगलो माटी॥ब्रज लरिका सब तेरे आगे झूठी कहत बनाई। मेरे कहे नहीं तू मानत दिखरावो मुख वाई ॥ अखिल ब्रह्मांड खंडकी महिमा देखरायो मुख माही। सिंधु सुमेरु नदी वन पर्वत चकृत भई मनमाही ॥ करते साँटि गिरत नहिं जानी भुजा छाँडि अकुलानी। सूर कहै यशुमति मुख मूँदहु बलि गइ शारँगपानी ॥ २८ ॥ राग सारंग ॥ नंदहि कहति यशोदा रानी। माटीके मिस मुख देखरायो तिहूँलोक रजधानी॥ स्वर्ग पताल धरनि वन पर्वत वदन मांझ रहे आनी। नदी सुमेरु देखि चकृतभई याकी अकथ कहानी॥ चिते रहे तब नंद युवति मुख मन मन करत विनानी। सूरदास तब कहति यशोदा गर्ग कही यह वानी॥ २९॥ राग बिलावल॥ कहत नंद यशुमति सुनु बौरी। नाजनिये कहा तैं देख्यो मेरे कान्ह हिलावति खौरी ॥ पाँच वर्षको मेरो कन्हैया अचरज तेरी बात। वेही काज साँटि लै धावति ता पाछे बिललात ॥ कुशल रहैं बलराम श्याम दोउ खेलत खात अन्हात। सूर श्यामको कहा लगावति बालक कोमल गात॥ ३०॥ राग बिलावल ॥ देखौ रे यशुमति बौरानी। घर घर हाथ दियावत डोलत गोद लिये गोपाल बिनानी ॥ जानत नाहिं जगतगुरु माधो यहि आये आपदा नशानी। जाको नाव शक्ति पुनि ताकी ताही देत मंत्र पढि पानी॥अखिल ब्रह्मांड उदर गति जाकी जाकी ज्योति जल थलहि समानी । सूर सकल साँची मोहिं लागत जो कछु कही मुख गर्ग कहानी॥ ३१॥ राग धनाश्री॥ गोपालराइहो चरननिहि हौ काटी। हम अबला रिस बाँचि न जानी बहुत लागि गइ साँटी॥ वारौं करजु कठिन अति कोमल जरहु नयन निज डाटी। मधु मेवा पकवान छाँडिकै काहे खात लाल तुम माटी॥ सिगरोई दूध पियो

T

मेरे मोहन बलहि नं देवहु बाँटी। सूरदास नँद लेहु दोहनी दुहहु लालकी नाटी ॥ ३२॥ ॥ अथ माखनचोरी प्रथम ॥ गारी ॥ मैयारी मोहिं माखन भावै । मधु मेवा पकवान मिठाई मोहिं नहीं रुचि आवै ॥ ब्रज युवती इक पाछे ठाढ़ी सुनति श्यामकी बात । मन मन कहति कबहुँ मेरे घर देखों माखन खात ॥ बैठे जाइ मथनियांके ढिग मैं तब रही छिपानी। सूरदास प्रभु अंतर्यामी ग्वालि मनहिंकी जानी ॥ ३३ ॥ गौरी ॥ गए श्याम तिहि ग्वालिनिके घर। देख्यो जाइ द्वार नहिं कोई इत उत चिते चले घरभीतर ॥ हरि आवत गोपी तब जान्यो आपुन रही छिपाई । सूने सदन मथनियां के ढिग बैठिरहे अरगाई ॥ माखन भरी कमोरी देखी लैलै लागे खान। चितै रहत माणि खंभ छाँहतन तासों करत सयान ॥ प्रथम आजु मैं चोरी आयो भल्यो बन्योहै संगु । आपुनखात प्रतिबिंब खवावत गिरत कहत का रंगु ॥ जो चाहो सब देउँ कमोरी अति मीठो कत डारत । तुमहि देखि मैं अति सुखपायो तुम जिय कहा बिचारत ॥ सुनि सुनि बातैं श्यामसुंदरकी उमँगि हँसी ब्रजनारि। सूरदास प्रभु निरखि ग्वालि मुख तब भाजि चले मुरारि ॥ ३४॥ फूली फिरति ग्वालि मनमेरी। पूछति सखी परस्पर बातैं पायो परचो कछु कहै तैंरी ॥ पुलकित रोम रोम गद गद मुख वाणी कहत न आवै। ऐसो कहा आहि सो सखीरी मोको क्यों न सुनावै ॥ तनु न्यारो जो एक हमारो हंम तुम एकै रूप । सूरदास कहै ग्वालि सखीसों देख्यो रूप अनूप ॥ ॥ राग गूजरी ॥ आजु सखी मणि खंभ निकट हरि जहाँ गोरसको गोरी। निज प्रतिबिंब सिखावत ज्यों शिशु प्रगट करै जिनि चोरी ॥ आध विभाग आजुते हम तुम भली बनीहै जोरी । माखन खाहु कितहि डारतहौ छाँड़ि देहु मति भोरी ॥ हिसा न लेहु सबै चाहतहौ इहै बात है थोरी ॥ मीठो अधिक परम रुचि लागै देहौं काढ़ि कमोरी॥ प्रेम उमँगि धीरज न रह्यो तब प्रगट हँसी मुख मोरी।सूरदास प्रभु सकुचि निरखि मुख भजे कुंज गहि खोरी ॥३५॥ राग बिलावल॥ प्रथम करी हरि माखन चोरी। ग्वालिनि मन इच्छा करि पूरण आपु भजे हरि ब्रजकी खोरी ॥ मनमें इहै बिचार करत हरि ब्रज घर घर सब गाऊं। गोकुल जन्म लियो सुखकारण सबकर माखन खाऊं॥ बाल रूप यशुमति मोहिं जानै गोपिन मिलि सुख भोगू। सूरदास प्रभु कहत प्रेमसों घेरेरे ब्रज लोगू॥ ॥३६॥राग रामकली॥करत हरि ग्वालन संग बिचार। चोरि माखन खाहु सब मिलि करौ बालबिहार॥ यह सुनत सब सखाहर्पै भली कही कन्हाई। हँसत परस्पर देत तारी सौंह करि नंदराई ॥ कहाँ तुम यह बुद्धि पाई श्याम चतुर सुजान। सूर प्रभु मिलि ग्वाल बालक करतहैं अनुमान ॥ ३७॥ राग गौरी ॥ सखा सहित गए माखन चोरी।देख्यो श्याम गवाक्ष पंथह्वै गोपी एक मथति दधि भोरी॥ हेरि मथानी धरी माटते माखन हों उतरात। आपुनगई कमोरी माँगन हरि पाई ह्वघात॥ पैठे सखनसहित घरसूने माखन दधि सब खाई। छूँछीछाँडि मटुकिया दधिकी हँसि सब बाहिर आई ॥ आइ गई कर लिये मटुकिया घरते निकरे ग्वाल। माखन कर दधि मुख लपटानो देखि रही नँदलाल ॥ काहे आजु ब्रज बालक संगलै माखन कर दधि मुख लपटानो। देखत ते उठि भजे सखा एक इहि घर आइ पिछानो ॥ भुज गहि लियो कान्ह इक बालक निकरे ब्रजकी खोरि। सूरदास प्रभु ठगिरही ग्वालिनि मनु हरि लियो अजोरि ॥३८ ॥ राग गौरी ॥चकित भई ग्वालिनितन हेर्यौ। माखन छाँडि गई मथि वैसहि तबते कियो अबेर्यो ॥ देखौजाइ मटुकिया रीती मैं राख्यौ कहुँ हेरी। चकृत भई ग्वालिनि मन अपने ढूँढति घर फिरि फेरी ॥ देखति पुनि पुनि घरके बासन मनहरि लियो गोपाल। सूरदास रसभरी ग्वालिनी.जानै हरिके ख्याल ॥३९॥ राग बिलावल ब्रज घर

घर प्रगटी यह बात। दधि माखन चोरीके लैहरि ग्वाल सखा सँग खात ॥ ब्रजवनिता यह सुनि मन हर्षीं सदन हमारे आवैं।माखन खात अचानक पावैं भुज भरि उरहि छुवावैं ॥ मनही मन अभिलाप करत सब हृदय करत यह ध्यान। सूरदास प्रभुको घरते लै देहौं माखन खान ॥ ४० ॥ राग सारंग ॥ गोपालहि माखन खानदै। सुनुरी सखी कोऊ जिनि बोलै वदन दही लपटानदै ॥ गहिबहियाँ हौं लैकै जैहौं नयनन तपति बुझानदै। वापै जाई चौगुनौ लेहौं मो यशुमति लौं जानदै ॥ तुम जानति हरि कछुव न जानत सुनत मनोहर कानदै। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन को राखौंगी तन मन प्रानदै ॥ ॥ ४१॥ राग कान्हरो ॥ चली ब्रज घर घरनि यह बात। नंदसुत सँग सखालीने चोरि माखन खात ॥ कोउ कहति मेरे भवन भीतर अबहिं पैठे धाइ। कोउ कहति मुहि देखि द्वारे गयउ ताहि पराइ ॥ कोउ कहति केहि भाँति हरिको देखौं अपने धाम। हेरि माखन देउँ आछो खाहि जितनो श्याम ॥ कोऊ कहति मैं देखिपाऊं भरि धरौं अँकवारि। कोऊ कहति मैं बाँधिराखौं को सकै निरवारि ॥ सूर प्रभुके मिलन कारन करत बुद्धि विचार। जोरि कर विधिको मनावति पुरुष नंद कुमार ॥ ॥ ४२ ॥ राग कान्हरो ॥ ग्वालनि घर गये जानि साँझकी अँधेरी। मंदिरमें गए समाइ श्यामल तनु लखि न जाइ देह गेह रूप कहौं को कहै निवेरी ॥ दीपक गृह दान करयो भुजा चारि प्रगट धरयो देखत भई चकृत ग्वालि इत उतको हेरी। श्याम हृदय अति विशाल माखन दधि विंदु जाल मनमोह्यो नंदलाल बलहि बूझेरी॥ युवती अति भई विहाल भुज भरिदै अंकमाल सूरज प्रभु अति कृपाल डारयो मन फेरी। करसों कर लै लगाइ महरि पैगई लिवाय आनँद उरमें न समाय बातहै अनेरी ॥ ॥ ४३॥ राग कल्याण ॥ यशुमति धौं देखि आनि आगेह्वै ले पिछानि वहियाँगहिरयाई कुँवर और को कि तेरो। अबलौं मैं करी कानि सही दूध दही हानि अजहूं जिय जानि मानि कान्हहै अनेरो ॥ दीपक में धरयो बारि देखत भुज भये चारि हारी हौं धरति करति दिन दिनको झेरो। दिखियत नहिं भवन मांझ तैसोई तनु तैसिये साँझ छलसों कछु करतु फिरतु महरिको जठेरो ॥ गोरस तनु छीटरही शोभा नहिं जात कही मानौं जल यमुन बिंब उडगन पथुफेरो। उरहनो दिन देउ काहि काहे तू इत नो रिसाइ नाहीं ब्रजबास सासु ऐसी विधि मेरो ॥ गोपी निरखति सुमार यशुमतिको है कुमार भूली भ्रम रूप मानौ आनि कोऊ हेरो।मनमन विहँसत गोपाल भक्तपाल दुष्टशाल जानै को सूरदास चरित कान्ह केरो॥४४॥राग गौरी॥देखि फिरे हरि ग्वालि दुवारे।तब इक बुद्धि रची अपने मन भीतर साँझ परे पिछवारे ॥ सूने भवन कहूं कोउ नाहीं मनौ याहीको राजू। भांडे धरतु उघारतु मूँदतु दधि माखनके काजू ॥ रैनि जमाइ धरयो सो गोरस परयो श्यामके हाथ।लैलै खात अकेले आपुन सखा नहीं कोउ साथ ॥ आहट सुनि युवती घर आई देख्यो नंदकुमार। सूर श्याम मंदिर अँधियारे निरखत बारंबार ॥ ४५ ॥ अँधियारे घर श्याम रहे दुरि। अबहीं मैं देख्यो नँदनंदन चरित भयो मनही मन झुरि ॥ पुनि पुनि चकृत होति अपनेजी कैसी है यह बात। मटुकी के ढिग बैठि रहे हरि करै आपनी घात ॥ सकल जीउ जल थलके स्वामी चींटी दई उपाइ। सूरदास प्रभु देखि ग्वालिनी भुज पकरे तब आइ ॥ ४६ ॥ श्याम कहा चाहतसे डोलत। बूझेहूते वदन दुरावत सूधे बोल न बोलत ॥ सूने निपट अँध्यारे मंदिर दधि भाजन में हाथ। अबकहि कहा बनैहौ उत्तर कोऊ नाहिन साथ ॥ मैं जान्यो यह घर अपनो है या धोखे मैं आयो। देखतुहौं गोरसमें चींटी काढनको कर नायो ॥ सुनि मृदु वचन निरखि मुख शोभा ग्वालिनि मुरि मुसुकानी। सूरश्याम तुमहौ रतिनागर बात तिहारी जानी ॥ ४७ ॥ राग सारंग ॥ यशोदा कहाँ लौं कीजै

T

कानि। दिनप्रति कैसे सही परतिहै दूध दही की हानि॥ अपनेया बालककी करनी जो तुम देखो आनि। गोरसखाइ ढूँढ़ि सब बासन भली करी यह वानि॥ मैं अपने मंदिरके कोने माखनराख्यो जानि। सोई जाइ तुम्हारे लरिका लीनोहै पहिचानि॥ बूझीग्वालिनि घरमें आयो नेकु न शंकामानी। सूरश्याम तब उतर बनायो चींटी काढतु पानी॥ ४८॥ राग गौरी॥आप गए हरुए सूने घर। सखा सबहिं बांहरही छांडे देख्यौ दधि माखन हरि भीतर॥ तुरत मथ्यो दधि माखनपायो लैलै खात धरत अधरनिपर। सैनहुदै सब सखा बुलाए तिनहिं देत भरि भरि अपने कर॥ छिटकिरही दधि बूँद हृदय पर इत उत चितवत करि मनमें डर। उठत ओटते लेत सबनि लै पुनिलै खात देत ग्वालिनि वर॥ अंतर भई ग्वालि यह देखति मगन भई अति उर आनँद भरि। सूरश्याम मुख निरखि थकित भइ कहत न बनै रही मनमें धरि॥ ४९॥ राग धनाश्री॥ गोपाल दुरेहैं माखन खात- देखि सखी शोभाजु बनी है श्याम मनोहर गात॥ उठि अवलोकि ओट ठाढ़े ह्वै जिहि बिधि है लखि लेत। चकृत वदन चहूँ दिशि चितवतहैं और सखनको देत॥ सुंदर कर आनन समीप अति राजत इहि आकार। मनौ सरोज विधु बैर वंचि करि लिये मिलत उपहार॥ गिरिगिरि परत वदनके ऊपर ह्वै दधिसुतके बिंदु। मानहु सुभग सुधाकन वरषत विजमौ आगम इंदु॥ बाल विनोद विलोकि सूर प्रभु शिथिल भई ब्रजनारि। फुरै न वचन वरजिबे कारन रही बिचारि बिचारि॥ ५०॥ राग सारंग॥ग्वालिनि जो घर देखे आइ। माखन खाइ चुराइ श्याम तब आपुन रह्यो छपाइ॥ ठाढी भई मथनियांके ढिग रीती परी कमोरी। अबहीं गई आई इन पाँइनि लै गयो को करि चोरी॥ भीतर गई तहां हरि पाए श्याम रहे गहि पाई। सूरदास प्रभु ग्वालिनि आगे अपनो नाम सुनाई॥ ५१॥ राग गौरी॥ जो तुम सुनहु यशोदा गोरी। नँदनंदन मेरे मंदिरमें आजु करन गए चोरी॥ हौं भई आनि अचानक ठाढी कह्यो भवनमें को री। रहे छपाइ सकुचि रंचक ह्वै भई सहजमति भोरी॥ जबगहि बाँह कुलाहल कीनो तब गहि चरण निहोरी। लागे लै नैनन भरि आंसू तब मैं कान न तोरी॥ मोहिं भयो माखनको संशय रीती देखि कमोरी। सूर दास प्रभु देत दिनहुँ दिन ऐसी लरि कस लेरी॥५२॥ राग सारंग॥ जानि जु पाए हौ हरि नीके। चोरि चोरि दधि माखन मेरो नितप्रति गीधिरहे या छींके॥ रोंक्यो भवन द्वार ब्रज सुंदरि नूपुर मूंदि अचानक हीके। अब कैसे जैयतु अपने बल भाजन दूध दही मेरो पीके॥ सूर श्याम प्रभु भले परे फँद देउ न जान भाव ते जीकै। भरि गंडूक छिरकदै नैननि गिरिधर भाजि चले दै कीकै॥ ॥५३॥राग रामकली॥ माखन चोर री मैं पायो। मैं जु कही सखीहोतुकहाहै भाजन लगत झुँझायो॥ जौ चाहौ तौ जान क्यों पैपे बहुत दिननु है खायो। बार बार हौं ढूँकालागी मेरी घात न आयो॥ नोई नेत की करौ चमोटी घूँघट में डरवायो। विहँसत निकसिरही दोदँतियाँ तबलै कंठ लगायो॥ मेरे लाल को मारिसकैं को रोहिनि गहि हलरायो। सूरदास प्रभु बालकलीला विमल विमल यश गायो॥ ॥ ५४॥ राग नट॥ देखि ग्वालिनि यमुना जात। आपु ता घर गए पूँछत कौनहै कहि बात॥जाइ देखे भवन महियां ग्वाल बालक दोइ। भीर देखत अति डेराने दुहूँ दीनो रोइ॥ ग्वालके काँधे चढे तब लिए छींके उतारि। दह्यो माखन खात सब मिलि दूध दीनों डारि॥ वच्छ लै सब जोरि दीने गए वन समुदाइ। छिरकि लरिकनु दहीसों भरि ग्वाल दीने चलाइ॥ देखी आवत सखी घरको सखा गए सब दौरि। आनि देखे श्याम घरमें भई ठाढी पौरि॥ प्रेम अंतर रिस भरयो मुख युवति बूझति बात। चितै मुखतन सुधि बिसारी कियो उर नख घात॥ अतिहिरिसवश भई ग्वालिनि गेह देह बिसारि। सूर प्रभु भुजगहे ल्याई महरिसों अनुहारि॥ ५५॥ राग गौरी॥ महरि

तुम मानौ मेरी बात। ढूँढि ढूँढि गोरस सब घरको हरचो तुम्हारे तात॥ और काटि सींके ते लीनो ग्वाल कंधा दै लात। असंभाषु बोलन आई है ढीठ ग्वालिनी प्रात॥ चाखतनहीं दूध धौरीको तेरे कैसे खात। औरो कहति कछू सकुचतिहौं कहादिखाऊं गात॥ ऐसो तौ मेरो नहिं अचगरो कहा बनावति बात। चितवत चकित ओट भए ठाढे यशुदा तन मुसुकात॥ हैं गण बडे सूरके प्रभुके ग्वांलरिकाहै जात॥ ५६॥ राग गौरी॥ साँवरेहि बरजति क्यों जु नहीं। कहा करौं दिन प्रतिकी बातैं नाहिन परत सही॥माखन खात दूध लै डारत लेपत देह दही। तापाछे घरहूके लरिकनु भाजत छिरकि मही॥जो कछु धरहिं दुराय दूर लै जानत ताहि तही॥ सुनहु महरि तेरे या सुत सों हम पचिहारि रही॥ चोर अधिक चतुराई सीखी जाइ न कथा कही। तापर सूर बछरुवनि ढीलत वन वन फिरत बही॥५७॥राग कान्हरो॥अब ये झूठेहु बोलत लोग। पांच वरप अरु कछुक दिननिको कब भयो चोरी योग॥ इहि मिस देखन आवति ग्वालिनि मुँह फाटे युग वारी। अनदेखेको दोप लगावति दई देइगो टारी॥कैसे करियाकी भुजा पहुँची कौन वेग ह्यां आयो। ऊखल ऊपर आनि पीठ धरि तापर सखा चढायो॥ जो न पत्याहु चलो सँग यशुमति देखौ नयन निहारि। सूरदास प्रभु नेकु न बरजो मनमें महरि बिचारि॥ ५८॥ मेरो गुपाल तनकसों कहा करि जानै दधिकी चोरी। हाथ नचावति आवति ग्वालिनि जीभुन करही थोरी॥ कब सींके चढ़ि माखन खायो कब दधि मटुकी फोरी। अँगुरिन करि कबहूँ नहि चाखतु घरही भरी कमोरी॥ इतनी सुनत घोपकी नारि विहँसि चलीं सुख मोरी। सूरदास यशुदा को नंदन जो कछु करै सु थोरी॥५९॥ राग कान्हरो॥ इनु अँखियनु आगेते मोहन एकौ पल जिनि होहिं निन्यारे। हौं बलिगई दरश देखे विनु तलफतहैं नैननि के तारे॥ आनो सखा बुलाय आपने यहि आँगन खेलौ मेरे बारे। निरखति रहौं फणिककी माणि ज्यों सुंदर श्याम विनोद तिहारे॥ मधु मेवा पकवान मिठाई खाटे मीठे व्यंजन खारे। सूरदास प्रभु जो मन इच्छा सोइ सोइ माँगिलेहु मेरे प्यारे॥६०॥राग नटनारायण॥मेरे लाडिले हो जननिकहत जनि जाहु कहूं। तेरेहि काजे गुपाल सुनहु लाडिले लाल राखेहैं भाजन भरि सुरस छहूं॥ काहेको परायें जाइ करत इतने उपाइ दूध दधी घृत माखन तहूं। करति कछू न कानि बकतिहै कटु बानि निपट निलज बैन बिलखहूं॥ ब्रजकी ढीठी ग्वारी हाटकी बेचनहारी सकुच न देति गारी झगरि कहूं। कहाँलौं करौं रिस बकत धौं इहीकृश इही मिस सूर श्याम बदन चहूं॥ ६१॥राग धनाश्री॥ चोरी करत कान्ह धरि पाये। निशिवासर मोहिं बहुत सतायो अब हरि हाथहि आये॥ माखन दाधि मेरो सब खायो बहुत अचगरी कीन्ही। अबतौ आइ परेहौ ललना तुम्हैं भले मैं चीन्ही॥ दोउ भुज पकरि कह्यो कित जैहो माखन लेउ मँगाइ। तेरीसों मैं नेकु न चाख्यो सखा गये सब खाइ॥ मुख तन चिंत बिहँसिहँसि दीनो रिस तब गई बुझाइ। लियो उर लाइ ग्वालिनी हरिको सूरदास बलिजाइ॥ ॥ ६२॥ राग धनाश्री॥ मथतिग्वालि हरि देखी जाइ। गये हुते माखन की चोरी देखत छवि रहे नयन लगाइ॥ डोलत तनु शिर अंचलु उघरचो बेनी पीठि डोलत इहि भाइ। वदन इंदु पयपान करनको मनहुँ उरग उठि लागत धाइ॥ निरखी श्याम अंग पुनि शोभा भुज भरि धरि लीनो उर लाइ। चितै रही युवती हरिको मुख नयन सैन दै चितहि चुराइ॥ तन मन धन गति मति बिसराई सुख दीनो कछु माखन खाइ। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि तुम्हरी लीला लोकहै गाइ॥६३॥राग ललित॥ देख्यो हरि मथति ग्वालि दधि भेदसों ठाढी।यौवन मदमाती इतराती बेनी ढुरत कटिपर. छवि बाढी॥ दिन थोरी भोरी अति कोरी देखतही जु श्याम भये चाढी।

कर्पतिहै दुहुँकरन मथानी शोभाराशि भुजा गहि गाढी ॥ इत उत अंग सुरति झकझोरति अँगिया बनी कुचनसों माढी । सूरदास प्रभु रीझि थकित भए मनहु काम साँचे भरि काढी ॥ ६४ ॥ राग बिलावल ॥ गए श्याम तेहि ग्वालिनिके घर । देखी जाइ मथति दधि ठाढी आपु लगे खेलन द्वारे पर॥फिरि चितई हरि दृष्टि परिगए बोलि लिए हरुवे सूने घर । लिये लगाइ कठिन कुचके बिच गाढ़े चापि रही अपने कर ॥ उमँगि अंग अँगिया उर दरकी सुधि बिसरी तनकी तिहि औसर । तब भये श्याम वरष द्वादशके रिझैलई युवती वा छबिपर ॥ मन हरि लयो तनकसे ह्वैगये देखिरही शिशु रूप मनोहर। माखन लै मुख धरति श्यामके सूरज प्रभु रति पति नागर वर॥ ६५ ॥ ग्वालिनि उरहनके मिस आइ । नंदनँदन तनु मनु हरिलीनो बिन देखे क्षण रह्यो न जाइ ॥ सुनहु महरि अपने सुतके गुण कहा कहौं किहि भाँति बनाइ । चोली फारि हार गहि तोरचो इन बातन कहौ कौन बडाइ ॥ माखन खाइ खवावत ग्वालन जो उबरचो सो दियो लुढाइ । सुनहु सूर चोरी सहलीनी अब कैसे सहिजात ढिठाइ॥६६॥राग सारंग॥झूंठहि मोहिं लगावति ग्वारि ।खेलतमें मोहिं बोलि लियोहै दोउ भुज भरि दीनी अँकबारि॥ मेरे कर अपने कुच धारति आपुहि चोली फारि॥माखन आपुहि मोहि खवायो मैं कब दीन्हों ढारि॥कहा जाने मेरो वारो भोरो झुकी महरि दैदै मुख गारि॥सूर श्याम ग्वालिनि मन मोह्यो चितै रही इकटकहि निहारि॥६७॥राग गौरी॥कबहिं करन गये माखन चोरी॥जानति हौं जु कटाक्ष तिहारे कमलनयन मेरोइ तनकसो री ॥ दैदै दगा बुलाइ भवनमें भेटति भुज भरि उरज कटोरी । उर नखचिह्न दिखावति डोलति कान्ह चतुर भए तू अति भोरी॥ मो घर आवति उरहनके मिस चितै रहति ज्यों चन्द्रचकोरी । सूर सनेह जात नहिं हटक्यो नैननि प्रीति जाति नहिं तोरी ॥६८॥ ॥राग गौरी॥कहा कहौं हरिके गुण तोसों । सुनहु महरि अबही मेरे घर जे रँग कीने मोसों ॥ मैं दधि मथति आपने मंदिर गए तहाँ इहि भाँति । मोसों कह्यो वात सुनु मेरी मैं सुनिकै मुसकाति ॥ बाँह पकरि चोली गहि फारी भरि लीनी अँकवारी। कहत न बनै सकुचकी बातैं देखौ हृदय उबारी ॥ माखन खाइ निदरि नीकी बिधि इह तेरे सुतकी घात । सूरदास प्रभु तेरे आगे सकुच तनक ह्वै जात ॥ ६९ ॥ राग गौडमलार॥ ग्वालिनी श्याम तनु देखरी आपु तन देखिये । भीति जब होइ तब चित्र अबे रेखिये ॥ कहाँ मेरो कुँवरहै पाँचही वरषको रोइ अजहूँ पयपान माँगे । कहाँ तू ढीठ योबन मद सुंदरी फिरति अठिलाति गोपाल आगे ॥ कहाँ मेरो कान्हकी तनकसी आँगुरी बडे बड़े नखनिके चिह्न तेरे । मष्ट करु हँसैगो लोगु अँकवार भुज कहाँ पाए तैं श्याम मेरे ॥ टगटगै मुख झुकी नयनहू नागरी उरहनो देत रुचि अधिक बाढी । सुनहु सूर सर्वसुहरचौ साँवरे अन उत्तर महरि ढिग देति ठाढी ॥७० ॥ राग गौरी ॥ कतहो कान्ह काहूके जात । ये सब बढ़ी गर्व गोरसके मुख सम्हारि बोलति नहिं बात॥ जोइ जोइ रुचै सोइ सोइ तब मोपै मांगिलेहु किन तात । ज्यों ज्यों वचन सुन्यौ मुख अमृत त्यों त्यों सुख पावत सब गात ॥ कैसी टेव परी इन गोपिन उरहनके मिस आवति प्रात । सूर सकति हठि दोप लगावति घरहूको माखन नहिं खात ॥७१॥ राग बिलावल ॥ कान्हको ग्वालिनि दोप लगावत चोर । तनक दधि माखनके कारण कबै गयो तेरी ओर ॥ तुमतो धन योवनकी माती निलज भई उठि आवत भोर । लालकुँवर मेरो कछू न जानै तूहै तरुणि किशोर ॥ कापर नयन चढाये डोलति या ब्रजमें तिनका सो तोर । सूरदास यशुदा अनखानी इह जीवन धन मोर ॥७२॥ ॥राग देवगंधार॥कान्हहि बरजति क्यों न नँदरानी । एक गाँवके बसत कहाँलौ करैं नंदकी कानी॥तुम जो कहतहो मेरो कन्हैया गंगाकोसो पानी । बाहर तरुण किशोर बैस वर वाट घाटको दानी ॥

वचन बिचित्र कमल दल लोचन कहत सरस वरवानी। अचरज महरि तुम्हारे आगे आवै जीभ तुतरानी॥ कहाँ मेरो कान्ह कहाँ तुम ग्वालिनि इह विपरीति न जानी। आवत सूर उरहनेके मिसु देखि कुँवर मुसुकानी॥ ७३॥ राग धनाश्री॥ माखन माँगत हैं यशुमतिसों। माता सुनत तुरत लै आई देति खवाइ मगन मन रतिसों॥ मैया मैं अपने कर लेहौं धरिदे मेरे हाथ। माखन खात चले उठि खेलन सखा जुरे सब साथ॥ मथुरा जात ग्वालिनी देखी चरचि लई हरि आइ। सूर श्याम ता घरके पाछे बैठिरहे अरगाइ॥७४॥राग धनाश्री॥ मथुरा जातहों बेंचन दधियो। मेरे घरको द्वार सखीरी तबलौं देखति रहियो॥ दधि माखन द्वै माठ अछूते सौंपतिहौं तुहि सहियो। और तौ डर नाहीं या ब्रजमें नंदसुवन सखि आवत लहियो॥ ये शुभ वचन निकट ह्वै मोहन सुनिकरि उर सब गहियो। सूर पौंरिलौं गई न ग्वालिनि कूदिपरचो दैधहियो॥७५॥ राग नट॥ देख्यो जाइ श्याम घरभीतर। अबहीं निकसि कहति भई सो फिरि आई पुनि तुम्हरे डर॥ सखा साथके चमकि गए सब गह्यो श्याम कर धाई। औरनि जानि जान मैं दीन्ह्यों तुम कहं जाहु पराई॥ बहुत अचगरी करत फिरतहौ मैं पाए करि घात। बाँह पकरि लैचली महरिपै करत रहत उतपात॥ देखौ महरि आपने सुतको कबहूँ नाहिं पत्याति। बैठे श्याम आपने भवनहि चितै चितै पछिताति॥ बाँह पकरि तू ल्याई काको अति बेशरम गवाँरि। सूर श्याम मेरे आगे खेलत यौवन मद मतवारि॥ ७६॥ राग सारंग॥ यशुदा तू जो कहतिही मोसों। दिनप्रति देन उरहनो आवति कहा तिहारो कोसों॥ यहै उरहनो सत्य करनको गोविंदहि गहिल्याई। देखन चली यशोदा सुतको ह्वैगए सुता पराई॥ तेरे हृदय नेंक मति नाहीं वदन पेखि पहिचान्हैं। सुनरी सखी कहति डोलतिहै या कन्या सौ कान्हैं॥ तैं जो नाम कान्ह मेरेको सूधो है करि पायो। सूरदास स्वामी यह देखौं तुरत त्रिया ह्वै आयो॥७७॥ राग गौरी॥ रही ग्वालि हरिको मुख चाहि। कैसे चरित किये हरि अबहीं बार बार सुमिरति करताहि॥ बांह पकरि घरते लैआई कहा चरित कीन्हें हैं श्याम। जात न बनै कहत नहिं आवै कहत महरि तू ऐसी बाम॥ जानी बात तिहारी सबकी यशुमति कह्यो इहांते जाहि। सूरदास प्रभुके गुण ऐसे बुद्धि करी तब जीती ताहि॥७८॥ राग गौरी॥श्याम गए ग्वालिनि घर सूनो। माखन खाइ डारि सब गोरस बासन फोरि सोरु हठि दूनो॥बडो माट इक बहुत दिननिको तासु किये दशटूक। सोवत लरिकन छिरकि महीसो हँसत चले दै कूक॥ आइगई ग्वालिनि तिहि औसर निकसत हरि धरि पायो। देखत घर बासन सब फूटे दही दूध ढरकायो॥ दोउ भुज धरि गाढ़े करिलीन्हें गई महरिके आगे। सूरदास अब बसै कौन ह्यां पति रहिहै ब्रजत्यागे॥ ७९॥ राग बिलावल॥ ऐसो हाल कियो घर घरको हौं लै आई तुम पास पकरिकै। फोरे सब बासन घरके दधि माखन खायो जो उबरचो सो डारचो रिस करिकै॥ लरिका छिरकि महीसों देखो उपज्यो पूत सपूत महरिके। बडो माट घर धरचो युगनिको सोउ टूक पांच दश करिके॥ पारि सपाट चले तब पाये हौं ल्याई तुम पास पकरिकै। सूरदास प्रभु को यों राखो ज्यों राखिये गज मदको जकरिकै॥८०॥ राग कान्हरो॥ करत कान्ह ब्रज घरनि अचगरी। खीझति महरि कान्हसों पुनि पुनि उरहन लै आवतिहैं सिगरी॥ बड़े बापके पूत कहावत हम वै बास बसत इक नगरी। नंदहुते ये बड़े कहैहैं फेरि बसैहैं ये ब्रजनगरी॥ जननीके खीझत हरि रोये झूँठेहि मोहिं लगावत धगरी। सूरश्याम मुख पोंछि यशोदा कहति सबै युवती हैं लँगरी॥८१॥ राग सारंग॥ नितही नित सब आवति उठि भोरे। मेरे बारेहि दोष लगावत ग्वालिन यौवन जोर॥ दूध दही माखनके कारण कब गयो तेरी ओर। धनमाती इतराती डोलति सकुचति नाहिं करै अति शोर॥ मेरो कन्हैया कहां

तनक सों तू है कुचन कठोर । तेरे मनको इहाँ कौन है पायो आजु कटकको छोर ॥ कापर नयन चलावति आवति जाति नहीं ब्रजतिनका तोर । सुनहु सूर ग्वालिनिकी बातैं बसत कान्ह जीवन धन मोर ॥८२॥ राग नट ॥ मेरो माई कौनको दधि चोरै । मेरे बहुत दईको दीनो लोग पियतहैं औरै ॥ कहा भयो तेरे भवन गये जो पियो तनकु लै भोरै । ता ऊपर काहे गरजतिहौ मनो आई चढ़ि चोरै ॥ माखन खाइ मह्यो सब डारयो बहुरो भाजन फोरै । सूरदास ये रसिक ग्वालिनी नेह नवल सँग जोरै ॥ ८३ ॥ राग रामकली ॥ अपनो गाउँ लेहु नँदरानी । बड़े बापकी बेटी ताते पूतहि भले पढ़ावति वानी ॥ सखा भीर लै पैठत घरमें आपु खाइ तौ सहिये । मैं जब चली सामुहे पकरन तबके गुण कह कहिये ॥ भाजिगये दुरि देखत कतहूँ मैं घर पौढ़ी आई । हरे हरे बेनी गहि पाछे बांधी पाटी लाई ॥ सुनु मैया याके गुण मोसों इन मोहिं लियो बुलाई । दधिमें परी सेतिकी चींटी मोपै सबै कढाई ॥ टहल करत याके घरकी मैं इह पति सँग मिलि सोई । सूर वचन सुनि हँसी यशोदा ग्वालि रही मुख गोई ॥८४॥ राग सारंग ॥ महरी तुम ब्रज चाहति कछु और ॥ बात एक मैं कही कि नाहीं आपु लगावति झौर । जहां बसे पति नहीं आपनी तजन कह्यो सो ठौर ॥ सुतके भए बधाई पाई लोगन देखति हौर । कान्ह पठाइ देति घर लूटन कहत करौ या गौर ॥ ब्रज घर समुझि लेहु महरि जू इहा करति कर जोरी । सूर सुनत ग्वालिनिकी बातैं रहि यशुमति मुख मोरी ॥ ८५ ॥ लोगन कहति झुकति तू बौरी । दधि माखन गांठी दै राखत कराति फिरत सुत चोरी ॥ जाके घरकी हानि होत नित सो नहिं आन कहै री । जाति पांतिके लोग न देखत और बसैहै नेरी ॥ घर घर कान्ह खान को डोलत अतिहि कृपण तू हैरी । सूर श्यामको जब जोइ भावै सोइ तबहीं तू दैरी ॥ ८६ ॥ राग मलार ॥ महरि तैं बड़ी कृपणहै माई । दूध दही बिधिको है दीनो सुत डर धरति छिपाई ॥ बालक बहुत नाहिं री तेरे एकै कुँवर कन्हाई । सोऊ तो घरही घर डोलत माखन खात चुराई ॥ वृद्ध बैस पूरे पुण्यानिते तैं बहुतै निधि पाई । ताहूके खैबे पियबेको कहा करति चतुराई ॥ सुनहु न वचन चतुर नागरिके यशुमति नंद सुनाई । सूर श्यामको चोरीके मिस देखनको री आई ॥ ८७ ॥ राग नट ॥ अनत सुत गोरसको कत जात । घर सुरभी नव लाख दुधारी और गनी नहिं जात ॥ नितप्रति सबै उरहनेके मिस आवति हैं उठि प्रांत । अनसमुझे अपराध लगावति विकट बनावति बात ॥ अतिहि निशंक विवादति सन्मुख सुनि मोहिं नंद रिसात । मोसों कृपण कहत तेरे गृह ढोटाऊ न अघात ॥ करि मनुहारि उठाय गोदलै सुतको बरजति मात । सूर श्याम नित सुनत उरहनो दुख पावत तेरो तात॥८८॥राग बिलावल ॥ भाजिगये मेरे भाजन फोरी। लरिका सहस एक सँग लीने नाचत फिरत सांकरी खोरी ॥माखन खाइ जगाइ बालकन्ह बनचर सहित बछरुवा छोरी । सकुच न करत फागुसी खेलत गारी देत हँसत मुख मोरी ॥ बात कहौं तेरे ढोंटाकी सब ब्रज बांध्यो प्रेमकी डोरी । टोनासी पढि नावत शिर पर जो भावत सो लेत अजोरी ॥ आपु खाइ तौ सब हम मानैं औरन देत सिकहरो तोरी । सूर सुतहि देखो नँदरानी अब तोरत चोली बंद जोरी ॥ ८९ ॥ राग नट॥ श्याम सब भाजन फोरि पराने । हांक देत पैठतहैं पैला नेकु न मनहि डेराने ॥ सींके तोरि मारि लरिकनको माखन दधि सब खाई । भवन मच्यो दधिकाँदो लरिकन रोवत पाये जांई ॥ सुनहु २ सबहिनके लरिका तेरोसों कहुँ नाहीं । हाटन बाटन गलिनि कहूं कोउ चलत नहीं डरुपाहीं ॥ ऋतु आयेको खेल कन्हैया सब दिन खेलत फाग। रोकि रहत गहि गलीसांकरी टेढी बांधत पाग॥ बारेते सुत ये ढँग लाये मनहीं मनहिं सिहात । सुनहु सूर ग्वालिनिकी बातैं

T

सकुचि महरि पछितात ॥९०॥राग सारंग॥ कन्हैया तू नाहिं मोहिं डेरात। षटरस धरे छाँडि कत पर घर चोरी करि करि खात ॥ बकति बकति तोसों पचिहारी नेकहु लाज न आई। ब्रज परगन शिर दार महरि तू ताकी करत नन्हाई ॥ पूत सपूत भयो कुल मेरो अब मैं जानी बात।सूरश्याम अबलौं तोहिं बकस्यो तेरी जानी घात ॥ ९१ ॥ राग गौरी ॥ सुनरी ग्वारी कहौं एक बात। मेरी सौं तुम याहि मारियो जबहीं पावो घात ॥ अब मैं याहि जकरि बाँधौंगी बहुतै मोहिं खिझाई। साटिन्ह मारि करौं पहुनाई चितवत वदन कन्हाई ॥ अजहूं मानु कह्यो सुनु मेरो घर घर तू जनि जाही। सूर श्याम कह्यो कबहुँ न जैहौं माता सुख तन चाही॥९२॥राग बिलावल ॥ तेरे लाल मेरो माखन खायो। दुपहर दिवस जानि घर सूनो ढूँढि ढँढोरि आपही आयो ॥ खोल किंवार सूने मंदिरमें दूध दही सब सखन खवायो। सीके काढि खाट चढि मोहन कछु खायो कछु लै ढरकायो ॥ दिन प्रति हानि होत गोरसकी यह ढोटा कौने ढँग लायो। सूरदास कहती ब्रजनारी पूत अनोखो जायो ॥ ९३ ॥ राग रामकली॥माखन खात पराये घरको।नितप्रति सहस मथानी मथिये मेघ शब्द दधि माठ घमरको ॥ कितने अहीरं जियतहैं मेरे गृह दधि लै मथि बेंचतहैं मही महरको। नव लख धेनु दुहतहैं नितप्रति बडो भाग्यहै नंद महरको ॥ ताके पूत कहावतहौ जी चोरी करत उघारत फरको। सूर श्याम कितनो तुम खैहौ दधि माखन मेरे जहाँ तहाँ ढरको ॥ ९४ ॥ मैया मैं नाहीं दधि खायो। ख्याल परे ये सखा सबै मिलि मेरे मुख लपटायो ॥ देखि तुहीं सीके पर भाजन ऊंचे धर लटकायो। तुहीं निरखि नान्हें कर अपने मैं कैसे करि पायो ॥ मुख दधि पोंछि कहत नँदनंदन दोना पीठ दुरायो। डारि साट मुसुकाइ तबहिं गहि सुतको कंठ लगायो ॥ बालविनोद मोद मन मोह्यो भक्त प्रताप देखायो। सूरदास प्रभु यशुमतिके सुख शिव विरंचि बौरायो ॥ ९५ ॥ यशुमति तेरो बारो नन्हो अतिहि अचगरो।दूध दही माखन लै डारि देत सगरो॥भोरहि उठि नितप्रति मोसों करतहै झगरो। ग्वाल बाल संग सब लिये घेरि रहैं बगरो ॥ हम तुम हैं सब बैस एक के को काते अगरो। लियो दियो सोई कछु डारि देहु झगरो ॥ सूर श्याम तेरो गुननिमें अति नगरो। चोली अरु हार तोरि कियो झगरो ॥ ९६ ॥ देखो माई या बालककी बात। वन उपवन सरिता सब मोहे देखत श्यामल गात ॥ मारग चलत अनीत करत हरि हठिकै माखन खात। पीतांबर वै शिरते ओढत अंचल दै मुसुकात ॥ तेरी सौं कहा कहौं यशोदा उरहन देत लजात। जब हरि आवत तेरे आगे सकुचि तनक ह्वै जात ॥ कौनर गुण कहौं श्यामके नेक न काहु डरात। सूर श्याम मुख निरखि यशोदा कहति कहा इह बात ॥ ॥ ९७॥ राग नट ॥ नंद घरनि सुत भलो पढ़ायो। ब्रजकी बीथिन पुरनि घरनि घर बाट घाट सब शोर मचायो ॥ लरिकन मारि भजत काहूके काहूको दधि दूध लुटायो। काहूके घर करत बडाई मैं ज्यों त्यों करि पकरन पायो ॥ अबतौ इन्हें जकरि बांधौंगी इहि सब तुम्हरो गाउँ भडायो। सूर श्याम भुज गहि नँदरानी बहुरि कान्ह अपने ढिग आयो ॥९८॥ राग बिलावल॥ सुनि सुनि री तू महरि यशोदा तैं सुत बडो लडायो। काके नहीं अनोखो ढोटा केहि न कठिन करि जायो ॥ मैं हूं अपने औसर पै ते बहुत दिननमें पायो। यहि ढोटा लै ग्वाल भवनमें कछु बिगरचो कछु खायो ॥ तैं तो ग्वालि पकरि भुज याकी वदन दही लपटायो। सूरदास ग्वालिनि अति रूठी बरबस कान्ह बँधायो ॥ ॥ ९९ ॥ अथ नवम अध्याय हरि दाँवरि बँधाए ॥ राग गौरी ॥ ऐसी रिसमें जो धरि पाऊं। कैसे हाल करौं धरि हरिके तुमको प्रगट देखाऊं ॥ सटिया लिये हाथ नँदरानी थरथरात रिस गात। मारे विना आजु जो छाँडों लागैं मेरे तात ॥ यहि अंतर ग्वालिनि इक औरै धरे बाँह हरि ल्यावति।

भली महरि सूधो सुत जायो चोली हार बतावति ॥ रिसमें रिस अतिही उपजाई जानि जननि अभिलाष। सूर श्याम भुज गहे यशोदा अब बांधौं कहि माष ॥३००॥ राग सोरठ ॥ यशुमति रिस करि करि रजु करषै। सुत हित क्रोध देखि माताके मनहीं मन हरि हरषै ॥ उफनत क्षीर जननि करि व्याकुल इहि बिधि भुजा छुड़ायो। भाजन फोरि दही सब डारचो माखन मुँह लपटायो ॥ लै आई जेवरी अब बाँधौ गरब जानि न बँधायो। आंगुर द्वै घटि होत सबनि सों पुनि पुनि और मँगायो॥नारद शाप भये यमलार्ज्जुन इनको अब जो उधारौं।सूरदास प्रभु कहत भक्त हित युग युग मैं तनु धारौं॥३०१॥ राग बिलावल॥यशोदा हरि गहि राजत करपै।गावत गोविंद चरित मनोहर प्रेम पुलकि चित बरषै॥उफनत क्षीर शरीर तन व्याकुल तबहीं भुजा छुड़ायो। भाजन फोरि दही सब डारेव लवनी मुख लपटायो॥ लैकर दाँवरि यशोदा दौरी बँधन कृष्ण ना पायो। द्वै द्वै अंगुर घटै जेवरी ताते अधबुध आयो॥ नारद शाप भये यमलार्ज्जुन तिन हित आपु बँधायो। सूरदास बलिजाइ यशोदा साँचे देवल आयो ॥३०२॥ राग धनाश्री॥देख सखी यशुमति बौरानी। घर घर डोलति लेत दामरी बांह गहे हरिकी विततानी ॥ जानति नहीं जगत्पति माधव जिनते सब आपदा नशानी। जाके नाम सकति पुनि ताकी ताहि देखि बांधत नंदरानी॥अखिल ब्रह्मांड उदर में जाके जिनकी ज्योति जल थलहु समानी। मुख जम्हात त्रिभुवन देखरायो अचरज कथा न जात बखानी ॥ ब्रह्मादिक सनकादि शुकादिक भ्रमत रहत इनहू नहिं जानी। सूरदास मोहिं ऐसी लागत जो कछु कही गर्गमुनि बानी ॥३०३॥ राग रामकली ॥ यशोदा ये तो कहा रिसानी। कहा भयो जो अपने सुतपै महि टरिपरी मथानी ॥रोस रोस सँभरे दृग तेरे कीरति पयलए पानी। मनहु शरदके कमल कोशपर मधुकर मीन सकानी॥ श्रम जलकण किंचित निरखि वदन पर यह छबि कहत मन मानी। मानौं चंद्र नव उमँगि सुधा भुव ऊपर वरषा ठानी ॥ गृह गृह गोकुल दई दाँवरी बांधति भुज नँदरानी। आपु बँधावत भक्तन छोरत वदन विदित श्रम पानी ॥ गुण लघु चरचि कराति श्रम जितनो निरखि वदन मुसुकानी। शिथिल अंग सब देखि सूर प्रभु शोभा सिंधु तिरानी ॥४॥ राग सारंग ॥ बाँधौं आजु कौन तोहि छोरै। बहुत लँगरई कीनी मोसों भुज गहि रजु ऊखलसों जोरै॥ जननी अति रिस जानि बँधायो चितै वदन लोचन जल ढोरै। यह सुनि ब्रज युवती उठि धाईं कहत कान्ह अब क्यों नहिं चोरै ॥ ऊखलसों गहि बाँधि यशोदा मारनको साँटी कर तोरै। साँटी पेखि ग्वालिनि पछितानी बिकल भई जहँ जहँ मुख मोरै ॥ सुनहु महरि ऐसी न बूझिये सुत बाँधत माखन दधि थोरै। सूर श्यामको बहुत सतायो चूक परी हमते यह भोरै ॥ ५ ॥ राग आसावरी ॥ जाहु चली अपने अपने घर। तुमहीं सब मिलि ढीठ करायो अब आई बँधन छोरन वर ॥ मोहिं अपने बाबाकी सौंहै कान्हे अब न पत्याऊं। भवन जाहु अपने अपने सब लागतिहौं मैं पाऊं॥ मोको जिनि बरजो युवती कोउ देखौं हरिके ख्याल। सूर श्यामसों कहति यशोदा बडे नंदके लाल ॥ ६ ॥ राग सोरठ ॥ यशोदा तेरो मुख हरि जोवै। कमल नयन हरि हिचिकिनि रोवैं बँधन छोरि जु सोवै ॥ जो तेरो सुत खरोई अचगरो तऊ कोखिको जायो। कहा भयो जो घरके ढोंटा चोरी माखन खायो॥ कोरी मटुकी दही जमायो जापन पूजन पायो। तेहि घर देव पितर काहेको जा घर कान्ह रुवायो॥ जाकर नाम लेत भ्रम छूटै कर्म फंद सब काटै। सो हरि प्रेम जेवरी बाँध्यो जननि साँट लै डाटै ॥ दुखितजानि दोउ सुत कुबेरके ता हित आपु बँधायो। सूरदास प्रभु भक्तहेतुही देह धारि तहाँ आयो॥७॥राग बिहागरो॥देखो माई कान्ह हिलकियन रोवै। तनक मुख माखन लपटान्यो डरनिते अँसुअन धोवै ॥ माखन लागि उलूखल

बाँध्यो सकल लोग ब्रज जोवै। निरखि कुरूपि उन बालकनिकी दिशि लाजन अँखियन धोवै॥ ग्वाल कहैं धनि जननि हमारी सुकरसुरभी नित नोवै। बरबसही बैठारि गोदमें धारै वदन निचोवै॥ ग्वालिनि कहैं या गोरस कारण कत सुतकी पति खोवै। आनि देहि हम अपने घरते चाहति जित-कु यशोवै॥ जब जब बंधन छोरचो चाहत सूर कहै यह कोवै। मन माधो तनु चित गोरसमें इहि बिधि महरि बिलोवै॥ ८॥ राग सारंग॥ माई नेकहुँ नहिं दरद करति हिलकिनि हरि रोवै। बज्रहूते कठिन हियो तेरोहै यशोवै॥ पालना पौढाइ जिनहि विकट वाउ काटे। उलटे भुज बांधि तिनहि लकुट लिये डाँटे॥ नेकहू न थकित पानि निर्दयी अहीरी। अहो नंदरानी सीख कौनपै लहीरी॥ जाको शिव सनकादिक सदा रहत लोभा। सूरदास प्रभुको सुख निरखि देखि शोभा॥ ९॥ राग विहागरो॥ कुँवर जल लोचन भरि भरि लेत। बालक वदन विलोकि यशोदा कत रिस करत अचेत॥ छोरि कमरते दुसह दाँवरी डारि कठिन कर बेत। कहि तोको कैसे आवतुहै शिशु पर तामस एत॥ मुख आँसू माखनकें कनिका निरखि नैन सुख देत। मानो शशि स्त्रवत सुधानिधि मोती उडुगण अवलि समेत॥ सरबसु तौ न्यवछावरि कीजै सूर श्यामके हेत। ना जानों केहि हेतु प्रगट भये इहि ब्रज नंदनिकेत॥ १०॥ राग केदारो॥ हरिके वदन तन धौंचाही। तनक दधि कारण यशोदा एतो कहा रिसाही॥ लकुटके डर डरत जैसे सजल शोभित डोल। नील नीरज दृग लसैं मनो वोसकन कृत लोल॥ बात वशसु मृणाल जैसे प्रात पंकज कोस। नमित मुख पर अधर सूचित सकुचमें कछु रोस॥ केतिक गोरस हानि जाको करतिहौ अपमान। सूर ऐसे वदन ऊपर वारिये धन प्रान॥ ११॥ राग केदारो॥ मुख छबि देखिहो नंद घरनि। शरद निशिके अंशु अगणित इंदु आभा हरनि॥ ललित श्रीगोपाल लोचन लोल आँसू ढरनि। मनहुँ वारिज विलखि विभ्रम परे परवश परनि॥ कनक मणिमय मकर कुंडल ज्योति जगमग करनि। मित्र लोचन मनहुँ आए तरलगति दोउ तरनि॥ कुटिल कुंतल मधुप मिलि मानौ कियो चाहत लरनि। बदन क्रांति अनूप शोभा सकै सूर न वरनि॥ १२॥ राग केदारो॥ हरि मुख देखिहो नंदनारि। महरि ऐसे सुभग सुतसों इतो कोह निवारि॥ जलज मंजुल लोल लोचन शरद चितवनि दीन। मनहुँ खेलत हैं परस्पर मकरध्वज द्वै मीन॥ ललित कण संयुत कपोलनि ललित कज्जल अंक। मनहुँ राजत रजनि पूरण कला अति अकलंक॥ वेगि बंधन छोरि तन मन वारिलै हिय लाइ। नवल श्याम किशोर ऊपर सूर जन बलिजाइ॥ १३॥ राग विहागरो॥ कहो तौ माखन ल्याऊं घरते। जा कारण तू छोरति नाहिन लकुट न डारति करते॥ महरि सुनहु ऐसी न बूझिये सकुचि गयो मुख डरते। मनहुँ कमल दधिसुत समपोतकि फूलत नाहिंन सरते॥ ऊखल लाइ भुजा धरि बाँधे मोहन मूरति वरते। सूर श्याम लोचन जल वरपत जनु मुक्ता हिमकरते॥ १४॥ राग कल्यान॥ कहन लगी अब बढि बढि बात। ढोटा मेरो तुमहिं बँधायो तनकहि माखन खात॥ अब मोहिं माखन देति मँगाए मेरे घर कछु नाहीं। उरहन करि करि साँझ सवारे तुमहिं बँधायो याही॥ रिसहीमें मोको गहिदीनो अब लागी पछितान। सूरदास हँसि कहत यशोदा बूझो सबको ज्ञान॥ १५॥ राग धनाश्री॥ कहा भयो जो घरके लरिका चोरी माखन खायो। अहो यशोदा कत त्रासतिहो इहै कोखको जायो॥ बालक जौन अयान न जानै केतिक दह्यो लुटायो। तेरो सखी कहा खायो गोरस गोकुल अंत न पायो॥ हाहा लकुट त्रास देखरावत आपन पाश बँधायो। रोदन करत दोउ नयन रचेहैं मनहु कमल तन छायो॥ पौढिरहे धरणी पर तिरछे विलखि वदन कर जाहु। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि

हँसिकै कंठ लगाहु ॥ १६ ॥ सुचित दै चितै तनै तन ओर । सकुचत शीत भीत ज्यों जलरुह तुव कर लकुट निरखि सखि चोर ॥ आनन ललित श्रवण जल शोभित अरुण चपल लोचनकी कोर । डारत मनौं गंडूक सुधा भरि विधुमंडल ज्यों उभै चकोर ॥ सुभग मृणाल युगल भुज ऊपर बांधे ऊखल दाम कठोर । मनौं भुवंग भीतरते बांबी पर उरझिरही केचुरि गरजोर॥लघु अपराध देखि बहु शोचति निर्दयी हृदय वज्र सम तोर । सूर कहा सुतपर इतनी रिस कहि इतनै कछु माखन चोर॥१७॥राग बिलावल॥यशुदा देखि सुतकी ओर । बाल वैस रिसालपर रिस इती कहाके पोर ॥ बार बार निहारि तव तन निमिष दधि मुख चोर । तरनि किरनिके परशि मानौ कुमुदि विधु मति भोर ॥ त्रासते अति चपल गोलक सजल शोभित छोर । मीन मानौं वेधि वंशी करत जल झकझोर ॥ नंदनंदन जगतबंदन करत आंसू कोर । सूरदास सुमहरि मुख हित निरखि नंदकिशोर ॥ १८ ॥ राग धनाश्री ॥ चितै धौं कमल नयनकी ओर । कोटि चंद वारों या मुख छबि येहैं शाहके चोर॥उज्ज्वल अरुण असित देखतिहै दुहूं नैनकी कोर । मानौ सुधा पानके कारण बैठे निकट चकोर॥ कतहि रिसात यशोदा इन्हसों कौन ज्ञानहै तोर । सूर श्याम बालक मन मोहन नाहिन तरुण किशोर ॥१९॥ राग सारंग॥ कबके बाँधे ऊखल दाम । कमल नयन बाहिर करि राखे तू बैठी सुखधाम॥हौं निर्दयी दया कछु नाहीं लागि गई गृह काम।देखि क्षुधा ते मुख कुँभिलानो अति कोमल तनु श्याम ॥ छोरहु बेगि बडी बिरियां भई बीतगये युग याम । तेरे त्रास निकट नहिं आवत वोलि सकत नहिं राम॥जेहि कारण भुज आप बँधाये वचन कियो ऋषि ताम । ता दिनते यह प्रगट सूर प्रभु दामोदर सो नाम ॥२०॥राग गौरी॥वारौं हो वे कर जिन हरिको वदन छुवोरी।वारौं वह रसना जिन बोल्यो तुकारी ॥ ऐसी निर्मोही भई यशुदा न तोसीं निरमोही देख्यो गोपाल लाल आयो क्यों न हाथ पसारी॥कुलिशते कठिन वाह चितैरी छतियां अजहूं द्रवति ज्यों देखत उर मुरारी॥ कितिक गोरस हानि जाको तू तोरति कानि डारचो तुहिं सूर श्यामके रोम रोम पर वारी ॥ २१ ॥ राग सोरठ ॥ यशोदा तेरो भलो हियोहै माई । कमल नयन माखनके कारण बाँधे ऊखल लाई ॥ जो संपदा देव मुनि दुर्लभ सपनेहु देइ न देखाई।याहीते तू गर्व भुलानी घर बैठे निधि पाई ॥ सुत काहूको रोवत देखति दौरि लेत हिय लाई । अब अपने घरके लरिकासों इती कहा जडताई ॥ बारंबार सजल लोचन भरि चितवत कुँवर कन्हाई । कहा करौं बलि जाउँ छोरती तेरी सौंह दिवाई ॥ जो मूरति जल थलमो व्यापक निगम न खोजत पाई । सो मूरति तू अपने आँगन चुटकी दैदै नचाई॥सुरपालक सब असुरसँहारक त्रिभुवन जाहि डराई । सूरदास प्रभुकी यह लीला निगम नेति नित गाई॥२२॥ राग केदारो ॥देख री नँदनंदन ओर।त्रासते तनु तृषित भो हरि तकत आनन तोर॥ वारबार डरात तोको वरन वदनही थोर । मुकुर मुख दोउ नैन ढारत क्षणहि क्षण छबि छोर ॥ सजल चपल कानीन पलक अरुण ऐसे डोर।सरस अंबुज भँवर भीतर भ्रमतहै जनु भोर॥लकुटकै डरि देखि जैसे भये शोणितवोर । उर लै लगाइ बहाइ रिस जिय तजहु प्रकृति कठोर ॥ कछुक करुणा करि यशोदा करति निपट निहोर । सूर श्याम विलोकि यशुमति कहति माखनचोर॥२३॥राग धनाश्री॥तबते बाँधे ऊखल आनि । वालमुकुंदको कत-तरसावति अति अंग कोमल जानि ॥ प्रातकालते बाँधे मोहन तरनि चढै मध्यानि । कुम्हिलानो मुख इंदुदिखावति देखौ धौं नँदरानि॥तेरे त्रासते कोऊ न छोरत अब छोरहु तुम आनि । कमल नयन बाँधेई छोडे तू बैठी मन मानि ॥ यशुमतिके मन सुखके कारण आपु बँधावत पानि । यमलार्ज्जुनकी मुक्ति करनको सूर श्याम इह ठानि ॥ २४ ॥ राग नट ॥ कान्हसों

आवत क्यों बीरसात। लै लै लकुट कठिन अपने कर परशति कोमल गात॥देखि जु आंसू गिरत नैनते शोभितहैं ढरिजात। मुक्ता मनौ चुवत खग खंजन चोचि पुठी न समात॥ उरनि डोल डोलतहैं इहि विधि निराखि सुभुव सुनि बात। मानहुँ सूर सकेत शरासन उडिवेको अकुलात॥ २५॥ राग रामकली॥ यशोदा यह न बूझिको काम।कमल नयनकी भुजा देखि धौं तैं बांधेहै दाम॥ पूतहुते प्रीतम नहिं कोऊ कुलदीपक मणि धाम। हरि पर वारि डारु सब तन मन धन गोरस अरु ग्राम॥ दिखियत कमल वदन कुँभिलानो तू निर्मोही वाम। तू बैठी मंदिर सुख छाँहैं सुत दुख पावत घाम॥ अति सुकुमार मनोहर मूरति ताहि करत तुम ताम। एई हैं सब ब्रजके जीवन सुख पावत लिए नाम॥ इह सुनि ग्वालि जगतके बोहित पतितपावन है नाम। सूरदास प्रभु भक्तनके वश हैं जगतके विश्राम॥२६॥ राग धनाश्री॥ ऐसी रिस तोकों नँदरानी। भली बुद्धि तेरे जिय उपजी बडी बैस अब भई सयानी॥ ढोंटा एक भए कैसेहुँ करि कौन कौन कर वर विधि भानी। कर्म कर्म करि अवलौ उबरचो ताको मारि पितर दै पानी॥को निर्दयी रहै तेरे घरको तेरे संग बैठे आनी।सुनहु सूर कहि कहि पचिहारी युवती चलीं घरहि विरुझानी॥ २७॥ राग सारंग॥ हलधरसों कहि ग्वालि सुनायो। प्रातहिते तुमरो लघुभैया यशुमति ऊखल बाँधि लगायो॥काहूके लरिकहि हरि मारचो भोरहि आनि तिनहिं गोहरायो।तबहींते बांधे हरि बैठे सो हम तुमको आनि जनायो॥हम बरजी बरजो नहिंमानत सुनतहि बल आतुर ह्वै धायो।सूर श्याम बाँधे ऊखल गहि माता डरत न अतिहि त्रसायो२८राग सारंग॥ यह सुनिकै हलधर तहँ धाए।देखि श्याम ऊखल सों बांधे तबहीं दोउ लोचन भरि आए।मैं बरज्यों कैवार कन्हैया भली करी दोउ हाथ बँधाए।अजहूँ छोड़ोगे लँगाराई दोउ कर जोरि जननिपै आए॥श्यामहिं छोरि मोहिं बरु बांधो निकसत सगुन भले नहिं पाए।मेरे प्राण जीवनधन कान्हा तिनको भुज मोहिं बँधे देखाए॥ मातासों कह करौं ढिठाई शेष रूप कहि नाम सुनाए। सूरदास तब कहत यशोदा दोउ भैया तुम इकमत भाए॥ २९॥ राग सारंग॥ एतौ कियो कहा रिस मैया। कौन काज धन दूध दही यह क्षोभ करायो कन्हैया॥ आये सिखावन सबै पराये स्यानी ग्वालि बौरैया। दिन दिन देन उरहनो आवैं ढुंकि ढुंकि करत लरैया॥ सूरदास सुंदरहि लगाने वह बलभद्र औ भैया॥ ३३०॥ राग केदारो॥ काहेको कलहु नाध्यो दारुण दाँवरि बांध्यो कठिन लकुट लै त्रास्यो मेरो भैया। नाहीं कसकत मन निरखि कोमल तन तनक दधि काज भली री तू मैया॥ हाँ तौ न भयो घर देखतो तेरी यो अरि फोरतो बासन सब जानत बलैया। सूरदास सहित हरि लोचन आये ऍं भरि बलहूको बल जाको सोई री कन्हैया॥३१॥ राग विलावल॥काहेको यशोदा मैया त्रास्योहै वारो कन्हैया मोहन मेरो भैया कितनो दधि पियतौ। हौंतो न भयो घर साँटी दीनी सर सर बांध्यो कर जेवरी नीके कैसे देखि जियतौ॥ गोपालतौ सबनि प्यारो ताकों तैं कीनो प्रहारो जाकोहै मोको गारो अनुगुत कियतौ। ठाढो बांधे बलवीर नैनोंसे ढरतु नीर हरिजूते प्यारो तोको दूध दही वियतौ॥ सूरदास गिरिधरन धरनीधर हलधर यह छवि सदाई रहौ मेरे जियतौ॥३२॥ राग सोरठ॥यशोदा तोहिं बाँधे क्यों आयो। कसको नाहिं नेकु तनु तेरो यह कहि काहि खिझायो॥ शिव विरंचि महिमा नहिं जानत सो गाइनसँग धायो। ताते तू पहिचानति नाहीं कौन पुण्यते पायो॥इतनी कहत रसिकमणि तबहीं रोप सहित बल धायो। जननी छाँडि और जो होती करत आपनो भायो॥ कहा भयो जो घरके लरिका चोरी माखन खायो। अपने कर सब बंधन खोले प्रेम सहित उर लायो॥ सरस वचन मनोहर कहि कहि अनुज शूल बिसरायो। सूरदास प्रभु भक्तनके हित निजकर आप बँधायो॥३३॥

राग सोरठ ॥ काहेको हरि इतनौ त्रास्यो। सुनु री मैया मेरो भैया कितनो गोरस नाश्यो॥ जब रजुसों कर गाढो बाँधे छर छर मारी साटी। सूने घर बाबानँद नाहीं ऐसो करि हरि डाटी ॥ और न कछु देखै तन श्यामहि ताको करौं निपातु। तू जो करै बात सोइ साँची कहा करौं तोहि मातु ॥ गाढे वदत बात सब हलधर माखन प्यारो तोही। ब्रज प्यारो जाको मोहिं गारो छोरति काहे न ओही ॥ काको ब्रज माखन दधि केहिको बाँधे जकरि कन्हाई। सुनत सूर हलधरकी बातैं जननी सैन बताई ॥ ३४ ॥ राग सारंग ॥ सुनहु बात मेरी बलराम। करन देहु इनकी मोहिं सेवा चोरी प्रगटत नाम ॥ तुमहीं कहौ कमी काहेकी नव निधि मेरे धाम। मैं बरजति सुत जाहु कहूं जनि कहि हारी निशि याम ॥ तुमहुँ मोहिं अपराध लगायो माखन प्यारो श्याम। सुनु मैया तुहि छाँडि कहौं किहि को राखै मेरो ताम ॥ तेरी सौं उरहनो लै आवति झूठहि ब्रजकी वाम। सूर श्याम अतिही अकुलाने कबके बाँधे दाम ॥ ३५ ॥ कहा करौं हरि बहुत खिझाई। सहि न सकी रिसही रिस भरि गई बहुतै ढीठ कन्हाई ॥ मेरो कह्यो नेकु नहिं मानत करत आपनी टेक। भोर होत उरहन लै आवत ब्रजकी वधू अनेक ॥ फिरत जहाँ तहँ द्वंद्व मचावत घर न रहत क्षण एक। सूर श्याम त्रिभुवन को करता यशुमति कहति जनेक ॥ ३६ ॥ राग गौरी ॥ निरखि श्याम हलधर मुसुकाने। को बाँधै को छोरै इनको यह महिमा येई पै जाने ॥ उत्पति प्रलय करतहैं येई शेष सहस मुख सुयश बखानै। यमलार्ज्जुन तोरि उधारन कारन करन करत मन मानै ॥ असुर सँहारन भक्तहि तारन पावन पतित कहावत बाने। सूरदास प्रभु भावभक्तके अति हित यशुमति हाथ बिकाने ॥ ३७ ॥ हरि चितये यमलार्ज्जुन तन। अबहीं आजु इन्हैं उद्धारौं येहैं मेरेई जन ॥ इनके हेतु भुजन बँधवाई अब विलंब नहिं लाऊं। परशकरौं तनु तरुहि गिराऊं मुनिवर शाप मिटाऊं ॥ ये सुकुमार बहुत दुख पायो सुत कुबेरके तारौं। सूरदास प्रभु कहत मनहि मन करबंधन निरवारौं॥ ३८॥ राग रामकली ॥ यशोदा ऊखल बांधे श्याम। मनमोहन बाहिरही छोडे आपु गई गृह काम ॥ दह्यो मथति मुखते कछु वकरति गारी दैदै नाम। घर घर डोलत माखन चोरत षटरस मेरे धाम ॥ ब्रजके लरिकन्ह मारि भजतुहै जाहु तुमहु बलराम ! सूर श्याम ऊखलसों बांधे निरखति ब्रजकी वाम॥ ३९॥ राग गूजरी ॥ यशोदा कान्हरते दधि प्यारो। डारिदेहु कर मथत मथानी तरसत नंददुलारो ॥ दूध दही माखन वारौं सब जाहि करति तू गारो। कुँभिलाने मुख चंद देखि छबि काहे न नैन निहारो॥ ब्रह्म सनक शिव ध्यान न पावत सो ब्रज गैयन चारो। सूर श्याम पर बलि बलि जैये जीवन प्राण हमारो ॥ ४० ॥ राग धनाश्री ॥ यशुमति केहि यह सीख दई। सुतहि बांधि तू मथत मथानी ऐसी निठुर भई ॥ हरे बोल युवतिनिको लीनो सुन सब तरुणी नई। लरिकहि त्रास दिखावत रहिये कत मुरझाय गई ॥ मेरे प्राण जीवनधन माधव बांधे बेर भई। सूर श्याम कहुँ त्रास दिखावत तुम कहा कहत दई ॥ ४१ ॥ राग धनाश्री ॥ तबहिं श्याम इक बुद्धि उपाई। युवती गईं घरनि सब अपने गृह कारज जननी अटकाई ॥ आपुन गये यमलार्ज्जुनके तरु परशत पात उठे झहराई। दिये गिराय धरणि दोऊ तरु तब द्वै कुबेर सुत प्रगटे आई ॥ दोउ कर जोरि करत दोउ अस्तुति चारि भुजा तिन्हैं प्रगट देखाई। सूर धन्य ब्रज जन्म लियो हरि धरणीकी आपदा नशाई॥ ४२॥ राग बिलावल ॥ धनि गोविंद धनि गोकुल आये। धनि धनि नंद धन्य निशिवासर धनि यशुमति जिन श्रीधर जाये॥ धनि धनि बाल केलि यमुना धनि धनि वन सुरभी वृंद चराये। धनि यह समौ धन्य ब्रजवासी धनि धनि वेणु मधुर ध्वनि गाये॥ धनि धनि अनख उरहनो धनि धनि धनि माखन धनि मोहन खाये। धन्य सूर ऊखल

तरु गोविंद हमहिं हेत धनि भुजा बँधाए ॥ ४३ ॥ राग सोरठ ॥ धन्य धन्य ऋषि शाप हमारे । आदि अनादि निगम नहिं जानत ते हरि प्रकट देह ब्रज धारे ॥ धन्य नंद धनि मातु यशोदा धनि आँगन में खेलनवारे । धन्य श्याम धनि दाम बँधाए धनि ऊखल धनि माखनप्यारे ॥ दीनबंधु करुणानिधि हहु प्रभु राखि लेहु हम शरण तिहारे।सूर श्यामके चरण शीश धरि अस्तुति करि निज धाम सिधारे॥ ॥ ४४॥राग विलावल॥यह जिय जानि गोपाल बँधाये।शाप दग्ध द्वै सुत कुबेरके आनि भये तरु युगल सुहाये ॥ व्याज रुदन लोचन जल ढारत ऊखल दाम सहित चलि आये । विटप भंजि यमलार्ज्जुन तारे करि अस्तुति गोविंद रिझाये ॥ तुम बिनु कौन दीन खलु तारै निर्गुण सगुण रूप धरि आये । सूरदास श्याम गुण गावत हर्षवंत निज पुरी सिधाये॥ ४५ ॥ राग रामकली ॥ तरु दोउ धरणि परे भहराइ । जर सहित अरराइकै आघात शब्द सुनाइ ॥ भए चक्रत लोग सब ब्रजके रहे सकुचि डराइ । कोऊ रहे अकाश देखत कोऊ रहे शिरनाइ ॥ घरिकलौं जकिरहे जहां तहां देह गति बिसराइ । निरखि यशुमति अजिर देखे बँधे नाहिं कन्हाइ ॥वृक्ष दोउ महि परे देखे महरि कीन्ह पुकार । अबहिं आँगन छोडि आई चप्यो तरुके डार ॥मैं अभागिनि बांधि राखे नंद प्राणअधार । शोर सुनि नँद दौरि आये विकल गोपी ग्वार ॥ देखि तरु सब अति डराने हैं बडे विस्तार । गिरे कैसे बडो अचरज नेकु नहीं बयार॥दुहूँ तरु विच श्याम बैठे रहे ऊखल लागि । भुजा छोरि उठाय लीने महरि हैं बडे भागि ॥निरखि युवती अंग हरिके चोट जनि कहुँ लागि । कबहुँ बाँधति कबहुँ मारति महरि बडी अभागि ॥ नयन. जल भरि ढारि यशुमति सुतहिं कंठ लगाइ । जरहु रिस जिन तुमहिं बांध्यो लागै मोहिं बलाइ ॥ नंद मोहिं कहा कहैंगे देखि तरु दोउ आइ । मैं मरौं तुम कुशल रहौ दोऊ श्याम हलधर भाइ ॥ आइ घर जो नंद देखे तरु गिरे दोउ भारि । बांधि राखति सुतहि मेरे देत महरिहि गारि ॥ तात कहि तब श्याम दौरे महर लियो अंकवारी । कैसे उबरे कृष्ण तरुते सुरले बलिहारी ॥४६ ॥ राग नट ॥ मेरे मोहन हौं तुमपर वारी । कंठ लगाइ लिये मुख चूमत सुंदर श्याम विहारी ॥ काहेको दाम ऊखलसों बांध्यो है कैसी महतारी । अतिहि उतंग बयारि न लागत क्यों टूटे दोऊ तरु भारी ॥ बारंबार बिचारि यशोदा यह लीला अवतारी । सूरदास स्वामीकी महिमा कापर जात बिचारी ॥ ॥ ४७ ॥ राग सारंग ॥ अब घर काहूके जिनि जाहु । तुम्हरे आजु कमी काहेकी कत तुम अनतहि खाहु ॥ बरै जेवरी जिन तुम बांधे बरै हाथ भहराई । नंद मोहिं अतिही त्रासतहैं बांधे कुँवर कन्हाई ॥ रोग जाउ अपने हलधरकी छोरतहै तब श्याम । सूरदास प्रभु खात फिरो जिनि माखन दधि तुव धाम ॥ ४८ ॥ ब्रजयुवती श्यामहि उर लावति । वारम्वार निरखि कोमल तनु कर जोरति बिधिको जुमनावति ॥ कैसे बचे अगम तरुके तर मुख चुंबति यह कहि पछितावति । उरहनों लै आवति जेहि कारण सो सुख फल पूरण करि पावति ॥ सुनहु महरि इनको तुम बांधति भुज गहि बंधन चिह्न दिखावति । सूरदास प्रभु अति रति नागर गोपी हरपि हृदय लपटावति ॥ ४९ ॥ अथ यमलार्जुनउद्धारन दूसरी लीला ॥ राग बिलावल ॥ ग्वालि उरहनो भोरहि ल्याई । यशुमति कहाँ गयो तेरो कन्हाई ॥ माखन मथि भरि धरी कमोरी । अबहीं मोहन लै गयो चोरी ॥ भलो कर्म तैं सुतहि पढ़ायो । बारेहीते मूँड चढायो ॥ यह सुनतहि यशुमति रिस मानी । कहां गयो कहि सारंग- पानी ॥ खेलतते औचक हरि आये । जननी बांह पकरि बैठाये ॥ मुख देखत यशुमति पहिचानों । माखन वदन कहा लपटानों ॥ फिरि देखे तौ ग्वालिनि पाछे । माता मुख चितवत नाहिं आछे ॥ चोरीके सब भाव बताये । माता सँटिया द्वैक लगाये ॥ माखन खान जात परघरको । बधत तोहिं

नेकु नहिं घरको॥ बाँह गहे ढूँढ़ति फिरै डोरी। बाँधौं तोहिं सकै को छोरी॥ बाँधि पची डोरी नहि पूरै। बार बार खीझत रिस झूरै॥ घर घरते जेवरि लैआई। मिसही मिस देखनको धाई॥ चकित भई देखै ढिग ठाढी। मनौ चितेरे लिखि लिखि काढी॥ यशुमति जोरि जोरि रजु बाँधै। आँगुर द्वैद्वै जेवरि साँधै॥जब जानी जननी अकुलानी। आपु बँधायो सारँगपानी॥ भक्त हेत दावरी बँधाई। यमला अर्जुनकी सुधि आई॥ माता हेतु जनहिं सुखकारी। जानि बँधायो श्रीबनवारी॥ सुख जँभात त्रिभुवन दिखरायो। चकित कियो तुरतहि बिसरायो॥ बाँधि श्याम बाहर लैआई। गोरस घर घर खात चुराई॥ ऊखलसों गहि बाँधि कन्हाई। नितहि उरहनो सह्यो न जाई॥ इक कहि जाति एक फिरि आवै। रैनि दिना तू मोहिं खिझावै॥ माखन दधि तेरे घर नाहीं। धाम भरो चोरी करि खाहीं॥ नवलख धेनु दुहत घर मेरे। केते ग्वाल रहत घर घेरे॥ मथत नंद घर सहस मथानी।ताके सुत चोरीकी बानी॥मोसों कहति आनि जब नारी।बोलि जातु नहिं लाजन मारी॥नंद महरकी कैरै नन्हाई।वृद्ध बैस सुत भयो कन्हाई॥तुम्हरे गुण सब नीके जानै।नित बरजौं कबहूं नहिं मानै॥कोउ छोरै जनि ढीठ कन्हाई।बांधे भुज दोउ ऊखल लाई॥भवन काजको गइ नँदरानी। आंगन छांडे श्याम बिनानी॥उरहन देन ग्वालि जे आई।तिन्हैं यशोदा दियो बहराई॥चलीं सबै मिलि सोचति मनमें। श्यामहि गहि बांधेहैं क्षनमें॥ हँसत बात इक कही कि नाहीं। ऊखलसों बांध्यो सुत बाहीं॥ कहा कहौं वा छबिको माई। बांबी पर अहि करत लराई॥कान्ह वदन अतिही कुँभिलान्यो। मानौं कमलहि हिम तरसान्यो॥ डरते दीरघ नैन चपल अति। वदन सुधारस मीन करति गति॥ यह सुनि और युवति सब आई। यशुमति बाँधे कहत कन्हाई॥ भली बुद्धि तेरे जिय उपजी। ज्यों ज्यों दिनी भई त्यों निपजी॥ छोरहु श्याम करहु मन लाहो। अति निर्दयी भई तू काहो॥देखो श्याम ओर नँदरानी। सकुचि रह्यो मुख सारँगपानी॥ बाहिर बांधि सुतहि बैठारी। मथत दही माखन तोहिं प्यारो॥ छांडि देहु बहि जाइ मथानी। सौंह दिवावति छोरहु आनी॥ हांसी करन सबै तुम आई। अब छोरहुँ नाहिं कुँवर कन्हाई॥ तुमहीं मिलि रसवाद बढायो। उरहन देदै मूंड पिरायो॥ सबहिन गोधन सौंह दिवाई। चितैरहे मुख कुँवर कन्हाई॥ कब तुमको मैं बोलि बुलाई। केहि कारण तुम धाई आई॥ इह सुनि बहुरि चली मुरझाई। कहा करौं बलिजाउँ कन्हाई॥ मूरखको कोइ कहा सिखावै। याकी मति कछु कहत न आवै॥ नारि गईं फिरि भवन आतुरी। नंद घरनि अब भई चातुरी॥ ओछी बुद्धि यशोदा कीनी।याकी जाति अबै हम चीन्ही॥इहै कहत अपने घर आई। मानैं नहीं कितौ समुझाई॥ मथत यशोदा दही मथानी। तबहिं कान्ह ऐसी मति ठानी॥ भक्त बछल हरि अंतर्यामी। सुत कुबेरके ये दोउ नामी॥ यहि अवतार कह्यो इन तारण। इनको दुख अब करौं निवारण॥ जो जेहि ढंग तिहि ढंग सब लायो।यमलार्जुन पै प्रभु तब आयो॥ वृक्ष बीच ऊखल लै अटक्यो। आगे निकसि नेक गहि झटक्यो॥ अररात दोउ वृक्ष गिरे घर। अति आघात भयो व्रज ऊपर॥ भए चकृत व्रजके सब वासी। यहि अंतर दोउ कुँवर प्रकासी॥ शंख चक्र कर शारंगधारी। भक्त हेतु प्रगटे वनवारी॥ देखि दरश मन हरष बढायो। तुमहिं बिना प्रभु कौन सहायो॥ धनि व्रज कृष्ण जहां वपुधारी। धनि यशुमति ब्रह्महि अवतारी॥ धन्य नंद धनि धनि गोपाला। धन्य धन्य गोकुलकी बाला॥ धन्य गाइ धनि द्रुम वन चारन। धनि यमुना हरि करत विहारन॥ धन्य उरहनो प्रातहि ल्याई। धनि माखन चोरत यदुराई॥ धन्य सुजन ऊखल गढि ल्याये। धन्य दाम भुज कृष्ण बँधाये॥ गदगंद कंठ वचन मुख भारी। शरण राखिलेहु गर्व

प्रहारी ॥ बार बार चरणन परै धाई । कृपा करी भक्तन सुखदाई ॥ साधु साधु कहि श्रीमुख बानी । विदाभये इहि भाँति बखानी ॥ यमलार्जुन प्रभु तारि पठाये । नंद द्वार दोउ वृक्ष गिराये ॥ निरखि यशोदा आंगन आई । दुहूं वृक्ष बिच बचे कन्हाई ॥ दौरिपरे व्रजके नर नारी । नंदद्वार कछु होत गोहारी ॥ देखे आइ वृक्ष दोउ डारे । ये गुण यशुमति आहिं तुम्हारे ॥ तुरत छोरि ऊखलतें ल्यायो । देखत जननि नैन भरि आयो ॥ वज्रदेह हरिकी है माई । जहां तहां विधि होत सहाई ॥ प्रथम पूतना मारन आई । पयपीवत वह तहां नशाई ॥ तृणावर्त लैगयो उड़ाई । आपुहि गिरयो शिलापर आई ॥ कागासुर आवत नहिं जान्यो । सुनी कहत ज्यौं लेइ परान्यौ ॥ शकटासुर पलना ढिग आयो । को जाने केहि ताहि गिरायो ॥ खेलत में केशीको मारयो । चींच मरोरि वहि धरनि पछारयो ॥ ग्वालनके सँग गये गो चारन । तहां वकासुर लाग्यो मारन ॥ कौन कौन करि वक हरि टारयो । यशुमति बांधि अजिर लै डारयो॥बहुतै उबरयो आजु कन्हाई । ऊपर वृक्ष गिरो भहराई ॥ कहा कहौं कहत न बनिआवै । तुरत आय हरि कौन बचावै ॥ सबहिन पेलि करत मनभाई । पुण्य नंदके बच्यो कन्हाई ॥ मुख चूमति लै लै उर लाए। युवतिन करे आपु मनभाए॥ लै जननी सुत कंठ लगावति । चोरीकी बातैं समुझावति ॥ मैं रिसही रिस करत लालसों । भुज बाँधे मन हँसति ख्यालसों ॥ मेरे जो तुम करत अचगरी । उरहन को ठाढ़ी रहैं सगरी॥बार बार तन देखति माई । गिरत वृक्ष कहुँ चोट न आई ॥ कहत श्याम मैं अतिहि डेरान्यो । ऊखल तर मैं रह्यो छिपान्यो ॥ बात सुतहि बूझत नँदरानी । कान्ह कहै मुख उरकी बानी ॥ हरिके चरित कथा नहिं जानै । यशुमति अति बालक करि मानै॥अखिल ब्रह्मांड जीवके दाता । माखनको बाँधतिहै माता॥गुण अपार अविगति अविनाशी।सो प्रभु घर घर घोष विलासी ॥ ऊखल बँध्यो हेतु भक्तनके। येइ माता येइ पिता जगतके ॥यमलार्जुनको मोक्ष कराये । पुत्र हेतु यशुदा गृह आये ॥ऐसे हरि जनके सुखकारी । प्रगटे रूप चतुर्भुज धारी ॥ जो जेहि भाव भजै प्रभु तैसे । प्रेम वश्य हरि मिलहीं जैसे॥ सूरदास यह लीला गावै । कहत सुनत सबके मन भावै॥जो हरि चरित ध्यान उर राखै । आनँद सदा दुरित दुख नाखै ॥ ९०॥ राग मलार ॥ निगम स्वरूप देखि गोकुल हरि।जाको दूरि दरश देवनको सो बांध्यो यशोदा ऊखल धरि ॥ चुटकिन दै दै ग्वाल नचावत नाचत कान्ह बाल लीला धरि । जेहि डर भ्रमत पवन रवि शशि जल सो क्यों डरै लकुटियाके डरि ॥ क्षीर समुद्र शैन संतत जेहि माँगत दूध पतोखी दै भरि । सूरदास गुणके गाहक हरि रसना गाइ गये अनेक तरि॥९१॥राग सोरठ॥ जाको ब्रह्मा अंत न पावै । तापै नंदकी नारि यशोदा घरकी टहल करावै ॥ शेष सनक नारद गणेश मुनि जाको गुण नित गावै । निशि वासर खोजत पचिहारे मनशा ध्यान न आवै॥धन्य धन्य गोकुल धनि वनिता वर निरखति श्याम बँधावै । सूरदास प्रभु प्रेमहिके वश संतन दरश दिखावै ॥९२॥ राग बिलावल ॥ गोविंद तेरोइ स्वरूप निगम नेति नेति गावै । भक्तके वश श्याम सुंदर देह धरे आवै॥योगी जन ध्यान धरत सपनेहु नहिं पावै । नंद घरनि बांधि बांधि कपि ज्यों नाच नचावै ॥ गोपी जन प्रेम आतुर तिनको सुख दीनो । अपने अपने रस विलास काहू नहिं चीनो ॥ श्रुति स्मृति सब पुरान कहत मुनि बिचारी । सूरदास प्रेम कथा सबहींते न्यारी ॥ ९३ ॥ राग सारंग ॥ भूखो भयो आजु मेरो बारो । भोरहि ग्वालिनि उरहनो ल्याई उहि यह कियो पसारो ॥ पहिले रोहिणिसों कहि राख्यो तुरत करहु जेवनार । ग्वाल बाल सब बोलि लिये मिलि बैठे नंदकुमार ॥ भोजन बेगि ल्याउ कछु मैया भूख लगी मोहिं भारी । आजु सवारे कछु नहिं खायो सुनत हँसी

महतारी ॥ रोहिणि चितै रही यशुमति तन शिर धुनि धुनि पछितानी। परसहु बेगि बेर कत लावत भूखे सारँगपानी ॥ बहु व्यंजन बहु भांति रसोंई षटरसके परकार। सूर श्याम हलधर दोउ भैया और सखा सब ग्वार ॥ ९४ ॥ राग सारंग ॥ नंदभवनमैं कान्ह अरोगै। यशोदा ल्याई षटरस भोगै ॥ आसन दै चौकी आगे धरि। यमुना जल राख्यो झारी भरि ॥ कनक थारमैं हाथ धुवाए। सत्रहसै तहँ भोजन आए ॥ लै लै धरति सबनके आगे। मातु परोसै जो हरि मांगे ॥ खीर खांड घृत लावज लाडू। ऐसे होई न अंमृत खांडू ॥ और लेहु कछु सुत ब्रजराजा। लुचई लपसी घेवर खाजा ॥ पेठा पाक जलेबी पेरा। गोंद पाग तिनगरी गिदोंरा ॥ गोंझा इलाइची पाग अमिरती। सीरी साजो लै ब्रजपती ॥ छोलि धरे खरबूजा केरा। शीतल वायु करत अति घेरा ॥ खारिक दाख अरु गरी चिरारी। पींड बदाम लेत बनवारी ॥ बेसन पुरी सुखपुरी लीजै। आछो दूध कमल मुख पीजै ॥ मैया मोहिं और किन प्यावै। धौरीको पय मोकों भावै ॥ बेला भरि हलधर को दीनो। पीवत पय बल अस्तुति कीनो ॥ ग्वाल सखा सबहीं पै अँचयो। नीके ओटि यशोदा रचयो ॥ दोना मेलि धैरेहै खजुवा। हौंस होइ तौ ल्याऊं पूवा ॥ मीठे अति कोमलहैं नीके। ताते तुरत चभोरे घीके ॥ फेनी सेव अँदरसे प्यारे। लै आऊँ जेंवहु मेरे वारे ॥ हलधर कही ल्याउ री मैया। मोके दे नहिं लेत कन्हैया ॥ यशुमति हरष भरी लै परसति। जेंवतहैं अपनी रुचिसों अति ॥ कान्ह मांगि शीतल जल लीयो। भोजन बीच नीर लै पीयो ॥ मातु पसाइ रोहिणी लाई। घृत सुगंध सुंदर दै ताई ॥ नीलावति चाँवर दिवि दुर्लभ। भात परोस्यो माता सुलभ ॥ मूंग ममूर उरद चना दारी। कनक वरण धरि फटक पछारी ॥ रोटी बाटी पोरी झोरी। एक कोरी एक घीव चभोरी ॥ गायो घृत भरि धरी कचोरी। कछु खायो कछु फेटो छोरी ॥ मीठे तेल चनाकी भाजी। एक मकूनी दै मोहि साजी ॥ मीठे चरपरे उज्ज्वल कौरा।हौंस होइ तो ल्याऊं औरा ॥ मुगौरा पकोरा पनौए पतोरा। एक कोरे भीजे गुर बोरा॥ पापर बरी फुलारि मिथौरी। कूर बरी कचरी पिठौरी ॥ बहुत मिरिचि दै किये निमोना। बेसनके दश बसिक्र दोना ॥ बनकोरा पिडि साचीचीडी। खीप पिंडारू कोमल भींडी ॥ चौलाई लालहा अरु पोई। मध्य मेलि निबुआनि निचोई ॥ रुचितल जान लोनिका फांगी। कढी कृपालु दूसरे मांगी ॥ सरसों मेथी सोवा पालक। बथुवा रांधि लियो जु उतालक ॥ हींग हर्दि मृच छौंके तेले। अदरख और आँवरे मेले ॥ सालन सकल कपूर सुवासित। स्वाद लेत सुंदर हरि आसित ॥ आँब आदि दे सबै सँधाने। सब चाखे गोवर्द्धनराने ॥ कान्ह कहै हौं मातु अघानो। अब मोकों शीतल जल आनो ॥ अचवन ले तब धोये कर मुख। शेष न बरने भोजनको सुख ॥ उज्ज्वल पान कपूर कस्तूरी। आरोगत मुखकी छबि रूरी॥चंदन अंग सखनके चरच्यो। यशुमतिको सुखका नहिं परच्यो ॥ मांगिजूठ सूर जु लै लीनों। बांटि प्रसाद सबनको दीनों॥ जन्म जन्म बाढचो जूठनिकों। चेरो नंद महरके घरको ॥९५॥ राग कान्हरो॥मोहिं कहति युवती सब चोर। खेलत रहौं कतहुंमें बाहिर चितै रहति सब मेरीओर बोलिलेति भीतर घर अपने मुख चूमति भरिलेति अँकोर। माखन हेरि देति अपने कर कछु कहि विधिसों करति निहोर ॥ जहां मोहिं देखति तहाँ टेरति मैं नहिं जात दोहाई तोर। सूर श्याम हँसि कंठ लगायो वै तरुणी कहां बालक मोर ॥ ९६ ॥ राग केदारो ॥ यशुमति कहति कान्हसों मेरे अपने ही आंगन तुम खेलौ। बोलि लेहु सब सखा संगके मेरो कह्यो कबहुं जनि पेलौ ॥ ब्रजबनिता सब चोर कहति तोहिं लाज न सकुच जातु मन मेरो। आज मोहिं बलराम कहत है रूठेहि नाम लेतह

तेरो ॥ जब मोहिं रिस लागति तब त्रासति बांधति जैसे चेरो । सूर हँसति ग्वालिनि दै तारी चोर नाम कैसेहु सुत फेरो ॥५७॥ अथ धेनु दुहनसीखनसमै ॥ अध्याय एकादश॥ राग बिलावल ॥ धेनु दुहत हरि देखत ग्वालिनि । आपुन बैठिगए तिनके सँग सिखवहु मोहिं कहत गोपालनि ॥ काल्हि तुम्हैं गोदोहन सिखवैं दुही सबै अब गाई । भोर दुहो जे नंद दोहाई उनसों कहत सुनाई ॥ बडो भयो अब दुहत रहौंगो अपनी धेनु निवेरी । सूरदास प्रभु कहत सौंह दै मुहिं लीजौ तुम टेरी॥५८॥ राग कान्हरो ॥ मैं दुहिहौं मोहिं दुहन सिखावहु । कैसे धार दूधकी बाजत सोइ सोइ बिधि तुम मोहि बतावहु ॥ कैसे दुहत दोहनी घुटुवन कैसे बछरा थनहि लगावहु। कैसे लै नोई पग बाँधत कैसे लै या पग अटकावहु ॥ निपट भई अब साँझ कन्हैया गाइन पै कहुँ चोट लगावहु । सूर श्यामसों कहत ग्वाल सब धेनु दुहन प्रातहि उठि आवहु॥५९॥ राग सारंग ॥ महर महरिके मन इह आई । गोकुल बहुत उपद्रव दिन प्रति बसिये वृंदावन अब जाई ॥ सब गोपन मिलि शकटा साजी सबहिनके मनमें इह भाई । सूर यमुन तट डेरा देई पांच बरसके कुँअर कन्हाई ॥६०॥ राग बिलावल ॥ जागहु हो तुम नँदकुमार । हौं बलिजाउँ मुखारविंदकी गोसुत मेलो खरिक संभार ॥ इतनो कहा सोये मन मोहन और बार तुम उठत सवार। बारहि बार जगावति माता अंबुज नयन भयो भिनुसार ॥ दधि मथिकै माखन बहु दीनों सकल ग्वाल ठाढ़े दरबार । उठिकै मोहन वदन देखावहु सूरदासके प्राणअधार ॥६१॥ राग बिलावल ॥ जागहु हो व्रजराज हरी । लै मुरली आँगन ह्वै देखौ दिनमणि उदित भयो द्वै घरी ॥ गो सुत गूढ बँधन सब लागे गोदोहनकी जून टरी । निठुर वचन कहि सुतहि जगावति जननि यशोदा पास खरी ॥ भोर भयो दधि मथन होतु सब ग्वाल सखाकी हांक परी । सूरदास प्रभु दरशन कारण नींद छुडाई चरण धरी ॥ ६२ ॥ राग बिलावल ॥ जागहु लाल ग्वाल सब टेरत । कबहुँ पीताम्बर डारि वदन पर कबहुँ उघारि जननि तन हेरत ॥ सोवतमें जागत मन मोहन । बात सुनत सबकी अब टेरत ॥ बारंबार जगावति माता लोचन खोलि पलक पुनि घेरत॥पुनि कहि उठी यशोदा मैया उठहु कान्ह रविकिरणि उजेरत । सूर श्याम हँसि चितै मात मुख पट कर लै पुनि पुनि मुख फेरत ॥ ६३ ॥ ॥ राग सूहा बिलावल॥ जननी जगावति उठौ कन्हाई। प्रगट्यो तरणि किरणि गण छाई॥ आवहु चंद्रवदन देखराई । बार बार जननी बलिजाई ॥ सखा द्वार सब तुमहिं बुलावत । तुम कारण हम धाए आवत ॥ सूर श्याम उठि दरशन दीनो ।माता देखि मुदित मन कीनो॥६४॥ राग रामकली॥ दाऊजू कहि श्याम पुकारयो । नीलाम्बर पट ऐंचि लियो हरि मनो बादरते चंद उतारयो ॥ हँसत हँसत दोउ बाहर आये माता लै जल वदन पखारयो ।: दतवनि लै दुहुँ करी मुखारी नैननिको आलस जु बिसारयो ॥ माखन-खाहु दुहुन कर दीन्ह्यो तुरत मथ्यो मीठो अति भारयो । सूर दास प्रभु खात परस्पर माता अंतर हेत विचारयो ॥६५॥ राग बिलावल ॥ जागहु जागहु नंदकुमार। रवि बहु चढे रैनि सब निघटी उघरे सकलकिवार॥ वारि वारि जल पियति यशोदा उठु मेरे प्राण अधार । घर घर गोपी दह्यो बिलोवहिं कर कंकन झनकार ॥ सांझ दुहुन तुम कह्यो गाइको ताते होत अबार। सूरदास प्रभु उठे सुनतही लीला अगम अपार ॥ ६६ ॥ तनक कनककी दोहनी दैदै री मैया । तात दुहन सीखन कह्यो मोहिं धौरी गैया ॥ अटपटे आसन बैठिकै गोथन कर लीनो । धार अनतही देखिकै व्रजपति हँसिदीनो ॥ घर घरते आई सबै देखन व्रजनारी । चितै चोरि चित हरिलियो हँसि गोप बिहारी विप्र बोलि आसन दियो करि वेद उचारी । सूर श्याम सुरभी दुही संतन हितकारी ॥६७॥ अथ वत्सासुरबध ॥ राग नटनारायनी ॥ चले बछरु चरावन ग्वाल। वृंदावनसब छाडि

T

कै लैगये जहँ घन ताल ॥ परम सुंदर भूमि देखत हँसत मनहि बढाइ । आपु लगे तहां खेलन बच्छ दिये बगराइ ॥जानिकै हलधर गये तहँ बाल बछरा पास । रोहिणी नंदनहिं देखत हरष भए हुलास॥ ताल रस बलराम चाख्यो मन भयो आनंद। गोपसुत सब टेरि लीने सुधि भई नँदनंद॥ कह्यो बछरा हांकि ल्यावहु चलहु जहां कन्हाइ । तालरसके पानते अति मत्त भये बलराइ ॥ तहां छल करि दनुज धायो धरे बछरा भेषि । फिरत ढूँढत श्यामको अति प्रबल बलको देखि ॥ सबै बछरनि घेरि ल्याए बहु न घेरचो जाइ। दाऊ कहि बालकनि टेरचो वृषभ सुत न धराइ॥ कह्यो मन इहि अब हिं मारौं उठे बलहि सँभारि।टेरिलिये सब ग्वाल बालक गये आपु प्रचारि ॥ आगे ह्वै इतको विडारचो पूछ हाथ लगाइ। पकरिकै भुजसों फिरायो तालके तर आइ ॥ असुर लै तरु सों पछारचो गिरचो तरु झहराइ। तालसों तरु ताल लाग्यौ उख्यो वन घहराइ॥बछ असुरको मारि हलधर चले सबनि लिवाइ । सूर प्रभुको वीर जाकी तिहूं भुवन बडाइ ॥ ६८ ॥ राग देवगंधार ॥ बछरा चारन चले गोपाल । सुबल सुदामा अरु श्रीदामा संग लिए सब ग्वाल ॥ दनुज एक तहाँ आइ पहुँचेउ धरे वत्सको रूप । हरि हलधर दिशि चितइ कब तुम जानतहो इह वीर ॥ कहेव आहि दानौ इहि मारौ धोर बत्स शरीर । तब हरि सींग गह्यो यक करसों यक करसों गहे पाइ ॥ थेरे कहि बलसों छिन भीतर दीनो ताहि गिराइ । गिरत धरनि पर प्राण गए चितवत फिरि नहिं आयो श्वास ॥ सूरदास ग्वालन सँग मिलि हरि लागे करन विलास ॥ ६९ ॥ अथ बकासुर वध ॥ राग सारंग ॥ बन बन फिरत चरावत धेनु । श्याम हलधर संग है बहु गोप बालक सेनु ॥ तृषित भई सब जानि मोहन सखा न टेरत वेनु । बोलि ल्यावो सुरभि गण सब चलौ यमुन जल देन ॥ सुनतही सब हांकि ल्याए गाइ करी इकठेन । हेरी देदे ग्वाल बालक कियो यमुन तट गेन ॥ बकासुर रचि रूपमाया रह्यो छल करि आइ । चांचु यक पुहुमी लगाई इक अकास समाइ ॥ आगे बालक जातहैं ते पाछे आए धाइ । श्यामसों सब कहन लागे आगे एक बलाइ ॥ नितहि आवत सुरभि लीने ग्वाल गोसुत संग । कबहुँ नहिं इहि भांति देख्यो आजको सो रंग ॥ मनहिं मन तब कृष्ण जान्यो इह बका असुर विहंग । चोंच फारि विदारि डारौं पलकमें करौं भंग ॥ निदरि चले गुपाल आगे बकासुरके पास । सखा सब मिलि कहनलागे तुम न जियके आस ॥ अजहुँ नाहिं डरात मोहन बचे कितने गास । तब कह्यो हरि चलहु सब मिलि मारि करहिं विनास ॥ चले सब मिलि जाइ देख्यो अगम तन विकरार । इत धरणि उत व्योमके बिच गुहाके आकार ॥ पैठि वदनु विदारिडारचौ अति भए विस्तार। मरत असुर चिकार पारचो मारचो नंदकुमार ॥ सुनत ध्वनि सब ग्वाल डरपे अब न उबरे श्याम । हमहिं बरजत गयो देखो किये ऐसे काम ॥ देखि ग्वालन विकलता तब कहि उठे बलराम । बका वदन बिदारि डारचो अबहिं आवत श्याम ॥ सखा हरि तब टेरिलीने सबै आवहु धाइ । चोंच फारि बका संहारचौ तुमहु करौ सहाइ ॥ निकट आए गोप बालक देखि हरि सुख पाइ । सूर प्रभुके चरित अगणित नेति निगमन गाइ ॥ ३७० ॥ ब्रजमें को उपज्यौ है यह भैया । संग सखा सब कहत परस्पर इनको गुण अगमैया ॥ जबते ब्रज अवतार धरचौ इन कोउ नहिं घात करैया । किती बात यह बका विदारचो धनि यशुमति जिन जैया ॥ तृणावर्त पूतना पछारी तब अति रहे नन्हैया । सूरदास प्रभुकी लीला यह हम कत जिय पछितैया ॥ ७१ ॥ राग धनाश्री ॥ बका विदारि चले ब्रजको हरि । सखा संग आनंद करत सब अंग अंग बन धातु चित्र करि ॥ बनमाला पहिरावत श्यामहि बार बार अँकवारि भरत धरि । कंस निपात करोगे तुमहीं हम

जानी यह बात सही परि ॥ पुनि पुनि कहत धन्य नँद यशुमति जिन इनको जन्मौ सो धन्य घरि। कहत इहै सब जात सूर प्रभु आनँद आंसू भरित लोचन भरि ॥७२॥ राग कान्हरो ॥ ब्रज बालक सब जाइ तुरतही महर महरिके पाँइ परे। ऐसो पूत जनौ जग तुमहीं धन्य कोप जहँ श्याम धरे॥ गाइ लिवाइ गए वृंदावन चरत चली यमुना तट हेरि। असुर एक खगरूप रह्यो धरि बैठो तीर बाइ मुख घेरि॥ चोंच एक पुहुमी करि राखी एक रह्यो तौ गगन लगाई। हरि हम बरजत पहलेहि धायो वदन चीरि पलमाहिं गिराई॥सुनत नंद यशुमति चकृत चित सुन चकृत नर नारी। सूरदास प्रभु मन हरि लीनो तब जननी भरि लई अंकवारी ॥ ७३ ॥ अथ द्वादशमो अध्याय ॥ १२ ॥ अघासुरवध धनाश्री ॥ नंदसुत लाडिले हौ सब व्रज जीवन प्रान।बारबार माता कहे जागौ श्याम सुजान॥यशुमति लेति बलाइ भोर भयो उठौ कन्हाई। संग लिये सब सखा द्वारे ठाढे बल भाई ॥ सुंदर वदन देखाइये हरौ नैननको तापु। नैन कमल मुख धोइये कछु करौ कलेऊ आपु ॥ माखन रोटी लेहु सद्यदधि रैनि जमायो । पट रसके मिष्टान्न सोई जेवहु रुचि आयो ॥ मोपै लीजे मांगिकै जोइ जोइ भावै तोहिं। संग जेंवहि बल राम तुम रुचि उपजावहु मोहिं ॥ तब हँसि चितए श्याम सेजते वदन उघारचो। मानहु पयनिधि मथत फेन फटि चंद उजारचो ॥ सखा सुनत देखन चले मानहुं नैन चकोर। युगल कमल मानौ इंदु पर बैठ रहे अति भोर ॥ तब उठि आए कान्ह मातु जल वदन पखारचो। बोलि उठे बलराम श्याम कत उठचो सवारचो ॥ दाऊजू कहि हँसि मिले बाहँ गहि बैठाइ। माखन रोटी सद्यदही हो जेंवत रुचि उपजाइ ॥ जल अचयो मुख धोइ उठे बल मोहन भाई। गाइ लईं सब घेरि चले वन कुँवर कन्हाई ॥ टेर सुनत बलरामकी आए बालक धाइ।लै आए सब घेरिकै घरते बछरा गाइ॥सखन्ह कान्हसों कही आजु वृंदावन जैये। यमुना तट तृण बहुत सुरभि गण तहां चरैये ॥ ग्वाल गाइ सब लै गए वृंदावन समुहाइ। अतिहि सघन वन देखिकै हरषि उठे सब गाइ ॥ कोउ टेरत कोउ हांकि सुरभि गण जोरि चलावत। कोउ कोउ हेरी देत परस्पर श्याम सिखावत ॥ अंतर्यामी कहत जीय सब हमहिं सिखावत ढेरी। श्याम कहत अबके गई पुनि धौली जहु फेरी ॥ कोउ मुरली कोउ वेणु शब्द शृंगीको पूरै । कृष्ण कियो मन ध्यान असुर इकु वस्यो अधूरै ॥ बालक बछरा राखिहौ एक बार लै जाऊ। कछुक जनाऊ अपनपौ हो अवलौं रहो सुभाऊ ॥ असुर कुलहि संहारि धरणिको भार उतारों। कपटरूप रचि रह्यो दनुज यहि तुरत पछारों। गिरि समान धरि अगम तन बैठो वदन पसारि। मुख भीतर वन घन नदी माया छल करि भारि॥पैठिगए मुख ग्वाल धेनु बछरा सँग लीने। देखि महाबन भूमि हरे तन द्रुम कृत कीने ॥ कहनलगे सब आपुसमें सुरभी चरी अघाई। मानहु पर्वत कंदरा मुख सब गये समाई॥ मुख सब गए समाय असुर तब चोंच सकेरचो। अंधकार होय गयो मनहुँ निशि बादर घेरचो ॥ अतिहि उठे अकुलाइकै ग्वाल बच्छ सबगाइ।त्राहि त्राहि कहि कहि उठे पेरे कहाँ हम आइ॥धरि धरि कहि कान्ह असुर यह कंदर नाहीं।अनजानत सब परे अघा मुख भीतर माहीं॥ जिय त्याग्यौ यह सुनतही अब को सकै उबारि। बातें दूनी देह धरी तब असुरन सक्यो सँभारि॥ शब्द करचो आघात अघासुर टेरि पुकारचो। रह्यो अधर दोउ चापि बुद्धि बल सुरति बिसारचौ॥ ब्रह्मद्वार फिरि फूटिकै निकसे गोकुलराइ। बाहिर आवहु निकसिकै मैं करि लियो सहाइ॥ बालक बछरा धेनु सबै मन अतिहि सकाने। अंधकार मिटिगये देखि जहां तहां अतुराने ॥ आये बाहर निकसिकै मन सब कियो हुलास। हम अज्ञान कत डरतहैं कान्ह हमारे पास ॥ धन्य कान्ह धनि नंद धन्य यशुमति महतारी। धन्य लियो अवतारकोखि धनि जियहि दै तारी ॥ गिरि समान तन अगम अति पन्नगकी अनुहारी। हम देखत पल

एकमें मारचो दनुज प्रचारी ॥ हरि हँसि बोले बैन संग जौ तुम नाहिं होते । तुम सब किए सहाय भयो तब कारज मोते॥हमहुँ तुमहुँ मिलि बैठिके बन भोजन करिये जाइ।बंशीबट भोजन बहुत यशुमति दियो पठाइ ॥ ग्वाल परमसुख पाइ कोटि सुख करत प्रशंसा।कहा बहुत जो भए सपूत तौ एकै वंसा ॥ चढि बिमान सुर देखहीं गगन रहे भरि छाई। जै जै ध्वनि नभ करतहैं हरषि पुहुप बरषाई॥ब्रह्म सुनी यह बात अमर घर वरनि कहानी। गोकुल लीनौ जनम कौन यह मैं नहिं जानी ॥ देखौं इनकी खोज लै शोच परचो मनमाहँ॥सूर श्याम ग्वालन लिये चले बंशीबटकी छाहँ॥७४॥६॥

अथ तेरह अध्याय ब्रह्मा वत्स बालक हरन ॥ राग धनाश्री ॥ हरष भये नंदलाल बैठि तरुछाँहकी । ग्वाल बाल संग करत कोलाहल छाँहकी ॥ बंशीबट अति सुखद और द्रुम पास चहूं है। सखा लिए तहां गए धेनु वन चरति कहूं है ॥ बैठिगए सुखपाइकै ग्वाल बाल लिये साथ। अति आनँद पुलकित हिये गावत हैं गुणगाथ ॥ १ ॥ अहिर लिये मधु छाक तुरत वृंदावन आए। व्यंजन सहस प्रकार यशोदा बनहि पठाए ॥ श्याम कही वन चलतही मातासों समुझाइ । उतने वै आए सबै देखतही सुखपाइ ॥ २ ॥ कान्ह देखि मधु छाक पुलकि अँग अंग बढ़ायो। हरि हँसि बोले तबै प्रेमसों जननि पठायो॥ नीके पहुँचे आनिकै भलो बनो संयोग। बार बार कहि सबनको आजु करौ सुखभोग ॥ ३ ॥ वन भोजन बिधि करत कमलके पात मँगाये। तोरे पात पलाश सरस दोना बहु ल्याये॥भांति भांति भोजन धरे दधिलवनी मिष्टान। वनफल ल्ये मँगाइकै लागे भोजन खान ॥ ४ ॥ वन भोजन हरि करत संग मिलि सुबल सुदामा। श्याम कुँवर परसन्न महर सुत अरु श्रीदामा। श्याम सबै मिलि खातहैं लै लै कौर छुँडाइ। औरन देत बुलाइके डहकि आपु मुख नाइ ॥ ५ ॥ ब्रह्मा देखि बिचार सृष्टि कोइ नई चलाई। मुहिं पठयो जिहि सौंपि ताहि कहिहौं का जाई ॥ देखौं धौं यह कौन है बाल वत्स हरिलेउँ। ब्रह्मलोक लै जाउँगो यह बुधि करि दुख देउँ ॥ ६ ॥ अंतर्यामी नाथ तुरत बिधि मनकी जानी। बालक दै दिये पठै धेनु बन कहूं हिरानी ॥ जहां तहां बन ढूँढिकै फिरि आये हरि पास। श्याम सखन बैठारि करि आपुन गये उदास ॥ ७ ॥ हरि लै बालक वत्स ब्रह्मलोकहि पहुँचाये।फिरि आवै जो कान्ह कहूं कोउ नाहिन पाये ॥ प्रभु तबहीं जानो यही बिधि लैगयो चुराइ। जो जेहि रँग जेहि रूपको बालक वच्छ बनाइ॥ ॥ ८ ॥ ताते कीन्हे और ब्रह्म हृद नाल उपायो। अपनो करि तेहि जानि कियो ताको मन भायो ॥ उद्धारन मारन समर्थ मन हरि कीनो ज्ञान। अनजाने बिधि यह करी नये रचे भगवान॥९॥उहै वृद्धि उहै प्रकृति वहै पौरुप तन सबके। उहै नाउ उहि भाउ धेनु बछरा मिलि रवके॥श्याम कह्यो सब सखनको ल्यावहु गोधन फेरि। संध्याको आगम भयो ब्रज तन हांको घेरि॥१०॥सुनत ग्वाल ले धेनु चले ब्रजवृंदाबनते।कान्हहि बालक जानि डरे सब ग्वाल मनहिते॥मध्य किये लै श्याम को सखा भये चहुँ-पास। बच्छ धेनु आगे किये आवत करत विलास ॥११॥ बाजत वेणु विषाण सबै अपने रँग गावत। मुरली ध्वनि गौ रंभ चलत पग धूरि उडावत ॥ मोरमुकुट शिर सोहई वनमाला पट पीत। गोरज मुखपर सोहई मनहु चंद्रकण शीत ॥१२॥ देखि हरषि ब्रजनारि श्यामपर तन मन वारति। इकटक रूप निहारि रही मेटति चित आरति ॥ कहा कहै छबि आजुकी मुख मंडित खुर धूरि। मानहु पूरन चंद्रमा कुहू रह्यो आपूरि ॥ १३ ॥ गोकुल पहुँचे जाइ गये बालक अपने घर। गोसुत अरु नर नारि मिली अतिहेत लाइ गर ॥ प्रेम सहित वे मिलतहैं जेउ सुत जायो आजु। यशुमति मिलि सुतसों कहति रैनि करत केंहि काजु ॥ १४ ॥ मैं घर आवन कहौं सखा सँग कोउ

नाहिं आवै। देखत बन अति अगम डरौं वै मोहि डरपावै॥ बार बार उर लाइकै लइ बलाइ पछिताइ। कालिहिते वेई सबै रशवहिं गाइ चराइ॥ १५॥ यह सुनिकै हरि हँसे कालि मेरि जाइ बलैया। भूख लगी मोहिं बहुत तुरतही दै कछु मैया॥ माखन दीयो हाथकै यह तबलो तुम खाहु। तातो जल है घामको तनक तेलसों न्हाहु॥ १६ तब यशुमति गहि बाँह तुरत हरि लै अन्हवाए। रोहिणि करि जिवनार श्याम बलराम बुलाए॥ जेंवत अति रुचि पात्रहीं परुसति माताहेत। जेंय उठे अँचवन लियो दुहुँ कर बीरा देत॥ १७॥ श्याम उनींदे जानि मात रचि सेज बिछायो। तापर पौढे लाल अतिहि मन हरष बढायो॥ अघ मर्दन विधि गर्व हत करत न लागी बार। सूरदास प्रभुके चरित पावत कोउ न पार॥ १८॥ राग ललित॥ हौं नाहिन जगाइ सकति सुनु सुबात सजनी री। अपने जान अजहुँ कान्ह मानतहैं रजनी री॥७५॥जब जब हौं निकट जाति रहति लागि लोभा॥तनकी गति बिसरि जाति निरखत मुख शोभा॥७६॥ वचननिको बहुत करति शोचति जिय ठाढी। नैननि सुविचार करति देखत रुचि बाढी॥७७॥ यहि विधि वदनारविंद यशुमति जिय भावै। सूरदास सुख की राशि कापै वरणि आवै॥ ७८॥ राग बिलावल॥ नंदमहरके भावते जागो मेरे बारे। प्रात भयो उठि देखिये रवि किरणि उज्यारे॥ ग्वाल बाल सब टेरहिं गैया बनचारन। लाल उठौ मुख धोइये लागी वदन उघारन॥ मुखते पटु न्यारो कियो माता कर अपने। देखि वदन चकृत भई सोतुककी सपने॥ कहा कहौं वह रूपकी को वरणि बतावै। सूर सु हरिके गुण अपार नंद सुवन कहावै॥ ॥ ७९॥ राग ललित॥ उठे नंदलाल सुनत जननीकी बानी। आलस भरे नैन दोउ सकल शोभाकी खानी॥ गोपीजन थिथकित ह्वै चितवत सब ठाढी। नैनकर चकोर चंद्र वदन प्रीति बाढी॥ माता जलझारी लै कमलमुख पखारयौ। नैन नीर परसि करत आलसहीं बिसारयौ॥ सखा द्वार ठाढे सब टेरतहैं बनको। यमुना तट चलौ कान्ह चारन गोधनको॥ सखा सहित जेंवहु मैं भोजन कछु कीनो। सूर श्याम हलधर सब सखा बोलि लीनो॥ ३८०॥ राग बिलावल॥ दोउ भैया जेंवत माँ आगे। पुनि पुनि लै दधि खात कन्हाई और जननि पै माँगे॥अति मीठो दधि आजु जमायो बलदाऊ तुम लेहु। देखौं धौं दधि स्वाद आपु लै ता पाछे मोहिं देहु॥ बल मोहन दोऊ जेंवत रुचिसों सुख लूटति नँदरानी। सूर श्याम अब कहत अघाने अँचवन माँगत पानी॥ ॥ राग रामकली॥ द्वारे टेरतहैं सब ग्वाल कन्हैया आवहु बार भई। आवहु बेगि बिलम जनि लावहु गैयां दूरि गई॥ इह सुनतहि दोऊ उठि धाए कछु अँचयो कछु नाहीं। कितिक दूरि सुरभी तुम छांडी बनतो पहुँची आहीं॥ग्वाल कह्यो कछु पहुँची ह्वैहैं कछु मिलिहैं मगमाहीं॥सूरश्याम बल मोहन भैया गैयन पूंछत जाहीं॥ ८१॥ राग बिलावल॥ वन पहुँचत सुरभी लई जाई। जैहौ कहां सखनको टेरत हलधर संग कन्हाई॥ जेंवत परखलियो नहिं हमको तुम अति करी चडाई। अब हम जैहैं दूरि चरावन तुम सँग रहै बलाई॥ यह सुनि ग्वाल धाइ तहां आए श्यामहि अंकम लाई। सखा कहत यह नंद सुवनसों तुम सबके सुखदाई॥ आज चलौ वृंदावन जेए गैया चरैं अघाई। सूरदास प्रभु सुनि हरषित भए घरते छाक मँगाई॥८२॥ राग बिलावल॥ चले सब वृंदावन समुहाइ। नंदसुवन सब ग्वालन टेरत लावहु गाइ फिराइ॥ अति आतुर ह्वै फिरे सखा सब जहां तहां आये धाइ। बूझत बात ग्वाल केहि कारण बोले कुँवर कन्हाइ॥ सुरभी वृंद तहीं को हांकी औरन लेहु बोलाइ। सूर श्याम यह कही सबनिसों आप चले अतुराइ॥८३॥राग धनाश्री॥गैयन घेरि सखा सब ल्याए। देख्यो कान्ह जात वृंदावन याते मम अति हरष बढाए॥ आपुसमें सब करत

कुलाहल धौरी धूमरि धेनु बोलाए।सुरभी हाँकि देत सब जहाँ तहाँ टेरि हेरि सुर गाए।पहुँचे आइ विपिन घन वृंदा देखत द्रुम दुख सबनि गवाँए।सूर श्याम गए अघा मारि जब तादिन ते यहि बन अब आए॥८४॥राग नटनारायणी॥चरावत वृंदावन हरि धेनु।ग्वाल सखा सब संग लगाए खेलतहैं करि चैनु॥कोउ गावत कोउ मुरलि बजावत कोउ विषान कोउ बेनु। कोउ निर्तत कोउ उघटि तार दै जुरि ब्रजबालक सेनु॥त्रिविध पवन जहँ बहत निशिदिन सुभग कुंज घन एनु। सूर श्याम निज धाम बिसारत आवत यह सुख लेनु॥८५॥राग धनाश्री॥ वृंदावनमोको अति भावत। सुनहु सखा तुम सुबल श्रीदामा ब्रजते बन गऊ चारन आवत॥ कामधेनु सुरतरु सुख जितने सभा सहित बैकुंठ बोलावत। यह वृंदावन यह यमुना तट ये सुरभी अति सुखद चरावत॥ पुनि पुनि कहत श्याम श्रीमुखते तुम मेरे मन अतिहि सुहावत। सूरदास सुनि ग्वाल चकृत भये यह लीला हरि प्रगट देखावत॥८६॥ राग बिलावल॥ ग्वाल सखा कर जोरि कहतहैं हमहिं श्याम तुम जिनि बिसरावहु। जहां जहां तुम देह धरतहौ तहां तहां जनि चरन छडावहु॥ ब्रजते तुमहिं कहूं नहिं टारों इहै पाइ मैंहूं ब्रज आवत। यह सुख नाहीं भुवन चतुर्दश यह ब्रज यह अवतार बतावत॥अवर गोप जे बहुरि चले घर तिनसों कहि सुखछाक मँगावत। सूरदास प्रभु गुप्त बात सब ग्वालनसों कहि कहि सुख पावत॥८७॥ राग बिलावल॥ कन्हैया हेरिदे सुभग सांवरे गातकी मैं शोभा कहतउ जाउँ।मोरपंख शिर मुकुटकी मुख मटकनिकी बलि जाउँ॥ कुंडल लोल कपोलनि झांई बिहँसनि चितहि चुरावै। दशन दमक मोतिन्ह लर ग्रीवा शोभा कहत न आवै॥ उरपर पदिक कुसुम बनमाला अँग धुक धुकी बिराजै। चित्रित बाहु पौंचिआ पौंचे हाथ मुरलिका छाजै॥कटि पट पीत मेखला मुकुलित पाइन नूपुरु सोहै। आस पास बर ग्वालमंडली देखत त्रिभुवन मोहै॥ सब मिलि आनँद प्रेम बढावत गावत गुण गोपाल। यह सुख देखत श्याम संगको सूरदास सब ग्वाल॥८८॥कान्ह कांधे कामरि लकुट लिए कर घेरैहो। वृंदावनमें गऊ चरावे धौरी धूमरि टेरैहो॥ लिये लिवाइ ग्वाल बुलाय जहाँ तहाँ वन वन हेरैहो।सूरदास प्रभु सकल लोक पति पीतांबर कर फेरैहो॥८९॥सोई हरि कांधे कामरी काछे किये नागे पाइन गाइनकी टहल करतहैं। त्रिभुवनपति दिनपति नारि नरपति पंछिनपति रवि शशि जेहि डरतहैं॥शिव विरंचि ध्यान धरत भक्त त्रिबिध ताप हरत तेहि तब उधरतहैं। सूरदास प्रभुके गुण निगम नेति नेति गावत तेई वन विहर तहैं॥ ३९०॥ राग नट॥ छाक लेन जे ग्वाल पठाए।तिनसों बूझति महरि यशोदा छांडि कन्हैयहि आए॥ हमहिं पठाय दिये नँदनंदन भूखे अति अकुलाए। धेनु चरावतहैं वृंदावन हम यहि कारण आए॥ यह कहि ग्वाल गए अपने गृह वनकी खबरि सुनाए। सूर श्याम बलराम प्रातही अधजेंवत उठि धाए॥९१॥ राग सारंग॥ और ग्वाल सब गृह आए गोपालहि वेर भई।अतिहि अबेरभई लालनको अजहुँन छाक मँगाई॥ तबहींते भोजन करि राख्यो उत्तम दूध जँमाई। ना जानौं कान्ह कौन वन चारत अतिहि अबेर लगाई॥ राज्य करैं वे धेनु तुम्हारी नंदहि कहत सुनाई। पंचकी भीख सूर बल मोहन कहति यशोदा माई॥९२॥राग सारंग॥जोरति छाक प्रेमसों मैया। ग्वालन बोलि लए अध जेंवत उठि दौरे दोउ भैया॥तवहींते भोजन नहिं कीनो चाहत दियो पठाई।भूखे भए आजु दोउ भैया आपहि बोलि मँगाई॥ सद माखन साजो दधि मीठो मधु मेवा पकवान। सूर श्यामको छाक पठावति कहति ग्वारिसों जान॥९३॥ राग सारंग॥ घरहीकी यक ग्वारि बोलाई। छाक समग्री सबै जोरिकै वाके करदै तुरत पठाई॥ कह्यो ताहि वृंदावन जैये तू जानति सब प्रकृति कन्हाई। प्रेम सहित लै चली छाक वह कहाँ वे हैं भूखे दोउ भाई॥ तुरत जाइ वृंदाबन पहुँची ग्वाल बाल कहुँ

कोउ न बताई। सूर श्याम को टेरति डोलति कतहौं लाल छाँक में ल्याई ॥ ९४॥ राग टोडी॥आजु कौने धौं बन चरावत गाइ कहां भई अवेर। बैठे कहां सुधि लेउँ कौन विधि ग्वारि करत अवसेर॥ वृंदावन दै आदि सकल बन ढूँढचो जहां गायनकी टेर। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि कैसे दुरत दुराये कहो धौं डुँगरनकी ओट सुमेर॥ ९५॥ छाक लिये शिर श्याम बुलावति। ढूँढति फिरति ग्वारिनीके करि कहूं भेद नहिं पावति॥ टेर सुनत काहूको श्रवणनि तहीं तुरत उठि धावति। पावति नहीं श्याम बलरामहि ब्याकुल है पछितावति॥ बृंदावन फिरि फिरि देखतिहै बोलि उठे तहाँ ग्वाल। सूर श्याम बलराम इहाँहैं छाक लेहु किन लाल॥९६॥ ॥ राग कान्हरो॥फिरत बन वन बृंदावन बंशीबट संकेत वट नट नागर कटिकाछे खौरि केसरिकी किये। पीत वसन चंदन तिलक मोर मुकुट कुंडल श्याम घन यह छबि लिये॥ तनु त्रिभंग सुगंध अंग निरखि लज्जत रति अनंग ग्वाल बाल लिये संग प्रमुदित सब हिये। सूर श्याम अति सुजान मुरली ध्वनि करत गान ब्रजजन मनको सुख दिये॥९७॥हरिको टेरति फिरति गुआरि।आई लेहु तुम छाक आपनी बालक बल बनवारि॥आजु कलेऊ करत बन्यो नहिं गैयन सँग उठिधाए। तुम कारण वन छांक यशोदा मेरेहि हाथ पठाए॥ यह बानी जब सुनी कन्हैया दौरिगए तेहि काजू। सूर श्याम कह्यो नीके आइ भूख बहुतही आजू॥९८॥ बहुत फिरी तुमकाज कन्हाई। टेरि टेरि मैं भई बावरी दोउ भैया तुम रहे लुकाई॥जे सब ग्वाल गए ब्रज घरको तिनसों कहि तुम छाक मँगाई। लवनी दधि मिष्टान्न जोरिकै यशुमति मेरे हाथ पठाई॥ ऐसी भूखमांझ तू ल्याई तेरी केहिविधि करौं बडाई। सूर श्याम सब सखन पुकारत आवहु क्यों न छाँक है आई॥९९॥ राग सारंग॥ गिरिपर चढि गिरि वर धर टेरे। अहो सुबल श्रीदामा भैया ल्यावहु गाइ खरिकके नेरे॥ आई छाँक अवार भई है नैसुकु चैया पिअहुँ सबेरे। सूरदास प्रभु बैठि शिलनि पर भोजन करैं ग्वाल चहुँ फेरे॥ ४००॥ राग नट॥ बिहारी लाल आवहु आई छाँक। भई अबार गाइ बहुरावहु उलटावहु दे हांक॥ अर्जुन भोज अरु सुबल श्रीदामा मधु मंगल इक ताक। मिलि बैठे सब जेंवन लागे बहुत बन्यो कहि पाक॥ अपनी पत्रावलि सब देखत जहां तहां फेनी पिराक। सूरदास प्रभु खात ग्वालसँग ब्रह्म लोक यह धाक॥ १॥ राग सारंग॥ आई छाँक बुलाए श्याम। यह सुनि सखा सबै जुरि आए सुबल सुदामा अरु श्रीदाम॥ कमलपत्र दोना पलाशके सब आगे धरि परुसत जात। ग्वाल मंडली मध्य श्यामघन सब मिलि भोजन रुचि करि खात॥ ऐसी भूखमांझ इह भोजन पठै दियो करि यशुमति मात। सूर श्याम अपनो नहिं जेंवत ग्वालन करते लैलै खात॥ २॥ सखन संग हरि जेंवत छांक। प्रेम सहित मैया दै पठए सबै बनाएहैं एकताक॥सुबल सुदामा श्रीदामा सँग सब मिलि भोजन रुचिसों खात। ग्वालन करते कौर छुडावत मुखलै मेलि सराहत जात॥ जो सुख कान्ह करत वृंदावन सो सुख नहीं लोकहूं सात। सूर श्याम भक्तनवश ऐसे ब्रजहि कहावतहैं नँद तात॥ ॥ ३॥ ग्वाल मंडलीमें बैठे हैं मोहन बडकी छहियाँ दुपहरीकी बिरियां संगलीने। एक मथत दोहनी दूध एक बँटावत फल चबैने॥ एक निकर हरि झगरि लेत ऐसे बानि आपनी कमरके आसन कीने। जेंवतहैं अरु गावत कान्ह सारंगीकी तान लेत सखनिके मध्य बिराजत छाँक लेत कर छीने। सूरदास प्रभुको मुख निरखत सुर रीझि हेरैं सुमननि वरषत सभीने॥ ४॥ ग्वालन करते कौर छँडावत। जूंठो लेत सबनके मुखको अपने मुखलै नावत॥ पटरसके पकवान धरे सब तामें नहिं रुचि पावत। हाहा करि करि माँगि लेतहैं कहत मोहिं अति भावत॥ यह महिमा एई पै

T

जानैं जाते आप बँधावत। सूर श्याम स्वपने नहिं दरशत मुनिजन ध्यान लगावत ॥ ५ ॥ ब्रजवासी पटतर कोउ नाहिं। ब्रह्म सनक शिव ध्यान न पावत इनकी जूंठनि लैलैखाहिं॥धन्य नंद धनि जननि यशोदा धन्य जहां अवतार कन्हाई। धन्य धन्य बृंदाबनके तरु जहां विहरत त्रिभुवनके राई ॥ हलधर कह्यो छाँक जेंवत सँग मीठो लगत सराहत जाई। सूरदास प्रभु विश्वंभर हैं ते ग्वालनके कौर अघाई ॥ ६ ॥ राग सारंग ॥ शीतल छहियां श्याम बैठे जानि भोजनकी बेरिआ। वाम भुजा सखा अंश पर दीने लीने दक्षिण कर द्रुमडरिआ ॥ चलिये जू नैक गाइनि घेरैं जु बलरामसों कहत बोलि लेहु आपने बोरिआ। सूरदास प्रभु बैठे कदम तर गइयाको दूध निकरिया ॥ ७ ॥ राग नटनारायण ॥ बिधि मनहीमन शोच परयो। गोकुलकी रचना सब देखत अति जिय मांह डरयो॥मैं विरंचि विरच्यो जग मेरो यह कहि गर्व बढायो। ब्रज नर नारि ग्वाल बालक कहि कौने ठाट रचायो ॥ वृंदाबन वट सघन वृक्ष तर मोहन सबै बोलाये। सखा संग मिलि करि भोजी बिधि बिधि मन भरम उपाये ॥ धेनु रही बनमें भूली द्वै बालक भ्रम तन पाये। याते श्याम अतिहि अतुराने तुरत तहां उठि धाये॥ बालक वच्छ हरे चतुरानन ब्रह्मलोक पहुँचाये ॥ सूरदास प्रभु गर्व विनाशन नव कृत फेरि बनाये ॥ ॥८॥राग सारंग॥ जेंवत छाँक गाइ बिसराई। सखा श्रीदामा कहत सबनिसों छाँकहिमें तुम रहे भुलाई।धेनु नहीं देखियत कहूं नियरे भोजनहीमें सांझ लगाई। सुरभी काज जहाँ तहाँ उठि धाये आपु तहां उठि चले कन्हाई ॥ ल्याये ग्वाल घेरि गो गोसुत देखि श्याम मन हरष बढाई। सूरदास प्रभु कहत चलौ घर बनमें आजु अबार कराई ॥ ९ ॥ राग गौरी ॥ ब्रजहि चलौ आई अब सांझ। सुरभी सबै लेहु आगे करि रैनि होइ पुनि बनही मांझ ॥ भली कही यह बात कन्हाई अतिहि सघन आरण्य उजारि। गैयां हांकि चलाई ब्रजको औंर ग्वाल सब लिए पुकारि ॥ निकसिगए बनते सब बाहिर अति आनंद भए सब ग्वाल। सूरदास प्रभु मुरलि बजावत ब्रज आवत नटवर गोपाल।॥१०॥राग कल्याण॥सुंदर श्याम सुंदर वर लीला सुंदर बोलत वचन रसाल। सुंदर चारु कपोल विराजत सुंदर उरज बनी बनमाल ॥ सुंदर चरण सुंदर है नख मनि सुंदर हैं कुंडल मकराल। सुंदर मोहन नैन चपल किए सुंदर ग्रीवा बाहु विशाल ॥ सुंदर मुरली मधुर बजावत सुंदर हैं मोहन गोपाल। सूरदास जोरी अति राजति ब्रजको आवत सुंदर चाल ॥ ११ ॥ सुंदर श्याम सखा सब सुंदर सुंदर भेप धरे गोपाल। सुंदर पथ सुंदर गत आवनि सुंदर मुरली शब्द रसाल ॥ सुंदर लोग सकल ब्रज सुंदर सुंदर हलधर सुंदर चाल। सुंदर बदन विलोकनि सुंदर सुंदर गुण सुंदर बन माल॥ सुंदर गोप गाइ अति सुंदर सुंदर गुण सब करत विचार। सूर श्यामसँग सब सुख सुंदर सुंदर भक्तहेत अवतार॥ राग बिलावल ॥ सुंदर ढोटा कौनको सुंदर मृदुबानी। कहि समुझायो ग्वालिनी जायो नँदरानी॥ सुन्दरता सूरति देखके घन घटा लजानी। सुंदर नैन निहार लियो कमलनको पानी ॥ सुन्दरता तिहुँलोककी ब्रजपुरमें आनी। सूरदास यशुमति भई सुंदरता रजधानी ॥ ॥ १२ ॥ राग गौरी ॥ देखि सखी बनते जु बने ब्रज आवतहैं नँदनंदन। शिखंडी शीश मुख मुरलि बजावत बन्यो तिलक उर चंदन॥ कुटिल अलक मुख चंचल लोचन निरखत अति आनंदन ॥ कमल मध्य मानौ द्वै खग खंजन बँधे आइ उडि फंदन। अरुण अधर छबि दशन बिराजति जब गावत कल मंदन। मुक्ता मनौं लालमणिमें पुट धरे मुरकि बरवंदन। गोप भेप गोकुल गोचारत हैं प्रभु असुर निकंदन। सूरदास प्रभु सुयश बखानत नेति नेति श्रुति छंदन॥१३॥ मेरे नैन निरखि सुख पावत। संध्या समै गोप गोधन सँग बनते बनेलाल ब्रज आवत॥बलि बलि जाउँ मुखारविंदकी मंद

मंद गति धावत । नटवर रूप अनूप छबीलो सबहीके मन भावत ॥ गुंजा उर बनमाल मुकुट शिर वेणु रसाल बजावत । कोटि किरण मणि मुख परकाशत उडपति कोटि लजावत॥चंदन खौरि काछनी की छबि सबके मनहिं चुरावत।सूर श्याम नागर नारिनको वासर बिरह नशावत१४॥राग केदारो॥ शोभा कहत कहै नहिं आवै । अचवत अति आदर लोचन पुट मन न रूपको पावै ॥ सजल मेघ घनश्याम सुभगवपु तडित वसन उरमाल। शिखी शिखिर तनु धातु विराजति सुमन सुगंध प्रवाल ॥कछुक कुटिलकों विपिन सघन शिर गोरज मंडित केश । शोभित मनौ अंबुज परागरस राजत अली सुदेश ॥ कुंडल किरिन कपोल कुटिल छबि नैन कमलदल मीन । प्रति प्रति अंग अंग कोटिक छबि सुनु सखि परम प्रवीन ॥ अधर मधुर मुसुकानि मनोहर कोटि मदन मनहीन । सूरदास जहां दृष्टि परतहै होत तहीं लवलीन ॥ १५ ॥ बहुरि बाल वत्स हरन ॥ राग धनाश्री ॥ब्रजकी लीला देखि ज्ञानु विधिको भयो भारी। त्रिभुवन नायक आनि भयो गोकुल अवतारी ॥ खेलत ग्वालन संग रंग आनंद मुरारी । शोभित संग ब्रजबाल लाल गोवर्धनधारी ॥ घर घरते छाकै चलीं मान सरोवर तीर । नारायण भोजन करैं बालक संग अहीर ॥ १६ ॥ व्यंजन सकल मँगाइ सखनिके आगे राखे । खाटे मीठे स्वाद सबै रस लैलै चाखे । रुचिसों जेंवत ग्वाल सब लैलै आपुन खात ॥ भोजनको सब स्वादलै कहत परस्पर बात॥ ॥ १७ ॥ देखत गणगंधर्व सकल सुरपुरके बासी । आपुसमें वै कहत हँसत एई अविनासी ॥ देखि सबै अचरजु भए कहौ ब्रह्मसों जाइ । जाको अविनाशी कहत सो ग्वालनसँग खाइ ॥ ॥ १८ ॥ इह सुनि ब्रह्मा चल्यो तुरत वृंदावन आयो । देखि सरोवर सलिल कमल तिहि मध्य सुहायो ॥ परम सुभग यमुना बहै तहां बहै त्रिविध समीर । पुहुपलता द्रुम देखिकै चकृत भयो मतिधीर॥ १९ ॥ अतिरमणीक कदंबछाँह रुचि परम सुहाई । राजत मोहन मध्य अवलि बालक छबिपाई ॥ प्रेम मगन ह्वै परसपर भोजन करत गुपाल । ल्यावहु गोसुत घेरिकै प्रभु पठए द्वै ग्वाल॥४२०॥बन उपवन सब ढूँढि सखा हरिपै फिरि आए । बछरा भए अदृष्ट कहूं खोजत नहिंपाए सबै सखा बैठे रहौ मैं देखौं धौं जाइ।बच्छ हरन जिय जानि प्रभु आपु गए बहराइ॥२१॥ जब गोविंद गए दूरि बालकन हरचो विधाता । लैहौं तुरत मँगाइ आपु ह्वैहै जगत्रात॥ब्रह्मलोक ब्रह्मा गयो बालक बच्छा संग ।प्रभुकी लीला गम नहीं कियो गर्व अति अंग ॥२२॥ तब चिंतामणि चितै चित्त इक बुद्धि बिचारी। बालक बच्छ बनाइ रचे वेही उनिहारी ॥ करत कुलाहल सब गए ब्रज घर अपने धाइ । अति आदर करि करि लिये अपनी अपनी माइ॥२३॥ब्रह्मा कियो विचार जाय ब्रज गोकुल देख्यो । करिहैं शोकु संताप जाइ पितु मातहि देखो॥आए तहां विधना चले घर घर देखौं आइ । संध्या समै होत कौतूहल जहां तहां दुहिये गाइ ॥ २४ ॥ यह गोकुल किधौं और किधौं हौं ही भ्रम भूल्यो । यह अविनाशी होइ ज्ञान मेरे भ्रम झूल्यो॥अंतर्यामी जानि धौं हरौ बच्छ लै आइ । जगत पिता मैं संभ्रम्यो गएलोक फिरि धाय ॥ २५ ॥ देख्यो जाइ जगाइ बाल गोसुत जहां राखे । विधि मन चकितभये बहुरि ब्रजको अभिलाखे ॥ छिन भूतल छिन लोकमें छिन आवै छिन जाइ । ऐसेहि करत वरपदिन बीतो थकित भये विधि पाइ ॥ २६ ॥ तब हरि प्रगट्यो जानि ज्ञान चितमें जब आयो । धृग धृग मेरी बुद्धि कृष्णसों वैर बढ़ायो॥लै गोसुत गोपाल शिशु शरन गयो ह्वै साधु । चारिहु मुख अस्तुति करत प्रभु क्षमौ मोहिं अपराधु ॥ २७ ॥ अन जानत यह करी मैं तुमसों बरि आई । ये मेरे अपराध क्षमहु त्रिभुवनके राई॥ ज्यों बालक अपराध शत जननी लेति सँभारी ।शरन गए राखत सदा अवगुण सकल बिसारी ॥ २८ ॥ जोरे उदित खद्योत ताहि क्यों तिमिर नशावै ।

दीपक बहुत प्रकाश तरनिसम क्यों कहवावै ॥ मैं ब्रह्मा इकलोकको ज्यों गूलरि बिचजीव। प्रभु तुमरे इक रोम प्रति कोटि ब्रह्म अरु शीव ॥ २९ ॥ मिथ्या यह संसार और मिथ्या यह माया। मिथ्या है यह देह कहौ क्यों हरि बिसराया ॥ तुम जाने बिन जीव सत्र उत्पति प्रलय समाहिं। शरण मोहिं प्रभु राखिये चरण कमलकी छाहिं ॥ ४३० ॥ करहु मोहिं ब्रजरेणु देहु वृंदाबन बासा। माँगौं यहै प्रसाद और नहिं मेरे आशा ॥ जोई भावै सो करहु तुम लता सलिल द्रुम गेहु। ग्वालगाइको भृतु करौ मनौ सत्य व्रत एहु ॥ ३१ ॥ जो दरशन नर नाग अमर सुरपतिहुं न पायो। खोजत युग गए बीति अंत मोहूं न दिखायो ॥ यह ब्रज पारस नित्यहै मैं अब समुझो आइ। वृंदावन रजह्वै रहौं मोहिं नाहिं लोक सुहाइ ॥ ३२ ॥ माँगत बारंबार शेष ग्वालनिको पाऊं। आप लियो कछु जानि भक्ष करि उदर जियाऊं ॥ अब मेरे निज ध्यान यह रहिहौं जूंठनि खाइ। और विधाता कीजिये मैं नहिं छाँडौं पाइ ॥ ३३ ॥ तब प्रभु बोले आपु बचन मेरो अब मानो। और काहि विधि करों तुमहिंते कौन सयानो ॥ तुम ज्ञाता हौ कर्म धर्मके तुमते सब संसार। मेरी माया अति अगम कोऊ न पावै पार ॥ ३४ ॥ श्रीमुख वाणी कहत विलंब अब नेक न लावहु। ब्रज परिकर्मा करहु देहको पाप नशावहु ॥ तुरत जाहु कही लोकको यहि बिधि करि मनुहार। ब्रह्मा करि अस्तुति चले हरि दीनो उरहार ॥ ३५ ॥ धनि बछरा धनि बालहि जिनिहीते दरशन पायो। डर मेरो गयो धन्य कृष्ण माला पहिरायो ॥ धनि यशुमति जिन वश किए अविनाशी अवतारी। धनि गोपी जिनके सदन माखन खात मुरारी ॥ ३६ ॥ धनि गोपी धनि ग्वाल धन्य ये ब्रजके वासी। धन्य यशोदानंद भक्ति वश किये अविनाशी ॥ धनि गोसुत धनि गाइये कृष्ण चराये आपु। धनि कालिंदी मधुपुरी जा दरशन नाशे पापु ॥ ३७ ॥ मथुरा आदि अनादि देह धरि आपन आए। धनि देवै वसुदेव पुत्र तुम माँगे पाए ॥ चारि वदन मैं कहा कहौं सहसानन नहिं जान। गाइ चरावत ग्वाल सँग करत नंदकी आन ॥ ३८ ॥ योगीजन अवराधि फिरत जिहिं ध्यान लगाए। ते ब्रजबासिन संग फिरत अति प्रेम बढाए ॥ वृंदावन ब्रजको महतु कापै बरण्यो जाइ। चतुरानन पग परशिकै लोक गयो सुख पाइ ॥ ३९ ॥ हरि लीनों अवतार कहत शारद नहिं पावै। सतगुरुकृपा प्रसाद कछुक ताते कहि आवै ॥ सूरदास कैसे कहै महापतित अवतार। शेष सहस मुख जपतहै सोऊ न पावैपार ॥ ४४० ॥ राग सारंग ॥ कह्यो गोपाल चरतहैं गोसुत हम सब बैठि कलेऊ कीजै। शीतल छांह वृक्षकी सुंदर निर्मल यमुनाको जल पीजै ॥ भोजन करत सखा इक बोल्यो बछरू कतहूं दूरिगये। यदुपति कह्यो घेरि हौं आनौं तुम जेंवहु निश्चिंत भए ॥ चतुरानन बछरा लै गोए फिरि माधौ आए वहि ठाऊं। बालक बच्छ हरे लोकेश्वर बार बार टेरत ले नाऊं ॥ जान्यों छल ब्रह्मा मन मोहन गोपी गाइ बहुत दुख पैहैं। ताजिहैं प्राण सबै मिलि सुतको निश्चय गृह जो आजु न जैहैं ॥ वाही भाँति बरन बपु वैसहि शिशु सब रचे नंदसुत आन। आगे बच्छ पाछे ब्रज बालक करत चले मधुरे सुर गान ॥ पूरव प्रीति अधिक ताहूते करती ब्रजवनिता अरु धेनु। सूरज प्रभु अच्युत ब्रज मंगल घरही घर लागे सुख देनु ॥ ४१ ॥ राग कान्हरो ॥ आज बने बनते ब्रज आवत। नानारंग सुमनकी माला नंद नँदन उर पर छबि पावत ॥ संग गोप गोधन सँग लीने नाना गति कौतुक उपजावत। कोउ गावत कोउ नृत्य करत कोउ उघटत कोऊ ताल बजावत ॥ राँभत गाइ बच्छ हित सुधि करि प्रेम उमँगि थन दूध चुवावत। यशुमति बोली उठि हरषित ह्वै कान्हो धेनु चराये आवत ॥ इतनी कहत आइगये मोहन जननी दौरि हिये लै लावत। सूर श्यामके कृत यशुमतिसों ग्वाल बाल कहि प्रगट सुनावत ॥ ४२ ॥

गोविंद चलत देखियतु नीके । मध्य गुपाल मंडली विराजति कांधे धरि लिएसीकें ॥ बछरा बृंद घेरि आगे करि जन जन शृंग बजाए । जानौं वन कमल सरोवर तजिकै मधुप उनींदे आए ॥ बृंदावन प्रवेश अघ मारचो बालक यशुमति तेरो । सूरदास प्रभु सुनति यशोदा चितै वदन प्रभुकेरो ॥ ॥ ४३ ॥ राग विलावल ॥ आजु यशोदा जाइ कन्हैया महादुष्ट इकु मारचो । पन्नग रूप गिले शिशु गोसुत यहि सब साथ उबारचो ॥ गिरि कंदरा समान भयो बड जब अव वदन पसारचो । निदरि गुपाल बैठि मुख भीतर खंड खंड करि डारचो ॥ याके वल हम वदत न काहू सकल भुवन तृण चारचो । जीते सबै असुर हम आगे यह कह उनहि निहारचौ ॥ हरषि गए सब कहत महरिसों अबहिं अघासुर मारचो । सूरदास प्रभुकी यह लीला को को भुलएनपारचौ ॥ ४४ ॥ यशुमति सुनि सुनि चकित भई । मैं बरजति बन जात कन्हैया का धौं करै दई ॥ कहाँ कहाँते उबरचो मोहन नेकन तऊ डरात । आप जे कहीं तनकसों बातैं सुनहु बनहु में घात ॥ मेरो कह्यो सुनो जो श्रवणन कहति यशोदा खीझति । सूर श्याम कह्यो बनहि न जैहों यह कहि मन मन रीझति ॥ ४५ ॥ राग गौरी ॥ मैया बहुत बुरो बलदाऊ । कहनलगे बन बडो तमाशो सब मौंडा मिलि आऊ ॥ मोहूंको चुचकार गए लै जहाँ सघन वन झाऊ । भागि चले कहि गयो वहाँते काटि खाइहै हाऊ ॥ हौंहू डरप्यो कांपौ पुकारौं दाऊ कोउ नहिं धीर धराऊ । थरस गयो नहिं भाग सकौं वै भागे जात अगाऊ ॥ मोसों कहत मोलको लीनो आपु कहावत साहु । सूरदास बल बडे चबाई तैसे मिले सखाहु ॥ ४६ ॥ राग नट ॥ हरिकी लीला कहत न आवै । कोटि ब्रह्मांड छनकमें नाश छिनहीमें उपजावै ॥ बालक बच्छ ब्रह्म हरिलैगयो ताको गर्व नवावै । ऐसो पुरुषारथ सुन यशुमति खीझति फिरि पछितावै ॥ शिव सनकादि अंत नाहिं पावैं भक्त बछल कहवावै । सूरदास प्रभु गोकुलमें सो घर घर गाइ चरावै ॥ ४७ ॥ राग सारंग ॥ ब्रह्मा बालक बच्छ हरे । आदि अंत प्रभु अंतर्यामी मनसातै जो करे ॥ सोई रूप वै बालक गोसुत गोकुल जाइ परे । एक वरष निशिबासर रहि सँग काहुन जानि परे ॥ त्रास भयो अपराध आप लखि अस्तुति करत खरे । सूरदास स्वामी मनमोहन तामें मन न धरे ॥ ४८ ॥ राग नट ॥ तब हरि हरचो विधिको गर्व । बच्छ बालक लै गयो धरि तुरत कीन्हों सर्व ॥ ब्रह्म लोक चुराइ राख्यो चरित देखन आपु । बच्छ बालक देखिकै मन करत पश्चात्तापु ॥ तब गयो विधि लोक अपने दृष्टिकै फिरि आइ । जानि जिय अवतार पूरण परचो पाँयनि धाइ ॥ बहुत मैं अपराध कीनो क्षमा कीजै नाथ । जानि यह मैं नहीं कीन्हीं जोरि कर रह्यो माथ ॥ बच्छ बालक आनि सन्मुख शरण शरण पुकारि । सूर प्रभुके चरण गहि कहि निकट राखु मुरारि ॥ ४९ ॥ राग धनाश्री ॥ ब्रज व्यवहार निरखिकै नैनानि ब्रह्माको अभिमान गयो । गोपी ग्वाल फिरत सँग चारत हों हूं क्यों न भयो ॥ व्यंजन वर करवर पर राखत ओदन मधुर दयो । आपन खात खवावत औरन कवन विनोद ठयो ॥ सखा संग पयपान करावत अपनो हाथ लयो । शंकर ध्यान धरत युग बीते इह रस तऊन दयो ॥ अहो भाग अहो भाग नंदसुत तपको पुंज लियो । लीला सुभग सूरकी ब्रजमें सब कोउ गाइ जियो ॥ ॥ ४५० ॥ राग जयतश्री ॥ वदत विरंचि विशेष सुकृत ब्रजवासिनके । श्रीहरि जिनके भेष सुकृत ब्रजवासिनके ॥ ज्योतिरूप जगनाथ जगत् गुरु जगत् पिता जगदीश । योग यज्ञ जप तप में दुर्लभ गइयां गोकुल ईश ॥ इक इक रोम विराट कोटि तन कोटि कोटि ब्रह्मंड । सो लीन्ह्यो अवछंग यशोदा अपने भरि भुजदंड ॥ जाके उदर लोक त्रय जल थल पंचतत्त्व चौखानि । सो बालक ह्वै झूलत पलना यशुमति भवनहि आनि ॥ क्षिति मिति त्रिपद करी करुनामै बलि छलि

दियो पत्तार। देहरि उलँघि सकत नहिं सो अब खेलत नंददुआर॥ अनुदिन सुरतरु पंचसुधारस चिंतामणि सुरधेनु। सो तजि यशुमतिको पै पीवत भक्तनको सुखदेनु॥ रवि शशि कोटिकला अवलोकत त्रिविध ताप क्षय जाइ। सो अंजन कर लै सुत कहि चक्षु आँजति यशुमति माइ॥ दाता भुक्ता हरता करता विश्वंभर जग जानि। ताहि लाहि माखनकी चोरी बांधे यशुमति रानि॥ वेद वेदांत उपनिषद् अरपै सो भख भुक्ता नाहिं। गोपी ग्वालनिके मंडल में सो हँसि जूंठनि खाहिं॥ कमलानायक त्रिभुवनदायक दुख सुख जिनके हाथ। कांधे कमरिआ कांख लकुटिया बिहरत बन बछ साथ॥ बकी बकासुर शकट तृणावर्त अघ प्रलंब विष भास। केशी कंसको वह गति दीनी राखे चरन निवास॥ भक्तवछल अखिल अंतर्यामी रहे सकल भरपूर। मारग रोकि रह्यो द्वारे परि पतित शिरोमणि सूर॥९१॥ राग गूडमलार॥ आदि सनातन हरि अविनासी। सदा निरंतर घट घट वासी॥ पूरण ब्रह्म पुराण बखानै। चतुरानन शिव अंत नजानै॥ गुणगण अगम निगम नहिं पावै। ताहि यशोदा गोद खिलावै॥ एक निरंतर ध्यावै ध्यानी। पुरुष पुरातन है निर्वानी॥ जप तप संयम ध्यानन आवै। सोई नंदके आँगन धावै॥ लोचन श्रवणन रसना नासा। ना पद पानि न गुन परगासा॥ विश्वंभर निज नाम कहावै। घर घर गोरस जाय चुरावै॥ शुक शारदसे करत बिचारा। नारदसे पावहिं नहिं पारा॥ अवर बरन सुर तीनहि धारै। गोपिनिको सो वदन निहारै॥ जरामरनते रहित अमाया। मात पिता सुत बंधु न जाया॥ ज्ञान रूप हृदयमें बोलै। सो नंद महरके आंगन डोलै॥ जल धर अनिल अनल नभछायो। पंच तत्त्व मिलि जगत उपायो॥ काल डरै जाके डर भारी। सो ऊखल बांध्यो महतारी॥ माया प्रगट सकल जग मोहै। कारन करन करै सो सोहै॥ ब्रह्मादिक जेहि ध्यान न पावै। सो गोकुलमें गाइ चरावै॥ अच्युत रहै आद्य जलशाई। परमानंद परम सुखदाई॥ लोकरचै राखै प्रतिपारै। सो ग्वालन संग लीला धारै॥ गुण अतीत अविगत न जनावै। यश अपार श्रुति पार न पावै॥ जाकी महिमा कहत न आवै। सो गोपिन सँग रासरमावै॥ जाकी महिमा लखै न कोई। निर्गुण सगुण धरै वपु सोई॥ चौदह भुवन पलकमें टारै। सो बनवीथिन कुटी सँवारै॥ चरण कमल नित रमा पलोवै। चाहत नेक नैन भरि जोवै॥ अगम अगोचर लीला धारी। सो राधावश कुंजबिहारी॥ भाग बडे उन सब ब्रजवासी। जिनके संग रमे अविनासी॥ जो रस ब्रह्मादिक नाहिं पावैं। सो रस गोकुल गली बहावैं॥ सूर सुयश कहि कहा बखानै। गोविंदकी गति गोविंद जानै॥९२॥ राग मलार॥ बिनवै चतुरानन कहि भोरैं। तुव प्रताप जान्यो नहिं प्रभुजू करि अस्तुति कर जोरैं॥ अपराधी मतिहीन नाथ हौं चूक परी निज भोरे। हम कृत दोषु क्षमा करुणामय ज्यों भूपरसत ओरैं॥ युग युग विरदइहै चलि आयो सत्य कहतु अब होरैं। सूरदास प्रभु पछिलै लेखें अब न बनै मुख मोरैं॥९३॥ राग सारंग॥ माधव मोहिं करौ वृंदावन रेनु। जिन चरण न डोलत नंदनँदन दिन प्रति चारत धेनु॥ कहा भयोहै देव देह धरि अरु ऊंचो पद पायो ऐनु। सब जीवनलै उदर मांझ प्रभु महाप्रलय जल करत है सैनु॥ हमते धन्य सदा वै तृण द्रुम बालक बच्छ वृषान रु बैन। सूर श्याम जिनके सँग डोलत हँसि बोलत माथे पियतहैं फैन॥९४॥ राग सारंग॥ ऐसे बसिए ब्रजकी बीथिनि। ग्वालनके पनवारे चुनि चुनि उदर भरैए सीथिनि॥ पैंडेके सब वृक्ष बिराजत छाया परम पुनीतानि। कुंज कुंज प्रति लोटि लोटि रति रज लागै रंगरीतनि॥ निशि दिन निरखि यशोदानंदनु अरु यमुनाजलती तनि। परसत सूर होत तन पावन दरशन करत अतीतनि॥९५॥ धनि यह वृंदावनकी रेनु। नंदकिशोर चराई गैया मुखहि बजाई बेनु॥

मदन मोहनको ध्यान धरै जो अति सुखपावत चैनु। चलत कहा मन बसत पुरातन जहां लैन नाहिं देतु ॥ इहां रहौ जहां जूठनि पावै ब्रजवासीके एतु। सूरदास ह्यांकी सरवरि नाहिं कल्प-वृक्ष सुरधेनु ॥ ९६॥ राग गौरी ॥ अघामारि आए नँदलाल। ब्रज युवती सुनिकै उठि धाईं घर घर कहत फिरत सब ग्वाल ॥ निरखत वदन चकित भई सुंदरि मनही मन इह करि अनुमान। कहति पर-स्पर सत्य बात यह कौन करै इनकी सर आन॥ एई हैं रतिपतिके मोहन एई हैं हमरे पति प्रान। सूर श्याम जननी मन मोहत वार वार माँगत कछु खान ॥ ९७ ॥ माँगि लेहु जो भावै प्यारे। बहुत भाँति मेवा सब मेरे पटरसके परकार हैं न्यारे ॥ सबै जोरि राखति हित तुम्हरे मैं जानति तुव बानि। तुरतमथो माखन दधि आछो खाहु देइ सो आनि ॥ माखन दधि मोहिं लागत प्यारो और न भावै मोहि। सूर जननि माखन दधि दीनो खात हँसतु मुख जोहि॥ ९८॥ चकई भौंरा खेलनसमै॥ बिलावल॥ दे मैया भँवरा चकडोरी। जाइ लेहु आरेपर राखो काल्हि मोल ले राखै को री॥ लै आये हँसि श्याम तुरतही देखिरहे रँगरँग बहु डोरी। मैया बिना और को राखै वार वार हरि करत निहोरी ॥ बोलि लिए सब सखा संगके खेलत श्याम नंदकी पोरी। तैसेइ हरि तैसइ सब बालक कर भँवरा चकरिनिकी जोरी ॥ देखति जननि यशोदा यह छवि विहँसत वार वार मुख मोरी। सूरदास प्रभु हँसि हँसि खेलत ब्रजवनिता तृण डारत तोरी ॥ ९९ ॥ राग कान्हरा ॥ मेरे हियरे मांझ लागै मनमोहन लैगयो मन चोरी। अबहीं इहि मारगह्वै निकसे छवि निरखत तृण तोरी ॥ मोर मुकुट श्रवणन मणि, कुंडल उर बनमाला पीत पिछोरी। दशन चमक अधरन अरुणाई देखत परी ठगोरी ॥ ब्रज लरिकन सँग खेलत डोलत हाथ लिए फेरत चकडोरी। सूर श्याम चितवत गए मोतन तन मन लिए अजोरी ४६०॥ राग टोडी॥ तवते मोरो जिव न रहि सकत। जित देखों तितही वह मूरति नैननिमें नित लग्योई रहत ॥ ग्वाल बाल सब संग लगाए खेलतमें करि भाव चलत। उरझि परयो मेरो मनु तबते कर झटकत चकडोरी हलत ॥ अब मैं कहा करौं मेरि सजनी सुरति होत तब मदन दहत। सूर श्याम मेरो चित हरिलीन्हौं सकुच छांडि अब तोहिं सों कहत ॥ ६१ ॥ श्रीराधाकृष्णजीका प्रथम मिलाप। राग टोडी ॥ खेलन हरि निकसे ब्रजखोरी। कटि कछनी पीतांबर ओढे हाथ लिए भौंरा चकडोरी ॥ मोर मुकुट कुंडल श्रवणन वर दशन दमक दामिनि छवि थोरी। गए श्याम रवि तनयाके तट अंग लसति चंदनकी खोरी ॥ औचकही देखी तहां राधा नयन विशाल भाल दिए रोरी। नील बसन फरिया कटि पहिरे वेनी पीठि रुचिर झकझोरी ॥ संग लरिकिनी चलि इत आवति दिन थोरी अति छवि जन गोरी। सूर श्याम देखतहीं रीझे नैन नैन मिलि परी ठगोरी ॥ ॥ ६२ ॥ राग टोडी ॥ बूझत श्याम कौन तू गोरी। कहां रहति काकीहै बेटी देखी नहीं कहूं ब्रज खोरी॥ काहेको हम ब्रजतन आवति खेलति रहति आपनी पौरी। सुनति रहति श्रवणनि नँद ढोटा करत रहत माखन दधि चोरी॥ तुम्हरो कहा चोरि हम लेहैं खेलन चलौ संग मिलि जोरी। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि बातन भुरइ राधिका भोरी ॥ ६३ ॥ राग धनाश्री ॥ प्रथम सनेह दुहुँन मन जान्यो। सैन सैन कीनी सब बातैं गुप्त प्रीति शिशुता प्रगटान्यो ॥ खेलन कबहुँ हमारे आवहु नंद सदन ब्रज गांव। द्वारे आइ टेरि मोहिं लीजो कान्ह है मेरो नाउं ॥ जो कहिये घर दूरि तुम्हारो बोलत सुनिये टेरा तुमहि सौंह वृषभानु बबाकी प्रात सांझ एक फेर॥ सूधी निपट देखियत तुमकों ताते करियत साथ। सूर श्याम नागर उत नागरि राधा दोउ मिलि गाथ ॥ ६४ ॥ राग नट॥ सैनानि नागरी समुझाई। खरिक आवहु दोहनीलै यहै मिस छल पाइ॥ गाइ

गनती करन जैहैं मोहिं लै नँदराइ। बोलि वचन प्रमाण कीने दुहुँन आतुरताइ॥ कनक वदन सुढार सुंदरि सकुचि सुख मुसुकाइ। श्याम प्यारी नैन राचे अति विशाल चलाइ॥ गुप्तप्रीति जु प्रगट कीन्ह्यो हृदय दुहुँन छिपाइ। सूर प्रभुके वचन सुनि सुनि रही कुँवारि लजाइ॥ ६५॥ राग सारंग॥ गइवृषभानुसुता अपने घर। संग सखी सों कहति चली यह को जैहै खेलन इनके दुर॥ वडी बेर भइ यमुना आए खीझति ह्वैहै मैया। वचन कहति सुख हृदय प्रेम सुख मन हरि लियो कन्हैया॥ माता कही कहां हुती प्यारी कहां अबार लगाई। सूरदास तब कहति राधिका खरिक देखि मैं आई॥ ६६॥ ॥राग रामकली॥ नागरि मनहिं गई अरुझाइ। अति विरह तनु भई व्याकुल घर न नेक सुहाइ॥ श्याम सुंदर मदनमोहन मोहनी सी लाइ। चित्त चंचल कुँवरि राधा खान पान भलाइ॥ कबहुं बिलपति कबहुं बिहँसति सकुचि बहुरि लजाइ। मात पितुको त्रास मानति मन बिना भई वाइ॥ जननिसों दोहनी माँगति वेगि दे री माइ। सूर प्रभुको खरिक मिलिहौं गए मोहिं बोलाइ॥ ६७॥ राग धनाश्री॥ मोहिं दोहनी दै री मैया। खरिक मोहिं अबहीं ह्वै आई अहिर दुहुत अपनी सब गैया॥ ग्वाल दुहत तब गाइ हमारी जब अपनी दुहिलेत। घरिक मोहिं लगिहै खरिकामें तू आवै जानि हेत॥ शोचति चली कुँवरि घरहीते खरिका गइ सकुहाइ। कब देखौं वह मोहन मूरति जिन मन लियो चुराइ॥ देखो जाइ तहाँ हरि नाहीं चकृत भई सुकुमारि। कबहूं इत कबहूँ उत डोलत लागी प्रीति खुम्हारि॥ नंद लिए आवत हरि देखे तब पायो विश्राम। सूरदास प्रभु अंतर्यामी कीन्ह्यो पूरण काम॥ ६८॥ नंद गये खरिकै हरि लीन्हे। देखी तहां राधिका ठाढी श्याम बुलाइ लई तहँ चीन्हे॥ महर कह्यो खेलहु तुम दोऊ दूरि कहूं जनि जैहौ। गनती करत ग्वाल गैयनकी सुहिं नियरे तुम रहियो॥ सुनु बेटी वृषभानु महरकी कान्हहि लिये खिलाइ। सूर श्यामको देखे रहिहौ मारै जनि कोउ गाइ॥ ६९॥ राग नट॥ नंद बबाकी बात सुनौ हरि। मोहिं छांड़िकै कबहूँ जाहुगे ल्याऊंगी तुमको धरि॥ भली भई तुम्हें सौंपिगये मोहिं जान न देहौं तुमको। बाँह तुम्हारी नेकु न छडिहौं महरि खीझिहैं हमको॥ मेरी बाँह छाँडिदे राधा करत उपर फट बातैं। सूर श्याम नागर नागरिसों करत प्रेमकी घातैं॥ ४७०॥ राग नट॥ नीवी ललित गही यदुराई। जबहिं सरोज धरो श्रीफलपर तब यशुमति गइ आई॥ तत्क्षण रुदन करत मनमोहन मनमें बुधि उपजाई। देखो ढीठ देति नहिं माता राखो गेंद चुराई॥ काहेको झकझोरत नोखे चलहु न देउ बताई। देखि विनोद बाल सुतको तब महरि चली मुसिकाई॥ सूरदासके प्रभुकी लीला को जानै इहि भाई॥ ७१॥ राग धनाश्री वातनमें लइ राधा लाइ। चलहु जैये विपिन वृंदा कहत श्याम बुझाइ॥ जब जहां तन भेष धारौं तहां तुम हित जाइ। नेकहू नहिं करौं अंतर निगम भेद न पाइ॥ तुव परशि तन ताप मेटौं काम द्वंद्व बहाइ। चतुर नागरि हँसि रही सुनि चंद्र वदन नवाइ॥ मदनमोहन भाव जान्यो गगन मेघ छिपाइ। श्याम श्यामा गुप्त लीला सूर क्यों कहै गाइ॥ ७२॥ अथ सुख विलास॥ राग गौंडमलार॥ गगन गरजि घहराइ जुरी घटा कारी। पौन झकझोर चपला चमकि चहूं ओर सुवन तन चितै नंद डरत भारी॥ कह्यो वृषभानुकी कुँवरिसों बोलिकै राधिका कान्ह घर लिये जारी। दोऊ घर जाहु संग नभ भयो श्याम रंग कुँवर गह्यो वृषभान वारी॥ गये वन घन ओर नवल नँदनंदकिशोर नवल राधा नए कुंज भारी। अंग पुलकित भए मदन तिनतन जए सूर प्रभु श्याम श्यामाविहारी॥ ७३॥ राग कामोद॥ नयो नेहु नयो गेहु नयो रस नवल कुँवरि वृषभानु किशोरी। नयो पीतांबर नई चूनरी नई नई बूंदनि भीजति गोरी॥ नए कुंज अति पुंज नए द्रुम सुभग यमुन जल पवन हिलोरी। सूरदास प्रभु नवलरस विलसत नवल राधिका यौवन भोरी॥ ७४॥ राग कान्हरो॥ नवल गुपाल नवेली राधा नये प्रेमरस पागे। नव तरुवन बिहार

दोऊ क्रीडत आपु आपु अनुरागे ॥ शोभित शिथिल वसन मनमोहन सुखवत सुखके वागे । मानहुँ बुझी मदनकी ज्वाला बहुरि प्रजा नर लागे॥कबहुँक बैठि अंश भुज धरिकै पीक कपोलनि दागे ।अति रसराशि लुटावत लूटत लालच लगे सभागे ॥ मानहुं सूर कल्पद्रुमकी निधि लै उतरी फल आगे।नहिं छूटति रति रुचिर भामिनी ता सुखमें दोउ पागे॥७५॥राग मलार ॥ उतारतहै कंठनिते हार । हरिहरमि लत होतहै अंतर यह मन कियो बिचार ॥ भुजावाम पर कर छबि लागति उपमा अंत न पार । मनहु कमल दल कमल मध्यते यह अद्भुत आकार ॥ चुंबत अंग परस्पर जनु युग चंद करत हितवार । रसन दशन भरि चापि चतुर अति करत रंग विस्तार ॥ गुणसागर अरु रससागर निधि मानत सुख व्यवहार । सूर श्याम श्यामा नवसर मिलि रीझे नंदकुमार ॥७६॥राग कान्हरो ॥ नवल किशोर नवल नागरिया । अपनी भुजा श्याम भुज ऊपर श्याम भजा अपने उर धरिया ॥ क्रीडा करत तमाल तरुन तर श्यामा श्याम उमँगि रस भरिया । यों लपटाइ रहे उर उर ज्यों मरकत मणि कंचनमें जरिया ॥ उपमा काहि देउँ को लायक मन्मथ कोटि वारने करिया । सूरदास बलि बलि जोरी पर नंदकुँवर वृषभानु दुलरिया ॥७७॥ राग गौरी ॥ आजु नँदनंदन रंग भरे । विवि लोचन सुविशाल दोउनके चितवत चित्त हरे ॥ भामिनि मिले परम सुख पायो मंगल प्रथम करे । करसों क्ररज करचो कंचन ज्यों अंबुज उरोज धरे॥आलिंगन दै अधर पान कर खंजन खंज लरें। हठ करि मान कियो नव भामिनि तब गहि पाइँ परे॥लैगए पुलिन मध्य कालिंदी रस वश अनँग अरे। पुहुप मंजरी मुक्तनमाला अँग अनुराग भरे ॥ सुरति नाद मुख वेनु सुधा सुनि तपि अनतप जो टरे । रचना सूर रची वृंदावन आनँद काज करे॥७८॥ राग नट ॥ हरि हँसि भामिनि उर लाइ।सुरतिवंत गुपाल रीझे जानि अति सुखदाइ ॥ हरपि प्यारी अँक भरि पिय रही कंठ लगाइ । हाव भाव कटाक्ष लोचन कला कोक सुभाइ ॥ देखि बाला अतिहि कोमल सुख निरखि मुसुकाइ । सूर प्रभु रति पतिके नायक राधिका समुझाइ ॥७९॥ गौड मलार ॥ नवल सुनि नवल पिया नयो नयो दरश विवि तन मलमले प्राणपति पीयको अधर धरचो री। प्रीतिकी रीति प्राण चंचल करत निरखि नागरिनैन चिवुक सो मोरी॥तब कामकेलि कमनीय चंदप चकोर चातक स्वाति बूँदपरचोरी । सुनि सूरदास रस राशि रस बरसिकै चली जनु हरति ले कूहूस गोरी॥८० गहगवन ॥ रागगौरी ॥ तुरत गए नंदन सदन कन्हाई।अंकम दै राधा घर पठई बादर जहँ तहँ दिए उड़ाई॥प्यारीकी सारी आपुन लै पीतांबर राधा उर लाई।जो देखै यशुमति हरि ओढे मन यह कहति कहा धौं पाई॥ जननी नैन जबहि लखिलीने तबहिं श्याम इक बुद्धि उपाई । सूरदास सुतसों यशुमति कहै पीत उढनियां कहां गँवाई ॥८१॥ राग सारंग ॥ पीत उढनियां कहां बिसारी । यहतौ लाल ढिगनिकी औरै है काहूकी सारी ॥ हौं गोधन लैगयो यमुन तट तहां हुती पनिहारी । भीर भई सुरभी सब बिडरीं मुरली भली सँभारी ॥ हौं लैगयो और काहूकी सो लैगई हमारी । सूरदास प्रभु भली बनाई बलि यशुमति महतारी ॥ ८२ ॥ राग धनाश्री ॥ मैया री मैं जानन वाको।पीत उढनियां जो मेरी लैगई लै आनौ धरि ताको ॥ हरिकी माया कोउ न जानै आँखि धूरिसी दीनी । लाल ढिगनिकी सारी ताको पीत उढनियां कीनी ॥ पीतांबर लै जननि दिखायो लै आन्यो तेहि पास । सूर मनहि मन कहति यशोदा तरुनि पढावत गास ॥ ८३ ॥ श्यामहि देखि महरि मुसुकानी । पीतांबर काके घर विसरचो लाल ढिगनकी सारी आनी ॥ ओढनी आनि दिखाई मोको तरुनिनकी सिखई बुधि ठानी । घर घर लै मेरो सुत भुरवति ऐसी सबै दिननकी जानी ॥ हरि अंतर्यामी रतिनागर जानि लई जननी पहिचानी ।

सूर निरखि मुख सकुचि भगाने या लीलाकी यहै सयानी ॥ ८४ ॥ राग कल्याण ॥ सुंदरि गई गृह समुहाइ । दोहनी कर दूध लीन्हे जननि टेरि बुलाइ ॥ प्रेम प्रीति निचोल हरिको कहूं धरचो जु छिपाइ । औरकी औरै कहति कछु माता मनहि डराइ ॥ कुँवरिको कहुँ डीठि लागी निरखिकै पछिताइ । सूर तब वृषभानु घरनी राधिका उर लाइ ॥ ८५ ॥ जननी कहति कहा भयो प्यारी । अबहीं खरिक गई तू नीके आवतही भई कौन बिथा री ॥ एक बिटिनियां सँग मेरे थी कारे खाई ताहि तहाँरी । मों देखत वह परी धरणि गिरि मैं डरपी अपने जिय भारी ॥ श्याम वरण एक ढोटा आयो यह नाहिं जानत रहत कहाँरी । कहत सुनो वह नंदको बारो कछु पढिकै वह तुरतहि झारी ॥ मेरो मन भरिगयो त्रासते अब नीको मोहिं लागतु मारी । सूरदास अति चतुर राधिका यह कहि समुझाई महतारी ॥ ८६ ॥ गौडमलार ॥ कुँवरिसों कहति वृषभानु घरनी । नेक नहिं घर रहति तोहिं कितनो कहति रिसनि मुहिं दहति बन भई हरनी ॥ लरिकिनी सवनि घर तोसी नहीं कोऊ निडर चलत नभ चितै जो तकै धरनी । बडी करवर टरी सांपसों ऊबरी बातकै कहत तोहिं लगति जरनी ॥ लिखी मेटै कौनु कर्त्ता करै जौन सोई ह्वैहै होनहारी करनी । सुता लई उरलाइ तन निरखि पछिताइ डरनि गई कुँभिलाइ सूर वरनी ॥ ८७ ॥ महर वृषभानके यह कुमारी । देवधामी करत द्वार द्वारे परत पुत्र द्वै तीसरी यहै बारी ॥ भई बरष सातकी शुभ घरी जातकी प्यारी दुहुँ भ्रातकी बची भारी । कुँवरि दई अन्हवाइ गई तन मुरझाइ वसन पहिराइ कछु कहति खारी ॥ जाहि जनि खरिक तन खेलि अपने सदन यह सुनत हँसति मन श्याम नारी । सूर प्रभु ध्यान धरि हरषि आनंद भरि गाँव घर खेलिहौं कहति कारी ॥ ८८ ॥ श्री राधिकाजीको यशोदा गृह गवन ॥ राग आसावरी॥खेलनके मिस कुँवरि राधिका नंदमहरके आई हो । सकुच सहित मधुरे करि बोली घरहौ कुँवर कन्हाई हो ॥ सुनत श्याम कोकिल सम बाणी निकसे अति अतुराई हो । मातासों कछु करत कलह हरि सो डारचो बिसराई हो ॥ मैया री तू इनको चीन्हति बारंबार बताई हो । यमुना तीर कालिह मैं भूल्यौं बांह पकरि लै आई हो ॥ आवति यहां तोहिं सकुचतिहै मैं दै सौंह बुलाई हो । सूर श्याम ऐसे गुण आगर नागरि बहुत रिझाई हो ॥ ८९ ॥ को जानै हरिकी चतुराई । नयन सैन संभाषण कीनो प्यारीकी उर तपनि बुझाई ॥ मनहीं मन दोउ रीझि मगन भए अति आनँद उरमें न समाई । कर पल्लव हरि भाव बतावत एक प्राण द्वै देह बनाई ॥ जननी हृदय प्रेम उपजायो कहति कान्हसों लेहुबुलाई । सूर श्याम गहि बाहँ राधिका ल्याए महरि निकट बैठाई ॥ ४९०॥ राग सूही ॥ देखि महरि मनही जु सिहानी । बोलि लई बूझति नँदरानी कुँवर कहति मधुरे मधुवानी ॥ व्रजमें तोहिं कहूं नहिं देखी कौन गाउँ है तेरो । भली करी कान्हहि गहि ल्याई भूल्यो तो सुत मेरो ॥ नयन विशाल बदन अति सुंदर देखत नीकी छोटी। सूर महरि सवितासों बिनवति भली श्यामकी जोटी ॥ ९१ ॥ राग नट ॥ नामु कहा है तेरो प्यारी । बेटी कौन महरकी है तू कहि सु कौन तेरी महतारी ॥ धन्य कोख जिन तुमको राख्यो धन्य घरी जिहि तू अवतारी । धन्य पिता माता धनि तेरो छबि निरखति हरिकी महतारी ॥ मैं बेटी वृषभानु महरकी मैया तुमको जानति । यमुना तट बहु बार मिलन भयो तुम नाहिन पहिंचानति ॥ ऐसी कहि: वाको मैं जानति वै तो बडी छिनारि । महर वडो लंगर सब दिनको हँसत देति मुख गारि ॥ राधा बोलि उठी बाबा कछु तुमसों ढीठचो कीनी । ऐसे समरथ कब मैं देखे हँसि प्यारी उर लीनी ॥ महरि कुँवरिसों यह करि भाषति आउ करों तेरि चोटी । सूरदास हरषी नँदरानी कहति महरि हम जोटी॥ ॥ ९२॥ राग गौरी यशुमति राधा कुँवरि सँवारति । वडे बार श्रीवंत शीशके प्रेम सहित लै लै निर-

वारति ॥ माँग पारि बेनीहि सँवारति गूंथी सुंदर भांति । गोरे भाल बिंदु चंदन मनौं इंदु प्रात रवि क्रांति ॥ सारी चीर नई फरिया लै अपने हाथ बनाइ । अंचलसों मुख पोंछि अंग सब आपुहि लै पहिराइ ॥ तिल चाँवरी बतासे मेवा दियो कुँवरिके गोद । सूर श्याम राधा तन चितवत यशुमति मन मन मोद॥९३॥ अथ श्याम राधा खेलन समय॥राग कल्याण॥खेलो जाइ श्याम सँग राधा।यह सुनि कुँवरि हरष मन कीनों मिटी जु अंतर बाधा ॥ जननी निरखि चकित भई ठाढी दंपति रूप अगाधा।देखत भाव दुहुँनको सोई जो चित करि अवराधा॥सँग खेलत दोउ झगरन लागे शोभा बढी अबाधा । मनहु तडित घन इंदु तरनिहै बाल करत रस साधा ॥ निरखत बिधि भ्रम भूलि परचो तब मन मन करत समाधा । सूरदास प्रभु और रच्यो विधि शोच भयो तन दाधा ॥ ९४ ॥ राग केदारो॥ विधिके आन विधिको शोचु । निरखि छवि वृषभानु तनया सकल मम कृत पोचु ॥ रामा गौरी उर्वशी रति इंदिरा विभव समेति । तुल्यादि दिनमणि कहा सारँग नाहिं उपमा देति ॥ चरण निरखि निहारि नख छबि अजित देखैं तोकि । चित्त गुण महिमा न जानत धीर राखति रोकि ॥ सूर आन विरंचि विरचे भक्त निज अवतार । अबलके बल सबल देखि अधीन सकल शृंगार ॥ ९५ ॥ राधा गृहगवन ॥ राग नट ॥ राधे महरिसों कहि चली । आनि खेलौ रहसि प्यारी श्याम तुम हिलमिली ॥ बोलि उठे गुपाल राधा सकुच जिय कत करति । मैं बुलाऊं नहीं आवति जननि को कत डरति ॥ मैया यशोदा देखि तोको करति कितनो छोहु । सुनत हरिकी बात प्यारी रही मुख तन जोहु ॥ हँसि चली वृषभानु तनया भई बहुत अबार । सूर प्रभु चितते टरत नहिं गई घरके द्वार ॥ ९६ ॥ राग बिहागरो ॥ बूझति जननी कहां हुती प्यारी । किन तेरे भाल तिलक रचि कीनों किहि कच गूंदि मांग शिर पारी ॥ खेलत रही नंदके आंगन यशुमति कही कुँवरि ह्यां आ री । तिल चावरी गोद करि दीनी फरिया दई फारि नव सारी ॥ मेरो नाउँ बूझि बाबाको तेरो बूझि दई हँसि गारी । मोतन चितै चितै ढोटा तन कछु सवितासों गोद पसारी ॥ यह सुनिकै वृषभानु मुदित चित हँसि हँसि बूझति बात दुलारी । सूर सुनत रससिंधु बढचो अति दंपति मनमें यहै विचारी ॥ ९७॥ राग गौरी ॥ मेरे आगे महरि यशोदा मैया री तोहिं गारी दीन्ही । वाकी बात सबै मैं जानति वै जैसी तैसी मैं चीन्ही ॥ तोको कहि पुनि कह्यो बबाको बडो धूर्त वृषभानु । तब मैं कह्यो ठग्यो कब तुमको हँसि लागी लपटान ॥ भली कही तैं मेरी बेटी लयो आपनो दाउ । जो मुहि कह्यो सबै उनके गुण हँसि हँसि कहत सुभाउ ॥ फेरि फेरि बूझति राधासों सुनत हँसत सब नारि । सूरदास वृषभानु घरनि यशुमति को गावति गारि॥९८॥ राग गौरी। कहत कान्ह जननी समुझाई । जहाँ तहाँ डारे रहत खिलौना राधा जनि लैजाइ चुराई ॥सांझ सवारे आवन लागी चितै रहति मुरली तन आइ । इनहींमें मेरो प्राण वसतुहै तेरे भाए नेकु न भाइ ॥ राखि छपाइ कह्यो करि मेरो बलदाऊको जनि पतिआइ । सूरदास यह कहति यशोदा को लैहै मुहि लगो बलाइ ॥ ९९ ॥ राग आसावरी ॥ मेरे लालके प्राण खिलौना ऐसो को लैजैहै री । नेक सुनन जो पैहौं ताको सो कैसे ब्रज रैहै री॥विनदेखे तू कहा करैगी सो कैसे प्रगटै है री । अजहुँ राखि उठाइ री मैया मांगेते कहा दैहै री ॥ आवतही लैजैहै राधा पुनि पाछे पछितैहै री । सूरदास तब कहत यशोदा बहुरि श्याम विरुझैहै री॥५००॥राग नट ॥ सैंतति महरि खिलौना हरिके । जानति टेउ आपने सुतकी रोवतिहै पुनि लरिकै ॥ धरि चौगान बेन मुरली धरि अरु भौंरा चकडोरी । प्रेम सहित धरि धरि लै राखति जे सब मेरे कोरी ॥ श्रवणनि सुनत अधिक रुचि लागति हरिकी बतियां भोरी । सूर श्यामसों कहति यशोदा दूध पियहु बलि तोरी॥१॥ आजु सवारे धेनु दुही मैं बढे दूध मोहिं प्यावै री ।

T

सुन मैया मैंतो पय पीवों मोहिं अधिक रुचि आवै री ॥ और धेनुको दूध न पीवों जो करि कोटि बनावै री। जननी कहति दूध धौरीको मोको सौंह करावै री ॥ तुमते मोहिं और को प्यारो बारंबार मनावै री। सूर श्यामको पय धौरीको माता हितसों ल्यावै री ॥ २ ॥ आछो दूध पियो मेरे तात। तातो लगत वदन नहिं परशत फूंकि देतहै मात ॥ औटि धरचो अबहीं मनमोहन तुम्हरे हेत बनाइ। तुम पीवो मैं नयनन देखों मेरे कुँवर कन्हाइ ॥ दूध अकेली धौरीको है तनको अति हितकारी। सूर श्याम पय पीवन लागे अति तातो दियो डारी ॥ ३ ॥ राग बिहागरो ॥ देखत पय पीवत बलराम। तातो लगत डारि तुम दीनों दावानल पीवत नहिं ताम ॥ कबहूं रहत मौन धरि जलमें कबहूं फिरत बँधावत दाम। कबहु अघासुर वदन समाने कबहुँ अँध्यारे जात न धाम॥ कबहुँ करत बसुधा सब त्रयपद कबहूं देहरि उलंघी न जाइ। पट दश सहस गोपिका विलसत वृंदावन रस रास रमाइ ॥ इहै जानि अवतार धरत ब्रज सुर नर मुनि यह भेद न पाई। राजा छोरि बंदिते ल्याए तिहूंलोकमें विदित बडाई ॥ युग युग ब्रज अवतार लेत प्रभु अखिल लोक ब्रह्मांडके नाथ। यई गोप यइ ग्वाल इहै सुख यह लीला कहुँ तजत न साथ ॥ एई कान्ह इहै वृंदाबन यहै यमुना यहै कुंज बिहार। यहै विहार करत निशिबासर येईहैं जनके प्रतिपार ॥ येईहैं श्रीपति बहु नायक एई हैं कर्ता संसार। रोम रोम प्रति अंड कोटि रवि मुख चूमति यशुमति कहि बार॥ एई कंसकै बेर सँहारचो ब्रह्म धरचो कृष्ण अवतार। माखन खात चुराइ घरनते बहुत बार भए नंदकुमार॥ आदि अंत कोऊ नहिं जानतु हरता करता सबके सार। सूरदास प्रभु बाल अवस्था तरुण वृद्धको करै निवार ॥ ४ ॥ राग केदारो ॥ बलि बलि चरित गोकुलराइ। दावानलको पान कीन्हो पीवत दूध रिसाइ ॥ पूतना हठि प्राण लीन्हें आपुन उर लपटाइ। कहति जननी दूध डारत खिझत कछु अनखाइ ॥ धरचो गिरि वर दोहनी कर धरत बाँह पिराइ। शकट भंजन मथन कुच युग कठिन लागत पाइ ॥ तृणावर्त अकाशते पटक्यो शिलापर जाइ। डरत लाल हिंडोरे झूलत हरदेत झुलाइ॥ बकासुरकी चोंच फारे सबै दिष्ट देखाइ। कीर पिंजरा गहत मोहन अँगुरी लेत भगाइ॥ बिना दीपक सदन महियां तहां धरत न पाइ। अघासुर मुख पैठि निकसे बाल बृच्छ छड़ाइ॥ लिख्यो कौरे नाग काजर ताहि देखि डराइ। नृतत कालीनाग फन प्रति सुहथ ताल बजाइ॥ यमलार्जुन तोरि तारे हृदय प्रेम बडाइ। झटकि पात पलाश पल्लव देह देत दिखाइ ॥ हरे बालक वत्स नवकित हेत दौरी माइ। चरत धेनु न मिली तिनको आप दौरे धाइ ॥ वृषभ गंजन मथन केशी हने पूंछ फिराइ। भजत सखा समेत मोहन देखि ब्याई गाइ ॥ गोपनारी संग मोहन कियो रास बनाइ। कहति जननी ब्याहको तव रहत वदन दुराइ ॥ कहा वरणौं कोटि रसना हिये बुधि उपजाइ। सूरके प्रभु रसिक हरि पर अंग अंग बिहाइ ॥ ५ ॥ अथ गोचारन ॥ राग रामकली ॥ आज मैं गाइ चरावन जैहौं। वृंदावनके भाँति भाँति फल अपने कर मैं खैहौं ॥ ऐसी अवहिं कहो जनि बारे देखौ अपनी भांति। तनक तनक पाँइ चलिहौ कैसे आवत ह्वैहै राति ॥ प्रात जात गैयां लै चारन घर आवतहैं सांझ। तुम्हरो कमल वदन कुम्हिलैहै रेंगत घामहिं मांझ ॥ तेरी सौं मोहिं घामु न लागत भूख नहीं कछु नेक। सूरदास प्रभु कह्यो न मानत परे आपनी टेक॥ ॥ ६ ॥ मैया हौं गाय चरावन जैहौं। तू कहि महर नंदबाबासों बडो भयो न डरैहौं ॥ तेरे हेत मात मनसुख अरु हलधर संगहि रैहौं। वंशीवट तर गाइनके सँग खेलत अति सुख पैहौं ॥ ओदन भोजन दै दधि कांवरि भूंख लगै ते खैहौं। सूरदास मैं साथ सौंह दै जो यमुना जल न्हैहौं॥ ७ ॥ चले सब गाइ चरावन ग्वाल। हेरी टेर सुनत लरिकनकी दौरि गए नँदलाल ॥ फिरि इत उत ह्वै देखै यशुमति दृष्टि न परे कन्हाइ। जान्यो जात ग्वाल सँग दौरचो टेरति

यशुमति धाइ ॥ जात चल्यो गैयनके पाछे बलदाऊ कहि टेरत । पाछे आवत जननी देखी फिरि फिरि इतको हेरत ॥ बल देख्यो मोहनको आवत सखा किए सब ठाढे । पहुँची आइ यशोदा रिससों दोउ भुजु पकरे गाढे ॥ हलधर कह्यो जानदे मो सँग आवहिं आज सवारे । सूरदास बलसों कहै यशुमति देखे रहियो प्यारे ॥ ८ ॥ राग बिलावल ॥ खेलत श्याम चले ग्वालनसँग । यशुमति कहति इहै घर आई देखौ हरि कीने जेजेरँग ॥ प्रातहिते लागे एही ढँग अपनी टेक परयोहै । देखौ जाइ आजु वनको सुख कहा परोसि धरयोहै ॥ माखन रोटी अरु शीतल जल यशुमति दियो पठाइ । सूर नंद हँसि कहत महरिसों आवत कान्ह चराइ ॥ ९ ॥ राग सारंग ॥ हरि जूको ग्वालिनि भोजन ल्याई । वृंदा विपिन विशद यमुना तट शुचि ज्योंनार बनाई ॥ सानि सानि दधि भातु लियो कर सुहृद सबनि कर देत । मध्य गुपाल मंडली मोहन छाँक बाँटिकै लेत ॥ देवलोक देखत सब कौतुक बाल केलि अनुरागी । गावत सुनत सुनत सुख करि मनौ सूर दुरित दुख भागी ॥ ९१०॥ राग सारंग ॥ वृंदावन देख नंदनंदन अतिहि परम सुख पायो । जहां जहां बाल गाइ सँग डोलत तहँ तहँ आपुन धायो ॥ बलदाऊ मोको जित छांडो संग तुम्हारे ऐहों ॥ कैसेहुँ आज यशोदा छांड्यो कालिह न आवन पैहों ॥ सोवत मोकों हेरिलेइगे बाबानंद दुहाई।सूर श्याम बिनतीकरै बलसों सखन समेत सुनाई ॥ ११॥ अथ धेनुकवध । राग भैरव ॥ सखा कहन लागे हरिसों तब । चलौ तालवनको जैये अब ॥ ता बनमें फल बहुत सुहाए । वैसे हम कबहूं नहिं खाए ॥ असुर धेनुक तहाँहैं रखवारी । चलो कहैं हँसि बलि बनवारी ॥ बिहँसत हरि सँग चले गुआला । नाचत गावत गुण गोपाला ॥ सोयो हुतो असुर तरु छाया । सुनत शोर तरुते उठि धाया॥ हलधरको देखे तिन आवत । ये दोउ बलकर जोर चलावत ॥ पकरि बाहँ बलभद्र फिरायो । मारि ताहि तरु माहिं गिरायो ॥ और बहुत ताको परिवारो । हरि हलधर तिन सबको मारो ॥ ग्वालन वनफल रुचि सों खाए । बहुरो वृंदावनहि सिधाए ॥ हरि हलधर छबि वरणि न जाई । सूरदास इह लीला गाई ॥१२॥ राग गौरी॥बनते आवत धेनु चराये । संध्या समय सांवरे मुखपर गोपद रज लपटाये ॥ वरह मुकुट के निकट लसति लट मधुप बने रुचि पाये । विलसत सुधा जलद आनन पर उडत न जात उड़ाये ॥ विधि बाहन भक्षनकी माला राजत उर पहिराये ॥ इक वपु रही नाहिं बड़े छोटे ग्वाल बने इक दाये । सूरदास मिलि लीला प्रभुकी जीवत जन यश गाए ॥ १३ ॥ आजु हरि धेनु चराये आवत । मोर मुकुट वनमाल विराजत पीतांबर फहरावत ॥ जिहि जिहि भांति ग्वाल सब बोलत सुनि श्रवणन मन राखत । आपुन टेरिलेत नान्हे सुर हरषत सुख पुनि भाषत ॥ देखत नंद यशोदा रोहिणि अरु देखत ब्रज लोग । सूर श्याम गाइन सँग आये मैया लीनो रोग ॥ १४॥ यशुमति दौरि लए हरि कनियां । आजु गयो मेरो गाइचरावन हौं बलिगई निछनियाँ ॥ मो कारण कछु आन्योहै बलि बनफल तोरि कन्हैया । तुमहिं मिले मैं अति सुख पायो मेरे कुँवर कन्हैया ॥ कछुक खाहु जो भावै मोहन देरी माखन रोटी । सूरदास प्रभु जीवहु युग युग हरि हलधरकी जोटी ॥ १५ ॥ राग सारंग॥ मैं अपनी सब गाइ चरैहौं । प्रात होत बलके सँग जेहौं तेरे कहे न भुरैहौं ॥ ग्वाल बाल लै गाइन भीतर नेकहु नहिं डर लागत । आजु न सोवों नंद दुहाई रैनि रहोंगो जागत ॥ और ग्वाल सब गाइ चरैहैं मैं घर बैठो रैहों । सूर श्याम अब सोइ रहौ तुम प्रात जान मैं देहौं ॥१६॥ राग केदारो ॥ बहुते दुख हरि सोइ गयोरी । सांझहिते लाग्यो यहि बातहि क्रम क्रमते मन बोधि लयोरी ॥ एक दिवस गयो गाइ चरावन ग्वालन साथ सवारे । अबतो सोइ रह्योहै कहिकै प्रातहि कहा बिचारे॥यहतो सब बलरामहि लागै सँग लेगयो लिवाइ।सूर नंद यह कहत महरिसों आवन दे फिरि धाइ ॥ १७ ॥राग बिलावल॥ करहु

T

कलेऊ कान्ह पियारे। माखन रोटी दियो हाथ पर बलि बलि जाउँ हौं खाहु लला रे॥ टेरत ग्वाल द्वारके ठाढे आए तबके होत सबारे। खेलहु जाइ ब्रजहिके भीतर दूरि कहूं जनि जैयहु प्यारे॥ टेरि उठे बलराम श्यामको आवहु धाइ धेनु बन चारे।सूर श्याम कर जोरि मातसों गाइचरावन कहत हमारे॥ ॥ १८॥ राग बिलावल॥ मैया री मोहि दाऊ टेरत। मोकों बन फल तोरि देतहैं आपुन गैयन घेरत॥ और ग्वाल सँग कबहुँ न जैहौं वे सब मोहिं खिझावत। मैं अपने दाऊ सँग जैहौं बन देखत सुख पावत॥ आगेदे पुनि ल्यावत घरको तू मुहि जान न देति। सूरश्याम कहै यशुमति मैया हाहा करि करि केति॥१९॥ राग सारंग॥ बोलि लियो बलरामहि यशुमति।आवहु लाल सुनहु हरिके गुण कालिहिते लँगरचौ करत अति॥ श्यामहि जानदेहु मेरे सँग तू काहे डरपावति। मैं अपने ढिगते नहिं टारे जियहि प्रतीति न आवति॥ हँसी महरि बलकी बातैं सुनि बलिहारी या मुखकी। जाहु लिवाय सूरके प्रभुको कहत वीरके रुखकी॥५२०॥राग नट॥ अति आनंद भयो हरि धाए। टेरत ग्वाल बाल सब आवहु मैया मोहिं पठाए॥ उतते सखा हँसत सब आवत चलहु कान्ह बन देखहु। वनमाला तुमको पहिरावहिं धातु चित्रतन रेखहु॥ गाइ लेइ सब घेरि घरनते महर गोपके बालक। सूर श्याम चले गाइ चरावन कंस उरहिके शालक॥२१॥ राग सारंग॥ चरावत वृंदावन हरि गाइ। सखा लिए सँग सुबल श्रीदामा डोलतहैं सुख पाइ॥ क्रीडा करत जहां तहां सब मिलि आनंद बढ़ाइ बढाइ। बगरि गईं गैयां बन वीथिनि देखी अति बहुताइ॥कोउ गए ग्वाल गाइ बन घेरन कोउ गए बछरु लिवाइ। आपुहि रहे अकेले बनमें कहुँ हलधर रहे जाइ॥ बंशीवट शीतल यमुनातट अतिहि परम सुखदाइ। सूर श्याम तब बैठि विचारत सखा कहां बिरमाइ॥ २२॥ बार बार हरि कहत मनहि मन अबहि रहे सँग चारत धेनु। ग्वाल बाल कोउ कतहुँ न देख्यो टेरत नाँउ लेत दै सैनु॥ आलस गात जानि मनमोहन बैठे छाँह करत सुख चैनु। अकनि रहत कहुँ सुनत नहीं कछु नहिं गौ रंभन बालक बैनु॥ तृषावंत सुरभी बालक गण कालीदह अचयो जल जाइ। निकसि आइ सब तट ठाढे भए बैठि गए जहाँ तहाँ अकुलाइ॥ बन घन ढूँढि श्याम तहाँ आए गोसुत ग्वाल रहे मुरझाइ। मनमहँ ध्यान करतही जान्यो काली उरग रह्यो ह्यां आइ॥ गरुड त्रास करि आइ रह्यो दुरि अंतर्यामी सबके नाथ। अमृत दृष्टि भरि चितै सूर प्रभु बोलि उठे गावत हरि गाथ॥ २३॥ आवहु आवहु कान्ह जू पाईं है सब धेनु। कुंज कुंजमें देखि रहे तृण चरति परम सुख चैन॥ द्रुमन चढे सब सखा पुकारत मधुर सुनावहु बैन। जनि धापहु बलि चरन मनोहर कठिन कंठ मन ऐन॥ बार बार ब्रज कौन उबारै पियो कालीदह फैन। सूर श्याम संतनहित कारन प्रगट भये सुख दैन॥२४॥ राग सारंग॥पाईं पाईं है भैया कुंज वृंदमें टाली। अबके अपनी हटकि चरावहु जैहै हटकी घाली॥ आवहु वेगि सकल दुहुँ दिशिते कत डोलत अकुलाने। सुनि मृदु वचन देखि उन्नत कर हरषि सबै मुसुहाने॥ तुम तौ फिरत अनतहीं ढूँढत ये वन फिरति अकेली। ह्यांकी गाइ कौन पर लैहौ सघन बहुत द्रुम बेली॥ सूरदास प्रभु मधुर वचन कहि राखत सबहि बुलाए। नृत्य करत आनँद गौ चारत सबै कृष्णपै आए२५॥राग रामकली॥ ताते तरकि कह्यो बनमाली। पशु तन चपल स्वरूप न जानत डोलत चाली चाली॥ धरि तन सगुण त्रिपद पूरण प्रभु आपु कमल प्रतिपाली। यद्यपि वृषभ सुता पति तजिकै फिरति कुमति की घाली॥ अति श्रम भयो सकल बन ढूँढत बन बेली दौ जाली। सूरदास संतन जन हरि हित इहि अब सबते टाली॥२६॥ नट नारायणी॥ मोहिं बन छाँडि आए सब ग्वाल। कहांते कहां आइ

निकसे करे कैसे ख्याल ॥ मुरछि काहे गिरे धरणी कहा यह जंजाल। मैं यहां जो आइ देखो परे सब बेहाल ॥ आनि अँचयो जल यमुनको तबहि गए अकुलाइ। निकसिके जब कूल आए गिरि परे सब आइ ॥ प्राण बिनु हम सब भयेते तुमहिं दियो जिवाइ। सूरके प्रभु तुम जहां तहँ हमहिं लेत बचाइ ॥ २७ ॥ राग गौरी ॥ बलदाऊ कहि श्याम पुकारचो। आवहु बेगि चलौ घर जैयै बनहीमें पुनि होत अँध्यारो ॥ ल्याए बोलि सखा हलधरको हँसे श्याम मुख चाही। बडी बेर भई तुमहिं कन्हैया गाइन लेहु निबाही ॥ हेरी देत चले सब बनते गोधन दिए चलाई। सूरदास प्रभु राम श्याम दोउ व्रजजनके सुखदाई ॥२८॥ वृंदावन प्रवेश शोभा। राग गौरी ॥ वै मुरलीकी टेर सुनावत। वृंदावन बसि बासर सब निशि आगम जानि चले व्रज आवत ॥ सुबल सुदामा अरु श्रीदामा संग सखा मध्य मोहन छवि पावत। सुरभी गण सब ले आगे करि कोउ टेरत कोउ वेणु बजावत ॥ केकी पच्छ मुकुट शिर भ्राजित गौरी राग मिले रस गावत। सूरश्यामके ललित वदन पर गोरज छबि कछुँ चंद छपावत ॥ २९ ॥ हरि आवत गाइनके पाछे। मोर मुकुट मकराकृत कुंडल नयन विशाल कमलते आछे ॥ मुरली अधर धरन सीखतहैं बनमाला पीतांवर काछे। ग्वाल बाल सब वरण वरणके कोटि मदनकी छवि कियो पाछे ॥ पहुँचे आइ श्याम व्रजपुरमें घरहि चले मोहन बल आछे।सूरदास प्रभु दोउ जननी मिलि लेति बलाइ बोलि मुख बाछे ॥३०॥राग कल्याण॥ आनँदसहित सबै घर आए। धन्य यशोदा तेरो बारो हम सब मरत जिवाए ॥ नर वपु धरे देव यह कोऊ आइ लियो अवतार। गोकुल ग्वाल गाइ गोसुतके एई राखनहार ॥ पय पीवत पूतना निपाती तृणावर्त इहि भांत। वृषभासुर वत्सासुर मारचो रामकृष्ण दोउ भ्रात ॥ जबते जन्म लियो व्रज भीतर तबते इहै उपाइ। सूर श्यामके बल प्रतापते बन बन चारत गाइ ॥ ३१ ॥ तुम कत गाइ चरावन जात। पिता तुम्हारो नंद महरसों जाके यशुमति सी है मात ॥ खेलत रहौ आपने घरमें माखन दधि भावै तब खात। अमृत वचन कहौ मुख अपने रोम रोम पुलकित सब गात ॥ अब काहूके जाहु कहूं जनि आवतिहै युवती इत रात। सूर श्याम मेरे नैनन आगे रहो काहे कहूं जातहौ तात ॥ ३२ ॥ मैया हौं न चरैहौं गाइ। सिगरे ग्वाल घिरावत मोसों मेरे पाँइ पिराइं ॥ जौ न पत्याहि पूछ बलदाउहि अपनी सौंह दिवाइ। यह सुनि सुनि यशुमति ग्वालनिको गारी देत रिसाइ ॥ मैं पठवत अपने लरिकाको आवै मन बहराइ। सूर श्याम मेरो अति बालक मारत ताहि रिंगाइ ॥ ३३ ॥ बल मोहन बनते दोउ आए। जननि यशोदा मात रोहिणी हरपि दुहुँनि दोउ कंठ लगाए ॥ काहे आजु अबार लगाई काहे कमल वदन कुँभिलाए। भूखे भए आजु दोउ भैया प्रात कलेऊ करन न पाए ॥ देखहु जाइ कहा जेंवन कियो यशुमति रोहिणि तुरत पठाई। मैं अन्हवाए देति दुहुँनको तुम भीतर अति करौ चँडाई ॥ लकुट लियो मुरली कर लीन्हे हलधर दियो विषान। नीलांबर पीतांवर लीन्हें सैंति धरति करि प्रान ॥ मुकुट उतारि धरचो मंदिर लै पोंछतिहै अंग घात। अरु बनमाल उतारति गरते सूर श्यामकी मात ॥ ३४ ॥ अंगअभूषण जननि उतारति। दुलरी ग्रीव माल मोतिनकी केउर लै भुज श्याम निहारति ॥ क्षुद्रावली उतारति कटिते सैंति धरति मनहीमन वारति। रोहिणि भोजन करहु चँडाई बारबार कहि कहि करि आरति ॥ भूखे भए श्याम हलधर ए यह कहि अंतरप्रेम विचारति। सूरदास प्रभु मात यशोदा पट लै दुहुँनि अंगरज झारति ॥ ३५ ॥ ए दोऊ मेरे गाइ चरैया। माल बिसाहि लये मैं तुमको तब दोउ रहे नन्हैया ॥ तुमसों टहल करावति निशि दिन और न टह-

ल करैया। यह सुनि श्याम हँसे कहि दाऊ झूठहि कहतिहै मैया॥ जानि परत नहिं साँच झुठाई धेनुचरावत रहे झुरैया। सूरदास प्रभु कहति यशोदा मैं चेरी कहि लेति बलैया॥३६॥ राग कल्याण॥ यह कहि जननि दुँहुनि उर लावति। सुमनसुत अंग परसि तरनि जल बालि बलि गई कहि कहि अन्हवावति॥ सरस बसन तनु पोछि गई लै पटरसके जेवनार जेंवावति। शीतल जल कपूर रस रचयो झारी कनक लए अँचवावति॥ भरचो चरू मुख धोय तुरतही पीरेपान बीरी मुख नावति। सूर श्याम सुख जानि मुदितमन सेज्यापर संग लै पौढावति॥३७॥ राग विहागरो॥ सोवत नींद आइ गई श्यामहि। महरि उठी पौढाइ दुहुँनको आपु लगी गृहकामहि॥ वरजतिहै घरके सब लोगनि हरुये लैलै नामहि। गाढे बोल न पावत कोऊ डर मोहन बलरामहि॥ शिव सनकादि अंत नहिं पावत ध्यावतहैं निशि जामहि। सूरदास प्रभु ब्रह्म सनातन सो सोवत नंदधामहि॥ देखत नंद कान्ह अति सोवत। भूखे भए आजु बन भीतर यह कहि कहि मुख जोवत॥ कह्यो नहीं मानत काहूको आप हठी दोउ वीर। बार बार तनु पोंछत करसों अतिहि प्रेमकी पीर॥ सेज मँगाइ लई तहां अपनी जहां श्याम बलराम। सूरदास प्रभुके ढिग सोये सँग पौढ़ी नंदवाम ॥३८॥ जागि उठे तब कुँवर कन्हाई। मैया कहां गई मो ढिगते सँग सोवत जान्यो बलभाई॥ जागे नंद यशोदा जागी बोलि लिए हरि पास। सोवत झिंझिक उठ्यो काहेते दीपक दियो प्रकाश॥ सपने कूदि पर्यो यमुनादह काहू दियो गिराई। सूर श्यामसों कहति यशोदा जिनिहो लाल डराई॥ ॥३९॥ राग गौरी॥ मैं बरजौं यमुनातट जात। सुधि रहिगई न्हातकी तेरे जिनि डरपो मेरे तात॥ नंद उठाइ लियो कोराकरि अपने सँग पौढ़ाइ। वृंदावनमें फिरत जहाँ तहँ केहि कारण तू जाइ॥ अब जिनि जैहौ गाइ चरावन कहांको रहत बलाइ॥ सूर श्याम दंपति बिच सोए नींद गई तब आइ॥ ॥४०॥ राग कल्याण॥ सपनो सुनि जननी अकुलानी॥ दंपति बात कहत आपुसमें सोअति शारँगपानी॥ या ब्रजको जीवनि यह ढोंटा कह देख्यो यहि आजु॥ गाइ चरावन जान न दीजै याको है कह काजु॥ गृह संपति द्वै तनक ढोंटौ ना इनहीं लों सुख भोग। सूर श्याम बन जात चरावन हँसी करत सब लोग॥४१॥ राग भैरवी॥ यहि अंतर भिनुसार भयो। तारागण सब गगन छपाने अरुन उदित अँधकार गयो॥ जागी महरि काज गृह लागी निशिको सब दुख भूलि गयो। प्रातस्नान करन यमुनाको नंदहि तुरत उठाइ दयो॥ मथनिहारि सब ग्वालि बोलाई भोर भयो उठि मथो दह्यो। सूर नंद घरनी आपुनहू मथति मथानी नेति गह्यो॥४२॥ अथ कंस कमलके फूल मँगाए, कालीदमन लीला अध्याय षोडश॥ राग विलावल॥ नारदसों नृप करत विचार। ब्रजमें ये दोउ कोउ अवतार॥ नंदसुवन बलराम कन्हाई। इनकी गति मैं कछू न पाई॥ तृणावर्तसों दूत पठाए। ता पाछे कागासुर धाए॥ बकी पठाइ दई पहिलेही। ऐसेनको बलु वैसेहि लेही॥ उनते कछू भयो नहिं काजा। यह सुनि सुनि मोहिं आवति लाजा॥ अब मुनि तुम इक बुद्धि बिचारहु। सूर श्याम बलरामहि मारहु॥४३॥ नारद ऋषि नृपसों यह भाषत। वैहैं कालं तुम्हारे प्रगटे काहेते तुम उनको राखत॥ काली उरग रह्यो यमुनामें तहँते कमल मँगावहु। दूत पठाय देहु ब्रजऊपर नंदहि अति डरपावहु॥ यह सुनिकै ब्रज लोग डरैंगे वोउ सुनिहैं यह बात। पुहुप लेन जैहैं नँद ढोंटा उरग करै तहां घात॥ यह सुनि कंस बहुत सुख पायो भली कही इह मोहिं। सूरदास प्रभुको मुनि जानत ध्यान करत मन एहि॥४४॥ राग सूहो॥ कंस बुलाइ दूत एक लीन्हो।

T

कालीदहके फूल मँगाए पत्र लिखाइ ताहि कर दीन्हो ॥ यह कहियो ब्रज जाइ नंदसों कंसराज अतिकाज मँगाए। तुरत पठाइ दियेही बनिहै भली भांति कहि कहि समुझाए ॥ यह अंतर्यामी जानी जिय आपु रहे बन ग्वाल पठाए। सूर श्याम ब्रजजन सुखदायक कंस काल जिय हरप बढाए॥ ॥४५॥ राग रामकली ॥ खेलन चले नंदकुमार। दूत आवत जानि ब्रजमें आपु दीन्ह्यों टार ॥ नंद यमुना न्हाइ आए महरि ठाढी द्वार। नृपति दूत पठाइ दीन्ह्यों चल्यो ब्रज अहंकार ॥ महर पैठत सदन भीतर छींक बाई धार। सूर नंद कहत महरिसों आजु कहा बिचार ॥४६॥ राग सूहो॥ यह सुनि कंस मुदितमन कीन्हों। दूतहि प्रगट कही यह बाणी पत्र लिखाइ नंदको दीन्हों ॥ कालीदहके कमल मँगावहु तुरत देखि यह पाती। जैसे कालिह कमल ह्यां पहुँचैं तू कहियो यहि भांती ॥ यह सुनि दूत तुरतही धायो तब पहुँच्यो ब्रज जाइ। सूर नंद कर पाती दीन्हीं दूतकह्यो समुझाइ ॥ ४७ ॥ राग सूहो ॥ पाती बांचत नंद डेराने। कालीदहके फूल मँगाए सुनी सबनि ब्रजलोग घराने॥जो मोको नहिं फूल पठावहु तौ ब्रज करौं उजारी। महर गोप उपनंद न राखौं सबहिन डारों मारी॥पुहुप देहु तौ बनै तुम्हारी नातरु गए बिलाइ। सूर श्याम बल मोहन तेरे माँगों उनहिं धराइ॥४८॥ ॥ राग बिलावल नंद सुनत मुरझाइ गए। पाती बांची सुनी दूत मुख यह बाणी सुनि चकित भए। बल मोहन खटकत वाके मन आजु कही यह बात। कालीदहके फूल कहौं धौं को आनै पछितात ॥ और गोप सब नंद बुलाए कहत सुनौ यह बात। सुनहुँ सूर नृप ढंग यह आयो बल मोहन पर घात ॥ ४९ ॥ राग जैतश्री॥ आपु चढे ब्रजऊपर काली। कहां निकसि जैए को राखैं नंद कहत बेहाली ॥ मोहिं नहीं जियको डर नेकहु दोउ सुतको डरपाऊं। गाउँ तजौं कहुँ जाउँ निकसि लै इनहीं काज पराऊं ॥ अब उबार नाहिं दीखत कतहूं शरण राखि को लेइ। सूर श्यामको वरजति माता बाहिर जान न देइ। ॥५५०॥ राग आसावरी ॥ नंदघरनि ब्रजनारि बिचारति। ब्रजहि बसत सब जनम सिराने ऐसे कंस करी नहिं आरति ॥ कालीदहके फूल मँगावत को आनै धौं जाई। ब्रजवासी नातरु सब मारौं बांधौं बलन कन्हाई ॥ यह कहतहि दोउ नैन ढराने नंद घरनि दुखपाइ। सूर श्याम चितवत मातामुख बूझत बात बनाइ ॥ ५१ ॥ बूझहु जाइ तातसों बात। मैं बलिजाउँ मुखारबिंदकी तुमही काज कंस अकुलात ॥ आए श्याम नंदपै धाए जान्यो मात पिता अकुलात। अवहीं दूरि करौं दुख इनको कंसहिं पठै देउँ जलजात ॥ मोसों कहौ बात बाबा यह बहुत करत तुम सोच बिचार। कहा कहौं तुमसों मेरे प्यारे कंस करत कछु तुमको झार ॥ जबते जनम भयो हरि तेरो कितने करवर टरे कन्हाई। सूर श्याम कुलदेवनि तोको जहां तहां करि लिए सहाई ॥ ५२ ॥ राग बिलावल ॥ तुमहिं कहत जो करै सहाई। सो देवता संगही मेरे ब्रजते अनत कहूं नहिं जाई ॥ वह देवता कंस मारैगो केश धरे धरणी घिसि आई। वह देवता मनावहु सब मिलि तुरत कमल जो देइ पठाई ॥ बाबा नंद झखत केहि कारण यह कहि माया मोह अरुझाई। सूरदास प्रभु मात पिताको तुरतहि दुख डारचो बिसराई ॥ ५३ राग नट ॥ खेलन चले कुँवर कन्हाइ। कहत घोष निकास जैए तहां खेलें धाइ॥ गेंदखेलत बहुत बनिहै आनो कोई जाइ। घरही गए सखा श्रीदामा गेंद तुरतही ल्याइ ॥ अपने कर लै श्याम देख्यो अतिहि हरप बढाइ। सूरके प्रभु सखा लीन्हें करत खेल बनाइ॥ ॥५४॥ खेलत श्याम सखा लिये संग। इक मारत इक रोकत गेंदहि इक भागत करि नाना रंग ॥ मारु परस्पर करत आपुमें अति आनंद भए मनमाहिं। खेलतहीमें श्याम सबनिको यमुनातटको लीन्हे जाहिं ॥ मारि भजत जो जाहि ताहि सो मारत लेत आपनो दाव। सूर श्यामके

T

गुणको जाने कहत और कछु और उपाव ॥ ९५ ॥ राग गौरी॥ लैगए टारि यमुनतट ग्वालनि।आपुन जात कमलके काजहि सखा लिए सँग ख्यालनि ॥ जोरीं मारि भजत उतहीको जात यमुनके तीर। इक धावत पाछे उनहींके पावत नहीं अधीर ॥ रोंगटि करत तुम खेलतहीमें परी कहा यह बानि । सूर श्यामसों कहत ग्वाल सब तुमहिं भले करि जानि ॥ ९६ ॥ श्याम सखाको गेंद चलाई । श्रीदामा मुरि अंग बचायो गेंद परचो कालीदह जाई ॥ धाइ गह्यो तब फेंट श्यामकी देहु न मेरो गेंद मँगाई । और सखा जिनि मोको जानो मोसों जिनि तुम करौ ढिठाई ॥ जानि बूझि तुम गेंद गिरायो अब दीन्हेही बनै कन्हाई।सूर सखा सब हँसत परस्पर भली करी हरि गेंद गिराई९७राग सोरठ॥ फेंट छांडि देहु मेरी श्रीदामा । काहेको तुम रारि बढ़ावत तनक बातके कामा ॥ मेरो गेंद लेहु ता बदले बाँह गहतकत धाइ । छोटो बडो न जानत काहू करत बराबरि आइ ॥ हम काहेके तुमहि बराबरि बडे नंदके पूत । सूर श्याम दीन्हेंही बनिहै बहुत कहावत धूत ॥ राग कल्याण ॥ तोसों कहा धुताई करिहौं । जहां करी तहँ देखी नाहीं कहा तोसों मैं लरिहौं ॥ मुँह सँभारि तू बोलत नाहीं कहत बराबरि बात । पावहुगे अपनो कियो अबहीं रिसन कँपावत गात ॥ सुनहु श्याम तुमहूं सरि नाहीं ऐसे गये बिलाइ । हमसों सतर होत सूरजप्रभु कमल देहु अब जाइ॥ ॥ ९८ ॥ हमहीं पर सतरात कन्हाई । प्रथमहि कमल कंसको दीजै डारहु हमहिं मराई ॥ सांच कहों मैं तुमहि श्रीदामा कमलकाज मैं आयो । कहा कंस बपुरो केहि लायक जाको मोहिं डरायो ॥ अघा बका केशी शकटासुर तृणा शिला पर डारचो । बकी कपटकरि प्यावन आई ताको तुरत पछारचो ॥ कालीदह जल छुवत मरे सब सोइ काली धरि ल्याऊँ । सूरदास प्रभु देहधरेको गुण प्रगटों एहि ठाऊँ ॥ ९९ ॥ राग सोरठ ॥ रिसकरि लीन्हीं फेंट छँडाई । सखा सबै देखतहैं ठाढे आपुन चढ़े कदमपर धाई ॥ तारी दैदै हँसत सबै मिलि श्याम गए तुम भाजि डराई । रोवत चले श्रीदामा घरको यशुमति आगे कैहों जाई ॥ सखा सखा कहि श्याम पुकारचो गेंद आपनो लेहु-न आई।सूर श्याम पीतांबर काछे कूदि परे दहमें भहराई ॥९६०॥ राग गौरी॥ हाइ हाइ करि सखनि पुकारचो । गेंदकाज यह करी श्रीदामा नंदमहरको ढोंटा मारचो ॥ यशुमति चली रसोंई भीतर तबहिं ग्वालि इक छींकी । ठठकि रही द्वारेंपर ठाढी बात नहीं कछु नीकी ॥ आइ अजिर निकसी नँद रानी बहुरो दोप मिटाइ । मंजारी आगे दै निकसी पुनि फिरि आँगन आइ ॥ व्याकुल भई निकसि गई बाहिर कहाँ धौं गयो कन्हाई । बांयो काग दहिनो खर शूकर व्याकुल घर फिरि आई॥खन भी-तर खन बाहिर आवति खन आँगन इहि भांति।सूर श्यामको टेरत जननी नेक नहीं मन शांति । ॥ ६१ ॥ देखे नंद चले घर आवत । पैठत पौंरि छींक भई बाई रोइ दाहिने धाह सुनावत॥ फटकत श्रवन श्वान द्वारे पर गगरी करत लराई । माथे पर दै काग उडानो कुशगुन बहुतक पाई ॥ आए नंद घरहि मनमारे व्याकुल देखी नारी । सूर नंद युवतीसों बूझत बिन छबि बदन निहारी ॥ ६२॥ राग नट॥ नंद घरनिसों बूझत बात । बदन झुराय गयो क्यों तेरो कहाँ गयो बल मोहन तात ॥ भीतर चली रसोंई कारण छींक परी तब आँगन आई । पुनि आगे ह्वै गई मंजारी और बहुत कुश-गुन मैं पाई ॥ मोहिं भए कुशगुन घर पैठत आजु कहा यह समुझि न जाई । सूर श्याम गए आजु कहां धौं बार बार बूझत नँदराई ॥ ६३ ॥ महरि महर मन गए जनाइ । खन भीतर खन आँगन ठाढे खन बाहर देखतहैं जाइ ॥ यहि अंतर सब सखा पुकारत रोवतः आए ब्रजको धाइ।आतुर गए नंद घरहीको महरि महरसों बात सुनाइ ॥ चकित भई दोउ बूझन लागे कहौ

बात हमको समुझाई । सूर श्याम खेलतहि कदमचढि कूदिपरे कालीदह जाई ॥ ६४ ॥ राग सोरठ॥ सपनो प्रगट कियो कन्हाई । सोवतही निशि आज डराने हमसों यह कहि बात सुनाई ॥ धर- णिपरी मुरझाइ यशोदा नंद गए यमुनातट धाइ । बालक सब नंदहि सँग धाए व्रज घर जहँ तहँ शोर मचाइ॥त्राहि त्राहि करि नंद पुकारत देखत ठौर गिरे भहराइ । लोटत धरणि परत जलभीतर सूर श्याम दुख दियो बुढ़ाइ ॥ ६५॥ राग गौरी॥व्रजबासी यह सुनि सब आये । कहां परचो गिरि कुँवर कन्हाई बालक ले सो ठौर दिखाये ॥ सूनो गोकुल कियो श्याम तुम यह कहि लोग उठे सब रोइ । नंद गिरत सबहिन धरि राख्यो पोंछत बदन नीर लै धोइ ॥ व्रजबासी तब कहत नंदसों मरणभयो सबहीको आइ । सूर श्याम बिनुको बसिहै व्रज धृग जीवन तिहुँ भुवन कहाइ ॥ ६६ ॥ महरि पुकारति कुँवर कन्हाई । माखन धरचो तिहारेहि कारण आजु कहाँ अबसेर लगाई ॥ अति कोमल तुम्हरे मुखलायक तुम जेंवहु मेरे नैंनजुडाइ । धौरी दूध औटि है राख्यौ अपने कर दुहि गए बनाइ॥ बरजति ग्वारि यशोदाकों सब यह कहि कहि नीके यदुराइ । सूर श्याम सुत विरह मातके यह वियोग बरण्यो नहिं जाइ ॥ ६७ ॥ राग गौरी ॥ माखन खाहु लाल मेरे आई । खेलत आजु अबार लगाई ॥ बैठहु आइ संग दोउ भाई । तुम जेंवहु मैया बलि जाई॥ सद माखन अति हित मैं राख्यो । आजु नहीं नेकहु तैं चाख्यो ॥ प्रातहिते मैं दियो जगाइ । दँतवानि करि जु गए दोउ भाइ ॥ मैं बैठी तुव पंथ निहारों । आवहु तुम पर तनु मनु वारों ॥ व्रज युवती सब सुनि ए बानी । रोवत धरणि परीं अकुलानी ॥ शोकसिंधु बैठी नँदरानी । सुधि बुधि तनकी सबै भुलानी ॥ सूर श्याम लीला यह कीन्हो सुखके हेत जननि दुख दीन्हो ॥ ६८ ॥ राग नट ॥ चौंकिपरी तनकी सुधि आई । आज कहा व्रज शोर मचायो तब जान्यो दह गिरो कन्हाई॥पुत्र पुत्र कहिकै उठि दौरी व्याकुल यमुना तीरहि धाई । व्रज वनिता सब संगहि लागीं आइ गए बल अग्रज भाई॥जननी व्याकुल देखि प्रबोधत धीरज करि नीके यदुराई। सूर श्यामको नेक नहीं डर जिनि तू रोवै यशुमति माई॥६९॥ राग बिलावल॥व्रजवासी सब उठे पुकारी।जल भीतर कहा करत मुरारी ॥ संकटमें तुम करत सहाय।अब क्यों नहीं बचावत आय॥माता पिता अतिहि दुख पावत।रोइ रोइ सब कृष्ण बुलावत॥ हलधर कहत सुनहु व्रजवासी ।वै अंतर्यामी अविनासी ॥ सूरदास प्रभु आनँदरासी । रमासहित जलहीके बासी ॥५७०॥ राग गुंडो । अति कोमल तनु धचो कन्हाई।गए तहाँ जहाँ काली सोवत उरगन।रि देखत अकुलाई ॥कह्यो कौनको बालकहै तू बार बार कहि भाग न जाई।छिनकाहिमें जरि भस्म होयगो जब देखे उठि जागि जँभाइ॥उरगनारिकी बाणी सुनिकै आप हँसे मनमें मुसकाइ।मोकों कंस पठायो देखन तू याको अब देहि जगाइ॥ कहा कंस दिखरावत इनको एक फूंकहीमें जरिजाय ।पुनि पुनि कहत सूरके प्रभुको तू अब काहे न जाइ पराइ७१ राग गुंड मलार ॥ कहा डर करौं यहि फनीको बावरी।कह्यो मेरो मानि छाँडि अपनी बानि अबहीं परिहै जा।नि टेक सब रावरी ॥ तोहिं देखि मोंहिं मया अतिही भई कौनको सुवन तू कहाँ आयो । मेरो वह कंस निर्वंशै वाको होइ कह्यो यह कंस तोकों पठायो ॥ कंसको मारिहौं धरणि निरवारिहौं अमर उद्धारिहौं उरग घरनी । सूर प्रभुके वचन सुनत उरगनि कह्यो जाहि अब क्यों न मति भई मरनी ॥ ॥ ७२ ॥ राग मारू ॥ झिरकिकै नारि दै गारि गिरिधारि तब पूछ पर लात दै अहि जगायो । उठ्यौ अकुलाइ डरपाइ खगराइको देखि बालक गर्व अति बढायो ॥ पूँछ राखी चाँपि रिसानि काली कांपि देखे सब सांपि ओसान भूले । पूँछ लीन्हों झटकि धरनिसों गहि पटकि फूं कह्यो लटकि करि क्रोध फूले ॥ करत फनवात विषजात अतुरात अति नीर जरिजात नहिं गात परसे ।

T

सूरके प्रभु श्याम लोकाभिराम बिन जानि अहिराज विषज्वाल परसै ॥ ७३ ॥
॥ राग नट॥इनको लै ब्रजलोग दिखाऊं। कमल भार इनहींपै लादौं इनको आपु जनाऊं ॥ मात पिता अतिही दुख पावत दरशन दै मन हरप कराऊं। कमल पठाइ देउँ नृपराजहि कालि कह्यो ब्रजऊपर धाऊं॥मन मन करत विचार श्याम यह अब कालीको दाँव दिखाऊं। सूरदास प्रभुकी यह वाणी ब्रजवासिनको दुख बिसराऊं॥ ७४ ॥ राग कान्हरो॥ उरगनारि सब कहत परस्पर देखहु या बालककी बात। विषज्वाला जलं जरत यमुनको याके तन लागत नहिं तात ॥ यह कछु यंत्र मंत्र है जानत अतिही सुंदर कोमलगात । यह अहिराज महाविषज्वाला कितने करत सहसफन घात॥छुअत नहीं तनु याको विप कहुँ अबलौं बच्यो पुण्य पितु मात। सूर श्याम सों दाँव बतायो कालीअंग लपेटत जात॥७५॥राग बिलावल॥ उरग लियो हरिको लपटाइ। गर्व वचन कहि कहि मुख भाषत मोकों नाहिं जानत अहिराइ ॥ लियो लपेटि चरणते शिखलौं अति यहि मोसों करी ढिठाई। चांपी पूंछ लुकावत अपनी युवतिनको नहिं सकत दिखाई ॥ प्रभु अंतर्यामी सब जानत अब डारों यह सकुच मिटाइ॥सूरदास प्रभु तनु विस्तारचो काली बिकल भयो तब जाइ॥७६॥राग कान्हरो॥ जबहिं श्याम तनु अति विस्तारचौ। पट पटात टूटत अँग जान्यो शरण शरण अहिराज पुकारचो॥ यह वाणी सुनतहि करुणामय तबहि गए सकुचाई॥इहै वचन सुनि द्रुपदसुता मुख दीन्हों बसन बढ़ाई॥ इहै वचन गजराज सुनायो गरुड छांडि तहां धाये॥यहै वचन सुनि लाखागृहमें पांडव जरत बचाये॥ यह वाणी सहिजात न प्रभुसों ऐसे परमकृपाल॥सूरदास प्रभु अंगसकोरचो व्याकुल देख्यो व्याल॥ ॥ ७७ ॥ राग गौरी॥ नाथत व्याल विलंब न कीन्हों। पगसों चांपि घींच बल तोरचो फोरि नाक करसों गहि लीन्हों॥ कूदिचढे ताके माथेपर काली करत बिचार। श्रवणन सुनी रही यह बाणी ब्रजह्वै है अवतार ॥ तेइ अवतरे आइ गोकुल में मैं जानी यह बात। अस्तुति करन लग्यो सहसौंफन धन्य धन्य जगतात ॥ बार बार कहि शरण पुकारचो राखि राखि गोपाल। सूरदास प्रभु कहत सकुचि गए शरण कहत तब व्याल ॥ ७८ ॥ राग बिलावल॥ देखि दरश मन हरष भयो। पूरण ब्रह्म सनातन तुमहीं ब्रज कृष्णा अवतार लयो॥श्रीमुख कह्यो अजौं लौं तुम नहिं जानो ब्रह्म अवतार। और कौन जो तुमसो बाँचे सहसफननिकी झार ॥ अनजानत अपराध किये बहु राखि शरण मोहिं लेहु। सूरदास प्रभु धनि मेरे फन चरण कमल जहां देहु॥७९॥राग गौरी॥ अब कीन्हों प्रभु मोहिं सनाथ। कोटि कोटि कीटहु सम नाहीं दरशन दिये जगतके नाथ ॥ अशरन शरन कहावतहौ तुम कहत सुनी भक्तनि मुखबात। ये अपराध क्षमा सब कीजै धृग मेरी बुधि कहत डरात ॥ दीनवचन सुनि कालीमुखते चरण धरे फन फन प्रति आप। सूर श्याम देख्यो अहि व्याकुल सुख दीनो मेटे त्रय ताप ॥ ५८० ॥ यशुमति टेरति कुँवर कन्हैया। आगे देखि कहति बलरामहिं कहां रह्यो तुमभैया॥ मेरे भैया आवत अबहीं तोहि दिखाऊं मैया । धीरज करहु नेक तुम देखहु यह सुनि लेति बलैया ॥ पुनि यह कहति मोहिं परबोधत धरणि गिरी मुरझैया। सूर विना सुत भइ अति व्याकुल मेरो बाल नन्हैया॥८१॥राग सारंग॥भरोसो कान्हको है मोहिं। सुन यशुदा कालीके भयते तू जिनि व्याकुल होहि॥पहिले पूतना कपटकै आई स्तननिविषया पोहि। वह वैसी ज्यों प्रबल द्वै दिनके बालक मारि दिखावत तोहिं ॥ अघा बका धेनुक तृणावर्त केसीको बल देख्यो जोहि। सात दिवस गोवर्धन राख्यो इंद्र गयो द्रपु छोहि ॥ सुनि सुनि कथा नंदनंदनकी मन आयो अवरोहि । सूरदास प्रभु जो कहिये कछु सो आवै सब सोहि ॥ ८२ ॥ राग सारंग॥यमुना तोहि बह्यो क्यों भावै। तोमें कृष्णहेलुवा

खेले सो सुरत्यो नाहिं आवै ॥ तेरे नीर शुची जल जो हैं खार पनार कहावै । हरि वियोग कोउ पाँउ न देहै को तट बेणु बजावै ॥ भरि भादौं जो राति अष्टमी सो दिन क्यों न जनावै । सूरदास के ऐसे ठाकुर कमलफूल लै आवै ॥ ८३ ॥ ब्रजवासी सब भए बिहाल । कान्ह कान्ह कहि कहि टेरतहैं व्याकुल गोपी ग्वाल ॥ अव को बसै जाइ ब्रज हरि बिनु धृगजीवन नर नारी । तुमबिनु यह गतिभई सबनिकी कहां गए बनवारी ॥ प्रातहिंते जल भीतर पैठे होन लग्यो युगयाम । कमल लिये सूरज प्रभु आवत सबसों कहि बलराम ॥ ८४ ॥ राग नट ॥ आवत उरग नाथे श्याम । नंद यशोदा गोपी गोपनि कहतहै बलराम ॥ मोर मुकुट विशाल लोचन श्रवन कुंडल लोल । कटि पीतांबर भेप नटवर निर्तत फन प्रति डोल ॥ देव दिवि दुंदुभि बजावत सुमन गन बरषाइ । सूरश्याम बिलोकि ब्रजजन मात पिता सुख पाइ ॥ ८५ ॥ राग नट ॥ मात पिता मन हरष बढ़ायो । मोर मुकुट पीतांबर काछे देख्यो अतिहि निकट जब आयो॥देव व्योम दुंदुभी बजावत गावत फनपर निर्तत श्याम। ब्रजवासी सब मरत जिवाए हरपि उठीं सब बाम ॥ शोक सिंधु बहिगयो तुरतही सुखको सिंधु बढायो । सूरदास प्रभु कंसनिकंदन कमल उरग पर ल्यायो ॥ ८६ ॥ राग कान्हरो ॥ फन फन प्रति निर्तत नँदनंदन । जल भीतर युगयाम रहे कहुँ मिट्यो नहीं तनु चंदन ॥ उहै काछनी कटिपीतांबर शीश मुकुट अति सोहत।मनो गिरि ऊपर मोर अनंदित देखत ब्रजजन मोहत॥अमर थके अमर ललना सँग जयजयध्वनि तिहुँलोक।सूरश्याम काली पर निर्तत आवत ब्रजकी बोक॥८७॥राग सोरठ॥ गोपालराइ निर्तत फन प्रति ऐसे । मनो गिरिवर पर बादर देखत मोर अनंदत जैसे॥डोलत मुकुट शीशपर हरिके कुंडल मंडित गंड।पीत वसन दामिनि तनुघनपर तापर सुर कोदंड॥उरगनारि आगे सब ठाढी मुख मुख अस्तुतिगावैं। सूर श्याम अपराध क्षमहु अब हम माँग्यो पति पावैं॥८८॥बहुत कृपा एहि करी गुसांई।इतनी कृपा करी नहिं काहू जितने लिये राखि शरनाई॥कृपाकरी प्रह्लाद भक्तको द्रुपदसुता पति राखी । ग्राह मुखते गजराज छुडायो वेद पुराणन भाषी ॥जो कछु कृपा करी कालीको सो काहू नहिं कीन्हों । कोटि ब्रह्मांड रोमप्रति अंगनि ते पग फन प्रति दीन्हों ॥ धरणि शीशधरि शेप गर्व करि भार अधिक संभारयो । पूरण कृपा करी सूरजप्रभु पग फन फन प्रतिधारयो ॥८९॥राग सोरठ॥ ठाढे देखतहैं ब्रजवासी । कर जोरे अहिनारि विनयकरैं कहत धन्य अविनासी ॥ जे पद कमल रमा उर राखति परसि सुरसरी आई । जे पद कमल शंभुकी संपति फन प्रति धरे कन्हाई ॥ जे पद परसि शिलाउद्धारी पांडवगृह फिरि आए । जे पद कमल भजन महिमाते जनप्रहलाद बँचाए ॥ जे पद ब्रज युवतिन सुखदायक तिहूँ भुवन धरे बावन । सूर श्याम ते पद फन फन प्रति निर्तत अहि कियो पावन ॥ ५९० ॥ ऐसी कृपा करी नाहिं काहू । खंभ प्रगटि प्रह्लाद बचायो ऐसी कृपा न ताहू ॥ ऐसी कृपा करी नहिं गजको पाइँ पायदे धाए । ऐसी कृपा तबहुँ नहिं कीन्हीं नृप बंदते छुडाए ॥ ऐसी कृपा करी नहिं तब तिय नगनसमय पति राखी । ऐसी कृपा करी नहिं भीषम परतिज्ञा सतभाषी ॥ पूरण कृपानंद यशुमतिको सो पूरण एहि पायो । सूरदास प्रभु धन्य कंस जिन तुमसों कमल मँगायो ॥९१॥ राग कान्हरो॥ सुनहु कृपानिधि जैसी कृपा तुम या काली पै कीन्हो । इती बडाई कबहुँ न कैसो नाहिं काहूको दीन्हों ॥ जिन पदकमल सुकृत जलपरस्यो अजहुँ धरे शिवशीश।ते पद प्रगट धरे फन फन प्रति धन्य कृपा जगदीश ॥ एक अंडको भार बहतहै गर्व धरयो जिय शेप । येही भार अधिक सह्यो अपने शिर अमित अंडमय भेप ॥ सुर नर असुर कीट पशु पंछी सब सेवक प्रभु तेरे। सूर श्याम अपराध क्षमहु अब या अपने

T

जनकेरे ॥ ९२ ॥ चरणकमलबंदौं जगदीश जे गोधनके संग धाए । जे पदकमल धूरि लपटानो कर गहिकै गोपी उर लाए ॥ जे पदकमल युधिष्ठिर पूजे राजसूय पै चलिआए । जे पदकमल पितामह भीषम भारत मैं देखनपाये ॥ जे पदकमल शंभु चतुरानन हृदयकमल अंतर राखे । जे पदकमल रमाउर भूषण वेद भागवत मुनि भाखे । जे पदकमल लोकपावन त्रय बलिराजाके पीठ धरे ॥ ते पद कमल सूरके स्वामी कालीफनपर निर्त करे ॥ ९३ ॥ गिरिधर ब्रजधर मुरलीधर धरनीधर पीतांबर धर मुकुट धर गोप धर उरगधर । शंखधर सारंगधर चक्रधर गदाधर रस धरे अधर सुधाधर ॥ कंबुकंठधर कौस्तुभमणिधर बनमाला धर कालीफनप्रति चरणधर । सूरदासके प्रभु जगतधर भक्तधर दुष्टकंसकेश धर ॥ ९४ ॥ गरुड त्रासते जो ह्यां आयो।तौ प्रभु चरण कमल फन फन प्रति अपने शीश धरायो ॥ धनि ऋषि शाप दियो खंग पतिकों ह्यां तब रह्यो छपाइ । प्रभुवाहन डर भाजि बँच्यो अहि नातर लेतो खाइ ॥ यह सुनि कृपा करी नँदनंदन चरणचिह्न प्रगटाए । सूरदास प्रभु अभय ताहि करि उरग द्वीप पहुँचाए ॥ ९५ ॥ अतिबल करि करि काली हारचो । लपट गयो सब अंग अंग प्रति निर्विष कियो सकल अल झारचो ॥ निर्तत पद पटकत फन फन प्रति बमत रुधिर नहिं जात सँभारचो । अति बलहीन छीन भए तेहिछन देखियतहै ज्वाला समडारचो ॥ तियविनती करुणा उपजी जिय राख्यो श्याम नहीं तेहि मारचो । सूरदास प्रभु प्राणदान कियो पठयो सिंधु वहांते टारचो ॥ ९६ ॥ खेलत खेलत जाइ कदम चढि झप यमुनाजल लीनो । सोवत काली जाइ जगायो फिरि भारत हरि कीनो ॥ उठि युवती करजोरि विनति करि श्याम दान हम दीजै । टूटत फनफाटत तनु देही दुहुँ दिशि कान्ह निहोरो लीजै ॥ तव अहि छाँडि दियो करुणामय मोहन मदन मुरारी । सागरवास दियो कालीको सूरदास बलिहारी॥९७॥राग कल्याण॥जय जय ध्वनि अमरन नभ कीन्हों।धन्य धन्य जगदीश गुसाईं अपनो करि अहि लीन्हों ॥ अभय कियो फन चिह्न चरण धरि जानि आपनो दास । जलते काढ़ि कृपाकरि पठयो मेटि गरुड़को त्रास ॥ अस्तुति करत अमरगण बहुरे गए आपने लोक । सूर श्याम मिलि मात पिताको दूरिकियो तनुशोक ॥९८॥राग कान्हरो ॥लीन्हों जननी कंठ लगाइ।अंग पुलकित रोम गदगद सुखद अंशु बहाइ ॥ मैं तुमहिं बरजति रहौं हरि यमुनतट जिनि जाइ।कह्यो मेरो कियो कान्ह नहिं गये खेलन धाइ ॥ कंस कमल मँगाइ पठए तात गएउ डराइ । मैं कह्यो निशिस्वप्नतोसों प्रगट भई सो आइ ॥ ग्वालसँग मिलि गेंद खेलत आए यमुनातीर।काहू लै मोहिं डारि दीन्हों कालिया दह नीर॥ यह कही तब उरग मोसों किनि पठायो तोहिं। मैं कही नृपकंस पठयो कमलकारण मोहिं ॥ यह सुनत डर कमल दीन्हों मोहिं लियो पीठ चढाइ । सूर यह कहि जननि वोधी देखो तुमही आइ ॥ ९९ ॥ राग गौरी ॥ व्रजवासिनसों कहत कन्हाई । यमुनातीर आजु सुख कीजै यह मेरे मन आई ॥ गोपन सुनि अति हर्ष बढायो सुखपायो नँदराई । घर घरते पकवान मँगायो ग्वालन दिये पठाई ॥ दधि माखन पटरसके भोजन तुरतहि ल्याए जाई । मात पिता गोपी ग्वालनको सूरज प्रभु सुखदाई ॥६००॥ तुरत कमल अब देहु पठाइ । सुनहु तात अब बिलम न कीजै कंसचढै व्रज ऊपर आइ ॥ कमल मँगाइ लिये तट ऊपर कोटि कमल तब दिये पठाइ । बहुत विनय करि पाती पठई नृप लीजै सब पुहुप गनाइ ॥ तैसी मोकों आज्ञा दीजै बहुत धरे जल मांझ सजाइ । सूरदास नृप तुव प्रतापते काली आप गयो पहुँचाइ ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥ सहस शकट भरि कमल चलाए । अपनी समसरि और गोप जे तिनको साथ पठाए ॥ और बहुत कांवरि माखन

दधि अहिरनकांधे जोरी। बहुत बिनती मेरी कहियो और धरे जल जामल तोरी॥ नृपके हाथ पत्र यह दीजो श्याम कमल लै आयो। कोटिकमल आपुन नृप मांगे तीनि कोटिहै पायो॥ नृपति हमहिं अपनो करि जानों तुम लायक हम नाहीं। सूरदास कहियो नृप आगे तुमहिं छोंडि कहां जाहीं॥२॥ राग गंड॥ कमलके भार दधिभार माखनभार लिये सबग्वार नृपद्वार आए। तुरतही टारि गनिकारि शकटनिजोरि भये ठाढे पौरि तब सुनाए॥ सुनत यह बात अतुरात औ डरात महलते निकसि नृप आपु आए। देखि दरबार सब ग्वार नहिं कहूंपार कमलके भार शकटनि सजाए॥ अतिही चकृत भयो ज्ञान हरि हरि लयो सोच मनमें ठयो कहा कीन्हों। गोप शिरमोर नृप ओर करजोरिकै पुहुपके काज प्रभु पत्र दीन्हों॥ यह कह्यो नंद नृप वंद अहि इंद्रपै गयो मेरो नंदन तुव नाम लीन्हों। उठयो अकुलाइ डरपाइ तुरतहि धाइ गयो पहुँचाइ तट आइ दीन्हों॥ यह कह्यो श्याम बलराम लीजो नाम राजको काम यह हमहिं कीन्हों। और सब गोप आवत जात नृप बात कहत सूर मोहिं नहीं चीन्हों॥३॥ राग बिलावल॥ ग्वालन हरिकी बात चलाई। यह सुनि कंस गयो अकुलाई॥ तब मनही मन करत बिचार। यह कोउ भयो नहीं अवतार॥ यासों मेरो नहीं उबार। मोहिं मारत मारै परिवार॥ दैत्यगए ते बहुरि न आए। कालीते ये क्यों बचि आए॥ ताही पर धरि कमल लदाए। सहस शकट भरि ग्याल पठाए॥ एक ग्याल मैं उनहिं बताए। कोटि ग्याल मम सदन चलाए॥ ग्वालन देखि मनहिं रिस कांपै। पुनि मनमें यह अटकर नापै॥ आपहि आप नृपहिं तनु त्याग्यो। सूर देखि कमलन उठि भाग्यो॥ ॥४॥ राग नट॥ भीतर लए गोप बुलाइ। हृदय दुख मुख हलभली करि ब्रजहि दिए पठाइ॥ नंदको शिरोपाव दीन्हों गोप सब पहिराइ। यह कह्यो बलराम श्यामहिं देखिहौं दोउ भाइ॥ अतिहिं पुरुषारथ करे उन कमल उनहिं ल्याइ। सूरप्रभुको देखिहौं मैं एक दिवस बुलाइ॥५॥ कमल शकटनि भरे ग्याल मानो। श्यामके वचन सुनि मनहि मन रह्यो गुनि काठ ज्यों गयो धुनि तन भुलानो॥ भयो बेहाल नँदलालके ख्याल यह उरगते बांचि फिरि ब्रजहि आयो। कह्यो दावानलहि देखौं तेरे बलहि भस्मकरि ब्रजप्रलहि कहि पठायो॥ चल्यो रिसपाइ अतुराइ तब धाइके ब्रजलोग वनसहित मैं जारि आऊं। नृपतिके ले पान मन कियो अभिमान करत अनुमान चहुँपास धाऊँ॥ वृंदावन आदि ब्रजआदि गोकुल आदि आदि बुन्यादि सब अहिर जारौं। चल्यो मगजात कहि बात इतरात अति सूरप्रभु सहित संहारि डारौं॥६॥ राग गुंड मलार॥ कमल पहुँचाइ सब गोप आए।गए यमुनातीर भई अतिहीभीर देखि नंद तीर तुरतही बोलाए॥ दियो शिरोपाव नृपराउने महरको आप पहरावनी सब दिखाए। अतिहि सुखपाइकै लियो शिरनाइकै हरप नंदराइकै मन बढाए॥ श्याम बलरामको नाम जब हम लियो सुनत सुखकियो उन कमल ल्याइ। सूर नंदसुवन दोऊ एक दिवस देखिहौं पुहुप लिए सुख पाए इनि बोलाए॥७॥ राग धनाश्री॥ यह सुनि नंद बहुत सुख पाये। कमल पठाइ दये नृपलीन्हे देखनको दुहुँ सुतन बुलाये॥सेवा बहुत मानि है लीन्हीं ब्रजनारिन मन हरप बढाये। बडीबात भई कमल पठाए आनहु आपुन जलते ल्याये॥ आनँद करत यमुना तट ब्रजजन खेलत खातहि दिवस बिहाए। एकं सुख श्याम बचे कालीते. यकसुख कंसहि कमल चलाए॥ हँसत कान्ह बलराम सुनत यह हमको देखन नृपति मँगाए। सूरदास प्रभु मात पिता हित कमल कोटिदै ब्रजहि बचाए॥८॥ अथ कालीलीला दूसरी। राग धनाश्री॥ नारद कही समुझाइ कंस नृपराजको। तब पठयो ब्रज दूत पुहुप एक काजको॥१॥ तब पठयो ब्रजदूत

सुनी नारद मुखबानी । बार बार ऋषिराज कंस मुख अस्तुति गानी ॥ धन्य धन्य मुनिराज तुम भलो मंत्र दियो मोहि । दूत चलायो तुरतही अबहिं जाहि ब्रज जोहि ॥ २ ॥ इह कहियो तू जाइ कमल नृप कोटि मँगायो । पत्र दियो लिखि हाथ कह्यो बहुभांति जनायो ॥ कालि कमल नहिं आवई तौ तुमको नहिं चैन । शिरनवाइ करजोरिकै चल्यो दूत सुनि बैन ॥३॥ तुरत पठायो दूत नंद घरही में आयो । कमल फूलके भार कंसनृप वेगि मँगायो ॥ कालिह न पहुँचैं आइकै तब बसियो ब्रजलोग । गोकुलमें जे सुखकिये ते करि देहौं सोग ॥ ४ ॥ जो न पठावहु पुहुप कहौगे तैसी मोको । यह जानहु गोपन समेत धरिल्याऊंतोको॥बल मोहन तेरे दोउनको पकरि मँगाऊँ कालि। पुहुप वेगि पठए वनै जोरे बसौ ब्रजपालि ॥५॥ यह सुनि नंद डराय अतिहि मन मन अकुलानो । यह कारज क्यों होइ काल अपनो करिजानो ॥ और महर सब बोलिलै कैसी करैं उपाइ । कालि प्रात ब्रज मारिहै बांधि सबनि लैजाइ ॥६॥बल मोहनको नाउँ धरयो कहि पकरि मँगावन । जाते अति भयो सोच लगत सुनि मोहिं डरावन ॥ यह सुनि शिरनाये सबन सुखहि न आवैबात। बार बार नंद कहतहैं यह लरिकन परघात ॥ ७ ॥ की बालकनि भगाइ जाहिलै आन देपर । वरु हमको लैजाइ श्याम बलराम बचै घर ॥ महरि सबै ब्रजनारिसों कहि पूछत कौन उपाउ । जनमहिते करवरटरी अवके नहीं बचाउ ॥ ८ ॥ कोउ कहै देहैं दाम नृपति जितनो धन चाहै । कोउ कहै जैये शरन सबै मिलि बुधि अवगाहै ॥ यही सोच सब पगिरहे कहूँ नहीं निरबार । ब्रज भीतर नंदभवनमें घर घर इहै विचार ॥ ९ ॥ अंतर्यामी जानि नंदसों बूझत बात । कहा करतहो सोच कहौ कछु मोसों तात ॥ कहा कहौं मेरे लाडिले कहत बडो संताप । मथुरापतिके जी कछू तुमपर उपज्यो पाप ॥ ६१० ॥ कालीदहके पुहुप मांगि पठये हमसों उनि । तबते मोजिय सोच जबहिं ते बात बरी सुनि ॥ जो नाहिं पठवहुँ कालिही तौ गोकुल देउँ लगाइ । मो समेत दोउ बंधु तुम कालिहि लेइ बँधाइ ॥ ११ ॥ यह कहि पठयो कंस तबहिं ते सोच परयो मोहिं । प्रथम पूतना आइ बहुत दुख दये जो गई तोहिं ॥ तृणावर्तके घात ते बहुत बच्यो दुखपाइ । शकटा केशीते बच्यो अब को करै सहाइ ॥ १२ ॥ अघा उदरते बच्यो बहुत दुख सह्यो कन्हाई । बकारह्यो मुखबाइ तहां भयो धर्म सहाई ॥ इतने करवर हैं टरे देवनकिये सहाइ । तबते अब गाढीपरी मोको कछु न सुहाइ ॥ १३ ॥ बाबा तुमहीं कहत कौन धौं तोहिं उबारै । सोइ ब्रजदेवता प्रगट कंसगहि केश पछारै ॥ यह जबहीं हरिसों सुनी नंदमनहि पतिआइ । गगन गिरत जो संगरह्यो सो करि लेइ सहाइ ॥ १४ ॥ नंदहि यह सुमुझाइ कान्ह उठि खेलन धाए। जहां ब्रज बालक बहुत तुरत तहां आपुन आए ॥ गोपसुतनिसों यह कह्यो खेलैं गेंद मँगाइ । श्रीदामा इहं सुनतही घरते लाये जाइ ॥ १५ ॥ सखा परस्पर मारकरैं कोउ कानि न मानै । कौन बडो को छोट भेद भेदा नहिं जानै ॥ खेलत यमुना तट गए आपुहि ल्याए टारि । श्रीदामाके हाथते लै गेंद दयो दहडारि ॥ १६ ॥ श्रीदामा गहि फेंट कह्यो हम तुम एक जोटा । कहा भये जो नंद बडे तुम तिनके ढोटा॥खेलतमें कहा छोट बड हमहुं महरके पूत । गेंद दियेही पै बनै छांडिदेहु मद धूत॥ ॥ १७॥ तुमसों धूत्यो कहां करौं धूत्यो नहिं देख्यो । प्रथम पूतना मारि काग शकटासुर पेख्यो ॥ तृणावर्त पटक्यो शिला अघा बका संहारि । तुम तादिन संगही रहे अब धूतन कहत सँभारि ॥ ॥ १८ ॥ टेढे कहा बतात कंसको कमल देहु अब । कालिहि पठएमाँगि पुहुप अब लै देहौ जब ॥ बहुत अचगरी जिनकरौ अजहूं तजौ झवारि । पकरि कंस लैजाइगो कालिहि परै सँभारि ॥ १९ ॥

कमल पठाऊँ कोटि कंसको दोष निवारौं । तुम देखत पुनि जाउँ कंस जीवत धरिमारौं ॥ फेट लियो तब झटकिकै चढे कदम पर आइ । सखा हँसत ठाढे सबै मोहन गए पराइ ॥ ६२० ॥ श्रीदामा चले रोइ जाइ कैहौं नंद आगे । गेंद लेहु तुम आइ मोहिं डरपावन लागे ॥ यह कहि कूद सलिल कीन्हे नटवर साज । कोमलतनु धरिकै गए जहाँ सोवत अहिराज ॥२१॥ यहि अंतर नंदघरानि कह्यौ हरि भूखे ह्वैहैं । खेलत ते अब आइ भूखकहि मोहिं सुनैहैं ॥ अतिआतुर भीतर चलि जेंवन कारन आप । छीक सुनत कुशगुण कह्यो कहा भयो यह पाप ॥२२॥ अजिर चली पछितात छींकको दोष निवारण । मंजारी गई काटि तबहिं निकसतही वारण ॥ जननी जिय व्याकुल भई कान्ह अबेर लगाई । कुशगुण आजु बहुत भए कुशल रहैं दोउ भाई ॥ २३ ॥ श्याम परे दह कूदि मात जिय गयो जनाई । आतुर आए नंद घरहि बूझत दोउ भाई॥ नंदघरनिसों यह कहत मोको लगत उदास । एहि अंतर हरि कहाँ गए जहाँ कालीको वास ॥ २४ ॥ देख्यो पन्नग जाइ अतिहि निर्भय भयो सोवत । बैठि तहाँ अहिनारि डरी बालकको जोवत ॥ भागि भागि सुत कौनको अतिकोमल तेरो गात । एक फूकको नहीं तू विषज्वाला अति तात ॥२५॥ तब हरि कह्यो प्रचारि नारि पति देइ जगाइ । आयो देखन याहि कंस मोहिं दियो पठाइ ॥ कंसकोटि जरि जाहिंगे विषकी एक फुकार । कहा करै मेरी जाहि तू अति बालक सुकुमार ॥ २६ ॥ यहि अंतर सब सखा जाइ व्रजनंद सुनायो । हमसँग खेलत श्याम जाय जलमाँझ धसायो ॥ बूडि गयो उबरयो नहीं ताबातहिं बडि बेर । कूदि परयौ चढि कदमते खबरि न करी सबेर ॥ २७ ॥ त्राहि त्राहि करि नंद सुनत दौरे यमुना तट । यशुमति सुनि यह बात चली रोवत तोरति लट ॥ व्रजवासी नर नारि सब गिरत परत चले धाइ । बूझ्यो कान्ह सबनि सुनी अति व्याकुल मुरझाइ ॥ ॥ २८ ॥ जहँ तहँ परी पुकार कान्ह बिन भए उदासी । कौन काहिसों कहै अतिहि व्याकुल व्रजवासी ॥ नंद यशोदा अतिविकल परत यमुनमें धाइ । और गोप उपनंद मिलि बांह पकरि लै आइ ॥ २९ ॥ धेनु फिरत बिललात बच्छथन कोउ न लगावै । नंद यशोदा कहत कान्ह बिन कौन चरावै ॥ यह सुनि व्रजवासी सबै परे धरणि अकुलाइ । हाइ हाइ करि कहत सब कान्ह रह्यो कहां जाइ ॥६३०॥ नंदपुकारत रोइ बुढापा मोको छायो। कछु दिन मोह लगाइ जाइ जल भीतर मायो ॥ यह कहिकै धरणी गिरत जनु तरु काटि गिराइ । नंदघरनि तब देखकै कान्हहि टेरि बुलाइ ॥ ३१ ॥ निठुरभए सुत आजु तातकी छोह न आवति । यह कहिकै अकुलाइ जलहि भीतर को धावति ॥ परत धाइ यमुना सलिल गहिं आनति व्रजनारि । नेकरहौ सब मरहिंगी कोहै जीवनहारि ॥ ३२ ॥ श्याम गयो जल बूडि वृथा जगजीवन गनको । शिरफोरति गिरिजाति अभूषण तोरति अँगको ॥ मुरछि परी तनु सुधिगई प्राण रह्यो कहुँ जाइ । हलधर आए धाइकै जननि गई मुरछाइ ॥ ३३ ॥ नाकमूंदि जल सींचि जननि जननी कहि टेरचौ । बार बार झकझोरि नेक हलधर तन हेरचौ ॥ कहत उठी बलरामसों बनहि तज्यो लघुभ्रात । कान्ह तुमहिं बिन रहत नहिं तुमसों क्यों रहिजात ॥ ॥ ३४ ॥ अब तुमहूं जिनि जाहु सखा यकदेहु पठाई । कान्हहि ल्यावै जाइ आजु अवसेर कराई ॥ छाक पठाऊं जोरिकै मगन सोक सरमांझ । प्रात कछू खायो नहीं भूंखे ह्वैगई सांझ ॥ ३५ ॥ कबहुं कहति बनगए कबहुँ कहि घरहि बतावति । कहां खेलतहौ लाल टेरि यह कहति बुलावति ॥ जागि परी दुख मोहते रोवत देखे लोग । तब जान्यो हरि दह गिरयो उपज्यो बहुरि बियोग॥३६॥ धृग धृग नंदहि कह्यो और कितने दिन जीहौ । मरत नहीं मो हिं मारि बहुरि व्रजबसिहौ कीहौ॥ ऐसे

दुखसों मरन सुख मन करि देखहु ज्ञान । व्याकुल धरणी गिरि परे नंदभए बिनप्रान ॥ ३७ ॥ हरिको अग्रजबंधु तुरतही पिता जगायो । माताको परबोधि दुहुँनि धीरज धरवायो ॥ मोहिं दोहाई नंदकी अबहीं आवत श्याम । नाथि नाग लै आइहैं तब कहियो बलराम ॥ ३८ ॥ हलधर कह्यो सुनाइ नंद यशुमति ब्रजवासी । वृथा मरत केहि काज मरै क्यों वह अविनाशी ॥ आदिपुरुष मैं कहतहौं गयो कमलके काज । गिरिधरको डर करतहौ वह देवन शिरताज ॥ ३९ ॥ वह अविनाशी आहि करौ धीरज अपने मन । काली छेदैं नाक लिये आवत नितंत फन॥ कंसहि कमलपठाइहै काली पठवैं द्वीप । एक घरी धीरज धरौ बैठो सब तरुनीप ॥ ६४० ॥ वहां नागिनिसों कहत श्याम अहि क्यों न जगावै । बालक बालक करति कहा पति क्यों न उठावै ॥ कहा कंस कहा उरग यह अबहिं दिखाऊं तोहिं । दै जगाइ मैं कहतहौं तू नाहिं जानति मोहिं ॥ ४१ ॥ छोटे मुँह बडी बात कहत अबहीं मरिजैहै । जो चितवै करि क्रोध अरे इतनहि जरि जैहै॥छोह लगति तोहिं देखि मोहिं काको बालक आहि। खगपतिसों सरवर करी तू बपुरो को आहि ॥ ४२ ॥ बपुरा मोसों कहति तोहिं बपुरी करिडारौं । एक लातसों चापि खसम तेरेको मारौं ॥ सोवत काहु न मारिए चलिआई यह बात । खगपतिको मैंहीं कियो कहति कहा तू बात ॥ ४३ ॥ तुमहिं विधाता भए और कर्त्ता कोउ नाहीं । अहि मारोगे आप तनकसे तनकसी बाहीं ॥ कहा करौं कहत न बनै अतिकोमल सुकुमार । देती अबहिं जगाइकै जरि बरि होतो छार ॥ ४४ ॥ तू धौं देहि जगाइ तोह दोषन कछु नाहीं । परी कहा तोहि द्वारि पाप अपने जरि जाहीं ॥ हमको बालक कहतिहै आप बडेकी नारि । बादति है बिनकाजही. वृथा बढ़ावति रारि ॥ ४५ ॥ तूहीन लेहि जगाइ बहुत जो करत ढिठाई । पुनि मरिहै पछिताइ मात पित तेरे भाई ॥ अजहूं कह्यो करि जाहि घर मरि लेहै सुख कौन । पांच वरषके सातको आगे तोको होन ॥ ४६ ॥ झिरकि नारि दै गारि आपु अहि जाय जगायो । पगसों चापी पूंछ सबै अवसान भुलायो ॥ चरण मसकि धरणी दली उरग गयो अकुलाइ । कालीमनमें तब कही यह आयो खगराइ ॥ ४७ ॥ देख्यो नयन उघारि तहां बालक इकठाढो । विषधर झटकी पूंछ फटकि सहसौफन काढो ॥ बार बार फनघातकै विषज्वालाकी झार । सहसौ फन फन फूंकरै नैक न तनहि लगार ॥ ४८ ॥ तब काली मन कहत पूंछ चांपी एहि पगसों । अतिहि उठो अकुलाइ डरयो बाहन हरि खगसों ॥ यह बालक धौं कौनको कीन्हों युद्ध अघाइ । दाँव घाव बहुतै कियो मरत नहीं यदुराइ ॥ ४९ ॥ पुनि देखै हरि ओर पूंछ चांपी इहि मेरी । मन मन करत बिचार लेउँ याको मैं घेरी ॥ दाउँ परयो अहि जानिकै लियो अंग लपटाइ । काली तब गर्वितभयो प्रभु दियो दाउ बताइ ॥ ६५०॥ कहति उरगकी नारि गर्व अतिही करि आयो । आ इत पहुँचो बाल कालवश पगहि चलायो ॥ अहिनारिनसों यह कही मोहिं सम सरि कोउ नाहिं । एक फूंक विष ज्वालके जल डोंगर जरिजाहिं ॥ ५१ ॥ गर्व वचन प्रभु सुनत तुरतही तनु विस्तारयो । हाइ हाइ करि उरग बार बारही पुकारयो ॥ शरन शरन अब मरतहौं मैं नहिं जान्यो तोहिं । चटचटात अँग फूटही राखु राखु प्रभु मोहिं ॥ ५२ ॥ श्रवन शरन ध्वनि सुनत लियो प्रभु तनु सकुचाइ । क्षमहु मोहि अपराध नजाने करी ढिठाइ ॥ ब्रज कृष्ण अवतारहो मैं जानी प्रभु आजु । बहुत किये फन घात मैं बदन दुरावत लाजु ॥ ५३ ॥ रह्यो जानि यहि ठौर गरुडको त्रास गोसाँई । बहुत कृपा मोहिं करी दरश दीन्हों जग साँई ॥ नाक फोरि फनपर चढे कृपाकरी सुरराइ ॥ फन फन प्रति प्रति चरण धरि नितंत हरप बढाइ ॥ ५४ ॥

धन्य कृष्ण धनि उरग जानि जा कृपा करी हरि । धन्य धन्य दिन आजु दरशते पाप गए जरि ॥ धन्य कंस धनि कमल ये धन्य कृष्ण अवतार । बडी कृपा उरगहि करी फनप्रति चरण विहार ॥५५॥ शेष करत जिय गर्व अंडको भार शीशधरि । ब्रह्म मुकुंद अनंत नाम को सकै पारकरि ॥ फन फन प्रति अति भार भरि अमित अंडमें गात । उरगनारि कर जोरिकै कहत कृष्णसों बात ॥ ५६ ॥ देखत व्रज नर नारि नंद यशुदा समेत सब । संकर्षणसों कहत सुनहु सुत कान्ह नहीं अब ॥ एहि अंतर जल कमल बिच उठो कछू अकुलाइ । रोवतते बरजे सबै मोहन अग्रज भाइ ॥ ५७ ॥ आवत हैं वे श्याम पुहुप काली शिरलीन्हें । मात पिता व्रज दुखित जानि हरि दरशन दीन्हें ॥ नितंत काली फननिपर देवदुंदुभी बजाइ । नटवर बपु काछे रहे सब देख्यो वह भाइ ॥५८॥ आवत देखे श्याम हरष कीन्हों व्रजवासी । शोकसिंधु बहिगयो सुखैको सिंधु प्रकाशी ॥ जलबूडंत नवका मिलै ज्यों तनु होत अनंद । त्यों व्रजजन हुलसे सबै आवतहैं नँदनंद ॥ ५९ ॥ सुत देखत पित मात रोम गदगद पुलकित भयो । उर उपज्यो आनंद प्रेमजल लोचन दुहुँ अयो ॥ देव दुंदुभी बजावहीं फन प्रति नितंत श्याम । व्रजवासी सब कहतहैं धन्य धन्य बलराम ॥ ६० ॥ उरगनारि कर जोरि करति अस्तुति सुख ठाढी। गोपीजन अवलोकि रूप वह अति रति बाढी ॥ सुरअंबर ललना सहित जय ध्वनि सुख सुख गाइ । बडी कृपा एहि उरगको ऐसी काहु न पाइ ॥ ६१ ॥ कृपा करी प्रह्लाद खंभ वै प्रगट भए तब । कृपा करी गजराज गरुड तजि धाइ गये जब ॥ द्रुपदसुताको करी कृपा वसन समुद्र बढाइ । नंदयशोदहि जो कृपा सोई कृपा एहि पाइ ॥६२॥ तब काली करजोरि कह्यो प्रभु गरुड त्रासहै मोहिं । अब करिहै ते दंडवत नैन भरि देखैंगे तोहिं ॥ चरण चिह्न दरशन करत गहि रहै तेरे पाइ। उरग द्वीपको करि बिदा कह्यो करो सुख जाइ ॥ ६३ ॥ प्रभु याने कियो कहा चरण जे फन फन परसे । रमा हृदय जे वसत सुरसरी शिव शिर हरसे ॥ जन्म जन्म पावन भयो फन पदचिह्न धराइ । पाँइ पर्‌यो उरगिनि सहित चल्यो द्वीप समुहाइ ॥ ६४ ॥ काली पठयो द्वीप सुरनि सुरलोक पठाए । आपुन आए निकसि कमल सब तटहि धराए ॥ जलते आए श्याम तब मिले सखा सब धाइ । मात पिता दोउ धाइकै लीनो कंठ लगाइ ॥ ६५ ॥ फेरि जन्म भयो कान्ह कहत लोचन भरि आए । जहां तहां व्रज गोपनारि आतुर ह्वै धाए ॥ अंकम भरि भरि मिलतहैं मनो निधनी धन पाइ । मिली धाइ रोहिणि जननि चूमति लेति बलाइ॥६६॥सखा दौरिकै मिले गये हरि हमपर रिसकरि । धनि माता धनि पिता धन्य सो दिन जेहि अवतरि ॥ तुम व्रजजीवनि प्राणहो यह सुनि हँसे गोपाल। कूदिपरे चढि कदमते तुम खेलत ए ख्याल ॥ ६७ ॥ काली ल्याए नाथि कमल ताही पर ल्याए । जैसी कहिगए श्याम प्रगट सो हमहिं दिखाए ॥ कंस मर्‌यो निश्चय भई हम जानी व्रजराज । सिंहिनिको छौना भलो कहा बडो गजराज ॥ ६८ ॥ हरि हलधर तब मिले हँसे मनही मन दोऊ । बंधुमिलत सब कहत भेद नहिं जानै कोऊ ॥ मात पिता व्रजलोगसों हरषि कह्यो नँदलाल । आजु रहौ बसि सब इहां मेटहु दुख जंजाल ॥ ६९ ॥ सुनि सबहिन सुख कियो आजु रहिए यमुनातट । शीतल सलिल सुगंध पवन सुख तरु बंसीवट ॥ नँदघरते मिष्टान्न बहु पटरस लिए मँगाइ । महर गोप उपनंद जे सबको दियो बँटाइ ॥६७०॥ दुख कीन्हों सब दूरि तुरत सुख दियो कन्हाई । हर्ष भयो व्रजलोग कंसको डर बिसराई ॥ कमलकाज व्रजमारतो कितने लेइ गनाई । नृप गजको अब डर कहां प्रगट्यो सिंह कन्हाई ॥ ७१ ॥ नंद कह्यो करि गर्व कंसको कमल पठावहु । और कमल जल धरहु कमल कोटिकदै आवहु ॥ यह कहियो मेरी कही कमल पठाये कोटि । कोटि द्वैक जलहा

धरे यह बिनती इक छोटि ॥ ७२ ॥ अपने सम जो गोप कमल तिन साथ चलाए । मन सबके आनंद कान्ह जलते बचि आए ॥ खेलत खात अन्हातही बासर गयो बिहाइ। सूर श्याम ब्रजलोगको जहां तहां सुखदाइ ॥ ७३ ॥ राग सोरठ ॥ तुम जाहु बालक छांडि यमुना स्वामिमेरो जागिहै। अंग कारो मुख विकारो दृष्टि परे तोहि लागिहै ॥ तुम केरि बालक युवा खेले केरि दौरत दूरियां । लेहु बालक हीरा पदारथ जागिहै मेरो स्वामियां ॥ ना मैं नागिन युवाकर खेले न वारे दुरत दुराइयां । कंसकारण गेंद खेले कमल कारण आइयां ॥ तब धाइ धायो जाइ जगायो मानौ छूटी हस्तियां । सहसफन फुंकार छांडे जाइ काली नाथियां ॥ जब कान्ह काली लेचले तब नागिन बिनवै देवहो । अबके चेरी अहिवात दीजै करहि तुमरे सेवहो ॥ तब लादि पंकज बाहिर काढ्यो भयो ब्रज मन भावना । मथुरानगरी कृष्णराजा सूर तिनहि बधावना ॥ ७४ ॥ राग देवगंधार ॥ काली विष गंजन दह आए । देखि मृतक बछ बालक सब लै कटाक्ष जिवाए ॥ बहु उतपात होत गोकुलमें सविता रह्यो भुलाइ । बडी बेरभई अजहुँ न आए गृहकृत कछु न सुहाइ ॥ नंदादिक सब गोप गोपि मिलि चले सकल बन धाई । दरशे जाइ उरग लपटानें प्राण तजत अकुलाई ॥ अतिगंभीर धीर निज जानत संकर्षनको भाइ । वश कियो नाग सूरदास प्रभु अतिआनँद न समाइ ॥ ॥ ७५ ॥ राग कान्हरो ॥ सबै ब्रजहै यमुनाके तीर । कालीनागके फनपर निर्तत संकर्षणको बीर॥लाग मान थेई थेई करि उघटत ताल मृदंग गँभीर । प्रेम मगन गावत गण गंधर्व व्योम विमानन धीर ॥ उरग नारि आगे भईं ठाढ़ी नैननि ढारति नीर । हमको दान देइ पति छाँड़हु सुंदर श्याम शरीर ॥ आए निकसि पहिरि मणि भूषण पीतवसन कटि चीर । सूर श्यामको भुजभरि भेंटत अंकमदेत अहीर ॥ ७६ ॥ सप्तदशोऽध्याय ॥ दावानलके पानकी लीला ॥ राग कान्हरो ॥दावानल ब्रजजनपर धायो।गोकुल ब्रज वृंदावन तृण द्रुम चाहतहै चहुँपास जरायो ॥ घेरत आवत दशहुँ दिशाते अति कीने तनुक्रोध । नरनारी सब देखि चकितभये दावा लग्यो चहुँ कोध ॥ बहुतौ असुर घात किये आवत धावत पवन समाजु । सूरदास ब्रजलोग कहत इह उठ्यो दवा अति आजु ॥७७॥ आइगई दव अतिहि निकटही। यह जानत अब ब्रज न बांचिहै कहत सबै चलिये जलतटही ॥ करि बिचार उठि चलन चहतहैं जो देखैं चहुँ पास।चकृत भए नर नारि जहाँ तहां भरि भरि लेंत उसाँस ॥ झरझरात भहरात लपट अति देखिअत नहीं उबार । देखत सूर अग्नि अधिकानी नभलौं पहुँची झार ॥ ७८ ॥ दशहुँदिशाते बरत दवानल आवतहै ब्रजजनपर धायो । ज्वालाउठी अकाश बराबरि घात आपने करि सब पायो ॥ बीरा लै आयो सनमुखते आदरकरि नृपकंस पठायो । जारि करौं परलय क्षणभीतर ब्रज बपुरो केतिक कहवायो ॥ धरणि अकाश भयो परिपूरण नेक नहीं कहुँ संधि बचायो । सूर श्याम बलरामहि मारन गर्व सहित आतुर ह्वै आयो ॥ ७९ ॥ ब्रजके लोग उठे अकुलाइ। ज्वाला देखि अकाश बराबरि दशहुँ दिशाकहुँ पारु न पाइ ॥ झरहरात बनपात गिरत तरु धरणी तराकि तडाकि सुनाइ। जल बरषत गिरिवर तर बाचे अब कैसे गिरि होतु सहाइ॥ लटकि जात जरिजरि द्रुम बेली पटकत बांस कांस कुशताल । उचटत फर अंगार गगनलौं सूर निरखि ब्रजजन बेहाल ॥ ६८० ॥ नंदघरनि यह कहति पुकारै । कोउ बरषत कोउ अगिनि जरावत दई परचोहै खोज हमारे ॥ तब गिरिवर कर धरचो कन्हैया अब न बांचिहै मारत जारे । जेंवन करन चली जब भीतर छींक परी तिय आजु सवारे॥ ताको फल तुरतहि यक पायो सो उबरचो भए धर्म सहारे। अब सबको संहार होतहै छींक किये यक काज बिचारे ॥ कैसेहु ए बालक दोउ उबरे पुनि पुनि

सोचति परी खँभारे। सूर श्याम यह कहत जननिसों रहि री माँ धीरज उरधारे॥८१॥ राग गौंड॥ भहरात झहरात दवानल आयो। घेरि चहुँ ओर करिशोर अंदोर बन धरणि आकाश चहुँपास छायो॥ बरत बन बाँस थरहरत कुश कांस जरि उडतहैं बांस अतिप्रबल धायो। झपटि झपटत लपट पटकि फूल फूटत फटि चटकि लट लटकि द्रुमन वायो॥ अति अगिनि झार भार धुंधार करि उचटि अंगार झंझार छायो। बरत बन पात भहरात झहरात अररातरु महा धरणी गिरायो॥ भए बेहाल सब ग्वाल ब्रजबाल तब शरन गोपाल कहिकै पुकारचो। तृणा केशी शकट बकी बका अघासुर वामकर गिरिराखि ज्यों उबारचो॥ नेक धीरज करो जियहि कोऊ जिनि डरो कहा यह सुरो लोचन मुदायो। मुठी भरि लियो सब नाइ मुखही दयो सूरप्रभु पियो दावाब्रजजन बचायो॥८२॥राग कान्हरो॥अबकै राखि लेउ गोपाल।दशहुँ दिशाते दुसह दवागिनि उपजीहै यहिकाल॥ पटकत बांस कास कुश चटकत लटकत ताल तमाल। उचटत अति अंगार फुटत फर झपटत लपट कराल॥ धूम धूँधि बाढी धर अंमर चमकत विच विच जाल। हरिण वराह मोर चातक पिक जरत जीव बेहाल॥ जिनि जिय डरहु नयन मूँदहु सब हँसिबोले गोपाल। सूर अनल सब वदन समानी अभयकरे ब्रजबाल॥८३॥राग गुंड॥ दावानल अचयो ब्रजराज ब्रजजन जरत बचायो। धरणि आकाशलौं ज्वाल माला प्रबल घेरि चहुँ पास ब्रजवास आयो॥ भये बेहाल सब देखि नंदलाल तब हँसतही ख्याल तत्काल कीन्हों। सबनि मूँदे नयन ताहि चितये सैन तृषा ज्यों नीर दव अचै लीन्हों॥लखो अब नैनभरि बुझिगई अग्निझरि चितै नर नारि आनंद भारी॥सूर प्रभु सुख दियो दवानल पीलियो कहत सब ग्वाल धनि धनि मुरारी॥८४॥राग विहागरो॥चकित देखि यह कहि नर नारी।धरणि अकास बराबरि ज्वाला झपटत लपट करारी॥नहिं वरष्यो नहिं छिरक्यो काहू कहुँ धौं गयो विलाइ।अति आघात करत वनभीतर कैसे गयो बुझाइ॥ तृणकी आगि बरतही बुझिगई हँसि हँसि कहत गुपाल॥सुनहु सूर वह करनि कहनि यह ऐसे प्रभुके ख्याल॥८५॥राग बिलावल॥जाके सदा सहाइ कन्हाई। ताहि कहो काको डर भाई॥ वन घर जहां तहां सँग डोलैं। खेलत खात सबनिसों बोलैं॥ जाको ध्यान न पावैं योगी। सो ब्रजमें माखनको भोगी॥ जाकी माया त्रिभुवन छावै। सो यशुमतिके प्रेम बधावै॥ मुनिजन जाको ध्यान न पावैं। ब्रजजन लैलै नाम बुलावैं॥ सूर ताहि सुर अंमर देखैं। जीवन जन्म ब्रजहिको लेखैं॥८६॥ राग कान्हरो॥ब्रजवनिता सब कहति परस्पर नंदमहरको सुत बड वीर। देखहु धौं पुरुषारथ इनको अति कोमल तनुश्याम शरीर॥ गयो पताल उरग गहि आन्यो ल्यायो तापर कमल लदाइ। कमलकाज नृप ब्रज मारतहो कोटि जलज तेहि दिये पठाइ॥ दावागिनि नभ धरणि बराबरि दशहू दिशते लीनो घेरि। नयन मुँदाइ कहा तेहि कीन्हों कहूं नहीं जो देखै हेरि॥ ए उत्पात मिटत इनहीपै कंस कहा बपुरोहै छार। सूर श्याम अवतार बडो ब्रज येईहैं करता संसार॥८७॥राग सोरठ॥ अति सुंदर नंद महर डिठोना। निरखि निरखि ब्रजनारि कहति सब ये जानत कछु टोना॥ कपटरूपकी त्रिया निपाती तबहिं रहे अतिछौना। द्वारशिलापर पटकि तृणाको ह्वैआयो अब पौना॥ अघा बकासुर तबहिं सँहारचो प्रथम कियो वन गौना। सूर प्रगट गिरि धरचो वामकर मैं जानति बलिबौना॥८८॥राग मारू॥दावते जरत ब्रजजन उबारे।पैठि जल गयो गहि उरग आन्यो नाथि प्रगट फन फननि प्रति चरण धारे॥ देखैं मुनि लोक सुरलोक शिवलोकके नंद यशुमति हेतु वश मुरारी। जहां तहां करत अस्तुति मुखनि देव नर धन्य शब्द तिहुँ जय भुवन धारी॥ सुखकियो यमुनतट एक वासर रैनि प्रातही ब्रज गये गोपनारी। सूरप्रभु श्याम बलराम नंद

धाम गयो मात पित ब्रजजनहि सुखदकारी ॥८९॥ राग रामकली॥ हरि ब्रज जनके दुख बिसरावन।कहा कंस करि कमल मँगाये कहा दवानल दावन॥जल कब गिरे उरग कब नाथ्यो नहिं जानत ब्रज लोग। कहां बसे यक रैनि दिवस भरि कबहिं भयो यह सोग॥यह जानत हम ऐसेहि ब्रजमें वैसहि करत बिहार। सूर श्याम जननीसों मांगत माखन बारंबार॥९०॥अष्टादश अध्याय॥प्रलंबवध॥भैरवी॥एक दिवस प्रलंब दानव को लीन्हों कंस बुलाई।कह्यो जाइ मारो नँदढोंटा देहौं बहुत बडाई।तेहि कहिकै आयो ब्रज भीतर करत बडो उतपात।नर नारी देखत सब डरपे कीन्हो हृदय संताप॥हरि ताको दै सैन बुलायो मोपै काहेन आवत। तब वह दोऊ हाथ उठाये आयो हरिदेखि धावत॥ हरि दोउ हाथ पकरिकै ताके दियो दूरि फटकारी। गिरो धरणि पर अति बिह्बल होइ रह्यो न देह सँभारी॥बहुरो उठ्यो सँभारि असुर वह धायो निज मुख बाई। देखि भयानक रूप असुरको सुर नर गए डराई॥चहुँघा फेरि असुर धरिपटक्यो शब्द उठ्यो आघात। चौंकि परचो कंसासुर सुनिकै भीतर चल्यो हहरात॥ पुहुप वृष्टि करि देवन मिलि आनंद मोद बढाइ।ब्रजजन नंद यशोदा हरषित सूर सुमंगल गाइ॥९१॥राग सारंग॥यशुमति बूझति फिरति गोपालहि। सांझ कि बिरियां भई सखीरी मैं डरपति जंजालहि॥जबते तृणावर्त ब्रज आयो तबते मोहिं जिय शंक। नैननि ओट होत पल एकौ मैं मन मरति अदंक॥इहि अंतर बालक सब आये नंदहि करत गुहारी। सूर श्यामको आइ कौन धौं लेगयो कांधे डारी॥ ९२॥ राग कान्हरो ॥आजु कन्हैया बहुत बच्यो री। खेलत रह्यो घोषके बाहर कोउ आयो शिशुरूपरच्यो री॥ मिलि गयो मनहि सखा की नाईं ले चढाइ हरि कंध सच्यो री। धर्म सहाय होतहै जहँतहँ श्रमकरि पूरब पुण्य बच्यो री॥ गगन उडाइ गयो ले श्यामहि आइ धरणि पर आपु दच्यो री। सूर श्याम अबकै बचिआये ब्रज घर घर सब सुखहि मच्यो री॥ ९३॥ बडे भाग्यहैं महर महरिकी। लै गयो पीठि चढाइ असुर इक कहा कहौं उबरनि या हरिकी॥ नंदघरनि कुलदेव मनावति तुमहि लाज सुत घरी पहरकी। जहाँ तहाँ तुमहि सहाय सदा हौ जीवनिहै यह श्याम शहरकी ॥ हरष भए नंद करत बधाई दानदेत कहा कहौं महरकी। पंच शब्द ध्वनि बाजत नाचत गावत मंगलचार चहरकी ॥ अंकम भरि भरि लेत श्यामको ब्रजनर नारि अतिहि मन हरषी। सूर श्याम संतन सुखदायक दुष्टनके उरशालक करषी॥ ९४॥ राग सारंग॥ खेलन दूरि जात कत प्यारे। जबते जन्म भयोहै तेरो तबहीते इहि भांति लला रे॥ कोउ आवति युवती मिस करिकै कोउ लैजात बतासकला रे। अबलगि बचे कृपा देवनकी बहुत गए मरि शत्रु तुम्हारे॥ हाहा करति पाँइ तेरे लागति अब जानि जाहु दूरि मेरे प्यारे। सुनहु सूर यशुमति सुत बोधति विधिके चरित सबै हैं न्यारे॥९५॥उन्नीसवां अध्याय॥ कल्याण कबकी टेरति कुँवर कन्हाई।बालसखा सब टेरत ठाढे अरु अग्रज बलभाई॥दाऊजू तुम ह्यां नहिं आवत करो सुखारी आई। माता दुहुँनि दतौनी करदै जलझारी भरि ल्याई॥ उत्तमविधिसों मुख पखरायो वोदे बसन अँगोछि। दोउ भैया कछु करौ कलेऊ लई बलाइ कर पोंछि॥ सद माखन दधि तुरत जमायो मधु मेवा मिष्टान। सूर श्याम बलराम संग मिलि रुचिकरि लागे खान॥ ९६॥ राग नट॥ चले वन धेनु चरावन कान्ह। गोपबालक कछु सयाने नंदके सुत नान्ह॥ हर्षसों यशुमति पठाए श्याम मन आनंद। गाइ गोसुत गोप बालक मध्य श्रीनँदनंद॥ सखा हरिको यह सिखावत छांडि जिनि कहुं जाहु॥ सघन वृंदावन अगम अति जाइ कहूँ भुलाहु॥ सूरके प्रभु हँसत मनमें सुनतही यह बात। मैं कहूं नहिं संग छाडौं बनहि बहुत डेरात॥ ९७॥ राग धनाश्री॥ हेरी देत चले सब बालक। आनँद सहित जात हरि खेलत संग मिले पशुपालक॥ कोउ गावत कोउ वेणु बजावत कोउ नाचत कोउ

धावत । किलकत कान्ह देखि यह कौतुक हरषि सखा उर लावत ॥ भली करी तुम मोको ल्याए मैया हरषि पठाए । गोधन वृंदलिये ब्रजबालक यमुनातट पहुँचाए ॥ चरति धेनु अपने अपने रँग अतिहि सघन बन चारो । सूर संग मिलि गाइ चरावत यशुमतिको सुत बारो ॥९८॥ देवगंधार॥ द्रुमचढि काहे न टेरौ कान्हा गइयां दूरिगईं । धाई जात सबनके आगे जे वृषभान दईं ॥ घेरे न घिरत तुम बिनु माधवजू मिलत नहीं बगदईं । बिडरत फिरत सकल बनमहियां एकइ एक भईं ॥ छाँडि खेल सब दूरि जातहैं बोलौ जो सके थोक कईं । सूरदास प्रभु प्रेम समुझिके मुरली सुनत सब आइ गईं ॥ ९९ ॥ राग मारू ॥ कहि कहि बोलत धौरी कारी । देखो धन्य भाग्य गाइनके प्रीतिकरत बनवारी ॥ मोटीभईं चरत वृंदावन नंदकुँवरकी पाली । काहेन दूध देहिं ब्रजपोषन हस्तकमलके लाली ॥ बैन श्रवण सुनि गोवर्धनते तृणदीन्हों धरि चाली । तबहीं बेगि आइ सूरको प्रभुपैते क्यों भजै जे पाली ॥७००॥ राग कल्याण ॥ जब सब गाइ भईं एक ठाईं।ग्वालन घरको घेरि चलाईं॥मारग में तब उपजी आग । दशहू दिशा जरत सब लाग ॥ ग्वाल डरपि हरि शरणै आये । सूर राखि अब त्रिभुवन राये॥१॥ राग गौरी ॥साँवरो मनमोहन माईदेख सखी बनते ब्रज आवत सुंदर नंदकुमार कन्हाई ॥ मोरपंख शिर मुकुट बिराजत सुखमुरली सुर सुभग सोहाइ । कुंडल लोल कपोलनिकी छबि मधुरी बोलनि बरणि न जाई ॥ लोचन ललित ललाट भ्रुकुटि बिच ताकि तिलककी रेख बनाई । मानौ मर्याद उलंघि अधिक बल उमँगिचली अति सुंदरताई ॥ कुंचितकेश सुदेश बदनपर मानौ मधुपनि माल फिरिआई । मंदमंद मुसुकात मनौ घन दामिनि दुरि दुरि देत दिखाई ॥ शोभित सूर निकट नासाके अनुपम अधरनिकी अरुनाई । मानौं शुक सुरंग बिलोकि बिंबफल चाखन कारन चोंच चलाई ॥ २ ॥ देखौ री नँदनंदन आवत । वृंदावनते धेनु वृंदमें बेनु अधर धरे गावत॥ तनु घनश्याम कमलदल लोचन अंग अंग छबि पावत । सुरभी कारी गोरी धूमरी धौरी लेले नाम बुलावत ॥ संग बाल गोपाल संग सब शोभित मिलि कर पत्र बजावत । सूरदास मुख निरखतही सुख गोपी प्रेम बढ़ावत ॥ ३ ॥ रजनीमुख बनते बने आवत भावत मंद गयंदकी लटकनि । बालकवृंद बिनोद हँसावत करतल लकुट धेनुकी हटकनि ॥ बिकसत गोपी मनो कुमुद सर रूप सुधा लोचन पुट घटकनि । पूरणकला उदित मनौ उडुपति तेहि छिन बिरहव्यथाकी चटकनि ॥ लज्जितमन्मथ निरखि बिमलछबि रसिकरंग मोहनकी मटकनि । मोहनलाल छबीलो गिरिधर सूरदास बलि नागर नटकनि ॥४॥ गौचारन॥ राग बिलावल ॥ जागिए गोपाललाल प्रगटभई हंसमाल मिटचो अंधकाल उठौ जननी मुख दिखाई । मुकुलित भए कमलजाल कुमुदवृंद बन बिहाल मेटहु जंजाल त्रिविध ताप तन नशाई ॥ ठाढे सब सखा द्वार कहत नंदके कुमार टेरतहैं बार बार आइये कन्हाई । गैयनि भई बडी बार भरिभरि पै थननि भार बछरागन करैं पुकार तुम बिनु यदुराई ॥ ताते यह अटकपरी दुहुँनकाज सौंह करी उठि आवहु क्या न हरी बोलत बलभाई । मुखते पट झटकि डारि चंद्रवदन दे उघारि यशुमति बलिहारि वारिजलोचन सुखदाई ॥ धेनुदुहन चले धाइ रोहिणी तब लै बुलाइ दोहनी मुहिं दे मँगाइ तबहीं ले आइ।बछरा थन दियो लगाइ दुहत बैठिके कन्हाइ हँसत नंदराइ तहां मात दोउ आई ॥ दोहनि कहुं दूधधार सिखवत नंद बार बार यह छबि नहिं बार पार नंद घर बधाई । तब हलधर कह्यो सुनाइ गाइन बन चलौ लिवाइ मेवा लीनो मँगाइ बिबिधरस मिठाई ॥ जेंवत बलराम श्याम संतनके सुखदधाम धेनुकाज नहिं बिश्राम यशुदाजल ल्याई । श्याम राम मुख पखारि ग्वालबाल लिये हँकारि यमुनातट मनविचारि गाइन हँकराई ॥ शृंग

वेणू नादकरत मुरली मुख अधर धरत जननी मनहरत ग्वाल गावत सुरसाई। वृंदावन तुरतजाइ धेनु चरति. तृण अघाइ श्याम हरषपाइ निरखि सूरज बलि जाई॥ ॥ ५॥ मुरलीस्तुति ॥ राग सारंग ॥ जब हरि मुरली अधर धरत। खग मोहे मृगयूथ भुलाने निरखि मदन छबि छरत। पशु मोहे सुरभीहु थकीं तृणदंतहि टेक रहत ॥ शुक सनकादि सकल मन मोहे ध्यानिउ ध्यान बहत। सूरजदास भाग्य हैं तिनके जो या सुखहि लहत ॥ ६ ॥ राग बिहागरो ॥ कहौं कहा अंगनकी सुधि बिसरि गई।श्याम अधर मृदु सुनत मुरलिका चकृत नारि भई ॥ जो जैसे सो तैसे रहिगई सुख दुख कह्यो न जाइ। लिखी चित्रसी सूर सो रहिगई एकटक पल बिसराइ ॥ ७ ॥ राग मलार ॥ सुनत वन मुरली ध्वनिकी बाजन। पपीहा गुंज कोकिल वन कुंजत अरु मोरनके गाजन॥यही शब्द सुनिअत गोकुलमें मोहन रूप विराजन। सूरदास प्रभु मिली राधिका अंग अंग करि साजन ॥ ८ ॥ राग मारू ॥ मेरे साँवरे जब मुरली अधर धरी। सुनि ध्वनि सिद्ध समाधि टरी॥ सुनि थके देव बिमान। सुरबधू चित्र समान ॥ गृह नक्षत्र तजत न रास। याहीवधे ध्वनिपास ॥ सुनि आनँद उमँगिभरे। जल थलके अंचल टरे॥ चराचर गति विपरीति। सुनि वेनु कल्पित गीति ॥ झरना झरत पाषान। गंधर्व मोहे कलगान॥ सुनि खग मृग मौन धरे। फल तृण सुधि बिसरे॥ सुनि धेनु अति थकित रहे।तृण दंतहु नहीं गहे॥ बछरा न पीवैं क्षीर। पंछी न मनमें धीर।द्रुम बेली चपल भए। सुनि पल्लव प्रगटि नए॥ जे विटप चंचल पात। ते निकटको अकुलात॥ अंकुलित जे पुलकित गात। अनुराग नैन चुचात॥ सुनि चंचल पवन थके।सरिताजल चलि न सके॥सुनि ध्वनि चलीं ब्रजनारि। सुत देह गेह बिसारि॥ सुनि थकित भयो समीर। उलटो बह्यो यमुनानीर॥ मनमोहन- मदनगोपाल। तनश्याम नयन विशाल॥ नव नील तनु घनश्याम। नव पीत पट अभिराम॥ नव मुकुट नव वनदाम। लावण्यता कोटिक काम॥मनमोहन रूप धरचो। तव कामको गर्व हरचो॥ मेरे मदन मोहन लाल। संग नागरी ब्रजबाल॥नवकुंज यमुनाकूल।देखत सूरदास जन फूल॥९॥ राग पूरबी ॥ तरु तमाल तरे त्रिभंगी तरुण कान्ह कुँवर ठाढेहैं साँवरे बरन। मोर मुकुट पीतांबर वनमाल विराजित देखत ब्रजजन मनहरन॥ सखा अंशपर भुज दीन्हें लीन्हें मुरली अधर मधुरतान विश्वंभरन। सूर श्याम कमलनयन कौन कौन कीन्हे वशाविलोकनि श्रीगोवर्धनधरन॥७१०॥राग बिलावल॥श्यामहृदय वर मोतिन माला।विथकित भई निरखि ब्रजवाला॥ श्रवण थके सुनि वचन रसाला। नैन थके दरशन नँदलाला॥ कंबुकंठ भुज नैनविशाला।करके उर कंचन नग जाला॥पल्लव हस्त मुद्रिका भ्राजै।कौस्तुभमणि हृदयस्थल छाजै॥ रोमावली बरणि नहिं जाई। नाभिस्थलकी सुंदरताई॥ कटि किंकिणी चंद्रमणि संयुत। पीतांबर कटितट छबि अद्भुत ॥ युगल जंघकी पटतर कोहै। तरुनी मन धीरजको जोहै ॥ जान जानुकी छबि न सँभारै। नारि निकर मन बुद्धि बिचारै॥ रत्न जटित कंचनकल नेपुर। मंदमंद गति चलत मधुर सुर॥ युगल कमल पद नखमणि आभा। संतनि मन संतत यह लाभा॥ जो जेहि अंग सो तहां भुलानी। सूरश्याम गति काहु न जानी॥११॥अध्याय२०॥राग गौरी ॥नँदनंदन मुख देख्यो माई। अंग अंग छबि मनहु उये रवि शशि अरु समर लजाई ॥ खंजन मीन कुरंग भृंग वारिजपर अति रुचिपाई। श्रुतिमंडल कुंडल विवि मकर सु विलसत सदन सदाई॥ कंठ कपोत कीर विद्रुम पर दारिम कननि चुनाई। दुइ सारंग बाहन पर मुरली आई देत दोहाई॥मोहे थिर चर विटप विहंगम व्योम विमान थकाई। कुसमंजुलि बरषत सुर ऊपर सूरदास बलिजाई ॥१२॥राग केदारो॥ देखि री

देखि आनंदकंद । चित चातक प्रेमघन लोचन चकोरको चंद ॥ चलित कुंडल गंड मंडल झलक ललित कपोल । सुधासर जनु मकर क्रीडत इंदु दह दह डोल ॥ सुभग कर आनन समापै मुरलिका एहि भाइ । मनोइनै अंभोज भाजन लेत सुधा भराइ ॥ श्यामदेह दुकूल द्युति छवि लसत तुलसीमाल । ताडित घन संयोग मानो सेनिकाशुकजाल ॥ अलक अविरल चारु हास विलास भ्रुकुटी भंग । सूर हरिकी निरखि शोभा भई मनसा पंग॥१३॥ राग मलार ॥ देखो माई सुंदरताको सागर । बुधि विवेक बल पार न पावत मगन होत मन नागर॥तनु अति श्याम अगाध अंबुनिधि कटिपट पीत तरंग । चितवत चलत अधिक रुचि उपजत भँवर परत सब अंग ॥ नैन मीन मकराकृत कुंडल भुजबल सुभग भुजंग मुकुतमाल मिलि मानो सुरसरि द्वैसरिता लिये संग ॥ मोर मुकुट मणिनग आभूपण कटिकिंकिनि नखचंद।मनु अडोल वारिधिमें बिंबित राका उडुगणवृंद॥ वदन चंद्र मंडलकी शोभा अवलोकनि सुखदेत । जनु जलनिधि मथि प्रकट कियो शशिश्री अरु सुधासमेत ॥ देखि स्वरूप सकल गोपीजन रही बिचारि बिचारि । तदपि सूर तरिसकी न शोभा रही प्रेम पचिहारि १४॥राग भैरवी ॥जैसी जैसी बातैं करै कहत न आवै री।श्यामसुंदर अति मन मन भावैरी॥ मदनमोहन मृदुबैन बजावै री। तान तरंग रसरासिक रिझावै री॥जंगम थावर करै थावर चलावै री । लहरि भुजंग तजि सन मुख आवै री॥व्योम जन अति गति फूल वरपावै री। कामिनि जो धीरज धरै सोको जो कहावै री॥ नंदलाल ललना लालच ललचावैरी । सूरदास प्रेम हरि हिये न समावै री ॥ ॥ १५ ॥ राग कयाण ॥बने विशाल हरि लोचन लोल ।चितै चितै हरि चारु विलोकनि मानहुँ माँगत हैं मन ओल ॥ अधर अनूप नासिका सुंदर कुंडल ललित सुदेश कपोल । मुख मुसकात महाछवि लागत श्रवण सुनत सुठि मीठे बोल॥ चितवत रहत चकोर चंद्र ज्यों नेक न पलक लगावत डोल। सूरदास प्रभुके वश ऐसे दासी सकल भई बिनु मोल॥१६॥ राग धनाश्री॥व्रज युवती हरिचरण मनावै । जे पद कमल महामुनि दुर्लभ ते सपनेहु न पावै ॥ तनु त्रिभंग युग जानु एक पग ठाढे एक दरशायो । अंकुश कुलिश वज्र ध्वज परगट तरुणी मन भरमायो ॥ वह छवि देखि रही एकटकही यह मन कराति बिचार। सूरदास मनौ अरुण कमल पर सुखमय करत विहार ॥१७ ॥ राग बिलावल ॥ देखि सखी हरि अंग अनूप । जानु युगल युग जंघ विराजत को वरणै यह रूप॥लकुट लपेटि लटकि भए ठाढे एक चरण धर धारे।मनहुं नीलमणि खंभ काम रचि एक लपेटि सुधारे॥कबहुँ लकुटते जानु हरिलै अपने सहज चलावत।सूरदास मानहु करभाकर बारंबार डोलावत॥१८॥राग नटनारायण॥कटितटि पीत वसन सुदेप । मनहुँ नवघन दामिनी तजि रही सहज सुवेप॥ कनक मणि मेखला राजत सुभग श्यामल अंग । मनो हंस रिसाल पंगति नारि बालक संग॥सुभग कटि काछनी राजत जलज केसरि खंड । सूर प्रभु अंग निरखि माधुरि मदन तनु परचो दंड ॥१९॥ राग नट॥तरुणी निरखि हरि प्रति अंग । कोउ निरखि नख इंदु भूली कोउ चरण युगरंग ॥ कोऊ निरखि वपु रही थकि कोऊ निरखि युगजानु । कोउ निरखि युग जंघ शोभा कराति मन अनुमानु॥कोऊ निरखि कटि पीत कछनी मेखला रुचिकारि । कोऊ निरखि हृद नाभिकी छवि डारि तनमन वारि ॥ रुचिर रोमावली हरि की चारु उदर सुदेप । मनो अलिसेनी विराजत बनै एकहि भेप। रही एकटक नारि ठाढी करत बुद्धिविचार । सूर आगम कियो नभते यमुन सूक्षमधार ॥ ७२० ॥ राजत रोम राजिव रेप। नील घन मनों धूमधारा रही सूक्षमशेप । निरखि सुंदर हृदयपर भृगुपद परम सलेप। मनहुं शोभित अभ्रअंतर शंभु भूपण भेप ॥ मुक्तमाल नक्षत्र गणसम अर्धचंद्र विशेप ॥ सलज उज्ज्वल

जलद मलयज प्रबल बलनि अलेश ॥ केकी कच सुरचापकी छबि दशन तडित सपेष । सूर प्रभु अवलोकि आतुर तजे नैन निमेष ॥ २१ ॥ राग गौरी ॥ हरि प्रति अंग नागरि निरखि । दृष्टि रोमावली पर रहि बनत नाहिन परखि ॥ कोऊ कहत यह काम श्रेनी कोउ कहति नहिं योग।कोऊ कहति अलि बाल पंगति जुरे एक संयोग ॥ कोऊ कहति अहि काम पठयो डसै जिनि यह काहु । श्याम रोमावलीकी छबि सूर नहीं निवाहु ॥२२॥ राग आसावरी ॥ चतुर नारि सब कहति विचारि । रोमावली अनूप विराजति यमुनाकी अनुहारि ॥ उर कलिंदते धँसि जलधारा उदर धरणि पर वाह । जातिचली अति ते जलधारा नाभि ह्रदय अवगाह ॥ भुजादंड तट सुभग घटा घन बन माला तरुकूल । मोतिनमाल दुहूँघा मानो फेन लहरि रसफूल ॥ सूर श्याम रोमावलीकी छबि देखति करति विचारि।बुद्धि रचति तरि सुकृति न शोभा प्रेम विवश ब्रजनारि॥२३॥राग कल्याण॥रोमावली रेख अतिराजत । सूक्षम शेष धूमकी धारा नवघन ऊपर भ्राजत ॥ भृगुपद रेख श्याम उर सजनी कहा कहौं ज्यों छाजत।मनहु मेघ भीतर शशिकी द्युतिकोटि काम तनु लाजत ॥ मुकतामाल नंदनंदन उर अर्ध सुधा घट कांति । तनु श्रीखंड मेघ उज्वल अति देखि महाबल भांति ॥ वरही मुकुट इंद्रधनु मानहु तडित दशनछबि लाजत । यकटकरही विलोकि सूरप्रभु तनुकींहै कह हाजत॥२४॥राग सारंग ॥ मुख छबि कहौं कहां लगि माई।मनो कंज परकाश प्रातही रवि शशि दोऊ जात छपाई॥अधरबिंब नासा ऊपर मनौं शुक चाखनको चोंचचलाई । बिकसत बदन दशन अति चमकनि दामिनि द्युति दुरदेत देखाई॥ शोभित श्रीकुंडलकी डोलन मकराकृत अति श्रीवनाई । निशिदिन रटत सूरके स्वामी ब्रजवनिता देहैं बिसराई२५॥राग कदारो॥सखीरी सुंदरता कोरंग।छिनछिनमांह परत छबि औरै कमल नयनके अंग॥परमितकरि राख्यो चाहतिहै तुमहु लागि डोलतहै संग । चलत निमेष विशेष जानियत भूलि भई मतिभंग॥श्याम शुभगके ऊपर वारों आली कोटि अनंग। सूरदास कछु कहत न आवै गिरा भई गतिपंग॥२६॥राग विहागरो ॥ श्यामभुजाकी सुंदरताई । बडे बिशाल जानुलों परसत यक उपमा मन आई ॥ मनो भुजंग गगनते उतरत अधमुख रह्यो झुलाई । चंदनखौरि अनूपम राजत सो छबि कही न जाई॥रत्नजटित पहुँची कर राजत अँगुरी सुंदरभारी॥सूर मनो फनि शिरमणि शोभित फनफनकी छबि न्यारी२७॥राग धनाश्री॥गोपी तजि लाज संग श्यामरंगभूली॥पूरण मुखचंद्र देखि नैन कमल फूली॥ कीधौं नवजलद स्वाति चातक मन लाये । किधौं नारिवृंद सीप ह्रदय हर्ष पाये॥रवि छबि कुंडल निहारि पंकज बिगसाने । किधौं चक्रवाक निरखि अतिही रतिमाने ॥ कीधौं मृगयूथ जुरे मुरली ध्वनि रीझे॥सूर श्याम मुख कुंडल छबिके रस भीजे ॥ २८ ॥ राग सोरठ ॥ बडो निठुर विधना यह देख्यो । जबते आजु नंदनंदन छबि बारबार करि पेख्यो॥नख अँगुरी पग जानु जंघ कटि राचि कीन्हों निर्मान । ह्रदयबाहु कर हस्त अंग अँग मुख सुंदर अतिबान॥ अधर दशन रसना रस वाणी श्रवण नयन अरु भाल । सूर रोमप्रति लोचन देतो देखत बनै गोपाल॥२९॥राग गुजरी॥श्याम अंग युवती निरखि भुलानी॥ कोउ निरखति कुंडलकी आभा यतनेहि मांझ बिकानी ॥ ललित कपोल निरखि कोउ अटकी शिथिल भई ज्यों पानी । देह गेहकी सुधि नहिं काहू हरषनको पछितानी ॥ कोउ निरखति रही ललित नासिका यह काहू नहिं जानी । कोउ निरखति अधरनकी शोभा फुरत नहीं मुख बानी ॥ कोउ चकृतभई दशन चमकपर चकचौंधी अकुलानी । कोउ निरखति द्युति चिबुक चारुकी सूर तरुनि बितानी ॥७३०॥ राग नट ॥ श्यामकर मुरली अतिही विराजत । परसत अधर सुधारस प्रगटत मधुर मधुर सुर बाजत ॥ लटकत मुकुट भौंह छबि मटकत नैन सैन अति छाजत।ग्रीवनवाइ अटकि बंसी

पर कोटिमदन छवि लाजत ॥ लोल कपोल झलक कुंडलकी यह उपमा कछु लागत । मानहुँ मकर सुधारस क्रीडत आप आप अनुरागत । वृंदावन विहरत नँदनंदन ग्वालसखा सँग सोहत । सूरदास प्रभुकी छवि निरखत सुर नर मुनि सब मोहत ॥ ३१ ॥ राग धनाश्री ॥ तवलगि सबै सयान रही।जबलगि नवलकिशोरी मुरली वदन समीर वही ॥ तबहींलों अभिमान चातुरी पतिव्रत कुलहि चही । जबलगि श्रवण रंध्र मग मिलिकै नाहीं इहै वही । तवलगि तरुनी तरल चंचलता बुधि बल सकुचि रही।सूरदास जबलगि वह ध्वनि सुनि नाहिन बनत कही३२ राग गौरी॥ब्रजललना देखति गिरिधरको । एक एक अंग अंग पर रीझी अरुझी मुरलीधरको।मनो चित्रकीसी लिखि काढी सुधि नाहीं मन घरको । लोकलाज कुलकानि भुलानी लुब्धी श्यामसुंदरको ॥ कोउ रिसाइ कोउ कहै जाइ कछु डरीन काहू डरको । सूरदास प्रभुसों मनमान्यो जन्म जन्म परतरको ॥ ३३ ॥ राग सारंग ॥ वंसी वन कान्ह बजावत । आइ सुनो श्रवणनि मधुरे सुर राग रागिनी ल्यावत ॥ सुरश्रुति तान बँधान अमित अति सप्तअतीत अनागत आवत । जनु युग जुरि वरवेप सजलमथि बदनपयोधि अमृत उपजावत ॥ मनो गोहनी भेष धरे धर मुरली मोहन मुख मधु प्यावत । सुर नर मुनि वश किये राग रस अधर सुधारस मदन जगावत ॥ महामनोहर नाथ सूर थिर चर मोहे मिलि मरम न पावत । मानहु मूक मिठाईके गुन कहि न सकत मुख शीश डोलावत॥३४॥ राग केदारो॥वंसी वनराज आज आई रण जीति । मेटतिहै अपने बल सबहिनकी रीति ॥ विडरे गजयूथ शीलसैन लाज भाजी । घूँघट पट कवच कहो छूटे मान ताजी ॥ किनहूं पति गेह तजे किनहूं तन प्रान । किनहुन सुख शरण पायो सुनत सुयश कान ॥ कोऊ पद परसिगए अपने अपने देश । कोऊ वरि. रंक भए हुते जे नरेश ॥ देत मदन मारुत मिलि दशो दिशि दोहाई । सूर श्याम श्रीगोपाल वंसीवश माई ॥३५॥ राग सारंग ॥ जवते वंसी श्रवणपरी । तवहींते मन और भयो सखि मोतन सुधि बिसरी ॥ हौं अपने अभिमान रूप योवनके गर्वभरी । नेक न कह्यो कियो सुनि सजनी वादिहि आपु ढरी ॥ विन देखे अव श्याम मनोहर युगभरि जात घरी । सूरदास सुनु आरज पंथते कछू न चाडटरी ॥ मुरली ध्वनि श्रवन सुनि भवन रहो नहिंपरै।ऐसी को चतुरनारि धीरज मन धरै।।खग मृग तरु सुर नर मुनि शिवसमाधि ढरै।अपनी गति तजी पौन सरिताउन टरै।।मोहनके मनको को अपने वश करै। सूरदास सप्तसुरन सिंधु सुधा भरै॥३६॥राग कान्हरो॥माई री मुरली अति गर्व काहु वदति नांहि आजु। हरिको मुख कमल देख पायो सुखराजु।।वैठति कर पीठ ढीठ अधरछत्र छाही । चमर चिकुर राजत तहां सुंदर सभामाहीं ॥ यमुनाके जलहि नाहिं जलधि जान देति । सुरपुरते सुर विमान भुवि बुलाइ लेति।।स्थावर चर जंगम जहँ करति जीति अजीति।वेदकी विधि मेटि चलति आपनेही रीति।। वंशीवश सकल सूर सुर नर मुनि नाग । श्रीपतिहू श्रीबिसारी एही अनुराग॥३७॥राग गौरी ॥ मुरली मोहे कुँवर कन्हाई । अचवति अधर सुधावश कीन्ही अव हम कहा करैं कहि माई ॥ सर्वसु हरयो धरयो कवहूँ औसरहू न देति अवाई । गाजति वाजति चढी दुहूँ कर अपने शब्द न सुनत पराई ॥ जिहि तन अनल दह्यो कुल अपनो तासों कैसे होत भलाई । अव कहि सर कौन विधि कीजै वन की व्याधि मांझ घर आई ॥ ३८ ॥ राग मलार ॥ मुरली तऊ गुपालहि भावति । सुन री सखी यदपि नँदनंदन नाना भांति नचावति।।राखत एक पाँइ ठाढे करि अति अधिकार जनावति । कोमल अंग आपु आज्ञागुरु कटिटेढ़ी है आवति।।अति आधीन सुजान कनौडे गिरिधर नारि नवावति । आपुन पौढि अधर सेज्यापर करपल्लवसन पदपलटावति।।भृकुटी कुटिल कोप नासा पुट हमपर कोप कुपावति।

T

सूरप्रसन्न जानि एको छिन अधर सुशीश डोलावति॥३९॥ श्याम तुम्हारी मदन मुरलिका नकसी जग मोह्यो। जे सबही जीव जंतु जल थलके नाद स्वाद सब पोह्यो॥ जे तीरथ तप करे तरनिसुत पन गहि पीठि न दीन्ही। ता तीरथ तपके फल लैकै श्याम सुहागनि कीन्हीं ॥ धरणी धरि गोवर्धन राख्यो कोमल प्राण अधार। अब हरि लटकि रहत हैं टेढे तनक मुरलिके भार॥ निदरि हमहिं अधरन रस पीवत पठै दूतिका माई।सूर श्याम निकुंजते प्रगटी बपुरि सौति भइ आई॥७४०॥ सखी री मुरली लीजै चोर। जिन गोपाल कीन्हें अपने वश प्रीति सबनिकी तोर ॥ छिन एक घोरि फेरि वसुतासुर धरत न कबहूं छोर। कबहूं कर कबहूं अधरनपर कबहूं कटिमें खोसत जोर ॥ नाजानौं कछु मेलि मोहनी राखी अंग अंभोर। सूरदास प्रभुको मन सजनी बँध्यो रागके डोर॥ ४१॥ राग केदारो॥ मुरली अधर सजी बल वीर। नादप्रति वनिताविमोही डर बिसारे चीर॥ खग नैन मूँदि समाधि धरि ज्यों करत मुनि तपधीर। डोलति नहीं द्रुमलता विथकी मंद गंध समीर॥ मृग धेनु तृण तजिरहे ठाढे बच्छतजि मुख क्षीर। सूर मुरली नाद सुनि थकि रहत यमुनानीर॥४२॥राग मलार॥जब मोहन मुरली अधर धरी। गृहव्यवहार थके आरजपथ चलत नसंककरी॥पदरिपु पट अटक्यों आतुरज्यों उलटत पलट मरी। शिवसुत बाहन आइ मिलेहैं मनचित बुद्धि हरी॥ दुरि गए कीर कपोत मधुप पिक सारंग सुधि बिसरी॥ उडपति विद्रुम बिंब खिसान्यो दामिनि अधिक डरी। निरखे श्याम पतंगसुतातट आनँद उमँगि भरी॥ सूरदास प्रभु प्रीति परस्पर प्रेम प्रवाह परी॥४३॥अध्याय२१गोपीकावचन॥राग सारंग॥हम न भईं वृंदावन रेनु।जिन चरणन डोलत नँद नंदन नित प्रति चारत धेनु॥ हमते धन्य परम ए द्रुम वन बालक बच्छ अरु धेनु। सूरसकल खेलत हँसि बोलत ग्वालन संग मथि पीवत फेनु॥ ४४॥ राग केदारो॥कहाभयो या देत्र जनमते ऊंचे पद कह्यो ऐन। सवजीवनको इहै एक फल छिनक मीन जल करते सैन॥ अधर मधुर पीवत मोहनको सबै कलंक नशाइ। अतिकठोर मणिका इनहींमें छेदि बिशाल बनाइ॥ अंतर बिन सो सदा देखतहै निज कुल वंश बिहाइ। लिख्यो बिन अंक नहीं कछु करनी निरखत ताहि जो नयन लगाइ। सूरदास प्रभु बलपरसन नित कामावलि अधिकाइ॥ ४५॥ राग सारंग॥ऐसो गुपाल निरखि तन मन धन वारौं। नवल किशोर मधुर मूरति शोभा उर धारौं॥ अरुन तरुन कमलनैन मुरली कर राजै। व्रजजन मन हरन बेन मधुर मधुर बाजै॥ ललित त्रिभंग सोतन बनमाला सोहै। अति सुदेश कुसुमपाग उपमाको कोहै॥ चरणरुनित नेपुर कटि किंकिणीकल कूजै॥ मकराकृत कुंडल छबि सूर कौन पूजै॥ ४६॥ सुंदर मुखकी बलि बलि जाउँ। लावनिनिधि गुणनिधि शोभानिधि निरखि निरखि जीवत सब गाउँ॥ अंग अंग प्रति अमित माधुरी प्रगटित रस रुचि ठाउँठाउँ॥ तामें मृदु मुसुकानि मनोहर न्याय कहत कबि मोहन नाउँ॥ नैन सैन दैदै जब हेरत तापर हौं बिनमोल बिकाउँ। सूरदास प्रभु मदन मोहन छबि यह शोभा उपमा नहिं पाउँ॥ ॥ ४७॥ राग सूही॥ मैं बलिजाउँ श्याम मुख छबिपर। बलि बलि जाउँ कुटिल कच बिथुरी बलि बलिजाउँ भ्रुकुटि लिलाटतर॥बलिबलि जाउँ चारु अवलोकनि बलिहारी कुंडलकी।बलिबलि जाउँ नासिका सुललित बलिहारी वा छबिकी॥ बलि बलि जाउँ अरुन अधरनकी विद्रुम बिंब लजावन। मैं बलिजाउँ दशन चमकनकी वारौं ताडित नसावन॥ मैं बलिजाउँ ललित ठोढ़ीपर बलमोतिनकी माल। सूर निरखि तन मन बलिहारौं बलि बलि यशुमति लाल॥४८॥ राग कान्हरो॥ अलकन की छबि अलिकुल गावत। खंजन मीन मृगज लज्जितभए नैन नचावनि गतिहि न पावति॥

सुख मुसकानि आनि उर अंतर अंबुज बुधि उपजावत । सकुचत अरु विगसित वा छबिपर अनुदिन जनम गवांवत ॥ पूरण नहीं सुभग श्यामलको यद्यपि जलधर ध्यावत । वसन समान होत नहिं हाटक अग्निझांपदे आवत ॥ मुकतादाम बिलोकि विलखि करि अवलि बलाक बनावत । सूरदास प्रभु ललित त्रिभंगी मनमथ मनहि लजावत ॥ ४९ ॥ राग मारू ॥ निगमते अगम हरि कृपा न्यारी। प्रीतिवश श्यामकी राइकी रंक कोऊ पुरुषकी नारि नहिं भेदकारी ॥ प्रीतिवश देवकीगर्भ लीन्हो वास प्रीतिके हेत व्रज भेष कीन्हो । प्रीतिके हेतु यशुमति दियो पयपान प्रीतिके हेतु अवतार लीन्हो ॥ प्रीतिके हेतु वनधेनु चारत कान्ह प्रीतिके हेतु नंदसुवन नामा । सूर प्रभुको प्रीतिके हेतु पाइए प्रीतिके हेतु दोउ श्याम श्यामा ॥ ७५०॥ प्रीतिके वश्य एहैं मुरारी । प्रीतिके वश्य नटवर भेषधारयो प्रीतिवश करज गिरिराज धारी॥प्रीतिके वश्य व्रजभए माखनचोर प्रीतिके वश्य दाँवरि बंधाई। प्रीतिके वश्य गोपी रवन प्रियानाम प्रीतिके वश्य तरु जमलमोक्षदाई ॥ प्रीतिवश नंदबंधन वरुण सदनगये प्रीतिके वश्य वनधाम कामी।प्रीतिके वश्य प्रभु सूर त्रिभुवन विदित प्रीतिवश सदा राधिका स्वामी ॥ ॥ रागधनाश्री॥दैदैरी मैया दोहनी दुहिहौं मैं गैया ।माखनखाये बलभयो करि नंददुहैया॥ कजरी धुमरी सेंदुरी धौरी मेरी गैया । दुहिल्याऊं मैं तुरतही तू करिदै चैया ॥ ग्वालनकी सरि दुहतहौं बूझहु बलभैया । सूर निरखि जननी हँसी तब लेति बलैया॥ ५१ ॥राग सारंग॥बाबा मोंको दुहन सिखायो। तेरे मन परतीति न आवै दुहत अँगुरियन भाव बतायो ॥ अँगुरीभाव देखि जननी तब हँसिकै श्यामहि कंठ लगायो ।आठवर्षको कुँवरकन्हैया इतनी बुद्धि कहांते पायो ॥ मातालै दोहनी कर दीन्हों जब हरि हँसत दुहनको धायो। सूर श्यामको दुहत देखि तब जननी मन अति हर्ष बढायो॥ राग धनाश्री॥जननी मथति दधि गोदुहत कन्हाई।सखा परस्पर कहत श्यामसों हमहूं ते तुम करत चँडाई॥ दुहन देहु कछु दिन अरु मोको तब करिहौ मोसम सरि आई । जबलौं एक दुहौगे तबलौं चारि दुहौं तौ नंद दोहाई ॥ झूठहि करत दुहाई प्रातहि देखहिंगे तुम्हरी अधिकाई । सूर श्याम कह्यो कालि दुहैंगे हमहूं तुम मिलि होड लगाई॥५२॥राधायशोदाके आई राग बिलावल ॥ उठी प्रातही राधिका दोहनी करल्याइ।महरि सुतासों तब कह्यो कहांचली अतुराइ ॥ खरिक दुहावन जाति हौं तुम्हरी सेवकाइ । तुम ठकुराइनि घर रहौ मौहिं चेरी पाइ ॥ रीती देखी दोहनी कत खीझत धाइ । कालि गईं अवसेरकै ह्यां उठी रिसाइ ॥ गाइगई सब प्याइकै प्रातहि नहिं आइ।ताकारण मैं जातिहौं अतिकरत चँडाइ॥ यह कहि जननी सों चली व्रजको समुहाइ । सूर श्याम गृह द्वारही गो करत दुहाइ॥ ५३॥ राग बिलावल॥ सुता महर वृषभानुकी नँद सदनहि आई । गृहद्वारेही अजिरमें गो दुहत कन्हाई ॥ श्याम चितै मुख राधिका मनहर्ष बढाई । राधा हरिमुख देखिकै तनु सुरति भुलाई ॥ महरि देखि कीरति सुता तेहि लियो बुलाई । दंपतिको सुख देखिकै सूरज बलिजाई ॥ ५४ ॥ आजु राधिका भोरही यशुमति के आई । महरि मुदित हँसि यों कह्यो मथि भान दोहाई ॥ आयसु लै ठाढ़ी भई करनेत सुहाई । रीतो माट विलोवहीं चित जहां कन्हाई॥उनके मनकी कह कहौं ज्यों दृष्टि लगाई । लेई आनो एक वृषभसो गैया विसराई ॥ नैननिमें यशुमति लखी दुहुँकी चतुराई । सूरदास दंपति दशा वरणी नहिं जाई ॥ ५५ ॥ महरि कह्योरी लाडिली केहि मथन सिखायो । कहां मथानी कहां माटहै चित कहां लगायो ॥ अपने घर योंहीं मथै कहि प्रगट देखायो । की मेरे घर आइकै ह्यां सब विसरायो ॥ मथन नहीं मोहिं आवही तुम सौंह दिवायो । तेहि कारणमें आइकै तुव बोल रखायो ॥ तब नंद घरनी मथि दह्यो यहि भांति बतायो । सूर निरखि मुख श्यामको तहां ध्यान लगायो ॥ ५६ ॥

राग सूहा ॥ दुहत श्याम गैयां बिसराई । नोआले पगबांधि वृषभके दोहनी मांगत कुँवर कन्हाई ॥ ग्वाल एक दोहनी लै दीनी दुहौ श्याम अति करौं चँडाई । हँसत परस्पर तारी दैदै आज्ञु कहा तुम रहे भुलाई ॥ कहत सखा हरि सुनत नहीं सो प्यारीसों रहें चित अरुझाई । सूर श्याम राधा तन चितवत वडेचतुरकी गई चतुराई ॥५७॥ राग रामकली ॥ राधाएढँग हैं री तेरे वैसे हाल मथत दधि कीन्हे हरिमनो लिखे चितेरे ॥ तेरो मुख देखत शशि लाजै और कह्यो क्यों बाचै । नैना तेरे जलज जितेहैं खंजनते अति नाचैं ॥ चपलाते चमकत अति प्यारी कहा करौगी श्यामहि । सुनहु सूर ऐसेहि दिन खोवति काज नहीं कुछ तेरे धामहि ॥ ५८ ॥ राग गूजरी ॥ मेरो कह्यो नाहिंन सुनति । तबहींत एकटक रहीहै कहा मनधौं गुनति ॥ अबही ते तू करति एढंग तोहिहै हौन । श्यामको तू ऐसे ठगिलियै कछु न जाने जौन ॥ सुताहै वृषभानुकी री बडो उनको नाउ । सूरप्रभु नंदनंदन निरखत जननि कहति सुभाउ ॥५९॥ राग महा ॥ प्रगटी प्रीति न रही छपाई । परी दृष्टि वृषभानु सुताकी दोऊ अरुझे निरवारि नजाई ॥ बछरा छोरि खरिकको दीनों आपु कान्ह तनु सुधि बिसराई । नोवत वृषभ निकासि गैयाँ गई हँसत सखा कहा दुहत कन्हाई ॥ चारौं नैन भए एकठाहर मनहीमन दोहुँ रुचि उपजाई। सूरदास स्वामी रतिनागर नागरि देखि गई नगराई ॥ ॥ ७६० ॥ चितैबो छांडिदेरी राधा । हिलिमिलि खेलि श्यामसुंदरसों करति कामको बाधा ॥ की वैठी रहि भवन आपने काहेको वनिआवै । मृगनयनी हरिको मनमोहति जब तू देखि दुहावै ॥ कवहुँक करते गिरति दोहनी कबहुँक बिसरत नोई । कवहुँक वृषभ दुहतहै मोहन नाजानों का होई ॥ कौन मंत्र जानति तू प्यारी पढि डारति हरिगात । सूर श्यामको धेनु दुहनदे कहति यशोदामात ॥ ६१ ॥ राग धनाश्री ॥ धेनु दुहनदे मेरे श्यामहि । जो आवै तौ सहजरूपसों बनि आवति बेकामहि॥सूधे आइ श्यामसंग खेलो बोलो बैठो यामहि धामहि।ऐसो ढंग मोहिं नहिं भावै लेउ न ताके नामहि ॥ घर अपने तू जाहि राधिका कहति महरि मन तामहि । सूर आइ तू करति अचगरी को वकही निशि यामहि ॥ ६२ ॥ राग जैतश्री ॥ बारबार तू जिनि ह्यां आवै । मैं कहा करौं सुतहि नहिं वरजति घरते मोहिं बोलावै ॥ मोसों कहत तोहिं विनु देखे रहत न मेरो प्रान । छोहलगति मोको सुनि वाणी महरि तुम्हारी आन ॥ मुँह पावति तवहीं लौं आवति औरै लावति मोहिं । सूर समुझि यशुमति उरलाई हँसति कहतिहौं तोहिं ॥ ६३ ॥ राग गौरी ॥ हँसत कह्यो मैं तोसों प्यारी।मनमें कछू विलगु जिनि मानहु मैं तेरी महतारी ॥ बहुतै दिवस आज तू आई राधा मेरे धाम । महरि बडी मैं सुघरि सुनीहै कछु सिखयो गृहकाम ॥ मैया जब मोहिं टहल कहत कछु खीझत बाबा वृषभान । सूर महरिसों कहति राधिका मानो अतिहि अजान॥६४॥राग रामकली ॥ दूध दोहनी लैरी मैया।दाऊ टेरत सुनि मैं तबलौं करि विधि चैया ॥ मुरली मुकुट पीतांवरदै मोहिं लै आई महतारी । मुकुट धरचो शिर कटि पीतांबर मुरली करलियो धारी ॥ राधा राधा कहि मुरलीमें खरिकहि लई बुलाई । सूरदास प्रभु चतुर शिरोमणि ऐसी बुद्धि उपाई ॥६५॥ कुँवरि कह्यो मैं जाति महरिघर । प्रातहि आइ खरिक दुहावन कहति दोहनी लैकर ॥ तब खरिकहि कोऊ ग्वाल गये नाहिं तिन कारण ब्रजआई । जो देखो तौ अजिरहि वैठे गैया दुहत कन्हाई ॥ तनक दोहनी तनक दुहत मोहिं देखिअधिक रुचि लागी।तनक राधिका तनक सूरप्रभु देखि महरि अनुरागी॥६६॥राग गूजरी॥जाघर प्यारी आवत रहियो। महरि हमारी बात चलावति मिलन हमारो कहियो॥एक दिवसमैंगई यमुनातट तहां उन देखी आई॥ मोको देखि बहुत सुख पायो भिलि अंकम लपटाइ ॥ यह सुनिकै चली कुँवरि राधिका मोको भई

अवार । सूरदास प्रभु मन हरिलीन्हों मोहन नंदकुमार॥६७॥राग गूजरी॥सैनदै प्यारी लई बोलाई।खेलनको मिस करिकै निकसे खरिकहि गए कन्हाई ॥ यशुमतिको कहि प्यारी निकसी घरको नाउँ सुनाइ। कनक दोहनी लिये तहां आई जहां हलधरको भाइ ॥ तहां मिलीं सब संग सहेली कुँवरि कहां तू आई । प्रातहि धेनु दुहावन आई अहिरनहीं तहां पाई ॥ तवहिं गई मैं व्रज उतावली ल्याई ग्वाल बुलाइ। सूर श्याम दुहि देन कह्यो सुनि राधागई मुसकाइ ॥ ६८ ॥ राग धनाश्री॥ धेनु दुहन जब श्याम बोलाई । श्रवन सुनत तहां गई राधिका मनहरिलियो कन्हाई ॥ सखी संगकी कहति परस्पर कह यह प्रीति लगाई । यह वृषभानु पुरा ये व्रजमें कहा दुहावन आई ॥ मुख देखत हरिको चकृत भई तनुकी सुधि विसराई । सूरदास प्रभुके रसवशभई काम करी कठिनाई ॥ ६९ ॥ गाउँवसत एते दिवसनिमें आजु श्याम मैं देखे । जे दिनगए बिना व्रजनाथहि तेई वृथा करि लेखे ॥ कहिये जो कछु होइ सयानी कहिबेको अनुमानै । सुंदर श्याम निकाईको सुख नैनाईपै जानै ॥ तबते रूप ठगोरी लागी युग समान पल बितवति । तजि कुललाज सूरके प्रभुको फिरि फिरि मुखतन चितवति ॥ ॥७७०॥ राग देवगंधार ॥मोहन करते दोहनि लीनी गोपद बछरा जोरे । हाथ धेनु थन बदन त्रियातनु छीर छाछि छल छोरे ॥ आनन रही ललितपय छींटै छाजति छबि तृण तोरे । मनहुँ निकसि निकलंक कलानिधि दुग्ध सिंधके बोरे ॥ दै घूँघट पट वोट नील हँसि कुँवरि मुदित मुख मोरे । मनहुँ शरद शशिको मिलि दामिनि घेरिलियो घन घोरे ॥ यहिविधि रहसति विलसति दंपति हेतु हिये नहिं थोरे । सूर उमँगि आनंद सुधानिधि मनो विलावल फोरे॥७१॥राग रामकली॥हरिसों धेनु दुहावत प्यारी । करति मनोरथ पूरण मन वृषभानु महरकी बारी ॥ दूधधार मुख पर छवि लागति सो उपमा अतिभारी । मानो चंद कलंकहि धोवत जहां तहां बूंद सुधारी ॥ हावभाव रस मगन ह्वै दोऊ छबि निरखति ललिता री । गौदोहन सुखकरत सूर प्रभु तीनिहु भुवन कहां री ॥ ७२ ॥ राग सूहो ॥ तुमपै कौन दुहावै गैया । लिहे रहत कर कनकदोहनी बैठतहो अधपैया ॥ अति रस कामकि प्रीति जानिकै आवत खरकदुहैया । इत चितवत उत धार चलावत एहि सिखयो है मैया ॥ गुन प्रीति तासों कर मोहन जोहैं तेरी दैया । सूरदास प्रभु झगरो सीख्यो जोधर खसम गुसैया ॥ ७३ ॥ राग धनाश्री॥करिरो न्यारी हरिआपनगैयां।नहिंन बसात लाल कछु तुमसों सब ग्वाल इकठैयां।नहिन अधिक तेरे बाबाके नहिं तुम हमरे नाथ गुसैयाँ । हम तुम जाति पांतिके एकै कहाभयो अधिकी द्वैगैयाँ ॥ जादिनते सबरे गोपनमें तादिनते करत लँगरैया । मानीहार सूरके प्रभु सों बहुरि न करिहो नंददुहैया ॥ ७४ ॥ राग सूहो ॥ धेनु दुहत अतिही रतिबाढी । एकधार दोहनी पहुँचावत एकधार जहां प्यारी ठाढी ॥ मोहन करते धार चलत पय मोहनी मुख अतिही छविगाढी । मनो जलधर जलधार वृष्टिलघु पुनि पुनि प्रेमचंदपर बाढी ॥ सखी संगकी निरखति यह छबि भई व्याकुल मन्मथकी डाढी । सूरदास प्रभुके वशभई सब भवनकाजते भई उचाटी ॥७५॥ ॥ राग विलावल ॥ दुहिदीनी राधाकी गैयां । दोहनी नहींदेत करते हरि हाहाकरति परतिहै पैयां ॥ ज्यों ज्यों प्यारी हाहा बोलति त्यों त्यों हँसत कन्हैया । बहुरि करौं प्यारि तुम हाहा देहौं नंददुहैया ॥ तब दीनी प्यारी कर दोहनी हाहा बहुरि करैया । सूरश्याम रस हावभाव करि दीनी कुँवर पठैया ॥ ॥ ७६ ॥ चलन चहति पग चले न घरको । छांडत बनत नहीं कैसेहू मोहन सुंदरवरको ॥ अंतर नेक करूं नहिं कबहूं सकुचतिहौं पुरनरको । कछुदिन जैसे तैसे खोऊं दूरिकरौं पुनि डरको ॥ मन में यह विचार करि सुंदरि चली आपने पुरको । सूरदास प्रभु कह्यो जाहु घर बात करचो नख

उरको ॥ राग मलार ॥ मुरि मुरि चितवति नंदगली । डग न परत ब्रजनाथसाथ बिनु विरह व्यथा मचली ॥ बार बार मोहन मुख कारण आवत फिरि जु अली । चली पीठि दै दृष्टि फिरावति अंग अंग आनँद रली ॥ सूरदास प्रभु पास दुहायो श्रीवृषभानु लली ॥ ७७ ॥ राग बिलावल॥ शिर दोहनी चली लैं प्यारी । फिरि चितवत हरि हँसे निरखि मुख मोहन मोहनी डारी ॥ व्याकुल भई गई सखियनलौं ब्रजको गए कन्हाई । और अहिर सब कहाँ तुम्हारे हरिसों धेनु दुहाई ॥ यह सुनिकै चकृत भई प्यारी धरणि परी मुरझाई । सूरदास तब सखियन उर भरि लीनी कुँवरि उठाई ॥७८॥ क्यों री कुँवरि गिरी मुरझाई।यह वाणी कहि सखियन आगे मोको कारे खाई॥चली लिवाइ सुता वृषभानुहि घरहीतन समुहाई।डारिदियो भरि दूध दोहनियां अबहीं नीके आई ॥ यह कारो सुत नंदमहरको सब हम फूंक लगाई। सूर सखिन मुख सुनि यह वाणी तब यह बात सुनाई७९सारंग ॥मोहिलई नैननि की सैन । श्रवन सुनत सुधिबुधि बिसरी सब ह्वो लुब्धी मोहनमुख बैन ॥ आवत हुते कुमार खरिकते तब अनुमान कियो सखि मैन । निरखत अंग अधिक रुचि उपजी नखशिख सुंदरताको ऐन ॥ मृदु मुसकान हरचौ मनको मनि तबते तिल न रहत चित चैन । सूर श्याम यह वचन सुनायो मेरी धेनु कही दुहि दैन ॥७८०॥ राग धनाश्री ॥ सखियन मिलि राधा घर लाई । देखहु महरि सुता अपनीको कहूं यहि कारे खाई । हम आगे आवति यह पाछे धरणि परी भहराई । शिरते गई दोहनी ढरिकै आपु रही मुरझाई ॥ श्याम भुअंग डस्यो हम देखत ल्यावहु गुणी बुलाई । रोवत जननि कंठ लपटानी सूर श्याम गुनराई ॥ ८१ ॥ राग सारंग ॥ प्रात गई नीके उठि घरते । मैं बरजी कहां जाति री प्यारी तब खीझी रिस झरते ॥ शीतल अंग खेदसों बूडी सोच परचो मनडरते ॥ अतिहि हठीली कह्यो न मानति करति आपने बरते ॥ औरै दशा भई क्षण भीतर बोली गुणी नगरते । सूर गारुडी गुणकरि थाके मंत्र न लागत थरते॥८२॥राग नटनारायण॥चले सब गारुडी पछिताइ। नेकहू नहिं मंत्र लागत समुझि काहु न जाइ ॥ बात बूझत संग सखियन कहौ हमहि बुझाइ । कहा कहि राधा सुनायो तुम सबनिसों आइ ॥ महाविषधर श्याम अहिवर देखि सबही धाइ । फूंक ज्वाला हमहुँ लागी कुँवरि उर परी खाइ ॥ गिरी धरनी मुरछि तबहीं लई तुरत उठाइ। सूर प्रभुको बेगि ल्यावहु बडो गारुडिराइ ॥ ८३ ॥ राग आसावरी॥ नंदसुवन गारुडी बोलावहु । कह्यो हमारो सुनत न कोऊ तुरत जाहु ब्रज अब लै आवहु ॥ ऐसे गुनी नहीं त्रिभुवन कहुँ हम जानत हैं नीके । आय जाय तौ तुरत जियावहि नेक छुवतही उठिहै जीके ॥ देखौ धौं यह बात हमारी एकहि मंत्र जियावै। नंदमहरको सुत सूरजप्रभु जो कैसेहु करि ह्यांलौं आवै ॥ ८४ ॥राग आसावरी॥डसी री माई श्याम भुअंगम कारे। मोहन मुख मुसकानि मनहुँ विष जाते मरे सो मारे॥ फुरै न मंत्र यंत्र दइ नाहीं चले गुणी गुण डारे । प्रेम प्रीति विष हिरदै लागी डारतहै तनु जारे ॥ निर्विष होत नहीं कैसेहु करि बहुत गुणी पचि हारे । सूर श्याम गारुडी बिना को सो शिर गाडू टारै॥८५॥ राग धनाश्री ॥ वेगि चलो पिय कुँवर कन्हाई । जा कारण तुम यह वन सेयो सो त्रिय मदनभुअंगम खाई ॥ नैन शिथिल शीतल नासापुट अंग तपति कछु सुधि न रहाई । सकसकात तनु भीजि पसीना उलटि पलटि तन तोरि जँभाई ॥ विन देखे मूरतिको जित तित उठि दौरी जिनि जहां बताई। ताहि कछू उपचार न लागत कर मींजै सहचरि पछिताई ॥ बार बार बूझतिहै ऐसे कमल नयनकी सुंदरताई । जोपै सूर जिवायो चाहत तौ ताको अब देहु देखाई ॥ ८६ ॥ राग नट ॥ सुनत तुम्हारी बातें मोहन मुइचले दोऊ नैन। छुटिगई लोकलाज आतुरता रहि न सकति चित चैन॥ उर कांप्यो

तनु पुलकि पसीज्यो बिसरिगई मुख बैन । ठाढीहै जैसे तैसे धुकि परी धरणि तिहि ऐन ॥ कोउ शिरगहि कोउ कमल कुंकुमा कोउ धाई जल लैन । ताहि कछू उपचार न लागै डसी कठिन अहि मैन ॥ हौं पठई एक सखी सयानी अब बोली दै सैन । सूर श्याम राधिका मिले बिनु कहा लागे दुखदैन ॥८७॥ राग केदारो ॥ भरि भरि लेत लोचन नीर । तुम बिना ब्रजनाथ सुंदरि विरह खेद अधीर ॥ कमल उरपर धरत छिनु छिनु छिरकि चंदन चीर । जालमग शशि किरनि रोकित मलय मंद समीर ॥ हौं जु तुम्हरे पास पठई देखि मनसिज भीर । सूरदास सुजान श्रीपति मिलि हरहु तनु पीर ॥८८॥ राग सारंग ॥ तनु विष रह्योहै बहु छहरि।नंदसुअन अति गारुडी कहतहैं पठवै धौं महरि॥ गए अवसान भीर नहिं भावै भावै नहिं चहरि । ल्यावो गुणी जाइ गोविंदको बाढीहै अति लहरि ॥ देखी उरही बिचही खाई मातीहै जहरि । सूर श्याम विषहर कहुँ खाई यह कहि चली डहरि ॥ ॥ ८९ ॥ राग सुघराई ॥ वृषभानुकी घरनी यशोमति पुकारचो । पठै सुतकाज मैं कहतिहौं लाजतजि पाँइ परिकै महरि करति आरचो ॥ प्रात खरिकहि गई आय विह्वल भई राधिका कुँअरि कहुँ डस्यो कारो । सुनी यह बात मैं आइ अतुरात ह्यां गारुडी बडोहै सुत तुम्हारो ॥ यह बडो धर्म नंदघरनि तुम पाइहौ नेक काहे न सुतको हँकारो । सूर सुनि महरि यह कहिउठी सहजही कहा तुम कहति मेरो अतिहि बारो ॥ ९० ॥ कान्हहि पठै महरि कहति पाइँन परि । आजु कहुँ कारे काहू खाईहै काम कुँवरि ॥ सब दिन आवै जाइ जहां तहां फेरि फिरि । अबहीं खरिक गई आईहै जिय बिसरि ॥ निशिके उनींदे नैना तैसे रहे टरि टरि ॥ किधौं कहूं प्यारीको तटकी लागी नजरि । तेरो सुत गारुडी सुन्योहै बातरी महरि । सूरदास प्रभु देखे जैहै री गरल झरि ॥ ९१ ॥ राग आसावरी ॥ यंत्र मंत्र कहाकरि जाने मेरो । यह तुम जाइ गुणिनको बूझहु बिन कारण कत करत हो झेरो ॥ आठ बरषको कुँवर कन्हाई कहा कहत तुम ताहि । किन बहकाइ दईहै तुमको ताहि पकरि लै जाहि ॥ मैंतो चकृतभई हौं सुनिकै अति अचरज यह बात । सूर श्याम गारुडी कहांको कहआई बित तात ॥ ९२ ॥ राग टोडी ॥ महरि गारुडी कुँवर कन्हाई । एक बिटिनियां कारे खाई ताको श्याम तुरतही ज्याई । बोलिलेहु अपने ढोटाको तुम कहिकै नेक देहु पठाई । कुँवरि राधिका प्रात खरिक गई तहां कहूं धौं कारे खाई । यह सुनि महरि मनहि मुसकानी अबहिं रही मेरे गृह आई । सूर श्याम राधहि कछु कारण यशुमति समुझि रही अरगाई॥९३॥राग आसावरी॥ तब हरिको टेरति नँदरानी । भली भई सुत भयो गारुडी आजु सुनी श्रवणन यह बानी ॥ जननी टेर सुनत हरि आए कहा कहति री मैया । कीरति महरि बुलावन आई जाहु न कुँवर कन्हैया ॥ कहूं राधिका कारे खाई जाहु न आवहु झारी ।यंत्र मंत्र कछु जानतहौ तुम सूर श्याम बनवारी॥ ९४ ॥ राग गूजरी ॥ मैया एक मंत्र मोहिं आवै । विषहर खाइ मरै जो कोऊ मोसों मरन न पावै ॥ एक दिवस राधा सँग आई खरिक बिटिनियां और । तहां ताहि विषहरने खाई गिरी धरणि वहि ठौर ॥ यह बाणी वृषभानु घरनि कहि यशुमति तब पतिआई । सूर श्याम मेरो बडो गारुडी राधा ज्यावहु जाई ॥ ९५ ॥ ॥ राग सुघराई ॥ यशोमति कह्यो सुत जाहु कन्हाई । कुँवरि जिवाये अतिहि भलाई ॥आजुहि मेरे गृह खेलन आई । जात कहूं कारे तेहि खाई॥कीरति महरि लिवावन आई। जाहु न श्याम करहु अतुराई॥ सूर श्यामको चली लिवाई । गई वृषभानु पुरहि समुहाई ॥९६॥राग देवगंधार ॥ हरि गारुडी तहां तब आए । यह बानी वृषभानु सुता सुनि मन मन मन अति हर्ष बढाए ॥ धन्य धन्य आपुनको कीन्हों अतिहि गई मुरझाइ । तनु पुलकित रोमांच प्रगट भए आनँद अंशुवहाइ॥ विह्वल देखि जननि

भई व्याकुल अंग विष गए समाइ । सूर श्याम प्यारी दोउ जानत अंतरगतिकी भाइ९७॥ रागरामकली॥
रोवंति महरि फिरति बितितानी । बार बार लै कंठ लगावति अतिहि शिथिल भई पानी ॥ नंद
सुवन के पाँइ परी लै दौरि महरि तब आइ । व्याकुलभई लाडिली मेरी मोहन देहु जिवाइ ॥ कछु
पढिपढ़ि करि अंग परसकरि विष अपनो लियो झारि । सूरदास प्रभु बडे गारुडी शिरपर गाडू
डारि ॥ ९८ ॥ लोचन दियो कुँवरि उघारि । कुँवरि देख्यो नंदको तब सकुचि अंग
सँभारि ॥ बात बूझति जननिसों री कहाहै यह आजु । मरतते तू बची प्यारी करतिहै कहा
लाजु ॥ तब कहति तोहिं कारे खाई कछु न रही सुधि गात । सूर प्रभु तोहिं ज्याइ लीन्ही
की कुँवरिसों नात ॥ ९९ ॥ राग सारंग ॥ बडो मंत्र कियो कुँवर कन्हाई । बार बार लै कंठ
लगायो मुख चूम्यो दियो घराहे पठाई ॥ धन्य कोखि वह महरि यशोमति जहां अव-
तर्यो यह सुत आइ । ऐसो चरित तुरतही कीन्हों कुँवरि हमारी मरी जिवाइ ॥ मनही मन अनु-
मान कियो यह बिधना जोरी भली बनाइ । सूरदास प्रभु बडे गारुडी ब्रज घर घर यह घेर चलाइ॥
॥८००॥ राग सुघराई ॥ भलेभलेहो भले कान्ह विषही उतारो।आजुते गारुडी नाव प्रगटयो तिहारो॥
जननि कहति मेरो सुत बारो।युवती कहति हम तन धौं निहारो॥अब कौनि करै सांझ सबारो।जान्यो
ब्रज वसत कठिन ऐसो कारो सुतवारो ॥ युवती कहति हम तनधौं निहारो । अब कौनि करै सांझ
सबारो ॥ जान्यो ब्रज वसत कठिन ऐसो कारो । यह निजु मंत्र जनि जियते बिसारो ॥ बहुरि कारो
कहु करैगो पसारो । सुरदास प्रभु सबहिन प्यारो ॥ ताहीको डसत जाको हियेहै उज्यारो ॥ १ ॥
राग रामकली ॥ नीके विषहि उतार्यो श्याम । बडे गारुडी अब हम जाने संगहि रहत सुकाम ॥ ऐसो
मंत्र कहां तुम पायो बहुत कियो यह काम । मरी आनि राधिका जिवाई टेरत एकहि नाम ॥ हम
समुझी यह बात तुम्हारी जाहु आपने धाम । सूर श्याम मनमोहन नागर हँसि वश कीन्हों वाम॥२॥
हँसि वश कीन्हीं घोषकुमारी । बिबश भई तनुकी सुधि बिसरी मन हरिलियो मुरारी ॥ गए श्याम
ब्रज धाम आपने युवती मदनशर मारी । लहरि उतारि राधिका शिरते दई तरुनिनपै डारि ॥
करत बिचार सुंदरी सब मिलि अब सेवहु त्रिपुरारी । मांगहु इहै देहु पति हमको सूर शरन बनवारी ॥
॥ ३॥ अध्याय ॥ १२॥चीरहरनलीला॥राग जयतश्री ॥ भवन रवन सबहि बिसरायो।नँदनंदन जबते मन हरि
लियो कहति वृथा यह जनम गँवायो । जप तप व्रत संयम साधनते प्रगट होत पाषान । जैसेहि
मिले श्याम सुंदर वर सोइ कीजै नहिं आन॥ इहै मंत्र दृढ कह्यो सबन मिलि याते होइ सु होई।वृथा
जन्म जगमें जिनि खोवहु इहां अपनो नहिं कोई॥ तब परतीति सबनिके आई कीन्हों दृढ विश्वास।
सूर श्याम सुंदर पति पावैं इहै हमारे आश ॥ ४ ॥ राग आसावरी ॥ गौरीपति पूजति ब्रजनारि । नेम
धर्मसों रहति क्रिया युत बहुत करति मनुहारि॥इहै कहति पति देह उमापति गिरिधर नंद कुमार ।
शरनराखिलेवहु शिवशंकर तनहि नशावतमार ॥ कमल पुहुपमा तूल पत्र फल नाना सुमन सुवास ।
महादेव पूजति मन वच क्रम करि सूर श्यामकी आस ॥ ५ ॥ राग रामकली ॥ शिवसों विनय करति
कुमारि । जोरिकर मुख करति अस्तुति बडे प्रभु त्रिपुरारि ॥ शीत भीत न करत सुंदरि कृश भई
सुकुमारि । छहो ऋतु तप करति नीके गृहको नेह बिसारि ॥ ध्यानधरि करजोरि लोचन मूँदि
एक एक याम । विनय अंचल छोरि रविसों करतिहैं सब वाम ॥ हमहिं होहु कृपालु दिनमणि
तुम विदित संसार । काम अति तनु दहत दीजै सूर श्याम भर्तार ॥ ६ ॥ राग नटनारायण ॥ रविसों
विनय करति कर जोरैं । प्रभु अंतर्यामी यह जानी हम कारण जप तप जल खोरैं ॥ प्रगटभए

प्रभु जलही भीतर देखि सबनको प्रेम । मींडत पीठि सबनिकी पाछे पूरण कीन्हे नेम ॥ फिरि देखै तो कुँवर कन्हाई रुचिसों मींजत पीठि । सूर निरखि सकुचीं ब्रज युवती परी श्यामतनु डीठि॥ ॥ ७॥ राग देवगंधार ॥ अति तप देखि कृपा हरि कीन्हों । तनुकी जरनि दूरिभई सबकी मिलि तरुणिन सुख दीन्हों ॥ नवलकिशोर ध्यान युवती मन ऊँहे प्रगट दिखायो । सकुचि गई अँग वसन सँभारति भयो सबनि मनभायो ॥ मन मन कहति भयो तप पूरण आनँद उर न समाई । सूरदास प्रभु लाज न आवति युवतिन माँझ कन्हाई॥ ८॥ राग सारंग ॥ हँसत श्याम ब्रजघरको भागे । लोगनको यह कहति सुनावति मोहन करन लँगरई लागे ॥ हम अस्नान करत जलभीतर आपुन मींजत पीठि कन्हाई । कहा भयो जो नंदमहरसुत हमसों करत अधिक ढीठाई ॥ लरिकाई तबहींलों नीकी चारि बरप की पांच । सूर जाइ कहिहैं यशुमतिसों श्याम करत ए नाच॥ ९॥ प्रेम विवश सब ग्वालि भईउरहन दैन चलीं यशुमतिको मनमोहनके रूप रई ॥ पुलकि अंग अँगिया उर दरकी हार तोरि कर आपु लई । अंचल चीर घात नख उर करि यहि मिप करि नँदसदन गई ॥ यशोमति माई कहा सुत सिखयो हमको जैसे हाल कियो । चोली फारि हार गहि तोरचो देखो उर नखघात दियो ॥ आंचर चीर अभूषण तोरे घेरि धरत उठि भागि गयो । सूर महरि मन कहति श्याम धौं ऐसे लायक कबहिं भयो॥ ८१०॥ राग गौरी ॥ महरि श्यामको बरजति काहि न । ऐसे हाल किये हरि हमको भई कहूं जग आहिन ॥ और बात एक सुनहुँ श्यामकी अतिहि भएहैं ढीठ । वसन बिना अस्नान करति हम आपुन मींजत पीठ ॥ आपु कहति मेरो सुत बारो हियो उघारि दिखायो । सुनतहु लाज कहतहु न आवै तुमको कहा लजायो ॥ यह बाणी युवतिन सुख सुनिकै हँसि बोली नँदरानी । सूर श्याम तुम लायक नाहीं बात तुम्हारी जानी ॥ ११ ॥ राग गौरी ॥ बात कहौ सो लहै बहै री । बिना भीति तुम चित्र लिखतिहौ सो कैसे निबहै री ॥ तुम चाहतहो गगन तुरैया माँगे कैसे पावहु ।आवतही मैं तुम लखि लीन्ही कहि मोहिं कहा सुनावहु ॥ चोरीरही छिनारो अब भई जान्यो ज्ञान तुम्हारो । औरै गोप सुतन नहिं देखौ सूर श्याम है बारो ॥१२॥ राग मलार ॥ ग्वालिनि घरहीकी बाढी । निशि दिन देखत अपनही आँगन ठाढी ॥ कबहिं गुपाल कंचुकी फारी कब में ऐसे योग। अबहीं संग खेलन सीखे यह जानत सब लोग ॥ नितही झगरतहैं मनमोहन मूरति देखि प्रेमरस चाखी । सूरदास प्रभु अटक न मानत ग्वाल सबैहैं साखी॥ १३ ॥ राग गौरी ॥ यहि अंतर हरि आइ गए । मोर मुकुट पीतांबर काछे अतिकोमल छबि अंग भए ॥ जननि बुलाइ बांह गहि लीन्हो देखहु री मदमाती । इनहीको अपराध लगावति कहा फिरत इतराती ॥ सुनिहैं लोग मष्ट अबहूं करि तुमहि कहांकी लाज । सूर श्याम मेरो माखन भोगी तुम आवति बे काज॥१४॥राग केदारो॥अबहीं देखे नवल किशोर । घर आवतही तनक भये हैं ऐसे तनके चोर ॥ कछु दिन करि दधि माखन चोरी अब चोरत मन मोर । विवश भई तनु सुधि न सँभारति कहत बात भई भोर ॥ यह बाणी कहतही लजानी समुझि भई जिय ओर । सूर श्याम मुख निरखि चली घर आनँद लोचन लोर ॥ १५ ॥ राग नटनारायण ॥ ब्रज घर गई गोपकुमारि । नेकहूं कहुँ मन न लागत कामधाम बिसारि ॥ मात पितको डर न मानत सुनत नाहिन गारि । हठ करति विरुझाति तब जिय जननि जानत बारि ॥ प्रातही उठि चलीं सब मिलि यमुनातट सुकुमारि । सूर प्रभु ब्रत देखि इनको नाहिन परत सँभारि ॥ १६ ॥ राग गौरी ॥ यमुनातट देखे नँदनंदन । मोर मुकुट मकराकृत कुंडल पीत वसन मनुचंदन॥लोचन तृप्त भए दरशनते उरकी तपति बुझानी । प्रेममगन तब भई सुंदरी उर गद गद मुखवानी ॥ कमल

नयन तटपर हैं ठाढे सकुचहिं मिलि ब्रजनारी। सूरदास प्रभु अंतर्यामी ब्रजपूरण पगधारी॥ १७॥ राग नट॥ बनत नहीं यमुनाको ऐबो॥सुंदर श्याम घाटपर ठाढे कहौ कौन बिधि जैबो॥ कैसे बसन उतारि धरैं हम कैसे जलहि समैबो। नँदनंदन हमको देखैंगे कैसे करि जो अन्हैबो॥ चोली चीर हार लै भाजत सो कैसे करि पैबो। अंकम भरि भरि लेत सूर प्रभु कालि न एहिपथ ऐबो॥ राग रामकली॥ कैसे बनै यमुना अस्नान॥नंदको सुत तीर बैठो बडो चतुर सुजान॥हार तोरै चीर फारै नयन चलै चुराइ। कालि धोखे कान्ह मेरी पीठि मीजै आइ॥कहति युवती बात सुनि सब थकित भई ब्रजनारि। सूर प्रभुको ध्यान धर मन रविहि बांह पसारि॥ १८॥ राग गूजरी॥ अति तप करति घोषकुमारि। कृष्णपति हम तुरत पावैं कामआतुर नारि॥ नैनमूँदति दरश कारण श्रवण शब्द बिचारि। भुजा जोरति अंक भरि हरि ध्यान उर अँकबारि॥ शरद ग्रीषम डरति नाहीं करति तपु तनुगारि। सूर प्रभु सर्वज्ञ स्वामी देखि रीझे भारि॥ १९॥ राग धनाश्री॥ब्रजवनिता रविको करजोरैं। शीत भीत नाहिं करति छहौं ऋतु त्रिविधकाल यमुनाजल खोरैं॥ गौरीपति पूजति तप साधति करति रहति नित नेमू। भोग रहित निशि जागि चतुर्दशि यशुमति सुतके प्रेमू॥ हमको देहु कृष्णपति ईश्वर और नहीं मन आन। मनसा बाचा कर्मणा हमरे सूर श्यामको ध्यान॥ ८२०॥ नीके तप कियो तनुगारि। आपु देखत कदमपर चढि मानि लई मुरारि॥ बर्षभरि व्रतनेम संयम श्रम कियो मोहिंकाज। कैसेहू मोहिं भजै कोऊ मोहिं बिरदकी लाज॥ धन्य व्रत इन कियो पूरण शीततपनि निवारि। कामआतुर भजैं मोकों नवतरुनि ब्रजनारि॥कृपान|थ कृपालु मय तब जानि जनकी पीर। सूरप्रभु अनुमान कीन्हों हरों इनको चीर॥२१ राग बिलावल॥बसन हरे सब कदम चढाये।सोरह सहस गोप कन्यनके अंग अभूषन सहित चोराये॥अति बिस्तार नीपतरु तामें लै लै जहां तहां लपटाये। मणि आभरन डार डारन प्रति देखत छवि मनही अटकाए॥ नीलांबर पाटंबर सारी श्वेत पीत चूनरी अरु नाए।सूरश्याम युवतिन व्रत पूरनकोकल कदमडार फललाए॥२२॥रागसुगही॥आपु कदम चढ़ि देखत श्याम। वसन अभूषन सब हरि लीन्हे बिनावसन जलभीतर बाम॥ मूंदत नयन ध्यान धरि हरि को अंतर्यामी लीन्हों जान। बारबार सवितासों मांगै हम पावैं पति सुंदरश्याम॥ जलते निकसि आइ तट देख्यो भूषण चीर तहां कछु नाहिं। इत उत हेरि चक्रतभई सुंदरि सकुचिगई फिरि जलही माहिं॥नाभि प्रयंत नीरमें ठाढ़ीं थरथर अंग कँपति सुकुमारि। को लैगयो बसन आभूषण सूरश्याम उर प्रीति बिचारि॥२३॥आवहु निकसि घोषकुमारि। कदमपरते दरश दीन्हों गिरिधरन बनवारि॥ नैन भरि व्रतफलहि देख्यो फरचोहै द्रुमडार। व्रत तुम्हारो भयो पूरण कह्यो नंद कुमार॥ सलिलते सब निकसि आवहु वृथा सहत तुषार। देतहौं किन लेउ मोसों चीर चोली हार॥ बाँहँ टेकि विनयकरौं मोहि कहत बारंबार। सूरप्रभु कह्यो मेरे आगे आनि करहु शृंगार॥ २४॥ राग रामकली॥ ग्वालिन अपनो चीर लै री॥जलते निकसि निकसि तट द्वौ कर जोरि शीश दै री॥कतहै शीत सहति ब्रजसुंदरि व्रतपूरण भै री। मेरे कहे आइ पहिरौ पट कृशतनु हेम जरै री॥ हौं अंतर्यामी जानत सब अति यह पैज करै री। करिहौं पूरणकाम तुम्हारो शरद रास टेरी॥ संतत सूर स्वभाव हमारो कत भय काम डरी। कवनेहुँ भाव भजै कोउ हमको तिन तनु ताप हरै री॥ २५॥ हमारो अंबर देहु मुरारी। लै सब चीर कदम चढि बैठे हम जल मांझ उघारी॥तुमतौ कहावत हौ नँदनंदन हम वृषभानु दुलारी। तुम्हरो तौ अंबर जवहीं देहौं जलते निकसि होहु सब न्यारी॥ तटपर बिना वसन क्यों आवैं लाज लगतिहै भारी। चोली हार तुमहिंको दीन्हों चीर हमहिं देहु डारी॥ तुम

याही बात अचंभव भाषत नांगी आवहु नारी । सूर श्याम कछु छोह करौ जू शीत गई तन मारी ॥ ॥ २६ ॥ राग आसावरी॥हाहा करति घोषकुमारि ।शीतते तन कँपत थर थर वसन देहु मुरारि ॥ मनहि मन अतिही भयो सुख देखिकै गिरिधारि । जो पुरुष स्त्री अंग देखै कहत दोषहै भारि॥निकनहिं तुम छोह आवत गई हिम सब मारि।सूर प्रभु अतिही निठुरहो नंदसुत बनवारि॥२७॥ राग बिलावल ॥ लाज ओट यह दूरि करौ । जोइ मैं कहौं करौ तुम सोई सकुच बापुरेहि कहा करौ ॥ जलते तीर आइ कर जोरहु मैं देखौं तुम विनयकरौ । पूरण व्रत अब भयो तुम्हारो गुरुजन शंका दूरि करौ ॥ अब अंतर मोसों जिन राखौ बार बार हठ वृथा करौ । सूर श्याम कह चीर देतहौं मो आगे शृंगार करौ ॥ ॥ २८ ॥ जलते निकसि तीर सब आवहु । जैसे सविताासों कर जोरें तैसेहि जोरि देखावहु ॥ नव बाला हम तरुन कान्ह तुम कैसे अंग दिखावैं । जलहीमें सब बाँह टेकिकै देखहु श्याम रिझावैं॥ ऐसे नहिं रीझौ मैं तुमको तटही बाँह उठावहु । सूरदास प्रभु कहत हार चोली वस्त्र तब पावहु ॥ २९ ॥ राग बिलावल ॥हमारो देहु मनोहर चीर । कांपत शीत तनहि अति व्यापत हिम सम यमुनानीर॥ मानहिंगी उपकार रावरो करो कृपा बलबीर । अतिही दुखित प्राण वपु परसत प्रबल प्रचंड समीर॥ हम दासी तुम नाथ हमारे बिनवति जलमें ठाढी ॥ मानहुं विकसि कुमोदिनि शशिसों अधिक प्रीति उर बाढी।जो तुम हमैं नाथ कै जान्यो यह मांगे हम देहु। जलते निकसि आइ बाहेर ह्वै वसन आपने लेहु॥ कर धरि शीश गई हरि सन्मुख मनमें करि आनंदाह्वै कृपालु सूरज प्रभु अंबर दीने परमानंद ॥३०॥ राग जैतश्री॥तरुनी निकसि निकसि तट आई । पुनि पुनि कहत लेहु पट भूषण युवती श्याम बुलाई॥जलते निकसि भई सब ठाढी कर अँग ऊपरदीन्हे । बसन देहु आभूषन राखहु हाहा पुनि पुनि कीन्हे ॥ ऐसे कहाबतावतिहौ मोहिं बाहैं उठाय निहारो । करसों कहा अंग उर मूंदो मेरे कहे उघारो ॥ सूर श्याम सोई हम करिहै जोइ जोइ तुम सब कैहौ।लैहैं दाउँ कबहुँ हम तुमसों बहुरि कहां तुम जैहौ॥ ॥३१॥रागरामकली॥ ललना तुम ऐसे लाड़ लड़ाए । लैकर चीर कदमपर बैठे किहिं ऐसे ढँग लाए ॥ हाहा करति कंचुकी मांगति अंबर दिए मन भाए । कीनी प्रीति प्रगट मिलिबेकी अँखियन शर्म गनाए ॥ दुख अरु हाँसी सुनहु सखी री कान्ह अचानक आए । सूरदासके प्रभुको मिलनो अब कैसे दुरत दुराए॥३२॥रागनट॥सोरहसहस घोषकुमारि । देखि सबको श्याम रीझे रही भुजा पसारि । बोलि लीन्हीं कदमके तर इहां आवहु नारि। प्रगट भए तहां सबनिको हरि काम द्वंद्व निवारि ॥ बसन भूषन सबन पहिरे हरषभै सुकुमारि । सूरप्रभु गुण भलेहैं ऐसे तुम बनवारि ॥ ॥ ३३ ॥ दृढव्रत कियो मेरे हेत । धन्य धन्य कहि नंदनंदन जाहु सबै निकेत ॥ करौं पूरण काम तुम्हरो शरद रास रमाइ । हरषभई यह सुनत गोपी रहीं शीश नवाइ ॥ सबनिको अँग परस कीन्हो व्रत कियो तनु गारि । सूर प्रभु सुख दियो मिलिकै व्रज चलीं सुकुमारि ॥ ३४ ॥ ॥ राग सूही ॥ व्रत पूरण कियो नंदकुमार । युवतिनके मेटे जंजार॥जप तप करि अब तन जिनि गारो । तुम घरनी मैं भर्ता तुम्हारो॥अंतर शोच दूरि करि डारहु । मेरो कह्यो सत्य उर धारहु॥शरद रास तुम आश पुरावहुँ । अंकम भरि सबको उर लावहुँ॥यह सुनि सब मन हर्ष बढायो । मन मन कह्यो कृष्ण पति पायो ॥ जाहु सबै घर घोषकुमारी । शरदरास देहौं सुख भारी॥सूर श्याम प्रगटे गिरिधारी। आनँद सहित गई घर नारी॥३५॥ राग आसावरी ॥ शिवशंकर हमको फल दीन्हों । पुहुप पान नाना रस मेवा पटरस अर्पण लैलै कीन्हों ॥ पाइँ परी युवती सब यह कहि धन्य धन्य त्रिपुरारी । तुरतहि फल पूरन हम पायो नंदसुवन गिरिधारी ॥ विनय करति सविता तुमसरि को पयअंजलि कर जोरि ।

सूर श्याम पति तुमते पायो यह कहि घराहि बहोरि ॥ ३६ ॥ अथ वस्त्रहरनलीला दूसरी ॥ राग सूही ॥ नँदनंदन वर गिरिवर धारी। देखत रीझी घोषकुमारी ॥ मोर मुकुट पीतांबर काछे। आवत देखे गाइन पाछे ॥ कोटि इंदुछबि वदन बिराजै। निरखि अंग प्रति मन्मथ लाजै ॥ रवि शत छबि कुंडल नहिं तूलै। दशन दमक द्युति दामिनि भूलै ॥ नैन कमल मृगशावक मोहै। शुकनासा पटतरको कोहै ॥ अधर बिंब फल पटतर नाहीं। विद्रुम अरु बंधूक लजाहीं ॥ देखत रीझि रही ब्रजनारी। देह गेहकी सुरति बिसारी ॥ यह मनमें अनुमान कियो तब। जप तप संयम प्रेम करौं अब ॥ बारबार सविताहि मनावति। नँदनंदन पति देहु सुनावति ॥ नेम धर्म तप साधन कीजै। शिवसों मांगि कृष्णपति दीजै ॥ वरष दिवसको नेम लियो सब। रुद्रहि सेवहु मन वच क्रम अब ॥ दृढविश्वास व्रतहिको कीन्हों। गौरीपति पूजन मन दीन्हों ॥ षट दश सहस जुरीं सुकुमारी। व्रतसाधत नीके तनु गारी ॥ प्रात उठे यमुनाजल खोरे। शीत उष्ण कहुँ अंग न मोरे ॥ पतिके हेत नेम तप साधैं। शंकरसों यह कहि अवराधैं ॥ कमल पत्र मातूल चढावैं। नयन मूँदि यह ध्यान लगावैं॥ हमको पति दीजै गिरिधारी। बडे देव तुमहौ त्रिपुरारी ॥ और कछू नाहिं तुमसों मांगों। कृष्णहेतु यह कहि पालागों। ऐसेहि करत बहुत दिन बीते। प्रभु अंतर्यामी मन चीते ॥ एकदिवस आपुन आए तहां। नवतरुनी अस्नान करत जहां ॥ बसन धरे जलतीर उतारी। आपुन जल पैठीं सुकुमारी ॥ कृष्णहेतु अस्नान करैं जहां। सबके पाछे आपु नहैं तहां। मींजत पीठि प्रेम अतिबाढ़ी। चकृत भई युवती सब ठाढ़ी ॥ देखे नँदनंदन गिरिधारी। व्रतफल प्रगट भये बनवारी ॥ सकुचि अंग जलपैठि लुकावैं। वार बार हरि अंकम लावैं ॥ लाज नहीं आवतिहै तुमको। देखत बसन बिना सब हमको ॥ हँसत चले तब नंदकुमार। लोगन सुनवति करत पुकार ॥ हार चीर लै चले पराई। हांक दियो कहि नंददोहाई ॥ डारि बसन भूषन तब भागे। श्याम करन अब ढीठो लागे ॥ भाजे कहां चलौगे मोहन। पाछे आइ गई तुव गोहन ॥ तनुकी सुधि सँभार कछु नाहीं। वसन अभूषण पहिरत जाहीं ॥ चीरफटे कंचुकि बँदछूटे। लेत न बनत हारहैं टूटे ॥ प्रेम सहित सुख खीझत जाहीं। झूठहि बार बार पछिताहीं॥ गईं सबै तिय नंद महर घर। यशुमति पास गईं सब दरदर ॥ देखहु महरि श्यामके ए गुन। जैसे हाल करे सबके उन ॥ चोली चीर हार देखरायो। आपुन भागि इनहिको आयो ॥ यमुनातट कोउ जान न पावै। संग सखा लिये पाछे धावै ॥ तुम सुतको बरजहु नँदरानी। गिरिधर करत नहीं भली वानी ॥ लाज लगति एक बात सुनावति। अंचल छोरि हियों दिखरावति ॥ यह देखत हँसि उठी यशोदा। कछु रिसि कछु मनमें करि मोदा ॥ आइगए तेहि समय कन्हाई। बाहँगही लै तुरत देखाई ॥ तनक तनक कर तनक अँगुरिया। तुम यौवन भरि नवल बहुरिया॥ जाहु घरहि तुमको मैं चीन्ही। तुम्हरी जाति जानि मैं लीन्हीं॥ तुम चाहति सो ह्यां ना पैहौ। और बहुत ब्रजभीतर लैहौ ॥ बारबार कहि कहा सुनावति। इन वातन कछु जान न आवति ॥ देखहु री ए भाव कन्हाई। कहां गई तबकी तरुनाई ॥ महरि तुमाहिं कछु दोषन नाहीं। हमको देखि देखि मुसकाहीं ॥ इनके गुण कैसे कोउ जानै। औरै करत और धरि ठानै ॥ देन उरहनो तुमकों आई। नीकी पहिरावनि हम पाई ॥ चलीं सबै युवती घर घरको। मनमें ध्यान करतिहैं हरिको ॥ वरष दिवस तप पूरण कीन्हें। नंद सुवनको तन मन दीन्हें॥ प्रातहोत यमुना फिरि आईं। प्रथम रहे चढि कदम कन्हाई॥ तीर आइ युवती भईं ठाढी। उर अंतर हरिसों रति बाढी ॥ कह्यो चलो यमुनाजल खोरैं। अंगन आभूषण सब छोरैं॥ चोली छोरैं हार उतारैं। करसों शिथिल

केशनिरवारैं ॥ इत उत चितवत लोग निहारैं । कह्यो बसन अब चीर उतारैं ॥ बसन अभूषण धरचौ उतारी । जल भीतर सब गईं कुमारी ॥ माघ शीतको भीत न मानैं । पटऋतुको गुण समकरि जानैं ॥ बारबार बूडैं जलमाहीं । नेकहु जलकों डरपति नाहीं ॥ प्रातहुते यक याम नहाहीं । नेम धर्महीमें दिन जाहीं ॥ इतनो कष्ट करैं सुकुमारी । पतिके हेतु गोवर्द्धनधारी॥अतितप करति देखि गोपाला । मनमें कह्यो धन्य ब्रजवाला ॥ हरि अंतर्यामी सब जानें । छिन छिनकी यह सेवा मानै ॥ ब्रतफल इनहिं प्रगट देखरावों । बसन हरों लै कदम चढ़ावों ॥ तनु साधैं तप कियो कुमारी । भजी मोहिं कामातुर नारी ॥ सोरह सहस गोप सुकुमारी । सबके बसन हरे बनवारी ॥ हरत बसन कछु बार न लागी । जलभीतर युवती सब नागी ॥ भूषन बसन सबै हरि ल्याये । कदम डार जहँ तहँ लटकाये ॥ ऐसो नीप वृक्ष बिस्तारा । चीर हार धौं कित कहँ डारा ॥ सबै समाने तनु प्रति डारा।यह लीला रची नंदकुमारा ॥हार चीर मानों तरु फूल्यो । निरखि श्याम आपुन अनुकूल्यो ॥ नेमसहित युवती सब न्हाई । मन मन सविता बिनय सुनाई ॥ मूँदहिं नैन ध्यान उर धारे । नँदनंदन पति होंय हमारे ॥रवि करि विनय शिवहि मन दीन्हों । हृदय भाव अवलोकन कीन्हों ॥ त्रिपुरसदन त्रिपुरारि त्रिलोचन । गौरीपति पशुपति अघमोचन ॥ गरल अशन अहि भूषन धारी । जटा धरन गंगा शिर प्यारी ॥ करति बिनय यह मांगति तुमसों । करहु कृपा हँसिकै आपुनसों ॥ हम पावैं सुत यशुमतिको पति।इहै देहु करि कृपा देव रति ॥ नित्यनेम करि चलीं कुमारी । एक याम तनको हिम जारी॥ब्रजललना कह्यो नीर जडाई । अति आतुरह्वै तटको धाई ॥ जलते निकसि तरुनि सब आईं । चीर अभूषन तहां न पाई॥सकुचि गईं जलभीतर धाई।देखि हँसत तरु चढे कन्हाई॥बार बार युवती पछिताईं । सबके बसन अभूपन नाईं ॥ ऐसो कौन सबै लै भाग्यो । लेतहु ताहि विलम नहिं लाग्यो ॥ माघ तुपार युवति अकुलाहीं । ह्यां कहुँ नंदसुवन तौ नाहीं ॥ हम जानी यह बात बनाई । अंबर हरि लैगए कन्हाई ॥ हौ कहुँ श्याम विनय सुनि लीजै । अंबर देहु कृपाकरि जीजै ॥ थर थर अंग कँपति सुकुमारी । देखि श्याम नहिं सकै सँभारी ॥ एहि अंतर प्रभु वचन सुनाए । ब्रतको फल दरशन सब पाए ॥ कहा कहति मोसों ब्रजवाला । माघशीत कत होत विहाला॥अंबर जहां बताऊं तुमको । तौ तुम कहा देहुगी हमको ॥ तनं मन अर्पन तुमको कीन्हो । जो कछु हतो सो तुमहीं दीन्हों ॥ और कहा लैहो जू हमसों । हम मांगतहैं अंबर तुमसों ॥ यह सुनि हँसे दयालु मुरारी । मेरो कह्यो करो सुकुमारी ॥ जलते निकसि सबै तट आवहु । तबहिं भले अंबर तुम पावहु॥भुजा पसारि दीन ह्वै भापहु।दोउ कर जोरि जोरि तुम राखहु॥सुनहु श्याम इक बात हमारी।नगन कहूं देखिये न नारी ॥ यह मति आपु कहां धौं पाई ॥आजु सुनी यह बात नवाई॥ ऐसी साध मनहिं में राखहु। यह वाणी मुखते जनि भाषहु ॥ हम तरुनी तुम तरुण कन्हाई।बिना बसन क्यों देहिं देखाई ॥ पुरुप जाति तुम यह का जानौं । हाहा यह मुखमें जनि आनौं । तौ तुम बैठिरहौ जलहीं सब । बसन अभूपन नाहिं चाहति अब ॥ तबहि देहुँ जल बाहिर आवहु । बाहँ उठाइ अंग देखरावहु ॥ कतहो शीत सहति सुकुमारी । सकुच देहु जलहीमें डारी ॥ फरचो कदम ब्रत फरनि तुम्हारो । अब कहा लज्जा करति हमारो ॥ लेहु न आइ आपुने ब्रतको । मैं जानत या ब्रतके धनको ॥ नीकें ब्रत कीन्हों तनु गारी । ब्रत ल्यायो धरि मैं गिरिधारी॥तुम मनकामन पूरण करिहौं । राससंग रचि रति सुख भरिहौं॥ यह सुनिकै मन हर्ष बढायो । ब्रतको पूरण फल हम पायो ॥ छांडहु तुम यह टेक कन्हाई । नीर माहँ बहु गईं जडाई ॥ आभूपण सब आपुहि लेहू ॥ चीर कृपाकै हमको देहू॥हाहा लागें पाइँ तुम्हारे॥पाप

होतहै जाड न मारे ॥ आजुहिते हम दासि तुम्हारि।कैसे अंग देखावैं उघारी॥अंग देखायहि अंबर पैहौ। नातरु वैसेहि दिवस गँवैहौ ॥ मेरे कहे निकसि सब आवहु। थोरेहि हमको भलो मनावहु ॥ सुहां चही तरुनी मुसुकानी।यह आपुन थोरी करि जानी ॥ जोइ जोइ कहो सो तुमको सोहै। आजु तुम्हारे पटतर कोहै ॥ हमरी पति सब तुम्हरे हाथ। तुमहि कहौ ऐसी ब्रजनाथा॥ तप ततु गारि कियो जेहि कारण।सो फल लग्यो नीपतरु डारन॥ आवहु निकसि लेहु पट भूषन। यह लागै हमको सब दूषन॥ अब अंतर कत राखत हमसों। बारंबार कहतहौं तुमसों ॥ गोपिन मिलि यह बात बिचारी। अब तौ टेक परे बनवारी ॥ चलहु न जाइ चीर अवलेहू। लाज छांडि उनको सुख देहू ॥ जलते निकसि तीर सब आईं। बारबार हरि हर्ष बुलाईं ॥ बैठिगईं तरुणी सकुचानी। देहु श्याम हम अतिहि लजानी ॥ छाँडिदेहु यह बात सयानी। वैसेहि करौ कही जो बानी॥कर कुच अंग ढाँकि भईं ठाढी। वदन नवाइ लाज अति बाढी ॥ देहु श्याम अंबर अब डारी। हाहा दासी सबै तुम्हारी ॥ ऐसे नहीं वसन तुम पावहु। बाँहँ उठाइ अंग देखरावहु ॥ कह्यो मानि युवतिनि करजोरे। पुनि पुनि युवतीं करति निहोरे ॥ धन्य धन्य कहि श्री गोपाला। निहचै व्रत कीन्हों ब्रजबाला ॥ आवहु निकट लेहु सब अंबर। चोली हार सुरंग पटंबर ॥ निकट गईं सुनिकै यह बानी। तरुनी नग्न अंग अकुलानी॥ भूषन बसन सबनको दीन्हों। तियके हेतु कृपा हरि कीन्हों ॥ चीर अभूषन पहिरे नारी। कह्यो ताहि ऐसे बनवारी ॥ तब हँसि बोले कृष्ण मुरारी। मैं पति तुम मेरी सब प्यारी ॥ तुमहि हेतु यह वपु ब्रज धाऱ्यो।तुम कारण वैकुंठ बिसाऱ्यो॥अब व्रतकरि तुम तनुहि न गारौ। मैं तुमते कहुँ होत न न्यारो। मोहिं कारण तुम अति तप साध्यो। मन मनकै मोको अवराध्यो ॥ जाहु सदन अब सब ब्रजबाला। अंग परासि मेटे जंजाला ॥ युवतिन बिदा दई गिरिधारी। गईं घरनि सब घोषकुमारी॥ वस्त्रहरनलीला प्रभु कीन्हों।ब्रजतरुणी व्रतको फल दीन्हों॥ यह लीला श्रवणनि सुनि भावै। औरनि सिखवै आपुन गावै ॥ सूर श्याम जनके सुखदाई। दृढ़ताईमें प्रगट कन्हाई ॥ ३७ ॥ अथ पनघटको प्रस्ताव ॥ राग अडानो ॥हौं गईही यमुनजल लेन माई हो सांवरेसे मोही।सुरंग केसरि खौरि कुसुमकी दाम अभिराम कंठ कनककी दुलरी झलकत पीतांबरकी खोही ॥ नान्ही नान्ही बूँदनमें ठाढोरी बजावै गावै मलारकी मीठी तान मैं तो लालाकी छबि नेकहु न जोही। सूर श्याम मुरि मुसकानि छबी री अँखियनमें रही तब न जानोहो कोही ॥ ३८ ॥ चटकीलो पट लपटानो कटि बंसीवट यमुनाके तट नागरनट। मुकुट लटकि अरु भृकुटी मटक देखौ कुंडलकी चटकसों अटकि परी दृगनि लपट ॥ आछी चरणनि कंचन लकुट ठटकीली बनमाल करटेके द्रुमडार टेढे ठाढे नँदलाल छबि छाइ घट घट। सूरदास प्रभुकी बानक देखे गोपी ग्वाल टारे न टरत निपट आवै सौंधेकी लपट ॥ ॥३९राग सुघराई॥बजावै मुरलीकी तान सुनावै यहिबिधि कान्ह रिझावै। नटवर वेष बनाये चटक सों ठाढो रहै यमुनाके तीर नित नव मृग निकट बोलावै॥ऐसो को जो जाइ यमुनते जल भरि ल्यावै। मोरमुकुट कुंडल वनमाला पीतांबर फहरावै ॥ एक अंग शोभा अवलोकत लोचन जल भरि आवै॥ सूर श्यामके अंग अंगप्रति कोटि काम छबि छावै ॥ ४० ॥ राग पूरवी ॥ पनघट रोकेहि रहत कन्हाई। यमुनाजल कोउ भरन न पावत देखतही फिरिजाई ॥ तबहिं श्याम इक बुद्धि उपाई आपुन रहे छुपाइ। तब ठाढे जे सखा संगके तिनको लिये बोलाइ॥बैठारे ग्वालनको द्रुमतर आपुन फिरि फिरि देखत। वडी बार भई कोऊ न आई सूर श्याम मन लेखत॥४१॥राग देवगंधार॥युवति इक आवत देखी श्याम। द्रुमके ओट रहे हरि आपुन यमुनातट गई बाम॥ जल हलोरि गागरि भरि नागरि जबही

शीश उठायो ॥ घरको चली जाइ ता पाछे शिरते घट ढरकायो ॥ चतुर ग्वालि कर गह्यो श्याम को कनक लकुटिआ पाई। औरनिसों करि रहे अचगरी मोसों लगत कन्हाई ॥ गागरि लै हँसिदेत ग्वालि कर रीतो घट नहिं लैहौं। सूर श्याम ह्यां आनि देहु भरि तबहिं लकुट कर देहौं ॥ ४२ ॥ राग कल्याण ॥ लकुट करकी हौं तव देहौं घट मेरो जब भरिदैहौं। कहा भयो जो नंद बडे वृषभानु आन हमहूं तुमसी हैं समसरि मिलि करिकैहौ ॥ एक गाँव एक ठाँवको वास एक तुम कैहौ क्यों मैं सैहौं। सूर श्याम मैं तुम न डरैहौं जवावको जवाव दैहौं॥४३॥घट भरिदेहु लकुट तव दैहौं। हमहूं बडे महरकी बेटी तुमको नहीं डरैहौं। मेरी कनक लकुटिआ देरी मैं भरिदैहौं नीर। बिसरि गई सुधि तादिनकी तोहि हरे सबनके चीर ॥ यह वाणी सुनि ग्वारि विवशभई तनुकी सुधि बिसराइ। सूर लकुट कर गिरत न जानी श्याम ठगौरी लाइ ॥ ४४ ॥ राग हमीर ॥ घटभरि दियो श्याम उठाइ। नेक तनुकी सुधि न ताको चली ब्रज समुहाइ ॥ श्याम सुंदर नयन भीतर रहे आनि समाइ। जहां जहां भरि दृष्टि देखौं तहां तहां कन्हाइ ॥ उतहिते एक सखी आई कहति कहा भुलाइ। सूर अबहीं हँसत आई चली कहा गँवाइ ॥ ४५ ॥ राग टोडी ॥ अवहिं गई जल भरन अकेली अरी हो श्याम मोहनी घाली री। नँदनंदन मेरी दृष्टि परे आली फिरि चितवन उर शाली री ॥ कहा री कहौं कछु कहत न बनि आवै लगी मरमकी भाली री।सूरदास प्रभु मन हरि लीन्हों विवश भई हौं कासों कहौं आली री ॥४६॥ राग धनाश्री ॥ सुनत बात यह सखी अतुरानी।ताहि बाँहँ गहि घर पहुँचाई आपु चली यमुनाके पानी ॥ देखे आइ तहां हरि नाहीं चितवनि जहां तहां वितताती। जलभरि ठठकत चली घरहि तन वार बार हरिको पछितानी ॥ ग्वालिनि विकल देखि प्रभु प्रगटे हर्ष भयो तन तपति बुझानी। सूर श्याम अंकम भरि लीन्ही गोपी अंतरगतिकी जानी ॥ ४७ ॥ राग आसावरी॥ मिलि हरि सुख दियो तेहि बाल। तपति मिटिगई प्रेम छाकी भई रस वेहाल॥मगनहो डग धरति नागरि भवन गई भुलाइ। जलभरन ब्रजनारि आवति देखि ताहि बोलाइ ॥ जाति कितहै डगर छाँडि कह्यो इतको आइ। सुर प्रभुके रंग राची चितै रही चितलाइ ॥ ४८॥ राग धनाश्री ॥ काहू तोहिं ठगोरी लाई। बूझति सखी सुनति नाहिं नेकहु तुही किधौं ठग मूरी खाई॥ चौंकिपरी सपने जनु जागी तव वाणी कहि सखिन सुनाई। श्याम वरन एक मिल्यो ढोंटौना तेहि मोको मोहनी लगाई ॥ मैं जलभरे इतहिको आवति आनि अचानक अंकम लाई॥ सूर ग्वारि सखियनके आगे बात कहे सब लाज गँवाई ॥ ४९ ॥ राग टोडी ॥ आवतही यमुना भरे पानी। श्याम वरन काहूको ढोंटा निरखि वदन घरगई भुलानी ॥ उन मोतनमें उन तन चितयो तव हीते उन हाथ विकानी। उर धकधकी टकटकी लागी तनु व्याकुल मुख फुरत न वानी ॥ कह्यो मोहन मोहनी तू कोहै या ब्रजमें नहिं मैं पहिचानी। सूरदास प्रभु मोहन देखत जनु वारिध जल बूँद हेरानी ॥ ५० ॥ नेक न मनते टरत कन्हाई। यक ऐसेहिं छकि रही श्यामरस तापर इह इहि बात सुनाई ॥ वाको सावधान करि पठयो चली आपु जलको अतुराई। मोरं मुकुट पीतांवर काछे देख्यो कुँवर नंदको जाई॥ कुंडल झलकत ललित कपोलनि सुंदर नैन विशाल सुहाई। कह्यो सूर प्रभु ए ढँग सीखे ठगत फिरत हो नारि पराई ॥ ५१ ॥ कहा ठग्यो तुम्हरो ठगि लीन्हों। क्यों नहिं ठग्यो और कहा ठगिहौ औरहिके ठग तुमको चीन्हों ॥ कहो नाउ धरि कहा ठगायो सुनि राखै यह बात।ठगके लक्षण मोहि बतावहु कैसे ठगके घात॥ठगके लक्षण हमसों सुनिए मृदु मुसकनि मन चोरत।नैन सैन दे चलत सूर प्रभु अंग त्रिभंग करि मोरत ॥५२॥ राग सूही ॥अतिहि करत

T

तुम श्याम अचगरी । काहूकी छीनतहौ गेंडुरी काहूकी फोरतहौ गगरी ॥ भरनदेहु यमुनाजल हमको दूरिकरौ बातैं ए लँगरी । पैंडे चलन न पावै कोऊ रोकि रहत लरकन लै डगरी। घाट बाट सब देखत आवत युवती डरन मरतिहै सिगरी । सूर श्याम तेहि गारी दीनो जो कोउ आवै तुमरी बगरी ९३॥ राग रामकली ॥ नीके देहु न मेरी गिंडुरी । लैजैहौ धरि यशुमति आगे आवहु री सब मिलि एक झुंडरी॥ काहू नहीं डरात कन्हाई बाट घाट तुम करत अचगरी । यमुना दह गेंडुरी फटकारी फोरी सब शिरकी अस गगरी ॥ भली करी यह कुँवर कन्हाई आजु मेटिहौं तुम्हरी लँगरी । चली सूर यशुमतिके आगे उरहन लै तरुनी ब्रज सगरी ॥ ९४ ॥ आनि न देहु ढोटौना ढीठ गेंडुरी पराई । तेरे कोऊ कहा करैगो धौं लरिहै हमसों भौजाई ॥ मेरे संगकी और गई ते जल भरि भरि घरते फिर आई । सूर श्याम गेंडुरी दीजै न तौ यशुमतिसों कैहौं जाई ॥ ९५ ॥ राग धनाश्री ॥आपुन चढे कदम पर धाई । वदन सकोरि भौंह मोरतहैं हांक देत करि नंद दोहाई ॥ जाइ कहौ मैयाके आगे लेहु सबै मिलि मोहिं बँधाई । मोको जुरि मारन जब आई तब दीनी गेंडुरि फटिकाई ॥ ऐसे करि मोको तुम पायो मनौं इनकी मैं करौं चेराई । सूर श्याम ये दिन बिसराए जब बांधे तुम ऊखल लाई ॥ ९६ ॥ राग आसावरी ॥ इहँई रहौ तौ बदौं कन्हाई । आपु गई यशुमतिहि सुनावन दैगई श्यामहि नंद दोहाई ॥ महरि मथति दधि सदन आपने एहि अंतर युवती सब आई । चितै रही युवतिनको आवत कहां आवतिहैं भीर लगाई ॥ मैं जानति तुमको हरि खिझई ताते सब उरहन लै धाई । सूरदास रस भरी ग्वालिनी ऐसो ढीठ कियो सुत माई॥९७॥ राग विलावल॥सुनहु महरि तेरो लाडिलो अति करत अचगरी । यमुन भरन जल हम गई तहां रोकत डगरी ॥ शिरते नीर ढराइ देत फोरी सब गगरी । गेंडुरि दई फटकारिकै हरि करतहै लँगरी ॥ नित प्रति ऐसेई ढंग करै हमसों कहै अगरी। अब बसबास नहीं बनै यहि तुव ब्रजनगरी॥आपु गयो चढि कदमही चितवत रहि सिगरी। सूर श्याम ऐसेही सदा हमसों करै झगरी ॥ ९८॥ राग रामकली॥ सुतको बरजि राखहु महरि। डगर चलन न देत काहुहि फोरि डारत ढहरि॥श्यामके गुण कछु नजानाति जाति हमसों गहरि । इहै लालच गाइ दशलिए बसतहै ब्रज थहरि ॥ यमुनतट हरि देखे ठाढे डरनि आवै वहरि । सूर श्यामहि नेक बरजौ करतहै अति चहरि ॥९९॥तुमसों कहति सकुचति महरि । श्यामके गुण नहीं जानति जाति हमसों गहरि।नेकहूं नाहिं सुनति श्रवणनि करति है हम चहरि । जल भरन को-उ नहीं पावति रोकि राखत डहरि ॥ अति अचगरी करत मोहन फटकि गेंडुरी दहरि । सूर प्रभुको कहा सिखयो रिसनि युवती झहरि ॥ ६० ॥राग धनाश्री ॥ कहा करौं मोसों कहौ तुमहीं । जो पाऊँ तौ तुमहि देखाऊं हाहा करिहौ अबहीं॥ तुमहूं गुण जानतिहौ हरिके ऊखल बाँधे जबहीं ।सँटिया लै मारन जब लागी तब बरज्यो मोहिं सबहीं॥लरिकाईते करत अचगरी मैं जाने गुण तबहीं । सूर हाल कैसे करिहौं धरि आवै धौं हरि अबहीं॥ ६१ ॥राग सारंग ॥ मैं जानतिहौं ढीठ कन्हैया । आवन तौ घर देहु श्यामको जैसी करौं सजैया ॥ मोसों करत ढिठाई मोहन मैं वाकी हौं मैया । और न काहूको वह मानै कछु सकुचत बल भैया॥ अब जो जाउँ कहां तेहि पावों कासों देइ धरैया । सूर श्याम दिन दिन लंगर भयो दूरि करै लँगरैया ॥ ६२ ॥ राग सूही ॥ युवति बोधि सब घरहि पठाई । यह अपराध मोहिं बकसौ री इहै कहतिहौ मेरी माई ॥ इतते चली घरनि सब गोपी उतते आवत कुँवर कन्हाई ॥ बीचहि भेंट भई युवतिन हरि नैनन जोरत गए लजाई ॥ जाहु कान्ह महतारी टेरति बहुत बडाई करि हम आई । सूर श्याम मुख निरखि निरखि हँसि मैं कैहौं जननी समुझाई ॥६३॥राग नट ॥सकुचत

गए घरको श्याम। द्वारहीते निरखि देख्यो जननी लागी काम ॥ इहै बाणी कहति मुखते कहाँ गयो कन्हाई। आप ठाढे जननि पाछे सुनतहै चित लाई ॥ जल भरन युवती न पावैं वाट रोकत जाइ। सूर सबके फोरि गागरि श्याम गयो पराइ ॥ ६४ ॥ राग नटनारायण ॥ यशुमति यह कहिकै रिस पावति। रोहिणि करति रसोई भीतर कहि कहि तिनहि सुनावति ॥ गारी देत बहू बेटिनिको वै धाई ह्यां आवति। हाहा करति सबनिसों मैंही कैसेहु खूंट छँडावति ॥ जाति पांतिसों कहा अचगरी यह कहि सुतहि धिरावति। सूर श्यामको सिखवत हारी मारेहु लाज न आवति ॥ ६५ ॥ राग सारंग ॥ तू मोहींको मारन जानति। उनके चरित कहा कोउ जानै उनहि कही तू मानति ॥ कदमतीरते मोहिं बुलायो गढ़ि गढि बातैं बानति। मटकत गिरी गागरी शिरते अब ऐसी बुधि ठानति ॥ फिरि चितई तू कहां रह्यो कहि मैं नहिं तोको जानति। सूर सुतहि देखतही रिसगइ मुख चूमति उर आनति ॥ ६६ ॥ राग गौरी ॥ झूठहि सुतहि लगावति खोरि। मैं जानति उनके ढँग नीके बातैं मिलवति जोरि ॥ वे यौवन मदकी सब माती कहाँ मेरो तनक कन्हाई। आपुहि फोरि गागरि शिरते उरहन लीन्हे आई ॥ तू उनके ढिग जाति कितहि है वै पापिनि सब सारि। सूर श्याम अब कह्यो मानि तू हैं सब ढीठ गुवारि ॥ ६७ ॥ राग मोहन ॥ मोहन बाल गोबिंदा माई मेरो कहा जानै बोलि। उरहन लै युवती सब आवति झूँठी बतियाँ जोरि ॥ कोऊ कहति गेंडुरि मेरि लीन्ही कोऊ कहति गगरी गयो फोरी। कोऊ चोली हार बतावति कान्हा तेरा भोरी ॥ अब आवै जो उरहन लैके तौ पठऊं मुँहमोरी। सूर कहां मेरो तनक कन्हाई आपुन यौवन जोरी ॥ ६८ ॥ राग कान्हरो ॥ ब्रज घर घर यह बात चलावत। यशुमतिको सुत करत अचगरी यमुना जल कोउ भरन न पावत ॥ श्याम बरन नटवर वपु काछे मुरली राग मलार बजावत। कुंडल छबि रवि किरनहूंते द्युति मुकुट इंद्र धनुते शोभावत ॥ मानत काहुन करत अचगरी गागरि धरि जल भुइँ ढरकावत। सूर श्यामको मात पिता दोउ ऐसे ढँग आपुनहिं पढावत ॥ ६९ ॥ राग गौरी ॥ करत अचगरी नंदमहरको। सखा लिये यमुनातट बैठो निवहत नाहिं सब लोग डहरको ॥ कोऊ खिझो कोऊ कितने बरजो युवतिनके मन ध्यान। मन क्रम वचन श्यामसुंदरते और न जानति आन ॥ इह लीला सब श्याम करतहैं ब्रज युवतिनके हेत। सूर भजे जेहि भाव कृष्णको ताको सोइ फल देत ॥ यमुनाजल कोउ भरन न पावै। आपुन बैठे कदम डार चढि गारी दैदै सबनि बोलावै ॥ काहूकी गगरी गहि फोरत काहू शिरते नीर ढरावै। काहूसों करि प्रीति मिलतुहै नैनसैन दे चितहि चुरावै ॥ बरबसही अँकवारि भरत धरि काहूसों अपनो मन लावै। सूर श्याम अति करत अचगरी कैसेहुं काहू हाथ न आवै ॥ ७० ॥ राग धनाश्री ॥ ब्रजगैंडे कोउ चलन न पावत। ग्वाल सखा सँग लीने डोलत दैदै हांक जहां तहां धावत ॥ काहूकी गेंडुरी फटकारत काहूकी गगरी ढरकावत ॥ काहूको मारिदै भाजत काहूको उठि अंकम लावत ॥ काहू नाहिं मानत ब्रजभीतर नंदमहरको कुँवर कहावत। सूर श्याम नटवर वपु काछे यमुनाके तट मुरली बजावत ॥ ७१ ॥ राग टोडी ॥ गोकुलके गैंडे एक सांवरो सो ढोंटा माई अँखियनके पैंडे पैठि जीके पैंडे पर्योहै। कल न परत छन गृह भयो सम वन तन मन धन प्राण सरबस हर्योहै ॥ भवन न भावै माई आंगन न रह्यो जाइ करै हाइ हाइ देखो जैसे हाल कर्योहै। सूरदास प्रभु नीके गावत मधुर सुर मानहु मुरलीमें पियूपरस भर्योहै ॥ ७२ ॥ राग नट ॥ राधा सखियन लई बोलाइ। चलहु यमुनाजलहि जैये चलीं सब सुखपाइ ॥ सबनि एक एक कलश लीन्हों तुरत पहुँची जाइ। तहां देख्यो श्याम सुंदर कुँवरि मन हरपाइ ॥ नंदनंदन देखि रीझे चितैरहे चितलाइ।

सुर प्रभुकी प्रिया राधा भरत जल मुसुकाइ ॥७३॥ राग गूजरी ॥ घरहि चली यमुना जल भरिकै। सखिन बीच नागरी बिराजति भई प्रीति उर हरिकै॥मंद मंद गति चलत अधिक छबि अंचल रह्यो फहरिकै। मोहन मोको मोहनी लगाई संगहि चले डगरिकै॥बेनीकी छबि कहत न आवै रही नितंबनि ढरिकै। सूर श्याम प्यारीके बश भए रोम रोम रस भरिकै ॥७४॥ राग जयतश्री॥गागरि नागरि जल भरि घर लीन्हें आवै॥सखियन बीच भरयो घट शिरपर तापरनैन चलावै॥ढुलति ग्रीव लटकति नकबेसरि मंद मंद गति आवै। भ्रुकुटी धनुष कटाक्षबाण मनो पुनि पुनि हरिहि लगावै ॥ जाको निरखि अनंग अनंगत ताहि अनंग बढावै॥सूर श्याम प्यारी छवि निरखत आपुहि धन्य कहावै॥७५॥ गागरि नागरि लिये पनिघटते चली घरहि आवै। ग्रीवा डोलत लोचन लोलत हरिके चितहि चुरावै ॥ ठठकति चलै मटकि मुँह मोरे वंकट भौंह चलावै। मनहु काम सैना अँग शोभा अंचल ध्वज फहरावै॥ गति गयंद कुच कुंभ किंकिनी मनहुँ घंट झहनावै । मोतिनहार जलाजल मानौं खुमीदंत झलकावै ॥ मानहु चंद महावत मुखपर अंकुश बेसरि लावै । रोमावली सूँडि तिरनीलौं नाभि सरोवर आवै ॥ पग जेहरिजंजीरनिजकरयो यह उपमा कछु पावै। घटजल झलकि कपोलनि किनुका मानों मदहि चुवावै ॥ बेनी डोलति दुहुँ नितंबपर मानहुँ पूंछ हलावै । गज शिरदार सूरको स्वामी देखि देखि सुख पावै ॥७६॥सखियन बीच नागरी आवै । छबि निरखत रीझे नँद नंदन प्यारी मनहि रिझावै॥ कबहुँक आगे कबहुँक पाछे नानाभाव बतावै। राधा यह अनुमान कियो हरि मेरे चितहि चोरावै ॥ आगे जाइ कनक लकुटलै पंथ सँवारि बतावै । निरखत छाँह जहां प्यारीकी तहांलै छाँह छुवावै ॥ छबि निरखत तनु वारत अपनो नागर जियहि जनावै। अपने शिर पीतांबर वारत ऐसे रुचि उपजावै॥ ओढि ओढनियां चलत देखावत यहि मिस निकटहि आवै। सूर श्याम ऐसे भावनिसों राधा मनहि रिझावै ॥७७॥ राग सारंग ॥ लग लागन नहिं पावत श्याम। तब एक भाव कियो कछु ऐसो प्यारी तनु उपजायो काम ॥ तव मिसकरि निकट आइ मुख हेरयो पीतांवर डारयो शिर वारि। यह छल करि मन हरयो कन्हाई कामविवश कीन्ही सुकुमारि ॥ पुलकित अंग अँगिया दरकानी उर आनंद अंचल फहरात। गागरि ताकि कांकरी मारै उचटि उचटि लागत प्रियगात॥ मोहन मन मोहनी लगाई सखिनसंग पहुँची घरजाइ। सूरदास प्रभुसों मन अटक्यो देह गेहकी सुधि विसराइ ॥७८॥ राग नट ॥ ग्वालिनि चली यमुन बहोरि । वाहि सब मिलि कहत आवहु कछू कहति निहोरि ॥ ज्वाब देति न हमहि नागरि रही वदन निहोरि। ठगिरही मन कहा सोचति काहू लियो कछु चोरि ॥ भुजाधरि करि कह्यो चलहि न आवै अबहीं खोरि। सूर प्रभुके चरित सखियन कहत लोचन ढोरि ॥७९॥ राग मलार ॥ मेरी गैल नछोंडै सांवरो मैं क्योंकरि पनघट जाउँरी। यहि सकुचानि डरपतिरहों मोहिं धरै न कोउ नाउँ री ॥ जित देखों तितदीखे री रसिया नंदकुमार री। इत उत नैन चुराइकै मोहिं पलकन करत जुहार री ॥ लकुट लिये आगे चलैहो पंथ सँवारत जाइ री। मोहि निहोरो लाइके वह फिरि चितवै मुसुका-इ री ॥ सौ कंचुकि अंचरा उचै मेरो हियरा तकि ललचाइ री। यमुनाजल भरि गागरि लै जब शिर चलत उचाइ री ॥ गागरि मारै कांकरी सों लागे मेरे गात री। गैल माँझ ठाढो रहै मोहिं खुंबटै आवत जात री ॥ हौं सकुचानि बोलों नहीं लोकलाजकी शंक री। मो तन छ्वैवै हरि चलै वह छवि भरतुहै अंक री ॥ निकट आइ मुख निरखिके सकुचे बहुरि निहार री। अब ढँग ओढी ओढनी पीतांवर मोपै वारि री॥ जब कहुँ लग लागे नहीं तब वाको जिव अकुलाइ री। तब हठि मेरी छाँहसों

वह राखैं छाँह छुआइरी ॥ को जानै कित होत है री घर गुरुजनकी शोर री। मेरो जिव गांठी बंध्यो पीतांबरकी छोर री॥अबलौं सकुच अटकरही अब प्रगट करौं अनुराग री। हिलिमिलिकै संग खेलिहौं मानि आपनो भाग री॥घर घर ब्रजवासी सबै कोउ किन करै पुका री। गुप्तप्रीति परगट करौं कुलकी कानि निवारि री ॥ जबलगि मन मिलयो नहीं तब नची चौपके नाच री॥सूर श्याम संगही रहौं सब करौं मनोरथ सांच री॥८०॥राग कान्हरो॥ मोहन बिन मन ना रहै कहा कहों माई री। कोटि भांति करि करि रही समुझाई री ॥ लोकलाज कौन काज मनमें नहिं आई री । हृदयते टरति नाहिन ऐसी मोहनी लाई री ॥ सुंदर वर त्रिभंगी नवरंगी सुखदाई री । सूरदास प्रभु बिन मोसों नेक रह्यौ ना जाई री ॥ ८१ ॥ राग सूही ॥ नँदको नंदन सांवरो मेरो चितचोरे जाइ री। रूप अनूप दिखायइकै वह औचक गयो आइ री ॥ मोरमुकुट श्रवण कुंडल ओढनी फहराइ री। अधरनि पर मुरली धरे मधुर तान बजाइ री ॥ चंदनकी खौरि किए नटवर कछि काछनी बनाइ री। सूरदास प्रभु बैठे यमुनातट पूरण ब्रह्म कन्हाइ री॥ ८२ ॥ राग गौरी ॥ परचो तबते ठग मूरि ठगौरी। देख्यो मैं यमुना तट बैठो ढोटा यशुमतिको री ॥ अति सांवरो भरचो सो साँचे की न्हे चंदन खोरी।मन्मथ कोटि कोटि गहि वारौं ओढे पीत पिछोरी॥दुलरी कंठ नयन रतनारे मो मन चितै हरचो री। बिकट भ्रुकुटिकी ओर कोरते मन्मथबाण धरचो री ॥ दमकत दशन कनककुंडल मुख मुरली गावत गौरी। श्रवणन सुनत देह गति भूली भई बिकल मति बौरी ॥ नहिं कल परत बिनादरशनते नयननि लगी ठगौरी। सूर श्याम चित टरत न नेकहु निशि दिन रहत लगौ री॥८३॥ राग कल्याण॥ युवति इक यमुनाजलको आइ।निरखत अंग अंग प्रति शोभा रीझे कुँवर कन्हाइ ॥गोरे वरन चूनरी सारी अलकैं मुख बगराइ। करनि चरिचरी चुरी विराजति करकंकन झलकाइ ॥ सहज शृंगार उठत यौवनतन बिधिसों हाथ बनाइ। सूर श्याम आये ढिग आपुन घटभरि चलि झमकाइ ॥ ८४ ॥ राग गौरी॥ ग्वारि घट शिर धरि चली झमकाइ। श्याम अचानक लट गही कहि अति कहा चली अतुराइ ॥ मोहनकर त्रिय मुखकी अलकैं यह उपमा अधिकाइ। मनहु सुधा शशि राहु चोरावत धरचौ ताहि हरिआइ ॥ कुच परसो अंकम भरिलीनी दुहुँ मन हरप बढाइ। सूर श्याम मानो अमृत घटनिको देखतहै कर लाइ ॥ ८५ ॥ छाँडि देहु मेरी लट मोहन। कुच परसत पुनि पुनि सकुचत नहिं कत आई तजि गोहन ॥ युवती आनि देखिहैं कोऊ कहत बंक भरि भौंहन। बारबार कह बीर दोहाई तुम मानत नहिं सोहन ॥ यतनेहीको सौंह दिवावत मैं आयो मुख जोहन।सूर श्याम नागरि वश कीन्ही बिवश चली घरि कोहन ॥८६॥राग धनाश्री॥चली भवन मन हरि हरिलीन्हों। पग द्वै जाति ठठकि फिरि हेरति जिय यह कहति कहा हरि कीन्हों ॥ मारग गई भूलि जेहि आई आवतकै नाहिं पावत चीन्हों। रिसकरि खीझि सुभग लट झटकति श्याम भुजानि छटकायसु दीन्हों॥ प्रेमसिंधु में मगनभई त्रिय हरिके रंग भई अति लीन्हों।सूरदास प्रभुसों चित अटक्यो आवत नहिं इत उतहि पतीन्हो ॥८७॥राग गौरी ॥ घर गुरुजनकी सुधि जब आई। तब मारग सूझ्यो नैननि कछु जिय अपने तिय गई लजाई ॥ पहुँची आय सदन ज्यों त्यों करि नेक नहीं चित टरत कन्हाई। सखी संगकी बूझन लागीं यमुनातट अति झेर लगाई ॥ औरै दशा भई कछु तेरी कहति नहीं हमसों समुझाई। कहा कहौं कहत न बनिआवै सूर श्याम मोहनी लगाई ॥ ८८ ॥ राग सोरठ ॥ कैसे जलभरन मैं जाउँ। गैल मेरी परचो सखीरी कान्ह जाको नाउँ ॥ घरते निकसत बनत नाहीं लोकलाज लजाउँ। तन इहां मन जाइ अटक्यो

नंदनंदन ठाउँ ॥ जो रहौं घर बैठिकै तौ रह्यो नाहिं न जाइ। सखि तैसी देहु तुमहीं करौं कहा उपाइ ॥ जात बाहिर बनत नाहीं घर न नेकु सुहाइ। मोहनी मोहन लगाई कहति सखिन सुनाइ ॥ लाज अरु मरजाद जीलौं करतिहौ यह सोच। जाहि बिन तन प्राण छांडे कौन बुधि यह पोच ॥ ॥८९॥मनहि यह परतीति आई दूरि करि हो दोच। सूर प्रभु हिलिमिलि रहौंगी लाज डारों मोच ॥ राग गौरी ॥ सुनहु सखी री वा यमुनातट। हौं जल भरति अकेली पनघट गही श्याम मेरी लट ॥ लै गागरि शिर मारग डगरी इन पहिरे पीरे पट। देखत रूप अधिक रुचि उपजी काछ बनी किंकिनी रट॥ फूल एक ग्वालनिके ज्यों रन जीते फिरै महाभट। सूर लरचो गोपाल अलिंगन सफल किये कंचनघट ॥ ९० ॥ राग आसावरी ॥ कहा कहों सखि कहत बनै नहिं नंदनँदन मेरो मन जो हरचो। मात पिता पति बंधु सकुच तजि मगनभई नहिं सिंधु तरचो ॥ अरुन अधर युग नयन रुचिर रुचि मदन मुदित मन संग लरचो। देखि दशा कुलकानि लाज सब सहज सुभाउ रह्यो सु घरचो ॥ आनँद कंद चंद मुख निशि दिन अवलोकत यह अमल परचो। सूरदास प्रभुसों मेरी गति जनु लुब्धक कर मीन तरचो ॥९१ ॥ राग नट ॥ मेरो हरि नागरसों मन मानो।मन मोह्यो सुंदर व्रजनायक भली भई सब जग जानो ॥ बिसरी देह गेह सुधि बिसरी बिसरि गई कुलकी कानो। सूर आश पूजे या मनकी तब भावै भोजन पानो ॥ ९२॥ राग काफी ॥ मोही सांवरे सजनी मोहिं गृह बन कछु न सुहाइ। यमुन भरन जल मैं गई तहां श्याम मोहनी लाइ ॥ ओढे पीरी पावरी हो पहिरे लाल निचोल। भौंहें काट कटीलियां मोहिं मोल लई बिन मोल ॥ मोर मुकुट शिर बिराजई हो अधर धरे सुखबैन। हरिकी मूरति माधुरी ताते लागिरहे दोउ नैन ॥ मदनमूरतिके वशभये अब भलो बुरो कहै कोई। सूरदास प्रभुको मिलि करि मन एकै तनु तन दोई ॥९३॥राग रामकली ॥ मेरे जिय ऐसी आन बनी। बिन गोपाल और नहिं जानो सुनि मोसों सजनी ॥ कहा काँच संग्रहके कीने हरि जो अमोल मनी। विष सुमेर कछु काज न आवै अमृत एक कनी ॥ मन वच क्रम मोहिं और न भावे अब मेरे श्याम धनी। सूरदास स्वामीके कारण तजी जाति अपनी ॥ ९४ ॥ राग गूजरी ॥ अब दृढकरी धरी यह बानि। कहा कीजै सो नफा जेहि हो जियकी हानि ॥लोकलज्जा कांच किरिचक श्याम कंचन खानि। कौन लीजै कौन तजिए सखि तुमहि कहो जानि ॥ मोहिं तो नहिं और सूझत बिना मृदु मुसकानि। रंग कापे होत न्यारो हरद चूनो सानि ॥ इहै करिहौं और तजिहौं परी ऐसी बानि। सूर प्रभु पति बरत राखै मेटिकै कुलकानि ॥ ९५ ॥ अध्याय ॥ २३ ॥ लीला यज्ञपत्नी ॥ राग बिलावल ॥ एक दिन हरि हलधर संग ग्वालन। गये बन भीतर गोधन चारन ॥ सकल ग्वाल मिलि हरिपै आए। भूख लगी कहि वचन सुनाए ॥ हरि कह्यो यज्ञकरत तहां ब्राह्मण।जाहु उनहि ढिग भोजन मांगन ॥ ग्वाल तुरत तिनके ढिग आए। हरि हलधरके वचन सुनाए ॥ भोजनदेहु भए वै भूखे। यह सुनिकै ह्वैगए वै रूखे ॥ यज्ञहेतु हम करी रसोई। ग्वालन पहले देहिं न सोई॥ग्वाल सकल हरिपै चलिआए। हरिसों तिनके वचन सुनाए॥ हरि हलधरसों हँसि कह्यो बानी। अविगतिकी गति उन नहिं जानी ॥ तब ग्वालनसों कह्यो बुझाई। त्रियन पास तुम माँगहु जाई ॥ उनके तन दृढभक्ति हमारी। मानि लेहि वै बात तुम्हारी ॥ ग्वाल बाल त्रियनपै आए ॥ हाथजोरिकै शीश नवाये ॥ हरि भोजन माँग्योहै तुमसों ॥ आज्ञा देहु कहैं सो उनसों॥तिन धनि भाग्य आपनो जान्यो। जीवनजन्म सफल करि मान्यो॥भोजन बहु प्रकार तिन्ह दीन्हों। काहू अपने शिर धरि लीन्हों ॥ ग्वालन संग तुरत वै धाईं। मन अपने में हर्ष बढाईं ॥

काहू पुरुष निवारचो आइ । कहां जात है री अतुराइ ॥ तिन तो कह्यो न कीन्हो काने । तनु तजि चली विरह अकुलाने ॥ धन्य धन्य वे प्रेम सभागे । मिली जाइ सबहिनते आगे ॥ तब हरि तिनसों कहि समुझाइ । सुनों त्रिया तुम काहे आइ ॥ नारी पतिव्रत मानै जोई । चारि पदारथ पावै सोई ॥ त्रियन कह्यो जग झूठ सगाई । हमतौ हैं तुमरे शरनाई ॥ प्रभु पतिव्रत तुम करौ सदाई । तुमको इहै धर्म सुखदाई ॥ प्रभु आज्ञाले घरको आई । पुरुष करत तिनकी जु बडाई ॥ धनि धनि तुम हरि दरशन पायो । हम पढि गुनके सब बिसरायो ॥ ब्रह्मादिक खोजत नित जिन्हको । साक्षात तुम देख्यो तिन्हको ॥ वे हैं सकल जगतके स्वामी । और सभनके अंतर्यामी ॥ अब हम चरण शरणही आए । तब हरि उनके दोष क्षमाए ॥ ग्वालन मिलि हरि भोजन कीन्हों । भाव तियनको धरिहरि लीन्हो ॥ भक्तभावसों जो हरि ध्यावै । सो नर नारि अभै पद पावै ॥ इह लीला सुनि गावै जोई । हरिकी भक्ति सूर तेहि होई ॥ ९६ ॥ यज्ञपत्नी वचन ॥ राग बिलावल ॥ जानदे जानदे पियहों गोपाल बोलाई । औरै प्रीति प्राणके लालच नाहिन परत दुराई ॥ राखौ रोकि बाँधि दृढबंधन कैसेहुँ करै जु त्रास । वह हठ अब कैसे छूटतहै जब लगिहै उर सास ॥ सांची कहौं मन बच क्रम करि अपने मनकी बात । देह छाँडि मिलहि अबहीं छिन तोहि कैसी कुशलात ॥ औसर गए बहुरि सुनि सूरज कहा कीजैगी देह । बिछुरति सहति विरहके झूललि झूठे सबै सनेह ॥ ९७ ॥ राग सारंग ॥ देखनदे पिय मदन गोपालहि ॥ हाहा हो पिय पा लागतिहों जाइ सुनौं बन बेनु रसालहि ॥ लकुट लिये काहेको त्रासत पति बिन मति बिरहनि बेहालहि । अति आतुर आरोधि अतिक दुख तोहिं कहा डर तिन यम कालहि ॥ मन तौ पिय पहिलेही पहुँच्यो प्राण तहीं चाहत चित चालहि । कहि तू अपने स्वारथ सुखको रोकि कहा करिहै खल खालहि ॥ लेहु सँभारि सु खेह देहकी को राखै इतने जंजालहि । सूर सकल सखियननेत आगे अबहीं सूढ मिलति नँदलालहि ॥ ९८ ॥ राग सारंग ॥ देखनदे वृंदावन चंदहि ॥ हाहा कंत मानि विनती यह कुल अभिमान छांडि मति मंदहि ॥ कहि क्यों भूलि धरत जिय औरे जानत नहिं पाँवन नँदनंदहि ॥ दरशन पाइ आइहौं अबहीं करन सकल तेरे दुखद्वंदहि ॥ शठ समुझै यह समुझात नाहिं न खोलत नहीं कपटके फंदहि । देह छोडि प्राणनि भई प्रापति सूर सुप्रभु आनँद निधि कंदहि ॥ ९९ ॥ राग कल्याण ॥ रति बाढी गोपालसों । हाहा हरिलौं जान देहु प्रभु पद परसतिहौं भालसों ॥ संगकी सखी श्याम सन्मुख भई मोहिं परी पशुपालसों । परवशदेह नेह अंतर्गति क्यों मिलौं नयन विशालसों ॥ शठ हठ करि तूही पछितैहै इहै भेट तोहिं बालसों । सूरदास गोपी तनु तजिकै तनमें भइ नंद लालसों ॥ १०० ॥ राग सारंग ॥ पिय जनि रोकहु अब जानदै । हौं हरि विरह जरे जाचतिहौं इतनी बात मोहिं दान दै ॥ बैन सुनौं विहरत बन देखौं इह सुख हृदय सिरान दै । पुनि जो रुचै सोई तू कीजै साँच कहतिहौं आन दै ॥ जो कछु कपट किए याचतिहौं सुनहि कथा हित कान दे । मन क्रम बचन सूर अपनो प्रण राखोंगी तन मन प्रान दे ॥ १ ॥ राग बिलावल ॥ हरि देखनकी साध भरी । जान न दई श्याम सुंदरपै सुनु सोई तैं पोच करी ॥ कुल अभिमान हटकि हठि राख्यो तैं जियमें कछु और धरी । यज्ञ पुरुष तजि करत यज्ञ विधि तामें कहि कछु चाडसरी ॥ कहांलगि समुझाऊं सूरज सुनि जाति मिलनकी औधि टरी ॥ लेहु सँभारि देहु पिय अपनी बिन प्रमाणन सब सौंज धरी ॥ २ ॥ हरिहि मिलत काहे को फेरी । देखौं बदन जाइ श्रीपतिको जानदेहु हौं हैहों चेरी ॥ पालागों छाँडहु अब अंचल बार बार विनती करौं तेरी ॥ तिरछो करम भयो पूरबको प्रीतम भयो पाँइकी बेरी ॥ इहले देहु मात शिर अपने जासों कहत कंत तुम मेरी । सूरदास सो गई अगमने सब सखियनसों हरि

मुख हेरी ॥ ३ ॥ जानदै श्यामसुंदरलौं आजु । सुनिहो कंत लोकलाजते बिगरतुरहै सब काजु ॥ राखो रोंकि पाँइ बंधनके रोकौ अरु जलनाजु॥हौं तो तुरतै मिलौंगी हरिको तू घर बैठे गाजु ॥ चितवत हुती झरोखे ठाढी किये मिलनको साजु । सूरदास तनु त्यागि छिनकमें तज्यो कंतको राजु ॥ ४ ॥ अध्याय। २४ ॥ गोवर्धनपूजा ॥ बिलावल ॥ नंदमहरसों कहति यशोदा सुरपतिकी पूजा बिसराई । जाकी कृपा बसत ब्रज भीतर जाकी दीनी भई बडाई ॥ जाकी कृपा दूध दहि पूरन सहस मथानी मथति सदाई । जाकी कृपा अन्न धन मेरे जाकी कृपा नवौ निधि आई ॥ जिनकी कृपा पुत्र भयो मेरे कुशलरहो बलराम कन्हाई । सूर नंदसों कहति यशोदा दिन आए अब करहु चडाई॥ ५ ॥ राग गौरी॥एई हैं कुलदेव हमारे । काहू नहीं और हम जानति गोधनहैं ब्रजके रखवारे॥ दीपमालिकाके दिन पाँचेक गोपन कहौ बुलाई । बलि सामग्री करैं चडाई अब हीं कहो सुनाई ॥ लई बुलाइ महरि महरानी सुनतहि आई धाई । नंदघरनि तब कहति सखिनसों कतहौं रही भुलाई ॥ भूली कहा कहौ सो हमसों कहति कहा डरपाई । सूरदास सुरपतिकी पूजा तुम सबही बिसराई ॥ ६ ॥ चौंकि परीं सब गोकुल नारि । भली कही सबही सुधि भूली तुमहि करी सुधि भारि ॥ कह्यो महरिसों करौ चडाई हम अपने घर जाति । तुमहूं करौ भोग सामग्री कुलदेवता अमाति ॥ यशुमति कह्यो अकेली हौं मैं तुमहुं संग सुहि दीजौ । सूर हँसति ब्रजनारि महरिसों एहैं साँचु पतीजौ ॥ ७ ॥ राग कल्याण ॥ कही मोहिं भली कीनी महरि । राजकाजहि रहत डोलत लोभहीकी लहरि ॥ क्षमा कीजौ मोहिं हौं प्रभु तुमहिं गयो भुलाइ । ग्वालनसों कहि तुरत पठयो ल्याउ महरि बुलाइ ॥ नंद कह्यो उपनंद ब्रजके अरु महर वृषभान । अबहिं जाइ बुलाइ आनौ करत दिन अनुमान ॥ आइगए दिन अबहिं नेरे करत मन इह ज्ञान । सूर नंद विनय करत कर जोरि सुरपति ध्यान ॥ ८ ॥ राग बिलावल ॥ नंदमहर उपनंद बुलाए। आदर करि बैठनको दीनो महर महर मिलि शीश नवाए॥ मनहीं मन सब सोच करतहैं कंस नृपति कछु मांगि पठाए। राज अंशधन जो कछु उनको बिनुमँगे सो हम दै आए ॥ बूझत महर बात नंद महरहि कौन काज हम सबनि बुलाए । सूर नंद यह कहि गोपनसों सुरपति पूजाके दिन आए ॥ ९ ॥ हँसत गोप कहि नंदमहरसों भली भई यह बात सुनाई । हमहिं सबनि तुम बोलि पठाए अपने जिय सब गए डराई ॥ काहेको डरपे हम बोलत हँसत कहत बातैं नँदराई । बडो सँदेह कियो हम तुमको ब्रजवासी हम तुम सब भाई॥ करो बिचार इन्द्र पूजाको जो चाहो सो लेहु मँगाई । वरष दिवसको दिवस हमारो घर घर नेवज करौ चँडाई ॥ अन्नकूट विधि करत लोग सब नेम सहित करि पकवान्ह । महरि जोरि कर बिनय इन्द्रसों सूर अमर करि कीजै कान्ह॥ १० ॥ गावत मंगलचार महर घर । यशुमति भोजन करति चँडाई नेवज करि करि धरति श्याम डर ॥ देखे रहौ न छुवै कन्हैया कह जानै वह देवकाजपर । और नहीं कुलदेव हमारे कै गोधन कै वै सुरपतिवर ॥ करति बिनय करजोरि यशोदा कान्हहि कृपा करौ करुणाकर । और देव तुम सारि कोउ नाहीं सूर करौं सेवा चरणनतर ॥ ११ ॥ राग सूही ॥ बाजति नंद अवास बधाई । बैठे खेलत द्वार आपने सात वरषके कुँवर कन्हाई ॥ बैठे नंद सहित वृषभानुहि और गोप बैठे सब आई । थापे देत घरनके द्वारे गावति मंगल नारि सुहाई ॥ पूजा करत इन्द्रकी जानी आए श्याम तहां अतुराई । बूझत बार बार हरि नंदहिं कौन देवकी करत पुजाई ॥ इन्द्र बडे कुल देव हमारे उनते सब यह होत बडाई। सूर श्याम तुमरे हित कारण यह पूजा हम करत सदाई ॥ १२ ॥ राग आसावरी॥ नंद कह्यो घर जाहु कन्हाई । ऐसेमें तुम जैहो जिनि कहुँ अहो महरि

सुत लेहु बुलाई ॥ सोइ रहौ हमरे पलिका पर कहति महरि हरिसों समुझाई । वरप दिवसको महा महोत्सव को आवै को कौन सुनाई ॥ और महर ढिग श्याम बैठिके कीनो एक विचार बनाई । सपने आजु मिल्यो मोकों इक बडो पुरुष अवतार जनाई ॥ कहन लग्यो मोसों ए बातैं पूजत हौ तुम काहि मनाई । गिरि गोवर्धन देवनकोमणि सेवहु ताको भोग चढाई ॥ भोजन करै सबनिके आगे कहत श्याम यह मन उपजाई । सूरदास गोपन आगे यह लीला कहि कहि प्रगट सुनाई ॥ १३ ॥ राग धनाश्री ॥ सुनी ग्वाल यह कहत कन्हाई । सुरपतिकी पूजाको मेटत गोवर्धनकी करत बडाई ॥ फैलि गई यह बात घरानि घर हरि कह जाने देव पुजाई । हलधर कहत सुनौ ब्रजबासी यह महिमा तुम काहु न पाई ॥ कोउ कोउ कहत करौ अब ऐसोइ कोउ यह कहत कहै को भाई । सूरदास कोउ सुनि सुख पावत कोउ बरजत सुरपतिहि डराई ॥ १४ ॥ मेरो कह्यो सत्यकै जानौ । जो चाहौ ब्रजकी कुशलाई तौ गोवर्धन मानौ ॥ दूध दही तुम कितनो लैहो गोसुत बढै अनेक । कहा पूजि सुरपतिको पावै छांडि देहु यह टेक ॥ मुँह मांगे फल जो तुम पावहु तौ तुम मानहु मोहिं । सूरदास प्रभु कहत ग्वालसों सत्य वचन कहि दोहि ॥ १५ ॥ छांडि देहु सुरपतिकी पूजा । कान्ह कह्यो गिरि गोवर्धनते और देव नहिं दूजा ॥ गोपनि सत्य मानि यह लीनी बडे देव गिरिराजा । मोहिं छांडि पर्वत पूजतहैं गर्व कियो सुरराजा ॥ पर्वत सहित धोइ ब्रजडारौं देउँ समुद्र बहाई । मेरी बलि औरहि लै पर्वत इनको करौं सजाई ॥ राखौं नहीं इन्हैं भूतलमें गोकुल देउँ बुडाई । सूरदास प्रभु जाके रक्षक संगहि संग रहाई ॥ १६ ॥ राग बिलावल ॥ गोकुलको कुल देवता श्रीगिरिधर लाल । कमल नयन घन साँवरो वपु बाहु विशाल ॥ हलधर ठाढे कहतहैं हरिजूके ग्वाल । करता हरता आपुही आपुही प्रतिपाल ॥ वेगि करौ मेरो कह्यो पकवान रसाल । वह मघवा बलि लेतुहै नित करि करि गाल ॥ गिरि गोवर्धन पूजिये जीवन गोपाल । जाके दीने बाढहीं गैया गण जाल ॥ सब मिलि भोजन करतहैं जहँ तहँ पशुपाल । सूर सुरहि डरपत रहै जिय जिय प्रतिवाल ॥ १७ ॥ राग सारंग ॥ तात गोवर्धन पूजहु जाय । मधु मेवा पकवान मिठाई व्यंजन बहुत बनाय ॥ यहि पर्वत तृण ललित मनोहर सदा चरै सुख गाय । कान्ह कहो सोइ कीजिये जैसे मघवा जाइ रिसाय ॥ भरि भरि शकट चले गिरि सन्मुख अपने अपने चाय। सूरदास प्रभु अपवश भोगी धरि स्वरूप हरिराय ॥ १८ ॥ राग बिलावल ॥ ब्रज घर घर अति होत कोलाहल । ग्वाल फिरत उमँगे जहां तहां सब अति आनंद भरे जु उमाहल ॥ मिलत परस्पर अंकम दैदै शकटनि भोजन साजत । दधि लावनी मधु माट धरतलै राम श्याम सँग राजत ॥ मंदिरते लै धरत अजिरपर पटरसकी जिवनार । डालन भरि अरु कलश नए भरि जोरतहैं परकार ॥ सहस शकट मिष्टान्न अन्न बहु नंद महर घरहीको । सूर चले सब लै घर घरते संग सुवन नंदजीको ॥ राग नट ॥ अति आनंद ब्रजवासीलोग । भांति भांति पकवान शकटभरि लैलै चलै छहौं रस भोग ॥ तीनि लोकको ठाकुर संगहि तासों कहत सखा इम योग । आवत जात डगर नहिं पावत गोवर्धन पूजा संयोग ॥ कोउ पहुँचे कोउ रेंगत मगमें कोउ घरमें ते निकसे नाहिं । कोउ पहुँचाइ शकट घर आवत कोउ घरते भोजन लैजाहि ॥ मारगमें कोउ निर्तत आवत कोउ गावत अपने रस माहि । सूर श्यामको यशुमति टेरति बहुत भीरहै हरि न भुलाहि ॥ १९ ॥ ॥ राग कान्हरो ॥ शकट साजि सब ग्वाल चले गिरि गोवर्धन पूजाके काज । घर घरते मिष्टान्न चले लै भाँति भाँति बहु बाजन बाज ॥ अति आनंद भरे गुण गावत उमडे फिरत अहीर । पैडो नहिं पावत

T

तहां कोऊ ब्रजवासिनकी भीर॥ एक चले आवत ब्रजतनको एक ब्रजते बनकाज। सूरदास तहां श्याम सबनिको देखियतहै शिरताज॥९२०॥ राग नटनारायण ॥चलीं घर घरनिते ब्रजनारि।मनौं इंद्रवधून पंगति शोभा लागति भारि॥ पहिरि सारि सुरंग पँचरंग षटदश करि शृंगारि। वहै इच्छा सबनिके मन श्यामरूप निहारि॥ ललिता चंद्रावली सहित राधा संग कीरति महतारि। चले पूजा करन गिरिकी सूर सँग नर नारि॥ २१॥ बहुत जुरे ब्रजवासी लोग। सुरपति पूजा मेटि गोवर्धन कीनो यह संयोग॥ योजन बीस एक अरु अगरो डेरा इहि अनुमान। ब्रजबासी नर नारि अंत नहिं मानो सिंधु समान॥ इक आवत ब्रजते इतहीकौ इक इतते ब्रजजात। नंदलिए तब ग्वाल सूर प्रभु आइ गए तहां प्रात॥ २२॥ राग आसावरी॥ नंद करत गिरिकी पूजा बिधि। भोजन सब लै धरे छहौं रस कान्ह संग अष्टौ सिधि॥ लैलै आवत ग्वाल घरनिते भोजन बहुत प्रकार। व्यंजन देखि बहुत सुख पावत तुरत करौं जिवनार॥ जो हरि कहत करत सोइ सोइ बिधि पूजाकी बहु भांति। माखन दधिपै तक्र धरत लै जोरि जोरि सब पांति॥को बरनै नाना बिधि व्यंजन जे वनए नँदनारी॥ सूर श्यामकी लीला अद्भुत वरणै सुखचारी॥ २३॥ राग नटनारायण॥ विप्र बुलाइ लिये नंदराइ। प्रथमारंभ यज्ञको कीनो उठे वेद ध्वनि गाइ॥ गोवर्धन शिर तिलक बंदियो मेटि इंद्र ठकुराइ। अन्नकूट ऐसो रचि राख्यो गिरिकी उपमापाइ॥ भाँति भाँति व्यंजन परसाए कापै वरण्यो जाइ। सूर श्यामको कहत ग्वाल गिरि जेवहीं कहौ बुझाइ॥ २४॥ राग बिलावल॥ इंद्रसोच करि मनहिं आपने चकृत पुनि पुनि बुद्धि विचारत। कहा करत देखौं इनको मैं कौन बिलंबु लागत पुनि मारत॥ अब ए करैं आपनें मन सुख मोको बनै सम्हारै। तबलौं रहौं पूजि निवरैं ये बचिहैं बैर हमारे॥ इतनो सुख इनके कर रैहै दुख है बहुत अगाध। सूरदास सुरपतिकी वाणी झूठी मनकी साध॥ २५॥ ॥राग गौरी॥चढ़ि विमान सुरगण नभ देखत। लाल करत श्याम नवतन यह फिरि फिरि गिरि गोवर्धन पेखत॥ थकित भए सब जहां तहां मुनिजन ठौर ठौर नर नारि। चितै रहे सब श्याम बदन तन गति मति सुरति विसारि॥ पूजा मेटि इंद्रकी पूजत गिरि गोवर्धनराज। सूरदास सुरपति गर्वितभयो मैं देवन शिरताज॥ २६॥ राग केदारो॥कहत कान्ह नंद बाबा आवहु। भोजन परसि धरे सब आगे प्रेम सहित गिरिराज मनावहु॥ और नंद उपनंद बुलाए कह्यो सबनिसों भोग लगावहु। सपने में देखौ यहि मूरति यहै रूप धरि ध्यान मनावहु॥ इक मन इक चित करि अर्पन करौ प्रगट देव तुम दरशन पावहु।सूर श्याम कहि प्रगट सबनिसों अपने कर लै लै जु जिमावहु॥२७॥बिनती करत सकल अहीर।सकल भरि भरि ग्वाल लै लै सिखर डारत क्षीर॥चल्यौ बहि चहुँ पासते पय सुरसरी जल टारि। बसन भूषन लै चढ़ाए भीर अति नर नारि। मूंदि लोचन भोग अर्प्यो प्रेमसों रुचि भारि॥ सबनि देखी प्रगट मूरति सहसभुजा पसारि॥रुचि सहित गिरि सबनि आगे करनि लैलै खाइ। नंदसुत महिमा अगोचर सूर क्यों कहै गाइ॥ २८॥ राग नट॥ गिरिवर श्यामकी अनुहारि। करत भोजन अति अधिकई भुजासहस पसारि॥ नंदको कर गहे ठाढ़े यहै गिरिको रूप। सखी ललिता राधिकासों कहति देखि स्वरूप॥यहै कुंडल यहै माला यहै पीत पिछौरि। शिखर शोभा श्यामकी छबि श्याम छबि गिरि जोरि॥ नारि बदरौला रही वृषभानु घर रखवारि। तहांते उहि भोग अर्पेउ लियो भुजा पसारि॥ राधिका छवि देखि भूली श्याम निरखी ताहि। सूर प्रभु वशभई प्यारी कोर लोचन त्राहि॥२९॥धनाश्री॥देखहु री हरि भोजन खात॥ सहसभुजाधरि उत जेंवतहैं इतहि कहत गोपनिसों बात॥ललिता कहत देखिहौ राधा जो तेरे मन बात समाइ।धन्य धन्य सब गोकुलबासी

संग रहत त्रिभुवनके राइ ॥ जेंवत देखि नंद सुख पायो अति आनँद गोकुल नर नारी । सूरदास स्वामी सुखसागर गुण आगर नागर दे तारी॥ ३०॥ राग गौरी॥इह लीला सब करत कन्हाई।उत जेंवत गिरि गोवर्धन सँग इत राधासों प्रीति लगाई ॥ इत गोपनसों कहत जिमावहु उत आपुहि जेंवत मन लाई । आगे धरे छवौं रस व्यंजन बदरौलाको लियो मँगाई ॥ अमर विमान चढे सुख देखत जय ध्वनि करि सुमनानि बरषाई । सूर श्याम सबके सुखदाता भक्तहेतु अवतार सदाई ॥ ३१ ॥ गोपनिसों यह कहत कन्हाई । जो मैं कहत रह्यो भयो सोई सपनंतरकी प्रगट बताई ॥ जो मांग्यो चाहौ सो मागौ पावहुगे जो जा मन आई । कहत नंद सब तुमही दीनों मांगतहौं हरिकी कुशलाई ॥ करजोरे नँद आगे ठाढे गोवर्धनकी करत बडाई । ऐसे देव कहूं नाहिं देखे सहसभुजा धरि खात मिठाई ॥ सदा तुम्हारी सेवा करिहौं और देव नहिं करों पुजाई । सूर श्यामको नीके राखहु कहत महर ये हलधर भाई ॥३२॥ अहने अपने टोल कहत ब्रजबासी आई । भावभक्ति ले चलौ सुरपतिको आसी आई ॥ शरदकाल ऋतु जानि दीपमालिका बनाई । गोपनके उनमाद फिरत उदमदे कन्हाई ॥ घर घर थापे दीजिये घर घर मंगलचार । सात वर्षको सांवरो खेलत नंददुआर ॥ १॥२॥ वैठि नंद उपनंद बोलि वृषभानु पठाए । सुरपति पूजा देखि जानि तहां गोविंद आए ॥ वार वार हाहाकरहि कहि बाबा यह बात । घर घर भोजन होतहै कौन देवकी जात ॥ ॥ ३ ॥ श्याम तुम्हारी कुशल जानि एक मंत्र उपैहौं । पटरस भोजन साजि भोग सुरपतिको देहौं ॥ नंद कह्यो चुचुकारिके जाइ दमोदर सोई । वर्षदिवसको दिवसहै महामहोत्सव होई ॥ ४ ॥ हरि बोले सब गोप मंत्र बहुरचो फिरि कीनो । एक पुरुष मोहि आइ आजु सपनो निशि दीनो॥ सब देवनको देवता गिरि गोवर्धनराजु । ताहि भोगु किनि दीजिये सुरपतिको कह काजु ॥ ५ ॥ बाढें गोसुत गाइ दूध दधिको कहा लेखो । यह परचा विद्यमान नैंन अपने किन देखो ॥ तो देखत बलि खाइगो मुँहमाँगे फल देइ।गोप कुशल जो चाहिए गिरि गोवर्धन सेइ॥६॥दिवस देवारीके प्रातही सब मिलि पूजन जाइ।नंद प्रतीति न मानहू अब तुम देखत बलि खाइ॥गोपन करचो विचार शकट प्रति सबही साजे । बहुविधिके पकवान जहां तहांबाजन बाजे ॥७॥एक बाटते उवटि चले एक नदी सुरभीर । एक न पैंडो पावहीं उमँडे फिरहिं अहीर ॥ इक घरते उठि चले एक घरको फिरि जाहिं । गावत गुण गोपालके ग्वाल उमगे न समाहिं ॥ ८ ॥ गोपनको सागर भयो गिरि भयो मंदरचार । रत्नभई सब गोपिका श्याम बिलोवनहार ॥ बज चौरासी कोश परे गोपनके डेरा । लांबे चौवन कोश आजु ब्रजवासिन घेरा ॥ ९ ॥ सबहीके मन सावँलो देखौ सबनि मझारि । कौतुक देखन देवता आए लोक बिसारि॥ लीने विप्र बुलाइ यज्ञ आरंभ न कीनो । सुरपति पूजा मेटि भोग गोवर्धन दीनो ॥ १० ॥ प्रथम दूध अन्हवाइ बहुरि गंगा जल डारे । बडो देवता जानि कान्हको मतो बिचारे ॥ जैसे बने गिरिराजजू तैसो अनको कोट । मगन भए पूजा करैं नर नारी वड छोट ॥११॥ सहसभुजा उरधरे करै भोजन अधिकाई । नख शिखलों पर्यंत मनी दूसरो कन्हाई ॥ ललता कहै तेरे हियन समाई । गहे अंगुरिया तातकी ढोंटा भोजन खाइ ॥ १२ ॥ पीत दुमाल्यो श्वेत कंठ मोतिनकी माला । भूषण भुजा अनूप झलमलति नैंन विशाला ॥ श्यामकी शोभा गिरि बन्यो गिरिकी शोभा श्याम । जैसे पर्वत भातुको सँग भैया बलराम ॥ १३ ॥ जैसिय कनकपुरी जु दिव्य रतननिसों छाई । बलि दीनी परभात छाँह पूरब चालि आई ॥ चहूं ओर चक्रा धरे चंदहि पटतर सोई । ठौर ठौर वेदी रची बहु विधि पूजा होई ॥१४॥जहाँ तहाँ दधि धरचो

T

कहौं कहा उज्वलताई। उदधि शिखर ह्वै रह्यो भातमें देह छपाई॥ बदरौला वृषभानुके एक बिलोवन हारि ताकी वलि वहि देवता लीन्ही भुजा पसारि॥ १९॥ लै सब भोजन अरपि अरपि गोपन कर जोरे। अगणित कीने स्वाद दास बरणे कछु थोरे॥ यहि बिधि पूजा पूजिकै गोविंद पूंछो जाई। कान्ह कह्यो हँसि सूरसों लीला सरस बनाई॥१८॥ राग गौरी॥ श्याम कहत पूजा गिरि मानी। जो तुम भक्ति भावसों अर्प्यो देवराज सब जानी॥ तुम देखत भोजन सब कीनो अब तुम मोहिं पत्याने। बडो देव गिरिराज गोवर्धन इनै रहौ तुम माने॥ सेवा भली करी तुम मेरी देव कही यह बानी। सूर नंदसुख चूमत हरिको यह पूजा तुम ठानी ॥ ३३ ॥ और कछू मांगो नंद हमसों। जो मांगौ सो देउँ तुरतही यहै कहत गोपनसों॥बल मोहन दोऊ सुत तेरे कुशल सदा ये रहि हैं।इनको कह्यो करत तुम रहियो जब जोई ये कहिहैं॥सेवा बहुत करी तुम मेरी अब तुम सब घर जाहू। भोग प्रसाद लेहु तुम मेरो गोप सबै मिलि खाहू॥सपनो मैंहीं कह्यो श्यामसों करहु हमारी पूजा । सुरपति कौन बापुरो मोते और देव नहिं दूजा॥ इंद्र आइ बरषै जो व्रज पर तुम जिनि जाहु डराई । सुनहु सूर सुत कान्ह तुम्हारो कहिहैं मोहि सुनाई॥३४॥ राग सारंग॥ भली करी पूजा तुम मेरी। बहुत भाव करि भोजन अर्प्यो इह सब मानिलई मैं तेरी॥ सहसभुजा धरि भोजन कीनों तुम देखत विदमान। मोहिं जानतहै कुँवर कन्हैया यही नहीं कोउ आन॥पूजा सबकी मानि मैं लीनी जाहु घरनि व्रजलोग। सूर श्याम अपने कर लीने बांटत झूठनि भोग॥३५॥ राग बिलावल॥ बिनती करत नंद करजोरे पूजा कह हम जानैं नाथ। हम हैं जीव सदा मायाके दरश दियो हम किए सनाथ॥महापतित मैं तुम पावन प्रभु शरण तुम्हारीआयो तात। तुमसे देव और नहिं दूजो कोटि ब्रह्मांडरोम प्रति गात॥ तुम दाता अरु तुमहि भोकता हरता करता तुमहीं सार।सूर कहा हम भोग लगायो तुमहीं भुलै दियो संसार॥ ॥ ३६ ॥ यह पूजा मोहिं कान्ह बताई। भूल्यो फिरत द्वार देवनिके त्रिभुवनपति तुमको बिसराई॥ आपुहि कृपाकरी स्वप्नंतर श्यामहि दरश दियो तुम आई। ऐसे प्रभु कृपालु करुणामय बालककी अति करी बड़ाई॥ गिरि पाँयनलै हरिको पारत हलधरको पांयन लै नाई। सूर श्याम बलराम तुम्हारे इनको कृपा करौ गिरिराई॥३७॥ग्वाल कहत धनि धन्य कन्हैया।बडो देवता प्रगट बतायो यह कहि कहि सब लेत बलैया॥धन्य धन्य गिरिराजनकी मणि तुम सम आन न दूजा।तुम लायक कछ नाहिं हमारे को जानै तुम पूजा॥गोप सबै मिलि कहत श्यामसों जो कछु कह्यो सो कीनो। सूर श्याम कहि कहि यह वाणी देव मानि सुखलीनो॥३८॥ राग गौंडमलार॥गोपनंद उपनंद वृषभानु आए। बिनय सब करत गिरिराजसों जोरि कर गए तनु पाप तुव दरशपाए॥देवता बडो तुम प्रगट दरशन दियो प्रकट भोजन कियो सबनि देख्यो॥प्रकट वाणी कही राज गिरि तुम सही और नहिं तिहूँभुवन कहूँ पेख्यो॥हँसत हरिमनहिमन तकत गिरिराज तन देव परसन भए करो काज॥सूर प्रभु प्रगट लीला कही सबनिसों चले घर घरनि अपने समाजा॥३९॥देखि थकित गण गंधर्व सुर मुनि।धन्य नंदको सुकृत पुरातन धन्य कही कहि जैजैजै धुनि॥धन्य धन्य गोवर्धन पर्वत करत प्रशंसा सुर मुनि पुनि पुनि।आ-पुहि खात कहतहै गिरिको यह महिमा देखी न कहूं सुनि॥यहै कहत अपने लोकनि गए धनि व्रजवासी वशकीनों उनि।सूर श्याम धनि धनि व्रजविहरत धन्य धन्य सब कहतहैं गुनि गुनि९४० राग नट नारायणी॥ चले व्रज घरनिको नर नारि।इंद्रकी पूजा मिटाई तिलक गिरिको सारि॥पुलक अंग न समात उरमें महर महरि समाज। अब बड़े हम देव पाए गिरि गोवर्धन राज॥इनहिते व्रज चैन रहिहै मांगि भोजन खात। यहै घेरा चलत व्रजजन सबनि मुख यह बात॥सबै सदनन आइ पहुँचे करत केलि बिलास।

सूर प्रभु यह करी लीला इंद्र रिस परकास ॥ ४१ ॥ अध्याय ॥ २९ ॥ इंद्रविचार राग सारंग॥ब्रजके वासिन मो बिसरायो। भली करी बलि मेरी जो कछु सो लै सब पर्वतहि जिमायो॥ मोसों गर्वकियो लघु प्राणी नाजानिये कहा मन आयो। त्रिदशकोटि अमरनको नायक जानि बूझि इन मोहिं भुलायो॥ अब गोपन भूतल नहिं राखौं मेरी बलि मोको न चढायो। सुनहु सूर मेरे मारत धौं पर्वत कैसे होत सहायो॥ ४२ ॥ राग सोरठ ॥ प्रथमहि देउ गिरिहि बहाइ। बज्रघातनि करौं चूरन देउ धरणि मिलाइ ॥ मेरी इन महिमा न जानी प्रगट देउ दिखाइ। जलबरपि ब्रज धोइ डारौं लोग देउँ वहाइ॥ खात खेलत रहे नीके करि उपाधि बनाइ ॥ बरष दिवस मोहिं देत पूजा दई सोऊ मिटाइ ॥ रिस सहित सुरराज लीन्हें प्रबल मेघ बुलाइ। सूर सुरपति कहत पुनि पुनि परौ ब्रजपर धाइ ॥ ४३ ॥ राग मेघमलार ॥ सुनत मेघ वर्तक साजि सैन लै आए।जलवर्त वारिवर्त पवनवर्त बज्रवर्त आगिवर्तक जलद संग ल्याए ॥ घहरात तरतरात गररात हहरात पररात झहरात माथ नाए। कौन ऐसो काज बोले हम सुरराज प्रलयके साज हमको बुलाए ॥ बरष दिन संयोग देत मोकों भोग क्षुद्रमति ब्रज लोग गर्व कीनो। मोहिं गए बिसराइ पूज्यो गिरिवर जाइ परौ ब्रजपर धाइ आयसु यह दीनो॥ कितक ब्रजके लोग रिस करत किहिं योग गिरि लियो भोगफल तुरत पैहैं। सूर सुरपति सुन्यो बयो जैसो लुन्यो प्रभु कहा गुन्यो गिरिसहित वैहै॥ ४४ ॥राग मलार॥ बिनती सुनहु देव मघवापति। कितिक बात गोकुल ब्रजवासी बारबार रिस करत जाहि अति॥ आपुन बैठि देखियो कौतुक बहुतै आयसु दीनो। छिनमें बरपि प्रलयजल पाटौं खोजु रहै नाहिं चीनो॥ महाप्रलय हमरे जल बरषै गगन रहे भरिछाइ। अक्षयवृक्ष बट बढतु निरंतर कहा ब्रज गोकुल गाइ॥ चले मेघ माथे कर धरिकै मनमें क्रोध बढाइ। उमडत चले इंद्रके पायक सूर गगन रहे छाइ ॥ ४५ ॥ राग गौडमलार ॥ मेघदल प्रबल ब्रजलोग देखैं। चकित जहां तहां भए निरखि बादर नए ग्वाल गोपाल डरि गगन पेखैं॥ऐसे बादर सजल करत अति महाबल चलत घहरात करि अंधकाला। चकृत भए नंदसब महर चकृतभए चकृत नर नारि हरि करत ख्याला॥घटा घनघोर घहरात अररात दररात सररात ब्रजलोग डरपे।ताडित आघात तररात उतपात सुनि नर नारि सकुचि तनु प्राण अरपे ॥कहां चाहत हौ न भई न कबहूं जौन कबहूं आंगन भौंन बिकल डोलै।मेटि पूजा इंद्र नंदसुत गोबिंद सूर प्रभु करै आनंद कलोलै॥४६॥सैनसाजि ब्रजपर चढि धावहि।प्रथम बहाइ देउ गोवर्धन ता पाछे ब्रज खोदि बहावहि॥अहिरन करी अवज्ञा प्रभुकी सो फल उन कहँ तुरत देखावहि।इंद्रहि पेलि करी गिरि पूजा सलिल बरपि ब्रजनाउँ मिटावहि॥बल समेत निशि वासर बरषहु गोकुल बोरि पताल पठावहि।सूरदास सुरपति आज्ञा यह भूतल कतहूं रहन न पावहि ॥ ४७ ॥ राग मेघमलार ॥ बादर घुमडि उमडि आए ब्रज पर बर्षत कारे धूमरे घटा अतिही जल। चपला अति चमचमाति ब्रजजन सब डर डरात टेरत शिशू पिता मात ब्रज गलबल ॥ गर्जत ध्वनि प्रलयकाल गोकुल भयो अंधकार चकृत भए ग्वाल बाल घहरत नभ करत चहल। पूजामेटि गोपाल इंद्र करत इहै हाल सूर श्याम राखहु अब गिरिवर बल ॥४८॥ राग गौंडमलार॥ गिरिपर बरषन आए बादर।मेघवर्त जलवर्त सैन साजि आये लैलै आदर॥ सलिल अखंड धार धर टूटत कियो इंद्र मन सादर। मेघ परस्पर यहै कहतहैं धोइ करहु गिरि खादर ॥ देखि देखि डरपत ब्रजवासी अतिहि भए मन कादर। यहै कहत ब्रज कौन उबारै सुरपति किए निरादर ॥ सूर श्याम देखे गिरि अपने मेघानि कीनो दादर। देव आपनो नहीं सँभारत करत इंद्रसों ठादर ॥ ४९ ॥ राग मलार ॥ गए बिततांइ ब्रज नरनारि। धरत सैंतत धाम बासन नाहिं

T

सुरति सम्हारि ॥ पूजि आए गिरि गोबर्धन देति पुरुषनि गारि। आपनो कुलदेव सुरपति धर्यो ताहि बिसारि ॥ दियो फल यह गिरिगोवर्धन लेहु गोदपसारि। सूर कौन सम्हारि लैहै चढ्यो इंद्र प्रचारि ॥९५०॥ राग सोरठ ॥ ब्रजके लोग फिरत बितताने। गैयनि लै बन ग्वाल गए ते धाए आवत ब्रजहि पराने ॥ कोऊ चितवत नभतन चकृत ह्वै कोउ गिरि परत धरनि अकुलाने। कोऊ लै ओट रहत वृक्षनकी अंधधुंध दिशि विदिशि भुलाने ॥ कोउ पहुँचे जैसे तैसे गृह कोउ ढूंढत गृह नाहिं पहिचाने। सूरदास गोबर्धन पूजा कीने कर फल लेहु बिहाने ॥९१॥ राग नट ॥ तरपत नभ डरपत ब्रज लोग। सुरपतिकी पूजा बिसराई लै दीनो पर्वत को भोग ॥ नंदसुवन यह बुधि उप जाई कौन देव कह्यो पर्वत योग ।सूरदास गिरि बडो देवता प्रगट होइ ऐसे संयोग॥९२॥ ब्रज नरना रि नंद यशुमतिसों कहत श्याम ए काज करे। कुलदेवता हमारे सुरपति तिनको सब मिलि मेटि धरे॥ इंद्रहि मेटि गोबर्धन थाप्यो उनकी पूजा कहा सरे। सैंतत फिरत जहाँ तहाँ बासन लरिकनु लैलै गोदभरे ॥ को करि लेइ सहाइ हमारो प्रलयकालके मेघ अरे। सूरदास प्रभु कहत नारि नर क्यों सुरपति पूजा बिसरे ॥ ९३ ॥ राग बिलावल ॥ राखिलेहु गोकुलके नायक। भीजत ग्वाल गाइ गोसुत सब विषम बूंद लागत जनु सायक॥बरषत मुसलधार सैनापति महामेघ मघवाके पायक। तुम बिनु ऐसो कौन नंदसुत यह दुख दुसह मिटावन लायक॥ अघ मरदन वकवदन विदारन वकी विनाशन सब सुखदायक। सूरदास प्रभु ताकी यहगति जाके तुमसे सदा सहायक ॥ ९४ ॥ अध्याय ॥ २६ ॥ तथा ॥ २७॥ मलार ॥ शरण राखि लेहो नंदताता । घटा आई गरजि युवती गई मन लरजि बीजु चमकति तरजि डरत गाता ॥ और कोऊ नहीं तुम त्रिभुवनधनी जहँ तहँ विकल ह्वैके कही तुमहिं नाता। सूर प्रभु सुनि हँसत प्रीति उरमें बसत इंद्रको कसत हरि जगत धाता ॥ ९५ ॥ राग बिलावल ॥ राखिलेहु अब नंदकिशोर।तुम जु इन्द्रकी मेटी पूजा वरषतहै अति जोर ॥ ब्रजवासी तुम तन चितवतहैं ज्योंकरि चंद्र चकोर। जनि जिय डरौ नैंन जनि मूँदौ धरिहौं नखकी कोर॥ करि अभिमान इंद्र झर लायो करत घटा घनघोर। सूर श्या म कहि तुमको राखौं बूंद न आवै छोर ॥ ९६ ॥ राग मलार ॥ माधवजू कांपत डरत हियो। दामिनि चाप बूंद सायक मनौ द्वै योधा लै संग ॥ ह्वै गयो सरस समीर दुहूं दिशि धनुष धुजा बहु रंग। शोभित सुभट प्रचारि पैजकरि भिरत न मोरत अंग॥ कहत तुम्हारे कियो नँदनंदन सुरपतिको व्रत भंग। बरपत प्रलयः मेघ धर अंबर डरपत गोकुल गाउँ। समरथ नाथ शरणहौं तुमबिनु और कौनपै जाउँ॥ जो तुम अनल व्याल मुख राखे श्रीपति सुहृद सुभाई। हमरे तौ तुमहीं चिंतामणि सब बिधि दाइ उपाई॥ जनि डर करहु सबै मिलि आवहु या पर्वतकी छाहँ। वर्षत में गोपाल बुलाए अभय किये दै बाहँ॥ एक हाथ गोवर्धन राख्यो सात दिवस बलबीर। सूरदास प्रभु ब्रजवासिनके ए हरता सब पीर ॥ ९७ ॥ माधव मेघ घेरि कितौ आए। घरको गाय बहोरो मोहन ग्वालन टेर सुनाए॥ कारी घटा सधूम देखियति अति गति पवन चलायो। चारौं दिशा चितै किन देखौ दामिनि कौंधा लायो॥ अति घन श्याम सुदेश सूर प्रभु करगहि शैल उठायो। राखे सुखी सकल ब्रजवासी इंद्रको कोप नवायो ॥ ९८ ॥ आजु ब्रज महाघटा घन घेरो। अब ब्रजराख कान्ह इहि औसर सब चितवत मुख तेरो॥ कोटि छ्यानवे मेघ बुलाए आनि कियो ब्रज डेरो। मूसल धार टूटे चहुँ दिशते ह्वैगयो दिवस अँधेरो॥ इतनी कहत यशोदा नंदन गोवर्धन तनहेरो। कियो उपाइ गिरिवर धरिबेको महिते पकरि उखेरो॥ सात दिवस जल वर्षि सिराने हारि

मानि सुख फेरो । श्रीपति कियो सहाय सूर प्रभु बूंद न आवत नेरो ॥ ५९ ॥ राग मेघमलार ॥ गगनमेघ घहरात थहरात गात । चपला चमचमाति चमकि नभ भहरात राखिले क्यों न ब्रजनंद तात॥सुनत करुणाबैन उठे हरि चले ऐन नैनकी सैन गिरि तन निहारचो । सबनि धीरज दियो उचकि मंदर लियो कह्यो गिरिराज तुमको उबारचो ॥ करजके अग्र भुजवाम गिरिवर धरो नाम गिरिधर परचो भक्तकाजै । सूर प्रभु कहत ब्रजवासिनसों राखि तुम लिए गिरिराज राजै ॥६०॥ राग गौरी । श्याम लियो गिरिराज उठाई । धरि धीर हरि कहत सबनिसों गिरि गोवर्धन कियो सहाई ॥ नंद गोप ग्वालनके आगे देव कह्यो यह प्रगट सुनाई । काहेको व्याकुलभए डोलत रक्षा करी देवता आई ॥ सत्यवचन गिरिदेव कहतहैं कान्ह लेइ मुहि कर उचकाई । सूरदास नारी नर ब्रजके कहत धन्य तुम कुवँर कन्हाई ॥६१॥ राग मलार ॥ वामकर धढे क्यों गिरिराज।गोपी गाइ ग्वाल गोसुत सब दुःखविसारचो सुखकरत समाज ॥ आनँद करत सकल गिरिवर तर दुख डारचो सबही बिसराइ । चकृतभए देखत यह लीला सबै परत हरि चरणन धाइ ॥ गिरिवर टेकि रहे बायें कर दक्षिण कर लियो सखनि उठाइ । कान्ह कहत ऐसो गोवर्धन देख्यो कैसो कियो सहाइ ॥ गोप बाल नंदादिक जहँलौं नंदसुवन लिए निकट बुलाइ ।सूरदास प्रभु कहत सबनिसों तुमहूं मिलि टेकौ गिरि आइ ॥ ६२॥ गिरि जनि गिरे श्यामके करते । करत बिचार सबै ब्रजवासी भय उपजत अति डरते ॥ लैलै लकुट ग्वाल सब धाए करत सहाय उठेहैं तुरते । यह अति प्रबल श्यामं अतिकोमल खकि खकि उर परते ॥ सप्त दिवस कर पर गिरि धारचो बर्षा बरषि हारचो अंमरते।गोपी ग्वाल नंद सुत राख्यो बरषत मेघधार जलधरते॥ यमलार्जुन दोउ सुत कुबेरके तेउ उखारे जरते। सूरदास प्रभु इंद्रगवन कियो ब्रज राख्योहै वरते॥६३॥ राग मलार ॥ नीके धरो नँदनंदन बलवीर।गिरि जनि परै टरै नखते तब कौन सहैगो भीर ॥ चहुँदिश पवन झकोरत घोरत मेघघटा गंभीर । उनै उनै बरषतु गिरि ऊपर धार अखंडित नीर ॥ अंध धुंध अंबरते गिरिपर मानौ परत वज्रके तीर । चमकि चमकि चपला चकचौंधति श्याम कहत मनधीर ॥ कर जोरत कुलदेव मनावत ब्रजके गोप अहीर । पय पकवान विहान पूजिहैं लै दधि मधु घृत खीर ॥ गोपी ग्वाल गाइ गोसुत सब रहैं सुख सहित शरीर । सूर श्याम गिरि धरचो वामकर मेघ भए अति सीर ॥ ६४ ॥ गिरिवर नीके धरचो कन्हैया। देखतरहो टरै जनि नखते भुजा तनकसी भैया ॥ जब जब गाढ परत ब्रजलोगन तब कारि लेत सहैया । जननि यशोदा कर लै चांपति अतिश्रम होति रि दैया ॥ देखत प्रगट धरचो गोवर्धन चकितभए नंदरैया । पिता देखि व्याकुल मनमोहन तब एक बुद्धि उपजैया ॥ आवहु तात गेहहु गोवर्धन गोपनसंग लिवैया । जहां तहां सबहुन गिरि टेक्यो कान्हहि बोतदिवैया॥श्याम कहत सब नंद गोपसों भलो करचो उचकैया । सूरदास प्रभु अंतर्यामी नंदहि हरष वढैया ॥ ६५ ॥ गिरिवर धरचो सखा सब करते । सब मिलि ग्वाल लकुटियनि टेको अपने भुजके वरते॥सात दिवस मूसल जल धारा वरषतुहै निशि दिन अंबरते । अंतरिक्ष जलजात कहाँ ये क्रोध सहित फिरि बरषत झरते ॥ गाइ गोप नंदादिक राख्यो बृथा बूंद सब नेकु न थरते । सूर गोपाल राखि गिरिवरतर गोकुल नर नारी ब्रज घरते ॥ ६६ ॥ बरषत मेघवर्त ब्रज ऊपर । मूसल धार सलिल बरषतु हैं बूंद न आवत भूपर॥ चपला चमकि चमकि चकचौंधति करति शब्द आघात। अंधाधुंध पवन वर्तक वन करत फिरत उत्पात ॥ निशि सम गगन भयो आच्छादित बरषि बरषि झर इंदु । ब्रजबासी सुख चैन करतहैं कर गिरिवर गोविंद ॥ मेघ वरषि जल सबै वढाने विविगुण गए सिराइ । वैसोई गिरिवर वैसोई ब्रजबासी दूनो हरष बढाइ ॥ सात दिवस जल वर्षि निशा दिन ब्रज

घर घर आनंद। सूरदास ब्रज राखिलियो धरि गिरिवर कर नँदनंद॥ ६७॥ बादर ब्रजपर आनि अरे। तबते वाम करज पर राख्यो बहुरि फेरि घुमरे॥ सात दिवस मूसल जलधारा सायर सप्तुद्र भरे। नहिं परवाह नंदके ढोंटहि पूरतवेनु धरे॥ लियो उठाइ कोपिकै गिरिवर सकल शरन उबरे। सूरदास बलि बलि चरणनकी सुरपति पाँइ परे॥६८॥बरषि बरषि ब्रजतन घन हेरत। मेघवर्त अपनी सेनाको खीझतहै फिरि टेरत॥कहा बरषि अबलौं तुम कीनो राखत जलहि छपाइ। मूसलधार बरषि जल पाटौ सात दिवस भए आइ॥ रिस करि करि गर्जत नभ वर्षत चाहत ब्रजहि बहाइ। सूर श्याम गिरि गोवर्धन धरि ब्रजजनको सुखदाइ॥ ६९॥ बरषि बरषि हहरे सब बादर। ब्रजके लोगन धोइ बहावहु इंद्र हमहि कहि आदर॥ कहा जाइ कैहैं प्रभु आगे करिहैं बहुत निआदर। हम बर्षत पर्वत जल सोखत ब्रजबासी सब सादर॥ पुनि रिस करत प्रलयजल बरषत कहत भए सब कादर। सूर गाइ गोसुत सब राख्यो गिरिवर धरि ब्रजनागर॥७०॥ राग धनाश्री॥ कहा होत जल महाप्रलयको। राख्यो सैंति सैंति जेहि कारज बचत नहीं कहुँ मनको॥ भुवपर एक बूंद नहिं पहुँची निझरि गए सब मेह। बासर सात अखंडित धारा बरषत हारे देह॥ बरुन भयो बिननीर सबनिको नाम रह्योहै बादर। सूर चले फिरि अमर राज पर ब्रजते भए निरदार॥७१॥राग मल्लार॥मघवनि हारि मानि मुख फेरो।नीके गोप बडे गोवर्धन जब नीके ब्रजहेरो॥नीके गाइ बच्छ सब नीके नीके बालगोपाल।नीको बन बैसी ये यमुना मन मन भयो बिहाल॥ गोकुल ब्रज बृंदावन मारग नेक नहीं जलधार। सूरदास प्रभु अगणित महिमा कहा भयो जलसार॥ ७२॥ राग नटनारायण॥ मघवन जाइ कहि पुकारी।दीनह्वै सुरराज आगे अस्त्र दीने डारी॥ सात दिन भरि बरषि ब्रजपर गई नेक न झार। अखंड धारा सलिल निझरो मिटी नहीं लगार॥ धरणि नेकु न बूंद पहुँच्यो हरषे ब्रज नर नारि।सूर मेघन इंद्र आगे करत यहै गुहारि॥७३॥राग गौरी॥ तुम बरषे ब्रज कुशल परचो। तुम बरषत जल महा प्रलयको यह कहि मन मन सोच परचो॥ एक घरी जाके बरषेते गगन आच्छादित होई। ते मघवा बिह्वल मो आगे बात कहतहैं रोई॥ सात दिवस जल बरषि सिराने ताते भए निरास। सूरदास सुरपति शंकित भयो सुरन बुलायो पास॥ ॥७४॥ अमरराज सब अमर बुलाए। आज्ञा सुनत सकल घर घरते आए कछु बिलंब ना लाए॥ कौन काज सुरराज हमारो हमको आयसु होई। देखौ मेघवर्त्तकनिकी गति ब्रजते आए रोई॥ गोवर्धनकी करी पुजाई मुहि डारचो बिसराइ। मेघवर्त्त जलवर्त्त पठाए आवहु ब्रजहि बहाइ॥ धार अखंडित बरषि सात दिन ब्रज पहुँची नहिं बूंद। सुरनि कही गोकुल प्रगटे हैं पूरण ब्रह्ममुकुंद॥ मोसों क्यों न कही तुम तबहीं गोकुलमें ब्रजराज। सूरदास प्रभु कृपा करहिंगे शरन चलौ दिवराज॥ ॥७५॥ राग सोरठ॥ शरण गए जो होइ सु होई। वे करता वेईहैं हरता अब न रहौं मुख गोई॥ब्रज अवतार कह्यो है श्रीमुख तेई करत बिहार। पूरण ब्रह्म सनातन वेई मैं भूल्यो संसार॥ उनके आगे चाहौं पूजा ज्यों मणि दीप प्रकाश। रविआगे खद्योत उज्यारी चंदन संग कुवास॥ कोटि इंद्र छिनहीमें राचैं छिनमें करैं बिनाश।सूर रच्यो उनहीको सुरपति मैं भूल्यो तिहि आश॥७६॥ राग सारंग॥प्रगट भए ब्रज त्रिभुवन राइ। युग गुण बीति त्रिगुण बुधि व्यापी शरन चलौ सुरपति अकुलाइ॥सपनेको धनु जागि परे ज्यों त्यों जानी अपनी ठकुराइ। कहत चल्यो यह कहा कियो मैं जगतपितासों करी ढिठाइ॥ शिव विरंचि रंचि इंद्र वरुण यम लिए अमर गण संग लगाइ। बार बार शिर धुनत जातु मग कैहौं कहा वदन दिखराइ॥ वैहैं परम कृपालु महाप्रभु रहौं शीश चरणनतर नाइ। सूरदास प्रभु पिता

मात मैं ओछी बुद्धि करी लरिकाइ७७॥ इंद्र शरणचले ॥ राग कान्हरो ॥ सुरगण सहित इंद्र व्रज आवत। धवल वरन ऐरापति देख्यो उतरि गगनते धरणि धँसावत ॥ अमरा शिव रवि शशि चतुरानन हय गय वसह हंस मृग जावत। धर्मराज बनराज अनल दिव शारद नारद शिवसुत भावत ॥ मेंढा मढी मगरखुडरारो मोर आपु मनवाह गनावत। व्रजके लोग देखि डरपे मन हरि आगे कहि कहि जु सुनावत ॥ सात दिवस जल बरषि सिरान्यो आवत चल्यो व्रजहि अतुरावत। घेरा करत जहां तहां ठाढे व्रजवासिनको नहीं बचावत ॥ दूरहिते बाहनसों उतरचो देवन सहित चल्यो शिर नावत। आइ परचो चरणनतर आतुर सूरदास प्रभु शीश उठावत ॥७८॥ सुरपति चरण परचो गहि धाइ। युग गुण धोइ शेषगुण जान्यो शरणहि राखिलेहु शरनाइ ॥ तुम बिसरे तुमरी मायामें तुम बिनु नाहीं और सहाइ। शरन शरन पुनि पुनि कहि कहि मोहिं राखि राखि त्रिभुवनके राइ ॥ मोते चूकपरी बिनुजाने मैं कीने अपराध बनाइ। तुम माता तुमही जगदाता तुम भ्राता अपराध क्षमाइ ॥ जो बालक जननीसे बिरुझै माता ताको लेइ मनाइ। ऐसेहि मोहिं करौ करुणामय सूर श्याम ज्यों सुतहित माइ ७९॥ राग बिलावल॥ व्याकुल देखि इन्द्रको श्रीपति उभय भुजा करि लियो उठाइ। अभय निभय कर माथे दीनो श्रीमुख वचन कह्यो मुसिक्याइ ॥ कहाभयो जु चढे व्रज ऊपर मैं तुरतहि करि लियो सहाइ। हमको जानि नहीं तुम कीनों बिन जाने यह करी ढिठाइ ॥ अब अपने जिय सोच करौ जिनि यह मेरी दीनी ठकुराइ। सूर श्याम गिरिधर सब लायक इंद्रहि कह्यो करो सुखजाइ ॥९८०॥ राग नट ॥ सुरगण करत अस्तुति मुखनि। दरशते तनुताप खोयो मेटि अघके दुखनि ॥ अंग पुलकित रोम गदगद कहत वाणी मुखनि। वामभुज कर टेकि राख्यो करज लघुके नखनि॥ प्रेमके वश तुमहि कीन्हों ग्वाल बालक सखनि। योगि जन वन तप न जाप न नहीं पावत मखनि ॥ धन्य नंद धनि मातु यशोमति चलत जाके रुखनि। सूर प्रभु महिमा अगोचर जाति कापै लखनि॥८१॥ राग भैरव ॥ जय माधव गोविंद मुकुंद हरि। कृपासिंधु कल्याण कंसअरि॥ प्रणतपाल केशव कमलापति। कृष्णकमल लोचन अनन्यगति ॥ श्रीरामचन्द्र राजीवनैन वर। शरण साधु श्रीपति सारंगधर ॥ वनमाली बिट्ठल बामन बल। वासुदेव वासी व्रजभूतल ॥ खरदूषण त्रिशिरा शिरखंडन। चरण चिह्न दंडक भुअमंडन॥ बकी बदन बक बदन बिदारन। वरुन बिषाद नंद निस्तारन॥ ऋषि मख तृणा तारकातारन॥ वनवसि तात वचन प्रतिपालन॥ कालीदमन केशिकरपातन। अघ अरिष्ट धेनुक अनुघातन ॥ रघुपति प्रवल पिनाक बिभंजन। जगहित जनक सुता मनुरंजन ॥ गोकुलपति गिरिधर गुणसागर। गोपीरमन राशिरतिनागर॥ करुणामय कपिकुल हितकारी। बालिबिरोध कपट मृगहारी ॥ गुप्त गोपकन्या व्रतपूरन। दुष्टन दुख भक्तन दुखचूरन ॥ रावण कुंभकर्ण शिरछेदन। तरुवर सात एक शर बेधन ॥ शंखचूड़ चाणूर सँहारन। शक्र कहै मोहि रक्षाकारन ॥ उत्तरकृपा गीध हितकारी। दरशन दे शबरी उद्धारी॥ जे पद सदा शंभुहितकारी। जे पद परसि सुरसरी गारी ॥ जे पद रमा हृदय नहिं टारी। जे पद तिहूँ भुवन प्रतिपारी ॥ जे पद अहिफन फन प्रति धारी। जे पद वृंदावनहि बिहारी ॥ जे पद शकटासुर संहारी। जे पद पांडव गृह पगुधारी॥ जे पद रज गौतम तिय तारी। जे पद भक्तनके सुखकारी ॥ सूरदास सुर याचत ते पद। करहु कृपा अपने जनपर सद८२॥ राग आसावरी ॥ अस्तुति करि सुर घरनि चले। यहै कहत सब जात परस्पर सुकृत हमारे प्रगट फले ॥ शिव बिरंचि सुरपति कहँ भापत पूरण ब्रह्महि प्रगट मिले। धन्य धन्य यह दिवस आजुको जातहै मारग करत मिले ॥ पहुँचे जाइ आपुने लोकनि अमर नारि सब हरष भरे। सूर श्यामकी

लीला सुनि सुनि अतिहित मंगल गानकरे॥८३॥राग मलार॥दिखियत दोउ घन उनए। उत घन वासव भक्ति वश्य इत नर इक रोष भए॥ उत सुरचाप कला प्रचंड इत तडित पीत पट श्याम नए। उत सेनापति बरषि मुसलसम इत प्रभु अमिय दृष्टि चितए॥ युगल बीच गिरिराज बिराजत कर जु उठाइ लए। मनौ बिनि मरकत बीच महा नग चतुर नारि बनए॥ लुटत शक्रके शीश चरण तर युग गुण गत समए। मानहु कनकपुरी पतिके शिर रघुपति फेरि दए॥ भए प्रसन्न सकल सुरपुरको प्रमुदित फेरि गए। सूरदास गिरिधर करुणामय इंद्र थापि पठए॥ ८४॥ देखौ भाई बदरनिकी बरियाई। मदनगोपाल धरचो गिरिवर कर इंद्र ढीठ झरलाई॥जाके राज सदासुख कीनों तासों कौन बडाई। सेवकु करैं स्वामिसों सरबर इनिबातनि पति जाई॥इंद्र ढीठ बलि खाइ हमारी देखौ अकल गमाई। सूरदास तेहिको काको डर जिहि वन सिंह कन्हाई॥८५॥ राग सोरठ॥ जहां तहां तुम हमहि उबारचो। ग्वाल सखा सब कहत श्यामसों धनि यशुमति अवतारचो॥ तृणावर्त्त ब्रजपर चढिआयो लाग्यो देन उडाइ। अति शिशुतामें ताहि संहारचो परचो शिलापर आइ॥ फळजनवै बालक सँग खेलत केशी आयो साथ।वाहि मारि तुम हमहिं उबारचो ऐसे त्रिभुवननाथ॥ कागासुर शटकासुर मारचो पय पीवत दनुनारी।अघा असुरते हमहि निकास्यो बकावदन धरि फारी॥ काली दह जल अचैगए मरि तब तुम लिये जिवाय।सूर श्याम सुरपतिते राखे देतो सबनि बहाइ८६॥ हमको नँदनंदनको गारो। इंद्रकोप ब्रज बहोजातहै गिरिधर सकल उबारो॥राम कृष्ण बल वदत न काहू निडर चरावत चारो। बिगरै सबरै हमरे शिर ऊपर बलको वीर रखवारो॥ तबहीं हमहिं भरोसो आयो केशी तृणावर्त जब मारचो। सूरदास प्रभु रँगभूमिमें हरि जीत्यौ नृप हारचो॥ ॥८७॥राग मलार॥तुम सुरपतिको मान हरचो। वरपत शुंड दंडधर धारा छिन छिन एकमें प्रलय करचो॥ ऐरावत आरूढ़ अग्रघन लघुता जानि जु रोषभरचो। देखे दीन दुखित नंदादिक लीला गिरिवर कर जु धरचो॥ सूरदास करुणामय माधव ब्रज सुख उनको गरब हरचो॥८८॥राग बिलावल॥ ब्रज युवती ब्रजजन ब्रजवासी कहत श्यामसर कौन करै। ब्रज मारत ब्रजनाथहि आगे बज्रायुध मन क्रोध करै॥ बलसमेत बरष्यो ब्रजऊपर बल मोहनकी सुधि न करै। हारि मानि हहरचो हरि चरणनि हरपि हिये अब हेतु करै॥ गरजि गरजि घहरात गुसांकरि गिरिवारो यह पै जु करै। सूरदास गिरिधर करुणामय तुम बिनु को प्रभु क्षमा करै ८९॥राग मेघमलार॥ श्याम गिरिराज क्यों धरचो करसों।अतिहि बिस्तार अतिभार तुम बार अति बाम भुज टेकि लघु जात करसों॥ कहत सब ग्वाल धनि धन्य नंद लाल ब्रज धन्य गोपाल बल कितिक करसों। धन्य यशुमति मात जिनि जन्यो तुम तात चोरि माखन खात बाँधे करसों॥ कान्ह हँसिकै कह्यो तुम सबन गिरि गह्यो रह्यो हो ब्रज बह्यो लकुट करसों। सूर प्रभुके चरित कहा बल गिरि धरत चरणरज लेत सुरराज करसों॥९०॥राग मलार॥हाहा रे हठीले हरि अपनी जननीको कहचो करि इंद्र बरपि गयो अब गिरिवर धरि। सात दिवस कीनी छाँह नेकु न पिरानी बाहँ अति कठिन कुटु राख्यो रे छतानि करि।सुनिकै यशोदा धाइ निकट गोपाल करौ रे सबै सहाय नैन रहे जलभरि॥कुलके देव मनाए देवेको द्विज बुलाये दियो जाहि जोई भायो इंद्रकोप जियो रे कन्हैया प्यारो जाके राज सुखकरि। सूरदास प्रभु गिरिधरको कौतुक देखि कामधेनु आयो धायो इंद्र अपड़र डरि॥ ९१॥ राग सोरठ॥जब करते गिरि धरचो उतारि। श्याम कह्यो बहुरो गिरि पूजहु ब्रज जन लिए उबारि॥ यह सुनतहि मन हर्ष बढ़ायो। कियो पकवानु सँवारि। बहु मिष्टान्न बहुत बिधि भोजन बहु व्यंजन अनुहारि॥ परसि धरो गोवर्धन आगे जेंवत अति रुचि भारि। सूर श्याम

गिरिधर वर मांगत रविसों घोपकुमारि ॥९२॥ राग कान्हरो ॥ घरघरते ब्रज युवती आवति। दधि अक्षत रोचन धरि थारनि हरपि श्याम शिर तिलक बनावति ॥ वारंवार निरखि छवि अंग अंग श्याम रूप उरमाहँ दुरावति ॥ नंद सुवन गिरि धरचौ वामकर यह कहिकै मनहरप बढावति ॥ जेहि पूजति सब जन्म गँवायो सो कैसेहु पग छुवन न पावति। सूर श्याम गिरिधरन मांगि नरु कर जोरति कहि बिधिहि मनावति ॥ ९३ ॥ राग सोरठ॥नीके धरणि धरचो गोपाल।प्रलयघन जल वरपि सुरपति परचो चरण बिहाल ॥ करत अस्तुति नारि नर ब्रज नंद अरु सब ग्वाल। जहां तहां सहाय हमको होतहैं नंदलाल ॥ जाहि पूजत डरत मनमें ताहि देख्यो दीन। त्रिदशपति सब सुरको नायक सो भयो आधीन। देखि छवि अति नंदसुतकी नारि तन मन वारि।सूर प्रभु करते गुवर्धन धरचो धरणि उतारि ॥ ९४ राग नट ॥करते धरचो धरणी धरनि। देखि ब्रजजन थकित ह्वै रहे रूप रतिपति हर नि ॥ लेत बेर न धरत जान्यो कहत ब्रज नर घरनि। तन ललित भुज अतिहि कोमल कियो बल बहु करनि ॥ मोर मुकुट विशाल लोचन श्रवण कुंडल वरनि। बन जलद सुर चापकी छवि अमल स्वजन तरनि ॥ बरपि निकरे मेघ पाइक बहुत कीने अरनि। सूर सुरपति हारि मानी तब परचो दुहुँ चरनि ॥९५॥ राग विलावल॥घरनि घरनि ब्रज होत बधाई। सात वरषके कुँवर कन्हैया गिरिवर धरि जीत्यो सुरराई ॥ गर्व सहित आयो ब्रज बोरन यह कहि मेरी भक्ति घटाई। सात दिवस जल वरपि सिराने तब आयो पाइँन तर धाई ॥ कहाँ कहाँ संकट नहिं मेटत नर नारी सब करत बडाई। सूरश्याम अबकै ब्रज राख्यो ग्वाल करत सब नंद दोहाई॥९६॥राग नट॥क्यों राख्यो गोवर्धन श्याम। अति ऊंचो बिस्तार अतिहि बहु लीनो उचकि करज भुज बाम ॥ यह आघात महाप्रलय जल डर आवत सुख लेतहि नाम। नीके राखि लियो ब्रज सिगरो ताको तुमहि पठायो धाम ॥ ब्रज अवतार लियो जबते तुम यहै करत निशि बासर याम। सूर श्याम बन घन हम कारण बहुत करत श्रम नहिं विश्राम ॥९७॥ राखि लियो ब्रज नंदकिशोर। आयो इंद्र गर्व करि चढिकै सात दिवस वरपत भयो भोर ॥ वाम भुजा गोवर्धन राख्यो अति कोमल नखहीकी कोर। गोपी ग्वाल गाइ ब्रज राख्यो नेकु न आई बूंद झकोर॥ अमरापति चरणन लै परचो जब बीते युग गुनको जोर। सूर श्याम करुणा कै ताको पठै दियो घर मानि निहोर ॥ ९८ ॥ राग मलार॥ मेरो मोहन जल प्रवाह क्यों टारचो। बूझत मुदित यशोदा जननी इंद्र कोप करि हारचो ॥ मेघवर्त्त जल वरपि निशा दिन नेकु न नैन उघारचो । बार बार यह कहति कान्हसों कैसे गिरि नख धारचो ॥ सुरपति आनि गिरचो गहि पांइन ताको शरन उवारचो। सूर श्याम जनके सुखदाता करते धरणि उतारचो ॥ ९९ ॥ राग सोरठ ॥ मेरे सांवरे मैं बलिजाऊँ भुजनकी। क्यों गिरि सबल धरचो कोमल कर बूझतिहौं गति तनकी ॥ इंद्र कोप आयो ब्रज ऊपर बहुत पैज करि हारे । ठाढे गोप कहत भैयाहो तैं हम भले उबारे॥ थार तमोर दूध दधि रोचन हरपि यशोदा ल्याई ।करै शिर तिलक चरण रजवंदित मनहु रंक निधि पाई ॥ चरणन परत कमल ब्रजसुंदरि हरपि हरपि मुसुकाई। फिरि फिरि दरशकरति एही मिस प्रेम न प्रीति अघाई ॥ गोपी गाइ ग्वाल गोसुत सब वार बार अकुलाहीं। निरखि निरखि सुंदर मुख शोभा प्रेम तृपा न बुझाहीं ॥ सूरदास सुरपति शंकित ह्वै सुर न लिये सँग आयो। तुम जु अनंत अखिल अविनाशी काहू मरम न पायो॥१०००॥राग सोरठ॥ गिरिवर कैसे लियो उठाई। कोमल कर चांपति यशुदा यह कहि लेत बलाई ॥ महाप्रलय जल तापर राख्यो एक गोवर्धन भारी। नेक नहीं हाल्यो नखपरते मेरो सुत अहंकारी ॥ कंचनथार दूब दधि रोचन सजि तमोर लै आई। हरपति तिलक करति सुख निरखति भुजभरि कंठ लगाई ॥

रिसकरिकै सुरपति चढि आयो देतो ब्रजहि बहाई। सूर श्यामसों कहति यशोदा गिरि धर बडो कन्हाई ॥१॥ धरणी धर क्यों राख्यो दिन सात। अतिहि कोमल भुजा तुम्हारी चांपति यशुमति मात॥ ऊंचो अति विस्तार भार बहु यह कहि कहि पछितात। वह अघात तेरे तनक तनक कर कैसे राख्यो तात॥ मुख चूमति हरि कंठ लगावति देखि हँसे बल भ्रात। सूर श्यामको केतिक बात यह जननी जोरति नात॥ २॥ राग कान्हरो ॥ जननी चांपति भुजा श्यामकी ठाढे देखि हँसत बलराम। चौदह भुवन उदरमें जाके गिरिवरधरचो बहुत यह काम॥ कोटि ब्रह्मांड रोम रोमनि प्रति जहां तहां निशि वासर घाम। जोइ आवति सोइ देखि चकृतहै कहत करे हरि कैसे काम॥ नाभिकमल ब्रह्मा प्रगटाये देखि जलार्णव तज्यो बिश्राम। आवत जात बीचही भट क्यों दुखित भयो खोजत निज धाम॥ तिनसों कहत सकल ब्रजबासी कैसे कर राख्यो गिरि श्याम। सूरदास प्रभु त्रिभुवन नायक फिरि फिरि जन्म लेत नंदधाम॥३॥ राग गौरी ॥मात पिता इनके नहिं कोई।आपुहि करता आपुहि हरता त्रिभुवन गए रहतहैं जोई॥कितिक बार अवतार लियो ब्रज एहैं ऐसे वोई। जल थल कीट ब्रह्मके व्यापक और न इनसरि होई॥ बसुधा भार उतारन कारन आपु रहत तनु गोई।सूर श्याम माता हितकारी भोजन मांगत रोई॥४॥ अथ गोवर्धनकी दूसरी लीला॥ ॥राग बिलावल॥नंदहि कहति यशोदा रानी।सुरपति पूजा तुमहि भुलानी॥यह नहिं भली तुम्हारी वानी। मैं गृहकाज रहौं लपटानी॥ लोभहि लोभ रहेहौ सानी। देवकाजकी सुधि विसरानी ॥महरि कहति पुनि पुनि यह बानी। पूजाके दिन पहुँचे आनी॥ सूरदास यशुमतिकी बानी। नंदहि खीझि खीझि पछितानी॥ १॥ नंद कह्यो सुधि भली देवाई। मैंतौ राजकाज मनलाई॥ नित प्रति करत इहै अधमाई। कुल देवता सुरति बिसराई॥ कंस दई इह लोक बडाई। गाउँदशक शिरदार कहाई॥ जलधि बूंद ज्यों जलहि समाई। माया जहँकी तहां बिलाई॥ सूरदास यह कहि नँदराई। चरण तुम्हारे सदा सहाई॥ २॥ कहत महरि तब ऐसी बानी। इंद्रहिकी दीनी रजधानी॥ कंस करत तुम्हरी अति कानी। यह प्रभुकीहै आशिष बानी॥। गोपन बहुत बडाई मानी। जहां तहां यह चलति कहानी॥तुम घर मथिये सहस मथानी।ग्वालिनि रहत सदा बिततानी॥ तृण उपजत उनहीं के पानी। ऐसें प्रभुकी सुरति भुलानी॥ सूर नंद मनमें तब आनी। सत्य कहत तुम देव कहानी॥३॥ महर लियो इक ग्वाल बुलाइ। गोपनंद उपनंद बुलाइ॥ अरु आनो वृषभानु लवाइ। तुरत जाहु तुम करहु चँडाइ॥ यह सुनि ग्वाल गए तहँ धाई। नंद महरकी कही सुनाई॥नेक करहु अब जिनि बिलमाई। मोहिं कह्यो सब देहु पठाई॥ यह सुनिकै सब चले अतुराई। मन मन सोच करत पछिताई॥कंसकाज जिय मांझ डराई। राज अंश धन दियो चलाई॥सूर नंदगृह पहुँचे आई। आदर करि बैठे नँदराई ॥४॥ गोप सबै उपनंद बोलाए।कौन काजको हम हँकराए॥ सुनतेही हम आतुर आए। कंस कछू कहि मांगि पठाए॥ इहैजानि अति आतुर आए। सब मिलि कह्यो बहुत डरपाए॥ कालिहि राज अंश दै आए। ग्वाल कहत तुरतहि उठि धाए॥ महर कह्यो हम तुम डरवाए। हँसि हँसि कहत अनंद बढाये॥ हम तुमको सुखकाज मँगाए। वारवार यह कहि दुख पाए॥सूर इंद्र पूजा बिसराये। यह सुनतहि शिर सबनि नवाए॥ ५॥ पूजा सुनत बहुत सुख कीन्हों। भली करी हमको सुधि दीन्हों॥ यह बाणी सबहिन सुख लीन्हो। बडे देव सब दिनको चीन्हो॥ इतहीते ब्रजबास बसीनो। हम सब अहिर जाति मतिहीनो॥ पूजाकी बिधि करत सबै मिलि। जेहि जेहि भांति सदा जैसी चलि॥ बिदा माँगि नंदसों गृह आए। घरनि घरनि यह बात चलाए॥सूरदास

गोपनकी बानी । ब्रज नर नारि सबन यह जानी ॥ ६ ॥ नंदघरनि ब्रजबधू बोलाई । यह सुनिकै तुरतहि सब आई ॥ कौन काज हम महरि हँकारी । तुम नहिं जानत यौवन भारी ॥ विहँसि कहति कहा देतहौ गारी । सुरपति पूजा करो सवारी ॥ देखैं हम सब सुरति बिसारी । औरो हमहि बूझिए गारी ॥ यह सुनि हरपित भइ नँदनारी । सखियन वचन कह्यो जब प्यारी ॥ सूर इंद्र पूजा अनुसारी । तुरत करौ सब भोग सँवारी ॥ ७ ॥ घरनि चली सब कहि यशुमतिसों । देव मनावति वचन बिनतिसों ॥ तुम बिन और नहीं हम जानै । मुख मुख अस्तुति करत बखानै ॥ जहां तहां ब्रजमंगल गाने । बाजत ढोल मृदंग निसाने ॥ बहुत भांति सब करे पकवानै । नेवज करि धरि सांझ बिहानै । छुवत नहीं देवकाज सकानै । देवभोगको रहत डेरानै ॥ सूरदास हम सुरपति जानै । और कौन ऐसो जेहि मानै ॥ ८ ॥ नंदमहर घर होत बधाई । करत सबै विधिदेव पुजाई॥नेवज करत यशोदा आतुर । अष्टौ सिद्धि घरहि अति चातुर ॥ मैदा उज्ज्वल करिकै छान्यो । बेसन दारि चनक करि वान्यो॥घृत मिष्टान्न सबै परिपूरन । मिश्रित करत पागको चूरन ॥ कटुवा करत मिठाई घृत पक । रोहिणि करत अन्नभोजन तक ॥ संग और ब्रजनारी लागी । भोजन करतहँ बडी सभागी । महरि करत ऊपर तरकारी । जोरत सब विधि न्यारी न्यारी ॥ सूरदास जो मांगत जबहीं । भीतरते ले देतहैं तबहीं ॥९॥ महरि सबै नेवज लै सैतति । श्याम छुवै कहुँ ताकी डरपति कान्हहि कहति यहां जनि आवै । लरकनको यह देव डरावै॥श्याम रहे आंगनहिं डराई । मन मन हँसत मात सुखदाई ॥ मैया री मोहिं देव देखैहै । इतनो भोजन सब वह खैहै॥यह सुनि खीझतिहै नँदरानी। बार बार सुतसों बिरुझानी ॥ ऐसी बात न कहौ कन्हाई । तू कत करत श्याम लँगराई ॥ कर जोरति अपराध छमावति । बालकको यह दोष मिटावति ॥ सूरदास प्रभुको नहिं जानै । हँसत चले मनमें न रिसानै ॥ १० ॥ युवती कहति कान्ह रिसपायो । जान देहु सुरकाज बतायो ॥ बालक आइ छुवै कहुँ भोजन । उनकी पूजा जानै को जन ॥ यह कहि कहि देवता मनावति । भोग सामग्री धरत उठावति ॥ उनकी कृपा गऊगण घेरे । उनकी कृपा धाम धन मेरे ॥ उनकी कृपा पुत्र फल पायो । देखहु श्यामहि खीझि पठायो ॥ सूरदास प्रभु अंतर्यामी । ब्रह्मा कीट आदिके स्वामी ॥ ११ ॥ नंद निकट तब गए कन्हाई । सुनत बात तहँ इंद्र पुजाई ॥ महर नंद उपनंद तहाँ सवं । बोलिलिए वृषभानु महर तब ॥ दीपमालिका रचि रचि साजत । पुहुपमाल मंडली विराजत ॥ बरप सातके कुँवर कन्हाई । खेलत मन आनंद बढाई॥ घर घर देति युवति जन हाथा॥पूजा देखि हँसत ब्रजनाथा॥ मो आगे सुरपतिकी पूजा । मोते और देव को दूजा ॥ शत शत इंद्र रोमप्रति लोमनि । शतलोमनि मेरे इक रोमनि ॥ सूर श्याम ए मनसों बातैं । लीनो भोग बहुत दिन जातैं ॥ १२ ॥ सुर पति पूजा जानि कन्हाई । बार बार बूझत नँदराई ॥ कौन देवकी करत पुजाई । सो मोसों तुम कहौ बुझाई॥महर कह्यो तब कान्ह सुनाई।सुरपति सब देवनके राई॥तुमरे हित मैं करत पुजाई । जाते तुम रहो कुशल कन्हाई ॥ सूर नंद कहि भेद बताई । भीर बहुत घर जाहु सिखाई ॥१३॥ जाहु घर हि बलिहारी तेरी । सेज जाइ सोवो तुम मेरी ॥ मैं आवतहौं तुम्हरे पाछे । भवन जाहु तुम मेरे बाछे ॥ गोपन लीन्हें कान्ह बुलाई । मंत्र कहौं एक मनहि समाई ॥ आजु एक सपने कोउ आयो। शंखचतुर्भुज चारि बतायो॥मोसों यह कहि कहि समुझायो।यह पूजा तुम किनहि सिखायो॥सूर श्याम कहि प्रगट सुनायो॥गिरि गोवर्धन देव बतायो॥१४॥यह तब कहन लगे दिवराई । इंद्रहि पूजे कौन बडाई॥कोटि इंद्र हम छिनमें मारैं छिनहीमें फिरि कोटि सँवारैं ॥ जाके पूजे फल तुम पावहु।ता देवहि

T •

तुम भोग लगावहु ॥ तुम आगे वह भोजन खैहै। मुँह माँग्यो फल तुमको दैहै ॥ ऐसो देव प्रगट गोबर्धन। जाके पूजे बाढै गोधन॥ समुझि परी कैसी यह बानी। ग्वाल कही यह अकथ कहानी ॥ सूर श्याम यह सपनो पायो। भोजन कौन देवही खायो ॥ १५ ॥ मानहु कह्यो सत्य यह बानी।जो चाहौ ब्रजकी रजधानी॥जो तुम मुहँ मांग्यो फल पावहु। तौ तुम अपने करन जेंवावहु ॥ भोजन सब खैहैं मुहँमाँगे।पूजत सुरपति तिनके आगे॥मेरी कही सत्य करि मानहु।गोवर्धनकी पूजा ठानहु। सूर श्याम कहि कहि समुझायो। नंद गोप सबके मन आयो ॥ १६ ॥ सुरपति पूजा मेटि धराई। गोबर्धनकी करत पुजाई। पांच दिनालौं करी मिठाई। नंदमहरघरकी ठकुराई॥जाके घरनी महरि यशोदा। अष्ट सिद्धि नव निधि चहुँ कोदा ॥ घृतपक बहुत भांति पकवाना। व्यंजन बहु को करै बखाना ॥ भोग अन्न बहु भार सजायो। अपने कुल सब अहिर बोलायो ॥ सहस शकट भरि भरत मिठाई। गोबर्धनकी प्रथम पुजाई। सूर श्याम यह पूजा ठानी। गिरिगोवर्धनकी रजधानी ॥ १७ ॥ ब्रज घर घर सब भोजन साजत। सबके द्वार बधाई बाजत ॥ शकट जोरि लै चले देवबलि।गोकुल ब्रजवासी सब हिलि मिलि ॥ दधि लवनी मधु साजि मिठाई॥कहँलगि कहौं सबै बहुताई॥घर घरते पकवान चलाए। निकसि गांवके ग्वैंडे आये ॥ ब्रजवासी तहां जुरे अपारा। सिंधुसमान पार ना वारा ॥ पैंडे चलन नहीं कोउ पावत। शकटभरे सब भोजन आवत ॥ सहस शकट चले नंद महरके। और शकट कितने घर घरके ॥ सूरदास प्रभु महिमा सागर। गोकुल प्रगटेहैं हरिनागर ॥ १८ ॥ इक आवत घरते चले धाई। एक जात फिरि घर समुहाई ॥ इक टेरत इक दौरे आवत। एक गिरावत एक उठावत ॥ एक कहत आवहु रे भाई। बैल देतहै शकट गिराई ॥ कौन काहिको कहै सँभारैं। जहाँ तहाँ सब लोग पुकारैं ॥ कोउ गावत कोउ निर्तत आवैं। श्याम सखासंग खेलत धावैं ॥ सूरदास प्रभु सबके नायक। जो मन करै सो करिबे लायक ॥ १९॥ सजि शृंगार चलीं ब्रजनारी। युवतिन भीर भई अति भारी ॥ जगमगात अंगनि प्रति गहनो। सबके भाव दरश हरि लहनो ॥ यहि मिस देखनको सब आईं। देखत एकटक रूप कन्हाई ॥ वै नहिं जानत देवपुजाई। केवल श्यामहिसों लव लाई ॥ कोमल जाति कहां को बोलत। नंदसुवन ते चित नाहिं डोलत॥सूर भजै हरि जो जेहि भाउ। मिलत ताहि प्रभु तेहि सुभाउ ॥ २०॥ गोपनंद उपनंद गए तहँ। गिरि गोवर्धन बडे देव जहँ॥ शिखर देखि तब रीझे मन मन। ग्वाल कहत आजुहि अचरज वन ॥ अति ऊंचो गिरिराज बिराजत। कोटि मदन निरखत छबि लाजत ॥ पहुँचे शकटनि भरि भरि भोजन। कोउ आए कोउ नाहिं कहुँ खोजन ॥ तिनके काज अहीर पठाए। बिलम करहु जिनि तुरत धवाए ॥ आवत मारग पाये तिनको। आतुर करि बोले नँद जिनको ॥ तुरत लिवाइ तिनहि तहां आए। महर मनहि अति हरष बढाए ॥ सूरदास प्रभु तहँ अधिकारी। बूझतहैं पूजा परकारी ॥ २१ ॥ आइ जुरे सब ब्रजके बासी। डेरा पर्‌यो कोश चौरासी ॥ एक फिरत कहुँ ठौर न पावै।एतेपर आनंद बढ़ावै ॥ कोउ काहूसों बैर न ताकै। बैठत मन जहां भावत जाकै ॥ खेलत हँसत करैं कौतूहल। जुरे लोग तहँ तहां अकूहल ॥ नंद कह्यो सब भोग मँगावहु। अपने कर सब लैलै आवहु ॥ भोग बहुत वृषभानुहिं घरको। को करि बरनै अतिहि बहरको ॥ सूर श्याम जो आयसु दीन्हों। विप्र बुलाइ नंद तब लीन्हों॥ २२ तुरत तहां सब विप्र बोलाए। यज्ञारंभ तहां करवाए ॥ सामवेद द्विज गान करत तहां। देखत सुर विथके अमरन जहां ॥ सुरपति पूजा तबहि मिटाई। गिरि गोवर्धन तिलक चढ़ाई ॥ कान्ह कह्यो गिरि दूध अन्हावहु। बडे देवता इनहि मनावहु ॥ गोवर्धन

दूधहि अन्हवाए। देवराज कहँ माथ नवाए॥ नये देवता कान्ह पुजावत। नर नारी सब देखन आवत॥ सूर श्याम गोवर्धन थाप्यो। इंद्र देखि रिसकारि तनु कांप्यो॥ २३॥ देखि इंद्र मन गर्व बढायो। ब्रजलोगन सब मोहिं बिसरायो॥अहिरजाति ओछी मति कीन्ही। अपनी ज्ञाति प्रगट करि दीन्ही॥ पूजत गिरिहि कहा मन आई।गिरि समेत ब्रज देउँ बहाई॥देखौं धौं कितनों सुख पैहैं। मेरे मारत काहि मनैहैं॥ पर्वत तब इनको क्यों राखत। वारंवार कहे इह भाषत॥ पूजत गिरि अति प्रेम बढाए। सपनेको सुख लेत मनाए॥सूरदास सुरपतिकी बानी। ब्रज बोरौं प्रयलके पानी॥ ॥२४॥श्याम कह्यो तब भोजन लावहु। गिरि आगे सब आनि धरावहु॥ सुनत नंद तहँ ग्वाल बोलाए। भोगसामग्री सबै मँगाए॥ षटरसके बहुभांति मिठाई। अन्नभोग अतिही बहुताई॥ व्यंजन बहुतभाँति पहुँचाए। दधि लवनी मधु माट धराए॥ दही बरा बहुतै परसाए। चंद्रहि सम पटतर तेहि पाए॥ अन्नकूट जैसो गोवर्धन। अरु पकवान धरे चहुँकोदन॥ परसत भोजन प्रात हि ते सब। रवि माथेते ढरकि गयो अब॥ गोपन कह्यो श्याम ह्यां आवहु। भोग धरयो सब गिरिहि जेमावहु॥ सूर श्याम आपुनही भोगी। आपुहि माया आपुहि योगी॥२५॥कान्ह कह्यो नंद भोग लगावहु। गोपमहर उपनंद बोलावहु॥नैन मूंदि कर जोरि मनावहु। प्रेमसहित देवहिन चढावहु॥ मनमें नेक खुटक जनि राखहु। दीन बचन मुखते तुम भाषहु॥ ऐसीविधि गिरि परसन ह्वैहै। सहस भुजा धरि भोजन खैहै॥सूरदास प्रभु आपु पुजावत।यह महिमा कैसे कोउ पावत॥२६॥ श्याम कही सोई सब मानी। पूजाकी विधि हम अब जानी॥ नैन मूंदि कर जोरि बोलायो। भावभक्तिसों भोग लगायो॥बडे देव गिरिराज सबनके। भोजन करहु कृपाकरि हिनके॥सहस भुजा धरि दरशन दीन्हों। जैजै ध्वनि नभ देवन कीन्हों॥ भोजन करत सबनके आगे। सुर नर मुनि सब देखन लागे॥देखि थकित ब्रजकी सब बाला। देखत नंद गोप सब ग्वाला॥ सूर श्याम जनके सुखदाई। सहस भुजा धरि भोजन खाई॥२७॥जेंवत देव नंद सुख पायो।कान्ह देवता प्रगट देखायो॥ब्रजवासी गिरि जेंवत देख्यो।जीवन जन्म सफल करि लेख्यो॥ललिता कहति राधिका आगे।जेंवत कान्ह नंदकर लागे॥मैं जानी हरिकी चतुराई। सुरपति मेटि आपु बलिखाई॥ उत जेंवत इत बातन लागे। कहत श्याम गिरि जेंवन लागे॥ मैं जो बात कही सो आई। सहसभुजा धरि भोजन खाई॥ और देव इनकी सरि नाहीं। इत बोधत उत भोजन खाहीं॥ सूरदास प्रभुकी यह लीला। सदा करत ब्रजमें यह क्रीला॥ २८॥ यह छबि देखि राधिका भूली। बात कहत सखियनसों फूली॥ आपुहि देव आपुही पुजेरी। आपुहि भोजन जेवत ढेरी॥ अति आतुर जेंवतहैं भारी। एक वृषभानु बिलोचन हारी॥ नाम ताहि बदरौला नारी। ताकी बलि लई भुजा पसारी॥ उत गिरि संग खात बलिसारी। बदरौलाकी बलि रुचिकारी॥सूरदास प्रभु जेवँनहारी। गिरि बपुरेसों को अधिकारी॥ २९॥ इतहि श्याम गोपन सँग ठाढ़े। भोजन करत अधिक रुचि बाढ़े॥ गिरितन शोभा श्याम बिराजे। श्यामहि छबि गिरिवरकी छाजे॥ गिरिवर उर पीतांबर डारे। मोतिनकी उर माला भारे॥ अँग भूषण श्रवणन मणिकुंडल। मोरमुकुट शिर अलकैहै झुंडल॥ छबि निरखत सब घोपकुमारी। गोबर्धन छबि श्याम अनुहारी॥सूर श्याम लीला रसनायक। जन्म जन्म भक्तन सुखदायक॥३०॥ भोजन करत देवभए परसन। माँगहु नंद तुम्हारे जो मन॥ भली करी तुम मेरी पूजा। सेवक तुमते और न दूजा॥ जो मांगौ सोइ फल मैं देहौं। जहां भाव ताहीपै रैहौं॥मैं सेवावश भयो तुम्हारे। जोइ फल चाहो लेहु सवारे॥ यह सुनि चकृतभए नर नारी। भोजन कियो प्रथमही भारी॥

अब देखौ मुख बात कहन है । ऐसे देव कहां त्रिभुवनहै ॥ कान्ह कह्यो कछु माँगहु इनसों । गिरिदेवता देत परसनसों॥सूर श्याम देवता आप है।ब्रजजनके त्रयताप हरतहै ॥ ३१॥नंद कह्यो कहा मांगौ स्वामी । तुम जानत सब अंतर्यामी ॥ अष्ट सिद्धि नव निधि तुम दीनो । कृपासिंधु तुमरोई कीनो ॥ कुशल रहैं बलराम कन्हाई । हम इहि कारण करैं पुजाई ॥ देवनकी मणि गिरिवर तुम हौ । जहँ तहँ व्यापक पूरन समहौ ॥ तुम हरता तुम करता सबके । देखि थकित नर नारि नगरके ॥ बडो देवता श्याम बतायो । प्रगटभए सब भोजन खायो ॥ सूर श्यामके जोइ मन आवै । सोइ सोइ नानारूप बनावै ॥ ३२ ॥ मांगिलेहु कछु और पदारथ । सेवा सबै भई अब स्वारथ ॥ फल मांग्यो बलराम कन्हाई । ये द्वै रहैं कुशल जु सदाई ॥ इनहीते हम तुमको जान्यो । तब तुम गिरि गोवर्धन मान्यो ॥ करत वृथा इंद्र पुजाई । मेरी दीनी है ठकुराई ॥ कान्ह तुम्हारो मोको जाने । इनको रैहौ तुम सब माने ॥ इंद्र आइ चढिहै ब्रज ऊपर । यह कहिहै नहिं राखौं भूपर॥नेक कछू नहिं वासों ह्वैहै । श्याम उठाइ मोहि कर लेहै ॥ सूर श्याम गिरिवरकी बानी । ब्रजजन सुनत सत्य करि मानी ॥ ३३ ॥ कौतुक देखत सुर नर भूले । रोम रोम गद गद सब फूले ॥ सुर विमान सुमनन बरषाए । जयध्वनि शब्द देव नर गाए ॥ देव कह्यो ब्रजवासिनसों तब । पूजा भली करी मेरी सब ॥ जाहु सबै मिलि सदन करौ सुख । श्याम कह्यो गिरि गोवर्धन मुख ॥ ग्वाल करत अस्तुति सब ठाढे।भाव प्रेम सबके चित बाढे ॥ भवन जाहु कहि श्रीमुखबानी । भोजन शेष श्याम कर आनी ॥ बाँटि प्रसाद सबनिको दीन्हो।ब्रजनारी नर आनँद कीन्हो ॥ सूर श्याम गोपन सुखकारी । चलौ कह्यो ब्रजको नर नारी ॥ ३४ ॥ दोउ कर जोरि भए सब ठाढे । धन्य धन्य भक्तनके चाढे ॥ तुम भोक्ता तुमही प्रभुदाता । अखिल ब्रह्मांड लोकके ज्ञाता ॥ तुमको भोजन कौन करावै । हितके वश तुमको कोउ पावै ॥ तुम लायक हमरे कछु नाहीं । सुनत श्याम ठाढे मुसकाहीं॥ ललितासखी देवता चीन्हो। चंद्रावली राधिकहि दीन्हो ॥ देव बडो इह कुँवर कन्हाई । कृपाजानि हरि ताहि चिन्हाई ॥ सूर श्याम कहि प्रगट सुनाई । भये तृप्त भोजन दिवराई ॥ ३५ ॥ परसत चरण चलत सब घरको । जात चले सब घोप शहरको ॥ सुख समेत मग जात चले सब । दूनी भीर भई तबते अब ॥ कोउ आगे कोउ पाछे आवत।मारगमें कहुँ ठौर न पावत॥प्रथमहि गयो डगर तिन पायो।पाछेके लोगन पछितायो॥ घरपहुँचे अबहीं नहीं कोई । मारगमें अटके सब लोई ॥ डेरो पर्चो कोस चौरासी।इतने लोग जुरे ब्रज वासी ॥ पैंडे चलन नहीं कोउ पावत । कितक दूरि ब्रज पूँछत आवत ॥ सूर श्याम गुण सागर नागर। उत्तम लीला करी उजागर ॥ ३६ ॥ कोउ पहुँचे कोउ मारग माहीं । बहुत गए घर बहुतक जाहीं ॥ काहूके मन कछु दुख नाहीं । अरस परस हँसि हँसि लपटाहीं ॥ आनँद करत सबै ब्रज आए । निकट आनि लोगन नियराये ॥ भीर भई बहु खोरि जहाँ तहँ । जैसे नदी मिलत सागर महँ ॥ नर नारी सरिता सब आगर । सिंधु मनौं इह घोप उजागर ॥ मथनहार हरि रतनकुमारी । चंद्रवदन राधा सुकुमारी ॥ सूर श्याम आए नँदशाला । पहुँचे घरनि आइ नरबाला ॥ ३७ ॥ बडो देवता कान्ह पुजायो । ग्वाल गोप हँसि अंग मिलायो ॥ कान्ह धन्य धनि यशुमति जायो । ब्रज धनि धनि तुमते कहवायो॥धन्य नंद जिन तुम सुत पायो । धनि धनि देव प्रगट दरशायो ॥ पूजामेटि इंद्र गिरि पूज्यो । परसन हमहि सदा प्रभु हूज्यो ॥ कहा इंद्र बपुरा केहि लायक । गिरि देवता सबहिके नायक ॥ सूरदास प्रभुके गुण ऐसे । भक्तन वश दुष्टनको नैसे ॥३८॥ हरि सबके मन यह उपजाई । सुरपति निंदत गिरिहि बडाई ॥ वर्ष वर्ष प्रति इंद्र पुजाई । कबहूं परसन भयो न आई ॥ पूजत रह्यो अविर्था सुरपति ।

सब सुख यह वाणी घर निंदति ॥ बडो देव यह गिरि गोवर्धन । इहै कहत गोकुल व्रज पुरजन ॥ तहाँ दूत इक इंद्र पठायो । व्रजकौतुक देखन नह आयो॥घर घर कहत बात नर नारी । दूत सुन्यो सो श्रवण पंसारी ॥ मानत गिरि निंदत सुरपतिको । हँसत दूत व्रजजन गई मतिको॥ सूर सुनत इतनी रिस पाये । उठि तुरतहि सुरलोकहि आये ॥ ३९ ॥ ब्रह्म दई जाको ठकुराई । त्रिदशकोटि देवनके राई ॥ गिरि पूज्यो तिनिहीं बिसराइ । जाति बुद्धि इनके मन आइ ॥ शिव विरंचि जाको कहैं लायक । जाके मैं मघवा से पायक ॥ यह कहतहि आए सुरलोकहि । पहुँचे जाइ इंद्रके ओकहि ॥ दूतन ऐसिय जाइ सुनाई । बैठे जहाँ सुरनके राई ॥ करजोरे सन्मुख भे आई । पूछि उठे व्रजकी कुशलाई ॥ दूतन व्रजकी बात सुनाई । तुमहि मेटि पूज्यो गिरिजाई ॥ तुमहि निदरि गिरिवरहि बडाई । इह सुनतहि रहे देह कँपाई ॥ सूर श्याम इह बुद्धि उपाई । ज्यों जानै व्रजमें यदुराई ॥ ४० ॥ ग्वालन मोसों करी ढिठाई । मोको अपनी जाति देखाई ॥ तेंतिसकोटि सुरनको राई ॥ तिहूं भुवन भरि चलत बडाई ॥ साहबसों जो करै धुताई । ताको नहिं कोऊ पतिआई ॥ इनि अपनी परतीति घटाई । मेरे बैर बांचिहैं भाई ॥ नई रीति इन अबहिं चलाई । काहू इनहि दियो बहिकाई ॥ ऐसी मति इन अबकै पाई । काके शरन रहैंगे जाई ॥ इन दीनो मोको बिसराई । नंद आपनी प्रकृति गँवाई ॥ जानी बात बुढाई आई । अहिर जाति कोई न पत्याई ॥ मात पिता नहिं मानै भाई । जानि बूझि इन करी धिंगाई ॥ मेरी बलि पर्वतहि चढाई । गिरिवर सहितै व्रजै बहाई ॥ सूरदास सुरपति रिस पाई । कीडीतनु ज्यों पांख उपाई ॥ ४१ ॥ मोको निंदि पर्वतहि वंदत । चारों कपट पांछि ज्यों फंदत ॥ मरन काल ऐसी बुधि होई । कछू करत कछुवै वह जोई ॥ खेलत खात रहे व्रजभीतर । नान्हे लोग तनक धन ईतर ॥ समय समय बरषों प्रतिपालों । इनकी बुद्धि इनको अब घालों ॥ मेरे मारत कौन राखिहै । अहिरनके मन इहै कापिहै ॥ जो मन जाके सोइ फल पावै । नींब लगाइ आंब क्यों खावै ॥ विषके वृक्ष विषहि फल फलिहै । तामें दाख कहो क्यों मिलिहै ॥ अग्निवर्त देखे करनावै । कहा करै तेहि अग्नि जरावै ॥ सूरदास इह सब कोउ जानै । जो जाको सो ताको मानै ॥ ४२ ॥ पर्वत पहिले खोदि बहाऊं । व्रजजन मारि पताल पठाऊं ॥ फूलि फूलि जेहि पूजा कीन्हों । नेक न राखों ताको चीन्हों ॥ नंद गोप नैनन यह देखैं । बडे देवताको सुख पेखैं ॥ निंदत मोहिं करी गिरि पूजा । जासों कहत और नहिं दूजा ॥ गर्व करत गोवर्धन गिरिको । पर्वत माहं आइ वह किरको ॥ डोंगरिको बल उनहिं बताऊं । ता पाछे व्रज खोदि बहाऊं ॥ राखौं नहीं काहु सब मारों । व्रज गोकुलको खोजि निवारों ॥ को जानै कहँ गिरि कहँ गोकुल । भुवपर नहिं राखौं उनको कुल ॥ सूरदास इह इंद्र प्रतिज्ञा । व्रजवासिन सब करी अवज्ञा ॥ ४३ ॥ सुरपति क्रोध कियो अतिभारी । फरकत अधर नैन रतनारी ॥ भृतनि बोलाये दैदै गारी । मेघनि ल्यावो तुरत हँकारी ॥ एक कहत धाए सौचारी । अति डरपे तनुकी सुधि हारी ॥ मेघवर्त जलवर्त बोलावहु । सैन साजि तुरतहि लै आवहु ॥ कापर क्रोध कियो अमरापति । महाप्रलय जिय जानि डरे अति ॥ मेघनसों यह बात सुनाई । तुरत चलौ बोले सुरराई ॥ सैन सहित बोलाए तुमको । रिस करि तुरत पठाए हमको ॥ वेगि चलो कछु बिलम न लावहु । हमहि कह्यो अबहीं लै आवहु ॥ मेघवर्त सब सैन्य बोलाए । महाप्रलयके जे सब आए ॥ कछु हर्ष कछु मनहि स काने । प्रलय आहि की हमहिं रिसाने ॥ चूकपरी हमते कछु नाहीं । यह कहि कहि सब आतुर जाहीं ॥ मेघवर्त्त जलवर्त वारिवर्त । अनिलवर्त्त वज्रवर्त प्रवर्त्त ॥ बोलत चले आपनी बानी ।

प्रभु सन्मुख सब पहुँचे आनी ॥ गर्जि गर्जि घहराताहि आए। देव देव कहि माथ नवाए ॥ सूरदास डरपत सब जलधर। हमपर क्रोध किधौं काहू पर ॥ ४४ ॥ चितवतही सब गए झुराई। सकुचि कह्यो कापर रिसपाई ॥ क्षमाकरहु आयसु हम पावैं। जापर कहौ ताहिपर धावैं ॥ सैनसहित प्रभु हमहि बोलाए। आज्ञा सुनत तुरत उठिधाए॥ऐसो कवन जाहि प्रभु कोपे। जीवनाम सब तुम्हरेइ रोपे ॥ सूर कही यह मेघन बानी। यह सुनि सुनि रिस कछुक बुझानी ॥ ४५ ॥ मेघनिसों बोले सुरराई। अहिरन मोसों करी ढिठाई ॥ मेरी दीन्ही करत बडाई। जानिबूझि मोहिं दियो भुलाई ॥ सदा करत मेरी सेवकाई। अब सेवत पर्वत कहँ जाई ॥ इहीकाज तुमको हँकराये। भली करी सैना लिये आए ॥ गाइ गोप ब्रज सबै बहावहु। पहिले पर्वत खोंदि ढहावहु ॥ जब यह सुनी इंद्रकी बानी। मेघन मन तब धीरज आनी ॥ सूरदास यह सुनि घन तमके। कापर क्रोध करत प्रभु जमके ॥ ४६ ॥ रिसलायक तापर रिस कीजै। यहि रिसतें प्रभु देही छीजै ॥ तुम प्रभु हमसे सेवक जाके। ऐसो कवन रहै तुम ताके ॥ छिनहीमें ब्रज धोइ बहावैं। डूंगरको कहि नाउँ न पावैं ॥ आपु क्षमा करिये देवराई। हम करिहैं उनकी पहुनाई ॥ यह सुनिकै हरपित चित कीन्हों। आदर सहित पान कर दीन्हों ॥ प्रथमहि देहु पहार बहाई। मेरी बलि वोही सब खाई ॥ सूर इंद्र मेघनि समझावत। हरपि चले घन आदर पावत ॥ ४७ ॥ आयसुपाइ तुरतही धाये। अपनी सैना सबनि बोलाये ॥ कह्यो सबनि ब्रज ऊपर धावहु। घटाघोर करि गगन छपावहु ॥ मेघ वर्त जलवर्तक आगे। और मेघ सब पाछे लागे ॥ गरजि उठे ब्रज ऊपर जाइ। शब्दकियो आघात सुनाइ ॥ ब्रजके लोग डरे अतिभारी। आजु घटा देखतिहैं कारी ॥ देखत देखत अति अधिकायो। नेकहिमें रवि गगन छपायो ॥ ऐसे मेघ कबहुँ नहिं देखे। अतिकारे काजर अवरेखे ॥ सुनहुसूर ए मेघ डरावन। ब्रजवासी सब कहत भयावन ॥ ४८ ॥ गरजि गरजि ब्रज घेरत आवैं। तरपि तरपि चपला चमकावैं॥नर नारी सब देखत ठाढे। ये बादर परलयके काढे ॥ दरदरात घहरात प्रबल अति। गोपी ग्वाल भए औरै गति ॥ कहा होन अबही यह चाहत। जहाँ तहाँ लोग इहै अवगाहत ॥ खन भीतर खन बाहिर आवत।गगन देखि धीरज बिसरावत॥सूर श्याम यह करी पुजाई। तातें सुरपति चढ्यो रिसाई ॥४९॥फिरत लोग जहँतहँ बितताने। कोहै अपने कौन बिराने ॥ ग्वाल गए जे धेनु चरावन। तिनहि पर्‍यो बनमांझ परावन॥गाइ बच्छकोऊ न सँभारे ।जियकी सबको परी खँभारे॥भागे आवत ब्रजही तनको। विपति परी अति बन ग्वालनको ॥ अंध धुंध मग कहुं न सूझै। ब्रजभीतर ब्रजहीको बूझै ॥ जैसे तैसे ब्रज पहिचानत। अटक रही अटकर करि आनत ॥ खोजत फिरैं आपने घरको। कहा भयो भैया घोष शहरको ॥ रोवत डोलैं घरहि न पावैं। द्वार द्वार घरको बिसरावैं ॥ सूर श्याम सुरपति विसरायो ।गिरिकै पूजे यह फल पायो॥५०॥यमुनाजलहि गईं जो नारी। डारिचलीं शिर गागरि भारी ॥देखो मैं बालक कत छांड्यो। एक कहत अंगन दधि मांड्यो ॥ एक कहत मारग नहिं पावति। एक सामुहे बोलि बतावति ॥ ब्रजवासी सब अति अकुलाने। कालिहि पूज्यो फल्यो बिहाने। कहाँ रहे अब कुँवरकन्हाई। गिरि गोवर्धन लेहिं बोलाई॥जे वन सहसभुजा धरि आवै।अब द्वैभुज हमको देखरावै ॥यह देवता खातही लेके ।पाछे पुनि तुम कौन कहौके॥सूर श्याम सपनों प्रगटायो। घरके देव सबनि विसरायो ॥ ५१॥ गर्जत घन अतिही घहरावत। कान्ह सुनत आनंद बढावत ॥ कौतुक देखत ब्रजलोगनके। निकट रहत संगहि सँग जनके ॥ यक सैंतत घरके सब बासन। लीने फिरत घरहिके पासन ॥येक कहत जिनकी नहिं आसा। देखत सबै दुष्टके नाशा ॥

सूर श्याम जानत ए गासा । कहां पाणि कहां करै हुतासा ॥ ९२ ॥ मेघवर्त मेघनि समुझावत । बार बार गिरितनहि बतावत ॥ पर्वत पर बरपहु तुम जाई । इहै कही हमको सुरराई ॥ ऐसे देहु पहार बहाइ । नाउ रहै नाहिं ठौर जनाइ ॥ सुरपतिकी वलि ये सब खाई । ताके फल पावै गिरि राई ॥ जेंवत कालि अधिक रुचिपाई । सलिल देहु जेहि तृपा बुझाई ॥ दिनाचारि रहते जग ऊपर । अब न रहन पावहु या भूपर ॥ सूर मेघ सुरपतिहि पठाये । व्रजके लोगन तुमहिं बहाये ॥ ९३ ॥ वर्पतहैं घन गिरिके ऊपर । देखि देखि व्रजलोग करत डर ॥ व्रजवासी सब कान्ह बतावत । महा प्रलय जल गिरिहि ढहावत ॥ झरहरात झारत झर लावत । गिरिहि धोइ व्रज ऊपर आवत ॥ विकल देखि गोकुलके बासी । दरशदियो सबको अविनाशी ॥ अविनाशीको दरशन पाये । तब सब मन परतीति बढ़ाये ॥ नंद यशोदा सुतहित जानै । और सबै सुख अस्तुतिगानै ॥ बर्पत गिरि झरपत व्रज ऊपर । सो जल जँह तँह पूरन भूपर ॥ सूरदास प्रभु राखि लेहु अब । जैसे राखे अवा वदन तब ॥९४॥ राखिलेहु अब नंदकुमार । गोसुत गाइ फिरत बिकरार ॥ वर्पत बूंद लगै जनु सायक । राखि लेहु अब गोकुलनायक ॥ तुमबिनु कौन सहाय हमारे । नंदसुवन अब शरण तुम्हारे ॥ शरण शरण जब व्रजजन बोले । धीरवचन देदै दुख मोले॥यह बोले हँसि कृष्ण मुरारी।गिरि कर धर राखौं नर नारी॥ सूर श्याम चितए गिरिवर तन । बिकल देखिकै गोसुत व्रजजन ॥ ९५ ॥ गोवर्धन लीन्हो उचकाई । देखि बिकल नर नारि कन्हाई ॥ अपने सुख व्रजजनं बितताये । बूंद कयुक व्रजपर वरपाये ॥ वै डरपत आपुन हरपत मन । राखेरहैं जहाँ तहाँ व्रजजन ॥ घरिक देखि मनही सुख दीन्हों । वामभुजा धरि गिरिवर लीन्हों ॥ सूर श्याम गिरिकर गहि राख्यो । धीर धीर सबसों कहि भाख्यो ॥ ॥ ९६ ॥ श्यामधरचो गिरि गोबर्धन कर । राखिलिए व्रजके नारी नर ॥ गोकुल व्रज राख्यो सब घर घर । आनँद करत सबै ताही तर ॥ बरपत मुसलधार मघवावर । बूंद न आवत नेकहु भूपर ॥ धार अखंडित बरपत झरझर ॥ कहत मेघ धौं बहु व्रज गिरिवर ॥ सलिल प्रलयको ढूंढत तरतर । बाजत शब्द नीरको धरधर ॥ वै जानत जलजातहैं दरदर । बीचहि जरत जात जल अंबर॥सूरदास प्रभु कान्ह गर्वहर । बरपत कहत गयो गिरिको जर ॥ ९७ ॥ बोलि लिए सब ग्वाल कन्हाई । टेकहु गिरि गोवर्धनराई ॥ आज सबै मिलि होहु सहाई । हँसतदेखि बलराम कन्हाई ॥ लकुट लिए कर टेकत जाई । कहत परस्पर लेहु उठाई ॥ बरपत इंद्र महाझर लाई । अतिजल देखि सखा डरपाई ॥ नँदनंदन बिन को गिरिधारै । ऐसे बल बिन कौन सँभारै ॥ नखते गिरै कौन गिरि राखै । बारबार कहि कहि यह भाषै ॥ सूर श्याम गिरिवर कर लीन्हों । वर्पत मेघ चक्रत मन कीन्हों ॥ ॥ ९८ ॥ बात कहत आपुसमें बादर । इंद्र पठाए करि हम आदर ॥ अब देखत कछु होत निरादर । वरपि वरपि घन भए मन कादर ॥ खीजत कहत मेघ सबहिनसों । वरपि कहा कीन्हो तवहींसों ॥ महाप्रलयको जल कहँ राखत । डारिदेहु व्रजपर कहा ताकत ॥ क्रोध सहित फिरि वर्पन लागे । व्रजवासी आनँद अनुरागे ॥ग्वाल कहत तुम धन्य कन्हैया । वामभुजा गिरि लिए उठैया ॥ सूर श्याम तुम सरि कोउ नाहीं । वर्पत घन गिरि देखि खिसाहीं ॥९९ ॥ प्रलयमेघ आए लै वाने।आपुसहीमें सबै रिसाने॥ सातें दिवस जल वरपि बुढाने।चक्रत भए तन सुरति भुलाने ॥ फिरि देखत जल कहां टराने। झुरिझुरि सब बादर बितताने॥बूंद नहीं घन नेक बचाने।जलद अपुनको धृग करि माने ॥ फिरि सब चले अतिहि विकलाने ।मनमें हार मानि सकुचाने ॥सूर श्याम गोवर्धन राने। मूरख सुरपति अजहुँ न जाने॥ १०० ॥ मेघ चले मुख फेरि अमरपुर।करी पुकार जाइ आगे सुर ॥

T

भ्रमते टूटि गये सबके उर । जलबिनु भए सबै घन धूंधर । की मारौ कै शरण उबारौ । हममें कहा रह्यो अवगारौ । जहँ तहँ बादर रोवत बोले । श्रम अपने प्रभु आगे खोले ॥ सात दिवस नाहिं मिटी लगार । बरष्यो सलिल अखंडित धार ॥ महाप्रलय जल नेक न उबरचो । ब्रजवासी नीके अब निदरचो॥वैसोइ गिरि वैसेइ ब्रजबासी ।नेक बूंद नहिं धरणि प्रगासी॥सूर सुनत सुरपती उदासी । देखहु ए आए जलरासी ॥६१॥चक्रतभयो ब्रज चाह सुनाई । पुनि पुनि बूझत मेघ बुलाई । कहां गयो जल प्रलयकालको । कहा कहौं सब तन बेहालको ॥ कहा करैं अपनों बल कीन्हौं । व्याकुल रोइ रोइ तब दीन्हौं ॥ दंड एक बरषे मनलाइ । पूरण होत गगनलौं आइ ॥ पर्वतमें है कोउ अवतार । सुरपति मन यह करत विचार ॥ सूर इंद्र सुरगण हँकराये । आज्ञा सुनत तुरत उठि आये ॥६२॥ सुरपति आगे भए सब ठाढे । चिंता सबहिनके मन बाढे ॥ कौन काज सुरराज बोलाए । सकुच सहित पूछतसे आए ॥ कहा कहौं कछु कहत न आवै । मघवनकी गति सुरन बतावै ॥ ब्रजबासिन मोकों बिसरायो । भोजन लै सब गिरिहि चढायो ॥ मोको मेटि पर्वतहि थाप्यो । तब मैं थरथराय रिस कांप्यो ॥ सूरदास यह सुरन सुनाई । या कारज तुम लिए बोलाई ॥६३॥ सुरन कही सुरपतिके आगे । सन्मुख कहत सकुच हम लागे ॥ सकुचत कत सो बात सुनावहु । नीके करि मोको समुझावहु ॥ नीके भांति सुनौ सुरराई । ब्रजमें ब्रह्म प्रगट भए आई ॥ तुम जानत जब धरणि पुकारी । पापहि पाप भई अति भारी॥पौढे सेज शेष संग श्री प्यारी । ते ब्रज भीतरहैं वपुधारी ॥ ब्रह्मकथा कहि आदि पसारी । तिनसों हम कीनी अधिकारी ॥ सूरदास प्रभु गिरि कर धारी । यह सुनि इंद्र डरचो मन भारी ॥ ६४ ॥ यह मोको तबही न सुनाई । मैं बहुतै कीन्ही अधमाई ॥ पूरन ब्रह्म रहे ब्रज आई । काहुतौ मोहिं सुधि न दिवाई ॥ सुरनि कही नहिं करी भलाई । आज्ञु कह्यो जब महत गँवाई॥ यह सुनि अमर गए सरमाई॥सुनहु राज हम जानि न पाई॥अब सुनिए आपुन मनलाई । ब्रजहि चलो नहिं और उपाई ॥ वै हैं कृपासिंधु करुणाकर । क्षमा करहिंगे श्रीसुंदरवर ॥ और कछू मनमें जिनि आनहु । हम जो कहैं सत्य करि मानहु ॥ सूर सुरन यह बात सुनाई । सुरपति शरण चले अकुलाई ॥ ६५॥ जब जान्यो ब्रज देव सुरारी । उतरि गई तब गर्व खुमारी ॥ व्याकुल भयो डरचो जिय भारी।अनजानत कीन्ही अधिकारी॥बैठि रहेते नहिं बनि आवै। ऐसो को जो मोहिं बचावै॥बार बार यह कहि पछितावै।जाउँ शरण बल मनहि धरावै ॥ जाइ परौं चरणन शिर धारों । की मारौं की मोहि उधारों॥अमरन कह्यो करौ असवारी।ऐरावतको लेहु हँकारी ॥सूर शरण सुरपति चले धाइ।लिये अमरगण संग लगाइ॥६६॥ करत विचार चल्यो सन्मुख ब्रज।लटपटात पग धरणि धरत गज ॥ कोटि इंद्र जाके रोमनि रज । ब्रज अवतार लियो माया तज॥उतरि गगन पुहुमी पर आए । श्वेतवरन ऐरापति लाए ॥ ब्रज बासी सब देखन पाए । चक्रत भए मन सवनि भ्रमाए ॥ कहत सुनी लोगन मुख बाता।येई हैं सुरपति सुरज्ञाता ॥ देखि सैन ब्रजलोग सकात । यह आयो कीन्हे कछु घात॥सूर श्यामको जाइ सुनाये।सुरपति सैन साज ब्रजआए॥६७॥ निकट जानि त्यागे बाहनको । सकुचत चले कृष्ण सन्मुखको । कछु आनंद कछुक मनमें दुख।हर्ष विषाद तक्यो हरि सन्मुख ॥ परचो धाइ चरणन शिरनाइ । कृपासिंधु राखहु शरणाइ॥किए अपराध बहुत बिन जाने। प्रभु उठाइ लिए कछु मुसकाने॥श्रीमुख कह्यो उठहु सुरराजा। बदन उठाइ सकत नहिं लाजा॥ये दिन वृथा गए बिनकाजा । तुमको नहिं जान्यो ब्रजराजा॥सूर श्याम लीन्हे उरलाइ।अशरन शरन निगम यह गाइ ॥ ६८ ॥ हँसि हँसि कहत कृष्ण मुखबानी । हम नाहिन रिस तुमपर आनी ॥ तुम कत

अति शंका जिय जानी । भली करी व्रजराख्यो पानी ॥ यह सुनि इंद्र अतिहि सकुचान्यो । व्रज अवतार नहीं मैं जान्यो ॥ राखि राखि त्रिभुवनके नाथा । नहिं मोते कोउ अवर अनाथा ॥ फिरि फिरि चरण धरत लै माथा । क्षमाकरहु राखहु मोहिं साथा ॥ रवि आगे खद्योत प्रकाशा । मणि आगे ज्यों दीपक नाशा ॥ कोटि इंद्र रचि कोटि विनाशा । मोहिं गरीबकी केतिक आशा ॥ दीन वचन सुनि भवके बासा । क्षमाभयो जल परे हुतासा ॥ अमरापति चरणन तर लोटत । रही नहीं मनमें कहुँ खोटत ॥ उभय भुजा करि लियो उठाइ । सुरपति शीश अभय कर नाइ ॥ हँसिदीन्ही प्रभु लोक बडाई । श्रीमुख कह्यो करौ सुखजाई ॥ धन्य धन्य जनके सुखदाई । जय जय ध्वनि देवन मुख गाई ॥ शिव विरंचि चतुरानन नारद । गौरी सुत दोऊ सँग शारद ॥ रवि शशि वरुण अनल यमराजा । आजु भए सब पूरन काजा ॥ अशरन शरन सदा तुव वानो।यह लीला प्रभु तुमही जानो ॥ मातासों सुत करै ढिठाई । माता फिरि ताको सुखदाई ॥ ज्यों धरनी हल खोदि बिनाशै । सन्मुख सतगुण फलहि प्रकाशै ॥ कर कुठार लै तरुहि गिरावै । वह काटै वह छाया छावै॥जैसे दशन जीभ दलिजाइ । तब कासों सो करै रिसाइ ॥ धनि व्रज धनि गोकुल वृंदावन । धनि यमुना धनि लता कुंज वन॥धन्य नंद धनि जननि यशोदा।बालकेलि हरिके रस मोदा ॥ अस्तुति सुनि मनहर्ष बढ़ायो।साधु साधु कहि सुरनि सुनायो॥तुमहि जाइ जब मोहि जगायो।तुम्हरेहि काज देह धरि आयो ॥ तुमै राख असुरन संहारौं । तनु धरि धरणीभार उतारौं ॥ आवत जात बहुत श्रम पायो । जाहु भवन करि कृपा पठायो ॥ कर शिर धरि धरि चले देवगन । पहुँचे अमरलोक आनँद मन ॥ यह लीला सुर घरनि सुनाई । गाइ उठीं सुरनारि बधाई ॥ अमरलोक आनंद भए सब । हर्ष सहित आए सुरपति जब॥सूरदास सुरपति अति हरष्यो । जैजैध्वनि सुमनानि व्रज वरष्यो॥६९॥हरि करते गिरिराज उतारयो । सात दिवस जल प्रलय सँभारयो ॥ ग्वाल कहत कैसे गिरि धारयो।कैसे सुरपति गर्व निवारयो ॥ वज्रायुध जल वर्षि सिराने । परयो चरण तब प्रभुकरि जाने ॥ हम सँग सदा रहतहैं ऐसे । यह करतूति करत तुम कैसे ॥ हम हिलिमिलि तुम गाइ चरावत । नंद यशोदा सुवन कहावत ॥ देखिरही सब घोष कुमारी । कोटि काम छबिपर बलिहारी ॥ कर जोरत रवि गोद पसारै । गिरिवरपति प्रभु होहिं हमारै ॥ ऐसो गिरि गोवर्द्धन भारी । कब लीन्हों कब धरयो उतारी ॥ तनक तनक भुज तनक कन्हाई । यह कहि उठी यशोदा माई ॥ कैसे पर्वत लियो उचकाई । भुज चापति चूमति बलिजाई॥बारंबार निरखि पछिताई । हँसत देखि ठाढे बल भाई॥इनकी महिमा काहु न पाई । गिरिवर धरयो इहै बहुताई ॥ एक एक रोम कोटि ब्रह्मंडा । रवि शशि धरणीधर नव खंडा ॥ यहि व्रज जन्म लियो कै बारा । जहाँ तहाँ जल थल अवतारा ॥ प्रगट होत भक्तहिके काजा । ब्रह्म कीट सम सबके राजा ॥ जहँ जहँ गाढ परै तहँ आवै । गरुड छांडि तब सन्मुख धावै ॥ व्रजहीमें नित करत विहार । सहज स्वभाव भक्त हितकार ॥ यह लीला इनको अति भावै । देह धरत पुनि पुनि प्रगटावै ॥ नेक तजत नहिं व्रज नर नारी । इनके सुख गिरि धरत मुरारी॥ गर्वंवत सुरपति चढि आयो। वाम करज गिरि टेकि दिखायो॥ ऐसेहैं प्रभु गर्वप्रहारी । मुख चूमति यशुमति महतारी ॥ यह लीला जो नितप्रति गावै । आपुन सिखै औरनि सिखरावै ॥ सुनै सीख पढि मनमें राखैं । प्रेम सहित मुखते पुनि भाखैं ॥ भक्ति मुक्तिकी केतिक आसा । सदा रहत हरि तिनके पासा ॥ चतुरानन जाको रस मानै । शेषसहस मुख जाहि बखानै ॥ आदि अंत कोऊ नहिं पावै । जाको निगम नेति नित गावै ॥ सूरदास

T

प्रभु सबके स्वामी । शरन राखि मोहिं अंतर्यामी ॥ ७० ॥ राग सोरठ ॥ तेरे भुजन बहुत बल होइ कन्हैया । बार बार भुज देखि तनकसे कहति यशोदा मैया॥ श्याम कहत नहिं भुजा पिरानी ग्वालन कियो सहैया। लकुटन टेकि सबन मिलि राख्यो अरु बाबा नँदरैया ॥ मोसों क्यों रहतो गोबर्धन अति ह बडो वह भारी। सूर श्याम यह कहि परबोध्यो देखि चक्रत महतारी ॥ ७१ ॥ राग देवगंधार॥सबै मिलि पूजौ हरि की बँहियाँ। जो नहिं लेत उठाइ गोबर्धनको बांचत ब्रज महियाँ ॥ कोमल कर गिरि धरचो घोप पर शरद कमलकी छहियाँ । सूरदास प्रभु तुमरे दरशको आनँद होत ब्रज महियाँ ॥१॥ अध्याय ॥ २८ ॥ अथ नंदको वरुण लेगये ॥ राग बिलावल॥उत्तम शुक्ल एकादशि आई।भक्ति मुक्ति दायक सुखदाई ॥ निराहार जलपान बिबर्जित। पाप न रहत धर्मफल अर्चित ॥ नारायण हित ध्यान लगायो । और नहीं कहुँ मन बिरमायो ॥ बासर ध्यान करत सब वीत्यो । निशि जागरण करन मन चीत्यो ॥ पाटंबर दिवि मंदिर छायो । शालिग्राम तहां बैठायो ॥ धूप दीप नैवेद्य चढ़ायो । पुहुप मंडली तापर छायो ॥ प्रेम सहित करि भोग लगायो । आरतिकरि तब माथो नायो ॥ सादर सहित करी नंद पूजा । तुम तजि देव और नहिं दूजा ॥ तृतिय पहर जब रैनि गमाई । नंदमहरिसों कही बुझाई॥ दंड एक द्वादशी सकारै । पारनकी बिधि करौ सवारै ॥ यह कहि नंद गए यमुनातट । लै धोती विधि कीनो कर्म पट ॥ झारी भरि यमुना जल लीनो । बाहिर जाइ देहकृत कीनो ॥ लै माटी कर चरन पखारी। अति उत्तम सो करी मुखारी ॥ अँचवन लै पैठे नंद पानी । जल बाजत दूतन तब जानी ॥ बरुन पास लाए ततकालहिं । नंदहि बाँधि लै गये पतालहिं॥जान्यो बरुण कृष्णते तातहि। मनहीं मन हर्षित इहि बातहि ॥ भीतर लै राखे नंद नीके । अंतरपुर महलन रानीके ॥ रानी सबन नंदको देख्यो । धन्य जन्म अपनो करि लेख्यो ॥ जिनके सुत त्रैलोक गुसांई। सुर नर मुनि सबके हैं साईं ॥ वरुण कही मन हर्ष बढ़ाए । बडी बात भई नंदहि ल्याए ॥ अंतर्यामी जानत बाता । अब आवत ह्वै हैं जगत्राता ॥ जाको ब्रह्मा अंत न पायो । ताको मुनि जन ध्यान लगायो॥ जाको नेति निगम गावतहैं । ताको मुनिवर जन ध्यावतहैं ॥ जाको ध्यान धरैं शिव योगी । ताको सेवत सुरपति भोगी ॥ सो प्रभुहैं जल थल सब व्यापक । जोहैं कंस दर्पको दापक ॥ गुण अतीत अविगत अवि नाशी । सो ब्रजमें खेलत सुखरासी ॥धनि मेरे भृत नंदहि ल्याए । करुणामय अब आवत धाए ॥ महरि कही तब सब ग्वालिनको । बडी बार भइ नंदमहरको ॥ गए ग्वाल तब नंद बोलावन । देख्यो जाइ यमुन जलपावन॥जहँ तहँ ग्वाल ढूँढि घर आए । धोती अरु झारी वे लाए ॥ मन मन शोच करैं अकु लाए । कहि यशुदासों नंद न पाए॥धोती झारी तटमें पाई । सुनत महरि मुख गयो सुखाई॥ निशा अकेले आजु सिधाए।काहू धौं जलचर धरि खाए॥यह कहि यशुमति रोइ पुकारचो । मों बरजत कत रैनि सिधारचो॥ब्रजजन लोग सबै उठिधाए। यमुनाके तट नंद न पाए॥बन बन ढूंढत गाउँ मझारैं। नंद नंद कहि लोगं पुकारैं ॥ खेलतते हरि हलधर आए । रोवत मात देखि दुखपाए ॥ कत रोवतहैं यशुदा मैया । पूछत जननीसों दोउ भैया ॥ कहत श्याम जनि रोवहु माता । अबहीं आवतहैं नंद ताता ॥ मोसों कहिगए अबहीं आवन । रोवै मति मैं जात बोलावन ॥ सबके अंतर्यामी हैं हरि। लैगयो बांधि बरुन नंदहि धरि ॥ यह कारज मैं ताको दीनों । वाके दूतन नंदन चीनों ॥ वरुन लो क तबहीं प्रभु आए । सुनत वरुन आतुर ह्वै धाए॥आनँद कियो देखि हरिको मुख । कोटि जन्मके गए सबै दुख ॥ धन्य भाग्य मेरे बडे आजु । चरण कमल दरशन सुखकाजु ॥ पाटंबर पाँवडे डसा ए । महलन बंदनवार बँधाए ॥ रत्न खचित सिंहासन धारचो । तिहिपर कृष्णहि लै बैठारचो ॥

T

अपने कर प्रभु चरण पखारे। जे कमला उरते नहिं टारे॥ जे पद परसि सुरसरी आई। तिहूं लोक है विदित बडाई॥ ते पद बरुन हाथ लै धोए। जन्म जन्मके पातक खोए॥ कृपासिंधु अब शरन तुम्हारी। इहि कारण अपराध बिचारी॥ आपु चले हरि नंदहि देखन। बैठे नंद राजवर भेषन॥ नृपरानी सब आगे ठाढ़ीं। सुख सुख ते सब अस्तुति काढ़ीं॥ पाँइन परी कृष्णके रानी। धन्य जन्म सबहिन कहि मानी॥धन्य नंद धनि धन्य यशोदा। धनि धनि तुमैं खिलावति गोदा॥धनि ब्रज धनि गोकुलकी नारी। पूरन ब्रह्म तहां बपु धारी॥ शेष सहस मुख बरनि न जाई। सहज रूप को करै बड़ाई॥ देखि नंद तब करत बिचारा। यह कोउ आहि बडो अवतारा॥ नंद मनहि अति हर्ष बढ़ायो। कृपासिंधु मेरे गृह आयो॥ बरुनहि दीनी लोक बडाई। तुम हौ एहि पतालके राई॥ कहा देत मोहिं लोक बडाई। बृंदावन रज करों सदाई॥ बरुन थाप नंदहि लै आए। महर गोप सब देखन धाए॥ नंदहि बूझत हैं सब बाता। हम अति दुखित भए सब गाता॥एकादशी कालिह मैं कीनों। निशि जागरन नेम यह लीनों॥ तीन पहर निशि जागि गँवाई। तब लीनी मैं महरि बुलाई॥ एकदंड द्वादशी सुनाई। ता कारण मैं करी चँडाई॥ एकदंड द्वादशि कैयो पल। रैनि अछत मैं गयो यमुनजल॥ गयो यमुन कटिलौं भीतर भरि। बरुनदूत लै गयो मोहिं धरि॥तहँते जाइ कृष्ण मोहिं ल्यायो। हम कोउ बडे पुरुष है पायो॥ इनकी महिमा कोउ न जानै। बरुन कोटि मुख कहै बखानै॥ रानिन सहित पर्यो चरणनतर। बंदनवार बँधे महलनि घर॥ मेरो कह्यो सत्यकै मानों। इनको नर देही जिनि जानों॥ यशुमति सुनि चकृत इह बानी। कहत कहा यह अकथ कहानी॥ ब्रज नर नारि सुनत जे गाथा। इनते हम सब भए सनाथा॥मया मोह करि सबै भुलाए। नंदहि बरुन लोकते ल्याए॥ नंद एकादशि बरणि सुनाई। कहत सुनत सबके मनभाई॥ जो या पदको सुनै सुनावै। एकादशिव्रतको फल पावै॥ यह प्रताप नंदहि दिखराई। सूरदास प्रभु गोकुलराई॥१॥राग कान्हरो॥नंदहि कहति यशोदा रानी। मोहिं बरजत निशि गए यमुनतट पैठे जाइ अकेले पानी॥अब तो कुशल परी पुण्यनिते द्विजन करौ बहुदान। बोलिलेहु बाजन बजावहु देहु मिठाई पान॥ गावति मंगल नारि बधाई बाजत नंददुआर। सुनहु सूर यह कहति यशोदा नंद बचे इहिबार॥२॥ राग बिलावल॥कहत नंद यशुमति सुनि बात। अब अपने जिय सोचु करति कत जाके त्रिभुवनपतिसों तात॥ गर्ग सुनाइ कही जो बाणी सोई प्रगट होतिहै जात। इनते नहीं और कोउ समरथ एईहं सबहीके तात॥मायारूप मोहिनी लगाइ डरि भूले सबै जे गाथ। सूर श्याम खेलत ते आए माखनदै माँ हाथ॥ ३॥ राग गौरी॥ तबहिं यशोदा माखन ल्याइ। मैं मथिकै अबहीं धरि राख्यो तुम्हरे काज मेरे कुँवर कन्हाइ॥ माँगिलेहु एही विधि मोसे मो आगे तुम खाहू। बाहर जिन कबहूं खैये सुत डीठि लगैगी काहू॥तनक तनक कछु खाहु लाल मेरे ज्यों बढि आवै देह।सूर श्याम अब होहु सयाने बैरिनके मुखखेह॥४॥ अथ दानलीला॥ राग बिलावल॥ भक्तनके सुखदायक श्याम। इस्त्री पुरुष नहीं कछु नाम॥ संकटमें जिनि जहां पुकारे। तहां प्रगटि तिनको उद्धारे॥ सुख भीतर जिनि सुमिरन कीन्हों। तिनको दरश तहां हरि दीन्हों॥ दुख सुख में जो हरिको ध्यावै। तिनको नेक न हरि बिसरावै॥ चितदै भजे कौनहू भाउ। ताको तैसो त्रिभुवन राउ॥ कामातुर गोपी हरि ध्यायो। मन वच कर्महिसों मन लायो। पटऋतु तप कीनों तनुगारी। होहिं हमारे पति गिरिधारी॥ अंतर्यामी जानत सबकी। प्रीति पुरातन शाली तनकी॥ बसन हरे गोपिन सुख दीनो। नाना विधि कौतुकरस कीनो॥ युवतिनके इह ध्यान सदाई। नेक न अंतर होइ कन्हाई। बाट

बाट यमुनातट रोकै। मारग चलत जहाँ तहँ टोकै॥ काहूकी गागरि धरि फोरै। काहूसों हँसि बदन सकोरै॥ काहूको अंकम भरि भेंटै। कामव्यथा तरुणिनके मेटै॥ ब्रह्मा कीट आदिके स्वामी। प्रभुहैं निरलोभी निहकामी॥भाववश्य सँगही सँग डोलैं। खेलैं हँसैं तिनहिसों बोलैं॥ब्रजयुवती नाहिं नेक बिसारैं।भक्तनकाज चित हरिसों धारैं॥गोरस लै निकसीं ब्रजबाला।तहाँ तिनि देखे मदन गोपाल॥ अँग अँग सजि शृंगार वर कामिनि। चलीं मनहु यूथनि जुरि दामिनि॥ कटि किंकिनि नूपुर बिछिया धुनि। मनहु मदनके गजघंटा सुनि॥ जाति माट मटुकी शिरधरिकै। सुख सुख गान करति गुण हरिकै॥ चंद्रबदनि तनु अति सुकुमारी। अपने मन सब कृष्ण पियारी॥ देखि सबनि रीझे बनवारी। तब मनमें इक बुद्धिविचारी॥ अब दधि दान रचौं इक लीला। युवतिन संग करौं रस लीला॥ सूर श्याम सँग सखन बोलायो। यह लीला कहि सुख उपजायो॥ ५॥ राग जयतश्री॥ सुनत हँसी सुख होहि दान दहीको लाग्यो।निशिदिन मथुरा दधि बेचैं श्याम दान अब मांग्यो॥प्रात होत उठि कान्ह टेरि सब सखनि बोलाए। तेइ तेइ लीने साथ मिले जे प्रकृति बनाए॥ डगरि गए अनजानही गह्यो जाइ वन घाट। पेडपेड तरुके लगे ठाटि ठगनको ठाट॥ ६॥ इहां ग्वालि बनि बनि जुरीं सब सखी सहेली। शिरनि लिए दधि दूध सबै यौबन अलबेली॥ हँसत परस्पर आपुमें चली जाहिं जिय भोर। तबहि आनि घातहि परी छेकिलिए चहुँओर॥ ॥७॥ देखि अचानक भीर भई सब चकृत किशोरी। ज्यों मृगशावक यूथ मध्य बागुरि चहुँओरी॥ शंकितह्वै ठाढ़ी भई हाथ पाँव नाहिं डोल। मनहुँ चित्रकीसी लिखीं सुखहि न आवै बोल॥ ८॥ तब उठि बोले ग्वाल डरहु जिनि कान्ह दुहाई। ठग तस्कर कोउ नाहिं दान यदुपति सुखदाई॥ आवत निशि दिनही रहौ श्यामराज भय नाहीं। जो कछु लागै दानको तुम घाटि देहु तेहि माहीं॥९॥ तब हँसि बोली ग्वालि नाम जब कान्ह सुनायो॥चोरी भरयो न पेट आनि अब दान लगायो॥ तब उलटी पलटी फवी जब शिशुरहे कन्हाई।अब ओहि कछु धोखे करौंतौ छिनकमाहँ पति जाई१०॥तब उठि बोले कान्ह रही तुम पोच सदाई। महरि महर सुखपाइ शंकतजि करहु ढिठाई॥ अब वह धोखो मेटिकै छांडिदेहु अभिमान। करि लेखो अब दानको दियहि पाइहौ जान॥ ११॥ तब हँसि बोलीं ग्वालि डरनि तुम तजी ढिठाई। बहुतै नंदनि काज भयो तुव तप अधिकाई॥ कालिहि घर घर डोलते खाते दही चुराइ। राति कछू सपनों भयो प्रात भई ठकुराइ॥ १२॥ भली कही नाहिं ग्वालि बातको भेद न पायो। पिता रचित धन धाम पुत्रके काजहि आयो॥ तुमसे प्रजा बसाइकै राखेहैं इह पाइ। ते तुम हम सरबस भईं अब मिलहु छाँडि चतुराइ॥१३॥ तब झुकि बोली ग्वालि बात किन कहौ सम्हारे। ऐसो को बहिगयो प्रजाह्वै बसे तुम्हारे॥ हमहूं तुम नृपकंसके बसैं बास इक ठाउँ।देखौं धौं घर जाइकै हम तजैं तुम्हारो गाउँ॥१४॥ गाउँ हमारो छाँडि जाइ बसिहौ केहि केरे। तीन लोकमें कौन जीव नाहिन बश मेरे॥ कंसहि को गनती गनै जाके हमहि कहाहु॥ दियें दान पै बांचिहो नातरु नहीं निबाहु॥ १५॥ छोटे मुँह बडी बात कहौ किनि आपु सँभारे। तीनि लोक अरु कंस कबहिं बश भए तुम्हारे॥ यह बाणी तिनसों कहो जो कोउ होइ अजान। ऐसे होहु जु रावरे हम जानति परवान॥ १६॥ लेखो जैहै भूलि कहूंकी बात चलावत। झूठी मिलवत आनि सुनत हमको नाहिं भावत॥ हमसों लीजे दानके दाम सबै परखाइ। थैली मांगि पठाइए पीतांबर फटिजाइ॥ १७॥ काहेको सतरात बात मै सांची भाषत। झूठी सब तुम ग्वारि बात मेरी गहि नाखत॥ कह्यो मानि लेखो करौ देहु हमारो दान। सौंह ह्या मोहिं

नंदकी ऐसे देउँ न जान ॥ १८ ॥ नंद दोहाई देत कहा तुम कंस दोहाई । काहेको अठिलात कान्ह छाँडौ लरिकाई । पहिली परिपाटी चलौ नहीं चलौ क्यों आजु । नृपति जानि जो पावै पुनिपै होइ अकाजु ॥ १९ ॥ लरिका मोको कहति नाहिं देखी लरिकाई । पय पीवत संहारि पूतना स्वर्ग पठाई ॥ अघा बका शकटा तृणा केशी सुखकर नाइ । गिरि गोवर्धन कर धरचो यह मेरी लरिकाई ॥ २० ॥ सबै भली तुम करी हमैं अब कहत कहा हो । ऐसी बात करतहो मोहन तैसी सोइ लहाहो ॥ हँसी पलक द्वै चारिकी बीतन लागे याम । बनमें राखी रोकिकै नारि पराई श्याम ॥२१॥ हँसी करतहो तुमहि भली गइ मति ब्रजनारी । तुम हमको हम तुमहि दई बिन काजहि गारी ॥ बात कहौ कछु जानिकै वृथा बढावत शोर । सदा जाहु चोरटी भई आजु परी फँग मोर ॥ ॥ २२ ॥ माँगि लेहु दधि देहि दानको नाउँ मिटावहु । देत दुहाई नंदराइकी दान न सदा लगावहु ॥ हमहिं कहतहौ चोरटी आपु भयेहो साहु । चोरी करत बडे भए मही छाक लै खाहु ॥ २३ ॥ दही लेतहौ छीनि दान अंगनिको लैहौं । लेहौं रूपहि दान दान यौवनपै कैहौं ॥ तुम सब कंचन भार लै मेरे मारग जाहु । मही दही दिखरावहू कैसे होत निबाहु॥२४॥जाहु भलेहो कान्ह दान अँग अँग को माँगत । हमरो यौवन रूप आंखि इनके गडि लागत॥सबै चलीं झहराइकै मटुकी शीश उठाइ । रिसकरि कसि कटि पीतपट ग्वारि गहीं हरि धाइ ॥ २५ ॥ मटुकी लई छिड़ाइ हार चोली बंद तोरचो । भुजभरि धरि अंकवारि बांह गहिकै झकझोरचो ॥ माखन दधि लियो छीनिकै कह्यो ग्वाल सब खाहु । सुख झगराति आनंद उर धिरवतहै घर जाहु ॥ २६ ॥ देखो हरिको काम झटकि चोली बंद तोरचो । हमको भरि अँकवारि बांह धरि धरि झकझोरचो ॥ यशुमतिसों कहिये चलौ अब प्रगटी तरुनाइ । दधि माखन सब छीनिलै ग्वालनि दए खवाइ ॥ २७ ॥ जाइ कहौं जू भली बात मैयाके आगे । तुमको जोवन रूप दान देती नाहिं मांगे॥तुम जो कैहौ जाइकै जननी नहीं पत्याइ। सूर सुनहु री ग्वालिनी आवहुगी पछिताइ ॥ २८ ॥ राग काफी ॥ ऐसो दान न मांगिये जो हमपै दियो न जाइ । वनमें पाइ अकेली युवतिनि मारग रोकत धाइ ॥ घाट बाट अवघट यमुना तट बातैं कहत बनाइ । कोऊ ऐसा दान लेतहै कौने सिखै पठाइ॥हम नाहिं जानति तुम यों नाहीं रहौ गारी खाइ । जो रस चाहौ सो रस नाहीं गोरस पियहु अघाइ ॥ औरनसों लै लीजिये गिरिधर तब हम देहिं बोलाइ॥सूर श्याम कत करत अचगरी हमसों कुँवर कन्हाइ॥२९॥राग नट॥दानलेहु देहु जान काहेको कान्ह देतहौ गारी । जो कोऊ कह्यो करैरी हठि याही मारग आवै ब्रजनारी ॥ भली करी दधि माखन खायो चोली हार तोरि सब डारी । जोवन दान कहूं कोउ माँगत यह सुनि लाजन मारी ॥ होत अबार दूरि घर जैबे पैयां लागैं डरतिहैं भारी । हमहिं तुमहिं कैसोई झगरो सूर सुजान हम गँवारी ॥३०॥ राग भैरव ॥ भोरहिते कान्ह करत मोसों झगरो । औरन छांडि परे हठ हमसों दिनप्रति कलह करत गहि डगरो ॥ अन बोहनी तनक नहिं देहौं ऐसेहि छीनि लेहु बरु सगरो । सब कोऊ जात मधुपुरी बेचन कौने दियो दिखावहु कगरो॥अंचल ऐंचि ऐंचि राखतहौ जान अब देहु होतहै दगरो । सुख चूमति हँसि कंठलगावति आपुहि कहति न लाल अचगरो ॥ सूर सनेह ग्वारि मन अटक्यो छांडहु दियो परत नहिं पगरो । परम मगन ह्वै रही चितै मुख सबहीते भाग याहीको अगरो॥३१॥ राग कान्हरो ॥ दान लेहौं सब अंगनिको । अति मद गलित तालफलते गुरु इनि युग उरज उतंगनिको ॥ खंजन कंज मीन मृगशावक भवँर जवर भुवभंगनिको । कुंदकली बंधूक बिंबफल बर ताटंक तरंगनिको ॥ कोकिल कीर कपोत किसलता हाटक हंस

फनिगनिको । सूरदास प्रभु हँसि वश कीन्हों नायक कोटि अनंगनिको ॥ ३२ ॥ राग काफी ॥ कान्ह भलेहो भलेहो । अंगदान हमसों तुम मांगत उलटी रीति चलेहो ॥ कौन दोष कीन्हों माखन छीनों काहेको तुम औरहि भाव मिलेहो । दान लेहु कछु और कहतहो कौन प्रकृतिही लेहो ॥ हारै तोरचो चीरहि फारचो बोलत बोल हठीलेहो । ऐसो हाल हमारो कीन्हों जातहुती दहि लेहो ॥ हम हैं तुम्हारे गाउँकी कछु याते ऐंड गहि लेहो । सूरदास प्रभु और भए अब तुम नाहिं होहु पहिलेहो ॥ ३३ ॥ राग पूरबी ॥ तू मोसों दान माँगि किनु लैहो नंदके लाला । ऐसी बातनि झगरो ठानों हो मूरख तेरो कौन हवाला ॥ नंदमहरकी कानि करतहैं छांडिदेहु ऐसो ख्याला । सूरदास प्रभु मन हरिलीन्हों हँसतही ग्वारिनि भई बिहाला ॥ ३४ ॥ राग गूजरी ॥ सूधे दान काहे न लेत । और अटपटी छांडि नंदसुत रहहु कँपावत बेत ॥ वृंदाबनकी बीथिनि ताकि ताकि रहत गुमान समेत । इनि बातनि पति पावत मोहन जानत होहु अचेत ॥ अबलनि रविकर वकि पकरतहो मारग चलन न देत । सोई तुम कछु कहि न जनावत कहा तुम्हारे हेत ॥ आजु न जान देहुं री ग्वालिनि बहुत दिननिको नेत । सूरदास प्रभु कुंजभवन चालि जोर उरनि नख देत ॥ ३५ ॥ राग कान्हरो ॥ जोबनदान लेउँगो तुमसों । जाके बल तुम बदति न काहुहि कहा दुरावति हमसों ॥ ऐसो धन तुम लिए फिरतिहौ दानदेत सतराति । अतिहि गर्वते कह्यो न मोसों नितप्रति आवति जाति ॥ कंचन कलश महारसभारे हमहूं तनक चखावहु । सूर सुनहु करि भार मरति कंत हमहि न मोल दिवावहु ॥ ३६ ॥ कहा कहत तू नंदढिठौना । सखी सुनहु री बातैं जैसी करत अतिहि अचभौना ॥ वदन सकोरत भौंह मरोरत नैननिमें कछु टोना ॥ जोबनदान कहा धों मांगत भई कहूं नहिं होना ॥ हम कहैं बात सुनहु मनमोहन कालि रहे तुम छौना । सूर श्याम गारी कहा दीजै इह बुद्धिहै घर खोना ॥ ३७ ॥ राग पूरबी ॥ ऐसे जिन बोलहु नँदलाला । छाँडिदेहु अचरा मेरो नीके जानत औरसी बाला ॥ बार बार मैं तुमहि कहतिहौं परिहै बहुरि जंजाला । जोबनरूप देखि ललचाने अबहींते ए ख्याला ॥ तरुणाई तनु आवनदीजै कित जिय होत बिहाला । सूरश्याम उरते कर टारहु टूटै मोतिनमाला ॥ ३८ ॥ राग सुघराई ॥ कहागति प्रकृति परीहो कान्ह तुम्हारी धरत कहा कत राखत घेरे । जे बतियां तुम हँसि हँसि भाषत इहै चलै चहुँ फेरे ॥ अब सुनिहै इह बात आजुकी बनमें कान्ह युवति सब नेरे । सकुचतिहै घर घर घेराको नेक लाज नहिं तेरे ॥ अतिहि अबेर भई घर छांडे चितै हँसत मुखतन हरि हेरे । सूरदास प्रभु झुकत कहा हौ चेरीहै कहुकेरे ॥ ३९ ॥ राग टोडी ॥ कहा कहतु तुमसों मैं ग्वारिनि । दान देहु सब जाहु चली घर अतिकत होत गँवारिनि ॥ कबहूं बात नहीं घर खोवति कबहुँ उठतिदै गारिनि । लीन्हें फिरति रूप त्रिभुवनको ऐनोखी बनिजारनि ॥ पेलाकरति देति नहिं नीके तुमहो बडी बंजारनि' । सूरदास ऐसो गुन जाके ताके बुद्धि पसारनि ॥ ४० ॥ पुरिआं कान्हरो ॥ कान अब नारि गह्योहै जानि । मांगत दान दहीको अबलौं लै कछु अवैरे ठानि ॥ औरनिसों तुम कहा लियो है सो सब हमहि देखावहु आनी । मांगतहैं दधि सो हम देहैं कहत कहा यह बानी ॥ छांडि देहु अचरा फटि जैहै तुमको हम नीके पँहिचानी । सूर श्याम तुम रति पति नागर नागरि अतिहि सयानी ॥ ४१ ॥ राग कान्हरो ॥ लेहौं दान अंग अंगनको । गोरे भाल लाल सेंदुरछबि मुक्ता बर शिर सुभग मंगको ॥ नकबेसरि खुटिला तरिवनको गरहमेल कुच युग उतंगको । कंठ सिरी दुलरी तिलरी उर माणिक मोती हार रंगको ॥ बहु नग लगे जरावकी अँगिया भुजा बहुटनी वलय संगको । कटि किंकिणिको दान

T

जु लैहौं तिन रीझत मन अनंगको । जे हरि पगज करचो गाढे मनो मंद मंद गति यह मतंगको । जोबन रूप अंग पाटंबर सुनहु सूर सब यह प्रसंगको ॥ ४२ ॥ राग टोडी ॥ अरी यह ढीठ कान्ह बोलि न जानै बरवस झगरो ठानै । जो भावत सोइ सोइ कहि डारत ऐसो निघरक नहिं कहूं देख्यो रूप जोबन अनुमानै ॥ अंग अंगके दान लेत नहिं घरकेको पहिचानै । हम दधि बेचन जातिहैं मथुरा मारग रोकि रहत गहि अंचल कंसकी आन न मानै ॥ ऐसी बात सँभारि कहौ हरि हम तुमको पहिचानै । सूर श्याम जो हमसों मांगत सो पैहौ कहूँ और त्रियनपै ये बातैं गढि बानै ॥ ४३ ॥ ॥ राग मलार ॥ तोहिं कमरी लकुटिया भूलि गई पीत वसन दुहुँ करन वलासी । गोकुलकी गाइनि चरैबो छोंडि दीन्हौं कीन्हौं नवलबधू संग नवल नेह आयो परम बिलासी ॥ गोरस चोराइ खाइ वदन दुराइ राखे मन न धरत वृंदावन को मवासी । सूर श्याम तोहिं वर घर सब जानै इहां कोहै तिहारी दासी ॥ ४४ ॥ वै बातैं भूलिगईं नंदमहरके सुवन करत हौ अचगरी । वन वन धेनु चरावत फिरत निशि बासर धावत बैन बजावत दानी भए गहि डगरी ॥ वनमें पराई नारि रोकि राखी बनवारी जान नहीं देत ह्यां कौन ऐसी लंगरी । मांगत योवनदान भलेहौ जू भले कान्ह मानत कंस आन को बसिहै ब्रजनगरी । कबहुं गहत दधि मटुकी अचानक कबहुं गहतहो अचानक गगरी ॥ सूर श्याम जहँतहँ खिझावत जो मनभावत दूरि करौ लंगर सगरी ॥ ४५ ॥ राग पूरवी ॥ तुम कवते भयेहो जू दानी । मटुकी फोरि हार गहि तोरचो इन बातन पहिचानी ॥ नंदमहरकी कान करति हौ नातर करती मेहमानी । भूलिगए सुधि ता दिनकी जब बांधे यशोदारानी ॥ अबलौं सही तुम्हारी ढीठो तुम यह कहत डरानी । सूर श्याम कछु करत न बनिहै नृप पावै कहुँ जानी ॥ ४६ ॥ दधि मटुकी हरि छीनिलई । हार तोरि चोली बंद तोरचो जोवनकै बल ढीठ भई ॥ ज्यों ही ज्यों हम सूधे बोलत त्यों त्यों अतिही सतरगई । वाद करति अबहीं रोवहुगी बार बार कहि दई दई ॥ अंश परायो देहु न नीके मांगतही सब करत खई । सूर सुनहुँ मैं कहत अज हुँ लौं प्रीति करहु जो भई सो भई ॥ ४७ ॥ राग काफी ॥ कन्हैया हार हमारो देहु । दधि लवनी घृत जो कछु चाहो सो तुम ऐसेहि लेहु ॥ कहा करैं दधि दूध तिहारो मोसों नाहीं काम । जोबनरूप दुराइ धरचोहै ताको लेति न नाम ॥ नीके मन ह्वै मांगत तुमसों वैर नहीं उर नाखति । सूर सुनहु री ग्वारि अयानी अंतर हमसों राखति ॥ ४८ ॥ राग गौरी ॥ हमको लाज न तुमहि कन्हाई । जो हम एहि मारग सब आईं तौ तुम हमसों करत ढिठाई ॥ हाहा करति पाँइ तुम लागति रीती मटुकी देहु मँगाई । काको वदन प्रातही देख्यो घरते हम छींकतहु न आई ॥ उतही जातहि सखी सहेली मैंही सबको इतहि फिराई । सूर श्याम अधमई हमहि सब लागि तुमहि भलाई ॥ ॥ ४९ ॥ राग बिलावल ॥ मैं भरुहाये लागतहौ । कनक कलश रस मोहिं चखावहु जो मैं तुमसों मांगतहौ ॥ वोही ढंग तुम रहे कन्हाई उठीं सबै झिझिकारि । लेहु अशीश सबनके मुखते कतहि दिवावत गारि ॥ नीके देहु हार दधि मटुकी बात कहन नहिं जानत । कैहैं जाइ यशोदासों प्रभु सूर अचगरी ठानत ॥ ॥ ५० ॥ हार तोरि बिथराइ दियो । मैया पै तुम कहन चली कत दधि माखन सब छीनि लियो ॥ रिसकरि धाइ कंचुकी फारी अब तो मेरो नाउँ भयो । कालि नहीं एहि मारग पैहौ ऐसो मोसों वैर ठयो ॥ भलीबात बरजाहु आजु तुम मांगत जोवन दान नयो । सूरदास सुखही रिस युवतिन उर उर अंतर काम जयो ॥ ५१ ॥ राग नट ॥ मोहिं तोहिं जानिबी नँदनंदन जब वृंदावनते गोकुल जैबो । सखिन कहति छीनिले मेरी मटुकिया गारी दैबो ॥ मुहँ मोरिबो बाउ अधिकाई सो लैबो । एक गाँउ

एकहि सँग वसिये कैसे री यहि मग ऐवो ॥ युवतिनको मुख देखि रहतहौ ललचाने कैसे पैबो । कैसे हार तोरि मेरो डारचो बिसरत नहिं रिसकर धैबो॥सुन री सखी ढीठ नँदनंदन चलो सबै यशोमतिसों हम लरिवो । सूर श्याम दधि माखन लीन्हों हार न देहौ बैर समुझि कहिबो९२॥राग सारंग॥ तैं कत तोरचो हार नौसरिको । मोती वगरि रहे सब बनमें गयो कानको तरिको॥ए अवगुण जु करत गोकुलमें तिलक दिये केसरिको॥ढीठ ग्वाल दहीके माते वोढनहार कमरिको॥जाइ पुकारैं यशुमति आगे कहत जो मोहन लरिको । सूरज श्याम जानि चतुराई जेहि अभ्यास मधु वरिको ॥ ९३ ॥ राग बिलावल ॥ सुनहु श्याम हम अब चलीं यशोमतिके आगे । तौ वदियो हमको अबहीं तमको धरि माँगे ॥ इक इक करी विथराइकै मोतिन लर तोरचो । यह सुनि सुनि मुसकाइकै हरि भौंह सकोरचो ॥ चलीं महरिपै सुंदरी उरहनलै हरिको । अबहीं बोलि बँधाए लंगर यह लरिको॥गईं नंद घरको सबै यशुमति जहां भीतर । देखि महरिको कहि उठीं सुत कीन्हों ईतर ॥ मारग चलन न पाइए री हरिके आगे । सूरदास प्रभु त्रासते ब्रजतजि हम भागे ॥ ९४ ॥ अपने री कुँवर कन्हाईसों माई तू कहति काहि न । आनकी आन कहत नित हमसों उनके मनकी कछु जानति नाहिंन ॥ वहुत बचति ब्रजराजकी कानि न हँसति कहा ह्यांते जाहि न । ऐसो भयो कुल कौन तिहारे यौवन दान लियो मोपै चाहिन ॥ अति उत्पात कहांलौ कीजै पीपरको बन दाहि न । आनकी आन कहत नित हमसों उनके मनकी कछु जानत नाहिन॥काहू बिलोकनि बानि सिखायो मैं अब पहिचानति ताहिन । बूझिधौं देखि ह्यां कौन सयानी हरि मेरो मन चुरवायो का पहिचाहिन॥ जाइ न मिलो सूरके प्रभुको अरुझेनसों अरुझाहिन ॥ ९५ ॥ राग सुघडाई ॥यशुमति तेरो बारो अतिहि अचगरो । दूध दही माखन लै ढारि दियो सगरो ॥ भोर होत नित प्रति करैहै झगरो । ग्वाल बाल संग लये जाइ गहै डगरो ॥ हम तुम एक सम कौन काते अगरो । लियो दियो कछु सोऊ डारि देहु कगरो॥सूरदास प्रभु सब गुणनि अगरो। और कहूं जाइरहे छांडि ब्रज बगरो॥९६॥राग मुही ॥ मैं तुम्हरे मनंकी सब जानी । आपु सबै इतरातिहै दोपन हेत श्यामको आनी॥मेरो हरि कहँ दशहि बरषको तुम्हरी यौवन मद उदमादी । लाज नहीं आवति इन लगंरिनि कैसे धौं कहि आवति बानी ॥ आपुहि हार तोरि चोली वँद उर नखघात बनाइ निशानी । कहाँ कान्हकी तनक अँगुरियां यह कहि बार बार पछितानी ॥ देखहु जाइ और काहूको हरिपर सबै रहत मँडरानी । सूरदास प्रभु मेरो नान्हो तुम तरुणी डोलति अठिलानी॥९७॥राग जयतश्री ॥जब दधि वेचन जाहिं तब मारग रोंकि रहै।ग्वालिनि देखति धाइरी अंचल आइ गहै ॥ अहो नंदकी नारि गारि ऐसी क्यों दीजे । एक ठौर वस वास सुनहु ऐसी नहिं कीजै ॥ सुत वैसो तुमहूं तो खीझति को रैहै यहि गाँउँ।जैहं ब्रज तजि अनतही बहुरि सुनो नहिं नाउँ ॥९८॥ कहाकहति डरपाइ कछू मेरो घटि जैहै । तुम बाँधति आकाश बात झठी को सैहै ॥ यौबन दिन द्वै सबहिको तुम ऐसी इतराति । झूठेहि कान्हहि दोपदै तुमहीं ब्रज तजि जाति ॥९९॥ हम यह झूठी कही औरसों बूझि न देखौ । हमसों माँगत दान करहि कौडिनको लेखो॥ मटुकी डारै शीशते मर्कट लेइ बुलाइ । महाढीठ मानै नहीं सखन सहित दधि खाइ ॥१००॥ ग्वारिन ढीठि गँवारि कान्ह मेरो अति भोरो । तेरे गोरस बहुत भयो री मेरे थोरो ॥ बोलत लाज नहीं तुम हिं सबही भई गँवारी । ऐसी कैसे हरि करै कतहि बढावति रारी ॥१०१॥ अहो यशोदा महरि पूतकी मानी पीवै । हमहिं कहाहै होत बहुत दिन मोहन जीवै ॥ सुतके कर्म न जानई करै आपनी टेक । दश गैयन करि कोउ अधिक अहिर जाति सब एक ॥१०२॥ कहा गैयनकी चली कहा

अब चली जातिकी। चकृत भई मैं तुमहिं कहत अनमिलत बातकी ॥ जैसी मोसों कहतिहौ को सुनिकै पतिआइ। कौन प्रकृति तुमको परी मोहिं कहौ समुझाइ ॥ ६३ ॥ अहो यशोदा बात का ल्हिं सुनी कि नाहीं। वंशीवटकी छहां गही हरि मेरी बाहीं। हौं सकुचनि बोली नहीं बहु सखियनकी भीर। गहि बहियां मोहि लै चले हंससुताके तीर ॥ ६४ ॥ ये री मदमत ग्वालि फिरति जोवन मदमाती। गोरस बेचन हारि गूजरी अति इतराती ॥ अनमिलती बातैं कहति सुनिपैहै तेरो नाँह। कह मोहन कह तू रहै कबहि गही तेरी बाँह ॥ ६५ ॥ सांची सब मैं कहति झूठ नाहिं कहिहौं तुमसों। सुतकी राखति कानि बिलग मानतिहौ हमसों ॥ कुंजनमें क्रीडा करै मनु वाहीको राज। कंस सकुच नहिं मानई रहत भयो शिरताज ॥ ६६ ॥ ऐसी बातैं कहति मनहुँ हरि बरष तीसको। दुसह सह्यो नहिं जाइ नेक डर करहु ईशको ॥ धनि धनि तुम यह कहतिहो मोको आवै लाज। माखन मांगत रोइकै तेहि दोष देत बिन काज ॥ ६७ ॥ हरि जानतहैं मंत्र यंत्र सीखो कहुँ टोना। बनमें तरुण कन्हाई घरहि आवत है छोना ॥ एक दिवस किन देखहू अंतर रहौ छपाई। दशकोहै धौं बीसको नैननि देखौ जाइ ॥ ६८ ॥ जाहु चली घर आपने नैननि भरि हम देख्योहै। तीस बीस दश बरष एक दिन सब लेख्योहै ॥ डीठि लगावति कान्हको जरैं बरैं वै आंखि। धींगरी धींग चाचरि करै मोहि बुलावति साखि ॥ ६९ ॥ धींग तुम्हारो पूत धींगरी हमको कीन्हीं। सुतको हटकति नाहिं कोटि इक गारी दीन्हीं ॥ महतारी सुत दोउ बने वे मग रोकत जाइ॥इनहिं कहन दुख आइये ये सबको उठति रिसाइ ॥ ७० ॥ कहा करौं तुम बात कहूंकी कहूं लगावति। तरुणिन इहै सोहात मोहिं कैसे यह भावति॥बहुत उरहनो मोहिं दियो अब ऐसो जनि देहु। तुम तरुणी हरि तरुण नहिं मन अपने गुणिलेहु ॥ ७१ ॥ निरउत्तर भई ग्वालि बहुरि कह कछू न आयो। मन उपज्यो कछु लाज गुप्त हरिसों चित लायो ॥ लीला ललित गोपालकी कहत सुनत सुखदाइ। दान चरित सुख देखिकै सूरदास बलिजाइ ॥ ७२ ॥ १०३६ ॥ राग रामकली ॥ नँद नंदन इक बुद्धि उपाई। जे जे सखा प्रकृतिके जाने ते सब लए बोलाई ॥ सुबल सुदामा श्रीदामा मिलि और महर सुत आए। जो कछु मंत्र हृदय हरि कीन्हौं ग्वालन प्रगट सुनाए ॥ ब्रजयुवती नित प्रति दधि बेचन बनि बनि मथुरा जाति। राधा चंद्रावलि ललितादिक बहु तरुणी यक भांति ॥ कालिंदी तट कालि प्रातही द्रुम चढि रहौ लुकाइ। गोरस लै जबहीं सब आवैं मारग रोकहु जाइ ॥ भली बुद्धि इह रची कन्हाई सखनि कह्यो सुख पाई। सूरदास प्रभु प्रीति हृदयकी सब मन गए जनाई ॥ ॥ ७३ ॥ प्रातहि उठी गोप कुमारि। परस्पर बोली जहां तहाँ यह सुनी बनवारि ॥ प्रथमही उठि सखा आये नंदके दरबार।आइये उठिकै कन्हाई कह्यो बारंबार॥ग्वाल टेर सुनत यशोदा कुँवर दियो जगाइ। रहे आपुन मौन साधे उठे तब अकुलाइ॥मुकुट शिर कटि कसि पीतांबर मुरली लीन्हीं हाथ। सूर प्रभु कालिंदी तट गए सखा लीने साथ ॥ ७४ ॥ राग रामकली ॥ भली करी उठि प्रातहि आए। मैं जानत सब ग्वारि उठी जब तब तुम मोहिं बोलाए ॥ अब आवति ह्वैहैं दधि लीन्हें घर घर ते ब्रजनारी। हँसे सबै कर तारी दैदै आनँद कौतुक भारी ॥ प्रकृति प्रकृति अपने ढिग राखे संगी पांच हजार। और पठाइ दिये सूरज प्रभु जे जे अतिहि कुमार ॥ ७५ ॥ राग बिलावल ॥ हँसत सखनि यहकहत कन्हाई। जाइ चढौ तुम सघन द्रुमनि पर जहँ तहँ रहौ छिपाई ॥ तबलौं बैठिरहो मुहँ मूंदे जब जानहु अब आई। कूदिपरोगे द्रुमनि द्रुमनिते दैदै नंद दोहाई ॥ चकित होहिं जैसे युवती गण डरनि जाहिं अकुलाई। वेनु विषान मुरलि ध्वनि कीजो शंख शब्द बहनाई ॥ नितप्रति जाति

T

हमारे मारग इह कहियो समुझाई । सूर श्याम माखन दधि दानी यह सुधि नाहिन पाई ॥ ७६ ॥ श्याम सखन ऐसो समुझावत । ब्रजवनिता ललितादिक इनको देखि बहुत सुख पावत ॥ कालि जात यहि मारग देखी तब यह बुद्धि उपाई । अब आवति ह्वै हैं बनि बनि सब मोहीसों चितलाई ॥ तुमसों कछू दुरावत नाहीं कहत प्रगट करि बात। सुनहु सूर लोचन मेरे बिनु राधा सुख अकुलात। ॥ ७७ ॥ ब्रजयुवती मिलि करति विचार । चलो आजु प्रातहि दधि बेचन नित तुम करति अबार । तुरत चलो अबहीं फिरि आवैं गोरस बेचि सवारैं । माखन दधिघृत साजति मटुकी मथुरा जान बिचारैं ॥ पटदशसहस शृंगार करतिहैं अंग अंग सब निरखि सँवारति । सूरदास प्रभु प्रीति सबनिकी नेक न हृदय बिसारति॥७८॥राग धनाश्री॥युवती अंग शृंगार सँवारति । बेनी गुंथि मांग मोतिनकी शीशफूल शिर धारति ॥ गोरे भाल बिंद सेंदुरपर टीका धरचो जराउ । वदन चंद्र पर रवि तारागण मानों उदित सुभाउ॥ सुभग श्रवण तरिवन मणि भूषित यह उपमा नाहिं पार। मनहुँ काम रचि फंद बनाए कारण नंदकुमार ॥ नासा नथ मुकुताकी शोभा रह्यो अधर तट जाई । दाडिम कनशुक लेत बन्यो नहिं कनक फंद रह्यो आई ॥ दमकत दशन अरुण धरणीतर चिबुक डिठौना भ्राजत । दुलरी अरु तिलरी बंद तापर सुभग हमेल बिराजत ॥ कुच कंचुकी हार मोतिन अरु भुजन बिजयठे सोहत । डारन चुरी करन फुंदनाबनि कंज पास अलि जोहत ॥ क्षुद्रघंटिका कटि लहँगा रंग तन तन सुखकी सारी । सूर ग्वालि दधि बेचन निकरी पग नूपुर ध्वनि भारी॥७९॥राग नटनारायणी ॥ दधि बेचन चली ब्रजनारि । शीश धरि धरि माट मटुकी बडी शोभा भारि ॥ निकसि ब्रजके गई गोंडे हरष भई सुकुमारि । चलीं गावति कृष्णके गुण हृदय ध्यान विचारि ॥ सबनके मन जो मिलै हरि कोउ न कहति उघारि । सूर प्रभु घट घटके व्यापी जानि लई बनवारि ॥८०॥ राग जयतश्री॥ हरि देखी युवती आवति जब । सखन कह्यो तुम जाइ चढौ द्रुम बैठिरहौ दुरि जहां तहां सब ॥ चढे सबै द्रुम डार ग्वाल गण सुनत श्याम मुख बानी । धोखे धोखे रहे सबै हम श्याम भली यह जानी ॥ नव शत साजि शृंगार युवति सब दधि मटुकी लिये आवत । सूर श्याम छबि देखत रीझे मन मन हरष बढावत ॥८१॥ राग धनाश्री॥सखा और संग लिये कन्हाई । आपुन निकसि गये आगेको मारग रोक्यो जाई ॥ यहि अंतर युवती सब आईं बन लाग्यो कछु भारी । पाछे युवति रहीं तिन टेरत अबहिं गई तुम हारी ॥ तरुणी जुरि यक संग भईं सब इत उत चलीं निहारत । सूरदास प्रभु सखा लिये सँग ठाढे इहै बिचारत ॥ ८२ ॥ राग गौरी ॥ ग्वारिन तब देखे नँदनंदन । मोर मुकुट पीतांबर काछे खौरि किये तनु चंदन॥तब यह कह्यो कहाँ अब जैहौ आगे कुँवर कन्हाई । यह सुनि मन आनंद बढायो मुख कहैं बात डराई ॥ कोउ कोउ कहति चलौ री जाई कोउ कहै फिरि घर जाइ । कोउ कोउ कहति कहा करिहै हरि इनको कहाँ पराइ ॥ कोउ कोउ कहति कालिही हमको लूटिलई नँदलाल । सूर श्यामके ऐसे गुणहैं घरहि फिरो ब्रजबाल॥ ॥ ८३ ॥राग सोरठ ॥ ग्वालन सैन दियो तब श्याम । कूदि कूदि सब परहु द्रुमनते जात चली घर बाम ॥ सैन जानि तब ग्वाल जहां तहँ द्रुम द्रुम डार हलाए । वेनु विषान शंख मुरली ध्वनि सब एक शब्द बजाए ॥ चकृत भई तरु तरु प्रति देखति डारनि डारनि ग्वाल । कूदि कूदि सब परे धरणिमें घेरि लई ब्रजबाल ॥ नितप्रति जात दूध दधि बेचन आजु पकरि हम पाई । सूर श्यामको दान देहु तब जैहौ नंद दोहाई ॥ ८४ ॥ राग नट ॥ ग्वारिनि यह भली नाहिं करति । दूध दधि घृत नितहि बेचति दान देते डरति ॥ प्रातही लै जाति गोरस बेचि आवति राति । कहौ कैसे जानिये

तुम दान मारे जाति ॥ कालिंदी तट श्याम बैठे हमहिं दियो पठाइ। यह कह्यो हरि दान माँगहु जाति नितहि चुराइ ॥ तुम सुता वृषभानुकी वै बडे नंदकुमार। सूर प्रभुको नाहिं जानति दान हाट बजार ॥ ८५ ॥ राग कान्हरो ॥ यह सुनि हँसीं सकल ब्रजनारी। आनि सुनहु री बात नई इक सिखयेहैं महतारी ॥ दधि माखन खैबेको चाहत मांगि लेहु हम पास। सूधे बात कहौ सुखपावैं बांधन कहत अकास ॥ अब समुझी हम बात तुम्हारी पढे एक चटशार। सुनहु सूर यह बात कहौ जिनि जानति नंदकुमार ॥ ८६ ॥ राग धनाश्री ॥ बात कहति ग्वालिनि इतराति। हम जानी अब बात तुम्हारी सूधे नहिं बतराति ॥ इहै बडो दुख गाँव बासको चीन्हे कोउ न सकात। हरि मांगतहैं दान आपनो कहत मांगि किन खात ॥ हाट बाट सब हमहिं उगाहत अपनो दान जगात। सूरदासको लेखो दीजै कोउ न कहै पुनि बात ॥ ८७ ॥ राग कान्हरो ॥ कौन कान्हको तुम कहा मांगत। नीके करि सबको हम जानति बातैं कहत अनागत ॥ छांडिदेहु हमको जनि रोकहु वृथा बढावति रारि। जैहै बात दूरिलौं ऐसी परिहै बहुरि खँभारि ॥ आजुहि दान पहरि ह्यां आए कहां दिखावहु छाप। सूर श्याम वैसेहि चलौ ज्यों चलत तुम्हारो बाप ॥ ८८ ॥ राग कान्हरो ॥ कान्ह कहत दधिदान न दैहौ। लेहौं छीनि दूध दधि माखन देखतही तुम रैहौ ॥ सब दिनको भरि लेहुँ आजुही तब छांडौ मैं तुमको। उघटतिहै तुम मात पितालौं नहिं जानो तुम हमको ॥ हम जानतिहैं तुमको मोहन लैलै गोद खिलाए। सूर श्याम अब भए जगाती वै दिन सब बिसराए ॥ ८९ ॥ अजहूं मांगिलेहु दधि देहौं। दूध दही माखन जो चाहो सहज खाहु सुख पैहौं ॥ तुम दानी ह्वै आए हमपर यह हमको नाहिं भावत। करौ तहीं लै निबहै जोई जाते सब-सुख पावत ॥ हमको जान देहु दधि बेंचन पुनि कोउ नाहिन लैहै। गोरसलेत प्रातही सब कोउ सूर धरचो पुनि रैहै ॥ ९० ॥ राग कान्हरो ॥ दान दिये विन जान न पैहौ। जब देहौं ढराइ सब गोरस तबहिं दान तुम दैहौ ॥ तुमसौं बहुत लेनहै मोको यह लै ताहि सुनावहु। चोरी आवति बेंचि जाति सब पुनि गोरस बहुरो कहँ पावहु ॥ मांगत छाप कहा दिखराऊं को नहिं हमको जानत। सूर श्याम तब कह्यो ग्वारिसों तुम मोको क्यों मानत ॥ ९१ ॥ राग रामकली ॥ कहा हमहिं रिसकरत कन्हाई। इह रिस जाइ करौ मथुरापर जहां है कंस बसाई ॥ हम अब कहा जाइ गुहरावैं बसत तुम्हारे गाउँ। ऐसे हाल करत लोगनके कौन रहै यहि ठाउँ ॥ अपने घरके तुम राजा हो सबको राजा कंस। सूर श्याम हम देखत ठाढे अब सीखे ए गंस ॥ ९२ ॥ राग देवगंधारी ॥ कापर दान पहिरि तुम आए। चलहु जु मिलि उनहीमें जैए जिन तुम रोकन पंथ पठाए ॥ सखासंग लीन्हे जु सँति के फिरत रैनि दिन बनमें धाए। नाहिन राज कंसको जान्यो बाट रोकते फिरत पराए ॥ लीन्हे छीनि बसन सबहीके सबही लै कुंजनि अरुझाए। सूरदास प्रभुके गुण ऐसे दधिके माट भूमि ढरकाए ॥ ९३ ॥ राग सूही ॥ जाइ सबै कंसहि गुहरावहु। दधि माखन घृत लेत छँडाए आजुहि मोहि हजूर बोलावहु ॥ ऐसे को कह मोहिं बतावति पल भीतर गहिमारौं। मथुरापतिहि सुनोगी तुमही जब वाके धरि केश पछारौं ॥ बार बार दिन हमहिं बतावत अपनो दिन न बिचारो। सूर इंद्र ब्रज तबहिं बहावत तब गिरि राखि उबारो ॥ ९४ ॥ राग गुजरी ॥ गिरि वर धरचो आपने बरको। ताहीके बल तुम दान लेतहौ रोंकि रहतहौ हमको ॥ अपनेही मुख बडे कहावत हमहू जानति तुमको। इह जानति पुनि गाइ चरावत नितप्रति जातहौ बनको ॥ मोर मुकुट मुरली पीतांबर देखो आभूषन सब बनको। सूरदास कांधे कामरिहू जानति हाथ

T

लकुट कंचनको ॥ ९५ ॥ राग बिलावल ॥ यह कमरी कमरी करि जानति । जाके जितनी बुद्धि हृदय में सो तितनी अनुमानति॥या कमरीके एक रोमपर वारौं चीर नील पाटंबरासो कमरी तुम निंदति गोपी जो तीनिलोक आडंबर ॥ कमरीके बल असुर संहारे कमरिहिते सब भोग । जाति पांति कमरी सब मेरी सूर सबहि यह योग ॥ ९६ ॥ राग बिलावल ॥ धनि धनि यह कामरिहो मोहन श्यामलालकी॥इहै ओढि जात बनहि इहै सेज करतहौं तुम मेह बूंद निरवारन इहै छांह घामकी॥ इहै ञुठि गुन करतहै पुनि शिशिर शीत इहै हरति गहनेलै धरति ओट कोट बामकी । इहै जाति इहैपाँति परिपाटी यह सिखवति सूरदास प्रभुके यह सब बिशरामकी ॥ ९७ ॥ अब तुम सांची बात कही । एतेपर युवतिनको रोकत मांगत दान दही ॥ जो हम तुमहि कह्यो चाहतही सो श्रीमुख प्रगटायो । नीके जाति उघारि आपनी युवतिन भले हँसायो ॥ तुम कमरीके ओढनहारे पीतांबर नाहिं छाजत । सूरदास कारे तनु ऊपर कारी कमरी भ्राजत ॥ ९८ ॥ मोसों बात सुनहु व्रजनारि । एक उपखान चलत त्रिभुवनमें तुमसों आजु उघारि ॥ कबहूँ बालक मुँह न दीजिये मुँह न दीजिये नारि । जोइ मनकरै सोइ करिडारै मूँड चढतहै भारि ॥ बात कहत अठिलात जाति सब हँसत देतिं कर तारि । सूर कहा ए हमको जानै छाछिहि बेचन हारि ॥ ९९ ॥ यह जानति तुम नंदमहरसुत । धेनु दुहत तुमको हम देखति जबहि जात खरिकहि उत ॥ चोरी करत रहौ पुनि जानति घर घर ढूँढत भांडि । मारगरोकि भये अब दानी वै ढँग कबते छांडि ॥ और सुनहु यशुमति जब बांधे तब हम कियो सहाइ । सूरदास प्रभु यह जानति हम तुम व्रज रहत कन्हाइ॥११००॥राग आसावरी ॥ को माता को पिता हमारे । कब जनमत हमको तुम देख्यो हँसी लगत सुनि बात तुम्हारे ॥ कब माखन चोरी करिखायो कब बांधे महतारी । दुहत कौनकी गैया चारत बात कही यह भारी ॥ तुम जानति मोहिं नंद ढुटौना नंद कहां ते आए । मैं पूरन अविगति अबिनाशी माया सबनि भुलाए ॥ यह सुनि ग्वालि सबै मुसकानी ऐसेउ गुणहौ जानत । सूर श्याम जो निदरयो सबही मात पिता नहिं मानत ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥ तुमको नंदमहर भरुहाए । माता गर्भ नहीं तुम उपजे तौ कहौ कहांते आए ॥ घर घर माखन नहीं चुरायो ऊखल नहीं बँधाए । हाहाकरि यशुमतिके आगे तुमको हमहि छुड़ाये ॥ ग्वालनि संग संग बृंदावन तुम नाहिं गाइ चराये । सूर श्याम दशमास गर्भधरि जननि नहीं तुम जाये ॥ २ ॥ राग टोडी ॥ भक्तहेतु अवतार धरयो । कर्म धर्मके वश मैं नाहीं योग जग्य मनमें न करयो ॥ दीनगुहारि सुनौं श्रवणनि भरि गर्व वचन सुनि हृदयजरौं । भाव अधीन रहौं सबहीके और न काहू नेक डरौं ॥ ब्रह्मकोटि आदिलौं व्यापक सबको सुखदै दुखहि हरौं । सूर श्याम तब कही प्रगटही जहां भाव तहँते न टरौं॥ ॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥ कान्ह कहांकी बात चलावत । स्वर्ग पताल एक करि राखौ युवतिनको कहि कहा बतावत ॥ जो लायक तौ अपने घरको बनभीतर डरपावत । कहा दान गोरसको हैहै सब न लेहु देखावत ॥ रीती जान देहु घर हमको यतनेही सुखपावत । सूर श्याम माखन दधि लीजै युवतिन कत अरुझावत ॥ ४ ॥ माखन दधि कह करौं तुम्हारो । मैं मनमें अनुमान करौं नित मोसों कैहै बनिज पसारो ॥ काहेको तुम मोहिं कहतहो जोबन धन ताको करि गारो । अब कैसे घर जान पाइहो मोको यह समुझाइ सिधारो ॥ सूर बनिज तुम करत सदाई लेखो करिहौं आजु तिहारो ॥ राग सूहवी ॥ ऐसी कहौ बनिजको अटकी । मुख मुख हेरि तरुनि मुसकानी नैन सैन दै दै सब मटकी ॥ हमहू कह्यो दान दधिको कहा मांगत कुँवर कन्हाई । अबलौं कहा मौन

धरि बैठे तबहीं नहीं सुनाई ॥ हँसि वृषभानुसुता तब बोली कहा बनिज हम पास।सूर श्यामः लेखो करि लीजै जाहिं सबै व्रजबास॥ ५ ॥ राग बिलावल॥ कहौ तुमहि हमको कहा बूझति। लैले नाम सुना वहु तुमहीं मोसों काहे अरूझति ॥ तुम जानति मैंहूं कछु जानत जो जो माल तुम्हारे । डारिदेहु जापर जो लागै मारग चलौ हमारे ॥ इतनेहीको सोर लगायो अब समुझी यह बात । सूर श्यामके वचन सुनहु री कछु समुझतिहौ घात ॥ ६ ॥ इनहिं यों बूझौ यह लेखो । कहा कहेंगे श्रवणनि सुनिये चरित नेक तुम देखो ॥ मन मन हरषभईं सब युवती सुख ये बात चलावति । ज्यों ज्यों श्याम कहत मृदुबानी त्यों त्यों अति सुख पावति ॥ कोउ काहूको भेद न जानत लोग सकुच उर मानत । सूरदास प्रभु अंतर्यामी अंतर्गतिकी जानत ॥ ७ ॥ कहो कान्ह कह गथलै हमसों । जा कारण युवती सब अटकीं सो बूझतहैं तुमसों ॥ लौंग नारियर दाख सुपारी कहा लादे हम आवैं। हींग मिरच पीपरि अजवाइनि ये सब बनिज कहावैं ॥ कूट काइफर सोंठि चिरैता कटजीरा कहुँ देखत। आलमजीठ लाख सेंदुर कहुँ ऐसेहि बुधि अवरेखत॥ बाइबिरंग बहेरा हरें कहुँ बैल गोंद व्यापारी । सूर श्याम लरिकाईं भूली जोबन भए मुरारी ॥ ८ ॥ ॥राग सूही॥कवन बनिज कहि मोहिं सुनावति।तुम्हरो गथ लादो गयंदपर हींग मिरच पीपरि कहा गावति ॥ अपनो बनिज दुरावतहौ कत नाउँ लियो यतनोंही । कहा दुरावतिहौ मो आगे सब जानत तुव गोही॥ बहुत मोलको बाबा तुम्हारो कैसे दुरत दुराए । सुनहु सूर कछु मोल लेहिंगे कछु इक दान भराए ॥ ९ ॥ राग टोडी॥दधिको दान मेटि यह ठान्यो। सुनहु श्याम अति चतुर भएहौ आजु तुमहि हम जान्यो ॥ जो कछु दूध दह्यौ हम देतीं लैखाते तुम ग्वाल । सोऊ खोइ हाथते बैठे हँसति कहति व्रजबाल । यह सुनि श्याम सबनि करते दधि मटकी लई छँडाई । आपन खाइ सखन को दीन्हों अति मन हरष वढाई ॥ कछु खायो कछु भुँइ ढरकायो चितै रही व्रजनारि । सूर श्याम बन भीतर युवती नए ढंग करत मुरारि॥१०॥राग रामकली॥प्यारी पीतांबर उर झटक्यो । हरि तोरी मोतिनकी माला कछु गर कछु कर लटक्यो॥ढीठो करन श्याम तुम लागे जाइ गही कटि फेट । आपु श्याम रिस करि अंकमभरि भई प्रेमकी भेट ॥ युवतिन घेरि लियो हरिको तब भरि भरि धरि अँकवारि । सखा परस्पर देखत ठाढे हँसत देत किलकारि ॥ हाँक दियो करि नंद दोहाई आइ गए सब ग्वाल । सूर श्यामको जानत नाहीं ढीठभई हैं बाल ॥ ११ ॥ राग भैरव ॥ हम भई ढीठ भले तुम्ह ग्वाल । दीन्हों ज्वाब दईको चैहो देखौरी यह कहा जंजाल॥ बनभीतर युवतिनको रोंकत हम खोटी तुम्हरे ये हाल । बात कहनको यों आवतहै बडे सुधर्मी धर्मप्रतिपाल ॥ साखि सखाकी ऐसि न भरिहौ तब आवहु ते जीति भुआल । आयेहैं चढि रिसकरि हमपर सूर हमहि जानत बेहाल ॥ १२ ॥ राग बिलावल जानी बात तुम्हारी सबकी । लरिकाईके ख्याल तजौ अब गई बात वह तबकी ॥ मारग रोंकत रहे यमुनको तेहि धोखेहौ आये । पावहुगे पुनि कियो आपनो युवतिन हाथ लगाये ॥ जो सुनिहैं यह बात मात पितु तब हमसे कहा कैहैं । सूर श्याम मोतिन लर तोरी कौन ज्वाब हम देहैं ॥ १३ ॥ राग बिलावल नट ॥ आपुन भईं सबै अब भोरी । तुम हरिको पीतांबर झटक्यो उन तुम्हरी मोतिन लर तोरी ॥ मांगत दान ज्वाब नहिं देती ऐसी तुम जोबनकी जोरी । डरनहिं मानति नँदनंदनको करति आनि झकझोराझोरी ॥ यक तुम नारि गँवारि भलीहौ त्रिभुवन में इनकी सरि को री । सूर सुनहु लेहैं छँडाइ सब अबहिं फिरोगी दौरी दौरी ॥ १४ ॥ राग नट ॥ कहा बडाई इनकी सरि में । नंद यशोदाके प्रतिपाले

जानति नीके करिमैं ॥ तुम्हरे कहे सबन डर मान्यो हरिहि गई अति डरिमैं । बसुदेव डारि रातिही भागे आयेहैं शुभघरिमैं । अंग अंगको दान कहतहैं सुनत उठी रिस जरिमैं । तब पीतांबर झटकि लियो मैं सूर श्यामको धरिमैं ॥ १५ ॥ राग गौरी ॥ याते तुमको ढीठ कही । श्यामहि तुम भई झिरकन हारी एतेपर पुनि हारि नही ॥ तबेते हमहिं देतहौ गारी हमको दाहति आपुदही । बनिज करति हमसों झगरतिहौ कहा कहैं हम बहुत सही ॥ समुझि परी अब कछु जिय जान्यो तातेहौ सब मौन रही । सूर श्याम ब्रज ऊपर दानी यहि मारग अब तुम निबही ॥ १६ ॥ ॥ राग कल्याण ॥ तुम देखत रैहौ हम जैहैं । गोरस बेंचि मधुपुरीते पुनि येही मारग ऐहैं ॥ ऐसेही बैठे सब रैहौ बोले ज्वाब न देहैं । धरि लैहैं यशुमतिपै हरिको तब धौं कैसे कैहैं ॥काहेको मोतिनलर तोरी हम पीतांबर लैहैं । सूर श्याम इतरात इते पर घर बैठे तब रैहैं ॥ १७ ॥ मेरे हठ क्यों निबहन पैहौ । अब तो रोकि सबनिको राख्यो कैसे करि तुम जैहौ । दान लेउँगो भरि दिन दिनको लेखो करि सब देहौ । सौंह करतहौं नंदबबाकी मैं कैहौं तब जैहौ ॥ आवत जात रहत येही पथ मोसों बैर बढैहौ । सुनहु सूर हमसों हठ मांडति कौन नफा करि लैहौ ॥ १८ ॥ राग कान्हरो ॥ कौन बात यह कहत कन्हाई । समुझति नहीं कहा तुम मांगत डरपावत करि नंद दोहाई ॥ डरपावहु तिनको जे डरपहिं तुमते घटि हम नाहीं । मारगछाँडि देहु मनमोहन दधि बेचन हम जाहीं ॥ भलीकरी मोतिनलर तोरी यशुमतिसों हम लैहैं । सूरदास प्रभु इहौ बनत नहिं इतनो धन कहा पैहैं ॥ १९ ॥ एक हार मोहिं कहा देखावति । नखशिखते अंग अंगनिहारहु ए सब कतहि दुरावति ॥ मोतिन माल जराइको टीको कर्णफूल नकबेसर । कंठसिरी दुलरी तिलरीको और हार एक नवसर ॥ सुभग हमेल कनक अँगिया नग नगन जरितकी चौकी । बाहुढाड कर कंकन बाजूबंद येते पर तौकी ॥ छुद्रघंटिका पग नूपुर जेहरि बिछिया सब लेखौ । सहज अंग शोभा सब न्यारी कहत सूर ये देखौ ॥ २० ॥ राग जैतश्री ॥ याहूमें कछु बांट तुम्हारो । अचरज आइ सुनहु री माई भूषण देखि न सकत हमारो ॥ कहो ढिठाई हिएते आपुन की यशुमति की नंद । घाटधरचो तुम इहै जानिकै करत ठगनके छंद॥जितनो पहिरि आपु हम आई घरहै याते दूनो । सूर श्याम हौ बहुत लोभाने बन देख्यो धौं सूनो ॥ २१ ॥ राग गौरी ॥ बाँट कहा अब सबै हमारो । जबलौं दान नहीं हम पायो तबलौं कैसे होत तिहारो ॥ आभूषणकी कौन चलावत कंचनघट काहे न उघारो । मदनदूत मोहिं बात सुनाई इनमें भरचो महारस भारो ॥ एक ओर यह अंग अभूषण सब एक ओर यह दान विचारो । सुनहु सूर कहा बाट करैं हम दान देहु पुनि जहां सिधारो ॥ २२ ॥राग कल्याण॥ श्याम भए ऐसे रसनागर । दिन द्वै घाट रोकि यमुनाको युवतिनमें तुम भए उजागर ॥ कांधे कामरि हाथ लकुटिया गाइ चरावन जाते । दही भातकी छाक मँगावत ग्वालन सँग मिलि खाते ॥ अब तुम कर नवलासी लीने पीतांबर कटि सोहत । सूर श्याम अब नवल भए तुम नवल नारि मन मोहत ॥ २३ ॥ राग गौरी ॥ दान देतकी झगरो करिहौ । प्रथमहि यह जंजाल मिटावहु ता पाछे तुम हमहि निदरिहौ ॥ कहत कहा निदरेसेहौ तुम सहज कहति हम बात । आदि बुन्यादि सबै हम जानति काहेको सतरात ॥ रिस करि करि मटुकी शिर धरि धरि डगरि चलीं सब ग्वालिनि । सूर श्याम अंचल गहि झरकी जैहौं कहा बजारिनि॥२४॥राग कल्याण ॥अब तुमको मैं जान न दैहौं।दान लेउँ कौडी कौडी करि बैर आपनो लैहौं ॥ गोरस खाइ बच्यो सो डारचो मटुकी डारी फोरि । दैदै गारि नारि झकझोरी चोलीके बँद तोरि ॥ हँसत सखा कर तारी दैदै बनमें रोकी नारि । सुनत

लोग घरते आवहिंगे सकिहौ नहीं सम्हारि ॥ घरके लोगनि कहा डरावत कंसहि आनि बुलाइ । सूर सबै युवतिनके देखत पूजा करौं बनाइ॥२५॥ राग गौरी॥जो तुमहीहौ सबके राजा।तो बैठौ सिंहासन चढिकै चमर छत्र शिर आजा ॥ मोर मुकुट मुरली पीतांबर छाँडिदेहु नटवरको साजा । वेनु बिषान शृंग क्यों पूरत बाजै नौबति बाजा॥यह जो सुनै हमहु सुखपावै संगकरै कछु काजा । सूर श्याम ऐसी बातें सुनि हमको आवति लाजा ॥ २६ ॥ राग कल्याण ॥ तुम्हारे चित रजधानी नीकी । मेरे दास दासनिके चेरे तिनको लागति फीकी ॥ ऐसी कहि मोहिं कहा सुनावति तुमको इहै अगाध । कंस मारि शिर छत्र धरावों कहा तुच्छ यह साध ॥ तबहीं लौं यह संग तिहारो जबलगि जीवत कंस । सूर श्यामके मुख यह सुनि तब मन मन कीन्हों संस ॥ २७ ॥ राग जैतश्री ॥ भली करी हरि माखन खायो । इहौ मानि लीनी अपने शिर उबरो सो ढरकायो ॥ राखी रही दुराइ कमोरी सो लै प्रगट देखायो । यह लीजै कछु और मँगावें दान सुनत रिसपायो ॥ दानदिये बिनु जान न पैहौ कब मैं दान छुटायो । सूर श्याम हठ परे हमारे कहो न कहा लदायो ॥२८॥ रागधनाश्री॥लेहौं दान इननको तुमसों। मत्त गयंद हंस हमसोंहैं कहा दुरावति तुमसों ॥केहरि कनक कलश अमृतके कैसे दुरै दुरावति । विद्रुम हेम वज्रके किनुका नाहिन हमहि सुनावति ॥ खग कपोत कोकिला कीर खंजनहूं शुक मृगजान ति ॥ मणि कंचनके चित्र जरेहैं एतेपर नहिं मानति । सायक चाप तुरय बनिजतिहौ लिये सबै तुम जाहू ॥ चंदन चमर सुगंध जहाँ तहँ कैसे होत निबाहू ॥ यह बनिजति वृषभानु सुता तुम ह- मसों बैर बढ़ावति । सुनहु सूर एतेपर कहतिहै हम धौं कहा लदावति ॥ २९ ॥ राग सोरठ ॥ यह सुनि चक्रतभई व्रजबाला । तरुणी सब आपुसमें बूझति कहा कहत गोपाला । कहां तुरंग कहां गज के- हरि कहां हंस सरोवर सुनिये । कंचनकलश गढाये कब हम देखे धौं यह गुनिये ॥ कोकिल कीर कपोत बननमें मृग खंजन शुक संग । तिनको दान लेतहै हमसों देखहु इनको रंग ॥ चंदन चौर सु- गंध बतावत कहां हमारे पास । सूरदास जो ऐसे दानी देखिलेहु चहुँ पास ॥३०॥ राग गुनकरी ॥ भू- लिरहे तुम कहाँ कन्हाई । तिनको नाउ लेत हम आगे जो सपने कहुँ दृष्टि न आई ॥ हैवर गैवर सिं- ह हंसबर खग मृग कहँहैं हम लीन्हें । सायक धनुप चक्र सुनि चक्रत चमर न देखे चीन्हें ॥ चंद- न और सुगंध कहतहौ कंचन कलश बतावहु । सूर श्याम ये सब जो हैहैं तबहिं दान तुम पावहु ॥ ॥३१॥ राग गूजरी ॥ इतने सबै तुम्हारे पास । निरखि न देखहु अंग अंग अब चतुराईके गांस ॥ तुर- तही निरुवारि डारहु करति कहत अबेर । तुम कहो कछु हमहुँ बोलैं घरहि जाहु सबेर । कनक तुम परतक्ष देखहु सजे नवसत अंग । सूर तुमसों रूप जोबन धरचो एकहि संग ॥ ३२ ॥ राग बिलावल॥प्र- गटकरौं सब तुमहिं बतावें।चिकुर चमर घूँघटहै बरबर भुवसारंग देखावैं ॥ बाण कटाक्ष नयन खंजन मृग नासा शुक उपमाउं । तरिवनचक्र अधर विद्रुम छबि दशन वज्र कनठाउं ॥ ग्रीव कपोत को- किला बाणी कुच घट कनक सुभाउ । जोबन मद रसअमृत भरेहैं रूप रंग झलकाउ ॥ अंग सुगंध बसन पाटंवर गनि गनि तुमहि सुनाउ । कटि केहरि गयंदगति शोभा हंससहित यकताउँ । फेरकिये कैसे निबहतिहै घरहिगए कहा पाउँ ॥ सुनहु सूर यह बनिज तुम्हारे फिरि फिरि तुमहि मनाउँ ॥ ३३ ॥ राग नट॥माँगत ऐसे दान कन्हाई।अब समुझी हम बात तुम्हारी प्रगट भई कछु धौं तरुनाई॥यहि लाल- च अँकवारि भरतहौ हार तोरि चोली झटकाई।अपनी ओर देखि धौं लीजै ता पाछे करिये बरिआई ॥ सखा लिये तुम घेरत पुनि पुनि बन भीतर सब नारि पराई।सूर श्याम ऐसी न बूझिये इनि बातनि मर्यादा जाई ॥ ३४ ॥ राग नट ॥ हमपर रिस करति व्रजनारि।बात सूधे हम बतावत आपु उठत पुकारि॥कबहुँ

T

मर्यादा घटावति कबहुँ देहै गारि । प्राततें झगरो पसारो दानदेहु निवारि ॥ बडे घरकी बहू बेटी करति वृथा झवारि।सूर अपनो अंश पावै जाहिंघर झखमारि॥३५॥राग सारंग॥तुमहि उलटि हमपर सतराने॥ जो कछु हमको कहन बूझिए सो तुम कहि आगे अतुराने ॥ यह चतुराई कहा पढी हरि थोरे दिन अति भये सयाने । तुमको लाज होतकी हमको बात परै जो कहुँ महराने ॥ ऐसो दान और पै मांगहु जो हमसों कहौ छबिछाने । सूरदास प्रभु जानदेहु अब बहुरि कहौगे कालि बिहाने ॥ ३६ ॥ श्यामहि बोलि लियो ढिग प्यारी । ऐसी बात प्रगट कहुँ कहिये सखनि मांझ कत लाजन मारी ॥ एक ऐसेहि उपहास करत सब तापर तुम यह बात पसारी । जातिपांतिके लोग हँसिहिंगे प्रगट जानिहैं श्याम भतारी ॥ लाजन मारतहौ कत हमको हाहा करति जाति बलिहारी । सूर श्याम सर्वज्ञ कहावत मात पितासों धावत गारी ॥ ३७ ॥ जबहि ग्वारि यह बात सुनाई । सखा सबनि तबहीं लखि लीन्हीं सदा श्यामके प्रकृत सुभाई॥सुनहुँ प्यारि इक बात सुनावों जो तुम्हरे मन आवै। तुम प्रति अंग अंगकी शोभा देखत हरि सुख पावै ॥ तुम नागरी नवल नागर वै दोऊ मिलि करौ बिहार।सूर श्याम श्यामा तुम एकै कहा हँसिहै संसार॥३८॥राग नट॥नंदसुवन यह बात कहावत।आपुन जोबन दान लेतहै तापर जोइ सोइ सखनि सिखावत ॥ वै दिन भूलिगए हरि तुमको चोरी माखन खाते । खीझतही भरिनयन लेतहै डरडरात भजि जाते ॥ यशुमति जब ऊखलसों बांधति हमही छोरति जाइ । सूर श्याम अब बडे भयेहौ जोबनदान सुहाइ॥३९॥राग टोडी॥ लरिकाईकी बात चलावति । कैसी भई कहा हम जानै नेकहु सुधि नहिं आवति॥ कब माखन चोरी करि खायो कब बांधे धौं मैया । भले बुरेको मात पिता तन हरपतही दिन जैया ॥ अपनी बात खबरि करि देखहु न्हात यमुनके तीर । सूर श्याम तब कहत सबनिके कदम चढाए चीर॥४०॥राग गूजरी॥सबै रही जलमांझ उघारी । बार बार हाहाकरि थाकीं मैं तट लिये हँकारी ॥आई निकसि बसन बिनु तरुनी बहुत करी मनुहारी । कैसे हास भए तब सबके सो तुम सुरति बिसारी ॥ हमहि कहति दधि दूध चुराये अरु बांधे महतारी । सूर श्यामके भेद वचन सुनि हँसि सकुचीं ब्रज नारी ॥४१॥ कहा भए अति ढीठ कन्हाई ।ऐसी बात कहत सकुचत नहिं कहा धौं अपनी लाज गँवाई॥ जाहु चले लोगनिके आगे झूठी बाणी कहत सुनाई। तुम हँसि कहत ग्वाल सुनिकै सब घर घर कैहैं जाई ॥बहुत होहुगे दशहि बरसके बात कहतहौ बनै बनाई।सूर श्याम यशुमतिके आगे इहै बात सब कैहैं जाई४२॥राग हमीर॥झूठी बात कहा मैं जानौं ।जो हमको जैसेही भजेरी ताको तैसेहि मानौं ।तुम पति कियो मोहिको मनदै मैंहौं अंतर्यामी॥ योगीको योगी ह्वै दरशौं कामीको ह्वै कामी ॥ हमको तुम झूठे करिजानति तौ काहे तप कीन्हौं । सुनहु सूर अब निठुर भई कत दान जात नहिं दीन्हौं॥४३॥ राग गौरी॥दान सुनत रिस होइ कन्हाई। और कहौ सो सब सहि लेहैं जो कछु भली बुराई ॥ महतारी तुम्हरीके वै गुण उरहन देत रिसाई । तुम नीके ढँग सीखें बनमें रोकत नारि पराई ॥ आव न जाव न पावत कोऊ तुम मगमें घटवाई । सूर श्याम हमको बिरमावत खीझत बहिनी माई॥४४॥ काहेको तुम झेर लगावति। दान देहु घर जाहु बेंचि दधि तुमहींको यह भावति ॥ प्रीति करौ मोसों तुम काहेन बनिज करति ब्रजगाउँ । आवहु जाहु सबै यहि मारग लेत हमारो नाउँ॥लेखो करौ तुमहि अपने मन जोइ देहो सोइ लेहैं।सूर सुभाइ चलहुगी जब तुम पुनिधौं मैं कह कैहौं॥४५॥ राग कान्हरो॥सुनहु आइ हरिके गुण माई । हम भई बनिजागिनि आपुन दानि भए कुँवर कन्हाई ॥ कहा बनिज लै आई धौं हम ताको मांगत दान । कालिहिके ढँग पुनि आएहैं नाहिं जानत कछु आन ॥ तुम गवाँरि एही मग आवनि जानि बूझि गुण

इनिके। सूर श्याम सुंदर बहु नायक सुखदायक सबहिनके ॥ ४६ ॥ राग टोडी॥काहेको हमसों हरि लागत। बातहि कछू खोल रस नाहीं को जानै कहा मांगत ॥ कहा स्वसाउ परचो अबहींते इनि बातन कछु पावत। निपट हमारे ख्याल परे हरि बनमें नितहि खिझावत ॥ पैंडो देहु बहुत अब कीनों सुनत हँसहिंगे लोग। सूर हमहिं मारग जिनि रोकहु घरते लीजे बोग ॥ ४७॥ राग सूही॥ अब लों इहै करचो तुम लेखो। मोको ऐसी बुद्धि बतावत करकंकण दर्पण लै देखो ॥ आपुहि चतुरि आपुही सब कछु हमको करति गवाँर। औगहे लेत फिरो इनके घर ठाढे है हैं द्वार ॥ घाट छांडि जैहौ तबलैहीं ज्वाब नृपति कहा दैहों। जादिनते यहि मारग आवति तादिनते भरिलैहों ॥ इनि की बुद्धि दान हम पहिरो काहेन घर घर जैहो। सूर श्याम तब कहत सखिनसों जान कौन विधि पैहो ॥४८॥ राग टोडी ॥ भली भई नृप मान्यो तुमहू। लेखो करै जाइ कंसहिपै चले संग तुम हमहू॥ अबलों हम जानीही घरही पहिरचोहै तुमदान। कालि कह्यो हो दान लेनको नंदमहरकी आन ॥ तो तुम कंस पठाएहैं ह्यां अब जानी यह बात।सूर श्याम सुनि सुनि यह बाणी भौंह मोरि मुसकात॥ ॥ ४९ ॥ राग आसावरी॥ कहा हँसत मोरतहो भौंह। सोई कह्यो मनहि कहि आई तुमहि नंदकी सौंह॥ और सौंह तुमको गोधनकी सौंह माइ यशुमतिकी। सौंह तुमहि बलदाऊकीहै कहो बात वा मनकी ॥ बार बार तुम भौंह सकोरचो कहा आपु हँसि रीझे। सूर श्याम हमैं पर सुख पायो की मनही मन खीझे॥५०॥राग रामकली॥हँसत सखनसों कहत कन्हाई। मैयाकी बाबाकी दाऊजीकी सौंह दिवाई ॥ कहति कहा काहे हँसि हेरचो काहे भौंह सकोरचो। यह अचरज देखौ तुम इनिको कब हम वदन मरोरचो॥ऐसी बातनि सौंह दिवावति अधिक हँसी मोहिं आवत। सूर श्याम कहि श्रीदामासों तुम काहेन समुझावत ॥५१॥ राग धनाश्री॥श्रीदामा गोपिन समुझावत। हँसत श्यामके तुम कहा जान्यो काहे सौंह दिवावत ॥ तुमहूं हँसो आपने संग मिलि हम नहिं सौंह दिवावैं। तरुणिनकी यह प्रकृति अनैसी थोरेहि बात खिसावैं ॥ नान्हे लोगनि सौंह दिवावहु वै दानी प्रभु सबके। सूर श्यामको दान देहु री माँगत ठाढे कबके॥५२॥राग जैतश्री॥ हम जानति वै कुँवर कन्हाई। प्रभु तुम्हरे मुख आजु सुनी हम तुम जानत प्रभुताई ॥ प्रभुता नहीं होति इनि बातनि मही दहीके दान। वै ठाकुर तुम सेवक उनके जान्यो सबको ज्ञान॥ दधिखायो मोतिन लर तोरचो घृत माखन सोउ लीजै। सूरदास प्रभु अपने सदका घरहि जान हम दीजै॥ ५३ ॥ तुम घर जाहु दानको दैहै। जेहि वीरा दै मोहिं पठायो सो मोसों कहा लैहै॥तुम गृह जाइ बैठि सुखकरिहो नृप गारी को खैहै। अबहीं बोलि पठावैं गोरी तासन्मुखको जैहै ॥ जान कहै तुमको तुम जैहो विधिना कैसे सैहै। सूर मोहिं अटक्योहै नृपवर तुमबिनु कौन छँडैहै ॥ ५४ ॥ नृपको नाँउ लेत तेहि मुख जेहि मुख निंदा कालि करी। आपुन तौ राजनिके राजा आजु कहा सुधि मनहि परी॥भले श्याम ऐसी तुम कीनी कहा कंसको नाउँलियो। जब हम सौंह दिवावन लागीं तबहिं कंस पर रोपकियो॥ जाको निंदि बंदियै सो पुनि वह ताको निदरे। सूर सुनी यह बात कालिकी तब जानी इनि कंस डरै॥ ॥५५॥ राग आसावरी॥कहा कहति कछु जानि न पायो। कब कंसहि धौं हम कर जोरचो कब वाको हम माथ नवायो ॥ कबहूं सौंह करत देख्यो मोहिं लेत कबहुँ सुखनाऊं। निपटहि ग्वारि गँवारि भई तुम बसति हमारे गाऊं॥ कहा कंस केतने लायकको जाको मोहिं देखावति। सुनहु सूर यहि नृपके हमहैं इह तुम्हरे मन आवति ॥ ५६ ॥ राग टोडी ॥ कौन नृपति जाके तुमहो। ताको नाउँ सुनावहु हमको यह सुनिकै अति पावमो ॥ यह संसार भुवन चौदह भरि कंसहिते नाहिं दूजो। सो नृप कहा रहत

T

सुनि पावैं तब ताहीको पूजो ॥ कहा नाउँ केहि गाँउ बसतहै ताहीके ह्वैरहिए । सूरदास प्रभु कहै बनेगी झूठे हमहि निदरिए ॥ ५७ ॥ मोसों सुनहु नृपतिको नाउँ । तिहू भुवन भरि गम्यहै जाको नर नारी सब गाउँ ॥ गण गंधर्व वश्य वाहीके अवर नहीं सारि ताहि ॥ उनकी अस्तुति करौं कहांलगि मैं सकुचतहौं जाहि ॥ तिनहीको पठयो मैं आयो दियो दानको वीरा । सूर रूप जोबन धन सुनिकैं देखत भयो अधीरा ॥ ५८ ॥ राग गौरी ॥ पाई जाति तुम्हारे नृपकी जैसे तुम तैसे वोऊ हैं । कहां रहे दुरिजाइ आजु लौं एई ढंग गुणके सोऊ हैं ॥ यह अनुमान कियो मनमें हम एक हि दिन जनमें दोऊ हैं । चोरी अपमारग बटपारचो इनि पटतरके नहिं कोऊ हैं ॥ श्याम बनी अब जोरी नीकी सुनहु सखी मानत तोऊ हैं । सूर श्याम जितने रँग काछत युवती जन मनके गोऊ हैं ॥ ५९ ॥ ठगति फिरति ठगिनी तुम नारी । जोइ आवति सोइ सोइ कहडारति जाति जनावति दै दै गारी ॥ फँसिहारिनि बठपारिनि हम भई आपुन भए सुधर्मा भारी । फंदाफाँसि कमानबानसों काहू डारत देख्यो मारी॥जाके मन जैसोई बरतै मुखबानी कहिदेत उघारी । सुनहु सूर प्रभु नीकें जान्यो ब्रज युवती तुम सब बटपारी ॥ ६० ॥ राग सूही ॥ अपने नृपको इहै सुनायो । ब्रजनारी बटपारिनि हैं सब चुगली आपुहि जाइ लगायो॥राजा बडे बात यह समुझी तुमको हमपर धौंस पठायो।फँसि हारिनि कैसे तुव जानी हम कहुँ नाहिंन प्रगट देखायो॥ब्रजबनिता फँसिहारी जो सब महतारी काहे न गनायो॥ फंदा फांसि धनुप विप लाडू सूर श्याम नाहिं हमहिं बतायो॥६१॥राग भैरव॥फंदा फाँसि बताव हु जो । अंगनि धरे छपाइ जहां जो प्रगट करौ सब दीहौं तौ ॥ प्रथमहि शीश मोहिनी डारति ऐसे ताहि करत बशहौ । बिपलाडू दरशावति ले पुनि देह दशा पुनि बिसरति ज्यों ॥ ता पाछे फंदा गर डारति एहि भांतिनि करि मारतिहौ। सुनहु सूर ऐसे गुण तुम्हरे मोसों कहा उचारतिहौ॥६२॥ प्रगट करौ यह बात कन्हाई । बान कमान कहां केहि मारचो काके गर हम फांसि लगाई ॥ काके शिर पढ़ि मंत्र दियो हम कहां हमारे पाशदिनाई । मिलवत कहां कहांकी बातैं हँसत कहति अति गइ सकुचाई॥तब मानैं सब हमहुँ बतावहु कहो नहीं जो नंद दोहाई । सूर श्याम तब कह्यो सुनहुगी एक एक करि देउँ बताई ॥ ६३ ॥ राग रागिनी ॥ मोसों कहा दुरावति नारी । नयनशयन दै चितहि चुरावति इहै मंत्र टोना शिरडारी ॥ भौंह धनुप अंजन गुन बान कटाक्षनि डारति मारि । तारिवंन श्रवन फांसि गर डारति कैसेहुँ नहीं सकत निरवारि ॥ पीन उरोज सुख नैन चखावति इह विष मोदक जातन झारि । घालति छुरी प्रेमकी बानी सूरदासको सकै सँभारि ॥ ६४ ॥ राग टोडी ॥ अपनोगुण औरनि शिरडारत । मोहन जोहन मंत्र यंत्र टोना सब तुमपर वारत ॥ तनुत्रिभंग अंग अंगमरोरनि भौंह बंक करि हेरत । मुरली अधर बजाइ मधुर सुर तरुनी मृगबन घेरत ॥ नटवर भेष पीतांबर काछे छैलभए तुम डोलत । सूर श्याम रावरे ढंगए अवरनिको ढँगबोलत ॥ ६५ ॥ जानी बात मौन धरि रहिए । इहै जानि हमपर चढि आए जो भावै सो कहिए ॥ हम नहिं बिलग तुम्हारो मान्यो तुम जनि कछु मन आनो । देखहु एक दोइ जनि भापहु चारि देखि दुइगानो ॥ दोबल देति सबै मोहीको उन पठयो मैं आयो । सूर रूप जोबनकी चुगली नैननि जाइ सुनायो ॥ ६६ ॥ राग बिलावल॥तब रिसकरिकै मोहिं बोलायो । लोचन दूत तुमाहिं इहि मारग देखत जाइ सुनायो।सोइ सब महलनते सुनि बानी जोबन महलनि आयो । अपने कर वीरा मोहिं दीन्हों तुरत मोहिं पहिरायो ॥ बैठ्योहै सिंहासन चढिकै चतुराई उपजायो । मनतरंग आज्ञाकारी भृत तिनको तुमहि लगायो ॥ तिनको नाम अनंग नृपतिवर सुनहु बात सुखपायो । सूर श्याम मुखबात सुनत यह

युवतिन तनु बिसरायो॥६७॥ राग सूही॥ब्रज युवती सुनि मगन भई। यह बानी सुनि नंदसुवन मुख मन व्याकुल तन शुधीगई॥ को हम कहां रहति कहां आई युवतिनके यह सोच परचो। लागी काम नृपतिकी सांटी जोबन रूपहिं आनि अरचो॥ तृपितभई तरुणी अनंगडर सकुचि रूप जोब नाहिं दियो। सूर श्याम अब शरन तुम्हारे हृदय सबनि यह ध्यान कियो॥ ६८॥ राग जयतश्री॥ मन यह कहति देह बिसरायो। यह धन तुमहीको सचि राख्यो तेहि लीजै सुखपायो॥ जोबनरूप नहीं तुम लायक तुमको देत लजाति। ज्यों बारिध आगे जल किनिका विनय करति एहि भांति॥ अमृत रस आगे मधुरंचक मनहिं करत अनुमान। सूरश्याम शोभाकी सीवा को पटतर को आन॥६९॥ अंतर्यामी जानिलई। मनमें मिले सबनि सुख दीन्हों तब तनुकी कछु सुरति भई॥ तब जान्यो बनमें हम ठाढी तनु निरख्यो मन सकुचि गई। कहति परस्पर आपुसमें सब कहा रही हम काहि रई॥ श्याम बिना ये चरित करै को यह कहिकै तनु सौंपदई। सूरदास प्रभु अंतर्यामी गुप्तहि जोवनदान लई॥ ७०॥ राग रामकली॥ यह कहि उठे नंदकुमार। कहा ठगीसी रही बाला परचो कौन विचार॥ दानको कछु कियो लेखो रही जहां तहां सोचि। प्रगट करि हमको सुनावहु मेटि जिहिंदै दौचि॥बहुरि यहि मग जाहु आवहु राति सांझ सकार। सूर ऐसो कौन जो पुनि तुमहिं रोकनहार॥७१॥ राग गूजरी॥हमहिं और सो रोकै कौन।रोकनहारो नंदमहर सुत कान्ह नाम जाकोहै तौन॥ जाके बलहै काम नृपतिको ठगत फिरत युवतिनको जौन। टोना डारि देत शिर ऊपर आपु रहत ठाढो ह्वै मौन॥सुनहु श्याम ऐसी न बूझिए बानि परी तुमको यह कौन। सूरदास प्रभु कृपाकरहु अब के सेहु जाहिं आपने भौन॥७२॥ राग सूही॥ दान मानि घरको सब जाहु। लेखो मैं कहुँ कहुँ जानतहीं तुम समुझे सब होत निबाहु॥ पछिलो देहु निवारि आजु सब पुनि दीजो जब जानौ कालि। अब मैं कहत भलीहौं तुमसों जो तुम मोको मानौ ग्वालि॥ वृंदावन तुम आवत डरपति मैं देहौं तुमको पहुँचाइ। सुनहु सूर त्रिभुवन बश जाके सो प्रभु युवतिनके वशआइ॥ ७३॥ को जानै हरि चरित तुम्हारे।जब हूं दान नहीं तुम पायो मन हरिलियै हमारे॥लेखो करि लीजै मनमोहन दूधदह्यो कछु खाहु। सदमाखन तुम्हरेहि मुख लायक लीजै दान उगाहु॥तुम खैहौ माखन दधि मोहन हम सब देखि देखि सुख पावैं। सूर श्याम तुम अब दधि दानी कहि कहि प्रगट सुनावैं॥७४॥ राग गुंड॥कान्ह माखन खाहु हम सब देखैं। सद्य दधि दूध ल्याई अबहिं अबहिं हम खाहु तुम सफल करि जन्म लेखैं॥ सखा सब बोलि बैठारि हरि मंडली बनहिंके पात दोना लगाये। देत दधि परुसि ब्रजनारि जेंवत कान्ह ग्वाल सँग बैठि अति रुचि बढाये।धन्यदधि धन्य माखन धन्य गोपिका धन्य राधा वश्यहै मुरारी। सूर प्रभुके चरित देखि सुरगन थकित कृष्ण संग सुख करति गोपनारी॥७५॥ राग जैतश्री॥ माखन दधि हरि खात ग्वाल सँग। पातनिके दोना सबके कर लेत पतोखनि मुख मेलत रँग॥ मटुकिनते लैलै परुसतिहैं हर्ष भरी ब्रजनारि। यह सुख तिहूं भुवन कहुँ नाहीं दधि जेंवत बनवारि॥ गोपी धन्य कहति आपुनको धन्य दूध दधि माखन। जाको कान्ह लेत मुख मेलत कियोसननि संभापन॥ जो हम साध करति अपने मन सो सुख पायो नीके। सूर श्याम पर तन मन वारति आनँद जी सबहीके॥ ७६॥ राग देवगंधार॥ गोपिका अति आनंदभरी। माखन दधि हरिखात प्रेमसों निरखति नारि खरी॥ कर लैलै मुख परस करावत उपमा बढी सुभाइ। मानहु कंज मिलतहूं शशिको लिये सुधा करौ करआइ॥ जाकारण शिव ध्यान लगावत शेष सहसमुख गावत। सोई सूर प्रगट ब्रजभीतर राधा मनहि चुरावत॥ ७७॥ राग रामकली॥ राधासों माखन हरि माँगत। औरनिकी

मटुकीको खायो तुम्हरो कैसो लागत ॥लै आई वृषभानुसुता हँसि सदलोनी है मेरो। लै दीन्हों अपने कर हरिमुख खात अल्प हँसि हेरो॥ सबहिनते मीठो दधिहै यह मधुरे कह्यो सुनाइ। सूरदास प्रभु सुख उपजायो ब्रजललना मनभाइ७८राग रामकली॥मेरे दधिको हरि स्वाद न पायो।जानत इन गुजरिनिको सौहै लयो छिडाइ मिलि ग्वालनि खायो। धौरी धेनु दुहाइ छानि पय मधुर आंचमें अवटि सिरायो॥ नई दोहनी पोंछ पखारी धरि निर्धूम खीरनि पर तायो। तामें मिलि मिश्रित मिश्रीकरि दै कपूर पुट जावन नायो॥ सुभग ढकनियां ढांपि बांधि पट जतन राखि छीके समदायो॥ हौं तुम कारण लै आई गृह मारगमें न कहूं दरशायो। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि कियो कान्ह ग्वालनि मन भायो॥ ७९॥ राग नट॥ गोपिन हेतु माखन खात। प्रेमके वश नंदनंदन नेक नहीं अघात॥ सबै मटुकी भरी वैसेहि प्रेम नहीं सिरात। भाव हृदये जान मोहन खात माखन जात॥ एकनिकर दधि दूध लीने एकनि करि दधि जात।सूर प्रभुको निरखि गोपी मनही मनहि सिहात॥८०॥राग बिहागरो॥ गोपी कहति धन्य हम नारि। धन्य दूध धनि दधि धनि माखन हम परुसति जेंवत गिरिधारि॥धन्य घोप धनि निशि धनि वह धनि धनि गोकुल प्रगटे बनवारि। धन्य सुकृत पाछिलो धन्य धनि धन्य नंद यशुमति महतारि॥ धनि धनि ग्वाल धन्य वृंदावन धन्य भूमि यह अति सुखकारि। धन्य दान धनि कान्ह मँगैया धन्य सूर तृण द्रुम बन डारि॥८१॥ राग नट॥ गण गंधर्व देखि सिहात। धन्य ब्रजललनानि करते ब्रह्म माखन खात॥ नहीं रेख न रूप नहिं तनु बरन नहिं अनुहारि। मात पितु दोऊ न जाके हरत मरत न जारि॥ आपु करता आपु हरता आपु त्रिभुवन नाथ। आपही सब घटके व्यापी निगम गावत गाथ॥अंगप्रति प्रति रोम जाके कोटि कोटि ब्रह्मंड।कीट ब्रह्म प्रयंत जल थल इनहिते यह मंड॥ विश्व विश्वंभरन एई ग्वालसंग विलास। सोई प्रभु दधि दान मांगत धन्य सूरजदास॥ ८२॥ राग रामकली॥कंसहेतु हरि जन्म लियो।पापहि पाप धरा भई भारी तब हम सबनि पुकारकियो॥शेषशैन जहँ रमा संग मिलि तहां अकाश भई यह बानी। असुर मारि भुवभार उतारौं गोकुल प्रगटौं आनी॥ गर्भदेवकीके तनु धरिहौं यशुमतिको पय पीहौं। पूरब तप बहु कियो कष्टकरि इनिको बहुत ऋनीहौं॥यह बानी कहि सूर सुरनको अब कृष्णा अवतार। कह्यो सबनि ब्रज जन्म लेहु सँग हमरे करहु बिहार८३राग गौरी॥ब्रह्म जिनिहि यह आयसु दीन्हों।तिनतिन संग जन्म लियो ब्रजमें सखी सखा करि परगट कीन्हों॥ गोपी ग्वाल कान्ह दोइ नाहीं ये कहु नेक न न्यारे। जहां जहां अवतार धरत हरि ये नहिं नेक बिसारे॥एकै देह बिहार करि राखे गोपी ग्वाल मुरारि।यह सुख देखि सूरके प्रभु को थकित अमर सँग नारि॥८४॥राग गौरी॥अमरनारि अस्तुति करै भारी।एकनिमिष ब्रजवासिन को सुख नहिं तिहुँ भुवन बिचारी॥धन्य कान्ह नटवर वपु काछे धन्य गोपिका नारी। एक एकते गुण रूप उजागरि श्याम भावती प्यारी॥ परुसति ग्वारि ग्वार सब जेंवत मध्य कृष्ण सुखकारी। सूर श्याम दधि दानी कहि कहि आनँद घोपकुमारी॥८५॥ ॥ राग बिलावल॥धन्य कृष्ण अवतार ब्रह्म लियो। रेख न रूप प्रगट दरशन दियो॥ जल थलमें कोउ और नहीं बियो। दुष्टन वधि संतनिको सुख दियो॥ १॥ जो प्रभु नरदेही नहिं धरते। दैवै गर्भ नहीं अवतरते॥ कंसशोक कैसे उर टरते। मात पिता दुरित क्यों हरते॥२॥ जो प्रभु ब्रजभीतर नहिं आवैं। नंद यशोदा क्यों सुख पावैं॥ पूरवतप कैसे प्रगटावैं। वेदवचन कैसे ठहरावैं॥ ३॥ जो प्रभु भेप धरैं नहिं बालक। कैसे होइ पूतना घालक॥ अँगुठा पिवत शकट संहारक। तृणा अकाश शिलापर डारक॥४॥ जो प्रभु ब्रजमाख

न न चोरावै। क्यों गोपिनको आपु जनावै ॥ भुजा उलूखल नहीं बँधावै। जमलार्योक्ष कौन विधि पावै ॥ ५ ॥ सो प्रभु दधिदानी कहवावै। गोपिनको मारग अटकावै ॥ करिलेखो कै दान सुनावै। आपुन खीझि उनहिं खिझावै ॥ ६ ॥ ब्रजवासी जो धन्य कहावै। जहां श्याम दधि दान लगावै ॥ मांगि खात आनंद बढावै। युवतिनसों कहि कहि परुसावै ॥ ७ ॥ तेई हरि नटवर वपु काछे। मोर मुकुट पीतांबर आछे ॥ग्वालसखा ठाढे सब पाछे।सूर श्याम गोपिन सुख साछे ॥८॥८६॥ राग सूही॥ यह महिमा येईपै जानै। योग यज्ञ तप ध्यान न आवत सो दधि दान लेत सुखमानै ॥ खात परस्पर ग्वालन मिलिकै मीठो कहि कहि आपु बखाने। विश्वंभर जगदीश कहावत ते दधि दोना माँझ अघाने ॥ आपुहि हरता आपुहि करता आपु बनावत आपुहि भाने। ऐसे सूरदासके स्वामी ते गोपिनके हाथ बिकाने ॥ ८७ ॥ राग रामकली ॥ धनि बडभागिनी ब्रजनारि। खात लै दधि दूध माखन प्रगट जहां मुरारि ॥ नहीं जानत भेद जाको ब्रह्मा अरु त्रिपुरारि। शुक सनक मुनि येउ न जानत निगम गावत चारि ॥ देखि सुख ब्रजनारि हरिसँग अमर रहे भुलाइ। सूर प्रभुके चरित अगनित बरनि कापै जाइ॥८८॥राग बिलावल॥ब्रजवनिता यह कहति श्यामसों माखन दूध दह्यो अरु ल्यावैं।मटुकिनिते हम देहिं खाहु तुम देखि देखि नैननि सुखपावैं॥गोरस बहुत हमारे घर घर दान पाछिलो लेहु। खायो जौन दान आजुहिको मांगतहै सब देहु ॥ सबै लेहु राखहु जिनि बाकी पुनि न पाइहो मांगे। आजुहि लेहु सबै भरिदैहैं कहति तुम्हारे आगे ॥ कह्यो श्याम अब भई हमारी मनहि भई परतीति। जब चैहैं तब मांगि लेहिंगे हमहिं तुम्हैंभइ प्रीति ॥ बेचहु जाइ दूध दही निधरक घाट बाट डर नाहीं। सूर श्याम बश भई ग्वारिनी जात बनत घर नाहीं ॥ ८९ ॥ राग टोडी ॥ सुनहु सखी मोहन कहा कीन्हों। एक एकसों कहति बात यह दान लियो की मन हरि लीन्हों॥ यहतौ नाहिं बदी हम उनसों बूझहु धौं यह बात। चकृतभई विचार करत यह बिसरि गई सुधि गात ॥ उमचि जाति तबहीं सब सकुचति बहुरि मगन ह्वै जाति। सूर श्यामसों कहौं कहा यह कहत न बनत लजाति॥९०॥राग धनाश्री॥श्याम सुनहु एक बात हमारी। ढीठो बहुत कियो हम तुमसों सो बकसो हरि चूक हमारी ॥ मुख जो कही कटुक सब बानी हृदय हमारे नाहीं। हँसि हँसि कहति खिझावति तुमको अति आनँद मनमाहीं॥ दधि माखनको दान और जो जानो सबै तुम्हारो। सूर श्याम तुमको सब दीनों जीवनप्राण हमारो ॥ ९१ ॥ नंदकुमार कहा यह कीन्हों। बूझति तुमहि कहौं धौं हमसों दान लियो की मन हरिलीन्हौं ॥ कछू दुराव नहीं हम राख्यो निकट तुम्हारे आई। येते पर तुमही अब जानौं करनी भली बुराई ॥ जो जासों अंतर नहिं राखै सो क्यों अंतर राखै। सूर श्याम तुम अंतर्यामी वेद उपनिषद भाषै ॥ ९२ ॥ राग टोडी॥सुनहु बात युवती इक मेरी। तुमते दूरि होत नहिं कतहूँ तुम राखौ मोहिं घेरी ॥ तुम कारण बैकुंठ तजतहौं जनमलेत ब्रजआई। वृंदावन राधा सँग गोपी यह नाहिं बिसरयो जाई ॥ तुम अंतर अंतर कहा भाषति एक प्राण द्वै देह। क्यों राधा ब्रज बसे बिसारयो सुमिरि पुरातन नेह ॥ अब घर जाहु दान मैं पायो लेखो कियो न जाइ। सूर श्याम हँसि हँसि युवतिनसों ऐसी कहत बनाइ॥९३॥राग नट॥घर तनु मनहिं बिना नाहिं जात। आपु हँसि हँसि कहतहौ जू चतुराईकी बात ॥ तनहि परहै मनहि राजा जोइ करै सोइ होइ। कहौ घर हम जाहिं कैसे मनधरयो तुम गोइ ॥ नयम श्रवन विचार सुधि बुधि रहे मनहि लुभाइ। जाहि अबही तनहि लै घर परत नाहिन पाइ ॥ प्रीतिकरि दुविधा करी कत तुमहि जानौ नाथ। सूरके प्रभु दीजिये मन जाइँ घरलै साथ ॥९४॥राग कान्हरो ॥ मन भीतरहै वास हमारो। हमको

T

लेकरि तुमहि छपायो कहा कहति यह दोष तुम्हारो ॥ अजहुँ कहौ रहैं हम अनतहि तुम अपनो मन लेहु । अव पछितानी लोकलाज डर हमहिं छांडि तैं देहु ॥ घटती होइ जाहिते अपनी ताको कीजै त्याग । धोखे कियो बास मनभीतर अब समुझे भइ जाग ॥ मन दीन्हो मोको तब लीन्हों मन लैहों मैं जाउ।सूर श्याम ऐसी जानि कहिये हम यह कही सुभाउ॥९५॥तुमहि बिना मन धृक अरु धृक घर । तुमहि बिना धृक धृक माता पितु धृक धृक कुलकानि लाजडर॥धृक सुत पति धृक जीवन जगको धृक तुमबिन संसार ॥ धृक सो दिवस पहर घटिका पल धृक धृक यह कहि नंदकुमार ॥ धृक धृक श्रवण कथा बिनु हरिके धृक लोचन विनरूप । सूरदास प्रभु तुम बिनु घर यौबन भीत रके कूप ॥ ९६ ॥ अथ दानलीला ॥ राग राड़ीहठीली ॥ सुनि तमचुरको शोर घोषकी बागरी । नवशत साजि शृँगार चली बननागरी ॥१॥ नवशत साजि शृंगार अंग पाटंबर सोहै । एकते एक बिचित्र रूप त्रिभुवन मन मोहै ॥ इंदा बिंदा राधिका श्यामा कामा नारि । ललिता अरु चंद्रावली सखिनमध्य सुकुमारि ॥ २ ॥ कोउ दूध कोउ दह्यो मह्यो लैचलीं सयानी । कोउ मटुकी कोउ माट भरी नवनीत मथानी ॥ गृह गृहते सब सुंदरी जुरि यमुनातट जाइ । सबनि हरष मनमें कियो उठीं श्यामगुण गाइ ॥ ३ ॥ यह सुनि नंदकुमार सैन दै सखा बोलाए।मन हरषित भए आपु जाइ सब ग्वाल जगाए ॥ यह कहिकै तब साँवरे राखे द्रुमनि चढ़ाइ । और सखा कछु संगलै रोकि रहे मगजाइ ॥ ४ ॥ एक सखी अवलोकतहीं सब सखी बोलाई । यहि बनमें इकबार लूटि हम लई कन्हाई ॥ तनक फेर फिरि आइए अपने सुखहि बिलास । यह झगरो सुनि होइगो गोकुलमें उपहास ॥ ५ ॥ उलटि चलीं तब सखी तहां कोउ जान न पावै । रोकि रहे सब सखा और बातनि बिरमावै ॥ सुबल सखा तब यह कह्यो तुम ग्वालिनि हरियोग । कैसे बाते दुरतिहै तुम उनके संयोग ॥ ६ ॥ किनहु शृंग कोउ वेनु किनहु बनपत्र बजाये । छांडि छांडि द्रुमडार कूदि धरनी धँसिधाये ॥ सखिनमध्य इत राधिका सखामध्य बलवीर । झगरो ठान्यो दानको कालिंदीके तीर॥कहत नंदलाडिले॥७॥दै नारिन दधिदान कान्ह ठाढे वृंदावन । और सखा हरि संग बच्छ चारत अरु गोधन॥ वै बडे नंदके लाडिले तुम वृषभानुकुमारि।दह्यो बह्योके कारने कतहि बढावति रारि॥ कहत ब्रजनागरी ॥ ८ ॥ सूधे गोरस मांगि कछू लै हमपै खाहू । ऐसे ढीठ गँवार कान्ह बरजत नहिं काहू॥एहि मग गोरस लै सबै दिन प्रति आवहि जाहि । हमहि छाप देखरावहु दान चहत केहि पाहि॥कहत नँदलाडिले॥९॥इते मान सतरात ग्वारि हम जान न दैहैं।अनउत्तर कहा कहति तुमहि वश कान्ह भयेहैं॥अव तुम ऐसी जानि करौ या वृंदावन बीच । पुहुमि माह ढरकाइहैं मचिहै गोरस कीच ॥ कहत ब्रजनागरी ॥ १० ॥ कान्ह अचगरयो देत लेहु सब आँगनवारी । कापहि माँगत दान भए कबते अधिकारी ॥ मात पिता जैसे चलैं तैसे चलिये आपु । कठिन कंस मथुरा बसैं कोकहि लेइ संतापु ॥ कहत नंदलाडिले ॥ ११ ॥ कहै न जाइ उताल जहां भूपाल तिहारो । हो वृंदाबन चंद्र कहा कोउ करै हमारो ॥ शेष सहसफन नाथि ज्यों सुरपति करे निरंस । अग्नि पान किये सांवरे केतिक वपुरो कंस॥कहत ब्रजनागरी॥१२॥जाके तुम सुकुमार ताहि हम नीके जाने । जो पूछौ सति भाउ आदि अद्यावलिभाने ॥ बातनि बडे न हूजिये सुनहु श्याम उतपाति ॥ गर्भसाटि यशुदा लियो तब तुम आए राति॥कहत नंदलाडिले॥१३॥अरी ग्वारि मैमंत वचन बोलत जो अनेरो। कब हरि बालक भए गर्भ कब लियो बसेरो॥प्रबल असुर पुहुमी बढे बिधि कीन्हे ये ख्याल । कमलकोस अलिभोर ए त्यों तुम भुरयो गोपाल ॥ कहत ब्रजनागरी॥१४॥ तुम भुरए हौ नंद कहतहै तुमसों ढोंटा ।दधि

ओदनके काज देहधरि आए छोटा ॥ गढि गढि मिलवत लाडिले भली नहीं यह श्याम।या धोखे जिनि भूलहू हम समरथकी बाम ॥ कहत नंद लाडिले ॥ १५ ॥ तुम समरथकी वाम कहा काहूको करिहौ । चोरी जाती वेचि दान सब दिनको भरिहौ ॥ जो प्रभु देह न धरै दीन खल कौन उधारै । कंसकेश को गहै विघ्न व्रजको को टारै ॥ १६ ॥ कहा निगम कहि ध्यावतो कहा मुनीजन धरते ध्यान । दरशपरस विन नाम गुन को पावै पद निर्वान ॥ कहत व्रजनागरी ॥ जो पै दरशन परस नाम गुण केलि कन्हाई । तुम निर्भयपद हेत वेदविधि इहै वताई॥योग युक्ति तप ध्यावही तिन गति कौन दयाल । जलतरंग ज्यों मीनगति विधे कर्मके जाल ॥ कहत नँदलाडिले ॥ १७ ॥ जटाभस्म तनुदहै वृथा करि कर्म बँधावै । पुहुमि दाहिनी देहि गुफा वसि मोहिं न पावै॥ ताजि अभिमान जो गावही गदगदसुरहि प्रकाश । तासु मगनहो ग्वालिनी ता घट मेरो वास ॥ कहत व्रजनागरी ॥ १८ ॥ जुपै चाहि लै श्याम करत उपहास घनेरो । हम अहीरि गृह नारि लोक लज्जाके जेरो ॥ ता दिन हम भई बावरी दियो कंठते हार।तवते घर घेरा चल्यो श्याम तुम्हारो जार॥कहत नंदलाडिले ॥१९॥ सखा सबनि मिलि कह्यो ग्वारि एक बात सुनावै । तो तनु ज्योति सुभाउ रूप उपमा को पावै ॥ गुप्त प्रीति बिधना करी रसिक साँवरेयोग । यह बिचार सुनि ग्वारिनी न्याउ हँसैगो लोग ॥ कहत व्रजनागरी॥ २० ॥ऐसी बातैं कान्ह कहत हमसों काहेते। चोरी खाते छांछि नयन भरिलेत गहेते।देत उरहनो रावरे बछरा दावरि जोरि । जननी ऊखल बांधती हमही देती छोरि ॥ कहत नंदलाडिले ॥२१॥ बालकरूप अजान कहा काहू पहिचानै।अन उत्तर कोउ कहै भली अनभली न मानै॥वह दिन सुमिरौ आपनो न्हानि यमुनके पानि।सब मिलि मो हाहा करी वस्त्र हरचो मैं जानि ॥ कहत व्रज नागरी ॥ २२ ॥ बहुत भएहो ढीठ देत सुख ऊपर गारी । जेहि छाजे तेहि केहो इहां कोउ दासि तुम्हारी ॥ तुमसों अब दधिकारने कौन बढ़ावै रारि । काहेको इतरातहो रोकि पराई नारि ॥ कहत नंदलाडिले ॥ २३ ॥ लियो उपरना छीनि दूरि डारनि अटकायो । दियो सखनि दधि बांटि माट पुहुमी ढरकायो ॥ फेंट पीतपट साँवरे कर पलाशके पात । हँसत परस्पर ग्वाल सब विमल विमल दधिखात॥कहत व्रजनागरी ॥ २४ ॥ कान्ह बहोरि न देहु दही काहेको माते । बसिये एकहि गाउँ कानि राखतिहै ताते ॥ तब न कछु बनिआइहै जब विरुझैं सब नारि। करि लरिकनिके घर करत यह पुनि धरिहैं लाड उतारि॥कहत नँदलाडिले॥२५॥गहि अंचल झकझोरि तोरि हारावलि डारी। मटुकी लई उतारि मोरि भुज कंचुकि फारी॥लैलै ठाढे ग्वार सब दोना एक एक हाथ।खात जात दधि दूध लै हँसत मिलै इक साथ॥कहत व्रजनागरी ॥२६॥झीनी कामरि काज कान्ह ऐसी नाहिं कीजै। काच पोत गिर जाइ नंदघर गयो न पूजै॥बिनही लीने आपियै सो कामरिको तोल।लाख सुँदरिया जाइगी कान्ह तुम्हारो मोल॥कहत नंदलाडिले॥२७॥शिव विरंचि सनकादि आदितिनहूं नहिं जानी। शेष सहसफन थक्यो निगमकीरति न बखानी ॥ तेरी सों सुनि ग्वालिनी इहै मेरे मन माह । भुवन चतुर्दश देखिए वा कामरि की छांह । शेष न पायो अंत पुहुमि जाकी फनवारी ॥ पवन बुहारत द्वार सदा शंकर कुतवारी॥ धर्मराज जाकी पवरि सनकादिक प्रतिहार । मेघ छ्यानवै कोटि सब जल ढोवहिं प्रतिवार॥कहत व्रजनागरी ॥ २८ ॥ जिनहि इतो परताप गाइ सो कतहि चरावै।परदाराके जाइ आपु कत लज्जापावै ॥ घरके बाढे रावरे बातैं कहत बनाइ । ग्वारनिपै लै खातहैं जूठी छाक छिनाइ॥कहत नंदलाडिले॥२९॥धेनु रूप मम देहकरत कौतूहल न्यारे । गोकुल गुप्त विलास जानि को सकै हमारे॥या वृंदावन ग्वारिनी जित तित अमृत बेलि। तिहूंलोकमें गाइये

मेरे रसकीकेलि ॥ कहत व्रजनागरी ॥ ३० ॥ अबलौं कीन्ही कानि कान्ह अब तुमसों लरिहैं । अधर नयन रसकोपि बिराचि अनउत्तर करिहैं ॥ मो आगे को छोहरा जीत्यो चाहै मोहिं । काके बल इत रातहौ देहुँ न नख भरि तोहिं॥कहत नंदलाडिले॥३१॥चितै वदन सुसकाइ हाथ दधि पूरन दोना । इत सुंदरी विचित्र उतहि घनश्याम सलोना ॥ अतितामस तोहि ग्वालिनी मैं सब जानत आदि । खोटी करनी जाहि मेरेकी सोई करे उपादि ॥ कहत व्रजनागरी ॥ ३२ ॥ तोहि न छांडौं कान्ह दान तुमको नहिं देहौं । बिना कहे व्रजलोग कहा काहू पतिऐहौं ॥ लाज नहीं तुम आवई बोलत जब सतराइ । कहूं कंस सुनि पाइहै गहत फिरहुगे पाइ ॥ कहत नँदलाडिले ॥ ३३ ॥ सुनत हँसे नँदलाल ग्वारि जिय तामस मान्यो । सींच्यो अमृतबैन कोप कपंत नाहिं जान्यो ॥ कहां वसतिहौ बावरी सुनहुन मुग्ध गँवारि । व्रजबासी कहा जानिही तामसको व्यवहारि ॥ कहत व्रजनागरी ॥ ३४ ॥ जननी जन परिहरचो तात कुलधर्म नशायो । गोपराइके गेह पुत्र ह्वै नाम धरायो ॥ इतनेते इतनो कियो खाटी छांछि पिवाइ । तुमहि दोष नाहिं लाडिले वोछो गुण क्यौं जाइ॥कहत नंदलाडिले ॥ ३५ ॥ अविगति अगम अपार आदि नाहीं अविनासी । परमपुरुष अवतार माया जिनकीहै दासी ॥ तुमहि मिले ओछेभए कहा रही करि मौन । तुम्हरे आगे न्यावहै दुइमें ओछो कौन ॥ कहत व्रजनागरी ॥ ३६ ॥ हमहि ओछाई भई जबहि तुमको प्रतिपाले । तुम पूरे सब भांति मात पितु संकट घाले ॥ कहा चलत उपरावटे अजहूं खिसी न गात । कंस सौंह दै पूछिये जिन पटकेहैं सात ॥ कहत नंदलाडि ले ॥ ३७ ॥ कंसकेश निग्रहौं पुहुमिको भार उतारों । उग्रसेन शिरछत्र चमर अपने कर ढारौं ॥ मथुरा सुरनि बसाइहौं असुर करौं यमहाथ । दनुज वदन बिरदावली सांचो त्रिभुवननाथ ॥ कहत व्रजनागरी ॥ ३८ ॥ तब न कंस निग्रह्यो पुहुमिको भार उतारचो । चोरीजायो मातु गोद गोकुल पग धारचो ॥ अब बहुतै बातें कहौ दही दूध के मात । जो ऐसे बलवंतहौ मथुरा काहे न जात ॥ कहत नंदलाडिले ॥ ३९ ॥ जो जैहौं मधुपुरी बहुरि गोकुल नाहिं ऐहौं । यह अपनो परताप नंद यशुमतिहि सुनैहौं ॥ वचनलागि मैं है कियो यशुमतिको पयपान । मोहि ग्वार जनि जानहू ग्वारिनि सुनहु निदान ॥ कहत व्रजनागरी ॥ ४० ॥ हम ग्वाली तुम तरनि रूप रस रवि शशि मोहै । तीनलोक परताप छत्र सिंहासन सोहै ॥ गयो गर्व गति ग्वालनी देखि चरित तेहि काल । हम अहीर ढीगे दई तुम जैजै मदनगोपाल ॥ और दिननते आजु दहो हम ऊखा ल्याई । देखत ज्योति बिलास दई मुख वचन डिठाई ॥ कान्ह बिलग जिन मानहु राखहु पिछलो नेहु । दही दूधकी को गनै कछु हमहू पैते लेहु ॥ धन्य नंदको गेह धन्य गोकुल जहँ आये । धनि गोपनकी नारि जहां तुम रोकन धाये ॥ धनि धनि झगरो आजुको इह सुख नाहिन पार । नंदनँदन पर कीजिये तन मन धन बलिहार ॥ तब लै दधि आगे धरचो कान्ह लीजे जो भावे । खाइ जाइ मंजार काज एकौं नाहिं आवे ॥ हम अनखी या बातको लेत दानको नाउँ । सहज भाव रहो लाडिले बसत एकही गाउँ । कहत नँदलाडिले ॥ ४१ ॥ अभरन दियो मँगाइ कियो गोपिन मन भायो । हिलि मिलि बढ्यो सनेह आपु कर माट उठायो ॥ नँदनंदन छवि देखिकै गोपिन वारो प्रान । कुंज केलि मनमें बसी गायो सूर सुजान ॥ ४२॥११६०॥राग बिलावल॥ जबहिं कान्ह यह बात सुनाई । व्रजयुवती अति गईं मुरझाई ॥ कंस सँहारन मथुरा जैहौं । बहुरौ फिरि व्रजको नाहिं ऐहौं ॥ देवै गर्भवास हाँ लीन्हों । तुमको गोकुल दरशन दीन्हौं ॥ नंद यशोदा अति तप कीन्हों । मोसों पुत्र

माँगि तब लीन्हों ॥ मोसों दूजो और न कोई । हरता करता मैंही सोई ॥ तुमसों सुत पयपान कराऊं । यह तुमसों मैं माँगे पाऊं ॥ मोसों सुत तुमको मैं देहौं । मथुरा जनमि गोकुलहि ऐहौं ॥ नंद यशोदा बचन बँधायो । ता कारण देही धरि आयो ॥ यह बाणी सुनि ग्वारि झुरानी । मीन भये मानो बिन पानी ॥ इहै कथा तब गर्ग सुनाई । सोई आपु कहत री माई ॥ नरदेही करि मोहि न जानो । ब्रह्मरूप करि मोको मानो ॥ षोडश बरप मिले सुख करिहौं । मथुराजाइ देव उद्धरिहौं ॥ केशगहे अरिकंस पछरिहौं । असुर कठोर यमुन लै डरिहौं ॥ रंगभूमि करि मल्लन मारौं । प्रबल कुबलियादंत उपारौं ॥ सुनहु नारि हरिमुखकी बानी । यह सुनि सुनि तरुणी बिकलानी ॥ तन मन धन इनपर सब वारहु । जोवनदान देहु रिसि टारहु । पोडशवर्ष गए थौं जैहै । ब्रजतें जाइ मधुपुरी रैहै ॥ राजा उग्रसेनको करिहैं । कनकदंड आपुन कर धरिहैं ॥ मात पिता बसुदेवदेवकी । यशुमति धाइ कहतिहैं इनकी ॥अब तिनके बंधन मोचहिंगे । दरशबिना पुनि हम लोचहिंगे ॥ मथुरा नारिनके सुख देहैं ॥ तब घट प्राण कहो क्यों रैहैं ॥ कहत हँसी यह बात अयानी । जानतिहौ तुम कछुक सयानी ॥ जोवन दान लेहिंगे तुमसों । चतुरायो मिलवतिहै हम सों ॥ इनके गांस कहा री जानो । इतनी कही एक जनि मानो ॥जो चाहै सो दीजै इनको । ज्यों बिन देखे रहत न जिनको ॥ आपु आपु यह बात बिचारै । नारि नारि मन धीर न धारै ॥ आगे धर दूध दधि माखन । प्रथमहि यह कीजै संभाषन ॥ बड़े चतुर तुम अहो कन्हाई । तरुनि सबनि कहि इहै सुनाई ॥ जानी बात तुम्हारे मनकी । दूरि न कीजै यह रिस तनकी ॥ सबनि धरयो दधि माखन आगे । लेहु सबै अब बिनही माँगे ॥ तुम रिस करत देखि सुख पावें । याते बारहिं बार खिझावें ॥ तनु जोवन धन अर्पन कीन्हों । मन दै मन हरिको सुख दीन्हों ॥ सुभग पात दोना लिए हाथनि । बैठे सखा श्याम एक साथनि ॥ मोहन खात खवावत नारी । माँगिलेत दधि गिरिवर धारी ॥ आपुहि धन्य कहति ब्रजनारी । रुचिकरि माँगि खात बनवारी ॥ और खाउ मोहन दधिदानी । यह कहि कहि तरुणी मुसुकानी ॥ सुखदीनो हरि अंतर्यामी । ब्रज युवतिनके पूरनकामी ॥ देखत रूप थकित ब्रजनारी । देह गेहकी शुद्धि बिसारी ॥ सूर श्याम सबके सुखकारी । कह्यो जाहु घर घोपकुमारी ॥ ६१ ॥ राग रामकली ॥ युवती ब्रज घर जान बिचारति । कबहुँक मटुकी लेत शीशपर कबहुँ धरणि फिर धारति ॥ देखत श्याम सखा सब देखत चितैरही ब्रजनारि । रीती मटुकिनिमें कछु नाहीं सकुचति मनहि बिचारि ॥ तब हँसि बोले श्याम जाहु घर तुमको भई अबार । सकुचति दान पाछिले को तुम मैं करिहौं निर्वार ॥ यह कहिकै हरि ब्रजहि सिधारे युवतिनं दान मनाई । सूर श्याम नागर नारिनके चितलै गए चुराई ॥६२॥ राग बिलावल । अल्हीआ॥ रीती मटकी शीश लै चली घोषकुमारी । एक एककी सुधि नहीं को कैसी नारी ॥ बनहीमें बेंचति फिरै घरकी सुधि डारी । लोकलाज कुलकानकी मर्यादा टारी ॥ लेहु लेहु दधि कहति है बनशोर पसारी । द्रुम सब घर करि जानही तिनको दै गारी ॥ दूध दह्यो नाहिं लेहु री कहि कहि पचिहारी। कहतिं सूर घर कोउ नहीं कहां गई दईमारी ॥ ६३ ॥राग टोडी॥या घरमें कोउहै की नाहीं । बार बार बूझति बृक्षनको गोरस लैहौ कि नाहीं ॥ आपुहि कहति लेहु नाहीं दधि और द्रुमन तर जाती । मिलति परस्पर बिवश देखि तेहि कहति कहा इतराती ॥ ताको कहति आपु सुधि नाहीं सो पुनि जानत नाहीं । सूर श्याम रसभरी गोपिका बनमें यों बितताहीं॥६४॥रीती मटुकी शीशधरे । बनकी घरकी सुरति न काहू लेहु दही यह कहत फिरै ॥ कबहुँक जाति कुंज भीतरको तहाँ

श्यामकी सुरति करै। चौंकि परति कछु तनु सुधि आवति जहां तहँ सखि सुनति ररै॥ तब यह कहति कहौ मैं इनिसों भ्रमि भ्रमि बनमें वृथा मरै। सूर श्यामके रसं पुनि छाकति वैसेही ढंग बहुरि ढरै॥ ६५॥ राग नट॥ तरुणी श्यामरस मतवारि। प्रथम जोबन रस चढायो अतिहि भई खुमारि॥ दूध नाहिं दधि नहीं माखन नहीं रीतो माट। महारस अंग अंग पूरण कहां घर कहां बाट॥ मातु पितु गुरुजन कहांको कौन पति को नारि। सूर प्रभुके प्रेम पूरन छकि रहीं व्रजनारि॥६६॥राग रामकली॥ गोरस लेहु री कोउ आइ।हुमनिसों यह कहति डोलति कौन लेइ बुलाइ॥ कबहुँ यमुनातीरको सब जातिहै अकुलाइ। कबहुँ बंसीवट निकट जुरि होति ठाढी धाइ॥ लेहु गोरसदान मोहन कहां रहे छपाइ। डरनि तुम्हारे जाति नाहीं लेत दह्यो छिडाइ॥ मांगिलीजै दान अपनो कहतिहै समुझाइ। आइहौ पुनि रिस करत हरि दह्यो देतः बहाइ॥ एक एकहि बात बूझत कहां गए कन्हाइ। सूर प्रभुके रंग राची जीव गयो भरमाइ॥ ६७॥राग जैतश्री॥ बैठिगईं मटुकी सब धारिकै। यह जानत अबहीहै आवत ग्वाल सखा सँग हरिकै॥ अंचलसों दधिमाट दुरावति दृष्टिगई तहां परिकै। सबनि मटुकिया रीती देखी तरुनी गई भभरिकै॥ कहि कहि उठीं जहां तहँ सब मिलि गोरस गयो कहूँ ढरिकै। कोउ कोउ कहै श्याम ढरकायो जानदेहु री जरिकै॥ यहि मारग कोऊ जिनि आवहु रिसकरि चली डगरिकै। सूर सुरति तनुकी कछु आई उतरत काम लहरिकै॥ ६८॥ राग नट॥ चक्रतभईं घोषकुमारि। हम नहीं घर गईं तबते रहीं बिचारि बिचारि॥ घरहिते हम प्रात आईं सकुचि वदन निहारि। कछु हँसति कछु डरति गुरुजन देतिहैं गारि॥ जो भई सो भई हम कह रही इतनी नारि। सखासंग मिलि खाइदधि तबही गए बन वारि॥ इहांलौंकी बात जानति यह अचंभो भारि। ईहै जानति सूरके प्रभु गए शिर कछु डारि॥ ॥६९॥राग धनाश्री॥ श्याम बिना यह कौन करै। चितवतही मोहनी लगावत नेक हँसनिपर मनहि हरै॥ रोकिरह्यो प्रातहि गहि मारग लेखो करि दधि दान लियो। तनुकी सुधि तबहींते भूली कछु पढिकै शिर नाइदियो॥ मनके करति मनोरथ पूरण चतुरनारि एहिभांति कहै। सूर श्याम मन हरचो हमारो तेहिबिनु कहु कैसे निबहै॥ ७०॥ मन हरिसों तनु घरहि चलावति। ज्यों गजमत्त जाल अंकुशकर घर गुरुजन सुधि आवति॥ हरिरसरूप इहै मद आवत डरडारचो जु महावत। गेह नेह बंधन पग तोरचो प्रेम सरोवर धावत॥ रोमावली सूँड विविकुच मनों कुंभस्थल छबिपावत। सूर श्याम केहरि सुनिके जोवन गज दर्प नवावत॥७१॥युवतीगईं घर नेक न भावत। मात पिता गुरुजन पूछत कछु औरै और बतावत॥ गारीदेति सुनाति नहिं नेकहु श्रवन शब्द हरि पूरे। नैननही देखत काहूको जो कहु होहिं अधूरे॥ वचन कहति हरिहीके गुनको उतही चरण चलावै। सूर श्याम बिन और न भावै कोउ जितनो समुझावै॥ ७२॥ राग सोरठ॥ लोक सकुच कुलकानि तजी। जैसे नदी सिंधुको धावै तैसे श्यामभजी॥ मात पिता बहु त्रास दिखायो नेक न डरी लजी। हारिमानि बैठे नहिं लागति बहुतै बुद्धि सजी॥ मानत नहीं लोक मर्यादा हरिके रंग मजी। सूर श्यामको मिली चूने हरदी ज्यों रंग रजी॥ ७३॥ बारबार जननी समुझावति। काहेको तुम जहँ तहँ डोलति हमको अतिहि लजावति॥ अपने कुलकी खबरि करौ धौं सकुच नहीं जिय आवति। दधि बेचहु घर सूधे आवहु काहे झेर लगावति॥ यह सुनिकै मन हर्ष बढायो तब इक बुद्धि बनावति। सुनि मैया दधि माट ढरायो तेहि डर बात न आवति॥ जान देहि कितनो दधि डारचो ऐसे तब न सुनावति॥ सुनहु सूर यहि बात डरानी माता उरलै लावति॥

॥७४राग सारंग॥ नेक नहीं घरमों मन लागत। पिता मात गुरुजन परबोधत नीके वचन बाणसम लागत॥ तिनको धृग धृग कहति मनहि मन इनको बनै भलेही त्यागत। श्यामविमुख नर नारि वृथा सब कैसे मन इनिसों अनुरागत॥ इनको बदन प्रात दरशै जिनि बार बार विधिसों यह मांगत। यह तनु सूर श्यामको अर्प्यो नेक टरत नहिं सोवत जागत॥ ७५॥ राग धनाश्री॥पलकओट नहिं होत कन्हाई। घर गुरुजन बहुतै बिधि त्रासत लाज करावत लाज न आई॥ नयन जहां दरशन हरि अटके श्रवण थके सुनि बचन सोहाई। रसना और नहीं कछु भाषत श्याम श्याम रट इहै लगाई॥ चित चंचल संगहिसँग डोलत लोकलाज मर्याद मिटाई। मन हरि लियो सूर प्रभु तबहीं तनु बपुरेकी कहा बसाई॥ ७६॥राग बिलावल॥ चली प्रातही गोपिका मटुकिनलै गोरस।नयन श्रवन मनचित बुधि ये नहिं काहूके बश॥ तनु लीन्हें डोलत फिरैं रसना अटक्यो जस। गोरस नाम न आवई कोऊ लैहै हरिरस॥ जीव परचो या ख्यालमें अरु गए दशादश। बझे जाइ खग वृंद ज्यों प्रिय छवि लटकनि लस॥ छांडिदेहु डरात नहिं कीन्हो पावै तस। सूर श्याम प्रभु भौंह की मोरनि फांसी गस॥ ७७॥ राग कान्हरो॥ दधिबेचत व्रज गलिन फिरैं। गोरसलेन बोलावत कोऊ ताकी सुधि नेकहु न करैं॥ उनकी बात सुनत नहिं श्रवणनि कहति कहा ये घर न जरैं। दूधदह्यो ह्यां लेत न कोऊ प्रातहिते शिरलिये ररैं॥ बोलि उठति पुनि लेहु गोपालहि घर घर लोक लाज निदरैं। सूर श्यामको रूप महारस जाके बल काहू न डरैं॥७८॥गोरसको निज नाम भुलायो। लेहु लेहु कोऊ गोपालहि गलिन गलिन यह शोर लगायो॥ कोऊ कहै श्याम कृष्ण कहै कोऊ आजु दरश नाहीं हम पायो। जाके सुधि तनकी कछु आवति लेहु दही कहि तिनहि सुनायो॥ एक कहि उठत दान मांगत हरि कहू भई की तुमहि चलायो। सुनहु सूर तरुणी जोवनमद तापर श्याम महारस पायो॥७९॥ग्वालिनि फिरति बेहालहिसों। दधि मटुकी शिर लीन्हे डोलति रसना रटति गोपालहिसों॥ गेह नेह सुधि देह बिसारे जीव परचो हरिख्यालहिसों। श्याम धाम निज बास रच्यो रचि रहित भई जंजालहिसों॥ छलकत तक्र उफनि अँग आवत नहिं जानति तेहि कालहिसों। सूरदास चित ठौर नहीं कहुँ मन लाग्यो नँदलालहिसों॥८०॥राग मलार॥कोऊ माई लैहै री गोपालहि। दधिको नाम श्याम सुंदररस बिसरि गई व्रजबालहि॥मटुकी शीश फिरति व्रज बीथिन बोलत बचन रसालहि। उफनत तक्र चहूँ दिश चितवति चित लाग्यो नँदलालहि॥ हँसति रिसाति बोलावति बरजति देखहु उलटी चालहि॥ सूर श्याम बिनु और न भावे या बिरहनि बेहालहि॥ ८१॥ राग गौड मलार॥ ग्वालिनि प्रगटचो पूरन नेहु। दधिभाजन शिरपर धरे कहति गुपालहि लेहु॥ बन बीथिन निजपुर गली जहीं तहीं हरिनाउँ। समुझाई समुझत नहीं सिखदै बिथक्यो गाउँ॥ कौन सुनै काके श्रवण काकी सुरति सकोच। कौन निडर डर आपको को उत्तम को पोच॥ प्रेम पिये वर बारुनी बलकत बल न सँभार। पग डगमग जित तित धरति मुकुलित अकल लिलार॥ मंदिरमें दीपक दिये बाहेर लखै न कोइ॥ तिन्हें प्रेम परगट भए गुप्त कौनपै होइ॥ लज्जा तरल तरंगिनी गुरुजन गहे री धार। दुहुँ कूल तरुनी मिली तिहि तरत न लागी बार॥ बिधिभाजन ओछो रच्यो शोभा सिंधुअपार। उलटि मगनतामें भई तब कौन निकासनि हार॥ जैसे सरिता सिंधुमें मिली जु कूल बिदारि। नाम मिट्यो सलिलै भई तब कौन निबेरै बारि॥ चित आकर्प्यो नंदसुत मुरली मधुर बजाइ। जिहि लज्जा जग लज्जियो सो लज्जा गई लजाइ॥ प्रेम मगन ग्वालनि भई सूर सुप्रभुके संग। नैन बैन मुख नासिका ज्यों केंचुलि तजै भुजंग॥ ८२॥

राग सुघराई ॥ छोटी मटुकिया मधुर चाल ले चलोरी गोरस बेंचन रसाल । हरबराइ उठि आइ प्राततें बिथुरी अलक अरु बसन मरगजे तैसीये सोहति कुँभिलानी माल ॥ गेहनेह सुधि नेक न आवति मोहिरही तजि भव जंजाल । औरै कहति और कहि आवति मनमोहनके परी ख्याल ॥ जोइ जोइ बूझतहै री कहा यामें कहति फिरति कोऊ लेहु गोपाल । सूरदास प्रभुके रस बश भई चतुर ग्वालिनी तनु मनु गति बेहाल ॥८३॥ राग कान्हरो ॥ दधि मटुकी शिरधरे ग्वालिनी कान्ह कान्ह करती डोलै । बिवशभई तनु न सँभारै री गोरस सुधि बिसरि गई आपु बिकानी बिनु मोलै ॥ जोइ जोइ पूछत यामें है री कहा लेहु लेहु करति फिरति डोल डोले ॥ सूरदास प्रभुके रस बश भई ग्वालिनी बिरहा बशतनुगति भयो डोलै ॥ ८४ ॥ राग धनाश्री ॥ बेचतिही दधि ब्रजकी खोरि । शिरको भार सुरति महि आवति श्याम श्याम टेरत भई भोरि ॥ घर घर फिरति गोपालहि बेंचति मगनभई मन ग्वारि किशोरि । सुंदर वदन निहारन कारन अंतर लगी सुरतिकी डोरि ॥ ठाढ़ी भई विथकि मारगमें माँझ हाट मटकी सो फोरि । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि चित चिंतामणि लियो अजोरि ॥ ८५ ॥ राग बिलावल ॥ नर नारी सब बूझत जाई । दही मही मटुकी शिर लीन्हें बोलतिहो गोपाल सुनाई ॥ हमहि कहो तुम करति कहा यह फिरति प्रातहीते हो आई । गृह द्वारा कहुँ है की नाहीं पिता मात पति बंधु न माई ॥ इतते उत उतते इत आवति बिधि मर्यादा सबै मिटाई । सूर श्याम मन हरयो तुम्हारो हम जानी इह बात बनाई ॥ ८६ ॥ राग धनाश्री ॥ कहति नंदघर मोहिं बतावहु । द्वारहि मांझ बात इह कहती है कहा मोहिं दिखावहु ॥ याही गाँव किधौं औरै कहु जहां महरको गेहु । बहुत दूरितें मैं आईहौं कहि काहे न यश लेहु ॥ अतिही संभ्रम भई ग्वालिनी द्वारेही पर ठाढी । सूरदास स्वामीसों अटकी प्रीति प्रगट अतिबाढी ॥ ८७ ॥ राग गुंडमलार ॥ ग्वारिनि नंदद्वार नंद गृह बूझै । इतहितें जाति उत उतहिते फिरै इत निकटहै जाति नहिं नेक सूझै ॥ भई बेहाल ब्रजबाल नंदलाल हित अर्पि तन मन सबै तिन्हैं दीन्हों । लोकलज्जा तजी लाज देखत लजी श्यामको भजी कछु डर न कीन्हों ॥ भूलिगयो दधि नाम कहति लेहौ श्याम नहीं सुधि धाम कहु है कि नाहीं । सूर प्रभुको मिली भेंट भली अनभली चून हरदी रंग देह छाही॥ ॥ ८८ ॥ राग रामकली ॥ तब एक सखी प्रीतम कहति । प्रेम ऐसो प्रगट कीन्हों धीर काहेन गहति॥ब्रज घरनिं उपहास जहँ तहँ समुझि मन किनु रहति । बात मेरी सुनत नाहिन कतहि निंदा सहति ॥ मातु पितु गुरु जननि जान्यो भली खोई महति । सूर प्रभुको ध्यान चितधरि अतिहि काहे वहति॥८९॥ राग धनाश्री॥आपु कहावति बडी सयानी।तब तू कहति सबनिसों हँसि हँसि अब तू प्रगटहि भई दिवानी॥ कहाँगई चतुराई तेरी अतिही काहे भई अयानी । गुप्तप्रीति परगट तैं कीन्ही सुनति कछू घर घरकी बानी ॥ एकहि वेर तजी मर्यादा मात पिता गुरुजनहि भुलानी । सुनहु सूर ऐसी न बूझिए शीश धरे मटुकी बिततानी॥९०॥राग नट॥ सुनु री ग्वारि मुगध गवाँरि।श्यामसों हित भले कीन्हों राखिसकै उबारि॥ ओछी बुधि तैं करी सजनी लाज दीन्ही डारि । लाज आवति मोहिं सुनि री तोहिं कहत गँवारि॥कृष्णधन कहा प्रगट कीजै दियो ताहि उघारि । अजहुँ काहेन समुझि देखति कह्यो सुनो री नारि॥ज्वाब नाहिन आवई मुख कहतिहौ जो पुकारि । सूर प्रभुको पाइकै यह ज्ञान हृदय बिचारि॥ ॥९१॥राग कान्हरो॥कछु कैहै की मौनहि रहिहै।कहा कहति हौं तोसौं तबकी ताको ज्वाब कछू मोहि देहै॥ सुनिहै मात पिता लोगनि मुख यह लीला उनि सबै जनैहै।प्रातहि ते आई दधिबेंचन घरही आजु जैहै कि न जैहै॥मेरो कह्यो मानिहै नाहीं ऐसेही भ्रमि भ्रमि द्योस बितैहै॥मुखतौ खोलि सुनौं तेरीबानी भलीबुरी

कैसी घर कैहे ॥ गुप्तप्रीति काहे न करी हरिसों प्रगट किए कछु नफा बढैहै । सूर श्यामसों प्रीति निरंतर लाजकिए अंतर कछु ह्वैहै ॥ ९२ ॥ कहा कहति तू मोहि री माई । नँदनंदन मन हरि लियो मेरो तबते मोको कछु न सोहाई ॥ अबलौं नहिं जानति मैं कोही कबते तू मेरे ढिग आई । कह ।ह कहां मात पिताहैं कहां सजन गुरुजन को भाई ॥ कैसी लाज कानिहै कैसी कहा कहति ह्वैहै रिस हाई । अबतौ सूर भजी नँदलालहि की लघुता की होउ बडाई ॥ राग धनाश्री ॥ बार बार मोहिं कहा सुनावति । नेकहु टरत नहीं हृदयते अनेक भांति मनको समुझावति ॥ दो वल कहा देति मोहि सजनी तूतो बडी सुजान । अपनीसी मैं बहुतै कीन्ही रहति न तेरी आन॥लोचन और न देखत काहू और सुनत नहिं कान । सूर श्यामको वेगि मिलावहु कहति रहत घट प्रान ॥ ९३ ॥ सबै हिरानी हरि मुख हेरे । घूँघट ओट पटओट करे सखि हाथौं हाथन मेरे ॥ को है लाज कौनको डरहै कहा कहैं भयो तेरे । को अब सुनै श्रवनहै काके निपट निगमके टेरे ॥ मेरे नैननहो नैननकी जोपै जानत फेरे। सूरदास है चेरी कीनी मन मनसिजके चेरे ॥ ९४ ॥ राग नट ॥ मेरे कहेमें कोऊ नाहीं । कहा कहौं कछु कहि नाहिं आवै एकहु नहीं डराहीं ॥ नयन ए हरि दरशनलोभी श्रवण शब्द रसाल । प्रथमही मन गयो तनु ताजि तब भई बेहाल॥इँद्रियन पर भूप मनहै सबनि लिये बुलाइ । सूर प्रभुको मिले सब ए मोहिं करि गये बाइ ॥ ९५ ॥ राग गौरी ॥ कहा करौं मन हाथ नहीं । तू मोसों यह कहत भली री अपनो चित मोहिं देत नहीं ॥ नयन रूप अटके नहिं आवत श्रवन रहे सुनि बात तहीं । इंद्रीधाइ मिली सब उनको तनुमें जीव रह्यो सँगही ॥ मेरे हाथ नहीं ये कोऊ घटलीन्हें इक रही मही । सूरश्याम संगते कहुँ टरत न आनि देहि जो मोहिं तुही ॥ ९६ ॥ राग सारंग ॥ बिकानी हरिमुखकी मुसकानी । परवशभई फिरति सँग निशिदिन सहजपरी यह बानि ॥ नैननि निरखि वसीठी कीन्ही मनु मिलियो पय पानि । गहि रतिनाथ लाज निज पुरते हरिको सौंपी आनि ॥ सुनि सखि सुमुखी नँदनंदनकी दासी सब जग जानि । जोइ जोइ कहत करत सोईकृत आयसु माथे मानि॥गई ज्ञाति अभिमान मोह मद पति परजन पहिचानि । सूर सिंधु सरिता मिलि जैसे मनसा बूँद हिरानि ॥ ९७ ॥ अबतो प्रगट भई जग जानी । वा मोहनसों प्रीति निरंतर क्यों बरहैगी छपानी ॥ कहा करौं सुंदर मूरति इनि नयननि मांझ समानी । निकसत नहीं बहुत पचिहारी रोम रोम अरुझानी ॥ अब कैसे निरवारि जातिहै मिली दूध ज्यों पानी । सूरदास प्रभु अंतर्यामी उर अंतरकी मानी ॥ ९८ ॥ कहा करैगो कोऊ मेरो । हौं अपने पतिव्रतहि न टरिहौं जग उपहास करौ बहुतेरो ॥ कोउ किनलै पाछे मुख मोरै कोऊ कहै श्रवन सुनाइ न टेरो। हौं मति कुशल नाहिनै काची हरिसँग छांडि भिरो भवफेरो ॥ अबतौं जी ऐसी बनिआई श्यामधाम मैं करा बसेरो । तेहिरँग सूर रँग्यो मिलिकै मन होइ न श्वेत अरुन फिरि पेरो ॥ ९९ ॥ राग धनाश्री ॥ माई री गोविंदासों प्रीति करत तबहीं काहेन हट की री । यहतौ अब बात फैलि गई बई बीज बटकी री॥घर घर नित इहै घेर बानी घटघटकी । मैंतो यह सबै सही लोकलाज पटकी ॥ मदके हस्ती समान फिरति प्रेम लटकी ॥ खेलत में चूकि जाति होति कला नटकी । जल रज्जु मिलि गांठिपरी रसना हरि रटकी ॥ छोरेते नहीं छुटति कइकबेर झटकी॥ मेटे क्योंहू न मिटति छाप परी टटकी । सूरदास प्रभुकी छवि हिरदे मेरे अटकी ॥१२००॥ राग आसावरी ॥ मैं अपनो मन हरिसों जोरचो । हरिसों जोरि सबनिसों तोरचो ॥ नाच कछचो तब घूँघुट छोरचो लोकलाज सब फटकि पिछोरचो ॥ आगे पाछे नीके हेरचो । मांझबाट मटुकी शिर फोरचो ॥ कहि कहि कासों करति निहोरचो । कहा भयो कोऊ मुख मोरचो ॥ सूरदास प्रभुसों

T

चित जोरचो। लोकवेद तिनुकासों तोरचो ॥ १ ॥ सखीरी श्यामसों मन मान्यो। नीके करि चित कमलनैनसों घालि एकठो सान्यो ॥ लोकलाज उपहास न मान्यो न्योति अपनेही आन्यो। या गोबिंदचंदके कारन बैर सबनिसों ठान्यो॥अब क्यों जाति निबेरि सखी री मिलो एक पथ पान्यो। सूरदास प्रभु मेरी जीवनि है पहिली पहिचान्यो ॥ २ ॥ नंदलालसों मेरो मन मान्यो कहा करैगो कोई री। मैं तो चरणकमल लपटानी जो भावै सो होई री ॥ बाप रिसाइ माइ घर मारै हँसै बिरानो लोग री। अब तौ श्यामहिसों रति बाढी बिधिना रच्यो संयोग री ॥ जाति महति पति जाइ न मेरी अरु परलोक नशाई री।गिरिधर वर मैं नेक न छाँडौ मिली निशान बजाइ री ॥ बहुरि कबहिं यह तनु धरि पैहौ कहा पुनि श्रीवनवारी री। सूरदास स्वामीके ऊपर यह तनु डारौ वारी री॥३॥राग सारंग ॥ करनदै लोगनको उपहास। मन क्रम वचन नंदनंदनको नेक न छाँडौ पास ॥ सब या ब्रजके लोग चिकनियां मेरे भाए घास। अबतो इहै बसी री माई नहिं मानौंगी त्रास ॥ कैसे रह्यो परै री सजनी एकगाँवको बास। श्याम मिलनकी प्रीति सखी री जानत सूरजदास ॥४॥राग रामकली॥एक गाउँको बास धीरज कैसेकै धरौं। लोचन मधुप अटक नहिं मानत यद्यपि जतन करौं ॥ वे येहि मग नितप्रति आवतहैं हौं दधि लै निकरौं। पुलकित रोम रोम गद गद सुर आनँद उमँगिभरौं ॥ पल अंतर चलिजात कलपवर बिरहा अनल जरौं। सूर सकुच कुलकानि कहालगि आरजपंथहि डरौं ॥ ५ ॥ मेरो मन हरि चितवनि अरुझानो। फेरत कमलद्वारह्वै निकसे करत शृंगार भुलानो ॥ अरुन अधर दशननि द्युति राजति मोहन मुरि मुसकानों। उदधितनया सुत पांति कमलके बंदन भुरके मानों ॥ सुभग कपोल लोल मणिकुंडल इह उपमा केहि वानों। उभयअंक अति पान अमीरस मीन ग्रसत बिधि भानों। यह रस मगन रहति निशि वासर हारि जीति नहिं जानों। सूरदास चितभंग होत क्यों जो जेहिरूप समानो ॥६॥ राग रामकली॥ हौं संग साँवरेके जैहौं। होनी होइ सो होवै अबहीं यश अपयश काहु न डरैहौं ॥ कहा रिसाइ करै कोउ मेरो कछु जो कहै प्राण तेहि दैहौं। दैहौं त्यागि राखिहौं यह व्रत हारि रति बीज बहुरि कब बैहौं ॥ का यह सूर अजिर अवनी तनु तजि अगास पिय भवन समैहौं। का यह ब्रजवापी क्रीडा जल भजि नँदनंद सबै सुख लैहौं॥७॥राग धनाश्री॥तैं मेरे हित कहत सही री।यह मोको सुधि भली दिवाई तनु बिसरे मैं बहुतं वही री॥ जबते दान लियो हरि हमसों हँसि हँसि री कछु बात कही री। काके घर काके पित माता काके तनुकी सुरति रही री॥अब समुझति कछु तेरी वाणी आई हौं लइ दही मही री। सुनहु सूर प्रातहिते आई यह कहि कहि जिय लाज गहीं री ॥ ८ ॥ सुन री सखी वात एक मेरी। तोसों धरौं दुराइ कहौं केहि तू जानहि सब चितकी मेरी ॥ मैं गोरस लै जाति अकेली कालि कान्ह बहियाँ गहि मेरी। हारसहित अचरा गह्यो गाढे एक कर गह्यो मटुकिया मेरी ॥ तव मैं क-ह्यो खीझि हरि छांडहु टूटैगी मोतिन लर मेरी। सूर श्याम ऐसे मोहि रिझई कहा कहति तू मोसों मेरी ॥ ९ ॥ तऊ न गोरस छाँडि दयो। चहुँ फल भवन गह्यो सारंगरिपु वाजि धरा अथयो ॥ अमी वचन रुचि रचत कपटहठि झगरो फेरि ठयो। कुमुदिन प्रफुलितहौं जिय सकुची लै मृगचंद जयो ॥ जानि निशा शशिरूप बिलोकत नवलकिशोर भयो। तबते सूर नेक नहिं छूटत मन अप-नाइ लयो ॥१०॥ राग नट ॥सखी वह गई हरिपै धाइ। तुरतही हरि मिलो ताको प्रगट कही सुनाइ। नारि एक अति परमसुंदरि बरन कापै जाइ। प्रातते शिर धरे मटुकी नंदगृह भरमाइ। लेहु लेहु गोपाल कोऊ दह्यो गई भुलाइ। सूर प्रभु कहुँ मिलें ताको कहति करि चतुराइ॥११॥राग कान्हरो॥

नंदग्रामको मारग बूझै है कोऊ दधि बेंचनहारी । सुनहु न श्याम कठिन तनुगोरे विधुवदनी अरु हाटं कठारी ॥ अब याको सुर ताहि विरंचै जाहि निरंचि शीशपग धारी । कमल कुरंग चलत बरुना भष राख्यो निकट निषंग सँवारी ॥ गति मराल शावक ता पाछे जावक मुक्ता चुनत बिसारी । सूरदास प्रभु कहत बने नाहिं सुख संपति वृषभानु दुलारी ॥१२॥ राग बिलावल ॥ शिर मटुकी मुखमौन गही ॥ भ्रमि भ्रमि विवशभई नवग्वालिन नवल कान्हके रस उमही ॥ तनुकी सुधि आवति जब मनही तबहि कहति को लेत दही । द्वारे आइ नंदके बोलति कान्ह लेहु किन सरस मही ॥ इत उत ह्वैआवति फिरि इहँई महरि तहाँ लगि द्वार रही । अबर बोलावत ताहि न हेरत बोलति आनि नंद दरही ॥ अंग अंग यशुमति तेहि चरची कहा करति यह ग्वारि वही । सुनहु सूर यह ग्वारि अमानी कबकी एही ढंग रही ॥ १३ ॥ राग रामकली ॥ कबकी मह्यो लिये शिर डोलै ॥ झूठेही इत उत फिरि आवै इहां आनि पै बोलै ॥ मुंहसों भरी मथनियां तेरी तोहिं रटत भई सांझ । जानतिहौ गोरसको लेवो याही बाखरि मांझ ॥ इत धौं आइ बात सुनि मेरी कहे बिलग जिनि माने । तेरे घरमें तूही सयानी और बेचि नहिं जाने ॥ भ्रमतहि भ्रमत भ्रमिगई ग्वालिनि बिकलभई बेहाल । सूरदास प्रभु अंतर्यामी आइ मिले गोपाल ॥ १४ ॥ भयो मन माधवकी अवसेर । मौनधरे मुख चितवति ठाढी ज्वाब न आवै फेर ॥ तब अकुलाइ चली उठि बनको बोले सुनत न टेर । विरह विवश चहुंधा भरमतिहै श्याम कहा कियो झेर ॥ अबहूं वेगि मिलो नँदनंदन दान करो निरबेर । सूर श्याम अंकम भरिलीन्ही दूरि कियो दुख ढेर ॥ १५ राग बिलावल ॥ सांची प्रीति जानि हरि आए । पूरल नेह प्रगट दरशाए ॥ लई उठाइ अंक भरि प्यारी । भ्रमि भ्रमि श्रम कीन्हों तनु भारी ॥ सुख सुख जोरि अलिंगन दीन्हों ॥ बार बार भुज भरि भरि लीन्हों ॥ वृंदावन घनकुंज लतातर श्यामा श्याम नवल नवला बर ॥ मनमोहन मोहनी सुखकारी । कोककला गुण प्रगटे भारी ॥ छूटे बंद अलक शिर छूटे । मोतिनहार टूटि सुख लूटे ॥ सूर श्याम विपरीत बढाइ । नागरि सकुचि रही लपटाइ ॥ १६ ॥ राग रामकली ॥ यह कहि मौन साध्यो ग्वारि । श्याम रस घट पूरि उछलित बहुरि धरचो सँभारि ॥ वैसेही ढंग बहुरि आई देह दशाविसारि । लेहु री कोऊ नंदनंदन कहै पुकारि पुकारि ॥ सखीसों तब कहति तू री को कहांकी नारि । नंदके गृह जाउँ कित है जहां ह्वै बनवारि ॥ देखि वाको चकृत भई सखि बिकल श्रम गई मारि । सूर श्यामहि कहि सुनाऊं गए शिर कहा डारि ॥ १७ ॥ राग नट ॥ श्यामा श्याम करत विहार । कुंजगृह रचि कुसुम शैया छबि बरनि को पार ॥ सुरति सुख करि अंग आलस सकुचि बसन सँभारि । परस पद भुज कंठ दीन्हे बैठेहैं बरनारि ॥ पीत कंचन बरन भामिनि श्याम तनु अनुहारि । सूर घन अरु दामिनी मिलि प्रगट सुख विस्तारि ॥ १८ ॥ राग कान्हरो ॥ राधा बसन श्याम तनु चीन्ही । सारंग बदन बिलास बिलोचन हरि सारंग जानि राति कीन्ही ॥ सारंग बचन कहत सारंगसों सारंगरिपु दे राखति झीनी । सारंगपानि कहत रिपु सारंग सारंग कहा कहति लियो छीनी ॥ सुधापान कर कुचनीकी बिधि रह्यो शेष फिरि मुद्रा दीन्ही । सूर सुदेश आहि रतिनागर भुज आकर्षि बान कर लीन्ही ॥ १९ ॥ तुमसों कहा कहौं सुंदरघन । या ब्रजमें उपहास चलतहै सुनि सुनि श्रवन रहति मनही मन ॥ जा दिन सबनि बछरू नोई करि मो दुहिदई धेनु बंसीबन । तुम गही बाँह सुभाइ आपने हों चितई हँसि नेक बदनतन ॥ ता दिनते घर मारग जित तित करत चवाउ सकल गोपीजन । सूर श्यामसों सांच पारिहौं यह पतिबरत सुनहु नँदनंदन ॥ २० ॥ राग भैरव ॥ कहा कहौं सुंदर घन तुमसों । घेरा इहै

चलावत घरघर श्रवण सुनत जिय खुनसों ॥ भैनी मात पिता बंधव गुरु गुरुजन यह कहैं मोसों। राधा कान्ह एक संग बिलसत मनहींमन अपसोसों॥कबहुँक कहौं सबनि परित्यागों बूझतिहौं अब गोसों। सूर श्याम दरशन बिन पाये नयन देत मोहिं दोसों॥२१॥ राग रामकली॥ बात यह तुमसों कहत लजाउँ। सुनि न जात घर घरको घेरा काहू मुख न समाउँ॥ नर नारी सब इहै चलावत राधा मोहन एक। मात पिता सुनि सुनि अति त्रासत मैं एकै वे अनेक॥ आपु जबहि द्वारेह्वै निकसत देखत सबैं सुगात। निंदति तुमहि सुनावति मोको सुनत न नेक सोहात॥ धृग नर धृग नारी धृगजीवन तुमहि विमुख धृग देह।सूर श्याम यह कोऊ न जानत तनु ह्वैहै जरि खेह२२राग गूजरी श्याम यह तुमसों क्यों न कहौं। जहाँ तहाँ घरघरको घेरा कौनी भांति सहौं॥ पिता कोपि करवाल लेत कर बंधु बधनको धावै। मात कहै कन्या कुलको दुख जनि कोऊ जग जावै॥ बिनती एक करौं कर जोरे यहि बीथिनि जिनि आवै।ये जन सब आपुनको जानत ते जय जन्म न पावै॥मन क्रम वचन कहतिहौं सांची मैं मन तुमहि लगायो। सूरदास प्रभु अंतर्यामी क्यों न करहु मनभायो॥२३॥ राग रामकली॥ हँसि बोले गिरिधर रसबानी। गुरुजन खिझत कतहि रिस पावति काहेको पछितानी॥ देहधरेको धर्म इहैहै सजन कुटुँब गृहशानी। कहन देहु कहि कहा करैंगे अपनी सुरति हिरानी॥ लोकलाज काहेको छाँडति ब्रजही बसे भुलानी। सूरदास घट ह्वै द्वै करि मन ये भेद नहीं कछुजानी॥ ॥२४॥राग जयतश्री॥ ब्रजबसि काके बोल सहों। तुम बिन श्याम और नहिं जानों सकुचनि तुमहि कहौं॥ कुलकी कानि कहा लौं करिहौं तुमको कहां लहौं। धृग माता धृग पिता विमुख तुव भावै तहां वहौं॥ कोऊ करै कहै कछु कोऊ हरष न शोक गहौं। सूर श्याम तुमको बिनु देखे तन मन जीव दहौं॥२५॥ ब्रजहि बसे आपुहि बिसरायो। प्रकृति पुरुष एकै करि जानहु बातनि भेद करायो॥ जल थल जहां रहो तुम बिनु नाहिं भेद उपनिषद गायो। द्वै तनु जीव एक हम तुम दोऊ सुख कारण उपजायो॥ ब्रह्मरूप द्वितिया नहिं कोई तब मन त्रिया जनायो। सूर श्याम मुख देखि अल पहँसि आनँद पुंज बढायो॥२६॥ राग रामकली॥ तब नागरी मन हरष भई। नेह पुरातन जानि श्यामको अति आनंदमई॥ प्रकृति पुरुष नारी मैं वेपति काहे भूलि गई। को माता को पिता बंधु को यहतो भेटनई॥ जन्म जन्म युग युग यह लीला प्यारी जानि लई। सूरदास प्रभुकी यह महिमा याते विवश भई॥२७॥ राग सूही॥सुनहु श्याम मेरी इक विनती। तुम हरता तुम करता प्रभुजू मात पिता कौने गनती॥ गैवर भेंति चढावत रासभ प्रभुता मेटि करत हिनती। अबलों करी लोक मर्यादा मानहु थोरहि दिनती॥ बहुरि बहुरि ब्रज जन्म लेतहौं इह लीला जानी किनती। सूर श्याम चरणनि ते मोको राखत रहै कहा मिनती॥ ॥२८॥ राग धनाश्री॥ देह धरेको यह फल प्यारी। लोकलाज कुलकानि मानिये डरिये बंधु पिता महतारी॥ श्रीमुख कह्यो जाहु घर सुंदरि बडे महर वृषभानुदुलारी। तुम अवसेर करत सब ह्वैहै जाहु बेगि देहै पुनि गारी॥ हमहुँ जाहिं ब्रज तुमहु जाहु अब गेह नेह क्यों दीजै डारी। सूरदास प्रभु कहत प्रियासों ने ह नहीं मोते तुम न्यारी॥२९॥ राग धनाश्री॥देह धरेको कारण सोई। लोक लाज कुलकानि न तजिये जाते भलो कहै सब कोई॥ मात पिताके डरको माने माने सजन कुटुँब सब लोई। तात मात मोहूको भावत तनुधरिकै मायावश होई॥ सुनि वृषभानु सुता मेरी बानी प्रीति पुरातन राखहु गोई। सूर श्याम नागरिहि सुनावत मैं तुम एक नहीं हो दोई॥३०॥राग सारंग॥ अब कैसे दूजै हाथ बिकाऊं। मन मधुकर कीन्हो वा दिनते चरण कमल निज ठाऊं॥ जो जानो

औरै कोई करता तऊ न मन पछिताऊं। जो जाको सोई सो जाने अवतारन नर नाऊं ॥ जब परतीति होइ या युगकी परमिति छुटत डेराऊं । सूरदास प्रभुसिंधु शरण तजि नदी शरन कत जाऊं ॥ ३१ ॥ राग बिलावल ॥ घर पठई प्यारी अंकमभरि । कर अपने मुख परसि त्रियाके प्रेमसहित दोऊ भुज धरिधरि ॥ सँग सुख लूटि हरषभई हृदय चली भवन भामिनि गजगति ढरि । अंग मरगजी पटोरी राजति छबि निरखत रीझत ठाढे हरि ॥ बेनी डुलति नितंबनि पर दोउ छीन लंक पर वारों केहरि । फिरि चितयो तब प्यारी पियतन दुहूँ मनै आनँद हरष करि ॥ राधाहरि आधा आधा तनु एकै द्वै व्रजमें ह्वै अवतरि ।सूर श्याम रस भरी उमँग अँग वह छबि देखिरह्यो रतिपति डारि॥३२॥राग बिलावल ॥घरहि जाति मन हरष बढाये । दुख डारयो सुख अंग भारभरि चली लूहि सो पाये ॥ भौंह सकोरति चलति मंदगति नेक वदन मुसुकाए । तहँ एक सखी मिली राधाको कहति भयो मनभाए ॥ कुंजभवन हरि संग विलसि रस मनके सुफल कराए । सूर सुगंध चुनावन हारे कैसे दुरत दुराए ॥३३ ॥राग जयतश्री ॥ कहा फूली आवत री राधा । मानहुँ मिली अंक भरि माधव प्रगटत प्रेम अगाधा ॥ भ्रुकुटी धनुष नैन सरसाधे बदन बिकास अगाधा । चंचल चपल चारु अवलोकनि काम नचावति ताधा ॥ जेहि रस शिव सनकादि मगन भए शंभु रहत दिन साधा । सो रस दियै सूर प्रभु तोको शिवा न लहति अराधा ॥ ३४ ॥ राग सोरठ ॥ राधेसों रस बरनि न जाई । जा रसको सुर भान शीश दियो सो तैं पियो अकुलाई ॥ पचिहारे सब बाल कमलमुख चंद्रवदन ठहराई । अजहुँ कमंध फिरत तेहि लालच सुंदरि सैन बुझाई ॥ मोहन ते रसरूप आगरी कटति न जानि निकाई । सूरदास पपिहाके मुखमें कैसे सिंधु समाई ३५ ॥राग नट॥मोसों कहा दुरावति राधा। कहां मिली नँदनंदनको जिन पुरयो मनको साधा॥ व्याकुलभई फिरतही अबहीं कामव्यथा तनुबाधा।पुलकित रोम रोम गदगद अब अँग अँग रूप अगाधा ॥ नहिं पावत जोरस योगीजन तब तप करत समाधा ॥सुनहु सूर तेहि रस परिपूरन दूरि कियो तनुदाधा ॥३६॥ राग आसावरी॥ कहा कहति तू भईबावरी॥तू हँसि कहति सुनै कोउ और कहा कीन्हों चाहति उपाव री ॥ सो तो सांच मानि यह लैहै हमहि तुमहि बाते सुभाव री । मेरी प्रकृति भलै करि जानति मैं तोसों करिहौं दुराव री ॥ ऐसी कैसे होइ सखी री घर पुनि मेरो है बचाव री । सूर कहति राधा सखी आगे चकितभई सुनि कथा राव री ॥ ३७ ॥ राग सारंग॥श्याम कौन कारेकी गोरे । कहा रहत काके वै ढोंटा बृद्ध तरुण की वोहैं भोरे ॥ यहँई रहत कि और गाउं कहुँ मैं देखे नाहिन कहुँ उनको । कहै नहीं समुझाइबात इह मोहि लगावति हौ तुम जिनको ॥कहा रहौ मैं वै धौं कहांके तुम मिलवतिहौ काहे ऐसी । सुनहु सूर मोसी भोरीको जोरि जोरि लावतिहौ कैसी ॥ ॥ ३८ ॥ जाहु चली मैं जानी तोको । आजुहि पढि लीन्हीं चतुराई कहा दुरावति मोको ॥ एही व्रज तुम हम नँदनंदनहूँ दूरि कतहुँ नहिं जैहैं । मेरे फंद कबहुँ तो परिहौ मुजरा तबहीं दैहैं ॥ उनहि मिले वितपन्न भई अब वै दिन गए भुलाइ । सूर श्याम सँगते उठि आई मोसों कहति दुराइ ॥३९॥ राग सोरठा ॥ हँसत कहत कीधों सतभावतेरी सों मैं कछू न समुझति कहा कह्यो मोहिं बहुरि सुनाउ ॥ मेरी शपथ तोहिं री सजनी कबहूँ कछु पायो यहि भाउ । देख्यो नयन सुन्यो कहुँ श्रवणनि झूठे कहति फिरतिहौं दाउ ॥ यह कहती और जो कोऊ तासों मैं करती अपडाउ । सूरदास यह मोहि लगावति सपनेहु जासों नाहिं दरशाउ ॥ ४० ॥ राग धनाश्री ॥ राधे तेरो वदन बिराजत नीको। जब तू इतउत बंक बिलोकति होतें निशापति फीको ॥ भ्रुकुटी धनुष नैन शर साधे शिर केसरिको टीको।

मनु घूँघटपट मैं दुरि बैठो पारधिपति रतिहीको॥गति मैं मंत नाग ज्यों नागरि करे कंहतिहौ लीको। सूरदास प्रभु विविध भांति करि मन रिझयो हरिपीको॥४१॥राग विहागरो॥राजति राधे अलकभली री॥ मुक्तामांग तिलक पन गनि शिर सुत सेमत भषलेन चली री॥ कुमकुम आड स्रवत श्रमजलमिलिं मधु पीवत छबिछीट चली री । चारु उरोज ऊपर यों राजत अरुझे अलिकुल कमल कलीरी॥ रोमावली त्रिवली उर परशत वंशबढै नट काम बली री। प्रीति सोहाग भुजा शिरमंडन जघन सघन बिपरीत कदली री॥जावक चरण पंचशरसायक समरजीति लै शरन चली री । सूरदास प्रभुको सुखदीन्हो नख शिख राधे सुखनि फली री४२॥रामकली॥सजनी कत यह बात दुरैहौं।ऐसी मोहिं कहै जिनि कबहूं झूठे पर दुख पैहौं॥तोते पीतम और कौनहै जाके आगे कैहौं।मोको उचठा एक छपैहो बहुरि नाउँ नहीं लैहों॥ यह परतीति नहीं जिय तेरे सो कहा तोहि चुरैहौं । सूरश्याम धौं कहां रहतहै काहेको तहां जैहौं॥ ४३ ॥राग धनाश्री॥चतुर सखी मन जानि लई। मोसों तौ दुराव यह कीन्हों याके जिय कछु त्रास भई॥ तव यह कह्यो हँसत री तोसों जिनि मनमें कछु आनै। मानी बात कहां वै कहां तू हमहूँ उनहि न जानै॥ अबै तनक तू भई सयानी हम आगेकी बारी। सूरश्याम व्रजमें नहिं देखे हँसत कह्यो घर जारी॥४४॥ राग विलावलं ॥ सकुच सहित घरको गई वृषभानु दुलारी। महरि देखि तासों कह्यो कहँ रही री प्यारी॥ घर तोहि नैक न देखऊँ मेरी महतारी। डोलत लाज न आवई अजहूँ है बारी॥ पिता आज्ञु रिसकरतहै दैदै कहै गारी। सुता बडे वृषभानु की कुलखोवनहारी॥ बंधव मारन कहतहै तेरे ढगकारी। सूरश्याम संग फिरतिहै जोबन मतवारी॥ ४५ ॥ राग गुंडमलार॥कहा री कहति तू मातु मोसों। ऐसे बहिगईको श्याम संग फिरै जो वृथा रिस करति कहा कहों तोसों॥ कही कौने बात बोलिये तेहि मात मेरे आगे कहै ताहि देखो। तात रिस करत भ्राता कहे मारिहौं भीति बिन चित्र तुम करति रेखो॥ तुमहु रिस करति कछु कहा मोहिं मारिहो धन्य पितु भ्रात मात अरुनही। ऐसे लायक नंदमहरको सुत भयो तिनहि सोहि कहति प्रभु सूर सुनही ॥४६॥ राग गूजरी ॥ काहेको परघर छिन छिन जाति। गृहमें डाटि देति शिखजननी नाहिन नेक डराति॥ राधा कान्ह कान्ह राधा व्रज ह्वैरह्यो अतिहि लजाति। अब गोकुलको जैबो छाँडौ अपयशहू न अघाति॥ तू वृषभानु वडेकी बेटी उनके जाति न पांति। सूर सुता समुझावति जननी सकुचत नहिं मुसकाति॥ ४७ ॥ राग कान्हरो॥ खेलनको मैं जाउँ नहीं। और लरिकनी घर घर खेलति मोहीको पै कहति तुही॥ उनके मात पिता नहिं कोई खेलति डोलति जही तही। तोसी महतारी वहि जाई न मैं रैहौ तुमही बिनही॥ कबहूं मोको कछू लगावति कबहुँ कहति जिन जाहु कही। सूरदास बातैं अनखोही नाहिन मोपै जात सही॥ ४८॥ राग सारंग॥ मनही मन रीझति महतारी। कहा भई जो बाढि तनकगई अबहीं तौ मेरीहै बारी॥ झूठेही वह बात उड़ीहै राधा कान्ह कहत नर नारी। रिसकी बात सुताके मुखकी सुनत हँसी मनही मन भारी॥ अबलौं नहीं कछू इहि जान्यो खेलत देखि लगावै गारी। सूरदास जननी उर लावति मुखचूमति पोछति रिसटारी॥४९॥राग सूहा॥ सुता लये जननी समुझावति। संग बिटिनिअनके मिलि खेलौ श्याम साथ सुनि सुनि रिस पावति॥ जाते निंदाहोइ आपनी जाते कुलको गारी आवति। सुनि लाडिले कहति यह तासों तोको याते रिस करि धावति॥ अब समुझी मैं बात सबनकी झूठेही यह बात उठावति। सूरदास सुनि सुनि यह बातें राधा मन अतिहरष बढावति॥ ५० ॥ राग नट ॥ राधा विनय करति मनहीं मन सुनहु श्याम अंतरके यामी। मात पिता कुल

कानिहि मानत तुमहिं न जानतहैं जग स्वामी॥ तुम्हरो नाम लेत सकुचतहैं ऐसे ठौर रहीहौं आनी। गुरु परिजनकी कानि मानियो बारंबार कही मुख बानी ॥ कैसे संग रहौं बिमुखनके यह कहि कहि नागरि पछितानी। सूरदास प्रभुको हृदय धरि गृहजन देखि देखि मुसकानी॥९१॥राग धनाश्री ॥जब प्यारी मन ध्यान धरयो। पुलकित उर रोमांच प्रगट भए अंचर टरि मुख उघरि परयो ॥ जननी निरखि रही ता छबिको कहन चहैं कछु कहि नहिं आवै॥ चकृतभई अँग अंग बिलोकत दुख सुख दोऊ मन उपजावै॥पुनि मन कहति सुता काहूकी कीधौं यह मेरीहै जाई। राधा हरिके रंगहि राची जननी रही जिये भरमाई॥ तब जानी मेरी यह बेटी जिय अपने तब ज्ञान कियो । सूरदास प्रभु प्यारीकी छबि देखि चहति कछु शीख दियो ॥ ९२ ॥ राग सोरठ॥ राधा दधिसुत क्यों न दुरावति। हौंजू कहति वृषभानुनंदिनी काहेको तू जीव सतावति॥जलसुत दुखी दुखीहै मधुकर द्वै पंछी दुख पावत।सारंग दुखी होत सारंग बिनु तोहि दया नहिं आवत॥सारंग रिपुका नेक ओट कहि ज्यों सारंग सुखपावत ॥ सूरदास सारंग केहि कारण सारंग कुलहि लजावत ॥९३॥राग बिहागरो॥मेरी सिख श्रवन काहे न करति। अजहूं भोरी भई रहै कहति तोसों डरति ॥शशि निरखि मुख चलत नाहिन नयन निरखि कुरंग। कमल खंजन मीन मधुकर होतहै चितभंग ॥ देखि नासा कीर लज्जित अधर दशन निहारि। बिंब अरु बंधूप विद्रुम दामिनी डर भारि॥ उर निरखि चक्रवाक बिथके कटि निरखि बन राज। चाल देखि मराल भूले चलत तब गजराज ॥ अंग अंग अवलोकि शोभा मनहि देखि बिचा-रि।सूर मुख पट देति काहेन बरष दश युग भारि॥९४॥राग सूहा बिलावल॥अब राधा तू भई सयानी। मेरी शीख मानि हृदय धरि जहाँ तहां डोलति बुद्धि अयानी ॥ भई लाजकी सीमा तनुमें सुनि यह बात कुँवारि मुसकानी।हँसति कहा मैं कहति भली तोहिं सुनत नहीं लोगनकी बानी॥आजुहिते कहुँ जान न देहौं मा तेरी कछु अकथ कहानी। सूर श्याम के संग न जैहौं जा कारण तू मोहिं सुगानी॥ ॥ ९५ ॥ राग गोडी ॥ भलीबात बाबा आवनदे। कान्ह लगाइ देति मोहिं गारी ऐसे बडे भए कबते वे॥ कालि मोहिं मारगमें रोकी जातरही सखियनसँग दधि लै॥ कहन लगे मेरो देहु खिलौना ता दि-नलै भागी चुराइकै॥ छठि आठैं मोहिं कान्ह कुँवरसों तिनको कहति प्रीतिसों है। सूर जननि सुनि सुनि यह बानी पुनि पुनि मुख निरखति बिहँसतिहै॥९६॥ राग गौरी ॥ बडी भई नाहिं गई लरि काई। बारेहीके ढंग आजुलों सदा आपनी टेक चलाई॥ अबहीं मचलि जाइगी तब पुनि कैसे मोसों जाति बुझाई। मानी हारि न हरि मन अपने बोलिलई हँसिकै दुलराई॥ कंठ लगाइ लई अति हितसों पुनि पुनि कहि मेरी रिसहाई। सूरदास अति चतुर राधिका राखिलई नीके चतुराई॥ ॥९७॥राग गुंडमल्हार॥श्यामनग जानि हिरदै चुरायो। चतुर वर नागरी महामणि लखिलियो प्रियसखी संग नाहिन जनायो॥कृपिनि ज्यों धरति धन ऐसे डिठ कियो मन जननि सुनि बात हँसि कंठ लायो। गांसदियो डारि कह्यो कुँवरि मेरी बारि सूर प्रभु नाम झूठे डरायो॥ ९८ ॥ राग कल्याण॥ सखियन इहै विचार परयो। राधा कान्ह एक भए दोऊ हमसों गोप करयो॥ वृंदावनते अबहीं आई अति जिय हरष बढाये। और भाव अंग छबि और श्याम मिले मनभाये॥ तब वह सखी कहति मैं बूझी मोतन फिरि हँसि हेरयो। जबहिं कही सखि मिले तोहिं हरि तब रिस करि मुख फेरयो॥ और बात चलावन लागी मैं वाको पहिचानी। सूर श्यामके मिलत आजही ऐसी भई सयानी॥ ९९ ॥ राग सोरठ॥सुनहु सखी राधाकी बातें। मोसों कहति श्यामहैं कैसे ऐसी मिलई घातें॥ की गोरे की कारे रंग हरि की जोबनकी भोरे। की यहि गाउँ बसत की अनतहि दिनानि बहुत की थोरे॥ की तू कहति बात हँसि मोसों की बूझति सतिभाऊ। सपनेहूं उनको नहिं देखे वाके सुनहु उपाऊ ॥ मोसों कही

कौन तोसी प्रिय तोसों बात दुरैहौं । सूर कही राधा मो आगे कैसे मुख दरशैहौं ॥ ६० ॥राग गौरी॥ वह निधरक मैं सकुचि गई । तब यह कह्यो जाहि घर राधा मैं झूठी तैं सांच भई ॥ त्यौंरी भौंहन मोतन चितवै नैकरहों तो करै खई । कामभंडार लूटि नीके करि निदरिगई मैं चकृतभई ॥ घरधौं जाइ कहा अब कैहै अब कछु अवरै बुद्धि नई । सूर श्याम अंग संग रँग राची मनमानो सुख लूटि लई ॥ ६१ ॥ राग बिलावल ॥ सुनि सुनि बात सखी मुसकानी । अबहीं जाइ प्रगट करि दैहैं कहा रहै यह बात छपानी ॥ औरनिसों दुराव जो करती तौ हम कहती भली सयानी । दाई आगे पेट दुरावति वाकी बुद्धि आज मैं जानी ॥ हमजातहि वह उघरि परैगी दूध दूध पानीसों पानी । सूरदास अब करति चतुरई हमहि दुरावति बातन ठानी ॥ ६२ ॥ राग रामकली ॥ अपनो भेद तुम्हैं नहिं कैहै । देखहु जाइ चरित तुम वाके जैसे गाल बजैहै ॥ बडे गरूकी बुद्धि पढी वह काहू को न पत्यैहै । एकौ बात मानिहै नाहीं सबकी सौंहैं खैहै ॥ मैं नीके करि बूझि रहीहौं अब बूझै रिस पैहै।सुनहु सूर रस छकी राधिका बातन बैर बढैहै ॥ ६३ ॥ राग बिलावल ॥कहा बैर हमसों वह करिहै । वाकी जाति भले करि पाई हमको कहा निदरिहै ॥ कैहै कहा चोरटी हमसों बातैं बात उघरिहै । दूरिकरौं लँगराई वाकी मेरेफंग जो परिहै ॥ हमसों बैर किये कहा पैहै काज कहा पुनि सरिहै । सूरदास मटुकी शिरलीन्हें बहुरि वेसही रहिहै ॥ ६४ ॥ चलहु सखी जैये राधा घर । बूझे बात कहाधौं कैहै निधरकहै कीधौं मनमें डर ॥ कीधौं हमहि देखि भजि जैहै की उठि हमको मिलिहै । कीधौं वात उघारि कहैगी की मनहीमन गिलिहै ॥ कीधौं हँसिबोलै की रिसकरि कीधौं सहज सुभाई । कीधौं सूर श्याम रसमाती जोबन गर्व बढाई ॥ ६५ ॥ युवती जुरि राधा ढिग आई । लखिलीनी तब चतुर नागरी ये मोपर सबैहैं रिसहाई ॥ आदरनहीं कियो काहूको मनमें एक बुद्धि उपजाई । मौनगह्यो नहिं बोलति तिनसों बैठिरही करिकै चतुराई ॥ आपुहि बैठिगई ढिग सिगरी जब जानी यह तौ चतुराई । सूरदास वे सखी सयानी और कहूंकी वात चलाई ॥ ६६ ॥ राग जैतश्री ॥ चतुर चतुरकी भेंट भई । वैतौ निठुर मौनह्वै बैठी इन सबहिन लखि ताहि लई ॥ मुहाचही युवतिन तब कीन्हीं देखौ उलटी रीति भई । कहा हमारो मन यह राखै अरु हमही पर सतरगई ॥ बूझहु याहि खूट धरिकै तू कहा आजु यह मौन लई । सुनहु सूर हमसों कहा परदा हम करिदीन्ही साटसई ॥ ॥ ६७ ॥ राग गंड ॥ राधिका मौनव्रत किन सधायो । धन्य ऐसो गुरू कानके लागतही मंत्रदै आजुही वह लखायो ॥ कालि कछु और प्रातहि कछु औरही अबहि कछु और ह्वैगईप्यारी । सुनत यह बातं दौरिआई सबै तोहिं देखत भई चकृत भारी ॥ अब कहो वात या मौनको फल कहा सुनि जु लीजै कछु हमहु जानै । एकही संग भई सबै जोबन नई अब होहु गुरु हम तुमहि मानै ॥ देहिं उपदेश हमहूं धरैं मौन सब मंत्र जब लियो तब हम न बोली । सूर प्रभुकी नारि राधिका नागरी चरचि लीन्हो मोहि करति ढोली॥ ६८ ॥राग मारू॥की गुरु कहौ कि मौनै छांडौ । हमहिं मूरख वदति आपुएढंग सदति पाइअब मदाति हठ कतहिमाडौ॥ एकही संगहम तुमसदारहतिहै आजुही चटकि तू भई न्यारी । भेद हमसों कियो और कोऊ वियो कहा धौं कहैं कहा देहि गारी॥ कहा तोही भयो तेरी प्रकृति कौनैहरी रीति यह नई तैही चलायो। सूर सुनि नागरी गुणनकी आगरी निठुरईसो बात कहिसुनायो॥ ॥ ६९ ॥राग गौरी॥ तुम प्रीतम की बैरानि मेरी । वासों कहति मिली जो मारग यह मोसों अति कही अनेरी॥ कहति कहा श्यामहि मिलिआई मैं चकि रही सौंह मोहिं तेरी । मेरे अँग छबि और कहति कछु युवती सुनत रही मुख हेरी ॥ मैं जिनको सपनेहून देखे तिनकी बात कहत फिरि फेरी । सूरदास गुणभरी

राधिका महिमा को जानै यहि केरी७०॥राग कल्याण॥ तुमसों कछु दुरावहै मेरो।कहां कान्ह कहां मैं सुनि सजनी ब्रज घर घर यह चलतहै चेरो ॥ और कहत सब मोहिं न व्यापै तुमहूँ कहौ यह बानी ।आदर नहीं कियो याहीते तुमपर अतिहि रिसानी ॥ हमतौ नहीं कह्यो कछु तोसों ताही पर रिस करती । सूर तबहिं हमसों जो कहती तेरी घां ह्वै लरती ॥ ७१ ॥ राग रामकली ॥ सखी तू राधहि दोष लगावति। तैंरी श्याम कहां ए देखे बातन बैर बढ़ावति ॥ हम आगे झूठी नहिं कैहै सखियन सैन बतावति । ऐसीबात अरी मुख तेरे कैसी धौं कहि आवति ॥ भेदहि भेद कहतिहै बातैं ऐसे मनहि जनावति । सूर श्यामतैं देखे नाहीं कीधौं हमहि दुरावति ॥७२ ॥ राग नटनारायण ॥ काको काको मुख माई बातनको गहिये । पांचकी सात लगायो झूंठी झूंठिके बनायो सांची जो तनक होइ तौलों सब सहिये॥ बातनि गहौ अकास सुनत न आवै सांस बोलि तौ कछु न आवै ताते मौन गहिये । ऐसे कहै नर नारि बिना भीति चित्र कारि काहेको देखे मैं कान्ह कहा कहौ सहिये ॥ घर घर इहै घेर वृथा मोसों करै बैर यह सुनि श्रवणनि हृदय सहि दहिये । सूरदास वरु उपहास सहौंईसुर मेरे नंदसुवन मिलैं तौपै कहा चहिये ॥ ७३ ॥ राग गुंडमलार ॥ दुरत नहिं नेह अरु सुगंध चोरी । कहा कोऊ कहै तू सुनति काहे न रहै तनहि कत दहै सुनि सीख मोरी ॥लोगतोहि कहत हैं पाप को गहतहैं कहाधौं लहतहैं सुनहु भोरी । खरिकहू नहिं मिले कहै कह अनभले करनदे गिलै तू दिननि थोरी ॥ नंदको सुवन अरु सुता वृषभानुकी हँसत सब कहै चिरजीवै जोरी । सूर प्रभु कहां तू कहां वे अपने भवनमें लखी तोहि तोसी न बोरी॥७४॥ राग बिलावल॥कैसेहैं नंदसुवन कन्हाई। देखे नहीं नयनभरि कबहूं ब्रजमें रहत सदाई ॥ सकुचतिहौं एकबात कहत तोहिं सो नहिं जात सुनाई। कैसेहुं मोहिं देखावहु उनको यह मेरे मन आई ॥ अतिही सुंदर कहियत हैं वे मोकों देहि बताई । सूरदास राधाकी बाणी सुनत सखी भरमाई॥७५॥राग धनाश्री॥ सुनहु सखी राधाकी बानी ।ब्रजवसिहरि देखे नहिं कबहूँ लोग कहत कछु अद्भुतबानी ॥ ये अब कहति देखावहु हरिको देखहुरी यह अकथ कहानी । जो हम सुनत रही सो नाहीं अब ऐसेहि यह बात बहानी॥ज्वाब न देत बनै काहूसों मनमें काहु न मानी । सूर सबै तरुणी सुखचाहत चतुर चतुरई ठानी॥७६॥राग बिलावल॥सुनि राधे तोहिं श्याम देखावैं।जहां तहां ब्रजगलिन फिरतहै जबहीं वे यहि मारग आवैं ॥जबहीं हम उनको देखेंगी तहाँई तोहिं बोलैहैं । उनहूंके लालसा बहुत यह तो देखे सुख पैहैं ॥ दरशनते धीरज जबरैहै तब हम तोहिं पतैहैं । तुमको देखि श्याम सुंदर घन मुरली मधुर बजैहैं।ततु त्रिभंग करि अंग अंगमो नाना भाउ जनैहैं । सूरदास प्रभु नवल कान्हवर पीतांबर फहरैहैं ॥ ७७॥ राग गुंडमलार ॥ नँदनंदन दरशन जब पैहो । एक द्वै तीनि तजि चारि बानी पांच छहनिदरि तबहिं सातै भुलैहो ॥ आठहूं गाँठि परिहै नवहु दशदिशा भूलिहौ ग्यारहो रुद्रजैसे । बारहौ कला ते तपनि तपते मिटत तेरहो रतन मुख छबिन तैसे ॥ निपुन चौदह वरन पंद्रहौ सुभग अति वरष षोडश सतर होन रैहै । जपत अठारहो भेद उनईस नहिं बीसहू बिसौ तैं सुखहि पैहै ॥ नैनभरि देखि जीवन सफल करि लेखि ब्रजहि में रहति तैं नहीं जाने।सूरप्रभु चतुर तुमहूं महाचतुरहो जैसे तुम तैसे वोऊ सयाने।।७८॥ राग दवगंधार॥मन मन हँसति राधिका गोरी । ऐसे श्याम रहत ब्रजभीतर बूझति है भैभोरी ॥ तुम उनको कहुँ नहिं देखेहैं की सुनी कहतिहो बात । चतुराई नीके गहि राखी कहत सखी मुसिकात ॥ कबहूंतो काहू फंग परिहौं तबहीं लीजो चीन्हि । सूरदास को पीतांबर वेसरि लीजो मेरी छीनि ॥७९॥ राग नट ॥यह सुनि हँसि चलीं ब्रजनारि । अतिहि आई गर्वकीन्हें गई घर झखमारि ॥ कबहुँ तौ हम देखिहैं

एक संग राधा कान्हाभेद हमसों कियो राधा निठुरभई निदान्ह ॥ बीस बिरियां चोरकी तौ कबहुँ मिलिहै साहु । सूर सब दिन चोरको कहुँ होतहै निरबाहु ॥ ८० ॥ राग कान्हरो ॥ भेदलियो चाहति राधासों । बैठिरहौ अपने घर चुपके काम कहा काहू बाधासों ॥ यह मन दूरि धरौ अपनो लै अति बरबोलि गई कह कीन्हों । कैसे निर्भय रही सबनिसों भेद न काहुहि दीन्हों ॥ वह कैसे फँग परै तुम्हारे वाके घात न जानों । सूर सबै तुम बडी सयानी मोहिं नहीं तुम मानों ॥८१॥ राग बिलावल ॥ फेरि पाइ देखो मैं धरिहौं।सुनु री सखी प्रतिज्ञा मेरी तेरी दिन तासों लरिहौं ॥ हमको निदरि रहीहै राधा रिसानि रही मैं जरिहौं । तब मेरे मन धीरज ऐहै चोरी करत पकरिहौं ॥ राति दिवस मोहिं चैन नहीं अब उनको देखत फिरिहौं । सूरदास स्वामीके आगे नीके ताहि निदरिहौं ॥ ८२ ॥ राग नटनारायण ॥ गोपी इहै करति चवाउ । देखौं धौं चतुराई वाकी हमहिं कियो दुराउ ॥ लरिकईते करत ए ढंग तबै रहे सतिभाउ । अब करति चतुराई जाने श्याम पढाये दाउ॥कहाँलौं करिहै अचगरी सबै ए उपजाउ । आजु बाची मौन धरि जो सदा होत बचाउ ॥ दिवस चारिकभोर पारहु रहौं एक सुभाउ । सूर कालिहि प्रगट ह्वैहै करनंदे अपडाउ ॥ ८३ ॥ राग सूहा बिलावल ॥ कहा कहति तू बात अयानी । तुम इह कहति सबै वह जानति हम सबते वह बडी सयानी ॥ सात बरषते ये ढँग सीखे तुम तौ यह आजुहि है जानी । वाके छंद भेद को जानै मीन कबहि धौं पीवत पानी॥ हरिके चरित सबै उहि सीखे दोऊ हैं वे बारहवानी । कालि गई वाके घर सब मिलि कैसी बुद्धि मौन की ठानी ॥ केती कही नेकु नहिं बोली फिरी आइ तब हमहि खिसानी।सूर श्याम संगतिकी महिमा काहूको नेकहु न पत्यानी ॥ ८४ ॥ राग मारू ॥ तबहि राधा सखियनपै आई।आवत देखि सबनि मुख मूँदो जहां तहां रही अरगाई ॥ मुख देखत सब सकुचि गई यह कहां अचानक आई । करति रहीं चुगुली हम याकी तरुनी गई लजाई ॥ अति आदर करि बैठक दीन्हों कह्यो कहां तुम आई । कहा आजु सुधि करी हमारी सूर श्याम सुखदाई ॥ ८५॥ राग धनाश्री ॥ मैं कह आजुनिवैरी आई । बहुते आदर करति सबै मिलि पहुनेकी करिये पहुनाई ॥ कैसी बात कहति तू राधा बैठनको नहिं कहिये । तुम आई अपने घरते ह्याँ हमहुँ मौन धरि रहिये ॥ जानिलई बृषभानु सुता हँसि कह्यो तरक तुम कीन्हों । सूरदास ता दिनको बदलो दाउँ आपनो लीन्हों ॥ ८६ ॥राग धनाश्री ॥ दाउँ घाउ तुमहीं सब जानति ।सदा मानि तुमको हम आई अबहूं तैसे मानति॥ तुम वह बात गांस करि राख्यो हमको गई भुलाई। ता दिन कह्यो नहीं मैं जानों मानि लई सति भाई ॥ चोर सबनि चोरी करि जानो ज्ञानी मन सब ज्ञानी। सूरदास गोपिनकी वाणी राधा सुनि मुसकानी॥८७॥ सखी तुम बात कही यह सांची।जाके हृदय जौन कहै मुखते तौन कैसे हरिको न कहि लीक खांची॥ हरषि ब्रजनारि भरि लेत अँकवारि सब कहति तू कहा इह बात जानें । हम हँसति कहति तू रिस कहा गहति री नागरी राधिका बिलगु मानै॥तुमहि उलटी कहौ तुमहि पलटी कहौ तुमहि रिस करति मैं कछु न जानौं । सूर प्रभुको नाम मोहिं तुमही कह्यो श्रवन यह सुन्यो तुम कछू मानो॥८८॥अथ ग्रीष्मलीला॥ सखिन सहित यमुना विहार॥ टोडी ॥ पुनि कहि यों अब न्हान चलौगी । तब अपनो मन भायो कीजो जब मोको हरि संग मिलोगी ॥ उहै बात मनमें गहि राखी मैं जानति कबहुँ न बिसरौगी । वडी बार मोको भई आए न्हान चलतकी बहुरि लरोगी॥गहि गहि बांह सबनि करि ठाढी कैसेहू घरते निसरौगी । सूर राधिका कहति सखिनसों बहुरि आइ घरकाज करौगी ॥८९॥राग मारू ॥ राधिका संग मिलि गोपनारी। चलीं हिलिमिलि सबै रहसि बिहँसति तरुनि परस्पर कौतूहल करत भारी ॥ मध्य ब्रजनागरी रूप रस

आगरी घोष उजागरी श्याम प्यारी। जुरीं ब्रजसुंदरी दशनछबि कुंदरी काम तनु दुंदरी करण हारी॥ अंग अंग सुभग अति चलति गजगति कृष्णसों एकमति यमुनजाहीं। कोऊ निकसि जाति कोऊ ठठकि ठाढी रहति कोऊ कहति संग मिलि चलहु नाहीं॥ युवती आनंद भरी भई जुरिकै खरी नहीं छरहरी उठि बैस थोरी। सूर प्रभु सुनि श्रवन तहां कीन्हों गवन तरुणि मन रवन सब ब्रजकिशोरी॥ ९०॥ राग नटनारायण॥ गईं ब्रजनारि यमुनातीर देखिलहरि तरंग हरषी रहत नहिं मनधीर॥ संग राजति कुँवरि राधा भई शोभा भीर। स्नानको वे भई आतुर सुभग जल गंभीर॥ कोऊ गई जल पैठि तरुनी और ठाढी तीर। तिनहि लई बोलाइ राधा करति सुख तनकीर॥ एक एकहि धरति भुजभरि एक छिरकति नीर। सूर राधा हँसति वाढी बढी छवि तन चीर॥ ९१॥ राग जयतश्री॥ राधा जल बिहरत सखियन संग। ग्रीवप्रयंत नीरमें ठाढी छिरकत जल अपने अपने रंग॥ मुखपर नीर परस्पर डारति शोभा अतिहि अनूप बढी तब। मनहु चंद्र गन सुधा गई खनि डारतहैं आनंद भरे सब॥ आई निकसि जानु कटिलों सब अँजुरिनते जल डारत। मनहुँ सूर कनकवल्ली जुरि अमृत पवन मिस झारत॥ ९२॥ राग नट॥ यमुनाजल बिहरत ब्रजनारी। तट ठाढे देखत नँदनंदन मधुर मुरलि करधारी॥ मोरमुकुट श्रवणन मणिकुंडल जलजमाल उर भ्राजत। सुंदर सुभग श्याम तनु नव घन बिच बगपांति विराजत। उर वनमाल सुभग बहुभांतिनु श्वेत लाल सित पीत। मनों सूर सरितटि बैठे शुक बरनत बरन जिभीत। पीतांबर कटि मैं छुद्रावलि बाजत परम रसाल। सूरदास मनों कनक भूमि ढिग बोलत रुचिर मराल॥ ९३॥ राग बिहागरो॥ नटवर भेष काछे श्याम। पद कमल नख इंदु सोभा ध्यान पूरण काम॥ जानु जंघ सुघटनि कर भा नाहिं रंभा तूल। पीतपट काछनी मानहुं जलजकेसर झूल॥ कनक छुद्रावली पंगति नाभि कटिके भीर। मनहुँ हंस रसाल पंगति रहेहैं ह्रद तीर॥ झलक रोमावली शोभा ग्रीव मोतिन हार। मनहु गंगा बीच यमुना चली मिलि त्रिय धार॥ बाहुदण्ड बिशाल तट दोउ अंग चंदनु रेनु। तीर तरु वनमालकी छवि ब्रजयुवति सुखदेनु। चिबुक पर अधरनि दशनद्युति बिंबु बीज जलाइ। नासिका शुक नयन खंजन कहत कबि सरमाइ॥ श्रवण कुंडल कोटि रवि छवि भ्रुकुटि कामको दंड। सूर प्रभुहै नीपके तर शीश धरे श्रीखंड॥ ९४॥ राग पूरवी॥ उपमा धीरज तज्यो निरखि छबि। कोटि मदन अपनो बल हारचो कुंडल किरनि बीच जो छप्यो रवि॥ खंजन कंज मधुप विधु तडिघन दिनकर रहत कहूंवे दवि। हरिपटतर दै हमहि लजावत सकुच नहीं आवत खोट कवि॥ अरुन अधर दशननि दुति निरखत बिद्रुम शिखर लजाने सब। सूर श्याम आछे वपु काछे पटतर मेटि विराने अब॥ ९५॥ राग गौरी॥ उपमा हरि तन देखि लजाने। कोउ जलमें कोउ वनमें रहे दुरि कोऊ गगन समाने॥ मुख निरखत शशिगयो अंबरको तडित दशन छबि हेरे। मीन कमल करचरन नयन डर जलमों कियो बसेरो॥ भुजादेखि अहिराज लजाने बिवरनि पैठे धाइ। कटिनिरखत केहरि डर मान्यो बन बनरहे दुराइ॥ गारीदेहि कविनके वर्णत श्रीअँगपटतर देत। सूरदास हमको विरमावत नाउँ हमारो लेत॥ ९६॥ राग सारंग॥ ऐसे गोपाल निरखि तिल तिल तनु वारौं। नवकिशोर मधुरमूरति शोभा उर धारौं॥ अरुण तरुण कंज नयन मुरली कर राजे। ब्रजजन मन हरन वेन मधुर मधुर बाजे। ललितबर त्रिभंग सु तन बनमाला सोहै। अति सुदेश कुसुम पाग उपमाको कोहै॥ चरण रुनित नूपुर कटि किंकिनि कलकूजे। मकराकृत कुंडल छवि सूर कौन पूजे॥ ९७॥ राग कान्हरो॥ बनि मोतिनकी माल मनोहर। शोभित श्याम सुभग उर ऊपर

मनो गिरिते सुरसरी धसीधर ॥ तट भुजदंड भौंर भृगु रेखा चंदन चित्रित रंगनि सुंदर । मणिकी किरणि मीन कुंडल छवि मनों मकर मिलन आवत त्यागे सर । ता ऊपर रोमावलि राजत मणिवर तीखन ज्योति सितावर । संतहि ध्यान स्नान करत नित कर्मकीच धोवत नीकेकर ॥ यज्ञोपवीत विचित्र सूर सुनि मध्यधार धारा जो वानीवर । शंख चक्र गदा पद्म पानि मनो कमल कूलहंसनि कीन्हें घर९८॥राग नटनारायण॥ राधे निरखि भूली अंग । नंदनंदन रूप परगति मति भई तनुपंग॥ इत सकुच अति सखिनको उत होत अपनी हानि । ज्ञानकरि अनुमान कीन्हों अबहि लैहै जानि चतुर सखियन परखि लीन्हीं समुझि भई गँवारि।सबै मिलि इत न्हान लागीं ताहि दियो बिसारि ॥ नागरी मुख श्याम निरखत कबहुँ सखियन हेरि । सूर राधा लखति नाहीं इन दई अबटेरि ॥ ९९ ॥ राग कान्हरो॥जब जान्यो ये न्हाति सबै।हरि प्रति अंग अंगकी शोभा अँखियन मगहै लेउ अबै॥ कमल कोशमैं आनि दुरावो बहुरि दरश धौं होइ कबै । यह मन करि युवतिन तनु हेरति सकुचतिहै पुनि नहीं फबै॥कबहुँक कहै तजौ मर्यादा इनिसों मैं करि गोप तबै।सूर श्याम तबहीं मन मानै संगहि रैहों जाइ जबै ॥राग गौरी॥ चित राधारतिनागर ओर।नयन वदन छबि यों उपजत मानों शशि अनुराग चकोर॥सारस सर अचवनको मानहु फिरत मधुप युग जोर।पान करत त्रिय तन मानत पलक न देत अकोर ॥ लिये मनोरथ मानि सकल ज्यों रजनि गए पुनि भोर । सूर परस्पर प्रीति निरंतर दंपतिहै चितचोर ॥ राग कल्याण ॥ यह कछु भोरेहि भाइ भई ।निरखत वदन नंदनंदनको अब रहती सो गई ॥ हिरदै जामि प्रेम अंकुर जरि सत पतार गई।सो द्रुम पसरि शिखर अंबरलों सब जग छाइ लई॥ वचन सुजंत्र मुकुल अवलोकनि गुननिधि पुहुप मई । परस परम अनुराग सींचि सुख लगी प्रमोद जई ॥ मनके सकल मनोरथ पूरण सेमर भार नई। सूरदास फल गिरिधर नागर मिलि रस रीतिठई ॥ १०० ॥ राग रामकली॥ चितवन रोकेहू न रहीं ।श्याम सुंदर सिंधु सन्मुख सरित उमँगि बही॥प्रेम सलिल प्रवाह भँवरनि मिलि कबहुँ न थाह लही । लोभ लहरि कटाक्ष घूँवट पट करार ढही ॥ थके पल पथ नाव धीरज परत नहिंन गही। हिलि मिलि सूर स्वभाव श्यामहि फेरीहू न चही ॥ जैतश्री॥ देखी हरि राधा उत अटकी । चितैरही एकटक हरिही तन ना जाइये कौन अँग लटकी ॥ कालिहमैं कैसे निदरतिहीं मेरे चित वह टरति न खटकी । न्हातरही कैसे सँग मिलिकै चित चंचल विरहाकी चटकी ॥ वात करत तुलसी मुख मेलै नयन शयनदै मुँह मटकी । सूर श्यामके रूप भुलानी राधाके चित सुधि न घटी ॥१॥ राग बिलावल॥ चितै रही राधा हरिको मुख।भ्रुकुटी बिकट बिशाल नयन युग देखत मनहिं भयो रतिपति दुख ॥ उतहि श्याम एक टक प्यारी छबि अंग अंग अवलोकत । रीझि रहे उत हरि इत राधा अरस परस दोउ नोकत ॥ सखिन कह्यो वृषभानु सुतासों देखे कुँवर कन्हाई । सूर श्याम एई हैं ब्रजमें जिनकी होति बड़ाई॥ २॥ राग रामकली॥ हमहि कह्यो हो श्याम देखावहु । देखहु दरश नयन भरि नीके पुनि पुनि दरशन पावहु ॥ बहुत लालसा करत रही तुम वे तुम कारण आए । पूरी साध मिली तुम उनको याते हमहिं बोलाये ॥ नीके सगुण आजु ह्यां आई भयो तुम्हारो काज । सुनहु सूर हमको कछु देहौ तुमहि मिले ब्रजराज ॥ ३ ॥ राधा कह्यो आजु इन जानी । बारबार मैं हरि तन चितई तबहीं ये मुसकानी॥कालि कह्यो मैं इन सों वैसे अबतो बात न ठानी । इहि चतुरई परी मोही पर मन मन अतिहि लजानी ॥ मेरी बात गई इनि आगे अवहिं करति बिनपानी । सूरदास प्रभु कहा कहौं मैं तू अब हाथ विकानी ॥ ४ ॥राग बिलावल॥मैं अतिही यह पोच करी । ये मेरी मर्यादा लैहैं ता दिन इनिसों बहुत लरी ॥ सुंदर श्याम कमलदल लोचन तुम अब

होहु सहाइ। ऐसी कहौं बात इन आगे मेरी पति जिन जाइ ॥ तब यक बुद्धि रची मनही मन अति आनंद हुलास। सूर श्याम राधा आधातन कीन्हों बुद्धि प्रकाश ॥ ५ ॥ राग गूजरी ॥ राधा चलन भवनही जाहि। कबहीकी हम यमुना आईं कहहीं अरु पछिताहि ॥ कियो दरशन श्यामको तुम चलोगी की नाहिं। बहुरि मिलिहो चीन्हि राखहु कहति सब मुसकाहिं ॥ हम चली घर तुमहुँ आवहु सोच भयो मन माहि। सूर राधा सहित गोपी चलीं व्रज समुहाहिं ॥ ६ ॥ राग विलावल ॥ कहि राधा हरि कैसेहैं। तेरे मन भाये की नाहीं की सुंदरकी नैसेहैं ॥ की पुनि हमहि दुराव करोगी की कैहो वै जैसे हैं। की हम तुमसों कहत रही ज्यों सांच कहौ की तैसेहैं ॥ नटवर भेष काछनी काछे अंगनि रतिपति सैसेहैं। सूर श्याम तुम नीके देखे हम जानति हरि ऐसेहैं ॥ ७ ॥ राधा मनमें इहै बिचारति। ये सब मेरे ख्याल परीहैं अवहीं बातनलै निरुवारति ॥ मोहुते ये चतुर कहावति ये मनही मन मोको नारति। ऐसे वचन कहौंगी इनको चतुराई इनकी मैं झारति ॥ जाके नंद नँदन शिर समरथ बार बार तनु मन धन बारति ॥ सूर श्यामके गर्व राधिका सूधे काहू तन न निहा रति ॥ ८ ॥ राग सूही ॥ राधा हरिके गर्व गहीली। मंद मंद गति मत्त मतंग ज्यों अंग अंग सुख पुंज भरीली ॥ पग द्वै चलति ठटकि रहै ठाढी मौन धरे हरिके रसगीली। धरनी नख चरननि कुरवारति सौतिन भाग सुहाग डहीली ॥ नेक नहीं पियते कहुँ बिछुरति ताते नाहिंन काम दहीली। सूर सखी बूझे यह कैहों आजु भई इह भेद पहीली ॥ ९ ॥ राग आसावरी ॥ क्यों राधा फिरि मौन गह्योरी। जैसे नउआ अंध झँवर खर तैसेहि तैं यह मौन कह्यो री ॥ बात नहीं मुखते कहि आवति की तेरो मन श्याम हरचो री। जानि नहीं पहिचानि न कबहूँ देखतही चित तिनहि ठरचोरी ॥ साँची बात कहौं तुम हमसों कहा सोच सो जियहि परचोरी। सूर श्याम तन देखि रही कहा लोचन इकटक ते न टरचोरी ॥ १० ॥ राग धनाश्री ॥ कहा कहति तुम बात अलेखे। मोसों कहति श्याम तुम देखे तुम नीके करिदेखे॥ कैसो बरन भेषहै कैसो कैसे अंग त्रिभंग। मों आगे वह भेद कहौ धौंकैसोहै तनु रंग॥ मैं देखे की नाहीं देखे तुम तो बार हजार॥ सूर श्याम द्वै अँखियन देखति जाको वार न पार ११॥ राग कान्हरो ॥ हम देखे यहि भाँति कन्हाई॥ शीश श्रीखंड अलक बिथुरे मुख श्रवणनि कुंडल चारु सोहाई॥ कुटिल भृकुटि लोचन अनियारे सुभग नासिका राजत। अरुन अधर दशनावलिकी द्युति दाडम कन तन लाजत॥ ग्रीवहार मुक्ता वनमाला बाहुदंड गजशुंड। रोमावली सुभग बगपंगति जात नाभि ह्रदय झुंड ॥ कटि पट पीत मेखला कंचन सुभग जंघ युग जान। चरन कमल नखचंद्र नहीं सम ऐसे सूर सुजान ॥ १२॥ राग बिलावल ॥ बनेहैं बिशाल कमल दल नैन। ताहूमें अति चारु बिलोकनि गूढभाव सूचत सखि सैन॥ वदन सरोज निकट कुंचित कच मनहु मधुप आए मधुलैन। तिलक तरनि शशि कहत कछुक हँसि बोलत मधुर मनोहर बैन ॥ मदननृपतिको देश महामद बुधि बल बासि न सकत उर चैन। सूरदास प्रभु दूत दिनहि दिन पठवत चरित चुनौती दैन ॥ १३॥ राग देवगन्धार॥ मोहन बदन बिलोकत अँखियन उपजत है अनुराग। तरनि ताप तलफत चकोरगति पिवत पियूष पराग ॥ लोचन नलिन नये राज त रति पूरण मधुकर भाग। मानहु अलि आनंद मिले मकरंद पिवत रतिफाग ॥ भँवरिभाग भृकुटी पर कुमकुम चंदनविन्दु विभाग। चातक सोम शक्र धनु घनमें निरखत मनु बैराग ॥ कुंचित केश मयूर चंद्रिका मंडल सुमन सुपाग। मानहु मदन धनुष शर लीन्हें बरषतहै वन बाग ॥ अधरबिंब बिहँसान मनोहर मोहन मुरली राग। मानहु सुधा पयोधि घेरि घन ब्रजपर बरषन लाग॥ कुंडल मकर कपोलनि झलकत श्रम सीकरके दाग। मानहुँ मीन मकर मिलि क्रीडत शोभित शरद

T

तड़ाग।नासा तिलक प्रसून पदविपर चिबुक चारु चित खाग । दाडिम दशन मंदगति मुसकनि मोहत सुर नर नाग ॥ श्रीगोपाल रस रूप भरीहै सूर सनेह सोहाग । ऐसी शोभा सिंधु विलोकत इन अँखियनके भाग ॥ १४ ॥ राग धनाश्री ॥ हम देखे यहि भांति गोपाल । छंद कपट कछु जानति नाहीं सूधी हैं ब्रजकी सब बाल॥झूठीकी सांची नहिं भाषैं सांची झूठी कबहुँ न होइ । सांचीकी झूठी करिडारैं यह सोई जानैं धनि जोइ ॥ इतननिमें दुराव कछु नाहीं भेदाभेद विचार । सूरदासते झूठी मिलवै तनुकी गति जानै करतार ॥ १५ ॥राग आसावरी॥ झूठी बात न होति भलाई । चोर जुआर संग बरु करिये झूठेको नहिं कोउ पतिआई ॥ सांचीकी झूठी करिडारैं पंचनमें मर्यादा जाई । बोलि उठी एक सखी बीचही तैं कह जानैं लाज बडाई । यामें कछू नफाहै उनको जाते मन ऐसी ये भाई।सूर स्वभाउ परचो ऐसोई को जानैरी बुद्धि पराई॥१६॥राग धनाश्री॥ऐसे हम देखे नँदनंदन।श्याम सुभग तनु पीत बसन जनु मनहु जलद पर तडित सुछंदन ॥ मंदमंद मुरली मुख गरजनि सुधावृष्टि बरषत आनंदन । बिबिध सुमन बनमाला उर मनु सुरपति धनुष नहीं येहि छंदन ॥ मुक्तावली मनहुँ बगपंगति सुभग अंग चरचित छवि चंदन । सूर नीप तरवर तर ठाढे प्रभू सुर नर मुनि बंदन॥१७॥राग देवगंधार ॥तुमको कैसे श्याम लगे । न्हातरही जलमें सब तरुनी तब तुअ नैना कहां खगे ॥ अंग अंग अवलोकन कीन्हों कौन अंग पर रहे पगे । भूल्यो स्नान ज्ञान तनु भूली नंदसुवन उतते न डगे ॥ जानति नहीं कहूं नहिं देखे मिलिगई ऐसे मनहि सगे । सूर श्याम ऐसे तैं देखे मैं जानति दुख दूर भगे ॥१८॥ राग गौरी ॥ तुम देखे मैं नहीं पत्यानी।मैं जानति मेरी गति सबही इहै सांच अपने मन आनी ॥ जो तुम अंग अंग अवलोक्यो धन्य धन्य मुख अस्तुति गानी । मैं तौ अंग अंग अवलोकति दोऊ नयन भये भर पानी ॥ कुंडल झलक कपोलनि आभा इतनहिं माँझ बिकानी । एकटकरही नैन दोउ रूंधे सूर श्यामको नहिं पहिंचानी ॥ १९ ॥ राग नट ॥ मेरी अँखियां अजान भई । एक अंग अवलोकत हरिके औरै अंग रई ॥ये भूली ज्यों चोर भरे घर नौनिधि नहीं लई । फेरत पलटत भोर भए कछु लई न छांडिदई ॥ पहिलेहि रति करिकै आरति करि ताहि रई । सूर सकति हठि दोप लगावति पल पल पीर नई ॥ २० ॥ राग सारंग ॥ विधातहि चूक परी मैं जानी । आजु गोविंदहि देखि देखि हौं इहै समुझि पछितानी ॥ रचि पचि सोचि सँवारि सकल अँग चतुर चतुरई ठानी । दृष्टि न दई रोमरोमनि प्रति इतनहि कला नशानी ॥ कहाकरौं अति सु द्वै नयना उमँगि चलत पग पानी । सूर सुमेर समाइ कहां धौं बुधिवासना पुरानी ॥२१ ॥ राग धनाश्री ॥ द्वै लोचन तुम्हरे द्वै मेरे । तुम प्रतिअंग बिलोकन कीन्हो मैं भई मगन एक अँग हेरे ॥ अपनो अपनो भाग्य सखी री तुम तनमय मैं कहूँ न नेरे । जो बुनिये सोई पुनि लुनिये और नहीं त्रिभुवन भट भेरे ॥ श्यामरूप अवगाहि सिंधुते पार होत चढि डोगन केरे । सूरदास तैसे ए लोचन कृपा जहाज बिनाको पेरे ॥ २२ ॥ राग आसावरी ॥ पावै कौन लिखे बिन भाल । काहूको पटरस नहिं भावत कोऊ भोजन कहुँ फिरत बिहाल ॥ तुम देख्यो हरि अंग माधुरी मैं नाहिं देख्यो कौन गोपाल । जैसे रंक तनक धन पाए ताहि महा वह होत निहाल ॥ तुमहि मोहि इतनो अंतरहै धन्य धन्य ब्रजकी तुम बाल । सूरदास प्रभुकी तुम संगनि तुमहि मिले यह दरश गोपाल ॥ ॥२३॥राग कल्याण॥ सुनहु सखी राधाकी बानी । हमको धन्य कहति आपुन धृग यह निर्मल अति जानी ॥ आपुन रंक भई हरिधनको हमहि कहति धनवंत । यह पूरण हम निपट अधूरी हम असंत यह संत ॥ धृग धृग हम धृग बुद्धि हमारी धन्य राधिका नारि । सूर श्यामको एहि

पहिचानी हम भई अंत गँवारि ॥२४॥ राग गुंडमलार ॥ धन्य राधा धन्य बुद्धि हेरी । धन्य माता धन्य पिता धन्य भगति तुव धृग हमहि नहीं सम दासी तेरी ॥ धन्य तुव ज्ञान धन्य ध्यान धनि परमान नहीं जानाति आन ब्रह्मरूपी । धन्य अनुराग धनि भाग धनि सौभाग धन्य जो वनरूप अति अनूपी ॥ हम विमुख तुम सुमुख कृष्ण प्यारी सदा निगम सुखसहस अस्तुति बखाने । सूर श्यामा श्याम नवल जोरी अटल तुमहिं विन कान्ह धीरज न आने ॥ २५ ॥ राग बिहागरो ॥ जैसे कहै श्याम हैं तैसे । कृष्णरूप अवलोकनको सखि नयन होहिं जो ऐसे ॥ तैं जो कहति लोचन भरि आये श्याम कियो तेहि ठौर । पुण्यस्थली जानि विराजे बात न हियहै और ॥ तेरे नयन वास हरि कीन्हों राधा आधा जानि । सूर श्याम नटवर वपु काछे निकसे वहि मग आनि ॥ २६ ॥ राग कान्हरो ॥ अचानक आइगए तहाँ श्याम । कृष्णकथा सब कहत परस्पर राधासंग मिली ब्रजबाम ॥ मुरली अधर धरे नटवर वपु कटि कछनी पर वारौं काम । सुभग मोर चंद्रिका शीश पर आइ गए पूरण सुख धाम ॥ तरुतमाल तरुतरुन कन्हाई दूरि करन युवतिन तनु ताम । सूर श्याम बंशी ध्वनि पूरत श्रीराधा राधा लै नाम॥२७॥ राग सूही बिलावल॥थकित भई राधा ब्रजनारि । जो मन ध्यान करति अवलोकन ते अंतर्यामी बनवारि ॥ रतनजटित पग सुभग पाँवरी नूपुरध्वनि कल परम रसाल॥मानहु चरणकमलदल लोभी निकटहि बैठे बाल मराल॥ युगलजंघ मरकतमणिशोभा विपरीति भांति सँवारे॥कटिकाछनी कनक क्षुद्रावलि पहिरे नंददुलारे ॥ हृदय विशाल माल मोतिनबिच कौस्तुभमणि अतिभ्राजत॥मानहु नभ निर्मल तारागन तामधि चंद्र बिराजत॥दुहुँकर मुरलि अधर परसाये मोहन राग बजावत ॥चमकत दशन मटकि नासापुट लटकि नयन मुख गावत ॥ कुंडल झलक कपोलनि मानहुँ मीनसुधा सर क्रीडत। भ्रुकुटी धनुष नैन खंजन मानों उडत नहीं मन ब्रीडत ॥ देखिरूप ब्रजनारि थकित भई क्रीट मुकुट शिर सोहत । ऐसे सूर श्याम शोभानिधि गोपी जन मन मोहत ॥ २८ ॥ राग कल्याण ॥ जबते निरखे चारु कपोल । तबते लोकलाज सुधि बिसरी दै राखे मनबोल ॥ निकसे आनि अचानक तिरछे पहिरे नील निचोल॥रतन जटित शिर मुकुट विराजत मणिमय कुंडल लोल ॥ कहा करौं वारिज मुख ऊपर विथके पट पद जोल। सूर श्याम करिये उत्कर्षा बश कीन्ही बिनमोल॥२९॥ राग पूरवी ॥ चारु चितौनि चंचल डोल। कही न जाति मनमें अति भावति कछु जो एक उपजत गति गोल ॥ मुरली मधुर बजावत गावत चलत करज्ञ अरु कुंडल लोल । सब छबि मिलि प्रतिबिंब विराजत इंद्रनील मणि मुकुर कपोल ॥ कुंचित केश सुगंध सुवसु मनु उडिआए मधुपनके टोल । सूर सुभग नासिका मनोहर अनुमानत अनुराग अमोल॥३०॥ राग गौरी ॥नँदनंदन वृंदावन चंद। यदुकुल नभ तिथि द्वितिय देवकी प्रगटे त्रिभु वन बंद ॥ जठर कुहूते बहरि बारिनिधि दिशिमधुपुरी सुछंद। बसुदेव शंभु शीश धरि आने गोकुल आनँदकंद ॥ ब्रजप्राची राका तिथि यशुमति शरद सरस ऋतुनंद । उडुगन सकल शाखा संकर्षन तम दनुकुल योनिकंद ॥ गोपीजन तेहि धरति चकोर गति निरखि मेटि पल द्वंद । सूर सुदेश कला षोडश पर पूरन परमानंद ॥ ३१ ॥ राग गौरी ॥ देखि सखी हरिको मुख चारु । मनहु छिडाइलिये नँदनंदन वा शशिको सत सारु ॥ रूप तिलक कच कुटिल किरनि छवि कुंडल कल पिस्तारु । पत्रावलि परिवेष सुमन सरि मिल्यो मनहु उडदारु ॥ नयनचकोर विहंग सूर सुनि पिवत न पावत पारु । अब अंबर ऐसो लागत है जैसो जूठो थारु ॥ ३२ ॥ राग कान्हरो ॥ देखि री हरिके चंचल तारे । कमल मीनको कहा एती छवि खंजनहू न जात अनुहारे ॥ वे देखि निरखि नमित

मुरली पर कर मुख नयन एक भए वारे । मनो सरोज विधु वैर विरंचि करि करत नाद बाहन चुचुकारे ॥ उपमा एक अनूपम उपजत कुंचित अलक मनोहर भारे । बिडरत बिझुकि जानि रथते मृग जनु सशंकि शशि लंगर सारे । हरि प्रति अंग विलोकि मानि रुचि व्रज वनितानि प्राण धनवारे। सूरश्याम मुख निरखि मगन भईं यह बिचारि चित अनत न टारे॥ ३३॥ राग सोरठ ॥ हरि मुख निरखत नैन भुलाने । ये मधुकर रुचि पंकज लोभी ताहीते न उड़ाने ॥ कुंडल मकर कपोलनक ढिग जनु रवि रैनि विहाने । भ्रुव सुंदर नैननि गति निरखत खंजन मीन लजाने ॥ अरुण अधर ध्वज कोटि बज्रद्युति शशिगन रूप समाने ।कुंचित अलक सिली मुख मानो लै मकरंद निदाने ॥ तिलक ललाट कंठ मुकुतावलि भूषन मय मनि साने । सूरदास स्वामी अंग नागर ते गुणजात न जाने ॥ ॥ ३४ ॥ राग केदारो ॥देखिरी नवल नंद किशोर । लकुटसों लपटाइ ठाढे युवति जन मन चोर ॥ चारु लोचन हँसि बिलोकनि देखिकै चितभोर । मोहनी मोहन लगावत लटकि मुकुट झकोर ॥ श्रवण ध्वनि सुरनाद मोहत करत हिरदे कोर। सूर अंग त्रिभंग सुंदर छबि निरखि तृण तोर ॥ ३५ ॥ ॥राग कान्हरो॥व्रजवनिता देखति नँदनंदन। नवघन नील वरन ताऊपर खौर कियो तनु चंदन ॥ कनकवरन कटि पीत पिछौरी उर भ्राजत वनमाला। निर्मल गगन श्वेत बादर पर मनो दामिनी जाला । मुक्तामाल विपुल वग पंगति उडत एक भई जोति । सूर श्याम छबि निरखति युवती हरष परस्पर होति ॥ ३६ ॥ राग सूही ॥ प्रातसमय आवत हरि राजत । रत्नजटित कुंडल सखि श्रवणनि तिनकी किरननि सुरतन लाजत ॥ सातै राशि मेलि द्वादशमें कटि मेखला अलंकृत साजत । पृथ्वी मथि पिता सो लैकर मुख समीप मुरली ध्वनि बाजत॥ जलधि तात तेहि नाम कंठके किनके पंख मुकुट शिरभ्राजत । सूरदास कहै सुनहु गूढ हरि भक्तनि भजत अभक्तनि भाजत ॥ ३७ ॥ ॥ राग नट ॥ हरि तन मोहिनी माई । अंग अंग अनंग शत शत वरनि नाहिं जाई ॥ कोऊ निरखि शिर मुकुटकी छबि सुरति बिसराई । कोऊ निरखि विथुरी अलक मुख अधिक सुखदाई ॥ कोऊ निरखि रही भालचंदन एकचित लाई । कोऊ निरखि विथुरी भ्रुकुटिपर नैन ठहराई ॥ कोऊ निरखि रही चारुलोचन निमिष भरमाई । सूर प्रभुकी निरखिशोभा कहत नाहिं आई ॥ ३८ ॥ राग सारंग ॥ हरिमुख किधौं मोहनीमाई । अवलोकत अघात नहिंमेरे नैना ठगे ठगोरी लाई ॥ कुंडल किरनि निकट भूलोचन आरति मीन दृग सम चपलाई । श्रवनरंध्र नाहिं निठुन दास जनु काम कुवैनी कलित बनाई ॥ छाजत रदन रदन छंदकी छबि मंदमाधुरी गिरा सुहाई । जया कुसुम दल मनहु कमलपर तडितुथ कोश कोकिला गाई ॥ सबविधि वशीकरनकी नाकी बलितबलाक अनुज बलझाई । सूरदास प्रभु वदन विलोकत जकित थकित चित अनत न जाई ॥ ३९ ॥ राग गुंडमलार ॥ श्याममुखराशि रसराशि भारी । रूपकी राशि गुणराशि यौवन राशि थकितभई निरखि नवतरुनी नारी ॥ शीलकीराशि जसराशि आनंदराशि नीलनव जलद छबि बरनकारी । दयाकी राशि विद्याराशि बलराशि निर्दयराशि दनुजकुल प्रहारी ॥ चतुरई राशि छलराशि कलराशिहारि भजै जेहि हेतु तेहि देनहारी । सूरप्रभु श्याम सुखधाम पूरण काम लसति कटि पीत मुखमुरलिधारी ॥ राग विहागरो ॥ सुंदर बोलत आवत वैन । ना जानौ तेहि समय सखीरी सबतन श्रवन कि नैन ॥ रोम रोम में शब्द सुरतिकी नख शिख ज्यों चखऐन । येते मान बनी चंचलता सुनी न समुझी सैन ॥ तबताकि जाकि ह्वैरही चित्रसी पल न लगतचितचैन । सुनहु सूर यह सांचकी संभ्रम सपन किधौं दिन रैन ॥४०॥ राग मलार ॥ नैना माई भूले अनत न

जात । देखिसखी शोभा जो बनीहै माधवके मुसकात ॥ दाडिम दशन निकट नासा शुक चोंच चलाइ न खात । मनो रतिनाथ हाथ भृकुटी धनु ता अवलोकि डरात ॥ वदन प्रभा मुख चंचल लोचन आनँद उर न समात ।मानहुँ भौंह युवारथ जोते शशि न चलत मृगमात॥कुंचित केश मधुर ध्वनि मुरली सूरदास सुरसात । मनहुं कमलपर कोकिल कूजत अलिगण उपर उडात ॥ ४१ ॥ राग कान्हरो ॥श्याम कमलपद नखकी शोभा । जे नख चंद्र इंद्रशिरपरसे शिव विरंचि मन लोभा ॥ जे नखचंद्र सनक मुनि ध्यावत नहिं पावत भरमाही । ते नखचंद्र प्रगट व्रज युवती निरखि निरखि हरषाही ॥ जे नखचंद्र फनीन्द्र हृदयते एकौ निमिष न टारत । जे नखचंद्र महामुनिनारद पलक न कहू बिसारत॥जे नखचंद्र भजन खलनाखत रमा हृदय जेहि परसत।सूर श्याम नखचंद्र विमल छवि गोपी जनमिलि दरशत॥४२॥राग आसावरी॥श्याम हृदय जलसुतकी माला अतिहि अनूपम छाजै री। मनहु बलाक पांति नवघनपर यह उपमा कछु भ्राजै री ॥ पीत हरित सित अरुण माल बन राजत हृदय विशाल री।मानहु इंद्रधनुष नभमंडल प्रगटभयो तिहिकालरी॥भृगुपद चिह्न उरस्थल प्रगटे कौस्तुभमणि ढिग दरशत री। बैठे मनु पटवधू एक सँग अर्धनिशा मिलि हरषत री ॥ भुजाविशाल श्यामसुंदरकी चंदनखौरि चढाए री । सूरसुभग अँग अँगकी सोभा ब्रजललना ललचाए री ॥४३॥ राग मलार ॥ निरखि सखि सुंदरताकी सींव । अधर अनूप मुरलिका राजति लटकि रहनि अधग्रीव॥ मंद मंद सुर पूरत मोहन रागमलार बजावत । कबहुँक रीझि मुरलिपर गिरिधर आपुहि रसभरि गावत ॥ हर्षत लखत दशनावलि पंगति व्रजवनिता मनमोहत । मर्कत मणि पुट बिचमुक्ताहल बदन धरे मनु सोहत ॥ मुख विकसत शोभा एक आवत मनोराजीव प्रकाश । सूर अरुण आग मन देखिकै प्रफुलित भए हुलास॥४४॥ राग टोडी॥गोपीजन हरिवदन निहारति ।कुंचित अलक विथुरि रहे भ्रुवपर तापर तन मन वारति ॥ वदन सुधा सरसीरुह लोचन भृकुटी दोउ रखवारी । मनोमधुप मधुपानहि आवत देखि डरत जियभारी ॥ एक एक अलक लटकि लोचन पर यह उपमा एक आवत। मनहु पन्नगिनि उतरि गगनते दलपर फन परसावत ॥ मुरली अधर धरे कलपूरत मंद मंद सुरगावत । सूर श्याम नागर नारिनके चंचल चितहि चोरावत ॥ ४५॥राग सूही बिलावल ॥ देखि सखी यह सुंदरताई । चपलनैन बिच चारुनासिका यकटक नैन रही तहांलाई ॥ करति विचार परस्पर युवती उपमा आनति बुद्धि बनाई । मानहु खंजन बिच शुक बैठो यह कहिकै मन जात लजाई ॥ कछु एक तिलक प्रसूनकी आभा मन मधुकर जहां रह्यो लुभाई । सूरश्याम नासिका मनोहर यह सुंदरता उन कहां पाई ॥ ४६ ॥ राग रामकली ॥ मनोहरहै नैननकी भांति । मानहुं दूरि करत बल अपने शरद कमलकी कांति ॥ इंदीवर राजीव कसेसे जीते सब गुण जाति । अतिआनंद सप्रौढा ताते विकसत दिन अरु राति ॥ खंजरीट मृग मीन विचारति उपमाको अकुलाति । चंचल चारु चपल अवलोकनि चितहि न एक समाति ॥ जबलगि परत निमिष अंतरा युग समान पल जात । सूरदास वह रसिक राधिका निमिष पर अति अनखात ॥ ४७ ॥ आजु सखी देखे श्याम नए री । निकसे आनि अचानक अबहीं इत फिरि फिरि चितए री ॥ मैं तबते पछिताति इहै तनु नैनन बहुत भए री । जो विधिना इतनी जानतहै कत दृग दोइ दये री ॥ सबद लेउ लाख लोचनकहे जो कोउ करत नये री । हरिप्रतिअंग विलोकनको मन मैं पनके पठए री ॥ अपने चोप बहुत कह पइये येहरिसंग गये री ॥ थकेचरण सुनि सूर मनो गुण मदन बाण बिधये री ॥४८॥ राग गूजरी ॥ देखि री हरिके चंचलनैन । खंजन मीन मृगज चपलाई नहिं पटतर एकसैन ॥ राजिवदल इंदी वरसतदल

कमलकुसेसै जाति।निशि मुद्रित प्रातहि ए बिगसत ए बिगसत दिन राति॥अरुण श्वेत सित झलक पलक प्रति को बरणै उपमाइ।मनो सरस्वति गंगा यमुना मिलि आगम कीन्हौं आइ॥ अवलोकनि जल धार तेज अति तहां न मन ठहरात। सूर श्याम लोचन अपार छबि उपमा सुनि शरमात४९॥ राग सोरठा॥देखु सखी मोहन मन चोरत। नैन कटाक्ष बिलोकन मधुरी सुभग भ्रुकुटी बिबि मोरत॥ चंदनखौरि ललाट श्यामके निरखत अति सुखदाई। मानहुं अर्धचंद्र तट अहिनी सुधा चोरावन आई॥ मलयज भाल भ्रुकुटि रेखाकी कटि उपमा एक ल्यावत। मनो एक संग गंग यमुन नभ तिरछी धार बहावत॥ भ्रुकुटी चारु निरखि ब्रजसुंदरि यह मन करति बिचार। सूरदास प्रभु शोभा-सागर कोउ न पावत पार॥५०॥राग रामकली॥देखि री देखि कुंडललोल।चारु श्रवणनि ग्रहित कीन्हीं झलक ललित कपोल॥ बदन मंडलसुधा सरवर निरखि मन भयो भोर। मकर क्रीडत गुप्त परगट रूप जल झकझोर॥ नैन मीन भुवंगिनी भ्रुअ नासिका थलबीच। सरस मृगमद तिलक शोभा लसतिहै गलकीच॥ मुख बिकास सरोज मानहु युवति लोचन भृंग॥ बिथुरी अलकैं परी मानहुं प्रेमलहरि तरंग॥ श्याम तुम छबि अमृत पूरण रच्यो काम तडाग। सूर प्रभुकी निरखि शोभा ब्रज तरुणि बडभाग॥५१॥ राग धनाश्री॥ हरिमुख निरखति नागरि नारि। कमलनयनके कमल बदनपर बारिज बारिज बारि॥ सुमति सुंदरी परस प्रियारस लंपट माडी आरि। हारि जोहारि जो करत बसीठी प्रथमहि प्रथम चिन्हारि॥ राखत ओट कोटि यतननिकरि झांपति अँचल झवारि। खंजन मनहु उडनको आतुर सकत न पंख पसारि॥ देखि स्वरूप श्यामसुंदरको रही न पलकसँभारि।देखहु सूर अधिक सूरति तिन अजहुँ न मानी हारि५२॥ हरिमुख किधौं मोहनी माई। बोलत बचन मंत्रसों लागत गति मति जाति भुलाई॥ कुटिल अलक राजत भ्रुव ऊपर जहां तहां रहे बगराई।श्याम फांसि मन कर्‌ष्यौं हमरो अब समुझी चतुराई॥ कुंडल ललित कपोलनिं झलकत इनकी गति मैं पाई। सूर श्याम युवती मन मोहन ये सँग करत सहाई॥५३॥ राग नट॥ निरखति रूप नागरि नारि। मुकुट पर मन अटकि लटक्यो जात नहिं निरुआरि॥ श्याम तनुकी झलक आभा चंद्रिका झलकाइ।बार बार बिलोकि थकि रही नयनही ठहराइ॥ श्याम मर्कतमणि महानग शिखिनि निर्त्तत मोर। देखि जलधर हर्ष उरपर नहीं आनँद थोर॥ कोउ कहति सुरचाप मानो गगन भयो प्रकास। थकित ब्रजललना जहां तहँ हरष कबहुँ उदास॥ निरखि जो जेहि अंग राची तहीं रही भुलाइ। सूर प्रभु गुणराशिशोभा रसिक जन सुखदाइ॥५४॥ राग बिहागरो॥ देखि री देखि शोभाराशि। काम पटतर कहा दीजै रमा जिनकी दासि॥ मुकुट शिर श्रीखंड सोहै निरखि रही ब्रजनारि। कोटि सुर कोदंड आभा छिरकि डारै वारि॥ केश कुंचित बिथुरि भुवपर बीच शोभा भाल। मनहुं चंद्रहि अब लजान्यो राहु घेरो जाल॥ चारु कुंडल सुभग श्रवणनि को सके उपमाइ। कोटि कोटि कला तरनि छबि देखि तनु भरमाइ॥ सुभग मुख पर चारु लोचन नासिका यहि भाँति। मनो खंजन बीच शुक मिलि बैठहैं एक पांति॥ सुभग नासा तर अधरछबि रसभरे अरुनाइ। मनो बिंब निहारि शुक भ्रुव धनुप देखि डेराइ॥ हँसत दशननि चमकताई वज्रकन रुचिपांति। दामिनी दारिम नहीं सम कियो मन अति भ्रांति॥ चिबुक पर चितवत चोरावत नवलनंद किशोर। सूर प्रभुकी निरखि शोभा भई तरुनी भोर॥ ॥५५॥ राग सोरठ॥ तन मन नारि डारत वारि। श्याम शोभासिंधु जान्यो अंग अंग निहारि॥पचि रही मन ज्ञान करि करि लहति नाहिन तीर। श्याम तन जलराशि पूरण महा गुण गंभीर॥पीतपट

फहरानि मानो लहरि उठत अपार।निरखि छबि थकि तीर बैठी कहूं वार न पार॥चलत अंग त्रिभंग करिकै भौंहभाव चलाइ। मनो बिच बिच भौंर डोलत चित परत भरमाइ॥ श्रवण कुंडल मकर मानो नैन मीन विशाल। सलिल झलकनि रूप आभा देख री नँदलाल॥ बाहुदंडभुजंग मानो जलधि मध्य बिहार। मुक्तामाला मनों सुरसरि ह्वै चली द्वयधार॥ अंग अंग भूषण विराजत कनक मुकुट प्रभास। उदधि मथि नग प्रगट कीन्हों श्रीसुधापरगास॥ चकृत भई तिय निरखि शोभा देहगति बिसराइ। सूर प्रभु छबिराशि नागर जानि जानि न जाइ॥९६॥ राग सारंग॥ बैठी कहा मदन मोहनको सुंदर बदन विलोकि। जा कारण घूँघट पट अब लौं अँखियां राखी रोकि॥ फबि रहे मोरचंद्रिका माथे छबिकी उठत तरंग। मनहुँ अमरपति धनुष विराजत नवजलधरके संग॥ रुचिर चारु कमनीय भाल कुंकुमको तिलक दिये। मानहुँ अखिल भुवनकी शोभा राजत उदय किये॥ मणिमय जडित लोल कुंडलकी आभा झलकत गंड। मनहुँ कमल ऊपर दिनकरकी पसरी किरनि प्रचंड॥ भ्रुकुटी कुटिल निकट नैननके चपल होत यहि भाँति। मनहुँ तामरस पारस खेलत बालभृंगकी पांति॥ कोमल श्याम कुटिल अलकावलि ललितकपोलन तीर। मानहुं सुभग शरद इंदु ऊपर मधुपनिकी अति भीर॥ अरुण अधर नासिका निकाई बदत परस्पर होड। सूर सो मनसा भई पांगुरी निरखि डगमगे गोड॥९७॥राग केदारो॥ करिमन नंदनंदन ध्यान। सेइ चरण सरोज शीतल तजि विषै रस पान॥ जानु जंघ त्रिभंग सुंदर कलित कंचन दंड। काछिनी कटि पीत पट्टदुति कमलकेसर खंड॥ मनु मराल प्रवाल छौना किंकिनी कलराउ। नाभिह्रदय रोमावली अलि चले सैन सुभाउ॥ कंठ मुक्तामाल मलयज उर बने बनमाल। सुरसरीके तीर मानो लता श्याम तमाल॥ बाहु पानि सरोज पल्लव गहे मुख मृदु बेनु। अति विराजत बदन विधुपर सुरभि रंजित रेनु॥ अरुण अधर कपोल नासा परमसुंदर नैन। चलित कुंडल गंडमंडल मनहु निर्तत मैन॥ कुटिल कच भ्रूतिलक रेखा शीशशिखिनि श्रीखंड। मनु मदन धनु शर सँधाने देखि घन कोदंड॥ सूर श्रीगोपालकी छबि दृष्टि भरि भरि लेत। प्राणपतिकी निरखि शोभा पलक परन न देत॥९८॥ राग नटनारायण॥ सजनी निरखि हरिको रूप। मनसि वचसि विचारि देखो अंग अंग अनूप॥ कुटिल केश सुदेश अलिगन बदन शरद सरोज। मकर कुंडल किंकिनी छबि दुरति फिरति मनोज॥ अरुण अधर कपोल ना सा सुभग ईषद हास। दशनकी द्युति तडित नव शशि भ्रुकुटि मदन बिलास॥ अंग अंग अनंग जीते रुचिर उर बनमाल। सूर शोभा हृदय पूरण देत सुख गोपाल॥९९॥राग नट॥ नैननि ध्यान नंदकुमार। शीश मुकुट श्रीखंड भ्राजित नहीं उपमा पार॥ कुटिल केश सुदेश राजत मनहुँ मधुकर जाल। रुचिर केसरि तिलक दीन्हों परमशोभा भाल॥ भ्रुकुटि बंकट चारु लोचन रही युवती देखि। मनौं खंजन चाप डरि डरि उडत नहिं तेहि पेखि॥ मकर कुंडल गंड झलमल निरखि लज्जित काम। नासिकाछबि कीर लज्जित कवि न बरनत नाम॥ अधर विद्रुम दशन दाडिम चिबुकहै चितचोर। सूर प्रभु मुखचंद्र पूरण नारि नैन चकोर॥१४००॥राग केदारो॥ हमारे श्याम लालहो। नैन बिशालहो मोही तेरी चालहो॥ मोरमुकुट डोलनि मुख मुरली कल मंद।मनों तमाल शिखा शिखि नाचत आनंद॥ मकराकृत कुंडल छबि राजत लोल कपोल। ईषद अधर मुसुकिन बिच मधुर २ बोल॥ चपल चितवनि मनोहर राजत भ्रुवभंग। धनुष बाण डारिके बशह्वोत कोटि अनंग॥ बदनसुधाको सरोवर कुटिल अलक वारि। व्रज युवती मृगिनी रचि तिनके

फल पारि ॥ पीतांबर छबि निरखत दामिनि द्युति लजाइ। चमकि चमकि सावन मनों घनमें दुरिजाइ ॥ चरण कमल अवलंबित राजित बनमाल। प्रफुलित है है लता मनों चढीं तरु तमाल ॥ सूरदास वा छबिपै वारौं तन मन प्राण। गिरिधर पिय देखि देखि कहा करौं अनुमान ॥ १ ॥ राग सारंग॥ देख सखी सुंदर घनश्याम। सुंदर मुकुट कुटिल कच सुंदर सुंदर भाल तिलक छबि धाम ॥ सुंदर भ्रुव सुंदर अति लोचन सुंदर अवलोकनि विश्राम। अतिसुंदर कुंडल श्रवणनिवर सुंदर झलक नि रीझत काम ॥ सुंदर चारु नासिका सुंदर सुंदर मुरली अधर उपाम। सुंदर दशन चिबुक अति सुंदर सुंदर हृदय बिराजत दाम ॥ सुंदर भुजा पीत कटि सुंदर सुंदर कनक मेखला झाम। सुंदर जंघ जानु पद सुंदर सूर उधारन नाम ॥ २ ॥ राग धनाश्री ॥ देखि देखि री नंदकुलके उधारी। मात पितु दुरित उद्धरन ब्रजउद्धरन धरनि उद्धरन शिर मुकुटधारी ॥ पतित उद्धरन अपने भक्त उद्धरन दीनउद्धरन कुंडलनि धारी। जगत उद्धरन तिहुँ लोकके उद्धरन बलिहि उद्धरन पग पीठ धारी ॥ पूतना उद्धरन दनुज कुलउद्धरन तृणा उद्धरन मुख मुरलिधारी। शकट उद्धरन केशी प्रबल उद्धरन बका उद्धरन अरुण अधर धारी ॥ अघा उद्धरन गाइ ग्वालके उद्धरन वृषभ उद्ध रन बनमाल धारी। बच्छ उद्धरन ब्रह्मा उद्धरन येइ प्रभुयज्ञके पति यज्ञोपवीत धारी॥ काली उद्धरन फन फन सहित उद्धरन दवा उद्धरन अंग मलयधारी। ग्राह उद्धरन गजराज उद्धरन ये शिला उद्धरन कटि पीत धारी ॥ यदुकुल उद्धरन द्रौपदी उद्धरन रुक्मिणी उद्धरन कर लकुट धारी। सिंधु उद्धरन सीता प्यारी उद्धरन जै बिजय के उद्धरन धनुष धारी ॥ त्रास उद्धरन प्रहलादके उद्धरन प्रबल नर सिंह अवतार धारी। हिरणकश्यपके उद्धरन हिरण्याक्षके उद्धरन वेद उद्धरन बल भुजा धारी ॥ धरम उद्धरन यह कर्म उद्धरन प्रभु सुभग कटि किंकिनी पीत धारी। सूर उद्धरन सुरलोकके उद्धरन हरि कंस उद्धरन एई मुरारी ॥ ३ ॥ नँद नंदन मुख देख्यो नीके। अंग अंग प्रति कोटि माधुरी निरखि होत सुख जीके। सुभग श्रवण कुंडलकी आभा झलक कपोलनि पीके ॥ दह दह अमृत मकर क्रीडत मनौ यह उपमा कछु हीके। और अंगकी सुधि नहिं जानै करे कहतिहौं लीके सूरदास प्रभु नटवर काछे रहत है रतिपति वीके ॥ ४ ॥ राग रामकली॥ देखि री देखि कुंडल झलक। नैन द्वै छबि धरौं कैसे लगत तापर पलक ॥ लसत चारुकपोल दुहुँ बिच सजल लोचन चार। मुख सुधा सरमीन मानौं मकर संग विहार ॥ कुटिल अलक सुभाइ हरिके भुवनि पेरे रहे आइ। मनों मन्मथ फांदि फंदनि मीन विवि तटलयाइ ॥ चपल लोचन चपल कुंडल चपल भ्रुकुटीवंक। सखा व्याकुल देखि अपने लेत वनत नशंक ॥ सूर प्रभु नंदसुवनकी छबि बरनि कापै जाइ। निरखि गोपी निकरि बिथकी बिधिहि अति रिसपाइ ॥ ५ ॥ राग जयतश्री ॥ विधिना अतिही पोच कियो री। कहा बिगार कियो हम वाको ब्रज काहे अवतार दियो री ॥ यह तौ मन अपने जानत हौं येते पर क्यों निठुर हियो री। रोम रोम लोचन एकटक करि युवतिन प्रति काहे न ठयोरी ॥ अँखियाँ द्वै छबिकी चमकनि वह हम तौ चाहति सबै पियो री। सुनि सजनी यह करनी अपनी अपनेही शिर मानि लियो री ॥ हम तौ पाप कियो भुगतै को पुण्य प्रगट क्यों निठुर हियो री। सूरदास प्रभु रूप सुधानिधि पुट थोरो बिधि नहीं वियोरी ॥ ६ ॥ राग धनाश्री॥ सुन री सखी बचन एक मोसों। रोम रोम प्रति लोचन चाहति द्वै सावितहैं तोसों ॥ मैं विधना सों कहौं कछू नाहिं नितप्रति निमको कोसों। यों जो नीके दोऊ रहते निरखत रहती होसों ॥ एक एक अंग अंग छबि धरती मैं जो कहती तासों। सूर कहा तू कहति

अयानी काम परचो सब जोसों ॥ ७ ॥ राग कान्हरो ॥ कहा काहूको दोष लगावै । निमिषौ कहा कहति कहो बिधिसों कहा नैननि पछितावै ॥ श्याम हितू कैसे करि जानति औरौ निठुर कहावे । क्षणमें और और अँग शोभा जो ए देखन पावे ॥ जबहीं एकटक करि अवलोकत तबहीं वै झलकावै । सूर श्यामके चरित लखै को एई बैर बढावै ॥ ८ ॥ राग नट ॥ लहनी करम के पाछे । दियो आपनों लहै सोई मिले नहिं पाछे ॥ प्रगटहीहैं श्याम ठाढे कौन अंग केहि रूप । लह्यो काहू कहो मोसों श्याम है ठगभूप ॥ प्रेम जावक धनी हरिसे नैन पुट कह लेहि । अमृत सिंधु हिलोरि पूरण कृपा दरशन देहि ॥ पाइए सोई सखी री लिखो जितनो भाल । सूर उत कछु कमी नाहीं छबि समुद्र गोपाल ॥ ९ ॥ राग सूही बिलावल ॥ देख सखी अधरनकी लाली । मणि मरकतते सुभग कलेवर ऐसेहैं बनमाली ॥ मनो प्रातकी घटा साँवरी तापर अरुन प्रकाश । ज्यों दामिनि बिच चमकि रहतहै फहरत पीत सवास ॥ कीधौं तरुन तमाल बेलि चढि युग फल बिंब सु पाक्यो । नासा कीर आय मनों बैठो लेत बनत नहिं ताक्यो ॥ हँसत दशन एक शोभा उपजत उपमा यदपि लजाइ । मनों नीलमणि पुट मुकुतागन बंदन भरि बगराइ ॥ किधौं वज्रकन लाल नगनि खचि तापर बिद्रुम पांति । किधौं सुभग बंधूप कुसुमपर झलकत जलकन कांति ॥ किधौं अरुण अंबुज बिच बैठी सुंदरताई आई।सूर अरुण अधरनकी शोभा वर्णत बरनि न जाई॥ १० ॥ राग धनाश्री ॥ श्यामरूप देखनकी साध मेरी माई । कितनो पचिहारि रही देत नाहिं दिखाई॥मन तौ निरखत सु अंगमें रही भुलाई । मोसों यह भेद कहौ कैसे वहि पाई ॥ आपुन अंग अंग बिधो मोको बिसराई । बार बार कहत इहै तू क्यों नहिं आई ॥ अबहूं लै जात साध वाहि बोलै लाई । सूर श्याम छबि अगाध निरखत भरमाई ॥ ११ ॥ राग बिलावल ॥ सुनहु सखी मैं बूझति तुमको काहू हरिको देखेहैं । कैसो तन कैसो रँग देखियत कैसी बिधि करि भेपहैं ॥ कैसो मुकुट कुटिल कच कैसे सुभग भाल भ्रुव नीकेहैं । कैसे नैन नासिका कैसी श्रवणनि कुंडल पीकेहैं ॥ कैसे अधर दशन दुति कैसी चिबुक चारु चित चोरतहैं । कैसे निरखि हँसत काहू तन कैसे बदन सकोरत हैं ॥ कैसो उरमाला है शोभित कैसी भुजा बिराजतहैं । कैसे कर पहुँची हैं कैसी कैसी अँगुरिआ राजत हैं ॥ कैसी रोमावली श्यामके नाभि चारु कटि सुनियतहैं ॥ कैसी कनक मेखला कैसी कछनी यह मन गुनियतहैं ॥ कैसे जंघ जानु कैसे दोउ कैसे वदन खजानतिहैं । सूर श्याम अँग अंगकी शोभा देखेकी अनुमानतिहैं ॥ १२ ॥ राग रामकली ॥ ऐसे सुने नंद कुमार । नख निरखि शशि कोटि वारत चरण कमल अपार ॥ जानु जंघ निहारि रंभा करनि डारत वारि । काछनी पर प्राण वारत देखि शोभाभारि ॥ कटि निरखि तनु सिंह वारत किंकिनी जु मराल । नाभि पर ह्रद आपु वारत रोमावली अलिमाल ॥ ह्रदय मुकुतामाल निरखत वारि अवलि बलाक । करज कर पर कमल वारत चलति जहां तहां साक ॥ भुजा पर वर नाग वारत गये भागि पताल । ग्रीवकी उपमा नहीं कहुँ लसति परम रसाल ॥ चिबुकपर चित वारि हारत अधर अंबुज लाल । बंधूक बिद्रुम बिंब वारत ते भये बेहाल ॥ वचन सुनि कोकिलावारत दशन दामिनि कांति । नासिकापर कीर वारत चारु लोचन भांति ॥ कंज खंजन मीन मृग शावकनि डारति वार । भ्रुकुटि पर सुर चाप वारत तरनि कुंडल हारि ॥ अलक पर वारत अँध्यारी तिलक भाल सुदेश । सूर प्रभु शिर मुकुटधारे धरे नटवर भेप ॥ १३ ॥ राग सारंग॥ ऐसी बिधि नंदलाल कहत सुने माई री।देखे जो नैन रोम रोम प्रति सुभाई री ॥ बिधिने द्वै नैन रचे अंग ठानि ठान्यो । लोचन नहिं बहुत दिये जानिकै सुलान्यो ॥चतुरता

प्रवीनता विधाताको जानै। अब कैसे लगत हमहि बातें न अयाने॥ त्रिभुवन पति तरुन कान्ह नट-वर बपुकाछे। हमको द्वै नैन दिये तेऊ नाहिं आछे॥ ऐसो विधिको विवेक कहौं कहा वाको। सूर कबहुं पाऊं जो कर अपने ताको॥ १४॥ राग नट॥ मुखपर चंद्र डारौं वारि। कुटिल कच पर भौंर वारौं भौंह पर धनु वारि॥ भालकेसरि तिलक छबिपर मदन शत शर वारि॥ मनु चली वहि सुधा धारा निरखि मनधौं वारि॥ नैन खंज-न मृग मीन वारौं कमलके कुलवारि॥ मनों सुरसति यमुन गंगा उपमा डारौं वारि॥ निरखि कुंडल तरुनि वारौं कूप श्रवननि वारि॥झलक ललिता कपोल छबिपर मुकुर शत शत वारि॥ नासिकापर कीर वारौं अधर विद्रुम वारि॥ दशन एकन वज्र वारौं बीज दाडिम वारि॥ चिबुकपर चित वित्त वारौं प्राण डारौं वारि। सूर हरिकी अंग शोभा कौं सकै निरवारि॥ १५॥ राग सोरठ॥ श्याम उर सुधादह मानौ। मलय चंदन लेप कीन्हें बरन यह जानौ॥ मलय तनु मिलि लसति शोभा महाजल गंभीर। निरखि लोचन भ्रमत पुनि २ धरत नहिं मन धीर॥ उरज भँवरी भँवर मानों मीन मणिकी कांति। भृगुच रण हृदय चिह्न ये सब जीव जल बहुभांति॥ श्यामबाहु बिशाल केसरि खौंरि बिविधि बनाइ। सहज निकसे मगर मानों कूल खेलत आइ॥ सुभग रोमावली की छबि चली दहते धार। सूर प्रभुकी निरखि शोभा युवति बारंबार॥ १६॥ मनु मधुकर पद कमल लुभान्यो। चित्त चकोर चंद्र नख अटक्यो यकटक पल न भुलान्यो॥ बिनही कहे गये उठि मोते जात नहीं मैं जान्यो। अब देखो तनमें वे नाहीं कहा जियहि धौं आन्यो॥ तबते फेरि तके नहिं मो तन नखचरणनहित मान्यो॥ सूरदास वे आपु स्वारथी परवेदन नहिं जान्यो॥ १७॥ राग मारू॥ श्याम सखि नीके देखे नाहीं। चित-वतही लोचन भरिआए बार बार पछिताहीं॥ कैसेहु करि यकटक राखति नैकहिमें अकुलाहीं। निमिष मनो छबि पर रखवारे ताते अतिहि डराहीं॥ कहा करैं इनको कहा दोष न इन अपनीसी कीन्हीं। सूर श्याम छवि पर मन अटक्यो॥ उन सब शोभा कीन्हीं॥ १८॥ राग गौरी॥ मन लुब्ध्यो हरिरूप निहारि। जांदिन श्याम अचानक आयो तबते मोहिं बिसारि॥ इंद्रिन संग लगाइ गयो ह्यां डेरा निकसे झारि। ऐसे हाल करत री कोऊ रही अकेली नारि॥ फेरि न मेरी उहि सुधि लीन्हीं आपु करत दुख भारि। सूर श्यामको उरहनो दैहौं पठवत काहे न मारि॥ १९॥ अथ अनुरागसमयके पद॥ रामकली॥ पुनि पुनि कहतिहै ब्रजनारि। धन्य बड भागिनी राधा तेरे वश गिरिधारि॥ धन्य नंदकुमार धनि तुम धन्य तेरी प्रीति। धन्य तुम दोउ नवलजोरी कोक कलानि जीति॥ हम बिमुख तुम कृष्णसंगिनि प्राण एक द्वै देह। एक मन एक बुधि एकचित दुहुनि एक सनेह॥ एक छिनु बिन तुमहि देखे श्याम धरत न धीर। मुरलिमें तुव नाम पुनि पुनि कहतहैं बलबीर॥ श्याममणि मैं परखि लीन्हों महाचतुर सुजान। सूर प्रभुके प्रेमही वश कौन तोसरि आन॥ २०॥ राग विहागरो॥ राधा परम निर्मल नारि। कहतिहौं मन कर्मना करि हृदय दुविधा टारि॥ श्यामकी एक तूही जान्यो दुराचरनो और। जैसे घट पूरण न डोलै अध खुलो डगडौर॥ धनी धन कबहूँ न प्रगटै धरै धनहि छिपाइ। तैं महानग श्याम पायो प्रगटि कैसे जाइ॥ कहतिहौं यह बात तोसों प्रगट करिहौं नाहिं। सूर सखी सुजान राधा परस्पर मुसकाहिं॥ २१॥ राग गौरी॥ श्यामको तैंहीं है पहिचाने। सांची प्रीति जानि मनमोहन तेरेहि हाथ बिकाने॥ हम अपराध कियो कहि तुमसों हमही कुलटी नारि। तुमसों उनसों बीच नहीं कछु तुम दोऊ बरनारि॥ धन्य सुहाग भाग है तेरी धनि बडभागी श्याम। सूरदास प्रभुसे पति जाके तोसी जाके वाम॥ २२॥ राग सोरठ॥ राधा श्यामकी प्यारी। कृष्णपति सर्वदा

तेरे तू सदा नारी ॥ सुनत वाणी सखी सुखकी जिय भयो अनुराग । प्रेम गदगद रोम पुलकित समुझि अपने भाग ॥ प्रीति परगट कियो चाहै वचन बोलि न जाइ । नंदनंदन कामनायक रहे नैननि छाइ ॥ हृदयते कहुँ टरत नाहीं कियो निहचल वास । सूर प्रभु रस भरी राधा दुरत नाहिं प्रकाश ॥ २३ ॥ राग जयतश्री ॥ सुनि सजनी मेरी एक बात । तुम तौ अतिही करति बडाई मन मेरो सरमात ॥ मोसों हँसति श्याम तुम एकै यह सुनिकै मरमात । एक अंगको पार न पावति चकित होइ भरमात ॥ वह मूरति द्वै नयन हमारे लिखी नहीं करमात । सूर रोम प्रति लोचन देतो विधिना पर तर मात ॥ २४ ॥ राग कल्याण ॥ जो बिधना अपवश करि पाऊं । तौ सखि कह्यो होइ कछु तेरो अपनी साध पुराऊं ॥ लोचन रोम रोम प्रति माँगौं पुनि पुनि त्रास दिखाऊं । यकटक रहैं पलक नहिं लागैं पद्धति नई चलाऊं ॥ कहा करौं छबि राशि श्याम घन लोचन द्वै नहिं ठाऊं । येते पर ये निमिष सूर सुनि यह दुख काहि सुनाऊं ॥ २५ ॥ राग बिलावल ॥ कहा करौं विधि हाथ नहीं । वह सुख यह तनु दशा हमारी नैननिको रिस मरत महीं ॥ अंग अंग कीनी विधि वन ये द्वै नैना देखति जबहीं । ऐसो कौन ताहि धरि आनै कहा करौं खीझति मनही ॥ बडो सुजान चतुरई नीकी जगत पिता कहियत सबही । सूर श्याम अवतार जानि ब्रज लोचन बहुत न दिये हमही ॥ २६ ॥ अब समुझी यह निठुर विधाता । ऐसेहि जगतपिता कहवावत ऐसे घातकरै सो दाता ॥ कैसो ज्ञान चतुरई कैसी कौन विवेक कहांको ज्ञाता । जैसो दुख हमको एहि दीन्हों तैसे याको होत निपाता ॥ द्वै लोचन तनुमें करि दीन्हों याहीते जान्यो पितुमाता । सूर श्यामछबिते अवात नहिं बार बार आवत अकुलाता ॥ ॥ २७ ॥ राग सूही बिलावल ॥ द्वै लोचन सावित नहिं तेउ । विनु देखे कल परत नहीं छन येते पर कीन्हें यह टेउ ॥ बार बार छवि देख्योइ चाहत साथी निमिष मिलेहैं येउ । तेतो ओट करत छिनही छिन देखतही भरिआवत दोउ ॥ कैसे मैं उनको पहिचानौं नैन विना लखिये क्यों भेउ । ये तौ निमिष परत भरि आवत निठुर बिधाता दीन्हें येउ ॥ कहा भई जो मिली श्यामसों तू जान्यो जानै सबकोउ । सूर श्यामको नाम श्रवन सुनि दरशन नीके देत न वोउ ॥ २८ ॥ राग सूही ॥ श्यामहि मैं कैसे पहिचानौं ॥ क्रम क्रम करि एक अंग निहारति पलकओट ताको नहिं जानौं ॥ पुनि लोचन ठहराइ निहारति निमिष मेटि वह छबि अनुमानौं । औरै भाव और कछु शोभा कहौ सखी कैसे उरआनौं ॥ छिन छिन अंग अंग छवि अगणित पुनि देखौं फिरिकै हठ ठानौं । सूरदास स्वामीकी महिमा कैसे रसना एक बखानौं ॥ २९ ॥ राग सारंग ॥ श्यामसों काहेकी पहिचानि । निमिष निमिष वह रूप न वह छबि रति कीजै जेहि जानि ॥ यकटक रहत निरंतर निशि दिन मनमति सोचित सानि । एकौ पल शोभा की सीवा सकत न उरमहँ आनि ॥ समुझि न परे प्रगटही निरखत आनँदकी निधि खानि । सखी यह बिरह संयोग की समरस दुख सुख लाभ कि हानि ॥ मिटति न घृतते होम अग्निरुचि सूर सुलोचनि बानि । इत लोभी उत रूप परमनिधि कोउ न रहत मिति मानि ॥ ॥ ३० ॥ राग रामकली ॥ कहा करौं नीके करि हरिको रूप रेख नहिं पावति । संगहिसंग फिरति निशिवासर नैननिमेष न लावति ॥ बँधी दृष्टि यों डोर गुडी वश पाछे लागी धावति । निकट भये मेरी ए छाया मोको दुख उपजावति ॥ नख शिख निरखि निहारयोइ चाहति मनमूरति अति भावति । जानों नहीं कहांते निजछवि अंग अंगमें आवति ॥ अपनी देह आपुको बैरिनि दुरत न दुरी दुरावति । सूर श्यामसों प्रीति निरंतर अंतर मोहिं करावति ॥ ३१ ॥ राग धनाश्री ॥ जो देखौं तो प्रीति करौं री । संगहि रहौं फिरौं निशिवासर चितते नेक नहीं विसरौं री ॥ कैसे दुरति दुराये मेरे उन बिन धीरज नहीं धरौं री ।

जाउँ तहीं जहँ रहैं श्यामघन निरखत यकटक ते न टरौं री। सुनि री सखी दशा यह मेरी सो कहि यौं अब कहा मरौं री। सूर श्याम लोचन भरि देखौं कैसे इतनी साध मरौं री॥३२॥ राग विलावल॥ हरि दरशनकी साध मुई। उडिये उडी फिरति नैननि सँग फर फूटै ज्यों आकरुई॥ जानों नहीं कहाँते आवति वह सूरति मनमाँहँ उई। विन देखेकी यथा बिरहनी अति जुर जरति न जाति छुई॥ कछु वै कहत कछू कहि आवत प्रेमपुलकि श्रमस्वेदचुई। सूखति सूर धान अंकुरसी विनु बरषा ज्यों मूल तुई॥ ३३॥ राग धनाश्री॥ सुन री सखी दशा यह मेरी।जबते मिले श्याम घन सुंदर संगहि फिरति भई जनु चेरी॥ नीके दरश देत नहिं मोकों अंगनप्रति अनंगकी टेरी। चपलाते अतिही चंचलता दशन चमक चकचौंधि घनेरी॥ चमकत अंग पीतपट चमकत चमकति माला मोतिनकेरी। सूर समुझि विधिनाकी करनी अतिरिस करति सौंह मुँह तेरी॥३४॥राग मारू॥ आजुके दिनको सखी अति नहीं जो लाख लोचन अंग अंग होते। पूरति साध मेरे हृदय माँझ देखत सबै छबि श्याम कोते॥ चित्त लोभी नैन द्वार अतिही सूक्ष्म कहा वह सिंधु छबिहै अगाधा। रोम जितने अंग नैन होते संग रूप लेती निदरि कहति राधा॥ श्रवण सुनि सुनि दहै रूप कैसे लहै नैन कछु गहै रसनान ताके। देखि कोउ रहै कोउ सुनि रहै जीभ बिन सो कहै कहा नाहिं नैन जाके॥ अंग बिनुहै सबै नहीं एकौ फबे सुनत देखत जबै कहन लोरे। कहैं रसना सुनत श्रवन देखत नैन सूर सब भेद गुनि मनहिं तोरे॥ ३५॥ राग धनाश्री॥ इनहूँमें घटिताई कीन्हीं। रसना श्रवण नैनके होते की रसनाहीको नहिं दीन्हीं॥ बैर कियो बिधना हमको रचि याकी जाति अबै हम चीन्ही।निठुर निर्दयी याते और न श्याम बैर हमसों है लीन्ही।या रसहीमें मगन राधिका चतुर सखी तबहीं लखि भीनी। सूर श्यामके रंगहि राची टरत नहीं जलते ज्यों मीन्ही॥ ३६॥ राग सोरठ॥ धन्य धन्य बडभागिनि राधा। नीके भजी नंदनंदनको मेटि भवन जन बाधा॥ नवल श्याम नवला तुमहूं हो दोउ तुम रूप अगाधा। मैं जानी यह बात हृदयकी रही नहीं कछु साधा॥ संगहि रहति सदा पियप्यारी क्रीडत करति उपाधा। कोककला वितपन्न भई हौ कान्हरूप तनु आधा॥प्रेम उमँगि तेरे मुख प्रगट्यो अरस परस अवलाधा।सूरदास प्रभु मिले कृपाकरि गये दुरति दुखदाधा॥३७॥राग धनाश्री॥ कहि राधिका बात अब सांची।तुम अब प्रगट कही मो आगे श्याम प्रेमरस मांची॥ तुमको कहां मिले नँद नंदन जब उनके रँगरांची। खरिक मिले की गोरस वेचत की बिपहरते बांची॥ कहे बनै छाडो चतुराई बात नहीं यह काची। सूरदास राधिका सयानी रूपराशि रस खाची॥ ३८॥ राग गौरी॥ कब री मिले श्याम नाहिं जानो। तेरी सौं कहि कहत सखी री अबहूं नहिं पहिचानों॥ खरिक मिले की गोरस बेंचत की अबहीं की कालि। नैननि अंतर होत न कबहूँ कहति कहा री आलि॥ एको पल हरि होत न न्यारे नीके देखे नाहीं। सूरदास प्रभु टरत न टारे नैननि सदा बसाहीं॥ ३९॥ राग विलावल॥श्याम मिले मोहिं ऐसे माई। मैं जलको यमुनातट आई॥ औचक आये तहां कन्हाई। देखतही मोहनी लगाई॥ तबहींते तनु सुरति गँवाई। सूधे मारगगई भुलाई॥ बिन देखे कल परे न माई। सूर श्याम मोहनी लगाई॥ ४०॥ तबहीते हरि हाथ बिकानी। देहगेह सुधि सबै भुलानी॥ अंग शिथिल भइ जैसे पानी। ज्यों त्यों करि गृह पहुँची आनी॥ बोले तहाँ अचानक बानी। द्वारे देखे श्याम विनानी॥ कहा कहौं सुनि सखी सयानी। सूर श्याम ऐसी मति ठानी॥ ४१॥ राग धनाश्री॥ जा दिनते हरि दृष्टि परे री। ता दिनते इन मेरे नैननि दुख सुख सब विसरे री॥ मोहन अंग गोपाललालके प्रेम पियूष भरे री। घँसे उहां मुसुकानि बाढुलै रचि रुचि भवन करे री॥

पठवतिहौं मन तिनहि मनावन निशि दिन रहत अरे री । ज्यों ज्यों मान करति उलटावत त्यों त्यों होत खरे री ॥ पचि हारी समुझाइ सोचि पचि पुनि पुनि पाँइ परे री । सो सुख सूर कहांलों बरणौं यकटकते न टरे री ॥ राग सारंग ॥ जबते प्रीति श्यामसों कीन्हीं । तादिनते मेरे इन नैनानि नेकहु नींद न लीन्हीं ॥ सदा रहें मन चाक चढ्यो सो और न कछू सोहाइ । करत उपाइ बहुत मिलिबेको इहै विचारत जाइ ॥ सूर सकल लागत ऐसी यह सो दुख कासों कहिये । ज्यों अचेत बालककी बेदन अपनेही तन सहिये ॥ ४२ ॥ राग अडानो ॥ को जानै हरि कहा कियो री । मन समझति सुख कहत न आवै कछु एक रस लोचन जु पियो री ॥ ठाढी हुती अकेली आँगन आनि अचानक दरश दियो री । सुधि बुधि कछु न रही तेहि अवसर मेरो मन किधौं पलटि लयो री ॥ ता सुख हेतु दहति दुख दारुण छिन छिन जरति जुडात हियो री । सूर सकल आनत उर अंतर उपमाको पावति न वियोरी ॥४३॥राग सारंग ॥ मेरे हरि अँगनाहै जु गए री । निकसे आइ अचानक सजनी इत फिरि फिरि चितये री॥अति दुखमें पछितातिं यहै कहि नैनन बहुत ठये री।जो विधि इहै कियो चाहत हो द्वै सुहि कत वदए री॥सब दै लेउ लाख लोचन सखी ज्यों कोऊ जडत नए री॥थाके सूर पथिक मग मानो मदन व्याध बिधए री॥४४॥राग कान्हरो॥पीतांबरकी शोभा सखी री मोपै कही न जाइ । सागरसुतापति आयुध मानो वनरिपु रिपुमै देति दिखाइ ॥ जाअरि पन्नन तहि महि सुव स्वामी आभा कुंडल कोटि दिखाई । छायापति तनु बदन बिराजत बंधु अधरनए लजाई ॥ नाकी नाय कुवाहनकी गति मुरली सुधुनि बजाई॥सूरदास प्रभु हरि सुत वाहन तासुत हरिलै सरह बनाई॥४५॥राग सारंग॥टरति न टारे इह छबि मनमें चुभी । श्याम सुसवन पीत वर दामिनि चातक अँखियाहो जाइ तुभी ॥ है जलधार हार मुकुता मनों बक पंगति कुमुद माल सुभी । गिरा गंभीर गरज मनु सुनि सखी खानि के श्रवन देखुभी ॥ मोहन बानीहौं ठगी रही इकटकहीं जु उभी । सूरदास मोहन मुख निरखत उपजी सकल तनकाम गुँभी॥४६॥राग बिलावल॥नंदके लाल हरयो मन मोरा।हौं बैठी पोवति मोतिअन लर कांकर डारि चले सखि भोर ॥ बंकविलोकनि चाल छबीली रसिक शिरोमणि नंद किशोर । कहि काको मन रहत श्रवण सुनि सरस मधुर मुरलीकी घोर । इंदु गोविंदु बदनको कारन चितवति नैन बिहंग चकोर । सूरदास प्रभुके जु मिलनको कुच श्रीफलहो करति अकोर ॥ ॥४७॥ राग अडानो ॥मेरो मन गोपाल हरयो री । चितवतही उर पैठि नैनमन ना जानों धौं कहा करयो री ॥ मात पिता पति बंधु सजन जन सखिआँगन सब भवन भरयो री । लोक वेद प्रतिहार पहरुआ तिनहूंपै राख्यो न परयो री ॥ धर्म धीर कुलकानि कुंची कर तेहि तारो दै दूरि धरयो री । पलक कपाट कठिन उर अंतर इतेहु जतन कछु वै न सरयो री॥बुधि विवेक बल सहित सच्यो पचि सुधन अटल कबहूं न टरयो री । लियो चुराइ चितै चित सजनी सूर सो मोतन जात जरयो री ॥ ४८ ॥ राग अडानो ॥ मेरो मन तबते न फिरयो री । गयो जु संग श्याम सुंदरके तहांते कबहूं न टरयो री ॥ जोवनरूप गर्वधन सचि सचि हों उरमें जु धरयो री । कहांकहौं कुलशील सकुच साचि सरवस हाथ परयो री ॥ बिनु देखे मुख मनु हरिको यह निशिदिन रहत अरयो री । सूरदास या वृथा लाजते कछुअ न काज सरयो री ॥ ४९ ॥ राग सारंग ॥ यह सब मैंही पोच करी । श्यामरूप निरखत नैनानि भरि मोहनि फंद परी ॥ वै किशोर कमनीय सुगध मैं लुबुधतहूं न डरी । अब छबि गई समाइ हियेमें टारतहू न टरी॥ अति सुख दुख संभ्रम व्याकुलता विधु मुख सनमुख री । बुधि विवेक बल वचन विवशह्वै आनँद उमँगि भरी ॥ यद्यपि शूल सहत सुनि सूर सु अंगहउदै न अरी ।

तदपि मुख मुरलिका विलोकति उलटि अनंग जरी ॥ ९० ॥ राग आसावरी ॥ सखी री ना जानौं तबहीते मोको श्याम कहा धौं कीन्हो री । मेरे दृष्टि परे जादिनते ज्ञान जान हरि लीन्हो री ॥ द्वारे आइ गए औचकही मैं आंगनही ठाढी री । मनमोहन मुख देखि रही तब कामव्यथा तनु बाढी री ॥ नैन सैन दैदै हरि मोतन कछु एक बात बतायो री । पीतांबर उपरैना करगहि अपने शीश फिरायो री ॥ लोकलाज गुरुजनकी शंका कहत न आवै बानी री । सूर श्याम मेरे आँगन आए जात बहुत पछिताती री॥९१॥सोरठ ॥ मन हरिलीन्हों कुँवर कन्हाई । जबते श्याम द्वारह्वै निकसे तब तेरी मोहिं घर न सुहाई ॥ मेरे हित आइ भये हरि ठाढे मोते कछु न भई री माई । तबहींते व्याकुल भइ डोलति बैरी भए मातपितु भाई ॥ मो देखत शिरपाग सँवारी हँसि चितये छबि कही न जाई।सूर श्यामगिरिधर वर नागर मेरो मन लैगए चोराई॥९२॥राग धनाश्री॥प्रेमसहित हरि तेरे आये। कछु सेवा तैं करी कि नाहीं कीधौं वैसेहि उनहि पठाये॥काहेते हरि पाग सँवारी क्यों पीतांबर शीश फिराये । गुप्त भाव तो सों कछु कीन्हों घर आए काहे बिसराये ॥ अतिही चतुर कहावत राधा बातनहीं हरि क्योंन भुराये । सूर श्यामको वश करि लेती काहेको रहते पछताये ॥ ९३ ॥ गुरुजनमें बैठी आये हरि बेंदी सँवारन सिस पाइलागी।चतुर नायकहू पाग मसकी मनहीमन रीझे गुप्तभेद प्रीति तन जागी ॥ हस्तकमल हरि हेरि हृदय धरे भामिन उत आप कंठलागी । सूरदास अति चतुर नागरी पिय अति नागर दुहुँ कह्यो मनमें सुहाग भागी ॥ ९४ ॥ श्याम अचानक आइ गयेरी । मैं बैठी गुरु-जन विच सजनी देखतही मेरे नैन नयेरी ॥ तब इक बुद्धि करी मैं ऐसी बेंदीसों कर परस कियो री । आपु हँसे उत पाग मसकी हरि अंतर्यामी जानि लियो री ॥ लैकर कमल अधर परसायो देखि हरषि पुनि हृदय धरचो री । चरण छुवै दोउ नैन लगाये मैं अपने भुज अंक भरचो री ॥ ठाढे रहे द्वार अति हित करि तबहींते मन चोरि गयोरी । सूरदास कछु दोष न मेरो उत गुरुजन इत हेतु नयो री॥९५॥करत मोहिं कछुवै तौ न बनी । हरि आए चितवतहीरही सखी जैसे चित्र धनी ॥ अति आनंद हरष आसन उर कमल कुटी अपनी । न्योछावर अंचलकी फहरनि अधनैन जल धार घनी ॥ गुरुजन लाज कछू न सकी कहि सुनि मन बुधि सजनी । हृदय उमँगि कुच कलश प्र-गट भये टूटी तरकि तनी ॥ अब उपजति अति लाज मनहि मन समुझति निज करनी । सूरदास मेरी जडमति मंगल प्रभु मांझ गुनी ॥ ९६ ॥ सेवा मानि लई हरि तेरी । अब काहे पछिताति राधिका श्याम जात करि फेरी ॥ गुरुजनमें भावहि की पूजा और कहौ कछु टेरी । मोहन अति सुखपाय गये री चाहति हौं कहमेरी ॥ तेरे वशभए कुँवर कन्हाई करति कहा अवसेरी । सूर श्याम तुमको अति चाहत तुमप्यारी हरि केरी ॥ ९७ ॥ राग आसावरी ॥राधा भाव कियो यह नीको तुम बेंदी उन पाग छुआई।ऐसे भेद कहा कोउ जानै तुमही जानौ गुप्त दुराई॥तुम जुहार उनको जब कीन्हों तुम को उनहु जुहार कियो । एकै प्राण देह द्वै कीन्हें तुम वै एकै नहीं वियो ॥ तुम पग परसि नैन पर राख्यो उनि करकमलनि हृदय धरचो । सूर श्याम हृदय तुम राखे तुम उनको लै कंठभरचो॥९८॥ राग बिहागरो॥ अरी माई एक गाँवके बसत एक बार हरि कीन्ही पहिचानि ।निशिदिन रहै दरशकी आशा मिले अचानक आनि ॥ भाग्य दशा आँगनही आये सुंदर सरबस जानि । नीके करि देखनहुँ न पाए वहिनजाइ कुलकानि । कल न परत हरि दरशन बिन री मोहिं परी यह बानि । सूरदास बिकानी री हौं नंदसुवनके पानि ॥ ९९ ॥ कहा करौं गुरुजन डर मान्यो । आए श्याम कौनहित करिकै मैं अपराधिनि कछू न जान्यो ॥ ठाढे श्याम रहे मेरे आँगन तबते मन उन हाथ बिकान्यो । चूकपरी

मोको सबही अंग कहा करौं गई भूलि सयान्यो ॥ वे उतहीको गये हरष मन मेरी करनी समुझि अयान्यो । सूर श्याम सँग मन उठि लाग्यो मोपर बारंबार रिसान्यो ॥ ६० ॥ राग सारंग ॥ अचानक आये री हरि मेरे चिते तब हौंरही छवि निहारि । कुंडल लोल कपोल रहे कच श्रमजल सों कर कंजसों टारि ॥ गुरुजन बिच मैं आँगन ठाढी अतिहित दरशन दियो मया करि । सूरदास स्वामी अंतर्यामी वै हँसि चितये सुख करि ॥६१॥ राग गौरी ॥ मैं अपने कुलकानि डरानी॥कैसे श्याम अचानक आये मैं सेवा नहिं जानी ॥ उहै चूक जिय जानि सखी सुनि मन लै गए चुराइ । तनते जात नहीं मैं जान्यो लियो श्याम अपनाइ॥ऐसे ढंग फिरत हरि घर घर भूलि कियो अपराध॥सूर श्याम मन देहि न मेरो पुनि करिहौं अनुराध६२॥राग काफी ॥ मोही सांवरे सजनी तबते गृह मोको न सोहाई। द्वार अचानकहै गये री सुंदर बदन दिखाई ॥ ओढे पीरी पामरी पहिरे लाल निचोल । भौंहें कांट कटीलियां सखि वश कीन्ही बिनमोल ॥ मोर मुकुट शिर सोहई अरु अधर धरे मुखबेन।मोहन मूरति हृदय बसै छवि लागि रही दोउनैन ॥ श्याम रूपमें मन गीध्यो भलो बुरो कहो कोई । सूरदास प्रभु संग गयो मन मनों उनहीं को होई ॥६३॥ मोहन बिनु मन न रहै कहा करौं माई री । कोटिभांति करि करि रही समुझाई री ॥ लोकलाज कौनकाज मानत यदुराई री।हृदयते टरत नाहिं सुख सुंदरताई री॥ ऐसेहैं त्रिभंगी नवरंगी सुखदाई री । सूर श्याम बिन न रहों ऐसी बनिआई री ॥६४॥ मेरो मन न रहै कान्ह बिना नैन तपै माई । नवकिशोर श्याम बरन मोहनी लगाई ॥ बनकी धातु चित्रित तनु मोर चंद्र सोहै । बनमाला लुब्ध भँवर सुर नर मुनि मोहै ॥ नटवर वपु भेष ललित कट किंकिनि राजै । मणि कुंडल मकराकृत तरुन तिलक भ्राजै ॥ कुटिलकेश अति सुदेश गोरज लपटानी । तडित बसन कुंद दरशन देखिहौं भुलानी ॥ अरुन श्वेत कुंभ वज्र खचित पदिक शोभा । मणिकौस्तुभ कंठ लसत चितवत चित लोभा॥अधर सधर मधुर बोल मुरली कलगावै । भ्रुवविलास मंद हास गोपिन्ह जिय भावै ॥ कमलनैन चितके चैन निरखि मन वारौं । प्रेम अंश अरुझि रह्यो उरते नाहिं टारौं ॥ गोप भेष धरि सखी री संग संग डोलौं । तन मन अनुराग भरी मोहन संग बोलौं ॥ नवकिशोर चितके चोर पलकओट न करिहौं । सुभग चरन कमलअरुन अपने उर धरिहौं ॥ असन वसन शयन भवन हरिबिनु न सुहाइ ।:बिनु देखे कल न परै कहाकरौं माइ ॥ यशोमति सुत सुन्दर तनु निरखि हो लोभानी । हरिदरशन अमल परयो लाजन लजानी ॥ रूपराशि सुख बिलास देखत बनि आवै । सूर प्रभु रूपकी सींवा उपमा नहिं पावै ॥६५॥ राग गौरी ॥ मनमेरो हरि साथ गयो री । द्वारे आय श्याम घन सजनी हँसि मोतनते संग लयो री ॥ ऐसे मिल्यो जाइ मोको तजि मानहुँ उनही पोपि जयो री । सेवा चूक परी जो मोते मन उनको धौं कहा कियो री ॥ मोको देखि रिसात हते यह तेरे जिय कछु गर्व भयो री । सूर श्याम छवि अंग भुलानो मन वच कर्म मोहिं छाँडि दयो री ॥ ६६ ॥ राग रामकली ॥ मैं मन बहुत भांति समुझायो । कहा करौं दरशनमें अटक्यो बहुरि नहीं घटआयो ॥ इन नैननके भेद रूपरस उरमें आनि दुरायो । वर-जतही वेकाज सु पत ज्यों पलख्यो जोन सिधायो ॥ लोक वेद कुल निदरि निडरह्वै करत आपनो भायो । मुख छवि निरखि बाँधि निशि खग ज्यों हठि अपुनपो बँधायो ॥ हरिको दोष कहा कहि दीजै यह अपने बल धायो । अति विपरीति भई सुनि सूर प्रभु मुरइयो बदन जगायो ॥ ६३॥ ॥६७॥ राग बिलावल ॥ मनहि बिना कहा करौं सही री । घर तजिके कोऊ रहत पराये मैं तबहीते

फिरत बही री ॥ आइ अचानकही लैगए हरि बार बारमैं हटकि रही री । मेरो कह्यो सुनत काहेको लेगए हरि हरिके उतही री ॥ ऐसी करत कहूंरी कोऊ कहाकरौं मैंहारि रही री । सूरश्यामको यह न बूझिये ढीठ कियो मनकोउ नहीं री ॥ ६८ ॥ राग टोडी॥ माखनकी चोरी तैं सीखे करन लगे अब चितहूकी चोरी । जाके दृष्टिपरे नँदनंदन सोउ फिरति गोहन डोरी डोरी ॥ लोकलाज कुलकानि मेटि करि बन बन डोलति नवलकिशोरी । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि जवते देखे निगम वानि भई भोरी ॥ ६९ ॥राग आसावरी ॥ क्यों सुरझाऊँ री नंदलालसों अरुझि रह्यो मन मेरो । मोहन मूरति कहुँ नैक न विसरति कहि कहि हारि रही कैसेहु करत न फेरो ॥ बहुत यतन घेरि घेरि राखति फेरि फेरि लरत सुनत नहिं टेरो । सूरदास प्रभुके सँग रसवश भई डोलत निशि वासर कहुँ निरखत पायो न डेरो ॥ ७० ॥राग विलावल ॥ मैं अपनो मन हरत न जान्यो । कब धौंगयो सँग हरिके वह कीधौं पंथ भुलान्यो ॥ कीधौं श्याम हटकिहैं राख्यो कीधौं आपुर तान्यो । काहेते सुधि करी न मेरी मोपर कहा रिसान्यो ॥ जबहीते हरि ह्यां ह्वै निकरे बैरतबहि ते ठान्यो । सूर श्याम संग चलन कह्यो मोहिं कह्यो नहीं तव मान्यो ॥ ७१ ॥ राग गूजरी॥ श्याम करतहैं मनकी चोरी । कैसे मिलत आनि पहिलेही कहि कहि बतियां भोरी ॥ लोकलाजकी कानि गमाई फिरत गुडीवश डोरी । ऐसेढंग श्याम अब सीखे चोर भयो चितकोरी ॥ माखनकी चोरी सहिलीन्हीं बात रही वह थोरी । सूर श्याम भए निडर तबहिंते गोरस लेत अजोरी ॥ ७२ ॥ राग टोडी ॥ सुनहु सखी हरि करत न नीकी । आपस्वारथीहैं मन मोहन पीर नहीं औरनकी ॥ वेतो निठुर सदा मैं जानति बात कहत मनहीकी । कैसे उनहिं वहां करि पाऊं रिसमेटौं सब जीकी ॥ चितवत नहीं मोहिं सपनेहूँको जानै उनहीकी।ऐसे मिले सूरके प्रभुको मनहुँ मोललै बीकी॥७३॥राग आसावरी॥ माई री कृष्ण नाम जबते श्रवण सुन्यो री तबते भूली री भवन बावरीसी भई री । भरि भरि आवै नैन चित न रहत चैन बैननिहू सुध्यौ भूली मनकी दशा सब औरै ह्वै गई री ॥ को माता कौन पिता कौन भैनी कौन भ्राता कौन प्रान कौन ज्ञान कौन ध्यान मदन हई री । सूर श्याम जबते परे री मेरे दृष्टि वाम काम धाम निशियाम लोकलाज कुलकानि नई री॥७४॥राग रामकली॥ राधातैं हरिके रँगराची। तोतें चतुर और नहिं कोऊ वात कहों मैं सांची ॥ तैं उनको मन नहीं चुरायो ऐसी हैं तू काची । हरि तेरोमन अबहिं चुरायो प्रथम तुहीहै नाची ॥तुम अरु श्याम एकहौ दोऊ बाकी नाहीं वाची । सूर श्याम तेरे वश राधा कहति लीक मैं खांची ॥७५॥ राग जैतश्री॥तू काहेको करति सयानी । श्याम भए वश पहिले तेरे तब तू उनके हाथ बिकानी ॥ बाकी नहीं रही नेकहु अब मिली दूध ज्यों पानी। नँदनंदन गिरिधर बहुनायक तू तिनकी पटरानी ॥ तोसी कौन बडिभागिनि राधा यह नीके करि जानी । सूर श्याम सँग हिलिमिलि खेलो अजहुँ रहति बौरानी ॥७६॥ राग सोरठ ॥ मन हरि लीन्हों कुँवर कन्हाई । तबहीते मैं भई बौरानी कहा करों री माई ॥ कुटिल अलक भीतर अरुझाने अब निरुवारि न जाई। नैनकटाक्ष चारु अवलोकनि मोतन गये बसाई ॥ निलजभई कुलकानि गँवाई कहा ठगो री लाई । बारंबार कहति मैं तोको तेरे हिये न आई ॥अपनी सी बुधि मेरी जानति उतनी मैं कहांपाई । सूर श्याम ऐसी गति कीन्हीं देह दशा बिसराई ॥ ७७॥ राग रामकली ॥ राधा हरि अनुराग भरी । गदगद मुख बाणी परकाशत देह दशा विसरी ॥ कहति इहै मन हरि हरि लैगये एही परनिपरी । लोक सकुच शंका लहिं मानति श्यामहिरंग ढरी ॥ सखी सखीसों कहति बावरी येहि हमको निदरी । सूर श्याम सँग सदा रहतिहै बूझेहू न करी॥७८॥राग गूही विलावल॥

तुम जानति राधाहै छोटी । चतुराइ अँग अंग भरीहै पूरण ज्ञान न बुद्धिकी मोटी ॥ हमसों सदा दुरावति सोइहि बात कैहै सुख चोटी पोटी । कबहुँ श्यामते नेक न बिछुरति किये रहति हमसों हठ ओटी॥नँदनंदन याहीके वश हैं विवश देखि वेंदी छवि चोटी ।सूरदास प्रभु वै अति खोटे यह उनहीते अतिही खोटी॥७९॥राग बिलावल॥सखी कहति तू बात गँवारी। याकी सरि कैसे कोउ ह्वैहै जाके वश हैं श्रीवनवारी॥ व्रजभीतर इह रूप आगरी व्रतलीन्हों ढढगिरिवर धारी ।प्रीति गुनहीकीहै नीकी यापर मैं रीझीहौं भारी॥सांची कहौं नेह ऐसोई पाछे मोको दीजो गारी॥सूरदास राधा जो खोटी तौ देखो यह कृष्ण पियारी ॥ ८० ॥ राग गूजरी ॥ सुनहु सखी राधासरि को है । जे हरिहैं रतिपति मनमोहन याको सुख सो जोहै॥जिसे श्याम नारि यह तैसी सुंदरजोरी सोहै । इह द्वादश वेऊ दशद्वैके व्रज युवतिन मनमोहै । मैं इनको घटि बढि नाहिं जानति भेद करै सो कोहै । सूर श्याम नागर इह-नागरि एक प्राणतनुद्वैहै ॥ ८१ ॥ राग गूजरी ॥ सुनि सजनी ए ऐसे लागत ।एक प्राण युग तन सुख कारण एकौ निमिष न त्यागत ॥ बिछुरत नहीं संगते दोऊ बैठे सोवत जागत । पूरवनेह आजु यह नाहीं मोसों सुनहु अनागत ॥ मेरी कही सांचि तुम जानो कीज आगत स्वागत । सूर श्याम राधावर ऐसे प्रीतिहिते अनुरागत ॥ ८२ ॥ राग जैतश्री ॥ सखी सखीसों धन्य कहै । इनको हम ऐसे नाहिं जाने व्रजभीतर ए गुप्त रहै ॥ धन्य धन्य तेरी मति साँची हम इनको कछु और कहै । राधा कान्ह एकहैं दोऊ तो इतनो उपहास सहै । वै दोऊ एक दूसरी तू है तोहूको सखि श्याम चहै । सूर श्याम धनि अरु राधा धनि तुहूं धन्य हम वृथा वहै ॥ ८३ ॥ राग धनाश्री॥धन्य धन्य यह तेरी बानी । तैं नीके हरिको पहिचानें अब हम तुमको जानी ॥ राधा आधा देह श्यामकी तू उनकी बिचवानी । राधाहूते अधिक श्यामसों तेरी प्रीति पुरानी ॥ जो हरिकी संगिनि तू नाहीं आदि ने हक्यों मानी । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि यह रस कथा बखानी ॥ ८४ ॥ राग पूर्वी ॥ हे माई राधा मोहन सहज सनेही । सहज रूप गुण सहज लाडिली एक प्राण द्वै देही ॥ सहज माधुरी अंग अंगप्रति सहज सदावन ग्रेही । सूर श्याम श्यामा दोऊ सहजहि सहज प्रीति करि लेही ॥८५॥ राग आसावरी ॥ राधा नँदनंदन अनुरागी । भव चिंता हिरदै नहिं एको श्याम रंग रस पागी ॥ हरद चून रँग पय पानी ज्यों दुविधा दुहुँकी भागी । तनमन प्राण समर्पण कीन्हों अंग अंग रतिखागी ॥ व्रजवनिता अवलोकन करि करि प्रेम विवश तनत्यागी । सूरदास प्रभुसों चितलाग्यो सोवत ते मनु-जागी ॥राग मारू॥गोपी श्यामरंग राची । देह गेह सुधि बिसारी बढी प्रीति सांची ॥ दुविधा उर दूरि भई गई मति वह काची । राधाते आपु विवश भई उघरि गई नाची॥ हरि तजि जो और भजे पुहुमि लोक खांची । मात पिता लोक भीत वाकी नहिं बाची ॥ सकुच जबहिं आवै उर बारंबार झांची । सूरश्याम पद पराग ताहीमें माची ॥ ८६ ॥ राग मारू ॥ श्याम जल सुजल जल व्रजनारि खोरै । नदी माला सुजल तट भुजा अति सबल धार रोमावली यमुन भोरै ॥ नयन ठहरात नहिं बहत अति तेजसी तहां गयो चित्त धीरज सँभारै । मन गयो तहीं आपुन रही निकट जल एक एक अंग छवि सुधि बिचारै । करति स्नान सब प्रेम बुडकी देहि समुझि जिय होइ भजि-तीर आवै । सूर प्रभु श्याम जलराशि व्रजवासीन करति अनुमान नहिं पारपावै ॥ ८७ ॥ ॥ राग बिलावल ॥ श्यामरंग राची व्रजनारी । और रंग सब दीन्हीं डारी ॥ कुसुमरंग गुरुजन पितुमाता । हरितरंग भैनी अरु भ्राता ॥ दिनाचारी में सब मिटि जैहैं । श्यामरंग अजरायल रैहैं ॥ उज्ज्वलरंग गोपिका नारी । श्यामरंग गिरिवरके धारी ॥ श्यामहि में सबरंग बसेरो ।

T

प्रगट बताइ देउ कहि झेरो ॥ अरुणश्वेत सित सुंदर तारे । पीतरंग पीतांबर धारे ॥ नानारंग श्याम गुणकारी । सूरश्याम रँग घोपकुमारी ॥ ८८ ॥ राग बिहागरो ॥ श्यामसलोनेरूपमें अरी मन अरच्यो । ऐसेहै लटक्यों तहां ते फिरि नहिं भटक्यो बहुत जतन मैं करच्यो ॥ ज्यों ज्यों खैंचति त्यों त्यों मगनहोत ऐसी धरनि धरच्यो । मोसों वैर करत उनकी ह्यां देख्योंजाइ ढरच्यो ॥ ज्यों शिवछत दरशन रविपाये जेही गरनि गरच्यो । सूरदास प्रभुरूपथक्यो मन कुंजल पंक परचो ॥ ८९ ॥ राग देसाप ॥ निशि दिना इनि नैननिको री नंदलालकी लागीरहै लालसाई । मुरलीरसतानभरी श्रवनन री जबतेरी परी कैसेहू टरति नहीं हृदयते बिहारी यदुराई ॥ कहाकहौं तोसों यह सजनी मनमेरो लैगयो चोराई ॥ सूरश्यामको नाम धरौं पुनि धरच्यो न जाइ सुधि न रहै तनुमाई ॥ ९० ॥ देख सखी मेरोमन न रहै श्यामबिना । अतिहि चतुर जान जाननि मनि वह छबि परमैं भईलीना ॥ अपनी दशा कहौंमैं कासों बन बन डोलति रैनिदिना । मनतो चोरि लियो पहिलेही छुरिछुरिहै रही छीना ॥ वै मोहन मनहरत सहजही हरिलै ताको करत हीना । सूरदास प्रभु रसिक रसीले बहुनायककहै नाउँजीना ॥ ॥९१॥ राग सारंग ॥ नैननि नींदो गई री निंशिदिन पल पल छतियां लाग्यो रहै धरको।उत मोहन मुख मुरली सुनत सुध्यो न रही इत घेरा घरको ॥ ननदी तौन दिये बिनुगारी नैकहू रहति सासु सपनेहू में आनि गोउति काननिमें लए रहे मेरे पाँइनको खरको । निकसनहूं ना पाइये री कासों दुख कहिये देखहू न पाइये री सूरदास प्रभुके तन मेरो ज्यों ऐसो भयो जैसो हाथ पाथर तरको ॥ ९२ ॥ राग सुघराई॥मोहन मुरली बजाइहौं रिझाई।तिनही मोही री हों मोही री सांझ समै देखे कन्हाई॥आनि निकसे मेरे आँगनहै तबते चितवत यह पीर भई री । काकी देह गेह सुधि काके हेहरि कैसे मैं ही री ॥ तेरे कहे कहसिहौं वानी मैं हरिहाथ बिकानी तबते यकटक जोइरही री । मिलत नहीं नहिं संगते त्यागत कहाकरौं बूझो तोही री ॥ सूर श्याम तबते नहिं आगे मन जबते हरिलीन्हों वैतौ ऐसेहैं द्रोही री ॥ राग अडानो ॥९३॥ व्रजकी खोरि ठाढो साँवरो ढोटौना तबहीं मोही री हौं मोही री। जबते मैं देखे श्यामसुंदर री चलि न सकत पगदइहै काम नृप द्रोही री ॥ कोलै आइ कौने चरन चलाइ कौने वहियां गही सोधों कोही री।सूरदास प्रभु देखे सुधि रही नहिं अति विदेह भई अब मैं बूझति तोही री ॥ राग सुघराई ॥ आंखिन में बसे जियरे में बसे हियरे में बसत निशि दिन प्यारो । मनमें बसे तनमें बसे रसनामें बसे अंग अंग में बसत नंदवारो ॥ सुधिमें बसै बुधिहूमें बसै उरजनमें बसत पिय प्रेम दुलारो । सूर श्याम बनहूं मैं बसत घरहूमें बसत संगज्यों जलरंगन होत न्यारो ॥ ९४ ॥ राग सोरठ ॥ नँदनंदन बिन कल न परै । अति अनुराग भरी युवती सब जहां श्याम तहां चित्त ढरै ॥ भवन गई मन तहाँ न लागै गुरु गुरुजन अति त्रास करै । वै कछु कहैं करैं कछु औरैं सासु ननँद तिनपर झहरै ॥ इहै तुमहि पितु मात सिखायो बोल करति नहिं रिसन जरै । सूरदास प्रभुसे चित अरुझ्यो यह समुझो जिय ज्ञान धरै।॥९५॥राग जैतश्री॥सासु ननँद घर त्रास देखावै। तुम कुलवधू लाज नहिं आवति बार बार यह कहि समुझावै ॥ कबही गई न्हान तुम यमुना यह कहि कहि रिसपावै । राधाको तुम संग करतिहौ व्रज उपहास उडावै ॥ वेहैं बडे महरकी बेटी तौ ऐसी कहवावै । सुनहुं सूर यह उनही फाबै ऐसी कहति डरावै ॥ ९६ ॥ राग सारंग ॥ हम अहीर ब्रजबासी लोग । ऐसे चलौ हँसै नहिं कोऊ घरमें बैठि करो सुख भोग ॥ दही मही लवनी घृत बेंचो सबै करौ अपने उतयोग । शिरपर कंस मधुपुरी बैठो छिनकहिमें करि डारौ सोग ॥ फूंकि फूंकि धरणी पग धारौ अब लागी तुम करन अयोग । सुनहु सूर अब जानोगी तब जब देखै राधा संयोग ॥९७॥

राग धनाश्री ॥ तुम कुलवधू निलज जिमि ह्वैहौ। यह करनी उनहींको छाजे उनके संग न जै हौ ॥ राधा कान्ह कथा ब्रज घर घर ऐसे जनि कहवैहो ॥ यह करनी उर नई चलाई तुम जनि हमहिं हँसैहो। तुमहौ वडे महरकी बेटी कुल जिननाम धरैहो । सूरश्याम राधाकी महिमा इहै जानि सरमैहो ॥ ९८ ॥ राग टोडी ॥ यह सुनिकै हँसि मौनरही री। ब्रज उपहास कान्ह राधाको यह महिमा जानी उनही री ॥ जैसी बुद्धि हृदयहै इनके तैसी यै मुख बात कही री । रविके तेज उलूक न जानै तरनि सदा पूरन नभही री ॥ विषको कीट विषहि रुचिमानै जानै कहा सुधारसही री। सूरदास तिल तेल सुवादी स्वाद कहा जानै घृतही री॥९९॥राग सोरठ॥अहीर जाति गोधनको मानै।नँदनंदन सुर नर मुनि वंदन तिनकी महिमा क्यों ये जानै॥धनि राधा उपहास धन्य यह सदा श्यामके गुणगाने। परम पुनीत हृदय अति निर्मल बार बार बाजही बखानै ॥ श्यामकामकी पूरनहारी ताको कुलटी करि पहिचानै।सूरदास ऐसे लोगनको नाउँ न लीजै होत विहानै॥१६००॥राग बिहागरो॥विधिना संगति मोहिं यह दीनी। इनिको नाम प्रात नहिं लीजै कहा निठुरही कीनी ॥ मनमोहन गोहन विन अबलौं मानो वीते युगचारि। विमुखनमेंते कवधौं छूटौं कब मिलि हौं बनवारि ॥ एक एक दिन विहात कैसेहूँ अवतौ रह्यो न जाइ। सूर श्याम दरशन विन पाये वार बार अकुलाइ ॥ १ ॥ विमुखजननिको संग न कीजै । इनके विमुख वचन सुनि श्रवननि दिन दिन देही छीजै ॥ मोको नेक नहीं ये भावत परवशको कहा कीजै। धृगजीवन ऐसो बहु दिनको श्याम भजन पल जीजै ॥ धृग ये घर धृग ये गुरुजनको इनमें नहीं बसीजै। सूरदास प्रभु अंतर्यामी इहै जानि मन लीजै ॥२॥ राग नट॥ राधा श्याम रंग रंगी। रोमनिरोमानि भिंदि गयो सब अँग अंग पगी ॥ प्रीतिदै मन लैगए हरि नंदनंदन आप। श्यामरस उनमत्त नागरि दुरत नाहिं परताप ॥ चली यमुना जाति मारग हृदय इहै विचार। सूर प्रभुको दरश पावै निगम अगम अपार ॥ ३ ॥ राग धनाश्री॥चितको चोर अवहिं जो पाऊं। हृदय कपाट लगाइ जतनकरि अपने मनहि मनाऊं॥जवहिं निशंक होति गुरुजनते तेहि औसर जो आवै। भुजनि धरौं भरि सुदृढ मनोहर बहुत दिननिको फलपावै॥ लैराखौं कुच बीच चापि करि प्रतिदिनको तनुताप बिसारौं । सूरदास नँदनंदनको गृह गृह डोलनिको श्रमटारौं ॥ ॥ ४ ॥ राग बिलावल ॥ इतते राधा जाति यमुनतट उतते हरि आवत घरको। कछिकाछिनी भेप नटवरको बीच मिली मुरलीधरको ॥ चितैरही मुख इंदु मनोहर वा छविपर वारति तनको। दृगिनुतैं देखतही जाने प्राणनाथ सुंदर घनको ॥ रोम पुलकि गदगद वाणी कहि कहाजात चोरे मनको। सूरदास प्रभु चोरी सीखे माखनते चितवित धनको ॥ ५ ॥ इह न होइ जैसे माखन चोरी। तब वह मुख पहिचानि मानि सुख देती जान हानि हुती थोरी ॥ उन दिननि सुकुँवार हते हरि हौं जानत अपनो मन भोरी। ब्रजबासि बास बडेके ढोटा गोरसकारण कानि न तोरी ॥ अब भए कुशल किशोर नंदसुत हौं भई सजग समान किशोरी। जात कहा बलि बाँह छडाए सूसेमन संपति सब मोरी। नखशिखलौं चितचोर सकल अंग चीन्हें पर कत करत मरोरी। एक सुनी सूर हरयो मेरो सर्वस अरु उलटी डोलों सँगडोरी ॥ ६ ॥ राग गौरी ॥ भुजा पकरि ठाढे हरि कीन्हें। बाँह मरोरि जाहुगे कैसे मैं तुमको नीके करि चीन्हें ॥ माखनचोरी करत रहे तुम अबतो भए मनुचोर। सुनत रही मन चोरतहैं हरि प्रगट लियो मन मोर ॥ ऐसे ढीठ भए तुम डोलत निदरे ब्रजकी नारि । सूर श्याम मोहू निदरोगे देत प्रेमकी गारि ॥ ७ ॥ राग सारंग ॥ बहु बलकितकुजानो यदुराइ। तुम जो तरकिमो अबलापै तौ चलेहौ भुजा छडाइ ॥ कहिअतहौ अति चतुर सकल अँग आवत बहुत

उपाइ । तौ जानो जो अबके एढँगकोसकै देते जाइ ॥ सूरदास स्वामी श्रीपतिको आवत अंतर भाइ।सहि न सके रति वचन उलटि हँसि लीनी कंठ लगाइ ॥ ८ ॥ राग ईमन ॥ मैं तुमरे गुण जाने श्याम । औरनकोमन चोर रहेहौ मेरो मन चोरे किहि काम ॥ वै डरपति तुमको धौं काहे मोको जानत वैसी वाम । मैं तुमको अबहीं बांधौंगी मोहिं बूझि जैहो तब धाम ॥ मनलो हौं पहुनाई करिहौं राखौ अटकि द्योस अरु याम । सूर श्याम यह कौन भलाई चोर रह्यो तहां तुम्हरो नाम॥९॥ ॥ राग कल्याण ॥ व्रजमें ढीठ भए तुम डोलत । अब तो श्याम परे फँग मेरे सूधे काहे न वोलत ॥ मनदीजै मर्यादा जैहै रहत चतुरई कीन्हें । दुखकरि देहु कि सुखकरि दीजै अबतौ बनिहै दीन्हें ॥ ऐसे ढँग तुम करत कन्हाई जीति रहे व्रजगाउँ । सूर आजु बहुतै दुख पाये मन कारण पछिताउँ ॥ ॥१०॥रागगुंडमलार॥सुन री कुलकी कानि ललनसों मैं झगरो मांडौंगी। मेरे इनके कोउ बीच परौ जिनि अधर दशन खांडौं गी ॥ चतुर नाइकसों काम परयोहै कैसे ह्वै छांडौं गी । सूरदास प्रभु नँद नँदनको रसलै डांडौ गी॥११॥राग कान्हरो॥चोरीके फल तुमहि दिखाऊं। कंचनखंभ डोर कंचनकी देखो तुमहिं बँधाऊं॥ खंडों एक अंग कछु तुमरो चोरी नाउँ मिटाऊं। जो चाहौ सोई सब लैहों यह कहि डांड मँगाऊं ॥ बीच करन जो आवै कोऊ ताको सौंह दिवाऊं। सूर श्याम चोरनके राजा वहुरि कहां मैं पाऊं ॥१२॥ राग गंधारी ॥ रहि री लाज नहिं काज आज हरि पाये पकरन चोरी।मूसि मूसि ले गए मन माखन जो मेरे धन होरी ॥ बांधौं कंचनखंभ कलेवर उभै भुजा दृढ डोरी।चांपों कठिन कुलिश कुच अंतर सके कौन धौं छोरी ॥ खंडौं अधर भूलि रस गोरस हरै न काहूको री । दंडौं काम डंड परघरको नाउँ न लेइ बहोरी ॥ तब कुलकानि आनि भई तिरछी क्षमि अपराध किशोरी । शिव पर पानि धराइ सूरडर सकुचि मोचि शिर डोरी॥१३॥ राग बिहागरो॥बीच कियो कुल लज्जा आई । सुनि नागरि बकसी यह मोको सन्मुख आए धाई ॥ चूकपरी हरिते मैं जानी मनले गए चुराइ । ठाढे रहे सकुचि तो आगे राख्यो वदन दुराइ ॥ तुम हो बडे महरकी बेटी काहे गई भुलाइ । सूर श्यामहैं चोर तुम्हारे छाँडि देहु डरपाइ ॥१४॥ राग गौरी॥कुलकी लाज अकाज कियो । तुम बिन श्याम सोहात नहीं कछु कहा करौं अति जरत हियो ॥ आपु गुप्तकरि राखी मोको मैं आयसु शिरमानि लियो । देह गेह सुधि रहत बिसारे तुम ते हितु नहिं और बियो ॥ अब मोको चरणनि तर राखो हँसि नँदनंदन अंग छियो । सूर श्याम श्रीमुखकी वाणी तुमपै प्यारी बसत जियो ॥ १५ ॥ राग जैतश्री ॥ मात पिता अति त्रास दिखावत । भ्राता मारन मोहिं धिरावै देखे मोहिं न भावत ॥ जननी कहति बडेकी बेटी तोकों लाज न आवत । पिता कहै कैसी कुल उपजी मनही मन रिस पावत ॥ भैनी देखि देति मोहिं गारी काहे कुलहि लजावति । सूरदास प्रभुसों यह कहि कहि अपनी विपति जनावति ॥१६॥राग बिहागरो ॥ सुंदर श्याम कमलदल लोचन । विमुख जननको संगतिको दुख कबधौं करिहौ मोचन ॥ भवन मोहिं भाटीसों लागत मरति सोचही सोचन। ऐसी गति मेरी तुम आगे करत कहा जिय दोचन ॥ धृग वै मात पिता धृग भ्राता देत रहत मोहिं खोचन । सूर श्याम मन तुमहि लुभानो हरद चून रँग रोचन ॥ १७ ॥ राग रामकली॥कुलकी कानि कहांलौं करिहौं । तुम आगे मैं कहौं न साँची अब काहू नाहिं डरिहौं॥लोग कुटुंब जगके जे कहियत पेला सबहि निदरिहौं । अब यह दुख सहि जात न मोपै विमुख वचन सुनि मरिहौं ॥ आपु सुखी तो सब सब नीकेहैं उनके सुख कहा सरिहौं । सूरदास प्रभु चतुरशि-रोमणि अब कैहौं कछु लरिहौं ॥ १८ ॥ राग कान्हरो॥प्राणनाथहौ मेरी सुरति क्यों न करौ।मैं जु दुख

पावतिहौं अपने तन मन मेरी सुरति करौं । दीनदयालु कृपा करौ मोको कामद्वंद्व दुख और बिरह हरौ ॥ तुम बहुबरनि रवनमैं जानति याहीके धोखेमोसों कांहेको लरौ । सूरदास स्वामी तुमहो अंतर्यामी मनसा बाचा ध्यान तुमसों धरौ ॥ १९॥ रागकान्हरो ॥ हो या मायाही लागी तुम कत तोरत । मेरो ज्यो तिहारे चरननिही लाग्यो धीरज क्यों रहै रावरे मुख मोरत ॥ को लै बनाइ बातैं मिलवति तुम आगे सो किनआइ मोसों अब जोरत । सूर श्याम पिय मेरे तौ. तुमही जिय तुम बिनु देखे मेरो हियो कोरत ॥ २० ॥ राग बिलावल ॥ सुनहु श्याम मेरी एक बात । हरिप्यारीके मुखतन चितवत मनही मनहु सिहात ॥ कहाकहति वृषभानु नंदिनी बूझतहै मुसुकात । कनकबरन सुँदरी राधिका कटि कृश कोमलगात ॥ तुमही मेरे प्राण जीवनधन अहो चंद्र तुअ भ्रात । सुनहु सूर जो कहति रही तुम कहो न कहा लजात ॥ २१ ॥ राग गुंड ॥ नागरी श्यामसों कहत बानी । सुनहु गिरिधर नवल शीशश्रीखंडधर जयति सुर नागरस सहस बानी ॥ रुद्रपति छुद्रपति लोकपति वोकपति धरनिपति गगनपति अगम बानी । अखिल ब्रह्मांडपति तिहुँभुवनाधिपति नीरपति पवनपति अगम बानी ॥ सिंहके शरन जंबुक त्रास करै जब कृष्ण राधा एक जग बतानी । सूर प्रभु श्याम तुव नाम करुणाधाम करौ मनकाम सुनि दीनवानी॥२२॥ राग गुंडमलार॥ बिहँसि राधा कृष्णअंक लीनी।अधरसों अधर जुरि नैनसों नैन मिलि हृदै सों हृदय लगि हरष कीन्ही॥कंठ भुज जोरि नारि उछंगलीन्हीं भवन दुखटारि सुख दियो भारी।हरषि बोले श्याम कुंज बन घन धाम तहां हम तुम संग मिलैंप्यारी ॥ जाहु गृह परमधन हमहु जैहैं सदन आइ कहुँ पास मोहि सैन दैहौ । सूर यह भावदै तुरतही गमन करि कुंजगृह सदन तुम जाइ रैहौ ॥२३॥ राग गुंडमलार ॥ यह सुनत नागरी माथ नायो। श्याम रसवश भरे मदन जियमें डरे सुंदरी बातको भेद पायो । खरे ब्रज यमुन बिच दुहुँनि मन अति सकुच और कछु बनै नहिं बुद्धि ठानी । तबहि ब्रजनारि आवत देखि यमुनाते एकब्रजहिते जु राधा लजानी ॥श्याम हँसिकै चले तुरत ग्वालनि मिले कहां सब रहे कहि हांक दीन्हीं । भाव यह करि गए सूर प्रभु गुननए नागरी रसिक जिय जानि लीन्हीं॥२४॥ राग टोडी॥राधा हरिके भावहि जान्यो । इहै बात कैहौं इन आगे मनही मन अनुमान्यो ॥ उन देखी राधा मग ठाढी श्याम पठाए टारि । बूझतही कछु बुद्धि रचैगी बडी चतुर यह नारि ॥ इत वृषभानुसुता मन सोचति मोहि देखि हरिसंग । सूर अबहिं बातनि करि धरिहै जानति इनके रंग ॥ २५ ॥ राग गुंडमलार ॥ चतुर वर नागरी बुद्धि ठानी । अबहिं मोहिं बूझिहै इनहि कैहौं कहा श्याम सँग आजु मोहिं प्रगटजानी ॥ भावकरि गए हरि ग्वाल बूझत रहे जानि जियलई अति चतुर रासी । यह रचौ बुद्धि एक कहा एकहै मोहिं मेरे मन सबै घोषवासी॥इतहुँकी उतहुँकी सबै जुरि एकठी कहति राधा कहां जाति है री । सूरप्रभु को अबहिं देखे हम तेरे ढिग कहां गए तिनहिं पछिताति है री ॥२६॥ राग गूजरी॥ कान्ह कहा बूझत हैं तुमको । ह्वांहीते लखि लीन्ही तबहीं कहां दुरावति हमको॥मन लैगए चुराइ तुम्हारो सो अपनो तुम पायो । अपनो काज सारि तुम लीन्हों हम देखतहि पठायो ॥ सदा चतुरई फबती नाहीं अतिही निझरि रहीहौ । सूर श्यामधौं कहां रहतहै यह कहि कहि युतहीहौ॥ २७ ॥ राग अलहिया ॥ कहति रही तब राधिका जब हरिसंग पेखो । बेसरि लीज्यो छीनिकै मुख तन कहा देखो ॥ देहो बेसरि की नहीं की लेहिं छडाइ । चतुराई प्रगटी अबै ऐसीहौ माइ ॥ बारबार नागरि हँसें तरुनी वेहानी । ऐसेहि बेसरि लेहुगी सब भई अयानी ॥ हम मूरख तुम चतुरहौ कछु लाज न आवै । सूर श्याम सँग नहीं रही अब कहा दुरावै ॥ २८ ॥ राग सोरठ ॥ इहै कहन मोको तुम आई । इतते ये

उतते तुम सब मिलि काहे ऐसी धाई ॥ बेसरि एक लेहुँगी को की पीतांबर न देखावहु । बेसरि अरु पीतांबर लै तब घर घर जाइ सुनावहुं ॥ तारी एक बजत की दोऊ इतनोइ ज्ञान बिचारो । सुनहु सूर ए बेसरि लेहैं जानो ज्ञान तुम्हारो ॥२९॥ राग जैयतश्री ॥ सुनि राधा तोसों हम हारी । तेरे चरित नहीं कोइ जानैं वशकीन्हों गिरिधारी ॥ अबहीं कान्ह टारि करि पठए धानि तेरी महतारी । अंग अंग रचि कपट चतुरई बिधिना आपु सँवारी ॥ अबहीं प्रगट दुहुँनि हम देख्यो जानति दै मो गारी । सूर श्यामके यह बुधि नाहीं जितनीहै तो घारी ॥३०॥ राग बिलावल ॥ श्याम भले अरु तुमहुँ भली हौ । बेसरि छीनतिहौ बेकाजहि जाहु न घरहि चली हो ॥ कैसे दौरि परी मेरे पर मानहुँ संग मिली हो । और भई सब बनकी बेली आपुन कमल कली हो ॥ तब कहती गहि बाँह दुहुँनकी जो तुम चतुर अली हो । सूरदास राधा गुण आगरि नागरि नारि छली हो ॥३१॥ अलहिया राग बिलावल ॥ अब हमसों सांची कहो वृषभानु दुलारी । कछु तो तोसों कहतहैं ठाढे गिरिधारी ॥ हाहा हमसों सोइ कहो दैहौ जिनि गारी । हमको देखतही गए उत ग्वाल हँकारी ॥ भेदकरे जो लाडिली तोहि सौंह हमारी । तू ठाढी काहे रही मग मेरी प्यारी ॥ सहज होइ तू कहि अबै उरते रिस टारी । सूर श्यामकी भावती कहै कहौ कहा री ॥३२॥ राग सूही ॥ मैं यमुना तन जात सही री । ब्रजते आवत देखि सखिनको इन कारण ह्यां परखि रही री ॥ उतते आइ गए हरि तिरछे मैं तुमही तन चितै रही री । बूझन लगे कान्ह ग्वालन को तुमतो देखे उनहि नहीं री ॥ कछु उनसों बोली नहिं सन्मुख नाहिं तहां कछु बैन कही री । सूर श्याम गए ग्वालनि टेरत ना जानौं तुम कहा गही री ॥३३॥ राग टोडी ॥ तुम मेरी बेसरिको धाई । सकुचि गईं सुनि सुनि यह बानी तरुनिन राधा भले लजाई ॥ यह तौ बात लगति कछु साँची हमपर न्याइ रिसाई । टेरत कान्ह गए ग्वालनको श्रवन परी ध्वनि आइ ॥ बेसरि नाउ लेत सरमानी तब राधा झहरानी । सूरदास ब्रजनारि मनहि मन यह गुनि गुनि पछितानी ॥ ३४॥ राग गूजरी ॥ राधा तू अति-हीहै भोरी । झूठेही लोग उठावत घर घर हम जान्यो अति तोरी ॥ कंठ लगाइ लई रिस छांडौ चूक परी हम चोरी । तुम निर्मल गंगाजलहूते दुरत नहीं वह चोरी ॥ घर जैहौ की यमुना जैहौ हम आवैं सँग गोरी । सूरदास प्रभुप्यारी भुरी राधा चतुर दिननकी थोरी ॥३५॥ राग आसावरी ॥ अहो सखी तुम ऐसी हौ । अबलौं तुम कुलटी करि जानति मोको री सब तैसी हो ॥ अपने मन जैसी तैसेई सब मोहु जनावत तैसी हो । जोरी भली बनैगी हरिसों छाह निहारो कैसी हो ॥ अबलागी मोको डुलरावन प्रेमकरति टरि वैसी हौ । सुनहु सूर तुमरे छिन छिन मति वडी प्रेमकी गैसी हौ ॥३६॥ राग टोडी ॥ हँसति नारि सब घरहि चली । हम जानी राधाहै खोटी हम खोटी राधिका भली ॥ इतते युवति जाति यमुना जे तिनको मगमें परखिरही । श्याम कहूँते आइ कढे ह्यां चले गए उत हेरतही ॥ इतनी तबहि नहीं यह जानी झूँठेही सब आनि गही ॥ सूरश्याम अपने रँग आये हम वाको नहिं भली कही ॥३७॥ राग बिलावल ॥ राधा श्याम सनेहिनी हरि राधा नेही । राधा हरिके तन बसे हरि राधा देही ॥ राधा हरिके नैनमें हरि राधा नैननि । कुंजभवन रति युद्धके जोरति बल मैननि ॥ और न काहूको रुचै वर घर गए दोऊ । मात पिता सतिभाइसों यह जानै न कोऊ । कैसे हूं करि करि दिन गयो निशि कटत न क्योंहूं । दोऊ रस बिरह मगन भए निशि भई अगोंहूं ॥ विरह सरोवर बूडई अंधकार सिवार । सुधि अवलंबन टेकही कहुँ वार न पार ॥ तमचुर टेरि पुकारई वूडे जिनि कोई ॥ सूर प्रात नवका मिल्यो आनन्द मन दोई ॥ ३८ ॥ राग धनाश्री ॥ मन मृग बेध्यो मोहन नैन बानसों । गूढ भावकी सैन अचानक तकि ताक्यो भ्रुकुटी कमानसों ॥ प्रथम नाद बल घेरि निकट लै मुरली सप्तक सुर बंधान

सों । पाछे बंक चितै मधुरै हँसि घात किये उलटे सुठान सों । सूर सुमार बिथा या तनुकी घटत नहीं औषधी आनसों । ह्वैहै सुख तबहीं उरअंतर आलिंगन गिरिधर सुजानसों॥ ३९ ॥ राग बिलावल॥ कान्ह उठे अति प्रातही तलबेली लागी । प्रिया प्रेमके रस भरे रति अंतर खागी ॥ श्याम उठत अवलोकिकै जननी तब जागी । सुन्दर वदन बिलोकि कै अंग अंग अनुरागी ॥ माता पूँछति सुअनको बलिं गई मेरे बारे । कहा आजु अचरज कियो तुम उठे सवारे ॥ झारी जल दँतवन दियो छवि परत न वारचो । उत्तम जललै प्रेमसों सुत बदन पखारचो॥करी मुखारी अतुरई नागरि रस छाके । सूर श्याम ऐसी दशा त्रिभुवन वश जाके ॥ ४० ॥ राग बिलावल ॥ उत वृषभानुसुता उठी यह भाव विचारै । रैनि बिहानी कठिनसों मन्मथ बल भारे ॥ ग्रीव मुतसरी तोरिकै अचरासों बाँध्यो । इहै बहानो करि लियो हरि मन अनुराध्यो ॥ जननी उठी अकुलाइके क्यों राधा जागी । कहां चली उठि भोरही सोवै न सभागी ॥ अब जननी सोऊं नहीं रवि किरनि प्रकाशी । तूहु उठे काहे नहीं जागे ब्रजवासी ॥ आपु उठी आँगन गई फिरि घरही आई । कबधौं मिलि हैं श्यामको पल रह्यो न जाई ॥ फिरि फिरि अजिरहि भवनही तलबेली लागी ॥ सूर श्यामके रसभरी राधा अनुरागी ॥ ॥ ४१ ॥ राग गुंडमलार ॥ सुतासों कहति वृषभानु घरनी । कहा तू राधिका भोरते फिरति है तेरी गति मोपै नहिं जाति बरनी ॥ तोरि मोतीसरी तब गुप्त करि धरचो कहुँ एहि मिसि सकुचि रही मुख न बोलै । मनहु खंजन चपल चन्द फंदा परचो उडत नाहिं बनत इत उतहि डोलै॥ कहा तेरी प्रकृति परी धौं लाडिली अबहिते कहा तू जाहिगी री । सूर कहै जननि बोले नहीं आज तू परुसि धरिहौ खाइगी री ॥ ४२ ॥ राग नट ॥ जननी पुनि पुनि ग्रीव निहारै । देखो नहीं मुतसरी माला सो जिनि कतहूं डारै ॥ बोले नहीं बात यह सुनि रही मनलागी मुसकान । अबही मोकों खीझि पठैहै बनिहै काको जान ॥ भली बुद्धि मेरे चित आई कृष्ण प्रीतिहि साँची । सूरदास राधिका नागरी नागरके रँग राँची ॥४३॥ राग सोरठ ॥ जननी अतिहि भई रिस हाई । बार बार कहै कुँवरि राधिका मोतिसरी कहां गमाई ॥ बूझेते तोहि ज्वाब न आवे कहा रही अरगाई । चौसर हार अमोल गरेको देहु न मेरी माई ॥ कालिहिते रीतो गर तेरो डारि कहूँ तू आई । सुनहु सूर माता रिस देखत राधा हँसति डेराई ॥ ४४ ॥ राग बिलावल ॥ सुन री मैया कालही मोतिसरी गँवाई । सखिन मिले यमुनागई धौं उनहि चुराई ॥ कीधौं जलहीमें गई यह सुधि नाहिं मेरे । तबते मैं पछितातिहौं कहति न डर तेरे ॥ पलक नहीं निशि कहूँ लगी मोहिं शपथ री तेरी । येहि डरते मैं आजुही अति उठी सबेरी ॥ महरि सुनत चकृत भई मुख ज्वाब न आवै । सूर राधिका गुनभरी कोउ पार न पावै ॥४५॥ राग गुंडमलार ॥ क्रोध करि सुतासों कहति माता । तोहिं बरजत मैं री अचगरी रिसपरी गर्व गंजन नामहै विधाता ॥ तेरो दोष नहीं भ्रमती तू जहीं तहीं नदी डोंगर वन बन पात पाता । मात पित लोककी कानि मानै नहीं निलज भई रहति नहीं लाज गाता ॥ भली नहिं उन करी शीश तोको धरी जगतमें सुता तू महर ताता । बात सुनिहै श्रवण भई बिनही भवन सूर डौर मारि आजु भ्राता ॥ ४६ ॥ राग धनाश्री ॥ जाहु तहीं मोतिसरी गमाई । तबहीं तौ घर पैठन पैहौ अब ऐसे ढँग आई॥जो बरजो आपुन सोइ सोइ करै देखो री गुन माई । एक एक नग सत सत दामनिके लाख टका दै ल्याई । जाके हाथ परचोसो दैहै घर बैठे निधि पाई । सूर सुनत री कुँवरि राधिका तोको नहीं भलाई ॥ ४७ ॥ राग टोडी ॥ भरि भरि नैन लेतिहै माता । मुखते कछु आँव नहिं बाता ॥ रीतो ग्रीव निहारत जबही । हियो उमँगि आवतहै तबही ॥ मोतिसरी ने

मुख परम विराजै । मानों शशि पारसबिच आजै ॥ मोतिसरी माला कहां गँवाई । जीव बिना करिहै वह भाई॥जाधौं देखि कहूंधौं पावै । सूर जोरिकर विधिहि मनावै ॥ ४८ ॥राग गुंडमलार॥ कहां वह मोतिसरी जो गँवाई री । बाबासों और लेहौं मँगाई री ॥ वै कहा करैगी सेति राखै री । तादिना तूहीधौं कितिक भाषै री ॥ नैन भरिलेति कह और नाहीं री ॥ छोर मोतिसरीको मोहिं रिसा हि री॥संदूकन भरि धरे ते न खोलै री । कहा मोसों खीझ बोलै री ॥ सुता वृषभानुकी हरष मनही री। सूर प्रभु सैन दै बोले वनही री ॥४९॥राग गौरी॥ सुनि राधा अब तोहि न पत्यैहौं । और हार चौकी हमेल अब तेरे कंठ न नैहौं ॥ लाख टकाकी हानि करी तैं सो अब तोसों लैहौं । हार बिना ल्याये लरिहौं री घरनहिं पैठन दैहौं ॥ जब देखों ग्रीवहै मोतिसरी तबहीं तो संच पैहौं । नातर सूर जनमभरि तेरो नाउँ नहीं सुख लैहौं ॥ ५० ॥ राग कल्याण ॥ सुनि री राधा अतिलडवौ री यमुनगई जब संग को नहीं । बूझति नहीं जाइ अपनिनको न्हातरही जब जोन जोनहीं ॥ काको नाउँ धरौं तो आगे ललिता चंद्रावली नहीं नहीं । बहुत रहीं सँग सखी सहेली कहौं कहा मैं सैन सैनही ॥ देखौजाइ यमुनतटहीमें जहां धरिकै मैं न्हात रही ही । सूरजाइ बूझौ धौं वाको ब्रजयुवती एक देखिरही ही ॥५१॥राग कल्याण॥ जैहै कहा मोतिसरी मेरी । अब सुधि भई लई वाहीने हँसत चली वृषभानु किशोरी ॥ अबही मैं लीन्हें आवतिहौं मेरो संग आवै जिनिकोरी । देखोधौं कहं करिहो वाको बडे लोग सीखतहै चोरी ॥ मोको आजु अबेर लागिहै ढूँढूँगी ब्रज घर घर खोरी । सूर चली निधरकह्वै सबसों चतुर राधिका बातन भोरी ॥ ५२ ॥ नंद सुअन बार बार रवनीपंथ जोहै री । लोचन हरि करि चकोर राधा मुख चंद और देखत नहिं तिमिर भार मनही मन मोहै री ॥ नैना दोउ भृंगरूप वदन कमल शरदरूप तरनिको प्रकाश मिलन बिना चपल डोलै री। लोचन मृग सुभग जोर राग रूप भएभोर भौंह धनुप शर कटाक्ष सुरति व्याध तोलै री ॥ कीधौं एक बच्छ चारु प्यारी सुख रूप सार श्याम देखि रीझि मन इहै सांच मानी।सूर श्याम सुखदधाम राधाहै जाहि नाम आतुर पियजानि गवन प्यारी अतुरानी॥५३॥राग देवगंधार॥श्याम अति राधा विरहभ रे कबहुँ सदन कबहूँ आँगनही कबहूं पौंरि खरे ॥ जननी आतुर करति रसोई देखि देखि हरिजात । कहा अबेर करति तू अब री भूखलगी अतिमात ॥ मैं बलिजाउँ श्यामघन सुंदर अब बैठौ तुम आई । सूर सखा सँग सबै बोलावहु हलधर नहीं बताई ॥५४॥ राग विलावल ॥ महरि कह्यो नँदला-डिले सँग सखा बोलावहु । करैं कलेऊ आइकै हलधरहु बोलावहु ॥ हलधर लयो बोलाइकै मोहन करि आदर । दाऊजी चलिजेंइये यह कहि मनसादर ॥ कान्ह जाइ तुम जेवहु मोको रुचिनाहीं । सखा संग हरि लैगए बैठे एकठाहीं ॥ पटरस व्यंजन को गनै बहुभांति रसोई । सरस कनिक वेसन मिलै रुचि रोटी पोई ॥ प्रेमसहित परुसन लगी हलधरकी माता । ग्वाल सखा सब जोरिकै बैठे नँदताता ॥ सखा सबै जेंवन लगे हरि आयसु दीन्हों । सूरदास प्रभु आपहु कर जोरहि लीन्हों ॥ ॥ ५५ ॥ राग आसावरी ॥ नंदमहर घरके पिछवारे राधा आइ बतानीहो । मनौ आँबदल मोर देखिकै कुह कि कोकिला बानीहो ॥ झूठेहिनामलेत ललिताको काहे जाहु परानीहो । वृंदावन मग जाति अकेली शिरलिये दही मथानीहो ॥ मैं बैठी परखति ह्याँ रैहों श्याम तबहिते जानीहो । कोक कला गुणआगरि नागरि सूर चतुरई ठानीहो॥५६॥ राग रामकली॥श्यामसखा जेंवतही छाँडे।करको कौर डारि पनवारे नागरि सूर आपु चले अनिचाँडे ॥ चकृतभई देखत जननीदोउ चकृत भए सब ग्वाल । अति आतुर तुम चले कहांहो हमहि कहो गोपाल ॥ अबही एक सखा यह कहि गयो गाइ रही

बन ब्याइ । सुनहु सूर मैं जेंवन बैठो वह सुधि गई भुलाइ॥५७॥राग ललित॥ धौरी मेरी गाइ बियानी। सखन कह्यो तुम जेंवहु बैठे श्याम चतुरई ठानी॥गाइ नहीं ह्यां बछरा नाहीं वहँ है राधा रानी । सखा हँसत मनही मन कहि कहि ऐसे गुणनि निधानी॥जननी भेद नहीं कछु जानै बार बार अकुलानी । सूर श्याम भूखो उठि धायो मेरे न गाइ बियानी ॥५८॥राग कल्याण॥ सैनदै नारि गई बनधामको । तबहिं करकौरैं दियो डारि नहिं रहिसकै ग्वाल जेंवत तजे मोहिं गई श्यामको ॥ चले अकुलाइ बनधाइ ब्यानी गाय देखिहो जाइ मनहरष कीन्हों॥प्रिया निरखति पंथ मिलै कब हरिकंत गये यहि अंतर हँसि अंक लीन्हों ॥ अतिहि सुखपाइ अतुराइ मिले धाइ दोऊ मनो अति रंक नव निधिपाई। सूर प्रभुकी प्रिया राधिका अति नवल नवल नंदलालके मनहि भाई ॥ ५९ ॥ राग धनाश्री ॥ पिछवारे ह्वै बोलि सुनायो । कमलनयन हरि करत कलेऊ करनादिन आतन लायो ॥ गाइ एक बन ब्याइ रहीहै येहि मिस आतुर उठिधायो । बेनु न कियो लकुट नहिं लीन्हों हरबराइ कोऊ सखन बोलायो ॥ चौंकि परे चकृत ह्वै जित कित सत्य आहिकी सपन भयो ज्ञायो । फूले फिरत शंक ना मानत मानहु सुधा किरनि छबि छायो ॥ मिलि बैठे संकेत लतातर कियो सबै जितनो मन भायो । सूरदास सुंदरी सयानी उलटि अंक गिरिधर पर नायो ॥ ६० ॥ राग देवगंधार ॥ दोउ राजत रति रण धीर । महासुभट प्रगटे भूतल वृषभानु सुता बलबीर ॥ भौंहैं धनुष चढाइ परस्पर सजे कवच तनुचीर । गुण संधान निमेष घटत नहिं छुटे कटाक्षनितीर ॥ नखनेजा आकृत उरलागे नेक न मानत पीर । मुरलीधरनि डारि आयुधले गहे सुभुज भटभीर ॥ प्रेम समुद्र छाँडि मर्यादा उमँगि मिले तजि तीर । करत विहार दुहूँ दिशते मानो सींचत सुधा शरीर ॥ अति बल जोवन धाइ रुचिर रचि बदन मिलि श्रमनीर । सूरदास स्वामी अरु प्यारी विहरत कुंज कुटीर ॥ ६१ ॥ राग कान्हरो॥नवल निकुंज नवल नवला मिलि नवल निकेतनि रुचिर बनायो । बिलसत विपिन विलास विविधवर वारिजबदन विकच सचुपाये । लागत चंद्र मयूष सुतो तनु लताभवन रंध्रनि मग आये ॥ मनहुँ मदन बल्लीपरहिमकर सींचत सुधाधार सत नाये ॥ सुनि सुनि सूचति श्रवन सुंदरी मौन किये मोदति मन लाये । सूरसखी राधा माधौ मिलि क्रीडतहै रतिपतिहि लजाये॥६२॥राग कल्याण॥ हरपि पिय प्रेम तिय अंक लीन्हीं । पिये बिन बसनकरि उलटि धरि भुजनभरि सुरति रति पूर प्रति निबल कीन्हीं॥आपने कर नखनि अलक कुरधारही कबहुँ बाँधे अतिहि लगत लोभा॥कबहुँ मुख मोरि चुंबन देत हरप ह्वै अधर भरि दशन वह उनहि शोभा ॥ बहुरि उपज्यो काम राधिका पति श्याम मगन रस ताम नहिं तनु सँभारै । सूर प्रभु नवल नवला नवल कुंजगृह अन्त नहिं लहत दोउ रति विहारै ॥६३॥राग नट॥नागर श्याम नागरी नारि । सुरति रति रणजीत दोऊ अंग मन्मथ धारि ॥ श्याम तनु घन नील मानो ताडित तन सुकुमारि । मानो मर्कत कनक संयुत रच्यो काम सँवारि ॥ कोक गुन कारि कुशल श्यामा उत कुशल नन्दलाल । सूर श्याम अनंग नायक विवश कीन्हीं बाल ॥ ॥ ६४ ॥ राग मलार ॥ उलहरि आयो शीतल बूँद पवन पुरवाई । बाढे द्रुम सघन बन दोउहो चहुँ ओर घटा छाई ॥ अनमने भए कन्हाई भीजत देखि राधिका माधव कारी कामरि ओढाई ॥ अति दरेरकी झरेर टपकत सब अँबराई ॥ कांपत तनु त्रियाको पिय हँसिके ग्रीवा लगाई । भए एक ठौर सूर श्याम श्यामा भरि कोर अरस परस रीझत उपरै नाहीं मैं समाई ॥ ६५ ॥ राग मलार॥दीजै कान्ह काँधेहूको कंमर । नान्ही नान्ही बूँदन बरपन लागी भीजत कुसुंभी अंबर ॥ बार बार अकुलाइ राधिका देखि मेघ आडंबर । हँसि हँसि रीझि बैठि रहे दोऊ ओढि सुभग पीताम्बर ॥ शिव सनका-

दिक नारद शारद अंत न पावैं तुम्बर । सूर श्याम गति लखि न परत कछु खात ग्वालन ताजि संमर ॥ ६६ ॥ राग गौरी ॥ सुरति अंत बैठे बनवारी । प्यारी नैन जुरत नाहिं सन्मुख सकुचि हँसत गिरिधारी॥ बसन सँभारि तन लेत गये दोऊ आनँद उर न समाइ । चितवत दुरि दुरि नैन लजौंहीं सो छबि बरनि न जाइ ॥ नागरि अंग मरगजी सारी कान्ह मरगजे अंग । सूरज प्रभु प्यारी बश कीन्हीं हाव भाव रति रंग॥६७॥राग सोरठ॥रीझे श्याम नागरी छबिपर । प्यारी एक अंग पर अटकी यह गति भई परस्पर ॥ देह दशाकी सुधि नाहिं काहू नैन नैन मिलि अटके । इन्दीवर राजीव कमल पर युग खंजन जनु लटके ॥ चकृत भए तनुकी सुधि आई वनही में भई राति । सूर श्याम श्यामा विहार करि सो छबिकी एक भाँति ॥ ६८ ॥ राग आसावरी॥ कान्ह कह्यो वन रैनि न कीजै सुनहु राधिका प्यारी हो । अति हितसों उरलाइ कह्यो अब भवन आपने जारी हो ॥ मात पिता जिय जान न कोई गुप्त प्रीति रस भारी हो । करते कौर डारि मैं आयो देखत दोउ महतारी हो ॥ तुम जो प्यारी मोही लागत चन्द्र चकोर कहारी हो । सूरदास स्वामी इन बातन नागरि रिझई भारी हो ॥ ६९ ॥ राग कल्याण॥ प्यारी उठि पियके उर लागी । आलस अंग लटाकि लट आई देखि श्याम बडभागी ॥ सुरति मोन निशि बीती मानों हँसनि प्रात भयो जागी । अति सुख कंठ लगाइ लई हरि अरस परस अनुरागी ॥ नवतनमें घनबेली दामिनि सहज मेंटि मिलि पागी । सूरदास प्रभुको अंकम भरि कामद्वंद्व तनु त्यागी ॥ ७० ॥ ॥ राग गौरी ॥ कहा करौं पग चलत न घरको । नैन विमुख जन देखे जात न लुब्धे अरुन अधरको ॥ श्रवण कहत वे वचन सुनै नाहिं रिस पावत मो परको । मन अटक्यो रस मधुर हँसनि पर डरत न काहू डरको ॥ इंद्री अंग अंग अरुझानी श्यामरंग नटवरको । सुनहु सूर प्रभु रही अकेली कहा करौं सुंदर वरको ॥ ७१ ॥ श्याम आपनी चितवनि बरजो अरु मुखकी मुसकानी । तुम्हरे तनक सहजके कारन सहियत सरवस हानी ॥ इजै बिजै दोऊ आपुसमें निरये बिधना आनि । विद्यमान सबही इन देखत बशकरवेकी बानि ॥ आपुनही डहकाय अपुनपो कहियत कहा बखानि । सूर सुगंध गँवाइ गांठिको रही बौरई मानि॥७२॥राग बिहागरो॥अतिहित श्याम बोले बैन । तुम बदन देखे बिना ये तृप्तहोत न नैन॥पलक नाहिं चितते टराति तुम प्राणवल्लभ नारि । सुनति श्रवननि बचन अमृत हरष अंतर भारि ॥ मात पित अवसेर करिहै गवन कीजे गेह । सूर प्रभु प्रिय त्रिया आगे प्रगटि पूरन नेह ॥ ७३ ॥ श्याम प्रगट कीन्हों अनुराग । अति आनंद मनहि मन नागरि बदति आपने भाग ॥ सुंदरघन उत व्रजहि सिधारे इतहि गमन करि नारि । दंपति नैन रहे दोउ भरि भरि गये सुरति रति सारि ॥ जननी मन अवसेर करतिही हरि पहुँचे तेहि काल । सूर श्यामको मात अंकभरि कहति जाउँ बलिलाल ॥ ७४ ॥ मैं बलि जाऊं कन्हैयाकी । करते कौर डारि उठिधायो व्यात सुनी बनगैयाकी ॥ धौरी गाइ आपनी जानी उपजी प्रीति लवैयाकी । तातो जल समोइ पग धोवति श्याम देखि हित मैयाकी ॥ जो अनुराग यशोदाके उर मुखकी कहति नन्दैयाकी । यह सुख सूर और कहुँ नाहीं सौंह करत बलभैयाकी ॥७५॥ राग ईमन ॥ कान्ह प्यारे वारने जाऊं श्याम सुंदर मूरति पर । छबिसों छबीली लटकि वदनपर । चंद्रिकाकी लटकनि अतिहि बिराजत मुरली सुभग धरेकर । सुंदरनैन बिशाल भौंह सुरचाप मनो तिलक बिराजित ललित भालपर । सूर श्याम मेरो अतिबानक बन्यो बनमाला अतिही उर राजत कटि तट सोहत पीतांबर ॥ ७६ ॥ राग बिहागरो ॥ वह तो मेरी गाइ न होई । सुन मैया मैं वृथा भरम्यो बन

जो देखों नैनन भरि जोई॥ वृंदावन ढूंढ्यो यमुनातट देख्यो बन डोंगरी मंझारी। सखा संग काउ नहीं अकेलो कांधे कामरि कर लकुटधारी ॥ वहतौ धेनु और काहूकी युवती एकें मिली धौं कौन । सूर संग मेरे वह आई मोको उहि पहुँचायो भौन ॥ ७७ ॥ राग रामकली ॥ राधा अतिही चतुर प्रवीन । कृष्णको सुख दे चली हँसि हंसगति कटिछीन ॥ हारके मिस इहां आई श्याम मणिके काज । भयो सब पूरण मनोरथ मिले श्रीव्रजराज ॥ गाँठि आँचर छोरिके मोतसरी लीन्ही हाथ । सखी आवत देखि राधा लई ताको साथ ॥ युवति बूझति कहां नागरि निशि गई एक याम । सूर ब्योरो कहि सुनायो मैं गई तेहि काम ॥ ७८ ॥ राग कान्हरो ॥ ऐसी री निधरक तू राधा । व्रज घर घर बन बन डोली तू नहीं कियो कहुँ बाधा ॥ मोको संग बोलि तू लेती करनी करी अगाधा । प्रातहिते तू अब आवतिहै रैनि याम लग आधा ॥ पायो हार किधौं पुनि नाहीं देखो री मोहिं साधा। आँचर हेरि ग्रीव देखरायो दामन मोल उपाधा ॥ मन मन कहति बात यह मिलवति गई श्याम अब राधा।सूर सखी लखि लीनी ताको यह तोहै कछु दुविदाधा॥७९॥राग धनाश्री॥कहि राधा किन हार चोरायो । व्रज युवतिनि सबहिन मैं जानति घर घर लैलै नाम बतायो ॥ श्यामा कामा चतुरा नवला प्रमुदा सुमदा नारि।सुखमा शीला अवधा नंदा वृंदा यमुना सारि॥कमला तारा विमला चंदा चंद्रावलि सुकुमारि । अमला अबला कंजा मुकुता हीरा नीला प्यारि ॥ सुमना बहुला चंपा जुहि ला ज्ञाना भाना भाउ।प्रेमा दामा रूपा हंसा रंगा हरषा जाउ॥दर्वा रंभा कृष्णा ध्याना मैना नैना रूप । रत्ना कुमुदा मोहा करुना ललना लोभा नूप॥इतनिन में कहि कौने लीन्हो ताको नाउ बताउ । सूर श्याम हैं चोर तिहारे मैं जानति सब दाउँ ॥ ८० ॥ शंकराभरन ॥ सुरति रति मानि आइ पिय पै तैं गजगति गामिनी । मरगजे हार बिथुरे बार देखियत आइ गई एक याम यामिनी ॥ औरै शोभा सोहाई अंग अंग अरसाय बोलतिहै कहा अलसामिनी । सूरदास छबि निरखति रही रसवश है री धनि धनि धनि तू भामिनी ॥८१॥ राग कान्हरो ॥उरधारी लटै छूटी आननपर भीजी फुलेलनसों आली हरि संग केलि । सोंधे अरगजी अरु मरगजी सारी केसरि खोरि बिराजित कहुँ कहुँ कुचनि पर दरकी अँगिया घन बेलि ॥ आलसहैं भरे नैन बैन अटपटात जात ऐंडात जम्हात गात अंग मोरि बहियां झोलि । सूरज प्रभु प्यारी प्यारे संग करि रस बिलास अरस परस दोउ अंको मेलि ॥ ८२ ॥ ॥ राग ललित ॥ आइ तू डगमगात ऐंडात जँभावति रंगमगी रंग मगी रंग भरिके । चंद उदै मुख देखतहीं कर दर्पन प्रतिबिंब निहारि धौं पीक लीक नैननि छबि परके ॥ बिथुरे अलक सुथरे मुख ऊपर अति आनंद उर हरिके । सुखकेलि करिके सूरज प्रभु रसिकराइ रस बश कीन्ही बनाइ नवला नवल रीझे मन ढरिके ॥ ८३ ॥ राग बिलावल ॥ सुनि री राधा अबहि नई । बातें कहा बनावति मोसों हमहूं ते तुम चतुरभई ॥ कहां ग्वालि कहँ हार तुम्हारो कहां तहां तू आजु गई । मनहीं जानि लेहु मैं जान्यो जाको रंग तू सदा रई ॥ तेरे गुण परगट करिहों मैं ऐसी रीति कहुँ न भई । सूर श्याम जबते सँग कीन्हों तबहीते मैं जानि लई ॥ ८४ ॥ राग बिलावल ॥ इन बातन कछु पावति री । बिन देखे लोगनसों सुनि सुनि काहे बैर बढावत री ॥ मोको जहां अकेली देखति तबही ये उपजा- वत री । व्रज युवतिनकी संगति त्यागो पुनि पुनि क्रोध करावत री ॥ कैसी बुद्धि तुम्हारी सबकी ऐसी ए तुमको भावत री । सूर शीशतृणदे बूझतिहो सांच कहत की बनावत री ॥८५, राग गुंडमलार॥ करति अबसेर वृषभानुनारी । प्राततें गई बासर गयो बीति एक याम निशिगई धौं कहां बारी ॥ हार के त्रासमें कुँवरि त्रासी बहुत तेही डरन अजहुँ नहिं सदन आई।कहाँ मैं जाउँ कहा धौं रही रूसिके

सखिनसों कहति कही मिली माई ॥ हार बहिजाइ अतिगई अकुलाइके सुताके नाउँ इक उहै मेरे। सूर यह बात जो सुनै अबहीं महर कहैंगे मोहिं ये ढंग तेरे ॥ ८६ ॥ राग सोरठ ॥ राधा उर डरात गृह आई। देखतही कीरति महतारी हरषि कुँवरि उर लाई ॥ धीरज भयो सुता माता जिय दूरि गयो तनु सोच। मेरीको मैं काहे त्रासी कहा कियो यह पोच ॥ लै री मैया हार मोतसरी जा कारण मोहिं त्रासी। सूर राधिकाके गुण ऐसे मिली आई अविनाशी ॥ ८७ ॥ राग बिहागरो ॥ परमचतुर वृषभानु दुलारी। यह मति रची कृष्णमिलिवेको परमपुनीत महा री। उत सुखदियो नंदनंदनको इतहि हरप महतारी। हारइतो उपकार करायो कबहुँ न उरते टारी ॥ जे शिव सनक सनातन दुर्लभ ते वश कियो मुरारी। सूरदास प्रभु कृपा अगोचर निगमनहूं ते न्यारी ॥ ८८ ॥ राग भैरव ॥ श्याम भए वश नागरिके। नैन कटाक्ष बंक अवलोकनि रीझे घोष उजागरके ॥ चित मधुकर रस कमल कोशको प्यारी वदन सुधागरिके। लोकलाज संपुटनहिं छूटत फिरि फिरि आवत वागरिके ॥ मिलन प्रकाश मनावत मन मन कहा कहौं अनुरागरिको। सूर श्याम वश श्याम भएहैं धनि ऐसी बडभागरिको॥८९॥रागआसावरी॥श्याम भए वृषभानु सुतावश और नहीं कछु भावै हो। जो प्रभु तिहूं भुवनको नायक सुर मुनि अंत न पावै हो॥जाको शिव ध्यावत निशि वासर सहसानन जेहि गावै हो। सो हरि राधा वदन चंदको नैनचकोर त्रसावै हो ॥ जाको देखि अनंग अनागत नागरि छबि भरमावे हो।सूर श्याम श्यामावश ऐसे ज्यों सँग छाह डुलावै हो॥९०॥ राग जैतश्री॥कबहूं श्याम यमुनतट जात ।कबहूं कदम चढत मग देखत मन राधा बिनअति अकुलात। कबहुं जात वन कुंज धामको देखि रहत कछु नहीं सुहात।तब आवत वृषभानुपुराको अति अनुराग भरे नँदतात ॥ प्यारी हृदय प्रगटही जानति तब मन मांझ सिहात। सूरदास प्रभु नागरिके उर नागर श्यामल गात ॥ ९१ ॥ राग गूजरी ॥ राधा श्याम श्याम राधारँग। पियप्यारीको हृदय राखत प्यारी रहति सदा हरिके सँग॥नागरि नैन चकोर वदन शशि पिय मधुकर अंबुज सुंदरि मुख। चाहत अरस परस ऐसे करि हरि नागर नागरि नागर सुख ॥ सुख दुख सोचि रहत मनही मन तब जानत तनको यह कारन। सुनहुँ सूर कुलकानि जीय दुखं दोऊ फल दोउ करत विचारन॥९२॥राग सूही बिलावल॥यमुना चली राधिका गोरी। युवति वृंद बिच चतुरनागरी देखे नंद सुअन तेहि खोरी ॥ व्याकुल दशा जानि मोहनकी मनही मन डरपी उन ओरी। चतुर काम फंग परे कन्हाई अब धौं इनहि बुझावै को री ॥ इत सखियनसों बात बनावति अति ह्वैगई तनकसी भोरी। सूर उतहि हरि भाव बतावत बीर धरौ मिलिहै दोउ जोरी ॥ ९३ ॥ राग जयतश्री तब राधा इक भाव बतावति। मुख मुसकाइ सकुचि पुनि लीन्हो सहज चली अलकै निरुवारति ॥ एक सखीः आवत जल लीन्हें तासों कहति सुनावति। टेरि कह्यो घर मेरे जैहो मैं यमुनाते आवति ॥ तब सुखपाइ चले हरि घरको हरि प्यारीहि मनावत। सूरज प्रभु बितपन्न कोकगुन ताते हरि हरि ध्यावत ॥ ९४ ॥ राग धनाश्री ॥ श्यामको भाव दैगई राधा। नारि नागरि न काहू लख्यो कोऊ नहीं कान्ह कछु करतहै बहुत अनुराधा॥चितै हरि वदन याको हँसत मैं लखी वेउ तहिं गए कछु हरष किये। भाव तौ भावके सँग नाहीं सने ये महा चतुर चतुरई लिये ॥ आजुही रैनि दोउ संग ये मिलहिंगे हरे कहि परसपर मनहि मन जानी। सूर ब्रजनागरी नारि नागरिन सँग फिरी ब्रज तुरत लै यमुन पानी॥९५॥राग टोडी॥भाव दियो आँवँगे श्याम। अंग अंग आभूपन साजति राजति अपने धाम ॥ रतिरण जानि अनंग नृपतिसों आप नृपति राजति बल जोरति। अति सुगंध मर्दन अँग अँग ठनि वनि वनि भूपन भेपति॥बीरा हार चीर चोली छबि सैना सजि शृंगार।

पान वचन सह्लाह कवच दै जोरो सूर अपार ॥९६॥ राग कान्हरो॥ प्यारी अंग शृंगार कियो।वेनी रची सुभग कर अपने टीका भाल दियो ॥ मोतियन मांग सँवारि प्रथमही केसरि आड सँवारि । लोचन आँजि श्रवण तरवन छबि को कबि कहै निवारि ॥ नासा नथ अतिही छबि राजत बीरा अधरनि रंग । नवसत साजि चीर चोली बनि सूर मिलनि हरि संग ॥९७॥राग कल्याण॥नागरि नागर पंथ निहारै । उदै बालि शशि अस्तभयो अब जिय जिय इहै विचारै ॥ कीधौं अबहीं आवत ह्वैहैं की आवन नाहिं पैहैं । मात पिताकी त्रास उतहि इत मेरे घरहि डरैहैं ॥ अँग शृंगार श्यामहित कीन्हें वृथा होन ये चाहत । सूर श्याम आवैं की नाहीं मन मन इह अवगाहत ॥ ९८ ॥ राग कान्हरो ॥ श्यामा निशिमें सरस बनी री । मृगारिपु लंक तासु रिपु गज ता ऊपर मधु केलि ठनी री । कीर कपोत मधुप पिक तुंवर रिपु सत रेख बनी री । उडुपति विंब धरे अति शोभा सुख बाला जोरिचिनी री ॥ कनक खंभ रचि नवसत साजे जलधर भख जब श्रवन सुनी री । करगहि सत्र सात परिसारँग दंपतिहीकी सुरति ठनी री ॥ उमापतिहि रिपुको ललचानी वनरिपु तनमें अधिक जरी री । सूरदास प्रभु मिलो राधिका तन मन शीतल रोमभरी री ॥ राग बिहागरो ॥ राधा रचि रचि सेज सँवारति । तापर सुमन सुगंध बिछावति बारंबार निहारति ॥ भवन गवन करिहैं हरि मेरे हरप दुखहि निरुवारति । आवैं कबहुँ अचानकही जो सुभग पाँवडे डारति ॥ यह अभिलाषहि में हरि प्रगटे पुरुष भवन सकुचानी । वह सुख श्रीराधा माधोको सूर उरहि यह जानी ॥ ९९ ॥ रति अति उपजायो पियप्यारी मन एक । सूरदास स्वामी स्वामिनि मिलि कोक कलानि अनेक ॥ कहा कहौं सुख कह्यो न जाइ। वह अभिलाष श्यामकी आवनि दुहुँ उर आनँद उर न समाइ ॥ द्वादशकान्ह द्वादशी आपुन वह निशि वै हरि राधा योग । वह रसकी झझकनि वह महिमा वह मुसकनि वैसो संयोग । वै हित बोल परस्पर दोऊ ठटकत कहत प्रेम पहिचानि । सूर श्याम कर वाम भुजाधरि उछंगलई वह मुख पहिचानि ॥१६००॥ राग कान्हरो ॥ श्याम सकुच प्यारी उर जानी।उछंगि लेई वाम भुज भरिकै बार बार कहि बानी ॥ निरखति सकुच वदन हरिप्यारी प्रेमसहित दोऊ ज्ञानी । करत कहा पिय अति उताइली मैं कहुँ जात परानी॥कुटिल कटाक्ष बंक करि भृकुटी आनन मुरि मुसकानी। सूर श्याम गिरिधर रतिनागर नागरि राधारानी ॥ १ ॥ नागरि नागर करत विहार । कामनृपति सैना दुहुँ अंगनि शोभा वार न पार ॥ अधर अधर नैननि नैननि भ्रुव भाल कियो इकठौर।मन इंदीवर कमल कसेसे चारि भँवर रंग और ॥ वंदन भाल बिहँसनि दोऊ अरस परस वरनारि । मनों बिच चंद चकोर परस्पर कमल अरुन रविधारि ॥ २ ॥ राग गुंडमलार ॥ श्यामा श्याम परम कुशल जोरी । मनों नव जलद पर दामिनिकी कला सहज गति मेटि श्रुति भई भोरी ॥ अलक बिथुरी श्याम मुख पर रहे मनों बल राहु शशिं घेरि लीन्हों । चितै मुख चारु चुंबन करति सकुच तजि दशन छत अधर पिय मगन दीन्हों ॥ परत श्रम बूँद टप टपकि आनन बाल भई बेहाल रति मोह भारी । विधुपर सुदंत विध्वंत अमृत चुवत सूर विपरीत रति पीडि नारि ॥ ३ ॥ राग कुरंग ॥ कुंजके निकट कुंज सुरति निरसि सों सेजराजत सुख गात । छूटिगई तनकी चोली दरकि तरकि गये चारो याम रजनी विहानी भोर रे भोर प्रात ॥ आलससों उठि बैठे अरस परस दोउ दंपति अति मन मन मुसकात । सूर आस पूरी श्यामा श्याम वनी जोरी निशिरस सुधि आये नैन नैननिजात ॥ ४ ॥ राग ललित ॥ राजत दोउ रतिरंग भरे । सहज प्रीति विपरीति निशा सब आलस सेज परे ॥ अति रणवीर परस्पर दोऊ नेकहु कोउ न मुरे । अंग अंग बल अपने अरिनिसों रति संग्राम लरे ॥ मगन मुरछि रहे खेत सेज पर इत

उत कोउ न परै। सूर श्याम श्यामा रतिं रणते एक पग पल न टरै ॥ ५॥ राग विभास ॥ श्यामा श्याम सेज उठि बैठे अरस परस दोउ करत बिहार। उन उनकी पहिरी मोतिनकी माला उन उनको पहिरयो नवसरिहार ॥ लटपट पेंच सँवारति प्यारी अलक सँवारत नंदकुमार। सूरदास प्रभु नागरि नागर विपरीत भूषण करत शृंगार ॥ ६ ॥ राग ललित॥ करि शृंगार दोऊ अलसाने। प्रथम बोल तमचुर सुनि हरषे पुनि पौढे दोऊ लपटाने ॥ रति रण युद्ध याम त्रय नीके सेज परे उठि पुनि मुरझाने। मानों शूर खेत सम लरिकै गिरे उठत फिरि गिरे लजानै ॥ ७ ॥ राग ललित ॥ बोले तमचुर चारों यामको गजर मारयो पौन भयो शीतल तमतमता गई। प्राची अरुनानी धानि किरिन उज्यारी नभ छाई उडगन चंद्रमा मलिनता लई ॥ मुकुले कमल वच्छ बंधन बिछोहि ग्वाल चरै चली गाइ द्रिज पैंती करको दई ॥ सूरदास राधिका सरसबानी बोलि कहै जागो प्राणप्यारे जू सबारेकी समै भई ॥ ८॥ राग विभास ॥ चिरई चुहचुहानी चंदकी ज्योति परानी रजनी बिहानी प्राची पियरी प्रवानकी। तारिका दुरानी तम घटे चुरबोले श्रवण भनक परी ललितके तानकी ॥ भृंग मिले भारजा बिछुरी जोरी कोक मिले उतरी पनच अब कामके कमानकी। अथवत आये गृह बहुरि उवत भान उठौ प्राणनाथ मह्रा जान माणि जानकी ॥ व्रज घर घर इहै करत चवाव लोग बार बार कहनि करनि पग आनकी। सूरदास प्रभु नंदसुवन सिधारो धाम सुनत उठनि छबि कृपाके निधानकी ॥ ९ ॥ राग विलावल॥ जागिये प्राणपति रैनि बीती। चंद्रकी द्युतिगई पहै पीरीभई सकुच नाहीं दई अतिहि भीती ॥ मात पितु बंधु गुरुजन अबहिं जानिहैं लखै जिनि कहूं यह लाज भारी। सखिन आगे नहीं नहीं सब दिन कही मोहि घेरे रहति सबै नारी॥ उठे मुसुकाइ अकुलाइ अतुराइकै निकसि गए श्याम व्रजनारि जान्यो। सूर प्रभु नंदनंदन दरश दै गये निरखि यकटक रही पल भुलान्यो ॥१०॥ राग विलावल प्रगट दरश दै गए कन्हाई। राधा गृहते निकसत देखे यह उनकी मन साध पुराई ॥ शीश मुकुट मोतिन उरमाला पीतांबर पट सहज फिराई। श्याम वरन तन निरखि भुलानी अंग अंग छबि कह्यो न जाई ॥ करति सोच राधा मन अपने आलस भरे गये हरि माई। सूर श्याम निशिं नेक न सोये इहै कहति पुनि पुनि पछिताई ॥ ११ ॥ राग विलावल ॥ श्याम गये देखै जिनि कोई। सखियनसों निबहन पुनि पैहौं इनि आगे राखौं रसगोई ॥ देखै आइ द्वारकै नागरि जहाँ तहाँ व्रजनारी। सकुचि गई युवतिनके देखत दुखकीन्ही जिय भारी ॥ मन चिंता अतिही उपजायो बारबार पछितानी। सूर श्यामसों प्रीति गुप्तही आजु सबनि इन जानी ॥ १२ ॥ राग विलावल ॥ बार बार राधा पछतानी। निकसे श्याम सदन मेरेते इन अटकरि पहिचानी ॥ नितही नित बूझति ये मोसों मैं इन पर सतराति। अबनौ हरि प्रगटही देखे पुनि पुनि कहति लजाति ॥ यक ऐसेहि झकझोरति मोको पायो नीको दोउ। सूर आजु कहि भांति दुराऊं सोचति करति उपाउ ॥१३॥ सोच परयो मन राधिका कछु कहत न आवै। कछु हरषे कछु दुख करै मन मौज बढावै ॥ निशि रस रंगहिमें पगी तनुसुधि बिसरावै। कबहुँ बिचारति निठुर है सखि ज्वाब न आवै ॥ अवहीं मोको बूझहै युवती चतुरावै ॥ तिन सन्मुख कैहो कहा प्रभु सूर मनावै ॥१४॥ राग नटनारायण ॥ कबहूं मगन हरिके नेह। श्याम सँग निशि सुरतिको सुख भूलि अपनी देह ॥ जबहिं आवति सुधि सखिनकी रहति अति सरमाइ। तब करति हरि ध्यान हिरदै चरण कमल मनाइ ॥ होइ ज्यों परबोध उनको मेरी पति जिन जाइ। निदरि निदरि सबको रहीहू आजुलौं यहि भाइ। अबहिं सब जुरि आइहैं ह्यां तुम बिना न उपाइ। सूर प्रभु

ऐसी करौ कछु बहुरि न जाहु लजाइ ॥१५॥राग गोडी ॥ ज्वाब कहा मैं देहौं उनको । की आवति अबहीं की छिनकहि चोर कहैगी मोको ॥ कैसे हूं पति रहै विधाता अब यह करौं सँभारि । घेरेहि रहति दुराऊं कबलौं ऐसी नागरि नारि । नैना भए चकोर रहत हैं सुख शशि पूरण श्याम । सुनहु सूर यह दशा हमारी ये ब्रजकी सब बाम॥१६॥राग जैतश्री॥ये सब मेरेहि खोज परी । मैंतौ श्याम मिली नाहिं नीके आजु रही निशि संग हरी ॥ युवतीहैं सब दई सँवारी वर बनहू में रहति भरी । कैसे धौं यह साध मिटैगी कहां मिलै जो एक घरी ॥ प्रगट करै तो बनति नहीं कछु लोक सकुच कुल लजा मरी । ते परगट अबहीं इन देखे सूरज प्रभु ब्रजराज हरी ॥१७॥ राग धनाश्री ॥ तब नागरि मन हरष बढायो । परम कुशल राधा हरि प्यारी हृदय बुद्धि उपजायो ॥ अब आवैं कैसेहु अँग बूझे ज्वाब मनहि ठहरायो । अति आनंद पुलक तनु कीन्ही सोच मोच बिसरायो ॥ प्रगट गए जैसे नँदनंदन उहै ध्यान उपजायो । सूरदास प्रभु रूप बखानो इनको जो दरशायो ॥ १८ ॥ राग ललित ॥ राधा हरिके गर्व भरी । सखियनको आगम जब जान्यौ वैठी रही खरी ॥ उत ब्रजनारि संग जुरिके वे हँसति करति परिहास । चलौ न जाइ देखिये री वै राधाको जु अवास ॥ कैसो वदन शृंगार कौन बिधि अंगदशा भइ कैसी । सूर श्याम सँग निशि रस कीये निधरक ह्वैहै वैसी ॥ ॥ १९ ॥ राग जैतश्री ॥ सुनो सखी राधाके मनकी यह करनी सखियन नहिं जान्यो । जब हम जाति चली यमुनाको तबही मैं वाको पहिचान्यो ॥ तबहि सैन दे श्याम बुलायो गृह आवन को भाउ । उनके गुण धौंको नहिं जानत चतुर शिरोमणि राउ ॥ सुनहु सखी अंतर नहिं कीजिय मूड परै अपनेही । सूरश्याम सुख हमहि दुरावति आजु मिले सपनेही ॥ २० ॥ राग सारंग ॥ तुम जो कहति राधिका भोरी । आजु रही अब कहा दुराई कौन दिननकी थोरी ॥ जे छोटी तेई हैं खोटी साजति माजति जोरी । बेंदी भाल नयन निन आंजति निरखि रहति तनु गोरी ॥ चमकति चलै बदन मटकावै ऐसी जोबन जोरी । सूर सखी तेहि कहति अयानी मन मोहनहि ठगो री ॥ २१॥राग रामकली ॥ राधाको मैं तबहीं जानी । अपने कर जे मांग सँवारै रचि रचि वेनी बानी ॥ मुख भरि पान मुकुर लै देखति तिनसों कहति अयानी । लोचन आंजि सुधारति काजर छाँह निरखि मुसुकानी ॥ बार बार उरजनि अवलोकति उनते कौन सयानी । सूरदास जैसीहि तैसी मैं वाको पहिचानी ॥२२॥राग गुंडमलार॥राधिका सदन ब्रजनारि आई । रही मुख मूँदिकै बचन बोलै नहीं नैनकी सैन दै दै बुलाई ॥ इनि तबहिं लखि लई रचतिहैं चतुरई बुद्धि रचिकै अबहिं और कैहै । चोर चोरी करै आपने जंघ बल प्रगट कैहै तुमहिं नहिं पत्यै है॥भौंह देखो निरखि ज्वाब देहै कौन तुमहुँ में राखति गर्व बोलि देखौ । सूर प्रभु संगते अति निधरक भई नैन मुख और तुम नहीं पेखौ ॥ २३ ॥ राग सूही ॥ आजु कहा मुख मूँदि रही री । सुनति नहीं हो कुँवरि राधिका कापर रिसकरि मौन गही री ॥ हमको यह काहे न सुनावति हम हैं तेरी संग सखी री । यह कहि कहि मुसकात परस्पर चतुर नारि यह तबहिं लखी री ॥ कीधौं ध्यान करति देवनिको कीधौं ऐसी प्रकृति परी री । सूर जबहिं आवति हम तेरे तब तब ऐसी धरनि धरी री ॥ २४ ॥ राग बिलावल॥ बार बार युवती सब राधासों भाखै । तुम दुराव करतीहौ हम तुमसों राखै ॥ इतनो सोच पर्यो कहा मुख ज्वाब न आवै । हमतो हैं तेरी सखी सो कहि न सुनावै ॥ कछु दिनते तेरी दशा तनु रहति भुलाये ।निठुर भई कापर इतो कह सूर सुभाये ॥२५॥राग गुंडमलार॥ राधिका कहति ये करति हांसी । रहति मुख मुख हेरि नैनकी सैन दै कहति मोको कृष्ण उपासी ॥ सुनहुँ री सखी मैं कहा तुम सों कहौं कहा बूझति मोहिं कहति

राधा। आजुही प्रात इक चरित देख्यो नयो तबहि ते मोहिं यह भई बाधा॥ कहौं जो एक करि देखती नैन भरि भोरते भोर ह्वै रही माई। सूर प्रभु श्याम की श्यामता मेघकी यहै जिय सोच कछु नहिं सोहाई॥२६॥ राग रामकली॥ कर घरकी घर सैर सखी री। की सूक सीपजकी बगपंगति की मयूरकी पीड पखी री॥ की सुरचाप किधौं बनमाला तडित किधौं पटु पीत। किधौं मंदगरजनि जलधरकी पगनूपुर रवनीत॥ की जलधरकी श्याम सुभग तनु इहै भोरते सोचति। सूर श्याम रसभरी राधिका उमँगि उमँगि रसमोचति॥ २७॥ राग रामकली॥आजु सखी अरुणोदय मेरे नैनन धोख भयो। की हरि आजु पंथ यहि गौने की धौं श्याम जलद उनयो। की बगपंगति भ्रांति उरपरकी मुकुतामाल बहुमोल। की धौं मोर मुदित नाचत की बरहि मुकुटकी डोल॥ की वनघोर गंभीर प्रात उठि की ग्वालनकी टेरनि। की दामिनि कौंधति चहुँदिश की सुभग पीतपट फेरनि॥ की बनमाल लाल उरराजत की सुरपति धनु चारु। सूरदास प्रभु रस भरि उमँगी राधा कहति बिचारु॥२८॥राग बिलावल॥सुनहु सखी राधा कहनावति। हम देख्यो सोई इन देखे ऐसेहि दोष लगावति॥ यह पुनीत हमही अपराधिनि तनु अपराध बढावत। श्यामाश्याम सबके सुखदायक ताते कहि मनभावत॥ इतनेहि रहौ और जिनि भाषहु अजहूं लाज न आवत। सूर श्याम राधा जो एकै तऊ नहीं कहि आवत॥ २९॥ राग सूही बिलावल॥राधाको कछु और सुभाउ। हम देखति हरिको औरहि अँग यह निरखति सतिभाउ॥ यह है बिन कलंककी सांची हम कलंकमें सानी। हम हरिकी दासी सम नाहीं यह हरिकी पटरानी॥ याकी स्तुति हम कहा करीहैं रसना एक न आवै। सूर श्याम कोई नहिं जाने भजन प्रताप बतावै॥ ३०॥ राग गुंडमालर॥ राधिका हृदयते दोष टारौ।नंदके लाल देखे प्रात काल ते मेघ नहिं श्याम तनु छबि बिचारौ॥इंद्रधनु नहीं वन दाम बहु सुमनके बगपांति नहीं वर मोतीमाला। शिखी वह नहीं शिरमुकुट श्रीखंड पछ तडित नहिं पीत पट छबि रसाला॥ मंद गर्जनि नहीं चरण नूपुर शबद भोरहीं आजु हरिगवन कीन्हों। सूर प्रभु भामिनी भवन करि गवन मनरवन दुखके दवन जानिलीन्हों॥३१॥ भोरजे गये तेई श्याम बैरी।धोखो मोहिं भयो तब लखे नहिं एक करि नीलवनमेघ छबि चीन्ह तनु लै री॥ शिखीकी भांति शिरपीड डोलत सुभग चापते अधिक नव मालशोभा।सांवरी घटा बगपांतिते रुचिर मोतिबर दाम उर देखि लोभा॥ तडितते पीतपटु कीच मकराजई गरज नहिं प्रातही ग्वाल बोले। सूर प्रभु सखी यह बात सांची कही पवनबशमेघ ज्यों अंग डोले॥३२॥राग कल्याण॥धन्यहो धन्य तुम घोषनारी। मोहिं धोखो गयो दरश तुमको भयो तुमहि मोहिं देखो री बीच भारी॥ जा दिना संग मैं गई स्नानको यमुनके तीर देखे कन्हाई॥ पींड श्रीखंड शिर भेष नटवर कछे अंग इक छटा मैंही भुलाई॥ एकदोष आइ ठाढे भए द्वार हरि आज द्वारह्वै गए मेरे।सूर प्रभु तादिना तुमहि कहि दियो मोहिं आज मैं लखे सोउ कहे तेरे॥३३॥राग आसावरी॥ तुम कैसे दरशन पावति री। कैसे श्याम अंग अवलोकति क्यों नैननको ठहरावत री॥ कैसे रूप हृदय राखतिहौ वै तो अति झलकावत री। मोको जहां मिलत हैं माई तहँ तहँ अति भरमा-वत री॥ मैं कबहूं नीके नहिं देखे कहा कहौं कहत न आवत री। सूर श्याम कैसे तुम देखति मोहिं दरश नहिं ध्यावत री॥ ३४॥ राग आसावरी॥ धन्य धन्य वृषभानुकुमारी। धनि माता धनि पिता धन्य तुम धनि तोसी उपजाई री॥ धन्य दिवस धनि निशा तबहिंकी धन्य घरी धनि याम। धन्य कान्ह तेरे वश जेहैं धनि कीन्हें बश श्याम॥ धनि मति धनि गति धनि तेरो हित धन्य भक्ति धनि भाउ। सूर श्याम पति धन्य नारि तू धनि धनि एक सुभाउ॥ ३५॥ राग जैतश्री॥ तोहिं श्याम

हम कहाँ देखावें। तुमते न्यारे रहत कबहुँ वे नेक नहीं बिसरावें॥ एक जीव देही द्वै राची यह कहि कहि जु सुनावैं। उनकी पटतर तुमको दीजै तुम पटतर वे पावैं॥ अमृत कहा अमृत गुण प्रगटे सो हम कहा बतावैं। सूरदास गूँगेको गुर ज्यों बूझति कहा बुझावैं॥ ३६॥ राग टोडी॥ सुनि राधा यह कहा बिचारै। वे तेरे रँग तू उनके रँग अपनो मुख काहे न निहारै॥ जो देखै तौ छांह आपनी श्याम हृदय ह्यां छाया।ऐसी दशा नंदनंदनकी तुम दोउ निर्मल काया॥ नीलांबर श्यामलतनुकी छबि तुअछबि पीत सुवास।घन भीतर दामिनी प्रकाशत दामिनि घन चहुँपास।सुन री सखी बिलछ कहौं तोसों चाहति हरिको रूप।सूर सुनहु तुम दोउ समजोरी एक एक रूप अनूप॥ ३७॥ राग धनाश्री॥सुनि ललिता चंद्रावलि बात। मोसों श्याम नेह मानतहैं तुमसों कहति लजात॥तुमतौ सदा रहति हरि सँगही भेद कहो यह मोहि। हाहा करति पाँइहों लागति शपथहै मेरी तोहिं॥ काहेको इतरात सखीरी तोते प्यारी कौन। सूर श्याम तेरे बश ऐसे ज्यों पर्वतवश पौन॥ ॥ ३८॥ राग नट॥ पिय तेरे वश योंरी माई। ज्यों संगही सँग छाँह देह वश प्रेम कह्यो नहिं जाई॥ ज्यों चकोर वश शरद चंद्रके चक्रवाक बश भान। जैसे मधुकर कमलकोश बश त्यों वश श्याम सुजान॥ ज्यों चातक वश स्वाति बूँदके तनके वश ज्यों जीय। सूरदास प्रभु अतिवश तेरे समझि देखि धौं हीय॥ ३९॥ राग धनाश्री॥ तू री छांह किये हरि राखति। अपने मन तू जानति नीके मुख मोसों यह भाषति॥ अतिबश रहत कान्ह री तोको मुकुर हाथलै देखो। तैसी ये मन मोहनकी गति उहै भाव मन लेखो॥ तुम हौ वाम अंग दक्षिण वै ऐसे करि एक देह। सूर मीन मधुकर चकोरको इतनो नहीं सनेह॥ ४०॥ राग देवगा॥ नँदनंदन बश तेरे री। सुनि राधिका परम बडभागिनि अनुरागिनि हरिकेरे री॥ जा दिनते तोहिं खरिक मिले हरि धेनु दुहावन आई री। ता दिनते बश भये कन्हाई कहा ठगो री लाई री॥ अब तू कहति कहा मो आगे बातन मोहिं भुलावै री। सूरदास ललिताकी बाणी सुनि सुनि हरष बढावै री॥ ४१॥ राग टोडी॥ ललिता मुख सुनि सुनि वै बानी। मैं ऐसी जियमें यह आनी॥ और नहीं मोसरि कोउ ब्रजकी। हौं राधा आधा अँग हरिकी॥ अपनेही बश पियको करिहौं। कहूं जात देखौं तब लरिहौं॥ घर घर सबै गईं ब्रजनारी। यहि अंतर आये गिरिधारी॥ हरि अंतर्यामी अविनाशी। जानि राधिका गर्व उदासी॥ सूर श्याम राधा तन हेरचो। नागरि देखतही मुख फेरचो॥ ४२॥ राग सारंग॥बरज्यो नहिं मानत उझकत फिरत हो कान्ह घर घर। तुम मिषही मिष देखत फिरत युवतिनके बदन कौन कौनके घर॥ कोउ अपने घर काम काज जैसे तैसे तुम आवत हौ दर दर। सूरदास प्रभु अतिहि अचगरी देत डोलत नेक नहीं जियमें डर॥ ४३॥ राग बिलावल॥ यह जान्यो जिय राधिका द्वारे हरि लागे। गर्व कियो जिय प्रेम को ऐसे अनुरागे॥ बैठि रही अभिमान सों यह ठौर न पायो हृदय श्याम सुखधाममें अभिमान बसायो। राधा के यह जानिकै आपुन पछिताहीं। जहां गर्व अभिमान है तहां गोबिंद नाहीं॥ तहां नेकहुँ नहिं रहै नहीं दरशन दीन्हों। सूर श्याम अंतर भये जब गर्वहि चीन्हों॥ ४४॥ राग धनाश्री॥ राधा चकित भई मनमाहीं। अबहीं श्याम द्वार ह्वै झांके ह्यां आये क्यों नाहीं॥ आपुन आइ तहां जो देखे मिले न नंदकुमार। आवत है फिरि गये श्याम घन अति ही भयो बिचार॥ सूने भवन अकेली मैंही नीके उझकि निहारचो। मोते चूक परी मैं जानी ताते मोहिं बिसारचो॥ एक अभिमान हृदय करि बैठी एते पर झहरानी। सूरदास प्रभु गये द्वारको तब व्याकुल पछितानी॥ ४५॥ राग सारंग॥ मैं अपने जिय गर्व कियो। वै अंतर्यामी सब जानत देख

T

तही उन चरच लियो ॥ कासों कहौं मिलवै अब को नैक न धीरज धरत हियो । वै तो निठुर भये या बुधिते अहंकार फल इहै दियो ॥ तब आपुन को निठुर करावति प्रीति सुमरि भरि लेत हियो । सूर श्याम प्रभु वे बहुनायक मोसी उनके कोटि त्रियो ॥ ४६ ॥ राग बिहागरो ॥ श्याम बिरह बन मांझ हेरानी । संगी गये संग सब तजिकै आपुन भई देवानी ॥ श्याम धाम मैं गर्वहि राखति दुराचारिनी जानी । ताते त्यागि गये आपुहि सब अंग २ रति मानी॥ अहंकार लंपट अपकाजी संग न रह्यो निदानी । सूर श्याम बिन नागरि राधा नागर चित्त भुलानी ॥४७॥ राग बिहागरो॥ महाविरह बन मांझ परी । चकृत भई ज्यों चित्र पूतरी हरि मारग बिसरी ॥ संगवटपार गर्व जब देख्यो साथी छोंडि पराने । श्याम सहज अँग अंग माधुरी तहां वै जाइ लुकाने ॥ यह बन माँझ अकेली व्याकुल संपति गर्व छँडाये । सूर श्याम सुधि टरत न उरते यह मनो जीव बचाये ॥ ४८॥ राग मारू॥ विरहवन मिलन सुधि त्रास भारी। नैन जल नदी पर्वत उरज येइ मनो सुभग बेनी भई अहिनि कारी ॥ नैन मृग श्रवन बन कूप जहां तहां मिले भ्रम गली सघन नाहिं पार पावै । सिंह कटि व्याघ्र अंग अंग भूषन मनो दुसह भये भार अतिही डरावै ॥ शरनकारि अत्रडारि डर लहत कोउ नहीं अंग सुख श्याम बिन भये ऐसे । सूर प्रभु नाम करुनाधाम जाउ क्यों कृपा मारग बहुरि मिलैं कैसे ॥ ४९ ॥ राग टोडी ॥ राधा भवन सखी मिलि आई। अति व्याकुल सुधि बुधि कछु नाहीं देहदशा बिसराई । बांह गही तेहि बूझन लागी कहा भयो री माई । ऐसी विवश भई तुम काहे कहो न हमहि सुनाई । कालिहि और बरन तोहिं देखी आजु गई मुरझाई । सूर श्याम देखे की बहुरो उनहि ठगो री लाई ॥ ५० ॥ राग हमीर ॥ श्याम नाम चकृत भई श्रवन सुनत जागी ॥ आये हरि यह कहि कहि सखिन कंठ लागी ॥मोते यह चूक परी मैं बडी अभागी॥ अबकै अपराध क्षमहु गये मोहिं त्यागी॥ चरण कमल शरन देहु बार बार मांगी । सूरदास प्रभुके वश राधा अनुरागी ॥५१॥ राग बिहागरो ॥ सखी रही राधा मुख हेरी । चकृत भई कछु कहत न आवै करन लगी अवसेरी ॥ बार बार जल परसि वदनसों वचन सुनावत टेरी । आजु भई कैसी गति तेरी ब्रजमें चतुर निबेरी ॥ तब जान्यो यहतौ चंद्रावलि लाज सहित मुख फेरी । सूर तबहिं सुधि भई आपनी मेटी मोह अँधेरी ॥ ५२ ॥ राग जैतश्री ॥ कहा भयो तू आजु अयानी। अतिही चतुर प्रवीन राधिका सखियनमें तू बडी सयानी ॥ कहिधौं बात हृदय की मोसों ऐसी तू काहे विततानी । मुखमलीन तनुकी गति औरै बूझति बारबार सो बानी ॥ कहा दुराव करौं री तोसों मैंतो हरिके हाथ बिकानी॥ सूर श्याम मोको परत्यागी जा कारण मैं भई देवानी ॥ ५३ ॥ अब मैं तोसों कहा दुराऊं । अपनी कथा श्यामकी करनी तो आगे कहि प्रगट सुनाऊँ ॥ मैं बैठीही भवन आपने आपुन द्वार दियो दरशाऊँ । जानि लई मेरे जियकी उन गर्व प्रहारन उनको नाऊँ। तबहींते व्याकुलभई डोलति चित न रहै कितनो समुझाऊं । सुनहु सूर गृह वन भयो मोको अब कैसे हरि दरशन पाऊं ॥ ५४ ॥ राग नटनारायण॥सखी मिलि करौ कछु उपाउ।मार मारन चढयो विरहिनि निदरि पायो दांउ ॥हुताशन धुजजात उन्नत बह्यो हरिदिशवाउ । कुसुमसर रिपुनंद बाहन हरपि हरषित गाउ ॥ वारि भव सुत तासु भावरि अब न करिहैं काउ । बार अबकी प्राण प्रीतम बिजै सखी मिलाउ ॥ ऋतुविचारि जु मान कीजै सोउ नहि किन जाउ । सूर सखी सुभाउ रैहौं संग शिरोमणि राउ ॥ ५५ ॥ राग नट ॥ मिलवहु पार्थ मित्रहि आनि । जलजसुताके सुतकी रुचि करे भई हितकी हानि ॥ दधिसुतासुत अवलि उरपर इंद्र आयुध जानि । गिरिसुता पति तिलक करकस हनत

सायक तानि ॥ पिनाकी पति सुत तासु वाहन भषक भष विषपानि । शाखामृग रिपु बसन मलयज हित हुताशनवानि ॥ धर्मसुतके अरि सुभावहि तजत धरि शिरपानि । सूरदास विचित्र बिरहिनि चूक मन मन मानि ॥ ५६ ॥ राग टोडी ॥ सुनि सजनी यह करनी तेरी । हमसों भेद करै हित उनसों ऐसे गुन उनके री ॥ आजुहिते ऐसे ढँग आये अबहीं तो दिन है री । ऐसे टूटि परी उन ऊपर तुमही कीन्हों वैरी ॥ अजहूँ कह्यो मानिहै मेरे कीयों नहीं करै री ॥ सूर श्याम सों मानु करै किन काहे वृथा मरै री ॥ ५७ ॥ राग सोरठ ॥ तैहीं उनको मूंड चढायो । भवन विपिन सँगही सँग डोलै ऐसेहि भेद लखायो ॥ पुरुषभँवर दिनचारि आपने अपनो चाउ सरायो । नँदनंदन बहु खानि खनवै इहै जानि बिसरायो ॥ अपनी बात आपने करहै हमको तब न सुनायो । सुनहु सूर बिन मान कहौ किन अपनो पिय अपनायो ॥५८॥ राग कान्हरो ॥ रैनिमो जागत बिहानी मोहनसों मैं मान कियो ताते भई अधिक तनुतपति । सेज सुगंध तलप लागत पावकहुँ दाह सखी री त्रिविध पवन उडपति ॥ ऐसी कै व्यापी हौ मन्मथ मेरो जी जानै माई श्याम श्याम कहि रैनि जपति । वेगि मिलाउ सूरके प्रभुको भूलिभिमान करौं कबहूं नहिं मदनवानते कंपति ॥ ५९ ॥ राग धनाश्री॥मान बिना नहिं प्रीति रहै री।धाइ मिलेकी गति तेरीसी प्रगट देखि मोहिं कहा कहै री।अपनो चाउ सारि उन लीन्हों तू काहे अब वृथा बहै री । बैठि रहे काहे नहिं ह्वैह्वै फिरि काहे न तू मान गहै री ॥ अपनो पेट दियो तैं उनको नाकबुध्यत्रिय सबै कहै री । सूर श्याम ऐसेहैं माई उनको बिनु अभिमान लहै री ॥६०॥ राग मलार ॥सजों क्यों मान मन न मेरे हाथ । पियकी सुरति करि उमँगि भरत । मोसों मानत वाम श्याम गुण गुण अभिलाष करत ॥ जो मोकानि न मानि आनि जुवरत तिन बिन नुसरत । अपमानतहूं मुदित मूढयश अपयशहू न डरत ॥ रिसमें रस विपुदे चिरचत नंदलाल हठि प्राणहरत । भ्रममें तो रिस करत न रसवश मोहिंसों उलटि सरत । स्वारथ सब इंद्री समहूं पर बिरहा धीर धरत । सूरदास घरकी फूटैडी कैसे धीर धरत॥६१॥ राग कान्हरो ॥चारि चारि दिन सबै सुहागिनि री ह्वै चुकी मैं स्वरूप अपनी । कोउ अपने जिय मान करै माईहो मोहिंतो छुटति अति कपनी ॥ मेरो कह्यो करि मान हृदय धरि छांडि देहु अति तपनी । सूर श्याम तबही मानेंगे तबहिं करैंगे जपनी ॥ ६२ ॥ हमारी सुरति बिसारी बनवारी हम सरबस दैदै हारी।सखीपैवै न भये अपने सपनेहू वै मुरारी गिरिधारी ॥ वे मोहन मधुकर समान अन बोली मनलावत री । धावत हम व्याकुल विरह व्यापि दिन प्रति नीरज नैना ढारि ढारी ॥ हम तन मन दै हाथ बिकानी वै अति निठुर रहत हैं मुरारी । सूरदास प्रभु सुनहु सखी बहुखानि खन पिय हम यक व्रतधारि मदन अगिनि तनु जरि जारी॥ ६३ ॥ राग गौरी ॥ मैं अपनीसी बहुत करी री । मो सों कहा कहति तू माई मनके संग मैं बहुत लडी री । राखौं अटकि उतहिको धावै उनको वैसियां परन परी री ॥ मोसों बैर करै रति उनसों मोको छांडी द्वार खडी री॥ अजहूं मान करौं मन पाऊं यह कहि इत उत चितै डरी री।सुनहु सूर पांच मत एकै मोमें मैंही रही परी री ॥६४॥ राग गौरी ॥ मन जिनि सुनै बात यह माई । कौरै लग्यो होइगो कितहूं कहि दैहै को जाई॥ ऐसे डरति रहति हैं वाको चुगुली जाइ करै गो । उनसों कहि फिरि ह्यां आवैगो मोसों आनि लरैगो । पंच संग लीन्हें वह डोलत कोऊ मोहिं न मानै।सूर श्याम कोउ उनहिं सिखायो वै इतनो कह जानै॥६५॥ राग ईमन॥ मेरो मन कहिवे कोहै । जबहीं ते हरि दरशन कीन्हें नैन भेद कियो जोहै ॥ इंद्री सहित चित्त हू लैगयो रही अकेली हमही । येते पर तुम मान करावत तौ मनदेहु न तुमही ॥ मोको दोवल देति

कहाहौ तुम तौ सबै अयानी । सूर श्यामको बेगि मिलावहु हारि आपनी मानी ॥६६॥ राग रामकली॥ सारंग सारंग धरहि मिलावहु। सारँग बिनय करत सारंग सों सारंग दुख बिसरावहु ॥ सारंग समय दहत अति सारंग सारंग तिनहि दिखावहु । सारंगपति सारंगधर जैहे सारंग जाइ मनावहु ॥ सारंग चरण सुभग कर सारंग सारंग नाम बोलावहु । सूरदास सारंग उपकारिनि सारंग मरत जिवावहु ॥ ६७ ॥ राग बिहागरो ॥ मोते यह अपराध पर्‌यो।आये श्याम द्वार भये ठाढे मैं अपने जिय गर्व धर्‌यो ॥ जानि बूझि मैं यह कृत कीन्हों सो मेरेही शीश पर्‌यो। मन अपने ढँगहीमें मोसों बारंबार लर्‌यो ॥ मैं अति बिमुख रहे ये सन्मुख नीके उनहिं ठर्‌यो। सूरदास मन आपु स्वारथी अपनो काज कर्‌यो ॥ ६८ ॥ राग सोरठ ॥ मन जो कह्यो करै री माई। तेरी कही बात सब होती मिलौ उनहिं को धाई ॥ निलज भई तनु सुधि बिसराई गुरुजन करत लराई।इत कुलकानि उतहि हरिको रस मनतो अति अपुडाई ॥ आप स्वारथी सबै देखियत है मोकों दुखदाई । सूरदास प्रभु चित अपनो करि तनकहि गयो रिसाई॥६९॥राग देशाख॥ मैं अबहीं करौं मान पै मन थिर न रहै । कोटि यतन करि करि पचिहारी मोहिं बिसारि गये को उनसों जु कहै ॥ मोको निदरि मिल्योहै हरिको येतेपर तनु मदन दहै। सूर श्याम सँग नेक न त्यागत सोवत जागत वरु अपमान सहै॥७०॥मनहि कह्यो करि मान पै कह्यो न करै।बारबार हरिसों गुहरावत मोहिं मँगावत पुनि पुनि आनि लरै ॥ घटहूमें इंद्री बश ताके लै निकस्यो मोहिं कौन डरै। सुनि सजनी मैं रही अकेली बिरह देहेली इत गुरुजन झहरै ॥ अब बिनु मिले बनत नहिं आली निशि दिन पल पल रह्यो न परै। मूर श्याम बहु खानि खन जो भलेही रहें वे चित यह नहिं धरै ॥ ७१ ॥ राग बिलावल ॥ भूलि नहीं अब मान करौ री। जाते होइ अकाज आपनो काहे बृथा मरों री ॥ ऐसे तनमें गर्व न राखौं चिंतामणि बिसरों री। ऐसी बात कहै जो कोऊ ताके संग लरौं री ॥ आरजपंथ चले कहा सरिहै श्यामहि संग फिरौं री ॥ सूरश्याम जो आप स्वारथी दरशन नैन भरौं री ॥ ७२ ॥ राग आसावरी ॥ चूक परी मोते मैं जानी मिलैं श्याम बकसाऊं री। हाहाकरि दशनानि तृण धरि धरि लोचन जलनि ढराऊं री ॥ चरण गहौं गाढे करि करसों पुनि पुनि शीश छुवाऊं री। मुख चितवौं फिरि धरणि निहारौं ऐसी रुचि उपजाऊं री ॥ मिलौं धाइ अकुलाइ भुजानि भरि उरकी तपति जनाऊं री। सूर श्याम अपराध क्षमहु अब यह कहि कहि जु सुनाऊं री ॥७३॥ राग गौरी॥ माई मेरो मन पियसों यों लग्यो ज्यों सँग लागी छांह। मेरो मन पियके जीव बसतहै पियको जीव मोमें नाँह ॥ ज्यों चकोर चंदाको निरखै इत उत दृष्टि न जाहि। सूर श्याम बिनु छिन छिन युग सम क्यों करि रैनि बिहाहि ॥ ७४ ॥ राग जैतश्री ॥ उनको यह अपराध नहीं । वे आवतहैं नीके मेरे मैंही गर्व कियो तनही ॥ मेरे गर्वते सह्यो कछू नहीं एक भई तनु दशानही। सुख मिटि गयो हिये दुख पूरन अवरै होइ नहीं बिनही ॥ अब जो दरश देहिं कैसेहू फिरतरहौं सँगही सँगही । सूरदास प्रभुको हियरेते अंतर करौं नहीं छिनही ॥७५॥ राग बिलावल ॥ अबकै जो पियपाऊं तो हृदय मांझ दुराऊं। हरिको दरशन पाऊँ आभूषण अंग बनाऊं ॥ ऐसो को जो आनि मिलावै ताहि निहाल कराऊं। जो पाऊं तौ मंगल गाऊं मोतिनचौक पुराऊं ॥ रसकरि नाचों गाऊं बजाऊं चंदन भवन लिपाऊं। जो मोहन वश मेरे होवहिं हीरालाल लुटाऊं ॥ मणि माणिक न्यवछावरि करिहौं सो दिन सुदिन कहाऊँ। केतकि करनवेलि चम्मेली फूलन सेज बिछाऊँ ॥ तापर पियको पौढाऊं मैं अचरा वायु डुलाऊं। चंदन अगर कपूर अरगजा प्रभुके खौरि बनाऊं ॥ जो विधना कबहूं यह करतो कामको काम पुराऊँ। सूर श्याम बिन देखे सजनी कैसे मन अपनाऊं॥७६॥

॥ राग सांकारण ॥ अरी मोहिं पिउ आवै को ऐसी जो आनि मिलावै । चौदह विद्या प्रवीन अतिही सुंदर नवीन बहुनायक कौन मनावै ॥ नेक दृष्टि भरि चितवे मो बिरहिनिको माई काम द्वंद्व बिरह तपनि तनुते बुझावै । सूरदास प्रभु मोको करहिं कृपा अब नितप्रति बिरह जरावै ॥ ॥ ७७ ॥ राग बिलावल ॥ धीरज करि री नागरी अब श्यामहि ल्याऊं । अति व्याकुल जिनि होहि री सुख अबहिं कराऊं ॥ देखि दशा सहि नाहिं सकी मनही अकुलानी । मैं राधाकी प्रियसखी यह कहि पछितानी ॥ झरि झुरि पियरी भईहै यह तौ सुकुमारी । ऐसी चूक परी है मोपे कहा करौं गिरिधारी ॥ प्यारी को मुख धोइकै पटपोंछि सँवारयो । तरक बात बहुतै कही कछु सुधि न सँभारयो ॥ सावधान करिकै गई ल्याऊँ गिरिधरको । सूर तहां आतुर गई पाये हरि वरको ॥ ७८ ॥ रागगौडी ॥ ललिता मुख चितवत मुसुकाने । आपु हँसी पिय मख अवलोकत दुहुँनि मनहिं मन जाने॥ अति आतुर धाई कहाँ आई कहि वदन छुराये । बूझत है पुनि पुनि नँदनंदन चितवत नैन चुराये ॥ तब बोली वह चतुर नागरी अचरज कथा सुनाऊं । सूर श्याम जो चलौ तुरतही नैननि जाइ दिखाऊं ॥ ७९ ॥ राग सारंग ॥ अद्भुत एक अनूपम बाग । युगल कमल पर गज क्रीडतहै तापर सिंह करत अनुराग ॥ हरि पर सखर सरपर गिरिवर गिरिपर फूले कंज पराग । रुचिर कपोत बसे ता ऊपर ता ऊपर अमृत फल लाग ॥ फल पर पुहुप पुहुप पर पल्लव तापर शुक पिक मृग मद काग । खंजन धनुष चंद्रमा ऊपर ता ऊपर इक मणिधर नाग ॥ अंग अंग प्रति और और छवि उपमा ताको करत न त्याग॥सूरदास प्रभु पिवहु सुधारस मानों अधरनिके बडभाग८०राग रामकली॥पद्मनिसा रँग एक मझारि । आपहि सारंग नाम कहावे सारंग बरनी वारि ॥ तामें एक छबीलो सारंग अर्ध सारंग उनहारि । अर्ध सारंग परि सकलई सारंग अधसारंग विचारि ॥ तामहि सारंग सुत शोभित है ठाढी सारंग संभारि॥सूरदास प्रभु तुमहू सारंग बनी छबीली नारि॥८१॥राग रामकली॥विराजत अंग अंग इति बात । अपने कर करिधरे विधाता पट खग नव जल जात ॥ द्वै पतंग शशि बीस एक फनि चारि विविध रंग धात ।द्वै पिक बिंब बतीस बज्रकन एक जलज पर थात ॥ इक सायक इकं चाप चपल अति चिबुक में चित्त बिकात।दुइ मृणाल मातुल ऊभे द्वै कदली खंभ बिन पात ॥ इक केहरि इक हंस गुप्त रहै तिनहि लग्यो यह गात । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको अति आतुर अकुलात॥८२॥राग सारंग॥आजु मैं देखी एक बाम नई सी । ठाढी हुती अंगना द्वारे बिधना रची कीधौं मदन मई सी ॥ हम तन चितै सकुच अंचल दे वारिज वदन परि वारि वई सी । मानो द्वै ढंग चले हैं दृगनिलै ललित वलित हरि मनहि नई सी ॥ जनु पावस ते निकसि दामिनी नेक दमकि दुरि वोट लई सी । भोजन भवन कछू नहिं भावत पलकन मानो करत खई सी ॥ यह मूरति कबहूं नहिं देखी मेरी अँखियन कछु भूल भई सी । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको मन मोहन मोहनी अचई सी॥८३॥राग सारंग॥बरणौं श्रीवृषभानुकुमारी । चितदै सुनहु श्याम सुंदर छवि रतिनाहीं अनुहारी ॥ प्रथमहि सुभग श्याम वेनी की शोभा कही विचारी । मानों फनिग रह्यो पीवन को शशि मुख सुधा निहारी ॥ कहिये कहा शीश सेंदुरको कितौ रही पचिहारी । मानों अरुन किरनि दिनकरकी पसरी तिमिर विदारी ॥ भ्रुकुटी विकट निकट नैननिके राजत अति बरनारि । मनहुँ मदन जगजीति जेर करि राख्यो धनुष उतारि ॥ ताविच बनी आड केसरिकी. दीन्ही सखिन सँवारि । मानों बंदि इंदु मंडलमें रूपसुधाकी पारि ॥ चपल नैन नासा बिच शोभा अधर सुरंग सुठार । मनों मध्य खंजन शुक बैठ्यो लुबध्यो बिंब विचार ॥

T

तरिवन सधर अधर नकबेसरि चिबुक चारि रुचिकारी । कंठसरी दुलरी तिलरी पर नहिं उपमा कहुँ चारी ॥ सुरंग गुलाब माळ कुच मण्डल निरखत तन मन वारि । मानों दिशिनिर्धूम अग्निके तप बैठी त्रिपुरारि । जो मेरो कृत मानहु मोहन करिल्याऊं मनुहारि । सूर रसिक तबहीपै बदिहौं मुरली सकौ न सँभारि॥८४॥राग मलार॥ लाल उनि सुनी मनोहर वंसी । नहिं संभार अजहुँ युवतिन बल मदन भुवंगम डंसी ॥ कैसे ल्याउं संगीत सरोवर मगन भई गति हंसी । अंकेउटरिचलहु आपुनपै मेलि भौंह दृढ फंसी॥वृंदावनकी माल कलेवर लता माधुरी गंसी । सूरदास प्रभु सब सुख दाता लै भुज बीच प्रशंसी॥८५॥राग धनाश्री॥ मनसिज माधवे मानिनिहि मारिहै।त्रोटि परलत्र अरत परमौ अरनिरखिनिसुखको तारिहै ॥ किसलय कुसुम कुंतसम सायक पायक पवन बिचारिहै । द्रुम वल्ली यह दीप युग बनी जनति अनल त्रिय जारिहै ॥ भवँर जु एक चक्रत चमरकर भरि बंडुप खग डारिहै ॥ पुनि पुनि बाज साजि सुनि सुंदरि त्रसित तिनहिं देखे मारिहै ॥ बिरह विभूति बढी वनितावपु शीश जटा बनवारिहै । सुखशशि शेपरह्यो सिते मानौं भई तभौं उनहारिहै ॥ जो न इते पर चलहु कृपानिधि तो वह निज करसारिहै । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि तुम तजि काहि पुकारिहै८६॥राग सारंग॥ शिव न अवध सुंदरी वधोजिन।मुकुता मांग अनंग गगनहिमें नवसत साजे अर्थ श्यामघन । भाल तिलक उडुपति न होय इह कबरी ग्रथित अहिपात न सहसफन । नहिं विभूति दधिसुत न कंठ जड इह मृगमद चंदन चरचित तन ॥ नहिं गज चर्मसे असित कंचुकी देखि बिचारि कहां नंदीगन।सूर सुहरि अब मिलहु कृपाकरि वरवश सरम करत हठ हमसन८७॥राग सारंग॥नेक कुंज कृपाकरि आइये । अति रिस कृप ह्वैरही किशोरी करि मनुहारि मनाइये ॥ कर कपोल अंतर नहिं पावत अति उसाँस तन ताइये।छूटे चिहुर वदन कुँभिलानो सुहथ सँवारि बनाइये॥इतनो कहा गांठि को लागत जो बातनि यश पाइये।रूठेहि आदर देत सयाने इहै सूरज सगाइये८८राग धनाश्रीप्रियमुख देखो श्याम निहारि । कहि न जाइ आननकी शोभा रही बिचारि बिचारि ॥ क्षीरोदक घूँघट हातो करि सन्मुख दियो उघारि । मानो सुधाकर दुग्ध सिंधुते कढयो कलंक पखारि ॥ मुक्तामांग शीश पर शोभित राजत ह्रुहि आकारि । मानौं उडगन जानि नवल शशि आये करन जुहारि॥भाल लाल सेंदूर बिंदु पर मृगमद दियो सुधारि । मनों बंधूक कुसुम ऊपर अलि बैठो पंख पसारि ॥ चंचलनैन चहुंदिश चितवत युगखंजन अनुहारि । मनहुँ परस्पर करत लराई कीर बचाई रारि ॥ बेसरिके मुकुतामें झाईं बरन बिराजित चारि । मानो सुरगुरु शुक्र भौम शनि चमकत चंद्र मझारि ॥ अधर बिंब दशननकी शोभा दुति दामिनि चमकारि । चिबुक बिंदु बिच दियो बिधाता रूपसींव सब निरुवारि ॥ ज्योति पुंज पटतर देवेको दीजे कहा अनुहारि । जनु युग भानु दुहूँ दिशिउगए तम दुरिगयो पतारि ॥ लाल सुमाल हार हीरावलि सखियन गुही सुढारि । मनहु धुई निर्धूम अग्नि पर तप बैठे त्रिपुरारि ॥ सन्मुख दृष्टि परे मन मोहन लजित भई सुकुमारि । लीन्ही उमँगि उठाइ अंक भरि सूरदास बलिहारि ८९॥ राग नट॥भुज भरि लई हृदय लाय।विरह व्याकुल देखि बाला नयन दोउ भरि आय ॥ रैनि बासर बीचहीमें दोउ गए मुरुझाइ । मनो वृक्ष तमाल बेली कनक सुधा सिचाइ ॥ हरप डहडह मुसुकि फूले प्रेमफलनि लगाइ । काम मुरछनि वेलि तरुकी तुरतही बिसराइ ॥ देखि ललिता मिलनि वह आनंद नहीं समाइ । सूरके प्रभु श्याम श्यामा त्रिविध ताप नशाइ॥९०॥राग रामकली॥ललिता प्रेमविवश भई भारी।वह चितवनि वह मिलनि परस्पर अति शोभा बरनारी ॥ यकटक अंग अंग अवलोकति उत वश भए बिहारी । वह आतुर छबि लेति देत वै

इकते इक अधिकारी ॥ ललिता संग सखिन शोभा सखि देख्यो छबि पियप्यारी । सुनहुँ सूर जो अग्नि होम घृत ताहूते यह न्यारी॥९१॥राग धनाश्री ॥ देखिं सखी राधा अकुलानी।ऐसे अंग अंग छबि लूटत मिलेहु श्यामको नहीं पत्यानी ॥ जैसे तृषावंत जल अचवत वहतौ पुनि ठहरात । यह आतुर छबि लै उरधारति नेक नहीं निपितात । जो चकोर इकटक निशि चितवत याकी सरि सोउ नाहीं । ज्यों घृत होम वह्निकी महिमा सूर प्रगट या माहीं॥९२॥राग केदारो॥यद्यपि राधिका हरि संग। हावभाव कटाक्ष लोचन करत नानारंग ॥ हृदय व्याकुल धीर नाहीं वदन कमल विलास । तृषामें जल नाम सुनि ज्यों अधिक अधिकहि प्यास ॥ श्यामरूप अपार इत उत लोभ पुट विस्तार । सूर मिलत नहिं लहत कोऊ दुहुँनि बल अधिकार॥९३॥राग केदारो॥राधेहि मिलेहु प्रतीत न आवति। यद्यपि नाथ विधु बदन विलोकति दरशनको सुख पावति ॥ भरि भरि लोचन रूप परमनिधि उरमें आनि दुरावति । बिरह बिकल मति दृष्टि दुहूँदिशि सचि सरधा ज्यों धावति ॥ चितवत चकित रहति चित अंतर नैन निमेष न लावति । सपनो अहि कि सत्य ईश इह बुद्धिं वितर्क बनावति ॥ कबहुँक करत बिचार कौनहो को हरि केहि यह भावति । सूर प्रेमकी बात अटपटी मनतरंग उपजावति॥९४॥राग रामकली ॥देखहु अनदेखेसे लागत। यद्यपि करत रंग भरे एकहि इकटक रहे निमिष नहिं त्यागत ॥ इत रुचि दृष्टि मनोज महासुख उत शोभा गुण अमित अनागत । बाढ्यो वैर कर्ण अर्जुन ज्यों दुइ महँ एक भूलि नहिं भागत ॥ उत सन्मुख सों सावधान सजि इत सनाह अँग अंग अनुरागत । ऐसे-सूर सुभट ए लोचन अधिकौ अधिक श्याम सुख मांगत॥९५॥राग कान्हरो॥ देखियत दोउ अहंकार परे । उत हरि रूप नैन याके इत मानहु सुभट अरे ॥ रुचिर सुदृष्टि मनोज महासुख इन इत एक करै । उन उत भूषण भेद विविध रचिं अंग अंग धनुष धरे ॥ ए अति रति रण रोषं न मानत निमिष निपंग झरे । बाहु व्यथहि न वदत पुलक रुह सब अंग सरस चरे ॥ वै श्री ए अनुराग सूर सजि छितु २ बढत खरे । मानहु उमँगि चल्यो चाहतहै सागर सुधाभरे ॥९६॥राग विहागरो॥नखशिखते अंग अंग रूप छबि देखि देखि नैना न अघाने।निशिं अरु दिन यक टकही राखे पलक लगाइ न जाने ॥ छबितरंग अगनिति सरिताए जलनिधि लोचन तृप्ति न माने। सूरदास प्रभुकी शोभाको अति लालिची रहे ललचाने९७राग बिभास ॥ललिता संग सखिनको लीन्हें। दंपति सुख देखत अति भावत एकटक लोचन दीन्हें॥प्यारी श्याम अंगकी शोभा निदरे देख्योई चांहति। उत नागर नागरि नैननिको निदरि रूप अवगाहति ॥ उत उदार शोभाकी सींवा इत लोभहि नहिं पार । सूर श्याम अँग अँगकी शोभा निरखत बारंबार ॥९८॥राग गुंडमलार॥निदरि अंग छबि लेति राधा। यह कहति कितिक शोभा करैंगे श्याम मेटिहौं आज मन सबै साधा ॥ उतहि हरि रूपकी राशि नहिं पार कहुँ दुहुँनि मन परस्पर होड कीन्हों । इतहि लुब्ध वै उतहि उदार चित्त दुहुँ नवल अंत नहीं परत चीन्हों ॥ जुरे रणवीर ज्यों एकते एक सरस सुरत कोउ नहीं दोउ रूप भारी । सूर स्वामी स्वामिनी राधिका सरस निरस कोउ नहीं लखि लई नारी ९९राग मारू ॥रूँधि रति संग्राम खेत नीके । एकते एक रणवीर जोधा प्रबल सुरत नहिं नेक अति सबल जीके ॥ भौंह कोदंड शर नैन जोधानुकी काम छूटनि मानो कटाक्षनि निहारै । हँसनि दुज चमक करिवरनि लौहेन झलक नखन छत घात नेजा सँभारै॥पीतपट डारि कंचुकी मोचित करनि कवच सन्नाहए छूटे तनते । भुजा भुज धरत मनो द्विरद शुंडिन लरत उर उरनि भिरे दोउ जुरे मनते ॥ लटकि लपटानि मानो सुभट लरि परे खेत रति सेज चुंबितान कीन्हों । सूर प्रभु रसिक

प्रिय राधिका रसकिनी कोक गुन सहित सुख लूटि लीन्हों ॥१७००॥ राग नट ॥ किशोरी अंग अंग भेटी श्यामहि। कृष्णतमाल तरल भुज शाखा लटकि मिली जैसे दामहि ॥ अचरज एक लता गिरि उपजै सोउ दीने करुणामहि। कछुक श्यामता साँवल गिरिकी छायो कनक अगामहि॥ गिरिवर धरन सुरति रतिनायक रति जीते संग्रामहि । सूर कहै ये उभय सुभट बिच क्यों जु बसै रिपु कामहि ॥ राग नट ॥ रसना युगलरस निधि बोलि। कनक बेलि तमाल अरुझी सुभुज बंधन खोलि ॥ भृंग यूथ सुधा किरनि मनो घनमें आवत जात। सुरसरी पर तरनि तनया उमँगि तट न समात॥ कोक नद पर तरनि तांडव मीन खंजन संग। करति लाज शिखर मिलि युगम संगम रंग ॥ जलद ते तारा गिरत मनो परत पय निधि माहिं। युग भुजंग प्रसन्न सुख ह्वै कनक घट लपटाहि ॥ कनक संपुट कोकिला रव बिवश ह्वै दे दान। विकच कंज अनारलगि अधर लसि करत पयपान ॥ दामिनी थिर घन घटाचर कबहुँ ह्वै एहि भांति। कबहुँ दिन उद्योत कबहूं होत अतिकुहुराति ॥ सिंह मध्य सनाह मणि गण सरससर के तीर। कमल मनो बिननाल उलटै कछुक तीक्षन नीर ॥ हंस सारस शिखर चढि दोउ करत नाना नाद। मकर निजपद निकट बिहरत मिलन अति अह लाद ॥ प्रेम हित करि क्षीरसागर भई मनसा एक। श्याम मणिके अंग चंदन अमीके अभिषेक ॥ सूरदास सखी सभा मिलि करत बुद्धि विचार। समय शोभा लगि रही मनो सूमको संसार ॥ राग रामकली॥शोभा सुभग आननं वोर। त्रासते तनु त्रासित तिरछे चितै देत अकोर॥ निरखि सन्मुख कियो चाहत बदन बिधुकी जोर। तुला बिचलो केश तौले गरुअ आनन गोर ॥ दरशपति रुचि मुदित मनसिज चपल दृग दृग कोर। कोस क्रीडत मीन मानों नीर नीरज भोर ॥ श्यामसुंदर नैन युग वर झलक कज्जल कोर। सुधा सर संकेत मानो कूप दानव वोर ॥ श्रवण मणि तार्टंक मंजुल कुटिल कुंतल छोर। मकर संकट कामवापी अलक फंदनि डोर॥ चिकुर अध नव मोति मंडल तरल लट तृण तोर। जनु विध्वंसित व्याल बालक अमीकी झक झोर । श्रमस्वेद सीक- र गुंड मंडित रूप अंबुज कोर। उमँगि ईषद यो श्रम तज्यो पीयूष कुंभ हिलोर ॥ हँसत दशननि चमक बिज्जुल लसित कठिन कठोर। मुदित मधुपर बिंदगन मकरंद मध्य न थोर ॥ निरखि शोभा समर लज्जित इंदु भयो श्रम भोर। सूर धन्य सुवन किशोरी धन्य नंद किशोर॥राग बिलावल॥ धन्य कान्ह धनि राधा गोरी । धनि वहभाग सुहाग धन्य वह धन्य नवल नवला नव जोरी ॥ धन्य यह मिलनि धन्य यह बैठनि धन्य अनुराग नहीं रुचि थोरी। धनि यह अरस परस छबि लूटनि महाचतुर मुख भोरे भोरी ॥ प्यारी अंग अंग अवलोकति पिय अव- लोकत लगत ठगोरी। सूरदास प्रभु रीझि थकित भए नागरि पर डारत तृण तोरी ॥ ॥राग धनाश्री॥ नागरि छबि पर रीझत श्याम। कबहुँक वारतहैं पीतांबर कबहुँक वारत मुकुतादाम ॥ कबहुँक वारतहैं कर मुरली कबहुँक वारत मोहन नाम। निरखिरूप मुख अंत लहत नहिं तनु मनु वारत पूरणकाम ॥ बारंबार सिहात सूर प्रभु देखि देखि राधासी वाम। इनको पलकओट नहिं करिहौं मन इह कहत वासरहु याम॥राग बिलावल॥श्याम निरखि प्यारी अँग अंग ।सकुचि रहत मुखतन नहिं चितवत जेहि बश रहत अनंत अनंग ॥ चपल नैन दीरघ अनियारे हाव भाव नाना मतिभंग । वारों मीन कोटि अंबुज गण खंजन वारत कोटि कुरंग ॥ लोचन नाहिं ठहरात श्यामके कबहुँ अंग नैना मुख रंग। सूरदास प्रभु यों प्यारी बश ज्यों बशडोर फिरत सँग चंग॥राग गौडी ॥श्याम भए राधा बश ऐसे। चातक स्वाति चकोर रहत ज्यों चक्रवाक रवि जैसे ॥ नाद कुरंग मीन जलकी गति

ज्यों तनुके बश छाया। यकटक नैन अंग छबि पोंहे थकित भए पतिजाया ॥ उठे उठत बैठे बैठतहँ चले चलत सुधि नाहीं। सूरदास बड़भागिनि राधा समुझि मनहि मुसुकाहीं॥ राग आसावरी ॥ निरखि श्याम प्यारी अंग शोभा मन अभिलाप बढावतहै। प्रिया अभूषण मांगत पुनि पुनि अपने अंग बनावतहै ॥ कुंडल तट तरिवनलै साजत नासा बेसरि धारतहै। बेंदी भाल मांग शिर पारत बेनी गूँथि सँवारतहै ॥ प्यारी नैननिको अंजन लै अपने लोचन अंजतहै। पीतांबर वोढनी शीश दे राधाको मन रंजतहै ॥ कंचुकि भुजानि भरत उर धारत कण्ठ हमेल भ्रजावतहै।सूर श्याम लालच त्रिय तनुपर करि शृंगार सुख पावतहै ॥राग नट॥श्यामा श्याम छबिकी साध। मुकुट मंडल पीतपट छबि देखि रूप अगाध॥प्रिया हाहा करति पुनि पुनि देहु प्रीतम मोहि। अंग अंग सँवारि भूषण रहति वह छबि जोहि ॥ काछि कछनी पीत पट्ट कटि किंकिनी अतिशोभ। हृदय वनमाला बनावत देखि छबि मनलोभ ॥ श्रवण कुंडल धारि शोभा शीश रचि श्रीखंड। सूर श्याम सुहागिनी रुचि कनक कर लै दंड ॥ राग रागिनी कर्णाटकी॥ श्रीगोपाललालजी बंसी नेक मैं पाऊं। हो मदन गुपाल तुम्हारी मुरली मैं नेकु बजाऊं ॥ टेक ॥ मुरली बजाऊं रिझाऊं गिरिधर गाऊं न आज सुनाऊं तेइ तेइ तान तुमसी गीत गावत जेइ कर्णाटी गौरी मैं गाय सुनाऊं ॥ हो० ॥ तहांलगि गान गाऊं मोहन जहां लगि सात सुर न मैं पाऊं। सुरन विमान थकित करि राखों कालिंदी स्थिर नीर वहाऊं ॥ हो० ॥ बेनी शीशफूल पहिरो हरि मैं शिर मुकुट बनाऊं। तुम वृषभानु सुता है बैठो मैं नंदलाल कहाऊं ॥ हो० ॥ तिहारो आभूषण मैं पहिरौं अपनो तुम्हैं पहिराऊं। तुम मानिनिको मान करि बैठो मैं गहि चरण मनाऊं ॥ हो० ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको भक्ति भाव नीके करि पाऊं। कीजै कृपा अनेक अनुचर पर अनुपम लीला गाऊं ॥ हो० ॥ ॥ राग नट ॥ तिहारी लाल मुरली नेक बजाऊं। जो जिय होत प्रीति कहिबेकी सो धरि अधर सुनाऊं ॥ जैसी तान तुम्हारे मुखकी तैसिय मधुर उपाऊं। जैसे फिरत रंध्र मगु कँगुरी तैसे मैंहुँ फिराऊं ॥ जैसे आपु अधर धरि फूंकत मैं अधरनि परसाऊं। हाहाकरति पाय हौं लागति बांस बँसुरिया पाऊं ॥ सारंग नट पूरवी मिलिकै राग अनूपम गाऊं। तुम्हरे भूषण मोको दीजे अपने तुमहि बनाऊं ॥ तुम बैठो दृढ मान साजिकै मैं गहि चरण मनाऊं। तुम्ह राधेहो माधोई माधो ऐसी प्रीति जनाऊं ॥ यह अभिलाप बहुत मेरे जिय नैननि इहै देखाऊं। सूर श्याम गिरि धरन छबीले भुजभरि कंठ लगाऊं ॥ राग नट ॥ हरिजी मुरली तुम्हैं सुनाऊं। तुम सुरपुर वो प्राण नाथ प्रभु हौं अँगुरियन चलाऊं ॥ मधुरे सुर गति राग रागिनी भलीतान उपजाऊं। जेहि जेहि भांति रिझहु नँदनंदन तेहि तेहि भांति रिझाऊं ॥ अंश बाहु धरि करि विक्रम ज्यों ते मनु सुखहो पाऊं। सूरदास अटक्यो मन चलै न पगु मन अभिलाप बढाऊं ॥ राग नट॥ प्यारी कर बांसुरी लई। सन्मुख होइ तुम सुनहु रसिक पिय ललित त्रिभंग भई ॥ उठत राग रागिनी तरंगन छिनु छिनु उपजि नई। आलवाल नँदलाल श्रवनवर जनु मोहनी वई ॥ नमित सुधाकर बदन अमित छबि मनमोहन चितई। मानहुँ मत्त चकोर मेचक मृग तनु सुधि बिसारि गई ॥ कटि पीतांबर छाइ नाह को छल बलकै रिझई। सूर सखी हँसि कमल नैन कह राधे अंक दई ॥ राग गूजरी ॥ मुरली लई करते छीनि। ता समय छबि कही जाति न चतुर नारि नवीनि। कहति पुनि पुनि श्याम आगे मोहिं देउ सिखाइ। मुरलीपर मुख जोरि दोऊ अरस परस बजाइ ॥ कृष्ण पूरत नाद उच्चरत प्यारी रिसकरि गात। बार बारहि अधर धरि धरि बजत नहिं अकुलात ॥ प्रिया भूषण श्याम

T

पहिरत श्याम भूषण नारि । सूर प्रभु करि मानु बैठे त्रिय करति मनुहारि ॥ राग विलावल ॥ कहति नागरी श्यामसों तजौ मानु हठीली । हमते चूक कहा परी त्रिय गर्व गहीली ॥ हँसतहिंमें तुम रिस कियो कहा प्रकृति तुम्हारी । बार बार कर धरतिहै कहि कहि सुकुमारी ॥ वृथा मान नहिं कीजिये शिर चरणन धारति । आनन आनन जोरिकै पिय मुखहि निहारति ॥ निठुर भईहौ लाडिली कबके हम ठाढे । तुम हम पर रिसि करतहौ हम हैं तुव चाढे ॥ श्याम कियो हठ जानिकै इक चरित बनाऊं । सुनहु सूर प्यारी हृदय रस बिरह उपाऊं ॥ राग विलावल ॥ लाल निठुर ह्वै बैठि रहे । प्यारी हाहा करति न मानत पुनि पुनि चरण गहे ॥ नहिं बोलत नहिं चितवत मुखतन धरणी नखन करोवत । आपु हँसति पुनि पुनि उर लागत चकित होत मुख जोवत ॥ कहा करत ए बोलत नाहीं पिय यह खेल मिटावहु । सूर श्याम मुख कोटि चंद्रछवि हँसिकै मोहिं देखावहु॥राग धनाश्री ॥ नागरि हँसति हृदय डर भारी । कबहुँ अंक भरि लेति उरज बिच कबहुँ करति मनुहारी ॥ मान करत नीके नहिं लागै दूरि करौ यह ख्याल । नेक नहीं चितवत राधा तन निठुर भए नँदलाल ॥ शीश धरति चरणनि लै पुनि पुनि त्रियको रूप निहारत । सूरदास प्रभु मान धरयो दृढ धरणी नखन बिदारत॥राग गुंड॥निरखि त्रियरूप पिय चकित भारी । किधौं वै पुरुष मैं नारिकी वै नारि मैंहिंहौं पुरुष तनु सुधि बिसारी ॥ आप तन चितै शिर मुकुट कुंडल श्रवन अधर मुरली माल बन बिराजै । उतहि प्रियरूप शिर मांग बेनी सुभग भाल बेंदी बिंद महा छाजै ॥ नागरी हठ तजौ कृपाकरि मोहिं भजौ परी कह चूक सो कहौ प्यारी । सूर प्रभु नागरी रस बिरह मगन भई देखि छवि हँसत गिरिराजधारी ॥ राग धनाश्री ॥ निरखत पिय प्यारी अंग अंग बिरह शोभा। कबहूँ पियचरण परति कबहूँ भुज अंक भरति कबहूँ जिय डरति वचन सुनिबेकी लोभा ॥ कबहुँ कहति पियसों पिय कबहुँ कहति प्यारी हो हाहा करि पाँइ परति विकल भई बाला । कबहुँ उठति कबहुँ बैठ पाछे ह्वै रहति कबहुं आगे ह्वै वदन हेरि परी बिरह ज्वाला ॥ काहे तुम कियो मान बोले बिन जात प्रान दंपति है संग दशा ऐसी उपजाई । रीझि प्रिय सूर श्याम अंकम भरि लई वाम बिरह द्वंद्व मेटि हरप हृदय उपजाई ॥ राग धनाश्री ॥ प्रिया पिय लीन्ही अंकम लाइ । खेलनमें तुम बिरह बढायो गई कहा बितताइ ॥ तुमही कह्यो मान करिबेको आपुहि बुद्धि उपाइ । काहे विवश भई बिन कारण ऐसी गई डराइ ॥ सुन प्यारी हम भाव बतायो अंतर गए जनाइ । बारंबार अलिंगन दीन्हो अबहिं रही मुरझाइ ॥ सींची कनकलता सूरज प्रभु अमृत वचन सुनाइ । अति सुखदै दुखको बिसरायो राधारवन कन्हाइ॥राग गुंडमलार ॥ श्याम तनु पिया भूपण बिराजै । कनकमाणि मुकुट कुंडल श्रवन वनमाल अधर मुरली धरे नारि छाजै ॥ निरखि छवि परस्पर रीझि दोउ नारि वर गयो तजि विरह उर प्रेम पागे । सूरप्रभु नागरी हँसति मन मन रसति बसत मन श्यामकै बडे भागे ॥ राग नट ॥नागरि भूपण श्याम बनावत। श्रीनागर नागरि अँग शोभा कियो निरखि मन भावत ॥ श्यामा कनक लकुट कर लीन्हे पीतांबर उर धारे । उत गिरिधर नीलांबर सारी घूँघट वोट निहारे ॥ वचन परस्पर कोकिल वाणी श्याम नारि पति राधा। सूर स्वरूप नारि पति काछे पति नारी तनु साधा ॥ राग नट ॥ नीके श्याम मान तुम धारचो। तुम बैठे दृढ़मान ठानि मैं देख्यो मान तुम्हारो ॥ यह मन साध बहुतही मेरे तुम बिनु कौन निवारै। नागरि पियतन अपनी शोभा बारहि बार निहारै॥ बेनी मांग भाल बेंदी छबि नैननि अंजन रंग । सूर निरखि पिय घूँघट की छबि पुलक नमावति अंग॥राग धनाश्री॥कुंजबन गमन दंपति विचारै । नारिको वेशकरि नारिको मनहि हरि

मुकुर लै भावती छबि निहारै ॥ भामिनी अंग वह निरखि नटवर भेष हँसतही हँसत सब मेटि डारे ॥ सहज अपनो रूप धरो मन भावती और भूषण तुरत अंगधारे । त्रियाको रूप धरि संग राधा कुँवरि जात व्रज खोरि नहिं लखत कोऊ । सूर स्वामी स्वामिनी बने एकसे कोउ न पटतर अरस परस दोऊ ॥ राग गौरी ॥ नँदनंदन त्रिय छबि तनु काछे । मनो गोरी साँवरी नारि दोउ जात सहज में आछे ॥ श्याम अंग कुसुँभी नई सारी फलगुंजाकी भांति । इत नागरी नीलांबर पहिरे जनु दामिनि घन कांति ॥ आतुर चले जात बनधामहि अतिमन हरष बढाए । सूर श्याम वा छबिको नागरि निरखति नैन चुराए ॥ राग कान्हरो ॥ मनही मन रीझतिहै राधा वार बार पिय रूप निहारै । निरखि भाल बेंदी सेंदुरकी वा छबि पर तन मन धन वारै ॥ यह मन कहति सखी जिन देखे बूझे पर कहा कैहौ । तिहूं भुवन शोभा सुखकी निधि कैसे उनहि दुरैहौ ॥ पग जेहरि बिछिअनकी झमकनि चलत परस्पर बाजत । सूर श्याम श्यामा सुख जोरी मणि कंचन छबि लाजत ॥ राग कल्याण ॥ श्यामा श्याम कुंजवन आवत । भुज भुज कंठ परस्पर दीन्हें यह छबि उनहीं पावत ॥ इतते चंद्रावली जात व्रज उतते ए दोउ आए । दूरिहिते चितवत उनही तन इकटक नैन लगाए ॥ एक राधिका दूसरिकोहै याको नहिं पहिचानौं । व्रज वृषभानु पुरा युवतिनको इक इक करि मैं जानौं ॥ यह आई कहुँ और गाँवते छबि सांवरी सलोनी । सूर आजु इह नई बतानी एकै अंग न बिलोनी ॥ ॥ राग सोरठ ॥ राधा सकुचि श्याम मुख हेरति । चंद्रावली देखिकै आवति व्रजहीको पिय फेराति ॥ जाहु जाहु मुखते कहि भाषति करते कर नहिं छूटति । उतहि सखी आवत सकुचानी इतहि श्याम सुख लूटति ॥ दुख सुख हरष कछू नाहिं जानति श्याम महारस माती । सूर उतहि चंद्रावलि इकटक उनहीके रँग राती ॥ राग गौरी॥यह वृषभानु सुता वह कोहै । याकी सरि युवती कोउ नाहीं यह त्रिभुवन मनमोहै ॥ अतिआतुर देखनको आवति निकट जाइ पहिचानो । व्रजमें रहति किधौं कहुँ औरै बूझेते तब जानो ॥ यह मोहनी कहांते आई परम सलोनी नारि । सूर श्याम देखत मुसुकानी करी चतुरई भारि ॥ राग गौरी ॥ इनते निधरक और न कोइ । कैसी बुद्धि रचीहै नोखी देखी सुनी न होइ ॥ इह राधासों हाथ विधाता बुद्धि चतुरई ठानी । कैसे श्याम चुराइ चली लै अपने भूषण ठानी ॥ और कहा इति को पहिचाने मोपै लखे न जात । सूर श्याम चंद्रावलि जाने मनहीं मन मुसुकात ॥ राग कान्हरो ॥ सकुच छांडि अब इनहि जनाऊं । एतौ चले आपने काजहि मैं काहे न समझाऊं ॥ मनहीं मनमें जीति जाहिंगे जानि बूझि निदराऊं । यह चतुरई काछिके आए सो अब प्रकट देखाऊं ॥ बडे गुणज्ञ कहावत दोऊ इनको लाज लजाऊं । सूर श्याम राधाकी करनी महिमा प्रगट सुनाऊं॥ राग सारंग॥कहिराधा ये को है री॥अति सुंदरि साँवरी सलोनी त्रिभुवन जन मन मोहै री॥ और नारि इनकी सरि नाहीं कहौ न हम तन जोहै री । काकी सुता बधू है काकी काकी युवती यौं है री॥ जैसी तुम तैसी है एऊ भली बनी तुम सोहै री । सुनहु सूर अति चतुर राधिका एई चतुर नीकी गोहै री ॥ राग ईमन ॥ मथुरा ते ये आई है । कछु सम्बन्ध हमारी इनसों ताते इनहि बुलाई है ॥ ललिता संग गई दधि बेचन उनही इनहि चिन्हाई है । उहै सनेह जानि री सजनी भवन आजु हम आई है ॥ तबहींकी पहिचान हमारी ऐसी सहज सुभाई है । सूर मोहिं देखन इहां आवत आपु संग उठि धाई है ॥ राग सोरठ ॥ इनको व्रजही क्यों न बुलावहु । की वृषभानु पुराकी गोकुल निकटहि आनि बसावहु ॥ वोऊ नवल नवल तुमहूं हौ मोहन को दोउ भावहु । मोको देखि कियो अति घूँघट काहे न लाज छुडावहु ॥ यह अचरज देख्यो नहिं कबहूं युवतिहि युवति दुरावहु । सूर सखी

राधासों पुनि पुनि कहति जु हमहि मिलावहु ॥ राग हमीर ॥ सांवरे तनु कुसुंभी सारी सोहत है नीकी री। मानो रतिपति सँवारि बनी खनी जीकी री ॥ राधाते अतिहि सरस श्याम देखि पावै री। ऐसी यह नारि और नारि मन चुरावै री ॥ घूँघट पट बदन ढांकि काहे इन राख्यो री। चितवहु मो तन कुमारि चंद्रावलि भाष्यो री ॥ आपुहि पट दूरि कियो तरुणी बदन देखै री। मनही मन सफल जानि जीवन जग लेखै री ॥ नैन नैन जोरति नाहिं भावसों लजाने री। सूर श्याम नागरि मुख चितवत मुसुकाने री ॥ राग बिहागरो ॥ मथुरा में बसवास हमारो। राधाते उपकार भयो यह दुर्लभ दरशन भयो तुम्हारो ॥ बार बार कर गहि गहि निरखत घूँघट वोट करो किन न्यारो। कबहुँक कर परसत कपोल छुइ चुटकि लेत ह्यां हमहिं निहारो ॥ कछु मैं हूं पहिचानति तुमको तुमहि मिलाऊं नंददुलारो। काहेको तुम सकुचति हौ जी कहौ काह है नाम तुम्हारो ॥ ऐसी सखी मिली तोहिं राधा तौ हमको काहे न बिसारो। सूरदास दंपति मन जान्यो यासे कैसे होत उबारो ॥ राग रामकली ॥ राधा सखी मिली मन भाई। जबते इनसों नेह लगायो बहुत भई चतुराई ॥ और भई इतने तुमको सखी गृहजनसों निठुराई। काहूके मनमें नाहिं आनति हमहुँ सबन बिसराई ॥ तुम हौ कुशल कुशल हैं एऊ आपु स्वारथी माई। सूर परस्पर दंपति आतुर चतुर सखी लखि पाई॥ राग रामकली ॥ इह सखि अबलौं कहां दुराई। राति दिवस हम कबहुँ न देखी अब जु कहांते आई ॥ त्रिभुवनकी शोभा सब गुणनिधि है बिधि एक उपाई। विद्यमान वृषभानु नंदिनी सहचरि सब सुखदाई ॥ अपने मन ताकि तकि तनु तोलति विय जन सुंदर तांई। दुसर रूपकी राशि राधिका कहौ कौन प्रभुताई ॥ राचिरही रस सुरति सूर दोउ निरखी नैन निकाई। चीन्हें हौ चले जाहु कुंज गृह छांडि देहु चतुराई ॥ राग रामकली ॥ ऐसी कुँवरि कहां तुम पाई। राधाहूँते नख शिख सुंदरि अबलों कहां दुराई ॥ काकी नारि कौनकी बेटी कौन गाउँते आई। देखी सुनी न ब्रज वृंदावन सुधि बुधि रहति पराई ॥ धन्य सुहाग भाग याको यह युवतिनके मनभाई। सूरदास प्रभु हरषि मिले हँसि ले उर कंठ लगाई ॥ राग गुंडमलार ॥ नँद नंदन हँसे नागरी मुख चितै हरषि चंद्रावलि कंठ लगाई। वामभुज खनि दक्षिण भुजा सखी पर चले वन धाम सुख कहि न जाई ॥ मनो विवदामिनी बीच नव घन सुभग देखि छबि कामरति सहित लाजै। किधौं कंचनलता बिच तमाल तरु भामिनी बिच गिरिधर बिराजै। गए गृह कुंज अलि गुंज सुमनन पुंज देखि आनंदभरे सूर स्वामी। राधिका खन युवती खन मन हरन निरखि छबि होत मन काम कामी ॥ राग्नी बैराटी ॥ बसेरी हेली नयननिमें पटइंदु। नँदनंदन वृषभानु नंदिनी सखी सहित शोभित जगवंदु। द्वादशही पतंग शशि सौ बीस पट फणि चौबीस धातु चतुरंग छंदु ॥ द्वादशही पकु बिंब सौ बानवै वज्रकन पट कमलनि मुसिक्यात मंदु ॥ द्वादशही मृणाल कदली खंभ द्वादश द्वादशते मातु लैहि गिनंदु। द्वादशही सायक द्वादश चाप चपलई खग व्याली समाधुरी फंदु। चौविसही चतुष्पद शोभा अति कीनी मानौं चलत चुवतकर भामकरंदु ॥ नील गौर दामिनि बिच पीत घन षोडश राजत अनूपम छबि श्रीगोकुल चंद। साठि जलजही अरु द्वादश सरवर अंगही अंग सर सरस कंदु। सूर श्यामपर तनु मनुहिवारते ललिता इति देखि भयो आनंदु ॥ राग केदारो ॥ कुंज सुहावनो भवन बनि ठनि बैठे राधा वरन। वरन वरन कुसुम प्रफुल्लित शशिकी किरनि जगमगात तैसोई वहै त्रिविध पवन ॥ आलिंगन पिकमंगल गावत ध्वनि सुनि सुनि मनहि भावत देखत दम्पति विवश अयन। सूरदास प्रभु पिय प्यारी दोउ राजत साजत सखी वारति रति पति

शयन ॥ राग बिलावल ॥ सँग शोभित वृषभानु किशोरी। सारंग नैन बैन बर सारंग सारंग बदन कहै छवि कोरी ॥ सारंग अधर सधर कर सारंग सारंग जति सारंग मति भोरी। सारंग दशन बसन पुनि सारंग सारंग बसन पीतपट डोरी ॥ सारंग चरन पीठपर सारंग कनक खंभ अहि मनहुँ चढी री। सारंग बरन पीठि पर सारंग सारंग गति सारंग कटि थोरी ॥ सारंग पुलिन रजनी रुचि सारंग सारंग अंग सुभग भुज जोरी। बिहरत सघन कुंज सखि निरखति सूर श्याम घन दामिनि गोरी ॥ ॥ राग बिलावल ॥ कुंज भवन राधा मन मोहन। रति बिलास करि मगन भए अति निरखत नैन लजोहन॥ त्रियतनुको दुख दूरि कियो पिय दैदै अपनी सोहन। बार बार भुज धरि अंकम भरि मिलि बैठे दोउ गोहन॥पीतांबर पटसों मुख पोंछत हरषि परस्पर जोहन। सूर श्याम श्यामा मन रिझवत पीन कुचनि टकटोहन ॥ राग बिहागरो ॥ बनहि धाम सुख रैनि बिहाई। तैसिय नवल राधिका नागरि तैसेइ नवल कन्हाई ॥ जैसोइ पुलिन पवित्र यमुनको तैसोइ मंद सुगंध। जैसोइ कंठ कोकिला कुहुकनि तैसोइ सुख सम्बंध ॥ रति बिहार करि पिय अरु प्यारी प्रात चले ब्रजधाम। सूरदास दोउ बांहां जोरी राजत श्यामा श्याम ॥ राग ललित ॥ नवल निकुंज नवल रस दोऊ राजत हैं रँग भीने। कुसुमनि सेज भोर उठि आवत आलसयुत अंशनि भुज दीने ॥ अरुन नैन कुच रेख बिराजत श्रम जल बसन पलटि तनु लीने। सूरज प्रभु पिय प्यारी को सुख निरखत सखिन सहित ललिता दृगदीने ॥ राग कान्हरो ॥ बरन बरन बादर मनहरन उदय करन बनधाम ते निकसत ऐसे दोऊ लागे। श्याम घटा मध्य मानो दामिनि भामिनि राजति लाजति दुरिजाति कबहुँ प्रगट होत हारी तामें अरुन भए नैन सो सबै निशिके जागे ॥ मोर मुकुट पीतवसन इंद्रधनुष बीच बीच मंद मंद गरजि बोलनि पिय रंग अनुरागे। सूरदास प्रभु पियप्यारीकी छवि गावत पावत कवि उपमा जे तेउ बडभागे राग अडानो ॥ बांहांजोरी निकसे कुंजते प्रात रीझि रीझि कहैं बात। कुंडल झलमलात झलकत बिबि गात चकचौंधीसी लागति मेरे इन नैननि आली रपटत पग नहिं ठहरात ॥ राधा मोहन बने बन चपला ज्यों चमकि चमकि मेरी पुतरीनमें समात। सूरदास प्रभुके वे बचन सुनहु मधुर मधुर अब मोहिं भूली री पांच और सात॥राग बिलावल॥नवलकिशोर किशोरी बांहांजोरी आवतहैं रति रंग अनुरागे। कबहुँ चरन गति डगति लगत छवि नैन बैन अलसात जम्हात ऐंड़ात गति आनंद निशा सुख जागे॥ बानक देखत रीझि रही हौं चंदन वंदन माल बिना गुन अंजन पीक पलट लागे। सूरदास प्रभु प्यारी राजत आवत भ्राजत बनेहैं मरगजे बागे॥राग सारंग॥अरुझि रहे मुकुताहल निरवारत सोहत घूँघर वारे बार। रतिमानी सँग नँद नंदनके छूटे बंद कंचुकी टूटे हार ॥ निशिके जागे दोउ नैना ढरकि रहे चलति जोवन मदभार। सूर श्यामसग इह सुख देखत रीझे बारंबार॥राग बिलावल॥नवल श्याम नवला श्रीश्यामा।दोउ राजत बांहांजोरी चलेजात ब्रजधामा।या छबिकी उपमा देबेको त्रिभुवन नहिं अभिरामा दामिनि घन पटतर दीबेको सकुचत कवि लिये नामा।सुधा शरीर परस्पर दोऊ सुखदायक दिन जामा। सूरदास प्रभु नागर नागरि जीते रतिपति कामा॥राग ललित॥दोउ बनते ब्रजधाम गये। रतिसंग्राम जीति पिय प्यारी भूषण सजति नए ॥ वे ब्रजगये आपु अपने गृह चितते कोउ न टारत।मन बाचा कर्मना एक दोउ एकौ पल न बिसारत।जैसे मीन नीर नाहिं त्यागत ए खंडित ए पूरन।सूर श्याम श्यामा दोउ देखो इत उत कोऊन अधूरन।राग धनाश्री॥बहुरि फिरि राधा सजति शृंगार। मानहु काम हार पहिरावति अंग रणजीते सुरति अपार ॥ कटि तट सुभटनि देत रसन पट भुज भूषण उरहार। करकंकन काजर नकबेसरि दीन्हों तिलक लिलार ॥ बीरा बिहँसि देत अधरनिको सन्मुख सहे प्रहार। सूर

दास प्रभुके जु बिमुख भए बांधति कायरत्रार॥ राग कान्हरो ॥ आज अति राधा नारि बनी । प्रति प्रति अंग अनंग जाते रसवश त्रैलोक्य धनी ॥ शोभित केश विचित्र भांति द्युति शिखि शिखंड हरनी । रची मांग सुभाग रागनिधि कामधाम सरनी ॥ अलक तिलक राजत अकलंकित मृगमद अंक बनी । खुभी नजराव फूलदुति यों मनौं दुर्द्धर गति रजनी ॥ भौंह कमान समान बान मनो हैं युग नैन अनी । नासा तिलक प्रसून बिंबाधर अमल कमल बदनी ॥ चिबुक मध्य मेचक रुचि राजति बिंद कुंद रदनी । कंबु कंठ बिधि लोक बिलोकत सुंदरि एक गनी ॥ बाँह मृणाल लाल कर पल्लव मद गज गति गवनी । पतिमन माणि कंचन संपुट कुच रोम राजितटनी ॥ नाभि भवँर त्रिवली तरंग गति पुलिन तुलिन ठटनी । कृषकटि पृथु नितंब किंकिनि युत कदलिखंभ जघनी ॥ रचि आभरण शृंगार अंग सजि रति पति ज्यों सजनी । जीते सूर श्याम गुण कारण मुख न मुरचो लजनी ॥राग बिलावल॥ नँदनंदन बश कीन्हें राधा भवन गए चित नैक न लागत । श्यामा श्याम रूपमंदिर सुख अंतरते सो नेक न त्यागत ॥ जा कारण बैकुंठ बिसारत निज अस्थल मनमें नहिं भावत । राधा कान्ह देह धरि पुनि पुनि या सुखको वृंदाबन आवत ॥ बिछुरन मिलन बिरह सुख नवतन दिन दिन प्रीति प्रकाशत । सूर श्याम श्यामा बिलास रस निगम नेति नित भाषत ॥ ॥ राग टोडी ॥ निगम नेति नेति गावतहैं जाको । राधा वश कीन्होहै ताको ॥ निशि बनधाम संग रहे दोऊ । एकै सँग नैक टरैं न कोऊ ॥ प्रात गए घर घर रस पागे । अरस परस दोऊ अनुरागे ॥ अपनी अपनी दशा बिचारैं । भाग बडे कहि बारंबारैं ॥ प्यारी फेरि अभूषण साजति । बैठी रंगमहलमें राजति ॥ ज्यों चकोर चंद्राको आतुर । त्यों नागरि बश गिरिधर चातुर ॥ आये उझाकि झरोखे झाँक्यो । करत शृंगार सुंदरी ताक्यो ॥ जालरंध्र मग नैन लगायो । सूर श्याम मनको फल पायो ॥ राग टोडी॥ आधो मुख नीलांबरसों ढांकि बिथुरी अलकैं सोहैं॥ एकदिशा मनो मकर चाँदिनी एक दिशा सघन बीजरी ऐसे हरि मन मोहैं ॥ कबहुँक करपल्लवनसों केश निरुवारति पाछे लै डारति निकसत शशि संपूरण सन्मुख जब जोहै । सूरदास प्रभु यह छबि न्यारे दुरि देखतहैं त्रिभुवनमें उपमा सो कोहै ॥ ॥ राग टोडी ॥ एक कर दर्पण एक कर अचरा कजराहि सँवारति ललना मुख कालिमदूरि करतिहै उलटि भँवर फिरि कमल परत । शीशफूल अतिराजत नगनि जड्यो ताकी उपमा कहे शेष शीश मणि मनो वरत ॥ करनफूल करननिहि सँवारति अलकैं निरवारति वंदन बिंदु ललाट करत । सूर श्याम दुरि देखत दर्पणको मुख यकटकते पलकहु न टरत ॥राग गुंडमलार॥ करति शृंगार वृषभानु वारी । रहे यकटक जाल रंध्र मग हेरिकै श्याम मन भावती परमप्यारी ॥ कबहुँ बेनी रचति फूलसों मिलै कच कबहुँ रचि मांग मोती सँवारै । कबहुँ राखति शीशफूल लटकाइके कबहुँ बंदन बिंदु भाल भारै ॥ कबहुँ केसरि आड रचति दर्पण हेरि कबहुँ भ्रूनिरखि रिसकरि सकोरै । निरखि अपनो रूप आपुही विवश भई सूर परछाँहको नैन जोरै॥ राग टोडी ॥ इह सुंदरी कहांते आई । बार बार प्रतिबिंब निहारति नागरि मन मन रही लुभाई ॥ करते मुकुर दूरि नहिं डारति हृदय माँझ कछु रिस उपजाई । देखै कहूं नैन भरि याको नागर सुंदर कुँवर कन्हाई ॥ मेरी कहा चलै या आगे यह धौं आजु अरसते आई । सूरदास याको या ब्रजमें ऐसी को बैरनि जो ल्याई ॥ राग हमीर॥ मुकुर छांह निराखि देहकी दशा गँवाइ । बोली धौं कौने की आपुनही गमन कियो ऐसी को वैरनिहै या ब्रजमें माइ ॥ बिथकी अंग अंग निरखि बारबारहै पराखि ललिता चंद्रावलि कह इतनी छबिपाइ । मनमें कछु कहन चहै देखतही ठठुकिरहै सूर श्याम निरखत द्युति

तनु सुधि विसराइ ॥ राग बिलावल ॥ कहति छाँहसों नागरी कोहै तू माई । मिली नहीं ब्रजगाँवमें री कहो कहाँते आई ॥ नाम कहाहै सुंदरी कहि सोंह दिवाई । कहौ न मेरे साथहै सुख बचन सुनाई ॥ दिननि हमहुँ तुम सरबरी तुव छवि अधिकाई । और संग नहिं कोउ लई यह कहि डरपाई ॥ जानति हौं यह नहिं सुनी ह्यांकी अथमाई । अभरन लेत छिडाइकें ब्रज ढीठ कन्हाई ॥ सदन जाहु मेरे कहे पटु अंग छपाई । सूर श्याम जो देखिहै करिहै बरिआई ॥ राग धनाश्री ॥ मैं उनके गुण नीके जानति । सदन जाहु मर्यादा जैहै कह्यो न काहे मानति ॥ अपनी दशा कहौं तो आगे जैसी बिपति बनाइ । मथुरा चली जाति दधि बेचन घेरि लई इन आइ ॥ गोरस लियो अभूषण छीन्यो तुम एक हम अनेक । सूर श्याम जो देखन पैहै करिहै अपनी टेक ॥ राग बिलावल ॥ तेरे हित को कहतिहौं मानो जिनि मानो । तू आई है आजुही उनको का जानो ॥ ऐसो ढीठ नहीं कहूं त्रिभुवनमें माई । नारि पराई देखिकै हँसि लेत बोलाई ॥ सो अपने सहजहि मिलै उनके गुण ऐसे । भूषण लेत मँगाइके औरौ गुण नैसे ॥ काहूको नहिं डरपही मथुरापति घरके । मनको भायो करत है कबहूं नहिं हरकै ॥ तुम सुंदरि काकी वधू घर जाहु सवारी । सूर श्याम सुनि सुनि हँसैं मनही मन भारी ॥ राग मारू ॥ नागरी चरित पिय चकित भारी । अंगकी छवि निरखि प्रथमही बिबस ह्वै प्रतिबिंब निरखत देह सुधि बिसारी ॥ एक राधा दूसरी वाहि जानि जिय नागरी पास आवत लजाही । नैन ठहराइ ठहराइ पुनि पुनि रहै कहै नहिं कछू हरपत डराही ॥ पुनि उठत जागि देखै मुकुरनारि कर ललचात अंकभरि लैन लोरै । सूर प्रभु भावतीके सदा रस भरे नैन भरि भरि प्रिया रूप चोरै ॥ राग गुंडमलार ॥ धन्य हरि नैन धनि रूप राधा। धन्य वह मुकुर धनि धन्य प्रतिबिंब सुख धन्य दंपति रहति भेप आधा॥धन्य शृंगार धनि धन्य निरखनि श्याम धन्य छवि लूटि लूटत मुरारी । सूर प्रभु चतुर चतुरी नवल नागरी रहै प्रतिबिंब पर नैन जोरी ॥ राग केदारो ॥ श्यामा जू आपनो रूप देखि रीझि रीझि नेकहु दर्पण दूरि न करति।अपनी छबि जु निहारति अपनों तन मन वारति बिवस ह्वै प्रतिबिंब के पाँइन परति ॥ कबहूँ श्यामकी सकुच मानति यह जिय अनुमानति यासों जिनि प्रीति करे एही डर डरति । सूरदास प्रभु प्यारी की छबि निरखत न्यारे ह्वै दृष्टि न इत उत टरति ॥ राग आसावरी ॥नाम काह सुंदरी तुम्हारो क्यों मो सो नाहिं बोलति हौ । हँसे हँसति चितए चितवति तुम तनु डोलै तनु डोलति हौ ॥ परमचतुर मैं जानति तुमको मोपर भौंह मरोरति हौ । लटकति सुभग नासिका बेसरि पुनि पुनि बदन सकोरति हौ ॥ अरुन अधर चित हरन चिबुक अति दामिनि दशन लजावति हौ । ऐसे बचन मुखकी माधुरी काहे न हमहि सुनावति हौ ॥ कहौ बचन काकी तुम घरनी काके मनको चोरति हौ । सुनहु सूर सहजहि कीधौं रिस मोसों लोचन जोरति हौ ॥ राग सोरठ ॥कछु रिस कछु नागरि जिय धरकी। यह तो जोवन रूप गहीली शंका मानति हरकी ॥ यह विपरीत होनहै चाहत ब्रज यह आयसु मानी।यह तौ गुणनि उजागरि नागरि वैतो चतुर बिनानी॥कर दर्पण प्रतिबिंब निहारति चकित भई सुकुमारी । सूर श्याम अंग निरखत वा छबि मग नागरि भोरी भारी॥राग बिलावल॥सुता बिवस वृषभानुकी देखी गिरिधारी । लोचन यकटक देरही प्रतिबिंब निहारी ॥ अपनी छबि पर आपनो तन मन धन वारे । बार बार हाहा करै त्रिय नाम न सारै ॥ बूझति ताको कौन तू को है री प्यारी । मैं देखी तौ आजु ही सुंदरि गुणभारी ॥ त्रिभुवन में कोऊ नहीं तेरी उपमा री । यह कहि मुख मन सोचई भई सौति हमारी ॥ दृष्टि परे जिनि श्यामके तबही बश हैहै । सोच करै पछितातिहै सँगही

T

सँग रैहै ॥ ऐसी सुंदरि नारिको जबहीं वै पैहै । दोउ भुज भरि अँकवारि कै हँसि कंठ लगैहै ॥ यह वैरिनि मोको भई धौं कहँते आई । मोतन यकटक हेरई मैं रही लजाई ॥ श्यामहि बश करि लेइगी मैं जानी माई । देखि दशा यह वामकी प्रतिबिंब भुलाई ॥ इकटक नैन टरै नहीं छविकी अधिकाई । पिय हरपे आनँद भरै शोभा यह पाई ॥ कबहुँ चलत त्रिय पासको फिरि रहत लुभाई । सूरश्याम तृणतोरही मन मन मुसुकाई॥ राग विहागरो ॥ नागरि रही मुकुर निहारि । आनि औचक नैन मूँदे कमल कर गिरिधारि ॥ चौंकि चकृत भई मनमें श्यामको जिय जानि। मैं डरतिही अवहिं जाको मिले ताको आनि ॥ तबहिं तनुकी सुरति आई लख्यो तनु प्रतिछाहिं । सकुचि मनही मन दुरावति परस्पर मुसुकाहिं ॥ समुझि चितमें कहति सखिअनि विपुल लैलै नाम । सूर प्रभु उर शीश परसे बीच बेनी श्याम॥राग विहागरो॥मूँदिरहे पिय प्यारि लोचन । अति हित बेनी उर परसाए वेष्ठित भुजा अमोचन ॥ कंचनमणि सुमेर अँग दोऊ शोभा कही न जाइ । मनों पन्नगी निकसि ताबिच रही हाटक गिरि लपटाइ ॥ चपल नैन दीरघ अति सुंदर खंजनते अधिकाई । अति आतुर भषकारण धाई धरती फनन समाई ॥ मन हरषति सुख खिझति सखिन कहि चतुर चतुरई भाव । सूर श्याम मनकामनकै फल लूटतहै एहि दाव ॥ राग रामकली ॥ करत मन काम फल लूटि दोऊ । रहे दोउ नैन पिय मूँदि कोमल करनि बरनि नहिं सकत वह उपमा कोऊ ॥ हृदय भरि वाम सुखधाम मोहन काम मनो घन दामिनि झकोर लीन्हें ॥ महाआनंद सुखसिंधु उछलत दोऊ सूर प्रभु नागरी तुरत चीन्हें ॥ राग कान्हरो ॥ बैठी रही कुवँरि राधा हरि अँखिया मूँदी आइ । अतिहि विशाल चपल अनियारे नहिं पिय पानि समाइ ॥ खन खोलत खन ढांकत नागरि सुख रिस मन मुसुकाइ । ज्यों मणि धर मणि छांडि बहुरि फिरि फन तर धरत छपाइ ॥ श्याम अंगुरिअनि अंतर राजत आतुर दुरि दरशाइ । मानो मरकतमणि पिंजरनिमें विवि खंजन अकुलाइ ॥ कर कपोल बिच सुभग तरौना शोभा बढी सुभाइ । मनो सरोज द्वै मिलत सुधानिधि विवि रवि संग सहाइ ॥ अपने पानि पकरि मोहनके करधरि लिए छिड़ाइ । कमल चकोर चंचरि जनु द्वै शशि दिनकर जुरति सगाइ ॥ उपमा काहि देउँ को लायक देखी बहुत बनाइ । सूरदास प्रभु दंपति देखत रतिसों काम लजाइ ॥ राग गुंडमलार ॥ श्याम भुज वाम गहि सन्मुखं आने । भले जु भले मैं सखी धोखे रही रहे लोचन मूँदि अति कर पिराने ॥ दौरि पैठे भवन कहि कबहिं कीन्हों गवन नारि मन रवन तुमहौ कन्हाई । सूर प्रभु हरपि प्यारी अंक भरिलई मुकुरकी कथा तब कहि सुनाई ॥ राग गूजरी ॥ नागरि यह सुनिकै मुसकानी । को जानै पिय महिमा तुम्हरी नैननि चितै लजानी ॥ मैं बैठी प्रतिबिंब विलोकति अपने सहज सुहाइ । आपुन कहा अचानक आये तुवगति लखी न जाइ ॥ इक सुंदर दूजे अति नागर तीजे कोक प्रवीन । सूरदास प्रभु अबहीं तौ तुम यशुमति सुवन नवीन ॥ राग विलावल ॥ हँसत चले तब कुँवर कन्हाई । मनके केरे मनोरथ पूरण राधाके सुखदाई ॥ उत हरपत हरि भवन सिधारे नागरि हरप बढ़ाई । जब आवत सुधि मुकुर विलोकनि तब तब रहति लजाई ॥ यहि अंतर सखियन सँग लीन्हें चंद्रावलि तहँ आई । सूर तुरत राधिका सबनिको आदर करि बैठाई ॥ राग रामकली ॥ अति आदरसों बैठक दीन्हों मेरे गृह चंद्रावलि आई अतिही आनँद कीन्हों ॥ श्याम संग सुख प्रगट्यो चाहति पुनि धीरज धरि राखति । जोइ जोइ कहति वचन गदगदसों बार बार मुख भाषति ॥ सखी संगकी कहति राधिका आजु कहा तैं पायो । सुनहु सूर इतने आदरसों कबहूं नहीं बोलायो ॥ राग आसावरी ॥ हम

तेरे नितही प्रति आवैं सुनहु राधिका गोरी हो। ऐसो आदर कबहुँ न कीन्हों मेरी अलकसलोरी हो॥ काहे आजु हरष जिय उपज्यो कहा विभव तुम पायो हो। कीधौं आजु मिले नँदनंदन पछिलहु दुख बिसरायो हो॥ उमँग्यो प्रेम रहत नहिं रोके सखियन कहति सुनावै हो। सूर श्याम मेरे भवन पधारे यह कहि कहि मन भावै हो॥ राग विहागरो॥ आये श्याम अबहिं मेरे गेह। कही जाति न सखी मोपै मिले जौन सनेह॥ करति अंग शृंगार बैठी मुकुर लीन्हें हाथ। आइ पाछे भए ठाढे चतुर बर ब्रजनाथ॥ भाव इक मैं कियो भोरे ताहि कहत लजाउँ। निरखि अपनी छाँहको त्रिय और आनि डराउँ॥ जालरंध्रनि रहे ठाढे निरखि कौतुक श्याम। नैन औचक आनि मूँदे सुनहु हरिके काम॥ देतिहौं उरहनों तुमको भये डोलत चोर। सूर प्रभु आये अचानक भवन बैठी भोर॥ राग बिलावल॥ श्याम संग सुख लूटति हौ। सुनि राधे रीझे हरि तोको अब उनते तुम छूटति हौ॥ भली भई हरिके रस पागी वै तुमसों रति मानतहैं। आवत जात रहत घर तेरे अंतरही पहिचानत हैं॥ तुम अति चतुर चतुर वे तुमते रूप गुणनि दोउ नीके हो। सूरदास स्वामी स्वामिनि दोउ परमभावते जकि हो॥ राग अडानो॥ भलेही मेरे लालन आये री आजु मैं फूली अंग न समाई। गाऊं बजाऊं रस प्रेम भरि नाचौं तन मन धन न्यवछावर करि डारों एहि विधि करति बधाई। धनि धनि भाग धनि धनि री सुहाग धनि अनुराग धनि धन्य कन्हाई॥ धनि धनि रैनि धनि धनि दिन जैसो आजु धनि घरी धनि पल धनि धनि धनि माई। धनि गेह धनि देह धनि री शृंगार वह धनि प्रतिबिंब धनि रही मैं भुलाई॥ धनि धनि सूर प्रभु धनि अवलोकनि धनि नैन मूँदे कर धनि धनि पिय सुखदाई॥ राग ईमन॥ बनि बनि आवत हैं लाल भाग बडेरो मेरो। दरश देखन को अति सुख उपजत और सन्मुख जब हेरे॥ तब मैं हँसति जब मंद मुसुकात वै आनंद मानि पिय आवत नेरे। सूरदास प्रभुकी सुरतिहै महा रसाल टरति नसांझसवेरे॥ राग ईमन॥ श्यामअचानकआए री। पाछेते लोचन दोउ मूँदे मोको हृदय लगाए री॥ लहनो ताको जाके आवै मैं बडभागिनि पाए री। यह उपकार तुम्हारो सजनी तूसे कान्ह मिलाए री॥ ल्याइ तुरत जादिन तू हरिको मैं अपराध क्षमाए री। सूरदास प्रभु नैननि लागे भावत नाहिं बिसराए री॥ अथ नैननि समयके पद॥ राग टोडी॥ हरि अनुराग भरी ब्रजनारी। लोक सकुच कुलकानि बिसारी॥ सासु ननँद हारी दैगारी। सुनत नहीं कोउ कहत कहारी॥ सुत पति नेह जगत इह जान्यो। ब्रज युवती तिनुकासों मान्यो॥ काचो सूत तोरि सो डारयो। उरग कंचुकी फिरि न निहारयो॥ ज्यों जलधार फिरै पुनि नाहीं। जैसे नदी समुद्र समाहीं॥ जैसे सुभट खेत चढि धावै। जैसे सती बहुरि नहिं आवै॥ ऐसे भजी नंदनंदनको। सकुची नहिं त्यागत गृह जनको। सूरज प्रभु सब घोषकुमारी। ज्यों गज पंक न सकैं निवारी॥ राग सोरठ॥ एहि अंतर तेही खोरिही नँद नंदन आए। सखिन सहित ब्रजनागरी पल बिनु टकलाए॥ मोर मुकुट शिरसोहई श्रवणनि वर कुंडल। ललित कपोलनि झलमले सुंदर अति निर्मल॥ तरुनिगई चकचौंधिकै नाहिं नैन थिराही॥ सूर श्याम छवि: निरखिकै युवती भरमाही॥ राग सोरठ॥ देखो श्याम अचानक जात। ब्रजकी खोरि अकेले निकसे पीतांवर कटिपर फहरात॥ लटकत मुकुट मटक भौंहनिकी चटकत चलत मंद मुसुकात। पगद्वै जात बहुरि फिरि हेरत नैन सैन देकै नँदतात॥ निरखत नारि निकर विथकित भए दुख सुख व्याकुल झुलति सिहात। सूर श्याम अँग अंग माधुरी चमकि चमकि चकचौंधत गात॥ राग सोरठ॥ सघन कलपतरु तर मन मोहन। दक्षिण चरन चरन पर दीन्हें तनु त्रिभंग मृदु जोहन॥ मणिमय जडित मनोहर कुंडल शिखी चंद्रिका शीश रही फबि। मृगमद तिलक अलक

घुँघरारी उर बनमाल कहौं जो वै छबि ॥ तनु घन श्याम पीत पट शोभित हृदय पदिककी पांति दिपत दुति । वन तनु धात विचित्र विराजित वंशी अधरनि धरे ललित गति ॥ करज मुद्रिका कर कंकन छबि कटि किंकिणि नूपुर पग भ्राजत । नख शिख कांति विलोकि सखी री शशि औ भान मगन तनुलाजत ॥ नखशिख रूप अनूप विलोकति नटवर भेष धरे जु ललित अति। रूपराशि यशुमतिको ढोंटा वरणि सकै नाहिं सूर अलपमति ॥ राग सोरठ ॥ लोचन हरत अंबुज मान चकित मन्मथ शरन चाहत धनुप तजि निज बान ॥ चिकुर कोमल कुटिल राजत रुचिर विमल कपोल। नील नलिन सुगंध ज्यों रस थकित मधुकर लोल। श्याम उर पर परमसुंदर सजल मोतिन हार । मनो मर्कत शैलते बहिचली सुरसरि धार ॥ सूर कटि पट पीत राजत सुभग छबि नँदलाल। मनो कनकलता अवलि बिच तरल विटप तमाल॥ ॥ राग रामकली ॥ मोहन माई री हठ करि मनहि हरत । अंग अंग प्रति औरं और गति अतिही छबि जु धरत ॥ सुंदर सुभग श्याम कर दोऊ तिनसों मुरली अधर धरत। राजत ललित नील कर पल्लव उभै उरग मनो सुभट लरत ॥ कुंडल मुकुट भाल भ्रुव लोचन मनों शरद शशि उदै करत । सूरदास प्रभु तनु अवलोकत नैन थके इत उत न टरत ॥ राग रामकली मन तो हरिही हाथ बिकानो। निकस्यो मान गुमान सहित वह मैं यह होत न जानो ॥ नैननि साँटि करी मिलि नैननि उनहींसों रुचि मानो। बहुत जतन करि हौं पचिहारी इतको नहीं फिरानो। सहज सुभाइ ठगोरी दारी शीश फिरत अरगानो ॥ सूरदास प्रभु रसवश गोपी बिसरि गयो तनु मानो ॥ राग सोरठ ॥ मनतो गये नैन हैं मेरे। अब इनसों वहि भेद कियो कछु एउ भए हरिके चेरे ॥ तनिक सहाय रहेहैं मोको येऊ दिन मिलि घेरे। क्रम क्रम गए कह्यो नहिं काहू श्याम संग अरुझे रे ॥ ज्यों दीवाल गिले पर कारक डारतही युग डेरे। सूर लटकि लागे अँग छबि पर निठुर न जात उखेरे ॥ राग बिहागरो ॥ सजनी मनहिं अकाज कियो । आपुन जाइ भेद करि हमसों इन्द्रिन्ह बोलि लियो ॥ मैं उनकी करनी नहिं जानी मोसों वैर कियो ॥ जैसे करि अनाथ मोहिं त्यागी ज्यों त्यों मानि लियो ॥ अब देखौ उनकी निठुराई सो गुनि मरति हियो। सूरदास ए नैन रहेहैं तिनहूं कियो बियो ॥राग बिहागरो॥ मेरे जिय इहई सोच परचो । मनके ढंग सुनो री सजनी जैसे मोहिं निदरचो॥ आपुन गयो पंच सँग लीन्हें प्रथमहि इहै करचो। मोसों वैर प्रीति करि हारिसों ऐसी लरनि लरचो ॥ ज्यों त्यों नैन रहे लपटाने तिनहूँ भेद भरचो। सुनहु सूर अपनाइ इनहुँको अवलौं रह्यो डरचो॥राग गौरी॥मन बिगरचो ए नैन बिगारे। ऐसो निठुर भयो देखो री तब ए मोते टरत न टारे ॥ इन्द्री लई नैन अब लीन्हें श्यामहि गीधे भारे। ए सब कहौ कौनहैं मेरे खानाजाद विचारे ॥ इतनेते इतनेमें कीन्हें कैसे आजु बिसारे। सुनहु सूर जे आप स्वारथी ते आपुनही मारे ॥राग गौरी॥आपु स्वारथीकी गति नाहीं । विधिना ह्यां काहे अवतारे युवती गुनि पछिताहीं ॥जनमें संग संग प्रतिपाले संगहि बड़े भए।जब उनको आसरो कियो जिय तबहीं छोडि गए॥ऐसेहैं ए स्वामिकारजी तिनको मानत श्याम। सुनहु सूर अब परगट कहिये ऐसे उनके काम॥राग कान्हरो॥हमते गए उनहुते खोवैं॥ह्वांते खेदि देहिं वे हम तन हम उन तन नहिं जोवैं॥जैसी दशा हमारी कीन्हीं तैसें उनहि बिगोवैं। भटके फिरे द्वार द्वारनि सब हम देखे वै रोवैं॥आवहु इहै मतो री करिए निधरक वै सुख सोवैं। सूर श्यामको मिले जाइकै कैसे उनको धोवैं॥ राग धनाश्री ॥ मनके भेद नैन गए माई।लुब्धे जाइ श्यामसुन्दर रस करी न कछू भलाई।जबहीं श्याम अचानक आए इकटक रहे लगाइ। लोक सकुच मर्यादा कुलकी छिनहीमें विसराइ ॥ व्याकुल

फिरति भवन वन जहँ तहँ तूल आक उधराइ। देह नहीं अपनीसी लागति यहहै मनो पराइ॥ सुनहु सखी मनके ढँग ऐसे ऐसी बुद्धि उपाइ। सूर श्याम लोचन वश कीने रूप ठगोरी लाइ॥राग नट॥ नैन न मेरे हाथ रहे। देखत दरश श्यामसुंदरको जलकी ढरनि बहे॥ वह नीचेको धावत आतुर ऐसेहि नैन भए।वहतौ जाइ समात उदधिमें ए प्रतिअंग रए॥वह अगाध कहुँ वार न पार न एउ शोभा नहिं पार। लोचन मिले त्रिवेनी ह्वैकै सूर समुद्र अपार॥ राग बिहागरो॥ मन ते ए अति ढीठ भए। वेतो आइ बोलते कबहूं एजु गए सुगए॥ ज्यों भुवंग काचरी बिसारत फिरि नहिं ताहि निहारत। तैसेहि जाइ मिले इकटक ह्वै डरत लाज निरवारत॥इंद्रिन सहित मिल्यो मन तबहीं नैन रहे मोहिं शालत। सूर श्याम सँगही सँग डोलत औरनिके घर घालत॥ राग सोरठ॥ लोचन गए निदरिकै मोकों। तोहूको व्यापी री माई कहा कहतिहै मोकों॥ मैं आई दुख कहन आपनी तेरे दुख अधिकारी। जैसे दीन दी-नसों याचै वृथाहोइ श्रम भारी॥ मन अपनो वश कैसेहुँ कीजै याहीते सचुपावै। सूरदास इंद्रिन समेत अरु लोचन अबहिं मँगावै॥ राग गौरी॥ नैना नीके उमहि रहे। मन जब गयो नहीं मैं जान्यो ए दोउ निदरि गहे॥ एतौ भए भावते हरिके सदा रहत इन माहीं। कर मीडति शिर धुनति नारि सब यह कहि कहि पछिताहीं॥ सूरखके ज्यों बुद्धि पाछिली हमहूं करि दियो आगे। अबतौ मिले सूरके प्रभुको पावतिहौ अब मांगे॥ राग पूरबी॥ नैना नहिं आवैं तुव पास। कैसेहूं करि निकसे ह्यांते अतिही भए उदास॥ अपने स्वारथके सब कोई मैं जानी यह बात। यह शोभा सुख लूटि पाइकै अब वै काहि पत्यात॥ षटरस भोजन त्यागि कहाँको रूखी रोटी खात। सूर श्याम रसरूप माधुरी एतेपर न अघात॥ राग जैतश्री॥ नैन परे रस श्याम सुधामें। शिव सनकादि ब्रह्म नारद मुनि ए लुब्धे जामें॥ ऐसो रस बिलास नानाबिधि खात खवावत डारत। सुनहु सखी वैसी निधि तजिकै क्यों वै तुमहि निहारत॥ जिनि वह सुधापान सुख कीन्हों ते कैसे कटु देखत। त्यों ए नैन भए गर्बीले अब काहे हम लेखत॥ काहेको अपसोचमरतिहौ नैन तुम्हारे नाहीं। मिले जाइ सूरजके प्रभुको इत उत कहूं न जाहीं॥राग भैरव॥नैन परे हरि पाछे री।मिले अतिहि अतुराइ श्यामको रीझे नटवर काछे री॥ निमिष नहीं लागत इकटकही निशिवासर नहिं जानत री। निरखत अंग अंगकी शोभा ताही पर रुचि मानत री॥ नैन परे परवश री माई उनको इनि वश कीन्हे री। सूरज प्रभु सेवा करि रिझए उन अपने करि लीन्हे री॥ राग कल्याण॥ नैना हरि अंगरूप लुब्धे री माई। लोक लाज कुलकी मर्या-दा बिसराई॥ जैसे चंदा चकोर मृगीनाद जैसे। कंचुरि ज्यों त्यागि फनिग फिरत नहीं तैसे॥ जैसे सरिताप्रवाह सागरको धावै। कोऊ श्रम कोटि करै तहां फिरि न आवै॥ तनुकी गति पंगुकि ए सोचति ब्रजनारी। तैसेई मिले जाइ सूरजप्रभु ढारी॥ राग कल्याण॥ लोचन भए श्याम वश कहा करौं माई री। जितही वै चलत तितहि आपु जात धाई री॥ मुसुकनि दै मोललिए किए प्रगटचेरी। जोइ जोइ वै कहत करत रहत सदा नेरी॥ उनकी परतीत श्याम मानत नहिं अजहूं। अलकनि रजुबांधि धेरे भाजे जिनि कबहूं॥ मन लै इन उनहि दयो रहत सदा सँगही। सूर श्याम रूप राशि रीझे वा रँगही॥राग बिहागरो॥नैना भए बजाइ गुलाम।मन बेच्यो लै वस्तु हमारी सुनहु सखी ए काम॥ प्रथम भेद करि आयो आपुन माँगि पठायो श्याम। बेचि दिये निधरक हरि लीन्हें मृदुमुसुकनि दै दाम॥ यह वाणी जहँ तहँ परकाशी मोल लिएको नाम। सुनहु सूर यह दोष कौनको यह तुम कहौं न वाम॥ राग मारू॥ कियो वह भेद मन और नाहीं। पहिलेही जाइ हरिसों कियो भेद वहि और वे काज कासों बताहीं॥ दूसरे आइकै इन्द्रियनि लै गयो ऐसे अपदाँवसब इनहि

कीन्हें। मैं कह्यो नैन मोको संग देहिंगे इन्हहुँ लै जाइ हरि हाथ दीन्हें ॥ जो कहूँ कछू सो मनहिं सों कहि रहैं इहां कछु श्यामको दोष नाहीं। सूर प्रभु नैन लै मोल अपवश किए आपु बैठे रहत तिनहि माहीं ॥ राग बिलावल ॥ कहा भए जो ऐसे लोचन मेरे तो कछु काज नहीं। मैं तो व्याकुल भई पुकारति वे सँग लै जु गए मनहीं ॥ त्रिभुवनमें अति नाम जगायो फिरत श्याम सँगही सँगही। अपने सुखको कहा चाहिये बहुरि न आए मोतनही ॥ सो सुपूत परिवार चलावै एतौ लोभी धृग इनही। एते पर ए सूर कहावत लाज नहीं ऐसे जनही॥ राग कान्हरो॥ इन बातन कहुँ होत बडाइ। लूटतहैं छबिराशि श्यामकी मनो परी निधि पाइ ॥ थोरेहीमें उघरि परैंगे अतिहि चले इतराइ। डारत खात देत नहिं काहू वोछे घर निधि आइ ॥ यह संपतिहै तिहूं भुवनकी सबै इनहि अपनाइ। धोखे रहत सूरके स्वामी काहू नहीं जनाइ॥ राग बिलावल॥ नैन परे हैं बहु लूटनिमें मैं नोखे निधिपाए। छोह लगत वह समुझिकै इन हमहिं जिवाए ॥ इनके नेक दया नहीं हम पर रिस पावैं। श्याम अक्षयनिधि पाइकै तउ कृपण कहावैं ॥ ऐसे लोभी ए भए तब इनहि न जान्यो। संगहि संग सदा रहैं अतिहित करि मान्यो ॥ जैसी हमको इन करी यह करै न कोई। सूर अनल कर जो गहै डाढै पुनि सोई॥ राग कान्हरो ॥ नैन आपने घरके री। लूटन देहु श्याम अँग शोभा जो हम पर वे तरकै री ॥ यह जानी नीके कर सजनी नहीं हमारे डरके री ॥ वे जानत हम सारि को त्रिभुवन ऐसे रहत निधरके री ॥ ऐसी रिस आवत है उन पर करैं उनहि घर घरके री। सूर श्यामके गर्व भुलाने वे उनपर हैं ढरके री॥ राग गौरी॥ नैना कह्यो न मानैं मेरो। मो बरजत बरजत उठि धाए बहुरि कियो नहिं फेरो ॥ निकसे जल प्रवाहकी नाईं पाछे फिरि न निहारचो। भव जंजाल तोरि तरुवनके पल्लव हृदय बिदारचो ॥ तबहींते यह दशा हमारी जब एऊ गए त्यागि। सूरदास प्रभु सों वे लुब्धे ऐसे बडे सभागि ॥ राग टोडी ॥ इन नैननि मोहिं बहुत सतायो। अबलौं कानिकरी मैं सजनी बहुतै मूंड चढायो ॥ निदरे रहत गहे रिस मोसों मोहीं दोष लगायो। लूटत आपुन श्री अँग शोभा मनो निधनि धन पायो ॥ निशहू दिन ए करत अचगरी मनहि कहा धौं आयो। सुनहु सूर इनको प्रतिपालत आलस नैक न आयो ॥ राग रामकली ॥ लोचन भए श्यामके चेरे। एते पर सुख पावत कोटिक मो तन फेरि न हेरे ॥ हाहा करत परत हरि चरणन ऐसे बश्य भए उनही ॥ उनको वदन विलोकत निशि दिन मेरो कह्यो न सुनही ॥ ललित त्रिभंगी छवि पर अटके फटके मो सों तोरि। सूरदास यह मेरी कीन्ही आपुन हरिसों जोरि॥ राग धनाश्री॥ हरि छवि देखि नैन ललचाने। इक टक रहे चकोर चंद ज्यों निमिष बिसारि ठहराने ॥ मेरो कह्यो सुनत नहिं श्रवनन लोक लाज न लजाने। गये अकुलाइ धाइ मो देखत नेकहु नहीं सकाने ॥ जैसे सुभट जात रण सन्मुख लडत न कबहुँ पराने। सूरदास ऐसी इन कीनी श्याम रंग लपटाने॥ राग गुंडमलार॥ नैन तो कहेमें नहीं मेरे। बारहिं बार कहि हटकि राखति निकसि गये हरि संग नहिं रहे घेरे ॥ ज्यों व्याध फंदते छूटत खग उडि चलत तहां फिरि तकत नहिं त्रासमाने। जाइ बन द्रुमनिमें दुरत योंही गये श्याम तनु रूप बनमें समाने ॥ पालि इतने किए आज उनके भए मोल करिलए अब श्याम उनको। सूर यह कहति ब्रजनारि व्याकुल प्रेममें नैन लैगये पछितात मनको ॥ राग जैतश्री ॥ नैना हाथ न मेरे आली। इत ह्वै गये ठगोरी लावत सुंदर कमल नैन बनमाली ॥ वे पाछे ए आगे धाये मैं बरजत बरजत पचिहारी। मेरे तन ह्वै फेरि न चितए आतुरता वह कहौ कहा री ॥ जैसे बरत भवन तजि भजिए तैसेहि गये फेरि नहिं हेरचो। सूर श्याम रस रसे रसीले पय पानीको करै निवेरचो ॥ राग रामकली॥

श्याम रँग रँगे रँगीले नैन । धोए छुटत नहीं यह कैसेहु मिलैं पघिलि ह्वै मैन ॥ औचकही आँगन ह्वै निकसे दै गये नैननि सैन । नख शिख अंग अंगकी शोभा निरखि लजत शत मैन ॥ ए गीधे नाहिं टरत वहांते मोसों लैन न दैन । सूरज प्रभुके सँग सँग डोलत नेकहु करत न चैन॥ राग ईमन ॥ नैन भए हरिहीके री । जबते गए फेरि नाहिं चितए ऐसे गुण इनही के री ॥ और सुनौ उनके गुण सजनी सोऊ तुमहिं सुनाऊं री । मोसों कहत तुहूं नाहिं आवै सुनत अचंभो पाऊं री ॥ मन भयो ढीठ इनहिके कीन्हे ऐसे लोनहरामी री । सूरदास प्रभु इनहिं पत्याने आखिर बडे निकामी री॥राग बिलावल ॥ नैना लुब्धे रूपको अपने सुख माई । अपराधी अपस्वारथी मोको बिसराई॥मन इंद्री तहांई गए कीन्ही अधमाई । मिले धाइ अकुलाइकै मैं करति लराई ॥अतिहि करी उन अपतई हरिसों समताई । वै इनसों सुखपाइकै अति करत बडाई ॥ अब वै भरुहाने फिरैं कहुँ डरत न माई । सूरज प्रभु मुँह पाइकै भए ढीठ वजाई॥॥राग सारंग॥ढीठ भए ए डोलत हैं । मौन रहत मोपर रिसपाई हरिसों खेलत बोलतहैं ॥ कहा कहौं निठुराई उनकी सपनेहुँ ह्यां नहिं आवतहैं । लुब्धे जाइ श्याम सुंदरको उनहीके गुण गावत हैं ॥ जैसे उन मोको परतेजी कबहुं फिरि न निहारतहैं । सूर भलेको भलो होइगो वेतो पंथ बिगारतहैं॥ राग बिलावल ॥ सुन सजनी तू भई अयानी । या कलियुगकी बात सुनाऊं मैं तोहिं जानति बडी सयानी ॥ जो तुम करौ भलाई कोटिक सो नाहिं मानै कोई । जे अनभले बडाई ताकी मानै जोई सोई ॥ प्रगट देहि कहुँ दूरि बताऊं हमहुँ श्यामको ध्यावैं । सुनहु सूर सब व्याकुल डोलैं नैन तुरत फल पावैं ॥ राग बिलावल ॥ नैन करैं सुख हम दुख पावैं । ऐसो को परवेद न जानै जासों कहि जु जनावैं ॥ ताते मौन भलो सबहीते कहिकै मान गँवावै।लोचन मन इन्द्री हरिको भजि तजि हमको रिस पावैं ॥ वैतो गए आपने करते वृथा जीव भरमावैं । सूर श्यामहैं चतुर शिरोमणि तिनसों भेद सुनावैं॥राग धनाश्री ॥इन नैननिकी कथा सुनावैं । इनको गुण अवगुन हरि आगे तिन लै भेद जनावैं ॥ इनसों तुम परतीत बढ़ावत ए हैं अपने काजी । स्वारथ मानि लेत रति करिकै बोलत हांजी हांजी ॥ ए गुण नाहिं मानत काहूको अपने सुख भरिलेत । सूरज प्रभु ए ऐसेहैं सब फिरि पाछे दुख देत ॥राग सोरठ॥ ये नैना यों आहिं हमारे । इतनेते इतने हम कीन्हें बारेते प्रतिपारे ॥ धोवति पुनि अंचल लै पोछति आंजति इनहि बनाई । बडे भए तबलों न मानि यह जहां तहां चलत भगाई ॥ ऐसे सेवक कहां पाइ हौं इहै कहैं हरि आगे । ए अब ढीठ भये ह्यां डोलत इनहिं बनै परित्यागे ॥ सूर श्याम तुम त्रिभुवन नायक दुखदायक तुम नाहीं॥ज्यों त्यों करि यह हमहि मिलावहु इहै कहत बलि जाहीं ॥ राग सूही ॥ नैनानिको अब नहीं पत्याउँ।बहुरयो उनको बोलतिहों तुम हाइ हाइ ली जे नहिं नाउँ ॥ अब उनको मैं नाहिं बसाऊं मेरे उनको नाहीं ठाउँ।व्याकुलभई डोलिहों ऐसेहि वे जहँ रहैं तहां नहिं जाउँ ॥ खाइ खवाइ वडे जब कीन्हें बसे जाइ अब औरहि गाउँ । अपनो कियो फलहि पावैंगे मैं काहे उनको पछिताउँ । जैसे लोन हमारो मान्यो कहा कहौं कहि काहि सुनाउँ । सूरदास मैं इन बिन रैहौं कृपा करैं उनको शरमाउँ ॥ राग सूही ॥सतरहोति काहेको माई । आए नैन धाइकै लीजे आवत अब ह्यां वे वेहाई॥जिनि अपनो घर डर परित्याग्यो तौ उनि वहां कछू निधि पाई । परेजाइ वा रूप लूटिमें जानतिहौं उनकी चतुराई ॥ बिनकारण तुम शोर लगावति वृथाहोति कापर रिसयाई । सूर श्याम मुख मधुर हँसनि पर बिवस भए वै तन बिसराई॥राग बिहागरो॥लोचन आइ कहा ह्यां पावैं।कुंडल झलक कपोलनि रीझे श्याम पठाए उनहीं आवैं ॥ जिनि पायो अंमृत घट पूरण छिनु छिनु खात अघात । ते

T

तुमसों फिरिकै रुचि मानैं कहति अचंभव बात ॥ रसलंपट वै भए रहतहैं ब्रज घर घर यह बानी। हमहूँको अपराध लगावहिं एऊ भई देवानी ॥ लूटहिं ए इंद्री मन मिलिकै त्रिभुवन नाम हमारो। सूर कहा हरि रहत कहा हम यह काहे न विचारो ॥राग धनाश्री॥ नैननते यह भई बड़ाई। घर घर इहै चवाव चलावत हमसों भेट न माई ॥ कहां श्याम मिलि बैठीं कबहूं कहनावति ब्रज ऐसी। लूटहिं ए उपहास हमारो यह तौ बात अनैसी ॥ एई घर घर कहत फिरतहैं कहा करैं पचिहारी। सूर श्याम यह सुनत हँसतहैं नैन किये अधिकारी ॥ राग सारंग॥ नैन भए अधिकारी जाइ। यह तुम बात सुनी सखि नाहीं मन आए गए भेद बताइ॥ जब आवैं कबहूं ढिग मेरे तब तब इहै कहतहैं आइ ॥ हमहीं लै मिलयो हम देखत श्यामरूपमें गए समाइ ॥ अब वोऊ पछितात बात कहि उनहूंको वै भए बलाइ। अपनो कियो तुरत फल पायो जैसी मन कीन्ही अधमाइ ॥ इंद्री मन अब नैनन पाछे ऐसे उन वश किए कन्हाइ। सूरदास लोचनकी महिमा कहा कहैं कछु कही न जाइ ॥राग रामकली ॥ जबते हरि अधिकार कियो। तबहींते चतुरई प्रकाशी नैनन अतिहि कियो ॥ इंद्रिनपर मन नृपति कहावत नैनन इहै डरात। काहेको मैं इनहि मिलाए जानि बूझि पछितात ॥ अब सुधि करन हमारी लागे उनकी प्रभुता देखि। दियो भरत कहि इनहि ढराऊं वे इकटक रहे पेखि॥ अब मानीहैं दोष आपनी हमहीं बेच्यो आइ। सूरदास प्रभुके अधिकारी एई भए बजाइ ॥राग बिलावल ॥ यद्यपि नैन भरत ढरि जात । इकटक नैक नहीं कहुँ टारत तृप्ति न होत अघात ॥ अपनेही सुख भरत निशादिन यद्यपि पूरणगात । लैलै भरत आपने भीतर औरहि नहीं पत्यात ॥ जोइ लीजै सोईहै अपनो जैसे चोर भगात। सुनहु सूर ऐसे लोभी धनि इनको पितु अरु मात ॥ ॥ राग सोरठ ॥ नैना अतिही लोभ भरे। संगहि संग रहत वै जहँ तहँ बैठत चलत खरे ॥ काहूको परतीति न मानत जानत सबहिन चोर। लूटत रूप अखुट दामको श्याम वश्ययो भोर ॥ बडे भाग मानी यह जानी कृपिण न इनते और। ऐसी निधि मैं नाउँ न कीन्हों कह लैहै कह ठौर ॥ आपन लेहिं औरहू देते यश लेते संसार । सूरदास प्रभु इनहि पत्याने को कहै बारहि बार ॥राग कान्हरो॥ ऐसे आपस्वारथी नैन। अपनोई पेट भरतहैं निशि दिन और न लैन न दैन॥ बस्तु अपार परचो वोछे कर ए जानत घट जैहै। को इनसों समुझाइ कहै यह दीन्हेही अधिकैहै ॥ सदा नहीं रैहो अधिकारी नाउँ राखि जो लेते । सूर श्याम सुख लूटै आपुन औरनिहूको देते ॥ ॥ राग बिलावल ॥ जे लोभी ते देहिं कहा री ऐसे नैन नहीं मैं जाने जैसे निठुर महा री ॥ मन अपनो कबहूं वरु हैहै ए नहिं होंहिं हमारे। जबते गए नंदनंदन ढिग तबते फिर न निहारे ॥ कोटि करौं वै हमहिं न मानै गीधे रूप अगाध । सूर श्याम जो कबहूं त्रासैं रहै हमारी साध ॥ राग नट ॥ नैना भये घरके चोर। लेत नहिं कछु बनै इनसों देखि छवि भए भोर ॥ नहीं त्यागत नहीं भागत रूप जाग प्रकाश। अलक डोरनि बांधि राखे तजौ उनकी आश ॥ मैं बहुत करि बरजि हारी निदरि निकसे हेरि। सूर श्याम बँधाइ राखे अंगके छबि घेरि ॥ रागबिलावल ॥ भली करी उन श्याम बधाँए । बरज्यो नहीं करचो उन मेरो अति आतुर उठि धाए ॥ अल्पचोर बहुमाल लुभाने संगी सबन धराए। निदरि गए तैसो फल पायो अब वै भए पराए ॥ हमसों इन अति करी ढिठाई जो करि कोटि बुझाए। सूर गए हरि रूप चुरावन उन अपवश करि पाए ॥ राग बिहागरो ॥ लोचन चोर बांधे श्याम। जातही उन तुरत पकरे कुटिल अलकानि दाम ॥ सुभग ललित कपोल आभा गीधे दाम अपार। और अंग छवि लोग जागे अब नहीं

निरवार ॥ संग गए वै सबै अटके लटके अंग अनूप । एक एकहि नहीं जानत मारे शोभा रूप ॥ जो जहां सो तहां डारयो नेक तनु सुधि नाहिं । सूर गुरुजन डरहि मानत इहै कहि पछितांहिं ॥ ॥राग जैतश्री ॥ लोचन भए पखेरू माइ । लुब्धे श्याम रूप चाराको अलक फंद परे जाइ । मोर मुकुट टाटी मानो यह बैठनि ललित त्रिभंग । चितवनि ललित लकुट लासालट कांपै अलक तरंग ॥ दौरि गहनि मुख मृदु मुसुकावनि लोभ पींजरा डारे । सूरदास मन व्याध हमारो गृह बनते जु बिसारे ॥ राग गुंडमलार ॥ कपट कन दरश खग नैन मेरे । चुनत निरखनि तुरत आपुही उडिं मिले परयो चारा पेट मंत्र केरे ॥ निरखि सुंदर वदन मोहनी शिर परि रहे एकटक निरखि डरत नाहीं । लाज कुलकनि वन फेरि आवत कबहुँ रहत नहिं नेकहू उतहि जाहीं ॥ मृदु हँसनि व्याध पढि मंत्र बोलनि मधुर श्रवन ध्वनि सुनत इत कौन आवै । सूर प्रभु श्याम छवि धामही में रहै गेह बन नाम मनते भुलावै ॥ राग मारू॥नैन खग श्याम नीके पठाए । किए वश कपट कन मंत्र के डारिकै लए अपनाइ मनो इन पठाए ॥ वेगिधे उनहिंसों रूप रस पान करि नेकहू टरत नहिं चीन्हि लीन्हें । गये हमको त्यागि बहुरि कबहूं न फिरे केचुरी उरग ज्यों छोंडि दीन्हें ॥ एक ह्वै गए हरदी चून रंग ज्यों कौन पै जात निरुवारि माई । सूर प्रभु कृपामय कियो उन वास रुचि निज देह वन सघन सुधि भुलाई ॥ राग बिहागरो ॥ नैना ऐसे हैं विश्वासी । आप काज कौन हमको तजि तबते भए निरासी ॥ प्रतिपालन करि बड़े कराये जानि आपनो अंग । निमिष निमिष में धोवति आंजति सिखए भावत रंग ॥ हम जान्यो हमको ये ह्वैहें ऐसे गए पराई । सुनहु सूर बरजतही बरजत चेरे भए बजाइ ॥ राग जैतश्री ॥ नैना भए प्रगटही चेरे । ताको कछु उपकार न मानत हम ए किए बडे रे ॥ जो वरजो यह बात भली नहिं हँसत न नेक लजात । फूले फिरत सुनावत सबको एते पर न डरात ॥ इहौ कही हमको जिनि छोंडो तुम बिनु तनु बेहाल । तमके उठे यह बात सुनतही गीधे गुण गोपाल ॥ मुकुट लटक भौंहनकी मटकानि कुंडल झलक कपोल । सूर श्याम मृदु मुसुकनि ऊपर लोचन लीन्हें मोल॥राग सोरठ ॥ लोचनभृंग भए री मेरे । लोकलाज वन घन वेली तजि आतुरह्वै जुग डेरे ॥ श्यामरूप रस वारिज लोचन तहां जाइ लुब्धे रे । लपटे लटकि पराग बिलोकनि संपुट लोभ परे रे ॥ हँसनि प्रकाश विभास देखिकै निकसत पुनि तहां बैठत । सूर श्याम अंबुज कर चरणनि जहँ तहँ भ्रमि भ्रमि पैठत॥राग रामकली॥लोचन भृंगको सरसपागे । श्याम कमलपदसों अनुरागे ॥ सकुचकानि बनवेली त्यागी । चले उड़ाइ सुरति रति पागी ॥ मुक्तिपराग रसहिं इन चाख्यो । नव सुख फूल रसहि इनि नाख्यो ॥ इनते लोभी और न कोई । जो पटतर दीजै कहि सोई ॥ गए तबहिते फेरि न आए । सूर श्याम वेगहि अटकाए ॥ राग सारंग ॥ नैना पंकज पंग खचे । मोहन मदन श्याम मुख निरखत भ्रुवविलास रचे ॥ बोलनि हँसनि विराजमान अति श्रुति अवतंस सचे।जनु पिनाककी आशलागि शशि सारंग शरन बचे॥चंदचकोर चातक ज्यों जलधर हर रिपु हरषि नचे । पुहुपवास लै मधुप शैलवन धनु करि भवन रचे ॥ परमप्रीतिके कुंड महागज काढत बहुत पचे । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको मुनि जन मानि मचे ॥ ॥राग सारंग॥नैना बींधे दोऊ मेरे।मानो परे गयंद पंक महि महासबल बल केरे॥निकसत नहीं अधिक बल कीने जतन न बने घनेरे । श्याम सुंदरके दरश परसमें इत उत फिरत न फेरे ॥ लंपट लवनि अटक नहिं मानति चंचल चपल अरेरे । सूरदास प्रभु निगम अगम सुनि सुनि सुमिरत बहुतेरे॥राग धनाश्री॥मेरे नैन कुरंग भए । जोवन वनते निकासि चले ए मुरली नाद रए ॥ रूप व्याध

T

कुंडल दुति ज्वाला किंकिनि घंटा घोष । ब्याकुलहै एकहि टक देखत गुरुजन तजि संतोष ॥ भौंह कमान नैन शर साधनि मारनि चितवनि चार । ठौर रहै नाहिं टरत सूर वै मंद हँसनि शरधार ॥राग रामकली॥नैन भए वश मोहनतें।ज्यों कुरंग वश होत नादके टरत नहीं ता गोहनतें॥ज्यों मधुकर वश कमलकोशके ज्यों वश चंद चकोरतैसेहि ए वश भये श्यामके गुडी वश्य ज्यों डोर॥ज्यों वश स्वाति बूँदके चातक ज्यों वश जलके मीन।सूरज प्रभुके वश्य भए ए छिनु छिनु प्रति जु नवीन॥राग टोडी॥ ऐसे वश्यन काहुहि कोउ।जैसे वश नँदनंदनको ए नैना मेरे दोउ ॥चंद्र चकोर नहीं सरि इनकी एको पल न बिसारत । नाद कुरंग कहा पटतर इन व्याध तुरतही मारत ॥ ए वश भए सदा सुख लूटत चतुर चतुरई कीन्हों । सूरदास प्रभु त्रिभुवनके पति ते इन वश करि लीन्हों ॥ राग जैतश्री ॥ ए नैना अप स्वारथके । और इनहि पटतर क्यों दीजै वे हैं सब परमारथके ॥ बिना दोष हमको पतित्याग्यो सुख कारण भए चेरे । मिले धाइ बरज्यो नाहिं मान्यों तके न दायि न डेरे ॥ इनको भलो होइगो कैसे नैक न सेवा मानी । सूर श्याम इनपर कहा रीझे इनिकी गति नाहिं जानी ॥ राग सूही ॥ नैना लोनहरामी ए । चोर ढुंढ बटपार अन्याई अपमारगी कहावैं जे ॥ निलज निर्दयी निशंक पातकी जैसे आप स्वारथी तजिकै । वारेते प्रतिपालि बढाए बडे भए गए तब तजिकै ॥ हमको निदरि करत सुख हरिसँग वै उनि लीन्हो हित करिकै॥मिले जाइ सूरजके प्रभुको जैसे मिलत नीर अरुपै॥राग जैतश्री॥ नैन मिले हरिको ढरि भारी । जैसे नीर नीर मिलि एकै कौन सके ताको निरुवारी ॥ वात चक्र ज्यों तृणहिं उडतलै देह संग ज्यों छांह । पवन वश्य ज्यों उडत पताका ए तैसे छवि मांह । मन पाछे ए आगे धावत इंद्री इनहिं लजाने । सूर श्याम जैसे इन जाने त्यों काहु नहिं जाने ॥ राग नट ॥ लोचन भए अतिही ढीठ । रहतहैं हरि संग निशि दिन अतिहि नवल अहीठ ॥ वदत काहू नहीं निधरक निदरि मोहिं न गनत । बार बार बुझाइ हारी भौंह मोपर तनत ॥ ज्यों सुभट रण देखि टरत न लरत खेत प्रचारि । सूर छबि सन्मुखहि धावत निमिष अत्र निडारि ॥ राग बिलावल ॥ सुभट भए डोलत ए नैन । सन्मुख भिरत मुरत नाहिं पाछे शोभा शूर डरैन ॥ आपुन लोभ अत्रलै धावत पलक कवच नहिं अंग । हाव भाव रस लरत कटाक्षनि भृकुटी धनुप अपंग ॥ महावीर ए उत अंग अंग बल रूप सैन पर धावत । सुनहु सूर ए लोचन मेरे यकटक पलक न लावत ॥ राग जैतश्री ॥ सेवा इनकी वृथा करी । ऐसे भए दुखदायक हमको एही सोच मरी ॥ घूँघट ओट महलमें राखति पलक कपाट दिए । ए जोइ कहैं करें हम सोई नाहिन भेद हिए ॥ अब पाई इनकी लँगराई रहते पेट समाने । सुनहु सूर लोचन बटपारी गुण जोइ सोइ प्रगटाने॥राग गौरी॥नैना हैं री ए वटपारी । कपट नेह करि करि इन हमसों गुरुजनते करी न्यारी ॥ श्याम दरश लाडू करि दीन्हो प्रेम ठगोरी लाइ । मुख परसाइ हँसन मधुरता डोलत संग लगाइ ॥ मन इनसों मिलि भेद बतायो विरह फाँस गरे डारी । कुललज्जा संपदा हमारी लूटि लई इन सारी ॥ मोह विपिनमें पडी कहरतिहौं नेह जीव नहिं जात । सूरदास गुण सुमिरि सुमिरि वे अंतर गति पछितात ॥ राग बिहागरो॥ तिनको श्याम पत्याने सुनियत । ह्वांऊ जाइ अकाज करैंगे गुण गुनि गुनि शिर धुनियत ॥ विवश भई तनुकी सुधि नाहीं विरह फाँस गयो डारि । लगनि गांठिबैठी नहिं छूटति मगन मूरछा भारि ॥ प्रेमजीव निसरत नहिं कैसेहु अंतर अंतर जानति । सूरदास प्रभु क्यों सुधि पावे बार बार गुण गावति॥ राग सारंग॥रोम रोम ह्वै नैन गए री । ज्यों जलधर पर्वत पर बरषत बूंद बूंद ह्वै झरनि दए री ॥ ज्यों मधुकर रस

कमल पानकरि माते तजि उन मत्तभये री । ज्यों कांचुरी भुअंगम तजही फिरि न तके जुगए जुगए री॥ऐसी दशा भई री इनकी श्यामरूप में मगन रए री । सूरदास प्रभु अगणित शोभा ना जानों केहि अंग छए री॥राग सारंग॥नैन निरखि अजहू न फिरे री।हरिमुख कमल कोश रस लोभी मनहु मधुप मधु माति गिरे री ॥ पलकनि शूल सलाकसहीहै निशि वासर दोउ रहत अरे री । मानहु विवर गए चलि कारे तजि कचुरी भये निरेरे री ॥ ज्यों सरिता पर्वतकी खोरी प्रेम पुलक श्रमस्वेद झरे री । बूंद बूंद ह्वै मिले सूर प्रभु ना जानो केहि घाट तरे री॥राग सारंग॥नैनगए सु फिर नहिं फेरि।यद्यपि घेरि घेरि मैं राखति रहे नहीं पचिहारी टेरि ॥कहाकहौं सपनेहुँ नहिं आवत वश्यभए हरिहीके जाई।मोते कहा चूक उनि जानी जाते निपट गए बिसराई ॥ छिनहूकी पहिचानि न मानी उनको हम प्रतिपाले प्रेम । जो तजि गए हमारे वैसेइ उन त्याग्यो हमहूँ वोहि नेम । मात पिता संगहि प्रतिपाले सँगही संग रहे निशियाम।सुनहु सूर ए बालसँघाती प्रेम बिसारि मिले हरिश्याम॥राग नट॥नैननि देखिवेकी ठौरि।नंद गोपकुमार सुंदर किए चंदन खौरि॥शीशपिंड शिखंड भ्राजत :नखशिखा छवि औरि।सुभग गावनि मृदुबजावनि बैन सुललित गौरि॥कुटिल कच मृगमद तिलक छवि वचन मंत्र ठगौरि।सूर प्रभु नट रूप नागर निरखि लोचन वोरि॥राग मलार॥तबते नैन रहे यकटकही।जबते श्याम त्रिभंगललित गति जातभइ इन तकही॥मुरली धरे अरुन अधरनि पर कुंडल झलक कपोल।निरखत यकटक पलक भुलानो मानो विकाने मोल ॥ हमको वै काहे न बिसारैं अपनी सुधि उन नाहिं । सूर श्याम छवि सिंधु समाने वृथा तरुनि पछिताहिं ॥ राग मलार ॥ नैना नैननि माँझ समाने । टारे न टरत एक मिलि मधुकर सुरसमत्त अरुझाने ॥ मन गति पंगु भई सुधि बिसरी प्रेम पराग लुभाने । मिले परस्पर खंजन मानों झगरत निरखि लजाने॥मन वच क्रम पलवोट न भावत छिनु युग बरस समाने । सूर श्याम के वश्य भए ए जेहि बीते सो जाने ॥ राग गौरी ॥ मेरे माई लोभी नैन भए । कहा करों ए कह्यो नमाने बरजतही जो गए ॥ रहत न घूँघटवोट भवनमें पलक कपाट दए । लए फँदाइ विहंगम मानो मदन व्याध विधए ॥ नाहिं परामिति मुख इंदु सुधानिधि सोभा नितहि नए । सूर श्याम तनु पीत वसन छवि अंग अनंग जितए ॥राग बिहागरो॥ नैना लोभहिं लोभ भरे । जैसे चोर भरे घरहीमें बैठत उठत खरे ॥ अंग अंग शोभा अपार निधि लेत न सोच परे । जोइ देखें सोइ सोइ निर्मोले करले तहीं धरे ॥ त्यों लुब्धे ए टरत न टारे लोक लाज न डरे । सूर कछू उनिहाथ न आयो लोभ जाग पकरे ॥ राग सोरठ ॥ नैना वोछे चोर सखी री । श्याम रूप निधि नोखे पाई देखत गए भरी री॥अंग अंग छवि चित्त चलायो सो कछु रहति परी री । कहा लेहिं कह तजें विवश भए तैसिय करनि करी री ॥ पुनि पुनि जाइ एक एक लेते आतुर धरणि धरी री । भेरे भए भोरसों ह्वैगयो धरे जगार परी री ॥ जो कोउ काज करै बिन बूझे पेलि महत्त हरी री । सूर श्याम वश परे जाइके ज्यों मोहिं तजी खरी री ॥ राग मलार ॥ नैना मारेहू पर मारत । राखी छवि दुराइ हृदयमें तिनको हिय भरि डारत ॥ आपुन गए लभी कीन्ही अब उनहि इहांते टारत । बरबसही लै जात कहतहैं पैज आपनी सारत ॥ ऐसे खोज परचो यह लेहैं आवत जानत हारत । उनके गुण कैसे कहि आवे सूर पयारहि झारत ॥ राग मलार ॥ नैना खोज परेहैं ऐसे । नैक रही हरि मूरति हृदय डाह मरतहैं जैसे ॥ मनतौ गयो इंद्रियन लैके बुधि मति ज्ञान समेत । जिनकी आशसदा हम राखें तिन्ह दुख दीन्हो जेत ॥ आपुन गए कौन सो चाले करत ढिठाई और । नैक रही छवि दुति हिरदेमें ताहि लगावत ठौर ॥ गए रहे आए एहि कारज भरि ढारतहैं ताहि । सूरदास नैननिकी महिमा कोहै

T

कहिये काहि ॥राग सारंग॥नैना यहि ढंग परे कहा करौं माई । आए फिरि कौन काज कबहि मैं बुलाई ॥ अबलौं इह आश रही मिलिहैं ये आई । भाँवरिसी पारि फिरैं नारि ज्यों पराई ॥ आवतहैं ताहि लेन ऐसे दुखदाई । मारेको मारतहैं बडे लोग भाई ॥ अतिही ए करत फिरत दिनही ढिठाई । सूरदास प्रभु आगे चलौ कहँ जाई ॥ राग गौरी ॥यह तो नैननिही जु कियो । सर्वस जो कछु रह्यो हमारे सो है हरिहि दियो ॥ बुधि बिबेक कुलकानि गँवाई इंद्रिन कियो वियो । आपुन जाइ बहुरि आयो यह चाहत रूप लियो ॥ अब लाग्यो जिय घात करनको ऐसो निठुर हियो । सुनहु सूर प्रतिपालेको गुण वैरइ मानि लियो ॥राग नट॥मेरे नैन चकोर भुलाने । अहनिशि रहत पलक सुधि विसरे रूप सुधा न अघाने ॥ पल घटिका घरी याम दिनहि दिन युग ही युग बरजाने । स्वाद परचो निमिषौ नहिं त्यागत ताही मांझ समानें ॥ हरि मुख विधु पीवत ए व्याकुल नेकहुँ नहीं थकाने ।सूरदास प्रभु निरखि ललित तनु अंग अंग अरुझाने ॥राग सारंग॥ हरि मुख विधु मेरी अँखियां चकोरी । राखे रहति वोट पट जतननि तऊ न मानत कितक निहोरी ॥ बरबसही इन गही मूढता प्रीत जाय चंचल सों जोरी । बिबश भए चाहत उड़िलागन अटकत नेक अंजनकी डोरी ॥बरबशही इन गही चपलता करत फिरत हमहूंसों चोरी । सूरदास प्रभु मोहन नागर बरषि सुधारस सिंधु झकोरी ॥ राग विहागरो॥ लोचन लालच ते न टरे । हरि सारंगसों सारंग गीधे दधिसुत काज जरे ॥ ज्यों मधुकर वश परे केतकी नहिं ह्यांते निकरे । ज्यों लोभी लोभहिं नहिं छांडत ए अति उमँगि भरे ॥ सन्मुख रहत सहत दुख दारुण मृग ज्यों नहीं डरे । वह धोखे यह जानत हैं सब हित चित सदा करे ॥ ज्यों पग फिर फिर परत प्रेमवश जीवत मुरछि मरे । जैसे मीन अहार लोभते लीलत परे गरे ॥ ऐसेहि ए लुब्धे हरि छबि पर जीवत रहत भिरे।सूरसुभट ज्यों रण नहिं छांडत जबलौं धरनि गिरे॥राग नट॥ मेरे नैननि कोउ समुझावै री । अपनो घर तुम छांडे डोलत मेरे ह्यां लै आवै री ॥ इहे बूझि देखौ नीके करि जहां जात कछु पावै री । वृथा फिरत नटके गुण देखत नानारूप बनावै री॥देखतके सब सांचे लागत ताहि छुवन नहिं पावै री॥सूर श्याम अँग अंग माधुरी शत शत मदन लजावै री ॥ राग नट ॥हरि छवि अंग नटके ख्यालनैन देखत प्रगट सबकोउ कनक मुकुता लाल ॥ छिनकमें मिटिजात सों पुनि और करत बिचार । त्योंही ए छवि और औरै रचत चरित अपार ॥ लहै तब जो हाथ आवै दृष्टि नहिं ठहरात । वृथा भूले रहत लोचन इनहि कहै कोइ वात ॥ रहत निशिदिन संग हरिके हरष नहीं समात ।सूर जब जब मिले हमको महा बिह्वल गात॥रागकान्हरो॥भई गई ए नैनन जानत । फिरि फिरि जात लहत नहिं शोभा हारेहुँ हारि न मानत ॥ बूझहु जाइ रहत निशि बासर नैक रूप पहिचानत । सुनहु सखी सतरात इतेपर हमपर भौंहैं तानत ॥ झूठे कहत श्याम अँग सुंदर बातैं गढि गढि बानत । सुनहु सूर छबि अति अगाधगति निगम नेति जेहि गावत ॥ राग विहागरो॥श्याम छबि लोचन भटकि परे।अतिहि भए वेहाल सखी री निशिदिन रहत खरे॥हमते गए लूटिलेवेको उनहि परचो अब सोच । अपनो कह्यो तुरत फल पायो राखति घूँघट वोट ॥ इकटक रहत पराए वश भए दुख सुख समुझि न जाइ । सूर कहौ ऐसो को त्रिभुवन आवै सिंधु थहाइ॥ राग नट ॥ नैन भये वोहितके काग । उडि उडि जात पार नहिं पावे फिरि आवत नाहिं लाग ॥ ऐसी दशा भई री इनकी अब लागे पछितान।मो बरजत बरजत उठि धाये नहिं पायो अनुमान॥वह समुद्र वोछे वासन ए घरे कहा सुखराशि।सुनहु सूर ए चतुर कहावत वह छवि महा प्रकाशि ॥ राग गौरी ॥ हारि जीत नैना नाहिं जानत । धाए जात तहींको फिरि फिरि वै कितनो अपमानत ॥ परे रहत द्वारे शोभाके वोई गुण गुणि गानत । हरषत रहत सबनिको निदरै नेकहु

लाज न आवत ॥ अबतो रहत निपसई कीन्हें यद्यपि रूप न जानत । दुख सुख विरह संयोग समेत जनु सूरदास यह गावत ॥ राग रामकली ॥ नैना मानपमान सह्यो । अति अकुलाइ मिले री बरजत यद्यपि कोटि कह्यो ॥ जाकी बानि परी सखी जैसी तेही टेक रह्यो । ज्यों मर्कट मूठी नहिं छांडत नलनी सुवा गह्यो ॥ जैसे नीर प्रवाह समुद्रहि बह्यो सुबह्यो सुबह्यो । सूरदास इनि तैसिय कीन्हीं फिरि मोतन न चह्यो ॥ राग सोरठ ॥ यह नैननिकी टेव परी । जैसे लुबधति कमलकोशमें भ्रमराकी भ्रमरी ॥ ज्यों चातक स्वातिहि रटलावै तैसिय धरनि धरी । निमिष नहीं मिलवत पल एकौ आपु दशा बिसरी ॥ जैसे नारि भजै पर पुरुषहि ताके रंगढरी । लोक वेद आरजपथकी सुधिमारगहू न डरी ॥ ज्यों कंचुकी त्यागि वोहि मारग अहि पलनी न फिरी । सूरदास तैसेहि ए लोचन कीधौं परनि परी ॥ राग बिहागरो ॥ नैना गये न फिरि री माई । ज्यों मर्यादा जाति सुपतकी बहुरयो फेरि न आई ॥ जैसे बाला दशा वितावै फिरै नहीं तरुनाई । ज्यों जल टरत फिरत नाहिं पाछे आगेहि आगे जाई ॥ ज्यों कुलवधू बाहिरी परिकै कुलमें फिरि न समाई । तैसी दशा भई इनहूंकी सूर श्याम शरनाई ॥ राग सूही ॥ जबते नैन गये मोहिं त्यागि।इंद्री गई गयो तनुते मन उनहिं बिना अवसेरी लागि॥ वे निर्दयी मोह मेरे जिय कहा करौं मैं भई बेहाल । गुरुजन तेउ इहां इनि त्यागी मेरे बाटे परयो जंजाल ॥ इतकी भई न उतकी सजनी भ्रमत भ्रमत मैं भई अनाथ । सूर श्यामको मिले जाइ सब दरशन करि वे भये सनाथ॥राग विलावल॥ नैना मेरे मिलि चले इंद्री मन संग।मोको व्याकुल छाडिकै आपुन करै रंग॥अपनो यह कबहुँ न करै अधमनिके काम।जनम गमायो साथही अब भई निकाम ॥ धृग जन ऐसे जगत में यह कहि कहि पछिताति । धर्म हृदय जिनके नहीं धृग धृग तिनकी जाति ॥ मनसा वाचा कर्मना मोहिं गए बिसारि।सूर सुमिरि गुन नैनके बिलपति व्रजनारि॥राग बिलावल॥नैननिसों झगरो करिहौं री । कहा भयो जो श्याम संगहै बांह पकरि सन्मुख लरिहौं री ॥ जनमहिते प्रतिपालि बडे किए दिनदिनको लेखो करिहौं री।रूप लूटि कीन्हों तुम काहे अपने बाटेको धरिहौं री ॥ एक मात पितु भवन एक रहे मैं काहे उनको डरिहौं री । सूर अंश जो नहीं देहिगे उनके रंग में हूं ढरिहौं री ॥ राग आसावरी ॥मोहुते वे ढीठ कहावत । जबहीं लौं मैं मौन धरेहौं तबलौं वे कामना पुरावत ॥ मैं उनको पहिलेहि करि राख्यो वे मोको काहे बिसरावत । आप काज को उनहिं चले मिल बाट देत रोई अब आवत ॥ बहुतै कानि करी मैं सजनी अब देखो मर्याद घटावत । जो जैसो तैसो त्यों चलिए हरि आगे गढि बात बनावत ॥ मिले रहें नहिं उनको चाहति मेरो लेखो क्यों न बुझावत । सूर श्याम सँग गर्व बढायो उनहीके बल वैर बढावत॥ राग धनाश्री॥नैना न रहैं री मेरे अटके। कछु पढि दिये सखी एहि ढोंटा घूँघरवारी लटके ॥ कज्जल कुलुफ मेलि मंदिरमें पलक संदूक पट अटके । निगम नेति कुललाज टूटि सब मन गयंदके उटके ॥ मोहनलाल करो वश अपने हो निमिषके मटके । पुर नर नारि न सुरपुर तुरते सूर लगाए नटके॥ राग काफी॥नैना अटके रूप में पल रहत बिसारे । निशिवासर नाहिं संग तजैं भरि भरि जल ढारे ॥ अरुन अधर द्युति चमकही चपला चकचौंधनि । कुटिल अलक छवि घुंघरे सुमनासुत शोधनि ॥ चंपकलीसी नासिकारंग श्यामहि लीन्हें । नैनविशाल समुद्रसों कुंडल श्रुति दीन्हें ॥ तहँ ए रहे भुलाइकै कछु समुझि न जाई । सूर श्याम वे वश किए मोहनी लगाई ॥ राग जैतश्री॥लोचन भूलि रहे तहां जाई । अंग अंग छवि निरखि माधुरी इकटक पल बिसराई ॥ अति लोभी अचवत अघातहं तापर पुनि ललचात । देत नहीं काहूको नेकहु आपुहि डारत खात ॥ ओछे हाथ परी अपारनिधि काहू काम न आवै । सूर सबै

इनको क्यों सौंप्यो यह कहि कहि पछितावै ॥ राग धनाश्री ॥ नैनन यह कुटेव पकरी । लूट श्याम रूप आपुनहीं निशि दिन पहर घरी ॥ प्रथमहिं इन इह नोखे पाई गए अतिहि इतराइ । मिले अचानक बडभागीहैं पूरण दरशन पाइ ॥ लोभी बडे कृपण को इनसरि कृपा भई यह न्यारी । सूरश्याम उनको भए भोरे हमको निठुर मुरारी ॥ राग गौरी ॥ सुन सजनी मोसों इक बात । भाग बिना कछु नहीं पाइए तू काहे पुनि पुनि पछितात ॥ नैनन बहुत करी री सेवा पल पल घरी पहर दिन राति । मन वच क्रम दृढता इनकी है धन्य धन्य इनकी है जाति ॥ कैसे मिले श्याम इनको ढरि जैसे सुतके हितको मात । सूरदास प्रभु कृपासिंधु वे सहज बडे हैं त्रिभुवन तात ॥ राग भैरव ॥ नैन श्याम सुख लूटत हैं । इहै बात मोको नहिं भावै हमते काहे छूटत हैं ॥ महाअक्षय निधि पाइ अचानक आपुहि सबै चुरावत हैं । अपने हैं ताते यह कहियत श्याम इनहि भरुहावत हैं ॥ यह संपदा कहौ क्यों पचिहै बाल संघाती जानत हैं । सूरदास जो देते कछु इक कहौ कहा अनुमानत हैं॥ राग रामकली॥ सजनी मोते नैन गए । अब लौं आश रही आवनकी हारिके अंग छए ॥ जबते कमल वदन उन दरश्यो दिन दिन और भए । मिले जाइ हरदी चूनै ज्यों एकहि रंग रए ॥ मोको तजि भए आपु स्वारथी वा रस मत्त भए । सूर श्यामके रूप समाने मानो बूँद तए॥ राग बिहागरो॥ नैन गए री अति अकुलात। ज्यों धावत जल नीचे मारग कहूं नहीं ठहरात ॥ कहा कहौं ऐसी आतुरता पवन वश्य ज्यों पात । ज्यों आए ऋतु राज सखी री द्रुमन तेज झहरात ॥ आइ बसी ऐसी जिय उनके मैं व्याकुल पछितात । सूरदास कैसेहुँ न बहुरे गीधे श्यामल गात॥ राग रामकली॥ लोभी नैन हैं ये मेरे । उतहि श्याम उदार मनके रूप निधि टेरे ॥ जातही उन लूटि खाई तृषा जैसे नीर । क्षुधामें ज्यों मिलत भोजन होत जैसे धीर॥ वै भए री निठुर मोको अब परी यह जान । अष्ट सिद्धि नव निद्धि हरितजि लेहि ह्यां कह आन ॥ आपने सुखके भए वे हैं जो युग अनुमान । सूर प्रभु करि लियो आदर बड़े परम सुजान ॥ राग आसावरी ॥ नैननते हरि आप स्वारथी आज बात यह जानी री । ए उनको वे इनको चाहत मिले दूध अरु पानी री ॥ सुनियत परम उदार श्याम घन रूप राशि उन माही री । कीजे कहा कृपणकी संपति नैन नहीं जु पत्याही री ॥ विलसत डारत रूप सुधानिधि उनकी कछु न चलावै री । सुनहु सूर हम स्वाति बूँदलौं रटलागी नहिं पावै री ॥ राग सारंग ॥ जाते परचो श्याम घन नाउं । इनते निठुर और नहिं कोई कवि गावत उपमाउँ ॥ चातकके रट नेह सदा वह ऋतु अनऋतु नहिं हारत । रसना तारूसों नहिं लावत पीवै पीव पुकारत ॥ वै बरषत डोंगर वन धरणी सरिता कूप तडाग । सूरदास चातक सुख जैसे बूंद नहीं कहुँ लाग॥ राग मलार॥ श्याम घन ऐसे हैं री माई । हमको दरश न हीं सपनेहूं धरे रहत निठुराई॥ षटऋतु व्रत तनु गारि कियो क्यों चातक ज्यों रट लाई । उनमें है चित सदा हमारो नैक नहीं बिसराई ॥ इंद्री मन लूटत लोचन मिलि इनको वै सुखदाई । सूर स्वाति चातककी करनी ऐसे हमहिं कन्हाई ॥ राग सारंग ॥ नैनन हरिको निठुर कराए । चुगली करी जाइ उन आगे हम ते वे उचटाए ॥ इहै कह्यो हम उनहि बोलावत वे नाहिन ह्यां आवत । आरज पंथ लोककी शंका तुम तन आवत पावत ॥ यह सुनिकै उन हमहि बिसारी राखत नैन न साथ । सेवावश करिकै लूटतहैं वात आपने हाथ ॥ संगहि रहत फिरत नहिं कतहूं आपु स्वारथी नीके । सुनहु सूर वे एउ तैसेइ बड़े कुटिलहैं जीके ॥ कपटी नैननते कोउ नाहीं ॥ घरको भेद औरके आगे क्यों कहिबेको जाहीं ॥ आप गए निधरक ह्वै हमते बरजि बरजि पचिहारी । मनका-

मना भयो परिपूरण ढरि रीझे गिरिधारी ॥ इनहि बिना वे उनहि बिना ए अंतर नाहीं भावत । सूरदास यह युगकी महिमा कुटिल तुरत फल पावत ॥ राग बिलावल ॥ कहा भए जो आप स्वारथी नैन न अपनी निंद्य कराई । जो यह सुनत कहत सोइ धृग धृग तुरतहि ऐसी भई बडाई । कहा चाहिए अपने सुखको इनतो सीखी इहै भलाई । अजहूँ जाइ कहै कोउ उनसों काहेको तुम लाज गँवाई ॥ अचरज कथा कहतिहौं सजनी ऐसी इह तुमसों चतुराई । सुनहु सूर जे भजि उबरेहैं तिनको तुम अब चाहति माई ॥ राग बिहागरो ॥ सजनी नैना गए भगाइ । अरवातीको नीरवेर डी कैसे फिरिहैं धाइ ॥ वरत भवन जैसे तदियतहै निकसे त्यों अकुलाइ । सोउ अपनो नहिं पथिक पंथके वासा लीन्हों आइ ॥ ऐसी दशा भईहै इनकी सुखपायो ह्यां जाइ । सूरदास प्रभुको ए नैना मिले निसान बजाइ ॥ राग बिलावल ॥ मोहन वदन विलोकि थकितभए माई री ए लोचन मेरे । मिले जाइ अकुलाइ अगमने कहा भयो जो घूँघट घेरे ॥ लोकलाज कुलकानि छाँडि करि वरवश चपल चपरि भए चेरे । काहेको वादिहि बकति बावरी मानत कौन मते अब तेरे ॥ ललित त्रिभंगी तनु छबि अटके नाहिन फिरत कितौऊ फेरे ॥ सूर श्याम सन्मुख रति मानत गए मग बिसरि जाहिं नहिं डेरे ॥ राग रामकली ॥ थकितभए मोहन मुख नैन । घूँघट वाटे न मानत कैसेहु वरजत वरजत कीन्हो गौन ॥ निदरि गई मर्यादा कुलकी अपनो भायो कीन्हो । मिले जाइ हरि आतुर ह्वै कै लूटि सुधारस लीन्हो ॥ अब तू बकति वादिरी माई कह्यो मानि रहि मौन । सुनहु सूर अपनो सुख तजिकै हमहिं चलावै कौन ॥ राग देवगंधार ॥ मेरे इन नैनन इते करे । मोहन वदन चकोर चंद्र ज्यों यकटक ते न टरे ॥ प्रमुदित मणि अवलोकि उरग ज्यों अति आनंद भरे । निधिहि पाइ इतराइ नीच ज्यों त्यों हमको निदरे ॥ मृदु मुसुकनि मनो ठग लड आमिषि गति मति सुध बिसरे । फेरि लगे अँग अँग सो हरिके समुझि न सुधि पकरे ॥ ज्यों अटके गोचर घूँघट पट शिशु ज्यों अरनि अरे । धरे न धीर अनमने रुदनवल सो हठकरनिपरे । रही ताडि खिझिलाइ लकुट लै एकहु डर न डरे । सूरदास गथ खोटो काहे पारखि दोष धरे ॥ राग जैतश्री ॥ नैनन दशा करी यह मेरी । आपुन भए जाइ हरिचेरे मोहिं करत हैं चेरी ॥ जूठो खइए मीठे कारण आपुहि खात लडावत । और जाइ सो कौन न फेको देख न तौ नहिं पावत ॥ काज होइ तौ इहौ कीजिए वृथा फिरै को पाछे । सूरदास प्रभु जब जब देखत नटसवाँग सों काछे ॥ ॥ राग बिलावल ॥ को इनकी परतीति बखाने । नैना यों काहेते अटके कौन अंग ढरकाने ॥ उनके गुण वारेहिते सजनी मैं नीके करि जाने । चेरे भए जाइए तिनके कैसे उनहि पत्याने ॥ छिन छिनमें औरै गति जिनकी ऐसे आप सयाने । सूर श्याम अपने गुण शोभा को नहिं वश करि आने ॥ ॥ राग रामकली ॥ नैननि कठिन बानि पकरी गिरिधर । लाल रसिक बिन देखे रहत न एक घरी ॥ आव तही यमुनाजल लीन्हें सखी सहज डगरी । वे उलटे मग मोहिं देखके हां उलटी उत लै गगरी ॥ वह मूरति तबते इन बलकरि लै उरमांझ धरी । ते क्यों तृप्ति होत अब रंचक जिनि पाई सिगरी ॥ जग उपहास लोकलज्जा तजि रहे एक जकरी । सूर पुलक अँग अंग प्रेमभरि श्याम संग तकरी ॥ राग रामकली ॥ नैननि बानि परी नहिं नीकी । फिरत सदा हरि पाछे पाछे कहा लगनि उन जीकी ॥ लोकलाज कुलकी मर्यादा अतिही लागति फीकी । जो वीतति मोको री सजनी कहौं काहि यह हीकी ॥ अपने मन उन भली करीहै मोहि रहे हैं वीकी । सूरदास ए जाइ लुभाने मृदु मुसुकनि हरि पीकी ॥ राग धनाश्री ॥ ऐसे निठुर नहीं जग कोई ॥ जैसे निठुर

T

भये डोलतहैं मेरे नैना दोई ॥ निठुर रहत ज्यों शशि चकोरको वै उन बिन अकुलाहीं । निठुर रहत दीपक पतंग उड़ि ज्यों जरि बरि मरि जाहीं ॥ निठुर रहत जैसे जल मीनहिं तैसिय दशा हमारी । सूरदास धृग धृग तिनकोहै जिनके नाहीं पीर परारी॥ राग धनाश्री ॥ नैना मानैं नाहिं मेरो बरज्यो । इनके लिए सखी री मेरो बाहर रहै न घरज्यों॥ यद्यपि जतन किये राखतिही तदपि न मानत हरज्यो। परवश भई गुडी ज्यों डोलति परयो पराए करज्यों ॥ देखे बिना चटपटी लागति कछू सूंड पढि परज्यों । को बकि मरे सखीरी मेरे सूरश्याम के थरज्यों ॥ राग नटनारायण ॥ नैना कह्यो मानत नाहिं । आपने हठ जहां भावत तहांको ए जाहिं ॥ लोकलज्जा वेदमारग तजत नहीं डराहिं । श्याम रसमें रहत पूरण पुलक अंगन माहिं ॥ पियहिके गुण गुणत उरमें दरश देखि सिहाहिं । वदत हमको नेक नाहीं मरहिं जो पछिताहिं ॥ धरनि मन बिच धरी ऐसी कर्मना करि ध्याहिं । सूर प्रभुपदकमल अलि ह्वै रैनि दिन न भुलाहिं ॥ राग आसावरी ॥ परी मेरे नैनन यह बानि । जब लगि मुख निरखत तब लगि सुख सुंदरताकी खानि ॥ ए गीधे बीधे न रहत सखि तजी सबनिकी कानि । सादर श्रीमुखचंद्र विलोकत ज्यों चकोर रति मानि ॥ अतिहि अधीर नीर भरि आवत सहत न दरशन हानि । कीजे कहा बांधि करि सौंपी सूर श्यामके पानि॥ राग जैतश्री ॥ नैनन ऐसी बानि परी । लुब्धे श्याम चरणपंकजको मोको तजी खरी ॥ घूँघटओट किए राखतिही अपनीसी जु करी । गए पेलि ताको नाहिं मान्यों देखौ ज्यों निदरी ॥ गए सु गए फेरि नहिं बहुरे का धौं जियहि धरी । सुनहु सूर मेरे प्रतिपाले ते वश किए हरी ॥ राग सारंग ॥ नैनन हौं समुझाइ रही । मानत नहीं कह्यो काहूको कठिन कुटेव गही ॥ अनजानतही चितै वदनछबि सन्मुख शूल सही । तनु बिसरयो कुलकानि गवांई जगउपहास सही ॥ एते पर संतोष न मानत मर्यादा न गही । तनु बिसरयो वपुश्याम सिंधुमें कहूं न थाहलही ॥ रोम रोम सुंदरता निरखत आनँद उँमगि ढही । सूरदास इन लोभिनके सँग वन वन फिरति वही ॥ राग रामकली ॥ नैना कह्यो न मानैं मेरो । हारि मानिकै रही मौन ह्वै निकट सुनत नहिं टेरो ॥ ऐसे भए मनो नहिं मेरे जबहिं श्याम मुख हेरो । मैं पछिताति जबहिं सुधि आवति ज्यों दीन्हों मोहिं डेरो ॥ एतेपर कबहूं जब आवत झरपत लरत घनेरो । मोहूं बरबश उतहि चलावत दूत भयो उन केरो ॥ लोक वेद कुलकानि न मानै अतिही रहत अनेरो । सूर श्याम धौं कहा ठगोरी लाइ कियो धरि चेरो॥ राग कल्याण ॥ कबहुँ कबहुँ आवत ए मोहिं लेन माई री। आवतही इहै कहत श्याम तोहिं बोलाई री ॥ नेकहू न रहत विरमि जात तहां धाई री । मानो पहँचान नहीं ऐसे बिसराई री ॥ उनको सुख देत मोहिं बहिवेको पाई री ॥ सूर श्याम सँगही सँग निशिवासर जाई री ॥ राग बिहागरो ॥ मेरे नैननही सब दोष । विनही काज और को सजनी कतकीजे मन रोष ॥ यद्यपि हौं अपने जिय जानति अरु बरजें सब घोष॥ तद्यपि वा यशुमतिके सुत बिन कहूं न सुख संतोष ॥ कहि पचिहारि रही निशि वासर और कंठ करि सोष । सूरदास अब क्यों बिसरतुहै मधुरिपुको परितोष ॥ राग सोरठ ॥ मेरे नैना दोष भरे । नँदनंदन सुंदर वर नागर देखत तिनहिं खरे ॥ पलक कपाट तोरिकै निकसे घूँघट वोट न मानत । हाहाकरि पाँइन परि-हारी नेकहु जो पहिचानत ॥ ऐसे भए रहत ए मोपर जैसे लोग बटाउ । सोऊ तौ बूझेते बोलत इनमें इह निठुराउ ॥ ए मेरे अब होहिं नहीं सखि हरि छबि बिगरि परे । सुनहु सूर ऐसेउ जन जग-में करता करनि करे ॥ राग रामकली ॥ नैना मोको नहीं पत्याहिं । जे लुब्धे हरिरूप माधुरी और गनत ए नाहिं ॥ जिनि दुहि धेनु औटि पय चाख्यो ते मुखपरसैं छाक । ज्यों मधुकर मधुकमल

कोश तजि रुचि मानतहैं आक॥ जे पटरस सुख भोग करतहैं ते कैसे खरि खात। सूर सुनहु लोचन हरि रसतजि हमसों क्यों निपिलात॥राग देवगंधार॥ मेरे नैननही सब खोरि। श्यामबदन छबि निरखि जु अटके बहुरे नहीं बहोरि॥जो मैं कोटि जतन करि राखति घूँघट वोट अगोरि।ज्यों उड़ि मैलि बधिक खग छिनमें पलक पिंजरन तोरि॥बुधि विवेक बल वचन चातुरी पहिलेहि लई अजोरि।अति आधीन भई सँग डोलति ज्यों गुड्डीवश डोरि॥ अवधौं कौन हेतु हरि हमसों बहुरि हँसत मुख मोरि। मनहु सूर दोउ सिंधु सुधाभरि उमँगि चले मिति फोरि॥ राग गौरी॥ यह सब नैननहीको लागे। अपनेही घर भेद करो इन बरजतही उठि भागे॥ ज्यों बालक जननी सों अरझत भोजनको कछु माँगे। त्योंही ए अतिही हठ ठानत इकटक पलक न त्यागे॥ कहत देहु हरि रूप माधुरी रोवत हैं अनुरागे। सूर श्याम धौं कहा चखायो रूपमाधुरी पागे॥राग धनाश्री॥लोचन टेक परे शिशु जैसे। मांगत हैं हरि रूप माधुरी खोज परेहैं नैसे॥ बारंबार चलावत उतही रहन न पाऊं वैसे। जात चले आपुनही अबलौं राखे जैसे तैसे॥ कोटि यतन कहि कहि परबोधति कह्यो न मानहिं केसे। सूर कहूं ठग मूरी खाई व्याकुल डोलत ऐसे॥ राग जैतश्री॥ इन नैननकी टेव न जाइ। कहा करौं बरजतही चंचल पर सुख लागत धाइ॥ बाट घाट जहां मिलत मनोहर तहां सुख चलत छपाइ। गीधे हेम चोर ज्यों आतुर वह छबि लेत चुराइ॥ मनहु मधुप मधुकारण लोभी हरिमुखपंकज पाइ। घूँघट पटवश जलहि मीन ज्यों अधिक उठत अकुलाइ॥निलजभए कुलकानि न मानत तिन सों कहा बसाइ। सूर श्याम सुंदर मुखरा बिन देखे रह्यो न जाइ॥राग सोरठ॥जाके जैसी टेव परी री। सो तौ टरै जीवके पाछे जो जो धरनि धरी री॥ जैसे चोर तजै नहिं चोरी बरजेहु बंदै करै री। बरज्यो जाइ हानि पुनि पावत कतही बकत मरी री॥ यद्यपि व्याध बंधे मृग प्रगटहि मृगिनी रहै खरी री। ताहू नादवश्य ज्यों दीन्हों शंका नहीं करी री॥ यद्यपि मैं समुझावति पुनि पुनि यह कहि कहि जु लरी री। सूर श्याम दरशनते इकटक टरत न निमिष घरी री॥ राग सारंग॥ए नैना मेरे ढीठ भए री। घूँघट ओट रहत नहिं रोके हरिमुख देखन लोभ गए री॥ जो मैं कोटि जतन करि राखे पलक कपाटनि मूँदि लए री। उतरे उमँगि चले दोउ हठकरि करौं कहा मैं जान दए री॥ अतिहि चपल बरज्यो नहिं मानत देखि बदन तन फेरि नए री। सूर श्याम सुन्दर रस अटके मानहुँ लोभी उहइ छए री॥ राग नट॥ नैना ढीठ अतिही भए। लाज लकुट दिखाइ त्रासी नैकहूं न नए॥ तोरि पलक कपाट घूंघट वोट मेटि गए। मिले हरिको जाइ आतुर जेहैं गुणनि मए॥ मुकुट कुंडल पीतपट कटि ललित भेष ठए। जाइ लुब्धे निरखि वह छबि सूर नंद जए॥ राग बिलावल॥ नैना झगरत आइकै मोसों री माई। खूँट धरतहैं धाइकै चलि श्याम दुहाई॥ मैं चकृत ह्वै ठगिरहौं कछु कहत न आवै। आपुन जाइ मिले रहें अब मोहिं बोलावै॥ गए दरश जो देहिं वे तहां अपनी छाया। और कछू वह है नहीं री उनकी माया॥ कपटिनके ढँग ए सखी लोचन हरि कैसे। सूर भली जोरी बनी जैसेको तैसे॥ राग सूही॥ नैननको मत सुनहु सयानी। निशि दिन तपत सिरात न कबहूं यद्यपि उमँगि चलै पानी॥ हौं उपचार अमित उर आनति खल भई लोक लाज कुलकानी। कछु न सोहाइ दहति दरशन दृग वारिजबदन मंद मुसुकानी॥ रूप लकुट अभिमान निडर ह्वै जग उपहास न सुनत लजानी। बुधि विवेक बल वचन चातुरी मनहुँ उलटि उनमांझ समानी॥ आरजपथ गुरु ज्ञान गुप्त करि विकल भई तनुदशा हिरानी। याचत सूर श्याम अंजनको वह किशोर छबि जीवहि तानी॥ राग सारंग॥

T

नैन न भलो मतो ठहरायो। जबहीं मैं बरजति हरि सँगते तबहीं तब ठहरायो ॥ जरत रहत एते पर निशि दिन छिनु बिनु जनम गँवायो। ऐसी बुद्धि करन अब लागे मोको बहुत सतायो ॥ कहा करौं मैं हारि धरी जिय कोटि जतन समुझायो। लुब्धे हेमचोरकी नांईं फिरि फिरि उतही धायो ॥ मोसों कहत भेद कछु नाहीं अपनोइ उदर भरायो। सूरदास ऐसे कपटिनको बिधिना हाथ छडायो ॥ राग बिहागरो ॥ मेरे नैना अटकि परे। सुंदर श्याम अंगकी सोभा निरखत अटकि परे॥ मोरमुकुट लट घूँघरवारे तामें लटकि परे। कुंडलतरनि किरनि ते उज्वल चमकनि चटकि परे ॥ चपल नैन मृग मीन कुंज जित अलि ज्यों लुब्धि परे। सूर श्याम मृदु हँसनि लोभाने हमते दूरि परे ॥ राग बिहागरो ॥ नैनन साधै ये रही। निरखत बदन नंदनंदनको भूलि न तृप्ति कही ॥ पचिहारे उनकी रुचि कारण परमिति तौ न लही। मगन होत अब श्याम सिंधुमें कतहुँ न थाह लही ॥ रोम रोम सुंदरता निरखत आनँद उमँगि बही। दुख सुख सूर बिचार एक करि कुलमर्याद ढही ॥ ॥ राग नट ॥ नैनन साध रही सिराइ। यद्यपि निशि दिन संगहि डोलत तद्यपि नहीं अघाइ ॥ पलक नहिं कहुँ नेक लागत रहत इकटक हेरि। तऊ कहुँ त्रिपितात नाहीं रूप रसकी ढेरि ॥ ज्यों आगिनि घृत तृप्ति नाहीं तृषा नहीं बुझाइ। सूर प्रभु अति रूप दानी नैन लोभ न जाइ ॥ राग कल्याण ॥ श्याम अंग निरखत नैन कहुँ अघात नाहीं। एकहि टक रहे जोरि पल पल नहिं सकत तोरि जैसे चंदा चकोर तैसी इन पाहीं ॥ छबि तरंग सरितागण लोचन ए सागर जनु प्रेम धार लोभ गहनि नीके अवगाही। सूरदास एते पर तृप्ति नहीं मानत ए इनकी सोइ दशा सखी बरणी नहिं जाही ॥ राग बिहागरो ॥ लोचन सपनेके भ्रम भूले। जो छबि निरखत सो पुनि नाहीं भरम हिंडोरे झूले ॥ इक टक रहत तृप्ति नहिं कबहूं एते पर हैं फूले। निदरे रहत मोहिं नहिं मानत कहत कौन हम तूले ॥ मोते गए कुम्हीके जरलौं ऐसे वे निरमूले। सूर श्याम जलराशि परे अब रूप रंग अनुकूले॥ राग गौरी॥ मेरे नैना ई अति ढीठ। मैं कुलकानि किये राखतिही ये हठि होत बसीठ ॥ यद्यपि वे उत कुशल समर बल ए इत अतिबल हीठ। तदपि निदरि पटजात पलक छिदि जूझत देत न पीठ। अंजन त्रास तजत तम कत ताकि तानुत दरशन डीठि। हारेहू नहिं हटत अमित बल बदन पयोधि पईठि ॥ आतुर अडत अरुझि अँग अँग अनुरागनमितिमननीठि। सूर श्याम सुंदर रस अटके नहिं जानत कटु मीठि ॥ राग बिलावल ॥ नहीं ढीठ नैननते और। कितनो मैं बरजति समुझावति उलटि करत हैं झौर ॥ मोसों लरत भिरत हरि सन्मुख महा सुभट ज्यों धावत। भौंह धनुषशर सरस कटाक्षन मारु करत नहिं आवत ॥ मानत नहीं हारि जों हारत अपने मन नहिं टूटत। सूर श्याम अँग अँगकी शोभा लोभ सैन सों लूटत ॥ राग बिहागरो ॥ लोचन लालची भारी। इनके लए लाज या तनकी सबै श्याम सों हारी ॥ बरजत मात पिता पति बंधव अरु आनै कुलगारी। तदपि रहत नँदनंदन बिन कठिन प्रकृति हठि धारी॥ नख शिख सुभग श्याम सुंदरके अंग अंग सुख कारी। सूर श्याम को जो न भजै सो कौन कुमति है नारी ॥ राग कल्याण॥ अतिरस लंपट नैन भए। चाख्यो रूप सुधारस हरिको लुब्धे उतहि गए ॥ ज्यों व्यभिचारि भवन नहिं भावत औरहि पुरुष रई। आवत कबहुँ होत अति व्याकुल जैसे गवन नई ॥ फिरि उतहीको धावत जैसे छुटत धनुष ते तीर। चुभे जाय हरि रूप वोपमें सुंदर श्याम शरीर ॥ ऐसे रहत उतहिको आतुर मोसों रहत उदास। सूर श्यामके मन वच क्रम भए रीझे रूप प्रकाश ॥ राग सही ॥ ए नैना अति चपल चोर। सरबस मूसि देत माधवको सुधि बुधि सुध न विवेक न मोर ॥ अनजानत कल बैन श्रवण

सुनि चितै रहत उत उनकी वोर । मोहन सुख मुसुकाइ चले मानों भेद भयो यह लायो अंकोर ॥ हरिको दोष कहा कहि दीजै जो कीजै सो इनको थोर । सूर संग सोवत न परी सुधि पायो मरम वियोगन ओर ॥ राग गौरी ॥ नैन करत घरहीकी चोरी । चोरन गए श्याम अँग शोभा उन शिरपरी ठगोरी ॥ अपवश करि इनको हरि लीन्हें मोतन फेरि पठाए । जो कछु रही संपदा मेरे सुधि बुधि चोर लिवाए ॥ ए धाए आए निधरकसों लेगए संग लगाइ । सूर श्याम ऐसे हैं माई उलटी चाल चलाइ ॥ राग सारंग ॥ नैनन प्राण चोरि लै दीने । समुझत नहीं बहुत समुझाए अति उत कंठ नवीने ॥ अति हौ चतुर चातुरी जानत सकल कला जु प्रवीने । लोभ लिये परवश भइ माई मीन जु वंसी भीने ॥ कहा कहौं कहिवे नहिं लायक मते रहत भर हीने ॥ आपु बँधाइ पुंजि लै सौंपी हरिरस रतिके लीने । ज्यों डोरे वश गुँडी देखि यत डोलत संग अधीने । सूरदास प्रभु रूपसिंधुमें मिले सलिल गुण कीने ॥ राग नट ॥ ये लोचन लालची भए री । सारंगरिपुके रहत न रोंके हरिस्वरूप गिधए री ॥ काजर कुलफ मेलि मैं राखे पलक कपाट दए री । मिलि मनदूत पैजकरि निकसे बहुरि श्यामपै दौरि गए री ॥ है आधीन पंचते न्यारे कुललज्जा न नए री । सूर श्याम सुंदर रस अटके मानो उहइँ छए री ॥ राग बिहागरो ॥ लोचन लोभ-हिमें ये रहत । फिरैं अपने काजहीको धीर नाहीं गहत ॥ देखि मृगनि कुरंग धावत तृप्ति नाहीं होत । ए लहत ना हृदय धावत तऊ नाहिंन वोत ॥ हठी लोभी लालची इनते नहीं कोउ और । सूर ऐसे कुटिलको छबि श्याम दीन्हों ठौर ॥ राग रामकली ॥ लोचन मानत नाहिंन बोल । ऐसे रहत श्यामके आगे मनुदै लीन्हें मोल ॥ इत आवत दै जात देखाई ज्यों भँवरा चकडोर । उतते सूत्र न टारत कतहूं मोसों मानत कोर ॥ नीके रहे सदा मेरे वश जाइ भए ह्वां जोर । मोहन शिर मोहनी लगाई जब चितए उनि वोर ॥ अब मिलि गए श्याम मनमाने निशि वासर इक ठौर । सूर श्यामके चोर कहावत राखेहैं करिगौर ॥ राग रामकली ॥ नैना उनहीं देखे जीवत । सुंदर वदन तडाग रूप जल निर-खनि पुटभरि पीवत ॥ राखे रहत और नाहिं पावै उन मानी परतीति । सूर श्याम इनसों सुख मानत देखे इनकी प्रीति ॥ राग गूजरी ॥ नैना नाहिंन कछू विचारत । सन्मुख समर करत मोहनसों यद्यपि हैं हठिहारत ॥ अवलोकत अलसात नवल छबि अमित तोष अतिआरत । तमकि तमकि तरकत मृगपति ज्यों घूँघट पटहि विदारत ॥ बुधि वल कुल अभिमान रोष रस जोवत भवहि निवारत । निदरे विरह समूह श्याम अँग पेखिपलक नहिं पारत ॥ श्रमित सुभट सकुचत साहस करि पुनि पुनि सुखहि सम्हारत । सूर स्वरूप मगन झुकि व्याकुल टरत न इकटक टारत ॥ ॥राग बिहागरो॥श्याम रंग नैना राचे री।सारंग रिपुते निकसि निलज भए अब परगट ह्वै नाचे री॥मुरली नाद मृदंग मृदंगी अधर वजावन हार । गायन घर घर घेर चलावत लोभ नचावन हार ॥ चंचलना नृत्यनि कटाक्षरस भाव बतावत नीके । सूरदास ए रीझे गिरिधर मनमाने उनहीके ॥ ॥ राग रामकली॥नाचत नैन नचावत लोभ । यह करनी इन नई चलाई मेटि सकुच कुल क्षोभ ॥घूँघट पट त्याग्यो इन मन क्रम नाचहि पर मनमान्यो । घर घर चेरि मृदंग शब्दकरि निलज काछनी वान्यो ॥ इंद्री मन समाज गायन ए ताल घरे रहें पाछे । सूर प्रेम भावनिसों रीझे श्याम चतुर वर आछे ॥ राग धनाश्री॥ नैनन सिखवत हारि परी । कमलनैन मुख विनु अवलोके रहत न एक घरी ॥ हौं कुलकानि मानि सुनि सजनी घूँघट ओट करी । वे अकुलाइ मिले हरि ले मन लैतनहूकी बुद्धि हरी ॥ तबते अंग अंग छबि निरखत सो चितते न टरी । सूर श्याम मिलि लोक

T

वेदकी मर्यादा निदरी ॥ राग बिलावल ॥ इन नैननसों री सखी मैं मानी हारि। साट सकुच नहिं मानहीं बहुवारनि मारि ॥ डरत नहीं फिरि फिरि अरैं हरि दरशन काज। आपु गए मोहू कहैं चलि मिलि ब्रजराज ॥ घूंघट घरमें नहिं रहै कहि रही बुझाइ। पलक कपाट विदारिकै उठि चले पराइ ॥ तबते मौनभई रहौं देखत ए रंग। सूरज प्रभु जहँ जहँ रहे तहँ तहँ ए संग ॥ राग गूजरी ॥ नैना बहुत भांति हटके। बुधि बल छल उपाइ करि थाकी नेक नहीं मटके ॥ इत चितवत उतही फिरि लागत रहत नहीं अटके। देखतही उडि गए हाथते भए बटा नटके ॥ एकाहिपरानि परे खग ज्यों हरि रूपमांझ लटके। मिले जाइ हरदी चूना त्यों फिरि न सूर फटके ॥ राग जैतश्री ॥ बहुत भांति नैना समुझाए। लंपट तदपि सकोच न मानत यद्यपि घूंघट पट अटकि दुराए॥निरखि नवल इतराहिं जाहिं मिलि विविखंजन अंजन जनुपाए। श्याम कुँवरके कमल वदनको महामत्त मधुकर ह्वै धाए ॥ घूँघट वोट तजी सरिता ज्यों श्यामसिंधुके सन्मुख धाए। सूरश्याम मिलकरि पलकनसों बिनमोलहि हठि भए पराए ॥ राग सोरठ ॥ नटके वटा भए ए नैन। देखतिहौं पुनि जात कहांधौं पलक रहत नहिं ऐन ॥ स्वांगीसे ए भए रहतहैं छिनही छिन ए और। ऐसे जात रहत नहिं रोके हैहूते अति दौर ॥ गए सु गए गए अब आए जात लगी नहिं बार। सूर श्याम सुंदरता चाहत जिनको वारनपार ॥ राग बिहागरा ॥ मोते नैन गए री ऐसे। देखे वधिक पिंजराते खग छूटि भजत हैं जैसे ॥ सकुच फांसि में फँसे रहत हैं ते धौं तोरैं कैसे। मैं भूली यहि लाज भरोसे राखतिही ए वैसे ॥ श्यामरूप वनमांझ समाने मोपै रहैं अनैसे। सूर मिले हरिको आतुर ह्वै ज्यों सुरभी सुत तैसे ॥ राग जैतश्री ॥ लोचनभए पराए जाइ। सन्मुख रहत टरत नहिं कबहूं सदा करत सिवकाइ ॥ ह्वां तौ भए गुलाम रहतहैं मोसों करत ढिठाइ। देखत रहति चरित इनके सब हरिहि कहौंगी जाइ ॥ जिनको मैं प्रतिपालि वडे किए ते तुम वशकरि पाइ। सूर श्यामसों यह करि लेहौं अपने बल पकराइ ॥ राग टोडी ॥ अब मैंहूं यहि टेक परी। राखों अटकि जान नहिं पावें क्यों मोको निदरी ॥ मौन भई मैं रही आजुलौं अपनोइ मन समुझाऊं। एऊ मिले नैनही डागरि देखति इनहु भगाऊं ॥ सुन री सखी मिले ए कबके इनहीको यह भेद। सूरदास नहिं जानी अबलौं वृथा करति तनुखेद ॥ राग धनाश्री ॥ नैना भए पराए चेरे। नंदलालके रंग गए रँगि अब नाहिन वशमेरे ॥ यद्यपि जतन किए जुगवतिही श्यामलशोभा घेरे। तउ मिलि गए दूध पानी ज्यों निबरत नहीं निबेरे॥कुल अंकुश आरजपथ तजिकै लाज सकुच दिये डेरे। सूरश्यामके रूप भुलाने कैसहुँ फिरत न फेरे ॥ राग रामकली॥जाकी जैसी वानि परी री। कोऊ कोटि करै नहिं छूटै जो जेहि धरनि धरी री ॥ वारेहीतें इनके एढँग चंचल चपल अनेरे। वरजतही बरजत उठि दौरे भए श्यामके चेरे ॥ ये उपजे वोछे नक्षत्रके लंपट भए बजाइ। सूरकहा तिनकी संगति जे रहैं पराए जाइ ॥ राग आसावरी॥ नैननको री इहै सुहाइ। लुब्धे जाइ रूप मोहनको चेरे भए बजाइ ॥ फूले फिरत गिनत नहिं काहू आनँद उर न समात। इहै बात कहि सवन सुनावति नेकहु नहीं लजात ॥ निशि दिन करि सेवा प्रतिपाले बडे भए जब आइ। तब हमको ये छांडि भगाने देखो सूर सुभाइ ॥ राग कान्हरो ॥ देखत हरिको रूप नैना हारे री पै हारि न मानत। भए भटकि बलहीन क्षीन तनु तउ अपनी जै जानत ॥ दुरत न पटुकी वोट प्रगट ह्वै बीच पलक नहिं आनत। छुटि गये कुटिल कटाक्ष अलक मनो टूटि गए गुण तानत ॥ भाल तिलक भ्रुव चाप आपले सोइ संधान सँधानत। मन क्रम वचन समेत सूर प्रभु नहिं अपवल पहिंचानत ॥ राग सूही ॥ हारि जीति दोऊ सम इनकोलाभ हानि

काको कहियत है लोभ सदा जियमें जिनके ॥ ऐसी परनि परी री जाके लाज कहा है है तिनके । सुंदरश्याम रूपमें भूले कहा वश्य इन नैनानि के ॥ ऐसे लोगनको सब मानत जिनकी घर घर हैं भनकै । लुब्धे जाइ सूरके प्रभुको सुनत रही श्रवणनि झनके ॥ अथ अँखियाँ समयके पद ॥ राग धनाश्री ॥ अँखियनके इहई टेव परी । कहा करौं बारिज मुख ऊपर लागति ज्यों भ्रमरी ॥ चितवति रहति चकोर चंद्र ज्यों बिसरति नहिंन घरी । यद्यपि हटकि हटकि राखतिहौं तद्यपि होति खरी ॥ गडि जुरही वा रूप जलधि में प्रेम पियूष भरी । सूर तहां नग अंग परसरस लूटति निधि सिगरी॥ राग धनाश्री॥ अँखियां निरखि श्याम मुख भूली । चकित भई मृदु हँसनि चमक पर इंदु कुमुद ज्यों फूली ॥ कुल लज्जा कुल धर्म नामकुल मानत नाहिंन एको । ऐसे ह्वै ये भजीं श्यामको बरजत सुनति न नेको ॥ लुब्धीं हरिके अंग माधुरी तनुकी दशा बिसारी । सूर श्याम मोहनी लगाई कछु पढिकै शिरडारी ॥ राग जैतश्री ॥ अँखियां हरिके हाथ बिकानी । मृदु मुसुकानि मोल इन लीन्हीं यह सुनि सुनि पाछितानी ॥ कैसे रहत रहीं मेरे वश अब कछु औरै भांति । अब वै लाज मरति मोहिं देखत बैठी मिलि हरि पांति ॥ स्वपनेकीसी मिलनि करत हैं कब आवति कब जाति । सूर मिलीं हरि नंदनँदन को अनत नहीं पतियाति ॥ राग बिहागरो ॥ अँखियानि ऐसी धरनि धरी । नंदनँदन देखे सचुपावै मोसों रहति डरी ॥ कबहूं रहति निरखि मुख शोभा कबहुँ देह सुधि नाहीं । कबहूं कहति कौन हरि को मैं यो तन मय ह्वै जाहीं ॥ अँखियाँ ऐसेहि भजीं श्यामको नहीं रह्यो कछु भेद । सूर श्यामके परम भावती पलक न होत बिछेद ॥ राग रामकली॥ अँखिअन श्याम अपनी करी । जैसेही उन मुँह लगाई तैसेही ए ढरी॥ इनकिए हरि हाथ अपने दूरि हमते परी । रहति वासर रैनि इकटक छाँह घाम खरी ॥ लोकलज्जा निकास निदरी नहीं काहुहि डरी । ए महा अति चतुर नागरि चतुर नागर हरी ॥ रहती डोलति संग लागी डटति ज्यों नहिं टरी । सूर जब हम हटकि हटकाति बहुत हमपर लरी ॥ राग बिहागरो ॥ अँखिअनि तबते बैर धरयो। जब हम हटकाति हरि दरशन को सो रिसनाहिं बिसरयो ॥ तबहींते उन हमहिं भुलाई गई उतहिको धाइ । अबतौ तरकि तरकि ऐंठति हैं लेनी लेति बनाइ ॥ भई जाइ वे श्याम सुहागिनि बडभागिनि कहवावें । सूरदास वैसी प्रभुता तजि हमपै अब वे आवैं ॥ राग जैतश्री ॥ धन्य धन्य अँखियाँ बडभागिनि । जिन बिन श्याम रहत नाहिं नेकहु कीन्हीं बनै सुहागिनि ॥ जिनको नहीं अंगते टारत निशि दिन दरशन पावें । तिनकी सरि कहि कैसे कोई जे हरिके मनभावें ॥ हमहींते ए भई उजागरि अब हम पर रिसमाने । सूर श्याम अति विवश भए हैं कैसे रहत लुभाने ॥ राग बिलावल ॥ ए अँखियां बडभागिनी जिन रीझे श्याम । अँगते नेक न टारहीं वासर अरु याम ॥ ए कैसी हैं लोभिनी छबि धरति चुराइ । और न ऐसी करिसकै मर्यादा जाइ ॥ यह पहिले मनही करी अब तो पछिताति । उनके गुण गुणि गुणि झुरै याहू न पत्याति ॥ इंद्रीवश न्यारी परी सुख लूटति आंखि । सूरदास जे सँग रहैं तेऊ मरैं झांखि । राग बिलावल ॥ अँखिआनि तेरी श्यामको प्यारी नाहिं और । जिनको हरि अंग अंगमें करि दीन्हों ठौर । जो सुख पूरण इन लह्यो कहा जानै और । अम्बुज हरि मुख जारको दोउ भौंरी जोर ॥ यहि अंतर श्रवणन परी मुरलीकी शोर । सूर चकित भई सुंदरी शिरपरी ठगोर ॥ राग बिहागरो ॥ अँखिअनकी सुधि भूलि गई । श्याम अधर मृदु सुनत मुरलिका चकृत नारि भई ॥ जो तैसे तैसेहि रहिगई सुख दुख कह्यो न जाइ । लिखी चित्रकीसी सब ह्वै गईं इकटक पल बिसराइ ॥ काहू सुधि काहू सुधि नाहीं सहज मुरलिका गान । भवन रवनकी सुधि न रही तनु सुनत शब्द वह कान ॥ अँखिअनते

मुरली अति प्यारी वह वैरनि यह सौति। सूर परस्पर कहत गोपिका यह उपजी उद्भौति॥राग सारंग॥ अधररस मुरली लूटन लागी। जा रसको षटऋतु तनु गारयो सो रस पिवत सभागी॥ कहां रही कहँ ते इह आई कौने याहि बुलाई। चकृत कहा भई व्रजवासिनि यह तौ भली न आई॥ सावधान क्यों होत नहीं तुम उपजी बुरी बलाइ। सूरदास प्रभु हमपर याको कीन्हीं सौति बजाइ॥ राग सारंग॥ आवतही याके ये ढंग। मनमोहन बश भए तुरतही ह्वैगए अंग त्रिभंग॥ मैं जानी यह टोना जानति करिहै नाना रंग। देखो चरित भजै हरि कैसे या मुरलीके संग॥ बातनमें कह ध्वनि उपजावति सुरते तान तरंग। सूरदाससे दूर सदनमें पैठो बडो भुजंग॥अध्याय २९ वंशी ध्वनि सुरगोपीमोहन॥ रासलीलापंचाध्यायी॥ राग टोडी॥ मुरली सुनत भई सब बौरी। मानहुँ परि शिर मांझ ठगोरी॥ जो जैसे सो तैसे सोरी। तनु व्याकुल सब भई किशोरी॥कोउ धरणी कोउ गगन निहारै। कोउ कर करते बासन डारै॥ कोउ मनही मन बुद्धि बिचारै। कोउ बालक नाहिं गोद सँभारै॥ घर घर तरुनी सब बिततानी। मन मन कहति कौन यह बानी॥ छुटि सब लाज गई कुलकानी। सुत पति आरजपंथ भुलानी॥ लैलै नाम सबनिको टेरै। मुरली ध्वनि घरहीके नेरे॥ कोउ जेंवत पतिहीतन हेरै। कोउ दधिमें जावन पय फेरै॥ कोउ उठि चली जैसही तैसे। फिरि आवहिं घरहीमें पैसे॥ घर पाछे मुरली ध्वनि ऐसे। आँगनगए नहीं वह जैसे॥ गृह गुरुजन तिनहूं सुधि नाहीं। कोउ कतहूं कोउ कतहूं जाहीं॥ कोउ निरखत कोउ काहू माहीं। मुरछ्यो मदन तरुणि सब डाहीं॥ व्याकुल भई सबै व्रजनारी। मुरली सों बोली गिरिधारी॥ चलीं सबै जहँ तहँ सुकुमारी। उपजी प्रीति हृदय हरिभारी॥ मुरली श्याम अनूप बजाई। बिधि मर्यादा सबनि भुलाई॥ निशि वनको युवती सब धाई। उलटे अंग अभूषण ठाई॥ कोउ चलि चरणहार लपटाई। काहू चौकी भुजनि बनाई॥ अँगिया कटि लहँगा उरलाई। यह शोभा वरणी नहिं जाई॥ कोउ उठि चली जातिहै कोऊ। कोउ मग गई मिली मग कोऊ॥ सूरदास प्रभु कुंजबिहारी। शरदरास रसरीति बिचारी॥राग गुंडमलार॥शरदनिशि देखि हरि हरष पायो। विपिन वृंदावन सुभग फूले सुमन रास रुचि श्यामके मनहि आयो॥ परम उज्वलरैनि छिटकि रही भूमि पर सद्यफल तरुन प्रति लटकिन लागे। तैसोई परम रमणीक यमुना पुलिन त्रिविध बहै पवन आनंद जागे॥ राधिका रवन वन भवन सुख देखिकै अधर धरि वेनु सुरललित बजाई। नाम लैलै सकल गोपकन्यानके सबनके श्रवन वह ध्वनि सुनाई॥ सुनत उपज्यो मैन परत काहुन चैन शब्द सुनि श्रवन भई विकल भारी। सूर प्रभु ध्यान धरिकै चलीं उठि सबै भवन जन नेह तजि घोपनारी॥ ७९॥ राग बिहागरो॥ सुनहु हरि मुरली मधुर बजाई। मोहे सुर नर नाग निरंतर व्रजवनिता मिलि धाई॥ यमुना नीर प्रवाह थकित भयो पवन रह्यो मुरझाई। खग मृग मीन अधीन भए सब अपनी गति बिसराई॥ द्रुमवल्ली अनुराग पुलकतनु शशि थक्यो निशि न घटाई। सूर श्याम वृंदावन बिहरत चलहु सखी सुधिपाई॥ ८०॥ राग बिहागरो॥ मुरली सुनत उपजी बाइ। श्यामसों अतिभाव बाढो चलीं सब अकुलाइ॥ गुरुजननसों भेद काहू कह्यो नहीं उघारि। अर्ध रैनि चलीं घरनिते यूथ यूथनि नारि॥ नंदनंदन तरुनि बोलीं शरद निशिके हेत। रुचि सहित वनको चलीं वै सूर भई अचेत॥ ८१॥ राग गुंडमलार॥ सुनत मुरली भवन डर न कीन्हों। श्यामपै चित्त पहुँचाइ पहिले दियो आप उठि चली सुधि मदन दीन्हों॥ कहत मनकामना आजु पूरण करैं नंदनंदन सबनि बन बुलाई। जानि लायक भजी तरुनि सुत पति तजी

काहु नहिं लजीं अति प्रेम धाईं ॥ तज्यो कुलधर्म गोधन भवन जन तजे पगीं रस कृष्ण बिन कछु न भावै । सूर प्रभुसों प्रेम सत्य करिकै कियो मन गयो तहां इनको बुलावै ॥ ८२ ॥ राग सोरठ ॥ मुरली मधुर बजायो श्याम । मन हरि लियो भवन नहिं भावै व्याकुल ब्रजकी वाम ॥ भोजन भूषणकी सुधि नाहीं तनुकी नहीं सँभार । गृह गुरुलाज सूतसों तोरयो डरीं नहीं व्यवहार ॥ करत शृंगार विवश भईं सुंदरि अंगनि गईं भुलाई । सूर श्याम वन बेणु बजावत चितहित रास रमाई ॥ राग गुंडमलार ॥ करत शृंगार युवती भुलाहीं । अंग सुधि नहीं उलटे वसन धारहीं एक एकानि कछू सुरति नाहीं ॥ नैन अंजन अधर अंजहीं हरषसों श्रवण ताटंक उलटे सँवारैं । सूर प्रभु मुख ललित बेणु ध्वनि वन सुनत चलीं बेहाल अंचल न धारैं॥८३॥ राग नट॥ हरि मुख सुनत बैन रसाल। विरह व्याकुल भईं बाला चलीं जहँ गोपाल ॥ पय दुहावन चलीं कोऊ रह्यो धीरज नाहिं । एक दुहनी दूध जावनको शिरावत जाहिं ॥ एक उफनतही चलीं उठि धरयो नहीं उतारि । एक जेंवन करत त्याग्यो चढे चूल्है दारि ॥ एक भोजन करि संपूरन गई वैसहि त्यागि । सूर प्रभुके पास तुरतहि मन गयो उठि भागि॥८४॥ राग रामकली॥ मन गयो चित्त श्यामसों लाग्यो। नानाविधि जेंवन करि परस्यो पुरुष जेंवावत त्याग्यो ॥ इक पय प्यावत चालि तजि बालक छोह नहीं तब कीन्हों। चली धाइ अकुलाइ सकुच तजि बोलि वेनु ध्वनि लीन्हों ॥ इक पति सेवा करत चली उठि व्याकुल तनु सुधि नाहीं । सूर निदरि विधिकी मर्यादा निशि वनको सब जाहीं ॥८५॥ राग जैतश्री ॥ जबहीं वन मुरली श्रवण परी। चक्रत भईं गोपकन्या सब कामधाम बिसरी ॥ कुल मर्याद वेदकी आज्ञा नेकहु नहीं डरीं । श्याम सिंधु सरिता ललनागन जलकी ढरनि ढरीं ॥ अँग मर्दन करिबेको लागीं उबटन तेल धरी । जो जेहि भांति चली सो तैसेइ निशि नवकुंज खरी ॥ सुत पति नेह भवन जन शंका लज्जा नहीं करी।सूरदास प्रभु मन हरि लीन्हों नागर नवल हरी॥८६॥ राग केदारो॥ सुनि मुरली शब्द ब्रजनारि । करति अंग शृंगार भूलीं काम गयो तनु मारि ॥ चरण सों गहि हार बांध्यो नैन देखति नाहिं । कंचुकी कटि साजि लहँगा धरति हृदय माहिं ॥ चतुरता हरि चोरि लीन्हीं भईं भोरी बाल । सूर प्रभु रति काम मोहन रास रुचि नँदलाल॥८७॥ राग रामकली॥ ब्रजयुवतिन मन हरयो कन्हाई । रास रंग रस रुचि मन आन्यो निशि वन नारि बुलाई ॥ तब तनु गारि बहुत श्रम कीन्हों सो फल पूरण दैन-। बेणु नाद रस विवश कराई सुनि ध्वनि कीन्हों गौन ॥ जाको मन हरि लियो श्याम घन ताहि सँभारै कौन । सूरदास ज्यों नारि कंठ मिलि करै सुभाव जौन ॥ ८८ ॥ राग धनाश्री ॥ चली वन वेणु सुनत जब धाइ । मात पिता बंधव इक त्रासत जाति कहां अकुलाइ ॥ सकुच नहीं शंकाहू नाहीं रैनि कहां तुम जाति । जननी कहति दई की घाली काहेको इतराति ॥ मानति नहीं और रिस पावति निकसी नातो तोरि । जैसे जल प्रवाह भादौं को सो को सकै बहोरि ॥ ज्यों केंचुरी भुवंगम त्यागत मात पिता यों त्यागे । सूर श्यामके हाथ बिकानी अलि अंबुज अनुरागे ॥ ८९ ॥ राग गुंडमलार ॥ सुनत मुरली अलि न धीर धरिकै । चलीं पित मात अपमान करिकै ॥ लरत निकसीं सबै तोरि फरिकै । भईं आतुर वदन दरश हरिकै ॥ जाहि जो भजै सो ताहि रातै । कोऊ कछु कहै सब निरस बातै ॥ ता बिना ताहि कछु नहीं भावै । और तो जोरि कोटिक दिखावै ॥ प्रीति कथा वह प्रीतिहि जानै । और करि कोटि बातैं बखानै ॥ ज्यों सलिल सिंधु बिनु कहुँ न जाई । सूर वैसी दशा इनहुँ पाई ॥ ९० ॥ राग सूही बिलावल ॥ घर घर ते निकसीं ब्रजबाला । लैलै नाम युवति जन जनके मुरलीमें सुनि सुनि ततकाला ॥ इक मारग

T

इक घरते निकरी इक निकसत इक भई बेहाल । इक नाहीं भवननि ते निकरी तिनपै आए परम कृपालु ॥ यह महिमा ओई पै जानै कविलों कहा बरणि यह जाइ । सूर श्याम रस रास रीति सुख बिन देखे आवै क्यों गाइ ॥९१॥ राग मलार॥ रासरस रीति नहिं वरणि आवै । कहाँ वैसी बुद्धि कहां वह मन लहौं कहां इह चित्त जिय भ्रम भुलावै ॥ जो कहौं कौन मानै निगम अगम जो कृपा बिन नहीं या रसहि पावै । भावसों भजै बिन भावमें ए नहीं भावही माँहं भाव यह बसावै ॥ यहै निज मंत्र यह ज्ञान यह ध्यान है दरश दंपति भजन सार गाऊं । इहै मांग्यो बार बार प्रभु सूरके नैन द्वौ रहैं नर देह पाऊं ॥९२॥ राग केदारो ॥ मुरली ध्वनि करी बलवीर । शरदनिशिको इंदु पूरण देखि यमुनानीर ॥ सुनत सो ध्वनि भई व्याकुल सकल घोपकुमारि । अंग अभरण उलटि साजी रही कछु न सँभारि॥ गई सोरहसहस हरिपै छांडि सुत पति नेह । एक राखी एकको पति सो गई निज निज देह ॥ दियो तिन तिय आन मधुरै चितै लोचन कोरे । सूर भजि गोविन्द यो जग मोह बंधन तोर ॥ ९३ ॥ राग सारंग ॥ सुनो शुक कह्यो परीक्षित राव । गोपिन परम कंत हरि जान्यो लख्यो न ब्रह्मप्रभाव ॥ गुणमें ध्यान कीन्ह निर्गुण पद पायो तिन केहि भाइ । मेरे जिय सन्देह बढचो यह मुनिवर देहु नशाइ ॥ शुक कह्यो कुटिलभाव मन राखे मुक्तभयो शिशुपाल । गोपी हरिकी प्रिया मुक्ति लहैं कहा अचरज भूपाल ॥ काम क्रोधमें नेह सुहृदता काहू बिधि कहै कोई । धरै ध्यान हरिको जे दृढकरि सूर सो हरिसों होई॥९४॥ राग गुंडमलार॥ सुनत बन बेनु ध्वनि चलीं नारी । लोक लज्जा निदरि भवन तजि सुन्दरी मिलीं बनजाइके बनबिहारी ॥ दरशके लहत मन हरष सबको भयो परसकी साध अति करति भारी । इहै मन वच कर्म तज्यो सुत पति धर्म मेटि भव भर्म सहिलाज गारी ॥ भजैं जेहि भाव जो मिलै हरि ताहि त्यौं भेदभेदा नहीं पुरुष नारी । सूर प्रभु श्याम व्रजबाम आतुरकाम मिलीं बनधाम गिरिराज धारी ॥ ९५ ॥ राग सूही बिलावल ॥ देखि श्याम मन हरप बढायो । तैसिय शरद चांदनी निर्मल तैसोइ रासरंग उपजायो ॥ तैसिय कनकवरन सब सुंदरि यह शोभा पर मन ललचायो ॥ तैसी हंस सुता पवित्र तट तैसेइ कल्पवृक्ष सुख दायो। करौं मनोरथ पूरण सबके इहि अंतर इक खेद उपायो । सूर श्याम रचि कपट चतुरई युवतिनके मन यह भरमायो ॥ ९६ ॥ राग विहागरो ॥ निशि काहे वनको उठि धाई । हँसि हँसि श्याम कहत हैं सुन्दरि की तुम व्रजमारगहि भुलाई ॥ गई रही दधिवेचन मथुरा तहां आजु अवसेर लगाई । अति श्रम भयो विपिन क्यों आई मारग वह कहि सवनि बताई ॥ जाहु जाहु घर तुरत युवति जन खिझत गुरूजन कहि डरवाई । की गोकुलते गमन कियो तुम इन बातन है नहीं भलाई ॥ यह सुनिकै व्रजवाम कहत भई कहा करत गिरिधर चतुराई । सूर नाम लै लै जन जनके मुरली बारंबार लगाई ॥९७॥ राग विहागरो ॥ यह जिनि कहौ घोप कुमारि । हम चतुरई नहीं कीन्हीं तुम चतुर सब ग्वारि ॥ कहां हम कहां तुम रही व्रज कहां मुरली नाद । करतिहौ परिहास हमसों तजौ यह रस वाद ॥ बडेकी तुम बहू बेटी नामलें क्यों जाइ । ऐसेही निशि दौरि आई हमहिं दोप लगाइ ॥ भली यह तुम करी नाहीं अजहुँ घर फिरि जाहु । सूर प्रभु क्यों निडरि आई नहीं तुम्हरे नाहु ॥ ९८ ॥ राग जैतश्री ॥ मात पिता तुम्हरे धौं नाहीं । बारंबार कमलदललोचन यह कहि कहि पछिताहीं ॥ उनके लाज नहीं वन तुमको आवन दीन्हीं राति । सव सुंदरी सवै नव यौवन निठुर अहिरकी जाति ॥ की तुम कहि आई की ऐसेहि कीन्हीं कैसी रीति । सूर तुमहिं यह नाहीं बूझी बडी करी विपरीति ॥ ९९ ॥ राग रामकली ॥ अब तुम

कही हमारी मानो। बनमें आइ रैनि सुख देख्यो इहै लह्यो सुख जानो॥ अब ऐसी कीजो जिनि कबहूं जानति हौ मन तुमहूं। यह ध्वनि सुनै कहूं जो कोऊ तुमहिं लाज अरु हमहूं॥ हमतौ आज बहुत सरमाने मुरली टेरि बजायो। जैसो कियो लह्यो फल तैसो हमही दोपन आयो॥ अब तुम भवन जाहु पति पूजहु परमेश्वरकी नाहीं। सूर श्याम युवतिनसों कहि कहि सब अपराध क्षमाहीं॥ ॥ ७०० ॥ राग सूही बिलावल ॥ यह युवतिनको धर्म न होई। धृग सों नारि पुरुष जो त्यागै धृग सो पति जो त्यागै जोई॥ पतिको धर्म रहै प्रतिपाले युवती सेवाहीको धर्म। युवती सेवा तऊ न त्यागै जो पति कोटि करै अप कर्म॥ बनमें रैनि वास नहिं कीजै देख्यो वन वृंदावन आई। विविध सुमन शीतल यमुना जल त्रिविध समीर परसि सुखदाई॥ घरही में तुम धर्म सदाही सुत पति दुखित होत तुम जाहु। सूर श्याम यह कहि परबोधत सेवा करहु जाइ घरनाहु॥ १ ॥ राग बिहागरो ॥ यह बिधि वेद मारग सुनो। कपट तजि पति करौ पूजा कहा तुम जिय गुनौ॥ कंत मानहु भव तरौगी और नहिंन उपाइ। ताहि तजि क्यों विपिन आई कहा पायो आइ॥ विरध अरु बिन भागहूको पति तजो पति होइ। जऊ मूरख होइ रोगी तजै नाहीं जोइ॥ इहै मैं पुनि कहत तुमसों जगतमें यह सार। सूर पति सेवा बिना क्यों तरौगी संसार॥ २ ॥ राग बिहागरो ॥ कहा भयो जो हमपै आई कुलकी रीति गमाई। हमहूँको बिधिको डरभारी अजहुँ जाहु चंडाई॥ तजि भरतार और जो भजिए सो कुलीन नहिं होई। मरे नरक जीवत या जगमें भलो कहै नहिं कोई॥ हम जो कहत सबै तुम जानत तुमहूँ चतुर सुजान। सुनहु सूर घर जाहु हमौ घर जैहें होत बिहान॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥ निठुर वचन सुनि श्यामके युवती बिकलानी। चकृत भई सब सुनिरहीं नहिं आवै बानी॥ मनो तुषार कमल नं परचो ऐसे कुँभिलानी। मनो महानिधि पाइकै खोये पछितानी॥ ऐसी ह्वैगई तनुदशा पियकी सुनि बानी। सूर बिरह व्याकुल भई बूडी बिनपानी॥ ४ ॥ राग मारू ॥ श्याम उर प्रीति सुख कपट बानी। युवति व्याकुल भई धरणि सब गिरि गईं आश गई टूटि नहिं भेद जानी॥ हँसत नँद लाल मन मन करत ख्यालए भई बेहाल ब्रजबाल भारी। रुदन जल नदी सम बहिचल्यो उरज बिच मनों गिरी फोरि सरिता पनारी॥ अंग थकि पथिक नहिं चलत कोऊ पंथ नावरसभाव हरी नहीं आनै। सूर प्रभु निठुर करि कहा ह्वै रहेहौ उनहिं बिन औरको खेइजानै॥ ५ ॥ राग जैतश्री ॥ निठुर वचन जिनि बोलहु श्याम। आश निराश करौ जिनि हमरी व्याकुल वचन कहति हैं वाम॥ अंतर कपट दूरि करि डारौ हमतनु कृपा निहारो। कृपासिंधु तुमको सब गावत अपनो नाम सँभारो॥ हमको शरण और नहिं सूझे कापै हम अब जाहिं। सूरदास प्रभु निज दासनिको चूक कहा पछिताहिं॥ ६ ॥ राग गौरी ॥ तुम पावत हम घोप न जाहिं। कहा जाइ लैहें ब्रजमें हम यह दरशन त्रिभुवनमें नाहिं॥ तुमहूँते ब्रजहितू कोउ नहिं कोटि कहौ नाहिं मानै। काके पिता मात हैं काके काहू हम नाहिं जानै॥ काके पति सुत मोह कौनको घर है कहां पठावत। कैसो धर्म पापहै कैसो आश निराश करावत॥ हम जानै केवल तुमहीको और वृथा संसार। सूरश्याम निठुराई तजिए तजिय वचन बिनसार॥ ७ ॥ राग जैतश्री ॥ तुमहौ अंतर्यामि कन्हाई। निठुर भए कत रहत इतेपर तुम नाहिं जानत पीर पराई॥ पुनि पुनि कहत जाहु ब्रजसुंदरि दूरि करौ पिय यह चतुराई। आपुहि कही करौ पति सेवा ता सेवाको हैं हम आई॥ जो तुम कहौं तुमहिं सब छाजै कहा कहैं हम प्रभुहि सुनाई। सुनहु सूर इहैंई तनु त्यागैं हमपै घोप गयो नहिं जाई॥ ८ ॥ राग बिहागरो ॥ कैसे हमको ब्रजहि पठावत। मनतौ रह्यो चरण लपटानो जो एतनी यह

T

देह चलावत ॥ अटके नैन माधुरी मुसकनि अमृत वचन श्रवणनको भावत । इंद्री सबै मनहिंके पाछे कहो धर्म कहि कहा बतावत ॥ इनको करी आपनो लायक तौ क्यों हम नाहीं जिय भावत । सूर सैनदै सरवस लूट्यो मुरली लै लै नाम बुलावत॥९॥ राग कान्हरो ॥ भवन नहीं अब जाहिं कन्हाई । सुजन बंधुते भईं बाहिरी अब कैसे वे करत बडाई । जो कबहूं वे लेहिं कृपाकारि धृग वै धृग हम नारि । तुम बिछुरत जीवन धृग राखैं कहौं न आपु बिचारि ॥ धृग वह लाज विमुखकी संगति धनि जीवन तुम हेत । धृग माता धृग पिता गेह धृग धृग सुत पतिकों चेत ॥ हम चाहति मृदु हँसनि माधुरी जाते उपज्यो काम । सूर श्याम अधरन रस सींचहु जरति विरह सब वाम ॥ ॥ १० ॥ राग कान्हरो ॥ सुनहु श्याम अब करहु चतुरई क्यों तुम वेणु बजाइ बुलाई । बिधि मर्याद लोककी लज्जा सबै त्यागि हम धाईं आई ॥ अब तुमको ऐसी न बूझिये आश निराश करौं जिनि साईं । सोइ कुलीन सोईं बडभागिनि जो तुव सन्मुख रहैं सदाईं ॥ ते धनि पुरुष नारि धनि तेईं पंकज चरण रहैं दृढताईं।सूरदास कहि कहा बखानै यह निशि यह अँग सुंदरताईं॥११॥राग रामकली॥ बिनती सुनिये श्यामसुजान । अतिही सुख अपमान कीन्हों दृढ न इनते आन ॥ अब करौ दुख दूरि इनको भजौ तजि अभिमान।बिरह द्वंद्व निवारि डारो अधररस दै पान । मनहि मन यह सुखकरत हरि भए कृपानिधान।सूर निश्चय भजी मोकों नहीं जानति आन॥१२॥राग विलावल॥मोहिं बिना ए और न जानै॥बिधि मर्याद लोककी लज्जा तृणहूते घटिमानै ।इन मोको नीके पहिचान्यो कपट नहीं उरराख्यो। साधु साधु पुनि पुनि हरषित ह्वै मनहीं मन यह भाख्यो । पुनि हँसि कह्यो निठुरता धरिकै क्यों त्याग्यो गृहधर्म । सूर श्याम मुख कपट हृदय रति युवतिनके अति भर्म ॥ १३ ॥ राग गुंडमलार ॥ तजौ नँद लाल अति निठुरई गहि रहे कहा पुनि पुनि कहत धर्म हमको । एकही ढँग रहे वचन सब कटु कहे वृथा युवतिन दहे मेटि प्रनको ॥ विमुख तुमते रहै तिनहि हम क्यों गहैं तहाँ कह लहैं दुख देहिं भारी । कहा सुत पति कहा मात पित कुल कहा कहा संसार वन वन बिहारी॥हमहिं समुझाइ यह कहो मूरख नारि कहो तुम कहां नहिं भर्म जानैं । सुनहु प्रभु सूर तुम भले की वे भले सत्य करि कहौ हम अबहिं मानैं॥१४॥राग रामकली॥ तुमहि विमुख धृग धृग नर नारि । हमतौ यह जानति तुव महिमा को सुनिए गिरिधारि॥ सांची प्रीति करी हम तुतसों अंतर्यामी जानो ॥ गृह जनकी नहिं पीर हमारे वृथा धर्म हमठानो ॥ पाप पुण्य दोऊ परित्यागे अब जो होइ सुहोई। आश निराश सूरके स्वामी ऐसी करै न कोई॥ १५ ॥ राग जैतश्री ॥ आश जिनि तोरहु श्याम हमारी । बैन नाद ध्वनि सुनि उठि धाईं प्रगटत नाम मुरारी ॥ क्यों तुम निठुर नाम प्रगटायो काहे विरद भुलाने। दीन आजु हमते कोउ नाहीं जानि श्याम मुसुकाने ॥ अपने भुजदंडन कर गहिए विरह सलिल में भासी । बार बार कुलधर्म बतावत ऐसे तुम अबिनासी ॥ प्रीति वचन नवका करि राख्यो अंकम भरि बैठावहु ।सूर श्याम तुम बिनु गति नाहीं युवतिन पार लगावहु॥१६॥राग नट॥चितदै सुनहु अंबुज नैन । कृपणके गथ भयो हमको सरस अमृत बैन ॥ हम गुणी नवबाल रिझवति तुम तरुण धनराशि । कैसेहूं सुखदान दीजै विरह दारिद नाशि । करहु यह यश प्रगट त्रिभुवन निठुर कोठी खोलि। कृपा चितवनि भुज उठावहु प्रेमवचननि बोलि ॥ दीनवाणी श्रवण सुनि सुनि द्रए परम कृपाल । सूर एकहु अँग न काची धन्य धनि व्रजबाल ॥ १७॥राग विहागरो॥हरि सुनि दीन वचन रसाल । विरह व्याकुल देखि बाला भरे नैन बिशाल ॥ चारु आनन लोरधारा वरणि कापै जाइ । मनहुँ सुधातडाग उछले प्रेम प्रगटि देखाइ॥ चंद्रमुख परि निडरि बैठे सुभग जोर चकोर । पियत

सुख भरि भरि सुधा शशि गिरत तापर भौंर॥ हरष वाणी कहत पुनि पुनि धन्य धनि व्रजवाल। सूर प्रभु करि कृपा जोह्यो सदय भए गोपाल॥ १८॥ राग बिहागरो॥ श्याम हँसि बोले प्रभुता डारि। बारंबार बिनय कर जोरत कटिपट गोद पसारि॥ तुम सन्मुख मैं विमुख तुम्हारो मैं असाध तुम साध। धन्य धन्य कहि कहि युवतिनको आप करत अनुराध॥ मोको भजी एक चित ह्वैके निदरि लोक कुलकानि।सुत पति नेह तोरि तिनुकासों मोही निजकरि जानि॥जाके हाथ पेट फल ताको सो फल लह्यो कुमारि। सूर कृपा पूरण सों बोले गिरिगोवर्धन धारि॥१९॥राग सूही बिलावल॥ कहत श्याम यह श्रीमुखबानी। धन्य धन्य दृढ नेम तुम्हारो बिन दामन मो हाथ बिकानी॥ निर्दय वचन कपटके भाषे तुम अपने जिय नेक न आनी। भजी निसंक आय तुम मोको गुरुजनकी शंका नाहिं मानी॥ सिंह रहै जंबुक शरणागत देखी सुनी न अकथ कहानी। सूर श्याम अंकम भरि लीन्हीं विरह अग्नि झर तुरत बुझानी॥ २०॥ राग मारू॥कियो जेहि काज तप घोपनारी। देउँ फल हौं तुरत लेहु तुम अब घरी हरष चित करहु दुख देहु डारी॥ रासरस रचौ मिलि संग बिलसहु सबै बिहँसि हरि कह्यो यों निगमवानी। हँसत मुख मुख निरखि वचन अमृत बरषि प्रिया रस भरे सारंगपानी॥ व्रजयुवती चहुँ पास मध्य सुंदर श्याम राधिका वाम अति छवि बिराजै। सूर नव जलद तनु सुभग श्यामलकांति इंद्रवधु पांति बिच अधिक छाजै॥ २१॥ राग नट॥ हरि मुख देखि भूले नैन। हृदय हरषित प्रेम गद्गद मुख न आवत बैन॥ काम आतुर भजी गोपी हरि मिलें तेहि भाइ। प्रेम वश्य कृपालु केशव जानि लेत सुभाइ॥ परस्पर मिलि हँसत रहसत हरषि करत विलास। उमँगि आनंद सिंधु उछल्यो श्यामके अभिलाष॥ मिलति इक इक भुजनि भरि भरि रास रुचि जिय आनि। तेहि समय सुख श्याम श्यामा सूर क्यों कहे गानि॥ २२॥राग बिहागरो॥ रास रुचि जबहि श्याम मन आनी। करहु शृंगार सँवारि सुंदरी हँसत कहत हरि बानी॥ जो देखे अँग उलटे भूषण तब तरुनिन मुसुकानी॥बार बार पिय देखि देखि मुख पुनि पुनि युवति लजानी॥ नवसतसाजि भई सब ठाढी को छबि सकै बखानी॥ वह छबि निरखि अधार भई तनु कामनारि बिततानी॥ कुच भुज परसि करी मनइच्छा कछु तनु तृषा बुझानी। सुनहु सूर रसरास नायका सुंदरि राधा रानी॥२३॥राग सोरठ॥ अंचल चंचल श्याम गह्यो। लै गए सुभग पुलिन यमुनाके अँग अँग भेष लह्यो॥ कल्पतरोवर तर बंसीबट राधा रति गृहधाम। तहां रास रस रंग उपायो सँग शोभति व्रजवाम॥ मध्य श्याम घन तडित भामिनी अतिराजत शुभ जोरी। सूरदास प्रभु नवल छबीले नवल छबीली गोरी॥२४॥राग टोडी॥जहांश्याम घन रास उपायो। कुमकुम जल सुख वृष्टि रमायो॥ धरणीरज कपूर मय भारी।विविध सुमन छवि न्यारी न्यारी॥ युवतीजुरि मंडली बिराजै॥बिच बिच कान्ह तरुनि बिच भ्राजै॥अनुपम लीला प्रगट देखायो। गोपिनको कीयो मन भायो॥ बिच श्रीश्याम नारि बिच गोरी। कनकखंभ मर्कत खचि थोरी॥ शोभा सिंधु हिलोर हिलोरी। सूर कहा मति बरणै थोरी॥ २५॥ राग गुंडमलार॥ रास मंडल बने श्याम श्यामा। नारि दोहूं पास गिरिधर बने दुहुँनि बिच सहस शशि बीस द्वादश उपमा॥ मुकुटकी छबि निरखि कहा उपमा कहौ नैन जानत नहीं देह जानै। सुभग तवमेघ ता बीच चपला चमक निरखि नृत्यत मोर हरष मानै॥करति आनंद पियसंग लक्ष्मी पुंज बढत रसरंग छिन छिनहि थोरे।सूर प्रभु रास रस नागरी मध्य दोउ परस्पर नारि पति मनहि चोरै॥ २६॥ परस्पर श्याम व्रजबाम सोहैं। शीशश्रीखंड कुंडल जडित मणि श्रवण निरखि छबि श्याम मन तरुणि मोहैं॥

T

नासिका ललित बेसरि बनी अधर तट सुभग तार्टक छबि कहि न जाई। धरणि पग पटकि कर झटकि भौंहनि मटकि मन तहां रीझे कन्हाई ॥ तब चलत हरि मटकि रही युवती भटकि लटकि लटकन खटकि छबि बिचारै। कहति प्रभु सूर बहुरौ चलौ वैसही हमहु वैसे चलैं जो निहारै ॥ २७ ॥ निरखि ब्रजनारि छबि श्याम लाजै। विविध वेनी रची मांग पाटी सुभग भाल बेंदीबिंदु इंदु लाजै ॥ श्रवण तार्टक लोचन चारु नासिका हंस खंजन कीर कोटि लाजै। अधर विद्रुम दशन नहीं छबि दामिनी सुभग बेसरि निरखि काम लाजै ॥ चिबुक तर कंठ श्रीमाल मोतीन छबि कुच उँचानि हेम गिरि अतिहि लाजै। सूरकी स्वामिनी नारि ब्रजभामिनी निरखि पिय प्रेम शोभा सुलाजै ॥ २८ ॥ राग विहागरो ॥ बनी ब्रजनारि शोभा भारि। पगनि जेहरि लाल लहँगा अंग पचरँग सारि ॥ किंकिणी कटि कुनित कंकन करचुरी झनकार। हृदय चौकी चमकिं बैठी सुभग मोतिनहार ॥ कंठश्री दुलरी विराजत चिबुक श्यामल बिंद। सुभग बेंदी ललित नासा रीझिरहे नँदनंद ॥ श्रवणपर तार्टककी छबि गोर ललित कपोल। सूर प्रभु वश अति भएहैं निरखि लोचनलोल ॥ २९ ॥ राग जैतश्री ॥ सुर गण चढि विमान नभ देखत। ललना सहित सुमन गण वरषत जन्म धन्य ब्रजहीको लेखत ॥ धनि ब्रजलोग धन्य ब्रजबाला विहरत रास गोपाल। धनि बंसीवट धनि यमुनातट धनि धनि लता तमाल ॥ सबते धन्य धन्य वृंदावन जहीं कृष्णको वास। धनि धनि सूरदासके स्वामी अद्भुत राच्यो रास ॥ ३० ॥ राग विलावल ॥ नैन सफल अब भए हमारे। देवलोक नीसान बजाए वरषत सुमन सुधारे ॥ जैजैध्वनि किन्नर मुनि गावत निरखत योग विसारे। शिव शारद नारद यह भाषत धनि धनि नंददुलारे ॥ सुरललना पतिगति बिसराए रही निहारि निहारि। जात न बनै देखि सुख हरिको आईं लोक बिसारि ॥ यह छबि तिहूं भुवनकहुँ नाहीं जो वृंदावन धाम। सुंदर त्रयगुण रसकी सीवां सूर राधिका श्याम ॥ ३१ ॥ राग आसावरी ॥ हमको बिधि ब्रज वधू न कीन्हीं कहा अमरपुर वास भए। बार बार पछितात यहै कहि सुख हो तो हरि संग रए ॥ कहा जन्म जो नहीं हमारो फिरि फिरि ब्रज अवतार भलो। वृंदावन द्रुम लता हूजिए कर तासों माँगिए चलो ॥ यह वांछना होइ क्यों पूरण दासी ह्वै वरु ब्रज रहिए। सूरदास प्रभु अंतर्यामी तिनहि बिना कासों कहिए ॥ ३२ ॥ राग विहागरो ॥ धन्य नंद यशुदाके नंदन। धनि श्रीखंड पिंड शिर लटकनि धनि कुंडल धनि मृगमद चंदन ॥ धनि राधिका धन्य सुंदरता धनि मोहनकी जोरी। ज्यों घनमध्य दामिनीकी छबि यह उपमा कहौं थोरी ॥ धनि मंडली जुरी गोपिनकी ताबिच नंदकुमार। राधा श्याम सब गोपकुमारी क्रीडत रास बिहार ॥ पट दश सहस गोपकीनारी पट दश सहस गुपाल। काहूसों कहुँ अंतर नाहीं करत परस्पर ख्याल ॥ धनि ब्रजबास आश यह पूरण कैसे होति हमारी। सूर अमर ललना गण अंमर विथकी लोक बिसारी ॥ ३३ ॥ राग मलार ॥ मानो माई घन घन अंतर दामिनि। घन दामिनि दामिनि घन अंतर शोभित हरि ब्रज भामिनि ॥ यमुना पुलिन मल्लिका मनोहर शरद सुहाई यामिनि। सुंदर शशि गुण रूप राग निधि अंग अंग अभिरामिनि ॥ रच्यो रास मिलि रसिकराइ सों मुदित भई ब्रज भामिनि। रूपनिधान श्यामसुंदर घन आनँद मन विश्रामिनि ॥ खंजन मीन मराल हरन छबि भान भेद गजगामिनि। को गति गुनही सूर श्याम सँग काम विमोह्यो कामिनि ॥ ३४ ॥ राग मलार ॥ देखो माई रूप सरोवर साज्यो। ब्रजवनिता बरवारि वृंद में श्री ब्रजराज बिराज्यो ॥ लोचन जलज मधुप अलकावलि कुंडल मीन सलोल। कुच चक्रवाक विलोकि वदन विधु बिछुरि रहे अन

बोल ॥ मुक्तामाल बाल बग पंगति करत कुलाहल कूल । सारस हंस मध्य शुक सेना वैजयंति सम तूल ॥ पुरइनि कपिश निचोल विविध रँग विहँसत सचु उपजावै । सूर श्याम आनंद कंद की शोभा कहत न आवै ॥३५॥राग सूही॥ तरुतमाल गोपाल लाल वनमाल गिरिधर हृदय विशाल। कबहुँक गोधन सँगलै बालक कबहुँ फिरत सँग सखा ग्वाल । धनि व्रजनायक सबगुण लायक कियो महरि पोषी प्रतिपाल । कबहुँक बनिकै रहे जु बनए गोरस दान लेत तत्काल ॥ पैठि पताल नाथ्यो काली फन प्रति नृत्यत विविध ताल । धन भूषन धन मुकुट जरचो नग हीरा चूनी लाल ॥ धन्य सूर प्रभुता घरे राजै सँग सँग वनिता जाला कुंडल लोल कपोल विराजत दशन चमक सपनाल॥३६॥राग कान्हरा॥भाल तिलक शोभित शिर केसरि नैना विविधि बने।कटि कछनी चंदन खौरि श्याम बरन घन सुंदर ऐसे नटनागरके जैए री वारने ॥ त्रिभंगी है नृत्य करत व्रज युवतिन मंडली बिच दुहुँ दुहुँ बिच श्याम घने । मोरमुकुट शीश घरे राजतहै सूर प्रभु निरखि निरखि अमरन भजे जैजैध्वनि भने॥३७॥राग धनाश्री॥रास मंडल मध्य श्याम राधा । मनो घनबीच दामिनी कौंधति सुभग एकहै रूप द्वैनाहिं बाधा ॥ नायका अष्ट अष्टहु दिशा सोहहीं बनी चहुँपास सब गोप कन्या । मिले सब संग नाहिं लखति कोउ परस्पर बने षटदशसहस कृष्ण सैन्या ॥ सजे शृंगार नवसात जग मग रह्यो अंगभूषण रैनि बनी तैसी । सूर प्रभु नवल गिरिधर नवल राधिका नवल व्रजसुता मंडली जैसी॥३८॥राग भैरव॥युवति अंग छबि निरखत श्याम। नंदकुमार श्रीअंगमाधुरी अवलोकति व्रजबाम॥ परी दृष्टि कुच उचनि पियाकी वह सुख कह्यो न जाई । अँगिया नील मांडनी राती निरखत नैन चुराई ॥ वै निरखति पिय उर भुजकी छवि पहुँचानि पहुँची भ्राजति। करपल्लवन मुद्रिका सोहत ता छविपर मन लाजति ॥ बंदन बिंद निरखि हरि रीझे शशिपर बालविभास । नंदलाल व्रजबाल कि छबि क्यों बरणै सूरजदास ॥ ३९ ॥ राग गौरी ॥ श्यामतनु राजत पीतपिछौरी । उर वनमाल काछनी काछे कटिकिंकिनि छबि रोरी ॥ बेनी सुभग नितंबनि डोलत मंदगामिनी नारी । सूथन जघन बाँधि नारा बँद तिरनी पर छबि भारी ॥ नखनिरंग जावककी शोभा देखत पिय मन भावत । सूर दास प्रभु तनु त्रिभंग है युवतिन मनहि रिझावत ॥ ४० ॥राग सारंग ॥नीलांबर पहिरे तनु भामिनि जनु घनमें दमकतहै दामिनि । शेष महेश लोकेश शुकादिक नारदादि मुनिकी है स्वामिनि ॥ शशि मुखतिलक दियो मृगमदको खुटिला खुभी जरायज री । नासा तिल प्रसून वेसरि छवि मोतियन माँग सुहागभरी ॥ अति सुदेश मृदु चिकुर हरत चित गुंथे सुमन रसालहि । कबरी अति कमनीय सुभग शिर राजति गौरी बालहि ॥ सगरी कनक रत्न मुक्तामणि लटकनि चितहि चुरावै । मानो कोटि कोटि शत मोहनी पाँइनि आनि लगावै ॥ काम कमान समान भौंह दोउ चंचल नैन सरोज। अलिगंजन अंजन दै रेखा बरपत बाण मनोज ॥ कंबुकंठ नाना मणिभूषण उर मुक्ताकी माल । कनक किंकिणी नूपुर कलरव कुंजत बालमराल ॥ चौकी हेमचंद्र मणिलागी हीरारतन जराय खची । भुवन चतुर्दशकी सुंदरता राधेके मुखमनहुँ रची ॥ सजल मेघ घन साँवल सुंदर वाम अंग अति सोहै । रूप अनूप मनोहर मोहै ता उपमा कहि कोहै ॥ सहज माधुरी अंग अंग प्रति सुवश किए व्रजनाथ घनी । अखिललोक लोकेश बिलोकन सब लोकन महि एक गनी ॥ कबहुँक हरि सँग नृत्यति श्यामा श्रमकनबूँद विराजतयो । मानहु अधर सुधाके कारण शशि दूजो मुकताहू तयो ॥ रमा उमा अरु शची अरुंधति दिन प्रति देखन आवैं । निरखि कुसुम सुरगण हैं वर्षत प्रेम मुदित यश गावैं ॥ रूप राशि सुखराशि राधिका शील महागुणराशी । कृष्णचरणते पावहि श्यामा

जे तुव चरण उपासी ॥ जगनायक जगदीश पियारी जगतजननि जगरानी । नित विहार गोपाल लाल सँग वृन्दावन रजधानी ॥ अगतनिको गति भक्तनकी पति श्रीराधापद मंगलदानी। अशरण शरनी भव भय हरनी वेद पुराण बखानी ॥ रसना एक नहीं शत कोटिक शोभा अमित अपारी । कृष्णभक्ति दीजे श्रीराधे सूरदास बलिहारी ॥४१॥ राग बिहागरो ॥ नृत्यत श्याम नाना रंग। मुकुट लटकनि भ्रुकुटि मटकन धरे नटवर अंग ॥ चलत गति कटि रुनित किंकिनि घूँघरू झनकार । मनो हंस रसाल बानी अरस परस बिहार ॥ लसति कर पहुँची सो पुंजय मुद्रिका अति ज्योति ॥ भावसों भुज फिरत जबहीं तबहिं शोभा होति ॥ कबहुँ नृत्यत नारि गतिपर कबहुँ नृत्यत आपु । सूरके प्रभु रसिक की मणि रच्यो रास प्रतापु ॥४२॥ राग बिहागरो ॥ गति सुधंग नृत्यत व्रजनारी हाव भाव नैन सैन दैदै रिझवति गिरिधारी ॥ पग पग पटकि भुजनि लटकावति फंदा करनि अनूप । चंचल चलत झूमि ये अंचल अद्भुत है वह रूप ॥ दुरिनिरखत अँगरूप परस्पर दोउ मनहि मन रिझवत । हँसि हँसि वदन वचन रस प्रगटत स्वेद अंग जलभीजत ॥ बेनी छूटि लटैं बगरानी मुकुट लटकि लटकानो । फूल खसत शिरते भए न्यारे सुभग स्वातिसुत मानो ॥ गान करति नागरि रीझे पिय लीन्हीं अंक मलाइ । रसवश ह्वै लपटाइरहे दोउ सूरसखी बलिजाइ ॥ ४३॥ राग गौरी॥ नृत्यत अंग अभूषण बाजत । गति सुधंग सों भाव देखावत इकते इक अति राजत ॥ कहत न बनैं रह्यो रस ऐसो वर्णत वरणि न जाइ । जैसेइ बने श्याम तैसी ये गोपी अतिहीं छबि अधिकाइ ॥ कंकन चुरी किंकिनी नूपुर पग पैजानि बिछिया शोभित । अद्भुत ध्वनि उपजत इन मिलिकै भ्रमि २ इत उत जोवत ॥ सुनि सुनि श्रवण रीझि मनही मन राधा रास रसज्ञा । सूर श्याम सबके सुखदायक लायक गुणनि गुणज्ञा ॥ ४४ ॥ राग केदारो ॥ उघटत श्याम नृत्यत नारि । धरे अधर उपंग उपजै लेत है गिरिधारि ॥ ताल मुरज रबाब बीना किन्नरी रस सार । शब्द संग मृदंग मिलवत सुघर नंदकुमार॥ नागरी सब गुणनि आगरि मिलि चलति पिय संग । कबहुँ गावति कबहुँ नृत्यत कबहुँ उघटति रंग ॥ मंडली गोपाल गोपी अंग अँग अनुहारि । सूरप्रभु धनि नवल भामिनि दामिनी छबिडारि ॥४५ ॥ राग बिहागरो ॥ नृत्यत हैं दोउ श्यामा श्याम । अंग मगन पियते प्यारी अति निरखि चकित व्रजवाम ॥ तिरपलेति चपलासी चमकति झमकति भूषण अंग । या छवि पर उपमा कहूं नाहीं निरखत विवश अनंग ॥ श्री राधिका सकल गुणपूरण जाके श्याम अधीन । संगते होत नहीं कहुँ न्यारी भए रहति अतिलीन ॥ रस समुद्र मानों उछलत भयो सुंदरताकी खानि। सूरदास प्रभु रीझि थकित भये कहत न कछू बखानि ॥४६॥ राग कल्याण॥ कबहूं पिय हरपि हृदय लगावै ॥ कबहूं लै लै तान नागरी सुघर प्रति सुघर नँद सुवनको मन रिझावै ॥ कबहुँ चुंबन देति आकर्षि जिय लेति करति विन चेत सब हेतु अपने । मिलति भुज कंठदै रहति अँग लटकिकै जात दुख दूरिह्वै झझकि सपने ॥ लेति गहि कुचनि बिच देत अधरनि अमृत एक कर चिवुक इक शीश धारै । सूर प्रभुकी स्वामिनी श्याम अति सन्मुख ह्वै निरखि मुख नैन इकटक निहारै ॥ ४७ ॥ राग आसावरी ॥ जो सुखश्याम करत वृंदावन सों सुख तिहुँपुर नाहीं हो । हमको कहा मिलत रज उनकी यह कहि कहि अकुलाहीं हो ॥ सुनहु प्रिया श्रीसत्य कहतहौं मोते और न कोई हो । नंदकुमार रास रस सुख बिन वृंदावन नाहिं होई हो ॥ हरता करता को प्रभु मैंही वह सुख मोते न्यारो हो ॥ सूर धन्य राधावर गिरिधर धनि सुख नंद दुलारो हो ॥ ४८ ॥ राग बिहागरो ॥ रसवश श्याम कीन्ही नारि । अधर रस अचवत परस्पर संग सब

व्रजनारि ॥ काम आतुर भजीं बाला सबनि पुरई आश । एक इक व्रजनारि इक इक आप कर्यो प्रकाश ॥ कबहुँ नृत्यत कबहुँ गावत कबहुँ कोकविलास । सूरके प्रभु आश नायक करत सुख दुख नाश ॥४९॥ राग कल्याण ॥ हरषि मुरली श्याम नाद कीन्हों । करषि मन तिहुँ भुवन सुनि थकि रह्यो पवन शशिहि भूल्यो गवन ज्ञान लीन्हों ॥ तारकागण लजे बुद्धि मन मन सजे तबहि तनु सुधि तजे शब्द लाग्यो । नाग नर मुनि थके नभ धरणितनतके शारदा स्वामि शिव ध्यान जाग्यो ॥ ध्यान नारद टर्यो शेष आसन चल्यो गई बैकुंठ ध्वनि मगन स्वामी । कहत श्रीप्रियासों राधिका रवन ए सूरप्रभु श्यामके दरशकामी ॥ ५० ॥ राग बिहागरो ॥ मुरली ध्वनि बैकुंठ गई । नारायण कमला सुनि दंपति अति रुचि हृदयभई ॥ सुनहुँ प्रिया यह वाणी अद्भुत वृंदावन हरि देख्यो । धन्य धन्य श्रीपति मुख कहि कहि जीवन व्रजको लेख्यो । रास विलास करत नँदनंदन सो हमते अति दूरि । धनि बन धाम धन्य व्रज धरनी उडि लागे ज्यों धूरि ॥ यह सुख तिहूं भुवनमें नाहीं जो हरि सँग पल एक । सूर निरखि नारायण इकटक भूले नैन निमेक ॥ ५१ ॥ राग कल्याण ॥ जब हरि मुरली नाद प्रकाश्यो । जंगम जंड थावर चर कीन्हें पाहन जलज विकाश्यो ॥ स्वर्ग पताल दशो दिशि पूरण ध्वनि आच्छादित कीन्हों । निशिवर कल्प समान बढ़ाई गोपिनको सुख दीन्हों ॥ प्रेमतभए जीव जल थलके तनुकी सुधि न सँभार । सूर श्याम मुखबैन मधुर सुनि उलटे सब व्यवहार ॥ ५२ ॥ राग पूरवी ॥ मुरली गति विपरीति कराई । तिहूंभुवन भरि नाद समानो राधा रवन बजाई ॥ बछरा थन नाहीं मुख परसत चरत नहीं तृण धेनु । यमुना उलटी धार चली बहि पवन थकित सुनि वेनु ॥ विह्वल भए नहीं सुधि काहू सुर गंधर्व नर नारि । सूरदास सब चकित जहां तहां व्रजयुवतिन सुखकारि ॥ ५३ ॥ राग केदारो ॥ मुरली सुनत अचल चले । थके चर जल झरत पाहन बिफल वृक्षन फले ॥ पय स्रवत गोधननि थनते प्रेम पुलकित गात । झुरे द्रुम अंकुरित पल्लव बिटप चंचलपात ॥ सुनत खग मृग मौन साध्यो चित्रकी अनुहारि । धरणि उमँगि न माति धरमें यती योग बिसारि ॥ ग्वाल गृह गृह सहज सोवत उहै सहज सुभाइ । सूर प्रभु रसरासके हित सुखद रैनि बढाइ॥५४॥राग केदारो॥रास रस मुरलीहीते जान्यों । श्याम अधर पर बैठि नाद कियो मारग चंद्र हिरान्यो ॥ धरणि जीव जल थलके मोहे नभमंडल सुर थाके । तृण द्रुम सलिल पवन गति भूले श्रवण शब्द पर्यो जाके ॥ बच्यो नहीं पाताल रसातल कितिक उँदलों भान । नारद शारद शिव यह भाषत कछु तनु रह्यो न सयान ॥ यह अपार रस रास उपायो सुन्यो न देख्यो नैन । नारायण ध्वनि सुनि ललचाने श्याम अधर सुनि बैन ॥ कहत रमासों सुनि सुनि प्यारी विहरत है वन श्याम । सूरकहाँ हमको वैसो सुख जो विलसति व्रजवाम ॥ ५५ ॥ जीती जीती है रनवंसी । मधुकर सूत वदत बंदी पिक मागध मदन प्रशंसी ॥ मथ्यो मान बल दर्प महीपति युवति यूथ गहि आने । ध्वनिको खंड ब्रह्मंड भेद करि सुर सन्मुख शर ताने ॥ ब्रह्मादिक शिव सनक सनंदन बोलत जै जै बाने । राधापति सर्वस अपनो दै पुनि ता हाथ विकाने ॥ खग मृग मीन सुमार किए सब जड जंगम जित भेष । छाजत छत मद मोह कवच कटि तजत न नैन निमेष ॥अपनी अपनी ठकुराइनिकी काढतिहैं भुवरेख । बैठी पीठ पानि गर्जति है देति सबनि अवशेष । रविको रथले दियो सोमको पटदश कला समेत । रच्यो यज्ञ रसरास राजसू वृंदाविपिन निकेत ॥ दान मान परधान प्रेमरस वध्यो माधुरी हेत । अधिकारी गोपाल तहां हैं सूर सबनि सुख देत५६अथ श्रीकृष्णविवाह वर्णन ॥राग सारंग॥ जाको व्यास वर्णत रास । है गंधर्व वि-

T

वाह चितदै सुनौ विविध विलास ॥ कियो प्रथम कुमारि यह व्रत धरचो हृदय निवास । नंदसुत पति देव देवी पूजै मनकी आस ॥ दियो तब परसाद सबको भयो सबन हुलास । मंत्र नयना तरुन वर तर यमुना जल हरिपास ॥ धरचो लग्न जो शरद निशिकी सुधि करी गुरु रास । मोर मुकुट समीर मानों कनक कंकन रास॥वेणुध्वनि सुनि श्रवण सायक कमल वदन प्रकास । रूप प्रति प्रति रूप कीन्हें भए अंश निवास॥अधर निधि वेधीर करिके करत आनन हास । फिरत भाँवरि वश्य भूषण अग्नि मानो भास ॥ सुरनारि कौतुक लागि आईं छाँड़ि सुत पति पास । जिय परी ग्रंथ कौन छोरै निकट ननँद न सास॥निरखि श्रुति मति कुसुम अंजलि वरषि प्रसून अकास॥लेत या रस रासको रस रसिक सूरजदास ॥ ९७ ॥ राग सही ॥ यह व्रत हियधरि देवी पूजी।है कछु मन अभिलाष न दूजी॥दीजै नंदसुवन पति मेरे । जोपै होइ अनुग्रह तेरे ॥ वरष दिनन भरि तप तनु कियो । तब करि अनुग्रह देवी बर दियो ॥ राग छंद ॥ करि अनुग्रह वर जो दीन्हों वरष युवतिन तप कियो । त्रैलोक भूषण पुरुष सुंदर रूप गुण नाहिंन वियो ॥ इत उबटि खौरि शृंगारि सखिअन कुँवरि चोरी आनियो । जाहित कियो व्रत नेम संयम सो धरी बिधि वानियो ॥१॥ मोर मुकुट रचि मौर बनायो माथेपर धरि हरि वरु आयो ॥ तनु श्यामल पटपीत दुकूले । देखत घन दामिनि मन भूले ॥ ॥ राग छंद ॥ दामिनी घन कोटि वारौं जब निहारौं वह छबी । कुंडल विराजत गंड मंडल नहीं शोभा शशि रवी ॥ और कौन समान त्रिभुवन सकल गुण जेहि माहिआं । मनो मोर नाचत संग डोलत मुकुटकी परछाहिआं ॥ २ ॥ गोपीजन सब नेवते आईं । मुरली ध्वनि ते पठइ बुलाईं ॥ बहु विधि आनँद मंगल गाए । नवफूलनके मंडप छाए ॥ राग छंद ॥ छाये जु फूलन कुंज मंडफ प्रीति ग्रंथि हिए परी । अति रुचिर रूप प्रवीण राधिका निकट वृंदा शुभ घरी ॥ गाए जु गीत पुनीत बहु बिधि वेद रवि सुंदर ध्वनी । नंदसुत वृषभानुतनया रासमें जोरी बनी ॥३॥ मिलि मनदै सुख आसन बैसे । चितवनि वार किए सब तैसे ॥ तापरि पाणिग्रहण विधि कीन्हीं । तब मंडल भरि भाँवरि दीन्ही ॥ राग छंद ॥ देत भाँवरि कुंज मंडफ पुलिन में वेदी रची । बैठे जु श्यामा श्याम वर त्रैलोककी शोभा खची ॥ उत कोकिला गण करै कोलाहल इत सकल ब्रजनारियां । आईं जुनि वती दुहूँ दिशि मनों देति आनँद गारियां ॥ ४ ॥ भए जो मन्मथ सैन्य बराती । द्रुम फूले वन अन वन भांती॥सुर बंदीजन सब यश गाए।मघवा जे मृदंग बजाए॥राग छंद॥बाजहिं जे बाजन सकल नभ सुर पुहुप अंजलि वरषहीं । थकि रहे व्योम विमान सुनिगन जैजै शब्द करि हर्षहीं ॥ सूरदा सहि भयो आनँद पूजी मनकी साध॥श्रीलाल गिरिवर नवल दुलहै दुलहनि श्रीराधा राग बिहागरो ॥ प्रथम व्याह विधि है रह्यो कंकन चार विचारि । रचि रचि पचि पचि गूंथि बनायो नवल निपुन ब्रजनारि ॥ नहिं छूटै मोहन डोरनाहो ॥ बडेहोबहु तब छोरियो हो ये गोकुल के राइ । की कर जोरि करौ बिनती कै छुवौ श्रीराधाजीके पाँइ॥इह न होइ गिरिको धरिबो हो सुनहु कुँवर गोपीनाथ । आपुनको तुम बडे कहावत कांपन लागेहैं दोउ हाथ ॥ बहुरि सिमिटि ब्रजसुंदरी मिलि दीन्ही गांठि बनाइ । छोरहु वेगि कि आनहु अपनी यशुमति माइ बोलाइ॥सहज सिथिल पछवते हरिजू लीन्हों छोरि सवारि। किलकि उठीं सब सखी श्यामकी अब तुम छोरौ सुकुमारि॥ पचिहारी केसेहु नहिं छूटत बँधी प्रेमकी डोरि । देखि सखी यह रीति दुहुँनकी मुदित हँसी मुख मोरि ॥ अब जिनि करहु सहाय सखी री छोडहु सकल सयान । दुलहिनि छोरि दुलहको कंकन की बोलि बबा वृषभान ॥ कमल कमल करि वरनिएहो पानि पिय गोपाल । अब कवि कुल साँचेसे लोग रोमकटीले नाल ॥ लीला रास

गोपाल लालकी जो रस रसिक बखान । सदा रहो इह अविचल जोरी बलि बलि सूर समान८८॥ ॥ राग सारंग ॥ कान्ह तुम्हारी माइ महाबल सब जग अपवश कीन्हो हो । नेक चितै मुसुकाइकै उनि सबको मन हरि लीन्हो हो ॥ कछु कुल धर्म न जानिए वाके रूप सबै रँग राचे हो । बिन देखे सबुझे सुने जग ठगत न कोऊ बाचे हो ॥ पहिरे राती कंचुकी शिर श्वेत उपरना सोहै हो । कटिनीलो लहँगा कस्यो सो को जो निरखि न मोहैहो॥बोली चतुरानन ठगे सब अमर उपरना राते हो । अत रौंटा अवलोकिकै सब असुर महामद माते हो॥एकनि दिन दरशन ठगे निशि एकनलै सँग सोवै हो । एकनलै मंदिर चढै राचि एकनि बिरचि बिगोवै हो ॥ अकथ कथा वाकी सबै कछु कहौ तो कहिय न जाहीहो । छैलनके सँग यो फिरै जैसे तनु सँग छाहीं हो ॥ सुनि ताकी सब अपतई शुक सनकादिक भागे हो । नेक दृष्टि पथ परि गई शंकर शिर टोना लागे हो ॥ योग युक्ति बिसरी सबै उर काम क्रोध मद जागे हो । लोकलाज सब छांडिकै उठि धाइ चले सँग नाँगेहो ॥ और कहा लगि वर्णिये परगुरुप न उबरन पावैहो । जो सोवत अतिनींदमें हो तहांऊ जाइ जगावैहो ॥ यहिविधि इह डहकै सबै भरि जल थलहु जीव जेतेहो । चतुर शिरोमणि श्याम सुन्यो कनि कहौं कहांलगि केतेहो ॥ यहि लाजन मरिए सदा हरि जब सब कहत माय तुम्हारी हो । सूरदास प्रभु बरजिकै किनि मेटहु कुलकी गारी हो॥८९॥राग काफी॥सनकादिक नारद मुनि शिव बिरंचि जान । देव दुंदुभी मृदंग बाजे वर निसान ॥ बारने तोरन बँधाए हरि कीन्हो उछाह । ब्रजकी सब रीति भई बरसाने व्याह ॥ डोरन कर छोरनको आईं सकल धाइ । फूली फिरैं सहचरी आनँद उर न समाइ ॥ गजवर गति आवनि पग धरनि धरत पाँव । लटकत शिर सेहरो मनो शिखिश्री खंड सुभाव ॥ शोभित सँग नारि अंग सबै छवि विराज । गज रथ बाजी बनाइ चवँर छत्र साज ॥ दुलहिनि वृषभानु सुता अंग अंग भ्राज । सूरदास प्रभु दुलह देखो श्रीब्रजराज ॥ ९० ॥ राग सारंग ॥ दुलह देखौंगी जाइ उतरे संकेत वट केहि मिस देखन पाऊं । फूल गूथि मालालै मालिनि ह्वै जाऊं । नंदनंदन प्यारेको बिरिआ करि लाऊं । तमोलिनि ह्वै जाउँ निरखि नैनन सुख देउँ । अपने गोपाल लालके मैं बागे रचि लेउँ ॥ बजाजिनि ह्वै जाउँ निरखि नैनन सुख देउँ । वृंदावन चंदको मैं भूषण गढि लेउँ ॥ सुनारिनि ह्वै जाउँ निरखि नैननि सुख देउँ । चंदन अरगजा सूर के सर धरि लेउँ॥गंधिनि ह्वै जाउँ निरखि नैनन सुख देउँ॥९१॥राग बिहागरो ॥वृषभानुनंदिनी अति छवि बनी । श्रीवृन्दाबन चंद राधा निर्मल चांदनी ॥ श्याम अलक बिच मोती दुति मंगा ॥ मानहु झल मलित शीश गंगा । श्रवण ताटंक सोहै चिकुरकी कांति । उलटि चल्यो है राहु चक्रकी भांति ॥ गोरे लिलाट सोहै सेंदुरको बिंद । शशिकी उपमा देत कवि कोहै निंद ॥ चपल उनींदे नैन लागत सोहाये । नासिका चंपकलीको द्वै अलिधाये ॥ वदन मंजनते अंजन गयो दूरि । कलंक रहित शशि पुनि कला पूरि ॥ गिरि ते लता भई यह हम सुनि । कंचन लताते द्वै गिरि भए पुनि ॥ कंचन से तनु सोहै नीलांबरसारी । कुहुनिसामध्य जनु दामिनि उजियारी ॥ नख शिख शोभा मोपै बरणि न जाई । तुमसी तुमही राधा श्याम मनभाई ॥ यह छवि सूरदास सदा रहै बानी । नंद नंदनराजा राधिका रानी॥९२॥राग देवगंधार ॥ दोऊ राजत श्यामा श्याम। ब्रजयुवती मंडली बिराजत देखति सुरगन वाम॥धन्य धन्य वृंदावनको सुख सुर पुर कौने काम।धनि वृषभानु सुता धनि मोहन धनि गोपिनको नाम ॥ इनकी को दासी सरि ह्वैहै धन्य शरदकी याम । कैसेहु सूर जनम ब्रज पावै यह सुख नाहिं तिहूँ धाम ॥ ९३ ॥राग केदारो॥बिराजत मोहनमंडलरास । श्यामा सुधा सरोवर

मानो क्रीडत विविध विलास ॥ व्रजयुवती सत यूथ मंडली मिलि कर परस करे । भुज मृणाल भूषण तोरण युत कंचन खंभ खरे ॥ मृदुपद न्यास मंद मलयानिल विगलत शीश निचोल । नील पीत सित अरुन ध्वजा चल सीर समीर झकोल ॥ विपुल पुलक कंचुकि बँद छूटे हृदय अनंद भए । कुच युग चक्रवाक अवनी तजि अंतर रैनिगए । दशन कुंद दाडिम द्युति दामिनि प्रगटत ज्यों दुरिजात । अधर बिंब मधु अमी जलदकन प्रीतम वदन समात ॥ गिरत कुसुम कुबरी केशनते टूटतहै उरहार । शरद जलद मानो मंद किरन कन कहूं कहूं जलधार ॥ प्रफुलित वदन सरोज सुंदरी अति रस रंग रँगे । पुहुकर पुंडरीक पूरन मानों खंजन केलि खगे । पृथु नितंब करभीर कमल पद नखमणि चंद्र अनूप । मानहु लुब्ध भयो वारिज दल इंदु किए दशरूप ॥ श्रुति कुंडल धर गिरत न जानति अति आनंद भरी । चरण परसते चलत चहूं दिशि मानहुँ मीन करी ॥ चरणरुनित नूपुरकटि किंकिनि करतलतालरसाल । तरनीतनय समेत सहज सुख मुख रति मधुर मराल ॥ बाजत ताल मृदंग बांसुरी उपजति तान तरंग । निकट विटप मानो द्विज कुल कूजत वय बल बढै अनंग ॥ सकलविनोद सहित सुरललना मोहे सुर नर नाग । विथकित उडपति बिंद विराजत श्रीगोपाल अनुराग ॥ याचत दास आश चरणनकी अपनी शरन वसाव । मन अभिलाष श्रवण यश पूरित सूरहि सुधा पिआव ॥६४॥ राग सूही ॥ रासरसिक गोपाललाल व्रजबाल संग विहरत वृंदावन । सप्तसुरन मुरली बाजत गाजत भ्राजत राजत अधरनि ध्वनि सुनि मोहे सुर नर गंधर्व गन ॥ तरुण कान्ह तरु तमालके तट तरुणि गोपिका यूथ निकट पट पीतांबर नीलांबर तन तन ॥ नृत्य करत उघटत संगति पद ताथेई थेई ता कहत सूर प्रभु निरखि परस्पर रीझत मन मन ॥६५॥ राग विहागरो ॥ आजु निशि शोभित शरद सुहाई । शीतल मंद सुगंध पवन बहै रोम रोम सुखदाई ॥ यमुना पुलिन पुनीत परमरुचि रचि मंडली बनाई । राधा वाम अंग पर कर धरि मध्यहि कुँवर कन्हाई ॥ कुंडल संग ताटंक एक भए युगल कपोलनि झाईं । एक उरग मानो गिरि ऊपर द्वै शशि उदय कराई ॥ चारि चकोर परे मनो फंदा चलतहैं चंचलताई । उडुपतिगति जति रह्यो निरखि लजि सूरदास बलि जाई ॥ ६६ ॥ ॥ राग केदारो ॥ आजु हरि ऐसे रास रच्यो । श्रवण सुन्यो न कहूं अवलोक्यो यह सुख अवलौं कहां सच्यो ॥ प्रथमहि सचे समाज साज सुर सबै मोहे कोउ न बच्यो । एकहि बार थकित थिर चर कियो को जानै को कबहि नच्यो ॥ गत गुण मँद अभिमान अधिक रुचि लैं लोचन मन तहँइ खच्यो । शिव नारद शारदा कहत यों हम इतने दिन वादि पच्यो ॥ निरखि नैन रसरीति रजनि रुचि काम कटक फिरि कलह मच्यो । सूर धनुष धीरज न धरचो तब उलटि अनंग तच्यो ॥ ॥ ६७ ॥ आजु हरि अद्भुत रास उपायो । एकहि सुर सब मोहित कीन्हें मुरलीनाद सुनायो ॥ अचल चले चल थकित भए सब मुनिजन ध्यान भुलायो । चंचल पवन थक्यो नहिं डोलत यमुना उलटि बहायो ॥ थकित भयो चंद्रमा सहित मृग सुधा समुद्र बढायो । सूर श्याम गोपिन सुख दायक लायक दरश दिखायो ॥ राग सोरठ ॥ मोहन यह सुख कहा धरचो । जो सुख रास रैनि उपजायो त्रिभुवन मनहि हरचो ॥ मुरली शब्द सुनत ऐसो को जो व्रतते नटरचो । बचे न कोउ मोहित सब कीन्हें प्रेम उद्योत करचो ॥ उलटि काम तनु काम प्रकाश्यो अद्भुत रूप धरचो । सूरदास शिव नारद शारद कहत न कह्यो परचो ॥ ६८ ॥ राग विहागरो ॥ आजु निशि रास रंग हरि कीन्हों । व्रज वनिता बिच श्याममंडली मिलि सबको सुख दीन्हों ॥ सुरललना सुरसहित विमोहे रच्यो

मधुर सुरगान ॥ नृत्य करत उघटत नानाविधि सुनि मुनि बिसरयो ध्यान । मुरली सुनत भए सब व्याकुल नभ धरनी पाताल ॥ सूर श्यामका को न किए वश रचि रसरास रसाल॥६९ राग केदारा॥ बनावत रासमंडल प्यारो । मुकुटकी लटक झलक कुंडलकी निरतत नंददुलारो ॥ उर वनमाल सोहै सुंदर वर गोपिनके सँग गावै । लेत उपज नागर नागरि सँग बिच बिच तान सुनावै ॥ वंसी वट तट रास रच्यो है सब गोपिन सुखकारो । सूरदास प्रभु तिहारे मिलनको भक्तन प्राण अधारो ॥ ॥ ७० ॥ राग विहागरो ॥ दुलह दुलहिनि श्यामा श्याम ! कोककला वितपन्न परस्पर देखत लज्जित काम ॥ जा फलको व्रजनारि कियो व्रत सो फल पूरण पायो । मनकामना भयो परिपूरण सबहित मानि मनायो ॥ राग रागिनी प्रगट देखायो गायो जो जेहि रूप । सप्त सुरनके भेद बतावति नागरि रूप अनूप ॥ अतिहि सुघर पियको मन मोह्यो अपवश करति रिझावति । सूर श्याम मोहन मूरतिको बार बार उरलावति ॥७१॥ राग रामकली ॥ श्यामा श्याम रिझावति भारी । मन मन कहति और नहिं मोसी पियको कोऊ प्यारी ॥ ध्रुवा छंद धुरपद यश हरिको छरिही गाय सुनावति । आपु न रीझि कंतको रिझवति यह जिय गर्व बढावति ॥ नृत्यति उघटति गति संगीत पद सुनत कोकिला लाजति । सूर श्याम नागर अरु नागरि ललना सुलप मंडली राजति॥ ७२॥ राग रामकली॥रिझवति पियहि बारंबार।निरखि नैन लजात हरिके नहीं शोभापर ॥ चलि सुलप गज हंस मोहति कोक कला प्रवीन । हँसि परस्पर तान गावति करति पियहि अधीन ॥ सुनत वनमृग होत व्याकुल रहत चकृत आइ । सूर प्रभु वश किए नागरि महाजाननि राइ ॥ ७३ ॥ प्यारी श्याम लई उर लाई । उरज उरसों परस को सुख वरणि कापै जाई ॥ कनक छबि तन मलय लेपन निरखि भामिन अंग । नासिका शुभ वास लैलै पुलक श्याम अनंग ॥ देत चुंवन लेत सुखको मानि पूरण भाग । सूर प्रभु वश किए नागरि वदति धन्य सुहाग॥७४॥ राग विहागरो ॥ रीझे परस्पर वरनारि । कंठ भुज भुज धरे दोऊ सकत नहिं निरवारि ॥ गौर श्याम कपोल सुललित अधर अंमृत सार । परस्पर दोउ पियरु प्यारी रीझि लेत उगार ॥ प्राण इक द्वै देह कीन्हें भक्त प्रीति प्रकास । सूर स्वामी स्वामिनी मिलि करत रंग विलास ॥ ७५ ॥ गावत श्याम श्यामा रंग । सुघर गति नागरि अलापति सुर धरति पिय संग ॥ तान गावति कोकिला मनो नाद अलि मिलि देत । मोर संग चकोर डोलत आप अपने हेत ॥ भामिनी अंग जोन्ह मानो जलद श्यामलगात । परस्पर दोउ करत क्रीडा मनहि मनहि सिहात । कुचनि बिच कच परमशोभा निरखि हँसत गोपाल ॥ सूर कंचन गिरि बिचनि मनों रह्यो है अंधकाल ॥ ७६ ॥ मोहन मोहनी रस भरे । भौंह मोरनि नैन फेरनि तहाँ ते नहिं टरे । अंग निरखि अनंग लज्जित सकै नहिं ठहराइ । एककी कहाचलै शत शत कोटि रहत लजाइ ॥ इते पर हस्तकनि गति छबि नृत्य भेद अपार । उडत अंचल प्रगटि कुच दोउ कनकघट रससार ॥ दरकि कंचुकि तरकि माला रही धरणी जाइ । सूर प्रभु करि निरखि करुणा तुरत लई उचाइ ॥ ७७ ॥ राग जैतश्री॥ प्रेमसहित माला कर लीन्ही । प्यारी हृदय रहत यह जानी भुवपर नहीं पतीन्ही ॥ पीतवसन लै श्रमजल पोंछत पुनिलै कंठ लगाइ । चरणन कर परसतहै अपने कहत अतिहि श्रम पाइ ॥ कुच श्रम देखि पवन मुखहीके फूंकि झुरावत अंग । सूरदास प्रभु भौंह निहारत चलत त्रियाके रंग ॥ ॥ ७८ ॥ राग भैरव ॥ हाहाहो पिय नृत्य करो । जैसे करि मैं तुमहि रिझाई त्यों मेरो मनःतुमहु हरो ॥ तुम जैसे श्रम वायु करतहो तैसे मैंहुँ डुलावोंगी । मैं श्रम देखि तुम्हारे अँगको भुजभरि कंठ लगा

T

वोंगी ॥ मैं हारी त्योंही तुम हारो चरण चापि श्रम मेटोंगी । सूर श्याम ज्यों उछगि लई मोहिं यों मैं हूं हँसि भेटोंगी ॥७९॥राग रामकली॥ नृत्यत श्याम श्यामा हेत। मुकुट लटकनि भृकुटि मटकनि नारि मन सुखदेत ॥ कबहुँ चलत सुधंग गतिसों कबहुँ उघटत बैन । लोल कुंडल गंड मंडल चपल नैननि सैन ॥ श्यामकी छबी देखि नागरि रहि इकटक जोहि । सूर प्रभु उरलाइ लीन्हों प्रेमगुण करि पोहि ॥ ८० ॥ राग मलारकमोद ॥ अरुझि कुंडल लटबेसरिसों पीतपट वनमाल बीचि आनि उरझेहैं दोउ जन । प्राणनसों प्राण नैन नैननसों अटकि रहे चटकीली छबि देखि लपटात श्याम घन ॥ होडाहोडी नृत्य करैं रीझि रीझि अंक भरैं ताता थेई थेई उघटतहैं हरषि मन । सूरदास प्रभु प्यारी मंडली युवती भोरी नारिको अंचल लैलै पोंछतहैं श्रमके कन ॥ ८१ ॥ ॥राग अडानो ॥ मोहनलाल संग ललनायों सोहैं ज्यों तरुतमालके ढिग सुभग सुमन जरदको। वदन कांति अनूप भांति नहिं सँभारति नीलांबर गगन मैं नवघन बिच प्रगट्यो शशि मनो शरदको ॥ मुक्ता लड तारागन प्रतिबिंबित बेसरिको चूने मिलि रंग जैसे होत हरदको। सूरदास प्रभु मोहन गोहनकी छबि बाढी मेटति दुख निरखि नैन मैनके दरदको॥८२॥राग पूरवी ॥ नँदनंदन सुघराई मोहन बंशी बजाई। सरिगमा पधनिसा संसप्त सुरनि गाइ। अति अनगात संगीत सुघर और तान मिलाइ। सुर ध्याय ताल ध्याय नृत्य ध्याय निपुनराय मृदंग बजाइ ॥ सूर प्रभु नवल बाल सकल कला गुण प्रवीण अरस परस रीझि रिझाइ॥८३॥राग विहागरा॥पियके संग खेलत अधिक श्रम भयो आउरि ह्यांको बयारि। अपनो अंचल लै सुखऊरी रुचिर वदन श्रमकनके वारि॥ नृत्यत उलटि गए अँग भूपन विथुरी अलक बाँधे सँवारि। सूर रची रचना वृंदावन ब्रजयुवतिन सुखको वनवारि॥ ८४ ॥ राग केदारो॥ प्यारी देखि विह्वल गात। नंदनंदन देखि रीझे अंक भरि लपटात ॥ कबहुँ लेहि उछंग बाला कहि परस्पर बात । प्रेम रस करि भरे दोऊ नैन मिलि मुसुकात ॥ रास रस कामना पूरन रैनि नहीं बिहात । सूर प्रभु सँग व्रज तरुणि मिलि करत सुखन सिहात ॥८५॥राग कल्याण॥रच्यो रास रंग श्याम सबही सुख दीन्हों। मुरली सुर करि प्रकाश खग मृग सुनि रस उदास युवतिन तजि गेह वास बनहि गवन कीन्हों। मोहे सुर सुरनाग मुनि जन गन भए जाग शिव शारद नारदादि चकृत भए ज्ञानी । अमरगन अमरनारि आईं लोकनि बिसारि ओक लोक त्यागि कहति धन्य धन्य बानी ॥ थकित भयो गति समीर चंद्रमा भयो अधीर तारागन लज्जित भए मारग नहिं पावै । उलटि यमुन बहति धार बिपरीत सबही बिचार सूरजप्रभु संग नारि कौतुक उपजावै ॥ ८६॥ राग टोडी ॥नंदकुमार रासरस कीनों। ब्रजतरुनिनि मिलिकै सुख दीनों॥ अद्भुत कौतुक प्रगट दिखायो । कियो श्याम सबहिन मन भायो ॥ बिच गोपी बिच मिले गोपाल । मणिकंचन सोहति शुभमाल ॥ राधा मोहनमध्य विराजै । त्रिभुवनकी शोभा ये भ्राजै ॥ रास रंग रस राख्यो भारी । हाव भाव ना ना गति भारी ॥ रूप गुणनि करि परम उजागरि । नृत्यत अंग थकित भई नागरि ॥ उमँगि श्याम श्यामा उर लाई । बारंबार कह्यो श्रम पाई॥कंठ कंठ भुज दोऊ जोरे। घन दामिनि छूटति नहिं छोरे॥ सूर श्याम युवतिन सुखदाई । युवतिनके मन गर्व बढाई ॥ ८७ ॥ राग सूही ॥ तब नागरि अति गर्व बढायो । मो समान त्रिय और नहीं कोउ गिरिधर मैंही वश करि पायो ॥ जोइ जोइ कहति करत सोइ सोई पिय मेरे हित यह रास उपायो । सुन्दर चतुर और नहिं मोसी देह धरे को भाव जनायो ॥ कबहुँक बैठि जाति हरि कर धरि कबहुँक कहति मैं अति श्रम पायो । सूर श्याम गहि

कंठ रही त्रिय कंध चढौं यह वचन सुनायो॥८८॥रागबिलावल॥कहै भामिनी कंतसों मोहिं कंध चढाहु। नृत्यकरत अतिश्रम भयो ता श्रमहि मिटावहु॥ धरणी धरत बनैं नहीं पग अतिहि पिराने। त्रिया वचन सुनि गर्वके पिय मन मुसुकाने॥ मैं अविगत अज अकल हौं यह मर्म न पायो। भाव वश्य सब पै रहौं निगमनि यह गायो॥ एक देह द्वै प्रान हैं दुविधा नहिं यामें। गर्व कियो नर देह तें मैं रहौं न तामें॥ सूरज प्रभु अंतर भए संगते तजि नारी। जहां तहां ठाढी रहीं सब घोप कुमारी॥ ८९॥ अध्याय॥ ३०॥ अथ श्रीकृष्णअंतर्धानलीला॥ राग रामकली॥ गर्व भयो ब्रजनारि को तबहीं हरि जाना। राधाप्यारी संग लिए भये अंतर्धाना॥ गोपिन हरि देख्यो नहीं तब गईं अकुलाईं। चकित होइ पूछनलगीं कहां गए कन्हाई॥ कोउ मर्म जानै नहीं व्याकुल सब बाला। सूर श्याम ढूँढत फिरैं जित तित ब्रजबाला॥ ९०॥ राग बिहागरो॥ तब हरि भए अंतर्धान। जब कियो मन गर्व प्यारी कौन मोसी आन॥ अति थकित भई चलत मोहन चलि न मोपै जाइ। कंठ भुज गहि रही यह कहि लेहु जबहि चढाइ॥ गए संग बिसारि रिसमें विरस कीन्हों बाल। सूर प्रभु हुरि चरित देखत तुरत भई वेहाल॥ ९१॥ राग टोडी॥ श्याम गए युवती सँग त्यागि। चकितभई तरुणिन सँग जागि॥ प्यारी संग लगाइ विहारी। कुंजलता तर कतहूं डारी॥ संग नहीं तहँ गिरिवर धारी। दशहुदिशा तन दृष्टि पसारी॥ परी मुरुछि धरनी सुकुमारी। कामवैर लीन्हों शरमारी॥ त्राहि त्राहि कहि कहुँ बनवारी। भई व्याकुल तनुदशा बिसारी॥ नैन सलिल भीजी सब सारी। सूरसंग तजि गए मुरारी॥ ९२॥ अध्याय॥ ३१॥ तथा॥ ३२॥ गोपी विरह॥ राग बिहागरो॥ व्याकुल भई घोष कुमारि। श्यामतजि सँगते कहाँगए यह कहति ब्रजनारि॥ दशौदिश नभ द्रुम न देखति चकित भई बेहाल। राधिका नाहिं तहाँ देखी कह्यो वाके ख्याल॥ कछुक दुख कछु हरष कीन्हों कुंज लेगई श्याम। सूर प्रभुसंग मही देखो करे ऐसे काम॥ ९३॥राग धनाश्री॥ विकल ब्रजनाथ वियोगन नारि। हाहा नाथ अनाथ करौ जिन टेरति बाँह पसारि॥ हरिजूके लाड गर्व जो तनु सखी सकी न वचन सँभारि। जनिअतहै अपराध हमारो नाहिं कछु दोष मुरारि॥ढूँढति बाट घाट वन घन तन मुरछि नैन जलधारि। सूरदास अभिमान देहको बैठी सरवस हारि॥ ९४॥ राग नट॥ बायें कर द्रुम टेके ठाढी। बिछुरे मदन गुपाल रसिक मोहिं विरह व्यथा तनु बाढी॥ लोचन सजल वचन नाहिं आवै श्वास लेति अतिगाढी। नंदलाल ऐसी हमसों करी जलते मीन धरिकाढी॥ तब कित लाड लडाइ लडइते वेनी कुसुम गुहिगाढी। सूर श्याम प्रभु तुमरे दरशबिनु अब न चलत हग आढी॥ ९५॥ राग सारंग॥ अकेली भूलि परी वन माँह। कोऊ बायु वही कतहूंकी छूटिगई पियबांह॥ जहँ जहँ जाउँ तहां डर लागत डगर न पावत नांह। सूरदास प्रभु तुमरे दरशबिनु वेइकदम वै छांह॥९६॥ राग विहागरो॥ वन कुंजन चली ब्रजनारि। सदा राधा करति दुविधा देति रसकी गारि॥ संगही लैगई हरिको सुख करति वनधाम॥ कहां जैहैं ढूँढि लैहैं महारसकी बाम॥ चरण चिह्ननि चलीं देखति राधिका पगनाहिं। सूर प्रभु पगपरसि गोपी हरपिमन मुसुकाहिं॥९७॥ राग कान्हरो॥ हँसि हँसि युवती कहति परस्पर प्यारीको उरलाइ गए री। श्याम काम तनु आतुरताई ऐसे वामा वश्यभए री॥ पुनि देखति राधिका चिह्न पग पियपग चिह्न न पावै। की पियको प्यारी उर लीन्हों यह कहि भ्रम उपजावै॥ वै गिरिधर उरधारि क्यों लैहीं वै गिरिधर उर लीन्हों। सूर भईं आतुर ब्रजनारी पियप्यारी पग चीन्हों॥ ९८॥राग बिलावल॥ जो देखे द्रुमके तरे मुरछी सुकुमारी। चकितभई सब सुंदरी यहतौ राधानारी॥ याहीको खोजति सबै यह रही कहां री। धाइ परी सब

सुंदरी जो जहां तहां री ॥ तनकी तनकहु सुधि नहीं व्याकुल भई बाला । यहतौ अति बेहाल है कहां गए गोपाला ॥ बारबार बूझति सबै नाहिं बोलति बानी । सूर श्याम काहे तजी कहि सब पछितानी॥९९॥राग सारंग॥राधे कत निकुंज ठाढी रोवति। इंदु ज्योति मुखारबिंदकी चकित चहूँ दिशि जोवति ॥ द्रुमशाखा अवलंब बेलि गहि नखसों भूमि खनोवति । मुकुलित कच तन घनकि ओट ह्वै अँसुवनि चीर निचोवति ॥ सूरदास प्रभु तजी गर्वते भये प्रेम गति गोवति ॥१८००॥राग भैरव॥क्यों राधा नहिं बोलतिहै । काहे धरणि परी व्याकुल ह्वै काहे नैन न खोलतिहै ॥ कनकबेलिसी क्यों मुरझानी क्यों बनमांझ अकेलीहै । कहां गए मनमोहन तजिकै काहे बिरह दहेलीहै ॥ श्याम नाम श्रवणनि ध्वनि सुनिकै सखियन कंठ लगावतिहै । सूर श्याम आए यह कहि कहि ऐसे मन हरपावतिहै ॥ १ ॥ राग विहागरो॥कहां रहे अब लौं तुम श्याम । नैन उघारि निहारि रही तहां जो देखै व्रजबाम ॥ लागी करन बिलाप सबनसों श्याम गए मोहिं त्यागि । तुमको नहीं मिले नँदनंदन बूझतिहै तब जागि ॥ निरखि बदन वृषभानु कुँवरिको मनो सुधा बिन चंद । राधा बिरह देखि बिरहानी यह गति बिन नँदनंद ॥ या वनमें कैसे तुम आई श्याम संगहै नाहीं । कछु जानति कहां गए कन्हाई तहाँ तोहिं लै जाहीं ॥ मैं हठ कियो वृथा री माई जिय उपज्यो अभिमान । सूर श्याम ऊपर मोहिं आनी ह्वैगए अंतर्धान ॥ २ ॥ राग विहागरो ॥मैं अपने मन गर्व बढायो। इहै कह्यो पिय कंध चढौंगी तब मैं भेद न पायो ॥ यह वाणी सुनि हँसे कंठभरि भुजनि उछंगि लई । तब मैं कह्यो कौनहै मोसी अंतर जानि लई ॥ कहाँ गए गिरिधर मोको तजि ह्यां कैसे मैं आई । सूर श्याम अंतर भए मोते अपनी चूक सुनाई ॥ ३ ॥ राग विहागरो॥रुदन करति वृषभानुकुमारी । बार बार सखियन उर लावति कहां गए गिरिधारी ॥ कबहूं गिरति धरणि पर व्याकुल देखि दशा व्रजनारी । भरि अँकवारि धरति मुख पोंछति देति नैन जल ढारी ॥ त्रिया पुरुषसों भाव करतिहैं जाने निठुर मुरारी । सूरश्याम कुलधर्म आपनो लये रहत बनवारी॥४॥रागगौरी॥नँदनंदन उनको हम जानति। ग्वालन संग रहत जे माई यह कहि कहि गुण गानति ॥ बन बन धेनु चरावत वासर त्रिया बधत डर नाहीं ॥ देखि दशा वृषभानुसुताकी व्रजतरुणी पछिताहीं ॥ कहा भयो त्रिय जो हठ कीन्हों यह न बूझिए श्यामहि।सूरदास प्रभु मिलहु कृपाकरि दूरि करहु मन तामहिं॥५॥राग कल्याण॥राधिका सों कह्यो धीरमन धरि री । मिलैंगे श्याम व्याकुल दशा जिनि करै हरष जिय करौ दुख दूरि करि री॥ आपु जहँ तहँ गई बिरह सब पगिरई कुँवरि सों कहि गई श्याम ल्यावै।फिरति बन बन विकल सहस सोरह सकल ब्रह्मपूरन अकल नहीं पावै ॥ कहां गए यहकहति सबै मग जोवही कामतनु दहति व्रजनारि भारी । सूर प्रभु श्याम दुरि चरित देखहिं सकल गर्व अंतर हृदय हेत नारी॥६॥राग बिलावल॥ श्याम सबनिको देखहीं वै देखति नाहीं । जहां तहां व्याकुल फिरैं तनु धीरज नाहीं॥ कोउ बंशीवटको चली कोउ वन घन जाहीं । देखि भूमि वह रासकी जहँ तहँ पगछाहीं ॥ सदा हठीली लाडिली कहि कहि पछिताहीं । नैन सजल जल ढारिकै व्याकुल मनमाहीं ॥ एक एक ह्वै ढूँढहीं तरुनी बिकलाहीं । सूरज प्रभु कहुँ नहिं मिले ढूँढति द्रुम पाहीं ॥ ७ ॥ राग रामकली ॥ कहि धौं री बन बेलि कहूं तुम देखेहै नँदनंदन । बूझहु धौं मालती कहूं तैं पाएहैं तनुचंदन ॥ कहि धौं कुंद कदम बकुल वट चंपक लता तमाल । कहि धौं कमल कहां कमलापति सुंदर नैन विशाल ॥ श्याम श्याम कहि कहति फिरति यह ध्वनि वृंदावन छायो री ॥ गर्व जानि पिय अंतरह्वै रहे सो मैं वृथा बढायो री । अब बिन देखे कल न परत छिन श्याम सुंदर गुण गायो री । मृग मृगनी द्रुम

वन सारस खग काहू नहीं बतायो री॥मुरली अधरसुधारस लै तरु रहे यमुनके तीर।कहि तुलसी तुम सब जानतिहौ कहँ घनश्याम शरीर॥कहि धौं मृगी मयाकरि हमसों कहि धौं मधुप मराल । सूरदास प्रभुके तुम संगी हो कहां परम दयाल ॥ ८ ॥ कहूं न देख्यो री मधुवनमें माधौ । कहाँ धौं मृग गमन कीन्हों कहाँ धौं बिलमि रहे नैन मरत दरशनकी साधौ ॥ जबते बिछुरे श्याम तबते रह्यो न जाइ सुनौ सखी मेरोइ अपराधौ । सूरदास प्रभु बिनु कैसे जीवहिं माई घटत घटत घटि रह्यो प्राण आधो ॥ ९ ॥ राग आसावरी ॥ कहूं न पाऊं री सब ढूँढि वन घनश्यामसुंदर परवारों तन मन । नैनन चटपटी मेरे तबते लागी रहति कहां प्राणप्यारो निर्धनको धन ॥ चंपक जाइ गुलाब बकुल फूले तरु प्रति बूझति कहुँ देखे नँदनंदन । सूरदास प्रभु रास रसिक बिनु रास रसिकिनी बिरह विकल करि भईहैं मगन ॥१०॥ राग काफी ॥ कोऊ कहुँ देखे री नँदलाल । साँवरो सलोना ढोंटा नैन विशाल ॥ मोर मुकुट बनमाल रसाल । पीतांबर सोहै मोहै मन गोपाल ॥ निशि वनगई जहां सबैं ब्रजबाल । अंतर्धान भए रचि ख्याल ॥ द्रुम द्रुम ढूँढत भई बेहाल । सूर श्याम बिनु बिरह जंजाल॥११॥राग सारंग॥तुम कहुँ देखे श्याम बिसासी नैक मुरलिका बजाइ बाँसकी लैगए प्राण निकासी॥कबहुँक आगे कबहुँक पाछे पग पग भरत उसासी॥सूर श्यामके दरशन कारण निकसी चंद्रकलासी॥१२॥ बागेसरी॥राग कान्हरो॥मोहन मोहन कहि कहि टेरै कान्ह हवो यहि वन मेरे।कहियत हौ तुम अंतर्यामी पूरण कामी सब केरे ॥ ढूँढतिहै द्रुम बेली बाला भई बेहाल करति अवसेरें । सूरदास प्रभु रास विहारी श्रीवनवारी वृथा करत काहे झेरें ॥ १३ ॥ राग अडानो॥कहो कान्ह ए बातें हैं तिहारी बनवारी सुखही में भए न्यारे । इक सँग एक समीप रहतहैं तिन तजि कहां सिधारे ॥ अब करि कृपा मिलो करुणामय कहियतहो सुखकारे । सूर श्याम अपराध क्षमहु अब समझी चूक हमारे॥१४॥राग परागी॥केहि मारग में जाउँ सखी री मारग मुहिं बिसरचो।ना जानौ कित ह्वैं गए मोहिं जात न जानि परचो ॥ अपनो पिय ढूंढति फिरौं री मोहिं मिलवेको चाव । कांटो लाग्यो प्रेमको पिय यह पायो दाव ॥ वन डोंगरे ढूँढति फिरी घरमारग तजि गाउँ । बूझों द्रुम प्रति रूख राय कोउ कहै न पियको नाउँ ॥ चकित भई चितवत फिरी व्याकुल अतिहि अनाथ । अबकै जो कैसेहुँ मिलै तौ पलक न तजिहौं साथ॥हृदय माहँ पिय घर करौं री नैनन बैठक देउँ । सूरदास प्रभु सँग मिलौं बहुरि रास रस लेउँ॥१५॥राग श्रीराग ॥कान्ह प्यारो कहुँ पायो री।श्याम श्याम कहि कहति फिरति यह ध्वनि वृन्दावन छायो री ॥ गर्व जानि पिय अंतर ह्वै रहे सो मैं वृथा बढ़ायो री । अब बिनु देखे कल न परत छिन श्यामसुंदर गुण रायो री॥मृग मृगिनी द्रुम वन सारस खग काहू नहीं बतायो री॥सूरदास प्रभु मिलहु कृपाकरि युवतिन टेरि सुनायो री॥१६॥राग बिहागरो॥ हो कान्ह में तुम्हें चाहौं तुम काहे ना आवो॥तुम धन तुम तन तुम मन भावो॥कियो चाहौं अरस परस करौं नाहिं माना । सुन्यो चाहौं श्रवण मधुर मुरलीकी ताना ॥ कुंज कुंज जपति फिरी तेरे गुण नकी माला । सूरदास प्रभु वेगि मिलौ मोहिं मोहन नँदलाल ॥ १७ ॥ रागकाफी ॥ सखी मोहिं मोहन लाल मिलावै । ज्यों चकोर चंदाको इकटक भृंगी ध्यान लगावै ॥ बिनु देखे मोहिं कल न परै री यह कहि सबन सुनावै । बिन कारण मैं मान कियो री अपनेहि मन दुखपावै ॥ हाहा करि करि पाँइन परि परि हरि हरि टेर लगावै। सूर श्याम बिनु कोटि करौ जो और नहीं जिय आवै ॥ ॥ १८॥राग आसावरी ॥हां तौ ढूँढि फिरि आई री माई री सिगरो वृन्दावन कहुँ नहीं पाए री नँदनंदन।अनतहि रहे जाइ कौने धौं राखे छपाई मोको न कछु सुहाइ कहां जाइ रहे कामकंदन॥मोहिंते परी री चूक

T

अंतर भए हैं जाते तुमसों कहति बातैं मैंहीं कियो द्वंदन । सूरदास प्रभु बिनु भईहौं विकल आली कहां रहे बनमाली सुर नर मुनि जन बंदन ॥ १९ ॥ राग बिलावल ॥ मिलहु श्याम मोहिं चूक परी । तेहि अंतर तनुकी सुधि नाहीं रसना रट लागी न टरी ॥ धरणि परी व्याकुल भई बोलति लोचन धारा अंसु झरी । कबहूँ मगन कबहुँ सुधि आवति शरन शरन कहि बिरह जरी ॥ कृष्ण कृष्ण करि टेरि उठति है युगसम बीतत पलक घरी । सूर निरखि ब्रजनारि दशा यह चकित भई जहँ तहां खरी ॥ २० ॥ देखि दशा सुकुमारिकी युवती सब धाईं । तरु तमाल बूझति फिरैं कहि कहि मुरझाईं ॥ नँदनंदन देखे कहूं मुरली कर धारी । कुंडल मुकुट बिराजई तनु कुंडल भारी ॥ लोचन चारु बिलास हैं नासा अति लोनी । अरुण अधर दशनावली छबि बरणै कोनी ॥ बिंब पँवारे लाजहीं दामिनि द्युति थोरी । ऐसे हरि हमको कहौ कहुँ देखेहौ री ॥ अंग अंग छवि कहा कहै देखे बनि आवै।सूर सुगूंगे खाइ ऊख क्यों स्वाद बतावै ॥ २१॥ ॥ राग बिलावल ॥ अति व्याकुल भई गोपिका ढूँढति गिरिधारी । बूझति है बन बेलिसों देखे बनवारी॥ जाहीजूही सेवती करना कनिआरी । बेलि चमेली मालती बूझति द्रुमडारी ॥ खुझा मरुआ कुंद सों कहै गोद पसारी । बकुल बहुलि वट कदमपै ठाढीं ब्रजनारी ॥ बार २ हाहा करैं कहुँ हौ गिरिधारी । सूर श्यामको नाम लै लोचन जल ढारी ॥ २२ ॥ कहुं न पावैं श्यामको बूझत बन बेली । सबै भई व्याकुल फिरैं तन मदन दहेली ॥ मृगनारीसों बूझहीं बूझैं सुकुमारी । कमल सरोवर बूझहीं बिरहा तनु भारी ॥ कनक बेलिसी सुंदरी द्रुमके तर डारी । मानों दामिनि धरणि परी की सुधा पनारी ॥ इत उतते फिरि आवहीं जहँ राधा प्यारी । सूर श्याम अजहूं नहीं करि मिलत कृपा री ॥ २३ ॥ राग बिहागरो ॥ करतिहैं हरि चरित्र ब्रजनारि । देखि अतिही बिकल राधा इहै बुद्धि बिचारि ॥ एक भई गोपालको वपु एकभई बनवारि । एक भई गिरिधरन समरथ एक भई दैत्यारि ॥ एक भई वे धेनु बछरा एक भई नँदलाल । एक भई जमला उधारन इक त्रिभंग रसाल ॥ एक भई छबि राशि मोहन कहत राधा नारि । एक कहति उठि मिलहु भुजभरि सूर प्रभु री प्यारि ॥२४॥राग जैतश्री ॥ सुनत ध्वनि श्रवण उठी अकुलाइ । जो देखै नँदनंदनही वै सखियन भेप बनाइ ॥ कहा कपट करि मोहिं देखावति कहां श्याम सुखदाइ । कृष्ण कृष्ण शरणागत कहि कै बहुरि गिरी भहराइ ॥ पुनि दौरी जहँ तहँ ब्रजबाला बन द्रुम शोर लगाइ । सूरदास प्रभु अंतर्यामी बिरहिनि लेहु जिवाइ ॥ २५ ॥ राग कान्हरो ॥ कृपासिंधु हरि क्षमा करौ हो । अनजाने मन गर्व बढायो सो अपने जिनि हृदय धरौ हो ॥ सोरह सहस पीर तन एकै राधा जिव सब देह । ऐसी दशा देखि करुणामै प्रगट्यो हृदय सनेह ॥ गर्व हत्यो तनु बिरह प्रकाश्यो प्यारी व्याकुल जानि । सुनहु सूर अब दरशन दीजै चूक लई इनि मानि ॥ २६ ॥ राग केदारो ॥ अहो तुम आनि मिलौ नँदलाल । दुर्बल मलिन फिरत हम बन बन तुम बिनु मदनगोपाल ॥ द्रुम बेली पूंछति सब उझकति देखति ताल तमाल । खेलत रास रंग भरि छांड़ी ले जु गये एकबाल ॥ सूरदास सब गोपी पछिली क्रीड़ा करति रसाल । गोपी वृंदमध्य जगजीवन प्रगट भए तेहिकाल ॥ ॥ २७ ॥ हरिबिनु लागतहै बन सूनो । ढूँढति फिरति सकल ब्रजयुवती दहत काम दुखदूनो । तजि सुत पति सुनि श्रवणनिधाईं मुरलिनादमृदु कीनों ॥ व्यापत मकर मीन अति आतुर मनहुँ मीन जल हीनो । चितवति चकित दिशन दिश हेरति मनमोहन हरलीनो । द्रुम बेली पूछे सब सुंदरि नवल जात कहुँ चीनो ॥ कदली वोट निचोरत अंचल अधर सुधारस पीनो । सूर श्याम प्रियप्रेम

उमँगि रस हँसि आलिंगन दीन्हों ॥२८॥राग बिहागरो॥ राधे भूलिरही अनुराग। तरु तरु रुदन करत मुरझानी ढूँढि फिरी बनबाग॥कुँवरि असित श्रीखंड अहित भ्रम चरण शिलीमुख लाग। बाणी मधुर जानि पिक बोलत कदम करारत काग॥ कर पल्लव किसलय कुसुमाकर जानि असित भए कीर। राका चंद्र चकोर जानके पिवत नैनको नीर॥ व्याकुल दशा देख जगजीवन प्रगट भए तेहि काल। सूर श्याम हित प्रेम अंकुर उर लाइ लई भुज बाल॥ २९॥ राग कल्याण॥न्याय तजी श्यामा गोपाल। थोरी कृपा बहुत करि मानी पांवर बुधि ब्रजबाल॥ मैं कछु कपट सबनसों कीन्हों अपयशते न डेरानी। हम एकही संग एकहि मत सबकोउ नहिं बिलगानी॥ हम चातक घन नँदनंदन बरषन लागे हित कीन्हों। तुबडी प्रबल पवन सम सजनी प्रेमबीच दुख दीनो॥ जानि दीन दुखी सब सुखके निधि मोहन वेनु बजायो। सूर श्याम तब दरश परश करि मिलि संताप नशायो॥ ॥३०॥राग कान्हरो॥ प्रगट भए नँदनंदन आई।प्यारी निरखि विरह अति व्याकुल करते लई उठाई॥ उभय भुजा भरि अंकम दीन्हों राखी कंठ लगाइ। प्राणहुते प्यारी तुम मेरे यह कहि दुख बिसराइ॥ हँसत भए अंतर हम तुमसों सहज खेल उपजाइ। धरणी मुरझि परी तुम काहे कहां गई चतुराइ॥ राधा सकुचि रहीं मन जान्यो कह्यो न कछू सुनाइ। सूरदास प्रभु मिलि सुख दीन्हों दुख डारचो बिसराइ॥३१॥राग कान्हरो॥ नँदनंदन उर लाइ लई। नागरि प्रेम प्रगट तनु व्याकुल तब करुणा हरि हृदय भई। देखि नारि तरुतर मुरझानी देहदशा सब भूलिगई। प्रिया जानि अंकम भरि लीन्हीं कहि कहि ऐसी काम हई॥ वदन बिलोकि कंठ उठिलागी कनकबेलि आनंद जई। सूर श्याम फल कृपादृष्टि भए अतिहि भए आनंद मई॥ अध्याय ३३॥ श्रीकृष्णमिले गोपिनको फेर रास लीला व जलक्रीडा॥ राग सूही॥ अंतर ते हरि प्रगट भए। रहत प्रेमके वश्य कन्हाई युवतिनको मिलि हर्ष दए॥ वैसहि सुख सबको फिरि दीन्हों उहै भाव सब मानिलियो। वह जानति हरिसंग तबहिते उहै बुद्धि सब उहै हियो॥उहै रासमंडल रस जानति बिच गोपी बिच श्याम धनी॥सूर श्याम श्यामा मधि नायक उहै परस्पर प्रीति बनी॥३२॥ राग सारंग॥ बहुरि श्याम सुख रास कियो। भुज भुज जोरि जुरी ब्रजबाला वैसेही रस उमँगि हियो॥ वैसहि मुरलीनाद प्रकाश्यो वैसहि सुर नर वश्य भए। वैसे उडुगण सहित निशापति वैसेहि मारग भूलिगए॥ वैसेहि दशा भई यमुनाकी वैसेहि गति जति पवन थक्यो। वैसेहि नृत्य तरंग बढायो वैसेहि बहुरो काम जक्यो॥ उहै निशा वैसेहि मन युवती वैसेही हरि सबनि भजे।सूर श्याम वैसेइ मनमोहन वैसेहि प्यारी निरखि लजे॥३३॥राग बिहागरो॥श्यामछबि निरखत नागरि नारि। प्यारी छबि निरखत मनमोहन सकत न नैन पसारि॥ पिय सकुचत नहिं दृष्टि मिलावत सन्मुख होत लजात। श्रीराधिका निडरि अवलोकत अतिहि हृदय हरपात॥ अरस परस मोहनि मोहन मिलि सँग गोपी गोपाल। सूरदास प्रभु सब गुण लायक दुश्मनके उर शाल॥ ३४॥ रची रस रास श्याम सुजान। प्रथम मुरली नाद करि हरि हरचो सबको ज्ञान॥ सबनि उलटी रीति कीन्हों देव सुर नर आदि। ब्रजवधू मन काम पूरण कियो पुरुष अनादि॥ सहज सुखनिशि ग्वाल सोवत सो रची षटमास। हेतु युवती सुख बढोवन कियो पूरण आस॥ मेटि अंतर्धानको दुख उहै राख्यो भाउ। सूर प्रभु महिमा अगोचर निगम अंत न पाउ॥३५॥ राग नट॥मोहन रच्यो अद्भुत रास। संग मिलि वृषभानु तनया गोपिका चहुँ पास॥ एकही सुर सकल मोहे मुरलि सुधाप्रकाश। जलहु थलके जीव थकिरहे मुनिन मनहि उदास॥ थकित भए समीर सुनिकै यमुना उलटी धार। सूर प्रभु ब्रजबाम मिलि मन निशा करत बिहार॥३६॥बिहरत रासरंग गोपाल। नवल श्यामहि संग

T

शोभित नवल सब ब्रजबाल ॥ शरद निशि अति नवल उज्वल नवलता वनधाम । परम निर्मल पुलिन यमुना कल्पतरु विश्राम ॥ कोश द्वादश रासपरमिति रच्यो नंदकुमार । सूर प्रभु सुख दियो निशि रमि कामकौतुक हार॥३७॥राग मलार॥रास रस श्रमित भई ब्रजबाल।निशि सुख दै यमुना तट लैगए भोर भयो तेहि काल॥ मनकामना भए परिपूरण रही न एकौ साध । षोडससहस नारि सँग मोहन कीन्हों सुख आगाध॥यमुना जल बिहरत नँदनंदन संगमिली सुकुमारि । सूर धन्य धरनी वृंदा वन रवितनया सुखकारि॥३८॥राग गुंडमलार ॥संग ब्रजनारि हरि रास कीन्हों । सबनकी आश पूरनकरी श्यामले त्रियनि पियहेत सुख मानि लीन्हों ॥ मेटि कुलकानि मर्याद बिधि वेदकी त्यागि गृहनेह सुनि वैनधाई । फबी जैजैकरी मनहि सब जे धरी शंक काहुन करी आप माई ॥ ज्यों महामत्त गजयूथ कर नीलिए कूल सरकोरि डर कही मानैं। सूर प्रभु नंद सुत निदरि निशि रस करचो नाग नरलोक सुर सबै जानैं ॥ ३९ ॥ अथ जलक्रीडा ॥ राग गुंडमलार ॥ रैनि रस रास सुख करत बीती। भोरभए गए पावन यमुनके सलिल न्हात सुख करत अति बढी प्रीती ॥ एक इक मिलति हँसि एक हरि संग रसि एक जल मध्य इक तीर ठाढी । एक इक डरति एक इक भरि कै चलति एक सुख लरति अति नेह बाढी ॥ काहु नहिं डरति जल थलहु क्रीडा करति हरति मन निडरि ज्यों कंत नारी । सूर प्रभु श्याम श्यामा संग गोपिका मिटी तनुसाध भई मगन भारी ॥ ४० ॥ राग गौरी ॥ यमुनजल क्रीडतहैं नँदनंदन । गोपीवृंद मनोहर चहुँ दिश मध्य अरिष्ट निकंदन ॥ पकरे पाणि परस्पर छिरकत शिथिल सलिल भुजचंदन । मानों युवति पूजि अहिपतिको लग्यो अंक दै वंदन ॥ कुच भरि कुटिल सुदेश अंबुकनि चुवति अग्रगति मंदन । मानहु भरि गंडूष कमलते डारत अलि आनंदन ॥ भुजभरि अंक अगाध चलत लै ज्यों लुब्धक खग फंदन । सूरदास प्रभु सुयश बखानत नेति नेति श्रुति छंदन ॥ ४१ ॥ राग कान्हरो ॥ बिहरतहैं यमुनाजल श्याम । राजतहैं दोउ बांहां जोरी दंपति अरु ब्रजवाम ॥ कोउ ठाढी जल जानु जंघलों कोउ कटि हिरदै ग्रीव । यह सुख बरणि सकै ऐसो को सुंदरताकी सींव ॥ श्याम अंग चंदनकी आभा नागरि केसरि अंग । मलयज पंक कुमकुमा मिलिकै जल यमुना इक रंग ॥ निशि श्रम मिट्यो मिट्यो तनु आलस परसि यमुन भई पावन । सूर श्याम जल मध्य युवति गन जन जनके मनभावन ॥ ४२ ॥ जलक्रीडा सुख अति उपजायो । रास रंग मनते नहिं भूलत उहै भेद मन आयो ॥ युवती कर करजोरि मंडली श्याम नागरी बीच । चंदन अंग कुमकुमा छूटत जलमिलि तट भई कीच ॥ जो सुख श्याम करत युवती सँग सो सुख तिहुँ पुर नाहीं । सूर श्याम देखत नारिनको रीझि रीझि लपटाहीं ॥ ४३ ॥ ॥ राग बिलावल ॥ बिहरत नारि हँसत नँदनंदन । निर्मल देह छूटि तनु चंदन ॥ अति शोभा त्रिभुवन जन वंदन । पावत नहिं गावत श्रुति छंदन ॥ कंचन पीठ नारि अति शोभा । वे उनको वे उनको लोभा ॥ कबहुँ अंकभरि चलत अगाधहि ॥ अरस परस मेटत मन साधहि ॥ कोउ भाजै कोउ पाछे धावै । युवतिनसों कहि ताहि मँगावै ॥ ताको गहि अथाह जल डारैं । मुख व्याकुलता रूप निहारैं ॥ कंठ लगाइ लेत पुनि ताही । देत अलिंगन रीझत जाही ॥ सूर श्याम ब्रजयुतिन भोगी । जाको ध्यावत शिव मुनि योगी॥४४॥राग टोडी॥ऐसे श्याम वश्य राधाके । नाम लेत पावन आधाके ॥ प्यारी श्याम अंजली डारै । वा छबिको चितलाइ निहारै ॥ मनो जलद जलडारत ढारै । मन मनही तन मन धन वारै ॥ निरखि रूप नहिं धीर सम्हारै । सूर श्यामके अंकम धारै ॥ ४५ ॥ राग ललित ॥ राधे छिरकति छींट छबीली।कुच कुमकुम कंचुकि बँद टूटे लटकि रही लटगीली॥बंदन

शिर ताटंक गंड पर रतन जटित मणिलीली । गति गयंद मृगराज सुकटिपर शोभित किंकिणी ढीली ॥ मच्यो खेल यमुना जल अंतर प्रेम मुदित रस झीली । नंदसुवन भुज ग्रीव विराजत भाग सुहाग भरीली ॥ वर्षत सुमन देवगण हर्षित दुंदुभि सरस बजीली । सूर श्याम श्यामा रस क्रीडत यमुन तरंग थकीली ॥ ४६ ॥ राग रामकली ॥ श्याम श्यामा सुभग यमुना जल निर्भ्रम करत विहार । पीत कमल इंदीवर पर मनो भोरहि भए निहार ॥ श्रीराधा अंबुज कर भरि भरि छिरकत वारंवार । कनकलता मकरंद झरत मनु हालत पवन सँचार ॥ अतसीकुसुम कलेवर बूँदें प्रति विंबत निरधार । ज्योति प्रकाश सुघनमें खोलत स्वाति सुवन आकार ॥ धाइ धरे वृषभानु सुता हरि मोहे सकल शृंगार । विद्रुम जलद सूर मनों विधु मिलि स्रवत सुधाकी धार॥४७॥राग रामकली॥ यमुनजल गिरिधर करत विहार । इत उत गोपवधू मिलि छिरकत हस्तकमल सुखसार ॥ काहूकी कंचुकी छूटी काहूके विथुरे हैं बार । काहु खुभी काहू नकवेसरि काहूके टूटेहैं हार ॥ सूरदास कहँलौं बरणौं मैं लीला अगम अपार४८॥रीझे श्याम नागरी रूपातैसी ये लट बगरीं ऊपर स्रवत नीर अनूप । स्रवत जल कुच परत धारा नहीं उपमा पार । मनों उगलत राहु अमृत कनक गिरिपर धार ॥ उरज परसत श्याम सुंदर नागरी सरमाइ । सूर प्रभु तनकाम व्याकुल गए मननि जनाइ ॥ ४९ ॥ राग सारंग ॥ देख री उमँग्यो सुख आज । जल विहार विनोद सुखरुचि रतनको है साज ॥ भीजे पट लपट्यो सुभग उर रही केसर जयन । अरस परस स्वभाव मानो जगे निशिके नयन ॥ कछुक कुंचित केश माई सरस शोभा भयो । सुभग राजत कामद्रुमको मनो अंकुर नयो ॥ युवति गण सब यूथ जितकित भरत अंचल नीर । सूर सुभग गोपाल तन ब्रज सुखद श्याम शरीर ॥ ५० ॥ ॥ राग रामकली॥ श्यामा श्याम अंकम भरी । उरज उर परसाइ भुज भुज जोरि गाढे धरी ॥ तुरत मन सुख मानि लीन्हों नारि तेहि रँग ढरी । परस्पर दोउ करत क्रीडा राधिका नव हरी ॥ ऐसही सुख दियो मोहन सबै आनँद भरी । करति रंग हिलोर यमुना प्रेम आनँद झरी ॥ रास निशि श्रम दूरि कीन्हों धन्य धनि यह घरी । सूर प्रभु तट निकसि आए नारि सँग सब खरी ॥ ५१ ॥राग गूजरी॥ ठाढे श्याम यमुना तीर । धन्य पुलिन पवित्र पावन जहां गिरिधर धीर ॥ युवति बनि बनि भईं ठाढीं और पहिरे चीर । राधिका सुख श्याम दायक कनक बरन शरीर ॥ लाल चोली नील डँडिआ संग युवतिन भीर । सूर प्रभु छवि निरखि रीझे मगन भयो मन कीर ॥ ५२ ॥ राग नट ॥ ललकत श्याम मन ललचात । कहत हैं घर जाहु सुंदरि मुख न आवत बात ॥ पट सहस्र दश गोपकन्या रैनि भोगी रास । एक छिन भई कोउ न न्यारी सबनि पुरई आस॥विहँसि सब घर घर पठाईं ब्रजगईं ब्रजवाल । सूर प्रभु नँदधाम पहुँचे लख्यो काहु न ख्याल॥५३॥राग बिलावल॥ब्रजबासी सब सोवत पाए । नंदसुवन मति ऐसी ठानी घरलोगन उन जाइ जगाए॥उठे प्रात गाथा सुखभाषत आतुर रैनि विहानी । ऐंडत अंग जम्हात वदनभरि कहत सबै यह बानी॥जो जैसे सो तैसे लागे अपने अपने काज । सूर श्यामके चरित अगोचर राखी कुलकी लाज ॥ ५४ ॥ राग जैतश्री ॥ ब्रज युवती रस रास पगी । कियो श्याम सबको मनभायो निशि रतिरंग जगी ॥ पूरण ब्रह्म अकल अविनाशी सबनि संग सुख दीन्हों । जिनती नारि भेष भए तितने भेद न काहू चीन्हों ॥ वह सुख टरत न काहू मनते पतिहित साध पुराई । सूर श्याम दूलह सब दुलहिनि निशि भांवरि दै आई॥५५॥राग सोरठ॥ साध नहीं युवतिन मन राखी । मनवांछित सबन फल पायो वेद उपनिषद साखी ॥ भुजभरि मिलि कठिन कुच चापे अधर सुधारस चाखी । हाव भाव नैनन सैननदै वचन रचन मुख भाषी ॥ शुक

भागवत प्रगट करि गायो कछू न दुबिधा राखी । सूरदास ब्रजनारि संग हरि बाँकी रही न कोऊ काखी ॥ ९६॥ राग कान्हरो॥ धनि शुक मुनि भागवत बखान्यो । गुरुकी कृपा भई जब पूरण तब रसना कहि गान्यो॥ धन्य श्याम वृंदावनको सुख संत मयाते जान्यो । जो रस रास रंग हरि कीन्हें वेद नहीं ठहरान्यो ॥ सुर नर मुनि मोहित सब कीन्हें शिवहि समाधि भुलान्यो । सूरदास तहां नैन बसाए और न कहूँ पत्यान्यो ॥ ९७ ॥ राग धनाश्री॥ शरद सोहाई आई राति । दह दिशि फूलि रही बन जाति ॥ देखि श्याम मन अति सुख भयो ❀ शशिगो मंडित यमुना कूल । बरषत विटप सदा फल फूल ॥ त्रिविध पवन दुखदवनहै ❀ श्रीराधा रवन बजायो बैन । सुनि ध्वनि गोपिन उपज्यो मैन ॥ जहां तहांते उठि चलीं ❀ चलत न काहुहि कियो जनाव । हरि प्यारीसों बाढ्यो भाव॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ १ ॥ घर डर बिसरयो बढ्यो उछाह । मन चीते हरि पायो नाह ॥ ब्रजनायक लायक सुने ❀ दूध पूतकी छांडी आश । गोधन भरता करे निराश ॥ साँचे हित हरिसों कियो ❀ खान पान तनुकी न सँभार । हिलग छँडाई गृह व्यवहार ॥ सुधि बुधि मोहन हरि लई ❀ अंजन मंजन अँगन शृंगार । पट भूषण छूटे शिर बार ॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ २ ॥ एक दुहावतते उठि चली । एक सिरावत मग महँ मिली ॥ उतसहकंठा हरिसों बढी ❀ उफनत दूध न धरयो उतारि । सीझी थूली चूल्हे दारि ॥ पुरुष तात ज्यों जेवतहुते ❀ पय प्यावत बालक धरि चली । पतिसेवा तजि करी न भली ॥ धरयो रह्यो जेवन जिते ❀ तेल उबटना त्याग्यो दूरि । भागन पाई जीवन मूरि ॥ रासरसिक गुण गाइहो ॥ ३॥ अंजतही इक नैन बिसारयो । कटि कंचुकि लहँगा उर धारयो ॥ हार लपेटयो चरणनसों ❀ श्रवण न पहिरे उलटे तार ॥ तिरनी पर चौकी शृंगार ॥ चतुर चतुरता हरिलई ❀ जाको मन जहां अटके जाइ ॥ ता वनिताको कछु न सोहाई । कठिन प्रीतिको फंदहै ❀ श्यामहि सूचत मुरलीनाद । सुनि धुनि छूटे विषै सवाद ॥ रासरसिक गुण गाइहो ॥ ४ ॥ एक मात पित रोकी आनि । सही न हरि दरशनकी हानि ॥ सबहीको अपमानकै ❀ जाको मनमोहन हरि लियो । ताको काहू कछु ना कियो ॥ ज्यों पतिसों त्रिय रतिकरै ❀ जैसे सरिता सिंधुहि भजै । कोटिक गिरि भेदत नहिं लजै ॥ तैसी गति तिनकी भई ❀ इक जे घरते निकसी नहीं । हरि करुणा करि आये तहीं ॥ रासरसिक गुण गाइहो॥ ५ ॥ निरस कबौं न कहैं रसरीति । रसिकहि लीला रसपर प्रीति ॥ यह मत शुकमुख जानिबो ❀ ब्रजवनिता पहुँची पियपास । चितवत चंचल भ्रुकुटिबिलास ॥ हँसि बूझी हरि मान दै ❀ कैसे आईं मारग मांझ । कुलकी नारि न निकसै सांझ ॥ कहा कहैं तुम योगहो ❀ ब्रजकी कुशल कहौ बडभाग । क्यों तुम छाँडे सुवन सोहाग ॥ रासरसिक गुणगाइहो ॥ ६ ॥ अजहूं फिरि अपने घर जाहु । परमेश्वर करि मानों नाहु ॥ बनमें निशि बसिए नहीं ❀ श्रीवृन्दावन तुम देख्यो आइ । सुखद कुमोदिनि प्रफुलित जाइ । यमुनाजल सीकर घनो ❀ घरमहँ युवती धर्महि फबै । ताबिन सुतपति दुःखित सबै ॥ यह विधना रचना रची ❀ भरताकी सेवा सतसार । कपट तजै छूटै संसार ॥ रासरसिक गुणगाइहो ॥ ७ ॥ बिरध अभागी जो पति होई । मूरख रोगी तजै न जोई ॥ पतित बिलक्षक छाँडिए ❀ ताजि भरता रहि जारहि लीन । ऐसी नारि न होइ कुलीन ॥ यश विहीन नरकहि परै ❀ बहुत कहा समुझाऊं आज । हमहूं कछु करिबे गृहकाज॥ हमतेको अति जानतहै ❀ श्रीमुख वचन सुनत बिलखाइ । व्याकुल धरणि परी मुरझाइ ॥ रासरसिक गुण गाइहो ॥८॥ दारुण चिंता बढी न थोर । क्रूरवचन कहे नंदकिशोर ॥ और शरन सूझै नहिं ठौर ❀ रुदन करत नदीं बढी गँभीर । हरि

करि आनहि जानै पीर । कुच थंभन अवलंबहै ❀ तुम्हरी रही बहुत पिय आश । बिन अपराध न करहु निराश ॥ कैतौ रुखाई छांडिये ❀ निठुर वचन जिनि बोलहु नाथ । निजदासी जिनि करहु अनाथ ॥ रासरसिक गुण गाइहो ॥ ९ ॥ मुख देखत सुख पावत नैन । श्रवण सिरात सुनत मृदु बैन ॥ सैन नहीं सरवस हरयो ❀ मंदहँसनि उपजायो काम । अधरसुधा ध्वनि करि विश्राम ॥ वरषि सींचि विरहानला ❀ मुरली सुनतै भई सवाइ । तवते औरं न कछू सोहाइ ॥ कहौ दोष हम जाहिं क्यों ❀ सजन बंधु को करिहै कानि । तुम बिछुरत पिय आतमहानि ॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ १० ॥ बेनु बजाइ बुलाई नारि । सहि आई कुल सबकी गारि ॥ मन मधुकर लंपट भयो ❀ सोऊ सुंदरि चतुर सुजान । आरज पंथ सुनै ताजि गान: ॥ तिन देखत पुरुषउ लजै ❀ बहुत कहा वरणों यह रूप । और न त्रिभुवन शरण अनूप ॥ बलिहारी या राति की ❀ सुन मोहन विनती दै कान । अपयश होइ किये अपमान ॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ ॥ ११ ॥ तुम हमको उपदेश्यो धर्म । ताको कछू न पायो मर्म ॥ हम अबला मतिहीन हैं ❀ दुख दाता सुत पति गृह बंधु । तुम्हरी कृपा बिनु सब जग अंधु ॥ तुमते प्रीतम औरको ❀ तुमसों प्रीति करहिं जे धीर । तिनहि न लोक वेदकी पीर ॥ पाप पुण्य तिनके नहीं ❀ आशापाश बँधी हम बाल । तुमहि विमुख ह्वैहैं बेहाल ॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ १२ ॥ विरद तुम्हारो दीनदयाल । कर सों कर धरि करि प्रतिपाल ॥ भुजदंडनि खंडहु व्यथा ❀ जैसे गुणी देखावै कला । कृपण कबहुँ नहिं मानै भला ॥ सदय हृदय हमपर करो ❀ ब्रजकी लाज बडाई तोहि । करहु कृपा करुणा करि जोहि ॥ तुमहिं हमारे गति सदा ❀ दीन वचन जब युवतिन कहे । सुनत वचन लोचन जल बहे ॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ १३ ॥ हँसि बोले हरि बोली बोडि । करजोरे प्रभुता सब छोंडि ॥ हौं असाध तुम साध हौ ❀ मो कारण तुम भई निशंक । लोक वेद बपुरा को रंक ॥ सिंह शरन जंबुक बसै ❀ बिन दम कनहौं लीन्हो मोल । करत निरादर भई न लोल ॥ आवहु हिलिमिलि खेलिये ❀ ब्रजयुवतिन घेरे ब्रजराज । मनहुँ निशाकर किरन समाज ॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ १४ ॥ हरि मुख देखत भूले नैन । उर उमँगे कछु कहत न बैन ॥ श्यामहि गावत काम वश ❀ हँसत हँसावत करि परिहास । मनमें कहत करैं अवरास ॥ अंचल गहि चंचल चल्यो ❀ ल्यायो कोमल पुलिन मँझार । नख शिख भूषण अंग सँवार ॥ पट भूषण युवतिन सजे ❀ कुच परसत पुजई सब साध ॥ रससागर मनो मदन अगाध ॥ रासरसिक गुण गाइहो ॥ १५ ॥ रसमें विरस जु अन्तर्धान । गोपिनके उपजे अभिमान ॥ विरह कथामें कौन सुख ❀ द्वादश कोश रास परमान । ताको कैसे होत बखान ॥ आस पास यमुना हिली ❀ तामें मान सरोवर ताल । कमल विमल जल परम रसाल ॥ सेवहिं खग मृग सुखभरे ❀ निकट कल्पतरु बंशीवटा । श्रीराधा रति कुंजनि अटा ॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ ॥ १६ ॥ नव कुमकुम रज बरषत जहां । उडत कपूर धूरि तहँ तहां ॥ और फूल फल को गनै ❀ तहां घनश्याम रास रस रच्यो । मर्कतमणि कंचनसों खच्यो ॥ अद्भुत कौतुक प्रगट कियो ❀ मंडल जोरि युवति जहां बनी । दुहुँ दुहुँ बीच श्याम घन धनी । शोभा कहत न आवई ❀ घूँघट मुकुट विराजत शीस । शोभित शाशि मनो सहस बतीस ॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ ॥ १७ ॥ मणि कुंडल ताटंक विलोल । बिहँसत लज्जित ललित कपोल ॥ अलक तिलक बेसरि बनी ❀ कंठशिरी गजमोतिन हार । चंचरि चुरि किंकिणि झनकार ॥ चौकी चमकति उरलगी ❀ कौस्तुभमणि राजति रुचिपोति । दशन दमक दामिनिते ज्योति ॥ सरस अधर पल्लव बने ❀ चिबुक

मध्य श्यामल रुचि विंद । देखि सबनि रीझे गोविंद ॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ १८ ॥ सघन विमान गगन भरि रहे । कौतुक देखन अमर उमहे ॥ नैन सुफल सबके भए ❀ बाजे देवलोक नीसान । बरषत सुमन करत सुर गान ॥ सुनि किन्नर जय जय ध्वनि करैं ❀ युवतिन बिसरे पति गति गेह । प्रेममगन सब सहित सनेह ॥ यह सुख हमको हो कहां ❀ सुंदरता सब सुखकी खानि । रसना एक न परत बखानि ॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ १९ ॥ नील कंचुकी मांडनिलास । भुजनि नवै आभूषण माल ॥ पीत पिछौरी श्यामतनु ❀ अँगुरिन मुँदरी पहुँची पानि । कछि कटि कछिनी किंकिनि वानि ॥ उर नितंब वेनी तुरै ❀ नारांबंदन सूथन जंघन । पाँयन नूपुर बाजत संघन ॥ नखन महावर खुलिरह्यो ❀ श्रीराधा मोहन मंडल माँझ । मनहु विराजत चंदा साँझ ॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ २० ॥ पग पटकत लटकत लट बाहु । मटकत भौंहन हस्त उछाहु ॥ अंचल चंचल झूमका ❀ दुरि दुरि देखत नैनन सैन । सुखकी हँसी कहत मृदु बैन ॥ मंडित गंड प्रस्वेदकण ❀ चौरी डोरी विगलित केश । झूमत लटकत मुकुट सुदेश ॥ फूल खसत शिरतेघने ❀ कृष्णवधू पावन यश गाइ । रीझत मोहन कंठ लगाइ ॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ २१ ॥ बाजत भूषण ताल मृदंग । अंग दिखावत सरस सुघंग ॥ रंग रह्यो न कह्यो परै ❀ नूपुर किंकिनि कंकणचुरी । उपजत मिश्रित ध्वनि माधुरी । सुनत सिराने श्रवण मन ❀ मुरली मुरज रबाब उपंग।उघटत शब्द विहारी संग । नागरि सब गुण आगरी ❀ गोपीमंडल मंडित श्याम । कनक नीलमणि जनु अभिराम ॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ २२ ॥ तिरपलेति सुंदर भामिनी । मनहु विराजत घनदामिनी । या छबिकी उपमानहीं ❀ राधाकी गति परत न लखी । रससागरकी सींवा नखी ॥ बलिहारी वा रूपकी ❀ लेति सुघर औघरगति तान । दै चुंबन आकर्षति प्राण ॥ भेंटति मेटति दुख सबै ❀ राखति पियहि कुचन बिच आनि । दै अधरामृत शिरपर पानि ॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ २३ ॥ हरषित वेणु बजायो छैल । चंद्रहि विसरी नभकी गैल ॥ तारागण मनमें लज्यो ❀ मुरली ध्वनि वैकुंठहि गई । नारायण सुनि प्रीति जु भई ॥ कहत वचन कमला सुनौ ❀ श्रीकुंजबिहारी निहरत देखि । जीवन जन्म सफलकरि लेखि॥इहसुख तिहुँपुरहै कहां ❀ श्रीवृंदावन हमते दूरि। कैसे धौं उडिलागै धूरि ॥ रासरसिक गुणगाइहो ॥२४॥कोलाहल ध्वनि दहदिशजाति । कल्पसमान भई सुखराति ॥ जीवजंतु मैंमतसबै ❀ उलटि बह्यो यमुनाको नीर । बालक बच्छ न पीवैं क्षीर ॥ राधारमन ठगे सबै ❀ गिरिवर तरुवर पुलकित गात । गोधन थनते दूध चुचात ॥ मुनि खग मृग मुनि व्रत धरयौ ❀ महिफूली भूल्यो गति पौन । सोवत ग्वाल तजत नहिं भौन । रास रसिक गुण गाइहो ॥ २५॥राग रागिनी मूरतिवंत । दूलह दुलहिनि सरस वसंत ॥ कोक कला संगीत गुर ❀ सप्तसुरनकी जाति अनेक । नीके मिलवति राधा एक ॥ मनमोह्यो पियको सुघर ❀ छंद ध्रुवनिके भेद अपार । नाचति कुँवरि मिले झपतार ॥ कह्योसबै संगीतमें ❀ पिकनि रिझावति सुन्दर ध्रुपद । सरस स्वल्प ध्वनि उघटंत सुखद ॥ रास रसिक गुण गाइहो॥२६॥चलति जु मोहति गति गज हंस । हँसत परस्पर गावत गंस ॥तान मान मृगमथनके ❀ गौरीचंदन चरचित [illegible] सुवास पुलक तनु नाहु । दै चुंबन हरि सुख लियो ❀ श्यामल गौर कपोल सुचारु । रीझि परस्पर लेत उगारु ॥ एक प्राण द्वै देहहैं ❀ नाचत गावत गुणकी खानि । श्रमित भए टेकत पिय पानि ॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥२७॥ पिक गावत अलिनादहि देत । मोर चकोर फिरत सँग हेत ॥ सघन सुमनहारैं मनों ❀ कच कुच विंदरसे हँसि श्याम । चलत भौंह नैनन अभिराम ॥ अंगन

कोटि अनंग छवि ❀ हस्तक भेद ललित गति लई । अंचल उडत अधिक छवि भई ॥ कुच विगलिन मालागिरी ❀ हरि करुणाकरि लई उठाइ ॥ पोंछत श्रमजल कंठलगाइ ॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ २८ ॥ तिनहि लिवाइ यमुनजल गए । पुलिन पुनीत निकुंजनि ठए ॥ अंगश्रमित सबके भए ❀ जैसे मदगज कुल विदारि । तैसे सँग लै खेली नारि ॥ शंक न काहूकी करी ❀ मेटी वेद लोक कुल मेंडि । निकसि कुँवरि खेल्यो करि पेंडि ॥ फबी सबै जो मन धरी ❀ जल थल क्रीडत व्रीडत वही । तिन की लीला परत न कही ॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ २९ ॥ कह्यो भागवत शुक अनुराग । कैसे समुझै विन बडभाग ॥ श्रीगुरु सकल कृपाकरी ❀ सूर आश करि वरण्यो रास । चाहतहौं वृंदावन वास ॥ श्रीराधा वर इतनी करकृपा ❀ निशि दिन श्याम सेऊं मैं तोहिं । इहै कृपा करि दीजै मोहिं ॥ नवनिकुंज सुख पुंज में ❀ हरि बंसी हरि दासी जहां । हरि करुणा करि राखहु तहां ॥ नित विहार आभार दे ❀ कहत सुनत बाढत रस रीति । बक्ता श्रोता हरि पद प्रीति ॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ ३० ॥ १८९६ ॥ राग धनाश्री ॥ मैं कैसे रस रासहि गाऊं । श्री राधिका श्यामकी प्यारी तुव विन कृपा बास ब्रजपाऊं । अन्य देव सपनेहु न जानौं दंपति को शिरनाऊं । भजन प्रताप शरन महिमाते गुरुकी कृपा दिखाऊं ॥ नवनिकुंज वन धाम निकट इक आनँदकुटी रचाऊं । सूर कहा बिनती करि विनवै जन्म जन्म यह ध्याऊं ॥ ९७ ॥ राग विलावल ॥ ॥ तुमही मोको ढीठ कियो । नैन सदा चरणनतर राखे सुख देखत नहिं गनत वियो ॥ प्रभु तुम मेरी सकुच मिटाई जोइ सोइ माँगत पेलि । मांगों चरण शरण वृंदावन जहां करत नित केलि ॥ यह वाणी भजनकी श्रवण विन सुनत बहुत शरमाऊं । श्रीवृषभानुसुता पति सेऊँ सूर जगत भरमाऊँ ॥ ९८ ॥ राग विहागरो ॥ रासरस लीला गाइ सुनाऊं । यह यश कहै सुनै सुख श्रवणन तिन चरणन शिरनाऊं ॥ कहा कहौं बक्ता श्रोता फल इक रसना क्यों गाऊं । अष्टसिद्धि नवनिधि सुख संपति लघुता करि दरशाऊं ॥ जो परतीति होइ हृदय में जगमाया धृग देखै ॥ हरिजन दरश हरिहि सम पूजे अंतर कपट न भेपै ॥ धनि धनि बक्ता तेहि धनि श्रोता श्याम निकटहै ताके । सूर धन्य तिनके पितु माता भाव भजनहै जाके ॥ ९९ ॥ राग विलावल ॥ वृंदावन हरि रास उपायो । देखि शरद निशि रुचि उपजायो ॥ अद्भुत मुरली नाद सुनायो । युवति सुनत तनु दशा गँवायो ॥ मिलि धाई मनको फल पायो । जंगम चले जु चलनि थिरायो ॥ उलटी यमुना धार बहायो । सुनि धुनि चंचल पवन थकायो ॥ सुर नर मुनिको ध्यान भुलायो ॥ चंद्रगगन मारग बिसरायो ॥ रूपदेखि मन काम लजायो ॥ रसमें अंतर विरस जनायो ॥ युवतिनके तनु विरह बढायो । बहुरि मिले हित अति उपजायो ॥ हाव भाव करि सबन रिझायो । कल्प रैनि रस हित उपजायो ॥ प्रातसमय यमुनातट आयो । नारिनके निशि श्रमहि मिटायो ॥ युवतिन प्रति प्रति रूप बनायो । शिव नारद शारद यह गायो ॥ ध्यान धरयो चित त-हां लगायो । राधावर निज नाम कहायो ॥ सूरदास कछु कहिके गायो । रमाकंत जासुको ध्या-यो । सो सुख नंद सुवन ब्रज आयो ॥ १०० ॥ गोपी पदरज महिमा विधि भृगुसों कही । बरप सहस्रन कियो तप मैं ताऊ न लही ॥ इह सुनके भृगु कह्यो नारद आदिक हरि भक्ता । माँगे तिनकी चरण रेणु तोहिं यह जुगुता ॥ सो निज गोपी चरण रज वांछितहौ तुम देव । मेरे मन संशय भयो कहो कृपा करि भेव ॥ ब्रजसुंदरि नहिं नारि ऋचा श्रुतिकी सब आहिं । मैं अरु शिव पुनि लक्ष्मी तिनसम कोऊ नाहिं ॥ अद्भुतहै तिनकी कथा कहों सो मैं अब गाइ । ताहि सुनै जो प्रीतिकै सो हरिपदहि समाइ ॥ प्राकृत लैभए पुरुष जगत सब प्राकृत समाइ । रहे एक वैकुंठ लोक जहां त्रि-

T

भुवन राइ ॥ अक्षर अच्युत निर्विकार है निरंकार है जोई । आदि अंत नहिं जानिअत आदि अंत प्रभु सोई ॥ श्रुति बिनती करि कह्यो सर्व तुमही हौ देवा । दूरि निरंतर तुमहिं हौ तुम निज जानत भेवा ॥ या बिधि बहुत अस्तुति करी तब भइ गिरा अकाश । मांगो बर मनभावते पुरवो सो तुम आस । श्रुतिन कह्यो करजोरि सने आनंद देह तुम । जो नारायण आदि रूप तुम्हरी सो लखी हम ॥ निर्गुण रहित जो निज स्वरूप लख्यो न ताको भेव । मन बाणी ते अगम अगोचर देखरावहु सो देव ॥ बृंदावन निजधाम कृपाकरि तहां देखायो । सब दिन जहां वसंत कल्पवृक्षनसों छायो ॥ कुंज अद्भुत रमणीक तहां बेलि सुभग रही छाइ । गिरि गोबर्धन धातमें झरना झरत सुभाइ ॥ कालिंदीजल अमृत प्रफुलित कमल सुहाइ । नगन जटित दोउ कूल हंस सारस तहँ छाइ ॥ क्रीडत श्याम किशोर तहां लिये गोपिका साथ । निरखि सो छबि श्रुति थकित भए तब बोले यदुनाथ ॥ जो मन इच्छा होइ कहो सो मोहिं प्रगट कर । पूरण करों सो काम देउँ तुमको मैं यह बर ॥ श्रुतिन कह्या है गोपिका केलि करैं तुम संग । एवमस्तु निज सुख कह्यो पूरण परमानंद ॥ कल्पसार सतब्रह्मा जब सब सृष्टि उपावै । अरु तेहि लोग न वर्ण आश्रमके धर्म चलावै ॥ बहुरि अधर्मी होहिं नृप जग अधर्म वढि जाइ । तब बिधि पृथ्वी सुर सकल करैं बिनय मोहिं आइ ॥ मथुरामंडल भरतखंड निजधाम हमारो । धरौं तहां मैं गोप भेष सो पंथ निहारो ॥ तब तुम होइकै गोपिका करिहो मोसों नेह । करौं केलि तुमसों सदा सत्य वचन मम येह ॥ श्रुति सुनिकै हरिबचन भाग्य अपनी बहुमानी । चितवन लागे समय दिवस सो जात न जानी ॥ भारभयो जब पृथ्वीपर तब हरि लियो अवतार । वेद ऋचा होइ गोपिका हरिसों कियो बिहार ॥ जो कोइ भरता भाव हृदय धरि हरिपद ध्यावै । नारि पुरुष कोउ होइ श्रुति ऋचा गति सो पावै ॥ तिनके पद रज जो कोई बृंदाबन भूमाहिं । परसै सोऊ गोपिका गति पावे संशय नाहिं ॥ भृगु ताते मैं चरण रेणु गोपिनकी चाहत । श्रुति मति बारंबार हृदय अपने अवगाहत ॥ यह महिमा रज गोपिकाकी जब बिधि दई सुनाइ । तब भृगु आदिक ऋषि सकल रहे हरिपद चितलाइ ॥ सर्वशास्त्रको सार इतिहास सर्व जो । सर्व पुराणको सार श्रुत श्रुतिनको ॥ बंदनरज बिधि सबै कह्यो बिधि दियो ऋषिन्ह बताइ । व्यास त्रिपद वामनपुराण कह्यो सूर सोइ अब गाइ ॥ ६१ ॥ राग गूजरी ॥ श्यामा श्यामके उर वसी । रैनि नृत्यत रिझै पियमन तडित ते छबि लसी ॥ श्यामता रस मगन डोलत सब त्रियन में जसी । कोककलाप्रवीन सुंदरि कंठ गुण कर कसी ॥ करत सदन शृँगार बैठी अंग अंग प्रति रसी । सूर प्रभु आए अचानक देखि तिनको हँसी ॥६२॥ राग रामकली॥ पिय निरखत प्यारी हँसि दीन्हों । रीझे श्याम अंग अँग निरखत हँसि नागरि उरलीन्हों ॥ आलिंगन दै अधर दशन खंडि करगहि चिबुक उठावत । नासासों नासा लै जोरत नैन नैन परसावत ॥ यहि अंतर प्यारी उर निरख्यो झझकि भई तब न्यारी । सूर श्याम मोको दिखरावत उर ल्याए धरि प्यारी ॥ ६३ ॥ अथ राधाको मान ॥ राग टोडी ॥ अब जानी पिय बात तुम्हारी । मोसों तुम मुँहकी मिलवतहौ भावतिहै वह प्यारी ॥ राखे रहत हृदय पर जाको धन्य भाग्यहैं ताके । ऐसी कहौ लखी नहिं अबलौं वश्य भएहौ याके ॥ भली करी यह बात जनाई प्रगट देखाई मोहिं । सूर श्याम यह प्राणपियारी उरमें राखी पोहिं ॥ राग धनाश्री ॥६४॥ सुनत श्याम चकृत भए वानी । प्यारी पिय मुख देखि कछुक हँसि कछुक हृदय रिस मानी ॥ नागरि हँसति हँसी उर छाया तापर अति झहरानी ।अधर कंप रिस भौंह मरोर्यो मनही

मन गहरानी॥इकटक चितै रही प्रतिबिंबहि सौति शाल जिय जानी। सूरदास प्रभु तुम बडभागी वडभागिनि जेहि आनी ॥ ६५ ॥ प्यारी सांच कहतिकी हाँसी। काहेको इतनो रिस पावति कत तुम होहु उदासी ॥ पुनि पुनि कहति कहा तवहींते कहा ठगी सी ठाढी। इकटक चितै रही हिरदै तन मनो चित्र लिखि काढी ॥ समुझी नहीं कहा मन आई मदन त्रसै तुम आगे। सूर श्याम भए काम आतुरे भुजा गहन पिय लागे ॥ ६६ ॥ मोहिं छुवौ जिनि दूरि रहौजू। जाको हृदय लगाइ लई है ताकी बाँह गहौजू ॥ तुम सर्वज्ञ और सब मूरख सो रानी अरु दासी। मैं देखति हृदय वह बैठी हम तुमको भइ हांसी ॥ बांह गहत कछु शरम न आवत सुख पावत मनमाहीं। सुनहु सूर मोतनको इकटक चितवति डरपति नाहीं ॥ ६७ ॥ राग विलावल ॥ कहा भई धनि वावरी कहि तुमहिं सुनाऊं। तुमते को है आवती को हृदय वसाऊं ॥ तुमहिं श्रवण तुम नैनहो तुम प्राण अधारा। वृथा क्रोध त्रिय क्यों करौ कहि वारंवारा ॥ भुजगहि ताहि वतावहू जो हृदय वतावति। सूरज प्रभु कहै नागरी तुमते को भावति ॥ ६८ ॥ राग नट ॥ माधो नाहिंन डरति जो हृदय वसति। ऐसी ढीठ मेरे जानि तुमहिं कीन्ही है कान्ह मोसों सन्मुख देखति न त्रसति॥ झुकेते झुकति भाल भृकुटी कुटिल किये रूखीहै रहत हँसेते हँसति। तवहीते इकटक चितवत और सिसकत हों डरते इत उत न धसति॥ जाही सौ लगत नैन ताही खगत बैन नख शिखलों सब गात ग्रसति। जाके रँग राचे हरि सोईहै अंतर संग काँचकी करोतीके जल ज्यों लसति ॥ विहँसि बोले गोपाल सुनि री व्रजकी वाल उछंग लेत कत धरणि खसति। अपनी छाया निहारि काहेको करति आरि कामकी कसोटी सूर कर्पते कसति ॥ ६९ ॥ राग कान्हरो ॥ काहेको हो वात वनावत। अव तुमको पिय मैं पत्याति हौं छांह आपनी धरणि वतावत ॥ वा देखत हमको तुम मिलिहौ काहेको ताको अनखावत। जैहै कहूं निकसि हिरदैते जानि वूझि तेहि क्यों उचटावत ॥ जो वह कहै करो तुम सोई कहा मोहिं पुनि पुनि समुझावत। सूर श्याम नागर वह नागरि भले भले जू मोहिं खिझावत ॥ ७० ॥ ॥ रागगुंडमलार ॥ वृथा हठ दूरि किनि करौ प्यारी। कहा रिस करति ह्यां छांह अपनी देखि उरको उनहीं रिस जरति भारी ॥ तुमहिं धन रहति मन नैनमें तुम वसति कनक सो कसिलेहु कहा बैठी ॥ चतुराई कहांगई बुद्धि कैसी भई चूक समुझे विना भौंह ऐंठी ॥ यह सुनत रिसभरी रही नहिं तहाँ खरी ओटह्वै झरि हरी मानकीन्हों। जाहु मन मन कह्यो मैं वहुत सुख लह्यो सौति देखराइ मोहिं सूर दीन्हों ॥ ७१ ॥ राग कल्याण ॥ कियो अतिमान वृषभानुवारी। देखि प्रतिबिंव पिय हृदयनारी ॥ कहा ह्यां करत लैजाहु प्यारी। मनहिमन देत अति ताहि गारी॥सुनत यह वचन पिय विरह वाढो। कियो अति नागरी मान गाढो ॥ कामतनु दहत नहिं धीरधारै। कवहुँ वैठत उठत वारवारै। सूर अतिभए व्याकुल मुरारी। नैन भरिलेत जलदेत ढारी ॥ ७२ ॥ राग विहागरो ॥ मानकरयो त्रिय विन अपराधहि। ततुदाहति विनकाज आपनो कहत डरत जिय वादहि ॥ कहारही मुख मूँदि भामिनी मोहिं चूक कछु नाहीं। झझकि रही क्यों चतुर नागरी देखि आपनी छाहीं ॥ अजहूं दूरि करो रिस उरते हृदये ज्ञान विचारौ। सूर श्याम कहि कहि पचिहारे हठ कीन्हों जिय भारो ॥ ७३ ॥ राग सोरठ॥ काम श्याम तनु चटप कियो। मनो धरयो नागरि जिय गाढो मूरयो कमल हियो ॥ व्याकुल भए चले वृंदावन मिली दूतिका आनि। वारवार हरि वदन निहारति सकै न दुख पहिचानि ॥ कैसी दशा आजु मैं देखति कहो न मोहिं सुनाइ। सूर श्याम देखे तुम व्याकुल आए कहा गँवाइ ॥ ॥ ७४ ॥ राग गौरी ॥ व्याकुल वचन कहत हैं श्याम। वृथा नागरी मान वढायो जोर कियो तनु काम॥

T

यह कहतहि लोचन भरि आए पायो बिरह सहाइ। चाहत कह्यो भेद ता आगे वाणी कही न जाइ ॥ औरं सखी तेहि अंतर आई व्याकुल देखि मुरारी । सूर श्याम मुख देखि चकित भई क्यों तनुरहे बिसारी ॥ ७५ ॥ राग बिहागरो ॥ कहति दूतिका सखिन बुझाइ । आजु राधिका मान कर्यो है श्याम गए कुँभिलाइ ॥ करसों कर धरि लाल लई गहि सखिन सहित बनधाम । सुखदे कह्यो लिए आवतिहौं संग विलसियों बाम ॥ मो आगेकी महरि बिटनियां कहा करै वह मान । सुनहु सूर प्रभु कितकि बात यह करै न पूरण काम ॥ ७६ ॥ रागभैरव ॥ श्याम कुंज बैठारि गई ॥ चतुर दूतिका सखियन लीन्हें आतुरताई जानि लई ॥ मनहीं मन इक रचि चतुराई इहै कहौंगी बात नई । अबहीं लै आवतिहौं ताको इहै भई कछु बहुत दई ॥ करि आई हरिसों परतिज्ञा कहा करै वृषभानु जई। सूर श्याम सों मान कर्यो है आजुहि ऐसी कहा भई ॥ ७७ ॥ राग नट ॥ सखिन संग लै तहां गई । दूतिका मुख निरखि राधा जानि हृदय लई॥ अति चतुर वृषभानुतनया सहज बोलि लई । सहज वचन प्रकाश कीन्हों कहा कृपा भई ॥ तुरतही यह कहि सुनायो श्याम बोले ताहि । सूर प्रभु बन बोलि पठई तोहिं कारण मोहिं ॥ ७८ ॥ राग टोडी ॥ काहेको बन श्याम बोलाई । याही ते तुम धाई आई ॥ कहा कहौं तोको री माई । तुमहुँ भली अरु भले कन्हाई ॥ अब इक नई मिली है आई । ताहीको अब लेहि बुलाई ॥ ताको राखी हृदय दुराई । तोको ह्यांते टारि पठाई ॥ सूर श्याम ऐसे गुण राई । उनकी महिमा कही न जाई ॥ ७९ ॥ राग धनाश्री ॥ आजु कछू घर कलह भयो री । वही आजु अनमनी बत्यानी यह कहि मान ठयो री ॥ मोसों कछुक कह्यो नहिं मोहन सहज पठाई लेन । कहा पुकार परी हरि आगे चलो न देखो नैन ॥ तेरो नाम लेत हरि आगे कहत सुनाइ । सूर सुनहु काको काको गथ तै धौं लियो छँडाइ ॥ ८० ॥ राग सूही ॥ वृन्दावन हरि बैठे धाम । काहेको गथ हर्यो सबनको कहि अपनो कियो कुनाम ॥ डारि देहु कह लियो परायो मेरो कह्यो मानि री वाम । तबहीं ते उन शोर लगायो तोकों बोली है यहि काम ॥ चलहु तुरत जिनि झेर लगावहु अबहीं आइ करौ विश्राम । सूर श्याम तेरी धां झगरत तू काहे तिनसों करै ताम ॥८१॥ राग जैतश्री ॥ यह कछु नोखी बात सुनावति । काको गथ धौं मैं लीन्हों है बार बार बन मोहिं बोलावति॥ मेरी घां हरि लरत कौनसों इतीमया मोहिं कीन्हीं । जैसे हैं हरि तेरे साईं मैं नीके करि चीन्हीं ॥ की बैठो की भवन जाहुकी मैं उनपै नहिं जाउँ । सूरदास प्रभुको री सजनी जन्म न लेहौं नाउँ ॥ ८२ ॥ राग गौरी॥मैं कहा तोहिं मनावन आई । प्रगट लिए सबको ब्रज बैठी कहा करति अधिकाई ॥ जाइ करौ ह्यां बोध सबनिको मोपर कत सतरानी । श्यामलरत तबहीते उनसों तिन पर अतिहि रिसानी ॥ बार बार तू कहा कहतिरी ब्रज काको मैं लीन्हों । सूरदास राधा सहचरिसों ज्वाब निदरिकै दीन्हों॥८३॥राग सोरठ॥तैं कछु नहिं काहूको लीन्हों। प्रगट कहौं तबहीं मानोंगी ज्वाब निदरि मोहिं दीन्हों ॥ तब वदिहौं ऐसेहि ह्यां कैहै जहँ बैठे सब बैरी । मेरे कहे बहुत रिस पावति संपति सबकी लैरी॥इक इक करि सब तोहिं दिखाऊँ कहि आवहु बनजाइ । की दीजौ की पुनि सब लीजौ सूर श्याम पै आइ ॥ ८४ ॥ राग सूही ॥जिन जिन जाइ श्याम के आगे तेरी चुगली बहुत करी । बार बार जिन सों हरि खीझे तेरी घां है महूं लरी ॥ श्याम भेद करि मोहिं पठाई तू मोहीं पर खीझ परी। जाइ करो रिस वैरिनि आगे जाके जाके गथहि हरी ॥ धरति अकाश बनहु के आए देखत तिनको अतिहि डरी॥सूर श्याम बिनु न्याव चुकै क्यों तिन पर तू अतिही झगरी॥८५॥राग धनाश्री॥ते जन पुकारे

हरिपैं जाइ । जिनकी यह सब सौज राधिका तैं तेरे तनु लई छँडाइ॥इंदु कहै हो बदन बिगोयो अलकन अलि समुदाइ । नैननि मृग वचनन पिक लूटे बिलपत हरिहि सुनाइ ॥ कमल केरि केहरि कपोत गज कनक कदलि दुखपाई । विद्रुम कुंद भुजंग संग मिलि शरण गए अकुलाइ ॥अति अनीति जिय जानि सूर प्रभु पठई मोहिं रिसाइ।बोलींहै ब्रजनारि वेगि चलि अब उत्तर दे आइ८६॥राग कल्याण॥ चलराधे हरि रसिक बुलाई । कमलनयन कछु मर्म कह्यो नहिं मोहन वदन करन पुट आई ॥ अँग अँग सर्वसु हरन लगी री रचि बिरंचि तुव बनक बनाई । अब जो पुकार करत तेरे तनु जितनी वनकी शोभ चुराई ॥ मांग उरग नव तरनि तरौना तिलकभाल शशिकी ससकाई । भ्रुकुटी शर धनु सांधि वचन वर सुरपुर परिहै मदन दोहाई ॥ दाडिमवज्र पंगति पंकज दल दामिनि घन दुति रदन दोहाई।कंबुकपोत कंठ निशिवासर बाहुबली कटि कंज लताई॥उरभय भेप शेष अंबर जनु मानो छबि कटि मृगराज सुहाई । हंस पुकार करत सूरज प्रभु दीनबंधु हौं लेन पठाई ॥ ८७ ॥राग कान्हरो॥ मान करौ तुम और सवाई । कोटि करौ एकैं पुनि ह्वैहौ तुम अरु वे मनमोहन माई ॥ मोहनसों सुनि नाम श्रवणही मगन भई सुकुमारी । मान गयो रिसगई तुरतही लज्जित भई मन भारी ॥ धाइ मिली दूतिका कंठसों धन्य धन्य कहि बानी । सूर श्याम बनधाम जानिकै दरशनको अतुरानी ॥ ८८ ॥ राग बिलावल ॥ हँसिकै कह्यो दूतिका आगे श्यामहि सुख दैरी तू जाई।करि अस्नान अभूषण अँगभरि मैं आवति तो पाछे धाई ॥ यह सुनि हर्ष भई अतिही सखि गई तहां जहँ श्याम । अति व्याकुल तनुकी सुधि नाहीं विह्वल कीन्हों काम ॥ की वनमें की घरही बैठे की वासर की याम । सूर श्याम रसना रट लागी राधा राधा नाम ॥ ८९ ॥ राग रामकली ॥ श्याम नारिके विरह भरे । कबहुँक बैठत कुंज द्रुमनतर कबहुँक रहत खरे ॥ कबहुँक तनुकी सुरति बिसारत कबहुँक तनु सुधि आवत । तब नागरिके गुणहि बिचारत तेइ गुण गुनि गुनि गावत ॥ कहूं मुकुट कहुँ मुरलि रही गिरि कहुँ कटि पीत पिछौरी । सूर श्याम ऐसी गति भीतर आई दूतिका दौरी ॥ ९० ॥ ॥राग बिलावल ॥ श्याम सुजागहि दूतिका कहि आतुर बानी । काहेको कदरात हौ मैं राधा आनी ॥ विरह दूरि करि डारिए सुख करौ कन्हाई । त्रिया नाम श्रवणनि सुन्यो चितए अकुलाई ॥मिले दूति कहि अंक दै लोचन भरि आए।प्यारी प्यारी बोलिकै युवती उरलाए॥तब बोली हँसि दूतिका पिय आवति नारी।सूर श्याम सुनि बोल वै हरषे बनवारी॥९१॥राग गूजरी॥धीर धरौ प्यारी अब आवति । मैं जुगई परतिज्ञा करिकै सो कहिबात जनावति ॥ मनचिंता अब दूरि करौ जू कहो न कह मोहिं देहौ । बनि आवति वृपभानुनंदिनी भुजभरि अंकम लेहौ॥यह सुंदरता और नहीं कहुँ बडभागी सो पावै । सूर श्याम दूतिका वचन सुनि करयुग काम मनावै ॥ ९२ ॥ राग जैतश्री ॥ यह सुनिकै मन श्याम सिहात । पुलकित अंग रहे नहिं धीरज पुनि पुनि पंथ निहारत जात ॥ कुंजभवन कुसुमनकी सेज्या अपने हाथ निवारत पात । जे द्रुम लता लटकि तनु लागत ते ऊंचे धरि पुलकित गात ॥ प्यारी अँग अति कोमल जानत सेजकली चुनि डारत।सूर श्याम रीझत मनहीं मन सुधि करि छबिहि निहारत ॥ ९३ ॥ राग कल्याण ॥ दूतिका हँसति हरि चरित हेरे । कबहुँ कर अपने रचत सुमन न सेज कबहुँ मग निरखि कहूँ भयो झेरे ॥ काम आतुर भरे कबहुँ बैठत खरे कबहुँ आगे जाइ रहत ठाढे।चतुर सखि देखि पुनि राधिका पै गई झेर क्यों करति धनकंत चाढे॥सुनत प्यारी हँसी पियाके मनवसी रूप गुण कर यशी प्रेमरासी । सूर प्रभु नाम सुनि मदन तन बल भयो अंग प्रति छबि उपर रमा दासी ॥ ९४ ॥ राग धनाश्री ॥ धनि वृपभानुसुता बडभागिनि । कहा निहारति अंग

अंग छबि धन्य श्याम अनुरागिनि ॥ और त्रिया नख शिख शृंगार साजि तेरे सहज न पूरै । रति रंभा उरवसी रमासी तोहिं निरखि मन झूरै ॥ ए सब कंत सुहागिनि नाहीं तूहै कंतहि प्यारी। सूर धन्य तेरी सुंदरता तोसीं और न नारी ॥ ९५ ॥ सहज रूपकी राशि नागरी भूषण अधिक विराजै । सुख सौरभ संमिलित सुधानिधि कनकलता पर छाजै ॥ वदनाबिंद धार मिलि शोभित धूमिल नील अगाध । मनहुँ बाल रवि रस समीर शंकित तिमिर कूट ह्वै आध ॥ माणिक मध्य पास चहुँ मोती पंगति झलक सिंदूर । रेंग्यो जनु तम तट तारागण ऊगत घेरयो सूर ॥ की मन्मथरथ चक्र की तरिवन रबि रथरचित साज । श्रवण कूपकी रहट घंटिका राजत सुभग समाज॥ नाशानथ मुक्ता बिम्बाधर प्रतिबिंबित अस सूच । बींध्यो कनक पासि शुक सुंदर कारि कबीज गहि चूंच ॥ कहँ लगि कहौं भूषणन भूपित अंग अंगके रूप । सूर सकल शोभा श्रीपतिके राजिवनैन अनूप ॥ ९६ ॥ राग कान्हरो॥ विराजत राधा रूप निधान । सुंदरताको पुंज प्रगटही को पटतर त्रिय आन ॥ सिंदुर शीश मांग मुक्तावलि कचकबनी अवि नान । मनहुँ चंद्र सुख कोपि हन्यो रिपु राहु विपम बलवान ॥ तरल तिलक ताटंक गंडपर झलकत कल विय कान । मानहु शशि सहायकरिबेको रण विरचे द्वै भान ॥ दीरघनैन नासिका बेसरि अरुण अधर छबिबान । खंजन शुक नाहिं बिंब समितको लज्जित भए अजान ॥ को कहि सकै उरोजन की छबि कंचन मेरु लजान । श्रीफल सकुचि रहे दुरिकानन सिखरहिबो विहरान ॥ रोमावलि त्रिवली छबि छाजत जनु कीन्ही यह ठान । कृप कटि सबल डंड बंधन मनों विधि दीन्हों बँधान ॥ अंग अंग आभूषण की छबि कापै होइ बखान । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि विलसहु श्याम सुजान ॥ ९७ ॥ राग सारंग ॥ राजत तेरे बदन शशी री । किरनि कटाक्षबाण बर सांधे भौंह कलंक कमान कसी री ॥ पीन पयोधर सघन उन्नत अति तापर रोमावली लसी री । चक्रवाक खग चंचु पुटीते मनु सैवल मंजीर खसी री ॥ ज्यों नाभी सर एक नाल नव कनक कमल विवि रहे बसी री । सूरज श्रीगोपाल पियारी मेरी अध तम घरा धसी री॥९८॥रागगूजरी॥सुनि राधे तेरे अंगन ऊपर सुंदरता न बची।लोक चतुर्दश नीरस लागत तू रसरास रची ॥ नखशिख विशिख कुसुमकी सेना को तुम अवधि रची । सहज माधुरी रोमन वर्षत रतिरणकीचमची ॥ तैसी नारि श्यामसे नायक बिधि बेकाज पची । सूर सुमेरु कूटकी सरवर क्यों पूजै घुँघची ॥ ९९॥राग नट॥राधे देखि तेरो रूप । पठईहौं हरि शंकि मनु दल सज्यो मनसिज भूप ॥ चाल गज शृंखला नूपुर नीबि नव रुचि ढाल । किंकिनी घंटा घोप मानो भये भै बेहाल ॥ कंचुकी भूषण कवच सजि अति कुच कसे रणबीर । अंचलध्वजा अवलोकि नाहीं धरत पिय मन धीर ॥ भौंहैं चाप चढाइ कीन्हों तिलक शर-संधान । नैनकी तकि देखि गिरिधर तज्योहै मदमान ॥ चमर चिकुर सुदेश घूँघट छत्र शोभित छाँह । ज्यों कह्यो त्योंहीं मिलाऊं दै दयालुहि बाँह ॥ राधिका अति चतुर सुंदरि सुनि सु बचन बिलास । सूर रुचि मनसा जनाई प्रगटि सुख मृदुहास ॥ ॥१९००॥राग कल्याण ॥ आजु अंजन दियो राधिका नैनको।मीन गणहीन मृगलाजित खंजन चकित अधिक चंचलसरस श्याम सुखदैनको ॥ लसति दाडिम दशन भौंह मन्मथ फंद स्त्रलपलट लटकि रही रहत नाहिं चैनको।कसनि कंचुकि बंद उर मुकुतमाल सुख निरखि उडराज ताजि गयो सुर ऐनको॥ रुनित नूपुर चरण क्षुद्रकटि घंटिका कनक तनु गौर छबि उमँगि उपरैनको । सूर सुनि सून उठि नवल गिरिवर सेज चलीहै गजगति मनो मदनगढ लैनको ॥ १ ॥ राग टोडी ॥ रसिक शिरमौर दौरि लगावत गावत राधा राधा नाम । कुंजभवन बैठे मनमोहन अलिगोहन सोहन बोलत मुख

तेरोई गुणग्राम ॥ श्रवण सुनत प्यारी पुलकित भई प्रफुलित तन मन रोम रोम सुखराशि वाम । सूरदास प्रभु गिरिवर धरको चली मिलन गजराज गामिनी झनक रुनुक बनधाम ॥ २ ॥ ॥ राग देवगंधार ॥ चलौ किन मानिनि कुंज कुटीर । तुव बिन कुँवर कोटि बनितातज सहत वदनकी पीर ॥ गद्गद सुर पुलकित विरहानल नैन विलोकत नीर । क्रासि क्रासि वृषभानु नंदिनी बिलपत विपिन अधीर । वंसी विशिख माल व्यांलावलि पंचानन पिक कीर । मलयज गरल हुताशन मारुत शाखामृग रिपुवीर॥हियमें हरषि प्रेम अति आतुर चतुर चलहुपियतीर।सुनि भयभीतवज्रके पिंजर सूर सुरति रणधीर॥३॥राग कल्याण॥नवेली सुनिनवल पियनवनिकुंजहै री।भावते लालसों भावती केलिकरि भावती भावतो रसिक रसलै री । त्यागि अभिमान गुणरूप सौभाग रति मानिनी मनुहारि मैन सुख दै री ॥ एक ब्रजवास आवत जात देखियत आपनी जाति पति पेडको वैरी । ललित उदार हित पीर करि कीर मति धीर तनु मेटि मन्मथको भै री । कलाचौंसठि संगीत शृंगार रस कोक विधि वंद प्रगट भेदसे सै री । सुरति सागर साज स्रवत जस रसलाज अंग अनुकूल रतिराज रण जैरी ॥ कामशर कनक कुच प्रगट भृंगी चिह्न दागि मेलै कंत आपनो कै री ॥ जासु आलाप सुनि दारुसे पछवै पुहुप मधुधार करभार भरनै री । मुरलिका गान तुवनाम मधुराधुनी सुधा गुण सिंधु नहिं गनत निज मेरी । हीन जलमीन ज्यों दरश बिन कमल लै प्राण प्रीतम नहीं धीरज धरै री॥प्रीतिकी रीति गति होति है री हरषि निरखि रति करि चिबुक अशनि है री।अधर मधुलोभ पंथान चितवत चकित कमल गुछालदल तल रचै री ॥ अरुण शीतल मृदुपातदल सरि करत सेज चढि दल मही चरण के बैरी । तुव कामकेलि कमनीय कामिनि वृंद चंद चकोर चातक स्वाति तै री ॥ सूर सुनि श्रवणतजि भवन करि गवन मन स्वन तनु तबहि कहँ सगति गे री ॥ ४ ॥ राग कान्हरो ॥ मनो गिरिवरते आवति गंगा । राजति अति रमणीक राधिका यहि विधि अधिक अनूपम अंगा ॥ गौर गात द्युति विमल बारि विधि कटि तट त्रिवली तरल तरंगा । रोम राजि मनो यमुन मिली अध भवँर परत मानो भुवभंगा ॥ भुजबल पुलिन पास मिलि बैठे चारुचकवै उरुज उतंगा । मनो मुख मृदुल पाणि पंकेरुह गुरुगति मनहुँ मराल विहंगा ॥ मणि गण भूषण रुचिर तीरवर मध्यधार मोतिन मैं मंगा । सूरदास मनो चली सुरसरी श्रीगोपाल सागर सुख संगा ॥ ॥ ५ ॥ राग सूही ॥ नाहिन नैन लगें निशि यहि डर । जबते जाइ कह्यो हँसि हरिसों सभर सोच उनके जिय धर धर ॥ भौंह कमान तिलक भलुका करि रुचि सुदेश श्रीमंत सुरँग सर । वलय ताटंक चक्र नख नेजा दामिनिसे चमकत रद असि बर । गज उरोज वरवाजि विलोचन संकट विशद विशाल मनोहर ॥ लाल ढाल अंचल चंचल गति चमर चिकुर राजत ता ऊपर । अंग अंग सज सुभट सहायक बने विविध भूषण बानेवर ॥ कामिनि आजुहि आनि रहेगी काम कटक लै कुंज झँडातर । चरन रुनित नूपुर रणतूरा सुनत श्रवण कांपहि गे थर थर ॥ तब जानवी किशोर जो र रुपि रहो जीति करि खेत सबै पर । ऐंचि करौ जो कहीं किशोरी पै जो भीत ह्वै रहे बैठि घर ॥ यहै मतो सुख सुख जोरहो तही करहु पार लै पकरि पियहि कर । सहचरि चतुरातुर लै आई बाँह बोलदैकरि कहत वह छर । रोप सुरत तन मिली अंकम भरि ललटकी दै दंत पियाधर ॥ जुरत सुरत संग्राम मच्यो छवि छूटि छूटि कच टूटि हार लर । अति सनेह दुहूँ बिसरि देह भिरि मैन मल्ल मुरझाई गिरिधर॥विविध विलास कोश वश कीने राधा नारि नंदनंदन वर । निगमन नेति कह्यो निर्गुण सों कह गुणाधि बरणिहि सुर नर ॥ ६ ॥ राग टोडी ॥ फूलनकी महल

फूलनकी सेज्या फूले कुंजविहारी फूली राधाप्यारी। फूले वै दंपति नवल मगन फूले फूले करैं केलि न्यारी न्यारी ॥ फूली लता वेलि विविध सुमन गण फूले आनन दोउहैं सुखकारी । सूरदास प्रभु प्यारी पर वारत फूले फूल चंपकवेलि निवारी ॥ ७ ॥ राग धनाश्री॥ आज रंग फूले कुँवर कन्हाई । कबहुँक अधर दशन भरि खंडित चाखत सुधा मिठाई ॥ कबहुँक कुचकर परसि कठिनअति तहां वदन परसावत सुख निरखति सकुचति । सुकुमारी मनहीमन अति भावत ॥ तब प्यारी मुख गहि कर टारति नेक लाज नहिं आवत । सूरदास प्रभु कामशिरोमणि कोककला देखरावत ॥ ८ ॥ राग विहागरो ॥ देखे सात कमल इकठौर । तिनको अतिआदर देवेको धाय मिले द्वै और ॥ मिलत मिले फिर चलत न बिछुरत अवलोकत यह चाल । न्यारे भए बिराजतहैं सब अपने सहज सनाल ॥ हरि तम श्याम निशा निशिनायक प्रगटहोत हँसिबोले। चिबुक उठाय कह्यो अब देखो अजहुँ रहति अनबोले । इतनी जतन किए नँदनंदन तब वह निठुर मनाई । भरिके अंक सूरके स्वामी पर्यंकपरि ह्वां आई ॥ ९ ॥ राग केदारो ॥ पियको भावति राधा नारि । उलटि चुंबन देति रसिकन सकुच दीन्हीं डारि ॥ परस्पर दोउ भरे श्रमजल फूँकि फूक झुरात । मनो बूझि अनंग ज्वाला प्रगट करतलजात ॥ बहुरि उठे सँभारि भट ज्यों अंग अनंग सँभारि । सूर प्रभु वन धाम विहरत बने दोउ वरनारि ॥ १० ॥ राग रामकली ॥ विहरत वन दोउ मन इक करे । एक भाव इक भए लपटिकै उर उर जोरि धरे ॥ मनो सुभट रणएक संग जुरि करिवर नहीं डरे । अधर दशन छत नख छत उर पर घायन फरहि परे ॥ यह सुख यइ उपमा पटतरको रति संग्राम लरे । सूर सखी निरखत अंतर भई रति पति काजसरे ॥ ११ ॥ आजु अति शोभित हो घनश्याम । मानहुँ हैं जीते नँदनंदन मनसिज सों संग्राम ॥ मुकुलित कच न समात मुकुटमें रोष अरुण दोउ नैन । श्रम सूचत मानो आलस गति बोलत बनत न बैन । नखछतशोणित प्रस्वेद गातते चंदन गयो कछु छूटि । मदन सुभट केसर सुदेश मनु लगे कवच पट फूटि ॥ दशन अंक पर प्रगट पीक मनो सन्मुख सहै प्रहार । सूरदास प्रभु परम सूर मैं जाने नंदकुमार ॥ १२॥राग कल्याण॥सकुचि मन परस्पर बसन लीन्हें । प्यारी पिया निपुन कोकगुन कलामें उनि धनहिं कंत अबल कीन्हे॥ स्वेदकन गंड मंडलनि नासानि तट पिय निरखि पीत पट पोंछि डारचो । निरखि प्यारी पोंछि वै सही पियवदन कछु सकुच कछु हरपि कै निहारचो ॥ नागरी डरन पिय पीत पट उर धरे बहुरि जिनि आपनी छाँह देपै । सूर प्रभु स्वामिनी अंग छबि दामिनी झलक प्रतिबिंब परमान भेपै ॥ ॥ १३ ॥राग रामकली ॥ सँग राजति वृषभानुकुमारी । कुंज सदन कुसुमनि सेज्यापर दंपति शोभा भारी ॥ आलस भरे मगन रस दोऊ अंग अंग प्रति जोहत । मनहुँ गौर श्यामकै शशि उत्तम बैठे सन्मुख सोहत ॥ कुंजभवन राधा मनमोहन चहूँ पास ब्रजनारी । सूर रही लोचन इकटक करि डारति तन मन वारी ॥ १४ ॥ राग नट ॥ इकटक रही नारि निहार । कुंज घर श्रीश्याम श्यामा बैठे करत बिहार ॥ नैन सैन कटाक्ष सों मिलि करत रंग विलास । नहीं शोभा पार पावति वचन मुख सुख हास ॥ तरुणि श्रीवृषभानुतनया तरुण नंदकुमार । सूर सो क्यों बराणि गावै रूप रस सुखसार ॥१५॥राग धनाश्री ॥ चितै राधा रति नागर ओर । नैन वदन छबि यों उपजत मनो शशि अनुराग चकोर ॥ सार सरस अचवनको मानो तृपित मधुप युग जोर । पान करत कहुँ तृप्ति न मानत पलक न देत अकोर ॥ लिये मनोरथ मानि परस्पर जानि गई भयो भोर । सूर श्याम श्यामा आपुसमें करत रहत चितचोर ॥१६॥राग बिलावल ॥

देखो शोभासिंधु समाति । श्यामा श्याम सकल निशिरसवश जागे होत प्रभात ॥ लै पाहन सुत कर सन्मुखदै निरखि निरखि मुसुकात । अचरज सुभग वेद जलजातक कलक नील मणिगात ॥ उदित जराउ हार पंचति यो रवि शशि किरनि तहां से दुरात । चंचल खग वसु अष्टकंजदल शोभा वरणि न जात ॥ चारि कीर पर पारस विद्रुम आनि अलीगण खात । सुखकी राशि युगल मुख ऊपर सूरदास बलिजात ॥ १७ ॥ राग रामकली ॥ देख सखी पंच कमल द्वै शंभु । एक कमल व्रज ऊपर राजत निरखत नैन अचंभु ॥ एक कमल प्यारी कर लीन्हें कमल सु कोमल अंग । युगल कमल सत कमल विचारत प्रीति न कबहूं भंग ॥ पट जु कमल मुख सन्मुख चितवत बहुविधि रंगत रंग । तिनमें तीनि सोमवंशी वश तीनि शाप सुख अंग ॥ जेइ कमल सनकादिक दुर्लभ जिनहीं निकसी गंग । तेई कमल सूर नित चितवत निपट निरंतर संग॥१८॥ राग नट ॥ देख सखि चारि चंद्र इक जोर । निरखति बैठि नितंबिनि पिय सँग सार सुताकी ओर ॥ द्वै शशि श्याम नवल घन सुंदर द्वै कीन्हें विधि गोर । तिनके मध्य चारि शुक राजत द्वै फल आठ चकोर ॥ शशि सुरंग परवाल कुंद कलि अरुझि रह्यो मनमोर । सूरदास प्रभु अति रतिनागर बलि बलि युगलकिशोर॥ ॥ १९ ॥ राग नट ॥ देखरी प्रगट द्वादश मीन । पट इंदु द्वादशतरणि शोभित विमल उडुगण तीन॥ पटअष्ट अम्बुज कीर पटमुख कोकिला सुर एक। दश दोइ विद्रुम दामिनी पट तीनि व्याल विशेक॥ त्रिवलि पट श्रीफल विराजत परस्पर बर नारि । व्रज कुँवरि गिरिधर कुँवरपर सूर जन बलिहारी ॥ २० ॥ राग नट ॥ दंपति कुंज द्वार खरे । शिथिल अंग मरगजे अंबर अतिही रूप भरे ॥ सुरतही सब रैनि बीती कोक पूरण रंग । जलद दामिनि संग सोहत भरे आलस अंग ॥ चकृत ह्वै व्रजनारि निरखत मनो चंद्र चकोर।सूर प्रभु वृषभानुतनया बिलसि रति पति जोर॥२१॥ राग ललित॥ सघन कुंजते उठे भोरही श्यामा श्याम खरे । जलद नवीन मिली मानो दामिनि वरषि निशाउ सरे॥ शिथिल वसन तनु नील पीत द्युति आलस युत पहिरे । श्रमजल बूंद कहूं कहुँ उडुगण बदरन वरन करे॥भूषण बिबिध भाँति मडवारी रति रस उमँगि भरे । काजर अधर तमोर नैन रँग अँग अँग झलक परे ॥ प्रेमप्रवाह चली मनो सरिता टूटी माल गरे। शोभा अमित विलोकि सूर प्रभु क्यों सुखजात तरे ॥ २२ ॥ राग बिलावल ॥ राजत दोउ निकुंज खरे । श्यामा नवल किशोर पिय नव रँग अति अनुराग भरे ॥ अति सुकुमारि सुभग चंपक तनु भूषण भृंग अरे । मर्कत कमल शरीर सुभग हरि रति जिय वेप करे ॥ चंचित चार कमलदल मानो पियके दशन समातिं । मुख मयंक मधु पियत करत कसि ललना तऊ न अघाति ॥ लाजत मदन दुराइ मधुन मृदु मुसकनि मन हरिलेत । छूटी अलक भुअंगनि कुचतट पैठी त्रिवलि निकेत ॥ रिस रुचि रंग विरहके मुखलौं आने सोम समेति । प्रेम पियूष पूरि पोंछति पिय इत उत जान न देति ॥ वदन उघारि निहारि निकट करि पियके आनि धरे । बिप शंका नख रहत मुदित मनो मनसिज ताप हरे ॥ युगल किशोर चरण रज बंदों सूरज शरण समाहि । गावत सुनत श्रवण सुखकारी विपदुरीत दुरिजाहिं॥ ॥ २३ ॥ राग नट॥जो सुख श्याम प्रिया सँग कीन्हों । सो युवतिन अपनोहि करि लीन्हों ॥ दुविधा हृदय कछू नहिं राख्यो । अति आनंद वचन मुख भाष्यो ॥ इहै कहति तब की अब नीके। सकुचि हँसी नागरि सँग पीके । नैनकोर पिय हृदय निहारयो । उन पहिलेहि पीतांबर धारयो ॥ सूरदास इह लीला गावै । हरिपद शरण अक्षै फल पावै॥२४॥ राग नट॥धनि व्रजसुंदरी धनि श्याम । धन्य धन्य वृषभानुतनया राधिका जेहि नाम ॥ गेह गेहनि गईं तरुणी श्याम गए नँदधाम ।

भवन गई वृषभानुतनया कोक कला सुयाम ॥ करत मनकामना पूरण एक निशि सब वाम। सूर प्रभु जा सदन जात न सोइ करत तनु ताम ॥ २५ ॥ अथ खंडिता समय ॥ राग बिलावल ॥ नाना रँग उपजावत श्याम। कोउ रीझति कोउ खीझति वाम ॥ काहूके निशि वसत बनाई। काहू मुख छै आवत जाई ॥ बहुनायक ह्वै विलसत आप। जाको शिव नहिं पावहिं जाप ॥ ताको ब्रजनारी पति जानैं। कोउ आदर कोऊ अपमानैं ॥ काहूसों कहि आवत सांझ। रहत और नागरि घर मांझ ॥ कबहुँ रैनि सब संग विहात। सुनहु सूर ऐसे नँदतात ॥ २६ ॥ रागबिलावल ॥ अब युवतिन सो प्रगटे श्याम। अरस परस सबहिन यह जानी हरि लुब्धे सबहिनके धाम ॥ जादिन जाके भवन न आवत सो मनमें यह करति बिचार। आजु गए और हि काहूको रिसपावाति कहि बडे लबार ॥ यह लीला हरिके मनभावति खंडित वचन कहत सुख होत। साँझ बोलदै जात सूर प्रभु ताके आवत होत उदोत ॥ २७ ॥ राग रामकली ॥ ठाढे नंद द्वार गोपाल। बोलि लीन्हें देखि ललिता सैनदै ततकाल ॥ हँसत गए हरि गेह ताके कोउ न जानत और। मिली हरिके लाइ उरभरि चापि कुचन कठोर ॥ कह्यो मेरे धाम कबहूं क्यों न आवत श्याम। सूर प्रभु कहि आजु नागरि आइ हैं हम जाम ॥ २८ ॥ राग बिलावल ॥ ललिता को सुख दै गए श्याम। आज बसैंगे रैनि तुम्हारे प्राण पियारी हौ तुम वाम ॥ यह कहिकै अनतहि पगधारे बहुनायक के भेद अपार। साँझ समय आवन कहि आए सौंह बहुत करि नंदकुमार। वह बैठी मारग हरि जोवति इक इक पल बीतत इक याम। सूर श्याम आवनकी आशा सेज सँवारी व्याकुल काम ॥ २९ ॥ राग गौरी ॥ सांझहि ते हरि पंथ निहारै। ललिता रुचि करि धाम आपने सुमन सुगंधनि सेज सँवारै ॥ कबहुँक होत वार ने ठाढी कबहुँक गनति गगनके तारे। कबहुँक आइ गली मग जोवत अजहुँ न आए श्याम पियारे ॥ वै बहुनायक अनत लुभाने और वामके धाम सिधारे। सूर श्याम बिनु विलपति बाला तमचुर शब्द जहँ तहां पुकारे ॥ ३० ॥ ललिता तमचुर टेर सुन्यो। वै बहुनायक अनत लोभाने नहिं आए जिय कहा सुन्यो ॥ बिन कारण दैआश गए पिय वार वार तिय शीश धुन्यो। सेज सँवारि पंथ निशि जोवत अस्त आनि भयो चंद पुन्यो। तब बैठी मनमारि आपनो कछु रिस कछु मन सोचि परयो। सूर श्याम याते नहिं आए मात पिताको त्रास धरयो ॥ ३१ ॥ राग जैतश्री ॥ सोचपरयो नागरि मन माहीं। की काहूके अनत लोभाने की पितुमात त्रास मनमाहीं ॥ वै निशि वसे महल शीलाके सुख सब रैनि गँवाई। उठे अकुलाइ भोर भयो जान्यो तब नागरि सुधि आई ॥ सहज चले गोपीसों कहिकै जिय सकुचे अति भारी। सूर श्याम ललिता गृह आए चितै रही मुँह प्यारी ॥ ३२ ॥ राग ललित ॥ प्यारी चितै रही मुख पियको। अंजन अधर कपोलनि वंदन लाग्यो काहू त्रियको ॥ तुरत उठी दर्पण कर लीन्हे देखो वदन सुधारो। अपनो मुख उठि प्रात देखिकै तब तुम कहूं सिधारो ॥ काजर वदन अधर कपोलन सकुचे देखि कन्हाई। सूर श्याम नागरि मुख जोवत वचन कह्यो नहिं जाई ॥ ३३ ॥ शीलाके घरते ललिताके आए ॥ राग आसावरी ॥ दर्पण लै प्यारी मुख आगे कहति पिया छवि हेरोजू। मेरी सौं हाहा कहि पुनि पुनि उत काहे मुख फेरोजू ॥ सकुचत कहा बोलके साँचे मेरे गृहतौ आएजू ॥ रैनि नहीं तौ अब जु कृपा भई धनि जिनि स्वांग करायोजू ॥ मेरी कही विलग जिनि मानो मैं तुव करत बडाईजू। सूर श्याम सन्मुख नहिं चितवत रहे धरणि शिरनाईजू ॥ ३४ ॥ राग ललित ॥ क्योंमोहन दर्पण नहिं देखत। क्योंधरणीपग नखन करोवत क्यों हम तन नहिं पेखत ॥ क्यों ठाढे बैठत क्यों

नाहीं कहा परी हम चूक । पीतांबर गहि कह्यो बैठिए रहे कहाहै मूक ॥ उघरि गयो उरते उपरैना नखछत विन गुणमाल । सूर देखि लटपटी पागपर जावककी छबिलाल ॥ ३५ ॥ राग ईमन ॥ ऐसी कहौ रँगीले लाल । जावकसों कहाँ पाग रँगाई रँगरेजिनमिलि है को बाल ॥ वंदन रंग कपोलन दीन्हों अधर अरुणभए श्याम रसाल । जिनि तुम्हरे मन इच्छा पुरई धनि धनि पिय धनि धनि वह बाल ॥ माला कहाँ मिली बिन गुनकी उरछत देखिभई बेहाल । सूर श्याम छवि सबै बिराजी इहै देखि मोको जंजाल ॥ ३६ ॥ राग गुंडमलार ॥ काहेते सकुचत पिय हष्टि नहीं तुम जोवत मोहन रूप विहारी । निकसे समाचार सब सोवत घूमति आँखि तिहारी ॥ नैन जगे पल लगे जातहैं पौढत तल्प हमारी । विविध कुसुम रचना रचि पचिकै अपने हाथ सवाँरी ॥ कहत सूर उर तप्यो भोर भयो हम बैठी रखवारी ॥ ३७ ॥ राग बिलावल ॥ ज्वाब नहीं पिय आवई क्यों कहाँ ठगाने । मैं तवहीं की बकतिहौं कछु आजु भुलाने ॥ हाँ नाहीं नहिं कहतहौ मेरीसों काहे । आए क्यों चकृतभए मोको रिसि दाहे ॥ कहाँरहे कासों बन्यो तहाँई पगधारो । सूर श्याम गुणरावरे हिरदै न बिसारो ॥ ॥ ३८ ॥ राग बिलावल ॥ काहेको कहि गए आइहैं काहे झूठी सौंहैं खाए । ऐसे मैं जाने नहिं तुमको जे गुणकरि तुम प्रगट देखाए ॥ भलीकरी दरशन हरि दीन्हें जन्म जन्मके ताप नशाए । तब चितए हरि नेक त्रियातन इतनेहि सब अपराध क्षमाए ॥ सूरदास सुंदरी सयानी हँसि लीन्हें पिय अंकम लाए ॥ ३९ ॥ राग बिलावल ॥ नैनकोर हरि हेरिकै प्यारी वश कीन्हीं । भाव कह्यो आधीनको ललिता लखि लीन्ही ॥ तुरतगयो रिस दूरिह्वै हँसि कंठ लगाए । भलीकरी मनभावते ऐसेहु मैं पाए ॥ भवनगई गहिबांहले निशिजाने । अंग शिथिल निशि जागे श्रम भयो मनहीमन ज्ञाने ॥ अंग सुगंध मर्दनकियो तुरतहिं अन्हवाये । अपनेकर अँग पोंछिकै मन साध पुराए ॥ चीर अभूपण अंगदै बैठे गिरिधारी।रुचिभोजन पियको दियो सूरज बलिहारी ॥ ४० ॥ राग कल्याण ॥ कियो मन काम नहिं रही बाकी । प्रिया रिस दूरिकै दियो रसपूरिकै अनंगबलदूरिकै गोपजाकी । नंदसुत लाडिले प्रेमके चांडिले सोहदै कहतहै नारि आगे । तुम परमभावती प्राणहूँ ते खरी सुख नहीं लहत मैं तुमहि त्यागे ॥ तुमहिधन तन तुमहि तुमहिं मनही बसे और त्रिय नहीं मो मनहि भावै । सूर प्रभु चतुर वर चतुर नागरिनके चतुरई वचन कहि मन चुरावै ॥ ४१ ॥ राग भैरव ॥ इहै भाव सब युवतिनसों । ऐसे वचन कहत सब आगे भूलि रहति मनमोहनसों । बिनदेखे रिसभाव बढावत मिलिआई दै सौंहनिसों । मुख देखत दुख रहत नहीं तनु चितवत मुरि दोउ भौंहनसों ॥ और त्रिया अँग चिह्न विराजत रिस मनहीं मन छोहनसों । सूर श्याम सब गोप कुमारी टरति नहीं कहुँ गोहन सों ॥ ४२ ॥ राग बिलावल ॥ ललिताको सुख दै चले अपने निजधाम । बीचमिली चंद्रावलि उन देखे श्याम ॥ मोर मुकुट कछनी कछे नटवर गोपाल । रही बदन तनु हेरिकै अतिहित ब्रजबाल ॥ गली साँकरी कोउ नहीं आतुर मिलि धाई । कहां कहां पिय रहतहो हमको बिसराई ॥ श्याम कह्यो हँसि वाम सों तुम्हरे निशिवास । सूर हृदयकी कल्पना सुनि भई हुलास ॥ ४३ ॥ राग आसावरी । श्याम वामको सुख दै बोले रैनि तुम्हारे आऊंगो । मात पिता जिय त्रास धरत हौं तऊ आइ सुख पाऊंगो ॥ तुव मिलबेकी साध भुजा भरि उरसों कुच परसाऊंगो । नैन बिशाल भाल उर बैठे ते तुव हाथ कहाऊंगो ॥ तव तनु परसि काम दुख मेटौं जीवन सफल कराऊंगो । सुनहु सूर अधरन रस अँचवो दुहुँ मन तृपा बुझाऊंगो ॥ ४४ ॥ राग गूजरी ॥ सुनि सुनि बचन नारि मुसुकानी। गई सदन अति ह्वै उतावली आनँद सहित लजानी ॥ फूली फिरति कहति नहिं काहू मीन मिल्यो

T

जनु पानी बारंबार श्याम रति रसकी कहीं प्रगट करि वानी ॥ वासर कल्प समान न बीतत कैसे हुँ रैनि तुलानी । सूर देखि गति गत पतंगकी अवधि जानि हरपानी ॥४५॥ राग कल्याण ॥ राधिका गेह हरि देह बासी । और त्रिय घरन घर तनु प्रकासी ॥ ब्रह्मपूरण एक द्वितीय नहिं कोऊ । राधिका सबै हरि सबै कोऊ ॥ दीपसें दीप जैसे उजारी । तैसेही ब्रह्म घर घर बिहारी ॥ खंडिता वचन हित यह उपाई । कबहुँ कहुँ जात कहुँ नाहिं कन्हाई ॥ जन्मको सफल हरि इहै पावै । नारि रस वचन श्रवण न सुनावै ॥ सूर प्रभु अनतही गमन कीन्हों । तहां नाहिं गए जहां बचन दीन्हों ॥ ४६ ॥ राग टोडी ॥ श्याम गए सुख सुखमाके धाम। देखत हर्ष भई मनवाम ॥ आतुर मंदिर गए समाइ । प्यारी प्रेम उठी झहराइ ॥ श्याम भामिनी परम उतार । कोककला रस करत बिचार ॥ बोलत पिय नाहिं आवति पास । गद्गद बानी कहति उदास ॥ धाइ जाइ पति अंकम लाइ । हाहा कहि लेत बलाइ ॥ अति आतुर पतिके नति काम । कहा प्रकृति पाई यह वाम ॥ बाँह गहत कीन्हों धन मान । तब हरिकीन्हें एक सयान ॥ तब प्यारी चरणन शिरधारी । काम व्यथा जान्यो सुकुमारी ॥ अल्प हँसी मुख हेरि लजानी । सूरज प्रभु त्रिय मनकी जानी ॥ ४७ ॥ राग गुंडलार ॥ श्याम कर भामिनी मुख सँवारचो । बसन तनु दूरि करि सबल भुज अंकभरि कामरिस वाम परि निदरि धारचो । अधर दशनन भरे कठिन कुच उरलरे परे सुख सेज मन सुराछे दोऊ । मनो कुँभिलाइ रहे मैन से मल्लदोउ कोक परवीन घटि नहीं कोऊ । अंग विह्वल भए नैन नैनन नए लजित रति अंत त्रिय कंत भारी । सूर धनि धन्य सुखमा नारि वश श्याम याम युग भई पतिते नन्यारी ॥४८॥ राग विहागरो ॥ चंद्रावली श्याम मग जोवति । कबहुँ सेज करझारि सँवारति कबहुँ मलयरज भोवति ॥ कबहुँ नैन अलसात जानिकै जल लै लै पुनि धोवति । कबहुँ भवन कबहूं आँगन ह्वै ऐसै रैनि बिगोवति ॥ कबहुँक विरह जरति अति व्याकुल आकुलता मनमो अति । सूर श्याम बहु रवन रवन पिय यह कहि तब गुण तोवति ॥ ४९ ॥ राग ललित ॥ ऐसेहि ऐसेहि रैनि विहानी । चंद्रमलीन चिरैया बोलीं सुनी कागकी वानी ॥ वे लुब्धे अनतहिं काहूके मनकी आश भुलानी। कपटी कुटिल क्रूर कहा जानै श्यामनाम जिय आनी ॥ कोकिल श्याम श्याम अलि देखो श्याम रंगहै पानी। श्याम जलद अहि श्याम कहावत सूर श्याम सों बानी॥५०॥ राग गुंडमलार॥ वाम संग श्याम त्रययाम जागे। कोक विद्या निपुण सकल गुण मेप पुन सुरति संग्राम जुरि नहीं भागे ॥ अंग आलस भरे नैन निद्रा ढरे नेक सेज्यापरे निशा बीती । सूर प्रभु नंदसुत चले अकुलाइके गए ता धाम रसकाम जीती ॥५१॥ राग विभास ॥ चंद्रावलि धाम श्याम भोर भए आएजू । इत रिस करि रही वाम रैनि जागी चारि याम देख्यो जों द्वार कान्ह ठाढे सुखदायेजू ॥ मंदिरते रही निहारि मनही मन देत गारि ऐसे कपटी कठोर आए निशि बीते। रिस नहीं सखि सँभारि बैठि चली नारि ठाढे गिरिधारि निरखि छबि नख शिखहीते ॥ विनु गुनबनी हृदय माल ता बिच नख छत रसाल लोचन दोउ दराशिलाल जैसी रिस गाढी। जावक रँग लग्यो भाल वदन भुज पर विशाल पीक पलक अधर झलक. वाम प्रीति गाढी ॥ क्यों आए कौन काज नाना करि अंग साजे उलटे आभूषण शृंगार निरखतहौ जाने । ताहीके जाहु श्याम जाके निशि बसे धाम मेरे गृह कहा काम सूर दास गाने ॥ ५२ ॥ राग विलावल ॥ तहीं जाहु जहिं रैनि बसे हो । काहेको दाहन हो आए अंग अंग देखति चिह्न जैसे हो अरगजे अंग मरगजी माला वसन सुगंध भरेसे हो । काजर अधर कपोलन बंदन लोचन अरुन घरेसे हो ॥ पलकनि पीक मुकुर लै देखो एकोन हौ अनैसें हों । सूरदास प्रभु

पीडेब लैगठ नागरि अंक भरेसे हो ॥९३॥ राग सारंग॥ तहँइ जाहु जहँ रैनि रहे वासि । कैतव कत दामिनि पद प्रगटत आए मारन दुअन वान कसि ॥ सिथिल सरोज रोर सुठि शोभित शींशहुते कछु पागरही धसि । जावक रस मनौ संबर अरिगण पिया मनाई पदललाट घसि ॥ विन गुणमाल मराल तरनिगति मगन चालपद परत रहत खसि । चंदन चरचित कुच उर उपटित मनु नवघनमें उदित दोउ शशि ॥ सखियन समाचार लिखि पठए तन कागज नखलेखनि रुधिर मसि ॥ सूरदास प्रभु श्रीगोपालहै मानौ जागत भई निशा नशि ॥ ९४ ॥ ॥ राग विलावल ॥ तहँइ जाहु जहां निशा वसेहो । जानतहो पिय चतुर शिरोमणि नागरि जागर रास रसेहो ॥ घूमतहौ मनो प्रिया उरगिनी नव विलास श्रमसे जडसेहो । काजर अधरनि प्रगट देखियतं हो नागवेलि रँग निपट लसेहो॥श्याम उरस्थल पर रेखा मनहुँ गगन शशि उदित दिसेहो । लटपटी पाग महावरके रँग माननि पग पर शीश घंसेहो ॥विगलित वसन मरगजी माला पीठ वलयके चिह्न लसेहो।सूरदास प्रभु प्रिया वचन सुनि नागर नगधर नैक हँसेहो॥९५॥तहँ ई जाहु जहँ रैनि हुते । काहे दुराव करत मनमोहन मिटे चिह्न नाहिं अंग जुते विनही गुन उरहार विराजत परम हियलाइ सुते । विथुरी अलंक अटपटे भूपण काम कुटिल कुच बीच गुते ॥ दशन दाग नखरेखबनीहै भामिनि भवन भले सुगुते । सूर सुदेश अधर मधु फीके लोचन अलस उनींदहुते९६॥तहांई जाहु जहां रैनि गँवाई । काहेको मुँह परसन आए जानति हौं चतुराई ॥ वाके गुण मनते नहिं टारत बोलत नाहीं वैन । याछविपर मैं तन मन वारों पीक विराजित नैन ॥ भली करी यह दरश दिखायो ताते नैन सिराने । सूर श्याम निशिको सुख लूट्यो हमको भया विहाने ॥ ९७ ॥ राग सुघराई ॥ आए लाल ललित भेप किए । पीक कपोल अधर पर काजर जावक दिए ॥ चंदन खौरि मेटि अव आए कुमकुम रंग हिए। पीतांबर तहां डारि कौनको नीलांवरहि लिए॥लालींदे पीरी लै आए देखत पुलकि शिए।सूरदास प्रभु नवल रसीले वोऊ नवल त्रिए॥९८॥ ॥राग सूही॥जागे होजू रावरे है नैना क्यों न खोलौ । भये त्रियाके वश निशि जागे सरवस भोर भए उठि आए भूले कहा डोलौ ॥ चंदन मिटाए तनु अतिही अलसात नागरीकी पीक लागी तो कपोलो । पीतांवर भूलि आए प्यारी जीको पटु ल्याए भोर भए उठे सूर किए आए दोलो ॥ ९९ ॥ ॥ राग विलावल ॥ पीतांबर पट कहा भयो । नीलांवर ओढेहो आए अति दुहुँ डहो नयो ॥ तैसोइ अंग वसनं रँग तैसोइ कहा कहौं यह शोभा । तैसिय वनी मरगजीकेसर ता त्रियके मनलोभा ॥ एते पर क्यों बोलत नाहीं कहा खोइसे आए । सूर श्याम यह अव मैं जानी नागरि चित्त चुराए ॥ ॥६०॥राग भैरव॥ हाहाहो पिय बात कहौ। आप कछू जिय तरक गहत हो तौ तुम मोसों मैं न गहौ॥ कहा चूक हमको पिय लागै रूसि रहेहौ काहेजू । तवहींते वैसेहि हो ठाढे मोतनको नाहिं चाहेजू ॥ अव हमको अपराध क्षमैंगे कृपा करौ मुख बोलोजू।सूर श्याम अव तजो निठुरई गांठि हृदयकी खोलोजू ॥ ६१ ॥ राग विलावल ॥ रूखेहो पिय रूखेहौ । उत्तरको उत्तर न देतहौ देखतही न कछूखेहो ॥ वह चितवनि न होइ नैननकी वचननहूं ते उतहूपेहौ । वह मुखकमल विकास नहीं . रति सायक शिरहि विदूपेहौ ॥ की छुटि गई संपदा करते की ठग ठगे कछूपेहौ । मरेहु जान सूर प्रभु सांचे मदन चोर मिलि मूपेहौ ॥ ६२ ॥ मदनचोर सों जानि मुपायो । अपनी लाली खोइ पीककी लाली पलकनि पायो॥ह्वांते गए चतुरई लीन्हें सो सव उनहि छपायो॥आलस अवल जम्हात अंग ऐंडात गात दरशायो । कंचन खोय कांच लै आये विढतो भलो फवायो । सूर कहूँ घर पर मन नाहीं जैसे हाल करायो ॥ ६३ ॥ राग काफी ॥ लाल उनींदे नयना आलस भरि आए । अरुझि काम

T

की बेलि सों कौने बिरमाए ॥ सिथिल पाग दस्तारकी जावक रँग भीने। पाँइपरे अपवश करे तब सरवस दीने॥ लाली मेरे लालकी सबही तन ढीले। लाली ले लालनगए आए मुख पीले॥ बिन गुन माल हिये लसैं पिय प्रीति निसानी। सखी रसाल हमको दई तुम देहु बिरानी॥ पग डगमग इत को धरौ उतको दृग धाए। अभ्यंतर अंतर बसे पिय मोमन भाए॥ उलटि तहां पग धारिए ज्यासों मनमान्यो। छपदकंज तजि बेलिसों लटि प्रेम नजान्यो॥ तबहँसि बोले श्यामजी तुमते को प्यारी। तुम बिनु कल मोको नहीं अतिही सुखकारी॥ वचन चतुरई छांडिदेहु कहा पढि आए। सूर श्याम गुणराशि हौ नीके प्रगटाए॥६४॥राग सुघराई॥आए लाल यामिनी जागेसे भोर।नील कलेवर कोमल ऊपर रगडि गए कुच जे कठोर॥निशिवसि रहे मानिनीके गृह ह्यां उठि आए भोर। सूरदास प्रभु वचन बनावत अब चोरत मनमोर॥ ६५॥ आए लाल ललित भेष किए। पीक कपोल अधर पर काजर जावक भाल दिए॥ चंदन खौरि मेटि अब आए कुमकुम रंग हिए। पीतांबर कहां डारि कौनको नीलांबरहि लिए॥ लालींदै पियरी लैआए देखत पुलकि जिए। सूरदास प्रभु नवल रसीले वोऊ नवल त्रिए॥ ६६॥ मैं जानी जिय जहँ रति मानी। तुम आएहौ ललना जब चिरिआं चुहचुहानी॥ मुखकी बात कहा कहौं ठानी बात नहीं पहिचानी। येते पर अँखियां रससानी अरु पगिया लपटानी॥ भालै जावकरंग बनानी अधरैं अंजन प्रगट जानी।बिन गुण बनी माल सब अंगन उलटे सकल निसानी॥सूरदास प्रभु गुन निधानी अंतर गतिकी मैं सब जानी।धनि त्रिय तुमको जो सुखदानी संगम जागत रैनि बिहानी॥६७॥राग विभास॥ मैं जानी पियबात तुम्हारी।भोर भए मेरे गृह आए ऐसे भोरे भारी॥ ह्यां आए मुख परसन मेरो हृदय टरति नहिं प्यारी। कपट चतुरई दूरि करौजू अपयश लेत रु गारी॥ कहा सांच मैं खोवत करते झूठे कहा फबावति। सूर श्याम नागर नागरि वह हम तुम्हरे मन आवति ॥ ६८॥ राग काफी ॥ रैनि रीझे की बात कहौ। काहेको सकुचत मनमोहन ठाढे क्यों न रहौ॥ पीताँबर कहा भयो तुम्हारो कीधौं लियोगहौ। नीलांबर पहरावन पाई सन्मुख क्योंन चहौ॥ तब हँसि चले श्याम मंदिर तन कछु जिय लाज गहौ। सूर श्याम ह्यांई अब रहिए अति पुनीत तुमहो ॥६९॥ राग बिलावल॥ तुम रीझेकी उनहि रिझाए। हाहा यह पिय प्रगट सुनाऊं कोटिक सौंह दिवाए॥ जावक भाल चिह्न में जान्यो हठकरि पाँय लगाए। नैनन पीक मया उनि कीन्ही अंजन अधर लगाए॥ बिनु गुन माल मिली कहँ तुम को कंकन पीठि देखावहु। सूर श्याम हमतौ यों जानति तुमहू कहि न सुनावहु ॥ ७०॥ माधव नीकी बिधिसों आए। नखरेखा उर मंडित मानो द्वितिया चंद उगाए॥ बिगलित बसन पाग डोलतिहै केहरि चाल चलाये। सर्बसु आनि जु रहे सूर प्रभु उत मेरे मन भाए॥ पाउँ धारिए वाम धाम जहँ चारों याम गँवाए॥७१॥राग बिलावल॥आजु हरि पायोहै सुँह माँग्यो।जबते तुमसों बिचारचो मनसिज दैसिलवारचो त्याग्यो॥ कहुँ जावक कहुँ बने तमोर रँग कहुँ अंग सेंदुर दाग्यो। मानौ इन छूटे घायलको जहां तहां शोणित लाग्यो ॥ नख मानो चंद्र बाण साजिकै झझकारत उर आग्यो। सूरदास माननि रण जीत्यो समर संग डारि रण भाग्यो॥ ७२॥ आजु हरि रैनि उनींदे आए॥ अंजन अधर ललाट महाउर नैन तमोर खवाए। बिनु गुनमाल बिराजत उर पर चंदन खौरि लगाए। मगन देह शिरपाग लटपटी जावक रंग रँगाए। हृदय सुभग नख रेख बिराजत कंकन पीठि बनाए। सूरदास प्रभु इहै अचंभव तीन तिलक कहाँ पाए॥ ७३॥ आजु हरि आलसंग भरे। कबहुँक बाँह जोरि ऐंडावत बहुत जम्हात खरे॥ बैठोगे की पांव धारिए देखत नैन

सिराने। साँझ आय इक दरशन दीन्हों की अब होत विहाने ॥ कबके द्वार भए पिय ठाढे भोरे बडे कन्हाई। सूर श्याम ह्यां सुरति करत वह ह्यां तुम झेर लगाई ॥ ७४ ॥ सौंह करनको भोरहीं तुम मेरे आए। रैनि करत सुख अनतहीं ताके मन भाए॥ अँग अँग भूषण औरसे माँगे कहुँ पाए। देखि थकित यह रूपको लोचन अरुनाए। मान कियो वोहि मानिनी धनि पाइ पराए॥ यह चतुराई कहँ पढी उनहीं समुझाए । सूरदास प्रभु सांचिले उपमा कविगाए॥७५॥राग गौरी ॥ तुमको कमलनैन कवि गावत। वदन कमल उपमा यह सांची ता गुनको प्रगटावत।सुंदर कर कमलनकी शोभा चरणकमल कहवावत।और अंग कहि कहा बखानो इतनेहिको गुण गावत॥श्याम नाम अद्भुत यह वाणी श्रवण सुनत सुख पावत। सूरदास प्रभु ग्वाल सँगाती जानी जाति जनावत॥ ७६॥ तुम न्याय कहावत कमलनैन । कमलचरण करकमल वदन छवि अरज सुनावत मधुर बैन ॥ प्रात प्रगट रति रविहि जनावत हुलसत आवत अंक दैन । निशिदै द्वार कपाट सदलवधु मधुपति प्यावत परमचैन ॥ मिलेहु मांझ उदास अनत चित वसत सदा जल एक ऐन । सूर कपट फल तबहिं पाइहौ अपनी अरप जब दैहै भैन ॥ ७७ ॥राग भैरव ॥ धीर धरहु फल पावहुगे । अपनेही पियके सुख चांडे कबहूं तौ वश आवहुगे ॥ हमसों कहत औरकी औरै इन बातन मन भावहुगे। कबहुँ राधिका मान करैगी अंतर विरह जनावहुगे ॥ तब चरित्र हमहीं देखेंगी जैसे नाच नचावहुगे। सूर श्याम अति चतुर कहावत चतुराई बिसरावहुगे॥ ७८॥ राग देवगंधार ॥ यह कहि प्यारी भवन गई। रीझे श्याम देखि वा छवि पर रिस सुख सुंदरई ॥ द्वारकपाट दियो गाढे करि कर आपने बनाई। नेक नहीं कहुँ संधि बचाई पौढि रही तब जाई ॥ यहि अंतर हरि अंतर्यामी जो कछु करे सु होई। जहां नारि सुख मूँदि पौढि रही तहां संग रहे सोई ॥ जो देखे ह्यां संग विराजत चली त्रिया झहराई। एक श्याम आंगनही देखे इक गृह रहे समाई॥ उतको वे अति विनय करतहैं इक अंकम भरिलीनी। सूर श्याम मनहरन कहावहु मनहरिके वश कीनी ॥ ७९॥ राग कल्याण ॥ तब नागरि रिस भूलि गई। पुलकि अंक अँगिया उर दरकी अंग अनंग जई ॥ अंकम भरि पिय प्यारी लीन्हीं निशि सुख वासरि दीन्हों। मान छँडाइ हुलास बढायो सुफल मनोरथ कीन्हों ॥ तब निजधाम श्याम पगधारे तहां सहचरी आई। सूरज प्रभु रसभरी नागरी देखि रही मनलाई ॥ ८० ॥ राग आसावरी॥ चंद्रावली हरषसों बैठी तहां सहचरी आई हो। औरै वदन और अँग शोभा देखि रही चखलाई हो ॥ कहा आज अति हरषित बैठी कहा लूटिसी पाई हो। क्यों अँग शिथिल मरगजी सारी यह छवि कही न जाई हो॥मोसों कहा दुराव करतिहै कहा रही शिरनाई हो। मैं जानी तोहिं मिले सूर प्रभु यशुमति कुँवर कन्हाई हो॥८१॥राग आसावरी ॥चंद्रावली करति चतुराई सुनत वचन सुख मूँदि रही। ज्वाब नहीं कछु देत सखी क्यों हाँ नाहीं कछु बैन कही ॥ गूँगे गुरकी दशा भई है पूरण श्याम सोहाग सही। आये श्याम सदन सुखभारी दुखनिवारि आनंद करी। वहै ध्यान हरिके अनुरागी वह लीला चितते न टरी ॥ तब बोली मोसों कछु बूझति कहा कहां मुख बनै नहीं। सूर श्याम युवती मनमोहन तिनको गुण नाहिं परत कही ॥ ८२ ॥ राग बिलावल ॥ हाहा कहि चंद्रावलि मोसों हरिके गुण मैंहूं सुनि लेउँ। श्रवणन मग सुनि हृदय प्रकाशो पुनि पुनि उत्तर देउँ ॥ की तोहिं मिले तीर यमुनाके की तोहिं मिले भवनही माँझ। कहीं तोहिं मेरे गृह आए मानो अस्त होत रवि साँझ॥ कहूं वामके धाम बसे निशि भोर सदन गए मेरे आइ। सूर श्याम जो चरित उपायो कहन चहौं मुख कह्यो न जाई ॥ ८३ ॥रागगौरी ॥ अब तो कहे बनैगी।

माई । कहा श्याम अचरज सो कीन्हों कहत कह्यो नहिं जाई ॥ कैसे लाल अनतते आए कैसे तेरे गेह । कैसे मान कियो क्यों मिटिगए कैसे बढ्यो सनेह ॥ तब गद्गद वाणी मुख प्रगटी सुन सजनी दै कान।सूरज प्रभुके चरित सुनाऊँ जैसे बिसरयो मान॥८४॥राग बिलावल॥प्रातसमै मेरे मोहन आए कुंचित केश कमल मुख ऊपर हृदय रहो वन अलिकुल छाए॥डगमग चाल परत न सूधे पग इहि बिधि तौ मेरे मन भाए । कहुँ कहुँ पीक कहूं काजर कहुँ नखरेखा अति बनत सुहाए ॥ मो तन बीच निरखि मुसुकाने छोरि पीतपट अंक दुराए॥सूर श्याम माधव बलि बलि अब श्याम जानि हौं पाए॥८५॥राग गौरी॥मैं हरि सों हो मान कियो री।आवत देखि आन बनितारति द्वार कपाट दियो री॥अपनेही कर संकर सारी संधि संधि सियो री । जो देखो तो सेज समूरति कांप्यो रिसानि हियो री॥ जब झुकि चली भवनते बाहर तब हटि लोट लियो री । कहा कहौं कछु कहत न आवै हेतु गोविंद वियो री ॥ बिसरि गई सब रोष हरष मन पुनि फिरि मदन जियो री । सूरदास प्रभु अति रति नागर छलि सुख अमृत पियो री ॥८६॥ राग बिलावल ॥ तबहींते भयो हरष हियो री । वैसे आइ चरित ए कीन्हें सदन पैठि मन चोरि लियो री । अंग वाम छबि शेष देखिकै रिस उपजी जियभारी । क्रोध गयो उर आनँद उपज्यो सुख तनु दशा बिसारी ॥ ऐसे चरित कौनको आवैं जे कीने गिरिधारी । सूर श्याम रतिपतिके नायक सब लायक बनवारी ॥ ८७ ॥ राग भैरव ॥ नँदनंदन सुखदायक हैं । नैन सैनदै हरंत नारि मन काम कामतन दायक हैं ॥ कबहूं रैनि बसत काहूके कबहुँ भोर उठि आवत हैं । सुनहु सूर जेइ जेइ मनभावत तेइ तेइ रँग उपजावत हैं ॥ ८८ ॥ राग बिलावल ॥ अनतहि रैनि रहे कहुँ श्याम । भोर भए आए निज धाम ॥ नागरि सहज रही मनमाहीं । नंदसुवन निशि अनत न जाहीं॥महरसदनकी मेरें गेह।हृदय है त्रिय इहै सनेह ॥ आये श्याम रही मुख हेरि ।मन मन करन लगी अवसेरि ॥ रतिरस चिह्न नारिके वानि । सूर हँसे राधा पहिचानि ॥ ८९ ॥ राग रामकली॥आज बने पिय रूप अगाध । परउपकाज हेतु तनु धारयो पुरवत सब मन साध ॥ धर्म नीति यह कहा पढी जू हमहूं बात सुनावहु । कहो कहां काको सुख दीनों काहेन प्रगट बतावहु ॥ धनि उपकार करत डोलतहौ आज बात यह जानी।सूर श्याम गिरिधर गुण नागर अंग निरखि पहिचानी॥९०॥राग गूजरी ॥ पिय छबि निरखि हँसति त्रियभारी।कहां महाउर पाग रँगाई यह शोभा इक न्यारी ॥ अरुणनयन अलसात देखियत पलक पीक लपटानो । अधर दशन छत बंदन राजत बंधुकपुर अलिमानो ॥ हृदय रुचिर मोतिनकी माला नखरेखा तेहि तीर।बिनु गुणमाल सूरके स्वामी कुंकुम श्यामशरीर ॥ ९१ ॥ ॥राग बिलावल॥धन्य आजु यह दरशदियो । धन्य धन्य जासों अनुरागे तन जानी नहिं और बियो॥भले श्याम वह भली भावती भले भली मिल भली करी । यह मेरे जिय अतिहि अचंभित तौ बिछुरत क्यों एक घरी ॥ जाहु तहीं सुख दीनो मोको वै सुनिकै रिस पावैंगी । सूर श्याम अतिचतुर कहावत बहुरो मनन मिलावैंगी ॥ ९२ ॥ क्यों आये उठि भोर इहां । काहेको इतनो शरमाने रैनिरहे फिरि जाहु तहां ॥ हमको कहा इती गरुआई उनही क्यों न सम्हारोजू । उनआए ह्यां नाहीं जान्यो अजहूं लौं पगधारौ जू ॥ हमहूं बोलि बड़ाई लीजो डर उनको हमहूंकोहै । सूर श्याम तिनहीं सुख दीजै जो बिलसैं सँग तुमको लै ॥ ९३ ॥ राग रामकली ॥ उनहीको मन राखे काम । ह्यां तुम आए हौजू नाहीं बात सुनतहौ नाहीं श्याम ॥ देखो अंग अंग प्रतिशोभा मैंतो भूलीहों यहिरूप । धनि पिय बने वनी वेऊ हैं इक इक रूप अनूप ॥ सो छबि मोहिं देखावन आए मायाकरी बहुत हरिआजु। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि वह उरसिकनी बन्यो समाजु ॥ ९४ ॥ राग बिलावल ॥ रसिक रसिकई जानिपरी । नैननते अब न्यारे हूजै तबहींते अति रिसनि भरी । तुम जोवन अरु सो नवजोबनि

येते पर सब गुणनि भरी । लाजनहीं मेरे गृह आवत जाहु जाहु करि त्रिय झह री ॥ अंजन अधर कपोलन वंदन पीक पलक छबि देखि डरी । सूर श्याम रति चिह्न देखावन मेरे आए भले जु हरी ॥ ॥ ९५ ॥ राग धनाश्री ॥ श्याम त्रिया सन्मुख नहिं जोवत । कबहुँ नैनकी कोर निहारत कबहुँ वदन पुनि गोवत ॥ मन मन हँसत त्रसत तनु परगट सुनत भावती बात । खंडित वचन सुनत प्यारी के पुलक होत सब गात ॥ इह सुख सूरदास कछु जानै प्रभु अपनेको भाव । श्रीराधा रिस करति निरखि सुख सो छबि पर ललचाव ॥ ९६ ॥ पियको सुख प्यारी नहिं जानै । जोइ आवत सोइ सोइ कहडारत जाहु जाहु तुम गानै । काहेको मोहिं डाहन आए रैनिदेत सुख वाको । भली नवेली नीकी पाई जो जाको सो ताको । चंदन वंदन प्रिय अँग कुमकुम शेष लिए ह्यां आए । सूर श्याम यह तुमहि बड़ाई औरनको शरमाए ॥९७॥ राग बिलावल ॥ औरनको छबि कहा देखावत। तुमहीको भावत मनमोहन हम देखत रिस पावत॥आपुनको भइ बडी प्रतिष्ठा जावक भाल लगाए। याको अरथ नहीं कोउ जानत मारत सबन लजाए।पियनिधरक हम अति सकुचतहैं दर्पणलै मुखदेखो। सूर श्याम क्यों बोलत नाहीं क्यों हम तन नाहिं पेखो९८राग गौरी ॥श्याम हँसे प्यारी मुख हेरो। रिसहि उठी झहराय कह्यो यह वश कीन्हों मनमेरो॥जाय हँसो पिय ताही आगे मैं रीझी अति भारी। ऐसे हँसि हँसि ताहि रिझावहु देउँ कहा अब गारी॥होत अवार गमन अब कीजै धरणी कहा निहारत। सूर श्याम मनकी मैं जानी ताके गुणहि विचारत ॥९९॥ राग देवगंधार ॥ मैं जानी पिय मनकी बात । धरनी पग नख कहा करोवत अब सीखे ए घात ॥ तुम जानत जिय हमहि सयाने अरु सब लोग अयाने । रैनि वसत कहुँ भोर हमारे आवत नहीं लजाने ॥ यह चतुरई पढी ताहीपै सो गुण हमते न्यारो । धनि धनि सूरदासके स्वामी काहेः हम न बिसारो ॥ २०० ॥ मैं जाने होजू ललना तहीं न सिधारिए जहांनयो नेहरा । मुँहकी इल भलई मोहूसों करन आए जिय की जासों ताहीं सों तुम बिन सूनो वाको गेहरा ॥ निशिके सुखकी कहे देत अधर नैना उर नख लागे छबि देहरा । वेगि सँवारे पाँइ धारिए सूरके स्वामी नतर भीजैगो पियरो पट आवतहै पिय मेहरा ॥१॥ राग मलार ॥ ठाढे रहो आँगनही हो पिय जौलौं मेह न नख शिख भीजो । परन देहु बडी बडी बूँदें तुम चीर उतारि और बस्त्र पहिरौ तब गेह देहरी पांव दीजौ ॥ कहिए बात रैनिकी सांची ता पीछे सोहैं की जो । सूर श्याम तुमहौ बहु नायक देह सुधारि मोहिं छीजो ॥ २ ॥ मोहूसों निठुरई ठानी मोहन प्यारे काहेको आवन कह्यो सांचे । प्रीतिके वचन बाचे विरह अनल आंचे अपने गरजको तुम एक पांइ नाचे ॥ भलेहोजू जाने लाल अरगजे भीने माल केसरि तिलक भाल मैन मंत्र काचे। निशि चिह्न चीन्हें सूर श्याम रति भीने ताहीके सिधारो पिय जाके रंग राचे ॥३॥ राग मालकौशिक॥तुम जिनि सकुचो प्यारे लाल मेरे जो त्रिय सों रति मानी ताहीके रहो अब । मैं इतनेहींमें भलो मानौ प्रीतम जो मेरे आँगन पाँव धारे आपन जब ॥ नैन तृप्त भए दरश देखतही श्रवण तृप्त भए वचन सुने तब । सूरदास प्रभु चरण छुए कहति रोम रोम पुलकित अंग भए सब ॥ ४ ॥ राग कान्हरो ॥ नैन चपलता कहां गँवाई । मोसों कहा दुरावत नागर नागरि रैनि जगाई ॥ ताहीके रँग अरुण भएहैं धनि यह सुंदरताई । मनो अरुण अंबुज पर बैठे मत्त भृंग रस आई ॥ उडि न सकत ऐसे मतवारे लागत पलक जँभाई । सुनहु सूर यह अंग माधुरी आलस भरे कन्हाई ॥ ५ ॥ राग बिलावल॥ नैनकी चंचलता कहा कीन्हें भीने रंग कौनकेहो श्याम हमहूँसों कहत दुरावत । औगनिको वदन देखिवेको नेम लियो ताके पलकनि राखे भार भेर नए आवत ॥ पुहुप गंध लोभ

T

भँवर उडि न सकत फिरि बैठत जा समीप रतिमानी संग लिए आवत रतिकीरति गावत। सूरदास प्रभु प्यारे प्यारी रसवस कीन्हें सुखकी हमहि बनावत ॥ ६ ॥ राग कान्हरो ॥ जाके रस रैनि आजु जागे हो लाल जाई। जावक तिलक भाल दीयो है नंदलाल बिनु गुन बनी माल कहत अनोखी अरु बातनि बनाई॥ अधर अंजन दाग मिट्योहैं पीक पराग और मिटी बंदनकी ललाई। अंग अंग शिथिल भएहौ प्रेम सुरके स्वामी मिटि गई चंचलताई॥ ॥ ७ ॥ रंग भरि आएहौ मेरे ललना बातैं कहतहौ अटपटी। अतिः अलसात जम्हातहौ प्यारे पिय प्रगट त्रिया प्रताप छूटत नहिंन अंतरकी गटी॥ यह चतुराई अधिकाई कहाँ पाई श्याम वाके प्रेमकी गढि पढेहौ पटी। सूरदास प्रभु गिरिधर बहुनायक तन मन नैन चटपटी ॥ ८ ॥ ॥ राग ईमन ॥ डोलत महल महल इहै टहल हम जानति तुम बहु नाइक पीये। आयेहौ सुरति किए ठाठकरख लिये सकसकी धकधकी हिये। छूटे बंदन अरु पागकी बांधनि छुटी लटपटे पेच अट पटे दिये। सूरदास प्रभुहौ बहुनायक मेरे पाँव धारे बैठो जु बैठो भली किये ॥ ९ ॥ महल महल अब डोलतहौ। इहै कामते धाम बिसारयो बूझे काहि न बोलतहौ॥ बहुनायककी आजु मैं जानी कहा चतुरई तोलतहौ। निशि रस कियो भोर पुनि अटके शिथिल अंग पुनि डोलतहौ ॥ टटके चिह्न पाछिले न्यारे धकधकात उर जोलतहौ ॥ जाहु चले गुन प्रगट सूर प्रभु कहा चतुरई छोलत हौ ॥ १० ॥ अँग अँग रंग भरे आए हौ। रंगभरी पाग भाल रँग शोभा रंग रंग नैन पगाए हौ॥रँग कपोल रँग पलकनि शोभा अधरन श्याम रँगाए हौ। नख छत रंग चारु उर रेखा रति रँग रैनि जगाए हौ ॥ कंकण वलय पीठि गड़ि लागे उरपर छाप बनाए हौ। सूर श्याम वामा रँग पागे अनु रागे मन भाए हौ ॥ ११ ॥राग विलावल॥बारबार मैं कहतिहौं पिय तहाँ सिधारो। आएहौ मन हर-नको हरि नाम तुम्हारो॥भली बनी छबि आजुकी क्यों लेत जम्हाई। रैनि आज सोए नहीं रतिकाम जगाई ॥ वह रति तुम रतिनाथहौ हम कैसे भावै। सूर श्यामते बहु गुणी जे तुमहिं रिझावै॥ १२ ॥ राग सोरठ॥ सकुचत श्याम कहत मृदुबानी। किनि देख्यो किनि कही बात यह मोहुजूर कहै आनी ॥याते वचन बोलि नहिं आवत रिस पावत हौ भारी। जोरि कहति बातैं तुम आगे खोटी ब्रजकी नारी॥तुमहूंते ऐसीको प्यारी सौंह करो जो मानों। सुनहु सूर जो बूझति मोको मैं काहुन पहि-चानों ॥ १३ ॥ राग विलावल॥को पति आइ तुम्हारी सोंहनि। वा तियको अनुराग देखियत प्रगट रावरी भौंहनि ॥ तुलसीको कहा नीम प्रगट कियो मोहीते करि वोहनि। प्रात आइ मनु पोपन लागे आए घालन खोहनि ॥ मुँहहींकी हमसों मिलवत जिय बसत जहाँ मनमोहनि। सूर सुबस घर छाँडि हमारो क्यों रति मानत खोहनि ॥ १४ ॥ राग भैरव ॥ बिन बोले पिय रहिए जू। नाहीं कही कहै कहा ताको अब ऐसे जिनि दहिए जू ॥ मौंन रहौ तौ कछू गँवावहु इन बातन कछु लहि ए जू। सौंह कहा करिहौ सुनि पावहिं सन्मुख ह्वै धौं कहिए जू ॥ एतेपर कहा वादन लागे कैसे रिस मन सहिए जू। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि रसिकहि सब गुण चहिए जू ॥१५राग विलावल॥ आइ गई ब्रजनारी तहाँ। सौंह करत पिय प्यारी आगे आनँद विरह महा ॥ प्यारी हँसि देखी सखियनको अंतर रिसहै भारी। नैन सैन दै अंग देखावति पिय शोभा अधिकारी॥ श्याम रहे मुख मूँदि सकुचिकै युवति परस्पर हेरैं। सूरदास प्रभु अँग अनूप छबि कहँ पायो केहि केरैं ॥१६॥ तब नागरी कहति सखियन सों एतेपर क्यों सौंह करैं। दरशन प्रात देत है हमको निशि औरन के चित्त हरैं ॥ तुमहीं देखि लेहु अँगबानक एतेपर क्यों सही परैं। कृपा करैं अब तहीं सिधारैं मो

आगे ते अब जु टरै ॥ यह छबि देखि सनाथ भई मैं अब ताहीपर जाइ ढरें । सूर श्याम रिस देखि चले डरि कहौ सखी अब ह्यां न फिरैं ॥१७॥ राग बिहागरो॥श्याम गए त्रिय मान कियो।देखो मोहिं दोष तुम देती उन ऐसे मन चोरि लियो ॥ जाहु सदन तुमहूं सब अपने मैं बैठी हौं धाम । जानदेहु अब ह्यां जनि आवै ऐसेनको कहा काम ॥ अनतहि बसत अनतही डोलत आवत किरिन प्रकास । सुनहु सूर पुनि तौ कहि आवै तनगि गए ता पास ॥ १८॥ अथ राधाजूको मान ॥ राग बिलावल॥यह कहि कै त्रिय धाम गई । रिसनि भरी नख शिख लौं प्यारी जोवन गर्व मई ॥ सखी चली गृह देखि दशा यह हठ करि बैठी जाइ । बोलत नहीं मान करि हरिसों हरि अंतर रहे आइ ॥ यहि अंतर युवती सब आईं जहां श्याम घर द्वारे । प्रिया मान करि बैठि रही है रिस करि क्रोध तुम्हारे ॥ तुम आवत अतिही झहरानी कहा करी चतुराई । सुनत सूर ए बात चकित पिय अतिहि गए मुरझाई ॥ ॥१९॥राग बिहागरो॥बहुरि नागरी मान कियो।लोचन भरि भरि ढारि दिए दोउ अतितनु बिरह हियो॥ देखतही देखत भए व्याकुल त्रिय कारण अकुलाने । वै गुन करत होत अब काचे कहियत परम सयाने ॥ यह सुनिकै दूती हरि पठई देखि जाय अनुमान । सूर श्याम यह कहतहि पठई तुरत तजहि जेहि मान ॥ २० ॥ राग केदारो ॥ दूती दई श्याम पठाइ । और मुख कछु बातन आवै तहां बैठी जाइ ॥ प्रिया मन परवाह नाहीं कोटि आवै जाहिं । सौति शाल सलाइ बैठी डुलति इत उत नाहिं ॥ भीति बिन कह चित्र रेखै रही दूती हेरि । सूर प्रभु आतुर पठाई करत मन अवसेरि ॥ ॥ २१ ॥ राग कान्हरो॥ दूती मन अवसेर करै । श्याम मनावन मोहिं पठाई यह कतहूं चितवै न टरै॥ तब कहि उठी मान अति कीन्हों बहुत करी हरि कहौ करौ । ऐसे बिनवै नहीं जाति हैं अब कबहूं जनि उनहिं ठरौ ॥ मैं आवति यमुनातट ते व्रज सखी एक यह बात कही । सुनहु सूर मैं रहि न सकी गृह कही श्यामकी प्रकृति सही ॥ २२ ॥ राग बिहागरो ॥अब द्वारेते टरत न श्याम।अब पर घर की सौंह करत है भूलि करौ नहिं ऐसे काम ॥ अब तू मान तजै जिनि उनसों इहै कहन आई तेरे धाम । अब समुझी औरौं समुझयो वै हम जब कहैं करें तब ताम ॥ अब मोको यह जानि परी है काहूके न बसे कहुँ याम । सूरदास दूती की वाणी सुनति धरति मनही मन वाम ॥ २३ ॥ राग सूही ॥ जब दूती यह वचन कह्यो । तब जाने हरि द्वारे ठाढे उर उमँग्यो रिस नहीं रह्यो ॥ काहेको हरिद्वार खरेहैं किन राखे कहि जीभ गरे । मौन गहें मैंही कहि आयौं तू काहेको रिसनि जरे ॥ चतुर दूतिका जानि लई जिय अब बोली गयो मान सबै । सूर श्यामपै आतुर आई कहत आनकी आन फबै॥२४॥राग केदारो॥काहि मनाऊं श्यामलाल बाल जोरें नहिं डीठि।मुखहूं जो बोलै तौ ममहीकी लहिये ऐसी तिहारी अहीठि ॥ अपनीसी बहुत कही सुनि सुनि उन सबै सही बारू की बूँद ताको कहाकरै बसीठि । सूरदासके पिय प्यारी आपुहीं जाइ मनाय लीजे जैसी बयारि बहै तैसी ओढिए जू पीठि ॥ २५ ॥ ललन तुम्हारी प्यारी आजु मनायो न मानति । बूझि न परनि जानि का बैठी कियो जु इत रिस तुमही लै कोटि अवगुण गानति॥भरि भरि अँखियन नीर लेति पैढा रति नाहीं अतिरिस कँपति अधर फरकि करि भ्रुकुटी तानति । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि आपुन चलिए तौ भली बाँनति॥२६॥राग पूर्वी ॥ हौं कैसेके ल्याऊँ जो मरम पाऊँ श्याम वाकी मान मानो गढ वै भयो । तनु कंचन गिरि प्रगट कियो तामें बसनकोटि रच्यो अंचल ड्योढी ओट दियो ॥ वचन पौरिआबोल न खोलै मुख पौरि मूँदि रह्यो ॥ मोहन भौंह कमान नैना रिसके बान ताते जाइ न निकट गयो ॥ सामदाम दण्ड भेद सबै मैं करि देख्यो सूरदास प्रभु चतुर कहावत

T

आपुन चलिए जो तुमहूं पै जाय लयो ॥ २७॥ राग नट॥ विहरत मानसरसकुमारि। कैसेहूँ निकसत नहीं हो रही करि मनुहारि॥ मौन पारि अपार रचि अवगाह अंश जु वारि। मन गह्यो वै विडरत नाहीं थकित प्रगट पुकारि॥ सूर श्याम सरोज लोचन बुलन जन जलचारि। ग्राह ग्राहक प्राण चाहक करत तहाँ डर डारि॥ चिकुर सइबर निकरि अरुझाति सकाति नाहिं निरुवारि। नील अंचल पत्र पद्मिनि उरज जलज निहारि॥ रच्योरचि रुचि मान मानिनि मनमराल मुरारि। सूर आपुन आनिए गहि बाँह नारि निकारि॥२८॥ राग विहागरो॥ यह सुनि श्याम विरह भरे। कहुँ मुकुट कहुँ कटि पीतांबर मुरछि धरणि परे॥ युवति भरि अंकवारि लीन्हों है कहा गिरिधारि। आपुही चलि बाँह गहिए अंक लीजै नारि॥ अतिहि व्याकुल होत काहे धरौ धीरज श्याम। सूर प्रभु तुम बडे नागर विवश कीन्हें काम॥२९॥राग रामकली॥ श्यामहि धीरज दै पुनि आई। वाणी इहै प्रकाशत मुखमें व्याकुल बडे कन्हाई॥ बारंबार नैन दोउ ढारत परे मदन जंजाल। धरणि रहे मुरझाइ बिलोके कहा कहौं बेहाल॥ बैठी आइ अनमनी ह्वैके बारबार पछितानी। सूर श्याम मिलिकै सुख देहिन जो तुम बडी सयानी॥ ३०॥ तुही प्रिया भावती नाहिन आन। निशि दिन मन मन करत मनोहर रसवश केलि निदान॥ ध्यान विलास दरश संभ्रम मिलि मानत मानिनि मान। अनुनय करत विवश बोलतहैं दै परिरंभण दान॥ प्रथम समागम ते नानाविधि चरित तिहारे गान। सूर श्याम कह वर अंतर सुनि सुयश आपने कान॥३१॥राग सारंग॥ श्यामा तू अति श्यामहि भावै। बैठत उठत चलत गउचारत तेरिय लीला गावै। पीतै पीत वसन भूषण सजि पीत धात अँगलावै। चंद्रानन सुनि मोर चन्द्रिका माथे मुकुट बनावै॥ अति अनुराग सैन संभ्रम मिलि संग परमसुख पावै। बिछुरत तोहि कासि राधा कहि कुंज कुंज प्रति धावै॥ तेरो चित्र लिखै अरु निरखै बासर विरह गँवावै। सूरदास रसरसी रसिकसों अंतर क्योंकरि आवै॥ ३२॥ राग विहागरो॥ मन मन पछितायो रहि जैहै। सुनि सुंदरि यह समो गएते पुनि न शूल सहिजैहै॥ मानहु मीन मँजीठ प्रेम रँग तैसेही गहि जैहै। काम हर्ष हरैरे हरि अंमर देखतही वहि जैहै॥ इते भेदकी बात सखी री कत कोऊ कहि जैहै। भरत भवन खनि कूप सूर त्यों मदन अगिनि दहि जैहै॥ ३३॥ रागकेदारो॥ तेई नैन सुहावनेहो नेंक न भावत न्यारे री। पलक ओट प्राण जाते तेरे री ध्यान चकोर चंदा मेरे नैन चितवनि पर चेरे री॥ कमल कुरंग जु मधुप उपमा नाहिं अवै चंचल रहत चितेरे री। सूरदास प्रभुकी तुहि जीवनि कतहि करत त्रिय झेरे री॥ ३४॥ राग आसावरी॥ बनत नहीं राधे मानु किए। नंदलाल आरतकै पठई सौंह करतिहौ शीश छुए॥ जाके पद कमलाकर लीने मन वच क्रम चित उन्हैं दिये। ता प्रभुकी पठईहौं आई तू जु गर्वकी मोट लिये॥ हरि मुख कमल सच्यो रस सजनी अति आनंद पीयूप पिये। सूरदास सकल सुख हरि सँग कृपा विमुख कै काल जिए॥ ३५॥ राग सारंग॥ जब जब सुरति करत तब तब डब डबाइ दोउ लोचन उमँगि भरत॥ जैसे मीन कमलदलको चले अधिक अरत। पलक कपाट न होत तबहींते निकसि परत। अंसु परत ढरि ढरि उर ऊपर मुक्ता मनहुँ झरत। सहजगिरा बोलत न बनत हित हेरि हरत। राधा नैन चकोर विना मुख मानहु चंद्र जरत। सूर श्याम तुम्हरे दरशन विन नाहिन धीर धरत॥ ॥ ३६॥ राग सारंग॥ चितै चलि ठुठुकि रहत। तव पद चिह्न परसि रस वश भए आधे वचन कहत॥ किसलय कुसुम पराग अंबपै फेन अहत। कंटक जनु भू कठिन जानियत कष्ट लहत॥

कमल कोश कोमल विभाग अनुराग वहत । सूरदास सुंदर अति शीतल मृदु वै उन सहत ॥ ३७ ॥ हरि तोहिं बारंबार सम्हारे । कहि कहि नाम सकल युवतिनके कहूं नहीं रुचि जेहि उर धारे ॥ कवहुँक आँखि मूँदिकरि चाहत चित धरि ठौरतिहारे । तब प्रसिद्ध लीला वन विहरत अब नाहिं तुमहि बिसारे ॥ जो जाको जैसो करि जानै सो तैसे हित मानै । उलटी रीति तुम्हारी सुनिकै सब अचरज करि जानै । क्यों पतियाँ पठवै नाहिं उनको बाँचि समुझि सुख पावै ॥ सूर श्याम है कुंजधाममें अनत न मन विरमावै ॥ ३८ ॥ राधे हरि तेरो नाम विचारे । तुम्हरेइ गुण ग्रंथित करि माला रसना करसों टारै ॥ लोचन मूँदि ध्यान धरि दृढ करि नेक न पलक उघारै । अंग अंग प्रति रूप माधुरी उरते नहीं बिसारै ॥ ऐसो नेम तुम्हारो पियके कह जिय निठुर तिहारे । सूर श्याम मनकाम पुरावहु उठि चलि कहे हमारे ॥ ३९ ॥ राग बिलावल ॥ चल राधे हरि बोली री । उठि चलि वेगि गहरुकत लावति वचन श्यामकी डोली री ॥ तनु जोवन ऐसे चलि जैहै जनु फागुनकी होरी । भीजि विनशि जाई क्षण भीतर ज्यों कागज की चोली री ॥ तोपर कृपा भई मोहनकी छांडि सबै चो छोली री । सूरदास स्वामी मिलिबेको ताते तू निमोंली री ॥ ४० ॥ राग केदारो ॥ जाके दरशनको जग तरसत ताहि दरश नेक दै री ॥ जाकी मुरलीकी ध्वनि सुर मुनि मोहे तातन नेक चितै री ॥ शिव विरंचि जाको पार न पावत सो तो तेरे चरणन परसतु है री । सूरदास वश तीनि लोक जाके है सो तो वश माई री तू सुख ध्वनि सुनाइ मोहिं लै री ॥ ४१ ॥ राग भूपाली ॥ तुव को है री कौन पठाई तेरी को मानै । तू जु कहति श्याम कौनसे देखे न सुने को पहिचानैं ॥ और कहति कहि नेम लियो ह्यां को वैसी वै जानै । सूरदास प्रभु रसिक बडे तोको पठई अति स्यानै ॥ ॥ ४२ ॥ राग सारंग ॥ अति हठ न कीजै री सुनि ग्वारि । हौं जु कहति तू सुन याते शठ सैर न थको द्वारि ॥ एक समय मोतियनके धोखे हंस चुनतहै ज्वारि । कीजे कहा काम अपनेको जीति मानिए हारि ॥ हौं जो कहतिहौं मान सखी री तनको काज सँवारि । कामी कान्ह कुँवरके ऊपर सरवस दीजै वारि ॥ यह जोवन वर्षाकी नदी ज्यों बोरति कतहि करारि । सूरदास प्रभु अंत मिलहुगी ए बीते दिन चारि ॥ ४३ ॥ राग रामकली ॥ कहा तुम इतनेहिको गर्वानी । जोवन रूप दिवस दशहीको ज्यों अँजुरीको पानी ॥ करि कछु ज्ञान अभिमान जानदे है अब कौन मति ठानी । तन मन जानि याम युग छाया भूलति कहा अयानी ॥ नवसे नदी चलत मर्यादा सूधी सिंधु समानी । सूर इतर ऊपरके बरषे थोरेहि जल इतरानी ॥ ४४ ॥ राग पुरिया ॥ तू चलि प्यारी री एतो हठ छांडि मानि री ॥ परम विचित्र गुण रूप आगरी अतिहि चतुर त्रिय भारी री ॥ मदन मोहन तन मदन दहतहै तेरी उनकी पीरन न्यारी । सूरदास प्रभु विरह विकल हैं नेक न निरखि निहारी री ॥ ४५ ॥ राग बिहागरो ॥ बादि बकति काहेको तू कत आई मेरे घर । वे अति चतुर कहा कहिये जिनि तोसी मूरख लैन पठाई तनु बेधति वचनन शर ॥ उतकी इत इतकी उत मिलवति समुझति नाहिन प्रीति रीतिकोही तू कौन गिरिवर धर ॥ सूरदास प्रभु आनि मिलेंगे छैहैं पग अपने कर ॥ ४६ ॥ ज्यों ज्यों मैं निहोरे करों त्यों त्यों यों बोलति है री अनोखी रूसनहारी ॥ बहियां गहत सतराति कौनपर मगधरी उँगरी कौन पै होत पीरी कारी ॥ कौन करत मान तोसी और न त्रिय आन हठ दूरि करि धरि मेरे कहे आरी । सूरदास प्रभु तेरो पथ जोवत तोहिं तोहिं रट लागी मदन दहत तनुभारी ॥ ४७ ॥ राग मलार ॥ तऊतो गँवारि अहीरि । तोसों कछु नँदनंदन हँसि कह्यो इतनेहीको तू कबकी अन उत्तर बोलति कह्यो नहीं न मानतिही री । श्यामसुंदर हँसि हँसि देत सुनि सुनि करत कानि इक

टकहि ग्वारिनि जु रही री। कहा कहौं हरिसों अब तोसी को मुँहलगाइ वारि फेरि डारौं तोहिं पियके एक रोम परही री। सूरदास प्रभुको कहा कहि बरणौं एती कबहूं काहूकी न सही री॥ ४८॥ राग नट॥ एकतौ लालन लाडनि लडाइ दूजे यौवन बावरी। उनके गरव जिनि भूलि रहै री हमसों करि लीन्हें सुख अनेक दिन दिन दिन चारि होत अधिक चाव री॥ मेरो कह्यो तू मानि री माई सब त्रियानको इहै सुभाव री। मैं जु कहति करि सूर श्याम सों हिलिमिलि रहिए उठत बैसको इहै दाँव री॥४९॥ राग कान्हरो॥ रहि री मानिनि मान न कीजै।यह जोवन अँजरीको जलहै ज्यों गोपाल माँगे त्यों दीजै॥ छिनु छिनु घटति बढति नाहिं रजनी ज्यों ज्यों कलाचंद्रकी छीजै। पूरब पुण्य सुकृत फल तेरो काहेन रूप नैन भरि पीजै॥ सौंह करत तेरे पाँइनकी ऐसे जियनि दशौ दिन जीजै। सूर सु जीवनि सुफल जगतकी वैरी बांधि विवश करि लीजै॥ ५०॥ सुन प्यारी राधिका सुजान। कहिधौं कौन काज सरिहैं री यहि झूठे अभिमान॥ जिनके चरण रमा नित लोलित सब गुण रूपनिधान। तिनके मुखके वचन मनोहर सो तू करति न कान॥ परम चतुर सुंदर सुखकारी तोसी त्रिया न आन। कीजै कहा कृपणकी संपति बिना भोग बिनदान॥ ऐसी व्यथा होत निशि हरिको जिनि हठ करौ विहान। नाहिन कढत औरके काढे सूर मदनके बान॥ ॥ ५१॥ राग रामकली॥ आज हठि बैठी मान किए। महाक्रोध रस अंशतपत मिलि मनु विष विषम पिये॥ अधमुख रहति विरह व्याकुल सिख सूरि मंत्र नाहिं मानै। मूक न तजैं सुनि जाति ज्यों सुधि आए तनु जानै॥ एक लीक बसुधा पर काढी नभतन गोद पसारी। जनु वोहित तजिकै परनको दधि ज्यों अवनि निहारी॥ ज्यों अति दीन सुखी सबही अँग कतहूं शांति न पावै। त्यों विन पियहि त्रिया प्रातहिते एकै बात मनावै॥ कबहुँक भुकति धरनि श्रम जल भरि महा शरद रविसास। इकटक भई चित्र पूतरि ज्यों जीवनकी नहिं आश॥ तब उपचार कियो मैं करकस लै रस पारयो कान। मुरछा जगी नहीं मुख बोली लै बैठी फिरि मान॥ हौं तौ थकी करति बहु जतननि जीकी व्यथा न पाई। बूझहु लाल नवल नागर तुम ए कैसे न बताई॥ शिव आकार दिखायो कछु इक भाव दोष रस नाहीं। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि लै मेली पगछाहीं॥ ५२॥ राग देवगंधार॥ प्रिया पिय नाहिं मनायो मानै। श्रीमुख वचन मधुर मृदुवाणी मादक कठिन कुलिशहूते जानै॥ शोभित सहित सुगंध श्याम कच कलकपोल अरुझाने। मनहु विध्वंसज ग्रस्यो कलानिधि तजत नहीं विनदाने। बालभाव अनुसरति भरति दृग अग्र अंशुकन आने। जनु खंजरीट युगल जठरातुर लेत सुभप अकुलाने॥ गोरेगात लसत जो असितपट और प्रगट पहिचानै। नैन निकट ताटंककी शोभा मंडल कविन बखानै। मानो मन्मथ फंद त्रासते फिरत कुरंग सकानै॥ नासापुटनि सकोचति लोचति विकट भ्रुकुटि धनु तानै। जनु शुक निकट निपट शर साये पटपट सुभट पराने॥ जनु खद्योत चमक चालि शंकित निशि तिमिर हिराने। यह सुनिकै अकुलाइ चले हरि कृत अपराध क्षमानै॥ सूरदास प्रभु मिले परस्पर मानिनि मिलि मुसकाने॥ ५३॥ राग धनाश्री॥ मानि मनायो मोहन री सकुच समेति चली उठि आतुर वनकी गैल गही। बिधिमुख निरखि विमुख करि नोचन पुनि विधुवदन चही॥ दरशत परसत रूप आज निज भूमिनख लेखि कही। पुहुप सुरंग सारंग रिपु ओट देखी तब चतुर लही॥ पानि सुपरसत शीश परस्पर मुसकाने तबही। तण तोरयो गुनजात जितेगुन

काढति रेख मही । सूर श्याम बहुरों मिलि विलसहु जाति अवधि अबही ॥ ५४ ॥ राग सारंग ॥ चली बन
मान मनायो मानि । अंचल ओट पुहुप दिखरायो धरचो शीशपर पानि ॥ शचितन चिते नैन
दोउ मूँदे मुखमहँ अँगुरी आनि । यह तौ चरित गुप्तकी बातें मुसकाने जियजानि ॥ रेखा तीनि
भूमि पर खाँची तृणतोरचो करतानि । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि विलसहु श्याम सुजानि ॥
॥ ५५ ॥ राग गुंड ॥ सैनदै कह्यो वनधाम चलिए श्याम इहै कारिकाम अबआनि मिलिहौं । भावही कह्यो
मन भाव दृढराखिवो दे सुख तुमहिं सँग रंग रलिहैं ॥ जानि पिय अतिहि आतुर नारि आतुरी गई
वन तीर तनु शुद्धि हेती । सूर प्रभु हरष भए कुंजवन तहाँ गए सजत रतिसेज जे निगम नेती ॥
॥ ५६ ॥ राग गुंडमलार ॥ श्यामवन धाम मगवाम जोवैं । कबहुँ रचि सेज अनुमान जिय जिय करत
लता संकेत तर कबहुँ सोवैं ॥ एक छिन इक घरी घरी इक याम सम याम वासर हुते होत
भारी । मनहिं मन साध पुरवत अंग भावकरि धन्य भुज धनि हृदयमिले प्यारी ॥ कबहिं
आवैं सांझ सोच अति जिय माँझ नैन खग इंदु ह्वै रहे दोऊ । सूर प्रभु भामिनी वदन
पूरण चन्द्र रस परस मनहिं अकुलात वोऊ ॥ ५७ ॥ राग नटनारायणी ॥ दूती संग हरिके रही ।
श्याम अति आधीन ह्वैकै जाहु तोसों कही ॥ वेगि आनि मिलाइ मोको परम प्यारी नारि ।
देखि हरि तनुकाम व्याकुल चली मनहिं बिचारि ॥ गई तहँ जहँ करति राधा अंग अंग
शृंगार । सूरके प्रभु नवल गिरिधर संग जानि विहार ॥ ५८ ॥ राग बिहागरो ॥
राधा सखी देखि हरषानी । आतुर श्याम पठाई याको अंतर्गतिकी जानी ॥ वह शोभा निरखत अंग
अँगकी रही निहारि निहारि । चकित देखि नागरि सुख वाको तुरत शृंगार निसारि ॥ ताहि
कह्यो सुख दै चलि हरिको मैं आवति हौं पाछे । वैसहि फिरी सूरके प्रभुपै जहां कुंज गृह काछे ॥
॥ ५९ ॥ राग केदारो ॥ दूती देखि आतुर श्याम । कुंजगृह ते निकसि धाए काम कीन्हों ताम ॥ बोलि
उठी रसाल बाणी धन्य तुव बड़भाग । अबहिं आवति बनी बाला किए मन अनुराग ॥ कहा बरणौं
अंग शोभा नैनन देखों आज । सूर प्रभु नेक धरौ धीरज करौं पूरण काज ॥ ६० ॥ राग ईमन ॥ बड़े
भाग्यके मोटे हौ । ऐसी त्रिया और को पावै बने परस्पर जोटे हौ ॥ वैसिय नारि सुंदरी छोटी तैसेइ
तुम बलि छोटे हौ । पूरवपुण्य सुकृत फल की वह आपु गुननकरि घोटे हौ ॥ परम सुशील सुल-
क्षण नारी तुमहिं त्रिभंगी खोटे हौ । सूर श्याम उनके मन तुमहीं तुम बहुनायक कोटे हौ ॥
॥ ६१ ॥ राग काफी ॥ सुनिहो मोहन तेरी प्राण प्रियाको बरणौ नंदकुमार । जो तुम आदि अंत मेरो
गुण मानहु यह उपकार ॥ चंद्रमुखी भौंहैं कलंक विच चंदन तिलक लिलार । मनु वेनी भुवंगिनि
के परसत स्रवत सुधाकी धार ॥ नैन मीन सरवर आननमें चंचल करत विहार । मानों कर्णफूल
चाराको रवकत बारंबार ॥ वेसरि बनी सुभग नाशा पर मुक्ता परम सुढार । मनों तिल फूल
अधर बिंबाधर दुहुँ बिच बूँद तुषार ॥ ठुठि सुठान ठोढी अति सुंदर सुंदरताको सार । चितवत
चुअत सुधारस मानों रहि गई बूँद मँझार ॥ कंठशिरी उर पदिक विराजत गजमोतिन को हार ।
दहिनावर्त्त देत मनो ध्रुवको मिलि नक्षत्रकी मार ॥ कुच युग कुंभ शुंडिरोमावलि नाभि सु हृदय
अकार । जनु जल सोखि लयो से सविता जोवन गज मतवार ॥ रत्न जटित गजरा बाजूबँद शो-
भा भुजन अपार । फूंदा सुभग फूल फूले मनो मदन विटपकी डार । छीन लंक कटि
किंकिणि ध्वनि बाजत अति झनकार ॥ मौर बाँधि बैठो जनु दूलह मन्मथ आसन तार ।
युगल जंघ जेहरि जरावकी राजत परम उदार । राजहंस गति चलति किशोरी अतिनि

तवके भार ॥ छिटकि रह्यो लहँगा रँग तासँग तन सुखवत सुकुमार । सूर सुअंग सुगंध समूहनि भँवर करत गुंजार ॥ ६२ ॥ राग नट ॥ आज राधिका रूप अन्हायो । देखत बनै कहत नहिं आवै सुखछबि उपमा अंत न पायो ॥ अलबेली अलक तिलक केसरिको ताविच सेंदुर बिंदु बनायो । मानो पून्यो चंद्र खेतचढि लरि सुर भानसों घायल आयो ॥ काननकी बारी अतिराजत मनहुँ मदन रथ चक्र चढायो । मानहु नागजीति मणिमाथे भरिसोहागको छत्र तनायो ॥ बंकति भौंह चपल अतिलोचन वेसरिरस मुकुताहल छायो । मानो मृगनि अमीभाजन भरि पिवत न बन्यो दुहूँ ढरकायो ॥ अधर दशन रसना कोकिल ज्यों तिमिरजीति बिच चिबुक लगायो । मनहुँ देखि रवि कमल प्रकाशत तापर भृंगी सावक स्वायो ॥ कंचुकि श्याम सुगंध सँवारी चौकी पर नग बन्यो बनायो । मानों दीपक उदित भवनमैं तिमिर सकुच शरणागत आयो ॥ भूषण भुजा ललित लटकन वर मनहु मिले अलिपुंज सुहायो । एतेहू पर रूठि सूर प्रभु लै दूती दर्पण देखरायो॥६३॥राग बिलावल॥देखत नवल किशोरी सजनी उपजत अति आनंद । नवसत सजे माधुरी अँग अँग वश कीन्हें नँदनंद ॥ कंबुकंठ ताटंक गंडपर मंडित बदन सरोज।मोहनके मन बांधिवेको मनो पूरी पासि मनोज॥नासा परम अनूपम शोभित लज्जित कीर बिहंग । मानो बिधु अपने कर बनायके तिलप्रसूनके अंग ॥ भुजविलास करकंकण शोभित मिलिराजत अवतंश । तीन रेख कंचनके मानो बहु बनाइ पियअंश ॥ कुंकुम कुचन कंचुकी अंतर मंगल कलश अनंग । मधुपूरण राखे पियकारण मधुर मधुपके अंग ॥ कीरति विशद विमल श्यामाकी श्रीगोपाल अनुराग । गावत सुनत सुखद कर मानो सूर दुरे दुखभाग॥६४॥राग जैतश्री॥नवनागरीहो सकल गुण आगरीहो । हरिभुज ग्रीवाहो शोभाकी सींवाहो श्याम छबीली भावती गौर श्याम छवि पावती ॥ सैसव तामें हे सखी जोबन कियो प्रवेश । कहा कहौं छवि रूपकी नखशिख अंग सुदेश ॥ श्रीपति केलि सरोवरी सैसव जलभरि पूरि । प्रगट भई कुचस्थली सोख्यो जोबन सूरि ॥ छुटे केश मज्जन समय देखि विरुध अहिभोर । भोर कहूं निशिमें रमे उतरि चले अहि ओर । शीश सचिक्कन केशहो बिच श्रीमंत सँवारि ॥ मानहुँ किरनि पतंगते भयो दुधांतमहारि ॥ केसरि आड लिलाटहो बिच सेंदुरको बिंदु । चक्रत जेता नैन मृग जनु बैठो रथ इंदु नैनन ऊपर कहाकहौं ज्यों राजत भ्रुवभंग । जुवा बनावत चंद्रमा चपलहोत सारंग ॥ चंपकली सी नासिका राजत अमल अदोस । तापर मुक्ता यों बन्यो मनो भोरकन ओस ॥ मुक्ता आपु बिकाइहो उरमें छिद्रकराइ । अधर अमृत हित तप करै अधमुख ऊरध पाइ ॥ अधरनकी छबि कहतहौं सदा श्याम अनुकूल । बिंब पँवारे लाजहीं हरपत वरपत फूल ॥ पांति कांति दशनावली रहे तमोल रंग भीज । वंदनसों शशिमें वए मनो सै दामिनि के बीज ॥ गुंजाकीसीं छबि लई मुक्ता अति वडभाग । नैननकी लई श्यामता अधरनको अनुराग ॥ वेसरिके मुक्तामनि निधनि धनि नाशा व्रज नारि । गुरु भृगु सुत बिच भौम हो शशि समीप ग्रह चारि॥खुँटिला सुभग जराइके मुकुता मणि छबि देत । प्रगट भयो घनमध्यते शशि मनो नक्षत्र समेत ॥ सुंदर सुघर कपोलहो रहे तमोर भरिपूर । कंचन संपुट द्वैपला मानहु भरे सिंदूर ॥ चिबुक डिठौना जब दियो मो मन धोखे जात । निकस्यो अलि शिशु कुंजते मनहुँ जानि परभात ॥ जेहि मारग वन वाटिका निकसति आनि सुभाइ । मधुप कमल वन छांडिकै चलत संग लपटाइ ॥ जहां जहां तू पगधरै तहां तहां मन साथ । अति आधीन पिय ह्वै रहै तन मन दै तेरे हाथ ॥ देखि वदनके रूपको मोहन रह्यो लुभाइ । इकटक रह्यो चकोर ज्यों दृष्टि न इत उत जाइ ॥ तोहिं श्याम सोहे

सखी बढी निरंतर प्रीति। तू तन मन धन श्यामके तैं हरि पाए जीति॥ मदन मोहन तू वश कैरे अति प्रवीन नँदलाल। सूरदास गावै सदा कीरति विशद विशाल॥ ६५॥ राग नट॥ राधा संग ललिता लिए। श्याम आतुर जानि बाला गवन आतुर किए॥ किंकिणी ध्वनि श्रवण सुनि हरि अतिहि पुलकित हिए। नारि आवत जानि गिरिवर नहीं धीरज जिए॥ चले आतुर धाइ आगे संग सहचरि विए। सूर प्रभु रतिरंग राचे देखि रीझी त्रिए॥ ६६॥ पिय छबि निरखत नागरी अँगदशा भुलानी। अंतर्गत आनंदभरी ललिता हरपानी॥ सहचरिसों कहि सुमन लै हरि भेंट भराए। अति अधीन पिय ह्वै रहे वश परे डराए॥ मारग सुमन बिछावहीं पग निरखि निहारे। फूले फूले मग घेर कलिआं चुनिडारे। ऐसे वश पिय बामके सुख सूरज जाने। जो जेहि भाव निहारि भजै तेहि तैसोइ माने॥ ॥६७॥ राग पूर्वी॥ पीछे ललिता आगे श्यामा प्यारी ता आगे पिय मारग फूल बिछावत जात। कठिन कठिन कली बीनि करत न्यारी प्यारीके चरण कोमल जानि सकुच अति गडिवेहि डरात॥ दीरघ लता अपने कर निरुवारत ऊंचे लै डारत द्रुम बेली पात। सूरदास प्रभुकी ऐसी अधीनता देखत मेरे नैन सिरात॥ ६८॥ राग कान्हरो॥ वडे वडे वार एँडिन परसत श्यामा पीछे अपने अंचलमें लिए। वेणी गूँथन मिस फूल सुगंध फेट भरे डोलत बोलत नाहिन सकुच हिए॥ अरु कुसुमीसारी में अलक झलक गोरे तनु मनो अहि कुल चंदन वंदन सों पूजा किए। सूरदास प्रभु त्रिय मिलि नैन प्राण सुख भयो चितए करुखिअनि अनकनि दिए ॥ ६९ ॥ राग रामकली ॥ वरन वरन वन फूलि रह्यो । हर्षितह्वै वृषभानुनंदिनी सँग सब सखिन कह्यो॥ कुसुमकली देखत रुचि उपजत यह कहि तिनहि सुनावति। आपुन चुनति गोदलै धारति युवतिन कहति चुनावति॥ हँसत परस्पर दैदै तारी श्याम लिए करबाँही। सूरदास प्रभु काम आतुरे और ध्यान चित नाहीं॥ ७०॥ डोलत बाँकी कुंज गली। व्रजवनिता मृगशावक नैनी बीनति कुसुम कली॥ कमल वदन पर विथुरि रहीं लट कुंचित मनहुँ अली। अधर विंब नासिका मनोहर दामिनि दशन छली॥ नाभि परसलौं रस रोमावलि कुच युग बीच चली। मनहुँ विवरते उरग रिंग्यो तकि गिरिके संधि थली॥ प्रभु नितंब कटि छान हंसगति जघन सघन कदली। चरण महावर नूपुर मणि मे बाजत भाँति भली॥ ओटभए अवलोकि परस्पर बोलत अली अली। सूर सु मोहन लाल रसिक सँग वन घन मांझ रली॥ ७१॥ राग सूरदा॥ सखियन सँग राधे कुँवरि बीनति कुसुमकलियाँ। एक वयक्रम एकहि बानक रूप गुणकी सींव मनभावत सुंदर श्याम लालके कर सोहति रँगीली डलियाँ॥ एक अनूपम माल बनावति एक परस्पर बेनी गूँथति भ्राजति कुंज महलियाँ। सूरदास प्रभु सँग मिलि कौतुक देखत हरप हरप प्यारी अंकम भरियाँ॥ ७२॥ राग कल्याण॥ लेगए धाम वन श्याम प्यारी। रहे पलटाइ दोउ भुजनि लपटाइ कै कह्यो पिय वचन हौ निठुर नारी। विहँसि वृषभानु तनया कहति हम निठुर तुम सुहृद बात वह जिनि चलावो। निठुर अरु सुहृद सो मनहि मन जानिहै कहा वह कथाकी सुरति धावो। परस्पर हँसे दोउ रसे रति रंगमें करत मनकाम फल पुरुष नारी। सूरप्रभु कोक गुणमें निपुणहैं बडे कामबल तोरि रस रह्यो भारी॥ ७३॥ राग सूही बिलावल॥ गिरिधर नारि अबल अति कीन्ही। सबल भुजाधरि अंकम भरि भरि चापि कठिन कुच ऊपर लीन्हीं॥ कोक अनागत क्रीडापर रुचि दूरि करत तनुसारी। कमल करनि कुच गहत लहत पुट देखो वह छबि न्यारी॥ वारवार ललचात साध करि सकुचति पुनि पुनि बाला। सूर श्याम यह काम

करो जिनि धनि धनि मदन गोपाला ॥७४॥ राग रामकली॥ सुता दधिपति सों क्रोधभरी । अम्बर लेत भई खिझि बालहि सारँग संग लरी ॥ तब श्रीपति अति बुद्धि बिचारी मणि लै हाथ धरी । वै अति चतुर नागरी नागर लै मुख मांझ करी ॥ चाखत चरण शेष चलि आयो उदयाचलहि डरी । सूरदास स्वामी लीला उर अंकम लगि उबरी ॥ ७५ ॥ सकुचि तनु उदधि सुता मुसकानी । रवि सारथी सहोदर तापति अंबर लेत लजानी ॥ सारँग पाणि मूँदि मृगनैनी मणि मुख माँह समानी । चरण चापि महि प्रगट करी पिय शेष शीश सहदानी ॥ सूरदास तब कहैं करैं अब लाज बहुरि तब यह मति ठानी । भुज अंकम भरि चापि कठिन कुच श्याम कंठ लपटानी ॥ ७६ ॥ राग बिलावल ॥ वह छबि अंत निहारत श्याम । कबहुँक चुंबन देत उरोज धरि अति सकुचत तब वाम ॥ सन्मुख नैनन जोरति प्यारी निलज भए पिय ऐसे । हाहा करति चरणकर टेकति कहा करत ढँग नैसे ॥ बहुरि काम रस भरे परस्पर रति बिपरीत बढाइ । सूर श्याम रति पति विह्वल करि नागरि रहि मुरझाइ ॥ ७७ ॥ पिय प्यारी तनु श्रमित भए । सकुचि उठी नागरि पट लीन्हों श्याम लजाइ गए ॥ सावधान रति अंग भए पिय प्यारी तन नहिं हेरत । नागरि कुटिल कटाक्षनि हेरति भ्रुकुटी बंकन फेरत ॥ ऐसे गुण तुम किनहि सिखाए तरुणी कटि कसि दीन्हीं । सूर कहति पियसों त्रिय बातैं आज तुमहि मैं चीन्हीं ॥ ॥७८॥ राग धनाश्री ॥ हरषि श्याम त्रिय बांह गही । अपने कर सारी अँग साजत यह इक साध कही ॥ सकुचत नारि वदन मुसकानी उतको चिते रही । कोककला करि पूरण दोऊ त्रिभुवन और नहीं । कुंजभवन सँग मिलि दोउ बैठे शोभा एक चही । सूर श्याम श्यामा शिर वेनी अपने करन गुही ॥ ॥७९॥ मोहन मोहनी अंग शृंगारत। वेनी ललित ललित करि गुंथत निरखत सुंदर माँग सँवारत ॥ शीशफूल धरि पाटी पोंछत फूंदनि झँवा निहारत । वदनबिंद जराइकी बेंदी तापर बनै सुधारत ॥ तरिवन श्रवण नैन दोउ आँजति नासा बेसरि साजत । बीरी मुख भरि चिबुक डिठौना निरखि कपोलनि लाजत ॥ नख शिख सजति शृंगार भावसों जावक चरणन सोहत । सूर श्याम त्रिय अंग सँवारत निरखि आप मनमोहत ॥८०॥ राग ललित॥ ऐसेहि सुख सब रैनि बिहानी । भोर भए व्रज धाम चले दोउ मन मन नारि सिहानी ॥ प्यारी गई वृषभानुपुरा तन श्याम जात नँदधाम । सुखमा महल द्वारही ठाढी उन देखी वह वाम॥ प्रात चले बनते व्रज आए मन मन करत बिचार । सुनहु सूर ठठकत सकुचत ता गृह गए नंदकुमार ॥ ८१॥ अथ बहुरो खंडिता सुखमा घर आए॥ रागदेवगंधार ॥ कितते आएहो नँदलाल । ले भवनमें सब भेद बूझो सुनिहौं वचन रसाल ॥ ऐसी कौन बाल जा धोखे तुम आइ द्वार ह्वै झांके । मिटत नहीं चितवनि हित चितकी उहै टेव नित नितकी मैं पहिचाने नैना बाँके॥ कबहुँ जम्हात कबहुँ अँग मोरत अटपटात मुखबात न आवै रैनि कहूं धौं थाके। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि रसिक रसिकई जानि नाम लेहु रहे जाके॥८२॥ राग ललित ॥ वनतनते आए अति भोर। राति रहे कहुँ गाँइन घेरत आएहो ज्यों चोर॥ अंग२ उलटे आभूषण बनहूं में तुम पावत। बडभागी तुमते नहिं कोई कृपा करत जहँ आवत॥ औचक आइ गए गृह मेरे दुर्लभ दरशन दीन्हों । सूर श्याम निशिहौ कहुँ जागे पावति अँग अँग चीन्हों॥८३॥ राग बिलावल॥ लालउनींदे नैना भए । राजतहैं रतनारे नैना मानहुँ नलिन नए॥ पीक कपोल ललाट महाउर वंदन वलित खए ॥ जनु तनुजामें सच अरुनदल कामके बीज बए । बिन गुनहार पयोधर मुद्रा हृदय सुदेश ठए। अंजन अधर सुमंत्र लिख्यो रति दीक्षा लेन गए ॥ सूर श्याम बिथुरे कच मुखपर नख नाराच हए ॥ ता ऊपर आनंद

इंदु जनु मानहुँ समर जए॥८४॥ राग बिलावल॥ रैनि जागे अतिरस पागे अनुरागे नव त्रिय संग॥मो सन्मुख कत आएहो दहन पियरसमसे नैन अटपटे बैननि तहाँई जाहु जाकेरंग॥ बिन गुन बनी माल पीक कपोलनि लाल जावक तिलक भाल कीन्हें रसवश अंग॥सूरदास प्रभु रजनी बिहाइ आए मेरे जीति अनंग॥८५॥ राग बिलावल॥ भोरभए मुख देखि लजाने। रतिके केलि बेलि सुख सींचति शोभित अरुणनैन अलसाने॥काजर रेख बनी अधरन पर नैनकपोल पीक लपटाने। मनहुँ कंज ऊपर बैठे अलि उड़ि न सकत मकरंद लोभाने॥ है हियहार अलंकृत बिनुगुन आइ सुरति रणजीति सयाने। सूरदास प्रभु पांइ धारिये जानतिहौ परहाथ बिकाने॥८६॥ राग सारंग॥ अरुण उदय बेला अरु नैन। निशिजागे अलसात श्यामघौं मोहन बोलत मधुरे बैन॥ आनन जल प्रसेद गत चलि यों आए मधुकर मधुही लैन। बार बार रजनीसुख सींचति उमँगि उमँगि रस प्रीति दैन॥ क्रीडत सघन कुंज वृंदावन वंशीवट यमुनाके ठैन।सूरदास प्रभु सब विधि नागर पीवतहौ रस परमसचैन॥८७॥ राग बिहागरो॥ आजु निशि कहा हुतेप्यारे। तुमरी सों कछु कहि न जाति छबि अरुण नैन रतनारे॥ मेचक अधर निमेप पीक रुचि सो चिह्न देखि तुम्हारे। हृदयहार बिनही गुणलंकृत मृग मद मिल्यो लिलारे॥ दशन बसन पर छाप हृदय छवि दई वृषभानु सुतारे। अरु देखो मुसुकाइ इतेपर सरवसु हरत हमारे॥ सूर श्याम चतुरई प्रगटभई अगि ते होहु न न्यारे॥८८॥ कहौ श्याम कहाँ रैनि गँवाई। अब ए चिह्न प्रगट देखि अतहै मोसों कौन करत चतुराई॥ लटपटी पाग अलक जो बिथुरी बात कहत आवत अलसाई। तुमसों चतुर सुजान नागरी जाके रस तुम रहे लोभाई॥ सूरदास प्रभु तहँहि सिधारो नौतन प्रीति जहां उपजाई॥८९॥ अथ सुखमाके घर सखी एक आई॥ राग बिभास॥ सुनत सखी तहँ दौरि गई। सुने श्याम सुखमाके आए धाई तरुणि नई॥ कोउ निरखति मुख कोउ निरखति अँग कोउ निरखत रँग और। रैनि कहूं फँग पगे कन्हाई कहति सबै करि रौर॥ तब कहि उठी नारि सुखमा यह भाग्य हमारे आए। सूर श्याम धनि बाम तुम्हारी जिन निशिबश करि पाए॥९०॥ राग सारंग॥ क्यों अब दुरत हैं प्रगट भए। कहत हैं नैन निशाके जागे मानो सरसिज अरुण नए॥ जावक भाल नागरस लोचन मसिरेखा अधरनि जो ठए। बलि या पीठि बचन अलिसोहै बिन गुण कंट हार बनए॥ भुज ताटंक ग्रीव सोहै चंदन चिह्न कपोल दशन ग्रसए। आलिंगन चंदन कुच चर्चित मानो द्वै शशि उरहि उए॥चरण शिथिल अरु चाल डगमगी घूमत घायल समर जए। सरवत सकल अंग शोणित है श्यामा नख सायक जो दए॥ राजत बसन पीत उर राते अति आतुर होइ उलटि लए। सूर सखी कैसे मनमानै सुंदर श्याम कुटिल न गए॥९१॥ राग बिलावल॥ माई आजु लाल लटपटात आए अनुरागे। शोभित भूषण अंग अंग अलस भरे रैनि उनींदे जागे॥ लटपटे शिरपेच पाग छूटे बंदन बागे। सूर श्याम रसिकराइ रसवश कीन्हें सुभाइ जागे जहां सोइ त्रिया बडभागे॥ ९२॥ राग बिभास॥ हो माई आज अनत जागे री मोहन भोरहि मेरे कीन्हों है आवन। शोभित भूषण अंग अंग आलस भरे लैलै लागे अनमिली मिलावन॥ अब कैसे पतिअति हौ प्रीतम सांचे हो सोंहानि बोलनिबाहन बातैं बनावन। सूर श्याम रसिकराइ जावक चिह्न लगाइ अब आये मोहन असल सलावन॥ ९३॥ राग गुजराई॥ आज बन्यौ बन रंग पियारो। ब्रजबनिता मिलि क्यों न निहारो॥ लटपटी पाग महाउर लागी। कुँवरि मनावति अति बडभागी॥ पीक कपोल अधर मसिलागे। आलसवलित सबै निशि जागे॥ कहुँ चंदन कहुँ बंदन की छवि। रैनि रंग अँग अंग रह्यो फबि॥ सूर श्यामके यह छवि देखो। जीवन जन्म सफल करि लेखो॥९४॥

आज बने नव रंग छबीले । डगमगात पग अँग अँग ढीले ॥ जावकपाग रँगी धौं कैसे। जैसे करी कहौ पिय तैसे ॥ बोलत वचन बहुत अलसाने । पीक कपोलनसों लपटाने ॥ कुमकुम हृदय भुज न छबि वंदन । सूर श्याम नारिन मन फंदन ॥ ९५ ॥राग गौरी ॥ आज बने व्रजते बन आवत। यद्यपि हैं अपराध भरे हरि देखतऊ मोहिं भावत ॥ नख रेखा मुक्तावलिके तट अंग अनूप लसी । मनो सुरसरी ईश शीशते लै बिधुकला घसी ॥ केलि करत काहू युवती कर कुमकुम भरि उर दीन्हों । मनो भारती पंचधार ह्वै नभ ते आगम कीन्हों ॥ बीच बीच कमनीय अंगपर श्यामल रेख रही । सूर सुता मनो कनक भूमिपर धार प्रवाह बही ॥ निरखत अंग सूरके प्रभुको प्रगटत भई त्रिवेनी । मन वच कर्म दुरित नाशनको मानहु स्वर्ग निसेनी ॥ ९६ ॥ राग रामकली ॥ सखी शोभा अनूपम अति राजै । नैन कोनकी अंजन रेखा पटतर कहूं न छाजै ॥ खंजरीट मनों ग्रसित पन्नगी यह उपमा कछु आवै । दुग्ध सिंधुकी गरल सुधा ज्यों कोटिक भ्रम उपजावै ॥ की सुर सरिता सुरजतनय तट की पय पिवति भुअंगिनि । की अति मान मानि सागरते उलटी यमुन तरंगिनि ॥ समरारिको सुयश कुयशकी प्रगट एकही काल । किधौं रुचिर राजीवकोशते निकसि चली अलिमाल ॥ सूरदास दासिनि हित करकी हरि हलधरकी जोरी । राधावर निशि रसिक शिरोमणि कवि कुल परी ठगोरी॥९७राग अडानो॥लाल आए हो उनींदे आपुन पौढिये पलका मेरे पलो टिहौं पाइ । मेरी सकुच जियमें कत आनत हौंतो आज्ञाकारिणि हौं तुम जिनि जानौ मोसों औरनिकेसे सुभाइ ॥ यह अचरज आवत इनि बातन मान करत नहिं मानत मोसों आए मान मनाइ । सूर श्यामता वामहि वश करि लीन्ही कंठ लगाइ ॥ ९८ ॥ आजु अति रैनि उनींदे लाल । तुम पौढौ मैं चरण पलोटौं जिय जानि जानौ ख्याल॥सुमन सुगंध सेज है डासी देखति अंग विहाल। मेरे कहे न्हाहु कछ भोजन करौ न मदन गोपाल ॥ निशि श्रम भयो पीर मोहिं आवत सुनत परस्पर वाल । सूर श्याम सुनि वचन कपट त्रिय भरि लीन्ही अंक माल ॥ ९९ ॥ राग बिलावल ॥ श्यामहि सुख दै राधिका निजधाम सिधारी । चितने कहुँ उतरत नहीं श्रीकुंजविहारी ॥ रैनि विपिन रतिरस रह्यो सो मनहि बिचारै । पिय सँगके अँग चिह्नजे दर्पणहि निहारै ॥ यहि अंतर चंद्रावली राधा गृह आई । अंग सिथिल छबि देखिकै जहँ तहँ भरमाई ॥ कह्यो चहति कहतन बने मन मन अनुमानै । सूर श्याम सँग निशि वसी निहचै यह जानै॥२१००॥राग आसावरी ॥चंद्रावलि सखियन सँग लीन्हें राधाके गृह आई हो । आजु अंग शोभा कछु औरै हरि सँग रैनि महाई हो ॥ अबतौ नहीं दुराव रह्यो कछु कहो सांच हम आगे हो । अधर दशन छत उरोजनि नख छत पीक पलक दोउ पागे हो ॥ हम जानी तुम कहौ प्रगट करि श्याम संग सुख माने हो । सुनहु सूर हम सखी परस्पर क्यों न रैनि यश गाने हो ॥ १ ॥राग बिलावल ॥ कहति सखिनसों राधिका तुम कहति कहा री । मेरी सौं की हँसतिहो सुनि चकित महारी ॥ पीक कपोलन यों लग्यो मुखपोछन लागी । कहां श्याम कहाँ मैंरही कबधौं निशि जागी ॥ उरज करज निज करजको गरहार सँवारत । सहज कछुक निशिमें जगी वचनन शर मारत ॥ कहति औरकी औरई मैं तुमहि दुरैहौं । सूर श्याम सँग जो मिलौ तुमसों नहिं कैहौं ॥ २ ॥ राग बिलावल ॥ आजु बनी नवरंग किशोरी । रसिक कुँवर मोहन विन जोरी ॥ विथुरी अलक शिथिल कटि डोरी । कनकलता मनो पवन झकोरी ॥ अधर दशन छत कछु छबि थोरी । दर्पण लै देख्यो मुख गोरी ॥ मुख लूटत अतिही भई भोरी । सूर सखी डारत तृण तोरी ॥ ३ ॥ राग टोडी ॥ आजु बनी वृषभानु कुमारी । गिरिधर वर राधा

तू नारी ॥ हमसों करत दुराव वृथा री । इन बातन तू लहति कहा री ॥ आलस अंग मरगजी सारी । ऐसी छबि कहि कालि कहां री ॥ सूरदास छबिपर बलिहारी । धन्य धन्य तुम दोउ बरनारी ॥ ॥४॥ राग सारंग॥बानक बनी वृषभानु किशोरी । नख शिख सुंदर चिह्न सुरतके अरु मरगजी पटोरी॥उर भुज नील कंचुकी फाटी प्रगटेहैं कुच कोरी । नवघन मध्य देखिअत मानहु नव रवि रस मिसु थोरी। आलस नैन शिथिल कज्जल बल मानि ताटंक न मोरी।मानहु खंजन हंस कंजपर लरत चूँच पढतोरी ॥ बिथुरी लट लटकी भ्रुकुटीपर बिकट माँग नग रोरी । मानहुँ कर कोदंड काम अलि सैन कमल हित जोरी ॥ अति अनुराग पियत पियूष हरि अधर सिंधु हृद थोरी । सूर सखी निशि संग श्यामके प्रगट प्रात भई चोरी॥५॥राग सानुत॥राधे तू अति रंग भरी।मेरे जान मिली मनमोहन अचरा पीक परी ॥ हों जानति हौं फौज मदनकी लूटिलई सगरी । छूटी लट छूटी नकबेसरि मोतिनकी दुलरी ॥ अरुण नैन मुख शरद निशाकर कुसुम गलित कबरी । सूरदास प्रभु गिरिधर के सँग सुरत समुद्र तरी ॥ ६ ॥ राग नट ॥ मैं जानी है री तेरे जियकी बात सोई अरु गात चिह्न कहे देत माई । आलस तनु मोरे भुज जोरे जम्हाइ री अटपटात माई री लागत मोहिं सुहाई वाही पियके मन भाई ॥ बैन ऐन नैन सैन देखिये रसीले शृंगार हार बार बिथरि रहे री रति कँपति देति क्यों न जनाई । सूरदास प्रभुकी सुन जरी आली तेरे अंग अंग भयो उदोत वह हिलनि मिलनि खिलनकी तेरे प्रेम प्रीति जनाई ॥७॥राग सही॥ नहिं दुरत हरि पियको परस । उपजतहै मनको अति आनँद अधरन रँग नैननको अरस ॥ अंचल उडत अधिक छबि लागत नखरेखा उर बनी बरस । मनो जलधर तर बाल कलानिधि कबहुँ प्रगटि दुरि देत दरश ॥ बिथुरी अलक सुदेश देखियत श्रम जलते मिटियो तिलक सरस । सूर सखी बूझेहुँ न बोलते सो कहि धौं तोहिं को न तरस ॥ ॥८॥ राग बिलावल ॥तोहिं छबि राजे री ब्रजराजके संग जागेकी।करसों कर जोरि मिली जम्हात अरुपेंडात होति दुरि मुरि रही अलक लसी आगेकी ॥ कबहूं कबहूं पलक झपकि झपकि आवत ते मनभावत अँखियां अरुण भई प्रेम पागेकी । सूरदास प्रभुको नू प्रगट उमँगि देखत श्याम सुंदर उर लागेकी ॥ ॥९॥ राग देशाख॥ अरी मैं जानि पाए चिह्न दुरें न दुराए।अति अलसात जम्हात पियारी श्यामके काम पुराए ॥ कहा दुराव करति री प्यारी कोटि करै मुख नैन छुराए । सुमनहारसी मरगजी डारी पिय रँग रैनि जगाए ॥ प्रगट नहीं तू करति डरति कहि सुरति सेज रति काम लराए । सूर श्याम तोहिं रस वश कीनी जात न मन बिसराए ॥ १० ॥ राग सारंग ॥ काहेको दुरावति नैन नागरी । जानतिहौं नँदलाल रसिक पिय मिलि सब रैनि जागी री ॥ सुरत समेके मुख तमोर मिलि लोचन परस लाग री । मनहुँ शरद विधु भए पद्मयुग युग मुकुलित अनुराग री ॥ उरज करज मनो शिव शिरपर शशि सारंग सुभाग री । अरुण कपोल अंक अलकै मिलि उरग कामिनी आगरी ॥ हरि पुनि चतुर चतुर अति कामी कै तु रूपकी आगरी । सूरदास प्रभु वश करि लीन्हें धनि त्रिय तेरो सुहाग री ॥ ११ ॥राग टोडी॥लालसों रति मानी जानी कहे देत नैनारी रंगभोए । चंचल अंचल कतहि दुरावति रूप राशि अति मानहु मीन महाउर धोए ॥ पीक कपोलन तरिवनके ढिग झलमलात मोतिन छबि जोए। सूरदास प्रभु छबिपर रीझे जानतिहौं निशि नेक न सोए॥१२॥राग आसावरी॥देख री नख रेख बनी उर।अचला उडत अधिक छबि उपजति मनहुँ उदित शशी दुति दुतिया नर ॥ शोभा कहा कहत बनि आवहि निरखि निराखि नैननिसन पावति । लागति पाइ दशो दिशि भेलति लिए रजनी कर अलिन वदावति ॥ सुनि श्रवण उनमान करतिहौं निगमनेति यह लखनि लखी री ।

मानो विधु जु विधुंत ग्रहण डर आयो तेरे शरण सखीरी ॥ मोतिन माल मुकति मन वांछित हरि हर हरिहि जु आज जपत जप। मनहु दक्ष ऋषि शाप निवारण उभै ईश जिय जानि करत तप ॥ छाँडि सकुच साँचो कहि मोसों हौं जानति मन मरम पराए। सूरदास प्रभु मिलन प्रगट भयो पियको परसु कैसे दुरत दुराए॥१३॥राग बिलावल॥सुरत समैके चिह्न राधिका राजत रंग भरे।जहँ जहँ रति रणकोप कियो प्रीतम कर दशन धरे ॥ आउमिटी छूटी अलक आलस वश लोचन लखि लुकत खरे। मानहु धनुष धरे करसाज्यो जनु तूणके बाण झरे ॥ सिंधुसुता तनु रोम राजि मिलि राजत वरण खरे। मानहुँ विधु मनकामना तीरथ तप करि तीर परे ॥ दशन अंक सहि पीक प्रगट मुख सन्मुख हू न डरे। सूर श्याम शोभा सुखसागर सब अँग भरनि भरे१४राग बिलावल॥ भामिनि शोभा अधिक भईरी। सुपक बिंब शुक खंडित मंडित अधर सुधा मधु लाल लईरी ॥ राजित रुचिर कपोल महावर रद मुद्रावलि नाह दईरी। मनहुँ पीकदल सींचि स्वेदजल आलवाल रति वेलि बईरी ॥ कंचुकि बंद विगलित सुललित छबि उच्च कुचानि नख रेख नई री। मनहु सिंदूर पूर द्युति दरशित कंचन कुंभदरार लई री ॥ आलस भ्रुकुटी अलकैं छूटी मन लूटी पनच सत जूझ जई री। नैन सु बनै कटाक्ष लगे शर शिथिल भई मति मैन ढई री ॥ ढीली नीवी गोरी अति भोरी पियके सँग रँग राग रई री। स्मरज श्रीगोपाल विलासिनि चंद्रवदनि आनंद मई री ॥ १५ ॥ द्वै करजोरि लेत जँभुआई। शोभा कहति बनति नहिं मोपै आजु सखी पियसंगहुते आई॥ सोइ आभा पुनि फेरि फबतहै बिधि आपुन रुचि रचित बनाई। मानहुँ कुमुदिन कनक मेर चढि शशि सन्मुख मृदु सहित सिधाई। शोभित चिकुर ललाट वदनपर कुंचित कुटिल अलक बिथुराई। नागवधू मनु अमी कोशते लै मधुपान अमर ह्वै आई॥ झुकि झुकि परत प्रेम मदमाती उमँगि उमँगि तन देति दिखाई। सूरदास प्रभु सखी सयानी चुटकिनि देत तबहिं लखि पाई॥१६॥राग धनाश्री॥आलस भरि शोभित भामिनी। राजत सुभग नैन रतनारे हरिसँग जागत गईं यामिनी॥ बाँह उँचाइ जोरि जमुहानी ऐंडानी कमनीय कामिनी। भुज छूटे छबि यों लागी मनो टूटिभई द्वैटूक दामिनी॥ कुच उतंग वर रचित कंचुकी विलसति त्रिवली उदरछामिनी। देखि अति मनहु मदन नृप तब हरि रसजीते राधा नामिनी॥ बिथुरी अलक शिथिल कटि डोरी नखछत छरित मराल गामिनी। दुगुन सुरति सजि श्रीगुपाल भजि समुदित सूरज दास स्वामिनी॥१७॥राग नट॥ खंजन नैन सुरंग रस माते। अतिशय चारु विमल दृग चंचल पिंजरा न समाते॥ बसे कहूँ सोइ बात कही सखि रहे इहाँ केहि नाते। सोइ संज्ञा देखति औरासी विकल उदास कलाते॥ चलि चलि आवत श्रवण निकट अति सकुचति टंक फँदाते। सूरदास अंजन गुण अटके नतरु कबै उडिजाते॥१८॥राग बिलावल॥भोरहि शोभा शिरसिंदूर।युगल पाट घन घटा बीच मनो उदय कियो नवसूर॥ मन्मथ रथ आनंद कंद सुख चंद्रकला परिपूर। चक्र ताटंक निशंक सु दृग मृग जनु रन तम सम जूर॥ सुंदर वर नासिका सुदेशपर बेसरि मुक्तारूर। किधौं तूल तिलफूल निकरकन किधौं असुर गुरचूर। रद सद दामिनि अधर सुधा मधु रपा झपा झकि झूर॥ वचन रचन माधुरी सघरपर कवन कोकिला कूर। उच्च उरोज मनोज नृपतिके जोवन कोटि कँगूर॥ हरि सारि कटि तटि लरकि जाइ जिनि विशद नितंब गरूर। कदली जंघ मराल मंदगति रूप अनूप समूर।सूरदास शोभा स्वामिनि पर वारत सखि तृणतूर१९राग रामकली॥ मोसों कहा दुरावति प्यारी। नंदलाल सँग रैनि वसी री कोककला गुण भारी॥ लोचन पलक पीक अधरनको कैसे

दुरत दुराए। मनो इंदुपर अरुण रहे बसि प्रेम परस्पर आए ॥ अधर दशन छतकी अति शोभा उपमा कही न जाइ। मनो कीर फल बिंब चोंचदै भख्यो न गयो उडाइ ॥ कुच नखरेख धनुषकी आकृत मनो शिव शिर शशि राजै॥सुनत सूर प्रियवचन सखी मुख नागरि हँसि मन लाजै॥ ॥ २० ॥ राग धनाश्री ॥ प्यारी सुनत सखी मुखवानी हँसि मुसकाइ रही। नैनन रही लजाइ मुदित चित मानी बात सही ॥ तोसों कहा दुराव करौं री तू प्राणनते प्यारी। कहा कहौं वह मिलनि श्याम की क्रीडा कहति उघारी ॥ रति सुख अंत रची इकलीला कहै कि धरौं दुराइ। सूरदास प्रभुके गुण आली चित्तहि रह्यो समाइ॥२१॥राग सोरठ॥राधा अब जिनि कछू दुरावै। हाहा करि चरणन शिर नावति अपनी सौंह दिवावै ॥ उहै कथा मोसों कहि प्यारी चरित कहा री कीन्हों। जा रस में तू मगनभई है कौन अंग सुख दीन्हों॥उछलत भए सुधाउर घटते सुखमारग न सँभारै। सूर श्याम रस छकी राधिका कहत न बनै विचारै॥२२॥राग गुंडमलार॥श्याम रति अंतर रस इहै कीन्हों। कहत पुनि पुनि कहा अंग अंबरजहू मैं रही सकुच गहि आप लीन्हों ॥ कियो तब मैं कहा लरी सारंग सों सारंग धर धरति तब चरण चापी। शेष सहसों फननि मणिनकी ज्योति अति त्रासते कंठ लपटाइ कांपी ॥ रही उनकी टेक चलै मेरी कहा धरनि गिरिराज भुज सबल धारी। सूर प्रभुके सखी सुनहु गुण रैनिके वे पुरुष मैं कहा करौं नारी॥२३॥राग नट॥आजहौं अधिक हँसीमेरी माई।काम विवश मोसों रति बाढी अवलोकत मुरझाई ॥ रवि शशि कांति उग्र भवन में ठाढीही इकठाई। विस्मय बढी प्रतिबिंब प्रतिह प्रति अंकदई यदुराई ॥ करअंचर मुख मुदित रहीहौं दीन देखि हँसि आई ॥ सूरदास प्रभु निश्चय जानी तबहिं उलटि उरलाई॥२४॥राग आसावरी॥धन्य धन्य वृषभानुकुमारी गिरिवर धर वश कीन्हे री। जोइ जोइ साध करी पिय रसकी सो सब उनको दीन्हे री ॥ तोसी त्रिया और को त्रिभुवनमें पुरुष श्यामसे नाहीं री। कोककला पूरण तुम दोऊ अब न कहूं हरिजाहीं री। ऐसे वश तुम भई परस्पर मोसों प्रभु दुरावै री।सूर सखी आनँद न सम्हारति नागरि कंठ लगावै री॥ ॥२५॥राग बिलावल॥श्याम गए उठि भोरही वृंदाके धाम। कामाके गृह निशि बसे पुरयो मनकाम ॥ सांझ गए कहि आइ हैं बहुनायक नाम। सेज सँवारति आशलै ऐसेहि गई याम ॥ अरुण उदय द्वारे खरे देखत भई ताम। रिसनि रही झहराइकै मनहीं मन वाम ॥ चिह्न और अंगनारिके बिन गुन उर दाम। सूरदास प्रभु गुण भरे आलस तनु झाम॥२६॥अथ वृन्दागृह गमन॥राग बिलावल॥लालन आए रैनि गँवाई। निशि भई छीन बोलि तमचुर खग ग्वालन ढीली गाई ॥ अरुन किरनि मुख पंकज विगलित मधुप लियो रसजाइ। चंद्रमलीन भयो दिनमणि ते कुमुद गए कुँभिलाइ ॥ आजकी रैनि गई तुहिं जागत तुम बिनु कछु न सोहाइ। सूर श्याम या दरश परश बिनु निशि गई नींद हेराइ ॥ २७॥ राग बिलावल॥नीके आए गिरिवर धारी नागर।तुम्हरी चिंताते अरुन नैन भए सकल निशाके जागर ॥ रतिके समाचार लिखि पठए सुभग कलेवर कागर। जियकी कृपा हम तबहीं जानी भोर भुलाए आगर ॥ बलि बलि गई मुखारविंदकी सुरति सिंधु रससागर। जाके रसवश भए· हो सूर प्रभु ऐसी व कौन उजागर ॥ २८ ॥ राग विभास ॥ तुम्हारे पूजिये पिय पाँइ। बहुत बात उपजति है तुमको कहत बनाइ बनाई ॥ अरुण अधर श्याम भए कैसे आए पट लपटाई ॥ चारु कपोल पीक कहाँ लागी उरज पत्र लिखाई ॥ नंदकुमार जहाँ निशिजागे तहँ सुख देखौं जाई। सूरदास सब भाँति अटपटी अब मन क्यों पति आई॥२९॥राग बिलावल॥ मोहन काहेको लजात।मूंदि कर मुख रहे सन्मुख कहि न आवत बात ॥ अहि लता रँग भिद्यो अधरन लग्यो दीपक जात।

रुचिर कुसुम बंधूप मानो समय गथ कुंभिलात ॥ नैन मुद्रित सकुच जैसे उदय शशि जलजात। निकसि चल युग पूतरी जनु अलि उरझि अधगात ॥ चारि याम जु निशि उनींदे आलस वश हि जँभात। सूर ऐसे मदनमूरति निरखिं रति मुसुकात ॥ सकल निशि जागे के हैं नैन। जानति हौ अति किए कोकनद आन खानि सुख चैन ॥ लटपटी पाग चाल गति उलटी रसन अटपटे वैन। लगत पलक उघरत न उघारे मनु खंडित रस ऐन ॥ तमचुर टेरतही उठि धाए अब दूनो दुखदैन। जानी प्रीति सूर प्रभु अब हम सुरति भई गति मैन ॥३०॥ आजु और छबि नंदकिशोर। मिलि रिस रुचि लोचन भए रोचन चितवत चित्त पराई ओर ॥ शोभित पीठि प्रगट कर कंकन शोभित हार हिए बिनु डोर। शोभित पीतवसन दोउ राते अधरन अंजन नैन तमोर ॥ नखशिख ज्यों शृंगार अटपटे पाए मनहु पराए चोर। फूले फिरत दिखावत औरन निडर भए दै हँसनि अकोर ॥ कहत न बनै सुनतहु न आवै वैसँधि वर्णत कविन कठोर ॥ अचरज क्यों न होत इन बां तन सूर ग्रहण देखे जनु भोर॥३१॥राग बिलावल मूही॥अतिहि अरुण हरि नैन तिहारे।मानहु रति रस भए रँग मगे करत केलि पिय पलक न पारे ॥ मंद मंद डोलत शंकितसे शोभित मध्य मनोहर तारे। मनहु कमल संपुट महँ वीधे उड न सकत चंचल अलिवारे॥झलमलात राति रैनि जनावत अति रस मत्त भ्रमत अनियारे। मानहु सकल जगत जीतनको कामबाण खरसान सँवारे॥अटपटात अलसात पलकपट मूँदत कबहूँ करत उघारे। मनहुँ मुदित मर्कत मणि आँगन खेलत खंजरीट चटकारे ॥ बारबार अवलोकि कुरुखियन कपटनेह मन हरत हमारे। सूर श्याम सुखदायक लोचन दुखमोचन लोचन रतनारे॥३२॥राग बिलावल॥नहिंन दुरत नैना रतनारे।बंधुप कुसुम परशोभित सुंदर श्याम शिली मुखतारे॥कुटिल अलक रही विथुरि वदन पर सकुच सहित हरि नरम निहारे।भौंह शिथिलमनुमदन धनुष गुन गरे कोकनद वान बिसारे। मूँदेई आवत नैन आलस वशछीन भए उघरत न उघारे। सूरदास प्रभु सोइ पै कहौ तुमको भामिनि जहँ रति रण हारे ॥ ३३ ॥ रति संग्राम वीररस माते। हैं हरि शूर शिरोमणि अजहूँ नहिंन सँभारत ताते ॥ आनहि बरन भए दोउ लोचन अपने सहज बिनाते। मानहुँ भीर परी जोधनकी भए क्रोध अतिराते ॥ परिमल लुब्ध मधुप जहाँ बैठत उडि न सकत तेहिठाते । मनहुँ मदनके हैं शरपाए फोंक बाहिरी घाते ॥ बैठिजात अलसात उनींदे क्रमरउठत तहांते। मनो मूरछा कटाक्ष नाटसल कठिन सकत हियराते ॥ डगमगात घूमत जनु घायल शोभा सुभट कलाते। सूरदास प्रभु रतिरण जीते अवसकात धौंकातें ॥ ३४ ॥ नैन उनींद भए रँग राते। मनहु सुरंग सुमन पर सजनी फिरत भृंग मदमाते ॥ प्रेम पराग पाँखुरी पल दल प्रफुलित मदन लताते। सुभग सुवास बिलास बिलोकनि प्रगट प्रीति करि ताते ॥ तैसोइ मारुत मंद जम्हावरि मिली मुदित छबियाते। सींचे सूर श्याम माननिकर हितसों केलि कलाते॥३५॥राग रामकली॥आए सुरति रंग रसमाते। मानहु छिन विश्राम नमित पिय श्रमित भएहैं ताते॥डगमगात मग धरत परत पग उठत न वेगि तहांते।मनु गजमत्त चरण संकट कर गहि आनत तेहिठाते॥उर नख छत कंकन छत पाछे शोभितहै रुहिराते ॥ मदन सुभटके बाण लागि मनो निकसि गए वोहि घाते ॥ साचि करत आपने बोलनि टरत न मर्यादाते। सूर श्याम कहि गए आइहैं पगधारि तेहि नाते ॥ ३६ ॥ राग बिलावल ॥ अरुण नैन राजत प्रभु मोरे। राति सुख सुरति किए सखि सँग मनोजीत समर मन्मथ शर जोरे ॥ अति उनींद अलसात कमंगति गोलक चपल सिथिल कछु थोरे।मनहु कमलके कोश तमी तम उठत रहत छवि रिपुदल दौरे ॥ शोभित सुभग सजल प्रतिकारे संगम छबितारे तनु डोरे। मनो भारतीके भँवर मीन शिशु

जात तरल चितवत चित चोरे ॥ वरणि न जाइ कहाँलगि वरणौं प्रेमजलधि वेला वल वोरे। सूरदास सों कौन त्रिया जिनि हरिके अंग अंग वल तोरे॥३७॥काहेको पिय भोरही मेरे गृह आए । इतने गुण हमपै कहाँ जे रैनि रमाए ॥ ताहीके पगुधारिए चकृत मैं जाने। विन गुण गडि माला रही नहिं कहुँ विहराने ॥ आएहौ सुखदेनको ऐसेइ हितकारी । सूर श्याम तुम योगको को वैसी नारी ॥ ३८ ॥ कृपा करी उठि भोरहीं मेरे गृह आए । अव हम भई वडभागिनी निशिचिह्न देखाए ॥ जावक भाल नसों दियो नीके वश पाए। नैन देखि चकृत भई क्यों पान खवाए ॥ अधरन पर काजरवन्यो वहु रंग कहाए। वंदन विंदुली भालकी भुज आप वनाए ॥ यह मोसों तुमहीं कहौ उरछत अरु नाए । सूर श्याम यशराशिहौ धनि त्रिया हँसाए ॥ ३९ ॥ राग भैरव ॥ जाहु तहीं कहा सोचतहौ । जासँग रैनि विहात न जानी भोर भए तेहि मोचतहौ ॥ औरनको छिन युग वीततहै तुम निहचीते नागरहौ । झूमत नैन जम्हात वारही रतिसंग्राम उजागरहौ ॥ मैं अव कहति तिहारे हितकी ताहीके गृह सोइ रहो॥सूर श्याम वैसी त्रिय केहै वह रस वाही वनन लहौ॥४०॥हमहींपर पिय रूखेहो॥वोलत नहीं मूक क्यों ह्वैरहे अँग रँगहीन कछू खेहो॥तव निरखत औरहि हित कीधौं हमसों कहुँ तुम लूखेहो।तव हँसि वदन मिलत आजुहि कछु और भए निठुर पूषेहो ॥ डगमगात पग उतहि परत है चित चंचल उत हूषेहौ।सूरदास प्रभु साँच भाषिगए त्रिया अंग वल मूषेहो ॥४१॥ राग विलावल॥ हरषि श्याम त्रिय बाँह गही । चूकपरी हमको यह वकसो आवनको कहि गए सही ॥ रिसनउठी झह राइ झटकि भुज छुवत कहा पिय शरम नहीं। भवनगई आतुर ह्वै नागरि जे आई सुख सवै कही ॥ मेरे महल आजु ते आवहु सौंह नंदकी कोटि लही। सूर श्याम जवलौं जग जीवों मिलौं नहीं वरु कामदही ॥ ४२ ॥ राग नट नारायण॥ नागरि निठुर मान गह्यो। पीठदै रिस कापि वैठी फिरिन उतहि चह्यो ॥ श्याम मन अनुमान कीन्हों रिसनि व्याकुल नारि। तनकही रिस खोइ डारौं यह प्रतिज्ञा धारि॥सखी एक स्वभाव अपने गए ताके गेह । यह चरित सव कह्यो तासों चतुरि लख्यो सनेह ॥ गई आतुर नारि ताके लख्यो नैननि कोर। चकित वाला नंद सुतविन लह्यो हठको छोर॥ भुजागहि कहि कियो कारिस कहि सही व्रजग्वारि । सूर प्रभुसों मान कीन्हों हृदय देखि विचारि। ॥४३॥राग कान्हरो ॥ वाँह गह्यो कहि आँगन ल्याई। वहुनायक उनको नाहिं जानति वडी चतुर हौ माई ॥ मैं जो कहति श्रवण सुनि चितधरि जोवन धन सपनेको। चलु गहि भुजा मिलै किन हरि सों कहा निठुर भई तोको ॥ तूँही गहति न वाँह जाइके मोसों वाँह गहावति। सुनहु सूर मैं सौंह करी है तू मोहिं तिनहिं मिलावति ॥ ४४ ॥ कहाकहति तू भिलिहि रहीहै। मोसों करति कहा चतुराई उन इह भेद कही है ॥ जो हठ कर्यो भली नहिं कीन्ही एदिन ऐसेनाहीं । की इहँई पिय को न वुलावै की तहँई चलिजाहीं ॥ वै सव गुण लायक तू नागरि जोवन दिन द्वै चारि। सूर श्यामको मिलि सुख लेहि न पुनि पछितैहै नारि ॥ ४५ ॥ वहुरि पछितैहै री व्रजनारि । देखि जाइ ठाढे मग जोवत सुंदर श्याम मुरारि ॥ ऐसी निठुर नेक नहिं चितवति चंचल नैन पसारि । कहा गर्व या झूठे तनको देखि हाथलै वारि ॥ तजि अभिमान मानरी मानिनि मैं जु करति मनु हारि। सूर हंस स्वाती सुत घोले कवहुँक खात जुवारि ॥ ४६ ॥ राग केदारो ॥ मोसों मानि भावै न मानि लाल मनाइ है री तेरो आँखि न मैं पैयत है । कत सकुचति मैं तौ सव जानति ऐसी प्रीति क्यों दुरैयत है ॥ मेरो विलग मानति यह जानति या वातन में कछु पैयत है । सूर श्याम न्यारे न वूझिये यह मोको नहिं भावै काहे को अनखैयत है ॥ ४७ ॥ राग विलावल ॥ वहुरि मिलौ

गी कालिही चित समुझि सयानी । मेरो कह्यौ न क्यों करै क्यों भई अयानी ॥ अनलहि औषधि अनलहै सब जानिरहीहौ । काहेको हठ करतिहो बेकाज वहींहो ॥ धरणी धर ब्याकुलखरे री गर्व गहेली । सूर कह्यो सुनि मानिलै मैं कहति सहेली ॥ ४८ ॥ राग सोरठ ॥ श्याम धरयो त्रिय मोहन रूप । दूती प्रिया संग इक लीन्हें अंग त्रिभंग अनूप ॥ अंतर द्वार आइ भए ठाढे सुनत त्रियाकी बातैं । सरसबचन जु कहति सखि आगे कहौ मिलैं केहि नातैं ॥ कपटी कुटिल क्रूर कहि आवत यह सुनि सुनि मुसकाने । सूरदास प्रभुहैं बहुनायक तुही कहति यह बाने ॥ ४९ ॥ राग मलार ॥ जौलौं माई हो जीवन भरि जीवों । तब लगि मदन गोपाल लालके पंथ न पानी पीवों॥ करौं न अंजन धरौं न मरकत मृगमद तनु न लगाऊं । हस्त बलय कठिना पटु मेचक कंठ न पोति बनाऊँ ॥ सुनौं न श्रवणन अलि पिक बाणी नैनन नवघन देखों । नील कमल कर धरौं न कबहूँ श्याम सरीखे लेखों ॥ इतनी कहत आइगए मोहन लिये प्रिय दूती संग । छूटि गई रिसटेक मानकी निरखि रसिकके अंग ॥ अति रति लीन भई भामिनि सँग तब करगहि करलीन्हीं । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि मिलि जु सुधासुख दीन्हीं ॥ ५० ॥ राग धनाश्री ॥ कवि गावत हरि मोहन नाम । गाढो मान दूरि करि डारयो हरषभई मन वाम ॥ ऐसे चरित औरको जानै धन्य धन्य नँदलाल । जो ए गुण तौ हरत त्रियन मन अति हरषित भई वाल ॥ मिट्यो काम तनु ताम तुरतही रिझई मदन गोपाल । सूर श्याम रस वश करि लीन्हीं इहै रच्यो इक ख्याल ॥ ५१ ॥ राग मलार॥ सखी री कठिन मानगढ टूट्यो । श्रीगोपाल बिहँसनि बलया तसचल्यो अतिहि गोलनको जूट्यो ॥ करि प्रतिहार तज्यों सुर गोपुर कंच कोट सन फूट्यो । कामअग्नि उपजी उर अंतर मौन सुभट को तब रण छूट्यो ॥ कुच लोचन दोउ लरैं सोहहै भौंह कमान कुटिल शर छूटयो । विद्याचारि गोपालकी सूर तजि सर्वसु लूटयो॥५२॥ राग गुंडमलार ॥ श्याम गुण राशि मानिनि मनाई । रह्यो रस परस्पर मिटयो तनु विरह झर भरी आनंद त्रिय उर न माई ॥ कबहुँ रति सहज कबहुं करति बिपरीत वासरहुते सब रैनि बीती । श्रमित दोउ अंग भए अतिहि बिह्वल परे सेज रति पति अधिक बढी प्रीती ॥ भोरभए चले निज सदन पितु मातके फिरे सकुचे देखि नंद द्वारे । सूर प्रभु श्याम सकुचि गए प्रमुदा धाम कहत ए गुण भले हरि तुम्हारे ॥ ५३ ॥ सुखमाके धामते आए प्रमादाके धाम ॥ राग गुंडमलार ॥ कहाँहै श्याम कहाँ गमन कीन्हों । कहां तुम रहत कबहूं दरश देत नहिं धोखे गए आय हम मानि लीन्हों ॥ नैन आलस भरे चरण उर लरखरे कहाहौ डरेसे कहौ मोसों । रैनि कहुँ बसे त्रिय कौनसों रसेहो. उर करज कसे सो कहौ गोसों ॥ भले जू भले नँदलाल वेऊ भली चरण जावक पाग जिनहि रंगी।सूर प्रभु देखि अँग अँग वानक कुशल मैं रही रीझि वह नारि चंगी ॥ ५४ ॥ राग कल्याण॥सुनत हँसि चले हरि सकुचि भारी।यह कह्यो आजु हम आइहैं गेह तुव तरक जिनि कहौ हम समुझि डारी । नारि आनँद भरी रँगसी ह्वै ढरी द्वार अपने खरी अंग पुलकी । गए कहि सूर प्रभु रैनि बसिहैं आजु सजति शृंगार कछु सकुच कुलकी ॥५५॥ अँग शृंगार सुंदरी बनावै । मिलौंगी श्याम निज धाम करि आजुही रैनि बिलसौं काम मन मनावै ॥ सरस सुमना जात शीश करसों करति श्रीमंत अलक पुनि पुनि सँवारै । मांग सूधी पारि निरखि दर्पण रहति ग्रंथि कुँवरि छाँह पाटी निहारै । कमल खंजन मृगज मीन लोचन जीते सारंग सुतलेति तहां आँजै । हार उरधरति नख शिखहू भूषण भरति सूर प्रभु मिलनहित नारि राजै ॥५६॥ राग कान्हरो॥विधुवदनी अरु कमल निहारै । सुमनासुत लै कमलन मंजित धनपति धामको नाम सँवारै ॥ तरनि तात वनिता सुत ता छवि कमलन रचि रवि ग्रंथित चारै । कमल कमलपर रेख बनावति सारँग रिपु पाहन गति

ढोर ॥ उर हारावलि मेलति कमलन मनहुँ इंदु पारस ढिग पारै ।सूर श्यामके नामहि जीतन कमला पतिके पदहि विचारै ॥ ९७ ॥ राग आसावरी ॥ अँग शृंगार सँवारि नागरी सेज रचत हरि आवहिंगे । सुमन सुगंध रचत तापर लै निरखि आइ सुख पावहिंगे ॥चंदन अगर कुमकुमा मिश्रित श्रमते अंग चढावहिंगे । मैं मनसाध करौंगी सँगमिलि वे मन काम पुरावहिंगे ॥ रति सुख अंत भरौंगी आलस अंकमभरि उरलावहिंगे । रस भीतर मैं मान करौंगी वै गहिचरण मनावहिंगे ॥ आतुर जब देखौं पिय नैनन बचन रचन समुझावहिंगे । सूर श्याम युवती मनमोहन मेरे मनहिं चुरावहिंगे ॥ ९८ ॥ नंदसुवन बहुनायकी अनतहि रहे जाई । वह अभिलाप करतरही ताको बिसराई॥वासर ऐसेही गयो निशि याम तुलानी । नारिपरी अति सोचमें विरहा अकुलानी ॥ आवन कहि गए सांझही अजहूं नहिं आए । कीधौं कतहूं रमिरहे फँगपरे पराए ॥ वेईहैं बहुनायकी लायक गुणभारी । सूर श्याम कुमुदा भवन सुधि करि पगधारी ॥ ९९ ॥ राग केदारो ॥ रहे हरि रैनि कुमुदा गेह । परस्पर दोउ प्रेम भीजे बढ्यो अतिहि सनेह ॥ एक क्षण इक याम बितवति कामरस वशगात।ताहि बीतत याम युग सम गनत ताराजात ॥ उनहिं वैसेइ याहि ऐसे रजनि गई भयो भोर । सूर मोसों करि चतुरई गए नंदकिशोर ॥ ६० ॥ राग नट ॥ कुटिलई करी हरि मोसों चित्त चिंता भरी सुंदरि करति मनगोसों ॥ कहिगए निशि आइहैं हरि अनत बिरमें जाइ । रैनि बीती उदित दिनकर देखि त्रिय मुरझाइ ॥ भवनही मनमारि बैठी सहज सखि इक आइ । देखि तनु अति विरह व्याकुल कहति बचन सुनाइ ॥ बोलि ढिग बैठारि ताको पोंछि लोंचन लोर । सूर प्रभुके विरह व्याकुल सखी लखि मुख ओर ॥ ६१ ॥ राग गौरी ॥ आजु तोहिं काहे आनँद थोर । यह विपरीति सखी तो महियां इन्दु बिन्दु इकठोर ॥ हरदावन संतत अधिकारी ज्यों बिधु चंद्रचकोर । दधि गृह युगल तू क्यों न बनावति बिगसत अंबुज भोर ॥ कंपित श्वास त्रास अति मोकति ज्यों मृग केहरि कोर । सूरदास स्वामी रतिनागर तौ न हरयो मनमोर॥६२॥राग गौरी॥ आजु बिनु आनँदको मुख तेरो । कहा रही मनमारि भोरहीं अतिव्याकुल मनमेरो ॥ मोसों गोप करै जिनि सुंदरि नहिं पावति वह भाव । सुनौं बात कैसी उपजीहै कछु जिनि करै दुराव ॥ तब बोली मधुरी बाणी सों कहा कहौं री तोहिं । तेरे श्याम भले गुण नागर कपटी कुटिल कठोरहिं ॥ निशिवसिवेकी अवधि बदी मोहिं साँझ गए कहि आवन । सूर श्याम अनतहि कहुँ लुब्धे नैनभये दोउ सावन ॥६३॥ राग सोरठ ॥ ऐसे गुण हरिकेरी माई । मैं पहिचानि रहीहौं नीके कुटिल शिरोमणिराई ॥ अब मोसों उनसों कहवनिहै कछु मैं गई बुलावन । आपुहि काल्हि कृपा यह कीन्हीं अजिर करिगए पावन ॥ तोसों मिलै कहूं मेरी सों तिनसों तू यह कहिए । सूरदास प्रभु बोलनि सांचे लाज कछू जिय गहिए ॥६४॥राग बिहागरो ॥ सखी री और सुनहु इक बात । आजु गोपाल हमारे आए उठि करि नहिं मिसि प्रात ॥ कतहूं रैनि उनींदे मोहन अपने गृहतन जात । आगे द्वार नंद हैं ठाढे तातें गए न सकात ॥ डगमगात डग धरत परत पग आलसवंत जम्हात । मानहु मदन दंड दै छाँडे चुटकी दैदै गात ॥ जो मैं कह्यो कहां रहे मोहन तौ सन्मुख मुसकात । तातें कछू न उत्तर आयो सूर श्याम सकुचात ॥ ६५ ॥ राग केदारो ॥ तब हरि यह चतुरई करी । कह्यो मेरे धाम आवन टारदै गए हरी ॥ आपुही श्रीमुख गए कहि सही कैसी परी । सेज रचि सब रैनि जागी तब रिसनि हौं जरी ॥ श्याम देखे द्वार ठाढे मनहिं मन झहरी।कहत सूर सुनाइ हरिको धन्य यह शुभघरी॥६६॥राग बिलावल ॥सखी निरखि अँग अंग श्यामके। कहुँ चंदन कहुँ बंदन रेखा कहुँ काजर छबि लखत वामके ॥ आलसभरे नैन रतनारे चतुरनारि

गी कालिही चित समुझि सयानी । मेरो कह्यौ न क्यों करै क्यों भई अयानी ॥ अनलहि औषधि अनलहै सब जानिरहीहौ । काहेको हठ करतिहो बेकाज वहींहो ॥ धरणी धर व्याकुलखरे री गर्व गहेली । सूर कह्यो सुनि मानिलै मैं कहति सहेली ॥ ४८ ॥ राग सोरठ ॥ श्याम धरयो त्रिय मोहन रूप । दूती प्रिया संग इक लीन्हें अंग त्रिभंग अनूप ॥ अंतर द्वार आइ भए ठाढे सुनत त्रियाकी बातैं । सरसबचन जु कहति सखि आगे कहौ मिलौं केहि नातैं ॥ कपटी कुटिल क्रूर कहि आवत यह सुनि सुनि मुसकाने । सूरदास प्रभुहैं बहुनायक तुही कहति यह बाने ॥ ४९ ॥ राग मलार ॥ जौलौं माई हो जीवन भरि जीवों । तब लगि मदन गोपाल लालके पंथ न पानी पीवों ॥ करौं न अंजन धरौं न मरकत मृगमद तनु न लगाऊं । हस्त वलय कटिना पटु मेचक कंठ न पोति बनाऊँ ॥ सुनौं न श्रवणन अलि पिक बाणी नैनन नवघन देखों । नील कमल कर धरौं न कबहूँ श्याम सरीखे लेखों ॥ इतनी कहत आइगए मोहन लिये त्रिय दूती संग । छूटि गई रिसटेक मानकी निरखि रसिकके अंग ॥ अति रति लीन भई भामिनि सँग तब करगहि करलीन्हों । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि मिलि जु सुधासुख दीन्हों ॥ ५० ॥ राग धनाश्री ॥ कवि गावत हरि मोहन नाम । गाढो मान दूरि करि डारयो हरपभई मन वाम ॥ ऐसे चरित औरको जानै धन्य धन्य नँदलाल । जो ए गुण तौ हरत त्रियन मन अति हरषित भई वाल ॥ मिट्यो काम तनु ताम तुरतही रिझई मदन गोपाल । सूर श्याम रस वश करि लीन्हीं इहै रच्यो इक ख्याल ॥ ५१ ॥ राग मलार॥ सखी री कठिन मानगढ टूट्यो । श्रीगोपाल बिहँसनि बलया तसचल्यो अतिहि गोलनको जूट्यो ॥ करि प्रतिहार तज्यों सुर गोपुर कंच कोट सन फूट्यो । कामअग्नि उपजी उर अंतर मौन सुभट को तव रण छूटयो ॥ कुच लोचन दोउ लरैं सोहहै भौंह कमान कुटिल शर छूटयो । विद्याचारि गोपालकी सूर तजि सर्वसु लूटयो॥५२॥ राग गुंडमलार ॥ श्याम गुण राशि मानिनि मनाई । रह्यो रस परस्पर मिटयो तनु विरह झर भरी आनंद त्रिय उर न माई ॥ कबहुँ रति सहज कबहूं करति विपरीत वासरहुते सब रैनि बीती । श्रमित दोउ अंग भए अतिहि विह्वल परे सेज रति पति अधिक बढी प्रीती ॥ भोरभए चले निज सदन पितु मातके फिरे सकुचे देखि नंद द्वारे । सूर प्रभु श्याम सकुचि गए प्रमुदा धाम कहत ए गुण भले हरि तुम्हारे ॥ ५३ ॥ सुखमाके धामते आए प्रमदाके धाम ॥ राग गुंडमलार ॥ कहाँहै श्याम कहाँ गमन कीन्हों । कहां तुम रहत कबहूं दरश देत नहिं धोखे गए आय हम मानि लीन्हों ॥ नैन आलस भरे चरण उर लरखरे कहाहौ डरेसे कहौ मोसों । रैनि कहुँ बसे त्रिय कौनसों रसेहो उर करज कसे सो कहौ गोसों ॥ भले जू भले नँदलाल वेऊ भली चरण जावक पाग जिनहि रँगी।सूर प्रभु देखि अँग अँग बानक कुशल मैं रही रीझि वह नारि चंगी ॥ ५४ ॥ राग कल्याण॥सुनत हँसि चले हरि सकुचि भारी।यह कह्यो आजु हम आइहैं गेह तुव तरक जिनि कहौ हम समुझि डारी । नारि आनँद भरी राँगसी ह्वै ढरी द्वार अपने खरी अंग पुलकी । गए कहि सूर प्रभु रैनि बसिहैं आजु सजति शृंगार कछु सकुच कुलकी ॥५५॥ अँग शृंगार सुंदरी बनावै । मिलौंगी श्याम निज धाम करि आजुही रैनि विलसौं काम मन मनावै ॥ सरस सुमना जात शीश करसों करति श्रीमंत अलक पुनि पुनि सँवारे । मांग सूधी पारि निरखि दर्पण रहति ग्रंथि कुँवारि छाँह पाटी निहारै । कमल खंजन मृगज मीन लोचन जीते सारंग सुतलेति तहां आँजै । हार उरधरति नख शिखहू भूषण भरति सूर प्रभु मिलनहित नारि राजै ॥५६॥ राग कान्हरो॥ विधुवदनी अरु कमल निहारै । सुमनासुत लै कमलन मंजित धनपति धामको नाम सँवारै ॥ तरनि तात वनिता सुत ता छवि कमलन रचि रवि ग्रंथित चारै । कमल कमलपर रेख बनावति सारँग रिपु वाहन गति

ढोर ॥ उर हारावलि मेलति कमलन मनहुँ इंदु पारस ढिग पारे ।सूर श्यामके नामहि जीतन कमला पतिके पदहि बिचारे ॥ ९७ ॥ राग आसावरी ॥ अँग शृंगार सँवारि नागरी सेज रचत हरि आवहिंगे । सुमन सुगंध रचत तापर लै निरखि आइ सुख पावहिंगे ॥चंदन अगर कुमकुमा मिश्रित श्रमते अंग चढावहिंगे । मैं मनसाध करौंगी सँगमिलि वै मन काम पुरावहिंगे ॥ रति सुख अंत भरौंगी आलस अंकमभरि उरलावहिंगे । रस भीतर मैं मान करौंगी वै गहिचरण मनावहिंगे ॥ आतुर जब देखों पिय नैनन बचन रचन समुझावहिंगे । सूर श्याम युवती मनमोहन मेरे मनहिं चुरावहिंगे ॥ ९८ ॥ नंदसुवन बहुनायकी अनतहि रहे जाई । वह अभिलाप करतरही ताको बिसराई॥वासर ऐसेही गयो निशि याम तुलानी । नारिपरी अति सोचमें बिरहा अकुलानी ॥ आवन कहि गए सांझही अजहूं नहिं आए । कीधौं कतहूं रमिरहे फँगपरे पराए ॥ वेईहैं बहुनायकी लायक गुणभारी । सूर श्याम कुमुदा भवन सुधि करि पगधारी ॥ ९९ ॥ राग केदारो ॥ रहे हरि रैनि कुमुदा गेह । परस्पर दोउ प्रेम भीजे बढ्यो अतिहि सनेह ॥ एक क्षण इक याम बितवति कामरस वशगात।ताहि बीतत याम युग सम गनत ताराजात ॥ उनहिं वैसेइ याहि ऐसे रजनि गई भयो भोर । सूर मोसों करि चतुरई गए नंदकिशोर ॥ ६० ॥ राग नट ॥ कुटिलई करी हरि मोसों चित्त चिंता भरी सुंदरि करति मनगोसों ॥ कहिगए निशि आइहैं हरि अनत बिरमें जाइ । रैनि बीती उदित दिनकर देखि त्रिय मुरझाइ ॥ भवनही मनमारि बैठी सहज सखि इक आइ । देखि तनु अति बिरह व्याकुल कहति बचन सुनाइ ॥ बोलि ढिग बैठारि ताको पोंछि लोंचन लोर । सूर प्रभुके बिरह व्याकुल सखी लखि मुख ओर ॥ ६१ ॥ राग गौरी ॥ आजु तोहिं काहे आनँद थोर । यह बिपरीति सखी तौ माहियां इन्दु बिन्दु इकठोर ॥ हरदावन संतत अधिकारी ज्यों बिधु चंद्रचकोर । दधि गृह युगल तू क्यों न बनावति बिगसत अंबुज भोर ॥ कंपित श्वास त्रास अति मोकति ज्यों मृग केहरि कोर । सूरदास स्वामी रतिनागर तौ न हरचो मनमोर॥६२॥राग गौरी॥ आजु बिनु आनँदको मुख तेरो । कहा रही मनमारि भोरहीं अतिव्याकुल मनमेरो ॥ मोसों गोप करै जिनि सुंदरि नहिं पावति वह भाव । सुनौं बात कैसी उपजीहै कछु जिनि करै दुराव ॥ तब बोली मधुरी वाणी सों कहा कहौं री तोहिं । तेरे श्याम भले गुण नागर कपटी कुटिल कठोरहिं ॥ निशिवसिबेकी अवधि वदी मोहिं साँझ गए कहि आवन । सूर श्याम अनतहि कहुँ लुब्धे नैनभये दोउ सावन ॥६३॥ राग सोरठ ॥ ऐसे गुण हरिकेरी माई । मैं पहिचानि रहीहौं नीके कुटिल शिरोमणिराई ॥ अब मोसों उनसों कहवनिहै कछु मैं गई बुलावन । आपुहि कालिह कृपा यह कीन्हीं अजिर करिगए पावन ॥ तोसों मिले कहूं मेरी सों तिनसों तू यह कहिए । सूरदास प्रभु बोलनि सांचे लाज कछू जिय गहिए ॥६४॥राग बिहागरो ॥ सखीरी और सुनहु इक बात । आजु गोपाल हमारे आए उठि करि नाहिं मिसि प्रात ॥ कतहूं रैनि उनींदे मोहन अपने गृहतन जात । आगे द्वार नंद हैं ठाढे ताते गए न सकात ॥ डगमगात डग धरत परत पग आलसवंत जम्हात । मानहु मदन दंड दै छाँडे चुटकी दैदै गात ॥ जो मैं कह्यो कहां रहे मोहन तौ सन्मुख मुसकात । ताते कछू न उत्तर आयो सूर श्याम सकुचात ॥ ६५ ॥ राग केदारो ॥ तब हरि यह चतुरई करी । कह्यो मेरे धाम आवन टारदै गए हरी ॥ आपुही श्रीमुख गए कहि सही कैसी परी । सेज रचि सब रैनि जागी तब रिसनि हौं जरी ॥ श्याम देखे द्वार ठाढे मनहिं मन झहरी।कहत सूर सुनाइ हरिको धन्य यह शुभघरी॥६६॥राग बिलावल ॥सखी निरखि अँग अंग श्यामके। कहुँ चंदन कहुँ बंदन रेखा कहुँ काजर छबि लखत वामके ॥ आलसभरे नैन रतनारे चतुरनारि

सँग जगे यामके। अपने मन हरि सोच करत यह परी त्रिया फँग कठिन तामके ॥ मान कियो मोतन फिरि बैठी आए हैं यह सुनत नामके। सूर श्याम इक बुद्धि विचारी मनमोहन रति सहित कामके ॥६७॥राग सूही॥श्याम सैनदै सखी बोलाई। यह कहि चली जाउँ गृह अपने तू तो मान कियो री माई ॥ अंतर जाइ भए हरि ठाढे सखी सहज निकसी तहँ जाई। सुख निरखत दोउ हँसे परस्पर भवन जाहु मैं लेउँ मनाई ॥ अंग दिखाइ गई हँसि प्यारी सूरति चिह्ननिकी सुघराई। सूर प्रभू गुन पार लहै को जानी बूझि करी रिसहाई॥६८॥राग बिलावल॥इहै कही कहि मौन रही। मन मन कहति दरश अब दीन्हों निशि सब रैनि डही ॥ मधुरे वचन सुनाइ सखी सों रिस वश भरे कही। आए कहां जाहिं ताहीके चतुर त्रिया ढिगही ॥ वा बिन उनको कौन मिलेगी नहिं कोउ फिरति वही। सूरज प्रभु इतको जिनि आवैं पग धारैं उतही ॥ ६९ ॥ राग गौरी ॥ सखी गई कहि लेउँ मनाई। ज्ञाननमणि विद्यामणि गुणमणि चतुरनमणि चतुराई ॥ प्रिया हृदय यह बुद्धि उपाई ह्यां तौ नहीं कन्हाई। आतुर चली यमुनजल खोरन काहू संग न लाई ॥ पहुँची जाइ ते रवितनया तट न्हाइ चली अतुराइ। सूर श्याम मारग भए ठाढे बालक मोहनराइ ॥ ७० ॥ ॥ राग बिलावल॥पाँचबरसके लाल ह्वै त्रिय मोहन आए। नागरि आगे ह्वै गई तब बोल सुनाए ॥कह्यो कहा री जाति है काकी तू नारी। मोहिं पठाई श्यामले जाकी तू प्यारी ॥ यह सुनि नारि चकित भई आपुन तहां आए। तब करसों कर गहि लियो देखत मन भाए॥ अगम चरित प्रभु सूरके ते लखै न कोई। श्याम नाम श्रवणन परचो हरषी सुख जोई ॥ ७१ ॥ राग रामकली ॥ हरषी निरखि रूप अपार। गह्यो करसों सदन ल्याई जानि गोपकुमार ॥ श्याम मोको बोलि पठई कहत है यह लाल। भवनलै इन भेद बूझों सुनों वचन रसाल ॥ हृदय आनँद भई बाला प्रेमरस बेहाल। कुँवरि अंतःपुर गई लै रच्यो हरि तहां ख्याल ॥ तरुण ह्वै करि उरज परसे दियो अंचल डारि। सूर प्रभु हँसि लई प्यारी भुजन अंकम धारि ॥ ७२ ॥ राग गोंडी ॥ सुख निरखत त्रिय चकित भई। जो देखी अति तरुण कन्हाई यह को लखै दई ॥ छाँडिदेहु ऐसे मन मोहन हँसि मन लजित भई। ऐसे छंद रचत पिय धनि धनि कीन्ही करनि नई ॥ अंकम भरि त्रिय कंठ लगाई कुच उर चापि लई। सूर श्याम मानिनि मन मोहन रतिरससों भोगई७३॥राग बिलावल॥श्याम मनाई माननी हरषित भई अंग। रैनि विरहतनको गयो जे करे अनंग ॥ सुतामहर वृषभानुकी सुधि कीनी श्याम। ताको सुख दै हरि चले प्यारीके धाम ॥ प्यारी आवत पिय लखे चितई मुसकाइ। जिय डरपे मोहिं देखिकै सुख कह्यो न जाइ ॥ अब न पियहि उचटाइ हौं मोको सरमात। त्रास करत मेरी जिती आवत सकुचात॥आनिद्वार ठाढे भए नायक बहु नाम। सूर प्रभु अंग सहजही निरखति रुचिसों वाम॥७४॥ ॥ रागगुंडमलार ॥ श्याम डर वाम निज धाम आए। उतहि प्रमुदा धाम सखी सहजहि गई अंगके चिह्न कछु और पाए ॥ देखि हरषी नारि सकुच दीन्ही डारि अतिहि आनँद भरी श्याम रंगी। सखी बूझति ताहि हँसत जामुख चाहि श्यामको मिली री बनी चंगी ॥ कहन लागी कहा कहत तू आज मोहिं ताहि नाहीं करति दुरति कैसे। मिले प्रभु सूर तोहिं जानि यह चतुरई नहीं तू करति नहिं लखति जैसे ॥ ७५ ॥ राग सूही ॥ नैना तो अति रँगीले चिहुर छूटे छबीले काजर पीक लागिले आरसी देख। मरगजे वसन अधर दशननि छत कहुँ कहुँ नीकी लागी चंदन रेख ॥ काहेको तू मोहिं दुरावति री सजनी जानी अरस परस छबि शेष। सूरदास प्रभु नंदसुवन सँग अबहीं सुरति रंगकोसो भेष७६ ॥ राग बिलावल॥अबतूकहा दुरावैगी।मोहिं कहत नहिं काहि कहैगी कबलौं बात लुकावैगी॥मोसी और कौन

प्रिय तेरे जासों प्रेम जनावैगी॥मेरी सों उनकीसों तोको कहा दुराए पावैगी।औरनसी मोहूको जानति मोते बहुरि रमावैगी॥सूर श्याम तोहिं बहुरि मिलैहैं आखिरतौ प्रगटावैगी ७७प्रमुदा अति हर्षितभई सुनि बात सखीके। रोम रोम पुलकित भई उपजी रुचिहीके॥ कहति अबहिंहाँते गए नंदसुवनं कन्हाई। चरित कहा उनके कहौं सुख कह्यो न जाई॥ साँझगए कहि आइहैं मोसोंरी आली।अन त विरमि कतहूं रहे बहुनायक ख्याली॥ रैनि रही मैं जागिकै भोरहि उठिआए। मान कियो रिस पाइकै पलमाँह छँडाए॥अगणित गुण प्रभु सूरके कहि तोहिं सुनाऊं। अबहिंचरित करिकै गए तेही गुण गाऊं॥७८॥ राग रामकली॥आजु सखी यमुना मग मोहन मोहिं छरी छँदलाइ।कोतू आहि कौनकी वनिता बात एक सुनि आइ॥ बिहँसि कह्यो मोहिं श्याम पठायो सुनत विरह गति भूली। रति जल जलज हियो हुलस्यो मन पलक पाखुरी फूली॥ जानि कुमार गह्यो करसों कर ल्याई भवन बोलाइ। नैन मूँदि अंचल गहि डारयो मैं माधो मिलि आइ॥ छैल छुयो उर वदन विलो· क्यो सकुचि रही मुसकाइ। छाँडहु सूर श्यान तुम्हरी अब आवनि जानि न जाइ॥७९ राग धनाश्री॥ आवत ही मैं तोहिं लख्यो री। तुमहु भली उन को मैं जानति अधर बिंब मनो कीर भख्यो री॥ अँग मरग जी पटोरी देखी उरनख छत छविभारी। धनि वै नंदसुवन धनि नागरि कियो सुरति रणहारी॥ हँसतगई सखी भवन आपने मन आनंद बढाए। सूर श्याम राधिका धामके द्वारे शीश नवाए॥८०॥राग सारंग॥राधिका श्याम तन देखि मुसक्यानी।हार विन गुण बन्यो अधर काजर रेख नैन तंमोर तुतरातवानी॥ पागलटपटी बनी उरह छूटी तनी अंगकी गति देखि मन लजानी। उलटि कंकन पीठि बाहु विह्वल ढीठ चतुरई चतुर्भुज अधिक ठानी॥ पाणि पल्लव अधर दशन गहिरही बैन बोली वचन निहारि मानी। वलि वलि सूर प्रभु अंगभरि प्राणपति नागरी नवल उरघालि सानी॥ ८१ ॥ राग विलावल॥ भली करी पिय ऐसेहूं मेरे गृह आए। लीन्हें कंठ लगाइ कै बडभागिनि पाए॥ कहा सोच जिय करतहौ भुजगहि कर लीन्हों। गई भवन भीतर लिये तहँ बैठक दीन्हों॥ श्याम सकुचि अँग हेरहीं नागरि पहिचानी। चिह्न निहारत डर कहा आवतही जानी॥ या छविपर उपमा कहौं जो त्रिभुवन होई। तुम जानत यह रूपको अरु लखै न कोई॥ चंदन वंदन पानरंग अधरन काजर छवि। सूर श्याम उर करजको को वरणि सकै कवि॥ ८२ ॥ काहेको पिय सकुचतहौ। अब ऐसो जिनि काम करौ कहुँ जो अतिही जिय अकुचतहौ॥ अबकी चूक नहीं जिय मेरे और दिननको जानि रहौ। सौंह करौ मेरी मो आगे डरडारौ जिन मौन गहौ॥ यह सुनि श्याम हरषि कुच परसे बारबार शिव सौंह करी। सूर श्याम गिरिधर गुण नागर बातं आजुते सहीपरी॥८३॥राग गुंडमलार॥श्याम सौंह कुच परस कियो। नंदसदनते अबहीं आवत और त्रियनको नेमलियो॥ ऐसी शपथ करौ काहेको जु कछु आजुते करी सु करी।अब जु कालिते अनत सिधारो तब जानौंगे तुमहि हरी॥ मैं सतिभाव मिली हँसि तुमको कहा आजुकी सौंह करौं। सूर श्याम जो भई सुभई जू अबते सबको नेम धरौं॥ ॥ ८४ राग गुंडमलार॥ अहो राजत राजीवनैन मोहन छवि उरग लता रंग लाग। जेहि बनिता रस बश कीन्हें निशि प्रगट होत अनुराग॥ सिथिल अंग अरु सिथिल पाग बनी सिथिल चरण गति आज। मनहुँ सेज रेवा ह्रदते उठि आवतहै गजराज॥ भालमध्य जावकरँग देखत लागतिहै मोहिं लाज। तुम अपने जिय यों जानतहौ तिलकलोक जई राज॥ हंस बंधु रव लोचन ललना मिलित निशाकृति काज। वदन चंद वियसंधि जानि नहिं बढत किरनि मनलाज॥ भवन जीव

T

सुत लग्यो अधर पर यह छबि कही न जाइ। मनो बंधूक सुमन ऊपर बिय अलिसुत बैठे आइ॥ कुच कुमकुम अवलेप तरुनि किए शोभित श्यामलगात। गत पतंग राका शशि बिय संग घटा सघन शोभात॥ श्याम हृदय छलने ता ऊपर लगी करज कृत रेष। मनहुँ वसंतराज रुचि कीराति अरुण किसलतरु भेष॥ कामबाण वर लिए पंच चितवत प्रति अँग अँग लाग। अब न जान गृह देउँ पियारे जब आए तब भाग॥ तादिनते वृषभानुनंदिनी अनत जान नहिं दीन्हें। सूरदास प्रभु प्रीति पुरातन यहि विधि रस वश कीन्हें॥ ८५॥ अथ बडोमानसमय॥ राग बिलावल॥ सखियन सँग लै राधिका निकसी व्रजखोरी। चली यमुन अस्नानको प्रातहि उठि गोरी॥ नंदसुवन जा गृह वसे तेहि बोलन आई। जाइ भई द्वारे खरी तब कढे कन्हाई॥ औचक भेट भई तहां चकृत भए दोऊ। ये इतते वै उतहिते नहिं जानत कोऊ॥ फिरी सदनको नागरी सखि निरखत ठाढी। स्नान दानकी सुधि गई अति रिस तनु बाढी॥ श्याम रहे मुरझाइके ढग मूरी खाई। ठाढे जहँके तहँ रहे सखियन समुझाई॥ इतनेहीके ह्वै गए गहि बाँह लै आई। सूरज प्रभुको ले तहां राधा दिखराई॥ राग रामकली॥ राधहि श्याम देखी आइ। महामान दृढाय बैठी चितै कांपे जाइ॥ रिसहि रिस भई मगन सुंदरि श्याम अति अकुलात। चकितह्वै जकि रहे ठाढे कहि न आवै बात॥ देखि व्याकुल नंदनंदन सखी करति विचार। सूर प्रभु दोउ मिले जैसे करो सोइ उपचार॥ ८६॥ राग कान्हरो॥ सखी एक गई मानिनि पास। लखति नहिं कछु भाव ताको मिटी मनकी आस॥ कहौं कासों कौन सुनिहै रिसानि नारि अचेत। बुद्धि सोचति त्रिया ठाढी नेक नहीं सुचेत॥ श्याम व्याकुल अतिहि आतुर यहि कियो दृढ मान। सूर सहचरि कहति राधा बडी चतुर सुजान॥ ८७॥ राग कान्हरो॥ नहिं तेरो अतिहीहठ नीको। मेरो कह्यो सुनहु व्रज सुंदरि मान मनायो नागर पियको॥ सोइ अतिरूप सुलक्षणनारी रीझे जाहि भावतो जीको। प्यासे प्राण जाइँ जो जलबिनु पुनि कह कीजै सिंधु अमीको। तो जू मान तजहुगी भामिनि रविकी रसमि कामफल फीको। कीजै कहा समय बिनु सुंदरि भोजन पीछे अचवनघीको॥ सूरस्वरूप गर्व जोंबनके जानतिहौ अपने शिर टीको। जाके उदय अनेक प्रकाशत शशिहि कहा डर कमल कलीको॥ ८८॥ राग सारंग॥ चितयो चपल नैनकी कोर। मन्मथ बाण दुसह अनियारे निकसे फूटि हिए वहि ओर॥ अति व्याकुल धुकि धरणि परे जिमि तरुण तमाल पवनके जोर। कहुँ मुरली कहुँ लकुट मनोहर कहुँ पट कहुँ चंद्रिका मोर॥ खन बूडत खनहीखन उछलत विरह सिंधुके परे झकोर। प्रेम सलिल भीज्यो पीरोपट फट्यो निचोरत अंचल छोर॥ फुरैं न वचन नैन नहिं उघरत मानहुँ कमल भए बिनुभोर। सूर सुअधर सुधारस सींचहुँ मेटहु मुरछा नंद किशोर॥ ८९॥ राग नट॥ राधे तेरे नैन किधौं मृगवारे। रहत न युगल भौंह युग योते भजत तिलक रथ डारे॥ यदपि अलक अंजन गहि बांधे तऊ चपल गति न्यारे। घूंघट पट वागरज्यों विडवत जतन करत शशि हारे॥ खुटिला युगल नाक मोती मणि मुक्तावलि ग्रीव हारे। दोउ रुख लिये दीपका मानो किये जात उजियारे॥ मुरलीनाद सुनत कछु धीरज जिय जानत चुचकारे। सूरदास प्रभु रीझिरसिक पिय उमन प्राण धनवारे॥ ९०॥ राधे तेरे नैन किधौंरी बान। यों मारे ज्यों मुरछि परे धर क्यों करि राखै प्रान॥ खगपर कमल कमल पर केदलि केदलि पर हरि ठान। हरि पर सर सरवर पर कलसा कलसा पर शशिभान। शशिपर बिंब कोकिला ताबिच कीर करत अनुमान॥ बीच बीच दामिनि दुति उपजत मधुप यूथ असमान॥ तू नागरि सब गुणनि उजागरि पूरण कला निधान। सूर श्याम तो दरशन कारण व्याकुल परे अजान॥ ९१॥ राग नट॥ राधे तेरे नैन किधौं बटपारे।

चितवत दृष्टि बाण भरि मारत घूमत ज्यों मतवारे ॥ करि अंजन मनोपिय मन रंजन खंजन नैन सँवारे । चलि मुसक्याय श्याम सुंदर पै नाचत ज्यों नट वारे ॥ थकित भए देखत नँदनंदन तिन सों कहिकै हारे। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन को कोटि मान पचिहारे॥९२॥ राग सारंग॥ चपल भामिनिके भौंहैं बंक । अलक तिलक छबि चित्र लिखीसी श्रुति मंडल ताटंक ॥ तेरो रूप कहाँलौं वरणौं नागर ताको अंग । उर सुदेश रोमावलि राजत मृगअरि कोसो लंक ॥ तेरे नैन सुभट अनियारे नग वर धरन निशंक।सूरजचरित चुनौती पठवत भयो मदन मन रंक९३राग मलार॥ यह ऋतु रूसिवेकी नाहीं। वरषत मेघ मेदिनीके हित प्रीतम हरषि मिलाहीं ॥ जे तमाल ग्रीषम ऋतु डाहीं ते तरवर लपटाहीं । जे जल विन सरिताते पूरण मिलि न समुद्रहि जाहीं ॥ जोवन धनहै दिवस चारिको ज्यों बदरीकी छाँही ॥ मैंदंपति रस रीति कहीहै समुझि चतुर मनमाहीं । यह चित धरहु सखीरी राधिका दै दूतीको बाहीं । सूरदास हठ चलहु राधिका सँग दूती पिय पाहीं॥९४॥ राग बिलावल॥दधिसुत बदनी राधिका दधि दूरि निवारौ । दधिसुत दृष्टि मोलि दधिसुत में दधिसुत पतिसों क्यों न विचारौ ॥ घरहि छाँडिकै घरहि पकरिलै घरहु लता घनश्याम सवाँरो । हारपहरि कहि हार पकरि करि हार गुवर्धननाथ निहारौ ॥ समुझि चली वृषभानुनंदिनी आलिंगन गोपाल पियारौ । विद्यमान कलहंस जात गलि सूरदास अपनो तनुवारौ ॥ ९५ ॥ राग सोरठ॥राधे हरि रिपु क्यों न छपावति । मेरुसुतापति ताके पति सुत ताको क्यों न मनावति ॥ हरि बाहन ता बाहन उपमा सो तैं धरे दृढावति । नव अरु सात वीस तोहिं शोभित काहे गहरु लगावति ॥ सारँग वचन कह्यो करि हरिको सारँग वचन निभावति । सूरदास प्रभु दरश बिना तुव लोचन नीर बहावति ॥९६॥ राग नट ॥ राधे हरिरिपु क्यों न दुरावति । शैल सुतापति तासु सुतापति ताके सुतहि मनावति ॥ हरि बाहन शोभा यह ताकी कैसे धरे सुहावति । द्वै अरु चारि छहो वे बीते काहे को गहरु लगावति ॥ नौ अरु सात राज तहँ शोभित ते तू कहि क्यों दुरावति । सूरदास प्रभु तुमरे मिलनको श्रीरंग भरि आवति ॥ ९७ ॥ राग सारंग ॥ राधे हरिरिपु क्यों न दुरावति । सारँग सुत वाहनकी सोभा सारँग सुतन बनावति ॥ शैल सुतापति ताके सुतपति ताके सुतहि मनावति । हरि बाहनके मीत तासुपति तापति तोहिं बुलावति ॥ राकापति नाहिं कियो उदो सुनि या समये नहिं आवति । विधि विलास आनंद रसिक सुख सूर श्याम तेरे गुण गावति ॥९८॥ राधा तैं बहु लोभ करचो।लावनरथ तापति आभूषण आनन ओप हरचो ॥ भृकुटि कोदंड अवनि धरि चपला विवश ह्वै कीर अरचो । पिक मृणाल अलि अरित रूप सम ते वपु आप परचो॥जलचर गति मृगराज सकुचि जिय मोचन जाइ परचो।सूरदास प्रभुको मिलि भामिनि निशि सब जात टरचो ॥ ९९ ॥ राग गौरी ॥ राधे यामें कहा तिहारो । सुकहि मकर तनु हाटक बेनी सो पन्नग अँग कारो ॥ गति मराल केहरि कटि कदली युगल जंघ अनुहारो । नैन कुरंग वचन कोकिलके नाशा शुक कहां गारो ॥ विद्रुम अधर दशन दाड़िम कन करो न तुम निरवारो । सूरदास प्रभु त्रिभुवन पतिको एको न उनहिं उतारो॥ २२०० ॥ राग बिहागरो॥ तोहिं किन रूठन सिखई प्यारी । नवल वैस नव नागरि श्यामा वे नागर गिरिधारी । सिगरी रैनि मनावत बीती हाहाकरि हौं हारी । एते पर हठ छांडत नाहीं तू वृषभानु दुलारी ॥शरद समय शशि दरशि समर सर लागे उन तन भारी । मेटहु त्रास दिखाय बदन विधु सूर श्याम हित कारी ॥ १ ॥ राग ईमन ॥ आजु तेरे तन में नयो जोवन ठौर ठौर सु बनयो पिय मिलि मेरे मन काहे रूपि रही वे काज । अधिक राखैं बडाई तोहि तोहि करै माई और सब त्रियनमें तू अधिकाई

अरु तिनमें भाग सुहाग बिराजत आज ॥ रिस दूरि करौ छिआ मानि मेरे कहे तोहिं रूपनैन आवै लाज। सूर प्रभुको औसेर अतिही भई अबेर री वेग चलि सजि शृंगार काढि माठी खग वारो आइकै साज ॥ २ ॥ राग पूरबी ॥ देख री कमलनैन मधुर मधुर बैननि हँसि हँसि कबके करत मनु हारि। जब हरि नीचे चितवत भरि भरि अँखियन लाडिली वारति मानकी रिसनिवारि॥ अति आसक्त जानि मनमोहन रीझि मान दानदै प्रीति बिचारि। सूरदास प्रभुके चरणन पूजरी आली प्रेम उमँगि अँसु ढारि ॥ ३ ॥ राग ईमन ॥ अनबोली क्यों न रहै री आली तू आई मोसों बात बनावन। बहुत सहीहो घर आएते ऊपर जात न तू लागीहै पाछिली सुरति दिवावन ॥ वै अति चतुर प्रवीण कहा कहौं जिनि पठई तोको बहरावन। सूरदास प्रभु जियकी ह्वोनी की जानति कांच करोती मैं जल जैसे ऐसे तू लागी प्रगटावन ॥ ४ ॥ राग कान्हरो ॥ तू आई है बात बनावन। जाहि न ह्यांते बैठि रही है ए आई है मोहिं मनावन ॥ आरि करत कहि मोहिं सुनावत जाइरहै नाहें ताके। को उनकी ह्यां बात चलावै इतनो हितहै काके ॥ इक रिस जरति मनहि मन अपने तोहीको वै भावत। सूरदास दरशन ता गृहको उहै ध्यान मन भावत ॥ ५ ॥ राग केदारो ॥ यह कहि क्रोध मगन भई। रही एकटक साँस बिना तन बिरहा विवश भई ॥ बारंबारहि सखी बुलावति कहा भई दई। नारि नउमी दशा पहुँची ह्वै अचेत गई ॥ श्याम ब्याकुल धरणि मुरछे त्रिया रोष हई। सूर प्रभु गए तीर यमुना काम जरनि ठई ॥ ६ ॥ राग कान्हरो ॥ रिसमें रसकी बात सुनाई। चतुर सखिन यह बुधि उपजाई ॥ क्रोध मगन त्रिय चतुर जगाई। जागतै दूतिका बोली तोको श्याम बुलाई ॥ उमधि गई तनु सुरति सँभारी फिरि बैठी लै मान। कान्ह गए यमुनातट व्याकुल यह गति देखि अजान ॥ काहेको बिपरीति बढावति यह कहि गई हरि पास। देखे जाइ सूरके स्वामी कुंजद्रुमन तर बास॥७॥ राग बिहागरो॥ हरि मुख राधा राधा बानी। धरणी परे अचेत नहीं सुधि सखी देखि बिकलानी ॥ वासरगयो रैनि इक बीती बिनभोजन बिनपानी। बाँहपकरि तब सखिन जगायो धनि धनि शारँगपानी ॥ ह्यां तुम विवश भए हौ ऐसे ह्वां तौ वै विवशानी। सूर बने दोउ नारि पुरुष तुम दुहुँकी अकथ कहानी ॥ ८ ॥ राग अडानो ॥ लाल अनमनै कत होत हो तुम देखो धौं देखो कैसे कैसे करि ल्याइहौं। जलनिकटकी बारु जैसे गाढे गहि ऐसी कठिन होती त्रियाकी प्रकृतिहौं तो करही कर पघिलाइहौं। रिस अरु रुचि हौं समुझि देखि हौं वाके मनकी ढरनि वाकी भावती बात चलाइहौं। सूरदास प्रभु तुमहिं मिलैहौं नेक न ह्वैहौं न्यारे जैसे पानीमैं रंग मिलाइहौं ॥९॥ राग भैरव॥ सखी गई हरिको सुख दै ब्याकुल जानि चतुरई कीन्ही अब आवति प्यारीको लै ॥ आतुरगई मानिनी आगे जाइ कह्यो अजहूँ रिस है है। मोहन रहे मुरछि द्रुमके तर त्रिभुवन में ह्वैहै यश है। अजहूँ कह्यो मानि री मानिनि उठि चलि मिलि पियको जिय लैहै। सूर मान गाढो त्रिय कीन्हों कहै बात कोउ कोटिकलै॥१०॥ राग सारंग॥ तू चलि री बन बोली श्याम। कमलनैनके तू अति बल्लभ सुरति करी हरि आतुर काम ॥ मुरली में तुव नाम प्रकाशत तेरे हितको सुन री वाम। कोमल करनि सुमन बहु तोरत रुचिसों सेज रचत गृह धाम ॥ मन क्रम वचन शपथ चरणन की बिसरत नहीं तुम्हारो नाम। सूरदास प्रभुको मिलि भामिनि जो पायो चाहत विश्राम॥११॥ राग रामकली॥ रासिक राधे बोली नंदकुमार। दरशन को तरसत हरि लोचन तू शोभाकी धार ॥ खंजरीट मृग मीन मधुप मिलि रंभाराचे अनुसार। गोरि सकुचि शशि विरथ कियो रथ मेरु उलट्यो बडितार ॥ कौनहेतुते मिट्यो सितासित बिछुरी कौन विचार ॥ मन्दाकि-

नि मानो शिर धरिके रुद्रनि करी पुकार ॥ राख्यो मेलि पीठिते परधन हर जु कियो बिनहार । सूरदास प्रभुसों हठ कीन्हों उठि चल क्यों न सवार ॥१२॥ राग सारंग ॥ बोलत हैं तोहिं नंद किशोर । मान छाँडि सखी नेकचितै री पैयांलागौं करौं निहोर ॥ तरिवन तिलक बनी नकबेसरि चक्षु काजर मुख सुरँग तमोर । सब शृंगार बन्यो योवन पर लै मिलि मदन गोपाल अकोर ॥लताभवन में सेज बिछाई बोलत सकल विहंगम मोर।सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको ज्यों दामिनि घन चंद चकोर ॥ १३ ॥ राग केदारो ॥ चलराधे बोलत नंद किशोर । ललित त्रिभंग श्याम सुंदर घन नाचत ज्यों बन मोर ॥ छिन छिन विरस करतिहै सुंदरि क्यों वहरत मनमोर। आनँदकंद चंद वृंदावन तू करि नैन चकोर ॥ कहा कहौं महिमा तुअ भागकी पुण्य गनत नहिं ओर । सूर सखी पिय पै चालेनागरि लै मिलि प्राण अकोर ॥ तोहिं बोलै री मधु केशी मथन । यमुन कूल अनुकूल तृपारत चकित विलोकत सकल पथन ॥ न करु विलंब भूषण कृत दूषण चिहुर विहुर नाना करन गयन । सम्मुद कुमुद गति मकर मिलन दुति पसित भए सब नाथ नथन ॥ निकुंजनिकी सैन साजे एकाएकी रमत सखी बियो न सघन। अति जु कुसुमवास सखी री तुम्हारी आश हरिजू रचि धरे अपने हाथन॥युगजुजातपल श्रीगोपालके कुटिल तमकि री चढे हैं रथन । सूरदास अति गति कामरत वासरगत भयो तुम्हरी कथन ॥१४॥राग सारंग॥मानिनि मान मनायो मोर। हौं माई पठई हौं तोपै प्रीतम नंदकिशोर ॥ तेरे विरह वृषभानुनंदिनी मोहन बहरावत डोर । तानतरंग मुरलि में लैलै नाम बुलावत तोर ॥ बलि तुहि जाउ बेगि लै मिलऊ श्यामसरोज वदन तुव गोर । सूरदास ऐसी दृष्टि सुधानिधि चरणकमल कमला चितचोर ॥ १५ ॥ माननि नेक चितै यहि वोर । नाशत तिमिर वदन प्रकाशते ज्यों राजत रविभोर ॥ तुव मुख कमल मधुप मेरोमन विंध्यो नैनकी कोर । वक्रविलोक माधुरी मुसुकनि भावतहै प्रियतोर ॥ अंतर दूरि करौ अंचलको होइ मनोरथ मोर।सूर परस्पर रहौ प्रेमवश दोउ मिलि नवलकिशोर॥१६॥राग नट॥ कहि पठई हरिबाट सुचितदै सुनि राधिका सुजान । तैंजु वदन झाँप्यो झुकि अंचल इहै न दुख मेरे मन मान ॥ यहपै दुसह जु इतनेहि अंतर उपजि परै कछु आन । शरद सुधा शशिकी नवकीरति सुनियत अपने कान ॥ खंजरीट भृग मीन मधुप पिक कीर करत हैं गान । विद्रुम अरु बंधूप बिंब मिलि देत कविन छबिदान । दाडिम दामिनि कुंदकली मिलि बाढ्यो बहुत बखान ॥ सूरदास उपमा नक्षत्र गन सब शोभित विनभान ॥ १७ ॥ राग सारंग ॥ रहीदै घूँघटपटकी ओट । मनो कियो फिरि मान मवासों मैंन्मथ बंकट कोट ॥ नहसुत कील कपाट सुलक्षण दै दृग द्वार अगोट । भीतर भाग कृष्णभूपतिको राखि अधर मधु मोट ॥ अंजन आड तिलक आभूषण सचि आयुध बड छोट । भ्रुकुटी सूर गही करसारँग निकर कटाक्षनि चोट ॥१८॥राग बिलावल॥ तैं जु नीलपट ओट दियो री।सुनु राधिका श्यामसुंदरसों बिनहि काज अति रोप कियो री ॥ जलसुत बिंब मनहु जल राजत मनहुँ शरद शशि राहु लियो री । भूमि घिसनि किधौं कनकखंभ चढि मिलि रसहीरस अमृत पियो री ॥ तुम अतिचतुर सुजान राधिका कत राख्यो भरि मानु हियो री । सूरदास प्रभु अँग अँग नागरि मनो काम कियो रूप बियो री ॥ १९ ॥ सारँगरिपुकी ओट रहे दुरि सुंदर सारँग चारि । शशि मृग फनिग ध्वनिग दोउ अँग सँग सारँगकी अनुहारि ॥ तामें एक और सुत सारँग बोलक बहुरि विचारि । परकृत एक नामहै दोऊ किधौं पुरुष किधौं नारि ॥ ढाकति कहा प्रेमहित सुंदरि सारँग नेक उघारि।सूरदास प्रभु मोहे रूपहि सारँग वदन निहारि॥२०॥यहि तेरे वृंदावन

वाग । सुन राधिका कदम विटपनकी शाखा एक अमीफल लाग ॥ श्याम अरुण कछु अधिक पीत छवि वरणिजाइ नहिं अंग विभाग।अति सुपक्क सुरलीके परसत चुइ चुइ उमँगि परत रसराग॥ब्रजवनिता वर बारि कनकमय रोके रहत सुधा सुरनाग । तुव प्रताप छुइ सकत न सुंदरि सुर सुनि मर्कट कोकिल काग ॥ मैं मालिनि जतननि जलज्युगयो सींचन सु हथ परे कर दाग । सूर सु श्रम उठि भेटि परस्पर पिउ पियूष पाए बडभाग॥२१॥राग सारंग॥देखि श्यामको वदन शशि माई मोहिं अपन पो भूल्यो । विद्यमान या दृष्टि सरोवर मोहन वारिज फूल्यो ॥ करि अगाध सघन वृंदावन चंचल लता तरंग। निमि मृणाल सु मृत पत्रावलि गावत सुनिजन भृंग ॥ सुरभी सुभग हंस गोवृष मृग जलचर जीव अनंत । सूर कछू यह ह्यां री अद्भुत लीला कमलाकंत ॥२२॥ राग बिलावल ॥ अब राधे नाहिन ब्रजनीति । नृप भयो कान्ह काम अधिकारी उपजीहै ज्यों कठिन कुरीति ॥ कुटिल अलक भ्रुवचारुनैन मिलि सचरे श्रवण समीप सुमीति। वक्र विलोकनि भेद भेदियाँ जोइ कहत सोइ करत प्रतीति॥ पोच पिशुन लस दशन सभासद प्रभु अनंग मंत्री बिन भीति । सखि बिन मिलै तौ नावनिऐहै कठिन कुराज राजकी ईति ॥ मंदहास सुखमंद वचन रुचि मंदचाल चरणन भइ प्रीति । नख शिखते चित चोर सकलअँग जस राजा तस प्रजा वसीति ॥ तेरो तनु घनरूप महागुण सुंदर श्याम सुनी यह कीर्ति । सोकर सूर जेहि भाँति रहै पति जिनि बल बाँधि बढावहु छीति॥२३॥राग नट॥ राधे तेरे रूपकी अधिकाइ । जो उपमा दीजै तेरे तनु तामें छबि न समाइ ॥ सिंह सकुचि सर व्यथा मरति दिन बिन सोइ नीर सुकाइ । शशिउर घटत हेम पावक परि चंपक कुसुम रहे कुम्हिलाइ ॥ इभ तूटत अरु अरुण पंकभए विधिना आन बनाइ । कद्रुज पैठि पताल दुरेरहे खगपति हरिबाहन भए जाइ॥हंस दुरचो सर दुरचो सरूरुह गज मृग चले पराइ।सूरदास बिचारि देखिमन तोर रसन पिक रही लजाइ॥ ॥२४॥राग मलार॥ राधे तेरो रूप न आनसो ॥ सुरभी सुतपति ताको भूषण सुत धन उदित न पूजै भान सो । अमी रसाल कोकिला ज्यु साधे अंबुज चित्त अंकुराभिरामसो ॥ विद्रुम अधर दशन दाडिम विज भ्रुकुटी किए सुढानसों । सूरदास प्रभुसों कब मिलिहौ सुफलरूप कल्यानसों॥२५॥राग सारंग॥ राधे यह छबि उलटि भई । सारँग ऊपर सुंदर कदली तापर सिंह ठई ॥ ताऊपर द्वै हाटक वरणौं मोहन कुंभ मई॥ तापर कमल कमल बिच विद्रुम तापर कीर लई । ताऊपर द्वै मीन चपल हैं सउती साधरही । सूरदास प्रभु देखि अचंभो कहत न परत कही ॥ २६ ॥ राग केदारो ॥ लागो या वदनकी वलाई । खंजन तेरे खरे कटाक्षनि न्याउ गुपाल बिकाई ॥ का पटतरद्यों चंद्र कलंकी घटत बढत दिन लाज लजाई । जा शशिकी तुम आरि करतहौ चंद्र निहारो आइ॥ ढोटा जौपै खरो अटपटो बातैं कहत बनाइ। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनते तनुकी तपत बुझाइ॥२७॥राग बिलावल॥जल सुत प्रीतम सुत रिपु बंधन आयुध आनन बिलखभयो री। मेरु सुतापति बसत ज्यु माथे कोटि प्रकाश रिसाइ गयो री ॥ मारुत सुतपति अरिपुर वासी पित बाहन भोजन न सोहाइ । हरसुत बाहन अशन सनेही मानहु अनल देहदवलाइ ॥ उदधिसुता पति ताकर वाहन ता बाहन कैसे समुझावै । सूर श्याम मिलि धर्म सुवन रिपु ता अवतारहि सलित बहावै ॥ २८॥ राग नट ॥ लोचन श्याम जूके सायक। नैन चितै वृषभानु नंदिनी वश करि गोकुलनायक ॥ यहै जानि पठई नँदनंदन तुम सब बिधि सुखदायक । तू ब्रजनाथ शिरोमणि सजनी श्याम सुंदर पिय लायक ॥ लग लागे पागे उर अंतर कठिन शिलीमुख पायक । सूरदास प्रभु मोहन जोरी करी कुंज मनभायक ॥२९॥ राग सारंग ॥ जबते श्रवण सुन्यो तेरो नाम । तबते हा राधा हा राधा हरि इहै ज्यु मंत्र जपत दुरि दाम ॥ बस

निकुंज कालिंदीके तट सुरभी सखा छाँडि सुखधाम । विरह वियोग महायोगी ज्यों जागतही बीतत युग याम ॥ कबहुँक किसलय पीठ सुचिर रुचि कबहुँक गान करत गुणग्राम । कबहुँक लोचन मूँदि मौन ह्वै चित चिंतत अँग अँग अभिराम ॥ तर्फत नैन हृदय होमत हवि मन वच क्रम औरै नहिं काम।तरफत नैनहु देत मनोहर ब्रह्मभोज बोलत विश्राम । सूर श्याम कृश गात सब हि बिधि दरशन दे पुरवै पियकाम ३०॥ राग अडानो॥ मोहन नीको री अति नीको।तासों न रूसन कीजै हितकै मनाइ लीजै हँसत हँसत दूरि करै न रिस जीको॥अतिहि मानिनी जे जे जेऊ मैं मनाइ दई अति हि कठिन हठ देख्यो री तो त्रीको।दूसरी यामिनि गई त्यों त्यों तू हठीली भई सूर निरखि मुख देखौ प्यारी पीको॥३१॥राग विहागरो॥और सखी इक श्याम पठाई । हरिको विरह देखि भई व्याकुल मान मनावन आई ॥ बैठी आइ चतुरई काछे वह कछु नहीं लगार । देखतिहीं कछु और दशा तुव बूझति बारंबार ॥ मन मन खिझति मानिनी याको कौने इहां पठाई । सूर सवन कछु मान मनायो सो सुनिकै इह आई ॥ ३२ ॥ राग विहागरो ॥ अजहूं मान तजत नहिं प्यारी । मदन नृपतिके सैन साजिकै घेरे आनि विहारी ॥ इतने कटक देखि मनमोहन भीत भए भए भारी । कुसुम बाण जित तितते छूटत खगरव घटा सवारी ॥ पछत्र पट निसान भँवरा भर मंजरी स-लल साटी । सूरदास प्रभुके सहायको उठि चलि वेगि हकाटी ॥ ३३ ॥ राग सारंग ॥ वेगि चलौ बलि कुँवरि सयानी । समय वसंत विपिन रथहैंग मदन सुभट नृप फौज पलानी ॥ चहुँदिशि चांदनि निशा चंचली मनो धवल घरे धूरि उडानी । सोरहकला छपाकरकी छवि शोभित शीश छत्र शिरतानी ॥ बोलति हँसति चपल बंदीजन मनहु प्रशंसत पिक वर बानी । धीर समीर रटत वर अलिगण मनहुँ कमोदिक मुरलि सुठानी॥कुसुम शरासन अधिक विराजत कठिन मानगढ अति अभिमानी । सूरदास प्रभुकीहै यह गति करहु सहाय राधिका रानी ॥ ३४ ॥ राग मलार ॥ सुन री सयानी त्रिय रूसिबेको नेमलियो पावस दिनन कोउ ऐसो है करत री । दिशिदिशि घटा उठी मिलि री पियासों रूठी निडर हियो है तेरो नेक न डरत री । चलिए री मेरी प्यारी मोको मान देनहारी प्राणहूते प्यारेपति धीर न धरत री । सूरदास प्रभु तोहिं दियो चाहै हित चित हँसि क्यों न मिले तेरो नेम है टरत री॥३५॥सेजरचि पचि साज्यो सघन कुंजनिकुंज चित चरणन लाग्यो छतियां धरकि रही । हाहाचल प्यारी तेरो प्यारो चौंकि चौंकि परै पातकी खरक पिय हियमें खरक रही ॥ बात न धरत कान तानाति है भौंहवान तऊ न चलति वाम अँखिया फरक रही । सूरदास मदन दहत पिय प्यारी सुनि ज्यों ज्यों कह्यो त्यों त्यों वरु उतको सरकि रही ॥ ३६ ॥ तूतो मोसों बात न कहति माई चलौगी कहांते । काहेको गहरु कीजै बिन थर कहा लीजै दीजै जाइ उत्तर मैं आइहौं जहांते ॥ अनोखी मानिनी नई यह पाहन पूतरी भई बैनन बदति और जगति नहाते । आई हौं शपथ खाइ जात न परत पाँइ सूरदास प्रभु नवल पहाते ॥ ३७ ॥ राग सारंग॥उतते वे पठवत इतते ए नहिं मानत हौं तौ दुहुँनि बिच चकडोरी कीनी । क्रोध भेष सुख सुदेश नैनन छवि न कहि आवै आतुरह्वै उठिधाई रावरे लीनी ॥ तामरस लोचन हाव भाव बिन करै मानै न मानिनी मान रंगभीनी॥सूरज प्रभु राइ शिरोमणि आपुहि चलि देखौ क्यों न नायका नवीनी॥३८॥ हो पिय रीझि आइ गइही मान छुडावन पिय रीझि आइ । ऐसी छवि राजत है मोपै सो वरणी नहिं जाइ ॥ आपुन चलिए वदन देखिए जौलौं रहे निठुराइ । सूर श्याम प्यारी अति राजति रावरीय दुहाइ ॥३९॥राग कल्याण॥मैं तुम्हैं हँसत खेलत छांडिगई अब न्यारे अनबोले रहे दोऊइत तुम रूसे ह्वै

रहे गिरिधर उत अनमनी अंचल उरमाई सुख जंव लगाइ रही ओऊ ॥ नीची दृष्टि करी धरणी नखनि करोवति एहो पिया तवहीं एक एक घूँघट तन चितै रही आहि कहाहो करो अब सोऊ। सूरदास प्रभु प्यारो आको भरिजाइ लीजै छोडो छोडो कहन देहु और न मानै कोऊ४० राग ईमन॥ अजहुँ रैनि तीन यामहै जू काहेको हरबरात श्याम जू मैंतो वाकी प्रकृति लिए कैहौं बात जोपै रिस देखि हौं तौ घरिक लागि है तिहारी प्यारी लाडिली वामहैजू ॥ पैज किए जाति ताहि अबलिए आवतिहौं मेरेतो तिहारे सुख सुख है याते कौन काम है जू । सुनहु सूरज प्रभु अबके मनाइ ल्याउँ बहुरि रुठाय हौ जू तौ मेरी राम राम है जू ॥४१॥ राग सारंग ॥ जहां बैठे माधौ तहां तू बुलाई राधे यमुना निकट शीतल छहिआं । आछी नीकी लागति कुसुँभिसारी गोरे तन परम चतुर चलि हरि पहिआं ॥ दूती एक गई मोहन पै जाइ कह्यो यह पिय पहिआं । सूरदास सुनि चतुर राधिका श्याम रैनि बृंदाबन महिआं॥४२॥ राग सूही॥ झूमक सारी तनगोरो हो। जगमग रह्यो जराइ को टीको छबिकी उठत झकोरो हो। रत्न जडितके सुभग तरौना मनहु जात रबि भोरे हो । दुलरीकंठ निरखि पिय इकटक दृगभए रहे चकोरे हो। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन को रीझि रीझि तृणतोरेहो४३ राग ईमन॥ विरसकीजै न भामिनी रस में रिस की बात। हां पठई तोहिं लैन साँवरे तोहिं बिनु कछु न सोहात ॥ हाहा करति तेरे पायँन परतिहौं छिन छिन निशि घटिजात। सूर श्याम तेरो मग जोवत अति आतुर अकुलात॥४४॥ राग बिलावल॥ उठ राधे कत रैनि गँवावै । महिसुत गति तजि जलसुत गति ले सिंधुसुता पति भवन न भावै ॥ अलि बाहनको प्रीतम वाला ता बाहन रिपु ताहि सतावै । सो निवारि चलि प्राणपियारी धर्म सुनहि मति भाव न पावै ॥ शैलसुता सुत बाहन सजनी ता रिपु ता सुख शब्द सुनावै । सूरदास प्रभु पंथ निहारत तोहिं ऐसो हठ क्यों बनि आवै॥४५॥ राग बिहागरो॥ उत्तर न देत मोहनी मौन ह्वै रही री सुनि सब बात नैकहु न मटकी री । अबधौं चलैगी कब रजनी गई री सब शशि बाहन घरनी वै देखि लटकी री ॥ चैन री करेथेरे री मानि कपोल भव नख लिखै तिलह न कछु मटकी री । मुग्ध वधू री ॥ शठ काहेको करोहै हठ परम भावति तू नागर नटकी री॥ ध्रुव समान आए री जु सप्तऋषि बहुरि तौ बेरह्वैहै तमचुर रटकी री । सूर सखि जाइ बलि राधिका कुँवरि चलि आजु छबि नीकी तेरे आछे लील पटकी री ॥४६॥ राग सारंग॥ जिनि हठ करहु सारँग नैनी॥ सारँग सजि सारँग पर सारँग ता सारँग पर सारँग बेनी॥ सारँग रसन दशन पुनि सारँग सारँग सुत दृग निरखी पैनी ॥ सारँग कहौ सु कौन बिचारौ सारँग पति सारँग रचि मैनी ॥ सारँग सदनहिलैं जु वरनगई अजहुँ न मानति गति भई रैनी । सूरदास प्रभु तुव मग जोवै तू अंधक रिपु तारिपु सुखदैनी॥४७ राग बिहागरो॥ सर्वरी सर्व बिहानी तोहिं मनावति राधारानी। शुक्र उदय होन लाग्यो जागे तमचुर ढारिआई जु मृगानी । प्रफुलित कमल गुंजार करत अलि पहुफाटी कुमुदिनि कुँभिलानी॥ सूर श्याम बन मुरछि परेहैं माननिवारो मोपरक्यों झहरानी४८ राग बिहागरो॥ श्यामा प्यारी बोलन लागे तमचर घटि गई रजनी । अरी वै मनमोहन ब्रजनायक ठाढे सजनी ॥ ठाढे हैं हरि कुंज द्वारे ललित वेणु बजाइ हो । श्रवण सुनत कैसे रहत कैसे तोहिं गेह सुहातहो । तुम कुँवरि वृषभानुकी कछु नेह प्रीति न जानहू । कहि पठई हरि तोहिं काहेन चित्त में कछू आनहू॥ नंदनंदन कह्यो ऐसे सुंदरी ह्यां आइहो। और नहिं कछु काज बनमें नेक मधुर सुर गाइहो । सूर प्रभुहि विचारि मनमें प्रीति सों उरलाइए । यहै पुनि पुनि मैं कहति राधिका मनवांछित फल पाइए॥४९ राग केदारो॥ मोहन तेरे अधीन भए री इति रिस कवते कीजत री गुण आगरी नागरी। तेरे अनउत्तर सुनि सुनि श्याम हँसि हँसि देत नैक चितै इत भाग आगरी ॥ तेरोई भाग सुहाग तेरोई अनुराग तेरेही माथे रति री तू सुन.रूप उजागरी। सूरदास प्रभु तेरो मग जोवत तुही तुही रट लागी जैसे मृगिनी भूली वागरी॥५० राग नट॥ कौन कुमति आई री जो कह्यो न मानति। छाँडि मान सुन

बात सयानी कत हरि सों हठ ठानति ॥ यह निशि वृथा विहाय पियाबिन सोच नहीं उर आनति । वोउच श्याम श्याम दामिनिको मनो शरद ऋतु जल घटत न जानति ॥ धनुप कलास सही सब सिखि कै भई सयानी गानति।सूर सुंदरी आपुही कहा तू शर संधानति ॥५१॥ तू सुन कान दै री मुरली ध्वनि तेरे गुण गावैं श्याम कुंज भवन । सन्मुख ठाढे ह्वै ताहीको अंक भरत तेरे तनु परसे ज्यों आवतु पवन ॥ तेरो स्वरूप आनि उर अंतर नैन मूँदि निकसन कहत न करत गवन । सूरदास प्रभुके तू तन मन रमि रही रोम रोम प्रति याहीते नाम पायो राधारवन॥५२॥राग केदारो॥प्यारी है प्रीतम आरति करतु । तुम्हरे काजे कुँवरि राधिका मेरे पांइनि परतु ॥ वरही मुकुट लुढत अवनी पर नाहिन निज भुज भरतु।बारंबार रहटके घट ज्यों भरि भरि लोचन ढरतु ॥ अति आधीन मीन ज्यों जल बिनु नाहिन धीर धरतु । सूर सुजान सखी सुन तुम बिनु मन्मथ पावक जरतु॥५३॥राग सारंग॥ मृगनैनी तू अंजन दै । नवल कुंज कालिंद सुता तट पीको सर्वसु लै ॥ शोभित तिलक मृगमद रुचि शुचि भ्रुव बंक चितै ॥ हाटक घाटै सुधा पियनको नागिनि लट लटकै । नैन निरखि अँग अंग निरखियो अनख पिया जु तजै ॥ बादर वसन उतारि वदनयो चंद्रा जों न छपै । खंजन मीन अंजन दै सकुचे कविसो काहि गनै॥सूर श्यामको वेगि दरश देहु काम मदन जुडहै॥५४॥राग नट॥राधे कत रिस सरस तई । तिष्ठति जाइ बारबारनि पै होति अनीत नई ॥ नित तुव जलनि सिंधुसुत मानत मृगमद श्याम दई । जल थल खगनि सुमन गुरु दोऊ द्विज दुति किरन भई ॥ विहरत कुंज विलासन पद्मिनि सकुच न सेत कई । दुखी दुरे फल त्राहि विरहिनी को अति अपराध वई ॥ अब तुम जाहु निकुंज भामिनी नातरु करत खई । परसै सूर चतुर चिंतामणि विपुल विलास मई ॥५५॥ राग देवगंधार ॥ मानिनि मान तक्यो न कह्यो । प्रथम श्याम मन चोरि नागरी अब क्यों मान गह्यो ॥ जानति कहा रीति प्रीतमकी वन जन जोग मह्यो । रुद्रवीर रवि शेष सहसमुख तिनहु न अंत लह्यो ॥ बैठे नवल निकुंज मंदिरमें सो रसजात बह्यो । सूरदास सखि मोहन मुख निरखहु धीरज नाहिं रह्यो ॥५६राग नट ॥ कुंज भवनमें ठाढे देखो अँखियन भरि तब मैं जाऊंगी बालि । मोपै न देख परे खरे द्रुमडार गहे अकेले नक तू ठाढीहो ढिग चालि ॥ तेरो री वदन प्रफुलित अंबुज हरि जूके नैनामैं देखे अति आतुर अलि । सूरदास नँदनंदन प्यारे नेक न कीजे हाहा दूरिकरो मानै मिलि॥५७राग केदारो॥तेरे मानिवेहु तेरी माननि कोइ लागत ऐसेहि रहिए जौलौं लालहिले आऊं । औरनकी हाँसी खेल तिहारी रुपुय माय विरसमें यह रस नैनन आनि देखाऊं ॥ उलटि पियपै जाउ नोतम चोप बढाउ सोरह कलाको शशि कुँहुँ विगसाऊं । सूरदास प्रभु गिरिधरन सों हिलिमिलिवेको यह सुख रूप अनूपम पाऊं॥५८राग विहागरो॥कहत श्याम सों जाइ मनावो मेरे कहे न मानैजू । कहा रही मौन घालि न कहूं अनुमानैजू ॥ कहा मनमें घालि बैठी भेदमें नाहिं लखि सकी । आप ह्यां वह वहां बैठे जात आवतहौ थकी ॥ नेकहू जो कह्यो मानै कोटि भांति न मैं कही । हाहाकरि मनुहारि करि करि सुनतही अति रिस गही ॥ कहा बैठे चले बनि है आपुहू नाहिं मानिहौ । तुम कुँवर घरहीके बाढे अब कछू जिय जानिहौ ॥ वेगि चलिए अनख जैहै तुम इहां उह वहां जरति है । वाके जियं कछु और ह्वैहै कपट करि हठ धरति है ॥ राधिका अति चतुर जानौ जाइ ता ढिगही रहौ । कहा जो मुख फेरि बैठी मधुर मधुर वचन कहौ ॥ सूर प्रभु अब बनै नाचे काछ जैसो तुम कछ्यो । कहियत गुण प्रवीनहै राधा क्रोधहीमें विष भछ्यो ॥ ५९ ॥ सुनि यह श्याम विरह भरे । बारंबारहि गगन निहारत कबहूँ होत खरे ॥ मानिनी नाहिं मान मोच्यो

T

दूसरि निशि आजु। तब परे मुरछाइ धरणी काम करयो अकाजु॥ सखिन तव भुजगहि उचाए कहा वावरे होत। सूर प्रभु तुम चतुर मोहन मिलो अपने गोत॥६०॥राग विलावल सूही॥श्याम चतुरई कहाँ गँवाई। अव जाने घरके बाढेहौ तुम ऐसे कहा रहे मुरझाई॥ बिना जोर अपनी जाँघनके कैसे सुख कियो चाहत। आपुन दहत अचेत भए क्यों उत मानिनि मन काहे दाहत॥ उहँई रहौ कहैंगी तुमको कतहूं जाइ रहे बहुनायक। सूर श्याम मनमोहन कहियत तुमहौ सबही गुणके लायल॥६१॥ राग रामकली॥ तब हरि रच्यो दूती रूप। गए जहाँ मानिनी राधा त्रिया स्वांग अनूप॥ जाइ बैठे कहत मुख यह तू इहाँ वन श्याम। मैं सकुचि तहाँ गई नाहीं फिरी कहि पति वाम॥ सहज बातैं कहत मानों अव भई कछु और। तू इहां वै वहां बैठे रहत एकहि ठौर॥ कहौ मोसों कहा उपजी वै रटत तुव नाम। सुनतिहै कछु बचन राधा सूर प्रभु वन धाम॥६२॥ राधेतैं अति मान करयो। यह कहि हरि पछितात मनहि मन पूरव पाप परयो॥ पहिली अपनी कथा चलायो जब त्रिय भेष धरयो। तबतेहि रूप अनूप मुमुखि मुनि त्रिभुवन चित्त हरयो। मोहे असुर महामद माते सुर मुख अमृत भरयो। शिव गण सहित समेत महामुनि को व्रतते न टरयो॥ तातनकी छवि निरखि सूर शिव छत ज्यों ज्ञान गरयो। जेहि जारयो जग काम सु माधौ तेरे हठ जात जरयो॥६३॥ राग विहागरो॥ इतो श्रम नाहिन तबहूं भयो। धरणीधर विधि वेद उधारयो मधुसों शत्रु हयो॥ द्विजनृप कियो दुसह दुख मेट्यो बलिको राज लयो। तोरयो धनुष स्वयंवर कीनो राकन आजित जयो॥ अघ बक वत्स अरिष्ट केशि मथि दावानल अचयो॥ त्रिय वपु धरयो असुर सुर मोहे को जग जो नठ्यो॥जानो नहीं कहा या रसमें जेहि शिर सहज नयो।सूर सुबल अब तोहिं मनावत मोहिं सब बिसरि गयो॥६४॥राग मलार॥समुझ री नाहिन नई सगाई।सुन राधिके तोहिं माधौ सों प्रीति सदा चलिआई॥ जब जब मान कियो मोहनसों विकल होत अधिकाई। विरहानल सब लोक जरतहूं आपु रहत जलसांई॥ सिंधु मथ्यो सागर वल वाँध्यो रिपुरणजीति मिलाई॥ अब सो त्रिभुवननाथ नेहवश बन बाँसुरी बजाई। प्रकृति पुरुष श्रीपति पुरुष सीतापति अनुक्रम कथा सुनाई। सूर इती रसरीति श्यामसों तैं ब्रजवासि बिसराइ॥६५॥ राधिका तजि मान मया करु। तेरे चरण शरण त्रिभुवनपति मेटि कल्प तू होहि कल्पतरु॥ जिनके चरण कमल मुनि वंदत सो तेरो ध्यान धरै धरणीधर। अहो बावरी कहा तैं कीन्हों प्रीतम पठै दियो बैरनि घर॥ तुम नागरि वै श्री नगर वर तुम सुंदरि वै श्रीसुंदर वर। वै हरि तो दुख हरत सबनको तू वृषभानु सुता हरिको हर॥ जो झुकि कछुक कह्यो चाहतिहौ उनहिं जानि सखि मोहीं सो लर। तबहीं सूर निरखि नैनन भरि आयो उघरि लाल ललिताछर॥६६॥राग विलावल॥श्याम चतुरई जानतिहौं।ए गुण तुम अजहूं नहिं छाँडो इन छंदनिमें मानतिहौं॥ तुम रसवाद करन अब लागे जे सबतेउ पहिचानतिहौं॥ वै बातैं अब दूरि गई जू ते गुणगुणगुणिगानतिहौं॥ यह कहि बहुरि मान गहि बैठी जियही जिय अनुमानतिहौं सूर करो जोइ जोइ मन भावै इहै बात कहि भानतिहौं॥६७॥राग विहागरो॥ यह कहि बहुरि मानकियो रिसनि धर धर होति बाला योग नेम लियो॥ कहति मन मन बहुरि मिलिहौं अब न करौं विलास। ध्यान धारि विधिको मनावै लेति उरध उसाँस॥ त्रियाको जिनि जन्म पाऊं जिनि करै पतिनारि। जनम तौ पाषाण माँगों सूर गोद पसारि॥६८॥ राग विलावल॥ श्याम चले पछिताइकै अति कीन्हों मान। व्याकुल रिस तन देखिकै सब गयो सयान॥ बैठे शीश नवाइकै विन धीरज प्रान। दूती तुरत बोलाइकै पठई दै आन॥ विरहाके वश हरिपरे त्रिया कियो अनुमान। धीरज धरो मैं जातिहौं करिये कछु ज्ञान॥ सावधान करिकै गई दूतिका सुजान। सूर महा वह

मानिनी मानो पाषान ॥ ६९ ॥ राग धनाश्री ॥ प्यारी अंश परायो दै री । मेरी सीख सुन रसिकराधिका मनमें न्याउ चितै री ॥ आप आपनी तिथिवाई दुहि अचवत अमरसवै री । हर सुरेश सुर शेष समुझि जिय क्यों प्रभु पान करै री ॥ वह झूठो शशि जानि बदन विधु रच्यो विरंचि इहै री । सौंप्यो सुपत बिचारि श्याममित सु तूँ रही लटि लै री ॥ जाकी जहां प्रतीति सूर सो सर्वस तहां सचै री । सिंधु सुधानिधि अर्पि अबहिं उठि विधु पुनि नहीं पचै री ॥ राग विहागरो ॥ ७० ॥ राधिका हरि अतिथि तुम्हारे । रति पति अशन काल गृह आए उठि आदर करि कहे हमारे ॥ आसन आधी सेज सरकि दै सुख पैहै पद हरषि पखारे । अर्घ्यादिक आनंद अमृतमें ललित लोल लोचन जलधारे ॥ धूप सुवास ततक्षण वश करि मन मोहत हँसि दीप उजारे । वचन रचन भ्रुव भंग अवर अँग प्रेम मधुर रस परसिनिन्यारे ॥ उचित केलि कटु तिक्त त्यागि पट अमल उलटि अंकम हठि हारे । नख छत छार कसाई कुच गृह चुंबन सर्पि समर्पि सवारे ॥ अधर सुधा उपदंश सीक शुचि विधु पूरण मुखवास सचारे । सूर सुकृत संतोपि श्याम को बहुत पुण्य यह व्रत प्रतिपारे ॥ ७१ ॥ राग धनाश्री ॥ अब मोहिं जानिए सो कीजै । सुन राधिका कहत माधो यों जो बूझिए दंड सो लीजै ॥ उर उर चापि बाँधि भुज बंधन नख नाराच मर्म तकि दीजै । भौंह चढाइ रिसाइ दशन दशि अधर सुधा अपने मुख पीजै ॥ जिंनि करै बिलंब भामिनी सुरस सोई करौ जेहि गात पसीजै । ग्रंथि गुणनि गहि गूढ गांठि दै छुटै न कबहूँ श्रम जल भीजै ॥ सुन सखि सुमुखि पाँइ लागतिहौं दंपति अरस परस तनु छीजै । सूर श्याम सँग रस मिलि विलसहु जीवन सफल इहै सुख लीजै ॥ ७२ ॥ राग गुंडमलार ॥ गह्यो दृढ मान वृषभानु वारी । दुलै वरु स्वर्ग सुरपति सहित सुरनसों दुलै कंचन मेरु रहि निहारी ॥ रैनि रवि उठौ वासर चंद्र होइ वरु दुलै सब नखत यह होइ भाषै । धरणि पलटै सिंधु मर्यादको तजै शेष शिर दुलै नहिं मान नाषै ॥ बाँझ सुत जनै उठकै काठ पल्लवै विफल तरु फलै विन मेघ पानी । सूर प्रभु यह सुनौ वरु अचल चल थकै मनहि मन दूतिका कहति बानी ॥ ७३ ॥ राग कान्हरो॥दूती यह अनुमान करै । कासों कहौं सुनै को मेरी कैसे कह्यो परै ॥ हरि पठई मोको आतुर करि यह जिय सोच करै । कैसे बचन कहौं या आगे यह अनुमान करै ॥ चतुर चतुरई फबै न यासों सुनि रिस अतिहि करै । सूर सहजही मान मनाऊँ जो यह कबहुँ करै॥७४॥मानलीला ॥ राग मलार॥ मान मनायो राधा प्यारी । दहियत मदन मदननायकहो पीर पीरते न्यारी ॥ तू जु झुकतहै और रूसने अब कहि कैसे रूपी । बिनही शिशिर तमक तामसते तुव मुख कमल विदूपी ॥ सुनियत बिरद रूप रसनागारि लीन्ही पलटि कछूपी । तेरं हती प्रेम संपति सखी सो संपति केहि सूपी । उन तन चितै आप तन चितवहु अहो रूपकी राशी । पिय अपनो ना होइ तऊ ज्यों ईश सेइए कासी ॥ तुमतौ प्राण प्राण वल्लभके वै तुव चरण उपासी । सुनिहै कोऊ चतुर नारि कत करत प्रेमकी हाँसी ॥ ज्यों ज्यों मौन भई तुम उनके नाहीं आतुर ताई । कान्ह आन बनितारति सुनि सुनि जिय बैठी निठुराई ॥ हिए कपाट जोरि जडिताके बोलत नहीं बुलाई । हा राधा राधा रट लागी चित चातकी कन्हाई ॥ जोपै मानत भाँवरि नाहीं भाँवरि मानन होई । हियते वादि प्रेम रति वतिहौ अंत भाव तो सोई ॥ जो गौरी पिय नेह गरबतौ लाख कहै किन कोई । काहू लियो प्रेम परचो वह चतुर नारिहै सोई ॥ कत होरही नारि नीची करि देखत लो-चन झूले । मानहु कुमुद रूठि उडपति सों किए धर्म मुख फूले ॥ वै तो हित वृषभानु नंदिनी सेधत यमुना कूले । तेरे तनक मान मोहनके सबै सयानप भूले ॥ अहो इंदुबदनी सुन सजनी

कत पलकन पल जोरै । तुव मुख दरश आशके प्यासे हरिके नयन चकोरै ॥ तेरे बल भामिनी वदत नहिं उपजत काम हिलोरे । सुनियत हते चतुर नागरते तनक मान भये भोरे ॥ तब दूती फिरि गई श्यामपै श्याम वहां पग धरिए । जेहि हठ तजै प्राणप्यारी सो जतन सवारे करिए ॥ वे वैसे तुम ऐसे वैसे कहो काजका सरिए । कीजै कहा चाव अपनी कत इहां मसूसन मरिए ॥ अपनी चोप आप उठि आए ह्वैरहे आगे ठाढे । भूलि गयो सब चतुर सयानप हुते जो बहु गुण गाढे ॥ डोलत नहिं बोलत न बुलाए मनहुँ चित्र लिखि काढे । परचो न काम नारि नागरसों हैं घर हीके बाढे ॥ निबह्यो सदा औरहीको हठ यह जो प्रकृति तुम्हारी । आपुनही अधीन ह्वै ठाढे देखि गोवर्धन धारी ॥ प्राणहि पियहि रूषनो कैसो सुन वृषभानु दुलारी । कहूँ न भई सुनी नहिं देखी रहै तरँग जल न्यारी ॥ रिस रूसनो मिलन पलकनको अति कुसुंभरँग जैसो । रहै न सदा छुटत छिन भीतर प्रात ओस तृण तैसो ॥ वे हैं परम मलीन किए मन उठि कहि मोहन वैसे । घर आए आदर न चूकिए बैठी दूध अचैसे ॥ वे तौ भँवर भावते वनके और वेलिके तोषी । कीजै मान मदन मोहनसों बात कहैं हँसि नोषी । तुम जानहु की लाल तुम्हारो तुमहि उनहि है ऐसी । याहीते तुम गर्व भरीहौ वे ठाढे तुम वैसी॥जोवन जल वर्षाकि नदी ज्यों चारि दिनाको आवै।अंत अवधिही लौं नातो जो कोटिक कलह उठावै ॥ वल्लभको वल्लभकों मिलिबौ तुमहिं कौन समुझावै । लै चलि भवन भावतेहिं भुजगहि को कहि गारि दिवावै ॥ झुकि ठेली झांते रिस हाती कौने सिखै पठाई । लै किन जाहि भवन अपने ह्वां लरन कौनसों आई ॥ कांपति रिसन पीठि दै बैठी सहचरि और बुलाई । कछु सीरी कछु ताती वाणी कान्हहि देत दोहाई ॥ कबहुँक लै धरि दर्पण मोहन ह्वै रहे आगे ठाढो । इत नागरी उतहि वै नागर इन बातनको चाढो ॥ बडे बडाईको प्रतिपालैं बडो बडाई छीजै । ताके बडी बडी शरणागत वैर बडे सों कीजै ॥ तू वृषभानु बडे की बेटी तेरे ज्याए जीजै । राखहु वैर हिए गहि मोसों वैरिहि पीठि न दीजै ॥ भामिनि और भुअंगिनि कारी इनके विषहि डरैए । राचेंहू विरचे सुखनाहीं भूलि न कबहुँ पत्यैए ॥ इनके वश मन परे मनोहर बहुत जतन करि पैए । कामी होइ काम आतुर तेहि कैसेके समुझैए ॥ जे जे प्रेमछके मैं देखे तिनहिं न चातुरताई । तेरे मान सयान सखी तोहिं कैसेके समुझाई ॥ बहुरो भए सह चरी मोहन ताकैं अपनी घातैं । लागे काम सखीके धोखे कहत कुंजकी बातैं ॥ सुधिकरि देखि रूसनो उनको जब खाई हाहातैं । आप पीर परपीर न जानति भूली जोवन मातैं ॥ कबहुँ न भयो सुन्यो नहिं देख्यो तनुते प्राण अबोले । होत कहा है आलसहू मिस छिन घूँघट पट खोले ॥ पावति कहा मानमें तू री कहा गँवावतिहै हँसि बोले । कालिहि प्राणनाथ तुम प्यारी फिरिहो कुंजनि डोले॥ कहा रही अति क्रोध हिए धरि नेक न दयादयानी । प्रगटचो जानि मदनमोहन तनु बात बात अधिकानी ॥ हितकी कहे अनख लागति है समुझहु भले सयानी । मनकी चोप मान कीजतु कह थोरेही गरवानी ॥ रही मूँदि पटसों हठि भामिनि नेक न बदन उघारै । हरि हित वचन रसाल कठिन पाहन ज्यों दून उतारै ॥ धरे ग्रीव पट सन्मुख ठाढे नेक न कोप निवारै । जा आधीन देव सुर नर मुनि सो हीनता पुकारै ॥ खन गावै खन बेन बजावै कमल भृंगकी नाहीं । खन पाँयन तन हाथ पसारै छुवन न पावै छाहीं ॥ खन खन लेहि बलाइ वामकी लालच करि ललचाही । कहै आनकी आन सौंह दै खन खन हाहा खाही॥कबहुँक निकट बैठि कुसमावलि अपने कर पहिरावै। जोइ जोइ वात भावतिहि भावै सोइ सोइ वात चलावै ॥ जितहि जितहि रुख करै लडैती तितही आपुन आवै।

नाचत जाके डर त्रिभुवन तेहि नेकहु मान नचावै ॥ जिन नैनन देखत सुख भूले ते दुख नैन समोवै । जो सुख सकल सुखनिको दाता सो सुख नेक न जोवै ॥ जेहि लिलाट त्रिभुवनकोटीको सो पाँइन तन सोवै । राजहि जाहि सनक अरु शंकर विरंचै ताहि विगोवै ॥ एते मान भये वश मोहन बोलत कटुक डराई । दीपक प्रेम क्रोध मारुत छिन परसत जिनि बुझिजाई ॥ ताते करि हरि छल दूतीको कहत बाल सकुचाई । कपटी कान्ह पत्याहिं न राधे तोहिं वृषभानु दोहाई ॥ पठई मोहिं दई उरमाला जहां कहूँ रति मानी । हौं बहराइ इतहि आई री आली तोहिं डरानी ॥ काहेको रूसनो बयो है मोसों कहो कहानी । नवनागर पहिचानि राधिका यह छल अधिक रिसानी॥जनिए कहां कौन अपराधिनि आनि कान है लागी । सुनि सुनि उठी सुंदरीके जिय प्रगट कोपकी आगी ॥ यद्यपि रसिक रसाल रसीली प्रेम पियूषन पागी । किती दई शिख मंत्र साँवरे तउ हठ लहरि न जागी ॥ कहिए कहा नंदनंदन सों जैसे लाड लडाई । कौन न भई मानिनी उनसों जेते मान मनाई ॥ नवनागर तबहीं पहिचाने नागरि नागरताई । इन छँद बंदनि छँदै पैए प्रेम न पायो जाई ॥ हारे अबलासों बल मोहन तजत न पाणि कपोलैं । मानहुँ पाहनकी प्रतिदासी नेक न इत उत डोलै ॥ इन खोसनि रूसनो करति हौ करिहौ कबहिं कलोलै । कहा दियो पढि शीश श्यामके खैंचि आपनो सोलै ॥ तोहिं हठ परचो प्राणवल्लभ सों छूटत नहीं छुडाए । देखहु मुरछि परचो मनमोहन मनहु भुअंगिनि खाए ॥ काहेको अपराध लेतिहै करति कामको भायो । नेक निरखि उठि कुँवरि राधिका जो चाहति है ज्यायो ॥ बहुरौ लियो जगाइ मनोहर युवतिन जतन बनायो । विरहताप बरदाप हरनको सरस सुगंध चढायो ॥ जिते करे उपचार मनहुँ तनु जरत माँझ घृत नायो । कामअग्नि ते विना कामिनी कहि कौने सच पायो ॥ जिनके हित तू त्रिभुवन गाई ठकुरानी करि पूजी । आनँद अंग संग सुख विलसत बनना यक है कूंजी ॥ अनुदिन काम विलास विलासिनि वै अलि तू अंबूजी । ऐसे पिय सों मान करतिहै तोसीं मुग्ध न दूजी ॥ मेरो कह्यो मानती नाहिन ह्यां अरु कौन कहै यो । राखन मान तिहारो मोहन ऐसी कौन सहैगो ॥ जानहुगी तब मानहुगी मन जब तनु मदन दहैगो । करतिहौ मान मदन मोहनसों मानै हाथ रहैगो ॥ नख लिखि कह्यो जाहु तहँई उठि जाके हाथ विकाने । राचे रहत रैनि दिन मोहन हरद चून ज्यों साने ॥ सुख मेरो है मान मनावत मन अंतहि रुचि माने । गावत लोग विरद सांचोई हरिहित कौन सिराने ॥ तुम मम तिलक तुमहिं मम भूषण तुमहिं प्राण धन मेरे । हौं सेवक शरणागत आए जानहु जतन घनेरे ॥ तेरी सौं वृषभानु नंदिनी एक गांठि सौ फेरे । हित सों वैर नेह अनहित सों इहै न्याव है तेरे ॥ पर धन खन दवन दारुन द्रुम डोलनि कुंजन माहीं । चारन धेन फेन मथि पीवन जीवन रोकत खाहीं ॥ डासन कांस कामरी ओढन बैठन गोप सभाही । भूषण मोर पयूपन मुरली तिनके प्रेम कहाही ॥ प्रेम पतंग परै पावक में प्रेम कुरंग बँधेसे । चातक रटै चकोर न सोवै मीन विना जल जैसे ॥ जहां मान तहां मान मनायो प्रेम न गनियें ऐसे । प्रेम मांझ जो करहि रूपनो तिनहि प्रेम कहि कैसे ॥ कांपत रिसन पीठि दै बैठी मणि माला तन हेरचो।निरखि आप आभास सयानी बहुरि नैन मुख फेरचो॥लिए फिरत उरमाँझ दुराए जानत लोग अँधेरो । एते मान भावती तो कत मान मनावत मेरो ॥ तेरिसों आभास तिहारो यहां और को जोहै॥लै दर्पण मणिधरचो पांइतर देखि दुहूँनिमें कोहै ॥ लघु अपराध दासको त्रासे ठाकुरको सब सोहै । निरखि निरखि प्रतिबिंब उहै तनु नैन नैन मिलि मोहै ॥ नेक मोहिं मुसकान

जानि मनमोहन मन सुख आन्यो । मानो दव द्रुम जरत आश भयो उनयो अंबर पान्यो ॥ जो भाई सो सौंह दिवाई तब सूधे मन मान्यो । दियो तमोर हाथ अपने करि तब हरि जीवन जान्यो ॥ हँसिकरि कह्यो चलौ हरिकुंजन हौं आवतिहौं पाछे । लकुटी मुकुट पीत उपरैना लालकाछनी काछे ॥ गोदोहनकी बेर जानि सँग लिए बछरुवा आछे । जो न पत्याहु जाहु मुरली धर हमहि तुमहि है साछे ॥ सघनकुंज अलि पुंज तहाँ हरि किसलय सेज बनाई । आतुर जानि मदन मोहन तनु कामकेलि चलि आई ॥ हँसे गोपाल अंकभरि लीनी मनहुँ रंक निधि पाई । रति विपरीति प्रीति पियप्यारी वर्णत वरणि न जाई॥ आलिंगन चुंबन परिरंभन दियो सुरति रस पूरो । छिटकि रही श्रमबूँद बदन पर अरु पाँइन खुभि चूरो ॥ सुखके पवन परस्पर सुखवत गहे पानि पिय जूरो । बूझत जानी मन्मथ चिनगी फिरि मनों दियो मरूरो॥ आलस मगन बदन कुँभिलानो बाला निर्बल कीन्हीं । थकित जानि मनमोहन भुजभरि त्रिया अंक भरि लीन्हीं ॥ गोरे गात मनोहर उरजन लसत फुलेल कंचुकी भीन्हीं । मनु मधु कलश श्यामताईकी श्याम छापसी दीन्हीं ॥ इत नागरी नवल नागर उत भिरे सुरति रण सोऊ । नैन कटाक्षबाण असिवर नख बरषि निदाने दोऊ ॥ टूटे हार कंचुकी दरकी घाइल मुरे न कोऊ । प्रगट्यो तेज तरनि पदवीकी लाज लजाने दोऊ ॥ यहि डर रहत पीतांबर वोढे कहा कहौं चतुराई । भोरचो काम प्रेमहू भोरचो मुरई बैस मुराई ॥ पति अरु प्रिया प्रगट प्रतिबिंबत ज्यों जल दर्पण झाई । अब जिनि कहै हिएमें को है बहुरि परी कठिनाई ॥ करजोरे बिनती करैं मोहन कहौ पाँइ शिरनाऊं । हौं सेवक निज प्राण प्रियाको यह कहि पत्र लिखाऊं ॥ तेरी सौं वृषभानुनंदिनी अनुदिन तुव गुण गाऊँ । अब जिन मान करहि मोसों हो इहै मौज करिपाऊँ ॥ हँसिकरि उठि प्यारी उरलागी मान मैन दुखपायो । तुम मन देहु आन बनिता तो मैं मन काहि लगायो ॥ लै बुलाइ उरलाइ अंक भरि पछिलो दुख बिसरायो । श्याम मानहैं प्रेम कसौटी प्रेमहि मान सहायो ॥ छूटे बँद छूटी अलकावलि मरगजतनके वागे । अंजन अधर भाल जावक रँग पीककपोलन पागे ॥ बिनु गुन माल पीठि गडिकंकन उपटि उठे उर लागे । रसिक राधिकाके सुखकोसुख लूटचो श्याम सभागे ॥ नवल गोपाल नवेली राधा नये नेह वश कीन्हें । प्राणनाथ सों प्राणपियारी प्राण लटकि सो लीन्हें॥ विविध विलास कला रसकी बिधि उभै अंग परबीनो । अति हित मान मानतजि मानिनि मनमोहन सुख दीनो ॥ श्रीराधा कृष्ण केलि कौतूहल श्रवण सुनैं जे गावैं । तिनके सदा समीप श्याम नितही आनंद बढावैं ॥ कबहुँ न जाहि जठर पातक जिनको यह लीला भावै । जीवन मुक्ति सूर सो जगमें अंत परमपद पावै ॥७५॥ राग गुंडमलार ॥ राधिका वश्य करि श्याम पाए। विरह गयो दूरि जिय हरप हरिके भयो सहस सुख निगम जिनि नेति गाए ॥ मान तजि मानिनी मैनको बल हरचो करत तनुकंतके त्रास भारी । कोक विद्या निपुण श्याम श्यामा विपुल कुंजगृह द्वार ठाढे मुरारी ॥ भक्तहित हेतु अवतार लीला करत रहत प्रभु तहां निज ध्यान जाके । प्रगट प्रभु सूर ब्रजनारिके हित बँधे देत मनकाम फल संग ताके ॥७६॥ हिंडोरलीलाको सुख॥ श्रीकृष्ण राधिका गोपिन संग झूलहिंगे॥ राग मारू ॥ वृंदावन श्यामलघन नारि संग सोहै जू । ठाढे नवकुंजनतर परमचतुर गिरिधर वर राधा पति अरस परस राधा मनमोहै जू ॥ नीपछाँह यमुनतीर ब्रजललना सुभगभीर पहिरे अंग विविध चीर नवसत सब साजै । बार बार बिनय करति मुख निरखति पाँइ परति पुनि पुनि कर धरति हरति पियके मन काजै ॥ विहँसति प्यारी समीप घनदामिनि संग रूप कंठ गहति कहति कंत झूल

नकी साधा। यमुना पुलिन अतिही पुनीत पिय इहां हिंडोर रचौ सूरज प्रभु हँसति कहति व्रज तरुनी राधा ॥७७॥ राग राग्नी मल्लारी॥ हिंडोरे हरि सँग झुलिएहो अरु पियको देहिं झुलाय। गई बीति ग्रीषम शरद हितु ऋतु सरस वर्षा आय ॥ अब इहै साध पुरावहू हो सुनहु त्रिभुवन राई। गोपांगना गोपालजू सों कहति गहि गहि पाई ॥ गढनहार हिंडोरनाको ताहि न लेहु बोलाई। बन बननि कोकिल कंठ निरखत करत दादुर शोर। घनघटा पीरी श्वेतबगपंगति निरखि ये नभ ओर ॥ तैसिए दमकति दामिनी तैसोइ अंमर घोर। तैसोई रटत पपीहरा बिच तैसोई बोलत मोर ॥ तैसिएँ हरी हरी भूमि हुलसति होति नहिं रुचि थोर। तैसिए रंग सुरंग बिधिवधू लेति है चितचोर ॥ तैसिए नन्हीं बूँद नि बरषतु झमकि झमकि झकोरि। तैसिए भरि सरिता सरोवर उमँगि चली मति फोरि ॥ सुनि बिनय श्रीपति बिहँसि बोले विश्वकर्मा श्रुति धारि। खचि खंभ कंचनके रचि पचि राजति मरुआ मयारि। पटुली लगे नग नाग बहु रंग बनी डाँडी चारि। भँवरा भँवै भजि केलि भूले नागरना गरि नारि ॥ पहरि चुनि चुनि चीर चुहि चुहि चूनरी बहु रंग।कटि नील लहँगा लाल चोली उबटि केसरि अंग ॥ नवसात सजि नई नागरी चली झुंड झुंडनि संग ॥ मुख श्याम पूरण चंदको मनो उमँगि उदधि तरंग। तहँ त्रिविध मंद सुगंध शीतल पवन गवन सु भाइ। उर उड़त अंचल उघरि मुख मिलि नैन नैन लगाइ ॥ तैसो यमुना पुलिन परम पुनीत सब सुखदाइ। तैसिए गोपी कंठ लगावति मोहनऽमोहन राइ ॥गिरिराज धारन गोपिकन सों करत कौतुक केलि। झूलत झुलावत कंठ लावत बढी आनँद बेलि ॥ कबहुँ रहसत मचत लै सँग एक एक सहेलि। झकझोरि झमकत डरत प्यारी प्रीतम अंकम मेलि ॥ तेहि समय सकुची मनोजकी छबि जक्यो धन शर डारि। अमर बिमानन सुमन बरषत हरषि सुर सँग नारि ॥मोहि सुर गण गंधर्व किन्नर रहे लोक बिसारि। सुनि सूर श्याम सुजान सुंदर सबन के हितकारि ॥ ७८ ॥ राग सारंग॥ सुरंग हिंडोरना माई झूलत श्यामा श्याम। दोयखंभ विश्वकर्मा बनाए काम कुंद चढाइ। हरित चूनी जटित नग सब लाल हीरा लाइ ॥ बहुत विद्रुम बहुत मुक्ता ललित लटके कोर।बहुरंग रेशम वरुह वरुहा होत राग झकोर॥श्याम श्यामा संग झूलत सखी देति झुलाय। सबै सरस शृंगार कीने रूप बरणि न जाइ। लालसारी नील लहँगा श्वेत अँगिया अंग। रोमावली नहिं मनो यमुना त्रिवलि तरल तरंग॥कहूं यूथनि युवति ठाढीं कहूं ठाढे ग्वाल। कहूं तरुणी गीत गावैं कहुँ करैं सब ख्याल ॥ कहूं दादुर कहूं चातक कहूं बोलैं मोर। चहूंओर चितै चकोरहि गए देखि री इहि ओर ॥ दशन दाडि मदमकि बिकसी हँसी जब मुसुकाइ। दमकि दामिनि निरखि लज्जित बहुरि गई छिपाइ ॥ मीन खंजन कंज मानो उडत नाहिन भोर। बिंबके ढिग कीर बैठे गहत नाहिंन ठौर। देखि सखी उरोज कंचन शंभु धरचो बनाय। नहिं होहिं श्रीफल सुंदरीके कमलकली सोहाय ॥ बीच मुक्ताहार मिलि सुरसरी जनु उतरी धाय। वार चकई पार चकवा दिनहु मिलत न आय॥लखि लंक कह्यो न जाय सखि री अंग देखिरि चारु। भृंग भ्रमभ्रम बनगये। कटि गयो केहरि हारु॥चाल देखि मराल लज्जित गए सरताजि गेह। यह अनुमानके अभिमानगज शिर अजहुँ डारत खेह॥राग रागिनी सँचि मिलाई गावैं सुघर गुंडमलार।सुहवी सारंग टोडी भैरवों केदार ॥ मालवाहै राग गौरी अरु आसावरी राग।कान्हरो हिंडोल कौतुक तान बहु बिधि लाग॥देखि सखि री एक अचरज राहु शशि इक ठोर। उडत अचल लपटि वेनी दपट झपटे मोर ॥ कनक जटित जराइ बीरें कबिजो उपमा पाइ। सूर शशि है एक ब्रजमें मनो ऊगे तीनों आय ॥ ७९ ॥ राग मलार ॥ यमुना पुलिनहि रच्यो रंग सुरंग हिंडोरनो। रमत राम श्याम संग ब्रजबालक सुख पावत हँसि बोलनो ॥ द्वै खंभ कंचन

के मनोहर रत्नजडित सुहावनो। पटली बिच विद्रुम लागे हीरालाल खचावनो॥ सुंदर डाँडी चुनी बहुत लायो कोटिक मदन लजावनो। मरुवा मयारि पिरोजालाल लटकत सुंदर सुढिर ढरावनो॥ मोतिनाहिं झालरि झूमका राजत बिच नीलमणि बहुभावनो। पंच रंग पाट कनक मिलि डोरी अतिही सुघर बनावनो। स्फटिक सिंहासन मध्य राजत हाटक सहित सजावनो॥ हीरालाल प्रवाल पिरोजा पंगति बहु मणि पचित पचावनो। मनो सुरपुर तेहि सुरपति पठइ दियो पठावनो॥ विश्वकर्मा सुतिहार श्रुतिधरि सुलभ सिलप दिखावनो। तेहि देखे त्रय ताप नाशै ब्रजबधूमनि भावनो॥ सुनि श्यामा नवसत सँग सखीलै वरसाने तेहि आवनो। जब आवत बलराम देख्यो मधु मंगल तन हेरनो। तब मधु मंगल कहि ग्वाल सों गैयाहो भैया फेरनो॥ उठे संकर्षण करि शृंग वेणु ध्वनि धौरी काजरी धेनु टेरनो॥ गैया गई बगराइ सघन वृंदावन वंसीवट यमुनातट घेरनो। पहिरे चीर सुही सुरंग सारी चुहुचुहु चूनरी बहु रंगनो॥ नील लहँगा लाल चोली कसि उबटि केसरि सुरंगनो। नवसत साज शृंगार नागरि मारिगमय भूषण मंगनो॥ सादर सुख गोपाल लालको चित्त चकोर रस संगनो। श्यामा श्याम मिले ललितादिहि सुख पावत मनमोहनो॥ गावत मलारी सुराग रागिनी गिरिधरन लाल छवि सोहनो। पचरंग बरन पाटहि पवित्रा बिच बिच फोंदा गोहनो॥ नाचति सखी संगीत परस्पर पहिरि पवित्रा सोहनो॥ माथे मोर मुकुट चंद्रिका राजहि वृंदा वैजंती माल कंज प्रसावनो। कुंडल लोल कपोलनके ढिग मानो रवि प्रकाश करावनो॥ अधर अरुण छबि कोटि ब्रज द्युति शशि गुण रूप समावनो। मणिमय भूषण कंठ मुक्तावलि देखत कोटि अनंग लजावनो॥ सखि हरषि झूले वृषभानु नंदिनी शोभित सँग नँद लालनो। मणिमय नूपुर कुनित कंकन किंकिनी झनकारनो॥ ललिता विशाखा ब्रजवधू झुलावैं सुरुचि सार सारको सारनो। गौर श्यामल नील पीत छबि मानोंगन दामिनि संचारनो॥ तैसोइ नन्हीनन्ही बूँदनि बरषै मधुर मधुर ध्वनि घोरनो। जैसीही हरी हरी भूमि हुलसावनी मोर मरालसुख होत न थोरनो॥ जहाँ त्रिविध मंद सुगंध शीतल पवन गवन सुहावनो। तहँ विहरत उठत सुवासु उडत मधुप सुहावनो॥ चढि विमानन सुर सुमन बरषैं जैजै ध्वनि नभ पावनो। श्यामा श्याम विहरत वृंदावन सुरललना ललचावनो॥ शुक शेष शारद नारदादिक विधि शिव ध्यान न पावनो। सूर श्याम सुप्रेम उमँग्यो हरि यश सु लीला गावनो॥८०॥ राग गुंडमलार॥ हिंडोरनो माई झूलत गोकुलचंद। संग राधा परमसुंदरि सघन करत अनंद। द्वैखंभ कंचनके मनोहर रतनजडित सुरंग। चारि डाँडी परम सुंदर निरखि लज्जित अनंग॥ पटली पिरोजा लाल लटकत झूमका बहुरंग। मरुवेति माणिक चुनीलागी बिच बिच हीरा तरंग॥ कल्पद्रुम तर छांह शीतल त्रिविध मंद समीर। वर लता लटकहि भार कुसुमनि परसि यमुनानीर॥ हंस मोर चकोर चातक कोकिला अलिकीर। नवनेह नवल किशोर राधा नवल गिरिधर धीर॥ ललिता विशाखा देहि झोटा रीझि अंगन समाति। अति लाडिली सुकुमारि डरपति श्याम तन लपटाति॥ गौर श्यामल अंग मिलि दोउ भए एकहि भांति। नील पीत दुकूल द्युति घन दामिनी दुर जाति॥ कुंज पुंज झुलय झुलवत सहचरी चहुँ ओर। मनो कुमुदिनि कमल फूले निरखि युगुल किशोर॥ ब्रजवधू तृण तोरि डारति देति प्राण अकोर। जनसूरजको ब्रजवास दीजै नागर नन्दकिशोर॥८१॥ राग राजी श्रीहठी॥ हिंडोरे झूलत श्यामा श्याम। ब्रजयुवती मंडली चहूँघां निरखित विथकित काम॥ कोउ गावति कोउ हरषि झुलावति कोउ पुरवति मन साध-। कोउ संगमचाति कहति कोउ मचिहौं उपजो

रूप अगाध ॥ कोउ डरपति हाहाकारि विनवति प्यारी अंकमलाय । गाढे गहति पियहि अपने कर पुलकित अंग डराय ॥ अब जिनि मचो पांय लागतिहौं मोको देहु उतारि । यह सुनि हँसत मचत अति गिरिधर डरत देखि अतिनारि ॥ प्यारी टेरि कहत ललितासों मेरीसों गहि राषि । सूर हँसति ललिता चंद्रावलि कहा कहति पिय भाषि ॥ ८२ ॥ राग राझीरामगिरी ॥ हिंडोरना माई झूलतहै गोपाल । संगराधा परमसुंदरि चहूंवां ब्रजबाल ॥ सुभग यमुना पुलिन मोहन रच्यो रुचिर हिंडोर । लाल डाडी स्फटिक पटुली मणिन मरुवा घोर ॥ भँवरा मयारिनि नील मरकत खचे पाँति अपार । सरल कंचन खंभ सुंदर रच्यो काम श्रुतिहार ॥ भाँति भाँतिन पहिरि सारी तरुणी नवसत अंग । सुंदरी वृषभानुतनया नैन चपल कुरंग ॥ हँसति पिय सँगलेति झमक लखति श्यामलगात । मनो घनमें दामिनी छवि अंगमें लपटात ॥ कबहुँ पुलकित कबहुँ डरपति हँसति निरखति नारि ॥ कबहुँ देति झुलाइ गोपी गावहीं नवनारि ॥ सूर प्रभुके संगको सुख बरणि कापै जाइ । अमर वर्षत सुमन अंबर विविध अस्तुति गाइ ॥ ८३ ॥ राग राझीमलारी ॥ यमुना पुलिन रच्यो हिंडोर । घोष ललना संग तरुणी तरुण नवल किशोर ॥ एक सँगलै मचत मोहन एक देत झुलाय । एक निरखति अंग माधुरि एक एक उठि गाय ॥ श्यामसुंदर गोपिकागण रही घेरि बनाय । मनो जलदको दामिनी गण चाहति लेन लुकाय ॥ नारि सँग बनवारि गावत कोकिला छवि थोर । डुलत झूलत मुकुट शिरपर मनों नृत्यत मोर ॥ सुभग मुख दुहुँ पास कुंडल निरखि युवती भोर । चक्रवाक चकोर लोचन करि रही हरि ओर ॥ थकित सुर ललना सहित नभ श्याम निरखि विहार । हरषि सुमन अपार बरषत मुखहि जैजैकार ॥ कहत मन मन इहै बांछा भए न वन द्रुमडार । देह धरि प्रभु सूर विलसत ब्रह्म पूरण सार ॥ ८४ ॥ राग केदारो ॥ हिंडोरने हरि सँग झूलन आई । पचरंग बरन पाटको डडिया अतिही बानक सौंजु बनाई ॥ झलति युवति नंदललना सँग एकै बैस इकदाई । सूरदास प्रभु मोहन नागर आपुन झूलि झुलाई ॥ ८५ ॥ राग ईमन ॥ झूलन आई रंग हिंडोरे । पचरंग बरन कुसुंभी सारी पहिरे कंचुकी सोंधे बोरे ॥ मुक्तामाल ग्रीवतेलर छूटी छबिके उठत झकोरे । सूरदास प्रभु मेरो मन हरि लीन्हों चपल नयनकी कोरे ॥ ८६ ॥ राग विहागरो ॥ ललना झूलता रंग हिंडोरे । शोभा तनु श्याम गोरे । नील पीतपट घनदामिनि डोरे । शोभा सिंधु मन बोरे ॥ गोपी जन चहुँओरे । नैननसों नैन जोरे ॥ झुलवति थोरे थोरे । पवन गवन आवे सोंधेकी झकोरे ॥ तन मन वारों छवि पर तृणतोरे । सूरदास प्रभु चित चोरे नेक अंग मोरे ॥ सुन मुरलीकी घोरें सुरवधू शीश ढोरें ॥ ८७ ॥ राग मल्लार ॥ झूलत श्याम श्यामा संग । निरखि दंपति अंग शोभा लजित कोटि अनंग ॥ मंद त्रिविध बयारि शीतल अंग अंग सुगंध । मचत उडत सुवासु सँगगण रहे मधुकर बंध ॥ तैसिय यमुना सुभग जहां रच्यो रंग हिंडोल । तैसिय ब्रजवधू बनि हरि चित लोचन कोर ॥ तैसोई वृन्दाविपिन घन बनकुंज द्वारविहार । विपुल गोपी विपुल वनगृह रवन नंदकुमार ॥ नित्य लीला नित्य आनँद नित्य मंगल गान । सुर सुर मुनि मुखन अस्तुति धन्य गोपी कान्ह ॥ ८८ ॥ राग मल्लार ॥ हिंडोरे हरि सँग झूलहि घोष कुमारि । ब्रजवधू विधि क्यों न कीनी कहति सब सुरनारि ॥ मरुवा लगे नग ललित लीला सुविधि शिल्प सँवारि । वज्रकी कीलैं लगीं लुठि सुभग शोभा कारि ॥ खंभ जंबूनदि सु विद्रुम रची रुचिर मयारि । मनु सुता रविको दिखावति भुज भुज युगुल पसारि ॥ मणिलाल माणिक जटित भँवरा सुरंग रंगरसार । शुक शेष नारद शारदा उपमा कहै को पार ॥ डाँडी खचि पचि पाच मर्कत मय पांति सुढार । उवत

T

रथरविते धसी यमुन धरे विविधार॥ विविधार धारा धसी अधक्यों स्फटिक पटुली संग। बहिनि कसि तिरछी बीच ह्वै मिलि गगनते जनु गंग। ढिग जरित भरि मंजीर इत उत चरण पंकज रंग। प्रतिबिंब झलमल झलक मिलि सरस्वती आनि बिनंग॥ बनमहल के द्वारे रच्यो नव रंग रंग हिंडोर। मनो कोटि मन्मथ मोद मोहन तरुणी तरुण किशोर॥ बदन तन चित चोरि चितवत झलक लोचन कोर। शरद बिधु मधु लुब्ध को मनु उडि उडि मिलत चकोर॥ उडि मिलत तहां चकोर अति छबि ललित चलित सुखैन। मनहु अंबुज बासको सँग मिलित मधुकर ऐन॥ झुमकि झमकि लेति दै द्रुमडी मचै रुचि कैन। गावति सुकंठ राग राझी नागरि गिरिधर कीजित सैन॥ कनक नूपुर कुनित कंकन किंकिनी झनकार। तहाँ कुँवरि वृषभानुकी सँग सोहै नंदकुमार॥ नील पीत दुकूल साँवल गौर अंग बिकार। मानहु नौतन घन घटा में तडित तरल अकार॥ अनमेष दृग दिए देखेही मुख मंडली वरवारि। मानहुँ शृंगार नवीन तरुप्रति रची कंचन वारि॥ हँसि हावभाव कटाक्ष घूँघट गिरत लेति सम्हारि। मनु हरन मुनि शोभा सु लै रति काम डारति वारि॥ अधऊरध झमकि झकोर इत उत झलक मोतिन माल। ऋतु समै सावन जानि मानौ बगपाँति उडत विशाल॥ श्रीशीश फूल अमोल तरिवन तिलक सुंदर भाल। सारी सुरंग मिलि नील लहँगा शोभित कंचुकी लाल॥ मन मुदित मोदित मानिनी मुख माधुरी मुसुकानि। ढर हरति ढरति हिंडोर डाँडी डरति धरि दुहुँ पानि॥ उर उडत अंचल छोर छबि दुति पीतपट फहरानि। कहै सूर सो उपमा नहीं कहुँ नेति निगमहु गानि॥ ८९॥ राग मलार॥ गोपी गोबिंदके हिंडोरे झूलन आय। रंगमहलमें जहँ नँदरानी खेलति सावनी तीज सुहाय॥ श्रीखंड खंभ मयारि सहित सु सुमर मरुवा बनाइ। तापर कितिक जू भ्रमत भँवरा डाँडी जटित जराइ॥ हेम पटुली मध्य हीरा पूजि रोचन लाइ। सखी विविध विचित्र राग मलार मंगलगाइ॥ नंदलाल पावसकाल दामिनि नागरी नव संग। बोलत जु दादुर अरु पपीहि करति कोकिल रंग॥ तहँ वरहा नृत्यत वचन मुख दुति अलिचकोर विहंग। बलि भाइ सहित गोपाल झूलत राधिका अर्धंग॥ जलभरित सरवर सघन तरिवर इंद्र धनुप सुदेश। घनश्याम मध्य सफेद बग जुरि हरित महि चहुँ देश॥ गगन गर्जत बीजु तरपति मधुर मेह असेश। झूलहिं ते विह्वल श्याम श्यामा शीश सुकुलित केश॥ ताटंक तिलक सुदेश झलकत खचित चूनी लाल। अकृत विकृत वदन प्रहसित कमल नैन विशाल॥ करजु मुद्रिका किंकिनी कटि चाल गजगति वाल। सूर मुरारिपु रंग रंगे सखी सहित गोपाल॥ ९०॥ राग सुहवी॥ झूलत सुंदर युगल किशोर। नँदनंदन वृषभानुनंदिनी पियत सुधारस नयन चकोर॥ भ्रुकुटी बक्र धनुप श्रीशोभित तिलकभाल मनो सायक जोर। मंद मंद मुसुकात श्याम घन निरखत करत कटाक्षन ओर॥ अंजनको पति रंजन लागे राजत अधरन दशन तमोर। मृगमद आड बने करकंकन मोतिन हार शृँगार न डोर॥ लियो शिरते पटु झटकि मनोहर उघारि गए कुच कलश कठोर। सूर सु निरखि भएवश प्रीतम तब प्यारी सों करत निहोर॥ ९१॥ अध्याय॥३४॥ विद्याधर शापमोचन वृंदावनविहार शंखचूडदानववध वर्णन॥ राग बिलावल॥ नंद सब गोपी ग्वाल समेत। गए सरस्वतीके तट एक दिन शिव अंबिका पूजा हेत॥ पूजा करत सकल दिन बीत्यो होइ गई तहँ साँझ। व्रजवासी सब श्रमित होइकै सोइरहे वनमांझ॥ अर्ध निशा इक उर्ग आयकै लपटि गयो नँदपाइ। चौंकि पर्यो दुखपाइ पुकार्यो हाहा कृष्ण छुडांय॥ ग्वालन मिलि श्रीकृष्ण जगाए छुवत पाँइ अहि दीनों छोड। विद्याधरको रूप धारि

कह्यो नाथ करैको तुमरी होड ॥ सब देवनके देव तुमहिं हो मैं देख्यो अब तुमको जोई ॥ ऋषि अंगिरा शाप मोहिं दीन्हों भयो अनुग्रह सोई ॥ हरि आज्ञाको पाय नाय शिर गयो आपने लोक । सूरदास हरिके गुण गावत व्रज आए व्रजलोग ॥ ९२ ॥ जागो मोहन भोर भयो । वदन उघारि श्याम तुम देखो रविकी किरनि प्रकाशकियो ॥ संगी सखा ग्वार सब ठाढे खेलत हैं कछु खेलन यो । आँगन ठाढी है कुँवरि राधिका उनको कहां दुराइ लयो ॥ हँसि मोहन मुसुकाय कह्यो कबहूँ वृषभानुके गेहगयो । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको सर्वसु ले हरि आपु दयो ॥ ९३ ॥ मैं हरिकी मुरली बनपाई । सुन यशुमति सँगछाँडि आपनो कुँवरजगाइ देनहों आई ॥ सुनतहि वचन विहँसि उठि बैठे अंतर्यामी कुँवर कन्हाई । इहके संग हुती मेरी पहुँची दै राधे वृषभानु दोहाई । मैं नाहिन चितलाय निहारो चलौ ठौर सब देहुँ बताई ॥ सूरदास प्रभु मिलि अंतर्गति दुहुँन पढी एकै चतुराई ॥ ९४ ॥ राग कान्हरो ॥ विहरत कुंजन कुंजविहारी । बग शुक विहंग पवन थकि थिर रह्यो तान अलापत जब गिरिधारी ॥ सरिता थकित थकित द्रुमवेली अधर धरति मुरली जब प्यारी । रवि अरु शशि देखो दोउ चोरन शंका गहि तब वदन उज्यारी ॥ आभूषण सब साजि आपने थकित भई व्रजकी कुलनारी । सूरदास स्वामीकी लीला अब जोवै वृषभानु कुमारी ९५॥ राग गुंडमलार ॥ गगन उठी घटाकारी तामें बगपंगति न्यारी न्यारी । कान्ह कृपाकारि देखिये सुरचापकी छवि बरन बरन रँगधारी ॥ बीच बीच दामिनी कौंधति जन चंचल नारी । बिटवाहर गृह गृह प्रति दुरिजाति आवति विकल मदनकी जारी ॥ वन वरुही चातकरटै द्रुम द्युति सघन संचारी । सूर श्याम हित जानिकै तब काम कोविद निजकर कुटी सँवारी ॥ ९६ ॥ राग सारंग ॥ अद्भुत कौतुक देखि सखी री श्रीवृंदावन में होडपरी री । उत घन उदित सहित सौदामिनि इतहि मुदित राधिका हरी री ॥ उत बगपांति शोभित इत सुंदर धामविलास सुदेश खरी री । वहां घन गर्जे इहां ध्वनि मुरली जलधर उत इत अमृत भरी री ॥ उतहि इंद्रधनु इत वनमाला अति विचित्र हरिकंठ धरी री । सूर साथ प्रभु कुँवरि राधिका गगनकी शोभा दूरि करी री ॥९७॥ राग सोरठ ॥ नवल नागरि नवल नागर किशोर मिलि कुंजकोमल कमल दलन सेज्या रची । गौर साँवल अंग रुचिर तापर मिले सरसमणि मृदुल कंचन खची ॥ सुरनीमी बंधुहित पिय मानि पियके भुजनमें कलहमोरुण मची । सुभग श्रीफल उरोज पाणि परसत रोपहूं करि गर्व दृग भाग्य भामिनि लची ॥ कोक कोटि करभ सरसिरुहरि सूरज विविध कल माधुरी किमपि नाहिन बची । प्राण ये मन रसिक ललितादि लोचन चपकि पिवति मकरंद सुखराशि अंतर सची ॥ ९८ ॥ राग नट ॥ राधे जलसुत कर जु धरे । अतिही अरुण अधिक छवि उपजति तजतहंस सगरे ॥ चुगत चकोर चले हैं सन्मुख झझके रहे खरे । तब मुसिकाय वृषभानुनंदिनी दोऊ मिलि झगरे ॥ रवि अरु शशि दोऊ एकैं रथ सन्मुख आनि अरे । सूरदास प्रभु कुंजविहारी आनँद उमँगि भरे ॥ ९९ ॥ राग कान्हरो ॥ श्यामा वदन देखि हरि लाज्यो । यहै अपूर्व जानि जिय लघुता खीन इंदु एही दुख भाज्यो ॥ क्रीडत कुंज अटा रजनी सुख प्रेम मुदित नवसत अँग साज्यो । विधु लक्षण जानत सुर नर सब मृग मद तिलक लाज्यो ॥ वियकित रथ चकित अवलोकित सुंदरि सँग हरि राज विराज्यो । विस्मय मिटी शशि पेपि समीपहि कहि अब सूर उभै हरि गाज्यो ॥२३००॥ राग बिलावल ॥ कंदुक केलि करत सुकुमारी ॥ अतिहि सूक्ष्म कटि तट आई जिमि विशद नितंब पयोधर भारी ॥ अंचल चंचल फटी कुंचुकी विलुलित वर कुच सटी उघारी । मानो नव जलद बंधुकीनो विधु निकसी नभ कस

ली अन्यारी ॥ तरल तिलक ताटंक निकट तट उभय परस्पर शोभ शृँगारी । जलरुह हंस मिले मनो नाचत व्रजकौतुक वृषभानु दुलारी ॥ मुक्तावलिको हार लोलगति तापर लटपटात लटकारी । तामें सो लर मनो तरंगिनि निशिनायक तम मोचनहारी ॥ अरु कंकन किंकिणि नूपुर छबि निशापान सम द्युति रति नारी । श्रीगोपाल लाल उरलाई बलि बलि सूर मिथुन कृत भारी ॥१॥राग नट॥ देखे चारि कमल इकसाथ । कमलहि कमल गहे लावति है कमलहि मध्य समात ॥ सारंगपर सारंग खेलत है सारंगही सों हँसि हँसि जात । सारंग श्याम औरहू सारंग सारंग सों करै बात ॥ अरि सारंग राखि सारंगको सारंग गहि सारंगको जात।तौ लै राखि सारंग सारंगको सारंगलै आऊ वा हाथ ॥ सोई सारंग चतुरानन दुर्लभ सोई सारंग शंभु मुनि ध्यात । सेवत सूरदास सारंगको सा रंग ऊपर बलिं बलि जात॥२॥राग नट॥हरि उर मोहनी वेलि लसी।ता ऊपर उरग ग्रसित तब शोभित पूरन अंश शशी॥चापति कर भुजदंड रेख गुन अंतरबीच कसी।कनक कलश मधुपान मनो कर भुजनि उलटि धसी॥तापर सुंदर अंचर झाँप्यो अंकित दंशतसी।सूरदास प्रभु तुमहिं मिलत जनु दारिव बिगरि हँसी ॥३॥राग कान्हरो॥मोहनी मोहनकी प्यारी।रूप उदधि मथिकी विधि हठि पचि रची युवति न्यारी॥चंपक कनक कलेवरकी द्युति शशि न बदन समतारी।खंजरीट मृग मीनकी गुरुता नैनन सबै निवारी ॥ भ्रुकुटी कुटिल सुदेश शोभित अति मनहु मदन धनुधारी । भाल विशाल कपोल मधुप छबि नाशा जित मदगारी ॥ अधर बिंब बंधूप निरादर दशन कुंद अनुहारी । परमरसाल श्याम सुखदायक वचनन सुनि पिकहारी ॥ कुँवरी अहि जनु हेमखंभ लगि ग्रीव कपोत बिसारी । बाहु मृणाल जु उरज कुंभ गज निम्ननाभि शुभगारी ॥ मृग नृप खीन कटि राजति जंघा युगल सरस भारी । अरुण रुचिर जु बिडाल रसन सम चरणतली ललितारी ॥ एक समय करपर धरि मुक्ता ग्रसै न मराल विचारी । सारंगमत्त जानि मानगहि भएहि जु विपिन बसारी ॥ जहँ जहँ दृष्टि परति तहँ अरुझत भरि नहिं जात चितारी॥सूरदास प्रभु रस वश कीन्हें अंग अंग सुखकारी ॥४॥राग नट॥ उरपर देखियतहैं शशि सात । सोवत हुती कुँवारि राधिके चौंकिपरी अधरात ॥ खंड खंड होइ गिरे गगनते वास पतिनके भ्रात।कै बहु रूप किए मारगते दधिसुत आवत जात ॥ विधु विछुरे विधु किए शिखंडी शिवमें शिवसुत जात । सूरदास धारेको धरणी श्याम सुनो यह बात॥५॥राग बिलावल॥आजु वन राजत युगल किशोर । दशन वसन खंडित मुखमंडित गंड तिलक कछु थोर ॥ डगमगात पग धरत शिथिलगति उठे कामरस भोर । रतिपति सारँग अरुण महाछवि उमँगि पलक लगे भोर॥ श्रुति अवतंस विराजत हरि सुत सिद्ध दरश सुतनोर । सूरदास प्रभु रस वश कीन्ही परी महारण जोर ॥ ६ ॥ राजत युगल किशोर किशोरी । प्रातसमय देखियत ग्रीवा भुज श्याम शिथिल आलस गति गोरी ॥ रहे उघटि बलहीन विलासिनि बरणौ कहा मदन रँग बोरी । मनो अंग अंग सुख फल के हित द्युति बसंत मारुत झकझोरी ॥ शशिमुख सखी श्याम लोचन छबि प्रगटत मिलत उभय पद कोरी । मनु रवि देखि हरपि कछु सकुचत निरखत युवति लेत चित चोरी ॥ थकित सुमन दृग अरुन उनींदे कुरप कटाक्षि करत मुरि थोरी । खंजन मृग अकुलात घात उर श्याम व्याध बाँधे रति डोरी ॥ नील अलक ताटंक अंकदै श्याम गंड उबटित वर छोरी । मनहु शेप मधुसर कूरमरज्वा काढत उभय रूपधरि तोरी ॥ कोमल कठिन कपोल अमल अति तहँ उपटित क्रडा रद रोरी । मदनकोश पर शैल सचारी छाप ताप मोचन मधु घोरी ॥ नैन बैन कर चरण चिकुर चल शिथिल उभय श्रम स्वेदन चोरी । मनु सेना संग्राम मध्यते प्रीति अमी दै जाइ बहोरी ॥

थाके रंग रणकी छबि छाजत हारि मानि नाहिं रहत निहोरी। सूर सुभट दोउ खेत न छाँडत मनहु आइ ठाढे दल जोरी ॥७॥ राग सारंग ॥ देखौ माधौ राधा की रत। सुरत समै संतोष न मानत फिरि फिरि अंक भरत ॥ सुखके अनिल सुखावत श्रमजल यह छबि मनहिं हरत। मानहु काम अग्नि निर्ज्वाला भई ज्यों ज्वाला फेरी करत ॥ द्युतिय प्रेमकी राशि लाडिली पलकन बीच धरत। सूर श्याम श्यामा सुख क्रीडत मनसिजपाँइ परत ॥८॥ राग सारंग ॥नैननको फल सुफल राधिका प्यारी। श्रमजल भर् बूंद वदन मृदु अरबिंद प्रसेद मकरंद अलि अलकै अनुसारी ॥ नैन मेचक रेख अधर रंग विशेष नासिका जलज मनहुँ गुंजारी। भौंह मन्मथ धनुष पूरि त्रिभुवन विजय तिलक तीक्षण श्रीमंत सार सारी ॥ ताटंक द्युति छुटि केश विथुरी लटैं घट कुबुंरतर उंदित उजियारी। गंड सूक्ष्म इंदु मानहु दिनकर उदै सकुचे सतदल सूछकैं निवारी॥दशनहीरकी पांति बिच बिच मुसकाति वरणि न जात मृदुवचन किलकारी। विमल मुक्तमाल लसत उच्चकुचन पर मदन महादेव मनो दई है लचारी ॥ दोउ वसत एक ठौर काज निविसत भोर विरुद्ध त्यागि बात बनी अति भारी। कमल विकच करनावली मुद्रिका वलय पुट भुज वेलि शुकचारी ॥ स्कंध बेनी धरे मान मनसिज हरे श्रीगुंजमध्य कुंज सुरंग सारी। निम्ननाभी लेश कटि अति सुदेश बनी अधार जंघनि अति भारी ॥ मनहु मन्मथ अजित करि हरिहि देत होत नाद किंकिणि झनकारी।अति विशद गुरुनितंब चौर बांधे कोउ नाहिंन समतारी ॥ मंदगति युगल पटलपर अमल पद्म पानि पटतरन तुम्हारी।अभिमान पूरन वंक सूर प्रभु यदपि थकितभये गिर निरखि गिरिधारी॥ओट निरखै सखी मनहु चित्रत लिखी युक्ति संयोग पर जाहि बलिहारी ॥९॥राग केदारो॥नागरताकी राशि किशोरी। नव नागर कुलमूल साँवरो वरवशकियो चितै मुख मोरी ॥ रूप रुचिर अँग अंग माधुरी विनभूषण भूषित व्रजगोरी। छिन छिन कुशल सुगंध अंगमें कोकरभसर सिंधु झकोरी॥चंचल रसिक मधुप मोहन मन राखे कनक कमल कुच कोरी। प्रीतम नैन युगल खंजन खग बांधे विविध नितंबन डोरी ॥ अवनी उदर नाभि सरसी में मनहु कछुक मादक मधुरोरी। सूरदास पीवत सुंदर वर सींव सुदृढ निगमनिकी तोरी ॥ १० ॥ ॥ राग केदारो ॥ आजु तनु राधा सज्यो शृंगार। नीरज सुत सुवबाहनको भख श्याम अरुण रँग कौन विचार ॥ मुद्रापति अचवन तनयासुत उरहि बनावहि हार। गिरिसुत तिन पति विवश करनको अक्षत लै पूजत रिपुमार ॥ पंथपिता आसन सुत शोभित श्यामघटा बग पंक्ति अपार। सूरदास प्रभु अंश सुता तट क्रीडत राधा नंदकुमार ॥ ११ ॥ राग ललित ॥ देख सखी सायक बल जोर। बीस कमल परगट देखियतहै राधा नंदकिशोर ॥ सोरहकला सँपूरण मोह्यो व्रज अरुणोदय भोर। तामें साखि द्वै कमल लागिरहे चितवत चारि चकोर ॥ मनु मन मल द्वै गजराज अरे हैं कोटि मदनभै भोर। सूरदास बलि बलि या छबिकी अलकनकी झकझोर॥१२॥राग सारंग॥मोरनके चँदवा माथे बने राजत रुचिर सुदेश री। वदन कमल ऊपर अलिगण मानो घूँघरवारे केश री॥भौंह धनुष दृगबान चपल अति भाल तिलक जनु बान री। भोरहोत रवि अंधकारको कियो उरध संधान री॥ मणिगण जडित मनोहर कुंडल राजत लोल कपोल री। कालिंदीमें रवि प्रति बिंबित चंचल पवन अडोल री ॥ सुभग नासिका मुक्ता शोभित झलमलात छबि होत री। भृगुसुत मानो अमल विमल सखि घनमें किए उदोत री ॥ अरुण अधर सु श्रमित मुख बोलत ईषद कछु मुसुकात री। मानहु सुपकबिंबते प्रगटत रस अनुराग चुचात री ॥ दशनदमक दामिनि सी चमकति शोभा कहत न आवै री। याहीते दाडिम उर विगलित तिनकी सम नहिं पावै री ॥ चिबुक चारु मर्कत मणि

द्रुति सखी राजति त्रिवली ग्रीव री। मानहु सत्त तीनि रेखा करि कामरूपकी सीव री ॥ उन्नत विशाल हृदय राजतहै तापर मुक्ताहार री। मानहु साँवर गिरिते सरिता अध आवत द्वै वार री ॥ भुज भुजंग मनु चंदन चरचित करगहि मुख धरि वंस री। मानहु सुधा सरोवरके ढिग कुंजत युग कलहंस री ॥ कंचन वरन पीत उपरैना शोभित साँवर अंग री। मानहु आवत आगे पाछे निशि वासर इक संग री ॥ नाभि सरोज सुधा सरसी जनु त्रिवली सिढी बनाइ री। व्रजवधु नैन मृगी आतुरह्वै अति प्यासी ढिग आइ री ॥ कटि प्रदेश सुंदर सुदेश सखि तापर किंकिणि राजै री। अति नितंब जंघन शोभितहै देखत मृगपति लाजै री ॥ पीन पिंडुरिया साँवल सीरी चरणाम्बुज नखलाल री। मंद मंद गति वो आवतिहै मत्त दुरदकी चाल री ॥ सूरदास सर्वसहि निरंतर मननोहन अभिराम री।वृंदावनमें बिहरत दोऊ मम प्रभु श्यामा श्याम री ॥ १३ ॥ देखि हरिजूके नैननकी छबि । इहै जानि दुखमानि मनहु अंबुज सेवत रवि ॥ खंजरीट अति वृथा चपलता गये वन मृगजल मीन रहे दबि । तहँउ जानि तनु तजत जबहि कछु पटतरदे वे कहत कुकवि ॥ इन्हसे येइं पचिहारि रही हौं आवे नहीं कहत कछू फवि । सूर सकल उपमा जोरही यों ज्यों होइ आवै कहत होमत हवि १४ ॥ राग गूजरी ॥ किशोरी देखत नैन सिरात । बलि बलि सुखद सुखाविंदकी चंद्रबिंदु दुरिजात ॥ अघमोचन लोचन रतनारे फूले ज्यों जलजात । राजत निकट निपट श्रवणनके पिशुन कहत मनबात ॥ गौर लिलाट पाट पर शोभित कुंचित कच अरुझात । मानो कनक कमल मकरंदहि पीवत अलिन अघात ॥ नकबेसरि वंसीके संभ्रम भौंह मीन अकुलात । मनु ताटंक कमठ घूँघट डर जालवाझि अकुलात । श्यामकंचुकी मांझ सांझ फूले कुच कलश न समात । मानहु मत्तगयंद कुंभनि पर नील ध्वजा फहरात ॥ नखशिखलौं रस रूप किशोरी विलसत साँवल सुकृतगात । यहसुख देखत सूर अवर सुख उडे पुराने पात॥१५॥बसौ जु मेरे नैननमैंए जोरी । सुंदरश्याम कमलदल लोचन सँग वृषभानु किशोरी ॥ मोर मुकुट मकराकृतकुंडल पीतांबर झकझोरी । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको का वरणौं मति थोरी ॥राग बिलावल ॥ शंखचूड तेहि अवसर आयो । गोपी हुतीं प्रेमरस माती तिन ताको कछु शुद्धि न पायो ॥ चल्यो पराइ सकल गोपीलै दूरिगयो तब उन सुधि आयो । को यह लिये जात कहां हमको कृष्ण कृष्ण कहि कहि गोहरायो॥गोपी टेर सुनत हरि पहुँचे दानव देखि डरायो । मुष्टिक मारि गिराइ दियो तेहि गोपिन हर्ष बढायो॥मणि अमोल ताके शिरताही दिये हलधरही आयो । सूर चले बनते गृहको प्रभु विहँसत मिलि समुदायो॥१६॥ राग सोरठ॥सोई सुख नंद भाग्यते पायो।जो सुख ब्रह्मादिकको नाहीं सोइ सुख यशुमति गोदखिलायो॥सोइ सुख सुरभी वच्छ वृंदावन सोइ सुख ग्वालन टेरि सुनायो । सोइ सुख यमुनाकूल कदमचढि कोप कियो काली गहि ल्यायो । सुखही सुख डोलत कुंजनमें सब सुखनिधि बनते व्रजआयो।सूरदास प्रभु सुखसागर अति सोइ सुख शेष सहस मुख गायो॥ ॥१७॥ राग बिलावल॥कौन परी नँदलालहिं वानि।प्रातसमै जागनकी विरियां सोवतहै पीतांबर तानि॥ मात यशोदा कवकी ठाढी दधि ओदन भोजन लिये पान । तुम मोहन जीवनधन मेरे मुरली नेकु सुनावहु कान ॥ संग सखा व्रजबाल खरे सब मधुबन धेनु चरावन जान॥ यह सुनि श्रवण उठे नँदनंदन बंसी वेणु माँग्यो मृदुआन ॥ जननी कहति लेहु मनमोहन दधि ओदन घृत आन्यो सानि।सूर सु बलि बलि जाउँ वेणुकी जिहि लगि लाल जगे हितमानि॥१८॥अध्याय ३९राग बिलावल॥ मोर भयो जागो नँदनंद । तात निशि विगत भई चकई आनंद मई तरनिते चंद्र

भयो मंद॥तमचर खगरोर आलि करैं तब शोर वेगि मोचन करहु शुभगल फंद। उठहु भोजन करहु शिशु खौरि उतारि धरहु जननी प्रति देहु रूप निजफंद॥त्रियन दधि मथन करहिं मधुर ध्वनि श्रवण सुनि कृष्ण गुण विमल यश करत आनंद। सूर प्रभु हरिनाम उधारत जगजीवन गुण कौन देखि छकित भयो छंद॥१९॥राग बिलावल॥जागिए गोपाल लाल ग्वाल द्वार ठाढे। रैनि अंधकार गयो चंद्रमा मलीन भयो तारागण देखियत नहिं तरणि किराणि वाढे॥ मुकुलित भए कमल जाल गुंज करत भृंगमाल प्रफुलित वन पुहुप डार कुमुदिनि कुँभिलानी। गंधर्व गुण गान करत स्नान दान नेम धरत हरत सकल पाप वदत बिप्र वेद वानी॥ बोलत नंद बार बार मुख देखें तुव कुमार गाइन भई बड़ीवार वृंदावन जैबे। जननी कहति उठो श्याम जानत जिय रजनि ताम सूरदास प्रभु कृपालु तुमको कछु खैबे॥२०॥ रसोई वर्णन॥ भोजन भयो भावते मोहन। तातोइ जेंइ जाहु गो गोहन॥ खीर खांड खीचरी सँवारी। मधुर महेरि सो गोपन प्यारी॥ राइ भोग लियो भात पसाई। मूँग ढरहरी हींग लगाई॥ सदमाखन तुलसी दैतायो। घिरत सुवास कचोरा वनायो॥ पापर वरी अचार परम शुचि। अदरख अरु निबुवन है है रुचि॥ सूरन करि तरि सरस तरोई। सेमि सींगरी छमकि झोरई॥ भरता भँटा खटाई दीनी। भाजी भली भाँति दश कीनी॥ साग चना सँग सब चौराई। सोवा अरु सरसों सरसाई॥ बथुवा भली भाँति रचि राँध्यो। हींग लगाइ राइ दधि साँध्यो॥ पोई पर वर फाँग फरी चुनि। टेंटी टेंट सछोलि कियो पुनि॥ कुंदुरु और ककोरा कौरे। कचरी चार चचेडा सौरे॥ बने बनाइ करेला कीने। लोन लगाइ तुरत तलि लीने॥ फूले फूल सहींजन छौंके। मनरुचि होइ नाजुके औंके॥ फूल करील कली पाकर नम। फली अगस्त्य करी अमृत सम॥ अरु यहि अबिली दई खटाई। जेंवत पटरस जात लजाई॥ पेठा बहुत प्रकारन कीने। तिनसों सबै स्वाद हरि लीने॥ खीरा राम तरोई तामें। अरुचि न रुचि अंकुर जिय जामें॥ सुंदर रूप रताळू रातो। तारि करि लीन्हों अबहीं तातो॥ ककरी कचरी अरु कचनारचो। सुरसनिमोननि स्वाद सँवारचो॥ कैयो भाँति केरा करि लीने। दै करवँदा हरदि रँग भीने॥ बरबरील अरु बरा बहुत बिधि। खारे खाटे मीठे हैं निधि॥ पानौरा राइता पकोरी। उभकौरी मुँगछी सुठि सौंरी॥ अमृत इडहर है रस सागर। वेसन सालन अधिकौ नागर॥ खाटी कढी विचित्र बनाई। बहुत वार जेंवत रुचि आई॥ रोटी रुचिर कनकवेसन करि। अजवाइनि सैंधौ मिलाइ धरि॥ अबहिं अगाकरि तुरत बनाई। जे भाजि भजि ग्वालन सँगखाई॥ माँडे माँडि दुनेरो चुपरे। बहु घृत पाइ आपुही उखरे॥ पूरि सपूरि कचौरी कौरी। सदल सु उज्ज्वल सुंदर सौरी॥ लुचई ललित लापसी सोहै। स्वाद सुवासु सहज मनमोहै॥ मालपुआ माखन माथि कीन्हें। ग्राह असित रवि सम रँग लीन्हें॥ लावन लाडू लागत नीके। सेव सुहारी घेवर घीके॥ गोझा गूँदे गाल मसूरी। मेवा मिले कपूरन पूरी॥ शशिसम सुंदर सरस अँदरसे। ऊपर कनी अमी जनु वरसे॥ बहुत जलेब जलेबी बोरी। नाहिन घटत सुधाते थोरी॥ देखत हरष होत है समी। मनहु बुदबुदा उपजत अमी॥ फेनी घुरि मिसि मिली दूधसँग। मिश्री मिश्रित भई एक रँग॥ साज्यो दही अधिक सुखदाई। ता ऊपर पुनि मधुर मलाई॥ खोवा खोइ औटिहै राख्यो। सुहै मधुर मीठे रस चाख्यो॥ वासौंधी सिखरनि अति सोंधी। मिले मिरच मेटत चकचौंधी॥ छाँछ छबीली धरी धुगारी। झरहै उठत झारकी न्यारी॥ इतने जतन यशोदा कीन्हें। तब मोहन बाकल सँग लीन्हें॥ बैठे आइ हँसत दोउ भैया। प्रेम मुदित परसतिहै मैया॥

थार कटोरा जरित रतनके ॥ भरि सब वासन विविध जतनके। पहिले पनवारो परसायो । तब आपुन कर कौर उठायो ॥ जेंवत रुचि अधिको अधिकैया । भोजनहूं बिसरति नाहिं गैया ॥ शीतल जल कपूर रस रचयो। सो मोहन निज रुचि करि अचयो॥ महरि मुदित नित लाड लडावै। ते सुख कहा देवकी पावै ॥ धरि तुष्टी झारी जल ल्याई। भरचो चुरूखरिका लै आई॥ पीरे पान पुराने वीरा। खातभई दुति दाँतनि हीरा ॥ मृगमद कन कपूर कर लीने । बाँटि बाँटि ग्वालनको दीने॥ चंदन और अरगजा आन्यो। अपने कर बलके अँग वान्यो ॥ ता पाछे आपुनहूं लायो। उबरचो बहुत सखन पुनि पायो। सूरदास देख्यो गिरिधारी। बोलिदई हँसि जूंठनि थारी॥ यह जेवनार सुनै जो गावै। सो निज भक्ति अभय पद पावै॥२१॥राग बिलावल॥रामकली॥ भोजन करत मोहनराइ। हरषि सुखतन देत मोहन आपु लेत छडाइ ॥ देखहीं सुख नंदको तब आनँद उर न समाइ। निरखि प्रभुकी प्रगट लीला जननि लेति बलाइ॥ नंदनंदन नीर शीतल अचै उठे अघाइ। सूर जूंठन भक्तपाई देव रहे लुभाइ२२॥राग बिलावल॥देख सखी ब्रजते बनआवत। रोहिणि सुत यशुमति सुतकी छबि गौर श्याम हरि हलधर गावत॥ नीलांबर पीतांबर ओढे यह शोभा कछु कही न जात। युगल जलद युग तडित मनहुँ मिलि अरस परस जोरतहैं नात ॥ शीश मुकुट मकराकृत कुंडल झलकै विविध कपोलहिं भाँति। मनहुँ जलद युग पास युगल रवि तापर इंद्र धनुषकी कांति॥ कटि कछनी कर लकुट मनोहर गोचारन चले मन उनमानि । ग्वाल सखा बिच श्रीनँदनंदन बोलत वचन मधुरि मुसुकानि ॥ चितै रही ब्रजकी युवती सब आपुसहींमें करत बिचार। गोधन वृंदलिए सूरज प्रभु वृंदावन गए करत बिहार ॥२३ ॥ग्वाल वचन श्रीकृष्ण प्रति॥ राग गौरी ॥ छबीले मुरली नेक बजाउ । बलि बलि जात सखा यह कहि कहि अधर सुधारस प्याउ ॥ दुर्लभ जन्म दुर्लभ वृन्दावन दुर्लभ प्रेम तरंग। नाजानिये बहुरि कबह्वैहै श्याम तुम्हारो संग ॥ विनती करहिं सुबल श्रीदामा सुनहु श्याम दै कान । जा रसको सन-कादि शुकादिक करत अमर मुनि ध्यान ॥ कब पुनि गोप भेष ब्रज धरिहौं फिरिहौं सुरभिन साथ। कब तुम छाक छीनिकै खैहो हो गोकुलके नाथ ॥ अपनी अपनी कंध कमरिया ग्वालन दई डसाइ। सौंह दिवाइ नंदबाबाकी रहे सकल गहिपाइ ॥ सुनि सुनि दीन गिरा मुरलीधर चितए मुख मुसकाइ। गुणगंभीर गोपाल मुरलि कर लीन्हों तबहिं उठाय॥ धरिकर बेनु अधर मन मोहन कियो मधुर ध्वनि गान। मोहे सकल जीव जल थलके सुनि वारचो तन प्रान ॥ चपलनयन भ्रुकुटी नासापुट सुनि सुंदर मुखबैन । मानहु नृत्यक भाव दिखावत गति लिये नायक मैन॥ चमकत मोर चंद्रिका माथे कुंचित अलक सुभाल। मानहु कमलकोशरस चाखत उडिआए अलिमाल॥ कुंडल लोल कपोलन झलकत ऐसी शोभा देत। मानहु सुधासिंधुमें क्रीडत मकर पानके हेत ॥ उपजावत गावत गतिसुंदर अनाघातके ताल। सरवस दियो मदन मोहनको प्रेम हरषि सब ग्वाल॥ शोभित वैजंती चरणनपर श्वासा पवन झकोरि। मानहु ग्रीव सुरसरी बहि आवत ब्रह्मकमंडलु फोरि॥ डुलति लता नहिं मरुत मंदगति सुनि सुंदर मुख बैन। खग मृग मीन अधीन भए सब कियो यमुन जल सैन॥ झलमलात भृगुकी पदरेखा सुभग साँवरे गात । मानो षट्विधु एकै रथ वैठे उदय कियो अधरात ॥ बांके चरण कमल भुज बाँके अवलोकनि जु अनूप। मानहु कल्पतरोवर बिरवा आनि रच्यो सुरभूप ॥ आयसु दियो गुपाल सबनको सुखदायक जियजान। सूरदास चरणनरज माँगत निरखत

रूपनिधान॥२४॥राग सारंग॥रीझत ग्वालरिझावत श्याम।मुरलि बजावत सखन बोलावत सुबल सुदामा लैलै नाम ॥ हँसत सखा सब तारी दैदै नाम हमारो मुरली लेत । श्याम कहत अब तुमहु बोलावहु अपने करते ग्वालन देत ॥ मुरली लैलै सबै बजावत काहूपै नहिं आवै रूप । सूर श्याम तुम्हरेहि मुख बाजत कैसे देखो राग अनूप॥२५॥राग टोडी॥हरि बराबरि वेणु कौन बजावै । जगजीवन विदित मुनिनाचन वेणु सो बजावै चतुरानन पंचानन सहसानन ध्यावै ॥ ग्वाल बाल लिए यमुना कच्छ वच्छ चरावै । सुर नर मुनि अखिल लोक कोउ न पार पावै ॥ तारन तरन अगणित गुण निगम नेति गावै ॥ तुमको यशुमति आँगन अपने दै करताल नचावै । सूरदास प्रभु कृपाधाम हैं भक्तन वश्य कहावै ॥ २६ ॥ अथ परस्पर गोपिका वचन विरह अवस्था ॥ राग टोडी ॥ मुरली सुनत देहगति भूली । गोपी प्रेम हिंडोरे झूली ॥ कबहूँ चकृत होहिं सयानी । श्वेदचलै द्रवै जैसे पानी ॥ धीरज धरि इक इकहि सुनावहि । यह कहिकै आपुहि बिसरावहि ॥ कबहूँ सुधि कबहूँ बिसराई । कबहूं मुरली नाद समाई ॥ कबहूं तरुणी सब मिलि बोलैं । कबहूं रहैं धीर नहिं डोलैं॥ कबहुँ चलैं कबहुँ फिरि आवैं । कबहुँ लाज तजि लाज लजावैं ॥ मुरली श्याम सुहागिनि भारी । सूरदास प्रभुकी बलिहारी ॥ २७ ॥ राग विहागरो॥ अधर धरि मुरली श्याम बजावत। सारंग गौरी नट नारायण करिकै गौरी सुरहि सुनावत ॥ आपु भए रस वश ताहींके औरन वश करवावत । ऐसो को त्रिभुवन जलथलमें जो शिर नहीं धुनावत ॥ सुभग मुकुट कुंडल मणि श्रवणन देखत नारि न भावत । सूरदास प्रभु गिरिधर नागर मुरली धरन कहावत ॥२८॥राग सारंग॥ अधर रस मुरली सौतिन लागी । जा रसको पटऋतु तप कीन्हों सो रस पीवत सभागी ॥ कहां रही कहँते इह आई कौने याहि बोलाई। सूरदास प्रभु हमपर ताको कीने सवति बजाई ॥ २९ ॥ राग केदारो ॥ मुरली मोहनी भई । करी जु करनि देव दनुजनि प्रति वह विधि फेरि ढई।वह पय निधि इन ब्रज सागर मथि प्याइ पियूप नई। सिंधु सुधा हरि वदन इंदुकी इह छल छीनि लई॥आपु अँचै अचवाइ सप्तसुर कीन्हें दिग विजई।एकहि पुट उत अमृत सूर इत मदिरा मदन मई ॥ ३० ॥ जोपै मुरलीको हित मानौ ॥ तौ तुम वार वार ऐसे कहि मनमें दोप न आनौ। बासर श्याम बिरह अहि ग्रासित हूजत मृतक समान । लेति जिवाय मंत्र सुरस कही करति न डर अपमान॥ निज संकेत खिलावति अजहूँ मिलवति सारँगपानि । शरद निशा रस रास करायो बोलि बोलि मृदुवानि ॥ परकृत शील सुकृत उपमा रमि तासों यों कत कहिए । परमानंद सूरदास क्यों मेटि कृत न्याइ इतो दुख सहिए ॥३१॥ राग मल्लार॥अधर मधु कतक मुई हमराखि । संचित किए रही शरवासो सकी न सकुचानि चाखि ॥ शशि सहि शीत जाइ यमुनातट दीनवचन दिन भापि । पूजि उमापतिको वर पायो मनही मन अभिलापि ॥ सोइ अब अमृत पीवति मुरली सबहिनके शिरनाखि।लिए छँडाइ निडर सुनि सूरज धेनु धूरिदै आँखि॥ ३२॥राग नट॥सखी री माधोहि दोप न दीजै।जो कछु करि सकिये सोई या मुरलीको अब कीजै॥बार बार वन बोलि मधुर ध्वनि अति प्रतीति उपजाइ । मिलि श्रवणन मनमोहि महारस तनकी सुधि बिसराइ ॥ मुख मृदु वचन कपट अंतर गति हम यह बात न जानी । लोक वेद कुल छाँडि आपनो जोइ जोइ कही सुमानी ॥ अजहूँ वह प्रकृति याके जिय लुब्धक संग जु साधी।सूरदास क्योंही करुणामय परति नहीं आराधी॥३३॥ मुरली तो यह आहि बांसकी।बाजत श्वास परत नाहिं जानति भई रहति पिय पासकी । चेतनको चित हरति अचेतनि भूखी डोलत मासकी ॥सूरदास सब ब्रजवासिन सों लिये रहति है गासकी ॥ ३४ ॥ जादिनते मुरली कर लीन्ही। तादिनते श्रवणन सुनि सुनि सखि मनकी बात सबै लै दीन्ही।लोक वेद

T

कुल लाजकानि ताजि मर्याद वचन मिति कीन्हीं।तबही ते तनु सुधि बिसराई निशि दिन रहति गोपाल अधीन्ही॥शरद सुधानिधि शरद अंश ज्यों सींचत अमी प्रेमरस भीनी। ता ऊपर शुभदरश सूर प्रभु श्रीगोपाल लोचन गति छीनी॥३५॥मुरली भई आजु अनूप। अधर बिंब बजाय करधरि मोहे त्रिभुवन भूप॥ देखि गोपी गाइ गाइन देखि गृह वन कूप। देखि मुनिजन नाग चंचल देखि सुंदर रूप॥ देखि धरणि अकाश सुर नर देखि शीतल धूप। देखि सूर अगाध महिमा भए दादुर चूप॥ ३६॥ राग कान्हरो॥ मुरलिया मोको लागत प्यारी। मिलि अचानक आइ कहांते ऐसी रही कहांरी॥धनियाके पितु मात धन्य यह धन्य धन्य मृदु बोलनि। धन्य श्याम गुण गुणिकै ल्याये नागरि चतुर अमोलनि॥ इह निर्मोल मोल नहिं याको भली न याते कोई। सूरदास याको पटतर को तौ दीजै जो होई॥३७॥राग गौरी॥मोहन मुरली अधर धरी।कंचन मणि मय खचित रचित अति कर गिरि धरन परी॥ औघरतान बँधान सरस सुर अरु रस उमँगि भरी। हरिकर्षत मन तन युवतिन के नग खग विवश करी॥ पिय मुख सुधा विलास विलासिनि सुरत सँगीत समुद्र तरी। सूरदास त्रैलोक विजययुत दर्प मीन पति गर्व हरी॥३८॥राग केदारो मुरली श्यामके कर अधरबिंब रमी। लेपि सर्वसु युवति जनको बदन बिंदत अमी॥ पिबति न्यारे गर्व मारे नेकु नाहीं नमी। बोलि शब्द सुसप्तसुर मिल नाग मुनि गति दमी॥ महाकठिन कठोर आली बांस बंशजु जमी। सूर पूरण परसि श्री मुख नेक नाहीं झमी॥३९॥राग मलार॥बाँसुरी विधिहूते प्रवीन। कहिए काहि आहि को ऐसो कियो जगत आधीन॥ चारि वदन उपदेश विधाता थापी थिर चरनीति। आठ वदन गर्जति गर्वीली क्यों चलिए यह रीति॥ विपुल विभूति लई चतुरानन एक कमल करि थान। हरिकर कमल युगल पर बैठी बाढ्यो यह अभिमान॥एकबेर श्रीपतिके सिखये उन लियो सब गुण गान। इनके तौ नँदलाल लाडिलो लग्यो रहत नितकान॥ एक मराल पीठि आरोहण विधि भयो प्रबल प्रशंस। इन तौ सकल विमान किए गोपीजन मानस हंस॥ श्रीवैकुंठनाथ उर वासिनि चाहत जापद रेन। ताको मुख सुखमय सिंहासन करि बैसी यह ऐन॥ अधर सुधा पी कुल व्रत टार्‍यो नहीं सिखा नहिं नाग। तदपि सूर या नंदसुवनको याही सों अनुराग॥४०॥ राग सारंग॥ वंसी वैर परी जु हमारी। अधर पियूष अंश तिनहींको इन पियो सब दिन निज निज प्यारी॥ इकधौं हरि मन हरति माधुरी दूजे वचन हरत अन्यारी। बाँस वंश हरि वेध महाशुभ अपने छेद न जानत कारी॥ सुन्यो सुपति जानी व्रजके पति सो अपनाइ लियो रखवारी। सुने अनीत सूरज प्रभु केरी अधर गोपाल जे अपने धारी॥४१॥राग मलार॥जब जब मुरलीके मुख लागत। तब तब श्याम कमलदल लोचन नखशिखते रस पागत॥ बातन कहत रहत टेढेहोइ बाँह अलिंगन मानत। भ्रुकुटी अधर बिंब नाशा पुट सूधो चितवन त्यागत॥ पल इक माँह पलटसो लीजत प्रगट प्रीति अनागत।सुरदास स्वामी वंसी वश मुरछि निमेष न जागत॥४२॥ ॥ वंसीवचन राग मलार॥ ग्वालिनी तुम कत उरहन देहु। पूछहु जाइ श्याम सुंदरको जिहि बिधि जुर्‍यो सनेहु॥ वारेहीते भई विरत चित तज्यो गाँउ गुणगेह। एकहि चरण रहीहो ठाढी हिम ग्रीषम ऋतु मेह॥ तज्यो मूल शाखा सो पत्रनि सोच सुखानी देहु। अगिनि शूलाकत मोर्‍यो न अंग मन बिकट बनावत वेहु॥ बकती कहा बाँसुरी कहि कहि करि करि तामस तेहु। सूर श्याम इहि भाँति रिझिकै तुमहु अधर रस लेहु॥४३॥राग मलार॥ज्यों ज्यों मुरलिहि महत दियो।त्यों त्यों निदरि श्याम कोमल तन वदन पियूष पियो॥ रोके रहति पाणि पल्लव पुट होत न कछू

वियो। बैठति अधरन पीठ परमरुचि सकुचन नाहिं हियो॥ जान्यो जग रति पति शिव जार्यो सो यह सूर जियो॥विधि मर्याद मेटि इन जो जो रुचि आयो सो कियो॥ ४४॥ राग सारंग॥ इन मुरली कछु भलो न कीन्हों। अधर सुधा रसवर सु हमारो आपुन पियो अरु औरन दीन्हों॥ विरुचे द्रुम तृण सोलसतिलतट पूजति गौरि भयो तनु छीनो। सो मधु सूरज परसि कुटिल चित सवहिनके देखत हरि लीनो॥४५॥अथ श्रीकृष्ण व्रज आवन॥ राग गौरी॥नटवर भेप धरे व्रज आवत।मोर मुकुट मकराकृत कुंडल कुटिल अलक मुखपर छवि पावत॥ भ्रुकुटी बिकट नैन अति चंचल यह छवि पर उपमा इक धावत। धनुष देखि खंजन विवि डरपत उडि न सकत उठिबे अकुलावत॥अधर अनूप मुरलि सुर पूरत गौरी राग अलापि बजावत। सुरभीवृंद गोप बालक सँग गावत अति आनंद बढावत॥ कनक मेखला कटि पीतांबर नृत्यत मंद मंद सुर गावत। सूर श्याम प्रति अंग माधुरी निरखत ब्रजजनके मन भावत॥४६॥राग कान्हरो॥ व्रज युवती सब कहत परस्पर बनते श्याम बने व्रज आवत। ऐसी छवि मैं कबहुँ न पाई सखी सखी सों प्रगट देखावत॥ मोर मुकुट शिर जलजमाल उर कटि तट पीतांबर छवि पावत। नव जलधर पर इंद्रचाप मानो दामिनि छवि बलाक घन धावत॥ जेहि जु अंग अवलोकन कीन्हों सो तन मन तहँहीं विरमावत। सूरदास प्रभु मुरली अधर धरे आवत राग कल्याण बजावत॥ ४७॥ राग गुणसारंग॥ मेरे नयन निरखि सचुपावैं। बलि बलि जाउँ मुखारविंदकी वनते पुनि व्रज आवैं॥ गुंजाफल अवतंस मुकुटमणि वेणु रसाल बजावैं। कोटि किरणि मुखमें जो प्रकाशत उडुपति वदन लजावैं॥ नटवर रूप अनूप छवीलो सबहिनके मनभावैं। सूरदास प्रभु चलन मंदगति विरहिन ताप नशावैं॥ ४८॥ राग गौरी॥ बलि बलि मोहन मूरतिकी बलि बलि कुंडल बलि नैन विशाल। बलि भ्रुकुटी बलि तिलक विराजत बलि मुरली बलि शब्द रसाल॥ बलि कुंडल बलि पाग लटपटी बलि कपोल बलि उर वनमाल। बलि मुसुकानि महामुनि मोहत बलि उपरैना गिरिधर लाल॥ बलि भुज सखा अंग पर मेले बलि कुलही बलि सुंदर चाल। बलि काछनी चोलनाकी बलि सूरदास बलि चरण गोपाल॥४९॥राग जैतश्री॥सुंदर साँवरे हो तैं चित लियो चुराइ। संग सखा साँझके समये निकसे द्वारे आइ॥ देखि अद्भुत रूप तेरे रहे नयन उर छाइ। पाग ऊपर गोसमावल रंग रंग रचि बनाइ॥ अति सुंदर शुक नासिका राजत लोल कपोल। रत्न जडित कुंडल ज्यों झलकत करन कपोल॥ कटि तट काछ विराजई पीतांबर छवि देत। अमृत कमल मुख भापई तन मन वशकरलेत॥ भौं हैं धनुष दुइ वरुनि मनो मदन शरसाँध। जाहि लगे सोइ जानैं संग लेत बलि बाँध॥ अंग अंग पर बलिगई मुरली नेक बजाइ। सुनि पावैं सचु गोपिका सूरदास बलिजाइ॥५०॥राग बिलावल॥श्याम कछु मोतनही मुसुकात। पीतांबर पहिरे चरण पाँवरी ब्रजबीथिनमें जात॥ अति बुधि वंदि चंद नखशिखलौं सोंधे भीने गात। अलकावली अधर मुख बीरा काँध कमल कर दिशहि फिरावत॥ धन्यभाग्य व्रजके जो सखी री धन्य धन्य उनके जननी तात। धन्य जे सूरदास प्रभु निरखत अति भूँखे लोचन न अघात॥५१॥राग अडानो॥श्यामसुंदर आवैं वनते वने आजु देखि देखि नैन रीझे। शीशमुकुट डोल श्रवणकुंडल लोल भ्रुकुटी धनुप नैन खंजनझीझे॥ दशन दामिनि ज्योति उर पर माल मोती ग्वाल बाल सब आवैं रँगभीजे।सूर प्रभु श्याम प्रभु राम संतनके सुखद धाम अंग अंग प्रति छवि निरखि जीजे॥५२॥राग कान्हरो॥ विराजत री वनमाल गरे हरे हरि आवत वनते।पुहुपनिसों लाल पाग लटकि रही री वाम भागसों छवि टरत न मनते॥ मोर मुकुट शिर श्रीखंड गोरज

मुखपर मंडित नटवर रहे भेष धरे आवत छबिते। सूरदास प्रभुकी छबि ब्रजललना निरखि थकित तन मन न्यवछावरि करति आनंद बरते॥ ९३॥राग गौरी॥ ब्रजको देखि सखी हरि आवत। कटि तट सुभग पीतपट राजत अद्भुत भेष बनावत॥ कुंडल तिलक चक्र रज मंडित मुरली मधुर बजावत। हँसि मुसुकानि नेक अवलोकनि मन्मथ कोटि लजावत॥ पीरी धौरी धुमरी गौरी लैलै नाम बोलावत। कबहूँ गान करत अपने रुचि करतल ताल बजावत॥ कुसुमित दाम मधुप कल कुंजत संग सखा मिलि गावत। कबहुँक नृत्य करत कौतूहल सप्तक भेद दिखावत॥ मंद मंदगति चलत मनोहर युवतिन रस उपजावत। आनँदकंद यशोदानंदन सूरदास मनभावत॥९४॥राग गौरी॥कमलमुख शोभित सुंदर बेनु॥मोहनराग बजावत गावत आवत चारैं धेनु॥ कुंचितकेश सुदेश वदनपर जनु साज्यो अलिसैनु। सहि न सकति मुरली मधु पीवति चाहत अपनो ऐनु॥ भ्रकुटि मनो कर चाप आपलै भयो सहायक मैनु। सूरदास प्रभु अधर सुधा लगि उपज्यो कठिन कुचैनु॥९५॥राग केदारो॥नैनन निरखि हरिको रूप।मन बुद्धि दै मुख चितै माई कमल अयन अनूप॥कुटिल केश सुदेश अलिगण नैन शरद सरोज। मकरकुंडल किरणिकी छबि दुरत पियत मनो ज॥ अरुन अधर कपोल नाशा सुभग ईषद हास। दशन दामिनि जलद नवशशि भ्रुकुटि वदन विशाल॥अंग अंग अनंग जीते रुचिर उर वनमाल। सूर शोभा हृदय पूरण देत सुख गोपाल॥९६॥ राग केदारो॥हरिको वदन रूपनिधान। दशन दाडिम बीजराजत कमलकोशसमान॥ नैन पंकज रुचिर दृगदल चलन भौंहन बान। मध्यश्याम सुभगमानौ अलिः बैठो आन॥ मुकुट कुंडल किरनि करननि किय किरनकी हान। नासिका मृगातिलक ताकत चिबुक चित्त भुलान। सूरके प्रभु निगमवाणी कौन भाँति बखान॥९७राग नट॥माधोजूके वदनकी शोभा॥कुटिल कुंतल कमल मुख मनौं मधुपरस लोभा॥ भ्रकुटि धनुष नवकंज पारस सदृशचंचल मीन। मुकुट कुंडल किरनि रवि-छबि परस विगासित कीन॥ सुरभिरेणु पराग रंजित मुरलि ध्वनि अलिगुंज। निरखि सुभग सरोज मुदित मराल सम शिशुपुंज॥ दशन दामिनि बीच मिलि मनो जलद मध्य प्रकाश। गावत निगम वाणी नेति क्यों कहि सकै सूरजदास॥९८॥राग नट॥देखि री देख मोहन वोर।श्याम सुभग सरोज आनन चारु चित्त चकोर॥ नील तनु मनु जलदकी छबि मुरलि सुर घनघोर। दशन दामिनि लखत बदननि चितवनि झकझोर॥ श्रवण कुंडल गंड मंडल उदित ज्यों रवि भोर। वरहि मुकुट विशाल माला इंद्रधनु छबि थोर॥ वनधातु चित्रित भेष नटवर मुदित नवल किशोर। सूर श्याम सुभाइ आतुर चितै लोचनकोर॥९९॥ राग कल्याण॥माधोजूके तनुकी शोभा कहत नाहिं वनि आवै। अचवत आदर लोचन पुट दोउ मनु नहिं तृपिता पावै॥ सघन मेघ अति श्याम सुभग वपु तडित वसन वनमाल।।शिर शिखंड वनधातु बिराजत सुमन सुरंग प्रवाल॥ कछुक कुटिल कमनीय सघन अति गोरज मंडित केश। अंबुज रुचिर पराग पर मानो राजत मधुप सुदेश॥ कुंडल लोल कपोल किरिणि गण नैन कमल दल मीन। अधर मधुर मुसकानि मनोहर करत मदन मन हीन॥ प्रति प्रति अंग अनंग कोटि छबि सुनसखी परम प्रवीन।सूर दृष्टि जहँ जहँ परति तहीं तहीं रहति है लीन॥६०॥राग हमीर॥इहै कोऊ जानै री।वाकी चितवनि में कि चंद्रिका मैं किधौं मुरली मांझ ठगोरी॥ देखत सुनत मोहि जा सुर नर मुनि मृग और खगो री। अरी माई जबते दृष्टि परे मन मोहन गृह मेरो मन न लग्यो री।सूर श्याम बिनु छिन न रहौं मेरो मन उन हाथ पगो री॥६१॥राग कल्याण॥लालके रूप माधुरी नैनन निरखी नैक सखी री। मनसिज मन हरनहंसि साँवरो सुकुमार राशि नख शिख

अंग अंग निरखि शोभाकी सींव नखी री । रंगमगी शिरसुरंग पाग लटाकि रही वामभाग चंपकली कुटिल अलक बिच बीच रखी री ॥ आयत दृग अरुण लोल कुंडल मंडित कपोल अधर दशन दीपतिकी छबि क्योंहूं न जात लखी री । उभय उदय भुजदंड मूल पीन अंशसानुकूल कनक मेखला दुकूल दामिनी धरखी री ॥ उर पर मंदार हार मुकुता लर बर सुढार मत्त द्विरद गति त्रियनिकी देह दशा करखी री । मुकुलित वय नवकिशोर वचन रचन चितके चोर माधुरी प्रकाश अनूप मंजरी चखी री । सूर श्याम अति सुजान गावत कल्यान तान सपत सुरन कल इते पर मुरलिका वरपी री६२॥राग गौरी॥ढोटा कौनको इह री॥श्रुति मंडल मकराकृत कुंडल कनककंठ दुलरी॥ घन तन श्याम कमल दल लोचन चारु चपल तुल री । इंदुवदन मुसुकानि माधुरी अलकन अलिकुल री ॥ उर मुक्ताकी माल पीतपट मुरली सुर गौरी । पगनूपुर मणि जडित रुचिर अति कटि किंकिणि रव री॥ बालक वृंद मध्य राजत हैं छबि निरखत भुल री । सोइ सजीवन सूरदासकी महरि रहे उर री॥६३॥राग गौरी॥इह ढोटा नंदको है री।नहीं जानति बसति ब्रजमें प्रगट गोकुल री॥धरचो गिरिवर वामकर जेहि सोई है यह री । दैत्य सब इनही सँहारे आपु भुजबल री ॥ ब्रज घरनि जो करत चोरी खात माखन री । नंद घरनी जाहि बांध्यो अजिर ऊखल री ॥ सुरभिगणालिए वनते आवत सबइ गुण इन री।सूरप्रभु ए सबहि लायक कंस डरे जिन री॥६४॥यशुमतिको सुत इहै कन्हाई। इनहिं गोवर्द्धन लियो उठाई॥इंद्र परचो इनहींके पाँइ । इनहीकी ब्रज चलत बडाइ ॥ बकी पिवा वन इनहीं आई। योजन एक परी मुरझाई ॥ इनहि तृणालै गयो उडाइ । पटक्यो द्वार शिला पर आइ ॥ केशी सुर इनहीं संहारचो । अघा बकासुर इनहीं मारचो ॥ श्याम बरन तनु पीत पिछौरी । मुरली राग बजावत गौरी ॥ देखि रूप चकृत भई बाला । तनुकी सुधि न रही तेहि काला ॥ सूर श्याम को जानति नीके । मगन भई पूँछत सुख जीके ॥ ६५ ॥ राग गौरी ॥ आवत बनते सांझ देखे मैं गायन माँझ काहूको ढोटा री एक शीश मोर पखिआँ । अतसी कुसुम जैसे चंचल दीरघ नैन मानौ रसभरी जो लरति युगल झखिआँ ॥ केसरिकी खौरि किए गुंजा वनमाल हिये उपमा न कहि आवै जेती तै नखिआँ ॥ राजत पीत पिछौरी मुरली बजावै गौरी ध्वनि सुनि भई बौरी रही पलक अँखिआँ॥चल्यो न परत पग गिरिपरी सूधे मग भामिनि भवन ल्याई करगहे कखिआँ ॥ सूरदास प्रभु चित्त चोरि लियो मेरे जान और न उपाव दाँव सुनो मेरी सखिआँ ॥६६॥ ॥रागदेवगंधार ॥ इक दिन हरि हलधर सँग ग्वालन । प्रातचले गोधनवन चारन ॥ कोउ गावत कोउ वेणु बजावत।कोउ सिंगी कोउ नाद सुनावत॥खेलत हँसत गए वन मद्दियाँ । चरन लगीं जित कित सब गैयाँ॥हरि ग्वालन मिलि खेलन लागे।सूर अमंगल मनके भागे॥६७॥अध्याय ॥ ३६ ॥ वृषभासुर॥ वध केशी हेतु ॥ राग सोरठ ॥ यहि अंतर वृषभासुर आयो।देखे नंदभुवन वालक सँग इहै घात है पायो॥ गयो समाइ धेनुपति ह्वैके मनमें दाउँ बिचारे । हरि तबहीं लखि लियो दुष्टको डोलत धेनु बिडारे ॥ गैयां बिडारि चलीं जित तितको सखा जहां तहां घेरैं । वृषभ शृंगसों धरणि उकासत बल मोहन तन हेरैं ॥ आवत चल्यो श्यामके सन्मुख निदरि आपु अँग सारी । क्रुद्धि परचो हरि ऊपर आयो कियो युद्ध अति भारी ॥ धाइ परे सब सखा हाँक दै वृषभ श्यामको मारचो । पाउँ पकरि भुजसों गहि फेरचो भूतल माँह पछारचो ॥ परचो असुर पर्वत समान ह्वै चकित भए सब ग्वाल । वृषभ जानिकै हम सब धाए यह कोऊ बिकराल ॥ देखि चरित्र यशोमति सुतके मन में करत विचार । सूरदास प्रभु असुर निकंदन संतन प्राण अधार॥६८॥राग गौरी॥धन्य कान्ह धनि धनि ब्रज आए । आजु सबनि घरिकै यह खातो धनि तुम हमहि बचाए ॥ यह ऐसो तुम अतिहि

तनकसे कैसे भुजन फिरायो। पलकहि माँझ सबनके देखत मारचो धरणि गिरायो॥ अबलौं हम तुमको नहिं जान्यो तुमहिं जगत प्रतिपालक। सूरदास प्रभु असुर निकंदन ब्रज जनके दुख दालक॥६९॥ राग कल्याण॥ आवत मोहन धेनुचराए। मोर मुकुट शिर उर वनमाला हाथ लकुट गोरज लपटाए॥ कटि कछनी किंकिणि ध्वनि बाजत चरण चलत नूपुर रवराए। ग्वाल मंडली मध्य श्याम घन पीतवसन दामिनिहि लजाए॥ गोपसखा आवत गुण गावत मध्य श्याम हलधर छबिछाए। सूरदास प्रभु असुर सँहारचो ब्रज आवत मन हर्ष बढाए॥७०॥ ये गोरेणु रंजित आवतहैं मोहन लाल। श्याम सुभग तनु तडित वसन बग पंगति मुक्तहार वनमाल॥ गोपद रज मुखपर छबि लागति कुंडलनैन विशाल। बल मोहन वनते बने आवत लीने गैयाजाल॥ग्वालमंडली मध्य विराजत बाजत वेणु रसाल। सूर श्याम वनते ब्रज आए जननि लिए अँकमाल॥७१॥ राग कान्हरो॥ तेरो माई गोपाल रणशूरो। जहँ जहँ भिरत प्रचारि पैजकरि तहीं परतहै पूरो॥ वृषभरूप दानव इक आयो सो क्षणमाँह सँहारचो। पाँवपकरि भुजसों गहिवाको भूतलमाहँ पछारचो॥ कहत ग्वाल यशुमति धनि मैया बडो पूत तैं जायो। यह कोउ आदि पुरुष अवतारी भाग्यहमारे आयो॥ चरण कमलपै बंदित रहिये अनुदिन सेवा कीजै।बारंबार सूर कहै प्रभुकी हरषि बलैया लीजै॥७२॥राग सोरठ॥ यशुमति बार बार पछितानी। सुनि करतूत वृषभासुरकी जब ग्वाल कहीं मुखवानी॥ गैयन भीतर आइसमान्यो कान्हहि मारन ताक्यो। मैं नहिं काहूको कछु घाल्यो पुण्यनि करवर नाक्यो॥ सुन यशुमतिमैया कत खीझत हरिके भाए ख्याल। पर्वत तूल देह धरिकै पलकमें कियो विहाल॥ तुम्हरी रक्षाको यह नाहीं यह ब्रजके रखवार। सूरदास मनमोह्यो सबको मोहन नंदकुमार॥७३॥राग सारंग॥हमहि डर कौनको री मैया। डोलत फिरत सकल वृंदावन जाके मीत कन्हैया॥ जब जब गाढ परतिहै हमको तहँ करिलेत सहैया। चिरजीवहु यशुमति सुत तेरो हरि हलधर दोउ भैया॥ इनते बडे और नाहिं कोऊ इहि सब देत बडैया। सूर श्याम सन्मुख जे आए ते सब स्वर्ग चलैया॥७४॥राग कान्हरो॥ हँसि जननी सों बात कहत हरि देख्यो मैं वृन्दावन नीके। अति रमणीक भूमि द्रुम वेली कुंज सघन निरखत सुखजीके॥ यमुनाके तट धेनु चराईं कहत मात मनवीके। भूखमिटी वनफलके खाए प्यास यमुनजल पीके॥ सुनति यशोदा सुतकी बातें अति आनंद मगन तवहीके। सूरदास प्रभु विश्वभरन ए चोर भए ब्रजतन कदहीके॥७५॥ गोविंद गोकुलकी जीवनि मेरे। जाहि लगाइ रही तन मन धन दुख भूलत सुख हेरे॥ जाके गर्व वढ्यो नहिं सुरपति रह्यो सात दिन घेरे। ब्रज हित नाथ गोवर्धन धारे सुभग भुजननख नेरे॥ जाके यश ऋषि गर्ग बखान्यो कहत निगम निज टेरे। सोइ अब सूर सहित संकर्षण पाए जतन घनेरे॥७६॥ अध्याय॥ ३७॥ अथ केशीवध॥ राग मारू॥ असुरपति अतिही गर्वधरचो। सभामाँझ बैठो गर्जतहै बोलत रोष भरचो॥ महामहा जे सुभट दैत्यबल बैठे सब उमराउ। तिहूँभुवन भरि गमिहै मेरो मो सन्मुख को आउ॥ मो समान सेवक नहिं मेरे जाहि कहौं कछ दाव। काहि कहौं को ऐसो लायकहै ताते मोहिं पछिताव॥ नृपतिराइ आयसु दै मोको ऐसो कवन बिचार। तुम अपने चित सोचत जाको असुरनके सरदार॥ जो करि क्रोध जाहि तन ताकों तिनकोंहै संहार। मथुरापति यह सुनि हरषित भयो मनहि धऱ्यो अतिभार॥ श्वेतछत्र फहरात शीशपर ध्वज पताक बहुवान। ऐसो को जो मोहिं न जानत तिहूँ भुवन मेरी आन॥ असुर वंशजे महाबली सब कहौं काहि ह्वाँ जान। तनकतनकसे महर ढिटौना करि आवै बिन प्रान॥ यह कहि कंस चितै केशीतन कह्यो जाइ करि काज। तृणावर्त शकटा अरु पूतना उनके कृत सुनि लाज॥ तोते कछु ह्वैहै यों जानत धरि आनै ज्यों बाज। छलकै

बलकै मारु तुरतही लै आवहु अब आज ॥ अतिगर्वित ह्वै कह्यो असुरभट कितिक बात यह आहि । कहमारौं जीवत धरिलावौं एक पलकमें ताहि ॥ आज्ञापाइ असुर तब धायो मनमें यह अब गाहि । देखौं जाइ कौन वह ऐसे कंस डरतहै जाहि ॥ मायाचरित करि गोपपुत्र भयो व्रजसन्मुख गयो धाइ । बल मोहन ग्वालन बालक सँग खेलत देखे जाइ ॥ धाइ मिल्यो कोउ रूप निशाचर हलधर सैन बताइ । मन मोहन मनमें मुसुकाने खेलत फलनि जनाइ ॥ द्वै बालक बैठारि सयाने खेल रच्यो व्रजखोरि । और सखा सब जुरि जुरि ठाढे आपु दनुज सँगजोरि ॥ फलको नाम बुझावन लागे हरि कहि दियो अमोरि । कंधचढे जिमि सिंह महाबल तुरतहि घींच मरोरि ॥ तब केशी ह्वै बरवपु काछ्यो लैगयो पीठि चढाइ । उतरि परे हरि ता ऊपर ते कीन्हों युद्ध अघाइ ॥ दाउँ घाउ सब भाँति करतहै तब हरि बुद्धि उपाइ । एक हाथ मुख भीतर नायो पकरिकेश धरि जाइ ॥ चहुँघा फेरि असुर गहि पटक्यो शब्द उठ्यो आघात । चौंकि पर्‍यो कंसासुर सुनिकै भीतर चल्यो परात ॥ यह कोइ नहीं भलो व्रजजनम्यो याते बहुत डरात । जान्यो कंस असुर गहि पटक्यो नंदमहरके तात ॥ और सखा रोवत सब धाए आइ गईं नर नारि । ग्वालरूपसँग खेलत हरिके लैगयो कांधे डारि ॥ धाए नंद यशोदा धाई नितप्रति कहा गुहारि । नाजानिये आहिधौं को यह कपट रूप वपुधारि ॥ यशुमति तब अकुलाइ परी गिरि तनुकी सुधि न रहाइ । नंद पुकारत आरत व्याकुल टेरत फिरत कन्हाइ ॥ दैत्य सँहारि कृष्ण तहां आए व्रजजन मरत जिवाइ । दौरि नंद उर लाय लियो सुत मिली यशोदामाइ ॥ खेलत रह्यो संग मिलि मेरे लै उड़िगयो अकास । आपुनही गिरि पर्‍यो धरणिपर मैं उबर्‍यो तेहि पास ॥ उर डरात जिय बात कहत उहि आएहैं करिनाश । सूर श्याम घर यशुमति लैगई व्रजजन मनहि हुलास॥७७॥ अथ भौमासुर वध ॥ राग बिलावल॥ हरि ग्वालन मिलि खेलन लागे वनमें आँखिमिचाइ । शिशु होइ भौमासुर तहाँ आयो काहू जान न पाइ ॥ ग्वालरूप होइ खेलन लाग्यो ग्वालनको लैजाइ चुराइ । धरै दुहाइ कंदरा भीतर जानी बात कन्हाइ॥ गुदी चांपिकै ताहि निपात्यो पर्‍यो धरणि मुरछाइ । सूर ग्वालन मिलि हरिगृह आए देव दुंदुभी बजाइ ॥ ७८ ॥ राग कान्हरो ॥ कहति यशोदा बात सयानी । भावी नहीं मिटै काहूकी कर्ताकी गति काहु न जानी ॥ जन्म भयो जबते व्रज हरिको कहा कियो करि करि रखवानी । कहां कहांते श्याम न उबर्‍यो कहि राख्यो ता अवसर आनी ॥ केशी शकट अरु वृषभ पूतना तृणावर्त्त की चलति कहानी । को मेरे पछिताइ मेरे अब अनजानत सब करी अयानी ॥ लै बलाइ छाती सों लाए श्याम राम हरषति नँदरानी । भूँखे भए प्रात अघखातहि ताते आजु बहुत पछितानी ॥ रोहिणि तुरत न्हवाइ दुहुँनको भोजनको माता अतुरानी । ल्याई परसि दुहुँनकी थारी जेंवत बल मोहन रुचि मानी ॥ माँगि लियो शीतल जल अँचयो मुख धोयो चरणन लै पानी । बीरा खात देखि दोउ बीरा दोउ जननी मुख देखि सिहानी ॥ रत्न जटित पलका पर पौढे बरणि न जाइ कृष्ण रजधानी । सूरदास कछु जूंठनि मांगत तब पाऊं कहि दीजै बानी ॥ ७९ ॥ राग बिलावल ॥ नित्यधाम वृन्दावन श्याम । नित्य रूप राधा व्रजबाम ॥ नित्य रास जल नित्य विहार । नित्य मान खंडिता भिसार ॥ ब्रह्मरूप एई करतार । करन हरन त्रिभुवन संसार ॥ नित्य कुंज सुख नित्य हिंडोर । नित्यहि त्रिविध समीर झकोर ॥ सदा वसंत रहत जहँ वास । सदा हर्ष जहँ नहीं उदास ॥ कोकिल कीर सदा तहँ रोर । सदा रूप मन्मथ चित चोर ॥ विविध सुमन वन फूले डार । उन्मत मधुकर भ्रमत अपार ॥ नव पल्लव वन शोभा एक । विहरत हरि सँग सखी अनेक ॥ कुहू कुहू कोकिला सुनाइ । सुनि सुनि नारि भई हरपाइ ॥ बार बार सो हरिहि सुनावति ।

ऋतुवसंत आयो समुझावति ॥ फागुचरित रस साध हमारे । खेलहिं सबमिलि संग तुम्हारे ॥ सुनि सुनि सूर श्याम मुसकाने।ऋतुवसंत आयो हरषाने॥८०॥वसंत लीला॥ रागवसंत॥राधे जु आज बरणो वसंत।मनहुँ मदन विनोद विहरत नागरी नवकंत॥मिलत सन्मुख पाटल पटल भरत मान जुही।बेलि प्रथम समाज कारण मेदिनी कुच गुही ॥ केतकी कुच कलश कंचन गरे कंचुकि कसी । मालती मद चलित लोचन निरखि मृदु मुख हँसी॥बिरह व्याकुल मेदिनी कुल भई वदन विकास । पवन परिमल सहचरी पिक ज्ञान हृदय हुलास॥उत सखा चंपक चतुर अति कुंद मनौ तनमाल।मधुप मणि माला मनोहर सूर श्रीगोपाल॥८१॥राग वसंत॥ऐसो पत्र पठायो ऋतुवसंत।तजहु मान मानिनि तुरंत॥ कागज नवदल अंबुज पात।देति कलम मसि भवँर सुगात॥ लेखनि काम बाणके चाप।लिखि अनंग कसि दीनी छाप ॥ मलयाचलनपठयो विचारि ॥ वाचल पिक सब नेहु नारि ॥ सूरदास क्यों होई आन । भजि हरि गोपी तजी सयान ॥ ८२ ॥ बेगि चलहु पिय चतुर सयानी । समय वसंत विपिन रथ हय गज मदन सुभट नृप फौज पलानी ॥ चहुँ दिशि चांदनी चमू चली मनहु प्रशंसित पिक बर वानी।बोलत हँसत चपल वन्दीजन मनहुँ धवला सोइ धूर उडानी॥सोलह कला छपाकरकी छवि शोभित छत्र शीश शिरतानी।धीर समीर रटत वन अलिगण मनहु कामकर मुरलि सुठानी ॥ कुसुम शरासन बान विराजत मनहु मानगढ अनु अनुभानी । सूरदास प्रभुकी वेई गति करहु सहाय राधिका रानी॥८३॥राग वसंत॥देख्यो श्री वृंदाबन कमल नयन।मनु आयो है मदन गुण गुदर दयन॥ १ ॥ भए नवद्रुम सुमन अनेक रंग । प्रति लसित लता संकुलित संग ॥ करधरे धनुष कटि कसि निखंग । मनौ बने सुभट सजि कवच अंग ॥ २ ॥ जहां बान सुमति वहै मलय बात । अति राजत रुचिर विलोल पात ॥ धपि धाय धरत मन तुरे गात । गति तेज वसन बाने उडात ॥३॥ कोकिल कुंजलहै हँस मोर । रथ शैल शिला पदचर चकोर ॥ वर ध्वज पताक तरतार केरि । निझरनिसान डफ भँवर भेरि ॥ ४ ॥ सूरदास इमि वदत बाल । करिकाम कृपण शिवक्रोध काल ॥ हँसि चितय चारु लोचन विशाल । तेहि अपने करि थपिए गोपाल ॥ ५ ॥ राग वसंत ॥ राजत तेरे वदन शशि री । किरनि कटाक्ष बाण बरसाधे भौंह कलंक कमान कसी री ॥ पीन पयोधर सघन उन्नत अति तापर रोमावली लसी री । चक्रवाक खग चोंच पुटीतें मनुसे निवल मंजीर खसी री ॥ ज्यों नाभी सर एकनाल नव कनक कमल विधि रहे बसी री । सूरज श्रीगोपाल पियारी मेरु न अधतम धरा धसी री॥८४॥कोकिल बोली वन वन फूले मधुप गुंजारन लागे । सुनि भयो भोर रोर बंदिन को मदन महीपति जागे ॥ तिन दूने अंकुर द्रुम पल्लव जे पहिले दव दागे । मानहु रति पति रीझि याचकन बरन बरन दए बागे ॥ नई प्रीति नई लता पुहुप नए नए नयन रस पागे । नए नेह नवनागरि हरषति सूर सुरँग अनुरागे॥८५॥देख्यो श्रीवृंदावन खेलहि गोपाल । सब बनि ठनि आई ब्रजकी बाल ॥ नववल्ली सुंदर नव तमाल । नव कमल महा नव नव रसाल ॥ अपने कर सुंदर रचित माल । अवलंबित नागर नंदलाल ॥ नवकेसरि नव अरगजा घोरि । छिरकति नागरि कहां नवकिशोरि॥नवगोप वधू राजही संग । गजमोतिन सुंदर लसित मंग ॥ गोपीन ग्वाल सुंदर सुदेष । छिरकत सुगंध भये ललित भेष ॥नंदनंनदके भ्रुवविलास । आनंदित गावत सूरदास ॥८६॥ दिय देख्यो बनं छबि निहारि । बार बार यह कहति नारि ॥ नव पल्लव बहु सुमन रंग । द्रुम बेली तनु भयो अनंग ॥ भँवरा भँवरी भ्रमत संग।यमुन करति नाना तरंग ॥ त्रिविध पवन मनहरप दयन। सदा बहत न विहरत चयन॥सूरज प्रभु करि तुरग नयन।चले नारि मन सुखद मयन॥८७॥आयो पिय आयो ऋतुवसंत।दंपति मन सुख विरहिनि न अंत॥ फागु खिलावहु संग कंत। हाहा करि करि तृण

गहै दंत ॥तुरत गए हरिलै मनाय । हरषि मिले उर कंठ लाय । दुख डारयो तुरतहि भुलाय । सो सुख दुहुँके उर न माय॥ऋतुवसंत आगमन जानि । नारिन राखो मानवानि ॥ सूरदास प्रभु मिले आनि । रसराख्यो रतिरंग ठानि॥८८॥आयो जान्यो हरि ऋतु वसंत । ललना सुख दीन्हों तुरंग॥फूले वरन२ सुमन पलास । ऋतुनायक सुखको विलास ॥ संगनारि चहुँ आस पास । मुरली अमृत करत भास ॥ श्यामा श्याम विलास एक । सुखदायक गोपी अनेक ॥ तजत नहीं काहू छनेक । अलक निरंजन विविध भेक ॥ फागुरंग रस करत श्याम । युवतिन पूरन करन काम ॥ वासरहू सुख देत याम । सूर श्याम बहु कंत वाम ॥ ८९ ॥ देखत नव व्रजनाथ आजु अति उपजतु है अनुराग।मानहु मदन वसंत मिलै दोउ खेलत फूले फाग ॥ झाँझि झालरिनि झरिनिसान डफ भँवर भेरि गुँजार । मानहु मदन मंडली रचिपुर बीथिनि विपिन विहार ॥ द्रुम गण मध्य पलाश मंजरी मुदित अग्नि की नाई । अपने अपने मेरनि मानो उनि होरी हरषि लगाई ॥ केकी काग कपोत और खग करत कुलाहल भारी।मानहुँ लैलै नाउ परस्पर देत दिवावत गारी ॥ कुंज कुंज प्रति कोकिल कूजति अति रस बिमल बढी । मानो कुलवधू निलजभय गृह गृह गावति अटनि चढी ॥ प्रफुलित लता जहाँ जहँ देखत तहाँ तहाँ अलि जात । मानहु सवहिनमें अवलोकत परसत गणिका गात ॥ लीन्हें पुहुप पराग पवनकर क्रीडत चहुँ दिशिधाइ । रस अनरस संयोग विरहिनी भरि छाँडति मनभाइ ॥ बहुविधि सुमन अनेक रंगछवि उत्तम भाँति धरे । मानो रतिनाथ हाथसों सवही लैलै रंगभरे ॥ और कहाँलगि कहौं कृपानिधि वृंदाविपिन विराज । सूरदास प्रभु सब सुख क्रीडत श्याम तुम्हारे राज ॥९०॥सुंदर वर संग ललनाहो विहरत वसंत समय ऋतु आइ । सकल शृंगार बनाइ व्रजसुंदरि कमलनयनपै लाइ ॥ सरित शीतल बहत मंदगति रवि उत्तर दिशि आयो । अति रसभरी कोकिला बोली विरहिनि विरह जगायो ॥ द्वादश वन रतनारे देखियत चहुँ दिशि टेसू फूले । मौरे अँबुवा अरु द्रुम बेली मधुकर परिमल भूले ॥ इत श्रीराधा उत श्रीगिरिधर इत गोपी उत ग्वाल।खेलत फागु रसिक व्रजवनिता सुंदर श्यामतमाल॥खावासाखि जवारा कुमकुमा छिरकत भरि केसरि पिचकारी।उडत गुलाल अवीर जोरतहँ विदिशदीप उजियारी॥ताल पखावज वीन वाँसुरी डफ गावत गीत सुहाए।रसिक गोपाल नवल व्रजवनिता निकसि चौहटे आये॥झमि झमि झूमक सब गावति बोलति मधुरी वानी । देति परस्पर गारि मुदितमन तरुनी वाल सयानी ॥ सुरपुर नर पुर नाग लोकपुर सबही अति सुखपायो । प्रथम वसंत पंचमी लीला सूरदास यशगायो॥९१॥सुंदरवर संग ललना विहरी वसंत सरस ऋतुआई । लैलै छरी कुँवरि राधिका कमलनयन परधाई ॥ द्वादश वन रतनारे देखियत चहुँदिशि टेसू फूले । मौरे अँबुवा अरु द्रुम वेली मधुकर परिमल भूले ॥ सरिता शीतल वहत मंदगति रवि उत्तरादिशि आयो । प्रेम उमँगि कोकिला बोली विरहिनि विरह जगायो॥ताल मृदंग बीन वाँसुरि डफ गावत मधुरी वानी । देत परस्पर गारि मुदितह्वै तरुणी वाल सयानी ॥ सुरपुर नरपुर नागलोक जल थल क्रीडारस पावै । प्रथम वसंत पंचमी वाला सूरदास गुण गावै ॥९२॥ खेलत नवलकिशोर किशोरी । नँदनंदन वृषभानु सुता चित लेत परस्पर चोरी ॥ औरो सखी जाल विन शोभित सकल ललित तनु गावति होरी । तिनकी नख शोभा देखतही तरनि नाथहूकी मति भोरी ॥ एक गोपाल अवीर लिए कर इक चंदन एक कुमकुमा रोरी । उपरा उपर छिरकि रस सर भरि वहु कुल क्रीडा परमिति फोरी ॥ देति अशीश सकल व्रज युवती युग युग अविचर जोरी । सूरदास उपमा नहिं सूचत जो कछु कहो सु थोरी ॥ ९३ ॥ राग श्रीहठी॥तेरे

आवैंगे हरि आजु खेलन फागु री । सगुन सँदेशो हो सुन्यो तेरे आँगन बोलै कागु री ॥ मदनमोहन तेरे वश माई सुनि राधे बडभागु री । बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ का सोहै उठि जागु री ॥ चोवा चंदन और कुमकुमा केसरि लै पैंयां लागु री । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको श्रीराधा अचल सुहागु री ॥ ९४ ॥ हो आजु नंदलालसों खेलोंगी सखी होरी । ललिता बिशाखा अंगना लिपावो चौक पुरावो तुम रोरी ॥ मलयज मृगमद केसरि लै मथि मथि भरो कमोरी । नवसत साजि शृंगार करौ सब भरि भरि लेहु गुलालहि झोरी ॥ ज्यों उडुगणमें इंदु बिराजत सहेलिन मध्य राधिका गोरी । इक गोरी इक साँवरी हो इक चंचल इक भोरी ॥ बरजति सखी बरज्यो नाहिं मानै लै पिचकारी दौरी । उन रंगलै पिय ऊपर डारचो पियहो रंगमें बोरी ॥ ब्रह्मा इंद्र देवगण गंधर्व बरषे बहुत वाटिका खोरी । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको चिरजीवो राधावर जोरी ॥ ९५ ॥ राग मालकौशिक[1] ॥ नागर रसिक अरु रसिक नागरी । बलि बलि जाउँ देखि अब दंपति प्रमुदित लीला प्रथम फाग री ॥ राधा दधि मथन करति अपने गृह प्रबल घरि सुकर पाग री । तब हरि उठि आए औचानक उससि शशी चसढारित गागरी । लै उसाँस अंजरि भारिलीनो विदुरति दधि जु अनूपम आगरी ॥ अति उमगित श्याम घन छिरके मनु बग पांति बिछुरि गई मागरी ॥ मोहन मुसकि गही दौरत में छूटि तनी छंदरहित घाघरी । जनु दामिनि बादरते बिमुख वपु तरपित तक्षण लई तलाग री ॥ आनंदित परम दंपति ऐसे पटने परस परत दाग री । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि काबरणौं ब्रज युवति भाग री ॥ ९६ ॥ रागी बंगाली[2] ॥ श्रीमदनमोहन जू मति डारौ केसरि पिचकारी । दधिही मथन जाहुँ यमुनाजल हो मोहन तुम कुंज विहारी ॥ मर्म न गुरुजन पुरजन जानैं नहिं या वृंदावनकी नारी । सासु रिसाय लरै मेरी ननँदी देखैं रँग देहिं मोहिं गारी ॥ मुरली माहिं बजावत गावत बंगाली अधर चुवत अमृत बनवारी । मुदित पियत संतन सुखकारी पूरब खचित तेहि गिरिधारी ॥ मृदु मुसुकानि युवति मन मोहत हो हरि माखन चोर मुरारी । सूरदास प्रभु दोउ चिरजीवो श्रीब्रजनाथ वृषभानु दुलारी ॥ ९७ ॥ राग धमारि ॥ ठाढी देखी नंद दुआरेहो सुंदरि एक दह्यो । बाढीहो प्रीति ललना गिरिधरसों गुरुजन सबहिन बिसरि दिये ॥ नयनन कज्जल नासिका बेसरि मौक्तिक मोर अति राज्य । ढार सुढार बन्यो जाको मोती रहत अधर सुख छाज्य ॥ कटि लहँगा पहुँची बंध अँगिया फुँदना बहु विधि सोहै । रतन जराव जरी जाको जेहरि हंसचाल मृग मोहै ॥ कंचन कलश भराए यमुनजल मोतियन चौक पुराये । मनहु कछौना हंसन कैसे चुगन सरोवर आए ॥ तुमतौ कहावतहो नँदनंदन सारँग बुद्धिहै थोरी । सूरदास प्रभु नंदके लालको बनीहो छबीली जोरी ॥ ९८ ॥ राग कान्हरो[3] ॥ हरिसंग खेलत हैं सब फाग । यहि मिस करत प्रगट गोपी उर अंतरको अनुराग ॥ सारी पहिरि सुरंग कसि कंचुकी काजर दैदै नैन । बनि बनि निकसि निकसि भई ठाढी सुनि माधोके बैन ॥ डफ बाँसुरी रुंज अरु महुअरि बाजत ताल मृदंग । अति आनंद मनोहर वाणी गावत उठत तरंग ॥ एक कोध गोविंद ग्वाल सब एक कोध ब्रजनारि । छांडि सकुच सब सब देति परस्पर अपनी भाई गारि ॥ मिलि दश पांच अली बलि कृष्णहि गहि लावति उचका-

१ मालकौशिकरागः-श्यामांगः पीतवासा मधुरिपुगलजो वंशवाद्यस्त्रिभंगी रत्नानां कंठमालो विरचिततिलकः कुंकुमैर्भालमध्ये ॥ रागोयं मालकौशी प्रचरति शिशिरे कंठदेशे जनानां प्रायः सूर्योदयादौ स्वरनिचयविदां तुष्टये भूपतीनाम् ।

२ वंगाल्याभाति यस्या अलिकपटलके शीतरश्मिर्नितांतं भर्तुः संतप्तिहंत्री मलयजरचितं सर्वदेहे प्रलेपम् ॥ शुक्लं वासो दधत्या तरुणतनुमदालस्यमत्तेभगत्या युष्माकं सा मुदेस्ताद्युवजनहृदयानन्दकर्ता कटाक्षः ।

३ वज्रज्योतिसमानसुंदररदा रत्नान्विते कुंडले बाह्वोर्मौक्तिकरत्नहारहृदयस्तत्कुंडले कर्णयोः ॥ नानापुष्पसुवासवासिततनुः पीतांशुकैरावृतः संगीतेन विचक्षणो द्विविपदां संमोहनः कानरः ॥ रागः कानरः ।

य। भरि अरगजा अबीर कनक घट देति शीशते नाय ॥ छिरकति सखी कुमकुमा केसरि भुरकति वंदन धूरि। शोभित हैं मनो शरद समय घन आएहैं जल पूरि॥ दशँहु दिशा भयो परि पूरण सूर सुरंग प्रमोद।सुरवनिता कौतूहल भूलीं निरखति श्याम विनोद॥९९ राग आसावरी॥यमुनाकेतट खेलति हरि सँग राधा सहित सब गोपी हो। नंदको लाल गोवर्धन धारी तिनके नख मणि ओपी हो॥ चलहु सखी जैये तहां छिन जियरा न रहाय हो। वेणु शब्द मन हरिलियो नाना राग बजाइ हो॥ सजल जलद तनु पीतांबर छबि करमुख मुरली धारी हो। लटपटी पाग बने मनमोहन ललना रही निहारि हो॥ नैन सैनसों नैन मिले करसों कर भुजा ठये हरि ग्रीवा हो। मध्यनायक गोपाल विराजत सुंदरताकी सींवा हो॥ करत केलि कौतूहल माधव मधुरी वाणी गावै हो। पूरणचंद्र शरदकी रजनी संतन सुख उपजावै हो॥ सकल शृंगार कियो ब्रजवनिता नख शिख लोभलटानी हो। लोक वेद कुल धर्म केतकी नेक न मानत कानी हो॥ बलि जाउँ बलके वीर त्रिभंगी गोपिनके सुखदाई हो। सकल व्यथा जु हरी या तनुकी हरि हँसि कंठ लगाई हो। माधव नारि नारि माधवकी छिरकत चोवा चंदन हो॥ ऐसो खेल मच्यो उपरापरि नँदनंदन जगबंदन हो। ब्रह्मा इंद्र देव गण गंधर्व सबै एक रस वरषै हो। सूरदास गोपी बडभागिन हरि सुख क्रीडा करषै हो॥२४००॥राग गौरी॥मानो ब्रजते करनी चली मदमाती हो। गिरिधर गजपै जाइ ग्वारि मदमातीहो॥कुल अंकुश मानै नहीं मदमातीहो।शंका बढे तुराइ ग्वारि मदमाती हो॥ अवगाहै यमुना नदी मदमातीहो। करति तरुनि जलकेलि ग्वारि मदमाती हो॥ चहुँ दिशत मिलि छिरकही मदमीता हो। सुंड दंड गज पोल ग्वारि मदमाती हो। वृंदावन वीथिनि फिरै मदमाती हो॥ संग मदन गजपालि ग्वारि मदमाती हो। कबहुँ नैन कर दे मिलै मदमाती हो॥ तैसीये गजगति चाल ग्वारि मदमाती हो। नागवेलि चलती फिरे मद माती हो॥ मोदक मांझ कपूर ग्वारि मदमाती हो॥ सुगंध पुढे श्रवणन चुवै मदमाती हो। मंडित मांग सिंदूर ग्वारि मदमाती हो॥ केसरि लाई सानिकै मदमाती हो। घुँघरू घंट घुमाइ ग्वालि मद-माती हो॥ ऊपर कुच युग घंटसो मदमाती हो। मुक्तामाल तुराइ ग्वालि मदमाती हो॥ अंग अंग छिरकै श्यामको मदमाती हो। कुमकुम चंदन गारि ग्वारि मदमाती हो॥ सूरदास प्रभु क्रीडहीं मदमाती हो। सँग गोकुलकी नारि ग्वारि मदमाती हो॥१॥राग काफी॥खेलत अति रसमसें रँगभीने हो। अति रसकेलि विशाल लाल रँगभीने हो॥ जागत सब निशिगत भई रँगभीने हो। भले कान्ह भले आए प्रातकाल रँगभीने हो। बोलत बोल प्रतीतिके रँग भीने हो॥ सुंदर श्यामल गात लाल रँग भीने हो। अति लोहित दृगरँगमगे रँग भीने हो॥ मानों भोर भए जलजात लाल रँग भीने हो। पिये अधर मधुपान मत्त रँग भीने हो॥ कहत कहूँकी कहूँ बात लाल रँग भीने हो। केश शिथिल वरवेश सिथिल रँगभीने हो॥ शशि मुख सिथिल जँभात लाल रँगभीने हो।चाल सिथिल भुवभाल सिथिल रँग भीने हो॥ अंग अंग अलसात लाल रँग भीने हो। सकुचतहो कत लाडिले रँग भीने हो॥ दुरत न उर नख गात लाल रँग भीने हो। सूरदास प्रभु नँद किशोर रँग भीने हो। बहुनायक विख्यात

---

१ श्यामांगी मुकुरं करेण दधती हारं गले मौक्तिकं ताटंकान्वितकर्णकंकणकरा दिव्यांबरैः संयुता॥ रंभाया घनकाननेषु रमती त्वध्यापयंती शुकमासावर्यपि किन्नरैरपि सुरैर्गीता निशांते दिवि॥ राज्ञी आसावरी।

वीणाहाटककंकणे च दधती पद्माक्षिपद्मानना वस्त्रं करवपद्मकोमलसमं शास्त्रे परं पंडिता॥ मालश्री सखिसंयुता त्रिभुवने गीतार्थपुंसां प्रिया भूपालीसहिता प्रियाय करुणामाकुर्वती श्रीहठा।

लाल रँगभी नेहो॥ १॥राग गौरी॥गोकुल सकल ग्वालिनीहो घर घर खेलैं फागु मनोरा झूमकरो। तिन में श्रीराधा लाडिलीहो जिनको अधिक सुहाग मनोरा झूमकरो ॥ १ ॥ झुंडनि मिलि गावति चलीं हो झूमक नंददुवार मनोरा झूमकरो। आजु परब हँसि खेलो हो मिलि संग नंदकुमार मनोरा झूमकरो ॥ २ ॥ रसिकराइ सुंदर वरहो श्रीराधा जिन प्राण मनोरा झूमकरो। मोहन दरश दिखावहू हो डरहु तो नंदकी आन मनोरा झूमकरो ॥ ३ ॥ प्रगट प्रीति गोकुल भईहो अब कैसे करत दुराव मनोरा झूमकरो । हम न दरश बिन जीवहीं हो कोउ कछु करहु उपाव मनोरा झूम करो ॥ ४ ॥ यशुमति सुत चित चुभि रहीहो वह तुमहीं मुसुकान मनोरा झूमकरो । अब न अनत रुचि ऊपजैहो सहजपरी यह बानि मनोरा झमकरो ॥ ५ ॥ दुरत श्याम धरि पाएहो राधा धाय भरी अँकवारि मनोरा झूमकरो। कनक कलश केशरि भरीहो लै धाईं व्रजनारि मनोरा झूमकरो ॥ ६॥भरहु भरहु सखि श्यामही हो पीत पिछौरी पाग मनोरा झूमकरो। देह गेह सुधि बिसरी हो नँदनंदन अनुराग मनोरा झूमकरो ॥ ७ ॥ छूटे केश कंचुक बंदहो टूटे मोतिन माल मनोरा झूमकरो ॥ चोवा चंदन अरगजा हो उडत अबीर गुलाल मनोरा झूमकरो ॥ ८ ॥ करकट ताल बजावहीं हो छिरकत सब व्रजनारि मनोरा झमकरो। हँसि हँसि हरि पर डारहीं हो अरुन नयन फुलवारि मनोरा झूमकरो ॥ ९ ॥ सुर नर मुनि कौतुक भूलेहो आनँद बरषै फूल मनोरा झूमकरो। गगन विमान न छायोहो झेहनसूझे नाहिन सूर मनोरा झूमकरो॥१०॥ सूर गोपाल कृपा बिनुहो यह रस लैहै न कोइ मनोरा झूमकरो । श्रीवृषभानु किशोरी हो श्याम मगन मन:होइ मनोरा झूमकरो ॥११॥राग सारंग॥ आली री नँदनंदन वृषभानु कुँवरिसों बाढ्यो अधिक सनेह । दोऊ दिशिपै आनँद वरषत ज्यों भादौंको मेह ॥ सब सखियाँ मिलि गईं महरिपै मोहन माँगो देहु। दिना चारि होरीके औसर बहुरि आपनो लेहु ॥ झुकि झुकि परतिहै कुँवरि राधिका देति परस्पर गारि। अब कहा दुरे साँवरे ढोटा फगुवा देहु हमारि ॥ हँसि हँसि कहति यशोदा रानी गारी मति कोउ देहु। सूरजदास श्याम के बदले जो चाहो सो लेहु॥४॥राग टोडी॥या गोकुल के चौहटे रंग भीजी ग्वालिनि। हरि सँग खेले फाग नैन सलोनरी रंग राची ग्वालिनि ॥ डरति न गुरुजन लाज नैन सलौने री रंग राची ग्वालिनि। दुंदुभिवाजैं गहगहे रंगभीजी ग्वालिनि ॥ नगर नगर कोलाहल होई नैन सलोन री रंगराची ग्वालिनि । उमह्यो मातुप घोषयों रंग भीजी ग्वालिनि ॥ भवन रह्यो नहिं कोइ नैन सलोन री रंगराची ग्वालिनि। डफ बाँसुरी सुहावनी रंग भीजी ग्वालिनि॥ ताल मृदंग उपंग नैन सलोन रंगराची ग्वालिनि। झाँझ झालरी किन्नरी रँग भीजी ग्वालिनि ॥ आउ झवर मुहचंग नैन सलोन री रंगराची ग्वालिनि। उतहि संग सब ग्वाल लिए रंग भीजी ग्वालिनि॥ सुंदर नंदकुमार नैन सलोन री रंगराची ग्वालिनि। उत श्यामा नव योवना रँग भीजी ग्वालिनि ॥ अंबुज लोचन चारु नैन सलोन री रंगराची ग्वालिनि। टेसूके कुसुम निचोइकै रँगभीजी ग्वालिनि ॥ भरैं परस्पर आनि नैन सलोन री रंगराची ग्वालिनि। चोवा चंदन अरगजा रँगभीजी ग्वालिनि॥ कुमकुम चंदन सानि नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि। रत्न जटित पिचकारियाँ रँगभीजी ग्वालिनि ॥ करलिए गोकुलनाथ नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि । छिरकहिं मृगमद कुमकुमा रँगभीजी ग्वालिनि ॥ जो राधेके साथ नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि। सुरंगपीतपट रँग रह्यो रँगभीजी ग्वालिनि ॥ सुभग साँवरे अंग नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि। नीलवसन भामिनिबनी रँगभीजी ग्वालिनि ॥ कंचुकी कुसुम सुरंग नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि । अरुणनूतपल्लवधरे

रँगभीजी ग्वालिनि ॥ कूजित कोकिल हंस नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि । नृत्य करत अलि कुल मिले रँगभीजी ग्वालिनि ॥ अति आनंद अधीर नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि ॥ चढ़ि विमान सुर देखहीं रँगभीजी ग्वालिनि । देहदशा बिसराइ नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि ॥ राधारसिक रसज्ञहो रँगभीजी ग्वालिनि । सूरदास बलि जाइ नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि ॥ ५ ॥ राग गौरी ॥ खेलत हो हो हो हो होरी अतिसुख प्रीति प्रगट भई उत हरि इतहि राधिका गोरी । हो हो हो हो होरी बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ बिच बिच बाँसुरी ध्वनि थोरी ॥ १ ॥ गावत दैदै गारि परस्पर उत हरि इत वृषभानु किशोरी । मृगमद साखजवाद कुमकुमा केसरि मिलै मिलै मथि घोरी ॥ २ ॥ गोपी ग्वाल गुलाल उडावत मत्त फिरैं रतिपति मनो बौरी । भरति रंग रति नागरि राजति मानहु उमँगि बिलावल फोरी ॥ ३ ॥ छुटिगई लोकलाज कुलशंका गनत न गुरु गोपिनको कोरी । जैसे अपनेमें रमतेमें चोर भोर निरखत निशि चोरी ॥ ४ ॥ उन पटपीत किए रँग राते इन कंचुकी पीत रँग बोरी । रही न मन मर्याद अधिक रुचि सहचरी सकति गाँठि गहि जोरी ॥ ५ ॥ वरणि न जाइ वचन रचना रचि बहु छवि झक झोरा झक झोरी । सूरदास शारदा सरलमति सो अवलोकि भूमि भई भोरी ॥ ६ ॥ ६ ॥ राग गूजरी ॥ ब्रजकी बीथिन बीथिन डोलत । मदन गोपाल सखा सँग लीने हो हो हो लै बोलत ॥ ताल मृदंग बीन डफ बाँसुरी बाजत गावत गीत । पहिरे वसन अनेक बरन तनु नील अरुन सित पीत ॥ सुनि सब नारि निकसि ठाढी भईं अपने अपने द्वार । नवसत साजे प्रफुलित आनन जनु कुमुदिनी कुमार ॥ चपल नैन अति चतुर चारु तुम जनु फुलवारी लाई । देखतही नँदनंद परमसुख मिलत मधुप लौं धाई ॥ राखत गाहि भुज बल चहुँदिशि जुरि अति रिस मुँह अकुलात । मानहु कमल कोश अलि अंतर भँवर भ्रमत वन प्रात ॥ छाँडति भरि भायो अपनो करि राजत अंग विभाग । मानहु उडि वचलेहैं अलि कुल आश्रित अंग पराग ॥ अंतर कछु न रह्यो तेहि अवसर अति आनंद प्रमाद । मानहु प्रेम समुद्र सूर सुख लै उपटित मर्याद ॥ ७ ॥ ऊँचोसो गोकुल नगर जहँ हरि खेलत होरी । चल सखी देखन जाहिं पिया अपनेकी चोरी ॥ बाजत ताल मृदंग और किन्नरकी जोरी । गावति दै दै गारि परस्पर भामिनि भोरी ॥ बूका सुरंग अबीर उडावत भरि भरि झोरी । इत गोपिनको झुंड उतहि हरि हलधर जोरी ॥ नवल छबीले लाल तनी चोलीकी तोरी । राधाचलीं रिसाइ ढीठ सों खेलै को री ॥ खेलतमें कैसो मन सुनहु वृषभानु किशोरी । सूर सखी उर लाइ हँसति भुजगहि झकझोरी ॥ ८ ॥ राग पूर्वी ॥ ऐसीको खेलैं तोसों होरी । बार बार पिचकारी मारत तापर बाँह मरोरी ॥ नँदबाबाकी गऊ चरावो हमसों करो बरजोरी । छाक छीनि खातहै ग्वालनकी करतरहे माखन दधि चोरी ॥ चोवा चंदन और अरगजा अबिर लिए भरि झोरी । उडत गुलाल लाल भए बादर केसरि भरीहै कमोरी ॥ श्रीवृंदावनकी कुंजगलिनमें गावो मुरली राधा गोरी । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको चिरजीवो यह जोरी ॥ ९ ॥ राग सारंग ॥ निकसि कुँवर खेलन चले रँग हो हो होरी ॥ मोहन नंदकुमार लाल रँग हो हो होरी ॥ कंचन माट भराइकै रँग हो हो होरी । सोंधेभरी कमोरी लाल रँग हो हो होरी ॥ झाँझ ताल सुरमंडरे रँग हो हो होरी । बाजत मधुर मृदंग लाल रँग हो हो होरी ॥ तिनमें परम सुहावनी रँग हो हो होरी । महुवरि बाँसुरी चंग लाल रँग हो हो होरी ॥ खेलत रँगीले लाल जू रँग हो हो होरी ॥ गए वृषभानुकी पौरि लाल रँग हो हो होरी ॥ जे ब्रजहुती किशोरी लाल रँग हो हो होरी । ते सब आईं दौरि लाल रँग हो हो होरी । सखियन सुख देखनकारने रंग हो हो होरी । गाँठि दुहुँनकी जोरि

लाल रँग हो हो होरी ॥ जोपै फगुवा दियो न जाय रँग हो हो होरी । श्रीराधाजूके लागो पाँइ लाल रँग हो हो होरी॥यह सुख सबके मनवसो रँग हो हो होरी । सूरदास बलि जाइ लाल रँग हो हो होरी॥ ॥ १० ॥ राग सारंग ॥ करलिए डफहि बजावे हो हो सनाक खेलार होरीकी । संग सखा सब बनि बनि आवत छबि मोहन हलधर जोरीकी ॥ १ ॥ ताल मृदंग बजावत गावत भावत ध्वनि मुरली थोरीकी । लाल गुलाल समूह उडावत फेंटकसे अबीर झोरीकी ॥ खेलत फाग करत कौतूहल मत्ताफिरे मन्मथ धौरीकी । बरन बरन शिरपाग चौतनी कछिकटि छबि चंदन खोरीकी ॥ २ ॥ उतहि सुनति वृषभानु सुता लये तरुनी बोलि सब दिन थोरीकी । नीलांबर कंचुकी सुरंगतनु अति राजति राधा गोरीकी ॥ मनो दामिनि घन मध्य रहति दुरि प्रगट हँसनि चितवनि भोरीकी । नखशिख सजि शृंगार व्रज युवती तनडडिया कुसुमी बोरीकी ॥ ३ ॥ पानभरे मुख चमकत चौका भालदिये वेंदी रोरीकी । कनक कलश कोटिक भरि लीन्हें भरिफूले रँग रँग घोरीकी ॥ युवति वृंद व्रजनारि संगलै जाइ गहनि व्रजकी खोरीकी । घरघरते धुनि सुनि उठि धाई जे गुरुजन पुरजन चोरीकी ॥ ४ ॥ हाथन लै भरि भरि पिचकारी नानारंग सुमन तोरीकी ॥ कोउ मारति कोउ दाँउ निहारति अरस परस दौरा दौरीकी ॥ उतहि सखा कर जेरी लीन्हें गारी देहि सकुच तोरीकी ।इतहि सखी कर बाँस लिए बिच मारु मची झोरा झोरीकी ॥ ५ ॥ पाछे ते ललता चंद्रावलि हरि पकरे भुजभरि कौरीकी । व्रजयुवती देखतहीं धाईं जहाँ तहाँ सब चहुँ ओरीकी ॥ इक पट पीतांबर गहि झटक्यो एक मुरलि लई कर मोरीकी । इक मुखसों मुख जोरि रहति इक अंक भरति रति पति ओरीकी॥६॥तब तुम चीरहरे यमुनातट सुधि बिसरे माखन चोरीकी । अब हम दाँव आपनो लेहैं पाँयपरो राधा गोरीकी ॥ अपने अपने मन सुख कारण सब मिलि झकझोरा झोरीकी । नीलांबर पीतांवर सों लै गाँठिदई कसिकै डोरीकी ॥ ७ ॥ कनक कलश केशरि भरि ल्याई डारिदियो हारिपर डोरीकी । अति आनंद भरी व्रजयुवती गावति गीत सबै होरीकी ॥ अमर विमान चढे सुख देखत पुहुपवृष्टि जैध्वनि रोरीकी । सूरदाससो क्योंकर वरणै छवि मोहन राधा जोरीकी ॥८॥ ११ ॥ राग रागिनी श्रीहठी ॥ हरि सँग खेलन फागु चली चोवा चंदन अगर अरगजा छिरकति नगर गली ॥ राती पीरी अँगिया पहिरे नउतम झूमक सारी । मुखतमोर नैनन भरिकाजर देह भावती गारी ॥ ऋतुवसंत रति आगमनायक यौवन भार भरी । देखनरूप मदन मोहनको नंददुआर खरी ॥ कहि न जाइ गोकुलकी महिमा घर घर गोकुल माहीं । सूरदास सो क्योंकरि वरणै जो सुख तिहुँ पर नाहीं ॥ १२ ॥ राग गौरी ॥ ठाढो हो व्रजखोरी ढोटा कौनको । लटिहि लकुट त्रिभंगी एकपद मनो मन्मथ गौनको । मोर मुकुट कछनी कसे री पीतांबर कटि शोभ । नैन चलावै फेरि कै री निरखि होत मनलोभ ॥ भौंहमरोरे मटकिकै री यमुना रोकत घाट । चितै मंद मुसुकाय कै री जियकरि लेय उचाट ॥ हँसत दशन चमकायकै री चकचौंधीसी होति । बगपंगति नवजलद मेरी उरमाला गजमोति ॥ कर पिचकारी रत्न जरतरी तकि तकि छिरकत अंग । टेसूके कुसुम निचोय कैरी अरु केसरिको रंग ॥ फेंट गुलाल भराइ कैरी डारत नैनन ताकि । एते पर मन हरत हैरी कहा कहौं गति वाकि ॥ पुनि हाहा करि मिलतु है री अरु नाना रंग बनाय । नंदसुवन के रूपपर री जन सूरदास बलिजाय १३राग श्रीहठी॥सौँवरो ढोटा कोहै री माई जाके वारिजनैन विशाल।

१ श्यामोबाहुचतुष्टयेनसहितःपीतांबरस्ताद्‌र्यगः शार्ङ्गीयोविदधातिबाणसहितंशंखंचचक्रंगदाम् ॥ वामांगेरमणीयुतःप्रियतमः श्रीविष्णुवत्सवंदा सारंगोमघवान्वितैःसुरगणैःसंस्तूयमानोनरैः ॥ १ ॥ राग सारंग ॥

अधर धरे मुख मुरली बजावत गावत श्रीरागरसाल॥ मंद मंद मुसकानि सरोज मुख शोभा वरणी नैं जाइ। बाँकी भौहैं तिरछी चितवनि चितवत लियो चुराइ॥ अति लोने सोनेसे कुंडल कौने रचे हो सँवारि। मनो काम किल फंद बनाए फंदाहै मीन ब्रजनारि॥ शिर पगिया बीरा मुख सोहै सरस रसीले बोल। अति आधीन भई ब्रजवनिता वश कीने बिनमोल॥ कहा करौं देखे बिनु सजनी कल न परै पलप्रान। ग्वालन संग रंग भरचो भावत गावत आछी तान॥ ताते और कौन हितु मेरे सखिचलि नेकुदिखाय।मदनमोहन जूकी चरण रेणु पर सूरदास बलि जाय॥१४राग नटनारायण॥ खेलत श्याम फाग ग्वालन संग। एक गावत एक नाचत एक करत बहु रंग॥ बीन मुरज उपंग मुरली झांझ झालरि ताल। पढत होरी बोलि गारी निरखिकै ब्रजबाल॥ कनककलशन घोरि केसरि करलिये ब्रजनारि। जबहिं आवत देखि तरुनिन भजत दै किलकारि॥ दुरि रही इक खोरि ललिता उत ते आवत श्याम। धरे भरि अँकवारि औचक धाय आय ब्रजवाम॥ बहुत ढीठो दै रहेहो जानवी अब आजु।राधिका दुरि हँसति ठाढी निरखि पिय मुख लाजु॥ लियो काहू मुरली करते कोउ गह्यो पटपीत। गूथि बेनी मांग पारे लोचन आजि अनीति॥ गए करते झटकि मोहन नारि सब पछिताति। शीश ध्वनि कर मीजी बोलति भली लैगए भांति॥ दाँव हम नहिं लेन पायो वसन लेती लाल। सूर प्रभु कहां जाउगे अब हमपरी यह ख्याल॥१५॥राग काफी॥ मोहन गए आजु तुम जाहु दाँव हम लेहिंगीहो। लालन हमहिं करे जे हाल उहै फल देहिंगीहो॥ आजुहि दाँव आपनो लेती भले गएहो भागि। हाहा करते पाँइन परते लेहु पीतांबर मांगि॥ बेनी छोरत हँसत सखा सँग कहत लेहु पट जाइ। सौंह करतहो नंदबबाकी अपनी विदति कराइ॥ जो मैं लेहुँ पीतांबर अवहीं कहा देहुँगे मोहिं। इत उत युवती चितवन लागीं रहीं परस्पर जोहि॥ एक सखा हरि त्रिया रूपकरि पठै दियो तिन पास। गयो तहां मिलि संग त्रियनके हँसति देखि पटवास॥ मोहि देहु राखौ दुरायके श्यामहि जिनि ले देहु। लियो दुराय गोद में राख्यो दाँव आपनो लेहु॥ पीतांवर जिनि देहु श्यामको यह कहि चमक्यो ग्वाल।सूर श्याम पट फेरत करसों चकित निरखि ब्रजबाल॥१६॥ चकित भई हरिकी चतुराई।हमहिं छली इन कुँवर कन्हाई॥ कहा ठगोरी देखत लाई। थिरवतिहै कहि भली बनाई॥ एक सखी हलधर वपु काछचो। चली नीलपट ओढे आछचो॥ श्याम मिलन ताको तहां आए। अग्रजकानि चले अतुराए॥ मिले साँकरी ब्रजकी खोरी। ढूँकीरहीं जहाँ तहँ गोरी॥ गह्यो धाइ भुज दोउ लपटानी। दौरि परीं सब सखी सयानी॥ निरखि निरखि तरुनी मुसकानी। एक निलज इकरही लजानी॥ कहारही करि सँकोच दिवानी। अब इनकी जिनि राखौ कानी॥ गारि नारि सब देहिं सुहानी। नंदमहरलों जाति बखानी॥ सूर श्याम उतरचो मुखवानी। गई लिवाइ जहाँ राधारानी॥ १७॥ राग धनाश्रीमलार॥ छैल छबीले मोहना जाके घुँघवारे केश री। मोरमुकुट कुंडल लखे करि लीन्हों नटवर भेष री॥राखे भौंह मरोरिकै री सुंदरनैन विशाल। निरखि हँसनि मुसकानि की री अतिहि भई बेहाल॥ कीर लजावनि नासिका अधरबिंबते लाल। दशन चमक दामिनिहू तेरी श्याम हृदय वनमाल॥ चिबुक चित्तके हरनहै री राजत ललित कपोल। मारग गहि ठाढो रहै री अरु बोलत मीठे बोल॥ चंदन खौरि विराजै री श्यामलभुजा सुचार। ग्वालसखा सब सँग लिए री वह करत गुलालन मार॥ इक भाजत इक भरत है री कुसुमवरन रँग घोरि। सोंधेकी चमची भली री खेलत ब्रजकी खोरि॥ सुनत चलीं सब धाइकै री वे देखन नंदकुमार। फाग साँझसी ह्वैरही री उडि उडि गगन अपार॥ मिलि तरुनी जहाँ जाइकै री जहाँ बिरहत फागु गोपाल। सूर श्याम सुख देखिकै री बिसरचो तनु तेहि काल॥१८॥ राग गौरी॥ घर घरते सुनि गोपी हरिमुख

देखन आई। निरखि श्याम व्रजनारि हरषि सब निकट बुलाई ॥ सुनति नारि मुसकाय बांस लीन्हें करधाई। ग्वालन जेरी हाथ गारिदै त्रियन सोहाई ॥ शिलानाम ग्वालिनी अचानक गहे कन्हाई। सखिन बोलावति टेरि दौरि आवहु री माई ॥ एक सुनत गई धाइ बीस तीसक तहाँ आई। टूटिपरीं चहुँपास घेरि लीन्हों बलभाई ॥ इक पट लीन्हों छीनि मुरलिआ लई छिंडाई। लोचन काजर आँजि भाँति सो गारीगाई ॥ जबहिं श्याम अकुलात गहति गाढे उर लाई ॥ चंद्रावलिसों कह्यो गूँथि कच सौंह दिवाई ॥ हाहाकरिए लाल कुँवरिके पाँय छुआई। यह सुख देखत नैन सूरजन बलि बलि जाई ॥ १९ ॥ राग काफी ॥ ललना प्रगट भए गुण आजु त्रिभंगी लाल ऐसे होजू। रोकत घाट बाट गृह बनहूं निबहति नाहिं कोउ नारि। भली नहीं यह करत सांवरे हम देहैं अब गारि ॥ फागुन में तो लखत न कोऊ फवति अचगरी भारि। दिनदशगए दिना दश औरे लेहु साध सब सारि ॥ पिचकारी मोको जिन छिरको झरकि उठी मुसकाइ। सासु ननद मोको घर वैरिनि तिनहि कह्यो कहाजाइ ॥ हाहाकरि कहि नंददोहाई कहा परी यहबानि। तासों भिरहु तुमहि मों लायक इह हेरनि मुसकानि ॥ अनलायक हमहैं की तुमहौ कहौ न बात उघारि। तुमहूं नवल नवल हमहूं हैं बड़ी चतुरहो ग्वारि ॥ यह कहि श्याम हँसे वाला हँसी मनही मन दोउ जानी। सूरदास प्रभु गुणन भरे हो भरन देहु अब पानी ॥ ॥ २० ॥ राग काफी ॥ अरी माई मेरो मन हरि लियो नंदके ढुटोना। चितवनमें वाके कछु टोना ॥ निरखत सुंदर अंग सलोना। ऐसी छबि कहूं भई न होना ॥ कालिहरहे यमुना तट जौना। देख्यो खोरि सांकरी तौना ॥ बोलत नहीं रहत वह मौना। दधिलै छीनि खात रह्यो दौना ॥ घर घर माखन चोरत जौना। बाटन घावन देत है चौना ॥ खेलत फाग ग्वाल सँग छौना। मुरली बजाय बिसरावत भौना ॥ मो देखत अबहीं कियो गौना। नटवर अंग सुभसजे सजौना ॥ त्रिभुवनमें वश कियो न कौना। सूरनंद सुत मदन लजौना ॥ २१ ॥ माई री मोहन मूरति साँवरो नँदनंदन जेहि नावरो। अबहिं गए मेरे द्वारह्वै रहत कहत व्रजगाँवरो ॥ मैं यमुना जल भरि घर आवति मोहिं करि लागो तावरो। ग्वालसखा सँग लीन्हें डोलत करत आपनो भावरो ॥ यशुमतिको सुत मन्हर ढुटौना खेलत फागु सुहागरो। सूर श्याम मुरली ध्वनि सुन री चित न रहत कहुँ ठाँवरो ॥२२॥ अरी माई साँवरो सलोनो अति नंद कुँवर री। चंदनकी खौरि भाल भौंह हैं जवैरे री ॥ कुंतल कुटिल छबि राजत झवैरे री। लोचन चपल तारे रुचिर भवैरे री ॥ मकर कुंडल गंड झलमल करै री ॥ मनहु मुकुर बिच रवि छबि वरै री ॥ नासिका परम लोनी बिंबाधर तरै री। तहां धरै मुरली सों नाना रंग झरे री ॥ यमुनाके तीर ग्वाल संगहि विहरै री। अबहीं मैं देखि आई बंसीवट तरै री ॥ पिचकारी करलिए धाइ अंग धरै री।नैनन अबीर मारै काहूसों न डरै री ॥बातन हरत मन रांगह्वै ढरै री। सूरजको प्रभु आली चितते न टरै री ॥ २३॥ नँदनंदन आली मोहि कीन्हीं बावरी। कहा करौं चित क्योंहूं रहत न ठाँव री ॥ विहरत हरि जहां तहां तुहु आव री। निशिहूं वासर आली मोको उहई चाव री ॥ यमुना जल भरन जाइ इहै कारि दाँव री। गुरुजन पुरजनसों और न उपाव री ॥ काफी रागिनी मुख गावै मुरली बजाइ री। ध्वनि सुनि तनु भूली अतिही सुहाइ री ॥ चंदन कपूर चूरि फेटन भराइ री। सोंधे भरि पिचकारी मारत है धाइ री ॥ आतुर ह्वै चलि री और जाइ किनि जाइ री। चित न रहत ठौर और न सोहाइ री ॥ मिलि प्रभु सूरजको सकुच गँवाइ री। लाजडारि गारि खाइ कुल बिसराइ री॥२४॥ राग कल्याण॥खेलत हरि ग्वालसंग फागु रंग भारि।एक मारत एक नारत

एक भाजत एक गाजत एक धावत एक पावत एक आवत मारि ॥ एक हर्षत एक लरखत एककरत घातहिको लोचन गुलाल डारि सोंधे ढरकावै । एकफिरत संग संग एकएक न्यारे २ विहरत टरत दाँव दीबेको वै ज्यों नाहिं पावै ॥ एकगावत एकभावत एकनाचत एकराचत एककरत मृदंग गति जति उपजावै । एकवीणा एककिन्नर एकमुरली एकउपंग एकतुंमर एक रबाब भांति सौ दुरावै ॥ एक पटह एक गोमुख एक आवझ एक झालरी एक अमृत कुंडली एक एक डफ एक करधारे । सूरज प्रभु बल मोहन संग सखा बहु गोहन खेलत वृषभानु पौरि लिए जात टारे ॥ २५ ॥ राग सावेरी ॥ सुनतही वृषभानु सुता युवती सब बोलाई । आए बलराम श्याम आए तजि काम वाम धामते आतुरसात नव बनाई ॥ हरपत सब ग्वाल बाल अरस परस करत ख्याल एक मारत एक भाजत राजत वह जोरी । उतते निकसी कुमारि संग लिए विपुल नारि कोउ कोउ नव योवन भरि कोउ कोउ दिन थोरी ॥ इत उत मुख दरश भए पिय पूरण काम किया मानो शशि उदय भयो आनंदित चकोरी । उतजेरी घेरे ग्वाल बाँसन इत परी मार यह छबि नाहिं वार पार सोर झोर झोरी ॥ उत होरी पढत ग्वार इत गारी गावति ए नंद नाहिं जाए तु म महरि गुणनभारी । कुलटी उनते कोहै नंदादिक मनमोहै बाबा वृषभानुकी वै सूर सुनहु प्यारी ॥ ॥ २६ ॥ राग काफी ॥ श्रीराधा मोहन रंग भरेहो खेल मच्यो ब्रजखोरी । नागरि संग नारि गण सोहैं श्याम ग्वाल सँग जोरी ॥ हरिलिए हाथ कनक पिचकारी सुरंग कुमकुमा घोरी । उतहि माट कंचन रँग भरिलै आई तिरिया जोरी ॥ आतुरह्वै धाई उत नागरि इत विचले सब ग्वाल । घेरि लई गहि खोरि साँकरी पकरे मदन गोपाल ॥ गह्यो धाइ चंद्रावलि हँसिकै कह्यो भलेहो लाल । जिनि बलकरौ रहौ नेक ठाढे जुरि आई ब्रजबाल ॥ आई हँसति कहति हरिएई बहुत करतहैं गाल । क्यों जू खबरि कहौ यह कीन्ही करत परस्पर ख्याल ॥ काहू तुरत आइ मुख चूम्यो करसों छुयो कपोल । कोउ काजर कोउ वदन माडती हर्षहिं कराहिं कलोल ॥ कोउ मुरली लै लगी बजावन मनभावन मुखहेरि । किनहूँ लियो छोरि पट काटिते वारति तनपर फेरि ॥ श्रवणनलागि कहति कोउ बातैं बसन हरे तेइ आपु । कालि कह्यो करिहौ कहा मेरो प्रगट भयो सो पापु ॥ कोउ नयनन सों नयन जोरिकै कहति न मोतन चाहौ । अबहीं तुम अकुलात कहाहौ जानहु गे मनलाहौ ॥ घेरि रही सरघाकी नाहीं करति सबै मनलाह । इक बूझति इक चिबुक उठावति वशपाए हरिनाह ॥ पीतांबर मुरली लई तबहीं युवती स्वांग बनाइ । देखत सखा दूरि भए ठाढे निरखत श्याम लजाइ ॥ नखछत छाप बनाय पठाए जानि मानि गुण येहु । सूर श्याम हमको जिनि बिसरौ चिह्न इहै तुम लेहु ॥ २७॥ राग गुंडमलार ॥ खेलत रंग रह्यो एक ओर ब्रजसुंदरि एक ओर मोहन । बरन बरन ग्वालबने महर नंद गोप जने एक गावत एक नृत्यत एक रहत गोहन ॥ बजावत मृदंग ताल अरस परस करै विहार शोभाको बरनी पार एक एक दै सोहन। कनक लकुट करन लिए धाए सब हरपि हिए एक ब्रजललना सूरज प्रभु मन मन मिलि मोहन ॥ ॥२८॥राग सारंग ॥हो हो हो हो होरी करत फिरत ब्रजखोरी।मोहन हलधर जोरी सुबननंद कोरी॥ग्वाल सखा सँग ढोरी लिए अबीर कर झोरी ॥ मारि भजत जेहि जोरी दावँलेत सोदो री । एक गावति है धमारि एक एकन देति गोरि गारी । दई सबन लाज डारि बाल पुरुष तोरी ॥ सोंधे अरगजा कीच मची जहां तहां गालि नोरी । बीच एक एक ऊंच नीच करत रंग झोरी ॥ एक उघटत एक नृत्यत एक तान लै तोरी । उपजाइ एक दै करताल हरपि गावति है गोरी ॥ सूरदास प्रभुको सुख

T

निरखि हरषि होरी । सुरललना सुरनसहित विथकति भई बौरी ॥ २९ ॥ रागनंदन ॥ वृंदावन परम सोहावनो राधे खेलैं फागुवारे कन्हैया । मोहन बँसिया बजावैभला नदी यमुनाके तीर वारे कन्हैया ॥ श्रवण सुनत सब धावैंही झोरिन भरे अबीर वारे कन्हैया । उर मोतिनकी माला री पहिरे रातुल चीर वारे कन्हैया ॥ ब्रजवधू सब सुंदरि श्रवणन झनके बीर वारे कन्हैया । चोवा चंदन अरगजा छिरकै सकल शरीर वारे कन्हैया ॥ एकतो राधा सुंदरी दुसरे परी अबीर वारे कन्हैया । सांकरि खोरि या ब्रजकी हो भई चोवाकीही लवारे कन्हैया ॥ वृंदावनके कुंजन भई दोउ दिश भीरवारे कन्हैया ॥ यही बिधि होरी खेलही गावे निशि दिन सूर वारे कन्हैया ॥ ३० ॥ राग धमारी ॥ प्यारी नँदनंदन वृषभानु कुँवरि सों खेलत रंग रह्यो । उडत गुलाल कुमकुमा मानो अंबर आली छाइ रह्यो ॥ अलि सुत युग वरण्यो बंकट छबि जलसुत अधर लह्यो । खंजन मीन मुक्ताहल राजत मनों रविरथ खैंचि रह्यो ॥ हँसि मुसकात सहज स्वारथको रमनिहि रूप थह्यो । दारौं दरनि अरुन अति शोभा मनु शशि ग्रहण गह्यो ॥ गोपी ग्वाल सिमटि सब सुंदरि सज्यो शृंगार नह्यो । वरषत कंचन नीर कुसुमजल मनो घनगरज रह्यो ॥ सखिश्यामा श्याम सबै सुखदाई सुखसागर सगरो । सूरदास प्रभु मिल्यो हो कृपाकरि जिन्हि हृदये बिसरो ॥ ३१ ॥ राग सारंग ॥ हो हो होरी खेलैं रंग सों ब्रजराज कुँवर वृषभानु पौरी । सुनि मुरली डफ ताल वेणु चढि अटा अटारी दौरि दौरी ॥ जो प्यारी न्यारी छबि सों देखति जलधरको छबि अपार । घनघटा अटा मंद छटकै दै उदित चंद्र वादर विदार ॥ सों प्यारेकी हितू हतीते झकझोरी खेटक झक झांकवार । भौंहें मंद भेद भाव हरषै वरषै रंग अपार ॥ इक प्यारी चंदन घसि छिरकै एक लिए लाल गुलाल । इक प्यारी केसरि छिरकति है भनत सूर चलि गति मराल॥ ३२॥ राग विलावल॥ खेलत मोहन फागु भरे रँग॥ डोलत सखा समूह लिए सँग॥ १॥ नंदरायसों विनती कीनी । श्याम एककी आज्ञा लीनी ॥ अगणित तब पिचकारी गढाये । कंचन रतन बबापै पाये॥ २॥ मन सहसक केसरि लैदीनो । अमित सुगंध अरगजा लीनो॥ गोपिन बैठि औसेरकीनो । गाइ चरावनको सँग दीनो ॥ ३॥ तब अनंत सखा गन साजे । सकल सँवारि संग लिए बाजे ॥ घर घर ध्वजा पताका वानी । तोरन वारन वासर ठानी ॥ ४॥ अरन पचासक अबीर सवारे । बीथिन छिरकि तहां विस्तारे॥ मोहन चरन धरत तहँ आवै ॥ द्वारे जुरि युवती मिलि गावै५ निरखि भरनको सब मिलि धावै । मोहन इतते सखा सिखावै॥ नाहिं गात वस्तर नहिं राखे। भरि नीके करि सुख कछु भाषे॥ ६॥ बैठे जहां गोप सब राजैं। आवत देखि सबै उठि भाजैं ॥ मोहनपै कोउ जान न पावै ॥ महा मत्त गजवरज्यों धावै ॥ ७ ॥ सब मिलि बोलत होहो होरी । छिरकत चंदन वंदन रोरी ॥ एक घोस गोपी जुरि आय । घरही में घेरे हरि जाय ॥ ८॥ इक भीतर इक रही दुआरे । एकजाइ लागी पिछवारे ॥ एक इहां चहुँ दिशिते घेरे । एक पैठि मंदिर में हेरे ॥ ९॥ एक लिए कर कमल विराजै । परसै किरणि कोटि शशि भ्राजै ॥ एकलिए शिरसौंधे गागरि । फेंट अबीर भरे बहु नागरि ॥ १० ॥ सारी सुभग काछ सब दिये । पाटंबर गाती सब हिये ॥ एकन जाइ दुरे हरि पाये । सैन देइ राधिका बताये ॥ ११ ॥ करति कुलाहल हारे गहि लाई । फूली ज्यों निधनी धन पाई ॥ एक गहे कर दोऊ हरिके । हलधर देखि उतहिको सरके ॥ १२ ॥ केसरि अरु गुलाल मुखलायो । पूरनचंद्र उदयकरि आयो ॥ पीत अरुण रँगनाये शिरते । चली धातु मानो सांवर गिरिते ॥ १३ ॥ एक भरे पिचकारी ताके । देत श्रवणमें नंदललाके ॥ ब्रजजन सकल सुधारस पीते । ऐसी भाँति

पहर दुइ बीते ॥ १४ ॥ देखी निकट राधिका प्यारी । तब हरिलीला और विचारी ॥ तब हरि जाइ दुरे उपवनमें । लगी नायका कुंज सदनमें ॥ १५ ॥ करत कुलाहल ब्रजकी नारी । देखत चढे कदंब विहारी ॥ कबहुँक मुरली मधुर बजावें । श्रवण सुनत जितही तित धावें ॥ १६ ॥ जब हरि जानि निकटही आए । डरते तब हरि रहे लुकाए ॥ कुंज कुंज कोकिल ज्यों टेरें । श्रवणनाद भृंगी त्यों हेरें ॥ १७ ॥ कबहूं फिरि आपुसमें खेलति । सकल सुगंध परस्पर मेलति ॥ झुके वचन कहती बिनपाये । कहति कछू राधिका लगाए ॥ १८ ॥ करनि लाज वरवनु भे जैसे । जाइ डोलति वन वनमें तैसे ॥ तब हरि भेष धरचो युवतीको । सुंदर परम भावतो जीको ॥ ॥ १९ ॥ सारी कंचुकि केसरि टीको । करि शृंगार सब फूलनहीको ॥ कर राजति गेंदुक नोलासी । छूटी दामिनिसी ईषदहासी ॥ २० ॥ सकल भूमि वन शोभा पाइ । सुंदरता उमँगी न समाइ ॥ ता शोभा ब्रजनारी सोही । रही ठगीसी रूप विमोही ॥२१॥ एक कहति हरि कैसे नैना । एक कहति वैसेई बैना ॥ बूझति एक कौनकी नारी । विधिकी सृष्टि नहीं तू न्यारी ॥ २२ ॥ तब हरि कहत सुनहु ब्रजबाला । बोलति हँसि हँसि वचन रसाला ॥ हम तुम मिलि खेलहिं सब जानति । राधा आली मोहिं पहिचानति॥२३॥होंहूँ संग तिहोर खेली।जानति होहूँ जान सहेली ॥ अबहीं कीरति महरि पठाई । राधा इकली खेलन आई ॥ २४ ॥ अब एक बात कहौं हो जीकी । हौं जानति हौं हरिही पीकी ॥ सघन विपिन ऐसे कहाँ पावहु । सब मिलि एक संग जिनि धावहु ॥ २५ ॥ सुनहु शोर कत रहिहैं नेरे । कोटि करौ पावहु नहिं हेरे ॥ हैहै न्यारी न्यारी डोलहु । तनक मूंदि कर मुख जिनि बोलहु ॥२६॥ जाइ अचानकही गहि ल्यावहु । सखी एक ज्यों त्यों करि पावहु ॥ राधाको भुज गहिकै लीनी । ऐसे सबको द्वैद्वै कीनी ॥ २७ ॥ मौन किए प्रवेश कियो वनमें । हरिको रूप राखि निज मनमें ॥ और सखी खोजति सब कुंजनि । राधा हरि विहरत सुख पुंजनि ॥ २८ ॥ राधा आवति देखि अकेली । तब फिरि बहुरि सब बैठि सकेली ॥ तब बूझति वृषभानु दुलारी । सखी संगकी कहाँ बिसारी ॥ २९ ॥ अति गह्वरमें जाइ परी हम । सूर्य न सूझत भयो निशातम ॥ ताठाहरतेहों भई न्यारी ॥ फिरि आई डरपी हों भारी॥३०॥पुहुप वाटिका हो फिरि आई । मुकुट पीठिते हो इतआई॥ता ठाहर जो ठाढे पावहि । चलौ जाइ धाइ गहि लावहि ॥३१॥ नारी बात सुनतही धाई।घेरिलिए कोकिल सुरगाई॥जाहु कहाँ व अकेले पाये । सकल सुगंध शीशते नाये॥३२॥एकरूप माधुरी निहारहि । एक कटाक्ष नयनशर मारहि ॥ एक सुमन लै ग्रंथितमाला । शोभित सुंदर हृदय विशाला ॥ ३३ ॥ खेलत आए पुलिन सुहाए । बैठे तहँ मंडली बनाए ॥ मोहन नव शशि मध्य विराजे । देखि सूर कोटिक छवि छाजे ॥ ३४ ॥ राग काफी ॥ खेलत फागु कुँवर गिरिधारी । अग्रजअनुज सुबाहु श्रीदामा ग्वाल बाल सब सखा अनुसारी ॥ इत नागरि निकसीं घर घरते दे आगे वृषभानु दुलारी । नवसत साजि ब्रजराज द्वार मिलि प्रफुलित वदन भीर भई भारी ॥ दुंदुभि ढोल पखावज बाजत डफ मुरली रुचिकारी । मारत बाँस लिए उन्नत कर भाजत गोप प्रियनिसों हारी ॥ एक गोप एक गोपी कर गहि मिलिगए हलधरसों भुजचारी । मिटि गई लाज सम्हार न कुच पट बहुत सुगंध पियो शिरढारी ॥ बाँह उँचाइ कहतहो हो हो लै लै नाम देत प्रभु गारी ।

इतहि राधिका निकसि यूथते सन्मुख पिय छाँडत पिचकारी ॥ इक गोपी गोपाल पकरि कर चली आपने मेर उसारी । आँजति आँखिं मनावति फगुवा हँसति हँसावति दै कर तारी ॥ सूर विमान नभ कौतुक भूले कोटि मनोज जाइ बलिहारी । सूरदास आनंदसिंधुमें मगन भए ब्रजके नर नारी॥३५॥राग काफी॥नँदनंदन वृषभानु किशोरी राधा मोहन खेलत होरी । श्रीवृंदावन अतिहि उजागर बरन बरन नवदंपति भोरी॥एकन करहै अगर कुमकुमा एकनकर केसरि लै घोरी ॥ एक अर्थ सों भाव दिखावति नाचति तरुनि बाल वृध भोरी ॥ श्यामा उतहि सकल ब्रजवनिता इतहि श्याम रस रूप लह्यो री । कंचनकी पिचकारी छूटति छिरकति ज्यों सचुपावै गोरी॥अतिहि ग्वाल दधि गोरस माते गारी देत कहौ न करोरी । करत दुहाई नंदराइकी लै जु गयो कलबल छल जोरी ॥ झुंडनि जोरि रही चंद्रावलि गोकुलमें कछु खेल मच्यो री । सूरदास प्रभु फगुवा दीजे चिरजीवौ राधा बर जोरी॥३६॥राग श्रीहठी॥श्यामा परवश परी हो विकाय मोहनके खेलत रस रह्यो हो । खेलन चले करत अति तरकै मारत पीक पराइ । पेलि चली यौवन मदमाती अधर सुधारस प्याइ ॥ इत लिए कनक लकुटिया नागरि उत जेरी घेरेवार । इत है रंग रँगीली राधा उत हैं श्रीनंदकुमार ॥ १ ॥ खेलत में रिस नाकरि नागरि श्यामहि लागी चोट ।मोहन है अति माधुरी मूरति राखिये अंचल वोट ॥ मारि डगै जब फिरि चली सुंदरि बेनी तुरे सु अंग । मनहु चंदके वदनसुधाको उडि उडि लगत भुअंग ॥ २ ॥ रुंज मुरज डफ झाँझ झालरी यंत्र पखावज तार । मदन भेरि अरु राइ गिरी गिरि सुर मंडल झनकार ॥ एक जु आई आन गाँवते सुंदर परम सुजान । यह ढोटा धौं आहि कौनको मारत मनसिज बान ॥ ३ ॥ यमुनाकूल मूल बंसीवट गावत गोप धमारि । लैलै नाम गाउँ बरसानो देत दिवावत गारि ॥ खेलिफागु मिलिकै मनमोहन फगुवा दियो मँगाय । हरषित भई सकल ब्रजवनिता सूरदास बलिजाइ॥४॥३७॥राग नटनारायण ॥ हो हो हो हो लै लै बोलैं।गोरस केरी माते डोलैं ॥ ब्रजके लरिकनि सँग लिए डोलैं । घर घर केरी फरके खोलैं॥ गोपी ग्वाल मिले इक सारी । बचत नहीं बिन दीने गारी ॥ आनि अचानक अँखियां मीचैं। चंदन बंदन ऊपर सींचै॥ जो कोइ जाइ रहै घर वैसी । करि वरि आइ तहांऊं पैसी ॥ हाथन लिए कनक पिचकारी । ताकिताकि छिरकत मोहन प्यारी ॥ कुमकुम कीच मची अति भारी । उडत अबीरन रँगी अटारी ॥ अति आनंद भरे सब गावैं । नाना गति कौतुक उपजावैं ॥ मोहन गहि आने मिलिधाय । फगुवा हमको देहु मँगाय ॥ भागत कुसुम हार उर टूटे । पीतांबर गोहन दै छूटे ॥ शोभा सिंधु बढ्यो अतिभारी । छबि पर कोटि काम बलिहारी ॥ सूरदास प्रभु करि रस होरी ॥ वरणौं कहांलगि मोमति थोरी ॥ ३८ ॥राग श्रीहठी ॥ नागरि राधा पै मोहन लेआयहो । लोचन आँजि भाल बेंदीके पुनि पुनि पाँइ परायहो ॥ बेनी गूँथि माँग शिरपार्यो वधू वधू कहि गाइहो। प्यारी हँसति देखि मोहन मुख युवती वने बनाइहो ॥ श्याम अंग कुसुमी नई सारी अपने कर पहिरायहो । कोउ भुज गहति कहति कछु कोऊ कोउ गहि चिबुक उठाइहो ॥ कोउ कपोल छुवै कहति लाल अति कोउ मुख सुखहि मिलाइहो । एक अधर गहि सुभग अँगुरिअन बोलत नहीं कन्हाइहो॥नीलांवर गहि खूंट चूनरी हँसि हँसि गाँठि जुराइहो॥युवती हँसति देति करतारी भयो श्याम मन भायहो॥कनक कलश अरगजा घोरिकैं हरिके शिर ढरकायहो। श्रीवृंदावन अद्भुत होरी कहत कही नहिं जाइहो॥नंदसुनत हँसि महरि पठाई यशुमति धाई आइहो॥पटमें बाँध्यो श्याम छुडायो सूरदास बलिजायहो३९॰राग बिलावल॥सोंधेकी उठत झकोर मोहन रंगभरे।चोवा चंदन अगर कुमकुमे सांधे

१ आलिप्तं यस्य वक्षः प्रमदशुभवनं कुंकुमोद्भूतरागैरास्ते मौलौ किरीटं मणिगुणरचिते कुंडले कर्णयोः स्तः ॥ गौरांगः शुक्लवासाः कमलकरतले ना॰लतूर्य्य द्विवाद्यं धृंधृंधीधीति युष्मान् मुरजभवरवः पातु वेलावलीयम ॥ राग बिलावल ।

माठभरे ॥ रतन जडित पिचकारी करगहे बालखरे । भरि पिचकारी प्रेमसों डारी सो मेरे प्राणहरे ॥ सब सखियन मिलि मारग रोक्यो जब मोहन पकरे । अंजन आँजि दियो आँखिनमें सो हाहाकरि उबरे॥फगुवा बहुत मँगाइ साँवरे करजोरे अरज करे॥धनि धनि आज सूर प्रभु ताके जाके सँग विहरे४०॥ राग राझीटोडी ग्वाल हँसे मुख हेरिकै अति बने कन्हाई॥हलधरको लिए टेरि आजु अति बने कन्हाई।होहो करि करि कहतिहै अति बने कन्हाई ॥ रहे चहूँधा हेरि आजु अति बने कन्हाई । ऐसेहि चलिए नंदपै अति बने कन्हाई ॥ बलकी सौंह दिवाइ आजु अति बने कन्हाई॥भुजा गहे तहां लैगई अति बने कन्हाई ॥ वह छबि वरनी न जाइ आजु अति बने कन्हाई ॥ इत युवती मन हरतिहै अति बने कन्हाई ॥ उतहि चले कै भोर आजु अति बने कन्हाई ॥ और सखी आई तहां अति बने कन्हाई ॥ करि करि नयन चकोर आजु अति बने कन्हाई ॥ महरहँसे छबि देखिकै अति बने कन्हाई ॥ सुनि जननी तहां आय आजु अति बने कन्हाई ॥ हँसि लीन्हों उरलाइकै अति बने कन्हाई ॥ आनँद उर न समाय आजु अतिबने कन्हाई ॥ कछुक खिझी कछु हँसि कह्यो अति बने कन्हाई ॥ किन यह कीन्हों हाल आजु अति बने कन्हाई ॥ लेति बलैया वारिकै अति बने कन्हाई ॥ ए ऐसिय व्रजबाल आजु अति बने कन्हाई ॥ रंगरंग पहिरावनि दई अतिबने कन्हाई ॥ युवतिन महर बुलाय आजु अति बने कन्हाई ॥ यह सुख प्रभुको देखिकै अतिबने कन्हाई ॥ सूरदास बलि जाइ आजु अति बने कन्हाई ॥ ४१ ॥ राग कल्याण ॥ व्रजराज लडैतो गायहो मनमोहन जाको नाउँ । खेलत फाग सुहावनी रंग भीजि रह्यो सबगाउँ ॥ ताल पखावज बाजहीहो : डफ सहनाई भेरे । श्रवण सुनति सब सुंदरी वै झुंडन आयहो घेरे॥ इतहि गोप सब राजहीं हो उत सब गोकुल नारि । अति मीठी मन भावती हो वै देहिं परस्पर गारि ॥ चोवा चंदन छिरकहीं हो उडत अबीर गुलाल । मुदित परस्पर खेलही हो हो हो हो लै बोलत ग्वाल ॥ सब गोपिन मिलि हलधर पकरे छँडि पाँइ लगाइ । दाँऊ आजु भले बने जू आए आँखि अँजाइ ॥ बहुरि सिमटि व्रजसुंदरी मिलि पकरे गोकुलनाथ । नव कुमकुम मुख माँडिकै रचि वेंनी गूँथी हो माथ ॥ तब नंदरानी बीच कियो बहु मेवा दिये मँगाय । पटभूषण पहिराइ सबनको निरखि सूर बलि जाय ॥ ॥४२॥ राग गौरी॥ग्वालिनि जोबन गर्व गहेली । राधे के सँग कदम सहेली॥१॥कुमकुम उबटि कनक तनु गोरी । अंग सुगंध चढाय किशोरी ॥ दक्षिण चीर तिपा को लहँगा । पहिरि विविध पट मोलन महँगा ॥२॥कुँवरी कुसुम मांग मोतिअन मनु । केसरि आड लिलाट भ्रुकुटि धनु ॥ कज्जल रेख नैन अनिआरे । खंजन मीन मधुप मृग हारे ॥ ३ ॥ श्रवणन कुंडल रवि सम ज्योती । नकबेसरि लटकैं गजमोती ॥ दशन अनार अधर बिंब जानो । चिबुक चारु मूँद्यो मधु मानो ॥ ४ ॥ कंठ कपोत मुक्तावलि हार । जनु युग गिरि बिच सुरसरी धार ॥ कुच चकवा मुख शशी भ्रम भूलो । बैठे विधुरि दुहूँ अनुकूले ॥ ५ ॥ करकंकण चूरो गजदंती । नख मणि माणिक मेटति दंती ॥ नाभि हृदय तनु हाटक बरनी । कटि मृगराज नितंबिनि तरनी ॥६॥ कदली जंघ चरण कल नूपुर । गवन मराल करत धरणी पर ॥ भूषण अंग सजे सत नारी।गावति फागु नंदकी पौरी॥ ७ ॥

१ वीणा वामकराग्रकेण दधती तालीं तथा दक्षिणे मुक्ताहारललाटमध्यतिलकं नेत्रालये कज्जलम् ॥ लेपं चंदनकर्दमेन रचितं चित्रांबरं नूपुरो तांबूलं करमोहिनीच मनसष्टोडी च मुक्तावली ॥ राग राझी टोडी ।

२ मुक्तारत्नसुवर्णवज्ररचिते सिंहासने संस्थितेऽछत्रं शोभितमस्तके परिजनैः संवीज्यते चामरैः ॥ तांबूलंवदने सुगंधितवपुः कंठे मुक्तावली कल्याणी विशदांशुकः कमलदकल्याणदो भूभुजाम् ॥ राग कल्याण ।

सुनि सुंदर वर बाहिर आए । हलधर ग्वाल गोपाल बोलाए ॥ इकतन ग्वाल एकतन नारी । खेल मच्यो ब्रजके बिच भारी ॥ ८ ॥ कुमकुम चंदन अरगजा घोरी । हाथन पिचकारी लै दौरी ॥ गोपी गोप भए झकझोरे । अंचल गाँठि परस्पर जोरे ॥ ९ ॥ उडत गुलाल अरुण भए अंबर । कुमकुम कीच मची धरणी पर ॥ चंग मृदंग बाँसुरी बाजै । पकरत एक एक भरि भ्राजै ॥१०॥ राधा मिलि इक मंत्र उपायो । हलधर अपनी भीर बुलायो ॥ कानलागि श्यामहि समुझायो । संकर्षण गहि श्यामहि ल्यायो ॥ ११ ॥ हरि जूके हाथ गहे चंद्रावलि । कज्जल लै आई संझावलि ॥ ललिता लोचन आँजन लागी । चंद्रावलि मुरली लै भागी ॥ १२ ॥ इक लै लावति हृदय कपोलनि । इक लै पोंछति ललित पटोलनि ॥ इक अवलंबन इक अवलोकित । चुंबन दान देति इक दंपति ॥ १३ ॥ मगन भई अपु वपु न सँभारति । लालन भुज अपने उर धारति ॥ गुरुजन संत सबै मिलि देखे । तिनहुँको तरुणी तृण वर लेखे ॥ १४ ॥ एक कहै पियको मुख माडौ । एक कहै फगुवा लै छाँडौ । वाम लियों पटपीत छुडाई ॥ राधा राखति कृष्ण बडाई ॥ ॥ १५ ॥ सिमटे सखा छोडावन आए । उन लियो ढेल न मोहन पाए ॥ बाँसन मार मची कल आडे । ग्वाल टिके पग एक न छाँडे ॥ १६ ॥ बल कियो बीच ग्वाल समुझाए । मोहन मेवा मोल मँगाए ॥ फगुवा लै लालन छिटकाए । हँसत गोपाल ग्वाल तहँ आए ॥ १७ ॥ तब मोहन हलधर पकराए । करहु तरुनि अपने मनभाए ॥ नाक नयन मुख कज्जल लायो । केसरि कलश हलधर शिरनायो ॥ १८ ॥ वहुत भरे बलराम सबन गहि । धौलागिरि मानो धातु चली बहि ॥ न्हान चले यमुनाके कूल । गोपी गोप भए अनुकूल ॥ १९ ॥ जो रस बाढ्यो खेलत होरी । शारदका वरणै मति भोरी ॥ सूरदास सो कैसे गावै । लीलासिंधु पार नहिं पावै ॥ २० ॥ ४३ ॥ राग गौरी ॥ गारी होरी देत दिवावत । ब्रजमें फिरत गोपिकन गावत ॥ दूध दहीके माते डोलै । काहेन हो हो हो बोलै । वगलनमें दाबे पिचकारी । बाँधत फेटैं पाग सँवारी । रुकि गए बाटनि नारे पैडे । नवकेसरिके माट उलैडे । छज्जनते छूटति पिचकारी । रँगि गईं बाखरि महल अटारी ॥ नानारंग गए रँगि बागे । बलदाऊ इत उत ह्वै भागे ॥ न्हान चले यमुनाके तीर । मन मोहन हलधर दोउ वीर ॥ सूरदास प्रभु सब सुखदायक ॥ दुर्लभ रूप देखिबे लायक ॥ ४४ ॥ रागिनी श्रीहठी ॥ ऋतु वसंतके आगमहि मिलि झूमकहो । सुखसदन मदनको जोर मिलि झूमकहो ॥ १ ॥ कोकिल वचन सोहावनो मिलि झूमकहो । हित गावत चातक मोर मिलि झूमकहो ॥ वृंदावन तरु माल मिलि झूमकहो । सब फूलि रही बनराय मिलि झूमकहो ॥ २ ॥ जहां नेवारी सेवती मिलि झूमकहो । वहु पाडर विपुल गँभीर मिलि झूमकहो ॥ खूझो मरवो मोगरो मिलि झूमकहो । कुल केतकी करनि करील मिलि झूमकहो ॥ ३ ॥ वेलि चमेली माधवी मिलि झूमकहो । मृदु मंजुल वकुल तमाल मिलि झूमकहो ॥ नववल्ली रस विलसही मिलि झूमकहो । मनो मुदित मधुपकी माल मिलि झूमकहो ॥ ४ ॥ ताल पखावज वाजही मिलि झूमकहो । बिच डफ मुरलीकी घोर मिलि झूमकहो ॥ चलहु तहां आली जाइए मिलि झूमकहो । जहाँ खेलत नंद किशोर मिलि झूमकहो ॥ ५ ॥ यूथनि यूथनि सुंदरी मिलि झूमकहो । जिनि जोवत लजत अनंग मिलि झूमकहो ॥ चोवा चंदन अरगजा मिलि झूमकहो । मथिकै निकसी एक संग मिलि झूमकहो ॥ ६ ॥ प्रति अंग भूपण साजिकै मिलि झूमकहो । लिये कनक कलश भरि रंग मिलि झूमकहो ॥ जाइ परस्पर छिरकहीं मिलि झूम

कहो ॥ ७ ॥ इतते गईं ब्रज सुंदरी मिलि झूमकहो । उतते मोहन नवलन अहीर मिलि झूमकहो ॥ बाँस धरे जेरी धरी मिलि झूमकहो । बिच मार मची भई भीर मिलि झूमकहो ॥ ८ ॥ एक सखी निकसि झुंडते मिलि झूमकहो । तिनि पकरि लई हरि हाथ मिलि झूमकहो ॥ बहुरि उठीं दशवीस मिलि झूमकहो । घेरिलिये आय ब्रजनाथ मिलि झूमकहो ॥ ९ ॥ इक पट पीतांबर गह्यो मिलि झूमकहो । इक मुरली लई छिडाय मिलि झूमकहो ॥ एक मुख माँडहि कुमकुमा मिलि झूमकहो । एक गारी दै उठी गाइ मिलि झूमकहो ॥ १० ॥ प्यारी कर काजर लियो मिलि झूमकहो । हँसि आँजति पियकी आँखि मिलि झूमकहो ॥ यहि बिधि हरिको घेरि रहीं मिलि झूमकहो । ज्यों घेररही मधुमाखि मिलि झूमकहो ॥ ११ ॥ अब तो घात भलीबनी मिलि झूमकहो । तब चीर हरे जलभीतर मिलि झूमकहो । सोपरी हँसा हम सारि हैं मिलि झूमकहो । सुनि लेहु ललन बलवीर मिलि झूमकहो ॥ १२ ॥ अब हम तुमहिं न गाइहैं मिलि झूमकहो । मुसकात कहा यदुराय मिलि झूमकहो ॥ की हमसों हाहाकरो मिलि झूमकहो । की परहु कुँवरिके पाँइ मिलि झूमकहो ॥ १३ ॥ बंकविलोकनि मन हरो मिलि झूमकहो । ठगि तुमहिं रही ब्रजबाल मिलि झूमकहो ॥ फगुवा बहुत मँगाय दियो मिलि झूमकहो । मधु मेवा मधुर रसाल मिलि झूमकहो ॥१४॥ कहि मोहन ब्रजसुंदरी मिलि झूमकहो । तब धाय धरे बल घेरि मिलि झूमकहो ॥ शंक सकुच सब छाँडिकै मिलि झूमकहो । चहुँपास रही मुख हेरि मिलि झूमकहो ॥ १५ ॥ कनक कलश भरि कुमकुमा मिलि झूमकहो । धरि ढारि दिये शिर आनि मिलि झूमकहो ॥ चंदन बंदन अरगजा मिलि झूमकहो । सब छिरकति करति न कानि मिलि झूमकहो ॥ १६ ॥ खेलि फागु अनुराग बढ्यो मिलि झूमकहो । फिरि चले यमुनजल न्हान मिलि झूमकहो ॥ द्वितिया बैठि सिंहासने मिलि झूमकहो । दोउ देत रत्न मणिदान मिलि झूमकहो ॥ १७ ॥ यहि बिधि हरिसँग खेलहीं मिलि झूमकहो । गण गोकुलनारि अनंत मिलि झूमकहो ॥ सूर सबनको सुख दियो मिलि झूमकहो । रमि रसिक राधिका कंत मिलि झूमकहो ॥ १८ ॥ ४५ ॥ रागिनी काफी मनमोहनललनामनहरयो ॥ गृहगृहते सुंदरि चलीं देखन ब्रजराज कुमार । देखिवदन विथकित भई बैठी हैं सिंहदुआर ॥ डिमिडिमी पटह ढोल डफ बीणा मृदंग उपंग चंग तार । गावत प्रीति सहित श्रीदामा बाढ्यो है रंग अपार ॥ १ ॥ इत राधिका सहित चंद्रावलि ललिता घोष अपार । उत मोहन हलधर दोउ भैया खेल मच्यो दरबार ॥ रत्नजटित पिचकारी करलिये छिरकति घोषकुमारि । मदनमोहन पिय रसमातेहैं कछुअन अंग सँभारि ॥ २ ॥ मोहनप्यारी सैनदै हलधर पकराए जाय।आपुन हँसत पीतपट मुखदै आएहो आँखि अँजाय ॥ बहुरि सिमिटि ब्रजसुंदरी मनमोहन पकरे जाय।अधरपान रस करति पियारी मुरली लई छिडाय॥३॥परिवा सिमिटि सकल ब्रजवासी चले यमुनजल न्हान।वारि कुँवरिपर पट नँदरानी देति विप्रन बहुदान ॥ द्वितीयपाट सिंहासन बैठे चमरछत्र शिर ढार।सूरज प्रभु पर सकल देवता बरषत सुमन अपार॥४॥४६॥ राग श्रीहठी ॥ श्यामसंग खेलन चली श्यामा सब सखियनको जोरि । चंदन अगर कुमकुमा केसरि बहुकंचन घट घोरि ॥ खेलत मोहन रंग भरे हो लाल प्यारो सुंदर सब सुखराशि ॥ १ ॥ फूलनके गेंदुक नवला साजि कनक लकुटिया हाथ । जाय गही ब्रजखोरि राधिका कोटिक युवती साथ ॥ उतते हरि आए जब खेलत हो हो होरी संग । कानपरी सुनिए नाहीं बहुबाजत ताल मृदंग ॥ २ ॥ पहिले सुधि पाई नहीं तब घिरे सांकरी खोरि । अब हलधर उलटहु काढे तुम धावहु ग्वाल

जोरि ॥ धरत भरत भाजत राजत गेंडुक नवल्न सन मार । रसन बसन छूटत न सँभार टूटतहै उरहार ॥ ३ ॥ जब मोहन न्यारे करि पाए पकरे चहुँदिशघेरि । बोलहु जू अब आनि छुडावै बल भैयाको टेरि ॥ आजु हमारे वश परेहो जैहौ कहाँ छिडाइ । की बल छूटहु आपने की यशुमति माय वोलाइ ॥ ४ ॥ एक गहे कर एक फेंट गहि पीतांबर लियो छिडाय । राधा हँसति दूरि भइ ठाढी सखियन देति सिखाय ॥ एक श्रवणमें कहि कछु भाजति एक भरति अँकवारि । एक निहारति रूप माधुरी एक अपुनपो वारि ॥ ५ ॥ एक चिबुक गहि बदन उठावति इमतन लाल निहारि । एक नैनकी सैन मिलावति एक उठति दै गारि ॥ आई झुमि सकल ब्रजवनिता हरि देखी चहुँ ओर । राधा दृष्टि परे बिनु मोहन तलफत नैन चकोर ॥ ६ ॥ हरि तब अपने करवरसों घूँघट पट कीनो दूरि । हँसत प्रकाश भयो चहुँ दिशिते सुधा किरनि भरि पूरि ॥ आँखि दिखावतहौ जु कहा तुम करिहौ कहा रिसाय । हम अपनो भायो करि लेहैं छुवहु कुँवरिके पाय ॥ ७ ॥ तब तुम अंबर हरे हमारे कीन्हें कौन उपाय । अब तौ दाउँ परचो धरि पाए छाँडहिं तुमहिं न गाय ॥ मुखकी कहति सबै झूठी मनहीं मन बहुत सनेहु । कूटि करैंगे बलभैया अब हमहि छाँडि किनि देहु ॥ ८ ॥ तुम जो फगुवा दैहो कहा चलि बोलहु सांचे बोल । की हमसों हाहा करिए की देहु श्रीदामा ओल ॥ हँसि हँसि कहत सहत सबहीकी आभूषण अब लेहु । नासाको मुक्ता अरु मुरली पीतांबर मेरो देहु ॥ ९ ॥ एक बनाइ देति बीरी कर वल्लभ छुवति कपोल । धन्य धन्य बडभाग सबहिंके वश कीने बिनुमोल ॥ उडत गुलाल अबीर कुमकुमा छबिछाई जनु सांझ । नाहीं दृष्टि परत राधा मुख चंद्र नीलांबर मांझ ॥ १० ॥ खेलि फाग अनुराग बढ्यो घर मची अरगजा कीच । ब्रजबनिता कुमुदिनीं कुसुमगण हरि शशि राजत बीच ॥ अष्टसिद्धि नवनिधि ब्रज बीथिनि डोलति घर घर द्वार । सदा वसंत वसत वृंदाबन लता लटकि द्रुम डार ॥ ११ ॥ देखि देखि शोभा सुख संपति यह जिय करति विचारि । ब्रजबनिता हम किन न भई यों कहति सकल सुरनारि ॥ फागु खेलि अनुराग बढायो सबके मन आनंद । चले यमुन अस्नान करनको सखा सखी नँदनंद ॥१२॥ दुष्टन दुख संतन सुखकारण ब्रजलीला अवतार । जय जय ध्वनि सुमन न सुर वर्षत निरखत श्याम बिहार ॥ युगल किशोर चरण रज माँगो गाऊं सरस धमार । श्रीराधा गिरिवरधर ऊपर सूरदास बलिहार ॥ १३ ॥ ४७ ॥ राग नटनारायण ॥ खेलत फागु कहत हो होरी।उत नागरी समाज विराजति इत मोहन हलधरकी जोरी॥१॥बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ रुंज मुरुंज बाँसुरी ध्वनि थोरी । श्रवण सुनाइ गारिदै गावति ऊंची तान लेति प्रिय गोरी ॥ कोटि मदन दुरि गयो देखि छवि तेउ मोहे जिन्हहूं मति भोरी । मोहन नँदनंदन रस विथकित कोहू दृष्टि जात नहिं मोरी ॥ २ ॥ कुमकुम रंग भरी पिचकारी उत्तम छिरकति नवल किशोरी । यहि बिधि उमँगि चल्यो रँग जहँ तहँ मनु अनुराग सरोवर फोरी ॥ कतहुँक मिलि दश बीसक धावति लेति छिंडाइ मुरलि झकझोरी । जाइ श्रीदामा लै आवत तब दैमानिनि बहुभाँति पटोरी॥३॥भरिकर आन अबीर उडावत गोबिंद निकट जाय दुरि चोरी । मनहु प्रचंड पवन वश पंकज गगन धूरि शोभित चहुँ ओरी ॥ कनककलश कुमकुम भरि लीन्हों कस्तूरी मिलिकै घसि घोरी । खेल परस्पर कीच मची घर अधिक सुरंग भई ब्रजखोरी ॥ ४ ॥ ग्वाल बाल सब संग मुदित मन जाय यमुनजल न्हाइ हिलोरी । नए वसन आभूषण पहिरत औरन देत पीतांबर छोरी ॥ द्विज समाज समेत करत द्विज तिलक दूब दधि रोचन रोरी । सूर श्याम विप्रन बंदीजन देत रतन कंचनकी वोरी ॥५॥४८॥

राग सारंग ॥ बनी रूप रंग रस राधिका ताते अधिक बने ब्रजनाथ हो । ललिता अरु चंद्रावली मिलबन्यो छबीलो साथ हो ॥ ताल पखावज बाजही सँग डफ मुरलीकी घोर हो । नंदद्वार औसर रच्यो दोऊ राजत नवल किशोर हो ॥ एककोंध ब्रजसुंदरी एककोंध ग्वाल गोविंदहो । सरस परस्पर गावहीं देनारि गारि बहु वृंदहो ॥आवहु री हम दुरिरहैं बलभद्र कृष्णगहि देहिहो।लोचन उनके आँजहीं अधरनको रस लेहिंहो ॥ शीलानाम ग्वालिनी तेहि गहे कृष्ण धपि धाइहो । उपरैना मुरलीलई मुख निरखि हरपि मुसकाइहो ॥ गहे कृष्ण अचानक राधिका रही कंठ भुजलाइहो । मनके सब सुख भोगए जब परसे यादवरायहो ॥ दई कोटि कलश भरि वारुनी बहुत मिठाई पानहो । राधा माधव रस रह्यो सब चले यमुनजल न्हानहो ॥ द्वितिया सकल समाज सो पट बैठे आनंद कंद हो।दान देति ब्रजसुंदरी नगभूषण नवनिधि नंदहो ॥बनवीथिनि भरी पुर गली उमँग्यो रंग अपारहो। सूर सु नभ सुर थकि रहे निरखत प्राण अधारहो ॥ ४९ ॥ राग सारंग॥करत यदुनाथ जलधि जल केलि । अबलनकर लिए अंबुज अमृत किए दिये नव नव सुख खेलि । जो राजत तिहिंकाल लाल ललनारसाल रसरंग मानहु न्हात मदन वधु सजनी गज गजनी गज संग ॥ स्रवत सलिल शिव विदित अलकमिव राहु वदन विधुमत । मनहुँ पानकरि भोजन सो अलि जु पिक बक रस बमत ॥ ध्वनिन करत सिंधुउतरन धरत तरंग रह्यो ठहिराइ । पूजे कृष्णउजागर सागर वैरागर पहिराइ ॥ भवन गवन यों नंदसुवन तब निकसि चढे रथ कूल । निरखत वरपत कुसुम त्रिदशजन सूर सुमति मनफूल ॥ ५० ॥ राग राड़ी वसंती ॥ यदुपति जलक्रीडत युवतिन सँग । सागर सकुचत तजीत-रंग ॥ षोडससहलदशअष्ट नारि । तिनमें अति शोभित श्रीमुरारि ॥ उडुगण समेत शशिसिंधवारि । मनु पुनि आयो चितहित विचारि ॥ मृगमद मलयज केसरि कपूर । कुमकुमा कलित छत अगर चूर ॥ जलताकि परस्पर छपत दूर । मनु धनुप निपुण संग्राम शूर ॥ चलत चारु कलवलय चीर । अरु जलद वृंद छतभित समीर ॥ वदन निकट कच चुवत नीर । मनु मधुप निकर प्यावत न धीर ॥ जहँ नारदादि मुनि करत गान । जग पूरित हरि यश सुर वितान । सुर सुमन सुवन वर्षत विमान । जै सूर प्रभू सब सुखनिधान॥५१॥ राग सारंग ॥ रवितनयाको सलिल गंभीर आवहुरे मिलि न्हाइये । यहँ अति श्रम गँवाइ देहुको पुनि अपने घर जाइये ॥ भीजे गात जातहीं नवतन जो जसुदापै जाइये । ले सबहीको स्वाद मनोहर मीठो हो सो खाइये ॥ ए भूपन ए वसन मनोहर सादर सुरहिं दिखाइये । हरि जानत हौ ब्रजवेगि विदाहि विमुख जाइ चिताइये ॥ ॥ ५२ ॥ राग कल्याण ॥ यमुनातें हो बहुत रिझायो । अपनी सोंह दिए नंददोहाइ ऐसो सुख में कबहुँ न पायो ॥ मिले मातु पितु बंधु सजन सब सखन संग बन विहरन आयो । अज अनंत भगवंत धरणिधर सुवस कियो प्रिय गान सुनायो ॥ हों भयो प्रसन्न प्रेम हित तेरे कलिमल हरे जु यह जल न्हायो।अब जिय सकुच कछू मति राखहु माँगि सूर अपने मन भायो॥५३॥ राग विलावल ॥ श्यामा श्याम खेलत दोउ होरी । फागु मच्यो अति ब्रजकी खोरी ॥ १ ॥ इतहि बनी वृपभानु किशोरी । सँग ललिता चंद्रावलि जोरी ॥ ब्रजयुवती सँग राजति भोरी । बनि शृंगार श्रीराधा गोरी ॥ २ ॥ उतहि श्याम हलधर दोउ जोरी । वारों कोटिकाम छवि थोरी ॥ ग्वाल अबीरनकी लिए झोरी । सुरंग गुलाल अरगजा रोरी ॥ ३ ॥ गावति सबै मधुर सुर गोरी । तानलेति दे दे

१ मालाकंकणकुंडलैः कनककेयूरभूषिता प्रायशः सम्यग्दाडिमबीजदंतरुचिभिः संस्पर्द्धमाना भृशम्॥ईषद्धास्यमुखी कठोर-कुचका रक्तांबरं बिभ्रती वासंती वरलोललोचनचलल्लोलानना वर्तते ॥ राड़ी वासंती ।

२ नेत्रे कज्जलरंजितेतिललिते नानाग्रमुक्ताफलं भाले भाति सुकुंकुमस्य तिलकं गौरांगचित्रांबरम् ॥ वेणीचंपककेतकी-सुकुसुमैः सार्द्धं करे वीटिकां नानासौरभगंधितात्विलसपुरवेलावली योपिता ॥ राग विलावल ।

झक झोरी ॥ राधा सहित चंद्रावलि दौरी । औचक लीनी पीत पिछौरी ॥ ४ ॥ देखतही लेगइ अजोरी । डारिगई शिर श्याम ठगोरी ॥ ग्वाल देत होरीकी गारी । वैर कियो हमसों तुम भारी ॥५॥ हँसति परस्पर यौवनवोरी । लै आईं हरि पीत पिछोरी ॥ घात करति मन मुरलीको री । अधरन ते नहिं टारत जोरी ॥ ६ ॥ भली करी सब हम तुम सो री । सावधान अब होहु कह्यो री ॥ श्याम चितै राधा मुख ओरी । नैन चकोर चंद्र दरश्यो री ॥ ७ ॥ पियको प्रिय मोहनी लंगाय । इहि अंतर गोपी हँसि धाय ॥ गह्यो हरषि भुज ललिता धाय । गई श्यामकी सब चतुराय ॥ ८ ॥ मनमाने सब करति वडाय । राधा मोहन गाँठि जुराय ॥ करत सबै रुचिकी पहुनाय । नंदमहरको गारी गाय ॥ ९ ॥ फगुवा हमको देहु दिवाय । पचरँगसारी बहुत मँगाय ॥ लीन्ही जो जाके मन आय । तुरत सबै युवती पहिराय ॥ १० ॥ खेलत फागु रह्यो रस भारी । वृद्ध किशोरि बाल अरु नारी॥अति श्रम जानि गए जलतीरा।ग्वाल ग्वालि हलधर हरि वीरा ॥ ११ ॥ परम पुनीत यमुनजल रासी । क्रीड़त जहां ब्रह्म अविनासी ॥ धन्य धन्य सब व्रजके वासी । विहरतहैं हरि सँग करि हाँसी ॥१२॥ जलक्रीडा तरुणिन मिलि कीनो । ब्रज नर नारिनको सुख दीनो ॥ कारि अस्नान चले ब्रजधाम । करे सबनके पूरण काम ॥ १३ ॥ जो सुख नंद यशोदा पायो । सो सुख नाहीं प्रगट बतायो ॥ सुरवनितन यह सांध बिचारैं । कैसे हरि सँग हमहु विहारैं ॥ १४ ॥ धन्य धन्य ए व्रजकी बाला । धन्य धन्य गोकुलके ग्वाला ॥ सूर श्याम जनके सुखदायक । भुव प्रगटे हरि हलधर भायक॥ १५ ॥ ५४ ॥ राग गौरी ॥ कछु दिन ब्रज औरो रहो हरि होरी है । अब जिनि मथुरा जाहु अहो हरि होरी है ॥ १ ॥ सब सुखको फल फागु अहो हरि होरी है ॥ प्रगट करौ यह जानिकै हरि होरी है । अंतरको अनुराग अहो हरि होरी है ॥ २ ॥ गनहु द्वैज दिन शोधिकै हरि होरी है । भूपति ह्वैहै काम अहो हरि होरी है ॥ शशि रेखा शिर तिलक दै हरि होरी है ॥ सबकोऊ करै प्रणाम अहो हरि होरी है ॥ ३ ॥ कनक सिंहासन बैठिहैं हरि होरी है।युवतिन के उर आनि अहो हरि होरी है ॥ घूँघट आत पताानि अहो हरि होरी है॥४॥तीज तिहूँ दिश प्रगट है हरि होरी है।अपनी आनन रेख अहो हरि होरी है॥सुनि पग मग डफ डिमि डिमी हरि होरी है॥सोइ करिहैं सब देश अहो हरि होरी है॥५॥चौथि चहूं दिश जानिहै हरि होरी है । यहअपनी इक रीति अहो हरि होरी है॥मैं जो कहो पिय निलज अहो हरि होरी है। छांडि सकुच कुलनीति अहो हरि होरी है ॥६॥ पांचै परमिति परिहरै हरि होरी है। चली सकल इकचाल अहो हरि होरी है॥नारि पुरुष सादर करैं हरि होरी है।वचन प्रीति प्रतिपालि अहो हरि होरी है॥७॥छठि छरागरसरागिनी हरि होरी है । ताल तान बंधान अहो हरि होरी है॥चटुल चारु रतिनाथके हरि होरी है।सीखत होइ औधान अहो हरि होरी है ॥ ८ ॥ सुनि बातैं सब सजग होइ हरि होरी है। सबन मतो मत एक अहो हरि होरी है ॥ नृप जो कहो सब कोउ करैं हरि होरी है। को राखि है विवेक अहो हरि होरी है ॥ ९ ॥ आठैं सुनि सब साजि भए हरि होरी है। राजाकी रुचि जानि अहो हरि होरी है ॥ करहु क्रिया तैसी सबै हरि होरी है। आयसु माथे मानि अहो हरि होरी है ॥ १० ॥ नौमी नवसत साजिकै हरि होरी है। उर सुगंध उपहार अहो हरि होरी है ॥ मनहु चली है मायकै हरि होरी है । मनसिज भवन जोहार अहो हरि होरी है ॥ ११ ॥ दशै दशै दिशि शोधिकै हरि होरी है। बोलेहो नारायण अहो हरि होरी है ॥ काज करहु रुचि आपनी हरि होरी है। आवहु काज सिराय अहो हरि होरी है ॥ १२ ॥ सुनि आयसु एकादशी हरि होरी है। बोले सब शिरनाइ अहो

हरि होरी है ॥ गजजीतहु बल आपने हरि होरी है। ज्ञान वैराग छँडाय अहो हरि होरी है॥१३॥ देखि भले सुभट आपने हरि होरी है। दियो द्वादश द्योत विचारि अहो हरि होरी है ॥ करहु क्रिया तैसी सबै हरि होरी है। होइ निशंक नर नारि अहो हरि होरी है ॥ १४ ॥ ढोल भेरि डफ बाँसुरी हरि होरी है। बाजैं पटह निशान अहो हरि होरी है ॥ मिलहु लोकपति छाँडिके हरि होरी है। नहिं उबरिवो निदान अहो हरि होरी है ॥ १५ ॥ रथ औचक बरात साजें हरि होरी है। खरन भए असवार अहो हरि होरी है ॥ धूरि धातु रंग घट भरे हरि होरी है। धरे यंत्र हथियार अहो हरि होरी है ॥ १६ जहां तहां सैन्याचली हरि होरी है। मुक्तकाछ शिरकेश अहो हरि होरी है ॥ आपो पर समुझै नहीं हरि होरी है। राजा रंक अवेश अहो हरि होरी है ॥१७॥ जे कबहूं देखे नहीं हरि होरी है। कबहूँ सुनी न कान अहो हरि होरी है ॥ तिन्ह कुलनारि निडरभई हरि होरी है। लागे लोग परान अहो हरि होरी है ॥ १८ ॥ भस्मभँर अंजन करैं हरि होरी है। छिरकें चंदन वारि अहो हरि होरी है ॥ मर्यादा राखैं नहिं हरि होरी है। कटिपट लेहिं उतारि अहो हरि होरी है ॥ ॥ १९ ॥ जहां सुनहिं तप संयमी हरि होरी है। धर्म धीर आचार अहो हरि होरी है ॥ छेकहिं तहीं निशंक होइ हरि होरी है। पकरहिं तोरि किवाँर अहो हरि होरी है ॥ २० ॥ शठ पंडित वेश्यावधू हरि होरी है। सबै भये एक सारि अहो हरि होरी है ॥ तेरसि चौदसि दिवस द्वै हरि होरी है। जनु जीते जगझारि अहो हरि होरी है ॥ २१ ॥ पून्यो प्रगटी प्राणपति हरि होरी है। दुरे मिले पा-लागि अहो हरि होरी है ॥ जहां तहां होरी जरै हरि होरी है। मनहुँ मवासे आगि अहो हरि होरी है ॥ २२ ॥ सब नाचहिं गावहिं सबै हरि होरी है। सबै उडावहिं छार अहो हरि होरी है ॥ साधु असाधु न समुझहीं हरि होरी है। बोलहिं वचन विकार अहो हरि होरी है ॥ २३ ॥ अति अनीति मितिदेखि कै हरि होरीहै। परिवा प्रगटी आनि अहो होरी है ॥ विमल बसन तनु साजहीं हरि होरी है। मर्यादाकी कानि अहो हरि होरी है ॥ २४ ॥ आवतही आदर करैं हरि होरी है। हँसि जोरहिं उठि हाथ अहो हरि होरी है ॥ बरन धर्म मिति राखहीं हरि होरी है। कृपाकरी रतिनाथ अहो हरि होरी है ॥ २५ ॥ सुनि विनती ऋतुराजकी हरि होरी है। प्रभु समुझे मनमाहँ अहो हरि होरी है ॥ जाय धर्म अपने रहो हरि होरी है। बसो हमारे बाँह अहो हरि होरी है ॥ २६ ॥ और कहां लौं बरनिए हरि होरी है। मनसिज के गुणग्राम अहो हरि होरी है ॥ सुनहु श्याम या मासमें हरि होरी है। कियो जु कारण काम अहो हरि होरी है ॥ २७ ॥ सूर रसिक मणि राधिका हरि होरी है। कहि गिरिधरसों बात अहो हरि होरी है ॥ श्याम कृपा करि व्रजरहौ हरि होरी है। बरजति मधुवन जात अहो हरि होरी है ॥ २८ ॥ ९३ ॥

॥ राग जयजयवंती ॥ माई फूले फूले हो फूलत श्रीराधे कृष्ण झूलत सरसरसही फूलडोल। फूले फूले फूल जोरत फूले निमिषनहीं मोरत संतन हितही फूल डोल ॥ १ ॥ फूल स्फटिक खँभ रचित कंचनहीं फूल खचित सरस रही फूल डोल। पटुली नवरतन पचित हीरालाल मोती जटित संतन हितही फूल डोल ॥ २ ॥ मरुवा मयारि सुठि ढरिरोल प्रवाल पिरोजा झूमका चहुँ ओल सरस रसही फूल डोल। डाँडी हेम हीने चारु गोल चुनी नहीं फूल लगे लोल संतन हितकी फूल डोल ॥ ३ ॥ फूले श्रीवृंदावन अनुकूल सघनलता सब फूले फूल सरस रसही फूल डोल ॥ फूले श्रीयमुनाकूल विविध तरंगरंग फूले फूल संतन हितही फूल डोल ॥ ४ ॥ फूले हीन चंपक चारु चमेली फूले मलयज लवंगलता बेलि सरस रसही फूल डोल। फूले वेल निवारी फूल

एलि फूले मरुवो मोगरो सेवती फूल वेलि संतन हितही फूल डोल ॥ ५ ॥ तहाँ हीन अंबा मौरेहै फूले जहां निबुवा सदाफल फूले सरस रस फूल डोल । तहाँ कमल कैंवरो फूले जहाँ केतकी कनेर फूले संतन हितही फूलडोल ॥ ६ ॥ फूली माधवी मालती रेलि फूलेही मधुप करत हैं केलि सरसरसही फूल डोल । फूले फलेहैं आनँद वेलि फूले पिवत सुमन रस पेलि संतन हितही फूल डोल ॥ ७ ॥ फूलनके सोंधेवार मानो मधुप छबि अपार सरस रसही फूल डोल । फूलनहीके हिएहैं हार सुरसरी मानो धरेही धार संतन हितही फूल डोल ॥ ८ ॥ माथे मुकुटहै रचित फूल फलन कीहै बेनी शीश फूल सरस रसही फूल डोल । फूलनहीकेहैं बेंदी भाल फूलनके सब नख शिख शृंगार संतन हितही फूल डोल ॥ ९ ॥ फूलेहैं हो धेनु धाम सब ग्वाल बाल फूलेहैं हो नंदजूके लाल सरस रसही फूल डोल । फूली गोपी हीन तरुन वृद्धबाल फूली करतिहैं नाना बिधि ख्याल संतन हितही फूल डोल ॥ १० ॥ फूली रोहिणी यशोमति रानी फूलीहैं देवि हरिही रजधानी सरस रसही फूल डोल । फूलेहैं नंद संकर्षन सुखमानी फूल गोकुलही प्राणी संतन हितही फूल डोल ॥ ॥ ११ ॥ फूलेही बजावैं डफ ताल मृदंग बजे मुहवरि मुँहचंग सरस रसही फूल डोल ॥ फूले बजावैं बाँसुरी सुरसंग बजावैं अमृत कुंडली उपंग संतन हितही फूल डोल ॥ १२ ॥ फूले बजावैं किन्नरी यंत्र तार गति सुर मंडल झनकार सरस रससही फूल डोल । फूले बजावत गिरि गिरी गार मदन भेरि घहराइ अपार संतन हितही फूल डोल ॥ १३ ॥ फूलेहि न बजावें रुंज मुरुंज फूलेबजावै झांझि झालरी पुंज सरस रसही फूल डोल । फूलें सुर बजावैं दुंदुभी घोर गुंज कूंजत मोर मराल कोकिल कुंज संतन हितही फूल डोल ॥ १४ ॥ देखि डोल ब्रजजन सब फूले गोपी झुलावति गिरिधर झूले सरस रसही फूल डोल । फूलेहो मुदित मनोहर फूले रसिकनि रसिक शिरोमणि फूले संतन हितही फूल डोल ॥ १५ ॥ फूली हरषि परस्पर गावैं हो होरी बोलति मीठे बोल बोलावैं सरस रस फूल डोल । फूलीं प्रमुदित मनोहर भावें कमलनयनको लाड लडावें संतनहितही फूल डोल ॥ १६ ॥ फूली चोवा चंदन बंदन रोरी केसरि मृगमद मथि मथि घोरी सरस रसही फूल डोल। फूली छिरकति नवलकिशोरी अबीर गुलाल भरें सब झोरी संतन हितही फूलडोल ॥ १७ ॥ फूली नाचति वृद्ध बाल यौबन भोरी फूले ग्वाल ग्वालिनि यूथ यूथनि जोरी सरस रसही फूल डोल । फूले करत कुलाहल तिहुँपुर खोरी फूलेहैं नरनारि किशोरी संतन हितही फूलडोल ॥ १८ ॥ फूले फगुवा मँगाय दियो रसराख्यो पट भूषण पहिराय रह्यो नहीं काष्यो सरस दिशही फूलडोल । फूले हरि हँसि हँसि अमृत भाष्यो फूलेहो जो जैसे तैसे सबको मनराख्यो संतन हितही फूल डोल ॥ १९ ॥ फूलेहिन नारद करतहो गान फूले है ऋषि मुनि शिव धरत ध्यान सरसरसही फूलडोल ॥ फूलेहो बीणा बजावत हरि यश बखान मारचो कंस उग्रसेनकी फिरे आन संतन हितही फूल डोल ॥ २० ॥ फूलेहि न कहत हरि मुनि कह्यो जाय तुरतही मोहिं तुम लेहु बोलाय सरस रसही फूल डोल । फूल्योहिन जघानोमें असुर आय नदी यमुनामैंही देहुँ बहाय संतन हितही फूल डोल ॥ २१ ॥ फूलहिं न उग्रसेन शिरछत्र धराय फूले मथुरा नरनारि आनँद देहु बढाय सरस रसही फूल डोल । फूले हि न पितु मातु मिल्यो म्यतवधाय दुसह दुख विसराउ सुख देहु जाय संतनहितही फूल डोल ॥ २२ ॥ फूलेहि नमुनि मुनि ज्ञान हरपाय

सकल भूमि व्रजरतन छाय सरससरसही फूल डोल । फूले हैं त्रिदशपति सुर शची सहिताय नभचढि बिमान फूले सुमन वरषाय संतन हितही फूल डोल ॥ २३ ॥ फूलेहि न हरषत हो ऋपिराय फूले बिदाभये मुनि वैकुंठ सिधाय सरस रसही फूल डोल । फूले हरषि हरषि हरिको यशगाय फूले पूँछत सुर मुनि कछु कह्यो न जाय संतन हितही फूल डोल ॥ २४ ॥ फूल्योहि न पढै पढावै सुनै सुनावै वासि वैकुंठ परमपदपावै संतन हितही फूल डोल । सूरदास प्रभु कैसे करि गावै लीलासिंधु पार नहिं पावै संतन हितही फूल डोल२५ ॥५४ राग राज्ञी रामगिरी ॥हरि पिय तुम जिनि चलन कहो । यह जिनि मोहिं सुनावहु बलिजाउँ जिनि जिय गहनि गहो ॥ जब चलिहो तबही कहियो अब जिनि उरहिं दहो।औरहु जन्म प्राण मिलतहैं पुनि तुम मिलत न हो।जानि एई जिय तानि मन सुख अबकी बेर रहौ । यह सुनि सूरदासको लालच कबहूं जिनि उमहो ॥५५॥ राग कल्याण श्रीगोकुलनाथ विराजत डोल ।संग लिए वृपभानु नंदिनी पहिरे नील निचोल॥कंचन खचित लाल मणि मोती हीरा जटित अमोल। झुलवहिं यूथ मिले व्रज सुंदरि हरपति करति कलोल ॥ खेलति हँसति परस्पर गावति होहो बोलति मीठे बोल।सूरदास स्वामी पियप्यारी झूलतहैं झक झोल ॥५६॥राग कल्याण॥श्रीझूलत नँदनंदन डोल । कनक खंभ जराय पटुली लगे रतन अमोल ॥ सुभग सरल सुदेश डाँडी रची विधना गोल। मनो सुरपति सुरसभाते पठै दियो हिंडोल॥जबहिं झंपति तबहिं कंपति विहँसि लगति डरोल। त्रिदशपति सजि चढि विमानन निरखि दै दै ओल ॥ थके मुख कछु कहि न आवै सकल मख कृत झोल। सखी नवसत साजि लीन्हें कहत मधुरे बोल ॥ थक्यो रतिपति देखि यह छबि इंद्र भयो भ्रम भोल। सूर यह सुख गोप गोपी पियत अमृत कलोल ॥५७॥राग गौरी ॥डोलत देखि व्रजवासी फूलैं। गोपी झुलवैं गोविंद झूलैं ॥ नँदनंदन गोकुल में सोहै ॥ मुरली मनोहर मन्मथ मोहै ॥ कमल नयनको लाड लडावै । प्रमुदित गात मनोहर गावै॥रसिक शिरोमणि आनँद सागर । सूरदास मन मोहन नागर ॥५८॥ इति फागु क्रीडा समाप्ता। अध्याय॥३८॥ अथ अक्रूर प्रस्ताव कथा वर्णन ॥ राग बिलावल ॥ फागु रंग करि हरि रसराख्यो । रह्यो न मन युवतिनके काख्यो ॥ सखा संग सबको सुख दीनो । नर नारी मन हरि हरि लीनो ॥ जो जेहिभाव ताहि हरि तैसे । हितको हित कंटकको नैसे ॥ महरि नंद पितु मातु कहाए । तिनहीके हित तनु धरि आए ॥ युग युग यह अवतार धरत हरि । हरता करता विश्व रहे भरि ॥ धरणी पाप भार भई भारी । सुरन लिए सँग जाइ पुकारी ॥ त्राहि त्राहि श्रीपति दैत्यारी । राखि लेहु मोहिं शरन उबारी ॥ राजस रीति सुरन कहि भाषी । भए चंद्र सूरज तहां साखी ॥ क्षीरसिंधु अहि शयन मुरारी । प्रभु श्रवणन तहाँ परी गुहारी ॥ तब जान्यो कमलाके कंता । दनुज भार पुहुमीमें मंता ॥ सिंधु मध्य वाणी परकाशी । भुव अवतार कह्यो अविनाशी ॥ मथुरा जन्मि गोकुलहि आये । मात पिता सुत हेतु कहाए ॥ नारद कहि यह कथा सुनाई । व्रज लोगन सुख दियो कन्हाई ॥ नंद यशोदा बालक जान्यो । गोपी कामरूप करि मान्यो ॥ प्रथम पिवत पय बकी विनाशी । तुरत सुनत नृप भए उदासी ॥ यहि अंतर बहु दनुज संहारे । यहि अंतर लीला बहुधारे ॥ को माया कहि सकै तुम्हारे । बाल तरुन सुख न्यारे न्यारे ॥ धन्य धन्य ए व्रजके वासी । वश कीन्हें जिनि ब्रह्म उदासी ॥ अकल कला निगमहु ते न्यारे ॥ तिन युवती वन वननि विहारे ॥ आज्ञाइहै मोहिं प्रभु दीन्हों । यह अवतार जबहि भुव लीन्हों ॥ दैत्य दहन सुरके सुखकारी । अब मारो प्रभु कंस प्रचारी ॥ यह सुनि हँसे सुरनके नाथा। जब नारद गाई यह गाथा ॥ श्रीमुख कह्यो जाइ समुझावहु । नृप आयसु

१ धत्तेश्यामलकंचुचूकयुगलंमुक्तावलीमंशुकं श्रोणाभंवरकंकणानिकरयोः पादद्वयेनूंपुरं । चंद्रास्यामदविह्वलासकरुणां भापां भृशं भापती सैपा रामगिरी दिनांतसमये रामेण गीता पुरा ॥ रामगिरी ।

करि मोहिं बोलावहु ॥ अंजलजोरि राज्य मुनि हरषे। कृपावचन तिनसों हरि वरषे ॥ तुरत चले नारद नृपवासा। इहै बुद्धि मन करत प्रकासा ॥ संकर्षण हृदय प्रगटाई। जो वाणी ऋषिगाइ सुनाई ॥ आदिपुरुप अज्ञात बिचारी। शेषरूप हरिके सुखकारी ॥ हरिअंतर्यामी जगताता। अनुज हेतु जग मानत नाता ॥ इहै वचन हलधर कहि भाष्यो। सुनि सुनि श्रवण हृदय हरि राख्यो॥तुम जन्मैं भुवभार उतारन। तुमहो अखिललोकके तारन ॥ तुम संसार सारके सारा। जल थल जहाँ तहाँ विस्तारा ॥ तव हँसि कह्यो भ्रातसों वानी। जो तुम कहत बात मैं जानी ॥ कंसनिकंदन नाम कहाऊं। केशगहौं पुहुमी घिसटाऊं॥ यहि अंतर मुनि गए नृपपासा। मनमारे मुख करे उदासा॥ हरषि कंस मुनि निकट बोलाए।आदर कर आसन बैठाए।कैसो मुख क्यों ऋषिमनमारे। कह चिंता जिय बढी तुम्हारे ॥ नारद कह्यो सुनो हो राउ। कहा बैठे कछु करहु उपाउ॥ त्रिभुवनमें तुम सरि को ऐसो। देख्यो नंद सुवन व्रज जैसो ॥ करत कहा रजधानी ऐसी। यह तुमको उपजी कछु जैसी ॥ दिन दिन भयो प्रबल वह भारी। हम सब हितकी कहैं तुम्हारी ॥ तब गर्वित नृप बोले बानी। कहा बात नारद तुम गानी ॥ कोटिदनुज मोसरि मो पासा।जिनको देखि तरणितनु त्रासा ॥ कोटि कोटि तिनके सँगयोधा। को जीवै तिनके तनु क्रोधा ॥ मल्लनके गुण कहा बखानो। जिनके देखत काल डरानो ॥ कोटि धनुर्द्धर संतत द्वारे। बचै कौन तिनके जु हँकारे ॥ एक कुवलिया त्रिभुवनंगामी। ऐसे और कितिकहैं नामी॥ ग्वालसुतनकी कहा चलावहु। यह वाणी कहि कहा सुनावहु ॥ प्रजालोग व्रजके सब मेरे। सेवा करत सदा रहैं नेरे ॥ ताते सकुचतहौं उन काजा। बालक सुनत होइ जिय लाजा ॥ भली करी यह बात सुनाई। सहज बुलाइ लेउँ दोउ भाई॥और सुनहु नारद मुनि मोसों। श्रवणन लागिं कहौं कछु गोसों। केतिक बात बलराम कन्हाई। मोदेखत अति काल डेराई ॥ आजु कालि अव उनाहिं बोलाऊं। कहि पठऊं व्रज सहित मँगाऊं॥ और प्रजा व्रज आनि बसाऊं। अपने जियकी खुटक मिटाऊं ॥ तिनपर क्रोध कहामैं पाऊं। रंगभूमि गजचरण रुँदाऊं ॥ मेरे सम सरिको वह नाहीं। यह सुनिकै नारद मुसकाहीं॥ सत्य वचन नृप कहत पुकारे। अब जाने उनि तौ तुम मारे ॥ यह कहि मुनि वैकुंठ सिधारे। त्रिभुवन में को बलहि तुम्हारे ॥ कंसपरचो मन इहै बिचारा। रामकृष्ण वध इहै खँवारा ॥ दनुज हृदय हरि इहै उपायो। नारद कही सुनत जिय आयो ॥ अब मारौं नहिं गहर लगाऊं। मथुरा जहां तहां बलछाऊं॥ धकधकात जिय बहुरि सँभारे। क्यों मारौं सो बुद्धि विचारै ॥ सूरज प्रभु अविगति अविनाशी। कंसकाल यह बुद्धि प्रकाशी॥५९॥राग कान्हरो॥अहो नृप द्वै अरि प्रगट भए।वसे नंद गृह गोकुल थानक दियो सुदिन नगए ॥ तुमहूं को दुख बहुत जनमको रथ मारग आ रोए। तादिनते शिशु सत देवकी तेरेही कर सोए॥जो परिराज काज सुख चाहै वेगि बोलाइ न लीजै। हारिजीति दोउनकी विधि यह जैसे होइ सोइ कीजै ॥ ऐसी कहि वैकुंठ सिधारे कष्ट निसाविकराय। सूर श्याम कृतकी वे इच्छा मुनि मन इहै उपाय॥६०॥ राग सोरठ ॥ नृपति मन इहै विचार परो।क्यों मारौं दोउ नंद ढोटोना ऐसी अरनि अरो॥ कवहुँक कहत आपु उठि धावों यहै विचार करो। सात दिवसमें वधी पूतना यह गुनि मनहिं डरो ॥ पुनि साहस जिय जिय करि गवों ताको काल सरो। सूर श्याम बलराम हृदयते नेक नहीं बिसरो ॥६१॥ ॥राग सारंग॥मथुराके निकट चरति हैं गाई। दुष्टकंस भय करत मनहि मन ज्यों ज्यों सुनै कृष्ण प्रभुताई ॥ शीश धुनै नृप रिसन मनै मनबहुत उपाइ करै। घर बैठेहि दशन अधरन धरि चंपै श्वास भरै ॥ जानो असुर बाढिवो गोकुल ज्यों जन दीप पतंग परै। समुझै वचन कहे जे देवी अरु पहिले आकास परै ॥ नारद गिरा सम्हारी पुनि पुनि शिर धुनि आपु सरै। कालरूप देवकी नंदन

प्रगट भयो वसुधाके माहीं। कासों कहौं सूर अंतरकी सुफलकसुतको वचन सुकही ॥६२॥ राग सोरठ ॥ महर ढोटौना शालिरहे। जन्महिते अपडाव करत हैं गुणि गुणि हृदय कहै ॥ दनुजसुता पहिले संहारी पयपीवत दिन सात। गयो प्रतिज्ञा करि कागासुर आइ गिरचो मुख छात ॥ तृणा शकट छिनमें संहारे केशी हतो प्रचारि। जे जे गए बहुरि नहिं देखे सबहिन डारे मारि ॥ ज्यों त्यों करि इन दुहुँन सँहारौं बात नहीं कछु और। सूर नृपति अति सोच परो जिय यहै करत मनदौर॥६३॥ ॥राग रामकली॥ नंदसुत सहज बुलाइ पठाऊं। श्याम राम अतिसुंदर कहियत देखन काज मँगाऊं॥ जैहै कौन प्रेमकरि ल्यावै भेद न जानैं कोइ। महर महरि सों हितकरि ल्यावै महाचतुर जो होइ॥ इहि अंतर अक्रूर बुलायो अति आतुर महाराज। सूर चलौ मनसोच बढायो कौनहै ऐसो काज६४ राग धनाश्री॥ अति आतुर नृप मोहिं बोलायो। कौन काज ऐसो अटक्यो है मन मन सोच बढ़ायो॥ आतुर जाइ पँवरि भयो ठाढो कहो पँवरिआ जाइ। सुनत बुलाइ महलई लीनो सुफलकसुत गयो धाइ॥ कछु. डर कछु जिय धीरज धारै गयो नृपतिके पास। सूर सोच मुख देखि डेरानो ऊरध लेत उसाँस ॥ ६५॥ राग मारू॥ सोच मुख देखि अक्रूर भरमें। माथकरनाइ करजोरि दोऊ रहे बोलि लीन्हों निकट वचन नरमे॥ आपुही कंस तहां दूसरो कोउ नहीं त्रास अक्रूर जिय कहा कैहै। नृपति जिय सोच ज़ान्यो हृदय आपने कहत कछु नहीं धौं प्राण लैहै॥ निकट बैठारि सब बात तेई कही गए जे भापि नारद संवारैं। सूर सुत नंदके हृदय शालत सदा मंत्र यह उनहिं अब बनै मारैं॥ ६६॥ सुनो अक्रूर यह बात सांची करौ आजु मोहिं भोरते चेत नाहीं। श्याम बलराम यह नाम सुनि ताम मोहिं काहूं पठावहुगे जाइ तिनहि पाहीं॥ प्रीति करि नंदसों सहज बातैं कहै तुरत लै आइ दुहुँ नृपति बोले। देखिवेकी साध बहुत सुनि गुण विपुल अतिहि सुंदर सुने दोउ अमोले॥ कमल जबते उरग पीठि ल्याए सुने वैहैं बकशीश अब उनहि देहें। सूर प्रभु श्याम बलरामकों डर नहीं वचन इनके सुनत हरपपैहैं॥ ६७॥ राग सोरठ ॥ यह वाणी कहि कंस सुनाइ। तब अक्रूर हिए भयो धीरज डरडारचो विसराइ॥ मन मन कहत कहा चित बैठी सुनि सुनि वैसी बानी। अपनो काल आपुही बोल्यो इनकी मीचु तुलानी॥ हरपि वचन अक्रूर कहे तव तुरत काज यह कीजै। सूर जाहि आयसु करि पाऊं भोर पठै तेहि दीजै॥ ६८॥ राग बिलावल॥ तब अक्रूर कहत नृप आगे धन्य धन्य नारद मुनि ज्ञानी। बडे शत्रु ब्रजमें दोउ हमको सुनहु देव नीकी चित आनी॥ महाराज तुम सरि को ऐसो जाते जगत यह चलत कहानी। अब नहिं बचै क्रोध नृप कीन्हों जैहै छनकि तवा ज्यों पानी॥ यह सुनि हर्ष भयो गर्वानो जबहि कही अक्रूर सयानी। कालि बुलाइ सूर दोउ मारौं बार बार यह भाषत बानी॥६९॥ इहै मंत्र अक्रूरसों नृप रैनि बिचारी। प्रात नंदसुत मारिहौं यह कह्यो प्रचारी॥ करि बिचार युग यामलौं मंदिरहि पधारे। कह्यो जाहु अक्रूरसों भए आलस भारे॥ तुरत जाइ पलका परचो पलकनि झपकानो। श्याम राम स्वपने खडे तहां देखि डरानो॥ अति कठोर दोउ कालसे भरम्यो अति झझक्यो। जागि परचो तहँ कोउ नहीं जियही जिय सुसक्यो॥ चौंकि परचो सँग नारिके रानी सब जागीं। उठीं सबै अकुलाइके तब बूझन लागीं॥ महाराज झझके कहा सपने कह शंके। सूर अतिहि व्याकुल भए घर घर उर दंके॥ ७०॥ ॥ कंस स्वप्न भ्रमः ॥ महाराज क्यों आजुही स्वप्ने झझकाने। पाँढे जबहीं आनिकै देखे बिलखाने॥ कहा सोच ऐसो परचो ऐसे भूमीको। काकी सुधि मनमें रही कहिय अपजीको॥ रानी सब व्याकुल भईं कछु भेद न पावैं। तब आपुन सहजहि कह्यो वह नहीं जनावैं॥ सावधान करि पौरिआ प्रति

हार जगायो। सूर त्रास बल श्यामके नहिं पलक लगायो॥७१॥नंदस्वप्नःभ्रमः॥राग बिलावल॥उत नंदहि स्वप्नो भयो हरि कहूं हिराने। बल मोहन कोउ लै गयो सुनिकै बिलखाने॥ ग्वाल बाल रोवत कहैं हरितौ कहुँ नाहीं। संगहि सँग खेलत रहे यह कहि पछिताहीं॥दूत एक सँग लै गयो बल राम कन्हाई। कहा ठगौरीसी करी मोहनी लगाई॥ वाहीके दोउ ह्वै गए हम देखत ठाढे। सूरज प्रभु वै निठुरह्वै अतिहीं गए गाढे॥७२॥राग सोरठ॥व्याकुल नंद सुनतहैं बानी॥धरणी मुरछिपरे अति व्याकुल विवश यशोदा रानी॥व्याकुल गोप ग्वाल सब व्याकुल व्याकुल ब्रजकी नारी॥व्याकुल सखा श्याम बलके जे व्याकुल अति जियभारी॥ धरणी परत उठत पुनि धावत इहि अंतर नँदजागे। धकधकात उर नयन स्रवत जल सुत अँग परसन लागे॥ सुसुकत सुनि यशुमति अतुराई कहा महर भ्रम पायो। सूर नंदघरनीके आगे यह भ्रम नहीं सुनायो॥७३॥ कंसकथावदत॥ राग कल्याण॥ एक याम नृपको निशि युगवत भई भारी। आपुनहूं जाग्यो संग जागीं सब नारी॥ कबहुँ उठत बैठत पुनि कबहूं सेज सोवै। कबहुँ अजिर ठाढेह्वै ऐसे निशि खोवै॥बारबार जोतिकसों घरी बूझि आवै। एक जाइ पहुँचे नहीं और एक पठावै॥जोतिक जिय त्रास परचो कहा प्रात करिहै।सूर क्रोध भऱ्यो नृपति काके शिर परिहै॥७४॥ व्याकुल टेरे निकटि बूझै घरी वाकी। एक एक छिन याम याम ऐसी गति ताकी॥ को जैहै व्रजको मन करै केहि पठाऊं। जासों कहि नंदसुवन आजुही मँगाऊं॥ अब नहिं राखौं उठाइ वैरी नहिं नान्हों। मारौं गजपै रुँदाइ मनहि यह अनुमान्हो॥ पठऊं तौ अक्रूरहिको ऐसो नहिं कोऊ। सूर जाइ गोकुलते ल्यावै ढिग दोऊ॥७५राग बिलावल॥अरुणोदय उठि प्रातही अक्रूर बोलाए। आपु कह्यो प्रतिहारसों इकसनि शतधाये॥ सोवत जाइ जगायकै चलिए नृप पासा। उहै मंत्र मन जानिकै उठि चले उदासा॥ नृपति द्वारहीं पै खरो देखत शिर नायो। कहि खवासको सैनदै शिरपाँव मँगायो॥ अपने कर करिकै दियो सुफलकसुत लीन्हों। लै आवहु सुत नंदके यह आयसु दीन्हों॥ मुख अक्रूर हर्षित भयो हृदय बिलखानो। असुरत्रास अति जिय परचो कह कहै सयानो॥ तुरतहि रथ पलनाइकै अक्रूरहि दीन्हों। आयसु शिरपर मानिकै आतुरह्वै लीन्हों॥ विलम करौ जिनि नेकहूं अबहीं ब्रजजाहु। सूर काजकरि आवहू जिनि रैनि वसाहु॥७६॥ राग बिलावल॥ कंस नृपति अक्रूर बोलायो। बैठि एकांत मंत्र दृढ कीन्हों राम कृष्ण दोउ बंधु मँगायो॥कहूँ मल्ल कहुँ गजदै राखे कहूं धनुष कहुँ वीर। नंदमहरको बालक मेरे कर्पत रहत शरीर॥ उनहि बुलाइ बीचही मारौं नगर न आवन पावैं। सूर सुनत अक्रूर कहत नृप मन मन मौज बढावैं॥७७॥ राग कल्याण॥ तुम बिन मेरे हितू न कोऊ। सुन अक्रूर पुरत नृप भाषित नंदमहर सुत ल्यावहुँ दोऊ॥सुनि रुचि वचन रोम हरपित गात प्रेमपुलकि मुख कछू न बोल्यो। यह आयसु पूरव सुकृत वश सो काहूपै जाहि न तौल्यो॥ मौन देखि परिहँसि नृप भीनो मनहुँ सिंह गो आय तुलानो। वहि क्रम बिनु द्वैसुत अहीर के रे कातर कत मन शंकानो॥ आयसु पाइ सुघ्र रथ कर गहि अनुपम तुरंग साजि धृत जोह्यो। सूर श्यामकी मिलनि सुरति करि मनुनिरधन धन पाइ बिमोह्यो॥७८॥ अक्रूर वचन कंससों राग बिलावल॥ सुनहु देव इक बात जनाऊं। आयसु भयो तुरत लै आवहु ताते फिरिहि सुनाऊं॥ बल मोहन बनजात प्रातही जो उनको नहिं पाऊं। रैहौं आजु नंद गृह वसिकै कालि प्रात लै आऊं॥ यह कहि चल्यो नृपतिहू मान्यो सुफलक सुत रथ हांक्यो। सूरदास प्रभु ध्यान हृदय धरि गोकुल तनको ताक्यो॥७९॥ अक्रूर गोकुल गमन॥ राग टोडी॥ सुफल्क सुत मन परचो विचार। कंस निर्वंश होइ हत्यार॥ डगर मांझ रथ कीन्हों ठाढो।सोच परचो

मन मन अति गाढो ॥ मंत्रकियो निशि मेरे साथ । मोहिं लेन पठयो व्रजनाथ ॥ गज मुष्टिक चाणूर निहारचो । व्याकुल नयन नीर दोउ ढारचो ॥ अति बालक बलराम कन्हाई। कहा करों नहिं कछू वसाई । कैसे आनि देउँमैं जाई। मो देखत मारैं दोउभाई॥मारै मोहिं बंदि लै बोलै।आगेको रथ नेक न ठेलै ॥ सूरदास प्रभु अंतर्यामी । सुफलकसुत मन पूरणकामी॥८०॥राग कल्याण ॥ सुफकसुत हृदय ध्यान कीन्हो अविनाशी । हरन करन समरथ वै सब घटके वासी ॥ धन्य धन्य कंसहि कहि मोहिं जिनि पठायो । मेरो करि काज मीच आपुको बोलायो॥यह गुणि रथ हांकि दियो नगर परचो पाछे । कछु सकुचत कछु हरपत चल्यो स्वांग काछे ॥बहुरि सोच परचो दरश दक्षिण मृगमाला । हरष्यो अक्रूर सूर मिलिहो गोपाला॥८१॥अक्रूर शकुन परीक्षा॥राग टोडी॥दक्षिण दरश देखि मृगमाला। अति आनंद भयो तेहि काला॥बहु दिनके मेटो जंजाला । यहि वन मिलिहौ मोहिं गोपाला॥श्याम जलद तनु अंग रसाला । ता दरशनते होउँ निहाला॥बहुदिनके मेटो जंजाला । मुख शशि नैन चकोर विहाला॥तनु त्रिभंग सुंदर नंदलाला । विविध सुमन हृदय शुभमाला॥सारसहूते नैन विशाला । निहचै भयो कंसको काला ॥ सूरज प्रभु त्रिभुवनप्रतिपाला ॥ ८२ ॥ राग आसावरी॥दहिने देख मृगन की मालहि । मनो इन शकुन अवहीं यहि बन इन भुजभरि मेंटोगो गोपालहि ॥ निरखि तनु त्रिभंग पुलक सकल अंग अंकुर धरनि जिमि पाँय पावस कालहि । परिहों पाँयन जाय भेंटिहैं अंकमलाइ मूलते जमी ज्यों वेली चढति तमालहि ॥ परस्परमानंद सींचिकै कामना कंद करिहैं प्रगट प्रीति प्रेम प्रवालहि॥वचन रचन हास सुमन सुख निवास करहि फलीहै फल अमोघ रसालहि।स्फुरित शुभ सुबाहु लोचन मन उछाहु फूलिकै सुकृत फल फली तेहि कालहि ॥ निगम कहत नीत शिव न सकत चेति सूर सुहृदय लगाइ लैहों ता दयालहि ॥ ८३ ॥ राग कान्हरो ॥ आजु वै चरण देखिहौं जाय । जे पद कमल प्रिया श्रीउरसे नेक न सके भुलाइ ॥ जे पद कमल सकल मुनि दुर्लभ मैं देखों सतिभाव । जेपद कमल पितामह ध्यावत गावत नारद जाव ॥ जेपद कमल सुरसरी परसे तिहूँ भुवन यश छाव । सूर श्याम पद कमल परसिहौं मन अति बढचो उराव ॥ ८४ ॥ आजु जाइ देखिहौं वै चरण । शीतल सुभग सकल सुखदाता दुसह दवन दुखहरण ॥ अंकुश कुलिश कमल ध्वज चिह्नित अरुण कंजके रंग । गउ चारत बनजाइ पाइहौं गोप सखनके संग ॥ जाको ध्यान धरत मुनि नारद शिव विरंचि अरु ईश । तेई चरण प्रगट करि परसों इन कर अपने शीश ॥ देखि स्वरूप रहि न सकिहौं रथते वैहौं धरधाइ । सूरदास प्रभु उभय भुजा धरि हँसि भेंटिहैं उठाइ॥८५॥राग नट॥जब शिर चरण धरिहौं जाइ । कृपा करि मोहिं टेकि लैहैं करन हृदय लगाइ ॥ कुशल अंग पुलकित वचन गदगद मनहि मन सुखपाइ । प्रेम घट उच्छलित ह्वैहैं नैन अंश बहाइ॥ कुशल बूझत कहि न सकिहौं बार बार सुनाइ । सूर प्रभु गुण ध्यान अटक्यो गयो पंथ भुलाइ॥८६॥राग बिलावल॥मथुराते गोकुल नाहिं पहुँचे सुफलकसुतको सांझ भई । हरि अनुराग देह सुधि बिसरी रथ वाहनकी सुरति गई ॥ कहां जात किन मोहिं पठायो कोहां मैं यहि सोच परचो । । दशहूं दिशा श्याम परि पूरण हृदय हरप आनंद भरचो ॥ हरि अंतर्यामी यह जानी भक्तवछल बानो जिनको । सूर मिले जो भाव भक्तके गहर नहीं कीन्हों तिनको॥८७॥राग कल्याण॥वृंदावन ग्वालन सँग गैयन हरि चारें । अपने जनहेत काज व्रजको पग धारें ॥ यमुनाकरि पार गाय श्याम देत हेरी । हलधर सँग सखा लए सुरभी गण घेरी ॥ धेनु दुहुन सखन कह्यो.आपु दुहन लागे । वृंदाबन गोकुल बिच यमुनाके आगे ॥ भक्त हेतु श्रीगोपाल यह सुख उपजायो । सूरज प्रभु को दरशन सुफलकसुत पायो ॥८८॥

॥राग कल्याण॥सुफलक सुत हरि दरशन पायो।रहि न सक्यो रथपर सुख व्याकुल भयो उहैं मन भायो॥ भूपर दौरि निकट हरि आयो चरणन चित्त लगायो । पुलक अंग लोचन जलधारा श्रीगृह शिर परसायो । कृपासिंधु करि कृपा मिले हँसि लियो भक्त उर लाइ । सूरदास यह सुखसो जानै कहौं कहा मैं गाइ ॥ ८९ ॥ राग गुंडमलार ॥ हरषि अक्रूर हरि हृदय लगायो । मिले तेहि भाव जो भाव चितवनि चित्त भक्त वत्सल नाम तो कहायो ॥ कुशल बूझत प्रसन्न वचन अमृत रस श्रवण सुनि पुलक अंग अंग कीन्हों । चितै आनन चारु बुद्धि उर विस्तार दनुज अब दलौं यह ज्वाब दीन्हों ॥ भेदही भेद सब दई वाणी कही तुरत बोले हेतु इहै वाके । सूर संग श्याम बलराम अक्रूर सह निपट अति प्रेमके पंथ थाके ॥ ९० ॥ राग विलावल॥ श्याम इहै कहिकै उठे नृप हमैं बोलाये । अतिहि कृपा हमपर करी जो कालि मँगाए ॥ संग सखा यह सुनतही चकृत मनकीन्हों । कहा कहत हरि सुनतहीं लोचन भरि लीन्हें॥श्याम सखन मुखं हेरिकै तब करी सयानी । कालि चलौ नृप देखिए शंका जिय आनी ॥ हर्ष भए हरि यह कहे मन मन दुखभारी । सूर संग अक्रूरके हरि ब्रज पग धारी ॥ ९१ ॥ राग रामकली ॥ अति कोमल बलराम कन्हाई ॥ दुहुँनि गोद अक्रूर लिए हँसि सुमनहुते हरुवाई ॥ ग्वाल संग रथ लीन्हों आए पहुँचे ब्रजकी खोरी। देखत गोकुल लोग जहाँतहँ नंद उठे सुनि शोरी ॥ निशि सपनेको तृषित भए अति सुन्यो कंसको दूत । सूर नारि नर देखनधाए घर घर शोर अकूत ॥ ९२ ॥ राग गुंडमलार ॥ कंस नृप अक्रूर ब्रज पठाए । गएं आगे लेन नंद उपनंद मिलि श्याम बलराम उन हृदय लाए ॥ उतरि सदन मिल्यो देखि हरष्यो हियो सोच मन यह भयो कहाँ आयो । राजके काजको नाम अक्रूर यह किधौं कर लेनकौ नृप पठायो । कुशल तेहि बूझि लै गए ब्रज निजधाम श्याम बलराम मिलि गए वाको ॥ चरण पखराइकै सुभग आसन दियो विविध भोजन तुरत दियो ताको॥कियो अक्रूर भोजन दुहुँन संग लै नर नारि ब्रज लोग सबै देषै । मनो आए संग देखि ऐसे रंग मनहि मन परस्पर करत मेषै ॥ सारि जेवनार अचवनकै भए शुद्ध दियो तंमोर नँद हर्ष आगे । सेज बैठारि अक्रूरसों जोरि कर कृपा करी तब कहन लागे ॥ श्याम बलरामको कंस बोले हेतसों नंदलै सुतन हम पास आवैं । सूर प्रभु दरशकी साध अतिही करत आ-जुही कह्यो जिनि गहरु लावैं॥९३॥राग कान्हरो॥सुन्यो ब्रज लोग कहत यह बात । चकृत भए नारि नर ठाढे पांच न आवै सात ॥ चकित नंद यशुमति भई चकृत मनहीं मन अकुलात । दैंदै सैन श्याम बलरामहि सबै बुलावत जात ॥ पारब्रह्म अविगति अविनाशी माया रहित अतीत । मनों नहीं पहिचानि कहूंकी करत सबै मनभीत । बोलत नहीं नेक चितवत नाहिं सुफलकसुतसों पागे। सूर हमहिं नृपहित करि बोले इहै कहत ता आगे ॥ ९४ ॥ राग विहागरो ॥ व्याकुलभए ब्रजके लोग । श्याम मन नाहिं नेक आनत ब्रह्म पूरण योग ॥ कौन माता पिता कोहै कौन पति को नारि । हँसत दोउ अक्रूरके सँग नवल नेह बिसारि ॥ कोउ कहति यह कहां आयो क्रूर याको नाम । सूर प्रभु लै प्रात जैहै और संग बलराम॥९५॥गोपिका विरह अवस्था वर्णन॥चलन चलन श्याम कहत कोउ लेन आयो। नंदभवन भनक सुनी कंस कहि पठायो ॥ ब्रजकी नारि गृह बिसारि व्याकुल उठिधाईं । समाचार बूझनको आतुर ह्वै आईं ॥ प्रीति जानि हेतु मानि बिलखि वदन ढाढी । मानहु वै अति विचित्र चित्र लिखित काढी ॥ ऐसी गति ठौर ठौर कहत न बनि आवै । सूर श्याम बिछुरे दुख विरह काहि भावै ॥ ९६ ॥ राग कान्हरो ॥ चलत जानि चितवत ब्रज युवती मानहु लिखी चितेरे । जहां सु तहां यकटक मग जोवत फिरत न लोचन कोरे ॥ बिसरि गई गति भाँति देहकी सुनत न श्रवणन टेरे ॥

मिलि जु गये मनोपय पानी है निबरत नहीं निबेरे ॥ लागे संग मतंग मत्तज्यों बिरत न कैसेहु घेरे । सूर प्रेम अंकुर आशा जिय दै नहिं इत उत हेरे ॥ ९७ ॥ राग सारंग ॥ सब मुरझानी री चलिबेकी सुनत भनक । गोपी ग्वाल नैन जल ढारत गोकुल ह्वैरह्यो सूँदचनक ॥ यह अक्रूर कहांते आयो दाहन लाग्यो देह दनक । सूरदास स्वामीके बिछुरत घट नाहिं रैहैं प्राण तनक ॥ ९८ ॥ राग रामकली ॥ अनलते विरह अग्नि अति ताती । माधो चलन कहत मधुवनको सुने तपै अतिछाती ॥ न्याइहि नागरि नारि विरहवश जरत दिया ज्यों बाती । जे जरि मरे प्रगट पावक परि ते त्रिय अधिक सुहाती ॥ ढारति नीर नयन भरि भरि सब व्याकुलता मद माती । सूर व्यथा सोई पै जानै श्याम सुभग रँगराती ॥ ९९॥ राग आसावरी ॥ श्याम गए सखि प्राण रहैंगे । अरसपरस ज्यों बातैं कहियत तैसेहि बहुरि कहैंगे ॥ इंदुवदन खग नैन हमारे जानति और चहैंगे।वासर निशि कहुँ होत न न्यारे बिछुरन हृदय सहैंगे॥एक कहो तुम आगे वाणी श्याम न जाहिं रहैंगे।सूरदास प्रभु यशुमति को तजि मथुरा कहा लहैंगे ॥ २९००॥ राग मलार॥ हरि मोसों गोनकी कथा कही । मन गह्वर मोहिं उतर न आयो हौं सुनि सोचरही ॥ सुनि सखि सत्यभावकी बातैं विरह वेलि उलही ॥ करवत चिह्न कहै हरि हमकों ते अब होत सही ॥ आजु सखी सपने में देख्यो सागर पालि ढही । सूरदास प्रभु तुम्हरो गवन सुनि जलज्यों जाति बही॥१॥ राग मारू ॥ बहुत दुख पैयतुहै यह बात । तुम जु सुनतहौ माधो मधुबन सुफलकसुत सँग जात॥मनसिज व्यथा दहति दावानल उपजीहै या गात । सूधौ कहौ तब कैसे जीहै निज चालिहैं उठि प्रात ॥ जो पै यह कियो चाहतहै मीचु विरह शरघात।सूर श्याम तौ तब कत राखी गिरिकर लै दिनसात॥२॥अक्रूर वचन॥राग रामकली॥देख अक्रूर नरनारि बिलख्यो । धनुभंजन यज्ञहेत बोले इनहि और डर नहीं सबन कहि संतोख्यो ॥ महरि व्याकुल दौरि पाँइ गहि लैपरी नंद उपनंद संग जाहु लैकै । राजको अंश लिखि लेउ दूनो देउँ मैं कहा करौं सुत दुहुँनि देकै॥कहति ब्रजनारि नैनन नीर ढारिकै इननको काज मथुरा कहां है । सूर नृप क्रूर अक्रूर क्रूरै भयो धनुप देखन कहत कपटी महाहै ॥ ३ ॥ यशोदा विनय अक्रूर प्रति राग सारंग ॥ मेरे कमलनयन प्राणते प्यारे । इनको कौन मधुपुरी बैठत राम कृष्ण दोऊ जन वारे ॥ यशुदा कहै सुनहु सुफलकसुत मैं पयपान जतन करि पारे । ए कहा जानहिं सभा राजकी ए गुरु जन विप्रौ न जुहारे ॥ मथुरा असुर समूह बसतहैं करकृपाण योधा हथियारे । सूरदास स्वामी ए लरिका इन कब देखे मल्ल अखारे ४ ब्रजवासिनके सरवस श्यामारे अक्रूर क्रूर बडवारे जीको जी मोहन बलराम ॥ अपनो लाग लेहु लेखो करि जे कछु राज अंशका दाम । और महरलै संग सिधारे नगर कहा लरिकनको काम ॥ संतत साध परम उपकारी सुनियत बडो तुम्हारो नाम ॥ ५ ॥ यशोदा वचन सखी प्रति ॥ राग मलार॥ सखी री हौं गोपालहि लागी । कैसे जियें वदन बिन देखे अनुदिन खिन अनुरागी ॥ गोकुल कान्ह कमल दल लोचन हरि सबहिनके प्राण । कौनन्याव अक्रूर कहतहै कहै मथुरा लै जान॥६॥ तुम अक्रूर बडेके ढोटा अति कुलीन मतिधीर । बैठत सभा बडे राजनके जानतहो परपीर ॥ लीजै लागु यहांते अपनो जो कछु राजको अंश । नगर बोलि ग्वालनके लरिका कहा करैगो कंस ॥ मेरे तो रामै धन माई माधोई सब अंग । बहुरि सूर हौं कापै मांगों पैठि पराए संग ॥७॥राग रामकली॥मेरो माई निधनीको धन माधो । बारंबार निरखि सुख मानत तजत नहीं पल आधो ॥ छिन छिन परसत अंग मिलावत प्रेम प्रगटहै लाधो । निशि दिन सुचंद्र चकोरकी छबि जनु मिटै न दरशकी साधौ ॥ करिहै कहा अक्रूर हमारो दैहै प्राण अगाधो । सूर श्याम

घनहौं नहिं पठऊं अबहिं कंस किन बांधौ ॥८॥ राग सारंग ॥ मनहु प्रीति अति भई पात री । अनुज सहित चले राम हमारे कमलनैन देखौं मिलि न जात री ॥ अरस परस कछु समुझत नाहीं या ब्रजपोच भलौकी बात री । कंचन काँच कपूर कपट खरी हीरा सम कैसे पोति बिकात री ॥ वे दोउ हंस मानसरवरके छील रे क्षुद्र मलीन कैसे न्हात री । सूर श्याम मुक्ताफल भोगी कोरति करत ज्वारिकन खात री॥९॥ राग सोरठ ॥ नहिं कोई श्यामहि राखै जाइ । सुफलकसुत वैरी भयो मोको कहति यशोदा माई ॥ मदनगुपाल बिना घर आँगन गोकुल काहि सुहाइ । गोपी रही ठगीसी ठाढी कहा ठगो री लाइ ॥ सुंदर श्याम राम भरि लोचन बिन देखे दोउ भाइ । सूर तिनहि लै चले मधुपुरी हृदय शूल बढाइ ॥१०॥राग सोरठ ॥ यशोदा बारबार यों भाषै । है ब्रजमें हितू हमारे चलत गोपालहि राखै ॥ कहा काज मेरे छगन मगनको नृप मधुपुरी बुलाये । सुफलकसुत मेरे प्राण हतनको कालरूप ह्वै आयो ॥ वरु ए गोधन हरौ कंस सब मोहिं बंदि लै मेलो । इतनेही सुख कमलनैन मेरी अँखियन आगे खेलो ॥ वासर वदन विलोकत जीवों निशि निज अंकम लाऊं ॥ तेहि बिछुरत जो जीवौं कर्मवश तौ हँसि काहि बोलाऊं ॥ कमलनैन गुण टेरत टेरतही अधर वदन कुम्हिलानी।सूर कहां लगि प्रगट जनाऊं दुखित नंदजूकी रानी।११यशोदावचन श्रीकृष्णप्रति सोरठ॥ गोपालराइ केहि अवलंबौ प्राण । निठुर वचन कठोर कुलिशसे कहत मधुपुरी जान ॥ क्रूर नाम गति क्रूर क्रूर मति काहेको गोकुल आयो । कुटिल कंस नृप वैरजानिकै हरिको लेन पठायो ॥ जिहि मुख तात कहत ब्रजपतिसों मोहिं कहतहै माइ । तिहि मुख चलन सुनत जीवतिहौं विधिसों कहा बसाइ ॥ को कर कमल मथानी धरिहै को माखन अरि खैहै । वर्षत मेघ बहुरि ब्रजऊपर को गिरिवर कर लै है ॥ हों बलि बलि इन चरणकमलकी इहँई रहौ कन्हाई । सूरदास अवलोकि यशोदा धरणि परी मुरझाई॥१२॥मोहन इतनो मोहिं चित धरिये । जननी दुखित जानिकै कबहूँ मथुरागमन न करिये ॥ यह अक्रूर क्रूर कृत रचिकै तुमहिं लेन है आयो । तिरछे भए कर्म कृत पहिले विधि यह ठाट बनायो॥बारवार जननी कहि मोसों माखन माँगत जौन । सूर तिनहिं लेबेको आए करिहौं सूनो भौन॥१३॥राग सूही॥सुफलक सुतके संगते कहुँ हरि होत न न्यारे ॥ वार वार जननी कहै मोहिं न तज्यो दुलारे ॥ कहा ठगो री यहि करी मेरे बालक मोह्यो । हाहा करि करि मरतिहौं मोतन नहिं जोह्यो ॥ नंद कह्यो परबोधिकै सँग मैं लै जैहौं । धनुषयज्ञ देखराइकै तुरतहि लै ऐहौं ॥ घर घर गोपनसों कह्यो कर भार जुरावहु । सूर नृपतिके द्वार को उठि प्रात चलावहु॥१४॥नंदवचनयशोदाप्रति॥राग मलार॥भरोसो कान्हकोहै मोहिं।सुन यशोदा कंस भयते तू जनि व्याकुल होहि॥पहिले पूतना कपट करि आई स्तननि विष पोहि। वैसी ज्यों प्रबल दुर्दिनके बाल कमारि देखावत तोहि॥अघ बक धेनु तृणावर्त केशी को बल देख्यो जोहि।सातदिवस गोवर्धन राख्यो इंद्र गयो द्रुपछोहि ॥ सुनि सुनि कथा नंदनंदनकी मन आयो अवरोहि । सूरदास प्रभु जो कहिए कछु सो आवै सब सोहि॥१५॥राग विहागरो॥यशुमति अतिही भई वेहाल। सुफलकसुत यह तुमहि बूझिए हरतहौ मेरो बाल ॥ ए दोउ भैया ब्रजकी जीवन कहति रोहिणी रोई । धरणी गिरति दुरति अति व्याकुल कहि राखत नहिं कोई ॥ निठुर भए जबते यह आयो घरहू आवत नाहिं । सूर कहा नृप पास तुम्हारो हम तुम बिनु मरिजाहिं॥१६॥राग सोरठा॥कन्हैया मेरी छोह बिसारी । क्यों बलराम कहत तू नाहीं मैं तुम्हरी महतारी ॥ तब हलधर जननी परबोधत मिथ्या यह संसारी । ज्यों सावनकी वेलि प्रफुलिकै फूलतिहै दिनचारी ॥ हम बालक तुमको कहा सिखवैं कहूं तुमहि ते जात।

सूर हृदय धीरज अवधारो काहेको बिलखात॥१७॥राग सोरठ॥यह सुनि गिरी धरणि झुकि माता।कहा अक्रूर ठगो री लाई लिए जात दोउ भ्राता ॥ बिरध समय की हरत लकुटिया पाप पुण्य डर नाहीं । कछू नफा तुमको है यामें सो शोधोमन माहीं ॥ नाम सुनत अक्रूर तुम्हारो क्रूर भए हौ आइ ॥ सूर नंद घरनी अति व्याकुल ऐसेहि रैनि बिहाइ ॥१८॥गोपिकावचन परस्पर रामकली॥सुनेहैं श्याम मधु पुरी जात । सकुचति कहि न सकति काहू सों गुप्त हृदयकी बात ॥ शंकित वचन अनागत कोऊ कहि जु गई अधरात । नींद न परै घटै नाहिं रजनी कब उठि देखौं प्रात ॥ नँदनंदन तो ऐसे लागे ज्यों जल पुरइन पात । सूर श्याम सँगते बिछुरत हैं कब ऐ हैं कुशलात॥१९॥राग सारंग॥ सुने नंदलाल मधुपुरी जात । सकुचति कहि न सकति काहू सों गुप्त हृदय की बात ॥ सकृत वचन अनागत सखी री कोऊ कहि जु गयो अधरात । रजनी घटै न सूर प्रकाशै कब उठि देखौं प्रात॥उर धकधकी तबहिंते लागी अगम जनायो सीरे गात।सूरदास स्वामी-के चलिबे ज्यों यंत्री बिनु यंत्र सकात२०॥प्रभात कथा वदत ॥ सखा वचन ॥ राग भैरव॥भोर भयो ब्रजलोग-नको।ग्वाल सखा सखि व्याकुल सुनिकै श्याम चलतहैं मधुवनको॥सुफलकसुत स्यंदन पलनावत देखैं तहां बलमोहनको। यह सुनि घर घरते उठि धाईं नंदसुवन मुख जोवनको॥रोरि परी गोकुलमें जहँ तहँ गाइ फिरत पय दोहनको॥सूर बरबस कर भार सजावत महरचलत हरि गोहनको२१राग रामकली चलनको कहियतहै री आजु। अबहीं गई श्रवण सुनि आईं करत गमनको साजु॥कोउ एक कंस कपट कर पठयो कछु सँदेश दै हाथ। सोलै चल्यो हमारी जीवननिधिको अपने साथ॥अब यहि शूल न जाति समुझि सहि रही हिए करि लाज। धीरज अवधि आशदै जननिहि जात चले ब्रजराज॥करिये बिनती कमलनयन सों सूर समो पहिचान । कौने कर्म भयो दुखदारुण रहत न मेरो कान२२चलत हरि धृग जु रहत ए प्रान । कहां वह सुख अवसहौं दुसह दुख उर करि कुलिश समान॥कहां वह कंठ श्याम सुंदर भुज करति अधर रस पान । अचवत नयन चकोर सुधा बिधु देखहु मुख छबि आन॥जाको जग उपहास कियो तब छाँड्यो सब अभिमान । सूर सु निधि हमतेहैं बिछुरत कठिनहै करमनिदान ॥२३॥राग कल्याण॥हौं सावँरे के संग जैहौं॥होनी होइ सु होइ उभै लै हठ यश अपयश कहूं नडरैहौं॥कहा रिसाइ करैगो कोऊ जो रोकि है प्राण ताहि दैहौं । देहौं छाँडि राखिहौं यह व्रत हरि हितु बीजु बहुरिको बैहौं॥करिहौं सूर अजर अवनी तन मिलि अकास पिय भौन समैहौं । वायबीज वापी जलक्रीडा तेज मुकुर मुख सब सुख लेहौं॥२४॥यहि अंतर एक सखी आइ हरिके गवनको संदेश वदति ॥ राग कल्याण॥श्याम चल-न चहत कह्यो सखी एक आई।बलमोहन रथ बैठे सुफलकसुत चढन चहत यह सुनि चकित भई बिरहदौं लगाई।धुकि धुकि सब धरणि परीं ज्वाला झरलत।गिरीं मनो तुरत जलद बरपि सुरति नीर परसी । धाईं सब नंद द्वार बैठे रथ दोउ कुमार यशुमति लोटति भुवपर निठुर रूप दरसी॥कौन पिता कौनमाता आपु ब्रह्म जगधाता राख्यो नहीं कछू नाता नेक माहीं । आतुर अक्रूर चढे रसना हरि नाम रटे सूरज प्रभु कोमल तनु देखि चैन नाहीं ॥२५॥गोपीवचन मोहनप्रति ॥ राग सारंग ॥ बिनती एक सुनौ श्रीश्याम । चलन न देत चलो चाहत मन चलन कहौ सो सुनिए श्याम । तुम सर्वज्ञ सकल घट व्यापक जीवन पद सबके विश्राम । संतत रहत कहत ढीठोंदे करते सब सोवत सुखधाम ॥ बाहर सरल प्रीति गोपिनको लिए रहत लै लै गुणग्राम । सूरदास प्रभु सकल सुखदाता तिनते न्यारे न ग्राम॥२६॥राग सारंग॥बिनु परवहि उपराग आजु हरि तुमहै चलन कह्यो । को जानै उहि राहु रमापति कतहै शोधलह्यो॥वैतकिंचुनित नीच नैनन मिलि अंजन रूप रह्यो । बिरह संधि बलपाइ

मैनअति है तिय वदन गह्यो ॥ दुसह दशन मनो धरत श्रमित अति परसे परकत न सह्यो । देखो देव अमृत अंतरते ऊपर जात बह्यो ॥ अब यह शशि ऐसो लागत ज्यों बिन माखनहि मह्यो । सूर सकल गुणपति दरशन बिनु मुखछबि अधिक दह्यो ॥ २७ ॥ राग धनाश्री ॥ मिलि किन जाहु बटाऊ नाते । नंद यशोदाके तुम बालक विनती करतिहौं ताते ॥ तुम्हरी प्रीति हमारी सेवा गनियत नाहिन काते । रूप देखि तुम कहा भुलाने मीत भए वनयाते ॥ तुम बिछुरत घनश्याम मनोहर हम अबला सरघाते । कहा करौं जु सनेह न छूटे रूप ज्योति गई ताते ॥ जब उठि दान माँगते हँसिकै संग गात लपटाते । सूरदास प्रभु कौन प्रबलरिपु बीच परचो धौं जाते ॥ २८ ॥ हरिकी प्रीति उरमाहिं करकै । आय क्रूर लैचले श्यामको हितनाहीं कोउ हरिकै ॥ कंचनको रथ आगे कीन्हों हरिहि चढाए वरकै । सूरदास प्रभु सुखके दाता गोकुल चले उजरकै ॥ २९ ॥ राग सारंग ॥ सब व्रजकी शोभा श्याम । हरिके चलत भई हम ऐसी मनहु कुसुम निरमायल दाम ॥ देखियतहौ तुम क्रूर विषमके-से सुनियतहौ अक्रूरहि नाम । विचरतिहौ न आन गृह गृहको ते शिशु लायक नृपको कह काम ॥ ३० ॥ यशोदा विलाप राग विलावल ॥ गोपालहि राखहु मधुबन जात । लाजगए कछु काज न सरिहै बिछुरत नँदके तात ॥ रथ आरूढ होत बलि गई होइ आयो परभात ॥ सूरदास प्रभु बोलि न आयो प्रेमपुलकि सब गात ॥ ३१ ॥ मोहन नेक वदन तन हेरो ॥ राखो मोहिं नात जननीको मदन गुपाल लाल मुख फेरो । पाछे चढो विमान मनोहर बहुरो यदुपति होत अँधेरो । बिछुरत भेंट देहु ठाढे ह्वै निरखो घोष जन्मको खेरो ॥ माधो सखा श्याम इन कहि कहि अपने गाइ ग्वाल सब घेरो । गए न प्राण सूर ता औसर नंद जतन करि रहे घनेरो ३२ अथ श्रीकृष्णमथुरागमनहेतु अक्रूर साथ ॥ राग सोरठ ॥ जबहीं रथ अक्रूर चढे। तब रसना हरि नाम भाषिकै लोचन नीर बढे ॥ महरि पुत्र कहि शोर लगायो तरु ज्यों धरनि लुटाइ । देखति नारि चित्रसी ठाढी चितए कुँवर कन्हाइ ॥ इतनेहिमें सुख दियो सबनको मिलि हैं अवधि बताइ । तनक हँसे मनदै युवतिनको निठुर ठगोरी लाइ । बोलत नहीं रहीं सब ठाढी श्याम ठगी व्रजनारी । सूर तुरत मधुवन पगधारे धरणीके हितकारी ॥ ३३ ॥ राग विहागरो ॥ चलत हरि फिरि चितये व्रज पास । इतनेहि धीरज दियो सबनको अवधि गए दै आश । नंदहि कह्यो तुरत तुम आवहु ग्वाल सखा लै साथ । माखन मधु मिष्टान्न महर लै दियो अक्रूरके हाथ ॥ आतुर रथ हाँक्यो मधुवनको व्रजजन भए अनाथ । सूरदास प्रभु कंस निकंदन देवन करनि सनाथ ॥ ३४ ॥ राग नटी ॥ रही जहां सो तहां सब ठाढी । हरिके चलत देखिअत ऐसी मनहुँ चित्र लिखि काढी ॥ सूखेवदन स्रवत नैननते जल धारा उरबाढी । कंधनि बाँहधरे चितवति द्रुम मनहु वेलि दवडाढी ॥ नीरस करि छाँडी सुफलक सुत जैसे दूध बिन साढी । सूरदास अक्रूर कृपाते सही विपति तनु गाढी ॥ ३५ ॥ राग सारंग ॥ चलतहु फेरि न चितए लाल । रथ बैठे दूरते देखे अंबुजनैन विशाल ॥ मीडत हाथ सकल गोकुल जन विरह विकल बेहाल । लोचन पूरि रहीं जल महियाँ दृष्टि परी जो काल ॥ सूरदास प्रभु फिरिकै चितयो अंबुज वैन रसाल ॥ ३६ ॥ राग विलावल ॥ बिछुरे श्रीव्रजराज आजु तौ नैननते परतीति गई। उठि न गई हरिसंग तबहि ते ह्वै न गई सखी श्याममई ॥ रूपरसिक लालची कहावत सो करनी कछु वै न भई । साँचे क्रूर कुटिल ए लोचन व्यथा मीन छबि छीनि लई ॥ अब काहे जल मोचत सोचत समौगए ते शूलनए । सूरदास याहीते जडभये इन पलकनहीं दगादए ॥ ३७ ॥ सखी वचन परस्पर ॥ राग धनाश्री ॥ केतिक दूरि गयो रथमाई । नँदनंदनके चलत सखीहै तिनको मिलन न पाई ॥ एक दिवसहों द्वार नंदके नहीं रहति बिनु आई । आजु विधाता मति मेरी गई भौनकाज विरमाई ॥

जब हरि ऐसो ख्याल करत है काहु न बात चलाई । ब्रजही वसतविमुख भई हरिसों शूल न उरते जाई॥सूरदास प्रभु विनु ब्रज ऐसो एको पल न सोहाई ३८॥राग मलार॥सखी री वह देखौ रथजात।कमल-नैन काँधे पर न्यारो पीत बसन फहरात ॥ लई जाइ जब ओट अटनकी चीरन रहत कृपगात । छत्र पत्र ध्वज कनकदलमानो ऊपर पवन विहात ॥ मधु छुडाइ सुफलकसुतलैगए ज्यों माछी भयहीन। सूरदास प्रभु विनु देखियत है सकल बिरह आधीन ॥३९॥ राग सारंग ॥पाछेही चितवत मेरे लोचन आगे परत न पाँइ । मनलै चली माधुरी मूरति कहा करों ब्रजजाइ ॥ पवन नभई पताका अंबर भई न रथके अंग । धूरि न भई चरण लपटाती जाती वहँलौं संग ॥ ठाढी कहा करौ मेरी सजनी जिहि बिधि मिलहिं गोपाल । सूरदास प्रभु पठे मधुपुरी मुरझिपरी ब्रजबाल ॥ ४० ॥ राग नट ॥ तब न विचारी री यह बात । चलत न फेंट गही मोहनकी अब ठाढी पछितात॥निरखि निरखि सुख रही मौनह्वै थकित भई पलपात । जब रथ भयो अदृष्ट अगोचर लोचन अति अकुलात । सबै अजान भई वहि औसर धिगहि यशोमति मात । सूरदास स्वामीके बिछुरे कौडी भरि न बिकात॥४१॥राग सारंग॥अब वै बातें ईहाँ रही।मोहन मुख मुसकाइ चलत कछु काहू नहीं कही॥ सखी सुलाज वश समुझि परस्पर सन्मुख सबै सही ॥ अब वै शालतिहैं उरमहियां कैसेहु कढति नहीं ॥ त्यों ज्यों सलिल करनको सजनी काहेको फिरति वही । हरि चुंबक जहां मिलहि सूर प्रभु मो लैजाउँ तही॥४२॥राग नट॥मेरी वज्रकी छाती विदरि करि नहिं जाति । हरिहि चलत चित वत मग ठाढी पछिताति ॥ विद्यमान बिरह शूल उर में जु समाति । आवनकी आश लागि अब धिही पत्याति ॥ प्रेमकथा प्रगट भई शरद रासराति । प्राणनाथ बिछुरे सखी जीवत न लजाति ॥ एकै पै सुरति रही वदन कमल कांति । ज्यों ठग निधिहि हरत की रंचक गुरदै कहु भाँति । इमि फिरि मुसकानि सूर मनसागई माति।चितवनि मन मादक भई जागत अकुलाति॥४३॥राग गौरी ॥आजु रैनि नहिं नींद परी । जागत गनत गगनके तारे रसनारटत गोविंद हरी ॥ वह चितवन वह रथकी बैठन जब अक्रूरकी बाँह गही।चितवत रही ठगी सी ठाढी कह न सकति कछु काम दही॥इतने मान व्याकुल भई सजनी आरज पंथ हुते बिडरी । सूरदास प्रभु जहाँ सिधारे कितिक दूरि मथुरा नगरी ॥ ४४ ॥ राग सारंग ॥ हरि बिछुरत फाट्यो न हियो । भयो कठोर वज्रते भारी रहिके पापी कहा कियो ॥ घोरि हलाहल सुन री सजनी औसर तेहि न पियो । मन सुधि गई सँभारति नाहिं-न पूरो दाँव अक्रूर दियो ॥ कछु न सुहाइ गई सुधि तबते भवन काज को नेम लियो । निशि दिन रटत सूरके प्रभु विनु मरिवो तऊ न जात जियो॥४५॥राग अडानो॥सुंदर वदन री सुखसदन श्याम को निरखि नैन मन थाक्यो । वारक इन बीथिनह्वै निकसे में दूरि झरोखनि झांक्यो ॥ उन कछु नेक चतुरई कीनी गेंद उछारि गगन मिस ताक्यो । वारों लाज भई मोको वैरनि मैं गँवारि मुख ढाक्यो ॥ कछु करिगए तनक चितवनिमें याते रहत प्रेम मद छाक्यो । सूरदास प्रभु सर्वसु लै गए हँसत हँसत रथ हाँक्यो ॥ ४६ ॥राग सारंग॥अरी मोहिं भवन भयानक लागे माई श्याम विना।देखहिं जाइ काहि लोचन भरि नंद महरके अँगना ॥ लै जु गए अक्रूर ताहिको ब्रजके प्राणधना।कौन सहाय करैं घर अपने मेटै विधिन चना ॥ काहि उठाइ गोद करि लीजै करि करि मन मगना । सूरदास मोहन दरशन विनु सुख संपति सपना ॥ ४७ ॥ राग मलार ॥ सब कोउ कहत गोपाल दोहाई।गोरस बेचन गई बबाकी सो हों मथुराते आई॥जबते कह्यो कंससों मनमोहन जीवत मृतक करि लेखो । जागत सोवत आश देवनकी कृष्ण कला सब देखो ॥ करत ओघ प्रजा लोगै सब नृपतिके शंक न मानी ।

ठकुराई तकियो गिरिधरकी सूरदास जनजानी ॥४८॥ यशोदा विलाप ॥ राग धनाश्री॥है कोइ ऐसी भांति देखावै।किंकिणि शब्द चलत ध्वनि रुनु झुनु ठुमकर२गृह आवै॥कछुक विलाप वदनकी शोभा अरुण कोटि गति पावै। कंचन मुकुट कंठ मुक्तावलि मोरपंखछबि छावै। धूसर धूरि अंग सँगलीने ग्वाल बाल सँगलावै।सूरदास प्रभु कहति यशोदा भाग्य बडेते पावै४९॥राग सोरठ॥मनौंहो ऐसेही मरिजैहौं। इहि आँगन गोपाल लालको कबहुँक कनियां लैहौं॥कब वह मुखबहुरौं देखौंगी कब वैसो सचुपैहौं। कब मोपै माखन माँगैंगे कब रोटी धरि देहौं॥ मिलन आश तनु प्राण रहतहैं दिन दश मारग चैहौं।जो न सूर कान्ह आइ है तौ जाइ यमुन धँसि लैहौं॥५०॥अध्याय ॥ ३९ ॥ तथा ॥ ४० ॥ अक्रूर दर्शन प्राप्त हेतु तथा श्रीकृष्ण स्तुतिवर्णन ॥ राग गुंडमलार ॥ मनही मन अक्रूर सोच भारी। जननी दुःखित करि इनहि मैं लै चल्यो भई व्याकुल सबै घोषनारी॥अतिहि ए बालहैं भोजन नवनीतिके जानि तिन्हें लीन्हें जात दनुज पासा। कुवलियामल्ल मुष्टिक चाणूरसे कियो मैं कर्म यह अति उदासा॥ फेरि ले जाउँ व्रज श्याम बलरामको कंसलै मोहि तब जीवमारै। सूर पूरण ब्रह्म निगम नाहीं गम्य तिनहि अक्रूर मन यह विचारै॥५१॥इहै सोच अक्रूर परचो।लिए जात इनको मैं मथुरा कंसहि महाडरचो॥ धृग मोको धृग मेरी करनी तबहीं क्यों न मरचो॥ मैं देखों इनको अब इतिहै अति व्याकुल हहरचो। यहि अंतर यमुना तट आए स्नान दान कियो खरचो। सूरदास प्रभु अंतर्यामी भक्त संदेह हरचो॥ ॥५२॥राग धनाश्री ॥ सुफलकसुत दुख दूरि करचो। यमुना तीर कियो रथठाढो आपुहि प्रगट हरचो॥ तिनहि कह्यो तुम स्नान करौ ह्यां हमहिं कलेऊ देहु। भूँख लगी भोजन करिहैं हम नेम सारि तुम लेहु। तबलौं नंद गोप सब आवैं संग मिले सब जैहैं॥ सूरदास प्रभु कहतहैं पुनि पुनि तब अति ही सुख पैहैं॥५३॥राग गुंडमलार॥सुनत अक्रूर यह बात हरषे। श्याम बलरामको तुरत भोजन दियो आपु स्नानको नीर परषे॥ गए कटिनीरलौं नित्य संकल्प करि करत स्नान इकभाव देख्यो। जैसोई श्याम बलराम श्रीस्यन्दन चढे वहै छबि कुँवर सर मांझ पेख्यो॥ चकृत मनभए कबहुँ तीर पुनि जल निरखि घोष अक्रूर जिय भयो भारी। सूर प्रभु चरितमें थकित अतिही भयो तहां दरशे नित स्थल बिहारी॥५४॥राग कान्हरो॥कमल पर वज्र धरति उर लाइ।राजतिरमा कुंभरस अंतर पति निज स्थल जलसाइ॥ वैनतेइ संपुट सनकादिक चतुरानन जय विजय सखाइ। औसर बाग विशारद हाहा जित गुण गाइ॥ कनक दंड सारंग विविध रव कीरति निगम सिद्ध सुर धाइ। तिनके चरण सरोज सूर अब किए गुरु कृपा सहाइ॥ ५५॥राग धनाश्री॥ हरष अक्रूर हृदय नमाइ। नेम भूल्यो ध्यान श्याम बलरामको हृदय आनंद मुख कहि न जाइ॥ ब्रह्म पूरण अकल कलाते रहित ए हरता करता समर्थ और नाहीं। कहा बपुरो कंस मिच्यो तब मन संस करत है जीको। करतहै गंग निर्वंशजाहीं॥ हांकि रथ चढि चल्यो विलम अब कहा प्रभु गयो संदेह अक्रूर जीको नंद उपनंद सँग ग्वाल बहुभारलै आइ सदनहि मिले सूर पीको॥५६॥ अक्रूर श्रीकृष्ण स्तुति॥ राग कल्याण॥बार बार श्याम राम अक्रूरहि गानै। अबहीं तुम हरष भए तबहीं मन मारि रहे चले जात रथहि बात बूझत हैं बानैं॥ कहौ नहीं सांची सो हमसों जिनि गोपकरौ सुनिकै अक्रूर बिमल स्तुति मानै। सूरज प्रभु गुण अथाह धन्य धन्य श्रीप्रियानाह निगमनको अगाध सहसानन नाहिं जानै॥ ५७॥ राग बिलावल॥ बारबार मोसों कहा बूझत तुमहौ पूरण ब्रह्म गुसाँई॥ तुम हर्ता तुम कर्ता एकै तुमहौ अखिल भुवनके साँई॥कहामल्ल चाणूर कुवलिया अब जिय त्रास नहीं तिन नैको। सूरदास प्रभु कंस निपातहु गहरु न कीजै अब वैसेनको॥५८॥ राग धनाश्री॥ बूझतहैं अक्रूर

हि श्याम। तरनि किरनि महलनि पर झांई इहै मधुपुरी नाम ॥ श्रवणन सुनत रहत जाको नित सो दरशन भए नैन। कंचनकोट कँगूरनकी छवि मानहु बैठे मैन ॥ उपवन बन्यो चहूँघा पुरके अतिही मोको भावत।सूर श्याम बलरामहिं पुनि पुनि करपल्लवनि देखावत॥५९॥ श्रीकृष्ण वचन अक्रूर प्रति ॥ राग कल्याण॥बार बार बलरामको मधुपुरी बतावत ॥ छज्जे महलन देखिकै मन हरष बढावत ॥ जन्म थान जिय जानिकै ताते सुख पावत।वन उपवन छाये सघन रथ चढे जनावत ॥ नगर शोर अकनत सुनत अति रुचि उपजावत।सुनत शब्द घरियारके नृप द्वार बजावत॥वरन वरन मंदिर बने लोचन ठहरावत। सूरज प्रभु अक्रूरसों कहि देखि सुनावत॥६०॥ अक्रूरवचन श्रीकृष्णप्रति ॥ राग कल्याण॥श्रीमथुरा ऐसी आजु बनी।देखहु हरि जैसे पति आगम सजति शृंगार धनी॥ मानहु कोटि कसी कटि किंकिणि उपवन वसन सुरंग। भूषण भवन विचित्र देखियत शोभित सुंदर अंग॥सुनत श्रवण घरियार घोरं ध्वनि पाँयन नूपुर बाजत। अति संभ्रम अंचल चंचलगति धामन ध्वजा विराजत ॥ ऊंच अटनपर छत्रनकी छबि शीशन मानों फूली।कनक कलश कुच प्रगट देखियत आनँद कंचुकि भूली॥विद्रुम फटिक पची परदा छबि लालरंध्रकी रेख। मनहुँ तुम्हारे दरशन कारण भूले नैन निमेष ॥ चितदै अवलोकहु नँदनंदन पुरी परमरुचि रूप। सूरदास प्रभु कंस मारिकै होहु यहांके भूप ॥६१॥ मथुरा हरपित आजु भई। ज्यों युवतीपति आवत सुनिकै पुलकित अंग मई ॥ नवसत साजि शृंगार बनी सुंदरि आतुरपंथ निहारति। उडत ध्वजा तनु सुरति बिसारे अंचल नहीं सँभारति ॥ उरज प्रगट महलनपर कलसा लसति पास बनसारी।ऊंचे अटनि छाजकी शोभा शीश उँचाइ निहारी ॥ जालरंध्र इकटक मग जोवति किंकिणि कंचन दुर्ग। वेनी लसति कहों छवि ऐसी महलन चित्रे उर्ग। बाजत नगर बाजने जहँ तहँ और बजत घरिआर। सूर श्याम बनिता ज्यों चंचल पगनूपुर झनकार ॥ ६२ ॥ रागगुंडमलार ॥ नगरके पास जब श्याम आए। देखि रथ चढे बलराम अरु श्यामको गए अक्रूर तिन लैं आए॥कंसके दूत जहां तहांते देखिकै गए नृप पास आतुर सुनाए। उठयो झिझकारि कर ढाल खड्गहि लिए रंग रण भूमिके महल बैठयो ॥ कुवलिया मल्ल मुष्टिक चाणूरसो होहु तुम सजग कहि सबन ऐठयो। एक पठवत एक कहत है आइकै एक सों कहत धौं कहां आए। सूर प्रभु शहर पैठार पहुँचे आइ धनुषके पास जोधा रखाए॥६३॥पुरनारि श्रीकृष्णशोभा परस्पर वदति॥राग धनाश्री ॥ मथुरा पुरमें शोर परयो। गर्जत कंस वंश सब साजे मुखको नीर हरयो ॥ पीरो भयो फेफरी अधरन हृदय अतिहि डरयो। नंदमहरके सुत दोउ सुनिकै नारिन हर्ष भरयो ॥ इंदु वदन नव जलद सुभग तनु दोउ खग नैन कह्यो।सूर श्याम देखत पुर नारी उर उर प्रेम भरयो॥६४॥राग रामकली॥रथपर देखि हरि बलराम। निरखि कोमल चारु मूरति हृदय मुकुता दाम ॥ मुकुट कुंडल पीतपट छवि अनुज भ्राता श्याम। रोहिणी सुत एक कुंडल गोरतनु सुखधाम ॥ जननि कैसे धरयो धीरज कहति सब पुरवाम। बोलि पठये कंस इनको करै धौं कहा काम ॥ जोरि कर विधिसों मनावति अशीशै दै नाम। न्हात बार न खसै इनको कुशल पहुंचै धाम ॥ कंसको निर्वंश ह्वै है करत इन पर ताम। सूर प्रभु नंद सुवन दोऊ हंस बाल उपाम६५राग कल्याण॥देख री आजु नैन भरि हरिजूके रथकी शोभा। योग यज्ञ जप तप तीरथव्रत कीजतहै जेहि लोभा ॥ चारु चक्र मणि खचित मनोहर चंचल चमर पताका ॥ श्वेत छत्र मनो शशि प्राची दिशि उदय कियो निशि राका ॥ घन तन श्याम सुदेश पीत पट शीश मुकुट उर माला। जनु दामिनि घन रवि तारागण प्रगट एकही काला ॥ उपजत छवि कर अधर शंख मिलि सुनियत शब्द प्रशंसा। मानहु अरुण कमल मंडल में कूजत हैं

T

कलहंसा । मदन गोपाल देखियत हैं सब अब दुख शोक बिसारी । पैठे हैं सुफलकसुत गोकुल लेन जो इहाँ सिधारी ॥ आनंदित चित जननि तात हित कृष्ण मिलन जिय भाए। सूरदास यदुकुल हित कारण अब माधो मधुपुरी आए॥६६॥राग मलार॥वे देखो आवतहैं ब्रजते बने वनमाली।घन तन श्याम सुदेह पीतपट सुंदर नैन विशाली ॥ जिनि पहिले पलना पौढे पय पीवत पूतना दाली। अघ बक बच्छ अरिष्ट केशी मथि जलते काढ्यो काली ॥ जिन हति शकट प्रलंब तृणा वृत इंद्र प्रतिज्ञा टाली ।एते पर नहिं तजत अघोडी कपटी कंस कुचाली ॥अब विधु वदन विलोकि सुलोचन श्रवण सुनतही आली।धन्य सु गोकुल नारि सूर प्रभु प्रकट प्रीति प्रतिपाली ॥६७॥राग भैरव एई माधो जिन मधु मारे री । जन्मतही गोकुल सुखदीन्हों नंददुलार बहुत सारे री ॥ केशी तृणा-वर्त्त वृषभासुर हती पूतना जब वारे री । इंद्रकोप वर्षत गिरि धारयो महाप्रबल ब्रजके टारे री ॥ बल समेत नृपकंस बोलाए रचे रंग अति भारे री । सूर अशीश देति सब सुंदरि जीवहिं अपनी माँ प्यारे री॥६८॥राग बिहागरो भए सखि नैन सनाथहमारे। मदनगोपाल देखतही सजनी सव दुख शोक बिसारे ॥ पठएहैं सुफलकसुत गोकुल लेन जो इहां सिधारे । मल्लयुद्ध प्रति कंस कुटिल मति छल करि इहां हँकारे ॥ मुष्टिक अरु चाणूर शैलसम सुनियतहैं अतिभारे। कोमल कमल समान देखियत ये यशुमतिके वारे । ह्वै यह जीति विधाता इनकी करहु सहाय सवारे।सूरदास चिरजीवहु युग युग दुष्ट दलै दोउ नंददुलारे॥६९॥अथ दूसरी लीला अक्रूरकी।रागमारू॥यमुनातट आइ अक्रूर अन्हाए श्याम बलरामको रूप जलमें निरखि बहुरि रथ देखि आचरज पाए ॥ किधौं यह प्रतिबिंब जलमें देखत किधौं निजरूप दोउहैं सुहाए। चकृत होइ नीरमें बहुरि बुडकी दई सहित सुता सिंधु तहां दरशपाए ॥ दोउ करजोरि करि विनय बहुविधि करी लियो जब रूप तब प्रभु दुहाई । निकसि कै नीरते तीर आयो बहुरि ताहि ढिगबोलि बोले कन्हाई॥ कहा तुम और देखत हुते तात तुम कह्यो सब जगत तुमहीं भुलायो । गति तुम्हारी न जानै कोऊ तुम बिना राख प्रभु राख मैं शरण आयो ॥ हरि कह्यो चलौ मथुरापुरी देखिए सहित अक्रूर पुनि तहां आए । सूर प्रभु कियो विश्राम सब निशि तहां बोधि अक्रूर निजघर पठाए ॥७०॥अध्याय॥४१॥श्रीकृष्ण मथुरापुर आगमन हेतु॥राग भैरव॥ भोरभयो जागे नँदलाल । नंदराइ निरखत मुख हरषे पुनि आए सब ग्वाल ॥ देखि पुरी अति परम मनोहर कंचनकोट विशाल । कहन लगे सब सूर प्रभू सों होहु इहां भूपाल ॥७१॥ राग परज ॥ हरि बल शोभित यों अनुहार ।शशि अरु सूर उदैभए मानों दोऊ एकहि बार॥ग्वाल बाल सँग करत कौतूहल गवनपुरी मंझार । नगर नारि सुनि देखन धाईं रतिपति गेहबिसार ॥ उलटि अंग आभूषण साजत रही न देह सँभार।सूरदास प्रभु दरश देखिकै भईं चकृत विचार ॥७२॥ राग धनाश्री॥ वै देखो आवत दोऊजन । गौर श्याम नट नील पीत पट जनु दामिनी मिलीघन॥लोचन बंक विशाल चितै कै रहत तव हो सबके मन।कुंडल श्रवण कनक माणि भूपित जडित लाल अतिलोल मीन तन॥वंदन चित्रविचित्र अंग शिर कुसुम सुवास धरे नँदनंदन । वलि वलि जाउँ चलहि जेहि मारग संग लगाइ लेत मधुकर गन॥ धन्य सु भूमि जहां पगधारे जीतहि गे रिपु आजु रंगरन ।सूरदास वै नगर नारि सब लेत बलाइ वारि अंचल सन॥७३॥अथ रजकवध हेतु। राग रामकली ॥ नृपति रजक अंबर नृप धोवत । देखे श्याम राम दोउ आवत गर्व सहित तिन जोवत॥आपुसहीमें कहत हँसत हैं प्रभु हृदय यह शालत। तनक तनकसे ग्वाल छोहरन कंस अबहिं वधि घालत॥तृणावर्त प्रभु आहि हमारो इनहीं मारयो ताहि । बहुत अचगरी यहि करि राखी प्रथम मारिहैं याहि॥जाको नाम श्याम सोइ खोटो तैसेइ

हैं दोउ वीर। सूर नंद बिनु पुत्र कहाए ऐसे जाए हीर॥७४॥राग बिलावल॥अंतर्यामी जानिकै सब ग्वाल बोलाए। परखि लिए पाछेनको तेऊ सब आए॥ सखा वृंद लै तहां गए बूझन तेहि लागे। नृपति पास हम जाहिंगे अंबर कछु माँगि॥ हँसे श्याम मुख हेरिकै धोवत गरवानो। मारत मारत सातके दोउ हाथ पिरानो॥ अवहीं देहैं आइकै कछु हम लै रैहैं। पहिरावन जो पाइहैं सो तुमहूं दैहैं॥ की पहिलेही लेहुगे हम इहै बिचारे। देहु बहुत गुण मानिहैं आधीन तुम्हारे॥ मार मार कहि गारि दै धृग गाइ चरैया। कंसपासहै आइए कामरी वोढैया॥ बहुरि अरसते आनिकै तब अंबर लीजो। अरस नामहै महलको जहां राजा बैठे। गारी देदै सब उठे भुज निजकर ऐंठे॥ पहिरावनको जुरि चले पैहो मल्लनसों। सूर अजाके भोग ए सुनि लेहु नमोसों॥७५॥राग बिलावल॥हम माँगतहैं सहज सों तुम अति रिसकीन्हों।कहा करैं तो जाहिंगे जो तुम हमहिं न दीन्हों॥ रिस करियत क्यों सहज हो भुज देखत ऐसे। करि आए नट स्वांगसे मोको तुम वैसे॥ हमहिं नृपति सों नातहै ताते हम माँगे। वसन देहु हमको सबै कहैं नृपके आगे॥ नृप आगे लौं जाहुगे बीचहि मरिजैहो। नेक जीवनकी आशहै ताहू विन ह्वैहो॥ नृप काहेको मारिहै तुमहीं अब मारत। गहर करत हमको कहा मुख कहा निहारत॥ सूर दुहुँनमें मारिहौं अति करत अचगरी। वसत तहां बुधि तैसिय वह गोकुल नगरी॥७६॥राग बिलावल॥ श्याम गह्यो भुज सहजही क्यों मारत हमको।कंस नृपतिकी सौंहहै पुनि पुनि कही तुमको॥ पहुँचा करसों गहिरहे जिय संकट मेल्यो। डारि दियो ताहि शिलापर बालक ज्यों खेल्यो॥ तुरत गयो उड़ि स्वर्गको ऐसे गोपाला। जन्म मरनते रहि गयो वह कियो निहाल॥रजक भजे सब देखिकै नृप जाइ पुकारचो।सूर छोहरन नंदके नृपसेठिहि मारचो७७ राग गौरी॥ यह सुनिकै नृप त्रास भरचो। सवन सुनाइ कही यहबाणी इह नँदनंद कह्यो॥ मारो श्याम राम दोउ भाई गोकुल देउ बहाइ। आगे देखै रजक मरायो स्वर्गहि देहु पठाइ॥ दिन दिन इनकी करौं बडाई अहिर गए इतराइ। तौ मैं जो वाही सों कहिकै उनकी खाल कढाइ। सूर कंस इह करत प्रतिज्ञा त्रिभुवननाथ कहाए॥ ७८॥ राग बिलावल॥ रजक मारि हरि प्रथमही नृप वसन लुटाए। रंग रंग बहु भाँतिके गोपन पहिराए॥ आए नगर लगारको सब बने बनाए॥इकटक रही निहारिकै तरुणिन मनभाए॥ जैसी जाके कल्पना तैसेहि दोउ आए। सूर नगर नर नारिके मन चित्त चोराए॥७९॥एइ वसुदेवके दोउ ढोटा गौर श्याम नट नील पीत पट कलहंसनके जोटा॥ कुंडल एक काम श्रुति जाके श्रीरोहिणिको अंश। उर वनमाल देवकीको सुत जाहि डरतहैं कंस॥ लै राखे ब्रज सखा नंद गृह बालक भेप दुराइ। सम बल वैस विराट मैनसे प्रगट भएहैं आइ॥ केशी अघ पूतना निपाती लीला गुणनि अगाध। सूर श्याम खलहरन करन सुख अभयकरन सुरसाध॥८०॥राग रामकली॥ येइ कहियत वसुदेव कुमार। कंसत्रास मनमात पठाए कीन्हें नंददुलार॥ प्रथम पूतना इनहि निपाती काग मरत उठि भाज्यो। शकटा तृणा इनहिं संहारचो काली इनहि निवाज्यो॥अघा बका संहारन एई असुर सँहारन आए। सूरज प्रभु हित हेतु भावकै यशुमति वाल कहाए॥८१॥राग नट॥ वेहैं रोहिणीसुत राम। गौर अंग सुरंग लोचन प्रलय कैसे ताम॥एक कुंडल श्रवणधारी दोत दरशीश्याम। नील अंबर अंगधारी श्याम पूरणकाम॥ महा जे खल तिनहुं ते अति तरतहै एक नाम। ब्रह्म पूरण सकल स्वामी रहे ब्रजनि शिधाम॥ताल वन इन वच्छ मारचो ब्रह्म पूरणकाम। सूर प्रभु आकरपि ताते संकर्पणहै नाम॥८२॥ राग रामकली॥ एहैं देवकीसुत श्याम। मुकुट शिर शुभ श्रवण कुंडल करत पूरणकाम॥ महा जे खल

तिनहुँते अति तरतहैं इक नाम ॥ ब्रह्मपूरण सकल स्वामी रहे ब्रज वसिधाम ॥ नंद पितु माता यशोदा बाँधे ऊखल दाम । लकुट लैलै त्रास कीन्हों करचो इन परताम ॥ ताहि मान्यो हेतु करि इन हँसति ब्रजकी वाम । सूर धनि नँद धन्य यशुमति धन्य गोकुल ग्राम ॥ ८३ ॥ अध्याय ॥ ४२ ॥ हरि धनुप भूमि आगमन कूवरी उद्धार ॥ राग मारू ॥ धनुषशाला चले नँदलाला । सखा लिए संग प्रभु रंग नाना करत देव नर कोउ न लखहि करत ख्याला ॥ नृपतिके रजकसों भेंट मगमें भई कह्यो दे वसन हम पहर जाहीं । वसन ए नृपतिके जासुके प्रजा तुम ए वचन कहत मन डरत नाहीं ॥ एकही मुष्टिका प्राण ताके गए लए सब वसन कछु सखन दीन्हें । आइ दरजी गयो बोलि ताको लयो सुभग अंग सजत उन बिनय कीन्हें ॥ यों सुदामा कह्यो गेह मम अति निकट कृपाकरि तहां हरिचरणधारी । धोइ पद कमल सों अहार आगेधरी भक्ततासु सव काज सारी ॥ लिए चंदन बहुरि आनि कुबिजा मिलीं श्याम अँग लेप कीयो बनाई । रीझि तेहि रूप दियो अंग सूधो कियो वचन शुभ मानि निज गृह पठाई ॥ पुनि गए तहाँ जहां धनुष बोले सुभट हौस मन जिनि करौ बन विहारी । सूर प्रभु छुअत धनु टूटि धरणी परचो शोर सुनि कंस भयो भ्रमत भारी ॥ ८४ ॥ दूसरी लीला धनुपयज्ञकी विस्तार वदत ॥ राग गुंडमलार ॥ श्याम बलराम गए धनुषशाला । लियो रथते उतरि रजक मारचो जहां कंदराते निकसि सिंह बाला ॥ नंद उपनंद सँग सखा एक थल राखि दोऊ बने आवैंहिं वीर जोटा । असुर सैना खडे देखिकै वे डरें धनुष चहुँ पास रिपु घुटा घोटा ॥ घेरि लीन्हें श्याम बलरामको तहां बोलि सब उठे हरि धनुष तोरौ । सूर तुमको सुनै भुजनि बलचंड अति हँसत हरि करचो यह वैर जोरौ ॥ ८५ ॥ राग विहागरो ॥ हमको नृप यहि हेतु बोलाए ॥ कहां धनुष कहँ हम अति बालक कहि आश्चर्य सुनाए ॥ ठाढे शूर वीर अवलोकत तिनसों कहौ न तोरैं । हमसों कहो खेल कछु खेलैं यह कहि कहि मुख मोरैं॥कंस एक तहां असुर पठायो इहै कहत वह आयो।बनै धनुप तोरे अब तुमको पाछे निकट बोलायो ॥ बालक देखि गहन भुज लाग्यो ताहि तुरतही मारचो । तोरि कोदंड मारि सब योधा तब बल भुजा निहारचो ॥ जाके अस्त्र तिनहि तेहि मारचो चले सामुही खौरी । सूर सु कुबरी चंदन लीन्हें मिली श्यामको दौरी॥८६॥राग धनाश्री॥प्रभु तुमको चंदन मैं ल्याई॥ गह्यो श्याम कर कर अपनेसों लिए सदनको आई ॥ धूप दीप नैवेद्य साजिकै मंगल करे बिचारी । चरण पखारि लियो चरणोदक धनि धनि कहि दैत्यारी ॥ मेरो जनम कल्पना ऐसी चंदन परसौं अंग । सूर श्याम जनके सुखदायक बधे भाव रज्जु रंग॥८७॥राग गुंडमलार ॥कुबरी नारि सुंदरी कीन्ही। भावमें वास बिन भाव नहिं पाइए जानि हृदय हेतु मानि लीन्ही ॥ ग्रीव कर परसि पग पीठि तापर दियो उर्वशी रूप पटतरहि दीन्ही । चित्त वाके इहै श्याम पति मिलैं मोहिं तुरत सोई भई नाहिं जात चीन्ही ॥ ताहि अपनी करी चले आगे हरी गए जहां कुवलिया मल्ल द्वारचो । बीच माली मिल्यो दौरि चरणन परचो पुहुपमाला श्याम कंठ धारचो ॥ कुशल प्रसन्नानि कहे तुरत मन काम लहि भक्तबत्सल नाम भक्त गावैं । ताहि सुखदै चले पौरिही ह्वै खरे सूर गजपालसों कहि सुनावैं॥८८॥अध्याय॥ ४३ कुवलियाहस्ती वा मुष्टिक चाणूर वध॥राग कान्हरो ॥ सुनहु महावत बात हमारी॥बार बार संकर्षण भाषत लेत नहीं ह्यांते गज टारी ॥ मेरे कह्यो मानि रे मूरख गज समेत तेहि डारौं मारी । द्वारे खडे रहेहैं कबके जिनि रे गर्व करै जिय भारी॥न्यारो करि गयंद तू अजहूं जान देहिका अंकुश मारी। सूरदास प्रभु दुष्टनिकंदन धरणी भार उतारनकारी८९॥राग गुंडमलार ॥ बार बार संकर्षण भाषत बारन वनि वारन करि न्यारो । वारन छाँडि देत किन हमको तू जानत मतंग मतवारो ॥ वाहर खडे वात सुन मेरी त्रिभुवनपति जिनि जानै वारो । वादिहि मरिजैहै पलभीतर कहे देत नहिं दोष हमारो ॥

बात सुनत रिस भरयो महावत तुमहि कहा इतनो रे गारो । वादत बड़े शूरकी नाँई अबहिं लेतहौं प्राणतुम्हारो॥वारनहीं करौं वारन सहित फटकिहौं बावरेबात कहि सुख सँभारो॥वादि मरिजाइगो वारन हिं छोडि दें वदत बलराम तोहिं बारबारो ॥ बात मेरी मान गर्व बोलै कहा काल किनि देखि इतरात कारे॥वाम कर गहि शुंडि डारिहौं अमरपुर हांकदै तुरत गजको हँकारे ॥ बाजसों टूटि गजराज हां कत परयो मनो गिरि चरण धरि लपकि लीन्हें । वारि बांधे वीर चहुँधा देखतही वज्र सम थाप बल कुंभ दीन्हों॥कूक पारयो लपकि खींच मज डरयो मनु गंडमधि रंध्र झरवो सुखानो॥क्रोध गजपालके ठटाकि हाथी रह्यो देत अंकुश मसकि कहा सकानो । बहुरि तातो कियो डारि तिनपर दियो आय लपटे सुतहु नंद केरे॥सूर प्रभु श्याम बलराम दोउ इतै उत वीचकरि नाग इत उतहि टेरे९०॥राग गुंडमलार॥ क्रोध गजराज गजपाल कीन्हों । गरजि घुमरात मद मार गंडनि स्रवत पवन ते वेग तेहि समै ची- न्हों ॥ चक्र सों भ्रमत चकृत भए देखि सब चहुँधा देखिए नंद ढोटा । चमकि गए वीर सब चका चौंधी लगी चितैं डरपे असुर घटा वोटा॥ नील अंवर धौल बरन बलराम बनि पीत अंबर श्याम अंग शोभा॥सूर प्रभु चरित पुर नारि देखति खडे महल पर आशिषा देत लोभा॥९१॥कहत हलधर कह्यो मानि मेरो । अखिल ब्रह्मण्ड के नाथ हैं ह्याँ खरे गज मारि जीव अब लेहुँ तेरो॥यह सुनत रिस भरयो दौरिवेको परयो सूंडि झटकत पटकि कूक पारयो । घात मन करत ले डारि हां दुहुँनि पर दियो गज पेलि आपुन हँकारयो ॥ लपकि लीन्हों धाइ दबकि उर रहे दोउ भ्रम भयो गजहि कहाँ गए वैधौं॥अरयो दे दशन धरनी कढे बीर दोउ कहत अवही याहि मारै कैधौं॥खेलि हैं संग दै हाँक ठाढे भए श्याम पाछे राम भये आगे॥उतहि वै पूंछ गहि जात ए शुंडिछै फिरत गज पास चहुँ हँसन लागे॥नारि महलन खरीं सबै अतिही डरीं नंदके नंद गज दोउ खिलावै॥सूर प्रभु श्याम बलराम देखति तृषित बचैं इक बेर बिधि सों मनावैं॥९२॥खेलत गज सँग कुँवर श्याम बलराम दोऊ॥क्रोध द्विरद व्याकुल अति इनको रिस नेक नहीं चकृत भए योधा तहँ देखत सब कोऊ ॥ श्याम झटकि पूंछ लेत हलधर कर शुंडिदेत महल महल नारि चरित देखत यह भारी। ऐसे आतुर गोपाल चपल नै- न सुखरसाल लिए करन लकुट लाल मनो नृत्यकारी । सुरगण व्याकुल विमान मन मन यह करत ज्ञान बोलत यह वचन अजहुँ मारयो नहिं हाथी । सूरज प्रभु श्याम राम अखिल लोकके विश्राम सुर पूरन काम करन नाम लेत साथी ॥ ९३ ॥ राग सोरठ ॥ तब रिस कियो महावत भारी । जो नाहिं आजु मारिहौं इनको कंस डारिहै मारी ॥ अंकुश राखि कुंभ पर करष्यो हलधर उठे हँकारी । धायो पवनहुते अति आतुर धरणी दंत खँभारी॥ तब हरि पूंछ गह्यो दक्षिण कर कछुक ओर शिरवारी। पटक्यो भूमि फेरि नाहिं मटक्यो लीन्हें दंत उपारी ॥ दुहुँ कर द्विरद दशन इक इक छबिसों निरखति पुर नरनारी॥सूरदास प्रभु सुर सुखदायक मारयो नाग पछारि९४॥दूसरी लीला हस्तीवध॥ राग मारू॥नवल नँदनंदन रंगद्वार आए। ताडितसे पीतपट काछनी कसे कटि खौर चंदन किये सुख सुहाए ॥ निरख्यो रूप जिन भयो सोइ सोइ मगन मातु पितुको पुत्र भाव आयो । ब्रह्मपूरण मुनिन परम सुंदर त्रियन कालके रूप सुभटन जनायो ॥ मातुलको देखि हरि कह्यो यों विहँसि करि पंथते टारि गजको महावत । दियो फटकार उन धारि अभिमान मन शुंडते दौरि गह्यो ताहि आवत ॥ दंत युग विवि युगचरन भीतर निकसि युग करन पूँछको गह्यो जाई । महाकरि सिंह भेंटत महाउरगको महाबल गरुड ज्यों गहत धाई ॥ कवहुँ लैजात उत इतै ल्यावत कवहुँ भ्रमत व्याकुल भयो मतुल भारी । गयंद ज्यों गेंदको पटकि हरि भूमिसों दंत दोउ लये निजकर उपारी ॥ भभकिकै दंतते

रुधिर धारा चली छीट छबि बसनपर भई भारी। केसरि चीर पर अबीर मानों परचो खेलत फागु डारचो खिलारी॥ मातुल तजि प्राणसों गयो निर्वाणको सिद्ध गंधर्व जैजै उचारैं।देखि लीला ललित सूरके प्रभुकी नारि नर सकल तनप्राण वारैं॥९५॥राग नट॥ नवल नँदनंदन रंगभूमि आए। संग बलराम अभिराम शशि सूर ज्यों निरखि अपने छबिसों सोहाए॥द्वार गजराज देखि पीतपट कटि कसत मंद मृदु हँसत अति लसत भारी। कछु न कहि परति तब जबहिं फिरि हेरिकै छबीली पति आसवारी। गर्वको गिरि मनों चलत पाँइन तैसें कुवलया प्रबल रिस सहित धायो॥ बालक मूस ज्यों पूंछ धरि खेलिए तैसे हरि हाथ हाथी गिरायो। गहि पटकि पुहुमि पर नेक नहीं मटकियो दंत मनु मृणालसे ऐंचि लीन्हें॥ कंधधरि चले दोऊ वीर नीके बने निरखि पुरजन धन प्राण वारि दीन्हें। शैलसे मल्ल वै धाइ आए शरन कोऊ भूले लागे तब गोड पर थरथराने॥ कंसके प्राण भयभीत पिंजरा जैसे नव विहँगम तैसे मरत फरफराने। मधुपुरीकी युवति सब कहति अति रति भरी देखौ री देखौ अंग अंगकी लोनाई। सुनत श्रवणन रही देखौ री तेई सही मधुर मूरति सुरतिपति न पाई। धन्यराधा केलिं वृंदावन कुंज है सभागी॥ सबै देखौ है लीधौं माई हम अभागी॥ धन्य ब्रजबाल नंदलाल गिरिधरनको नित्य निरखति रहति प्रेम पागी। अबलसों अबल भए सबलसों सबल भए ललितसों ललित तनु प्रकाशी॥ सूर प्रभु ज्ञान करि ध्यान करि जिन जैसी लई मानि मात पितु दुख दूरि डारे विनाशी॥९६॥राग बिलावल॥देखो री आवत वै दोऊ। माणि कंचनकी राशि ललित अति यह उपमा नहिं कोऊ॥ किधौं प्रात मानसरवर ते उडि आए दोउ हंस। इनको कपट करै मथुरापति तौ ह्वैहै निर्वंस॥जिनके सुने करत पुरुषारथ तेई हैं की और। सूर निरखि यह रूप माधुरी नारि करत मन डौर॥९७॥राग कान्हरो॥सजनी येई हैं गोपाल गुसाई।नंदमहरके ढोटा जिनकी सुनियत बहुत बडाई॥ नैनन रूप निरखि देखौं बडभाग परम निधि पाई।चंद्र चकोर मेघ चातकलौं अवलोको मनलाई॥सुंदर श्याम सुदेश पीतपट भुज चंदन चरचित कीन्हें। नटवर भेष धरे मनमोहन गज युग दशन कंध धरि लीन्हें॥ नूपुर चारु चरण कटि किंकिणि वनमाला उर पर सोहै। कर कंकण मणि कंठ मनोहर सोको युवति जौन मनमोहै॥ परमरुचिर मणि कंठ किरन गनि कुंडल मुकुट प्रभा न्यारी। विधुमुख मृदु मुसकानि अमृत सम सकल लोक लोचन प्यारी॥ सत्य शील संपन्न सु मूरति सुर नर मुनि भक्तन भाए। सूरदास प्रभु दुष्ट बिनाशन गोकुलते मथुरा आए॥९८॥राग बिलावल॥एई सुत नंद अहीरके।मारचो रजक वसन सब लूटे संग सखा बलवीरके॥ कांधे धरि दोऊ जन आए दंत कुवलिया धीरके। पशुपति मंडल मध्य मनो मणि क्षीरधि नीरधि नीरके॥ उडि आए तजि हंस मात मनो मानसरोवर तीरके। सूरदास प्रभु ताप निवारण हरन संत दुख पीरके॥ ९९॥ राग कल्याण॥ हँसत हँसत श्याम प्रबल कुवलया मारचो। तुरत दांत लिए उपारि कंध पर चले धारि निरखत नर नारि मुदित चकृत गज संहारचो॥ अतिही कोमल अजान सुनत नृपति जिय सकान तनु बिनु जनु भयो प्राण मल्लनिपै आए। देखतही शंकि गए काल गुण विहाल भए कंस डरन घेरि लिए दोउ मन मुसुकाए॥ असुर वरी चहूँ पास जिनके वश भुव अकाश मल्लनपै आए न करि गांस नास जियको विचारै। सब कहत भिरहु श्याम सुनत रहत सदा नाम हारि जीति घरहीकी कौन काहि मारै॥ हँसिं बोले श्याम राम कहा सुनत रहे नाम खेलनको हमहिं काम बालक सँग डोलै। सूर नंदके कुमार यहहै राजस बिचार कहा कहत बार बार प्रभु ऐसे बोले॥२६००॥ रंगभूमि आए अति नंदसुवन वारे। निरखति ब्रजनारि नेह उरते

न विसारे ॥ देखो री मुष्टिक चाणूरन इनि हकारे । कैसे ये बचैनाथ साँस ऊरध डारे ॥ रजक धनुष जोधा हति दंतगज उपारे । निर्दय इह कंस इनहिं चाहतहै मारे ॥ कहां मल्ल कहां अतिहि कोमल ए भारे ॥ कैसी जननी कठोर कीन्हें जिन न्यारे । वार वार इहै कहति भरि भरि दोउ तारे । सूरज प्रभु बल मोहन उरते नहिं टारे ॥ १ ॥ राग गुंडमलार ॥ बोलि लीन्हों कंस मल्ल चाणूरको कहारे करत क्यों बिलम कीन्हों । वंश निर्वंश करि डारिहैं छिनकमें गारि दैदै ताहि त्रास दीन्हों ॥ शत्रुनान्हों जानि रहे अबलौं बैठि जन आपनेको मारिडारौं । द्विरदको दंत उपठाय तुम लेतहै उहै बल आजु काहेन सँभारौं ॥ भली नहिं करी तुम राखि राख्यो उनहि इहै कहि तुरत वाको पठायो । कछु क्रोध कछु त्रास कछु सोच कछु शोक करें साहस रंगभूमि आयो ॥ परस्पर कहि सबन नृपति त्रास्यो मोहिं सुनहु रे वीर अबलो न मान्यो कि मारौं । की मारिडारियो दुहुँनिको होइ सो होइ यह कहत रान्यो ॥ निरखि दोउ वीर तनु डरे मनहि महान इहै बुधि करें ज्यों नाश कीजे । लखति पुरनारि प्रभु सूर दोउ मारिहैं कहति हैं नृपतिपे सुयश लीजै ॥ २ ॥ राग धनाश्री ॥ कहति पुर नर नारि यह मन हमारे । रजक मारयो धनुष तोरि द्वै खंड करे हत्यों गजराज त्यों इन हु मारे ॥ तृपित अति नारि सबै मल्ल ज्यों ज्यों कहै लरत नहिं श्याम हम संग काहे । परस्पर मत करत मारिडारौं इनहिं लखत ए चरित दुहुँ निमिष न चाहै ॥ कहा ह्वैहै दई होन चाहति कहा अबहि मारत दुहुँन हमहि आगे । सूर करजोरि अंचल छोरि विनवै वचैं ए आजु विधि इहै मांगे३॥ ॥ राग कल्याण ॥ देखो री मल्ल इनहि मारनको लोरैं । अतिही सुंदर कुमार यशुमति रोहिणि वार बिलखाति यह कहति सबैं लोचन जलढोरैं ॥ कैसेहुं ए बचैं आजु पठए धौं कौन काज निठुर हियो वाम ताको लोभही पठाए । एतो बालक अजान देखो उनके सयान कहा कियो ज्ञान इहां काहेको आए ॥ कहा मल्ल मुष्टिकसे चाणूर शिला भंजन कहत भुजा गहि पटकन नंद सुवन हरपैं । नगर नारि व्याकुल जिय जानत प्रभु सूर श्याम गर्व हतन नाम ध्यान करि करि वै हरपैं ॥४॥ श्रीकृष्ण वचन मल्लप्रति ॥ राग गुंडमलार ॥ सुनौं हो वीर मुष्टिक चाणूर सबै हमहि नृप पास नहिं जान देहौ । वैरि राखे हमहिं नहिं बूझे तुमहिं जगत मैं कहा उपहास लैहौ ॥ सबै कहैं इहै भली मति तुम यह नंदके कुँवर दोउ मल्ल मारे । इहै यश लेहुगे जान नहिं देहुँगे खोजही परे अब तुम हमारे ॥ हम नहीं कहैं तुम मनहिं जो यह वसी कहतहौं कहा तौ करै तैसी॥सूर हम तन निरखि देखिए आपुको बात तुम मनहो यह वसी नैसी॥५॥ राग तोंडी॥ जबही श्याम कही यह बानी । यह सुनिकैं युवती बिलखानी ॥ मल्लन करयो हमहिं तुम देखो । अपनो बल अपनो तनु पेषो ॥ चितए मल्ल नंद सुत क्रोधा । काल रूप वज्रांगी जोधा ॥ भुजा ऐंठि रज अंग चढायो । गांस धरे हरि ऊपर आयो ॥ श्याम सहज पीताम्बर बांधे॥हलधर निरखत लोचन आधे॥तब चाणूर कृष्णपर धायो । भुजभुज जोरि अंग बलपायो ॥ प्रथम भए कोमल तन ताको॥शिथिल रूप मनमें लस वाको॥तब चाणूर गर्व मन लीन्हों । दुगंप्रहार कृष्णपर कीन्हों॥फूलहुते अति श्रम करि मान्यो॥तेहि अपने जिय मारयो जान्यो॥हरष्यो मल्ल मारि भयो न्यारी । कहनलग्यो सुख अहिर विचारी ॥ हँसत श्याम जब देखत ठाढे । सोच परयो तब प्राणनि गाढे॥फिरि कहि कहि हरि मल्ल हुकारयो । मनों कँदरते सिंह पुकारयो ॥ हांक सुनत सब कोउ भुलान्यो ॥ थरथराइ चाणूर सकान्यो ॥ सूर श्याम महिमा तब जान्यो । निहचै मीचु आ-पनो आन्यो॥६॥ राग धनाश्री॥ भिरयो चाणूर सों नंदसुत बाँधिकटि पीत पट फेंट रण रंग राजैं॥द्विरद दंत कर कलित अरु भेष नटवर ललित मल्ल उर सल्लि तल ताल बाजैं ॥ पीन भुजलीन जे

लक्षि रंजित हृदय नीलघन शीत तनु तुंग छाती । देखि रही भेष अति प्रेम नर नारि सब वदति तजि भीर रति रीति राती॥ मत्त मातंग बल अंग दंभोलि दल काछनी लाल गजमाल सोहै । कमल दलनैन मृदुवैन बंदित वदन देखिसुरलोक नरलोक मोहै ॥ बाहुसों बाहु उर जानुसों जानुकी चरणन सों चरण धरि प्रगट पेलैं।धमकदै घूँघरानि भीरभय बंधुजन सुभट पद पाणिधरि धरनि मेलैं॥चित्तसों चित्त मनबंधु मनबंधुसों दृष्टिसों दृष्टि धरि शिर चँपैया । जानि रिपुहानि तजिकानि यदुराजकी बवकि उठि फूलि वसुदेवरैया ॥ ऐसेही राम अभिराम सुरशेष वपुगहि वक्षुष्टिक महामल्ल मारचो । तोरि निज जनक उरकेशगहि कंसनर सूर हरि मंचते दुष्ट डारचो ॥७॥ राग भैरौं ॥ श्याम बलराम रंगभूमि आए । बली लखौ रूप सुंदर परम देखियो प्रबल बल जानि मनमें सकाए ॥ कह्यो गजकुवलिया हयो भयो गर्व तुम जानि परिहै भिरत सँग हमारे । कालसों भिरैं हम कौन तुम बापुरे पै हृदय धर्म रहियो बिचारे श्याम चाणूर बलिबीर मुष्टिकभिरे शीशसोंशीश भुज भुज मिलावैं । वे उनै गहत वे दौरि उनको गहत करत बल छल नहीं दांव पावैं ॥ धरि पछारचो दोउ बीर दुहुँन मल्लको हरषि कह्यो सुर ए नंद दोहाई।सूर प्रभु परस लहिलह्यो निर्वान तेहि सुरन आकास जैजैत यह ध्वनि सुनाई ॥८॥राग गुंडमलार॥गह्यो कर श्याम भुजमल्ल अपने धाइ झटकि लीन्हों तुरत पटकि धरनी। भटक अति शब्दभयो खुटक नृपके हिए अटक प्राणन परचो चटक करनी ॥ लटकि निर्खन लग्यो मटक सब भूलिगयो हटक ह्वैकै गयो गटकि शिलसे रह्यो मीचु जागी॥मृष्टकौ गद मरदिके चाणूर चुरुकुट करचो कंसको नुकंप भयो उई रंगभूमि अनुरागरागी । मल्ल जेजे रहे सबै मारे तुरत असुर जोधा सबै तेउ संहारे॥धाइ दूतन कह्यो मल्लकोउ नहिं रहे सूर बलराम हरि सब पछारे ॥९॥ अध्याय ॥ ४४॥ कंसवध उग्रसेन राजहेतु ॥ राग कल्याण॥ मारे सब मल नंदके कुमार दोऊ । कोट सवन भूलिगए हांकदेत चकृत भए लपकि लपकि हए तुरत उबरचो नहिं कोऊ ॥ जोधा चितवतहि मरे हहरि हहरि धरनि परे ज्वाला ज्यों जरे डरे सबभए बिनप्राना । तारागन लिपितहोत जैसे दिन प्रकाश यह सुनि नृप भए निराश रह्यो नहिं ज्ञाना ॥ गलबल सब नगर परचो प्रगटे यदुवंशी । द्वारपाल इहै कही जोधाकोउ बचे नाहिं कांधे गजदंत धरे सूर ब्रह्म अंशी ॥१०॥राग गुंडमलार॥ नंदके नंद सब मल्लमारे । निदरि पौंरिया जाय नृपपै पुकारे ॥ सुनत ठाढो भयो हांक तिनको दयो दनुज कुल दहन तातन निहारे । सुभट बोले सबै आइहै पुनि कबै मारिडारे सबै मल्ल मेरे । अचगरी करि रहे बचन एई कहे डर नहीं करत सुत अहिर केरे ॥ रंग महलनि खरचो कहा रे तुम करचो ढाल कर खड्ग तहांते चलावै। जिवत अब जाहुगे बहुरि करिहौ राज नहीं जानत सूर कहि सुनावै॥११॥राग धनाश्री॥ भले रे नँदकेछोहरा डर नहीं कहा जो मल्लमारे बिचारे । बारही बारदै हांकये गए कहां आपने सम असुरते हँकारे ॥ पौरि गाढौ करौ द्वार बीरनि कहे आप दल कारि मुख उदय गारिदैकै । बहुरि घर जाहुगे धेनु दुहि खाहुगे जानदेहौं तुमहिं प्राणलैकै ॥ कोऊ नहीं रे वहांलौ दयावत कहा पग द्वैक धरणि हरि सन्मुख आए । चकृत ह्वैकै गयो मीच दरशन भयो कहारे मीच यह कहि सुनाए ॥ श्याम बलरामको नाम लैलै कहत मीच आई लेन तुमहिं बाजै । सूर प्रभु देखि नृप क्रोध पुरी घरी कस्यो कटिपीतपट देव राजै ॥१२॥राग मारू॥ कंध दंत धरि डोलत रंगभूमि बलहरि । उज्वल साँवल वपु शोभित अंग फिरत फरि ॥ द्वारे पैठत कुंजर मारचो डु-लाय धरनी डारचो । मुष्टिक चाणूर शिलपसौ शील संहारचो ॥ जिहिं ज्यों जीय रूप बिचारचो तैसोई रूप धारचो । देवकी वसुदेव जीयको संताप निवारचो ॥ मल्लसुभट परे भगार कृष्णको

परिसाने। देखि यह पराक्रम तब कंस जिय बिलखाने॥ दुःखदलन अभय दान करै करन दाने। जो जिहि जबहिं कहैं सबै गोवर्धन राने॥ कंस सुनि अचेत भयो बजनलगे बाजा। कहि अशीश गगन उठे सिद्ध सुर समाजा॥ सुभट रहे देखतही रोके दरवाजा। सूर नंदनंदन गए जहाँ कंस राजा॥ १३॥ राग मारू॥ नवल नंदनंदन रंगभूमि राजै।श्यामतन पीतपट मनों घनमें तडित मोरके पंख माथे विराजै॥ श्रवण कुंडल झलक मनों चपला चमकि दृग अरुण कमल दलसे विशाला भौंह सुंदर धनुष बाण सम शिर तिलक केश कुंचित शोभित भृंगमाला॥ हृदय वनमाल नूपुर चरणलोल चलत गजचाल अतिबुद्धि विराजै। हंस मानो मानसर अरुन अंबुज सुथल निरखि आनंद करि हरषि गाजै॥ कुवलिया मारि चाणूर मुष्टिक पटकि वीर दोऊ कंध गजदंत धारै। ढाल तरवारि आगे धरी रहिगई महलको पंथ खोजत न पावत॥ लातके लगत शिरते गयो मुकुट गिरि केश धरि लैंचले हरषि सावंत। चारिभुज धारि तेहि चारु दरशन दियो चारि आयुध चहुँ हाथ लीन्हें॥ असुर तजि प्राण निर्वाण पदको गयो विमलगति भई प्रभुरूप चीन्हें। देखि यह पुहुप वर्षाकरी सुरन मिलि सिद्ध गंधर्व जैधुनि सुनाई॥ सूर प्रभु अगम महिमा न कछु कहि परत सुरनकी गति तुरत असुर पाई॥१४॥राग मारू॥देखि नृप तमकि हरि चमकि तहांई गए दमकि लीन्हों गिरहबाज जैसे। धमकि मारचो घाउ गुमकि हृदय रह्यो झमकि गहिकेश लै चले ऐसे॥ ठेलि हलधर दियो झोलि तब हरि लियो महलके तरे धरणी गिरायो। अमर जय ध्वनि भई धाक त्रिभुवन भई कंस मारचौ निदरि देवरायो॥ धन्य वाणी गगन धरणि पाताल धनि धन्यहो धन्य वसुदेव ताता। धन्य अवतार सुर धरनि उपकारको सूर प्रभु धन्य बलराम भ्राता॥ १५॥ राग बिलावल॥ जयजय ध्वनि तिहुँलोक भई। मारचो कंस धरणि उद्धारचो ओक ओक आनंद मई॥ रजक मारिकै दंड बिभंज्यो खेल करत गज प्राण लियो। मल्ल पछारि असुर संहारे तुरत सबनि सुरलोक दियो॥ पुर नर नारीको सुख दीन्हों जो जैसो फल सोई लह्यो॥ सूर धन्य यदुबंश उजागर धन्य धन्य ध्वनि घुमरि रह्यो॥ १६॥ राग गुंडमलार॥ हरष नर नारि मथुरा पुरीके। सोच सबको गयो दनुज कुल सब हयो तिहुँभुवन जै जयो हरष कूबरी के॥ निदरि मारचो कंस प्रगट देखत सबै अतिहि दिन अलपके नंद भए ढोटा। नैन दोऊ ब्रह्मसे परम सोभातसे भक्तको जैसे शुभ हंस जोटा॥ देवदुंदुभी बजी अमर आनंद भए पुहुप गण बरषही चैन जान्यो।सूर वसुदेव सुत रोहिणी नंद धनि धनि मिल्यो भुव भार अखिल जान्यो॥१७॥राग रामकली॥ निदरि तुरत मारचो कंस देवनाथा। निदरि मारचो असुर पूतना आदिते धरणि पावन करी भई सनाथा॥ लोक लोकन विदित कथा तुरतही गई करन स्तुतिहि जहां तहां आए। देवदुंदुभी पुहुप वृष्टि जै ध्वनि करै दुष्ट यह मारि सुर पुर पठाए॥ केश गहि करषि यमुना धार डारिदै सुन्यो नृपनारि पति कृष्ण मारचो। भई व्याकुल सबै हेतु रोवन लगीं मरनको तुरत जोहत बिचारचो॥ गए तहां श्याम बलराम बोधी सबै कहति तब नारि तुम करी नैसी। नृप सुनहु वाम इह काम ऐसोई रह्यो जानि यह वात क्यों कहति ऐसी॥ मरति काहे कहा तुमहिको यह भई जानि अज्ञान तुम होति काहे। सूर नृपनारि हरि वचन मान्यो सत्य हरप ह्वै श्याम मुख सबनि चाहे॥१८॥ ॥ राग कल्याण॥ रानिन परबोधि श्याम महलद्वारे आए। कालनेमि बंश उग्रसेन सुनत धाए॥झुकि चरणन परचो आइ त्राहि त्राहि नाथा। बहुतै अपराध परे छिनहुमें सनाथा॥महाराज कहि श्रीमुख लियो उरलाई। हमको अपराध क्षमहुँ करी हम ढिठाई॥ तबहीं सिंहासन पाँउ उग्रसेन धारे। छत्र

शिर धराइ चमर अपने करढारे ॥ ठाढे आधीन भए देव देव भाषै । अपने जनको प्रसाद सारी शिर राखै ॥ मोकों प्रभु इती कहा विश्वंभर स्वामी । घट घटकी जानतहो तुम अंतर्यामी ॥ तौ नृप कहत,कहा तुमको यह केती।सेवा तुम जेती करी पुनि देहौ तेती॥रजक धनुष गज मल्लन कंस मारि काजा।सूरज प्रभु कीन्हों तब उग्रसेन राजा॥१९॥राग विलावल॥उग्रसेनको दियो हरि राज। आनंद मगन सकल पुरवासी चमर ढुरावत श्रीब्रजराज ॥ जहाँ तहाँ ते यादव आए डरे डरे जे गए पराइ । मागध सूर करत सब अस्तुति जै जै जै श्री यादवराइ ॥ युग युग विरद इहै चलि आयो भए बलिके द्वारे प्रतिहार । सूरदास प्रभु अज अविनाशी भक्तन हेतु लेत अवतार॥२०॥राग विलावल॥ मथुरा लोगनि बात सुनी यह उग्रसेनको राज दियो । सिंहासन बैठारि कृपाकरि आपु हाथसों चमर लियो ॥ मात पिताको संकट हरिहैं देवन जै ध्वनि शब्द कियो । रानी सबै मरत ते राखीं उनते प्रभु नाहिं और वियो ॥ अबहीं सुनि वसुदेव देवकी हरषित ह्वैहै दुहुँनि हियो । सूरदास प्रभु आइ मधुपुरी दरशनते पुरलोग जियो॥२१॥राग रामकली॥मथुराके लोगन सुखपाए।नटवर भेष काछनी काछे नँदनंदन सँग अक्रूर के आए ॥ प्रथमहि रजकमारि अपनेकर गोपवृंद पहिराए । तोरि धनुष लीला नटनागर तब गजखेल खिलाए॥रंगभूमि मुष्टिक चाणूर हति भुजबल तार बजाए । नगरनारि देहिं गारि कंसको अजगुत युद्ध बनाए ॥ वरषहिं सुमन अकाश महाध्वनि देव दुंदुभी बजाए । चढि चढि अमर विमान परमसुख कौतुक अंमर छाए ॥ कंस मारि सुरराज काज करि उग्रसेन शिरनाए।मात पिता बंदिते छोरिहैं सूर सुयश गुणगाए॥२२॥राग रामकली॥मथुरा घर घरनि यह बात । रजक धनुष गज मल्लमारे तनकसे नँदतात ॥ धन्य माता पिता धनि वह धन्य धनि वह राति । जब लियो अवतार धरणी धनि धन्य धनि सो भाति॥हंसकेसे जोट दोऊ असुर कियो निपात । सूर जोधा सबै मारे कहा जानत घात२३॥अध्याय ॥४९ ॥ वसुदेवदर्शन कुविजा ग्रह आगमन नंदविदा गुरुपुत्र हेतुः ॥ सुन्यो वसुदेव दोउ नंदसुवन आए । त्रियासों कहत कछु सुनति हैं री नारि रातिहू सुपन कछू ऐसे पाए ॥ गए अक्रूर तिहि नृपति माँगे बोलि तुरत आए आनि कंस मारे । कहा पिय कहत सुनिहै बात पौंरिया जाय कैहै रहौ मष्ट धारे ॥ दिये लोचन ढारि नारि पति परस्पर कहा हम पाप करि जन्म लीन्हों । सात देखत बधे एक ब्रज दुरि बच्यो इते पर बाँधि हम पंगु कीन्हों ॥ मारि डारै कहा बंदिको जीवनधृग मीच हमको नहीं मनन भूल्यो । मरै वह कंस निर्वंस विधना करै सूर क्योंहूं होइ निर्मूल्यो॥२४॥राग जैतश्री॥इहै कहत वसुदेव त्रिया जिनि रोवहु हो । भाग्य विवश सुख दुःख सकल जग जोवहु हो॥जलदीन्हें कर आनि कहत मुख धोवहु नारी। कहियतहै गोपाल हरन दुख गर्वप्रहारी ॥ कबहुँ प्रगट वै होइँगे कृष्ण तुम्हारे तात । आजु कालिह हरि आइहैं यह सपनेकी बात ॥ अब जिनि होहि अधीर कंस यम आइ तुलानों । देखत जाइ बिलाइ झार तिनुका करि जानो ॥ ऐसो सपनो मोहिं भयो त्रिया सत्यकरि मानि । त्रिभुवनपति तेरे. सुवनहैं तोहिं मिलैंगे आनि ॥ यहि अंतर हरि कह्यो मात पितु कहाँ हमारे । तहां लैगए अक्रूर श्याम बलराम पधारे ॥ बज्र शिला द्वारे दियो दरशन ते गयौ छूटि । सहज कपाट उघरिगए ताला कूंची टूटि ॥ जो देखे वसुदेव कुँवर दोउ काके ढोटा ए आए । दरश दियो तेहि प्रेम प्रथम जो दरश दिखाए ॥ धाई मिले पितु मातको यह कहि मैं निजुतात । मधुरे दोउ रोवन लगे जिनि सुनि कंस डरात ॥ तुरत बंदिते छोरि कह्यो मैं कंसहि मारचो । योधा सुभट संहारि मल्ल कुवलया पछारचो ॥ जिय अपने जिनि डरकरौ मैं सुत तुम पितु मात । दुख बिसरौ अब सुख करौ अब काहे

पछतात ॥ निहचै जननी जानि कंठधरि रोवन लागी । तब बोले बलराम मातु तुमते को भागी ॥ बारबार देवै कहे कबहूं गोद खिलाए नाहिं । द्वादश बरस कहांरहे मात पिता बलि जाहिं ॥ पुनि पुनि बोधत कृष्ण लिखो नहिं मेटै कोई । जोइ जोइ मनकी साध "कहौं में करिहौं सोई ॥ जे दिन गए सु ते गए अब सुख लूटहु मात । तात नृपति रानी जननि जाके मोसों तात ॥ जो मन इच्छा होइ तुरत देओ मैं करिहौं । गगन धरणि पाताल जात कतहूं नहिं डरिहौं ॥ मात हृदयकी जब कही तब मन बढचो आनंद । महर सुवन में तो नहीं मैं वसुदेवकोनंद ॥ राजकरो दिन बहुत जानिको कहैं अब तुमको । अष्टसिद्धि नवनिद्धि देहुँ मथुरा घर वरको ॥ रमा सेवकिनी देउँ करि करजोरैं दिन याम । अब जननी दुख जिनि करौ करो जु पूरन काम ॥ धनि यदुवंशी श्याम चहुँ युग चलत बडाई । शेष रूप मैं राम कहत नाहिं बात बनाई ॥ सूरज प्रभु दनु कुल दहन हरन करन संसार । ते पाए सुत तुमहिं करि करौ जु सुख विस्तार ॥ २६ ॥ राग देवगंधार ॥ मेरे माथे राखो चरन । दीनदयालु कंस दुखभंजन उग्रसेन दुखहरन ॥ परम मुदित वसुदेव देवकी गई पाइन परन । मेरो दोष मेटि करुणा करि लैचल गोकुल धरन ॥ ते जन पार भए मनमोहन जे आए तुव शरन । आए सूरदासके जीवन भवजल नवका तरन ॥ २८ राग रामकली ॥ तब वसुदेव हरषित गात । श्याम रामहि कंठ लाए हरषि देवै मात । अमर देव दुंदुभि शब्द भयो जैजैकार ॥ दुष्टदलि सुख दियो संतन ए वसुदेवकुमार । दुखगयो वहि हरष पूरन नगरके नर नारि ॥ भयो पूरब फल संपूरन लह्यो सुत देतारि । तुरत विप्रन बोलि पठए धेनु कोटि अँगाइ । सूरके प्रभु ब्रह्म पूरण पाइ हरषे राइ ॥ २७ ॥ राग काफी ॥ आजुहो निसान बाजै वसुदेव राइकै । मथुराके नर नारि उठे सुखपाइकै ॥ अमर विमान सब कहैं हरपाइकै । फूले मात पिता दोऊ आनंद बढाइकै ॥ कंसको भँडार सब देत हैं लुटाइकै । धेनु जे संकलप राखीं लईं ते गनाइकै ॥ ताँबे रूपे सोने सजि राखीं वे बनाइकै । तिलक विप्रन बंदि दई वे दिवाइकै । मागध संगन जन लेत मनभाइकै ॥ अष्टसिद्धि नवनिधि आगे ठाढी आइकै । सब पुर नारि आईं मंगलन गाइकै ॥ अंबर भूपण पठे दई पहिराइकै । अखिल भुवन जन कामना पुराइकै । पुरजन धनु देतहैं लुटाइकै ॥ सूर जन दीन द्वारे ठाढो भयो आइकै । कछू कृपाकरि दीजै मोहूकौं दिवाइकै ॥ २८ ॥ यज्ञ उपवीतउत्सव ॥ राग बिलावल ॥ विसरचो कुल व्यवहार विचार । हरि हलधर को दियो जनेऊ करि पटरस जेवनार ॥ जाके श्वास उसाँस लेतमें प्रगटभए श्रुति चार । तिन गायत्री सुने गर्गसों प्रभु गति अगम अपार ॥ विधिसों धेनु दई बहु विप्रन सहित सर्व लंकार । यदुकुल भयो परम कौतूहल जहां तहां गावत नर नार ॥ मातदेवकी परम मुदितह्वै देत निछावर वारंवार । सूरदासकी इहै अशीशहै चिरंजीवो दोउ नंदकुमार ॥ २९ ॥ राग धनाश्री ॥ आजु परम दिन मंगलकारी । लोक लोकको टीको आयो मुदित सकल नर नारी ॥ शिव सुरेश शेप औरहु को गनै चतुरानन करधारी । हरकर पाट बंध नेवछावरि करत रतन पटसारी ॥ बाजत ढोल निशान शंख रव होत कुलाहल भारी । अपने अपने लोक चले सब सूरदास वलिहारी ॥ ३० ॥ राग बिलावल ॥ जब यदुपति कुल कंसहि मारचो । तिहूँ भुवन भयो शोर पसारचो ॥ तुरत माचते धरनि गिरायो । ऐसेहि मारत बिलम न लायो ॥ केश गहे पुहुमी विसटायो । डारि यमुनके बीच बहायो ॥ जा कंसहि तिहुँ भुवन डराई । ताको मारचो हलधर भाई ॥ जाके धनुष टँकोरत हाथा । आसन छाँडि भजे सुरनाथा ॥ मारत ताहि बिलंब न कीन्हों । उग्रसेनको राजस दीन्हों ॥ जैही जै वसुदेव कुमारा । जै हो जै तुम नंद दुलारा ॥ सुर देवी देवै धनि मैया । धन्य

यशोमति त्रिभुवनपति धैया ॥ धन्य अक्रूर मधुपुरी लाए। सुर अंमर जै जै ध्वनि गाए ॥ दनुज वंश निरवंश कराए। धरनी शिरते भार गँवाए ॥ मात पिता बंदिते छोराए। यह बाणी सुरलोकनि गाए ॥ जो जैसे तैसे तेहि भाए। सूरज प्रभु सबको सुखदाए॥३१॥राग धनाश्री॥मथुरा दिन दिन अधिक बिराजै। तेज प्रताप राइ केशोको तीनिलोक पर गाजै ॥ कोटिक तीरथ पग पग जाके मधु विश्रात बिराजै। करि अस्नान प्रात यमुनाको जियत मरत भै भाजै॥ श्रीविट्ठल विपुल विनोद विहारन ब्रजको बसिबो छाजै। सूरदास सेवक उनहींको कहत सुनत गिरिराजैं॥३२॥ कंस मारि सुर कारज किए। माता पिता वंदिते छोराए दुख बिसरचो आनंद हिए ॥ उग्रसेनको धाइ मिले हरि अभय अचल करि राज्य दियो। असुर वंश निरवंश छिनकमें ऐसो नहिं कोउ और वियो ॥ मिली कूबरी चंदन लैकै ऐसेहि हरिको नाम लियो। सुनहु सूर नृप पास जाति है बीच सुकृति अति दरश दियो ॥ ३३ ॥ राग रामकली ॥ कूबरी पूरब तपकरि राख्यो। आए श्याम भवन ताहीके नृपति महल सब नाख्यो ॥ प्रथमहि धनुष तोरि आवत हैं बीच मिली यह धाइ। तेहि अनुराग वश्य भए ताके सो हित कह्यो न जाइ ॥ देवकाज करि आवन कहिगए दीन्हों रूप अपार। कृपा दृष्टि चितवतही श्रीभई निगम न पावत पार॥ हमते दूरि दीनके पाछे ऐसे दानिदयाल। सूर सुरन करि काज तुरतहीं आवत तहां गोपाल ॥ ३४ ॥ कियो सुरकाज गृह चले ताके। पुरुष अरु नारिको भेद भेदा नहीं कुलिन अकुलीन आवतहौं काके ॥ दास दासी श्याम भजनते हूजिए रमा सम भई सो कृष्ण दासी। मिली वह सूर प्रभु प्रेमचंदन चरचिकै मनो कियो तप कोटि कासी॥३५॥राग रामकली॥ भक्त वछल श्रीयादवराई। गेह कूबरीके पगधारे जाति पाँति बिसराई ॥ पूरब भाग मानि तिन अपने चरण गही उठि धाई। सुरति रही नहिं गेह देहकी आनँद उर न समाई॥प्रभु गहि बाँह पास बैठारी सो सुख कह्यो न जाइ। सूरदास प्रभु सदा भक्तवश रंक न गनहि न राइ ॥ ३६ ॥ राग नट ॥ कुबिजा सदन आए श्याम। कृपा करि हरि गए प्रथमहि भई अनूपम वाम ॥ प्रीतिके वश दीनबंधु सु भक्तवत्सल नाम। मिली मारग मलय लैकरि भए पूरण काम ॥ उर्वशी पटतरहि नाहीं रमाके मनताम। सूर प्रभु महिमा अगोचर बसे दासी धाम ॥ ३७ ॥ राग धनाश्री॥कुबिजा हरिकी दासी आहि।जैसे आपु भाजि गोकुलरहे तैसे राखी ताहि॥रूप रतन दुराइ हो राख्यो जैसे नली कपूर। जैसे छाप अमोल रतन भरि कह जानै जो क्रूर॥ वैसेहि रही कूबरीदासी अविनाशी की आहि। सूरदास प्रभु कंस मारिकै लई आनि तिहि चाहि ॥३८॥ मथुराके नर नारि कहै।कहा मिली कुबिजा चंदनलै कहा श्याम तेहि कृपा चहै ॥ कहा तपस्या करि यह राख्यो जहां तहां पुर इहै चहै। कछु नहिं कहि आवत हरि देखी इहै कह्यो प्रभु हेत वहै। तबहिं कृपाकरि सुंदरि कीन्ही यह महिमा मोहिं कहत न आवै। सूरदास भाग कूबरीको कौन ताहि को पटतर पावै ॥ ३९ ॥ कुबिजासी भागिनि को नारी। कंसहि चंदन लिए जातही बीच मिले ताको दै तारी ॥ हरि करि कृपा करी पटरानी कुबिज मिटायो डारि। इहई वात मधुपुरी जहँ तहँ दासी कहत डरत जिय भारि ॥ कुबिजा कहत न भूल्यो कोऊ ताहि उठत दै दै सब गारि। सुनहु सूर रानी सुनि पावै त्रास होत जिन मारै डारि॥४०॥राग धनाश्री॥कुबिजा तौ बडभागी है।करुणाकरि हरि जाहि निवाजी आपु रहे तहँ रांजी है ॥ पूरब तप फल बिलसन लागी मनके भाव पुरावति है। मथुरा नर नारिन मुख बानी रह्यो जहँ तहँ जै जै है ॥ दैत्य विनाशी तुम तहां आए यह लीला जानै पै वै। सूरदास प्रभु भावहिके वश मिलत कृपाकै अति सुख देवै॥४१॥श्रीवसुदेव वचन राजा प्रति ॥ राग रामकली॥हरिकी कृपा

जापर होइ। ताहि कछु यह वहुत नाहीं हृदय देखो जोइ॥ कहा संशय करत याको किती कहै यह बात। असुर सैन्य सँहारि डारे भक्तजनसों नात॥ हरन करन समरथ येईहैं कहौं वारंवार। सूर हरि की कृपाते खल तरिगए संसार॥४२॥कंसवधलीला दूसरी॥राग विलावल॥कृष्ण कृपा सवहीते न्यारी॥कोटि करै तप नहीं मुरारी॥ भाव भजन कुविजा भई प्यारी। दनुज भाव बिनु मारे डारी॥ प्रथमहि रजक मारि पुर आए। धनुपयज्ञ कहँ कंस वोलाए॥तोरि कोदंड वीर सव मोरे। हित कुविजाके धाम सिधारे॥ रूपराशि निधि ताको दीन्हों। आवन कह्यो गमन तव कीन्हों॥ तहां कुवलिया राख्यो द्वारे। जात श्याम बलराम विचारे॥माली मिल्यो माल शुचि लैकै। लीन्हों कंठ श्याम अति रुचिकै॥ मनकामना तुरत फल पायो। कोटि कोटि मुख अस्तुति गायो॥ आतुर गयो कुवलिया पासा। सूरज चंद्र धरणि परगासा॥ वालक देखि महावत हरप्यो॥कान्ह पूंछ धरि तुछकरि परप्यो॥ कौतुक करि मतंग तव मारयो। गहि पटक्यो तनु नेक न टारयो॥ दुहुँन एक इक दंत उपारयो। जहाँ मल्ल तहँको पग धारयो॥ देखत रूप त्रास जिय आन्यो। मन मन काल आपनो जान्यो॥ तव कोमल दरशे यदुराई॥ तुरत गए आगे सव धाई॥ मारे मल्ल एक नहिं उवरयो। पटक धरणि नृप श्रवणन घुमरयो॥ क्रोध सहित तव कंस प्रचारयो। ताहि प्रगटि तुरतहिं तेहि मारयो॥ अमर नाग नर कहि कहि भाखै॥सदा आपने जनको राखै॥ राजा उग्रसेन कहवाए। मात पिता बंदिते छोडाए॥ इतने काज किए हरि नीके। कुविजा प्रेम बँधे हरि हीके॥ आतुर हरि ताके गृह आए। रानिन बोधि महल नहिं भाए॥ चितवत मंदिर भए अवासा। महल महल लाग्यो मणि पासा॥ जवहिं सुने कुविजा हरि आए। पाटम्बर पाँवडे डसाये॥ कुविजा ते भई राजकुमारी। रूप कहा कहौं कृष्ण पियारी॥ टेढी जे हरि सूधी कीन्हीं। लक्षण अंग अंग प्रति दीन्हीं॥ राजा हरि कुविजा पटरानी। मथुरा घर घर सवही जानी॥ गोप सखा यह सुनत न माने। त्रासहिंमें सब रहत सकाने॥ मारयो कंस सुनत सव शंके। बलमोहन आए नहिं दंके॥व्रजते चले भए पट यामा॥व्याकुल महरि होति लै नामा॥ प्रजा जानि मन मन डरपाहीं। कैसे वल मोहन व्रज जाहीं॥ यहि अंतर हरि आए तहँहीं। नंद गोप सव राखे जहँहीं॥ नृप उद्धव अक्रूरहि लीन्हों। तहां गवन प्रभु सूरज कीन्हों॥४३॥राग विलावल॥यदुवंशी कुल उदित कियो। कंस मारि पुहुमी उद्धारी सुरन कियो निर्भय सु हियो॥घर घर नगर अनंद वधाई मनवांछित फल सवनि लहो। निगड तोरि मिलि मात पिताको हरप अनल करि दुखहि दहो॥ उग्रसेन मथुरा करि राजा ऐसे प्रभु रक्षक जनको। कहुँ जनमें कहुँ कियो पान पय राखि लेत भक्तन पनको॥ आपुन गए नंद जहँ वासा हलधर अग्रज संग लिए। सूर मिले नंद हरपवंत ह्वै व्रज चलिहैं अति हरप हिए॥ ४४॥ अरस परस सब ग्वाल कहैं। जब मारयो हरि रजक आवतही मन जान्यो हम नहिं निवहैं॥ वैसो धनुप तोरि सव योधा तिन मारत नहिं विलम करयो। मल्ल मतंग तिहूँपुर गामी छिनकहि में सो धरणि परयो॥ वैसे मल्लनि दाँव विसारे मारि कंस निरवंश कियो। सुनहु सूर ये हैं अवतारी इनते प्रभु नहिं और वियो॥ ४५॥ नंद गोप सव सखा निहारत यशुमति सुतको भावनही। उग्रसेन वसुदेव उपंगसुत सुफलकसुत वैसे सँगही॥ जवहीं मन न्यारो हरि कीन्हों गोपन मन इह व्यापि गई। वोलि उठे यहि अंतर मधुरे निठुर ज्योति जो ब्रह्ममई॥ अति प्रतिपाल कियो तुम हमरो सुनत नंद जिय झझकि रहे। सूरदास प्रभुकी लीला यह वसुदेवसों मोसों वचन कहे॥ ४६॥राग विलावल॥ काहि कहत प्रतिपाल

कियो । मोसों कहत होहि जिनि ऐसी नैंन ढरत नाहिं भरत हियो ॥ शंकितनंद निरसबानी सुनि बिलम करत कहा क्यों न चलैं । कंसमारि रजधानी दीन्ही ब्रजते बहुरौ आनि मिलैं ॥ मनहीं मन ऐसी उपजावत वै उत ब्रह्म ब्रह्म दरशी । सूर पिताको मात कौनके रहत सबनमें वै परशी॥४७॥ तब बोले हरि नंदसों मधुरे करि बानी । गर्गवचन तुमसों कही नाहिं निहचै जानी ॥ मैं आयो संसारमें भुवभार उतारन । तिनको तुम धनि धन्यहौ कीन्हों प्रतिपारन ॥ मात पिता मेरे नहीं तुमते अरु कोऊ । एक बेर ब्रजलोगको मिलिहौ सुनौ सोऊ ॥ मिलन हिलन दिनचारिको तुम तो सब जानौं । मोको तुम अति सुखदियो सो कहा बखानौं ॥ मथुरा नर नारी सुनै व्याकुल ब्रजवासी।सूर मधुपुरी आइकै ये भए अविनासी ॥ ४८ ॥राग टोडी ॥निठुर वचन जिनि कहौ कन्हाई। अतिही दुसह सह्यो नहिंजाई ॥ तुम हँसिकै बोलत ए बानी । मेरे नयन भरत है पानी ॥ अब ए बोल कबहुँ जिनि बोलौ । तुरत चलौ ब्रज आँगन डोलौ ॥ पंथ निहारत यशुमति ह्वैहै । तुमबिन मोको देखि सुखैहै ॥ तब हलधर नंदहि समुझावत । कछु करि काज तुरत ब्रज आवत ॥ जननि अकेली व्याकुल ह्वै है । तुमहिं गए कछु धीरज लैहै ॥ बहुल कियो प्रतिपाल हमारो । जाइ कहां उरध्यान तुम्हारो ॥ व्याकुल होन जननि जिनि पावै । बार बार कहि कहि समुझावै ॥ व्याकुल नंद सुनत ए बानी । डसि मानौं नागिनी पुरानी ॥ व्याकुल सखा गोप भए व्याकुल । अंतकदशा भयो भय आकुल॥सूर श्याम मुख निरखत ठाढे॥मानौं चितेरे लिखि सब काढे ॥ ४९ ॥ राग सोरठ ॥ गोपालराइ हौं न चरण तजि जैहौं । तुमहिं छाँडि मधुवन मेरे मोहन कहा जाइ ब्रज लैहौं ॥ कैहौं कहा जाइ यशुमतिसों जब सन्मुख उठि ऐहैं । प्रातसमय दधि मथत छाँडिकै काहि कलेऊ दैहैं ॥ बारहवर्ष दयो हम ठाढो यह प्रताप बिनुजाने । अब तुम प्रगट भए वसुदेव सुत गर्गवचन परमाने॥ कत हम लागि महारिपु मारे कत आपदा बिनासी । डारि न दियो कमल करते गिरि दबि मरते ब्रजवासी ॥ बासर संग सखा सब लीन्हें टेरि न धेनु चरैहौ । क्यों रहिहैं मेरे प्राण दरश बिनु जब संध्या नहिं ऐहौ ॥ अब तुम राज्य करौ कोटिक युग मातपिता सुख देहौ । कबहुँक तात तात मेरे मोहन या सुख मोसों कैहौ ॥ ऊरध श्वास चरण गति थाक्यो नैनन नीर न रहाइ । सूरनंद बिछुरेकी वेदन मोपै कहिय न जाइ॥५०॥ राग बिलावल ॥ वेगिब्रजको फिरिये नंदराइ।हमहिं तुमहिं सुत तातको नातो और परयो है आइ ॥ बहुत कियो प्रतिपाल हमारो सो नहिं जीते जाइ।जहां रहै तहँ तहाँ तुम्हारे डारो जिनि बिसराइ॥माया मोह मिलन अरु बिछुरन ऐसेही जगजाइ।सूर श्यामके निठुर वचन सुनि रहे नयन जल छाइ॥५१॥राग नट॥यह सुनि भए व्याकुल नंद । निठुर बाणी कही जब हरि परि गए दुखफंद ॥ निरखि मुख मुख रहे चकृत सखा अरु सब गोप । चरित ए अक्रूर कीन्हें करत मन मन कोप ॥ धाइ चरणन परे हरिके चलहु ब्रजको श्याम । कंस असुर समेत मारे सुरनके करि काम ॥ मोचि बंदन राजदीनों हर्ष भए वसुदेव । सूर यशुमति बिनु तुम्हारे कौन जानै देव ॥ ५२ ॥ राग सोरठ ॥ नंद बिदा ह्वै घोष सिधारौ । बिछुरन मिलन रच्यो विधि ऐसो यह संकोच निवारौ ॥ कहियो जाइ यशोदा आगे नैन नीर जिनि ढारौ । सेवा करी जानि सुत अपने कियो प्रतिपाल हमारौ ॥ हमैं तुम्हें कछु अंतर नाहीं तुम जिय ज्ञान बिचारौ । सूरदास प्रभु यह बिनतीहै उर जिनि प्रीति बिसारौ ॥ ५३ ॥ राग सोरठ ॥ मेरे मोहन तुमहिं विना नहिं जैहौं । महरि दौरि आगे जब ऐहै कहा ताहि मैं कैहौं ॥ माखन मथि राख्यो ह्वैहै तुम हेतु चलौ मेरे वारे। निठुर भए मधुपुरी आइकै काहे असुरन मारे ॥ सुख पायो वसुदेव देवकी अरु सुख सुरन

दियो । यहै कहत नँदगोप सखा सब बिदरन चाहत हियो ॥ तब माया जडता उपजाई ऐसो प्रभु यदुराई । सूर नंद परबोधि पठावत निठुर ठगोरी लाई ॥५४ ॥ राग नट॥ नंदहि कहत हरि ब्रज जाहु । कितिक मथुरा ब्रजहि अंतर जिय कहा पछिताहु ॥ कहा व्याकुल होत अतिहीं दूरिहूं कहुँ जात। निठुर उरमें ज्ञान बरत्यो मानि लीन्हीं बात ॥ नंद भए कर जोरि ठाढे तुम कहे ब्रज जाउ।सूर सुख यह कहत वाणी चित नहीं कहुँ ठाउ ॥ ५५ ॥राग बिलावल॥तुम मेरी प्रभुता बहुत करी । परम गँवार ग्वाल पशुपालक नीच दशाले उच्च धरी ॥ रोग दोष संताप जनमके प्रगट-तही तुम सबै हरी । अष्ट महासिधि और नवो निधि करजोरे मेरे द्वार खरी ॥ तीनिलोक अरु भुवन चतुर्दश वेद पुराणनसही परी । सूरदास प्रभु अपने जनको देत परमसुख घरी घरी ॥ ॥५६॥राग रामकली॥उठे कहि माधौ इतनी बात। जेते मान सेवा तुम कीन्हीं बदलो दयो न जात॥पुत्र हेतु-प्रतिपाल कियो तुम जैसे जननी तात । गोकुल बसत खवावत खेलत दिवस न जान्यो जात॥ होहु बिदा घरजाहु गुसाईं माने रहियो नात । ठाढो थक्यो उतर नहिं आवै लोचन जल न समात॥ भए बलहीन खीन तनुकंपित ज्यों बयारि बशपात । धकधकात मन बहुत सूर उठि चले नंद पछिता-त ॥५७॥ राग नट॥ फिरिफिरि नंदन उत्तर दीन्हों । रोम रोम भरिगयो वचन सुनि मनहुँ चित्र लिखि कीन्हों॥ यहतो परंपरा चलि आई सुख दुख लाभ अरु हानि । हम पर बचा मया करि रहियो सुत अपनो जिय जानि ॥ को जलपै काके पल लागे निरखि वदन शिरनायो । दुखसमूह हृदय परि-पूरण चलत कंठ भरि आयो ॥ अध अध पद भुव भई कोटि गिरि जौलगि गोकुल पैठो । सूरदा-स अस कठिन कुलिशहुते अजहुँ रहत तनु बैठो ॥५८॥राग धनाश्री॥चले नंद ब्रजको समुहाइ । गोप सखा हरि बोधि पठाए सबै चले अकुलाइ ॥ काहू सुधि न रही तनकी कछु लटपटात परे पाँइ । गोकुल जात फिरत पुनि मधुवन मन पुनि उतहि चलाइ ॥ विरह सिंधुमें परे चेत बिनु ऐसेहि चले बहाइ।सूर श्याम बलराम छाँडिकै ब्रज आये नियराइ॥५९राग भैरव॥ बार बार मग जोवति माता।व्याकुल बिन मोहन बल भ्राता ॥ आवत देखि गोप नँद साथा । बिवि बालक बिनु भई अनाथा ॥ धाई धेनु बच्छा ज्यों ऐसे । माखन बिना रहैं धौं कैसे ॥ ब्रजनारी हरषित सब धाई । महरि जहाँ तहँ आतुर आई ॥ हरषित मात रोहिणी धाई । उर भरि हलधर लेहुँ कन्हाई ॥ देखे नंद गोप सब देखे । बल मोहनको तहां न पेखे॥आतुर मिलन काज ब्रजनारी।सूर मधुपुरी रहे मुरारी ॥६०॥ अथ नंद ब्रजआगमन यशोदा वचन नंद प्रति ॥ राग सोरठ ॥ नंदहि आवत देखि यशोदा आगे लैनगई ।अति आतुर गति कान्ह लैनको मनआनंद भई ॥ कहां नवनीत चोर छाँडे मेरे देखत नारि नई । तेहि खन गोप सरोवर मानो पुरइनि हेम मई ॥ गर्ग कथा तब कहि जु सुनाई सो अब प्रगट भई । सूर मोहिं फिरि फिरि आवत गहि झगरत नेतरई॥६१॥राग कल्याण॥श्याम राम मथुरा तजि नंद ब्रजहि आए।बार बार महरि कहति जनम धृग कहाए ॥ कहूं कहति सुनी नहीं दशरथकी करनी । यह सुनि नंद व्याकुल ह्वै परे मुरछि धरनी ॥ टेरि टेरि पुहुमी परति व्याकुल ब्रजनारी । सूरज प्रभु कौन दोष हमको जु बिसारी॥६२॥राग सारंग॥उलटि पग कैसे दीन्हों नंद। छाँडे कहाँ उभय सुत मोहन धृगजीवन मति मंद ॥ कै तुम धन यौवन मदमाते कै तुम छूटे बंद । सुफलकसुत बैरी भयो हमको ले गयो आनँदकंद॥राम कृष्ण बिन कैसे जीजै कठिन प्रीतिके फंद । सूरदास प्रभु भई अभागिनि तुम बिनु गोकुलचंद॥६३राग मलार॥दोउ ढोटा गोकुलनायक मेरे।काहे नंद छाँडि तुम आए प्राणजीवन सब केरे॥ तिनके जात बहुत दुखपायो रौरि परी यहि खेरे । गोसुत गाइ फिरतहैं दहदिश बने चरित्र न थोरे ॥

प्रीति न करी राम दशरथकी प्राण तजे बिन हेरे।सूरनंदसों कहति यशोदा प्रबल पाप सब मेरे॥६४॥ राग विहागरो॥यह गति करत नाहिं छाजी। हरि बिन विकल भयो न गेया परि कुल कुठार जननी कत लाजी॥राम कृष्ण तजि गोकुल आए छतियां क्षोभरही क्यों साजी। कहा अकाज भयो दशरथको लइ जु गयो अपनी जग बाजी॥ बातैंपै रहि रहति कहनको सब जग जात कालकी खाजी। सूर यशोदा कहति सु धृग मति जो गिरिधरन विमुखह्वै भाजी॥ ६५॥राग सोरठ॥ यशोदा कान्ह कान्हकै बूझै।फूटि न गईं तिहारी चारौं कैसे मारग सूझै॥इक तनु जरोजात बिन देखे अव तुम दीने फूंक।यह छतियाँ मेरे कुँवर कान्ह बिनु फाटि न गए द्वै टूक॥ धृग तुम धृग वै चरण अहोपति अधवोलत उठि धाए। सूर श्याम बिछुरनकी हमपै देन बधाई आए॥ ६६॥ नंद हरि तुमसों कहा कह्यो। सुनि सुनि निठुर वचन मोहनके क्यों करि हृदय रह्यो॥ छाँडि सनेह चले मंदिर कत दौरि न चरन गह्यो। फाटि न गई वज्रकी छाती कत यहि शूल सह्यो॥ सुरति करत मोहनकी बातैं नैनन नीर बह्यो। सुधि न रही अति गलित गात भयो जनु डसिगयो अह्यो॥ कृष्ण छाँडि गोकुल कत आए चाखन दूध दह्यो। तजे न प्राण सूर दशरथलौं हुतौ जन्म निबह्यो॥६७॥ मेरो अति प्यारो नँदनंद। आए कहाँ छाँडि तुम उनको पोचकरी मतिमंद॥ बल मोहन दोउ पीड नयनकी निरखतही आनंद। सरवर घोष कुमोदिनि व्रजजन श्याम वदन विनचंद॥ काहे न पाँइ परे वसुदेवके घालि पाग गरे फंद।सूरदास प्रभु अबके पठवहु सकल लोक सुनिवंद॥६८॥अथ नंदवचन यशोदाप्रति॥ राग रामकली॥ तब तू मारिबोई करति। रिसनि आगे कहि जो आवत अबलै भाँडे भरति॥ रोसकै कर दाँवरी लै फिरति घर घर धरति। कठिन हिय करि तब जो बाँध्यो अब वृथा करि मरति॥ नृपति कंस बुलाइ पठयो बहुतकै जिय डरति।इह कछू विपरीत मो मन माँझ देखी परति॥ होनहारी होइहै सोइ अब यहां कत अरति।सूर तब किन फेरि राखे पाइ अब केहि परति॥ ६९॥ यशोदा वचन नंदप्रति राग अडानो॥ कहा ल्यायो तजि प्राणजीवनधन। रामकृष्ण कहि मुरछि परी घर यशोदा देखत लोगन॥ विद्यमान हरि वचन श्रवण सुनि कैसे गए न प्राण छूटि तन। सुनि यह कथा दशरथकी तऊ नहिं लाज भई तेरे मन॥मंद हीन अति भयो नंदअति होत कहा पिछताने छिन छिन। सूर नंद फिरि जाहु मधुपुरी ल्यावहु सुत करि कोटि जतन॥७०॥समूहव्रजलोग वचन॥राग केदारो॥ कहो नंद कहां छाँडे कुमार। कैसे प्राण रहे सुत बिछुरत पूछैं गोपी ग्वार॥ करुणा करै यशोदा माता नैन न नीर बहै असरार। चितवत नंद ठगेसे ठाढे मानो हारचो हेम जुआर॥मुरली नहिं सुनिअत व्रजमें सुर नर मुनि नाहिं करतहै बार।सूरदास प्रभुके बिछुरेते कोऊ नहीं झांकते द्वार॥ ७१॥ अथ ग्वालवचन राग नट॥ ग्वालन कही कही ऐसी जाइ। भए हरि मधुपुरी राजा बड़े वंश कहाइ॥ सूत मागध वदत विरदहि वरणि वसुद्यौ सात। राजभूषण अंग भ्राजत अहीर कहत लजात॥ मात पितु वसुदेव दैवे नंद यशुमति नाहिं। यह सुनत जल नैन ढारत मींजि कर पछिताहिं॥ मिली कुबिजा मलै लैकै सो भई अरधंग। सूर प्रभु वशभए ताके करत नानारंग॥ ७२॥ अथ गोपीवचन कुविजाप्रति परस्पर तरक वदत राग गौरी॥ कुबिजा मिली कहौ यह बात। मात पिता वसुदेव देवकी मन दुख सुख हरपात॥ सुंदरि भई अंगपरसतहीं करी सुहागिनि भारी। नृपति कान्ह कुबिजा पटरानी हँसति कहति व्रजनारी॥ सौतिशाल उरमें अतिशाल्यो नखशिख लौं भहरानी। सूरदास प्रभु ऐसेई भाई कहति परस्पर वानी॥७३॥रागकल्याण॥कुबिजाको नाम सुनत विरह अनल जूडी। रिसन नारि झहरि उठी क्रोध मध्य बूडी॥ आवनकी आश मिटी ऊरध सब श्वासा।

कुबिजा नृप दासी हम सबकरी निरासा॥लोचन जलधार अगम बिरहनदी बाढी। सूर श्याम गुण सुमिरत बैठी कोउ ठाढी ॥७४॥राग धनाश्री॥कुबिजा श्याम सुहागिनि कीन्ही। रूप अपार जाति नहिं चीन्ही॥ आपु भए पति वह अरधंगी। गोपिन नाव धरयो नवरंगी॥ वै बहु रवन नगरकी सोऊ।तैसोइ संग बन्यो अब दोऊ॥एक एकते गुणन उजागर। वह नागरि वै तौ अतिनागर॥वह जोइ कहत श्याम सोइ मानत। निशि दिन वाके गुणहि बखानत॥जानि अनोखी मनहिं चोरावै। सूर प्रभू अब नहिं व्रज आवै॥७५॥राग रामकली॥ कुबिजा नई पाई जाइ। नवल आपुन बनी नवेली नगर रही खेलाइ॥ दास दासी भाव मिलिगयो प्रेमते भए एक। निठुर ह्वै सखी गए हमते जानि साह अनेक॥ लेन जब अक्रूर आयो तुरंत लाग्यो कान। नई कुबिजा उन सुनाई सूर प्रभु मन मान॥७६॥राग धनाश्री॥ कैसे री यह हरि करिहैं।राधाको तजिहैं मनमोहन कहाँ कंस दासी धरिहैं॥ कहा कहति वह भई रानी वै राजा भए जाइ वहां। मथुरा बसत लखत नहिं कोऊ को आयो को रहत कहां॥ लाज बेंचि कूबरी बिसाही संग न छाँडत एक घरी। सूर ताहि परतीति न काहू मनसि हात यह करनि करी॥७७॥कुबिजा नाहिं तुम देखीहै। दधिबेचन जब जाति मधुपुरी मैं नीके करि पेखी है॥ महल निकट मालीकी बेटी देखत जेहि नर नारि हँसै। कोटि बार पीतरि ज्यों डाहौ कोटिवार जो कहा कसै॥ सुनि यह ताहि सुंदरी कीन्ही आपु भए ताको राजी। सूर मिलै मन जाहि जाहिसों ताको कहा करै काजी॥७८॥कोटि करो तनु प्रकृति न जाइ। ए अहीर वह दासी पुरकी विधिना जोरी भली मिलाइ॥ ऐसेनको सुख न लीजै कहा करौ कहि आवत मोहिं। श्यामहि दोष किधौं कुबिजाको इहै कहौ मैं बूझति तोहिं॥ श्यामहि कहा दोष कुबिजाको चेरी चपल नगर उपहास। टेढी टेकि चलत पग धरणी यह जानै दुख सूरजदास॥७९॥ राग नट॥हरिही करी कुबिजा ढीठ। टहल करती महल महलनि अब संग बैठी पीठ॥ नेकही मुँहपाइ भूली अति गई इतराइ। जात आवत नहीं कोऊ इहै कहै पठाइ॥ वे दिना गए भूलि तोको दिवस दशकी बात। सूर प्रभु दासी लोभाने व्रज वधू अनखात॥८०॥राग नट॥ देखो कूबरीके काम। अब कहावत पाटरानी बड़े राजा श्याम॥ कहत नहिं कोउ उनहि दासी वै नहीं गोपाल। वे कहावत राजकन्या वै भए भूपाल॥पुरुष केरी सबै सोंहै कूबरी केहि काज।सूर प्रभुकी कहा कहिए बेंचि खाई लाज॥ ८१॥ यह सुनि हमहिं आवति लाज। जाय मथुरा कंस मारयो कूबरीके काज॥ लोग पुरमें बसत ऐसेइ सबन इहै सोहात। कबहुँ कोऊ कहत नाहीं श्याम आगे बात॥ कहा चेरी नारि कीन्ही कहा आपुन होत। तुम बड़े यदुवंश राजा मिले दासी गोत॥ अजहुँ कहै सुनाइ कोई करै कुबिजा दूरि। सूर डाहनि मरत गोपी कूबरीके झूरि॥ ८२॥ राग बिलावल॥कंस बध्यो कुबिजा के काज। और नारि हमको न मिली कहुँ कहा गँवाई लाज॥ जैसे काग हंसकी संपति लहसुन संग कपूर। जैसे कंचन कांच बराबरि गेरू काम सिंदूर॥ भोजन साथ शूद्र ब्राह्मणके तैसोइ उनको साथ। सुनहु सूर हरि गाइ चरैयां तौ भए कुबिजा नाथ॥८३॥राग गौरी॥ भामिनि कुबिजासों रँगराते। राजकुमारि नारि जो पवते तौ कबहि न अंग समाते॥ रीझे जाइ तनक चंदन लै मधुवन मारग जाते। ताकी कहा बडाई कीजै ऐसे रूप लुभाते॥ ए अहीर वह कंसकी दासी जोरी करी विधाते। व्रजवनिता त्यागी सूरज प्रभु बूझी उनकी बाते॥८४॥ राग आसावरी॥ वै कहा जानैं पीर पराई।सुंदर श्याम कमलदल लोचन हरि हलधरके भाई॥ मुख मुरली शिर मोर पखौआ बन बन धेनु चराई। जे यमुना जलरंग रँगे हैं ते व्रजहूं नहिं तजत कराई॥ उहँई भूले देखि कूबरी हम सब गए बिसराइ। सूर

चातकी बूँद भई हो हेरत हेरत रही हिराइ ८५॥ राग जैतश्री॥सखी री काके मीत अहीर। काहेको भरि भरि ढारति हौं इन नैन राहके नीर ॥ आपुन पियत पियावत दुहि दुहि इन धेनुनके क्षीर। निशिवासर छिन नहिं बिसरतहै जो यमुनाके तीर ॥ मेरे हियरे दौं लागतिहै जारत तनुकी चीर। सूरदास प्रभु दुखित जानिकै छाँडि गए बे पीर॥८६॥ अथ श्यामरंगको तरक वदति राग मलार॥सखी री श्याम सबै इक सार। मीठे वचन सुहाये बोलत अंतर जारनहार ॥ भवँर कुरंग काग अरु कोकिल कपटिनकी चटसार। कमल नयन मधुपुरी सिधारे मिटि गयो मंगलचार ॥ सुनहु सखी री दोष न काहू जो विधि लिखो लिलार। यह करतूति इन्हैकी नाईं पूरव विविध विचार ॥ उमँगी घटा नाषि आवै पावसप्रेम की प्रीति अपार।सूरदास सरिता सर पोषत चातक करत पुकार ८७॥ राग मलार॥सखी री श्याम कहा हितु जानै।कोऊ प्रीति करै कैसेहूँ वे अपनो गुण ठानै॥ देखो या जलधरकी करनी वरषत पोषै आनै।सूरदास सरवस जो दीजै कारो कृतहि न मानै॥८८॥ राग सारंग॥तिनहि न पतीजै री जे कृतही न मानै ज्यों भँवरा रस चाखि चाहिकै तहां जाइ जहां नवतन जानै॥कोयल काग पालि कहा कीन्हों मिले कुलहि जब भए सयाने। सोई घात भई नंदमहरकी मधुबनते जो आने ॥ तबतो प्रेम बिचार न कीन्हों होत कहा अबके पछिताने। सूरदास जे मनके खोटे अवसर परे जाहिं पहिचाने ॥८९॥ राग धनाश्री ॥ तबते मिटे सब आनंद। या ब्रजके सब भाग संपदा लैजु गए नँदनंद ॥ विह्वल भई यशोदा डोलत दुखित नंद उपनंद। धेनु नहीं पय स्रवति रुचिर मुख चरति नाहिं तृण कंद ॥ विषम वियोग दहत उर सजनी बाढिरहे दुखदंद। शीतल कौन करै री माई नाहिं इहां हरिचंद॥ रथ चढि चले गहे नहिं काऊ चाहिरही मतिमंद।सूरदास अब कौन छोडावे परे विरहके फंद ॥ ९० ॥ राग कान्हरो॥अब वह सुरति होत कत राजनि। दिनदश रहे प्रीति करि स्वारथ हित रहे अपने काजनि ॥ सबै अजान भए सुनि मुरली वधिक कपटकी बाजनि। अब मन थक्यो सिंधुके खग ज्यों फिरि फिरि शरन जहाजनि ॥ वह नातो तादिनते टूट्यो सुफलकसुत मग भाजनि। गोपीनाथ कहाइ सूर प्रभु मारतहौ कत लाजनि॥ ९१ ॥ राग गौरी॥ब्रज री मनो अनाथ कियो। सुन री सखी यशोदानंदन सुख संदेह दियो ॥ तब हम कृपा श्यामसुंदरकी कर गिरि टेकि लियो। अरु प्रति गाइ वच्छ ग्वालनको जल कालिंदि पियो ॥ यह सब दोष हमहिं लागत है बिछुरन फट्यो न हियो। सूरदास प्रभु नँदनंदन बिनु कारण कौन जियो ॥९२॥ राग केदारो॥अब तो हैं हम निपट अनाथ। जैसे मधु तोरेकी माखी त्यों हम बिनु ब्रजनाथ ॥ अधर अमृतकी पीर मुई हम बालदशाते जोरि। सो छिडाय सुफलक सुत लैगयो अनायासही तोरि ॥ जौलगि पानि पलक मीडत रही तौ लगि चलि गए दूरि। करि निरंध निबहै दै माई आँखिन रथ पद धूरि ॥ हम निशिदिन करि कृपणकी संपति कियो न कबहूं भोग। सूर विधाता लिखि राखी वह कुबिजाके सुख जोग ॥९३॥ अथ नंद यशोदा वचन परस्पर ॥ राग रामकली ॥ इक दिन नंद चलाई बात। कहत सुनत गुण राम कृष्णके ह्वै आयो परभात ॥ वैसेहि भोर भयो यशुमतिको लोचन जल न समात। सुमिरि सनेह विहारि उर अंतर ढरि आवत ढरिजात ॥ यद्यपि वै वसुदेव देवकी हैं निज जननी तात। वार एक मिलि जाहु सूर प्रभु धाइहूनके नात॥९४॥ राग गौरी चूक परी हरिकी सिवकाई। यह अपराध कहांलौं कहिए कहि कहि नंदमहर पछिताई॥कोमल चरण कमल कंटक कुश हम उनपै बनगाइ चराई। रंचक दधिके काज यशोदा बाँधे कान्ह उलूखल लाई ॥ इंद्र कोप जानि ब्रज राखे वरुन फांस मान मेरी निठुराई। सूर अजहुँ नातो मानत है प्रेमसहित करै नंद दोहाई ॥ ९५ ॥ राग सोरठ ॥ हरिकी एकौ बात न जानी। कहौ कंत कहा

तज्यो श्यामको अतिहि विकल पूछति नँदरानी ॥ अव व्रज सूनो भयो गिरिधर विनु गोकुल मणि बिलगानी । दशरथ प्राण तज्यो छिन भीतर बिछुरत शारंगपानी ॥ ठाढी रही ठगोरी डारी बोलत गदगद बानी । सूरदास प्रभु गोकुल तजि गए मथुराही मनमानी ॥ ९६ ॥ ॥राग सारंग ॥ लै आवहु गोकुल गोपालहि । पाँइन परिकै बहु बिनती करि बलि छलि वाह रसालहि ॥ अबकी बार नेक देख-रावहु यहि व्रज नंद आपने लालहि । गाइन गनत ग्वाल गोसुत सँग सिखवत वेणु रसालहि ॥ यद्यपि महाराज सुख संपति कौन गिने मोती मणि लालहि । तदपि सूर वे छिन न तजतहैं वा घुँघुचीकी मालहि॥९७॥राग सोरठ॥सराहों तेरो नंद हियो । मोहनसों सुत छाँडि मधुपुरी गोकुल आनि जियो ॥ कहा कहौं मेरे लाल लडैते जब तू विदा कियो । जीवन प्राण हमारे व्रजको वसुदेव छीनि लियो ॥ कह्यो पुकारि पार पचिहारी बरजत गमन कियो । सूरदास प्रभु श्यामलाल धन ले परहाथ दियो ॥ ॥९८॥ राग विलावल ॥ यद्यपि मन समझावत लोग । शूलहोत नवनीत देखि मेरे मोहनके मुख योग ॥ निशिबासर छतियाँ लै लाऊं बालक लीला गाऊं । वैसे भाग बहुरि फिरि ह्वैहैं मोहन मोद खवाऊं ॥ जा कारण मुनि ध्यान धरैं शिव अंग विभूति लगावैं । सो बालकलीला धरि गोकुल ऊखल साथ बँधावै ॥ विदरत नहीं बज्रको हृदय हरि वियोग क्यों सहिए । सूरदास प्रभु कमल-नैन विनु कौने विधि व्रज रहिए ॥९९॥राग कान्हरो ॥ नंदव्रज लीजे ठोंकि बजाइ।देहु विदा मिलि जाहिं मधुपुरी जहँ गोकुलके राइ । नैनन पंथ गयो क्यों सूझ्यो उलटि दियो जब पाइ ॥ रघुपति दशरथ सुनीहै पर मरिवे गुण गाइ ॥ भूमि मंशान निदित ए गोकुल मनहु धाइ धाइ खाइ । सूरदास प्रभु पास जाहिं हम देखैं रूप अघाइ॥२७००॥राग सोरठ॥माईहौं किन संग गई । हो ए दिन जानतही बूडी लोगनकी सिखई ॥ मोको वैरी भए कुटुँव सब फेरि २ व्रज गाडी । जो हौं कैसेहु जान पावती तौ कत आवत छाँड़ी ॥ अवहौं जाइ यमुनजल वहिहौं कहा करौं मोहिं राखी । सूरदास वा भाइ फिरतहौं ज्यों मधु तोरे माखी ॥१॥ राग मलार ॥ हौं तो माई मथुराही पै जैहौं । दासी ह्वै वसुदेव राइकी दरशन देखत रैहौं ॥ राखि राखि एते दिवस मोहिं कहा कियो तुम नीको । सोऊ तो अक्रूर गए लै तनक खिलौना जीको ॥ मोहिं देखिकै लोग हँसैंगे अरु किन कान्ह हँसै । सूर अशीश जाइ देहौं जिनि न्हातहु वार खसै ॥२॥ राग सारंग॥पंथी इतनी कहियो बात । तुम विनु इहां कुँवर वर मेरे होत जिते उतपात ॥ बकी अघासुर टरत न टारे बालक बनहिं न जात । व्रजपिंजरी रुँधि मानों राखे निकसनको अकुलात ॥ गोपी गाइ सकल लघु दीरघ पीत वरण कृश गात । परम अनाथ देखियत तुम विनु केहि अवलंबिये प्रात॥कान्ह कान्ह कै टेरत तबधौं अब कैसे जिय मानत । यह व्यवहार आजुलौं है व्रज कपट नाट छल ठानत॥दशहू दिशिते उदित होतहैं दावानलके कोट । आँखिन मूँदि रहत सन्मुखह्वै नाम कवचदै ओट ॥ ए सब दुष्ट हते अरिजेते भए एकही पेट । सत्वर सूर सहाइ करौ अब समुझि पुरातन हेट ॥३॥ राग सारंग॥कहियो श्यामसों समुझाइ।वह नातो नहिं मानत मोहन मनौ तुम्हारी धाइ ॥ एकवार माखनके काजे राखे मैं अटकाइ । ताको बिलग मानों जिनि मोह-न लागत मोहिं बलाइ ॥ वारहिवार इहै लवलागी गहे पथिकके पाँइ । सूरदास या जननीको जिय राखौ वदन देखाइ ॥ ४ ॥ राग विलावल ॥ यद्यपि मन समुझावत लोग । शूल होत नवनीत देखि मेरे मोहनके मुखयोग ॥ प्रातकाल उठि माखन रोटी को विनमांगे दैहै । अब उहि मेरे कुँ-वर कान्हको छिन छिन अंकम लैहै ॥ कहियो पथिक जाइ घर आवहु रामकृष्ण दोउ भैया । सूर श्याम कत होत दुखारी जिनके मोसी मैया ॥ ५ ॥ राग रामकली ॥मेरो कहा करत ह्वैहै । कहियहु

जाइ वेगि पठवहिं गृह गाइनिको द्वैहै ॥ दीजै छाँडि नगर वारी सब प्रथम बोरि प्रतिपारो। हमहूं जिय समुझैं नहिं कोऊ तुम तहि हितू हमारो ॥ आजुहि आजु कालिह कालिहहि करि भलो जगत यश लीन्हों। आजहुँ कालिह कियो चाहत हो राज्य अटल करि दीन्हों ॥ परदा सूर बहुत दिन चलती दुहुँहुनि फबती लूटि।अंतहु कान्ह आयहौ गोकुल जन्म जन्मकी बूटि॥६॥संदेशो देवकीसों कहियो। हौं तौ धाइ तुम्हारे सुतकी मया करति रहियो ॥ यद्यपि टेव तुम जानत उनकी तऊ मोहिं कहि आवै। प्रातहि उठत तुम्हारे कान्हको माखन रोटी भावै ॥ तेल उबटनो अरु तातो जल ताहि देखि भजिजाते। जोइ जोइ माँगत सोइ सोइ देती क्रम क्रम करि करि न्हाते॥सूर पथिक सुनि मोहिं रैनि दिन बढ्यो रहत उर सोच। मेरो अलक लडैतो मोहन ह्वैहै करत सँकोच ॥ ७ ॥ राग सोरठ ॥ मेरो कान्ह कमलदल लोचन। अबकी बेर बहुरि फिरि आवहु कहाँलगे जिय सोचन॥यह लालसा होत जिय मेरे बैठी देखत रैहौं। गाइचरावन कान्हकुँवरसों भूलि न कबहूँ कैहौं ॥ करत अन्याय नं बरजौं कबहूं अरु माखनकी चोरी। अपने जियत नैन भरि देखौं हरि हलधरकी जोरी॥ एक बेर ह्वैजाहु इहाँलौं अनत कहूँके उत्तर।चारिहु दिवस आनि सुखदीजै सूर पहुनई सूतर ॥ ८ ॥ अथ पंथीवाक्य देवकी प्रति ॥ राग आसावरी॥हौं इहां गोकुलहीते आई। देवकी माई पाँइ लागति हौं यशुमति इहां पठाई ॥ तुमसों महरि जुहार कह्यो है कहहु तौ तुमहिं सुनाऊं । बारक बहुरि तुम्हारे सुतको कैसेहुँ दरश न पाँऊं ॥ तुम जननी जग विदित सूर प्रभु हौं हरिको हितधाइ। जो पठवहु तौ पाहुन नाते आवहि वदन दिखाइ ॥ ९ ॥ राग सारंग ॥ जो पारि राखतहौ पहिंचानि। तौ अबकै वह मोहन मूरति मोहिं देखावहु आनि ॥ तुम रानी वसुदेव गेहनी हौं गँवारि ब्रजवासी। पठै देहु मेरो लाड लडै तौ वारौ ऐसी हाँसी ॥ भली करी कंसादिक मारे सब सुरकाज किये। अब इन गैयन कौन चरावै भरि भरि लेत हिये॥खान पान परिधान राजसुख जो कोउ कोटि लडावै तदपि सूर मेरे बारे कन्हैया माखनही सचुपावै ॥१०॥ राग सोरठ ॥ मेरे कुँवर कान्ह बिनु सब कछु वैसेहि धरचो रहै। को उठि प्रात होत लै माखन कोकर नेत गहै ॥ सूने भवन यशोदा सुतके गुनि गुनि शूल सहै। दिन उठि घेरतही घर ग्वारिनि उरहन कोउ न कहै ॥ जो ब्रजमें आनंद हो तो मुनिमन साहु न गहै॥सूरदास स्वामी विनु गोकुल कौडीहू न लहै॥११॥अथ गोपीविरह अवस्था परस्पर-वर्णनं॥राग सारंग॥चलत गुपालके चले।यह प्रीतमसों प्रीति निरंतर है ना अरधपले॥धीरज पहिल करी च-लिवेकी जैसी करत भले। धीर चलत मेरे नैनन देखे तिहिछिन अंश हले ॥ अंश चलत मेरी वलयन देखे भए अंग शिथले। मनचलि रह्यो हुतौ पहिलेही सबै चले विमले ॥ एक न चलै अब प्राण सूर प्रभु असलेउ सालसले॥१२॥राग मलार॥लोग सब कहत सयानी बातें।सुनतहि सुगम कहत न-हिं आवत बोलि जाइ नाहिं तातें॥पहिले अग्नि सुनत चंदनसी सती बहुत उमहै। समाचार ताते अरु सीरे पाछे जाइ लहै ॥ कहत फिरत संग्राम सुगम अति कुसुमलता करिवार। सूरदास शिरदेत शूरमा सोइ जानै व्यवहार ॥१३॥ बातनि सब कोइ जिय समुझावै । किहि विधि मिलनि मिलैं वै माधौ सो विधि कोउ न बतावै ॥ यद्यपि जतन अनेक रचि विधि सारि अशन विरमावै। तदपि हठी हमारे नैनन और न देखो भावै ॥ वासर निशा प्राणवल्लभ तजि रसना और न गावै। सूरदास प्रभु प्रेमहि लगिकै कहिये जो कहि आवै॥१४॥राग नट॥सब मिलि करहु कछू उपाव।मार मारन चढेउ वि-रहिनि करहु लीनो चाव ॥ हुताशन ध्वज उमँगि उन्नत चलेउ हरि दिशवाउ। कुसुम शर रिपुनंद वाहन हरपि हरपित गाउ ॥ वारि भव सुत तात नावरि अब न करिहौं काउ। बार अबकी प्राण

प्यारी विजय सखा मिलाउ ॥ रुचि विचारन मान कीजै सोई किन वहि जाउ । सूर प्रभुकी शरण रहिहौं सकल त्रिभुवन राउ ॥१५॥राग सारंग॥ करिगए थोरे दिनकी प्रीति । कहां वह प्रीति कहां यह बिछुरन कहां मधुबनकी रीति ॥ अबकी बेर मिलो मनमोहन बहुत भई विपरीति । कैसे प्राण रहत दरशन बिन मनहुँ गए युगबीति ॥ कृपा करहु गिरिधर हम ऊपर प्रेम रह्यो तनु जीति । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिना भई भुसपरकी भीति ॥१६॥ राग धनाश्री ॥ प्रीति करि दीनी गरे छुरी । जैसे वधिक चुगाइ कपटकन पीछे करत बुरी ॥ मुरली अधर चंप कर कापा मोर मुकुट लट वारि।बंक बिलोकनि लगी लोभ सम सकति न पंख पसारि ॥ तलफत छाँडि गए मधुबनको बहुरि न कीनी सार।सूर श्याम सुख संग कल्पतरु उलटि न बैठी डार॥ १७ ॥ राग मलार ॥ देखि माधोकी मित्राई । आई उघरि कनक कलईसी दै निज गए दगाई ॥ हम जानैं हरि हितू हमारे उनके चित्त ठगाई।छाँडी सुरति सब ब्रजकुलकी निठुर लोग भए माई।प्रेम निवाहि कहा वै जानैं साँचे अतिही राई । सूरदास विरहिनी विकलमति करमींजे पछिताई ॥ १८ ॥ एकहि बेर दई सब टेरी ॥ तब कत डोरि लगाइ चोरि मनु मुरली अधर धरि टेरी ॥ बाट घाट बीथी ब्रज घर बन संग लगाए फेरी । तिनकी यह करि गए पलकमें पारि विरहदुख वेरी ॥ जो परि चतुर सुजान कहावत कही समुझियो मेरी। बहुरि न सूर पाइहौ हमसी बिनदामनकी चेरी॥ १९ ॥ राग नट ॥ अबतौ ऐसेई दिन मेरे। कहा करौं सखि दोष न काहू हरिहित लोनन फेरे ॥ मृगमद मलय कपूर कुमकुमा ए सब संतत चेरे । मादप बन शशि कुसुम सकोमल तेउ देखियत जु करे रे ॥ बन बन बसत मोर चातक पिक आपुन दिए बसेरे । अब सोइ बकत जाहि जोइ भावै बरजे रहत न मेरे ॥ जे द्रुम सींचि सींचि अपने कर कियो बढाय बडेरे । तिन सुनि सूर किसल गिरि वर भए आनि नैन मग वेरे ॥ २० ॥ ॥राग सारंग॥बिनु गोपाल बैरिनि भई कुंजैं।जे वै लता लगत तनु शीतल अब भई विषम अनलकी पुंजैं॥ वृथा बहुत यमुनातट खगरो वृथा कमलफूलनि अलि गुंजैं । पवन पानि घनसारि सुमन दै दधिसुत किरिनि भानु भै भुंजैं॥ए ऊधो कहियो माधोसों मदन मारि कीन्हीं हम लुंजैं । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको मग जोवत अँखियन भई धुंजैं॥२१॥राग कान्हरो॥करकपोल भुज धरि जंघापर लेखति माई नखनकी रेखनि । सोचति विचार करति वैसी भाँति धरति ध्यान मदन मुख भेजनि ॥ नैन नीर भरि भरि जु लेत है गोपी धृग दिन जात अलेखनि । कमलनैन माधो मधुपुरी सिधारे जाके गुणन जाने सहसफन शेषनी ॥ अवधि छुडाइ सुनी री सजनी क्यों जीवहि निशि दामिनि देखनि। सूरदास प्रभु चटक गए ज्यों नाना विधि नाचत नट पेखनि॥२२॥राग कान्हरो॥सोचति राधा लिखति नखनमें वचन न कहत कंठ जलतास । छतिपर कमल कमल पर कदली पंकज कियो प्रकाश ॥ तापर अलि सारंग पर सारंग प्रति सारंग रिपुले कियो वास । तहां अरिपंथ पिता युग उदितवारिज विविध रंग भजो अभास॥सारंग सुखते परत अंबु ढरि मन शिव पूजति तपति विनास । सूरदास प्रभु हरि विरहा रिपु दाहत अंग दिखावत वास॥२३राग नट॥मैं सब लिखिशोभा जु बनाई । सजल जलद तन वसन कनक रुचि उर बहुदाम रु राई॥उन्नतकंध कटि खीन विशद भुज अंग अंग प्रति सुखदाई। सुभग कपोल नासिका नैन छबि अलक लिहित धृतपाई॥जानति हीय हलोल लेख करि ऐसेहि दिन विरमाई।सूरदास मृदु वचन श्रवणको अति आतुर अकुलाई॥२४॥राग गौरी॥सुरति करि वहाँकी बात रोइ दियो पंथी॥एकु देखि मारगमें राधा बोलि लियो॥कहियौ बीर कहांते आयो हम जु प्रणाम कियो॥ पालागों मंदिर पगु धारौ सुनि दुख यान त्रियो।गदगद कंठ हियो भरि आयो वचन कह्यो न दियो॥ सूर श्याम अभिराम ध्यान मन भर भर लेत हियो॥२५॥राग मलार॥कहियो पथिक जाइ हरिसों मेरो मन

अटको नैननके लेखे । इहै दोष दैदै झगरतहै तब निरखत सुख लगी क्योंन सेखे ॥ कैतो मोहिं बताय दवकियो लगी पलक जडजाके पेखे। ते अब अब इनपै भरि चाहत विधि जो लिखे दरशन सुख रेखे ॥ यहिविधि अनुदिन जुरति जतनकरि गनत गए अँगुरिन अबसेखे । सूरदास सुनि इनि झगरानिते नहिं चित घटत वदन विन देखे॥२६॥राग इमन ॥ नाथ अनाथनकी सुधि लीजै । गोपी गाइ ग्वाल गोसुत सब दीन मलीन दिनहि दिन छीजै।नैन सजल धारा बाढ़ी अति बूडत ब्रज किन करगहि लीजै ॥ इतनी बिनती सुनहु हमारी वारकहू पतियाँ लिखि दीजै ॥ चरणकमल दरशन नवनौका करुणासिंधु जगत यश लीजै।सूरदास प्रभु आश मिलनकी एकबार आवन ब्रज कीजै२७॥ ॥राग सारंग॥दिशिअति कालिंदी अतिकारी । अहो पथिक कहियो उन हरिसों भई विरहज्वरजारी ॥ मन पर्यंकते परी धरणिधुकि तरंग तलफ नित भारी। तट वारू उपचार चूरजल परी प्रसेद पनारी ॥ बिगलित कच कुच कास कुलिन पर पंकजु काजल सारी । मनमें भ्रमरते भ्रमत फिरतहै दिशिदिशि दीन दुखारी॥ निशिदिन चकई बादि बकतहै, प्रेममनोहर हारी । सूरदास प्रभु जोई यमुनगति सोइ गति भई हमारी॥२८॥परेखो कौन बोलको कीजे । ना हरि जाति न पाँति हमारी कहा मानि दुख लीजै ॥ नाहिन मोर चंद्रिका माथे नाहिन उर वनमाल। नाहिं शोभित पुहुपनके भूषण सुंदर श्यामतमाल ॥ नंद नंदन गोपीजन वल्लभ अब नहीं कान्ह कहावत । वासुदेव यादव कुलदीपक बंदीजन वर भावत ॥ बिसरचो सुख नातो गोकुलको और हमारे अंग। सूर श्याम वह गई सगाई वा मुरलीके संग।२९॥ बटाऊ होहिं न काके मीत । संगरहत शिरमेलि ठगौ री हरत अचानक चीत ॥ मोहे नैन रूप दरशनके श्रवण मुरलिका गीत । देखतही हरिले जु सिधारे बाँधि पछोरी पीत॥याहीतें झुकति इहै मग चितवति सुख जु भए विपरीत । सूरदास वरु भली पिंगला आशा तजि परतीत॥३०॥राग मलार॥ कहा परदेशी को पतियारो । पीछेही पछिताहि मिलहुगे प्रीति बढाइ सिधारो ॥ ज्यों मृगनाद नादके बींधे लाग्यो बान बिसारो । प्रीतिके लिए प्राण वश कीनो हरि तुम यहै बिचारो ॥ बलि अरु बालि सुपनखा बापुरी हरिते कहां दुरायो । सूरदास प्रभु जानि भलेहौ भरचो भरायो डरायो ॥ ३१ ॥ राग मलार ॥ कहा परदेशीको पतिआरो । प्रीति बढाय चले मधुवनको बिछुरि दियो दुखभारो ॥ ज्यों जलहीन मीन तरफत ऐसे विकल प्राण हमारो । सूरदास प्रभुके दरशन बिनु ज्यों बिनु दीपक भौन अँधियारो ॥ ३२ ॥ राग आसावरी॥सखी री हरिको दोष जनि देहु । ताते मन इतनो दुख पावत मेरोई कपट सनेहु ॥ विद्यमान अपने इन नैननि सूनो देखति गेहु । तदपि सखी ब्रजनाथ बिना उर फटि न होत बड वेहु॥ कहि कहि कथा पुरातन सजनी अब जिन अंतहि लेहु । सूरदास तन योगकरौंगी ज्यों फिरि फागु न मेहु॥३३राग मलार॥अब कछु औरहि चाल चाली।मदनगोपाल बिना या तनुकी सबै बातबदली॥ गृह कंदरा समान सेज भई चाहि सिंहहू थली । शीतल चंद्र सुतौ सखि कहियत तिनहूं अधिक जली ॥ मृगमद मलय कपूर कुमकुमा सींचति आनि अली । एकन फुरत विरह ज्वरते कछु लागति नाहिं भली॥वह ऋतु अमृत लता सुनि सूरज अब विषफलनि फली । हरि विधु सुख नाहिं नाहिंनै फूलति मनसा कुमुद कली३४राग सारंग॥इहिवैरिया बनते ब्रज आवते।दूरहिते वह बैन अधर धरि वारंबार बजावते।।कबहुँक काहू भाँति चतुर चित अति ऊंचे सुरगावते।कबहुँक लैलै नाम मनोहर धवरी धेनु बुलावते॥इहि विधि वचन सुनाय श्याम घन मुरछे मदन जगावते।आगम सुख उपचार विरह ज्वर वासर ताप नशावते ॥ रुचि रुचि प्रेम पियासे नैनन क्रम क्रम बलहिं बढावते । सूरदास

स्वामी तिहि अवसर पुनि पुनि प्रगट करावते॥ ३५॥ राग सारंग॥ नहिं बिसरति वह रति व्रजनाथ। हौं जु रही हठि रूठि मौन धरि सुखही में खेलत इक साथ॥ पचिहारे मैं मनायो न मानौं आपुन चरण छुए हरि हाथ। तब रिस धरि सोई उत मुख करि झुकि झाँक्यो उपरैना माथ॥ रह्यो न परै सु प्रेम आतुर अति जानी रजनी जात अकाथ। सूर श्यामहौं ठगी महा निशि पढि जु सुनाए प्रातके गाथ॥ ३६॥ राग बिलावल॥ माधौ इतने जतन तब काहेको किए। अपने जान जानि नँदनंदन अनेक भयनसों राखि लिए॥ अघ बक वृषभ वच्छ वधनते व्याकुल जीति दावानलहि पिए॥ इंद्र मान मेटि गिरि करधरि छिन छिन प्रति आनंद हिए॥ हरि बिछुरत की पीर न जानी वचन मानि हम वादि जिए। सूरदास अब वा लालन बिन कहा न सहत ए कठिन हिए॥३७॥राग गौरी॥ यह कुमया जो तबहीं करते। तौ कत इन ये जिवत आजु लौं या गोकुलके लोग उबरते॥ केशी तृणावर्त वृषभासुर कहौ कौनके मोर मरते। धूम प्रलंब व्याल दावानल हरि बिन बरहि निवाइनि वरते॥ शंखचूड बक बकी अघासुर पति वरुन कौनते डरते। सूर श्याम तौ घोष कहातौ जो तुम इती निठुराई धरते॥ ३८॥ राग मलार॥ हरि हम तब काहेको राखी। जब सुरपति व्रज बोरन लीनो दियो क्यों न गिरि नाखी॥ अबलौं हमारी जगमें चलती नई पुरानी साखी। सो क्यों झूठो होय सखी री गर्ग कथा सो भाषी॥ तो हमको होती कत यह गति निशिदिन वर्षत आषी। सूरदास यों भई फिरत ज्यों मधु दूहेकी माषी॥ ३९॥ हरि जू वै सुख बहुरि कहां। यदपि नैन निरखत वह मूरति फिरि मन जात तहां॥ मुख मुरली शिर मोरपंख बने उर घुँघुचनि को हारु। आगे धेनु रेनु तनु मंडित चितवति तिरछी चारु॥ राति दिवस अँग अँग अपने हित हँसि मिलि खेलत खात।सूर देखि वा प्रभुता उनकी कही न आवै बात॥ ४०॥ राग सारंग॥मधुवन तुम क्यों रहत हरी। विरह वियोग श्याम सुंदरके ठाढी क्यों न जरी॥ तुमहौ निलज न लज्जा तुमको फिर शिर पुहुप धरी। सुसा सियार अरु वनके पखेरू धृग धृग सबन करी॥ कौनकाज ठाढी रही वनमें काहे न उकठ परी। कपट हेतु कियो हरि हमसे खोटे होहिं खरी॥ गोविंदगुण उरते नहिं विसरत रचि रचि कुसुम भरी। बिन देखे वा नँदनंदनको फिरि फिरि फिरि न फिरी॥ जब वे मोहन वेणु बजावत शाखाटेक खरी। मोहे थावरु जड जंगम मुनि गन ध्यान टरी॥ बिछुरत हियो वालि मोहनके केउ न कल्याण करी। सुख संपति बिछुरी मोहनकी फल फूलनसों करी॥ नैननते बिछुरे नँदनंदन चितते नहीं टरी। सूरदास प्रभु विरह दवानल नखशिखलौं पसरी॥४१॥राग केदारो॥ जो सखी नाहिंनै व्रजश्याम। वर्षत होत पल सम अब सुयुग बरयाम॥ उहै गोकुल लोग वेई उहै यमुनाठाम। उहै गृह जिहि सकल संपति वनभयो सोइ धाम॥ उहै रति पति अछत सुरारिहि लेन सकतो नाम। सूर प्रभु बिनु अब कलेवर दहन लागे काम॥४२॥ राग जैतश्री॥हरि न मिले न माई री जनम ऐसेही लागो जान। चितवत मग दिवस निशा जात युग समान॥ चातक पिक वचन सखी सुनि न परतकान। चंदन अरु चंद किरति मानो अनेक भान॥ भूषण तनु पोत तज्यो रन आतुर त्रान। भीपमलौ सहत मदन अर्जुनके बान॥ सोपति तनुसेज सूर चले न चपल प्रान। दक्षिण रवि अवधि अटक इतनी जिय आन॥४३॥ राग सारंग॥ अब योंहीं लागे दिन जान। सुमिरत प्रीति लाज लागतिहै उर भयो कुलिश समान॥ लोचन रहत वदन बिनु देखे वचन सुने बिनु कान। हृदय रहत हरि पान परस बिन बिन छिदितन मनसिज बान॥मानो सखी रहे नहिं मेरे वै पहिले तनु प्रान। विधि समेतरचि चले नंदसुत विरह व्यथादे आन॥ विधि बछ हेर और

अटको नैननके लेखे । इहै दोष दैदै झगरतहै तब निरखत सुख लगी क्योंन मेखे ॥ कैतो मोहिं बताय दबकियो लगी पलक जडजाके पेखे। ते अब अब इनपै भरि चाहत बिधि जो लिखे दरशन सुख रेखे ॥ यहिविधि अनुदिन जुरति जतनकरि गनत गए अँगुरिन अवसेखे। सूरदास सुनि इनि झगरनिते नहिं चित घटत वदन विन देखे॥२६॥राग इमन ॥ नाथ अनाथनकी सुधि लीजै। गोपी गाइ ग्वाल गोसुत सब दीन मलीन दिनहि दिन छीजै।नैन सजल धारा बाढ़ी अति बूडत ब्रज किन करगहि लीजै ॥ इतनी बिनती सुनहु हमारी वारकहू पतियाँ लिखि दीजै ॥ चरणकमल दरशन नवनौका करुणासिंधु जगत यश लीजै।सूरदास प्रभु आश मिलनकी एकबार आवन ब्रज कीजै२७॥ ॥राग सारंग॥ दिशिअति कालिंदी अतिकारी। अहो पथिक कहियो उन हरिसों भई विरहज्वरजारी॥ मन पर्यंकते परी धरणिधुकि तरंग तलफ नित भारी। तट वारू उपचार चूरजल परी प्रसेद पनारी ॥ बिगलित कच कुच कास कुलिन पर पंकजु काजल सारी। मनमें भ्रमरते भ्रमत फिरतहै दिशिदिशि दीन दुखारी॥ निशिदिन चकई बादि बकतहै, प्रेममनोहर हारी । सूरदास प्रभु जोई यमुनगति सोइ गति भई हमारी॥२८॥परेखो कौन बोलको कीजै । ना हरि जाति न पाँति हमारी कहा मानि दुख लीजै ॥ नाहिन मोर चंद्रिका माथे नाहिन उर वनमाल। नहिं शोभित पुहुपनके भूषण सुंदर श्यामतमाल ॥ नंद नंदन गोपीजन वल्लभ अब नहीं कान्ह कहावत । वासुदेव यादव कुलदीपक बंदीजन बर भावत ॥ बिसरचो सुख नातो गोकुलको और हमारे अंग। सूर श्याम वह गई सगाई वा मुरलीके संग ।।२९।। बटाऊ होहिं न काके मीत । संगरहत शिरमेलि ठगौ री हरत अचानक चीत ॥ मोंहे नैन रूप दरशनके श्रवण मुरलिका गीत। देखतही हरिले जु सिधारे बाँधि पछोरी पीत॥याहीते झुकति इहै मग चितवति सुख जु भए विपरीत। सूरदास वरु भली पिंगला आशा तजि परतीत॥३०॥राग मलार॥ कहा परदेशी को पतियारो । पीछेही पछिताहि मिलहुगे प्रीति बढाइ सिधारो ॥ ज्यों मृगनाद नादके बींधे लाग्यो बान विसारो । प्रीतिके लिए प्राण वश कीनो हरि तुम यहै बिचारो ॥ बलि अरु बालि सुपनखा बापुरी हरिते कहां दुरायो । सूरदास प्रभु जानि भलेहौ भरचो भरायो डरायो ॥ ३१ ॥ राग मलार ॥ कहा परदेशीको पतिआरो। प्रीति बढाय चले मधुवनको बिछुरि दियो दुखभारो ॥ ज्यों जलहीन मीन तरफत ऐसे विकल प्राण हमारो। सूरदास प्रभुके दरशन बिनु ज्यों बिनु दीपक भौन अँधियारो॥ ३२ ॥ राग आसावरी॥सखी री हरिको दोष जनि देहु । ताते मन इतनो दुख पावत मेरोई कपट सनेहु ॥ विद्यमान अपने इन नैननि सूनो देखति गेहु । तदपि सखी ब्रजनाथ बिना उर फटि न होत बड वेहु॥ कहि कहि कथा पुरातन सजनी अब जिन अंतहि लेहु। सूरदास तन योगकरौंगी ज्यों फिरि फागु न मेहु॥३३राग मलार॥अब कछु औरहि चाल चाली।मदनगोपाल बिना या तनुकी सबै बातबदली॥ गृह कंदरा समान सेज भई चाहि सिंहहू थली। शीतल चंद्र सुतौ सखि कहियत तिनहूं अधिक जली ॥ मृगमद मलय कपूर कुमकुमा सींचति आनि अली। एकन फुरत बिरह ज्वरते कछु लाग ति नाहिं भली॥वह ऋतु अमृत लता सुनि सूरज अब विषफलनि फली। हरि विधु मुख नहिं नहिं नै फूलति मनसा कुमुद कली३४राग सारंग॥इहिवैरिया बनते ब्रज आवते।दूरहिते वह बैन अधर धरि बारंबार बजावते॥कबहुँक काहू भाँति चतुर चित अति ऊंचे सुरगावते।कबहुँक लैलै नाम मनोहर धवरी धेनु बुलावते॥इहि बिधि वचन सुनाय श्याम घन मुरछे मदन जगावते।आगम सुख उपचार विरह ज्वर वासर ताप नशावते ॥ रुचि रुचि प्रेम पियासे नैनन क्रम क्रम बलहिं बढावते । सूरदास

स्वामी तिहि अवसर पुनि पुनि प्रगट करावते ॥ ३५ ॥ राग सारंग ॥ नाहिं विसरति वह रति व्रजनाथ। हौं जु रही हठि रूठि मौन धरि सुखही में खेलत इक साथ ॥ पचिहारे मैं मनायो न मानौं आपुन चरण छुए हरि हाथ। तब रिस धरि सोई उत मुख करि झुकि झाँक्यो उपरेना माथ ॥ रह्यो न परे सु प्रेम आतुर अति जानी रजनी जात अकाथ। सूर श्यामहौं ठगी महा निशि पढि जु सुनाए प्रातके गाथ ॥ ३६ ॥ राग बिलावल॥ माधौ इतने जतन तब काहेको किए। अपने जान जानि नँदनंदन अनेक भयनसों राखि लिए ॥ अब बक वृषभ वच्छ वधनते व्याकुल जीति दावानलहि पिए ॥ इंद्र मान मेटि गिरि करधरि छिन छिन प्रति आनंद हिए ॥ हरि विछुरत की पीर न जानी वचन मानि हम वादि जिए। सूरदास अब वा लालन विन कहा न सहत ए कठिन हिए॥३७॥राग गौरी॥ यह कुमया जो तवहीं करते। तौ कत इन ये जिवत आजु लौं या गोकुलके लोग उवरते॥ केशी तृणावर्त वृषभा-सुर कहौ कौनके मारे मरते। भ्रम प्रलंब व्याल दावानल हरि विन वरहि निवाइनि वरते॥ शंखचूड बक बकी अघासुर पति वरुन कौनते डरते। सूर श्याम तौ वोष कहातौ जो तुम इती निठुराई धरते ॥ ३८ ॥ राग मल्लार॥ हरि हम तब काहेको राखी। जब सुरपति व्रज बोरन लीनो दियो क्यों न गिरि नाखी ॥ अबलौं हमारी जगमें चलती नई पुरानी साखी। सो क्यों झूठो होय सखी री गर्ग कथा सो भाषी ॥ तो हमको होती कत यह गति निशिदिन वर्षत आषी। सूरदास यों भई फिरत ज्यों मधु दूहेकी माषी ॥ ३९ ॥ हरि जू वै सुख बहुरि कहां। यदपि नैन निरखत वह मूरति फिरि मन जात तहां ॥ मुख मुरली शिर मोरपंख बने उर घुँघुचनि को हारु। आगे धेनु रेनु तनु मंडित चितवति तिरछी चारु॥राति दिवस अँग अँग अपने हित हँसि मिलि खेलत खात।सूर देखि वा प्रभुता उनकी कही न आवै बात ॥ ४० ॥ राग सारंग ॥मधुवन तुम क्यों रहत हरी। विरह वियोग श्याम सुंदरके ठाढी क्यों न जरी ॥ तुमहौ निलज न लज्जा तुमको फिर शिर पुहुप धरी। सुसा सियार अरु वनके पखेरू धृग धृग सबन करी ॥ कौनकाज ठाढी रही वनमें काहे न उकठ परी। कपट हेतु कियो हरि हमसे खोटे होहिं खरी ॥ गोविंदगुण उरते नहिं विसरत रचि रचि कुसुम भरी। बिन देखे वा नँदनंदनको फिरि फिरि फिरि न फिरी ॥ जब वे मोहन वेणु बजावत शाखाटेक खरी। मोहे थावरु जड जंगम मुनि गन ध्यान टरी ॥ विछुरत दियो बलि मोहनके केउ न कल्याण करी। सुख संपति विछुरी मोहनकी फल फूलनसों करी ॥ नैननते विछुरे नँदनंदन चितते नहीं टरी। सूरदास प्रभु विरह दवानल नखशिखलौं पसरी॥४१॥राग केदारो॥ जो सखी नाहिंनै व्रजश्याम। वर्षत होत पल सम अब सुयुग वरयाम ॥ उहै गोकुल लोग वेई उहै यमुनाठाम। उहै गृह जिहि सकल संपति वनभयो सोइ धाम ॥ उहै रति पति अछत मुरा-रिहि लेन सकतो नाम। सूर प्रभु विनु अब कलेवर दहन लागे काम॥४२॥ राग जैतश्री ॥हरि न मिले न माई री जनम ऐसेही लागो जान। चितवत मग दिवस निशा जात युग समान ॥ चातक पिक वचन सखी सुनि न परतकान । चंदन अरु चंद किरति मानो अनेक भान ॥ भूषण तनु पोत तज्यो रन आतुर त्रान। भीषमलौ सहत मदन अर्जुनके वान ॥ सोपति तनुसेज सूर चले न चपल प्रान। दक्षिण रवि अवधि अटक इतनी जिय आन ॥४३॥ राग सारंग ॥ अब योहीं लागे दिन जान। सुमिरत प्रीति लाज लागतिहै उर भयो कुलिश समान ॥ लोचन रहत वदन विनु देखे वचन सुने विनु कान। हृदय रहत हरि पान परस बिन बिन छिदितन मनसिज बान॥मानो सखी रहे नहिं मेरे वे पहिले तनु प्रान। विधि समेतरचि चले नंदसुत विरह व्यथादे आन ॥ विधि बछ हरे और

पुनि कीन्हें वैसेई वेत विपान। सूरदास ऐसी ए कछु यह समुझतहैं अनुमान॥ ४४ ॥ राग धनाश्री ॥ ऐसो कोऊ नाहिंने सजनी जो मोहने मिलावै। बारक बहुरि नंदनंदनको यहाँलौं लै आवै॥ पाँइन पर बिनती करि मेरी यह सब दशा सुनावै। निशि निकुंज निशि केलि परमरुचि रासरंगकी सुरति करावै॥और कौनहूं बातकी सकुच न सब विधिकी उपजावै। पुनि पुनि सूर इहै करि हरिसों लोचन जरत बुझावै॥४५॥राग केदारो॥बहुरचो देखिबो वहिभाँति।अशन बाँटत खात बैठे बालकनकीपाँति एकदिन नवनीत चोरत हों रही दुरिजाइ। निरखि मम छाया भजे मैं दौरि पकरे धाइ॥ पोंछि कर मुख लिए कनियां तब गई रिसि भागि। वह सुरति जिय जाति नाहीं रहो छाती लागि॥ जिनि वरनि वह सुख बिलोक्यो ते लगत अब खान।सूर बिन ब्रजनाथ देखे रहत पापी प्रान॥४६॥राग रामकली॥ मरियत देखिवेकी हौसनि। जिनि सतकल्प पलक वर जाते अब सु रही दुख मौसनि॥ पलकभरेकी ओट न सहती अब लागे दिनजान। इतनेहू पर बिन साखन घर घट निकसत नहिं प्रान॥यदपि मोहिं बहुतै समुझावत सकुचन लीजतु मानि। अंतर हेर जरत बिन देखे कौन बुझावै आनि। कुबिजा पै आवन क्यों पावत अब तो परि है जानि॥ लीन बडी यहऊकी सब बात पाछिली ते सब गानि। आए सूर दिना द्वै तौ कहा तौ मानिबो समोसो।कोटि बेर जल औटि सिरावै तऊ कहापति लौसो॥४७॥ राग सारंग॥जिय हिय हौसे विच जे रही।सुन री सखी श्याम सुंदर हँसि बहुरि न बाँह गही॥अब वह दिवस बहुरि कब ह्वैहै ऐसे जानि संगही। कहां कान्ह कहां री अब हम कौन बयारि बही॥ कासों कहौं कहत नाहिं आवै कहत परै न कही॥ जो कछु हुती हमारे हरिके हरिके संग निबही।अपने कहतहि हलुकी लागै गोविंद गुणनदही। सूरदास काटे तरुवर ज्यों ठाढी रटत रही॥४८॥राग जैतश्री॥कहा लौं मानौं अपनी चूक। विन गोपाल सखी री यह छतियां ह्वै न गई द्वै टूक॥तन मन धन यौवन ऐसे भए भुअंगमको फूक। हृदय जरतहै दावानल ज्यों कठिन विरहकी हूक॥ जाकी मणि शिरते हरि लीनी कहा कहत अति मूक। सूरदास ब्रजवास बसी हम मनो दाहिनो सूक॥ ४९ ॥ राग मलार॥ भलो ब्रज भयो धरणिते स्वर्ग। तब इन पर गिरि अब गिरि पर ए प्रीति किधौं यह दुर्ग॥ सुखासुर छलबोलवारी गढ अत्र अवधि मिति खूटी। प्रिय पति विरह मदन गढ घेरचो एकौ अलग न टूटी॥ नैन तडाग श्रवण मूरति मठ यंत्र सकत वरवानी। रास केलि घन पौरिकोट मनु देखि अमर रजधानी॥ गोरंभन गोपाल गरजनिघन धूमि दुंदुभिन रौकी। कंटक रोम कँगुरानि प्रति मनो अपनी अपनी चौकी॥चढत त्रिभंगी सौंज साजि सत धसत नहीं पल आखी। देखहु सूर सनेह श्यामको गगनमंडल हम राखी॥५०॥ सखी री हरि बिनु हरि दुख भारी। सिंहको सुत हर भूपण ग्रसि सोइ गति भई हमारी॥ शिखर बंधु अरि क्यों न निपारत पुहुप धनुपकै बिशेष। चक्षुश्रवा उर हार ग्रसी ज्यों छिन द्वितिया वपुरेप॥ घटसू अशन समै सुत आनन अमी गलित जैसे मेत। जलधर व्योम अंबुकन मुंचत नैन होड वदि लेत॥ द्विजपति प्रभु मिलि आनि मिलावहु हरिसुत आरति जानि। जैसे हरि कर वंध प्रगट भए हरी आरती मानि॥ पट आनन वाहन काननमें घन रजनी तहँ वासी। सूरदास प्रभु चतुर शिरोमणि सुनि चातक पिक त्रासी॥ ५१॥ राग सोरठ॥ कहा दिन ऐसेही जैहैं। सुन सखि मदनगोपाल अब किन ग्वालन संग रैहैं॥ कबहूँ जात पुलिन यमुनाके बहुविहार बिधि खेलत। सुरत होत सुरभी सँग आवत बहुत कठिन करि झेलत॥ मृदु मुसुकानि आनि राखो पिय चलत कह्योहै आवन। सूर सो दिन कबहूं तौ ह्वैहै मुरली शब्द सुनावन॥ ॥५२॥राग मलार॥श्याम सिधारे कौने देश।तिनको कठिन करे जो सखी री जिनको पिय परदेश॥उन

ऊधो कछु भली न कीन्ही कौन तजनको वैस । छिन विनु प्रान रहत नहिं हरिविन निशिदिन अधिक अँदेस ॥ अतिहि निठुर पतियां नहिं पठई काहू हाथ सँदेश । सूरदास प्रभु यह उपजतहै धरिए योगिनिवेस ॥९३॥ राग मलार ॥ गोपालहि पावौं धौं केहि देश । शृंगी मुद्रा कनक खपर करिहौं योगिन भेष ॥ कंथा पहिरि विभूति लगाऊं जटा बँधाऊं केश । हरि कारण गोरखहि जगाऊं जैसे स्वांग महेश ॥ तन मन जारों भस्म चढाऊं विरहिन गुरु उपदेश । सूर श्याम विनु हमहैं ऐसी जैसे मणि विन शेश ॥९४॥ राग केदारो॥ फिरि ब्रज आइए गोपाल । नंद नृपति कुमार कहिहैं अब न कहिहैं ग्वाल ॥ मुरलिका सुर सप्त दिशि दिशि चले निसान बजाइ । दिग्विजयको युवति मंडल भूप परिहैं पाइ ॥ सुरभीसेन सु सखा भट सँग उठैगी खुर रैनु । आवत पत्र मयूर चंद्रिका लसतिहै रवि ऐनु ॥ सदस पति मधुकरनि करवर मदन आयसु पाइ । द्रुम लता बन कुसुम बानकु वसन कुटी वनाइ॥सकल खग गण पैक पायक पँवरिया प्रतिहार । समै सुख गोविंद ब्रजको कहत सूर बिचार॥९५॥राग जैतश्री ॥फिरिकै वसो गोकुलनाथ।अव न तुमहिं जगाय पठवैं गोधननके साथ॥ बरजैं न माखन खात कबहूँ दह्यो देत लुढाय । अब न देहिं उराहनो यशुमतिहि आगे जाइ ॥ दौरि दामन देहिंगी लंकुटी यशोदा पानि । चोरी न देहिं उघारिकै अवगुण न कहिहैं आनि ॥ कहिहैं न चरणन देन जावक गुहन वेनी फूल । कहिहैं न करन शृंगार कवहीं वसन यमुना कूल ॥ करिहैं न कवहीं मान हम हठि हैं न माँगत दान । कहिहैं न मृदु मुरली बजावन करन तुमसों गान ॥ देहु दरशन नंदनंदन मिलनहूंकी आश।सूर हरिके रूप कारन मरत लोचन प्यास ॥९६॥राग जैतश्री ॥ हरिसों प्रीतम क्यों विसराहि । मिलन दूरि मन वसत चंद्रपर चितचकोर पछिताहि ॥ जलमें रहहि जलहि ते उपजहि जलही बिन कुँभिलाहि । जल ताजि हंस चुगै मुक्ताफल मीन कहा उडिजाहि ॥ सोइ गोकुल गोवर्धन सोई सोइ किन करहि अब छाहि । प्रगट न प्रीति करै परदेशी सुख केहि देश समाहि ॥ धरणी दुखित देखि वादर अति वर्षाऋतु वरषाहिं । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन विन दुख क्यों हृदय समाहिं ॥ ९७ ॥ वारक जाइवो मिलि माधो । को जानै तनु छूटि जाइगो शूल रहै जिय साधो ॥ पहुंनेहु नंद ववाके आवहु देखि लेउँ पल आधो । मिलेही में विपरीति करी विधि होत दरशको बाधो ॥ सो सुख शिव सनकादि न पावत सो सुख गोपिन लाधो।सूरदास राधा विलपतिहै हरिको रूप अगाधो ॥ ९८ ॥ अथ नैनप्रस्तावपद ॥ राग मलार॥ वारक नैनहूं मिलि जाहु । कमलनैन घनश्याम राधिकहि परसत जो न पत्याहु ॥ जानतहौ कर कमल विरोधी बरन विरोधी बाहु । शशिमुख शत्रु पयोधर गिरि अति तहाँ तुम क्यों वसमाहु ॥ गज गति मंद मराल विरोधी हेम सुरुचि रिपु दाहु । जंघ कदलि कटि सिंह विरोधी न्याय निरखि सकुचाहु ॥ चीन्हिलहे चितचोरि सकलअँग एकै सुपत न शाहु । तदपि सूर उनकी रुचि राखहु कत अधिकै बडराहु ॥ ९९ ॥ राग सारंग ॥ नैननको मत सुनो सयानी । निशिदिन तपति सिरात न कवहूं यद्यपि उमँगि चलत पटरानी ॥ द्वौं उपचार अमित आनत उर खल भयो लोक लाज कुलकानी । कछु न सोहाइ दही दरशन दौ वारिज वदन मंद मुसकानी॥रूप लकुट अभिमान मनहु उलटी उन माँझ समानी । आरज पथ गुरु ज्ञान कुपित कुरि सूरज विकल समानी॥ ॥ ६०॥ राग मलार ॥सखी इन नैनन ते घन हारे । विनही ऋतु वरपत निशिवासर सदा मलिन दोउ तारे ॥ ऊरध श्वास समीर तेज अति सुख अनेक द्रुम डारे । दिशन सदन करि वसे वचन खग दुख पावसके मारे ॥ ढुरि ढुरि बूँद परत कंचुकि पर मिलि अंजन सों कोर । मानों परमकुटी शिव कीन्हीं विवि मूरति धरि न्यारे ॥ सुमिरि सुमिरि गर्जत जल छाँडत अंशु सलिलके धारे ।

बूडत ब्रजहि सूरको राखै विनि गिरिवर धर प्यारे॥६१॥नैना सावन भादौं जीते। इनही विषे आनि राखे मनो समुदनिहूं जलरीते॥ वै झरलाय दिनाह्वै उवरत ए भूलि न मारग देत। वै वर्षत सबके सुख कारण ए नँदनंदन हेत॥ वै परिमान पुजे दह मानत ए दिन धारन तोरत। यह विपरीति होति देखति हो बिना अवधि जग बोरत॥ मेरे जीव ऐसी आवत भइ चतुराननकी मांझ। सूर विन मिले प्रलय जानिबो इनहीं दिवसनि सांझ॥ ६२॥ निशि दिन वरषतु नैन हमारे। सदा रहत वर्षाऋतु हमपर जबते श्याम सिधारे॥ नैन अंजन न रहत निशि वासर कर कपोल भए कारे॥ कंचुकि पट सूखत नहिं कबहूँ उर बिच बहत पनारे। ऐसे सलिल सबै भई काया पल न जात रिसटारे। सूरदास प्रभु गोकुल बूडत काहेन लेत उबारे॥६३॥राग सारंग॥नैनन नाधैहै झराऊंचे चढि टेरत अति आतुर सुरकहि गिरिधर गिरिधर॥ फिरति सदन दरशनके काजे ज्यों झष सूखे सर।कौन कौनकी दशा कहौं सुन सब ब्रज तिनते पर॥ निशि दिन कलमलात सुन सजनी शिरपर गाजत मदन अर। सूरदास प्रभु रही मौनह्वै कहि न सकति भैनके भर॥ ६४॥ अति रस लंपट मेरे नैन। तृति न मानत पिवत कमल मुख सुंदरता मधु वैन॥ दिन अरु रैनि दृष्टि रसना रस निमिष न मानत चैन। शोभा सिंधु समाइ कहांलौं हृदय सांकरे ऐन॥ अब यह विरह अजीरण ह्वैके वमिलाग्यो दुख दैन।सूर वैद ब्रजनाथ मधुपुरी काहि पठाऊं लैन॥६५॥राग केदारो॥ हरि दरशनको तरसत अँखियां। झांकति झपति झरोखा बैठी कर मीडत ज्यों मखियां॥ बिछुरी वदन सुधानिधि रिसते लगत नहीं पलखिग्रां। इकटक चितवति उडिन सकति जनु थकित भई लखि सखियाँ॥ बार बार शिर धुनति बिसूरति विरह ग्राह जनु भखियाँ। सूर स्वरूप मिले ते जीवहि काढि किनारे नखियाँ॥६६॥राग सारंग॥लोचन व्याकुल दोऊ दीन। कैसे रहैं दरश बिन देखे विधु चकोर ज्यों लीन॥ विवरन भए खंज जो दाधे वारिज ज्यों जल हीन। श्याम सिंधु सों बिछु-रिपरेहैं तरफरात ज्यों मीन॥६७॥ ज्यों रतिराज बिमुख भृंगीको छितु छिनु वाणी हीन। सूरदास प्रभु बिनु गोपालहि कत विधनै एई कीन॥ महा दुखित दोउ मेरे नैन। जादिनते हरि चले मधु-पुरी नेकु न कबहूं कीनो सैन॥ भरे रहत अति नीर न निघटत जानत नहिं दिन रैन। महादुखित अतिही श्रम माते विन देखे पावत नहिं चैन॥ जो कबहूं पलकौ नहिं खोलत चाहन चाहत मूरति मैन।छाँडत छिनमें ए जो शरीरहि गहिकै व्यथा जात हरि लैन॥ रसना इहई नेम लियो है और नहिं भापों मुख वैन। सूरदास प्रभु जबते बिछुरे तबते सब लागे दुख दैन॥६८॥अँखियाँ करतिहैं अति आर। सुंदर श्याम पाहुनेके मिसि मिल न जाहु दिनचार॥ बाँहथकी वायसहि उडावत कब देखौं उनहार। मैंतौ श्याम श्याम कै टेरति कालिंदीके करार॥ कमल वदन ऊपर दुइ खंजन मानो बूडत वार।सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश बिनु सकैं न पंख पसार॥६९॥राग धनाश्री॥लोचन लालच ते न टरैं।हरि मुख ए रंग संग विधे दाधौ फिरैं जरैं।ज्यों मधुकर रुचि रच्यो केतकी कंटक कोटि अरैं। तैसोई लोभ तजत नहिं लोभी फिरि फिरि फिरी फिरैं॥मग ज्यों सहत सहज सरदारन सन्मुख ते न टरैं॥जानत आहि हते तनु त्यागत तापर हितहि करै।समुझि न परै कवन सच पावत जीवत जाइ मरै। सूर सुभट हठ छाँडत नाहीं काटो शीश लरै॥७०॥राग सारंग॥लोचन चातक जीवो नहिं चाहत। अवध गए पावसकी आशा क्रम क्रम करि निरवाहत॥ सरिता सिंधु अनेक अबर सखी विलसत पति सजन सनेह। ए सब जल यदुनाथ जलद बिनु अधिक दहत है देह॥ जबलगि नहिं वरषत ब्रज ऊपर नौवन श्याम शरीर। तौ इह तृषा जाय क्यों सूरज आनि वोसके नीर॥७१॥राग मलार॥नैनन

नैननकी सुधि लीजै । गोपी गाइ ग्वाल गोसुत सब दीन मलीन दिनहि दिन छीजे ॥ नैन सजल जलधार बढे अति बूडत ब्रजकिन करगहि लीजै । इतनी विनती सुनहु हमारी वारकहू पतिआं लिखि दीजै ॥ चरणकमल दरशन नव नौका करुणासिंधु जगत यश लीजै । सूरदास प्रभु आश मिलनकी एकबार आवन ब्रज कीजै ॥७२॥ राग केदारो ॥ मेरे नयना विरहकी वेलि बई । सींचत नीर नैनके सजनी मूल पताल गई ॥ विकसत लता सुभाइ आपने छाया सघन भई । अब कैसे निरुवारौं सजनी सब तन पसरि छई ॥ को जानै काहूके जियकी छिन छिन होत नई । सूरदास स्वामीके बिछुरे लागै प्रेम झई ॥७३॥ राग देवगंधार ॥ ब्रज बसि काके बोल सहौं । इह लोभी नैननके काजे परवश भई जो रहौं ॥ बिसरि लाज गई सुधि नाहिं तनुकी अबधौं कहा कहौं । मेरे जियमें ऐसी आवत यमुना जाइ बहौं ॥ एक बन ढूँढि सकल बन ढूँढ्यो कबहुँ न श्याम लहौं । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको इह दुख अधिक सहौं ॥ ७४ ॥ राग केदारो ॥ नैना अब लागे पछितान । बिछुरत उमँगि नीर भरि आई अब न कछू अवसान ॥ तब मिलि मिलि कत प्रीति बढावत अब सो भई विषवान ॥ तबतौ प्रीति करी उत्तर होइ समुझी कछु न अजान । अब इह काम दहत निशि वासर नाहीं मेरे मान ॥ भयो विदेश मधुपुरी हमको क्योंहूं होत न जान ॥ अति चटपटी देखि वे चाहत अब लागी अकुलान । सूरदास प्रभु दीन दुखित ए लै न गए सँग प्रान। ॥ ७५ ॥ राग आसावरी ॥ हो तादिन कजरा मैं देहों । जादिन नँदनंदनके नैनन अपने नैन मिलैहौं ॥ सुन री सखी इहै जिय मेरे भूलिन और चितैहौं । अब हठ सूर इहै व्रत मेरो कौंकिरपै मरिजैहौं ॥ ७६॥ ॥ राग मलार ॥ उपमा नैनन एक रही । कविजन कहत कहत सब आए सुधि करि नाहिं कही ॥ कहि चकोर विधु मुख विन जीवत भँवर नहीं उडिजात । हरि मुख कमल कोश बिछुरेते ठोले कत ठहरात ॥ अघा बधिक व्याधहै आये मृगसम क्यों न पलात । भाजि जाहि बन सघन श्याम मैं जहां न कोऊ घात ॥ खंजन मनरंजन न होहिं ए कबहीं नहीं अकुलात । पंख पसारि नहो छिन चपला गति हरि समीप मुकलात ॥ प्रेम न होहि कौन विधि कहिए झूठेही तनु आडत । सूरदास मीनता कछू एक जल भरि कबहुँ न छाँडत।॥७७॥ राग गौरी ॥ कहा इन नैननको अपराध । रसना रटत सुनत यश श्रवण इतनी अगम अगाध ॥ भोजन किये बिनु भूँख क्यों भाजे बिनखाए सब स्वाध । इकटक रहत छुटत नाहिं कबहूँ हरि देखनकी साध ॥ ये दृग दुखी बिना वह मूरति कहो कहा अब कीजै । एक बेर ब्रज आनि कृपाकरि सूर सो दरशन दीजै॥७८॥ राग मलार ॥ चितवतही मधुवन तन जात । नैननि नींद परति नाहिं सजनी सुनि सुनि बात मन अकुलात ॥ अब ए भवन देखिअत सूनो . धाइ धाइ हमको ब्रजखात । कवन प्रतीति करें मोहनकी जेहि छौंडे निज जननी तात ॥ अनुदिन नैन तपत दरशनको हरदि समान देखिअत गात । सूरदास स्वामीके बिछुरे ऐसे भए हमारे घात॥७९॥ राग मलार॥ देख सखी उतहै वह गाउँ । जहां बसत नँदलाल हमारे मोहन मथुरा नाउँ ॥ कालिंदीके कूल रहतहैं परम मनोहर ठाउँ । जो तनुपंख होइ सुन सजनी आजु अबहि उडिजाउँ॥होनी होउ होउ सो अबहीं यदि ब्रज अन्न न खाउँ॥ सूरदास नँदनंदनसों रति लोगन कहा डराउँ॥८०॥ राग गौरी॥ मधुराके द्रुम देखिअत न्यारे । वहां श्याम हमारे प्रीतम चितवत लोचन हारे ॥ क्षितिक बीच संदेहु दुर्लभ सुनियत टेर पुकारे । तुव गुण सुमिरि सुमिरि हम मोहन मदन बान उर मारे । तुम बिन श्याम सबै सुख भूले गृह बन भए हमारे । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश बिनु रैनि गनत गए तारे ॥८१॥ स्वप्न दर्शन वर्णनं ॥ राग केदारो ॥ जबते बिछुरे

कुंजविहारी। नींद न परै घटै नाहिं रजनी व्यथा विरह ज्वर भारी॥ हौं उठि सखी आँगनह्वैआई जगमगि रही जियारी।श्रवणशब्द सुहाइ न सखीरी यमचातक द्रुमडारी॥ उरते सखी दूरि करु हारहि कंकन धरहु उतारी।सूरदास प्रभु विनु अतिव्याकुल करि वह जतन जुहारी॥८२॥ राग नट॥ सुपनहुमें देखिये जो नैननि नींद परै। विरहिनि ब्रजनाथ विन कहि कौन उपाइ करै॥ चंदमंद समीर शीतल सेज सदा जरै। कहा करौं कौनी भाँति मरौं मन धीरज न धरै॥ बहुत उपाइ करै विरहिनि कछु नचाव सरै।सूर शीतल कृष्ण बिन कहौ कौन ताप हरै॥८३॥राग सारंग॥इतनी दूरि गोपालही कबहुँ न मिलि आई। कहिए कहा दोषदीजै किहि अपनीही जडताई॥ सोवत महा मनो सुपने सखि अवधि निधन निधि पाई। गनतहि आनि अचानक कोकिल उपवन बोलि जगाई॥जो जागों तो कहा उठि देखों विकल भई अधिकाई। किसलै कुसुम नव नूत दशहु दिशि मधुकर मदन दोहाई॥ विछुरत तनु नाम ज्यों हठि तिहि छिन गई नहीं सगुमाई। समुझि न परी सूर दोहेदिन हरि हँसि कंठ लगाई॥८४॥राग धनाश्री॥तबहीं जै इह हेति कहा। जहां वै श्याम मदन मूरति चल मोहिं लवाइ तहां॥ कुटिल अलक मकराकृत कुंडल सुंदर नैन विशाल। अरुन अधर नासिका मनोहर तिलक तरनि शशिभाल॥ दशन ज्योति दामिनि ज्यों दमकति बोलत वचन रसाल। उर बिचित्र वनमाल बनी जनु कंचन लता तमाल॥ घन तन पीत वसन शोभित अति अलिके बलै पराग॥ विपुल वहू अति कृत परिरंभन मनहुँ बसे द्रुमनाग। सोवतिही सुपने महि सोचति सत्य जानि जिय जागी। सूरदास प्रभु प्रगट मिलनको चातक ज्यों लवलागी॥ ८५॥ राग मलार॥सुपने हरि आएहो किलकी। नींद जो सौति भई रिपु हमको सहि न सकी रति तिलकी॥ जो जागों तो कोऊ नाहीं रोके रहति न हिलकी। तव फिरि जरनि भई नख शिखते दिआवात जनु मिलकी। पहिली दशा पलटि लीनीहै त्वचा त्वचकि तनु पिलकी। अब कैसे सहिजात हमारी भई सूर गति सिलकी॥ ८६॥राग कान्हरो॥मैं जान्यो री आए हैं हरि चौंकि परेते पछितानी। इते मान तन तलफत वहिते जैसे मीन तट विन पानी॥ सखी सुदेह ते जरति विरह ज्वर तनु पुनि पुनि नाहिं प्रकृत्यो आनी। कहा करौं अपथि भई मिलि बढी व्यथा दुख दुहरानी॥ पठवो पथिक सब समाचार लिखि बिपति विरह वपु अकुलानी। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश बिना कैसे घटत कठिन कानी॥८७॥राग मलार॥ज्यों जागो तो कोऊ नाहीं अंत लगी पछितान। हौं जानौं साँचे मिले माधौ भूलो यहि अभिमान॥ नींद माहिं मुरझाई रहिहो प्रथम पंच संधान। अव उर अंतर मेरी माई सपने छुटी छलिवान॥ सूर सकत जैसे लछिमन तन विह्वल होइ मुरझान। ल्याउ सजीवन मूरि श्यामको तौ रहिहैं ए प्रान॥८८॥ राग कल्याण॥ हरि विछुरन निशि नींद गई री। वन प्रिय विरह शिली मुख मधुपति वचननिहौं अकुलाई री॥ वह जु हुती प्रतिमा समीपकी सुख संपति दुरंत जई री। ताते भर हरि सुन री सजनी सेज सलिल हगनीर मई री॥ अवऊ अधार जु प्राण रहत हैं इनिवशहिन मिलि कठिन ठई री। सूरदास प्रभु सुधारस विना भई सकल तनु विरह रई री॥ ८९॥ राग केदारो॥ बहुरचो भूलि न आँखि लगी। सुपनेहूके सुख न सहिसकी नींद जगाइ भगी॥ बहुत प्रकार निमेप लगाए छूटि नहीं शठगी। जनु हीरा हरि लिए हाथते ढोल बजाइ ठगी॥ कर मीडति पछिताति विचारति इहि विधि निशा जगी। वह मूरति वह सुख दिखरावै सोई सूर सगी॥९०॥राग धनाश्री॥अब सखी नींदौ तो गई। भागी जिय अपमान जानि जनु सकुचनि ओट लई॥ अति रिस अहनिशि कंत किए वश

आगम अटक दई । सुपनेहू संयोग सहति नाहिं सहचरी सौति भई ॥ कहतहि पोच सोच मनहीं मन करत न बनति खई । सूरदास तनु तजै भले बनै विधि विपरीति ठई॥९१॥राग नट ॥पियकी बात सुनहि किन प्यारी । जो कछु भयो सो कहिहौं तुमसन होहु सखिनते न्यारी ॥ तव वियोग शोक तौ उपज्यो काम देह तनु जारी । भेषज अधर सुधाहि तुमपै चलिदै व्यथा निवारी ॥ कठिन परे जु कुशल रिपु पूँछै मनकी कहा विचारी॥सूरदास प्रभु हृदय है तेरे मानहु सार पुछारी ॥९२॥ राग मलार ॥ हमको सुपनेहू में सोच । जादिनते बिछुरे नँद नंदन इह ता दिनते पोच ॥ मनो गोपाल आए मेरे गृह हँसि करि भुजा गही । कहा करौं वैरिनि भई निद्रा निमिष न और रही ॥ ज्यों चकई प्रतिबिंब देखिकै आनंदे पिय जानि॥सूर पवन मिलि निठुर विधाता चपल कियो जल आनि॥९३॥राग बिहागरो॥ हरि विनु वैरिन नींद बडी । हो अपराधिनि चतुर विधाता काहे को बनाइ गढी ॥ तन मन धन यौवन सुख संपति विरहा अनल दढी।नँदनंदनको रूप निहारत अहनिशि अटा चढी॥जेहि गोपाल मेरे वश होते सो विद्या न पढी॥सूरदास प्रभु हरि न मिलैं तौ घरते भली मढी॥९०॥राग मलार॥सुनहु सखी ते धन्य नारि।जो अपने प्राणवल्लभकी सपनेहु देखति है अनुहारि ॥कहा करौं चलत श्यामके पाहिलेहि नींद गई दिन चारि।देखि सखी कछु कहत न आवै झींखि रही अपमानन मारि॥जादिनते नैनन अंतर भयो अनुदिन अति वाढति है वारि । मनहुँ सूर दोउ सुभग सरोवर उमँगि चले मर्यादा डारि॥९५॥राग मलार॥हमको जागत रैनि विहानी।कमलनैन जगजीवनके सखी गावत अकथ कहानी॥ विरह अथाह होत निशि हमको विनु हरि समुद समानी । क्यों करि पावहि विरहिन पारहि विन केवट अगवानी ॥ उदित सूर चकई मिलाप निशि अलि जो मिलै अरविंदहि । सूर हमें दिन रात दुसह दुख कहा कहैं गोविंदहि ॥ ९६ ॥ मोको माई यमुना जल होइ रही । कैसे मिलौं श्याम-सुंदरको वैरिनि बीच बही ॥ केतिक विच मथुरा औ गोकुल आवत हरि जो नही । हम अबला कछु मर्म न जान्यो चलत न फेंट गही ॥ अब पछितात प्राण दुख पावत जात न बात कही । सूर-दास प्रभु सुमिरि सुमिरि गुण दिन दिन शूल सही॥९७॥राग धनाश्री॥नैन सलोने श्याम हरि कब आवहिंगे । वै जो देखत राते राते फूलन फूलेडार । हरि विन फूल झरी सी लागत झरि झरि परत अँगार। फूल बिनन ना जाउ सखी री हरिविन कैसे फूल । सुन री सखी मोहिं राम दोहाई लागत फूल त्रि-शूल॥ जबते पनिघट जाउँ सखी री वा यमुनाके तीर। भरि भरि यमुना उमडि चलत है इन नैननके नीर ॥ इन नैननके नीर सखी री सेज भई घरनाव । चाहतहौं ताहीपै चढिकै हरिजीके ढिग जाव ॥ लाल पियारे प्राण हमारे रहे अधर पर आइ । सूरदास प्रभु कुंजविहारी मिलत नहीं क्यों धाइ॥९८॥राग मलार॥ बहुरो गोपाल मिले सुख नेह कीजै । नैनन मग निरखि वदन शोभा रस पीजै ॥ मदनमोहन हृदय उर आसन दीजै । परै न पलक आँखिनके देखि देखि जीजै ॥ मान छाँडि प्रेम भजन आपनो करि लीजै॥सूर सोई सुभग नारि जासों मन भीजै॥९९॥राग केदारो॥सखी री हरि आवैं केहि हेत । वै राजा तुम ग्वाल बुलावत इहै परेखो लेत ॥ अब शिर छत्र कनक राजत है मोरपंख नहिं भावत । सुनि ब्रजराज पीठिदै वैठत यदुकुल विरद बुलावत ॥द्वारपाल अति पौर विरा-जत दासी सहस अपार। गोकुल गाइ दुहत दुख गोयो सूर भए एवार॥२८००॥राग मलार॥ चलत न माधौकी गहि वाहें । वार वार पछिताति सवहिते इहै शूल मनमाहैं । घर बन कछु न सुहाइ रैनि दिन मनहुँ मृगी दो दाहे । मिटति न तपनि विना घनश्यामहि कोटि घनी छन छाहे ॥ विलपति अति पछिताति मनहि मन चंद्र गहे जनु राहे । सूरदास प्रभु दूरि सिधारे दुख

T

कहिए केहि पाहे॥ १॥ राग सारंग॥ मनकी मनही माँह रही। जब हरि रथ चढि चले मधुपुरी सब अज्ञान भई॥ मति बुधि हरी परी धरणी पर अति बेहाल खरी। अंकुश अलक कुटिल भए आशा ताते अवधि वरी॥ ज्यों बिनु मणि अहि सूक फिरतहै यों बिधि बिधि बिपरीत धरी। मनतो रह्यो पंथ सूरज प्रभु माटी रही धरी॥ २॥ मेरो मन वैसै सुरति करै। मृदु मुसुकानि नेक अवलोकनि हृदयेते न टरै॥ जब गोपाल गोधन सँग आवत मुरली अधर धरै। मुखके रेणु झारि अंचल सों यशुमति अंग भरै॥ संझा समय घोषकी डोलन वह सुधि क्यों बिसरै। सूरदास प्रभु दरशन कारण नैनन नीर ढरै॥ ३॥ राग आसावरी॥ जाको मन लाग्यो नँदलालहि ताहि और क्यों भावे हो।जैसे मीन दूधमें डारै जल बिनु सच नाहिं पावै हो॥अति सुकुमार डोलत अंगनही परि काहू न जनावै हो। जैसे सरिता मिलै सिंधुको उलटि प्रवाह न आवै हो॥ ऐसे सूर कमल लोचन बिनु मन नहिं अनत लगावै हो॥ ४॥ राग सारंग॥ कहां लौं राखिए मन बिरमाई। इकटक शिव धरे नैन लागत श्यामसुता सुत धन आई॥ हर बाहन दिव बास सहोदर तिहि मति उदित सुरुछि सुहि जाई। गिरिजापति रिपु नख शिख व्यापत वंश सुधा पिय कथा सुनाई॥ बिरहिनि बिरह आपु वश कीन्हें लेउ कमल जिमि पाइ छुआई। वेगि मिलौ सूरके स्वामी उदधितनया पति मिलिहै आई॥५॥ राग मारू॥ कमलनैन अपने गुनन मन हमारो बाध्यो।लागत तो जानो नहिं विषम बाण साध्यो॥कठिन पीर बाँध्यो शरीर मारि गयो माई। लागत तो जानो नहिं अवसहो न जाई॥ मंत्र तंत्र जेतिक करौ तउ पीर न ताई। है कोउ उपचार करै कठिन दरद माई॥ कैसेहुँ नंदलाल पावों नेक मिलौं धाई।सूरदास प्रेम फंद तोरों नहिं जाई॥६॥राग सोरठ॥हरि हमसों करी री माई मीन जलकी प्रीति। इतनी दूरि दयालु माधौ गई अवधि व्यतीति॥ तलफिकै उन प्राण दीनों प्रेमकी परतीति। नीर निकट न पीर जानी व्यर्थ गयो वपु बीति॥ चलत मोहन कहो हमसों आइहै रिपु जीति। सूर या ब्रजनाथके जिय सबै उलटी रीति॥७॥ राग धनाश्री॥ मति कोई प्रीतिके फंग परै। सादर संत देखि मन मानौ पेखै प्राण हरै॥ या पतंग कहा कर्म कीन्हों जीवको त्याग करै। अपने मरवेते न डरतहै पावक पैठि जरै॥ भौ करत नहीं ताहि निपाते केतिक प्रेम धरै। शारंग सुनत नाद रस मोह्यो मरिवेते न डरै॥ जैसे चकोर चंद्रको चाहत जल बिन मीन मरै। सूर प्रभुसों ऐसे करि मिलिए तो कहौ का न सरै॥८॥ राग सारंग॥प्रीति करि काहू सुख न लह्यो।प्रीति पतंग करी दीपकसों आपे प्राण दह्यो॥ अलिसुत प्रीति करी जलसुतसों संपति हाथ गह्यो। शारंग प्रीति करी जो नादसों सन्मुख बान सह्यो॥ हम जो प्रीति करी माधौसों चलत न कछू कह्यो। सूरदास प्रभु बिनु दुख दूनो नैनन नीर बह्यो॥ ९॥ राग मलार॥ प्रीति तौ मरनऊ न बिचारै॥प्रीति पतंग ज्योति पावक ज्यों जरत न आपु सँभारै॥ प्रीति कुरंग नाद स्वर मोहित वधिक निकट ह्वै मारै। प्रीति परेवा उडत गगनते गिरत न आपु सँभारै॥ सावन मास पपीहा बोलत पिय पिय करि जो पुकारै। सूरदास प्रभु दरशन कारन ऐसी भाँति बिचारै॥ १०॥ जिन कोउ काहूके वश होहि। ज्यों चकई दिनकर वश डोलति मोहिं फिरावत मोहिं॥ हमतौ रीझि लटूभई लालन महाप्रेम तिय जानि। बंध अबंध अमति निशिवासर को सरझावति आनि॥ उरझे संग अंग अंग प्रति बिरह बेलिकी नाई। मुकुलित कुसुम नयन निद्रा तजि रूप सुधा सियराई॥ अति आधीन हीन मति व्याकुल कहा लों कहों बनाइ।ऐसी प्रीति करी रचना पर सूरदास बलिजाइ॥ ११॥राग नट॥ दिनही दिन को सहै बियोग। यह शरीर नाहिन मेरो सखी इहै बिरह ज्वर योग॥ राचि स्रक

कुसुम सुगंध सेज साजि बसन कुमकुमा बोरि। नलनी दलनि दूरि करि उनते कंचुकिके बँद छोरि॥ वन वन जाइ मोर चातक पिक मधुवन टेरि सुनाई।उचित चंद चंदन चढ़ाई उर त्रिविध समीर बहाई॥ रटि सुख नाम श्याम सुंदरको तोहिं सुनाइ सुनाई। तो देखत तनु होमि मदन मुख मिलो माधवहि जाई॥ सूरदास स्वामी कृपालु भए जानि युवति रस रीति। तिहि छिन प्रगट भए मनमोहन सुमिरि पुरातन प्रीति ॥१२॥ राग धनाश्री॥ बहुरि न कबहूँ सखी मिलैं हरि। कमलनयनके कारण सजनी अपनो सो जतन रही बहुतै करि ॥ जेइ जेइ पथिक जात मधुवन तन तिनहुँ सों व्यथा कहति पाँइनि परि। काहु न प्रगट करी यदुपतिसों दुसह दुरासा गई अवधि ढरि॥ धीर न धरति प्रेम व्याकुल चित लेत उसाँस नीर लोचन भरि। सूरदास तनु थकित भई अब कृष्ण विरहसों पर न सकति मरि॥१३॥पावस समय वर्णनं॥ राग मलार ॥व्रजते पावस पै न टरी।शिशिर वसंत शरद गत सजनी बीती औधि करी ॥ उनै उनै घन बरषत चष उर सरिता सलिल भरी। कुमकुम कज्जल कीच बहै जनु कुचयुग पारि परी॥ ताहूमें प्रगट विषम ग्रीषम ऋतु इतयो ताप मरी। सूरदास प्रभु कुमुद चंद्र बिनु विरहा तरनि जरी॥ १४॥ अब वर्षाको आगम आयो। ऐसे निठुर भयो नँदनंदन संदेशा न पठायो॥ बादर घोर उठे चहुँ दिशिते जलधर गरजि सुनायो। एकै शूल रही मेरे जिय बहुरि नहीं व्रजछायो॥ दादुर मोर पपीहा बोलत कोकिल शब्द सुनायो। सूरदासके प्रभुसों कहियो नैनन है झरलायो॥ १५॥ माई री ए मेघ गाजैं। मनहुँ काम कोपि चढो कोलाहल कटक बढ्यो बरहा पिक चातक जै जै निसान बाजैं॥ बरन बरन बादर बनाए तन जगत बिराजै। दामिनि करवार करनि कंपत सब गात उरनि जलधर समेत सेन इंद्र धनुष साजै॥ ऐसे अभिलाष धीर विगत विरत ते न लाजै। अबलनि अकेली करि अपने कुलनीति बिसरी अवधि संग सकल सूर भहराइ भाजै॥ १६॥ व्रजपर बदरा आए गाजन। मधुवनको पठए सुन सजनी फौजमदन लग्यो साजन॥ ग्रीवारंध्र नैन चातकजल पिक मुखबाजे बाजन। चहुँदिशिते तनु विरहा घेरो अब कैसे पावतु भाजन॥ कहियत हुते श्याम परपीरक आए शंकरके काजन। सूरदास श्रीपतिकी महिमा मथुरा लागे राजन॥ १७॥ देखियत चहुँदिशिते घनघेरो। मानोमत्त मदनके हथियन बलकरि बंधन तोरो॥ श्याम सुभगतनु चुअत गंड मद बरषत थोरे थोरे। रुकत न पौन महावतहूपै मुरत न अंकुशमोरे॥ बल बेनी बल निकसि नयन जल कुच कंचुकि बंद बोरे। मानों निकसि बगपाँति दांत उर अवधि सरोवर फोरे॥ तबतेहि समै आनि ऐरापति व्रजपतिसों करजोरे। अब सुनि सूर कान्हके हरि बिन गरत गात जैसे वोरे॥१८॥ व्रजपर साजि पावस दल आयो। धुरवा धुंधि बढी दशहूँ दिशि गर्जि निसान बजायो॥ चातक मोर इतर पै दागन करत अवाजैं कोयल। श्याम घटा गज अशन बाजि रथ चित बगपाँति सजोयल॥ दामिनि कर करवार बूँद शर इहि विधि साजे सैन॥ निधरक भयो चलयो व्रज आवत अग्र फौज पति मैन॥ हम अबला जानिकै तुम बल कहो कौन विधि कीजै। सूर श्याम अबकै इहि औसर आनि राखि व्रज लीजै॥ १९॥ सखी री पावस सैन पलान्यो। पायो बीच इन्द्र अभिमानी हरि बिन गोकुल जान्यो॥ दशहु दिशासों धूम देखियत कंपति है अति देह। मनहु चलत चतुरंग चमूनभ बाढी है खुर खेह॥ बोलत मोर शैल द्रुम चढि चढि बग जु उडत तरु डारैं। मनु सहना फहराइ फिरावत भाजन कहत पुकारैं॥ गर्जत गगन गयंद गुंजरत अरु दादुर किलकार। सूरदास प्रभु अपने व्रजकी काहेन करत सँभार॥ २०॥ बदरिआ बधन बिरहिनी आई। मारुत मोर करत

चातक पिक अरु नग शिखर सुहाई ॥ नदिया सुचर संदेश क्यों पठऊ बाट तृणनहू छाये।इक हम दीन हती कान्हर बिनु औ इन गरजि सुनाए । सूनो घोप वैर तकि हमसों इंद्र निसान बजाए । सूरदास प्रभु मिलहु कृपा करि होति हमारे धाए॥२१॥वरु ए बदराऊ बर्षन आए । अपनी अवधि जानि नँदनंदन गरजि गगन घन छाए ॥ कहियतहै सुरलोक वसत सखी सेवक सदा पराए । चातक पिककी पीर जानिकै तेउ तहांते धाए ॥ तृणकिए हरित हरपि वेली मिलि दादुर मृतक जिवाए । साजे निवड निडत न सिचि सजि पंछिनहू मन भाए ॥ समुझत नहीं चूक सखी अपनी बहुतै दिन हरि लाए । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि मधुवन वसि बिसराए ॥ २२ ॥ बहुरि हरि आवहिंगे किहि काम । ऋतु वसंत अरु ग्रीषम बीते अब बादर भए श्याम॥तारे गनत गनत के सजनी बीते चारौ याम । औरौ कथा सबै बिसराई लेत तुम्हारो नाम॥छिन अंतर छिन द्वारे ठाढी अरु सूखतिहै घाम। सूर श्याम तादिनते बिछुरे अस्ति रहीकै चाम॥२३॥किधौं घन गर्जत नहिं उन देशनि। किधौं हरि हरपि इंद्र हठि बरजे कैधों दादुर खाए शेषनि ॥ किधौं उहि देशन गवन गम छांडे घरनिन बूँद प्रवेशनि। चातक मोर कोकिला उहिवन बधिकन बधे विशेषनि ॥ किधौं उहि देश बालनहि झूलति गावति सखिन सु देशानि । सूरदास प्रभु पथिक न चलहि कासों कहौं सँदेशनि ॥ ॥ २४ ॥ देखो माई श्याम सुरति अब आवै । दादुर मोर कोकिला बोलै पावस अगम जनावै॥ देखि घटा घनचाप दामिनी मदन शृंगार बनावै । विरहनि देखि अनाथ नाथ बिन चढि चढि ब्रजपर आवै ॥ कासों कहौं जाइ कोइ हरिपै यह वसुदेव सुनावै । सूरदास प्रभु मिलहु कृपाकरि ब्रजवनिता सच पावै ॥ २५ ॥ तुम्हारो गोकुलहो ब्रजनाथ । घेरयोहै अरि चतुरंगिनिलै मन्मथ सेना साथ ॥ गर्जत अतिगंभीर गिरा मन मैगल मत्त अपार । धुरवा धूरि उडत रथ पायक घोरनकी खुरतार । चपला चमचमाति आयुध वग पंगति ध्वजा अकार । परत निसाननि घाव तमकि धनु तरपत जिहि जिहि वार । मारै मार करत भट दादुर पहिरे बहु बरन सनाह । औरै कवच उघरे देखियत मनो बिरहनि घाली आह ॥ करै तौ गात अंग चातक पिक कहत भाजि जिनि जाहु । उरनि उरनि वै परत आनि वे जोधा परम उछाहु ॥ भयो अहंकार सुभार मूरि वास कति रही उर शालि । हम कत हाथ परे नाहीं गहि रहि न ढाल संभालि ॥ अति घायल धीरज दुवाहिआ तेज दुर्जन दालि । टूक टूक ह्वै सुभट मनोरथ आने झोली घालि ॥ निशि वासरकै विग्रह आयो अति संकेतहि घाउ । कापै करौ पुकार नाथ अब नाहिंन तुम बिनु ठाँउ ॥ नंदकुमार श्याम घन सुंदर कमलनैन सुखधाम । पठवहु बेगि गोहार लगावन सूरदास जिहि नाम ॥ २६ ॥ ऐसे में न सूध्यो करै अति निठुराई धेरै उनै उनै घटा देखौ पावसकी आईहै । चहुँ दिशि घोर मोर लागी है मदन रोर पिककी पुकार उर अरसी लगाईहै ॥ दामिनिकी दमकनि बूँदनिकी झमकनि सेजकी तलफ कैसे जीजियत माईहै । लागेहैं बिसारे बान श्याम बिनु युग याम घायल ज्यों घूमैं मनो विषहर खाईहै ॥ मिटै न जियको शूल जातहै यौबन फूल घरी घरी पल पल विरह सताईहै । जगतके प्रभु बिनु कल न परे छिनु ऐसे पापी पिय तोहिं पीर न पराई है ॥ २७ ॥ ऐसो जो पावस ऋतु प्रथम सुरति करि माधोजू आवहिं । बरन बरन अनेक जलधर अति मनोहर भेप । तिहि समय सखी गगन शोभा सबहिं ते सु विशेष॥ उडत खग वेग वृंद राजत रटत चातक मोर। बहु विधि विधि रुचि बढ़ावत दामिनी घनघोर ॥ धरनि तृण तनु रोम पुलकित पिय समागम जानि । द्रुमनि वरवल्ली वियोगिनि मिलतिहै पहिंचानि ॥ हंस शुक पिक सारिका अलि गुंज नानानाद ।

मुदित मंडल भेक भेकी निगत विहंग विपाद॥कुटज कुमुद कदंब कोविद कनक आरि सुकंज। केतकी करवील वेलउ विमल बहुविधि मंत॥सवनदल किलकाल अंकुत सुमन सुकृत सुवास। निकट नैन निहारि माधो मन मिलनकी आस॥मनुज मृग पशु पक्षि परमित और अमित जु नाम। सुमिरि देश विदेश परिहरि सकल आवहिं धाम॥ यहै अवधि उपाउ सोचति कछु न परै विचार। कौन हित व्रजवास बिसरचो नीक नंदकुमार॥ परम सुहृद सुजान सुंदर ललित गति मृदु हास। बैनवर बहु विधिवजावन गोप शिशु चहुँपास॥ चारु कुंडल लोल लसित सु कमल विमल विशाल। सुदिन कव जब देखवी वन बहुत बाल विशाल॥ वार बारस विरहनी अति विरह व्याकुल होति। बात वेग विलोल ज्यों अलि दीन दीपक ज्योति॥ सुनि सँदेस हम हृदय सूरदास करि पर तीति।दरश दै दुख दूरि कीजै प्रेमकी यह रीति॥२८॥राग मलार॥आजु घनश्यामकी अनुहारि। उनइ आए साँवरेते सजनी देखि रूपकी आरि॥इंद्रधनुप मानो पीत वसन छवि दामिनि दशन बिचारि। जनु बगपांति माल मोतिनकी चितवत हितहि निहारि॥ गर्जत गगन गिरो गोविंदमिसु सुनत नयन भरे वारि॥सूरदास गुण सुमिरि श्यामके विकल भई व्रजनारि॥२९॥कैसेकै भरिहैं री दिन सावनके॥हरित भूमि भरे सलिल सरोवर मिटे मग मोहन आवनके॥दादुर शोर मोर चातक पिक निशहि निशासुर पावनके। अब घन घुमडि उमडि दामिनि रूप मदन धनुप धरि धावनके॥ पहिरि कुसुमासारी कंचुकी तनु झुंडनि झुंडनि गावनके। सूरदास प्रभु दुसह घटत क्यों शोक त्रिगुण शिररावनके॥३०॥राग केदारो॥हरिसुत पावक प्रगट भयो री॥मारुतसुत बंधोप्रति प्रोहित ता प्रति पालन छाँडि गयो री॥हरसुत वाहन अशन सनेही सो लागत अँग अनल मयो री॥मृगमद स्वाद मोद नाहिं भावत दधिसुत भानसभान भयो री॥ वारिजसुत प्रतिक्रोध कियो सखी मेटि दकार सकार लयो री। सूरदास बिनु सिंधुसुतापति कोपि समर कर चाप लयो री॥३१॥राग मलार॥ऐसे बादर तादिन आये जा दिन श्याम गोवर्धन धारचो॥गरजि गरजि घन वरपन लागे मनो सुरपति निज वैर सँभारचो॥सबै संयोग जुरीहै सजनी हठिकरि घोप उजारचो॥अव को सात दिवस राखैगो दूरि गयो व्रजको रखवारचो॥जब बलराम हुते या व्रजमें काहू देव न ऐसो डारचो। अब यह भूमि भयानक लागै विधिना बहुरि कंस अवतारचो॥ अब इह सुरति करै को हमारी या व्रज कोऊ नाहिं हमारचो। सूरदास अतिबिकल विरहिनी गोपिन पिछलो प्रेम सँभारचो॥३२॥ जो पै नंदसुवन व्रज होते। तो पै नृप पावस सुनि विनती कहत न डरती सोते॥ अव हम अबल जानिकै सखी री हैं गैवरथ जोते। हमपर गरजि गरजि पठवत लेत न सकल सवोते॥ सूरदास प्रभु शैलधरन विनु कहा सबै अब तोते॥३३॥ इहां नाहिन नंदकुमार। इहै जानि अजान मघवा करी गोकुलआर॥ नैन जलद निमेप दामिनि आँसु वर्षत धार। दरश रवि शशि दुर्यो धीरज श्वास पवन अकार॥ उरज गिरिभै भरन भारी अगम काम अपार। गरजि विकल वियोग बाणी हरति अवधि अधार॥ पथिक मथुरा जाइ हरि सो बात कहैं विचार। शत्रुसेन सुधाम घेरचो सूर लगहु गुहार॥३४॥ मानो माई सबन इहै है भावत॥अव वहि देश नंदनंदन कहँ कोउ न समो जनावत॥ धरत न बनै नवपत्र फूल फल पिक वसंत नाहिं गावत। मुदित न सरसरोज अलि गुंजत पवन पराग उडावत॥ पावस विविध वरन वर बादर उड़िनहिं अंबर छावत। चातक मोर चकोर शोर करि दामिनि रूप दुरावत॥ हमपर सकल कोपकरि सजनी हठिकरि बलहि बढावत। सूर श्याम परपीर न जानत कत सर्वज्ञ कहावत॥३५॥ सखी कोई नई बात सुनि आई। इह व्रजभूमि सकल सुर

संपति सो मदन मिलिक करिपाई ॥ घनदामिनि बगपाँति मनोवैं वरपै तडित सुहाई । बोलत बगनिकेत गरजै अति मानो फिरत दोहाई ॥ गोकुल मोर चकोर मधुप शुक सुमन समीर सोहाई । चाहत वास कियो वृंदावन विधिसौं कछु न बसाई ॥ सकत न जानत लागत सूनो कोउ हुते बल वीर कन्हाई।सूरदास गिरिधर बिन गोकुल कौन कौन करिहै ठकुराई॥३६॥वहुरि बन बोलन लागे मोर । करसंभार नंदनंदनकी सुनि बादरको घोर ॥ जिनको पिय परदेश सिधारो सो तियपरी निठोर । मोहिं बहुत दुख हारि बिछुरेको रहत विरहको जोर॥ चातक पिक चकोर पपीहा ए सवही मिलिचोर।सूरदास प्रभु वेगि न मिलहु जनम परतहै वोर॥३७॥यहि वन मोर नहीं ए कामबान। विरह खेद घनु पुहुप भृंग गुन करिल तरैया रिपुसमान ॥ लयो घेरि मनो मृग चहुँ दिशिते अचूक अहेरी नाहिं अजान । पुहुपसेन घन रचित युगल तनु क्रीडत कैसो वन निधान ॥ महामुदित मन मदन प्रेमरस उमँगि भरे मैं मैनजान । इहि अवस्था मिले सूरदास प्रभु बदरचो नानागदै जीवनदान॥३८॥आजु वन मोरन गायो आइ।जबते श्रवण सुन्यो सुन सखी री तबते रह्यो न जाइ॥ व्रजते बिछुरे मुरलि मनोहर मनहुँ व्याल गयो खाइ । औषध वैद गरूरियो हरि नाहिं मानै मंत्र दोहाइ॥चातक पिक दुखदेत रैनि दिन पियपियवचन सोहाइ।सूरदास प्रभु तौपै है जीवहि जौ मिलिहै हरि आइ॥३९॥शिखिन शिखर चढि टेर सुनायो । विरहिनि सावधानह्वै रहियो सजि पावस दल आयो ॥ नव बादल वानैत पवन ताजी चढि चुटकि दिखायो । चमकत वीजु शैलकर मंडित गरजि निसान बजायो ॥ दादुर मोर चातक पिकके गण सब मिलि मारू गायो । मदन सुभट करबाण पंचलै व्रजतन सन्मुख धायो ॥ जानि विदेश नंदको नंदन अवलन त्रास दिखायो।सूर श्याम पहिले गुण सुमिरिहि प्राण जात बिरमायो ॥ ४० ॥ हमारे माई मोरवा वैर परे । घन गर्जत बरज्यो नहिं मानत त्यों त्यों रटत खरे ॥ करि करि पंख प्रगट हरि इनको लैलै शीश धरे । ताही ते मोहन विरहिनिको एऊ ढीठ करे ॥ को जानै काहेते सजनी हमसों रहत अरे । सूरदास परदेश बसे हरि ए वनते न टरे॥४१॥कोउ जाइ वरजौ बोलत मोरनि । टेरनि विरह छिनुन रह्यो परै सुनि दुख होत करोरनि ॥ रटत पपीहा छिनु न रहाई होत.विरहकी रोरनि । चमकत चपल चहूँ दिशि दामिनि अंबर घनकी घोरनि ॥ बर्षत बूँद बाण से लागत विरहाशरके जोरनि । चंद्र किरन नैनन भरि पीवत नाहिंन तृप्ति चकोरनि ॥ मन्मथ पीर अधिक तनु कंपित ज्यौं मृग केहरि कोरनि । सूर दास तोही पर बचिवो मिलि हौ नंद किशोरनि॥४२॥राग सारंग॥अहो रे विहंगम बनवासी । तेरे बोल तरजनी वाढत श्रवन सुनत नींदउ नासी ॥ कहा कहौं कोउ मानत नाहीं इक चंदन औ चंद परासी । सूरदास प्रभु ज्यों न मिलैंगे लेहौं करवत कासी ॥ ४३ ॥ शारंग श्यामहि सुरति कराइ।पौढेहोहिं जहां नँद नंदन ऊंचे टेर सुनाइ ॥ गये ग्रीपम पावस ऋतु आई सब काहू चितचाइ।तुम विनु व्रजबासी ऐसे जीवैं ज्यों करिया विननाइ ॥ तुम्हरो कह्यो मानिहैं मोहन चरण पकरि लैआइ । अबकी बेर सूरके प्रभुको नैनन आनि देखाइ॥४४ ॥ राग मलार ॥ सखी री चातक मोहिं जिआवत । जैसेहि रैनि रटति हौं पिय पिय तैसेही वह पुनि पुनि गावत ॥ अतिहिसुकंठ दाहु प्रीतमको तारुजीभ मनलावत । आपु न पीवत सुधारस सजनी विरहिनि बोलि पिआवत ॥ जो ए पंछि सहाय न होते प्राण वहुत दुख पावत । जीवन सफल सूर ताहीको काज पराए आवत ॥ ४५ ॥ राग सारंग॥चातक न होइ कोउ विरहिनि नारि।अजहूँ पिय पिय रजनि सुरति करि झूठेहि माँगत वारि ॥ अति कृपगात देखि साखि याको अहनिशिवाणी रटत पुकारि । देखौ प्रीति बापुरे पशुकी आन जनम मानत नहिं हारि ॥

अब पति बिनु ऐसो लागत यह ज्यों सरवर शोभित बिनवारि । त्योंही सूर जानिए गोपी जो न कृपा करि मिलहु मुरारि॥४६॥राग आसावरी॥अब मेरी को बोलै साखि। कैसे हरिके संग सिधारे अब-लौं यह तनु राखि॥ प्राण उदान फिरत ब्रज बिथिनि अवलोकनि अभिलापि । रूप रंग रस रास परानो बचन न आवै भापि॥ सूर सजीवनि मूरि मुकुंदहि लै आइहौ आँखि। अब सोइ अंजन देति सुरुचि करि जिहि जीजै सुख चाखि॥४७॥राग मलार॥ बहुत दिन जीवो पपीहा प्यारो। वासर रैनि नावलै बोलत भयो विरह ज्वर कारो॥आपु दुखित परदुखित जानि जिय चातक नाउँ तुम्हारो।देखो सकल बिचारि सखी जिय बिछुरनको दुख न्यारो॥ जाहि लगै सोई पै जानै प्रेम बाण अनियारो । सूरदास प्रभु स्वाति बूँद लगि तज्यो सिंधु करि खारो॥४८॥तौ मोहनके बिरहजरी रे तू कत जारत रे पापी तू पांखि पपीहा पिउ पिउ पिउ अधराति पुकारत॥सब जग सुखी दुखी तू जल बिनु तऊ न तनुकी बिथहि बिचारत। कहाकठिन करतूति न समुझत कहा मृतक अबलनि शर मारत॥ तू शठ बकत सतावत काहू होत उहै अपने उर आरत। सूर श्याम बिनु ब्रज पर बोलत हठि अगिलेऊ जनम बिगारत॥४९॥राग नट॥ जो तू नेकहूँ उडि जाहि। कहा निशिवासर बकत वन बिरहिनी तनु चाहि॥ बिधिहि बचन सुदेश बाणी इहां रिझवत काहि। पति बिमुख पिक पुरुप बसुलौ एतो कहा रिसाहि॥ नाहिंन सुख सुनत समुझत बिकल बिरह व्यथाहि। राखि यहु तन वा अवधिलों मदन मुख जिनि खाहि॥ तहूतो तनु दग्ध खलखि फिरि कहा समुहाहि।करि कृपा ब्रज सूर प्रभु बिनु मौनि मोहिं बिसाहि॥५०॥ ॥राग सारंग॥ कोकिल हरिको बोल सुनाउ। मधुबनते उपठारि श्यामको इहि ब्रज लैकरि आउ॥ जाजस कारण देत सयाने तन मन धन सब साजु। सुयश बिकात बचनके बदले क्यों न बिसाहत आजु॥ कीजै कछु उपकार परायो यहै सयानो काज। सूरदास पुनि कहा यह औसर बन बर्णन ऋतुराज॥ ५१॥ सुन री सखी समुझि शिख मेरी। जहां बसत यदुनाथ जगतमणि बारक तहँ आउ दै फेरी॥ तू कोकिला कुलीन कुशल मति जानत व्यथा बिरहिनी केरी। उपवन बैसि बोलि बरबानी बचन सुनाय हमहि करि चेरी॥ कहियो प्रगट सुनाय श्यामसों अबला आनि अनंगरिपु घेरी। तोसी नहीं और उपकारिनि यह बसुधा सब बुधि करि हेरी॥ प्राणनके बदले न पाइयत सेंति बिकाय सुयशकी ढेरी। ब्रजलै आउ सूरके प्रभुको गाऊंगी कलकीरति तेरी॥ ५२॥ राग मलार॥ अब इह बरपो बीति गई। जिनि सोचहु सुखमान सयानी भली ऋतु शरद भई॥ प्रफुलित सरज सरोवर सुंदर नवविधि नलनि नई। उदित चारु चंद्रिका अबर उर अंतर अमृत मई॥ घटी घटा सब अभिन मोह मद तामिता तेज हई। सरिता संयम स्वच्छ सलिल जल फाटी काम कई॥ हे शारधा सँदेश सूर सुनि करुणा कहि पठई। यह सुनि सखी सयानी आई हरि रति अवधि दई॥५३॥राग मारू॥शरद समैहू श्याम न आए। को जानै काहेते सजनी कहुँ बिरहिन बिरमाए॥ अमल अकास कास कुसुमिन क्षिति लक्षण स्वाति जनाए। सर सरिता सागर जल उज्वल अलिकुल कमल सुहाए॥ अहि मयंक मकरंद कंद हति दाहक गरल जिवाए। त्रिय सब रंग संग मिलि सुंदरि रचि सचि सींच सिराए॥ सूनी सेज तुपार जमत चिरहास चंदन बाए। अबलहि आश सूर मिलिबेकी भए ब्रजनाथ पराए॥५४॥ अथ चंद्र प्रति तरकयदाति॥ राग कान्हरो॥छूटि गई शशि शीतलताई। मनु मोहि जारि भसम कियो चाहत साजत मनो कलंक तनु काई॥ याहीते श्याम अकास देखियै मानो धूम रह्यो लपटाई। ता ऊपर दंदेत किरनि उर उडुगण कउनै चढि इत आई॥ राहु केतु दोउ जोरि एक करि कहि इहि समै जरावहि पाई। ग्रसे ते न पाचि

जात पापमें कहत सूर बिरहिनि दुखदाई॥९५॥राग केदारो॥यह शशि शीतल काहेते कहियत। मीनकेत अंबुज आनंदित ताते ताहित लहियत॥ बिरहिनि अरु कमलनि त्रासत कहुँ अंपकारी रथनहिं यत। सूरदास प्रभु मधुवन गौने तो इतनो दुखसहियत॥९६॥ करधनु लिए चंद्रहि मारि। तब तोपै कछु वै न सिरैहै जब अतिज्वर जैहै तनुजारि॥ सूहरवाइ जाइ मंदिरचढि शशिसन्मुख दर्पण बिस्तारि। ऐसी भाँति बुलाइ मुकुर महि अति बल खंड खंड करिडारि॥ सोई अवधि निकट आईहै चलतैंही जो दई मुरारि। सूरसो बिनय करति हिमकरसों अब तू ज्यो छाँड़ि दिनचारि॥९७॥ ॥राग सारंग॥ हरको तिलक हरि बिनु दहत। वै कहियत उडुराज अमृतमै तजि स्वभाव मोहिं बहनि बहत॥ कत रथ थकित बयो जु पश्चिम दिशि ग्राह ग्रसित जैसे ग्रहन ग्रहत। छयो न छीन होत सुन सजनी भूमि भवनरिपु कहा बसत॥ जाको ध्यान धरतिहौं दधिसुत मणि महेश जैसे रहनि रहत। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिना प्राणतजति यह नाहिनै सहत॥९८॥ राग मारू॥ या बिन होब कहा यह सूनो। लै किन प्रगट कियो प्राचीदिशि बिरहिनिको दुख दूनो॥ सब निरदै सुर असुर शैल सखि सायर सर्प समेत। काहु न कृपाकरी इतननिमें त्रियतन बन दौ देत॥ धन्य कहूं वर्षा रवि तमचुर अरु कमलनको हेतु। युग युग जीवै जर बापुरी मिलै राहु अरु केतु॥ चितै चंद्र तन सुरति श्यामकी बिकलभई ब्रजबाल। सूरदास अजहूं इहि औसर काहे न मिलत गुपाल॥९९॥ दूरि न करहि बीनको धरिबो। रथ थाक्यो मानो मृग मोहे नाहिन कहूँ चंद्रको टरिबो। जामें बीती सोई जानै कठिन सु प्रेम पाशको परबो।प्राणनाथ संगहुते बिछुरे रहत न नैन नीरको झरिबो॥ चंदन चरचि तनु दहत मलयानिल श्रवण बिरहानल जरिबो। सूर सु कमलनैनके बिछुरे झूंठो सब जतन-निको करिबो॥१००॥राग केदारो॥बिधु वैरी शिरपर वसै निशिदिन परई।हरि सुर भान सुभट बिना यहि-को वश करई॥ गगन शिखर उतरै चढै गर्वै जिय धरई। किरिनि सकति भुज भरिहनै उरते न निकरई॥ उडु परिवार पिशुन सभा अपयशहि न डरई। सोइ परपंच करे सखी अबला ज्यों बरई॥ घटै बढै यहि पापते कालिमा न टरई॥सूर दुष्ट समुझावही त्यों त्यों जिय खरई॥१०१॥राग मलार॥ कोऊ बरजो री या चंद्रहि। अतिही क्रोध करत हम ऊपर कुमुदिनि कुल आनंदहि॥ कहा कहों वर्षारवि तमचर कमलबलाहक कारे। चलत न चपल रहत थिरकै रथ बिरहिनिके तनुजारे॥ नींदत शैल उदधि पन्नगको श्रीपति कमठ कठोरहि। देति अशीश जरा देवीको राहु केतु किनि जोरहि। ज्यों जलहीन मीन तनु तलफति ऐसी गति ब्रजबालहि। सूरदास प्रभु आनि मिलावहु मोहन मदनगुपालहि॥१०२॥ अब हरि कौनसों रति जोरी। काके भए कौनके ह्वैहैं बँधे कौनकी डोरी॥ त्रेता युग इक पत्नी व्रत किए सोऊ बिलपति छोरी। शूर्पनखा वन व्याहन आई नाक निपाति बहोरी॥ पय पीवत जिन हती पूतना श्रुति मर्यादा फोरी। बहुतै प्रीति बढाइ महरिसों बहुरौ नाचितयो उन ओरी॥ आरजपंथ छिंडाय गोपिकन अपने स्वारथ भोरी। सूरदास करि काज आपनो गुढी डोरि ज्यों तोरी॥१०३॥ अब या तनुहि कहो कहा कीजै। सुन री सखी श्याम सुंदर बिन बाँटि विषम विष पीजै॥ कै गिरिए गिरि चाढि सुनि सजनी कै शीश शंकरहि दीजै। कै दहिए दारुण दावानल जाइ यमुन धसि लीजै॥ दुसह वियोग बिरह माधोको दिनही दिनही छीजै। सूर श्याम प्रीतम बिनु राधे सोचि सोचि जिय जीजै॥१०४॥राग भोपाली॥हमहि कहा सखी तनके जतनकी अब या यशहि मनोहर लीजै। सकल त्रास सुख याही वपुलौं छाँडि दियेते कछू न छीजै॥ कुसुमित सेज कुसुम सर सरवर हरिकै प्राण प्राणपति जीजै। बिरह थाह ब्रजनाथ सबनदै निधरक सकल

मनोरथ कीजै ॥ सबन कहत मन रीस रिसाए नहिंन वसाय प्राण तजि दीजै । सूर सु पतिसों चरचि चतुरई तुम यह जाइ बधाई लीजै ॥६५॥ राग केदारो॥ जियहि क्यों कमलनि कादौं हीन।जिनसों प्रीति हुती री सुन सखी तिनहुँ बिछुरि दुख दीन ॥ सागर कूल मीन तरफतहैं हुलसि होत जल दीन । श्याम वारि विधि लई विरद तजि हम जु मरति लवलीन ॥ शशि चंदन अरु अंभ छौंडि गुण वपु जु दहत मिलि तीन।सूरदास प्रभु मौन सबै व्रज विन यंत्री विन वीन६६॥ राग सारंग॥बैसी शारंग करहि लिये । शारंग कहत सुनत वे शारंग शारंग मनहि दिये ॥ शारंग पथिक बैठि वह शारंग शारंग विकल हिये । शारंग धुकि शारंग परे शारंग शारंग क्रोध किए ॥ शारंगहै भुज करहि विराजत शारंग रूप किए । सूरदास मिलहीं वे शारंग तौ परि सुफल जिये ॥६७॥ राग मलार॥सो सुनियतहै री द्वै माह । इतने महि सब तात समुझिवी चतुर शिरोमणि नाह ॥ आवन कह्यो वहुत दिन लाए करी पाछिली गाह । हमहिं छाँडि कुविजा मन बाँध्यो कौन वेदकी राह ॥ एते पर संतोष न मानत परे हमारे डाह । सूरदास प्रभु पूरो दीजै दिन दश मानी साह ॥६८॥ राग सारंग॥ ऐसो सुनियत है द्वै साव-न । उहै शूल फिरि फिरि शालत जिय श्याम कह्यो हो आवन ॥ तव कत प्रीति करी अव त्या-गी अपनो कीनो पावन । यह सुख सखी निकसि तजि जइये जहां सुनीए नावन ॥ एकहि वेर तजी मधुकर ज्यों लागे नेह बढावन । सूर सुरति क्यों होति हमारी लागी नीकी भावन॥६९॥ राग कान्हरो ॥ काहेको पिय पियहि रटतहो पियको प्रेम तेरो प्राण हरैगो । काहेको लेति नयन जल भरि भरि नयन भरेते कैसे शूल टरैगो ॥ काहेको श्वास उसाँस लेतिहो वैरी विरहको दवा जरै गो ॥ छाल सुगंध सेंज पुहुपावलि हारु हुए ते हियहारु जरैगो ॥ वदन दुराइ बैठि मंदिरमें बहुरि निशापति उदय करैगो । सूरसखी अपने इन्ह नैननि चंद्र चितै जिनि चंद्र जरैगो॥७०॥ राग सारंग॥अव हरि हमको माई री मिलत नाहिंन नेकु । नित उठि जाइ प्रातले वनसँग आगे पाछे चलिन सकति सखी डग एकु ॥ बाँहा जोटी कुसुम चुनत दोउ हुमतन मेरे उर लगि एक दिन नख एक । रसन दशन धरि भरि लिए लोचन तोरन लखि सुधर वरषे एक ॥ लावत हृदय खोंचि पुरतपट फरुहु रि लेत परिजन रेक । अव कोउ सोहै वहु सूर प्रभु कौन अधिक जिहि परिनेक॥७१॥ राग मलार॥हो कछु बोलति नाहीं लाजनि । एक दाइँ मारि मरिवो पै मरिवो नंदनंदनके काजनि ॥ तजि व्रजबाल आपनो गोकुल अव भए सुखराजनि । कागज लिखि पतियां नहिं पठवत पायो जियको माजनि॥ जे गृह देखि परमसुख होतो विन गोपाल भए भाजन । कासों कहों सुनै कोई दुख दूरि श्यामसों साजन ॥ कारी घटा देखि धुरवा जनु विरह लयो करता जनु । सूरदास नागर विन अव यह कौन सहै शिर गाजनु ॥७२॥ राग गौरी॥ बहुदिन ऐसोई हतो री । ह्वै जाते मेरे आँगनमें मोहन चरन चलि ऐसो री ॥ वालदशाकी प्रीति निरंतर परी रहतही ठोरी। राधा राधा नँदनंदन मुख लागि रहो तिहि सोरी ॥ वेणु पाणि गहि मोको सिखावत मोहन गावन गौरी । सूरदास श्याम शारंग तजि वहु सुख बहुरि न भोरी ॥७३॥ राग सारंग॥गौरिपुत रिपु तासुत आए प्रीतम ताहि ननारे । शिव विरंचि जाके दोउ वाहन तिन हरे प्राण हमारे ॥ मोहिं वरजत उठि गमन कियो उठ स्वादे लुवध रसाल । कुंती नंद तात सुख जोवत अरु वारत अतिचाल ॥ उगवै सूर छुटैवे बंधन तौ विरहिनि रति मानै । इहि विधि मिले सूरके स्वामी भक्त होइ सो जानै ॥७४॥ राग गौरी॥ माधो जू दरशनकी औसेरि। लै जु गए मनसंग आपने वहुरि न दीन्हों फेरि।तुम्हरे भवन नहीं भावै मनु जनु राखै वे टेरि। कमलन यो हम हरी हेम अति कासों कहैं दुख टेरि ॥ तुम बिछुरे सुख कवहुँ न पायो सव

जग देखति हेरि । सूरदास सब नातो व्रजको आए नंद निवेरि ॥ ऋतु वसंत कोकिल कत कूजहि मदन संकली खेरि ॥ ७५ ॥ राग आसावरी ॥ सखी री विरहा यह बिपरीत । विरहिनी वाशु क्यों करै पावसकाल प्रतीत ॥ नित नवला नवसत साजिकै अरु वह आवक राखी । ना जानौं नृपति प्राणपति कहां हैं रुचि आँखी ॥ सूरदास गोपालकी सब अवधि गई व्यतीत । बहुरि कब देखिबो सुख तुम्हारो यह नीत ॥ ७६ ॥ राग बिलावल ॥ तोऊ तौ गोपाल आहिं गोकुल बासी । ऐसी बातैं बहुतै कहि लोग करत हैं हाँसी ॥ मथि मथि सिंधु सुरन कर पोषी शंभु भए विषुआसी । इमि हति कंस राज औरै दयो चाहिलई इक दासी॥बिसरो सूर विरह दुख अपनो अब चली चाल औरासी।ऐसे विहंग प्रीति निधि देखे प्रगट न परखी खासी॥७७॥ राग सारंग॥ उन व्रजदेव नेकु चितु करते । कछु जिए आश रहति विधिवश जो बहुरहु फिरि २ मिलते ॥ कहा कहिए हरि सब जानत हैं या तनुकी गति ऐसी । सूरदास प्रभुताहि सुरुचि मिलि नातरु हम गरवैसी ॥ ॥७८॥राग बिलावल॥श्याम चितौंदेरे मधु बनियां।अपने हाथ पोहि पहिरावत कान्ह कनकके मनियां॥ बहुरि गोकुल काहेको आवत भावत नवजोवनियां । सूरदास प्रभु वाके वशपरि अब हरि भए चिकनियां॥७९॥देखो री यौं लोग चतुर मधुवनको।वादत नहीं गोविंद विमोहे गुणजानौं माधौको॥ जब हरि गमन करो मधुवनको छाँडो हेतु सबनको। सूरदास प्रभु बेगि मिलावो गोविंद प्यारो निज प्राणनिको ॥८०॥राग धमार॥कहो री जो कहिवेकी होई।प्राणनाथ बिछुरेकी वेदन और न जानै कोई॥ ज्यों २ अधर सुधारस लैलै मगन रही सुख जोई । जो रस शिव सनकादिक दुर्लभ सो रस बैठी खोई॥ कहा करौं कछु कहत न आवै सुखसपना भयो सोई । हमसों कठिन भए कमलापति काहि सुनावो रोई ॥ विरह व्यथा अंतरकी वेदन सो जानै जेहि होई । सूरदास सुख मूरि मनोहर लैजो गयो मन गोई॥८१॥ राग सारंग॥ बिछुरे री मेरे बालसँघाती । निकसि न जात प्राण ए पापी फाटत नाहिं वज्रकी छाती॥हौं अपराधिन दही मथतिहि भरियोबन मदमाती।जाहों जानति हरिको चलिवो लाज छाँडि सँगजाती ॥ ढरकत नीर नैनभरि सुंदर कछु न सोहात दिवस अरु राती । सूरदास प्रभु दरशन कारन सब सखिअन मिलि लिखी जो पाती॥८२॥राग मलार॥हरि परदेश बहुत दिन लाए । कारी घटा देखि बादरकी नैननीर भरि आए ॥ वीरवटाऊ पंथी हो तुम कौन देशते आए । इह पाती हमरी लै दीजो जहां साँवरे छाए ॥ दादुर मोर पपीहा बोलत सोवत मदन जगाए । सूर-दास गोकुलते बिछुरे आपुन भए पराए॥८३॥हमारे हिरदै कुलसे जीत्यौ । फटत न सखी अजहुँ उहि आशा वरप दिवस पारि बीत्यौं ॥ हमहूँ समुझि परी नीकेकरि यहै असित तनु रीत्यो । बहुरिन जीवन मरन सों साझो करी मधुपकी प्रीत्यो ॥ अबतौ बात घरी पहरन सखी ज्यों उदवसकी भीत्यो। सूर श्याम दासी सुख सोवहु भयो उभयमन चीत्यो॥८४॥राग सारंग॥एकदिवस कुंजन मैं माई। नाना कुसुम लैलै अपने कर दिए मोहिं वह सुरति न जाई ॥ इतनेमें घन गार्जे वृष्टिकरि तनु भीज्यो मो भई जुडाई । कंपत देवि उठाइ पीतपट लैकरुणामैं कंठ लगाई ॥ कहँ वह प्रीति रीति मोहनकी कहाँ अवधौं एते निठुराई । अब बलवीर सूर प्रभु सखी री मधुवन बसि सब रति बिसराई ॥८५॥ राग कान्हरो ॥ हों जानो मोको सखी माधो हितुहै कियो । अति आदर आतुर अलि ज्यों मिलि सुख मकरंद पियो ॥ वरु वह भली पूतना जाको पय सँग प्राण गयो । मनु मधु अचै निपट सूने तन यह दुख अधिक दयो ॥ देखि अचेत अमृत अवलोकनि चले जु सींचि हियो । सूरदास प्रभु वा अधार ते अबलौं परत जियो ॥ ८६ ॥ राग सारंग ॥ या गतिकी माई को जानै। पंकज

सों पंकज गहि सींचे ए कबहूं न निदानै ॥ शिबिनृप अरु सनकादिक कपि मुनिराई पर रति रंगमानै। करिहारी वह लोभ निसोए जु रहत इकतातानै॥ बपु बिचारि अवगनि इनि इनते भाव कुचित यह ठानै। सूरदास प्रभु शिशु लीलामें नावी रैनि जु बानै ॥ ८७॥ नाहिनै व्रजनंद कुमार। परमचतुर सुंदर सुजान सखी या तनुको प्रतिहार॥ रूप लकुट लिएही रहते आलि अनुदिन नैननि द्वार। तादिनते डर भौन भयो सखी शिवरिपुको संचार॥ दुख आवन कछु अटक न मानत सूनो देखि अगार। अंशु उसाँस जात अंतरते करत न कछू विचार॥ निशानिमेष कपाट लगे विन शशि सूपत सतसार।सूर प्राणलटि लाज न छाँडत सुमिरि अवध आधार॥८८॥ राग मलार॥ ऐसे जो हरि आवहिंगे। निरखि निरखि वह मदन मनोहर नैन बहुत सुख पावहिंगे॥ तैसिए श्याम घटा घनघोरनि बिच बगपांति दिखावहिंगे। तैसेइ मोर पिक करत कुलाहल हरषि हिंडोलना गावहिंगे॥ तैसी ए दमकति दामिनी अरु मुरली मलार बजावहिंगे। अबके चलते जानि सूर प्रभु सब पहिले उठि धावहिंगे॥८९॥राग रामकली॥ व्रज कहा खोरी।छत अरु अछत एकरस अंतर मिटत नहींकोई करहु कोरी॥ बालकही अभिलाषनि लीला चकृत भई कुललाज न छोरी। विरुध विवेक गोपरस परि करि विरहसिंधु मारत ते बोरी॥ यद्यपि हो त्रयलोकके ईश्वर परसि दृष्टि चितवति न बहोरी। सूरदास प्रभु प्रीति रीति कतते तुम सब अब रहे तोरी॥९०॥ राग सारंग॥ हरि मोको हरि भषु कहि जु गयो। हरि दरशत हरि मुदित हरि व्रज हरि जु लयो॥ हरिरिपु तारिपु पतिको सुत हरि बिनु प्रजरि दहे। हरिको तात परस उर अंतर हरि विन अधिक वहे॥ हरि तनया सुधि तहाँ वदति है हरि अभिमानन ढायो। अब हरि दवन दिवा कुबिजाको सूरदास मन भायो॥९१॥राग सारंग॥हरि विनु कौन सों कहिए।मनसिज व्यथा जराति अरनिलों उर अंतर दहिए॥ कानन भवन रैनि अरु वासर कहूं न सच लहिए। मूके भये यज्ञके पशुलों कोलों दुख सहिए॥ कबहुँक उपजै जियमें ऐसी जाइ यमुन बहिए। सूरदास प्रभु कमलनैन विन कैसे व्रज रहिए॥ ॥९२॥राग मारू॥किते दिन हरि देखे विन बीते।एको फुरत न श्याम सुंदर विन विरह सबै सुख जीते॥ मदन गोपाल बैठि कंचनरथ चिते किए तनुरीते।सुफलकसुत लैगए दगादै प्राणनहींके प्रीते॥ बहुरि कृपालु घोष कब आवहिं मोहन राम समीते। सूरदास प्रभु बहुरि कृपाकरि मिलहु सुदामा मीते॥९३॥राग सारंग॥कान्हयों हमसों कहा कह्यो। निकस्यो वचन सुनाइ सखी री नाहिन परतु रह्यो। मैं मतिहीन मर्म नहिं जान्यो भूली मथत मह्यो। अब कहा करों घोष बसि सजनी दूत दूरि निवह्यो॥सबै अजान भई तेहि औसर काहु रथ न गह्यो। सूरदास प्रभु वृथा लाज करि दुसह वियोग सह्यो॥९४॥राग नट॥ग्वालिनी छाँडि देखि रहु खरचो।तेरे विरह विरहिनी व्याकुल भवन काज विसरचो। कर पल्लव उडुपति रथ खैंच्यो मृगपति वैर करचो।पंखी पति सबही सकुचाने चातक अनग भरचो। शारंग सुर सुनि भयो वियोगी हिमकर गर्व टरचो। सूरदास सायर सुताहित पति देखत मदन हरचो॥९५॥राग सारंग॥विरह भरचो घर अंगन कौने। दिन दिन बाढत जात सखी री ज्यों कुरखेतके डारे सोने॥ तब वह दुख दीनो जब बाँधे ताहूको फल जानि। निजकृत चूक समुझि मनहीं मन लेत परस्पर मानि॥ हम अबला अति दीन हीन मति तुमही सब हो विधियोग। सूर बदन देखतही अहुठै या शरीरको रोग॥९६॥ राग मलार॥जोपै कोउ माधो सों कहै। तो यह व्यथा सुनत नँदनंदन कत मधुपुरी रहै॥ पहिलेही सब दशा बतावै पुनिकर चरण गहै। यह प्रतीति मेरे चित अंतर सुनत न प्रेम सहै॥ यहै सँदेश सूरके प्रभुको को कहि यशहि लहै। अबकी बेर दयालु दरश दै

T

यह दुख आनि दहै॥९७॥राग सारंग॥माधो छांडिबे पहिचानि।तबते विरह कुटिल या गोकुल कीनो है विनु खानि ॥ तनु गिरि जानि आनि अवनी डर इहि डड भीत रहे । गमन कान्ह क्षण क्षण तु काम शशि किरनि कुदार गहे॥रेणु अंजन जल नैन द्वार ह्वै रह्यो हृदय भरि पूरि । निकसत नाहीं पापरतन ज्यों गयो श्याम सँग दूरि ॥ तुमसों बात और अलि भाषे उलटि ध्यान वपु जीत्यो । द्वै नृप लरत जाइ इंद्रीगत कहो सूरको नीत्यो॥९८॥राग नट॥मेरे मन इतनी शूल रही।वैवतियां छतियां लिखि राखी जे नँदलाल कही ॥ एक दिवस मेरे गृह आए हौंहीं मथत दही । रति माँगत मैं मान कियो सखी सो हरि गुसा गही ॥ सोचति अति पछिताति राधिका मुर्छित धरणि ढही । सूरदास प्रभुके बिछुरे ते व्यथा न जात सही ॥९९॥ राग मलार॥ हरि इते दिन लाए । आवन कहि गए अजहुँ न आए ॥ चलत चितै मुसुकायके मृदु वचन सुनाये । तेई ढँग मोदक भए न धीरज हरि तन छूछ करि छिटकाये॥मोहन यदुनाथके गुण जानि न पाए।मनहु सूर घनश्याम सुंदर बहुरि न चरण दिखाए॥ ॥२९००॥यह दुख कौन सों कहों।जोइ वीतति सोइ कहति सयानी नित सब शूल सहों ॥ जे सुख श्याम संग सबकीने गहि राखे इहि गात । ते अब भए शीत या तनुको शाखा ज्यों द्रुम पात ॥ जो हुती निकट मिलनकी आशा सोतो दूरि गई । यथा योग ज्यों होत रोगिया कुपथी करत नई ॥ यह तनु त्यागि मिलन यों बनि है गंगासागर संग । अब सुन सूर ध्यान ऐसोहै श्याम राम इक रंग ॥१॥ राग सारंग॥हम शरघात ब्रजनाथ सुधानिधि राखे बहुत जतन करि सचि सचि । मन मुख भरि भरि नैन ऐनह्वै उरप्रति कमल कोशलौं खचि खचि ॥ सुभग सुमन सब अंग अमृतमय तहां तहां राखति चित रचि रचि । मोहन मदन स्वरूप सुयशरस करत सु गुप्त प्रेमरस पचि पाचि ॥ सूर सुदास पियूष लागि रस पठयो नृपति तेउ गए बचि बाचि । अब सोई मधु हरयो सुफलकसुत दुसह दाह जो उठत तन तचि तचि ॥ २ ॥ जबते नंदलाल चले काहू मुरली न वजाई । उन विना जिय कठिनपीर निकसिहू न जाई । वृंदावनमें भूली काहू सारंगौ न गाई॥ गोपिन कठिन हियेतरकि हूं न जाई।सूरदास प्रभुकी लीला ऊधो कछु पाई ॥३॥ राग सारंग ॥ माई वै दिना ये देह अछत बिधना जो आनै री । श्यामसुंदर रंग रंग युवति वृंद ठानै री ॥ यद्यपि अक्रूर मूल परमगति पढ़ावै री ।प्राणनाथ कमलनैन बाँसुरी बजावै री॥सोई कहा कहौं कहत कठिन कहै कौन मानै री । सूरसो नंद प्रेम पीर विरही मिले जानै ॥ ४ ॥ सबकोउ कहत सयानी बातें । समुझि न परत बूझि नहिं आवत कही जात नहीं तातें॥ पहिले जानि अग्नि चंदनसी सती वहुत उमहै । समाचार ताते औ सीरे आगे जाय लहै ॥ कहत फिरत संग्राम सुगम अति कुसुममाल करवार । सूरदास शिरदेत शूरमा सोइ जाने व्यवहार ॥ ५ ॥ राग गूजरी ॥ कुँवरिको वैरागी वैराग । पलटति वसन करति निशि चोरी वपु विलसुत भई जाग ॥ बेसरि वेह मूँदि मृगमद मथि नख उर धुकधुकी खेद कीनी । चलत चरण चित गयो गलित झिर स्वेद सलिल भैभीनी ॥ छूटी भुजवल फूटी बलय कर छटि लरफटी कंचुकी छीनी । मनहुँ प्रेमकी परनि परेवा याही से पढि लीनी ॥ अवलोकत इहि भाँति रमापति जानौं अहिमणि छीनी । सूरदास प्रभु कही न जाइ कछु हौं जानी मति हीनी ॥६॥ राग मलार॥ हरिको मारग दिन प्रति जोवति । चितवति रहति चकोर चंद्र ज्यों सुमिरि सुमिरि गुण रोवति ॥ पतिआँ पठवत मसि नहिं खंडित लिखि लिखि मानहु धोवति । भूषण दिन निशि नींद हिरानी एकौ पलनाहिं सोवति ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश विनु वृथा जनम सुख खोवति ॥७॥ राग बिलावल ॥ अंतर्यामी कुँवर कन्हाई।गुरु गृह पढत हुते जहाँ विद्या

तहां ब्रजकी सुधि आई ॥ गुरुसों कह्यो जोरि कर दोऊ दक्षिणा कहौ सो देउँ मँगाई । गुरुपत्नी कह्यो पुत्र हमारो मृतक भयो सो देहु जिवाई ॥ आनि दिए गुरुसुत यमपुरते तब गुरुदेव अशीश सुनाई । सूरदास प्रभु आइ मधुपुरी ऊधो को ब्रज दियो पठाई ॥ ८ ॥ अध्याय ॥ ॥४६॥ उद्धवब्रजआगमन हेतु॥ राग नट॥ यदुपति जानि उद्धव रीति । जिहिं प्रगट निज सखा कहियत करत भाव अनीति । विरहदुख जहां नाहिं जामत नहीं उपजै प्रेम । रेख न मन रूप वरन जाके यहि धरयो वह नेम॥ त्रिगुणतनु करि लखत हमको ब्रह्ममानत और । बिना गुण क्यों पुहुमि उधरै यह करत मन डौर ॥ विरहरसके मंत्र कहिए क्यों चलै संसार । कछु कहत यह एक प्रगटत अतिभरयो अहंकार ॥ प्रेमभजन न नेकु याके जाइ क्यों समुझाइ । सूर प्रभु मन इहै आनी ब्रजहि देउँ पठाइ॥९॥ राग नट॥ इह अद्योत दरशीरंग । सदा मिलि एकसाथ बैठत चलत बोलत संग॥ बात कहत न बनत यासों निठुर योगी जंग । प्रेम सुनि विपरीत भाषत होतहै रसभंग ॥ सदा ब्रजको ध्यान मेरे रासरंग तरंग। सूर वह रस कहौं कासों मिल्यो सखा अुरंग॥ राग नट॥ संग मिलि कहौं कासों बात । यह तो कथत योगकी बातें जामें रस जरिजात ॥ कहत कहा पितु मात कौनको पुरुष नारि कहा नात । कहा यशोदासीहै मैया कहा नंद सम तात ॥ कहा ब्रज भानुसुता सँगको सुख यह वासर वह प्रात । सखी सखा सुख नहीं त्रिभुवनमें नहिं वैकुंठ सुहात ॥ वे बातें कहिए केहि आगे यह गुनि हरि पछितात। सूरदास प्रभु ब्रजमहिमा कहि लिखी वदत बलभ्रात॥ १०॥ राग धनाश्री ॥ कहां सुख ब्रजको सो संसार । कहां सुखद वंसीवट यमुना यह मन सदा बिचार ॥ कहां वनधाम कहां राधा सँग कहां संग ब्रजवाम । कहां रसरास बीच अंतर सुख कहां नारि तनु ताम॥ कहां लता तरु तरु प्रति झूलनि कुंजरवन धाम। कहां विरह सुख विनु गोपिन सँग सूर श्याम ममकाम ॥ सखा हमको मिले ऊधो बचनन मारत ताम ॥ भावभजन विना नाहीं सुख कहां प्रेम अरु योग । काग हँसहि संग जैसो कहां दुख कहां भोग । जगतमें यह संग देखो वचन प्रति कहै ब्रह्म । सूर ब्रजकी कथा सो कहै यह करै जो दंभ॥ ११ राग कान्हरो॥ हंस कागको संग भयो। कहां गोकुल कहां गोप गोपिका विधि यह संग दयो ॥ जैसे कंचन कांच संग ज्यों चंदन संग कुगंधि । जैसे खरी कपूर दोउ यक सम यह भई ऐसी संधि ॥ जलबिनु मीन रहत कहुँ न्यारे यह सो रीति चलावत । जब ब्रजकी बातें यहि कहियत तबहिं तबहिं उचटावत ॥ याको ज्ञान थापि ब्रजपठऊं और न याहि उपाव । सुनहु सूर याको वन पठऊं यहै बनैगो दावँ॥ १२॥ राग धनाश्री॥ याहि और कछु नहीं उपाइ। मेरो प्रगट कह्यो नहिं वदिहै ब्रजही देउँ पठाइ ॥ गुप्तप्रीति युवतिनकी कहिकै याको करौं महंत । गोपिनको परबोधन कारण जैहै सुनत तुरंत ॥ अति अभिमान करैगो मनमें योगिनकी इह भाँति। सूर श्याम यह निहचै करिकै बैठतहै मिलि पाँति॥ १३॥ जबहीं यह कहोंगो वाहि। मोहिं पठवत गोपिकनपै हरष ह्वैहै ताहि॥ योगको अभिमान करिहै ब्रजहि जैहै धाइ । कहैगो मोहिं श्याम मानत करौं यह चतुराइ ॥ आइ गए तेहि समय ऊधो सखा कहि लियो बोलि । कंध धरि भुज भए ठाढे करत वचननि ठोलि ॥ बार बार उसाँस डारत कहत ब्रजकी बात । सूर प्रभुके वचन सुनि सुनि उपँगसुत मुसकात ॥ १४ राग धनाश्री ॥ हरि गोकुलकी प्रीति चलाई। सुनहु उपँगसुत मोहिं न विसरत ब्रजवासी सुखदाई ॥ यह चित होत जाउँ मैं अबहीं यहां नहीं मन लागत। गोपी ग्वाल गाइ बन चारण अति दुख पायो त्यागत ॥ कहा माखन रोटी कहां यशुमति जेवहु कहि कहि प्रेम । सूर श्यामके वचन हँसत सुनि थापत अपनो नेम॥ १५॥ राग रामकली ॥ यदुपति लखो तेहि मुसकात । कहत हम मन रहे

T

जोइ सोई भई यह बात ॥ वचन परकट करन कारण प्रेमकथा चलाइ । सुनहु ऊधो मोहिं ब्रजकी सुधि नहीं बिसराइ ॥ रैनि सोवत दिवस जागत नहींहै मन आन । नंद यशुमति नारि नर ब्रज तहाँ मेरो प्राण । कहत हरि सुनि उपँगसुत यह कहतहौं रसरीति । सूर चितते टरत नाहीं राधिकाकी प्रीति ॥ १६ ॥ सखा सुन एक मेरी बात । वह लतागृह संग गोपिन सुध करत पछितात ॥ विधि लिखी नहिं टरत कैसेहु यह कहत अकुलात । हँसि उपँगसुत बचन बोले कहा हरि पछितात ॥ सदा हित यह रहत नाहीं सकल मिथ्या जात । सूर प्रभु यह सुनहु मोसों एकही सों नात ॥ १७ ॥ जब ऊधो यह बात कही । तब यदुपति अतिही सुख पायो मानी प्रगट सही ॥ श्रीमुख कह्यो जाहु तुम ब्रजको मिलो जाइ ब्रजलोग । मोबिन बिरह भरी ब्रजबाला जाइ सुनावहु योग ॥ प्रेम मिटाइ ज्ञान पर बोधहु तुमहो पूरण ज्ञानी । सूर उपँगसुत मन हरपाने यह महिमा इन जानी॥१८॥राग गौरी॥ऊधो तुम यह निहचै जानो । मन वच क्रम मैं तुमहिं पठावत ब्रजको तुरत पलानो ॥ पूरण ब्रह्म अलख अविनाशी ताके तुमहो ज्ञाता ॥ रेख न रूप जाति कुल नाहीं जाके नहिं बिनु माता॥यह मत दै गोपिनको आवहु विरह न मनमें भाषाति।सूर तुरत तुम जाय कहौ यह ब्रह्म बिना नाहिं आसाति॥१९॥राग सारंग॥ऊधो तुम वेगही ब्रज जाहु। सुरति संदेश सुनाइ मेटो वल्लभनि को दाहु ॥ काम पावक तुलित मनमें विरह श्वास समीर । भस्म नाहिन होन पावत लोचन नके नीर ॥ आजुलौं इहि भाँतिहै वा कछुक श्वास शरीर । एते पर बिना समाधानहि क्यों धरै त्रियधीर ॥ बार बार कहा कहों तुमसों सखा साधु प्रवीन । सूर सुमति विचारिए जिहि जियै जल बिनु मीन ॥ २० ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो ब्रजको गमन करो । हमहिं बिना विरहिनी गोपिका तिनके दुखहि हरो ॥ योग ज्ञान परबोधि सबनको ज्यों सुख पावे नारि । पूरण ब्रह्म अलख परचै करि मोहिं बिसारै डारि ॥ सखा प्रवीन हमारे तुमहौ तुमते नहीं महंत । सूर श्याम कारण यह पठवत है आवैंगे संत ॥ २१ ॥ राग नट ॥ ऊधो मन अभिमान बढायो । यदुपति योग जानि जिय सांचो नयन अकाश चढायो ॥ नारिन पै मोको पठवत हैं कहत सिखावन योग । मन ही मन अपकरत प्रशंसा यह मिथ्या सुख भोग ॥ आयसु मानि लियो शिर ऊपर प्रभु आज्ञा परमान। सूरदास प्रभु गोकुल पठवत मैं क्यों कहौं कि आन॥२२॥ राग कान्हरो ॥तुम पठवत गोकुलको जैहौं । जो मानिहैं ब्रह्मकी बातैं तौ उनसों मैं कैहौं ॥ गदगद वचन कहत मन प्रफुलित बार बार समुझैहौं । आजुइ नहीं करौं तुव कारज कौनकाज पुनि लैहौं ॥ यह मिथ्या संसार सदाई यह कहि कै उठि ऐहौं । सूर दिना द्वै ब्रजजन सुखदै आइ चरण पुनि गैहौं॥ २३ ॥ राग केदारो ॥सुन सखा हित प्राण मेरे नाहिनै सम तोहिं । कैसेहू करि उऋण कीजो ब्रजबधुनते मोहिं॥ त्याजि ये मैं रतन दीन्हों वृथा गोपकुमारि । सालोक्य सामीप्य नासारोपिता भुजचारि ॥ अंगरही साजो चिंतासों संधि नहीं तनु ज्ञान । सोई तुम उपदेशहु जो लहैं पद निर्बान ॥ जौन अबकै कृत करैं तो होइहौ ऋण दास । सूर गाइ चराइहौं द्वै फेरि बासि ब्रजवास॥२४॥राग विहागरो॥तुरत ब्रज जाहु उपँगसुत आजु । ज्ञान बुझाइ खबरि दै आवहु एक पंथ द्वै काजु ॥ जबते मधुबनको हम आए फेरि गयो नहिं कोई । युवतिन पै ताहीको पठवै जो तुम लायक होई ॥ एक प्रवीन अरु सखा हमारे जानी तुम सरि कौन । सोइ कीजो जैसे ब्रजबाला साधन सीखै पौन ॥ श्रीमुख श्याम कहत यह बाणी ऊधो सुनत सिहात । आयसु मानि सूरप्रभु जैहौं नारि मानि हैं बात ॥ २५ ॥राग गौरी॥ऊधो ब्रज जिनि गहरु लगावहु । तुम ब्रजनारि जानि मन सकुचत कहियों योग सुनावहु ॥ बाणी कहत समुझि वै लैहैं

कही हमारी मानो । विरहदाह यह सुनत बूझि है मानहु अनलहि पानौ ॥ अबहीं जाहु विकल सब गोपी योग वचन कहिपोषौ । सूर नंद बाबा जननी यशोमतिको वेगिजाइ संतोषौ॥२६॥राग सोरठ॥हलधर कहत प्रीति यशुमतिकी । कहा रोहिणी ए तन पावै वह बोलन वह हितकी ॥ एक दिवस हरि खेलत मोसँग झगरो कीन्हों पेलि । मोको दौरि गोदकरि लीनो इनहिं दियो करठेलि ॥ नँद बाबा तब कान्ह गोदकरि खीझन लागे मोको।सूर श्याम नान्हो तेरो भैया छोह न आवत तोको ॥ २७॥ राग रामकली॥यशोमति करती मोको हेत ।सुनत ऊधो कहत बनत न नैन भरि भरि लेत।दुहुँको कुशलात कहियो तुमहिं भूलत नाहिं । श्याम हलधर सुत तुम्हारे और कौन कहाहिं ॥ आइ तुमको धाइ मिलिहैं कछुक कारज और । सूर हमको तुमहिं बिन सुख नहीं है कहुँ ठौर॥२८॥राग बिहागरो॥ श्याम कर पत्री लिखी बनाइ । नंदबाबासों बिनती करी करजोरि यशोदामाइ ॥ गोप ग्वाल सखन गहि मिलि मिलि कंठ लगाइ । और व्रजनर नारि जेहैं तिनहि प्रीति जनाइ॥ गोपिकनि लिखि योग पठयो भाउ जान न जाइ । सूर प्रभु मन और यह कहि प्रेम लेत दृढाइ ॥ २९ ॥ उपँगसुत हाथदई हरिपाती । यह कहियो यशुमति मैयासों नाहिं विसरत दिनराती ॥ कहत कहा वसुदेव देवकी तुमको हमहैं जाए । कंस त्रास शिशु अतिहि जानिकै व्रजमें राखि दुराए ॥ कहै बनाइ कोटि कोउ बातें कहि बलराम कन्हाई।सूरकाज कारिकै कछु दिनमें बहुरि मिलैंगे आई ॥३०॥राग बिलावल ॥ऊधो इतनो कहियो जाइ । हम आवैंगे दोऊ भैया मैया जिनि अकुलाइ ॥ याको विलग बहुत हम मान्यो जब कहि पठयो धाइ।वह गुण हमको कहा विसरिहै बडे किये पय प्याइ ॥ और जु मिल्यो नंद बाबासों तब कहियो समुझाइ । तौलों दुखी होन नहिं पावैं धवरी धूमरि प्याइ ॥ यद्यपि यहाँ अनेक भाँति सुख तदपि रह्यो ना जाइ । सूरदास देखो व्रजवासिन तबहीं हियो सिराइ ॥३१॥ राग आसावरी ॥ ऊधो जननी मेरी को मिलिहौ अरु कुशलात कहोगे । बाबा नंदहि पालागन कहि पुनि पुनि चरण गहोगे ॥ जादिनते मधुवन हम आए शोध न तुमही लीनो हो । दैदै सौंह कहोगे हित करि कहा निठुराई कीन्हों हो ॥ यह कहियो बलराम श्याम अब आवैंगे दोउ भाई हो । सूर कर्मकी रेख मिटै नहिं यहै कह्यो यदुराई हो॥३२॥राग केदारो॥विधना इहै लिख्यो संयोग ।जो कहांते मधुपुरी आए तज्यों माखन भोग ॥ कहां वै व्रजके सखा सब कहां वै मथुरा लोग । देवकीवसुदेवसुत सुनि जननि कैहै सोग ॥ रोहिणी माता कृपा करि उछँग लेती रोग । सूर प्रभु मुख यह वचन कहि लिखि पठायो योग॥३३॥राग गौरी॥पाती लिखि ऊधो कर दीन्ही ॥ नंद यशुदहि हेतु कहि दीजो हँसि उपंग सुत लीन्ही ॥ मुख वचनन कहि हेतु जनायो तुमहौ हितू हमारे । बालक जानि पठे नृप डरते तुम प्रतिपालन हारे ॥ कुबिजा सुन्यो जात व्रज ऊधो महलइ लियो बोलाई । हाथन पाति । लिखी राधाको गोपिन सहित बडाई ॥ मोको तुम अपराध लगावत कृपा भई अन्यास । झुकत कहा मोपर व्रजनारी सुनहु न सूरजदास ॥ ३४ ॥ राग मलार ॥ हमपर काहेको झुकत व्रजनारी।साझे भाग नहीं काहूको हारिकी कृपा निनारी ॥ कुबिजा लिखो संदेश सबनको अरु कीनी मनुहारी । हौंतो : दासी कंसराइकी देखो हृदय विचारी ॥ फलन मांझ ज्यों करुई तोमरी रहत घुरेपर डारी । अ बनो हाथ परी यंत्रीके बाजत राग दुलारी ॥ ३५ ॥ राग गौरी ॥ ऊधो व्रजहि जाहु पालागौं।यह पाती राध कर दीजौ यह मैं तुमसों मांगौं ॥ गारी देहि प्रात उठि मोको सुनत रहत यह बानी । राजाभये : जाइ नँदनंदन मिली कूबरी रानी ॥ मोपर रिस पावत काहेको बरजि श्याम नहिं राख्यो । लरिका हते बाँधति यशुमति कहा जु माखन चाख्यो ॥ रजुले सबै हजूर होति तुम सहित सुता वृषभान । ।

सूर श्याम बहुरो ब्रज जैहैं ऐसे भए अजान ॥ ३६ ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो यह राधासों कहियो। जैसी कृपा श्याम मोहिं कीन्ही आपु करत सोइ रहियो॥मोपर रिस पावत वे कारण मैंहो तुम्हरी दासी।तुमहीं मनमें गुणिधौ देखो बिन तप पायो कासी॥कहां श्यामकी तुम अर्धंगिनि मैं तुम सरकी नाहीं। सूरज प्रभु को यह न बूझिए क्यों न वहाँलौं जाहीं॥३७॥राग सारंग॥ ऊधो जाइ कहियो राधिकाही तुम इतनी सी बातं । आवन दिए कहो काहेको फिरि पाछे पछितात ॥ अब दुखमानि कहाधौं करिहौ हाथ रहैगी गारी।हमैं तुम्हैं अंतरहै जेतो जानतहैं बनवारी॥एतो मधुप सबैरस भोगी जहीं जहीं रस नीको । जो रस खाइ स्वाद करि छँडि सो रस लागत फीको ॥ एक कुँवर हरि हरचो हमारो जगतमांझ यश लीनो । ताको कहा निहोरो हमको मैत्रिभंग करि दीनो ॥ तुम सब नारि गँवारि अही री कहा चातुरी जानों । राखि न सकी आपुवशकै तब अब काहे दुख मानों ॥ सूरदास प्रभुकी ए बातैं ब्रह्म लखै नहिं पारे । जाके चरण पाइकै कमला गति आपनी बिसारे ॥३८॥राग केदारो ॥ सुनियत ऊधो लये सँदेशो तुम गोकुलको जात । पाछे करि गोपिनसों कहियो एक हमारी बात ॥ मात पिताको नेह समुझिकै श्याम मधुपुरी आए । नाहिन कान्ह तुम्हारे प्रीतम ना यशुमतिके जाए ॥ देखो बूझि आपने जियमें तुम माधो कौने सुख दीने । ए बालक तुम मत्त ग्वालिनी सबै मुंड करि लीने॥तनक दही माखनके कारण यशुदा त्रास दिखावै । तुम हँसि सब बाँधनको दौरी काहू दया न आवै ॥ जो वृषभानुसुता उन कीनी सो सब तुम जिय जानों । ताही लाज तज्यो ब्रजमोहन अब काहे दुख मानों ॥ सूरदास प्रभु सुनि सुनि बातैं रहे श्याम शिरनाए । इत कुबिजा उत प्रेम गोपिका कहत न कछु बनि आए ॥ ३९ ॥ राग बिहागरो॥ऊधो जात ब्रजहि सुने।देवकी वसुदेव सुनिकै हृदय हेत गुने ॥ आपसे पाती लिखी कहि धन्य यशुमति नंद । सुत हमारो पालि पठयो अति दियो आनंद॥ आइकै मिलि जात कबहुँ न श्याम अरु बलराम । इहाँ कहति पठाइ देहैं तबहि तनु बिनवाम॥बाल सुख सब तुमहिं लूट्यो मोहिं मिले कुमार । सूर यह उपकार तुमते कहत बारंबार॥४०राग बिलावल॥ तब ऊधो हरि निकट बुलायो । लिखि पाती दोउ हाथ दई तेहि ए मुख वचन सुनायो ॥ ब्रजवासी जावत नारि नर जल थल द्रुम वन पात । जो जेहिबिधि तासों तैसेही मिलि अरस परस कुशलात॥जो सुख श्याम तुमहितें पावत सो त्रिभुवन कहुँ नाहिं । सूरदास प्रभुदै सौंह आपनी समुझत हौ कै नाहिं ॥ ४१ ॥राग सारंग॥पहिले प्रणाम नंदराइसों । ता पीछे मेरो पालागन कहियो यशुमति माइसों । बार एक तुम बरसानेलौं जाइ सबै सुधि लीजौ । कहि वृषभानु महरसों मेरो समाचार सब दीजौ ॥ श्रीदामा आदि सकल ग्वालनको मेरेहितं भेटिबो । सुख संदेश सुनाइ सबनको दिन दिनको दुख मेटिबो ॥ मित्र एक मन वसत हमारे ताहि मिलै सुख पाइहो । करि करि समाधान नीकी विधि मोहिंको माथो नाइहो ॥ डारियहु जिनि तुम सघन कुंजमें हैं तहँके तरु भारी। वृंदावन मति रहति निरंतर कबहुँ न होत निनारी ॥ ऊधो सों समुझाइ प्रगट करि अपने मनकी बीती।सूरदास स्वामीसों छलसों कही सकल ब्रज प्रीती ॥४२॥ कही हरि ऊधो सों ब्रज प्रीति। बोलै चले योग गोपिनको तहाँ करन विपरीति॥ तुरत अंक भरि रथहि चढायो विनय कह्यो करि ताहि। विरहा जाल मेटि गोपिनको आवहु काज निवाहि॥लै रज चरण शीश बंदन करि ब्रज रैहों दिन द्वैक। सूरज प्रभु श्रीमुख कहि पठ वत तुम बिनु रहोंन नेक॥४३॥राग गौरी॥गहर जनि लावहु गोकुल जाइ। तुमहिं बिना व्याकुल हम ह्वै हैं यदुपति करी चतुराइ॥ अपनोई रथ तुरत मँगायो दियो तुरत पलनाइ । अपने अंग आभूषण करि करि आपुनही पहिराइ ॥ अपनो मुकुट पीतांबर अपनो देत

सबै सुख पाये । सूर श्याम तदपि उपंगसुत भृगुपद एक बचाये॥४४राग बिलावल॥ऊधो चले श्याम आयसु सुनि ब्रज नारिनको योग कह्यो । हरिके मन यह प्रेम लहैगो वहतो जिय अभिमान गह्यो ॥ आतुर चल्यो हर्ष मन कीन्हें कृष्ण महंत करि पठै दियो । स्यंदन उहै श्याम सब भूषण जानि परै नंदसुवन वियो ॥ युवती कहा ज्ञान समुझैंगी गर्ग वचन मन कहत चल्यो । सूर ज्ञानको मान वढाये मधुवनके मारगहि मिल्यो॥४५॥राग बिलावल॥जबहिं चले ऊधो मधुवनते गोपिन मनहि जनाइ गई।वार वार भौंरा लगै कानन कछ दुख कछु हिय हर्ष भई॥जहँ तहँ काग उडावन लागीं हरि आवत उडि जाहि नहीं।समाचार कहि जबहिं सुनावत उडि वैठत सुनि अनत कहीं॥सखीपरस्पर यह कह बातैं आजुं श्यामकै आवत हैं।किधौं सूर कोई ब्रज पठयो आजु खबरिकै पावत हैं॥४६॥आजु कोउ नीकी बात सुनावै । कै मधुवनते नंद लाडिले कै व दूत कोउ आवै ॥ भौंरा इक चहुँ दिशिते उडि उडि कान लाग कछु गावै।उत्तम भाषा ऊंचे चढि चढि अंग अंग सगुनावै ॥ सूरदास कोऊ ब्रज ऐ-सो जो ब्रजनाथ मिलावै॥४७॥ राग धनाश्री॥तू तो उडहि नहीं रे काग।जो गोपाल गोकुलको आवें तो ह्वै है बडि भाग ॥ दधि ओदन भरि दोनो दैहौं अरु अंचलकी पाग । मिलिहौं हृदय सिराइ श्रवण सुनि मेटि विरहके दाग ॥ जैसे मात पिता नाहिं जानत अंतरको अनुराग । सूरदास प्रभु करैं कृपा तब जवते देह सुहाग॥४८॥राग कल्याण॥मथुराते निकसि परे गैल मांझ आइ उहै मुकुट पीतांबर श्याम रूप काछे । भृगुपद एक वंचित उर और अंग आछे ॥ ज्ञानको अभिमान किए मोको हरि पठयो । मेरोई भजन थापि माया सुख झुठयो ॥ मधुवनते चल्यो तबहिं गोकुल नियरान्यो । देखत ब्रजलो-ग श्याम आयो अनुमान्यो॥राधा सों कहति नारि काग सगुन टेरो । मिलि हैं तोहिं श्याम आजु भयो वचन मेरो ॥ वैसोइ रथ देखति सब कहति हरप बानी । सूरज प्रभुसे लागत तरुनी मुसकानी ॥ ४९ ॥ अध्याय॥४७ ॥ भँवरगीत ॥ राग बिलावल॥ राधेहि सखी बतावत री । वैसोई रथ लखौं सेतमें को उतहीते आवत री॥चढिआयो अक्रूर जाहिपर स्यंदन ब्रज तन धावत री । वैसोइ ध्वजा पताका वैसोइ घर घर सवन सुनावत री॥ कोउ कहै श्याम कहति को ऐहै ब्रजतरुनी हरपा-वत री ।सूरश्याम जेहि मग पगधारे तेहि मारग दरशावत री ॥५० ॥ सारंग ॥ है कोउ वैसीही अनुहारि। मधुवन तनते आवत सखी री देखहु नैन निहारि ॥ माथे मोर मुकुट कटि किंकिणि पीतवसन रुचि चारि।सूरदास प्रभु बिन सब ऐसी जैसे मीन बिन वारि॥५१॥राग कल्याण॥वैसोइ रथ वैसोइ कोउ आव-त उतहीते।झुरि झुरि सब मरति विरह गोपीजनकीते ॥ देखो री मुकुट झलक कुंडलकी ओभा । वैसोई पटपीत अंग सुंदर अतिशोभा ॥ आए री नंदसुवन राधा हरपानी । सूर मरत मीन तुरत मिले अगम पानी॥५२॥राग नट॥देखत हरपभई ब्रजनारी । वै निहचैं आए वनवारी॥जो जैसे सो तैसे धाई । घर घर लोगन सुने कन्हाई ॥ रथहीतन सब निरखनलागे । सपनेको सुख लूटत आगे ॥ कृपाकरी आए गोपाल । गोपिन जानी विरह विहाल ॥ ज्योंही ज्यों रथ आतुर आवै । त्योंही त्योंही पट फहरावै । सूर भई सुख व्याकुल नारी।प्रेमविवश आनँद उर भारी ॥५३॥ राग बिलावल ॥ घर घर इहै शब्द परयो।सुनत यशुमति धाइ निकसी हर्षितहि यो भरयो॥नंद हर्षित चले आगे सखा हर्षत अंग । झुंड झुंडन नारि हर्षत चली उदधि तरंग॥गाइ हर्षत पय स्रवत थन हुंकरत गउ बाल । उमँगि अंगन मात कोऊ बिरध तरुन अरु बाल ॥ कोउ कहत बलराम नाहीं श्याम रथपर एक । कोउ कहति प्रभु सूर दोऊ रचित बात अनेक॥५४॥राग बिलावल॥सुने ब्रजलोग आवत श्याम।जहां तहांते सबै धाई सुनत दुर्लभ नाम । मानो मृगी वन जरति व्याकुल तुरत वरष्यो नीर ॥ वचन गदगद प्रेम व्याकुल

T

धरत नहिं मनधीर ॥ एक एक पल युग सबनको मिलनको अतुरात । सूर तरुनी मिलि परस्पर भई हर्षितगात॥९५॥राग धनाश्री॥नंदगोप हर्षितह्वै गए लेन आगे । आवत बलराम श्याम सुनत दौरि चली बाम मुकुट झलक पीतांबर मन मन अनुरागे ॥ निहचै आए गोपाल आनंदित भई बाल मिट्यो बिरह जंजाल जोवत तेहिकाल । गद्गद तनु पुलक भयो बिरहाको शूल गयो कृष्णदरश आतुर अति प्रेमके बेहाल ॥ रथ ज्योंज्यों निकट भयो मुकुट पीत बसन नयो मनमें कछु सोच भयो श्याम किधौं कोउ । सूरज प्रभु आवतहैं हलधरको नहीं लखत झंखति कहति तो होते संग वीर दोउ॥९६॥राग आसावरी॥आजु कोइ श्यामकी अनुहारी।आवत उत उमँगे सुनि सबही देखिरूपकी वारी ॥ इंद्रधनुपसे उर बनमाला चितवत चित्त हरैं। मनो हलधर अग्रज गोहनके श्रवणन शब्द परैं॥ गईं चली निकट न देखे मोहन प्राणकिए बलिहारी । सूर सकल गुण सुमिरि श्यामके बिकल भई ब्रजनारी ॥९७॥राग बिलावल॥ कोउ माई आवत है तनु श्याम । वैसे पट वैसे रथ बैठनि वै भूषण वै दाम ॥ जो जैसे तैसे उठि धाईं छाँडि सकल गृह काम । पुलक रोम गद्गद तेहि छिन शोभित अंग अभिराम । इतने बीच आइगए ऊधो रहीं ठगी सब बाम ॥ ज्यों निधि पाइ गँवाइ हाथते भई व्याकुल तनुताम।सूरदास प्रभु कत आवत हैं बसे कूबरी धाम ॥९८॥ उमँगि ब्रज देखनको सब धाए । एकहि एक परस्पर बूझति जनु मोहन दूलह आए ॥ सोई ध्वजा पताका सोई जा रथ चढि ता दिवस सिधाए । श्रुति कुंडल अरु पीत बसन स्रक वैसोई साज बनाए ॥ जाइ निकट पहिचान्यो ऊधो नयन जलज जलछाए।सूरज श्याम मिटी दरशन आशा नूतन बिरह जगाए ॥ ९९ ॥ जबहिं कह्यो ए श्याम नहीं । परी मुरछि धरणी ब्रजबाला जो जहां रही सुतहीं ॥ सपनेकी रजधानी ह्वैगई जो जागी कछु नाहीं । बारबार रथ वोर निहारहिं श्याम बिना अकुलाहीं ॥ कहा आय करिहैं ब्रज मोहन मिली कूबरी नारी । सूर कहत सब ऊधो आए गईं श्याम शरमारी॥६०॥राग रामकली ॥तरुणी गईं सब बिलखाइ । जबहिं आए सुने ऊधो अतिहि गईं झुराइ ॥ परीं व्याकुल जहाँ यशुमति गईं तहाँ सब धाइ । नीर नयनन बहत धारा लईं पोंछि उठाइ ॥ एक भई अब चलौं मारग सखा पठयो श्याम । सुनो हरि कुशलात ल्यायो महरि सों कहैं बाम ॥ जबहिंलौं रथ निकट आयो तबहुँ ते परतीति । वह मुकुट कुंडल पीतांबर सूर प्रभु अंगरीति ॥६१॥राग बिलावल॥ भली भई हरि सुरति करी । उठौ महरि कुशलात बूझिये आनँद उमँगि भरी ॥ भुजा गहे गोपी परबोधत मानहुँ सुफल घरी । पाती लिखि कछु श्याम पठायो यह सुनि मनहिं ढरी ॥ निकट उपंगसुत आइ तुलाने मानों रूप हरी । सूर श्यामको सखा इहै री श्रवणन सुनी परी॥६२॥राग धनाश्री ॥ निरखति ऊधो सुख पायो । सुंदर सुजल सुवंश देखियत याते श्याम पठायो ॥ नीके हरि संदेश कहैगो श्रवण सुनत सुख पैहै । यह जानति हरि तुरत आय हैं एकहि हृदय सिरै है ॥ घेरि लिए रथ पास चहूँघा नंद गोप ब्रजनारी । महर लिवाय गए निज मंदिर हरपित लियो उतारी ॥ अरघ देत भीतर तेहि लीन्हों धनि धनि दिन कहि आजु । धनि धनि सूर उपंगसुत आए मुदित कहत ब्रजराजु ॥ ६३ ॥ अथ नंदवचनउद्धवप्रति राग मलार ॥ कबहिं सुधि करत गोपाल हमारी । पूंछत नंद पिता ऊधो सों अरु यशुदा महतारी ॥ बहुतै चूकपरी अनजानत कहा अबके पछिताने । वासुदेव घर भीतर आए मैं अहीरकै जाने ॥ पहिले गर्ग कह्यो हुतो हमसों संग देत गयो भूली । सूरदास स्वामीके बिछुरे राति दिवस मैं शूली ॥६४॥ अथ उद्धव वचन राग सारंग॥ कह्यो कान्ह सुनु यशुमति मैया।आवहिंगे दिन चारि पाँचमें हम हलधर दोउ भैया ॥ मुरली बेत विपाण देखिये शृंगी बेर सबेरो। लैजिनिजाइ चुराइ राधिका कछुक

खिलौना मेरो ॥ जादिनते तुम्हसों बिछुरे हम कोउ न कहत कन्हैया । भोरहि नाहिं कलेऊ कीनो सांझ न पयपीयो नाचैया ॥ कहत न बन्यो सँदेशो मोपै जननि जितो दुख पायो । अब हमसों वसुदेव देवकी कहत आपनो जायो ॥ कहिए कहा नंदबाबासों बहुत निठुर मन कीनों । सूर हमहिं पहुँचाइ मधुपुरी बहुरो शोध न लीनों ॥६९॥ पुनः नंदवचन ॥ राग सारंग ॥ हमते कछु सेवा न भई। धोखे धोखे रहे धोखही जाने नाहिं त्रिलोक मई ॥ चरणपकरि करि बिनती करिवो सब अपराध क्षमा कीजे । ऐसो भाग होइगो कबहूँ श्याम गोदमें लीजे ॥ कहे नंद आगे ऊधोके एकबेर दरशन दीजे । सूरदास स्वामी मिलि अबके सबै दोप गत कीजे॥६६॥ अथ सखावचन ॥ राग बिलावल ॥ भली बात सुनियत है आज। कोऊ कमलनयन पठयो है तन बनाए अपनो सो साज ॥ पूँछत सखा कहो कैसे हैं अब नाहीं कछु करते लाज । कंसमारि वसुदेव गृह आए उग्रसेनको दीन्हों राज ॥ राजा भए ज्ञानही भयो सुख सुरभी सँग बन गोप समाज ॥ अब सुन सूर करै को कौतुक व्रजमें नाहिं बसत व्रजराज॥६७॥ ॥ अथ व्रज नर नारीवाक्य ॥ राग सारंग ॥ वैसोइ रथ वैसोइ सब साज । मानहुँ बहुरि विचारि कछू मन सुफलकसुत आयो व्रज आज ॥ पहिलेइ गमन गयो लै हरिको परम सुमति राधो रतिराज । अजहुँ कहा कीयो चाहतहै याते अधिक कंसको काज ॥ व्याध जो मृगन वधत सुन सजनी सो शर काढि संग नहिं लेत । यह अक्रूर कठिनकीना इहि ये इतनो दुख देत ॥ ऐसे बचन बहुत विधि कहि कहि लोचन भरि सींचत उरगात । सूरदास प्रभु अवधि जानिकै चलीं सबै पूँछन कुशलात॥६८॥ राग रामकली ॥ व्रज घर घर सब होत बधाए कंचन कलश दूब दधि रोचन महरि महर वृंदावन आए ॥ मिलि व्रजनारि तिलक शिर कीनो करि प्रदक्षिणा पास । पूँछत कुशल नारि नर हरपत आए सब व्रजवास ॥ सकसकात तन धकधकात उर अकबकात सब ठाढे । सूर उपंगसुत बोलत नाहीं अतिहिरदै है गाढे॥६९॥ सखीवचन गोपीप्रति ॥ राग धनाश्री ॥ आजु व्रज कोऊ आयो है कैधौं बहुरि अक्रूर क्रूरह्वै जियत जानि उठिधायो है ॥ मैं देख्यो ताको रथ ठाढो तुम सखी शोधन पायो है । कैकरि कृपा दुखित जानिकै हरिसंदेश पठायो है ॥ चलीं मिलि सिमिटि सखी पूछनको ऊधो दरश दिखायो है । तब पहिंचानि सबै प्रभुको भृत कमल जोरि शिरनायो है ॥ हरिहैं कुशल कुशल है तुमहूं कुशल लोग जेहि भायो है । है वह नगर कुशल सूरज प्रभु करि सुदृष्टि जहां छायो है ॥ ७० ॥ ॥ राग धनाश्री ॥ देख्यो नंद द्वार रथ ठाढो । बहुरि सखी सुफलकसुत आयो पर्यो सँदेह जिय गाढो ॥ प्राण हमारे तबहिं गयो लै अब किहि कारण आयो । मैं जानी यह बात सत्यकै कृपाकरन उठि धायो ॥ इतने अंतर आनि उपंगसुत तिहि क्षण दरशन दीन्हों । तब पहिंचानि जानि प्रभुको भृतु परम सुचित मन कीन्हों ॥ तब परणाम कियो अति रुचिसों अरु सबही करजोरे । सुनियत हुते तैसई देखे सुंदर सुमति सु भोरे ॥ तुम्हरो दरशन पाइ आपनो जन्म सुफल करि मान्यो। सूर सु ऊधो मिलत भए सुख ज्यों ज्यों खग पायो पान्यो॥७१॥ राग धनाश्री ॥ बोलक इनहूको सुनि लीजै । कैसी उठनि उठे धौं ऊधो तैसे उत्तर कीजै ॥ यामें कछू खरचियतु नाहीं अपनो मतो न दीजै । कहि री सखी भागिए किहि डर चलहु जाइ सुख छीजै ॥ द्वै करि जोरि भई सन्मुख ठाढी बचन कहो त्यों जीजै । सूर सुमति सोई दीजै हरि वदन सुधारस पीजै ॥७२॥ राग नट ॥ ऊधो कहो हरि कुशलात । कहो आवन किधौं नाहीं बोलिए मुख बात ॥ एक छिन युग जात हमको बिन सुने हरि प्रीति । आइ आपै कृपाकीनी अब कहो कछु नीति ॥ तब उपंगसुत सबनि बोले सुनो श्रीमुख योग । सूर सुनि सब दौरि आई हटकि

दीनो लोग॥७३॥ अथ उद्धववचन ॥राग सारंग॥गोपी सुनहु हरि कुशलात।कंस नृपको मारि छोरयो आप नो पितु मात ॥ बहुत विधि व्यवहार करि दियो उग्रसेनहि राज । नगर लोग सुखी वसतहैं भए सुरनके काज ॥ वे इह पाती लिखी अरु मुख कह्यो कछू संदेश । सूर निर्गुण ब्रह्म धरिकै तजहु सकल अंदेश ॥ ७४ ॥राग केदारो॥गोपी सुनहु हरि संदेश।गए संग अक्रूर मधुवन हत्यो कंस नरेश॥रजक मारयो वसन पहिरे धनुष तोरे जाइ । कुवलया चाणूर मुष्टिक दई धरणि गिराइ ॥ मात पितुके वंदि छोरे वासुदेव कुमार । राज्य दीन्हों उग्रसेनहि चमर निज करढार ॥ कह्यो तुमको ब्रह्म ध्यावो छाँडि विषै विकार।सूर पाती दई लिखि मोहिं पढौ गोपकुमार॥७५॥अथ पाती वचन अवस्था॥राग सारंग॥ पाती मधुवनहीते आई । सुंदर श्याम कान्ह लिखि पठई आइ सुनो री माई ॥ अपने अपने गृह ते दौरीं लै पाती उरलाई । नैनन निरखि निमिष न खंडित प्रेम व्यथा न बुझाई ॥ कहा करौं सूनो यह गोकुल हरि बिन कछु न सोहाई । सूरदास प्रभु कौन चूकते श्याम सुरति बिसराई ॥ ७६ ॥ निरखत अंक श्याम सुंदरके वार बार लावत लै छाती । लोचन जल कागज मसि मिलि करि ह्वै गई श्याम श्याम जूकी पाती ॥ गोकुल वसत नंदनंदनके कबहुँ बयारि न लागी ताती । अरु हम उती कहा कहैं ऊधो जब सुनि वेणु नाद सँग जाती ॥ प्रभु कै लाड वदति नहिं काहू निशि दिन रसिक रास रस राती । प्राणनाथ तुम कबहुँ मिलहुगे सूरदास प्रभु बाल सँघाती ॥ ७७ ॥ पाती मधुवनते आई । ऊधो हरिके परमसनेही ताके हाथ पठाई ॥ कोउ पूछत फिरि फिरि ऊधोको आपुन लिखी कन्हाई । बहुरो दई फेरि ऊधोको तब उन बाँचि सुनाई ॥ मनमें ध्यान हमारो राखो सूरदास सुखदाई॥७८॥राग मारू॥लिखि आई व्रजनाथकी छाप । ऊधो बाँधे फिरत शीश पर देखे आवै ताप ॥ उलटी रीति नंदनंदनकी घरि घरि भयो संताप । कहियो जाइ योग आराधै अविगत अकथ अमाप ॥ हरि आगे कुबिजा अधिकारिनि को जीवै इहि दाप । सूर सँदेश सुनावन लागे कहौं कौन यह पाप॥ ॥७९॥राग मलार॥कोउ व्रज बाँचत नाहिंन पाती । कत लिखि लिखि पठवत नँदनंदन कठिन विरहकी कांती॥नैन सजल कागज अति कोमल कर अँगुरी अतिताती । परसै जरै विलोके भीजै दुहूँ भाँति दुख भाती ॥ क्यों ए वचन सु अंक सूर सुनि विरह मदन शर घाती । मुख मृदु वचन बिना सींचे अब जिवहि प्रेम रस माती॥काहेको लिखि पठवत कागर । मदनगोपाल प्रगट दरशन बिनु क्यों राखहि मन नागर ॥ ऊधो योग कहा लै कीबो बिनु जल सूखो सागर ॥ कहियौ मधुप सँदेश सुचितदै मधुवन श्याम उजागर। सूर श्याम बिनु क्यों मन राखौं तन योवनके आगर ॥८०॥ ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो कहा करैं लै पाती । जबनहिं देख्यो गुपाल लालको विरह जरावत छाती ॥ जानतिहौं तुम मानति नाहीं तुमहूँ श्याम सँघाती । निमिष निमिष मो बिसरत नाहीं शरद सुहाई राती ॥ यह पाती लैजाहु मधुपुरी जहां बसैं श्याम सुजाती । मनजु हमारे उहांलैगए काम कठिन शरघाती ॥ सूरदास प्रभु कहा चलतहै कोटिक बात सुहाती । एकवेर मुख बहुरि दिखावहु रहैं चरण रजराती ॥ ८१ ॥ राग मलार ॥ सँदेशन मधुवन कूपभरे । अपने तौ पठवत नँदनंदन हमरे फिरि न फिरे ॥ जेइ जेइ पथिक हुते व्रजपुरके बहुरि न शोध करे । कै वह श्याम सिखाय प्रबोधे कै वह बीच वरे ॥ कागज गरे मेघ मसि खूटी शरदौलागि जरे । सेवक सूर लिखैते आधो पलक कपाट खरे ॥ ८२ ॥ राग मलार ॥ आए नँदनंदनके भेव । गोकुल मांझ योग विस्तारयो भली तुम्हारी जेव ॥ जब वृंदावन रास रच्यो हरि तबहिं कहा तुम हेव । अब यह ज्ञान सिखावन आए भस्म अधारी सेव॥अबलनको लै सो व्रत ठान्यो जो योगनिको योग । सूरदास ए सुनत न जीवहि

T

आतुर विरह वियोग॥८३॥राग सारंग॥यहि अतर मधुकर इक आयो।निज स्वभाव अनुसार निकट होइ सुंदर शब्द सुनायो। पूँछन लागीं ताहि गोपिका कुबिजा तोहिं पठायो। कीधौं सूर श्याम सुंदरको हमैं सँदेशो ल्यायो॥८४॥राग मलार॥ मधुकर कहा यहां निर्गुणगावहि। ए प्रिय कथा नगरनारि-नसों कहहि जहाँ कछु पावहि॥ जिनि परसहि अब चरन हमारे बिरहताप उपजावहि। सुंदर मधु आनन अनुरागी नैनन आनि मिलावहि॥ जानति मर्म नंद नंदनको और प्रसंग चलावहि। हम नाहिंन कमलासी भोरी करि चातुरी मनावहिं॥ अति बिचित्र लरिकाकी नाईं गुरदेखाइ बौरावहिं। ज्यों अलि कि तव सुमन रसलै ताजि जाइ बहुरि नाहिं आवहि॥ नागर रति पति सूरदास प्रभु किहि विधि आनि मिलावहि॥८५॥राग बिलावल॥मधुप तुम कहौ कहांते आए हो॥ जानतिहौं अनुमान आपने तुम यदुनाथ पठाये हो॥वैसहि बरन बसन तनु वैसे वै भूषण सजिलाए हो॥लै सरवसु सँग श्याम सिधारे अब कापर पहिराए हो॥अहो मधुप एकै मन सबको सुतौ उहाँ लै छाए हो। अब यह कौन सयान बहुरि व्रज जाकारण उठि आए हो॥ मधुवनकी मानिनी मनोहर तहीं जाहु जहाँ भाए हो। सूर जहांलौं श्याम गातहौ जानि भले करि पाये हो॥८६॥राग गौरी॥मधुकर जो हरि कहो सो कहिए। तब हम अब इन हींकी दासी मौन गहे क्यों रहिए॥ जो तुम योग सिखावन आए निर्गुण क्यों करि गहिए। जो कछु लिखो सोइ माथेपर आनि परे सब सहिए॥ सुंदर रूप लाल गिरिधरको बिनु देखे क्यों लहिए। सूरदास प्रभु समुझी एकै रस अब कैसे निरवहिए॥ ८७ ॥ ऊधो वचन राग धनाश्री॥सुनहु गोपी हरिको संदेश। करि समाधि अंतर्गति ध्यावहु यह उनको उपदेश॥ वै अविगति अविनाशी पूरण सब घट रह्यो समाइ। निर्गुण ज्ञान बिनु मुक्ति नहींहै वेद पुराणन गाइ॥ सगुण रूप तजि निर्गुण ध्यावो इक चित इक मनलाइ। यह उपाव करि बिरह तरी तुम मिलै ब्रह्म तब आइ॥ दुसह सँदेश सुनत माधोको गोपीजन बिलखानी। सूर बिरहकी कौन चलावै बूडत मन बिन पानी॥८८॥ ॥ गोपीवचन ॥ राग मलार॥मधुकर हमही क्यों समुझावत। बारंबार ज्ञान गीता व्रज अबलनि आगे गावत॥नँदनंदन बिनु कपट कथाए कत कहि रुचि उपजावत। स्रक चंदन जो अंग क्षुदारत कहि कैसे सुखपावत॥ देखि विचारतही जिय अपने नागरहो जु कहावत। सब सुमनन पर फिरी निरख करि काहेको कमल बँधावत॥ चरणकमल कर नयन कमल कर नयनकमल वर भावत।सूरदास मनु अलि अनुरागी केहि बिधि हो बहरावत॥८९राग मलार॥रहुरहु मधुकर मधु मतवारे। कौन काज या निर्गुणसों चिरजीवहु कान्ह हमारे॥ लोटत पीत पराग कीचमें नीचन अंग सम्हारो। बारंबार सरक मदिराकी अपसर रटत उघारे॥ द्रुम बेली हमहूं जानतहौं जिनके हो अलि प्यारे। एक वास लैकै बिरमावत जेते आवत कारे॥ सुंदर वदन कमलदल लोचन यशु-मति नंद दुलारे। तन मन सूर अर्पि रही श्यामहि कापै लेहि उघारे॥९०॥मधुकर कौन देशते आए। व्रजवाते अक्रूर गए लै मोहन ताते भए पराए॥ जानी सखा श्याम सुंदरके अवधि बन्धन उठि धाए। अंग बिभाग नंद नंदनके यहि स्वामितहैं पाए॥ आसन ध्यान वाइ आराधन अलिमन चित तुम ताए। अतिबिचित्र सुबुद्धि सुलक्षण गुंजयोग मतिगाए॥ मुद्रा भस्म विपान त्वचा मृग व्रज युवतिन मनभाए। अतसी कुसुम बरन मुरली मुख सूरज प्रभु किन ल्याए॥९१॥ मधुकर काके मीत भए। त्यागे फिरत सकल कुसुमावलि मालति भौंर लए॥ छिनुके बिछुरे कमल रतिमानी केतकि कत बिधए। छांडि न नेहु नाहिं जान्यो लै गुण प्रगट नए॥ नूतन कदम तमाल बकुल वट परसत जनम गए। भुज भरि मिलनि उडत उदासहै गत स्वारथ

समए॥ भटकत फिरत पात द्रुम बेलिन कुसुम करंज भए॥ सूर विमुख पद अंबुज छाँडे विपैनि विष वर छए॥ ९२॥ राग जैतश्री॥ मधुकर काके मीत भए। दिवस चारि करि प्रीति सगाई रसलै अनत गए॥ डहकत फिरत आपने स्वारथ पाखंड अग्र दए॥ चाडसरे पहिंचानत नाहिंन प्रीतम करत नए। मुंडड बाँटि मोलि बौराए मन हरि हरि जु लए। सूरदास प्रभु दूत धर्म ढिग दुखके बीज बए॥ ॥९३॥राग सारंग॥मधुकर हम न होहिं वै बेली। जिनभजि तजि तुम फिरत और रँग करत कुसुमरस केली॥ वारेते वर वारि बढ़ी है अरु पोषी पिय पानि। बिनु पिय परस प्रात उठि फूलत होति सदा हित हानि॥ ए वेली विरहा वृंदावन उरझी श्याम तमाल। पुहुपवास रस रसिक हमारे बिलसत मधुप गोपाल॥ योग समीर धीर नहिं डोलत रूप डार ढिगलागी। सूर परागनि तजति हिएते श्रीगुपाल अनुरागी॥ ९४॥ मधुकर कहाँ पढी यह रीति। लोक वेद श्रुतिपंथ रहित सब कथा कहति विपरीति॥ जन्मभूमि व्रज सखी राधिका कहि अपराध तजी। अतिकुलीन गुणरूप अमित सुख दासी जाइ भजी॥ योग समाधि वेद गुण मारग क्यों समुझै जु गँवारि। जो पै गुण अतीत व्यापकहै तोहिं कहाहै प्यारि॥ रहि अलि ढीठ कपट स्वारथ हित तजि बहुवचन विशेषि। मन क्रम वचन बचाति यहि नाते सूर श्याम तन देषि॥९५॥राग मलार॥ मधुकर काहेको गोकुलआए। हम वैसीही सच अपनेमें दूने विरह जगाए॥ हम जानतिहैं जिनहि पठाए श्याम सँदेशो ल्याए। जन्म जन्मके दूत तिरोवन को नहिं लार लगाए॥ कहा करहि कहा जाहि सखी री हरि बिनु कछु न सोहाए। जन्म सुफल सूर तिनको जो काज पराए धाए॥९६॥राग मलार॥आए माई दुर्ग श्यामके संगी। जे पहिले रँग रँगे श्यामरँग तिनहीकी बुधिरंगी॥ हमरी उनकीसी मिलवतहौ ताते भए विहंगी। सूधी कहै सबन समुझावत ते सांचे सरबंगी॥ औरनको सरवसु लै मारत आपुन भए अभंगी। सूर सु नाम शिलीमुख जे पीवैं घन कवच उपंगी॥९७॥सखी वाक्य परस्पर॥राग मलार॥ है कोऊ मधुवन ते आयो। सुनो सुमति सब सखी सयानी हितकारि कान्ह पठायो॥ जा मोहन बिछुरन ते गोकुल इतै दिवस दुख पायो। सो इहि कमलनैन करुणामय हृदही माँझ बतायो॥ जो जहुँ योगी जतन करतहै नेकहु ध्यान न आयो। सो यह परमउदार मधुप व्रज बीथिन माँझ बहायो॥ अतिकृपालु आतुर अबलनिको व्यापक अंग गहायो। समुझि सूर सुख होत श्रवण सुनि नेति जु निगमन गायो। ॥९८॥राग सारंग॥परी पुकार द्वार गृह गृहते सुनहु सखी इक योगी आयो। पवन सधावन भवन छोडावन नवल रिसाल गोपाल पठायो॥आश अवध परम ऊरध जो तिनहिं कहा हित ल्यायो। कनक वेलि कामिनि व्रजबाला योग अग्नि देवेकों धायो॥भवभय हरन असुर मारन हित काल मधुपुरी आयो॥ व्रजमें यादव एकौ नाहीं काहेको उलटो सुयश हरायो॥ सुथल श्याम धाम में बैठो मृत अधिकार जनायो। सूर विसारि प्रीति साँवरे भली चतुरता जगत हँसायो॥९९॥राग सारंग॥देव आए ऊधो मत नीको। आयो री मिलि सुनहु सयानी लिए सुयशको टीको॥तजन कहत अंवर आभूषण गेह नेह सुतहीको। अंग भस्म करि शीश जटाधरि सिखवत निर्गुण फीको॥ मेरे जान इहै युवतिनको देत फिरत दुख पीको। ता शरापते भए श्याम तन तउ न गहत डर जीको॥ जाकी प्रकृति परी जिय जैसी सोच न भली बुरीको।जो लागै सूर व्याल डसि भाजै सुख नहिं होत अमीको३०००॥ ॥राग नट॥ऊधो तनक सुयश हरिको श्रवणन सुनि। कंचन काँच कपूर कररस सम दुख सुख गुण औगुन॥नाम उनको सुनि गृह कुटुंब ताजि जाइ वसत परकानन।परमहंस विहंग देखतहि आवत भिक्षा माँगन॥ बालकपनको राउ संहारचो लोकलाज डर डारी। शूपनखाकी नाक निवारचो त्रिय वश

T

भए मुरारी॥बलिसों बाँधि पताल पठायो कीन्हें यज्ञनि आई। सूर प्रीति जानी ते हरिकी कथा तजी नहिं जाई॥ १ ॥राग सोरठ॥ऊधो श्याम सखा तुम साँचे। की करि लियो स्वांग बीचहिते वैसेहि लागत कांचे।जैसी कही हमहिं आवतही औरन कहि पछिताते।अपनो पति तजि और बतावत मोहिं मानि कछु खाते।तुरत गमन कीजै मधुबनको इहां कहा यह ल्याए।सूर सुनत गोपिनकी वाणी ऊधो शीश नवाए ॥ २ ॥ राग नट ॥ ऊधो वेगि मधुबन जाहु। हम विरहिनी नारि हरि बिनु कौन करै निबाहु॥ तहीं दीजै मुरपैंना नफा तुम कछु खाहु।जो नहीं ब्रजमें बिकानो नगर नारी साहु॥ सूर वै सब सुनत लैंहैं जिय कहा पछिताहु॥३॥ राग धनाश्री॥ऊधो और कछू कहिबेको।मनमानै सोऊ कहि डारौ पालागैं हम सुनि सहिबेको ॥ यह उपदेश आजुलौं ऐसो कान न सुन्यो न देख्यो। निरपत पटे कटुक अति जीरन चाहत मम उर लेख्यो॥ निशिदिन वसत नेकहू न निकसत हृदय मनोहर ऐन। याको इहां ठौर नाहिंन है लै राखों जहां चैन ॥ ब्रजवासी गोपाल उपासी हमसों बातैं छाँडि। सूर योग धन राखु मधुपुरी कुबिजाके घर गाडि॥४॥राग नट॥जाहु जाहु ऊधो जाने हौ पहिचानेहौ। जैसे हरि तैसे तुम सेवक कपट चतुरई साने हो ॥ निर्गुण ज्ञान कहा तुम पायो कौने सिखै ब्रज आने हो। यह उपदेश देहु लै कुबिजहि जाके रूप लुभाने हो ॥ कहां लगि कहौं योगकी बातैं बाँचत नैन पिराने हो। सूरदास प्रभु हम पर खोटी तुमतौ बारहबाने हो ॥५॥राग गौरी॥ऊधो जाहु तुमहिं हम जाने। श्याम तुमहिं ह्यांको नहिं पठए तुमहो बीच भुलाने ॥ ब्रजनारिनसों योग कहतहो बात कहत न लजाने। बडे लोगन विवेक तुम्हारे ऐसे भए अयाने ॥ हमसों कही लई हम सहिकै जिय गुणि लेहु सयाने। कहा अबला कहा दिशा दिगंबर, मधकरौ पहिचाने ॥ साँच कहो तुमको अपनी सों बूझति बात निदाने। सूर श्याम जब तुमहिं पठायो तब नेकहु मुसकाने ॥ ६ ॥ राग गौरी॥ कहति कहा ऊधोसों तुम बौरी। जाको सुनत रहे हरिके ढिग श्याम सखा यह सौरी॥ कहा कहति री मैं पत्याति नहिं सुनि तुही कहा बनावति। हमको योग सिखावन आए यह तेरे मन आवति ॥ करनी भली भलेई जाने कुटिल कपटकी बानी। हरिको सिखाव नहीं री माई इह मन निहचै जानी॥कहां शशिमुख रस कहाँ योग घर इतने अंतर भापत।सूर सबै तुम भई बावरी याकी पति कहा राखत॥७॥ ॥राग कान्हरो॥ऐसेही जन धूत कहावत।मोको एक अचंभो आवत यामें वै कछु पावत॥वचन कठोर कहत कहि दाहत अपनो महत गवाँवत। ऐसिउ प्रकृति परी कान्हाको युवतिन ज्ञान बतावत ॥ आपुन निलज रहत नख शिखलौं एतेपर पुनि गावत। सूर करत परशंसा अपनी हारेहु जीति कहावत ॥ ८ ॥ राग मलार ॥ ऐसे जन बेशरम कहावत। सोच विचार कहूँ इनके नहिं कहि डारत जो आवत ॥ अहिके गुण इनमें परिपूरण यामें कछू न पावत। लघुता लहत महति करियो हँसि नारिन योग बतावत॥ब्रजमें हीन भए अब जैहैं अनतहु ऐसेहि गावत ॥९॥ राग कान्हरो॥ प्रकृति जो जाके अंग परी। श्वान पूँछको कोटिक लागे सूधी कहुँ न करी ॥ जैसे सुभक्ष नहीं भक्ष छाँडै जन्मत जौन घरी। धोए रंग जात नाहिं कैसेहु ज्यों कारी कमरी ॥ ज्यों अहि डसत उदर नहिं पूरत ऐसी धरनि धरी।सूर होइ सो होइ सोच नहिं तैसेहैं एऊ री॥१०॥राग सारंग॥ऊधो होहु आगे ते न्यारे। तुमहि देखि तन अधिक जरतहै अरु नैननके तारे ॥ अपनो योग सैंति धरि राखो यहां देत कत डारे। सो को जानत अपने मुखहै मीठे ते फल खारे ॥ हमरे गिरिधरके जु नाम गुण वसे कान्ह उरबारे।सूरदास हम सबै एक मत ए सब खोटे कारे॥११॥राग कल्याण॥जाहु जाहु आगेते ऊधो पति राखति हों तेरी। काहेको अब रोष दियावत देखति आँखि वरत है मेरी॥ तुम जो

कहतहौ संत हैं गोविंद कहियत है कुबिजा उन चेरी। दोऊ मिले तैसेई तैसे वह अहीर वै कंसकी चेरी॥ तुम सारिखे बसिष्ठ पठाए कहिए कहा बुद्धि उन केरी। सूर श्याम वह सुधि बिसराई गावत हैं ग्वालन सँग हेरी॥१२॥राग सारंग॥ समुझि न परत तुम्हारी ऊधो। ज्यौं त्रिदोष उपजे जक लागत बोलति बचन न सूधो॥ आपुनको उपचार करौ कछु तब औरन शिष देहु। बडो रोग उपज्यो है तुमको मौन सवारे लेहु॥ वहां भेषज नाना बिधिको अरु मधुरिपुसे हैं वैद। हम कातर डरपत अपने शिर यह कलंक है कैद॥ साँची बात छाँडि कत झूठी कहौ कौन बिधि सुनही। सूरदास मुकुताहल भोगी हंस ज्वारिको चुनही॥१३॥राग सोरठ॥ हम अलि गोकुलनाथ अराध्यो। मन बच क्रम हरिसों धरि पतिव्रत प्रेम योग तप साध्यो॥ मात पिता हित प्रीति निगम पँथ तजि दुख सुख भ्रमनाख्यो। मानापमान परम परितोषन सुस्थल थिति मन राख्यो॥ सकुचासन कुल शील करषि करि जगत बंद्य कर बंदन। मौनऽपबाद पवन आरोधन हित क्रम काम निकंदन॥ गुरुजन कानि अग्नि चहुँ दिशि नभ तरनि ताप बिनु देखे। पिवत धूम उपहास जहाँ तहँ अपयश श्रवण अलेखे॥ सहज समाधि बिसारि वपु करी निरखि निमेष न लागत। परमज्योति प्रति अंग माधुरी धरत इहै निशि जागत॥ त्रिकुटी संग भ्रूभंग तराटक नैन नैन लगि लागै। हँसनि प्रकाश सुमुख कुंडल मिलि चंद्र सूर अनुरागै॥ मुरली अधर श्रवणध्वनि सो सुनि शब्द नहद करि कानै। वरपत रसरुचि बचन संग सुख पद आनंद समानै॥ मंत्र दियो मनजात भजन लगि ज्ञान ध्यान हरिहीको। सूर कहौ गुरु कौन करै अलि कौन सुनै मत फीको॥१४॥ ॥राग धनाश्री॥ ऊधो हम आजु भई बडभागी। जिन अँखियन तुम श्याम बिलोके ते अँखियाँ हम लागी॥ जैसे सुमन बास लै आवत पवन मधुप अनुरागी। अति आनंद होतहै तैसे अंग अंग सुखरागी। ज्योंदर्पणमें दरशन देखत दृष्टि परमरुचि लागी॥ तैसे सूर मिले हरि हमको बिरह व्यथा तनु त्यागी॥१५॥राग सारंग॥बिलग जिनि मानी हमारी बात।डरपत वचन कठोर कहत मति बिनु पानी उडिजात॥ जो कोउ कहै जरै कछु अपने फिरि पाछे पछितात। जो प्रसाद तुम पावत ऊधो कृष्णनाम लै खात॥ मन जो तिहारोहरि चरणन तर चलत रहत दिनप्रात।सूर श्यामते योग अधिकहै कासों कहि आवै यह वात॥१६॥राग सारंग॥ अलिहौं कैसे करि कहौं हरिके रूपके रसहि। अपने तनमें भेद बहुत बिधि रसना न जानै इन नैनके दसहि। बार बार पछताति इहै कहि कहाकरौं जो बिधि नवसहि॥बिनुवाणी ए उमँगि सजल होइ सुमिरि सुमिरि वा सगुण यशहि।जे देखत ते वचन रहितहैं जिनहि वचन दरशन देसहि।सूर सकल अंगनकी इहगति क्यों समुझावै छपद पेसहि॥१७राग सारंग॥ सुको जेहि नाहिन सचुपायो बल गोपालके राज। ऊधो इहै सम्पदा हरिकी आवै सबके काज॥ धनुष तोरि गजमारि मल्ल मथि किए निडर यदुवंश। इन औरन अमरन सुख दीनो करषि केश शिरकंस॥ कुबिजहि रूपदियो यदुनंदन मालीको हित काम। उग्रसेन वसुदेव देवकी आने अपने धाम॥ दीनदयालु दयानिधि मोहन है हमरे इह आस।सूर श्याम हरिहैं जु कृपाकरि इन नैननकी प्यास॥१८राग धनाश्री॥मधुकर कहिए काहि सुनाऊँ।हरि बिछुरत हम किते सहेहैं जिते विरहके घाउ॥ वरु माधो मधुवनही रहते कत यशुदाके आए। कत प्रभु गोपवेष व्रज धरिकै कत ए सुख उपजाए॥ कत गिरिधरचो इंद्र मद मेट्यो कत वन रास बनाए। अब कहा निठुर भए अवलनिको लिखि लिखि योग पठाए॥ तुम परवीन सबै जानतहो ताते इह कहि आंई॥ अपनी को चालै सुनि सूरज पिता जननि बिसराई॥१९॥उद्धव वचन॥राग धनाश्री॥जानि करि बावरी जिनि होहु। तत्त्व

भजै ऐसी ह्वै जैहौ ज्यों पारस परसे लोहु ॥ मेरो वचन सत्य करि मानहु छाँडो सबको मोहु। जो लगि सब पानी कीचु परी तौलगि अस्तुति द्रोहु ॥ अरे मधुप बातें ए ऐसी क्यों कहि आवत तोहि। सूर सु वस्तुहि छाँडि अभागे हमहिं बतावत खोहि॥२०॥गोपी वचन ॥ राग सारंग॥कहिबे जीय न कछु शक राखो। लावा मेलि दए हैं तुमको बकत रहो दिन आखो ॥ जाकी बात कहो तुम हमसों सो धौं कहौ को कांधी। तेरो कहो सो पवन भूस भयो वहो जात ज्यों आंधी ॥ कत श्रम करत सुनत को इहां है होत जो वनको रोयो। सूर इते पर समुझत नाहीं निपट दई को खोयो ॥ २१ ॥ राग सारंग॥ मधुकर भली सुमति मति खोई। हाँसी होन लगी है ब्रजमें योगहि राखहु गोई ॥ आतम ब्रह्म लखावत डोलत· घट घट व्यापक जोई। चापे काख फिरत निर्गुण गुण इहां गाहक नहिं कोई ॥ प्रेम कथा सोई पै जानै जामें बीती होई। अति रस एतो कहा कोइ जानै बूझि देखावै ओई ॥ बडो दूत तू बडी उमरको बडिए बुद्धि बडोई। सूरदास पूरो दै पटपद कहत फिरतहो सोई ॥२२॥राग धनाश्री॥ मधुपकहि जानत नाहिंन बात। फूंकि फूंकि हियरो सु लगावत उठि किन इहांते जात॥जेहि उर बसत यशोदा नंदन तेहि निर्गुण क्यों समात॥कत डोलत भटकत पुहुपनको पान करत किनपात ॥ यद्यपि बहु बेली बन बिहरत बसत जाइ जलजात॥सूरदास अब मिलवन आए मौन किए कुशलात ॥ २३ ॥ मधुकर छाँड अटपटी बातैं। फिरि फिरि बार बार सोइ शिखवत हम दुख पावत जातैं ॥ हम दिन देत अशीश प्रात उठि बार खसोमत न्हातै। तुम निशि दिन उर अंतर सोचत ब्रज युवतिनकी बातै ॥ पुनि पुनि तुमहिं कहत कत आवै कछुक सकुचहै नातै। सूरदास श्याम रंग राचे फिरि न चढै रंग रातै॥२४॥ राग मलार ॥ क्यों मन मानत है इन बातन। पाये जानि सकल सुनि मधुकर जे गुण साँवरे गातन ॥ प्रथम प्रेम निशिहू न तजत अब सकुचतहैं जल जातनि। निरस जानि निकट नहिं आवत देखि पुराने पातनि ॥ सुनियत कथा कान कोकिलकी कपट रंगकी रातनि। निशि दिन श्रम सेवा कराइ उठि अंत मिले पित मातनि ॥ तब ब्रज बसत वेणु रव ध्वनि करि वन बोली अधरातनि॥अति रति लोभ तजत नहिं इक क्षण पंठे सकत नहिं प्रातनि ॥ बालि जीति जिन बलि बंधन किये लुब्धक कैसी हातनि। को पतियाइ सुधो कहि सूरज संकर्षणके भ्रातनि ॥ ॥ २५ ॥ राग सारंग ॥ उलटी रीति तिहारी ऊधो सुनै सु ऐसी को है। अल्प वयस अवला अहीरि शठ तिनहिं योग कत सोहै ॥ कचखुबिआँधरि काजर कानी नकटी पहिरै बेसरि। मुडली पटिया पारि सँवारै कोढी लावै केसरि ॥ बहिरी पतिसों बातै करै तौतैसोई उत्तर पावै। सोगति होइ सबै ताकी जो ग्वारिनि योग सिखावै ॥ सिखई कहत श्यामकी बतियां तुमको नाहीं दोषु। राजकाज तुमते न सरैगो काया अपनी पोषु ॥ जाते भूलि सबै मारगमें इहां आनि कहा कहते। भली भई सुधि रही सूर तौ मोह धारमें बहते ॥ २६ ॥राग सारंग ॥ राखो सब इह योग अटपटो उधो पाँइ परों। कहां रसरीति कहाँ तनु शोधन सुनि सुनि लाज मरों ॥ चंदन छाँडि विभूति बतावत यह दुख क्यों न जरों। नासा कर गहि योग सिखावत बेसरि कहां धरों ॥ सगुण रूप रहत उर अंतर निर्गुण कहा करौं। निशि दिन रटना रटत श्याम गुण का करि योग मरों ॥ मुद्रा न्यास अंग अँग भूषण पतिव्रतते न टरों।सूरदास याही व्रत मेरे हरि मिलि नहिं बिछुरों ॥२७॥ राग सारंग ॥मधुकर हम अयान मति भोरी। जानें तेइ योगकी बातें जेहैं नवल किशोरी ॥ कंचनको मृग कवने देख्यो किन बांध्यो गहि डोरी। बिनही भीत चित्र किन कीनो किन नभ हठ करि घाल्यो झोरी ॥ कहिधौं मधुप बारि मथि माखन काढि जो भरो कमोरी। कहो कौन पै कढो जाइ

कन वहुत सरास पछोरी ॥ सबते ऊंचो ज्ञान तुम्हारो हम अहीरि मति थोरी । सूरज कृष्णचंद्रको चाहत अँखिआं तृपित चकोरी॥२८॥अथ नेत्र अवस्थावर्णनं॥राग धनाश्री॥अँखियां हरि दरशनकी भूँखी। अब कैसे रहति श्याम रंग राती ए बातैं सुनि रूखी ॥ अवधि गनत इकटक मग जोवत तब ए इत्यों नहिं झूखी । इते मान इहियोग सँदेशन सुनि अकुलानी दूखी ॥ सूर सकृत हठ नाव चलावत ए सरिता हैं सूखी। बारक वह मुख आनि देखावहु दुहिपै पिवत पतूखी॥२९॥राग धनाश्री॥अँखियाँ हरि दरशनकी प्यासी । देख्यो चाहत कमलनैनको निशिदिन रहत उदासी ॥ आए ऊधो फिरि गए आँगन डारि गए गर फाँसी । केसरिको तिलक मोतिनकी माला वृंदावनको बासी ॥ काहूके मनकी कोउ न जानत लोगनके मनहाँसी । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको जाइ करवट ल्यों कासी ॥ ३० ॥ राग धनाश्री ॥ नैनन उहै रूप जो देख्यो । तौ ऊधो यह जीवन जगको साँचहु सफल करि लेख्यो ॥ लोचन चपल चारु खंजन मन रंजन हृदय हमारे । सुरंग कमल मीन मनोहर श्वेत अरुन अरुकारे। रत्न जडित कुंडल श्रवणन वर गंड कपोलनि झाईं । मनु दिनकर प्रतिबिंब मुकुरमहँ ढूँढत यह छवि पाईं ॥ मुरली अधर बिकट भौंहैं कारि ठाढी होनि त्रिभंग । मुक्तमाल उर नील शिखरते धसी धरणि जनु गंग ॥ और वैस को कहै वरणि सब अंग अंग केसरि खौर । देखे बनै कहत रसना सों सूर विलोकत और॥३१॥राग धनाश्री ॥नैनन नंदनंदन ध्यान । तहांलै उपदेश दीजै जहां निर्गुण ज्ञान॥ पानि पल्लव रेख गनि गुनि अवधि विविध विधान । एते पर कहि कटुक वचनन हते जैसे प्रान ॥ चंद्रकोटि प्रकाश मुख अवतंस कोटिक भान । कोटि मन्मथ वारि छबिपर निरखि दीजत दान ॥ भ्रुकुटी कोटि कोदंड रुचि अवलोकननि संधान । कोटि वारिज वक्र नयन कटाक्ष कोटिक वान । मणि कंठहार उदार उर अतिशय बन्यो निर्मान । शंख चक्र गदाधरे कर पदुम सुधा निधान ॥ श्याम तनु पटपीतकी छबि करै कौन बखान । मनहु नृत्यत नील घनमें तडित देती मान । रासरसिक गुपाल मिलि मधु अधर करती पान । सूर ऐसे श्याम बिनको यहाँ रक्षक आन॥३२॥राग गूजरी॥ऊधो इन नैनन नेम लियो । नँदनंदन सों पतिव्रत राख्यो नाहिंन दरश वियो ॥ चंद्र चकोर चित्त चातक जलधर सों बधो हियो । ऐसेहि इन नैनन गोपाल-हि इकटक प्रेम दियो ॥ आयो पुहुप ज्ञानले ए दृग मधुपन रुचि न कियो । हरिमुख कमल अमीरस सूरज चाहत उहै पियो॥३३॥राग कान्हरो॥ऊधो जू नैनन यह व्रत लीन्हों। स्वाति बिना ऊपर सब भरियत ग्रीव रंध्र मत कीन्हों ॥ मुरली गरज तात सुकुतातन मेघ ध्यान जल हीनो। वरुए प्राण जाहिं ऐसेही वयन होय क्यों हीनों ॥ तुम आए लै योग शिखावन सुनत महादुख दीन्हों। कैसे सूर अगोचर लहिए निगम न पावत चीन्हों॥३४॥राग सारंग॥जबते सुंदरवदन निहारचो। तादिनते मधुकर मन अटक्यो वहुत करी निकरै न निकारचो ॥ मात पिता पति बंधु सजन जन तिनहूको कहिबो शिरधारचो। रही न लोकलाज मुख निरखत दुसह क्रोध फीटो करि डारचो ॥ हैबो होइ सु होइ कर्मवश अब जीको सब सोच निवारचो। दासी सूरदास परमानँद भलो पोच अपनो न विचारचो ॥ ३५ ॥ हरिमुख निरख निमेष बिसारे । तादिनते ए भए दिगंबर इन नैननके तारे ॥ तजी सीख सब सास ससुरकी लाज जनेऊ जारे। घर घूँघुट छाँडो वन वीथि-नि अहनिशि रहत उघारे ॥ सहज समाधि रूपरस इकटक करत न टकते टारे । ताके बीच विघ्न करिवेको मातु पिता पचिहारे ॥ कहत सुनत समुझत मन महिआँ ऊधो वचन तुम्हारे । सूरदास ए हटक न मानत लोचन हठी हमारे ॥ ३६ ॥ राग केदारो ॥ नैनन निपट कठिन व्रत ठानी। जा

दिनते बिछुरे नँदनंदन तादिनते नहिंनेक सिरानी । पलक न लावत रहत ध्यान धरि वारंवार ढुरावत पानी । लाल गोपाल मिले ऊधो मैं कर्महीन कछु ओ नाहिंजानी । समुझि समुझि उन हार श्यामकी अतिसुंदर वर शारंगपानी । सूरदास ए मोहि रहे अति हरि मूरति मनमाँझ समानी ॥३७॥राग सारंग॥ऊधो क्यों राखों ए नैननि। सुमिरि सुमिरि गुण अधिक तपतहैं सुनत तुम्हारे वैननि ॥ ए जु मनोहर वदन इंदुके शारद कुमुद चकोर । परम तृषारत सजल श्यामघन तनके चातकमोर ॥ मधु मराल युगपदपंकजके गति विलास जलमीन । चक्रवाक द्युति मन दिनकरके मृग मुरली आधीन ॥ सकल लोक सूनो लागत है बिन देखे वहरूप । सूरदास प्रभु नँदनंदनके नखशिख अंग अनूप ॥३८॥राग धनाश्री॥और सकल अंगनते ऊधो अँखियाँ बहुत दुखारी। अधिक पिराति सिराति न कबहूं अनेक जतन करि हारी ॥ चितवत मग सुनि भेष न मिलवत विरह विकल भई भारी । भरिगई विरह वाइ माधोके इकटक रहत उघारी ॥ अलि आली गुरुज्ञान शलाका क्यों सहि सकति तुम्हारी । सूर सु अंजन आँजि रूप रस आरति हरो हमारी ॥ ३९ ॥ राग रामकली॥ ऊधो इन नैनन अंजन देहु । आनहु क्यों न श्यामरँग काजर जासों जुरचो सनेहु ॥ तपति रहति निशि वासर मधुकर नाहिं सुहात वन गेहु । जैसे मीन मरत जल बिछुरत कहा कहौं दुख एहु ॥ सब विधि वानि ठानि करि राख्यो खरी कपूरको रेहु । वारक श्याम मिलावहु सूर सुनि क्यों न सुयश यश लेहु॥४०॥राग मलार॥नैना नाहिं नैये रहत । यदपि मधुप तुम नंद नँदनको निपटहि निकट कहत ॥ हृदय माँझ जो हरिहि वतावत सीखो नाहिं गहत । अधपरही संदेश अवधिको उलटे उलटि गहत ॥ परी जु प्रकृति प्रगट दरशनकी देखोइ रूप चहत । सूरदास प्रभु विन अवलोके सुख कोई न लहत ॥ ४१ ॥ पूरनता ए नैन पुरे । तुम पुनि कहत श्रवण हरिसमुझत दुख अति मरत विसूरे ॥ ए अलि चपल मोद रस लंपट कटु संदेश कथत कत क्रूरे । कहां मुनि ध्यान कहां व्रज वासिन कैसे जात कुलिश करचूरे ॥ हरि अंतर्यामी सब बूझत बुद्धि बिचार सु वचन समूरे । वे हरि रत्न रूप सागरके क्यों पाइए खनावत धूरे ॥ देखि विचारि प्रगट सरिता सर शीतल सजल स्वाद रुचि रूरे । सूर स्वाति की बूँद लगी जिय चातक चित लागत सब झूरे ॥४२॥राग मलार॥ऊधो अँखियाँ अति अनुरागी । इक टक मग जोवति अरु रोवति भूले हु पलक न लागी ॥ विन पावस पावसऋतु आई देखतहैं विदमान । अवधौं कहा कियो चाहतहैं छाँडहु निर्गुण ज्ञान ॥ सुनि प्रिय सखा श्यामसुंदरके जानतु सकल सुभाइ । जैसे मिले सूरके स्वामी तैसी करहु उपाइ॥४३॥राग विहागरो॥मधुकर सुनो लोचन वात। रोकि राखी अंग अंगन तऊ उडि उडि जात ॥ जो कपोत वियोग व्याकुल जाति है तजि धाम । जात योहग फिरि न आवत विना दरशन श्याम ॥ मूँदि नैन कपाट पटदै उभै घूँघट ओट । स्वाति सुत ज्यों जातिकी तहुँ निकसि माणि नग फोट ॥ श्रवण सुनि यश रहत हरिको मन रहत हरिको ध्यान। रहति रसना नाम रटि रटि कंठ करि गुण गान ॥ कछुक दियो सुहाग इनको तो सबै ए लेत । सूरदास प्रभु विना देखे नैन चैन न देत ॥ ४४ ॥ राग सारंग ॥ मधुकर ए नैना पै हारे । निरखि निरखि मग कमल नयनके प्रेम मगन भए भारे। तादिनते नींदौ पुनि नाशी चौंकि परति अधिकारे ॥ सपने तुरिए जागत पुनि वोई वसत जो हृदय हमारे॥यह निर्गुण लै ताहि बतावो जो जानै याकी सारे॥सूरदास गोपाल छाँडिकै चूसे टेटा खारे॥४५॥राग धनाश्री॥अँखियाँ अवलागीं पछितान । जब मोहन उठि चले मधुपुरी तब क्यों दीनो जान॥पंथ न चलै सँदेश न आवै धीरज धरै न प्रान ॥ जादिनके विछुरे नँदनंदन अँग अँग लागे वान । ऊधो अब तुम जाइ सुनावहु आवहि शारंगपानि । सूरदास चातक भई गोपी

T

अंतरगतिकी जानि॥४६॥राग जैतश्री॥ कमलनैन कान्हरकी शोभा नैननि ते न टरै । ऊधो आए योग सिखावनको जंजाल करै॥जब मोहन गाइनलै आवत ग्वालन संग धरै । बलदाऊ अरु संग सखा मिलि कहो कैसे बिसरै ॥ बंसीवट यमुनातट ठाढे मुरली अधर धरै । सुख समूह विनोद जे कीन्हे को तेहि घरनि धरै॥ ब्रजवासी भये उदासी को संताप हरै । सूरदासके प्रभु बिनु ऊधो कोतनु तप्त हरै ॥ ४७ ॥ राग नट ॥ सुंदर श्यामके सँग आँखि ॥ प्रथम ऊधो आनिदै हम सगुन डारँ नाखि ॥ द्वै तीन सप्त अनंग तजे श्रुति स्मृति कही जु भाषि । हृदय विद्या ज्ञान धरम सु लोचननि अभिलाष ॥ जहां जहांकी केलि पियहरि सोई सर चकई पाँखि । हारि हरि अहेरि या हारि रही झुकि झखि झाँखि ॥ कमल कुमुदनि इंदु उडुगन मिलन सूरज साखि। राति ज्यों अक्रूर दिन अलि मदन दह मधु माषि ॥४८॥ राग मलार ॥ सखी री मथुरा में द्वै हंस । वै अक्रूर ए ऊधो सजनी जानत नीके ग्रंस ॥ ए दोउ नीर खीर निरवारत इनहि बधायो कंस । इनके कुल ऐसी चलि आई सदा उजागर वंस ॥ अब इन कृपा करी ब्रज आए जानि आपनो अंस । सूर सु ज्ञान सुनावत अबलनि सुनत होत मतिभ्रंस ॥४९॥राग सारंग॥ मानो दोउ एकहि मतै भए । ऊधौ अरु अक्रूर वधिक मति ब्रज आखेट ठए ॥ वचन पासि विषए मृग माधो उन रथ नाइ लए। इन हिय हेरि मृगी सब गोपी सायक ज्ञान हए॥योग अग्निकी दवा देखियत चहुँ दिश लाइ दए ॥ ५० ॥ मानो भेर दोउ एकहि सांचे । नख शिख कमलनयनकी शोभा एकै भृगुपद बांचे ॥ दारुजात कैसे गुण इनमें ऊपर अंतर श्याम । हमको है गजदंत प्रचारित वचन कहत नाहिं काम ॥ एई सब असित देह धरे जेते ऐसेई सब जानि । सूर एकते एक आगरे वा मधुराकी खानि ॥ ५१ ॥ सबै खोटे मधुबनके लोग । जिनके संग श्याम सुंदर सखी सीखे सब अप योग ॥ आए हैं कहियत ब्रज ऊधो युवतिनको लै योग । आसन ध्यान नैन मूँदे सखि कैसे कटै वियोग । हम अहीरि इतनी का जानैं कुबिजासों संयोग । सूर सु वैद कहा लै कीजै कहे न जानै रोग॥५२॥ राग नट॥ मधुवनके लोगन को पतिआइ । सुख औरै अंतरगति औरै पतियाँ लिखि पठवत जो बनाइ ॥ ज्यों कोइ लखत काग जिवाए भक्ष अभक्ष खवाइ । कुहुकुहानि सुनि ऋतु बसंतकी अंत मिले कुल अपने जाइ ॥ ज्यों मधुकर अंवुज रस चाख्यो बहुरि न बूझी बातैं आइ । सूर जहाँ लगि श्यामगातहैं तिनसे कतकीजे सगाइ ॥५३॥ माई री मधुवनकी यह रीति । निरखि जानि तजत छिन भीतर नवल कुसुम रस प्रीति ॥ तिनहूँके संगिनको कैसे चित आवति परतीति । हमहिं छाँडि विरमहिं कुबिजा सँग आए न रिपुरण जीति ॥ जिनि पतियाहु मधुर सुनि बातैं लागे करन समीति । सूरदास श्यामसँग ऐसो ज्यों भुसपरकी भीति ॥५४॥ राग मलार ॥ मधुवनके सब कृत ज्ञ धर्मीले । अति उदार परहित डोलतहैं बोलत बचन सुशीले ॥ प्रथम आइ गोकुल सुफलकसुत लै मधुरिपुहि सिधारे । उहां कंस इहां हम दीननिको दूनो काज सँवारे ॥ हरिको सिखै सिखावन हमको अब ऊधो पगधारे । उहां दासी रतिकी कीरतिकै इहां योग विस्तारे ॥ अब तेहि विरह समुद्र सबै हम बूडी चहत नहीं । लीला सगुन नावही सुनु अलि तेहि अवलंब रही ॥ अब निर्गुण हि गहैं युवतीजन पारहि कहो गईको । सूर अक्रूर छपदके मनमें नाहिन त्रास दईको ॥ ५५ ॥ ॥ राग धनाश्री ॥ अब नीके कै समुझि परी । जिनि लगि हुती बहुत उर आशा सोऊ बातनि वरी॥वै सुफलक सुत ए सखी ऊधो मिली एक परिपाटी । उनतौ वह कीन्ही तब हमसों ए रतन छँडाइ गहावत माटी ॥ ऊपर मृदु भीतरसे कुलिशसम देखतके अति भोरे । जोइ जोइ आवत वा मधु-

राते एक डार केसे तोरे ॥ यह सखी मैं पहिले कहि राखी असित न अपने होहीं। सूर काटि जो माथो दीजै चलत आपनी गोहीं ॥ ५६ ॥ ऊधो प्रेम रहित योग निरस काहेको गायो। हम अबलनिको निठुर वचन कहे कहा पायो ॥ जिन नैनन कमलनैन मोहन मुख हेरचो। मूँदनते नैन कहत कौन ज्ञान तेरचो ॥ तामें सुनि मधुकर हम कहा लेन जाहीं। जामें प्रिय प्राण नाथ नंदनँदन नाहीं ॥ जिनके तुम सखा साधु बात कहो तिनकी। जीवत कहि प्रेम कथा दासी हम उनकी ॥ अविनाशी निर्गुण मत कहा आनि भाख्यो। सूरदास जीवन प्रभु कान्ह कहा राख्यो ॥५७॥ राग सारंग॥ जिनि चालहि अलि बात पराई। नहिं कोउ सुनै न समुझत ब्रजमें नई कीरति सब जात हिराई ॥ जाने समाचार सुखपाए मिलि कुलकी आरति बिसराई। भले ठौर बसि भली भई मति भले ठौर पहिंचानि कराई ॥ मीठी कथा कटुकसी लागति उपजतहैं उपदेश खराई। उलटे न्याउ सूरके प्रभुके बहेजात माँगत उतराई॥५८॥ राग धनाश्री॥ ऊधो योग सिखावन आए अब कैसे धीरज धरौं। जोरि जोरि चित जोरि जुरीनो जोरी जोरिन जानो ॥ पहिलो योग कहा भयो ऊधो अब यह योग दृढानो ॥ उन हरि हमसों प्रीति करी जो जैसे मीन अरु पानी। तलफि तलफि जिय निकसन लागे पापी पीर न जानी॥ निशिवासर मोहिं पलक न लागै कोटि जतन करि हारी। ज्यों भुवंग तजि गयो कैंचुली सो गति भई हमारी ॥ एकदिवस हरि अपने हाथन करन फूल पहिराए। ते मोहन माटीके मुद्रा मधुकर हाथ पठाए ॥ वेनी सुभग गुही कर अपने हाथन चरण जावक दीनो। कहा कहौं वा श्यामसुंदरसों निपट कठिन मन कीनो ॥ तुम जो बसत हौ मथुरा नगरी हम जो बसत या गाँव। ऊधो हरिसों यों जाइ कहियो प्राण तजहिं या ठाँव ॥ प्रीतम प्यारे प्राण हमारे रहे अधरपर आइ। सूरदास हरिजीके आगे कौन कहै दुखजाइ ॥५९॥ जैतश्री॥ ऊधो योग सिखावन आए। शृंगी भस्म अधारी मुद्रा दे यदुनाथ पठाए ॥ जो पै योग लिखो गोपिनको कत रसरास खिलाए। तबहीं क्यों न ज्ञान उपदेशो अधर सुधारस प्याए ॥ मुरली शब्द सुनत बनगवनी पति सुत गृह बिसराए। सूरदास सँग छाँड स्वामिको हमहिं भले पछिताए ॥ ॥६०॥ राग धनाश्री॥ बहुत दिन गए ऊधो चरणकमल बिनु देखे। दरशनहीन दुखित दिनही दिन छिन छिन विपति विशेषे॥ रजनीमें अति प्रेम पीर बन गृह मन धरै न धीर। वासर मग जोवत उर सरिता भए नैनके नीर ॥ जौलौं रही आश सोइ गानगति घटि रही श्वास। अति वियोग विरहिन तनु तजि है कहि सो सूरज दास ॥६१॥ ऊधोवचन ॥ राग धनाश्री॥ ज्ञान बिना कहुँ वै सुख नाहीं। घट घट व्यापक दारु अग्नि ज्यों सदा बसै उर माहीं ॥ निर्गुण छाँडि सगुणको दौरति सोचि कहो किहि बाहीं। तत्त्व भजौ ज्यों निकट न छूटै त्यों तनुके सँग छाहीं॥ तिनके कहो कौन जस पायो जे अबलौं अवगाहीं। सूरदास ऐसे कर लागत ज्यों कृषि कीन्हें पाहीं॥६२॥ राग सोरठ॥ ऊधो प्यारे कही सो बहुरि न कहिए। जो तुम हमैं जिवायो चाहत अनबोले होइ रहिए ॥ प्राणहमारे घात होत हैं तुमरे भावै हाँसी। या जीवनते मरन भलो है करवट लेवो कासी ॥ पूरवप्रीति सँभारि हमारे तुमको कहन पठायो। हमतौ जरिवरि भस्म भए तुम आनि मसान जगायो ॥ कै हरि हमको आनि मिलावहु कै ले चलिए साथे। सूर श्याम बिन प्राण तजत हैं बनै तुम्हारे माथे ॥६३॥ राग धनाश्री ॥ रे मधुकर कहा सिखावन आयो। एतौ नैन रूप रस राचे कह्यो न करत परायो ॥ योग युक्ति हम कछुव न जानैं ना कछु ब्रह्मज्ञानो। नवकिशोर मोहन मृदुमूरति तासों मन उरझानो ॥ भली करी तुम आए ऊधो देखो दशा विचारी। दाइ उपाइ मिलाइ सूर प्रभु आरति हरहु हमारी ॥६४॥ राग कल्याण॥ मधुकर कहा

कियो अब चाहत। ए सब भईं चित्रकी पुतरी सून शरीरहि डाहत ॥ हमसों तोसों वैर कहा अलि श्याम अजा भयो राहत। झारि झूरि मनतो तू लै गयो बहुरि पयारहि गाहत ॥ अबतौ है मारुत को गहिबो का सस मूकी लैहै। सूरज जो उन हमहिं हते तू अपनो कीयो पैहै॥६५॥राग केदारो॥ऊधो तुम अपनो जतन करौ। हितकी कहत कु हितकी लागत इहां बेकाज अरौ ॥ जाइ करौ उपचार आपनो हौं जु देत शिख नीकी। कछु नै कहत कछु कहि नाहिं आवत ध्वनि देखत नहिं नीकी॥साधु होइ ताहि उत्तरदीजै तुमसों मानी हारि। यह जिय जानि नंदनंदन तुम इहां पठाए ढारि ॥ मथुरा गहौ बेगि इन पाँइन उपज्योहै तनुरोग। सूर सुवैद बेगि ढोहो किन भए मरनके योग॥६६॥राग नट॥ कह्यो तुम्हारो लागत काहे। कोटिक जतन कहौ जो ऊधो हम नवहकिहैं वाहे ॥ काहेको अपने जीमें री तू सतलै मनलाहे। यह भ्रमतौ अबहीं भजि जैहै ज्यों पयारके गाहे ॥ काशीके लोगनलै सिखयो जे समझे या माहे। सूर श्याम विहरत ब्रज भीतर जीजतु है सुखचाहे ॥६७॥ सारंग॥ आप देखि पर देखि रे मधुकर तब औरन सिख देह। बीतैगी तबहीं जानोगे महाकठिनहै नेह ॥ मन जु तुम्हारे हरिचरणनहै तन लै गोकुल आयो। नँदनंदनके संगके बिछुरे कहि कौने सच पायो ॥ गोकुल रहौ जाहु जनि मथुरा झूठो माया मोहु। गोपी कहैं सूर सुन ऊधो हमसे तुमहू होहु ॥ ६८॥ तू अलि कहा परचो कहि पैंडे।ब्रज तू श्याम अजा भयो हमको इहऊ बचत न बैंडे ॥ यह उपदेश सेतहू भाए जो चढि कहौ वरैंडे। राजति जतन यशोदा नंदहि हृदय माँझ सब मैंडे ॥ छांडि राजमारग यह लीला कैसे चलहि कुपैंडे।या आदर पर अजहूं बैठो टरत न सूर पलैंडे॥६९॥राग सारंग॥ घरहीके बाढेहो रावरे नाहिन मीत वियोग वशपरे अनव्योगे अलिबावरे। अधरसुधा मुरलीकी पोपे योग जहर कत प्यावे रे ॥ अबला कही योग हम जानैं ज्यों जल सूखे नावरे ॥ वरु मरिजाइ चरै नहिं तिनका सिंहको इहै सुभाइ रे॥जानत सूरदास कंठहरियो तजि अनत न ठाँवरे॥७०॥राग सारंग॥ तुम अलि कासों कहत बनाई। बिनु समुझे हम फिरि बूझतिहैं वारक बहुरौ गाई ॥ किहिधौं गमन कीन्हों स्यंदनचढि सुफलकसुतके संग ॥ किहि विधि रजक लिए नानापट पहिरे अपने अंग ॥किहि हति चाप निदरि गज निजबल किंहि बल मल्ल मथिजाने। उग्रसेन वसुदेव देवकी किहिवनिगडते आने। तू काकीहै करत प्रशंसा कौने घोष पठायो ॥ किहि मातुल हति कियो जगत यश कौन मधुपुरी छायो ॥ माथे मोर मुकुट उरगुंजा मुखमुरली कलबाजै। सूरदास यशुदानँद नंदन गोकुल कान्ह विराजै॥७१॥राग सारंग॥हमको हरिकी कथा सुनाउ। ए आपनी ज्ञानगाथा अलि मथुराही लै जाउ ॥ वै नर नारि नीके समुझेंगी तेरो वचन बनाउ। पालागौं ऐसी इन बातनि उनहीं जाइ रिझाउ ॥ जो शुचि सखी श्याम सुंदरको अरु जियअति सतिभाउ। तो बारक आतुर इन नैनन वह सुख आनि देखाउ ॥ जो कोउ कोटि करै कैसेहू विधि विद्या व्यौसाउ। तो सुन सूर मीनके जलबिनु नाहिंन और उपाउ ॥७२॥राग सोपाली॥ ऊधो हरि विनु ब्रज रिपु बहुरि जिये। जे हमरे देखत नँदनंदन हति हति हुते सो दूरि किये॥ निशिको रूप बकी बनि आवत अति भयकरत सु कंप हिए। तापहते तनु प्राण हमारे रविहू छिनक छँडाइ लिए ॥ उर ऊंचे उसाँस तृणावर्त तिहि सुख सकल उडाइ दिए ॥ कोटिक काली समकालिंदी परसत सलिल न जात पिए ॥ बन बकरूप अघासुर समघर कतहू तौन चितै सकिए ॥ कँसो कठिन कर्म कैसो बिन काको सूर शरन तकिए॥७३॥ राग सोरठ ॥ ऊधो तुम ब्रजकी दशा बिचारो। ता पाछे यह सिद्धि आपनी योगकथा विस्तारो॥ जाकारण तुम पठए माधो सो सोचो जियमाहीं। कितोक बीच बिरह परमारथ जानत

हौ किधौं नाहीं ॥ तुम परवीन चतुर कहियतहौ संतन निकट रहतहौ । जल बूडत अवलंब फेनको फिरि फिरि कहा गहतहौ ॥ वह मुसकानि मनोहर चितवन कैसे उरते टारौ । योग युक्ति अरु मुक्ति परमनिधि वा मुरलीपै वारौ ॥ जिहि उर कमलनैन जु वसतहैं तिहि निर्गुण क्यों आवै। सूरदास सो भजन वहाऊं जाहि दूसरो भावै ॥७४॥ राग आसावरी ॥ ऊधो कहांकी प्रीति हमारे । अजहूं रहत तन हरिके सिधारे ॥ छिदि छिदि जात विरह शर मारे । पुरि पुरि आवत अवधि विचारे ॥ फटत न हृदय सँदेश तुम्हारे । कुलिशते कठिन धुकत दोउ तारे ॥ वर्षत नैन महा जलधारे । उर पाषाण विदरत न विदारे ॥ जीवन बरन दोउ दुखभारे । कहियत सूर लाज पतिहारे। ॥७५॥ राग सारंग॥ ऊधो इतनो मोहिं सतावत । कारी घटा देखि बादरकी दामिनि चमकि डरावत॥ हिम सुतापतिको रिपु व्यापै दधिसुत रथ न चलावत।अंबुखंडन शब्दसुनतही चितचकृत उठि धावत ॥ कंचनपुरपति को जो भ्राता ते सब बलहि न आवत । शंभूसुतको जा वाहनहै कुहकै असल सलावत ॥ यद्यपि भूषण अंग बनावत सोइ भुजंग होइ धावत । सूरदास विरहिन अतिव्याकुल खगपति चढि किन आवत ॥७६॥ राग धनाश्री ॥ हमको तुमबिन सबै सतावत । लखौ न मधुप चतुर माधोसों तुमहूं सखा कहावत ॥ ताको तनु हरि हरयो दीनसों कुल सर्वांगत दीनी । सोइ मारत करि वार पार करि हमको कानन कीनी ॥ सिंधुते काढि शंभुकर सौंप्यो गुनहगारकी नाई । सो शशि प्रगट प्रधान कामको चहुँदिशि देत दोहाई ॥ अमरनाथ अपराध क्षमाकरि तबहिं भोग मुकरायो । प्रात इंद्र कोपित जलधरलै ब्रजमंडल पर छायो ॥ पूंछ पूंछ सरदार सखनके इहि विधि दई बडाई । तिन अतिबोल झोल तनु डारयो अनल भँवरकी नाई । पंछ छोरि अलिसूझ पंछधरि तिनहूं कोपि जनायो । पत्यो जो रेख ललाट और सुख भेंटि दुकार बनायो । कौन कौनको विनय कीजिए कहि जेतिक कहि आई । सूर श्याम अपने या ब्रजकी इहिविधि कान कटाई॥७७॥ राग नट॥ ऊधो यहु हित लागत काहे । निशिदिन नैन तपत दरशनको तुम जु कहत हृदयमाहे॥ पलक न परत चहुँदिशि चितवत बिरहानलके दाहे ॥ इतनी आरति काहे न मिलही जो पर श्याम इहां है । पालागौं ऐसेही रहन दे अवधि आशजल थाहे । जिनि बोरहि निर्गुण समुद्रमें पुनि पाई बिन चाहे ॥ उपजि परी जासों तिहि अंग अँग सो अंग बन निबाहै।सूर कहा लै करै पपीहा एते सर सरिताहै॥७८॥ राग मलार॥ ह्यां तुम कहत कौनकी बातैं । सुन ऊधो हम समुझत नाहीं फिरि बूझतिहैं तातैं ॥ को नृप भयो कंस किन मारयो को वसुदेव सुत आहि।ह्यां यशुदासुत परममनोहर जीजतुहै सुख चाहि॥ नितप्रति जात धेनु वनचारन गोप सखनके संग । वासरगत रजनी मुख आवत करत नैन गति पंग ॥ को अविनाशी अगम अगोचर को विधि वेद अपार । सूर वृथा बकवाद करत कत इहिब्रज नंदकुमार ॥ ७९ ॥ ऊधो हरि काहेके अंतर्यामी । अजहुँ न आइ मिले इहि औसर अवधि बतावत लामी ॥ कीन्ही प्रीति पुहुप शुंडाकी अपने काजके कामी॥ तिनको कौन परेखो कीजे जे हैं गरुडके गामी ॥ आई उघरि प्रीति कलईसी जैसी खाटी आमी । सूर इते पर खुनसनि मरियत ऊधो पीवत मामी ॥ ८० ॥ मधुकर वह जानी तुम साँची । पूरणब्रह्म तुम्हारो ठाकुर आगे माया नाची ॥ यह इहि गाउँ न समुझत कोऊ कैसो निर्गुण होत । गोकुल बाट परे नँदनंदन उहै तुम्हारो पोत ॥ को यशुमति ऊखलसों बाँध्यो को दधि माखन चोरे । कै ए दोऊ रूख हमारे यमलाअर्जुन तोरे ॥ को लै बसन चढ्यो तरु शाखा मुरली मन औ करषै । कै रसरास रच्यो वृंदावन हरषि सुमन सुर बरषै ॥ ज्यों डाक्यों तब कत बिन बूडे काहेको जीभ पिरावत । तब जु सूर प्रभु गये कूरलै अब क्यों

नैन सिरावत ॥८१॥ कान्हरो ॥ निर्गुण कौन देशको वासी । मधुकर कहि समुझाइ सौंह दै बूझति सांचत हाँसी ॥ कोहै जनक कौनहै जननी कौन नारि को दासी । कैसो बरन भेषहै कैसो केहि रसमें अभिलासी॥ पावैगो पुनि कियो आपनो जोर करैगो गासी॥ सुनत मौन ह्वै रह्यो बावरो सूर सबै मति नाशी॥ ॥८२॥ राग कल्याण॥ ऊधो हमै हरि कत बिसराए । एक दिवस वृंदावन भीतर करकरि पत्र डसाए॥ सुमिरि सुमिरि गुण गाउँ श्यामके नैन सजल ह्वै आए । पलकको बिछुरे किते दिन बीते प्रीतम भए पराए ॥ शीतल पंथ जोवति हम निशिदिन कित विरहिनि विरमाए। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिना मदनकी ताप सताए ॥ ८३ ॥ अथ गोपी कुबिजा प्रति तरकवदति॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो अब चित भए कठोर । पूरब प्रीति बिसारी गिरिधर नौतन राचे ओर ॥ जन्म जन्मकी दासी तुम्हरी नागर नंदकिशोर । प्रीतिके बाण लगाए मधुकर निकरि गए दोउ ओर ॥ जब हरि मधुवनको जु सिधारे धीरज धरत न ढोर । सूरदास चातक भई गोपी कहां गए चित चोर॥ ८४ ॥ राग मलार ॥ ऊधो हमहिं न जान्यो श्यामहि । सेवा करत करी कछु औरै गई जाति कुल नामहि ॥ तन मन चोरि प्रीति जो जोरत कौन भलाई तामहि । ते कहा जानैं पीर पराई लुब्धक अपने कामहि ॥ अंतहु सूर सोई पै प्रकटै होइ प्रकृति जो जामहि । नागरि नारि रतिकेरति नागर रचे कुबिजा वा महिं॥८५॥ राग गौरी॥ मधुकर उनकी बात हम जानी । कोऊ हुती कंसकी दासी कृपाकरी भई रानी॥ कुबिजा नाउँ मधुपुरी बैठी लै सुवास मन मानी । कुटिल कुचील जन्मकी टेढी सुंदर करि घर आनी ॥ अब वह नवल बधू ह्वै बैठी ब्रजकी कहत कहानी । सूरश्याम अब कैसे पैये जासों मिली सयानी॥८६॥ राग मलार॥ वरु उन कुबिजा भलो कियो । सुनि सुनि समाचार ए मधुकर अधिक जुडात हियो ॥ जाको हरि मन हरचो रूप करि हरचो सु पुनि न दियो । तिन अपनो मन हरत न जान्यो हँसि हँसि लोग जियो ॥ सूर तनक चंदन चढाय उर श्री सर्वस जु पियो । और सकल नागरि नारिन को दासी दाँव लियो॥८७॥ राग केदारो॥ ऊधो अब कछु कहत न आवै । शिरपर सौति हमारे कुबिजा चामके दाम चलावै ॥ उन कछु मंत्र करचो चंदनमें ताते श्यामहि भावै । आपनही रँग रची साँवरी शुक ज्यों बैठि पढावै ॥ दासी हुती असुर दैयतकी अब कुलबधू कहावै । त्यों नटनी कर लिए लकुटिया कपि ज्यों नाच नचावै ॥ टूट्यो नातो या गोकुलको लिखि लिखि योग पठावै । सूरदास प्रभु हमहिं निदरि दाधेपर लोन लगावै ॥८८॥ राग कान्हरो ॥ सुनि सुनि ऊधो आवत हाँसी । कहां वै ब्रह्मादिकके ठाकुर कहां कंसकी दासी ॥ इंद्रादिककी कौन चलावै शंकर करत खवासी । निगम आदि बंदीजन जाके शेष शीशके वासी ॥ जाके कमला रहत निरंतर कौन गनै कुबिजासी । सूरदास प्रभु हढकरि बाँधे प्रेम पुंजिका पासी ॥८९॥ राग मलार ॥ तवतें बहुरि दरश नाहिं दीन्हों । ऊधो हरि मथुरा कुबिजाघर इहै नेम व्रत लीन्हों ॥ चारिमास वर्षाके लीन्हें मुनिहु रहत इकठौर । दासी धाम पवित्र जानिकै नाहिं देखत उठि और ॥ ब्रजवासी सब ग्वाल कहतहैं कत ब्रज छाँडि गए । सूर सगुनई जात मधुपुरी निर्गुण नाम भए॥ ९० ॥ राग जैतश्री ॥ कुबरीको न्याउरी जासों गोविंद बोलै । जिनसों कृपाकरी नँदनंदन सो काहेन ऐंडी डोलै ॥ कारो कारो कुटिल अति कान्हर अंतर ग्रंथि न खोलै । हम बौरी बकवाद करतहैं वृथा आरति यह जो लै ॥ प्रीति पुरातन पोरी उनसों नेह कसौटी तोलै । सूर श्याम उपहास चल्यो ब्रज आप आपने टोलै ॥ ९१ ॥ काम गँवारी सोच परचो । रूपहीन कुल हीन कूबरी तासों मन जो ढरचो ॥ उनको सदा स्वभाव सलिलको खेरनी खंड झरचो । सकुचो नहीं जानि ऊंचो तनु उमँगति भन पसरचो ॥ फेरे फिरत असुर दासीके जनु जडमांड भरचो ।

सूरदास गोपाल रसिकमणि अकरन करन कर्यो ॥९२॥राग मलार॥काहेको गोपीनाथ कहावत । जुपै मधुप हरि हितू हमारे काहेन गोकुल आवत ॥ सुपनेकी पहिंचानि जीयमहिं हमहिं कलंक लगावत । जो परि कृष्ण कूबरिहि रीझे तो सोई किन नाम धरावत ॥ ज्यों गजराज काजके औसर औरै दशन देखावत । ऐसे हम कहिवे सुनवेको सूर अनत बिरमावत ॥ ९३ ॥ कहिअत कुबिजा कृष्ण नेवाजी । छुवत अटपटी चाल गई मिटि नवसत कंचुकी साजी ॥ मिली जाइ आगे दरवाजे चंदन देत ठगी करि बाजी । बाँधे सुरति सुहाग सबनको हरि मिलि प्रीति उपराजी ॥ सुफल भयो पछिलो तप कीन्हों देखि स्वरूप कामरति भाजी । जगतके प्रभु वश किए सूर सुनि सबहि सुहागिनिके शिर गाजी॥९४॥राग सारंग॥ऊधो जाके माथे भागु । अबलन योग सिखावन आए चेरिहि चपरि सोहागु ॥ आए बचन योगकी बेली काटि प्रेमकी बाग । कुबिजहि करि आए पटरानी हमहिं देत बैराग ॥ लौंडीकी डौंडी बाजी जग बढ्यो श्याम अनुराग । कुबिजा कमलनैन मिलि खेलत बारहमासी फाग ॥ मिल्यो सोहायो साथ श्यामको कहाँ हंस कहाँ काग । सूरदास प्रभु ऊंख छाँडिकै चतुर चचोरत आग॥९५॥राग गौरी॥ऊधो जू जाइ कहो दूरि करैं दासी॥नागर नर जीव बिचारे करत हैं सब हाँसी ॥ हेम कांच हंस काग खरि कपूर जैसो । कुबिजा अरु कमलनैन संग बन्यो ऐसो॥जातिहीन कुलविहीन कुबिजा कान्ह दोऊ॥जो ऐसिनके संग लागै सूर तैसो सोऊ॥९६राग मलार॥ ऊधो कहा हमारी चूक॥वै गुण अवगुण सुनि सुनि हरिके हृदय उठतिहै कूक॥नेही काज छाँडि गए मधुवन हम घटि कहा करी॥तन मन धन आतमा निवेदन सोउ न चितहि धरी॥रीझे जाइ सुंदरी कुबिजहि यहि दुख आवै हाँसी । यद्यपि कूर कुरूप कुंदरस तद्यपि हम व्रजवासी ॥ एते ऊपर प्राणरहतहैं घाट कहहु कहाकहिए । पूरब कर्मलिखे विधि अक्षर सूर सबै सो सहिए ॥९७॥ मलार॥अलि हमहिं कान्हको इहै परेखो आवै । तब वह प्रीति चरण जावक शिर अब कुबिजा मनभावै॥तब कत पाणि,धरो गोवर्धन कत व्रजपतिहि छँडावै । अब वह रूप अनूप कृपाकरि नैनन क्यों न देखावै ॥ तब कत बेन अधर धरि मोहन लैलै नाम बुलावै । अरु कत लाड लडाइ राग रस हँसि हँसि कंठ लगावै ॥ जेहि मुख संग समीप राति दिन तेहि क्यों योग सिखावै ॥ जेहि मुख अमृत पिऊं रसनाभरि तेहि क्यों विषहि पिआवै ॥ करमीडति पछितातिं मनहिंमन क्रम क्रम करि समुझावै । सोइ सुनि सूरदास अब बिरहिनि यहि दुख दुख अति पावै ॥९८॥राग सोरठ॥ मेरे जिय इहै परेखो आवै । सरवस लूटि हमारो लीनो राज कूबरी पावै ॥ तापर एक सुनो री अजगुत लिखि लिखि योग पठावै । सूर कुटिल कुबिजाके हितको निर्गुण वेद सुनावै॥९९॥राग मलार॥ ऊधो आवै इहै परेखो । जब बारे तब वैसी मिलनी की बडे भए इहै देखो ॥ योग यज्ञ तप नेम दान व्रत इहै करत तब जात । क्योंहूँ बालसुत बढे कुशलसों कठिन मोहकी बात ॥ करि निज प्रगट कपट पिक कीरति अपने काज लगि धीर । काज सरे दुखगए कहाँधौं का वायसकी पीर ॥ जहँ जहँ रहहु राज्य करौ तहँ तहँ लेहु कोटिको भार । इहै अशीश सूर प्रभु सों कहि न्हात खिसै जिन बार ॥३१००॥राग मलार॥हरि व्रज कबहिं कह्योहो आवन। वेगि सु वचन सुनाइ मधुपजी मोहिं व्यथा बिसरावन ॥ हौं यह बात कहा जानों प्रभु जात मधुपुरी छावन । पछिली चूक समुझि उर अंतर अब लागी पछितावन ॥ सब निशि सूर सेज भई बैरनि शशि सीखो तनुतावन । अब यह कर कच अंगनि ऊपर दशहू दिशि घन सावन ॥१॥ राग सारंग ॥ तुम्हारी प्रीति किधौं तरवारि । दृष्टिधार धरि हती जु पाहिले घायल सब व्रजनारि ॥ गिरी सुमार खेत वृंदावन रणमानी मनहारि । बिह्वलविकल सभा राति छिन छिन वदन सुधानिधि वारि ॥ अब यह

कृपा योग लिखि पठए मनसिज करी गुहारि। कछु इक शेष बच्योहै सूर प्रभु सोउ जिनि डारहु मारि ॥२॥ राग सारंग॥कहो तो जो कहिबेकी होई।प्राणनाथ बिछुरेकी वेदन जानत नाहिंन कोई॥जो हम अधर सुधारस लैलै रही मदन गति भोई। कहा कहौं कछु कहत न आवै तन मन रही समोई॥ विरह व्यथा वेदन उर अंतर जामें बीतै जानै सोई। सूरदास शिव सनकादिक लोभा सो हम बैठे खोई ॥३॥ नट॥ ऊधो तुम ब्रजमें पैठ करी। लैं आएहो नफा जानिकै सबै बस्तु अकरी॥ हम अहीर माखन मथि बेचैं सबन टेक पकरी। इह निर्गुण निर्मोलकी गठरी अब किन करत घरी॥यह व्यापार वहां जो समातो हुती बडी नगरी। सूरदास गाहक नहिं कोऊ दिखिअत गरे परी॥४॥ राग धनाश्री॥ ऊधो योग ठगौ री ब्रज न बिकै है। मूरीके पातनके बदले को मुक्ताहल दैहै। यह व्यापार तुम्हारो ऊधो ऐसेहि धरचो रहि जैहै। जिन पै ते लै आए ऊधो तिनहिके पेट समैहै॥ दाख दाडिम कत कटुक निबौरी को अपने मुख खैहै। गुणकरि मोहिं सूर साँवरेको निर्गुणही निबैहैहै ॥५॥ राग सारंग॥ मीठी बातनमें कहा लीजे। जोपै वै हरि होहिं हमारे करन कहै सोइ कीजै॥ जिन मोहन अपने कर कानन कर्णफूल पहिराए। तिन मोहन माटीके मुद्रा मधुकर हाथ पठाए॥ एकदिवस वेनी वृंदावन रचि पचि बिबिध बनाई। ते अब कहत जटा माथेपर बदलो नाम कन्हाई॥ लाइ सुगंध बनाइ अभूषण अरु कीनी अर्धंग। सोवै अब कहि कहि पठवतहैं भस्म चढावन अंग॥ कहा करौं दूरि नँदनंदन तुम जो मधुप मधुपाती। सूर न होइ श्यामके मुखको जाहु न जारहु छाती॥६॥ ॥ राग सारंग॥ ऊधो भूलि भले भटके। कहत कही कछु बात लडैते तुम ताही अटके॥ देखों सकल सयान तिहारो लीने छरि फटके। तुमहिं दियो बहराइ इते को वे कुबिजासों अटके॥ लीजो योग सँभारि आपनो जाहु तहीं तटके। सूर श्याम तजि कोउ न लैहै या योगहि कटुके॥७॥राग नट॥ऊधो तुमहौ निकटके वासी। यह निर्गुण लै ताहि सुनावहु जे मुडिया बसैं कासी॥ मुरली अधर सकल अंग सुंदर रूप सिंधुकी रासी। योगकटोरे लिए फिरतहौ ब्रजवासिनकी फाँसी॥ राजकुमार भले हम जानै घरमें कंसकी दासी। सूरदास यदुकुलहि लजावत ब्रजमें होतहै हाँसी॥ ८॥ ॥ राग सारंग॥ ऊधो तुम जो निकटके वासी। यह परमारथ बूझि कहौ किन नाम बडोकी कासी॥ योग ज्ञान ध्यान अवराधन साधन मुक्ति उदासी। नाम प्रकार कहाः रुचि मानहि जो गोपाल उपासी॥ परमारथी जहां लौं जेते विरहिनिके दुखदाई। सूरदास प्रभु रँगे प्रेमरँग जारौ योग सगाई॥९॥राग मलार॥मधुप विराने लोग बटाऊ। दिनदशरहे आपने कारण तजिगए मिले न काऊ॥ प्रीतम हरि हमको सिधि पठई आयो योग अगाऊ। हमको योग भोग कुबिजाको उहिकुल यहै सुभाऊ॥ जान्यो योग नंदनंदनको कीजै कौन उपाऊ। सूर श्यामको सर्वसु दीन्हों प्राण रहै की जाऊ॥१०॥ दिन दिन प्रीति देखिअत थोरी। सुनहु मधुप मधुवन वसि मधुरिपु कुल मर्यादा छोरी॥ गोकुलके मणि त्रिभुवन नायक दासीसों रति जोरी। तापर लिखि लिखि योग पठावत विसरी माखन चोरी॥ काको मान परेखो कीजै बँधी प्रेमकी डोरी। सूरदास विरहिनि बिरहा जरि भई साँवरी गोरी॥११॥ राग आसावरी॥ जादिनते गोपाल चले। तादिनते ऊधो या ब्रजके सब सुभाइ बदले॥ घटे अहार विहार हर्ष हितु सुख शोभा गुणगान। उतल तेज सब रहित सकल बिधि आरति असम समान॥ बाढी निशा वलय आभूषण उर कंचुकी उसाँस। नैनन जल अंजन अंचलप्रति आवत अवधिकी आस॥ अब यह दशा प्रगटके तनुकी कहवी जाइ सुनाइ। सूरदास प्रभुसों कीबो जिहि वेगि मिलहि अब आइ॥१२॥राग गौरी॥हमारी ऊधो पीर न हरिबिन जाइ।

T

जो सोऊं तौ मोहिं हरि मिलैं ऊधो जागौं देइ अतिदाइ ॥ कमलनैन मधुपुरी सिधारे हमहुँ न संग लगाइ । अब यह व्यथा कौन बिधि भरिहैं कोऊ देइ बताइ ॥ उदमद यौवन आनि ठाढिकै कैसे रोको जाइ।सूरदास स्वामीके मिलिबे तनुकी तपत बुझाइ ॥ १३॥ राग मलार॥ गोपालहि वरिहोकी टेव। जानति नहीं कहांते सीखे चोरीके छल छेव ॥ तव कछु दूध दह्यो ले खाते करिरहती हौं कानि । कैसे सही परत अब मोपै मनमाणिककी हानि ॥ ऊधो नँदनंदनसों कहियो राजनीति समुझाइ । राजहुभए तजत नहिं लोभहि गुप्त नहीं यदुराइ ॥ बुद्धि विवेक अरु वचन चातुरी पहिले लई चुराई। सूरदास प्रभुके गुण ऐसे कासों कहिए जाई॥ १४॥ राग सारंग ॥ विसरत क्यों गिरिधरकी बातें। अवधि आश लगि रह्यो मधुप मन तजि न गयो घट तातें ॥ हरिके विरह छीनभई ऊधो दोउ दुखपरे सँघाते । तन रिपु काम चित्त रिपु लीला ज्ञानगम्य नाहिं याते ॥ श्रवण सुन्यो चाहत गुण हरिको जोवै कथा पुराते । लोचन रूप ध्यान धरयो निशिदिन कहो घटै को काते ॥ ज्यों नृप प्राणगए सुत अपने बिरचिं रह्यो जो जाते । सूर सुमति तोही पै उपजै हरि आवैं मथुराते ॥ १५ ॥ राग मलार॥ ऊधो कुलिश भई यह छाती । मेरे मन रसिक लग्यो नँदलालहि झपत रहत दिन राती ॥ तजि व्रज लोग पिता अरु जननी कंठ लाइ गए काती । ऐसे निठुर भए हरि हमको कबहुँ न पठई पाती ॥ पिय पिय कहत रहै जिय मेरो ह्वै चातककी जाती । सूरदास प्रभु प्राणहि राखहु होइ करि बूँद सेवाती॥ १६ ॥ राग गौरी ॥ हम तौ कान्हकेलिकी भूँखी। कहा करौं ले निर्गुण तुम्हरो विरहिनि विरह विदूखी ॥ कहिए कहा इहै नहिं जानत कहो योगही योग । पालागौं तुमसे अपने पुर वसत बापुरे लोग ॥ चंदन अभरन चीर चारु वरु नेकु आपु तनु कीजै ॥ दंड कमंडलु भस्म अधारी तौ युवतिन कहुँ दीजै । इहै देखि दृष्टि धौं गोपिन क्यों धौं दृढ व्रत पायो । सूरदास यदुनाथ मधुपको प्रेमहि पढन पठायो ॥ १७ ॥ राग गौरी ॥ तुमहिं मधुप गोपाल दुहाई।कबहुँक श्याम करत इहांको मन कैधौं चित सुध्यो विसराई ॥ हम अहीरि मतिहीन बावरी हटकतहू हठि करहिं मिताई । उइ नागर मथुरा निर्मोही अँग अँग भरे कपट चतुराई ॥ साँची कहहु देख श्रवणन सुख छाँडहु छिआ कुटिल दुचिताई । सूरदास प्रभु विरद लाज धरि मेटहु इहांके लोग हँसाई ॥ १८ ॥ उद्धव वचन ॥ राग बिहागरो॥ गोपी सुनहु हरि संदेश । कह्यो पूरण ब्रह्म ध्यावो त्रिगुण मिथ्या भेश ॥ मैं कहौं सो सत्य मानहु त्रिगुण डारौ नाप । पंचत्रिय गुण सकल देही जगत ऐसो भाप ॥ ज्ञान बिनु नर मुक्ति नाहीं यह विषै संसार । रूप रेख न नाम कुल गुण बरण अवर न सार॥मात पितु कोउ नाहिं नारि जगत मिथ्या लाइ । सूर सुख दुख नाहिं जाके भजो ताको जाइ॥ १९ राग सारंग॥ऐसी बात कहौ जिनि ऊधो।नँदनंदनकी कान करत न तो आवत आखर मुखते सूधो ॥ बात नहीं उडि जाहि और ज्यों त्यों हम नाहिन काची । मन क्रम वचन विशुद्ध एकमत कमलनैन रँगराची ॥ सो कछु जतन करौ पालागौं मिटै हृदयको शूल । मुरली धरे आनि दिखरावो बाढै प्रीति दुकूल ॥ इनही बातन भए श्याम तनु अजहुँ मिलावतहो गढि छोलि।सूर वचन सुनि रह्यो ठग्योसो बहुरि न आयो बोलि ॥ २० ॥ राग सोरठ॥ फिरि फिरि कहा बनावत बातैं । प्रातकाल उठि देखत ऊधो घर घर माखन खातैं॥जिनकी बात कहतहौ हमसों सोहैं हमसों दूरि । इहां न निकट यशोदा नंदन प्राण सजीवन मूरि ॥ बालक संग लिए दधि चोरत खात खवावत डोलत।सूर शीश नीच्यो क्यों नावत अब काहे नहिं बोलत॥ २१ ॥ राग सारंग॥ फिरि फिरि कहा सिखावत मौन । वचन दुसह लागत अलि तेरे ज्यों पजरे पर लोन ॥ सींगी मुद्रा भस्म अधारी अरु आराधन पौन । हम अबला अहीर शठ मधुकर धरि जानहिं कहि कौन ॥ यह मत

T

जाइ तिनहिं तुम सिखवहु जिनही यह मत सोहत। सूर आजलौं सुनी न देखी पोत पूतरी पोहत ॥ ॥२२॥ केदारो ॥ रहि रहि देख्यो तेरो ज्ञान। सुफलकसुत सर्वसु रस लैगयो तू करन आयो ज्ञान॥ वृथा कत अपलोकलावत कहत यह उपदेश। उरपिकीतर होहु जानिन कहत बैन वलेस॥ योगमत अति विशद कीरति होहि वाँछित काम। सदा तनु प्रताप भरेहैं वे पुरुष तुम धाम॥हम चरत कंज सुवास लै लै जीवति ऐसी रीति। कहत तिनसन धूम घोटहु नाहिं चाहत प्रीति॥ अजहुँ नाहिंन कहि सिरानो यह कथाको छेव।सूर धोखो तनकहै हम देखि लीन्ही सेव ॥२३॥ राग धनाश्री॥ ऊधोजी हमहि न योग सिखैए। जेहि उपदेश मिलै हरि हमको सो व्रत नेम बतैए॥ मुक्ति रहो घर बैठि आपने निर्गुण सुनत दुख पैए। जिहि शिर केश कुसुम भरि गूदे तेहि कैसे भसम चढ़ैए॥ जानि जानि सब मगन भएहैं आपुन आपु लखैए। सूरदास प्रभु सुनहु नवोनिधि बहुरि कि या व्रज अइए॥२४॥राग मलार॥हम तो तबहीं ते योग लियो।जबहींते मधुकर मधुवनको मोहन गवन कियो॥ रहित सनेह सरोरुह सबतन श्रीखँड भस्म चढाए। पहिरि मेखला चीर चिरातन पुनि पुनि फेरि सिआए॥ श्रुति ताटंक नैन मुद्रावलि औधि अधार अधारी। दरशन भिक्षा माँगत डोलत लोचन पत्र पसारी॥ बाँधो वेणु कंठ शृंगी पिय सुमिरि सुमिरि गुण गावत।कर वर बेंत दंड उर उर तन सुनत श्वान दुख धावत॥गोरख शब्द पुकारत आरत रस रसना अनुराग। भोग भुगति भूलेहु भावनाहिं भरी विरह वैराग॥ भूलीभई फिरति भ्रम श्रमके वन वीथिन दिन राति। वारक आवत कुटुंब यात्रा है सोऊ न सोहाति॥ परम गुरू रतिनाथ हाथ शिर दियो प्रेम उपदेश। चतुर चेटकी मथुरानाथसों कहियो जाइ आदेश॥ भोगीको देखहु या व्रजमें योग देन जेहि आए। देखी सिद्धि तिहारे सिद्धकी जिनि तुम इहां पठाए॥ सूर सुमति प्रभु तुमहिं लखायो हमरे सोई ध्यान। अलि चलि औरै ठौर देखावहु अपनो फोकट ज्ञान॥२५॥राग मलार॥ऊधो करि रहीं हम योग। कहा एतौ बाद ठानै देखि गोपी भोग॥ शीश सेली केश मुद्रा कनक बीरी बीर। विरह भस्म चढाइ बैठी सहज कंथा चीर॥ हृदय सींगी टेर मुरली नैन खप्पर हाथ। चाहते हरि दरश भिक्षा दई दीनानाथ॥ योगकी गति युक्ति हमपै सूर देखो जोइ। कहत हमको करन योग सो योग कैसो होइ॥२६॥ऊधो योग तबहिंते जान्यो। जादिनते सुफलकसुतके सँग रथ व्रजनाथ पलान्यो॥ तादि-नते सब छोह मोह गयो सुत पितु हेतु भुलान्यो। तजिमाया संसार तर्क जिय व्रज बनिता व्रत ठान्यो॥ नैन मूँदि सुख मौनरही धरि तनु तपतेज सुखान्यो। नँदनंदन मुरली मुखपर धरि उहै ध्यान उर आन्यो॥ सोइ रूप योगी जेहि भूले जो तुम योग बखान्यो। ब्रह्म उपाधि मुए ध्यान कर-तही अंत उनहिं पहिचान्यो॥ कहौ सुयोग कहाँलै कीजै निर्गुणही नहिं जान्यो। सूर उहै निज रूप श्यामको है मनमाहँ समान्यो॥२७॥ सारंग॥ ए अलि कहा योगमें नीको। तजि रसरीति नंदनंदनको सिखवत निर्गुण फीको॥देखति सुनति नाहिं कछु श्रवणनि ज्योति ज्योति करि धावति। सुंदर श्याम कृपालु दयानिधि कैसे हो विसरावति॥सुनि रसाल मुरलीकी सुर ध्वनि सुर मुनि कौतुक भूले। अपनो भुजा ग्रीव पर मेलो गोपिनके मन फूले॥लोककानि कुलके भ्रम छाँडि प्रभु सँग घर बन खेली। अब तुम सूर सिखावन आए योग जहरकी वेली॥२८॥ गौरी॥ ऊधो योग कहत हो कहा योग किये। श्याम सुंदर कमलनयन वसो मेरे जिये॥ योग युगति साधिकै जे तप योगिनि योग सिरायो। ताहूको फल सगुण मूरती प्रगटहि दरशन पायो॥ मकराकृत कुंडल छवि राजित लोल कपोलै। मोर मुकुट पीत वसन बाँसुरी करबोलै॥ ऐसे प्रभु गुणनिधान दरश देखि जीजै। राम श्याम निधि

पियूष नयनन भरि पीजै॥ जाको अयन जल मे तेहि अनल कैसे भावै। सूरज प्रभु गुणनिधान निर्गुण क्यों गावै॥२९॥ राग मलार॥ मधुकर श्याम हमारे ईश। तिनको ध्यान धरें निशिवासर औरहि नवै न शीश॥ योगिन जाइ योग उपदेशहु जिनके मन दश बीस। एकै चित एकै वह मूरति पलन लगे दिन तीस॥ काहेको निर्गुण ज्ञान गनत हो जित तित डारत खीस। सूर हृदय में बसत निरंतर त्रिभुवन पति जगदीस॥३०॥ राग सोरठ॥ योगकी गति सुनत मेरे अंग आगि बई। सुलगि सुलगि हम जरतिही तुम आनि फूँकि दई॥ भोग कुबिजा कूबरी सँग कौन बुद्धि भई। सिंह भष तजि चरत तिनुका सुनी बात नई॥ ध्यान धरत न टरत मूरति त्रिविध ताप तई। सूर हरिकी कृपा जापर सकल सिद्धिमई॥३१ राग मलार॥ मधुकर रह्यो योगलौं नातो। कतहिंबकत बेकाम काजबिन होहि न ह्यांते हातो॥ जब मिलि मिलि मधुपान कियोहो तब तू कहिधौं कहातो। अब आयो निर्गुण उपदेश नसों नाहिं हमहिं सुहातो॥ काचेगुण ज्यों तनुले वेधौ लै वारिजको ताते। मेरेजानि गह्यो चाहतहो फेरिकि मैगलमातो॥ यह लैदेहु सूरके प्रभुको आयो योग जहातो। जब चहिहै तब माँगिपठैहै जो कोउ आवत जातो॥३२ राग सारंग॥ ऊधो योग किधौं यह हाँसी। कीनी प्रीति हमारे व्रजसों दई प्रेमकी फाँसी॥ तुमहो बडे योगके पालक संगलिए कुबिजासी। सूरदास सोईपै जानैं जाउर लागै गाँसी॥३३॥ राग मारू॥ योग विधि मधुवन सिखिअहिजाइ॥ मन वच क्रम शपथ सुनि ऊधो संगहि चलौ लिवाइ॥ सब आसन रेचक अरु पूरक कुंभक सीखिपाइ। बिन गुरुनिकट संदेशन कैसे यह औगाह्यो जाइ॥ हम जो करत देखिहैं कुबिजहि तेई करब उपाइ। श्रद्धा सहित ध्यान एकहि सँग कहत जाउ यदुराइ॥ सूर सु प्रभुकी जापर रुचिहै सो हम करिहैं आइ। आज्ञा भंग करैं हम क्योंकर जो पतिव्रत न नशाइ॥ ३४॥ धनाश्री॥ योग सँदेशो व्रजमें लावत। थाके चरण तुम्हारे ऊधो बार बारके धावत॥ सुनिहै कथा कौन निर्गुणकी रचि पचि बात बनावत। सगुन सुमेर प्रगट देखियत तुम तृणकी ओट दुरावत॥ हम जानत परपंच श्यामके बात नहीं बौरावत। देखी सुनी न अबलगि कबहूं जल मथि माखन आवत॥ योगी योग अपार सिंधुमें ढूँढेहूं नहिं पावत। इहां हरि प्रगट प्रेम यशुमतिके ऊखल आप बँधावत॥ तुम चुपकारिरहौ ज्ञान ढाकि राखो कतहो विरह बढ़ावत। नंदकुमार कमलदल लोचन कहि को जाहि न भावत॥ काहेको विपरीत बात कहि सबके प्राण गँवावत। सोहं सकित सूर अबलनिको जिहि निगम नेति यश गावत॥ ३५॥ अथ मन अवस्थावर्णनं॥ राग मलार॥ मधुकर कहि कैसे मन मानै। जिनके एक अनन्य व्रत सूझै क्यों दूजो उर आनै॥ यहुतौ योग स्वाद अलि ऐसो पायसुधा खारिसानै। कैसे धौं यह बात पतिव्रत सुनि शठ पुरुष विरानै॥ जैसे मृगिअन ताकि बधिक दृग कर कोदंड गहि तानै॥ हिंसाकारि पोषत तन मन सुख शिर अपराध न आनै॥ बडे बिचित्र कुबिजाके रँगरंगे हम निर्गुण लिखि ठानै॥ सूर श्याम निर्गुण रति मानी मधुप प्राण जिनि छानै॥ ३६॥ राग मलार॥ कहांलौं राखैं हिय मनधीर। सुनहु मधुप अपने इन नैनन अनदेखे बलबीर॥ घर आँगन न सुहात रैनि दिन बिसरे भोजन नीर। दाहत देह चंद्र चंदनहै अरु वह मलय समीर॥ पुनि पुनि उहै सुरति आवति चित चितवत यमुनातीर। सूरदास कैसे बिसरतहै सुंदर श्याम शरीर॥३७॥ राग केदारो॥ बिनहरि क्यों राखैं मनधीर। एकबेर हरि दरश देखावहु सुंदर श्याम शरीर॥ तुम जो दयालु दयानिधि कहियत जानतहो परपीर। बिछुरे प्राण नाथ व्रज अबहीं कत हम कत यदुबीर॥ मत अपयश आनहु शिर अपने कठिन मदनकी पीर। सूरदास प्रभु मिलन कहत हैं रवितनयाके तीर॥३८॥ राग नट॥ मेरो मन अनत कहा सचुपावै। जैसे उडि जहा

T

जको पंछी उडि जहाज पर आवै॥जिहि मधुकर अमृत रस चाख्यो क्यों करीलफल भावै।सूरदास प्रभु कामधेनु तजि छेरी कौन दुहावै॥३९॥राग सारंग॥ मनतो मथुराही जो रह्यो। तबको गयो बहुरि नहिं आयो गहे गुपाल गह्यो॥ राख्यो रूप चुराइ निरंतर सों हरि शोधु लह्यो। आए और मिलावन ऊधो मनदै लेहु मरयो॥ निर्गुण साटि गुपालहि माँगत क्यों दुख जात सह्यो। यह तनु यहि आधार आजुलगि ऐसेही निबह्यो॥ सोई लेत छुडाइ सूर अब चाहत हृदय दह्यो॥४०॥ राग सारंग॥ कहा भयो हरि मथुरा गये। अब अलि हरि कैसे सुखपावत तनुदोउ भाँति भए॥ इहां अटक अति प्रेम पुरातन वहां अति नेह नए। उहां सुनियत नृप भेष इहां दिन देखिअत वेणु लए॥ कहा हाथ परयो शठ अक्रूरके यह ठग ठाटठए। अब क्यों कान्ह रहत गोकुल बिन योगनके सिखए॥ राजा राज्य करौ गृह अपने माथे छत्र दए। चिरंजीव रहौ सूर नंदसुत जीजत सुख चितए॥४१॥अपनीसी कठिन करत मन निशिदिन। कहि कहि कथा मधुप समुझावत तदपि न रहत नंद नंदनबिन॥ श्रवणसँदेश नयन बरषत जल मुख बतियां कछु और चलावत। अनेकभाँति चित धरति निठु-रता सबतजि सुरति उहै जिय आवत॥ कोटिस्वर्ग सम सुखउ न मानत हरि समीप समता नाहिं पावत। थकित सिंधु नौकाके खग ज्यों फिरि फिरि फेरि वहै गुणगावत॥ जेजे बात विचारत अंतर तेइ तेइ अधिक अनल उर दाहत। सूरदास परिहरि न सकत तन वारक बहुरि मिलै है चाहत॥४२॥मधुकर ह्यां नाहिंन मन मेरो।गयो जु संग नंदनंदनके बहुरि न कीन्हौं फेरो॥ उन नैनन मुसकानि मोललै कियो परायो चेरो। जाके हाथ परयो ताहीको बिसरयो वास बसेरो। को सीखै ता बिनु सुन सूरज योगजकाहू केरो। मंदो परयो सिखाउ अनतलै यहि निर्गुण मत तेरो॥४३॥ मुक्तिआनि मंदेमो मेली। समुझि सगुन लै चले न ऊधो यह तुमपै सब पुजी अकेली॥ कै लैजाहु अनतही बेचो कै लैराख जहाँ विषवेली। याहि लागि को मरै हमारे वृंदाबन चरणनसों ठेली॥ घरे शीश घर घर डोलतहौ एकै मति सब भई सहेली। सूरदास गिरिधरन छबीलो जिनकी भुजा कंठ गहि खेली॥४४॥ ऊधो मनतौ एकै आहि। लै हरिसंग सिधारे ऊधो योग सिखावत काहि॥सुनि शठनीति प्रसून रस लंपट अबलनिको घांचाहि। अब काहेको लोन लगावत विरह अनलके दाहि॥ परमारथ उपचार कहतहो विरह व्यथाहै जाहि। जाको राजरोग कफ बाढत दह्यो खवावत ताहि॥ अबलगि अवधि अलंबन करि करि राख्यो मनहि सवाहि।सूरदास या निर्गुण सिंधुहि कौन सकै अव-गाहि॥४५॥ऊधो मन न भए दशबीस।एक हुतोसो गयो श्यामसँग को अवराधे ईश॥ इंद्री सिथिल भई केशोबिन ज्यों देही बिन शीश। आशा लगी रहत तनु श्वासा जीजो कोटि वरीस॥ तुमतौ सखा श्याम सुंदरके सकल योगके ईश।सूरदास वा रसकी महिमा जो पूँछै जगदीश॥४६॥ ऊधो जो मन होत वियो। तो तुम्हरे निर्गुण को दीजै सो विधना न दियो॥ एक जु हुतो मदन मोहनकी सो छबि छीनि लयो॥ अब वा रूपराशि बिनु मधुकर कैसे परतु जियो। जो तुम कह्यो सोई शिर ऊपर सूर श्याम पठयो। नाहिन मीन जीवत जल वाहर जो घृत मैं सजियो॥४७॥ ऊधो यह मन और न होई। पहिलेही चढि रह्यो श्यामरँग छूटत नहिं देख्यो धोई॥ कै तुम बचन बडे अलि हमसों सोई कह जो मूल। करतकेलि वृंदाबन कुंजन वा यमुनाके कूल॥ योग हमहिं ऐसो लागत ज्यों तो चंपेको फूल। अब क्यों मिटत हाथकी रेखें कहौ कौन विधि कीजै। सूर श्याम मुख आनि देखावहु जेहि देखे दिन जीजै॥४८॥ मधुकर मो मन अधिक कठोर। बिगसि न गए कुंभ काचे जौं बिछुरत नंद किशोर॥ प्रेम बनिज कीन्हों हुतो नेह नफा जियजानि। ऊधो अब उलटी भई प्राण पूजि मैं हानि॥

जो हम प्रीति रीति नाहिं जानति तौ ब्रजराज तजी । हमरे प्रेम नेमकी ऊधो मिलि रसरीति लजी ॥ हमते भली जलचरी बपुरी अपनो नेम निबाह्यो ॥ जलते बिछुरि तुरत तनु त्याग्यो तउ कुल जलको चाह्यो ॥ अचरज एक भयो सुन ऊधो जल बिन मीन रह्यो । सूरदास प्रभु अवधि आश लगि मन विश्वास गह्यो ॥ ४९ ॥ राग मलार ॥ मधुकर ए मन बिगरि परे । समुझत नहीं ज्ञानगीताको हरि मुसुकानि अरे ॥ हरिपद कमल बिसारत नाहिंन शीतल उर सचरे । योग गँभीर अंध कूपनसों ताहि जु देखि डरे ॥ बालमुकुंद रूप रसराते ताते वक्र परे । सूधे न होहिं श्वान पूँछ ज्यों कोटिक वेद मरे ॥ हरि अनुराग सुहाग भरि अमीके गागर रे । सूरदास प्रभु ऐसी रहनदे कान्ह वियोग भरे ॥ ५० ॥ इहि उर माखन चोर गडे । अब कैसे निकसत सुनु ऊधो तिरछे है जो अडे ॥ यदपि अहीर यशोदानंदन कैसे जात छडे । वहां यादवपति प्रभु कहियत है हमें न लगत बडे ॥ को वसुदेव देवकीनंदन को जानै को बूझै । सूर नंद नंदनको देखति और न कोई सूझै ॥ ५१ ॥ राग केदारो ॥ मनमें रह्यो नाहिंन ठौर । श्रीनँदनंदन अछत कैसे आनिये उर और ॥ चलत चितवत द्योस जागत सपने सोवत राति । हृदयतें वह मदन मूरति छिन न इत उत जाति ॥ कहत कथा अनेक ऊधो लोग लोभ दिखाइ । कहाकरौं मन प्रेमपूरण घट न सिंधु समाइ ॥ श्यामगात सरोज आनन ललित गति मृदुहास । सूर इनके दरशको बल मरत लोचन प्यास ॥ ५२ ॥ राग सारंग ॥ मधुकर श्याम हमारे चोर । मन हरिलियो तनक चितवनिमें चपल नैनकी कोर ॥ पकरे हुते और उर अंतर प्रेम प्रीतिके जोर । गए छँडाइ तोरि सब बंधन देगये हँसनि अकोर ॥ औझकि परी रैनि सो बीती दूत मिल्यो मोहिं भोर । सूरदास प्रभु सर्वसु लूट्यो नागर नवल किशोर ॥ ५३ ॥ अली अब ब्रजनाथ कछू करौ । जा कारण ये देहधरी है तिहिके लेखे परौ ॥ प्रथमहि अर्पिदियो हम सर्वसु ए बिरहिनि योंही जरौ ॥ कोटि मुक्तवारौं मुसकनि पर योग बापुरो सरौ ॥ सूर सगुन बाँटि दियो गोकुलमें अब निर्गुणको वोसरो ॥ ताकी छटा छार कंठहरिया जो ब्रजजानों दूसरो ॥ ॥ ५४ ॥ ऊधो भलीकरी गोपाल । आपुनपै हरि आवत नाहीं बिरमि रहे यहि काल ॥ चंदन चंदहुते तब शीतल कोकिल शब्द रसाल । अब समीर पावक सम लागत सब ब्रज उलटी चाल ॥ हार चीर कंकन कंटक भए तरनि तिलक भए भाल । सेज सिंधु ग्रह निमिर कंदरा सर्प सुमन भए माल ॥ हमतो न्याय इतौ दुखपावैं ब्रजवसि गोपी ग्वाल । सूरदास स्वामी सुखसागर भोगी भँवर मृणाल ॥ ५५ ॥ मलार ॥ हमको इती कहा गोपाल । नंदकुमार कमलदल लोचन सुंदर बाहु विशाल ॥ इक ऐसीही विरहरही लटि बिन घनश्याम तमाल । तापर अलि पठएहैं सिखवन अबलन उलटी चाल ॥ लोचन मूँदि ध्यान चित चितवनि धरि आसन मृगछाल । वौसहि जाइ जरे पर चूनो दूनो दुख तिहि काल ॥ डारि न दिए कमल करते गिरि दबि रहती ब्रजवाल । सूर श्याम अब यह न बूझिए बिछुरि करी बेहाल ॥ ५६ ॥ जब वह सुरति होतिहै बात । सुनो मधुप यां वेदनकी रति मन जानै के गात ॥ रहत नहीं अंतर अति राखे कहत नहीं कहिजात । भई रीति हठि उरग छछूँदरि छाँडे बने न खात ॥ एकहि भाँति सदा या ब्रजमें बीततहै दिन रात । सूरदास प्रभुके मिलि बिछुरन समुझि समुझि पछितात ॥ ५७ ॥ सारंग ॥ यह बात हमारी कौन सुनै । जिन चाह्यो हरि रूप सुरति करि भूलि अँगारानि को चुनै ॥ इहां सेवनको ठौर न देखति ताते सुनि मनमें गुनै । कैमुक विरह बयार पैनकी बैठे ठानै को धुनै ॥ तब उन भाँतिन लाड लडाए अब बूझिए न ग्रह उनै । बालि छाँडिके सूर हमारे अब नरवाई को लुनै ॥ ५८ ॥ ऊधो कहिए कादि सुनाइ ।

हरि बिछुरे हम जिती सहतहैं तिते बिरहके घाइ ॥ वरु माधो मधुबनहीं रहते कत यशुमतिके आए। कत प्रभु गोपवेष ब्रज धार्‍यो कत ए सुख उपजाए ॥ कत गिरि धर्‍यो इंद्र प्रण मेट्यो कत वनराशि बनाए। अब कह निठुर भए अबलनिपर लिखि लिखि योग पठाए ॥ तुम परबीन सबै जानतहौ ताते यह कहि आई। आपन कौम चलावै सूर जिन मात पिता बिसराई ॥५९ राग नट॥ ऊधो बात कही नहिं जाइ। मदनगोपाल लालके बिछुरे प्राण रहे मुरझाइ ॥ जब स्यंदन चढि गमन कियो हरि फिरि चितए गोपाल। तबहीं परम कृतज्ञ सबै सुठि संग लगीं ब्रजबाल ॥ अब यह और सृष्टि बिरहनकी बकत बाइ बौरानी। तिनसों कहाहोत फिरि उत्तर तुमहो पूरण ज्ञानी ॥ अब सो साधन घटका कीजै को उपजै परतीति। सूरदास कछु वरणि न आवै कठिन विरहकी रीति ॥ ६० ॥ राग सारंग ॥ मधुकर जो तू हितू हमारो। पिवहि नरे यह वदन सुधारस छाँडि योग जलखारो ॥ सुन शठ नीति सुरभि पय दायक क्यों वलेति हल भारो। जे भय भीत होहिं शृंग देखे क्यों व छुवहि अहि कारो ॥ निजकृत समुझि वेणु दशनन हति धाम सजत नाहिं हारो। तावल अछत निशा पंकज भ्रम दल कपाट नाहिं टारो ॥ रे अलि चपल मूढ रस लंपट कतहि बकत बेकाज।सूर श्याम छबि क्यों बिछुराति है नख शिख अंग विराज ॥६१ राग बिलावल॥ तुम्हारी प्रीति ऊधो पूरब जनमकी अब जु भए मेरे तनहुके गरजी। बहुत दिनन विरमि रहे हौ संगते बिछोहि हमहिं गए बरजी ॥ जादिनते तुम प्रीति करीही घटति न बढ़ति तूलि लेहु नरजी। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिना तनु भयो व्योंत विरह भयो दरजी॥६२॥राग सारंग॥हमहिं बोल बोले की परतीति। सुनु ऊधो हम नाहिंन जानत तुम्हरे गाँवकी रीति। हमरे प्रीतम तुम जो लैगये आवन कह्यो रिपु जीति। तुम्हारी बोलनि कौन पतीजै ज्यों भुसपरकी भीति ॥ आवन अवधि बदी हरि हमसों सोऊ दिन गए बीति। सूरदास प्रभु मिलहु कृपाकरि सुमिरि पुरातन प्रीति ॥ ६३ ॥ ॥राग सारंग॥ ऊधो जो तुम हमहिं सुनायो।सो हम निपट कठिनई हठ करि या मनको समुझायो ॥ युक्ति जतन जीति योग अंगहू गहि अपथ पंथलै आयो। भटकि भ्रम्यो वोहित के खग ज्यों पुनि पुनि हरि जीपै आयो ॥ हमको सबै अहित लागत है तुम अतिहितहि जनायो। सर सरिता जल होम किएते कहा अग्नि सचुपायो ॥ अब सोई उपाउ उपदेशो जिहि जिय जाइ जिवायो। वारक मिले सूरके स्वामी कीजहु अपनो भायो ॥ ६४ ॥ राग मलार ॥ ऊधो हरि कहिये प्रतिपालक। जे रिपु तुम पहि-ले इति छाँडे बहुरि भए मम शालक ॥ अघ बक वकी तृणावर्त केशी ए सब मिलि ब्रज घेरत। सूनो जानि नंदनंदन बिनु वैर आपनो फेरत ॥ अरु अपने परिहास मेटनको इन्द्र रह्यो करि घात। सत्वर सूर सहाय करै को रही छिनककी वात ॥ ६५ ॥ राग कल्याण ॥ ऊधो तुम जानत गुप्त हि यारी। सबकाहूके मनकी बूझो बांधो मूढ फिरो ढिग वारी ॥ पीत ध्वजा उनकी मन रंजन लाल ध्वजा कुबिजा विविचारी। यशकी ध्वजा श्वेत ब्रजबाँधे अपयशकी ऊधो पै कारी॥ वैतो प्रेम पुंज,मनरंजन हमतो शीश योग व्रतधारी। सूर शपथ मिथ्या लँगराई ए बातैं ऊधो की प्यारी ॥६६॥ ॥राग मलार॥ श्याम अब न हमारे। मथुरागए पलटिसे लीन्हें माधो मधुप तुम्हारे ॥ अब मोहिं आ-वत पतु पछतावो कैसे वै गुण जात विसारे। कपटी कुटिल काग अरु कोकिल अंत भए उडि न्यारे ॥ करि करि मोह मगन ब्रजवासी प्रेम प्रतीति प्राण धन वारे। सूर श्यामको कौन पत्यैहै कुटिलगात तनु कारे ॥ ६७ ॥ अथ श्यामरंग तर्क वदति ॥ राग धनाश्री ॥ मधुकर कहा कारेकी न्याति। ज्यों जल मीन कमल मधुपनको छिन नहिं प्रीति खटाति ॥ कोकिल

कपट कुटिल वायस छालि फिरि नहिं वह बन जाति। तैसेही रसकेलि रस अचयो बैठि एकही पाँति ॥ सुत हित- योग यज्ञव्रत कीजतु बहुविधि नीकी भाँति। देखहु अहि मन मोह मयातजि ज्यों जननी जनि खाति ॥ तिनको क्यों मन विषयमें कीजै अवगुणलौं सुखसाति। तैसे सूर सुने यदुनंदन बजी एकरस तांति ॥ ६८ ॥ राग धनाश्री ॥ श्याम सखी कारेहु में कारे। तिनसों प्रीति कहाकहि कीजै मारग छाँडि सिधारे ॥ लोक चतुर्दश विभव कहतहै पढ़ुहि पत्र जल न्यारे। सर- वर त्यागि विहंग उडे ज्यों फिरि पाछे न निहारे ॥ तव चितचोर भोर ब्रजवासिन प्रेम नेम व्रत टारे। लै सर बसनहि मिले सूरप्रभु कहिअत कुलट विचारे ॥ ६९ ॥ राग नट ॥ ऐसे नंदराइके वारे। इतनिन जनि पतियाहु सखी री जितनेहैं तनुकारे ॥ खेलत रंग संग वृंदावन निमिष न होत निनारे। पहिले सुख दारुणभए हमको देइ जग ए दुखभारे ॥ उर ऊपर भीजत सारंग रिपु नैन नीर बहु ढारे। सूरदास प्रभु बेगि मिलहु किम टरत नहीं गुण टारे ॥७०॥ राग सारंग ॥ मधुकर यह कारेकी रीति। मनदे हरत परायो सरवस करे कपटकी प्रीति ॥ ज्यों षटपद अंबुजके दलमें बसत निशारतिमानि। दिनकर उए अनत उडिबैठे फिरि न करत पहिचानि ॥ भवन भुजंग पिटारे पाल्यो ज्यों जननी जियतात। कुल करतूति जाति नाहिं कबहूँ सहज सु डसि भजिजात ॥ कोकिल काग कुरंग श्याम घन हमहिं न देखे भावै। सूरदास अनुहारि श्यामकी छिनु छिनु सुरति करावै ॥ ७१ ॥ राग मलार ॥ मधुकर देखि श्यामतनु तेरो। या मुखकी सुनि मीठी बातैं डरपतुहै मनमेरो ॥ कतए चरण छुअत रसलंपट बरजतही बेकाज। परसत गात स्रवत कुच कुंकुम यहउ करी कछुलाज ॥ बुधि विवेक बल वचन चातुरी सरबस चितै चुरायो। ऐसो धौं उन कहा बिचारो जालगि तू ब्रजआयो ॥ अब कहि कहि आशा गावतहो हम आगे ए गीत। सूर इते परि द्वार कहांहै जो परि त्रिगुण अतीत॥७२राग मलार॥ मधुप तुम दिखियतहो अतिकारे। कालिंदीतट पार बसतहो सुनियत श्याम सखारे ॥ मधुकर चिकुर भुअंग कोकिला अवधि नहीं दिन टारे। वै अपने सुखहीके राते जियत उहै उनिहारे ॥ कपटी कुटिल निठुर निर्मोही दुखदै दूरि सिधारे। बारक बहुरि कबहुँ आवहुगे नैननि साधनि वारे ॥ उनकी सुनै सु आपु बिगोवै चितचोरत बटपारे। सूरदास प्रभु क्यों मनमानै सेवक करत ननारे ॥७३॥ सारंग ॥ भूलतहौ कत मीठी बातनि। एतो अलि उनहीके संगी चंचल चित्त साँवरे गातनि॥ वै मुरली ध्वनि जगमन मोहत इनकी गुंज सुमन मधुपातनि। ए षटपद वै द्वैपद चतुर्भुज काहूभाँ ति भेदनहिं भ्रातनि ॥ वै नव निशि मानिनि गृहवासी ए अब शतनिशि नवजल जातनि। वै उठि प्रात अनत मन रंजत ए उडिकरत अनत रसरातनि ॥ स्वारथी निपुण सब रस भोगी जिनि पतिआहु विरह दुख दातनि। वे माधव ए मधुप सूर कहि दुहुँमें नहिंन कोउ घटि घातनि ॥ ७४ ॥ राग मलार ॥ बिलग मतिमानो ऊधो प्यारे। वह मथुरा काजरकी उबरी जे आवैं ते कारे ॥ तुम कारे सुफलकसुत कारे कारे मधुप भवारे। तिनहूँमांझ अधिक छवि उपजत कमलनैन मणिपारे। मानो नीलमांटमें बोरे लै यमुना जु पखारे। तागुण श्याम भई का- लिंदी सूर श्याम गुण न्यारे ॥ ७५ ॥ ऊधो तुम सब साथी भोरे। मेरे कहे बिलगु मानहुगे कोटि कुटिल लै जोरे ॥ वै अक्रूर क्रूर कृत जिनके रीते भरे भरे गहि ढोरे। आपुन श्याम श्याम अंतर मन श्यामकाममें बोरे ॥ तुम मधुकर निर्गुण निज नीकेंदेखे फटकि पछोरे। सूरदास कारणके संगी कहा पाइयत गोरे ॥ ७६ ॥ राग भूपाली ॥ ऊधो हम दूबरी वियोग। प्रीतम हुते सोउ गए मधुबन रहे बटाऊ लोग ॥ जो तुम बूझो व्यथा हमारी कहे बनै तुम आगे। देह बिहार शृंगार न भावै मन तरसै

हरि काजै ॥ कारीघटा देखि अँधियारी सारंग शब्द न भावै । दिवस रैनि मोहिं बिरह सतावै कब गोपाल घरआवै । सूरदास स्वामी मनमोहन अब करि गए अनाथ । मन क्रम बचन वहांई बसतहैं जहां बसत यदुनाथ॥७७॥राग सोरठ॥ ऊधो यह हरि कहा करचो । राजकाज चित दियो साँवरे गोकुल क्यों बिसरचो ॥ कत गिरिधरचो इंद्र मद मेटचो कत वै सुख उपजाए । अब कह निठुर भए अबलनि पर लिखि लिखि योग पठाये ॥ परमप्रबीन सकल बिधि सुंदर ताते यह कहिआवत । हमरी कहा चलै सुन सूरज मात पिता बिसरावत ॥ ७८ ॥ राग नट ॥ यदपि मैं बहुतै यतन करे । तदपि मधुप हरि प्रिया जानिकै काहु न प्राण हरे ॥ सौरभ युत सुमनन लै निजकर संतत सेज धरे । सन्मुख सहति दरश शशि सजनी तिहिहुँ न अंग जरे ॥ मधुकर मोर कोकिला चातक सुनि सुनि श्रवण भरे । सादर ह्वै निरखति रतिपति दृग नेक न पलक परे ॥ निशिदिन रटत नंदनंदनको उरते छिन न टरे । अति आतुर गुणसहित चमू सजि अंगन सरस चिरे ॥ जानत नहीं कौन गुण यहितन जाते सब बिडरे । सूरदास सकुचन श्रीपतिकी सुभटन बल बिसरे॥७९॥राग केदारो॥जिहि दिन तजीं ब्रजकी भीर।कहो ए अलि लेखि तुमसों सखा सुंदर धीर ॥ काम नृप शशि नेव अबलनि दूत दुर्ग समीर । सजै सेना बिपुल बादर बदत बंदीकीर ॥ लता लघु जनु कुसुम कर सर कली कोटि तुणीर । बरुनबान वसंत करले बधतहै आमीर ॥ मध्य द्रुमहै फूल मानो कवच कंचन चीर ॥ करि कुंभ कुंजर बिटप भारी चमर चारु मयीर । चमू चंचल चंचल नाहिंन रहीहै पुर तीर ॥ समर मारुहु कीटकी रट सहत त्रिय आधीर । जन्म जातक व्याध व्यापक कहो कासों पीर ॥ सूर रसिक शिरोमणिहि बिन जलत यमुना नीर ॥ ८० ॥ राग कान्हरो॥हरि बिछुरनकी शूल न जाई । बलि बलि जाउं मुखारबिंदकी वह मूरति चित रही समाई॥ एक समय वृंदावन महियां गहि अंचल मेरी लाज छिडाई । कबहुँक रहसि देत आलिंगन कबहुँक दौरि बहोरत गाई ॥ वै दिन ऊधो बिसरत नाहीं अंबर हरे यमुनतट जाई । सूरदास स्वामी गुण सागर सुमिरि सुमिरि राधे पछिताई ॥ ८१ ॥ राग नट ॥ मोहन माँग्यो अपनो रूप । यह ब्रज बसत अचै तुम बैठी ताबिन उहां निरूप ॥ मेरोमन मेरो अलि लोचन लै जु गये धुपि धूप । हमसों बदलो लेन उठिधाए मनो धारिकर सूप ॥ अपनो काज सँवार सूर सुनि हमहिं बतावत कूप । लेवा देइ धराधर में है कौन रंक को भूप ॥ ८२ ॥ राग सारंग ॥ पठवत योग कछू जिय लाजन । तब ज्यों जतन तंत्र भृग मोहत अब कपटरूपकी बाजन ॥ जिय गहि लई क्रूरके सिखए मोह होत कहुँ राजन । सब सुधि परी बचन कन ढोए ढके रह्यो सुखभाजन ॥ यह नृपनीति रह्यो कौनेहु युग नेह होत जस आनन । ताहू तजी सुरति नहिं आवति दुखपाए जन माजन ॥ करि दासी दुलहिनि भयो दूलह फिरत व्याहके साजन।सूर बडे ध्रुव भूप कंस हते वा कुबिजाके काजन॥८३॥ ॥ राग मलार ॥ संदेशनि विरह व्यथा क्यों जाति । जबते दृष्टिपरी वह मूरति कमल वदनकी कांति ॥ अवतो जिय ऐसी बनिआई कहो कोउ केहु भाँति । जोइ वह कहै सोई सो सुनो सखीं युगवर रैनि विहाति ॥ जौलौं न भेंटौं भुजभरि हरिको उर कंचुकी न सोहाति । सूरदास प्रभु कमलनयन बिनु तलफति अरु अकुलाति ॥ ८४ ॥ राग मलार॥ संदेशनि क्यों निघटति दिन राति।कबहुँक श्याम कमलदल लोचन कब मिलिहैं उहि भाँति ॥ खंजरीट मृग मीन सबै मिलि उपमाको अकुलाति । बार बार मैं बरजति ग्वालनि अपने मारग जाति ॥ सहस भाँति अर्पितकी रन सव एकौ चित न समात । सूरदास प्रभु संततहितते कहे सुनत नहिं बात ॥८५॥ गोपालहि लै आवहु मनाइ । अबकी

बेर कैसेहु करि ऊधो करि छल बल गहिपाइ ॥ दीजो उनहि सु सारि उरहनो संधि संधि समुझाइ । जिनहिं छाँडि वटिआ महँ आए ते बिकल भए यदुराइ ॥ तुमसों कहा कहोंहों मधुकर वातैं बहुत बनाइ । बहियां पकरि सूरके प्रभुकी नंदकी सौंह दिवाइ ॥ ८६ ॥ केदारो॥ ऊधो श्याम इहां लै आवहु । ब्रजजन चातक मरत पियासे स्वाति बूँद बरषावहु ॥ इहाँते जाहु विलंब करहु जिनि हमरी दशा जनावहु । घोपसरोज भए हैं संपुट होइ दिनमणि विगसावहु ॥ जो ऊधो हरि इहां न आवहिं तौ हमैं वहाँ बुलावहु । सूरदास प्रभु हमहिं मिलावहु तब तिहुँ पुर यश पावहु ॥ ८७ ॥ कहहु कहा हमते बिगरी । कौने न्याइ योग लिखि पठए हम सेवा कछु ऐ न करी ॥ पाखंड प्रीति करी नँद नंदन अवधि अधार हुतीसो टरी॥मुद्रा जटा ऊधो लै आए ब्रजवनिता पहिरो सगरी ॥ जाति स्वभाउ मिटै नहिं सजनी अंतत उबरी कुबरी । सूरदास प्रभु वेगि मिलहु किनि नातरु प्राण जात निकरी ॥ ॥८८॥ केदारो ॥ बिरही क्हालौं आपु सँभारे । जवते गंग परी हरि पगते बहिवो नहीं निवारे ॥ नैननते बिछुरी भौंहैं भ्रम शाशि अजहूँ तनु गारे । रोमते बिछुरी कमल कंठ भए सिंधुभए जरि छारे ॥ बैनते बिछुरी विधि अवधि भई वेदहिको निरवारे । सूरदास जाके सब अंग बिछुरे केहि विधा उपचारे॥८९॥ राग मलार॥ बहुत दिन गए माई हरि दरशन विनु देखे । गनतहि गनत गई सुनि सजनी कर अँगुरिनकी रेखे ॥ अब इहि विरह अगर जो करी हम विसरी नैन निमेषे । होड परति सुनि सूरदास जानि पारहु उनहींके लेखे ॥९०॥ राग धनाश्री॥ ऊधो भली भई अब आए । विधि कुलालकीने काचे घट ते तुम आनि पकाए ॥ रँगदीनो हो काम श्याम लै अँग अँग चित्र बनाए । याते गरे न नैन मेह ते अवधि अटापर छाए ॥ ब्रजकरि अंवा योगईधन सम सुरति आगि सुलगाए ॥ फूंक उसाँस बिरह पर जारनि संग ध्यान दर शाशि अराए ॥ भरे सँपूरण कलश प्रेम जल छुअन न काहू पाए । राजकाजते गए सूर प्रभु नँदनंदन करलाए ॥९१॥ राग मलार॥ ऊधो भली करी इहां आए । तुम देखे जनु माधो देखे दुख त्रय ताप नशाए ॥ नंद यशोदाको नातो न छूटत वेद पुराणन गाए । हम अहीरि तू अहीर लाख दश का भयो निर्गुण गाए ॥ तव यहि वोप खेलावहु खेलहु ऊखल भुजा बँधाए । सूरदास प्रभु इहै शूल जिअ बहुरि न दरशन देखाए ॥ ९२ ॥ मधुकर कहि मधुवनकी रीति । राजाहिं यदुनाथ तिहारे कहा चलावत नीति ॥ निशिलों करत दाह दिनकर ज्यों हुतो सदा शशिशीति । पूरव पवन कहो नहिं मानत गयो सहज वपु जीति ॥ कंसुकाज कुबिजाके मारयो भई निरंतर प्रीति । सूर विरह ब्रज भलो न लागत जहीं व्याहु तहीं गीति॥९३॥ राग केदारो॥ हरि विनु नाहिंन परत रहो । उत गिरि दुर्गम इतहि दव दारुण क्यों दुख जात सहो ॥ उठत विरह धूम पावक जरि बरि बाउ वहो । हरि नागरि फिरि फूंक प्रजारनि पलकनि हृदय दहो ॥ यद्यपि घृत लै आयो ऊधो योग सँदेश कहो । तद्यपि भस्म न होत सूर सुनि चलत गुपाल चहो॥९४॥ राग मलार॥ माधोजी नेक देखाई देहु । जो यातनमें ताके बदले जो चाहो सो लेहु॥ भूली फिरत ठगीसी तवते विनु बलमति गुण गेहु । जवते इन अपराधी नयनन वरजत कियो सनेहु ॥ कहियो जाइ मधुप पालागों विरह कियो तनु गेह । रहत आश सुनि सूर दरशके निशिदिन इहै सँदेहु॥९५॥ गौरी ॥ यहि ब्रज होइहै कब हरिको आवन । नीकेकै वचन सुनाउ मधुप मोहिं विरह व्यथा बिसरावन ॥ हों इहवात कहा जानों प्रभु जात मधुपुरी छावन । अपनी चूक मानि उर अंतर अब लागी दुखपावन ॥ अहनिशि सूरज वरी भईहो तनु श्वासै शाशी तावन । या ब्रज करपि अग्नि उर ऊपर रहो दुसह वन सावन ॥९६॥ सारंग॥ ऊधो जो हरि आवें तो प्राणरहे । आवत जात उलटि फिरि बैठत जीवत औधि गहे ॥

T

जब उइ दामन ऊखल बाँधे वदन नवाइ रहे।चुभि जु रही नवनीत चोर छबि क्यों भूलति ज्ञानकहे॥ तिनसों ऐसी क्यों कहि आवति जो कुल त्रास सहै। सूर श्याम गुणरसनिधि तजिकै क्यों घटि नीर बहै॥९७॥ उद्धववचन॥ राग नट॥ जबलगि ज्ञान हृदय नहिं आवै।तौ लगि कोटि जतन करै कोऊ बिन विवेक नहिं पावै॥ विना विचार सबै सुपनेसों मैं देख्यों सो जोई। नाना दारु बसैं ज्यों पावक प्रगट मथेते होई॥ तुम इक कहत सकल घटै व्यापक अरु सबहीते नीरे। नख शिखलौं तनु जरत निशादिन निकसि करत किन सीरे॥ बातैं कहत सबै सांचीसी सुँहमें लेहो तुरसी। सूर सो औषध हमहिं बतावत ज्यों पितज्वर पर गुरसी॥९८॥ गोपीवचन॥ राग सारंग॥ तुम जो कहत हरि हृदय रहत हैं। कैसे होइ प्रतीत मधुप सुनि ए इतनी जु सुनतहैं॥ बासर रैनिं कठिन बिरहागिन अंतर प्राण दहत हैं। प्रजरि प्रजरि मनु निकसि धूम अति नैनन नीर बहतहैं॥ कठिन अवज्ञा होत देह दुख मर्यादा न गहतहैं। कहे व क्यों मानै मन सूरज ए बातैं जु कहतहैं॥९९॥ राग सारंग॥ जोपै हृदय माँझ हरी। तोपै इती अवज्ञा उनपै कैसे सही परी॥ तब दावानल दहन न पायो अब यहि बिरह जरी। उरते निकसिं नंद नंदन हम शीतल क्यों न करी॥ दिनप्रति इंद्रनैन जल बरषत घटत न एक घरी।अतिही शीत भीत भीजत तनु गिरि कर क्यों न धरी॥ कर कंकन दर्पण लै देखो इहि अति अनख मरी। क्यों जीवहिं सुयोग सुनि सूरज बिरहिनि बिरह भरी॥३२००॥ राग सारंग॥ तुम घटही मो श्याम वताए। लीजै सँभारि सकल सुख अपने रास रंग जे पाए॥ जो समदृष्टि आदि निर्गुण पद तौ कत चित्त चोराए। मोहन वदन बिलोकि मानि रुचि हँसि हरि कंठ लगाए॥ हम मतिहीन अजान अल्प मति तुम अनभौ पद ल्याए। सूरदास तेहि बनिज कवन गुण मूलहु माँझ गवाँए॥ १॥ राग सारंग॥ इनि बातनके मारे मरियत। निर्गुण ज्ञान मधुपलै आए बिनि गोपाल कैसे निशि तरियत॥ सबै अटपटी कहेर मधुकर सुनि देखी मधुवनकी रीति। कौन हाल हमरे व्रजबनितन जानत नहीं बिरहकी रीति॥ बुझी अगिनि बहुरौ सुलगाई अंतर्गति बिरहानल जारत। सूरदास स्वामी सुखसागर मिलि काहेन तनु ताप निवारत॥ २॥ राग नट॥ बातैं कहत बनाइ बनाइ। रंचक बिरह हुते यह गोकुल मधुकर मेट्यो आइ॥ कमलनैनकी मोहन लीला रहति रहीं गुण गाइ। वोछी पूँजी हरै ज्यों तस्कर रंक मरै पछिताइ॥ भली करी हमको लै आए पठये योग सिखाइ। सूरदास स्वामी यह घाली निर्गुण कथा सुनाइ॥ ३॥ राग केदारो॥ ऐसो योग न हमपै होई। सुनिकै वचन तुम्हारो ऊधो नैना आवत रोई॥ कुटिल कुंतल मुकुट कुंडल रही छवि छवि पोई॥ सूर प्रभु बिन प्राण रहै नहिं कोटि करै किन कोई॥ ४॥ राग सारंग॥ मधुकर कह्यो संदेश सिधारो। बिनु उपदेश सहजही योगी सुधरि रह्यो व्रजसारो॥ जाको ध्यान धरत गौरी पति योग युक्ति करिहारो। सो हरि बसत सदा हृदयमें नेक टरत नहिं टारो॥ इह उपदेश आपनो ऊधो राखो ढाँप सवारो। सूर श्याम जानत भले जियकी जो निज हितू हमारो॥ ५॥ राग सारंग॥ ऊधो हमैं कहा समुझावहु। पशु पंछी सुरभी व्रजकी सब देखि श्रवण सुनि आवहु॥ तृण न चरत गो पिवत न सुतपै ढूँढत बन वन डोलैं। अलि कोकिल दे आदि बिहंगम भीत भयानक बोलैं॥ यमुनाभई श्याम श्याम बिनु अंध छीन जे रोगी। तरुवर पत्र बसन न सँभारत बिरह वृक्ष भए योगी॥ गोकुलके सब लोग दुखितहैं नीर विना ज्यों मीन। सूरदास प्रभु प्राण न छूटत अवधि आशमें लीन॥ ६॥ राग नट॥ ऊधो अवधि आशागई। योगकी गति सुनत मेरे अंग आगि वई॥ धरत हृदय न टरत मूरति तिहूँताप तई। हम सुलगि सुलगि उठतही तुम फूँकि आनि दई॥ सिंह गज

तजि चरत तृणते सुनत बात नई । अब भोग कुबिजा सुंदरीसों कौन बुद्धि दई ॥ नैन नीर प्रवाह सरिता ज्वाल जाल छई। सूर प्रभुकी कृपा जाको सकल सिद्धि भई॥७॥हमसों उनसों कौन सगाई। हम अहीर अबला व्रजवासी वै यदुपति यदुराई ॥ कहा भयो जु भए नँदनंदन अब इह पदवी पाई । सकुच न आवत घोष वसतकी तजि ब्रजगए पराई ॥ ऐसे भए वहां यादवपति गए गोप बिसराई । सूरदास यह ब्रजको नातो भूलिगए बल भाई ॥८॥ राग सोरठ॥हरि निर्मोहियासों प्रीति कीनी काहेन दुख होई । कपटकी करि प्रीति कपटी लै गयो मन गोई ॥ सींचिआ मजीठ जैसो निकट काटी पोई । हमारे मनकी सोई जानै जामें बीती होई ॥ काल वदन ते राखिलीन्ही इंद्रगर्वजे खोई । सूर गोपिन ऊधो आगे डहकि दीन्हों रोई ॥९॥ ऊधो तुम यह मत लै आए । इक हम जरैं खिझावन आए मानो सिखै पठाए ॥ तुम उनके वे नाथ तुम्हारे प्राण एक इक सारे । मित्रके मित्र सजन के सज्जन ताते कहत पुकारे ॥ रे सुन मूढ जरत अबलिनको परदुख तू नाहिंजाने । निपट गँवार होइ जो मूरख सो तेरी बातैं मानै ॥ हम रुचिकरी सूरके प्रभुसों दूजो मन न सुहाइ । उलटि जाहि अपने पुरमाहीं वादिहि करत लराई ॥१०॥मारू॥ हरि मुख देखही परतीति । जो तुम कोटि भांति परबोधो योग ध्यानकी रीति ॥ नहिंनैं कछू सयान ज्ञानमें इह नीके हम जानै । कहो कहा कहिए वा प्रभुसों कैसे मनमें आनै ॥ इहै मन एक एक वह मूरति भृंगी कीट समानै । सूर शपथदै ऊधो पूंछो इहि ब्रज कौन सयानै ॥११॥ ऊधो बात तिहारी को सुनै । हरिपदपंकज जमन मधुकर गह्यो मन बिनबात कछू न बनै । योग युक्तिको बडो विस्तारहै ऐसे ठौर नहिं अपने । ब्रजवासिनको इतनो हियोहै कृष्णलेत संकोच बने ॥ तहां जाउ जहां बैठे योगी इहां कामरस रह्यो धनै । हम अहीर कृष्णमदमाती सुखसों क्यों मित्रपनै ॥ जो तुम. जानत तत्त्व कृपाला मौन रहौ तुम घर अपने । घर घर फिरत लेव लेव नाहीं बस्तुको मोल हनै । भूख न प्यास नींदगई हरिबिनु पति सुत गृहकी कौन तनै ॥ माया और छूटगए यमुना अधिक कहालौं योग बनै । सो हरि प्राण प्रणत वल्लभ मोहनलीला है अकनै । आवत है कछु कह्यो सूरप्रभु नहिंतौ रहौ तुम मौन बनै ॥ १२ ॥ राग मलार ॥ बातनको परतीति करै । को अब कमलनयन मूरति तजि निर्गुण ध्यान धरै ॥ जो मत वेद कहत युगवीते रूप देख बिन जाने । सो मति मूढ कहत अबलनिसों नहिं सो हृदय समाने ॥ जो रस काज देव मुनि चिंतत ध्यान पलक नहिं आवत । सोइ रस सूर गाइ ग्वालन सँग मुरली लैकर गावत॥१३॥राग सारंग॥ नहीं हम निर्गुण पहिंचानि । मन मन सार स्वरूप सिंधुमें आपनो हम सानि ॥ यद्यपि अलि उपदेशत ऊधो पूरण ज्ञान वखानि । चित चुभिरही मदन मोहनकी जीवन मृदु मुसुकानि ॥ जुरचो सनेह नंदनंदनसों तजि परमिति कुलकानि । छूटत सहज न सूर प्रभु दुख सुखहि लाभ करिहानि ॥ १४ ॥ ऊधो जाइ बहुरि सुनि आवहु कहा कह्यो है नंदकुमार । इह न होइ उपदेश श्यामको कहत लगावन छार ॥ निर्गुण ज्योति कहा उनपाई सिखवत बारंबार । कालिहि करत हुते हमरे अंग अपने हाथ शृंगार ॥ व्याकुलभई गोपालहि बिछुरे गयो गुन ज्ञानसँभार । ताते जो भावै सो वकतहौ नाहिन दोष तुम्हार ॥ विरह सहनको हम सरजी है पाहन हृदय हमार । सूरदास अंतर्गति मोहन जीवन प्राण अधार ॥ १५ ॥ अलि तुम योग बिसरि जानि जाहु । बांधो गाँठि छूटि परिहै कहूं बहुरि वहां पछिताहु ॥ ऐसी बस्तु अनूपम मधुकर मन जिनि जानहु और । ब्रजवनिताके नाहिं कामको है तुम्हरे पै ठौर ॥ जो हितु करि पठए मनमोहन सो

T

हम तुमको दीन्यो। सूरदास ज्यों विप्र नारि पर करहि बंदना कीन्यो ॥ १६ ॥ ज्ञान योग अब लनि अहीरिसों कहत न आवै लाज। ऊधो सखा श्यामके कहियत पठए होवे काज ॥ जा लायक जो बात होइ सो तैसिये तासों कहिये। बिना नाद संगीत सुधानिधि सूढहि कहा सुनइये ॥ हम जानी जु विचार पठाए सखा अंग परवीन। सुखदैहैं मोहन कहि बतियां करत योग आधीन ॥ मुरली अधर मोरके पांखें जिन इह मूरति देखि। सोव कहा जानै निर्गुणको सोहै भीति चित्र अवरेखि ॥ पालागौं तुम बडे सयाने अनबोलेही रहियो। सिखये योग सूरके प्रभुको उनहींसों फिरि कहियो॥१७॥ राग धनाश्री॥ऊधो काहेको भक्त कहावत। जोपै योग लिखि पठयो हमको तुमहु न भस्म चढावत ॥ सींगी मुद्रा भस्म अधारी हमहीको कहा सिखावत। कुबिजा अधिक श्यामकी प्यारी ताहि नहीं पहिरावत ॥ यहतौ हमको तबहिं न सिखयो जबते गाइ चरावत। सूरदास प्रभुको कहियो अब लिखि लिखि कहा पठावत ॥१८॥ नट॥ ऊधो न विरहिनि न हम तुम दास। कहत सुनत घट प्राण रहतहैं हरि तजि भजहु अकास ॥ बिरही मीन मरै जल बिछुरे छाँडि जीवनकी आस। दासभावं नहिं तजत पपीहा बरुसहि रहत पियास ॥ पंकज परम कमलमें बिहरत बिधि कियो नीर निरास। राजिव रविको दोष न मानत शशिसों सहज उदास ॥ प्रगट प्रीति दशरथ प्रति पाली प्रीतमको बनवास। सूर श्याम सों पतिव्रत कीन्हों छांडि जगत उपहास ॥ १९ ॥ ऊधो बिनती सुनो इक मेरी। तबके बिछुरि गए नँदनंदन कामके दली घेरी ॥ देखो हृदय बिचारि तुमहिं अब प्रीति रीति सब केरी। जहां जाकी निधि तहां सब सौंपै ज्यों मृगनाद अहेरी ॥ वै द-शमास रतन रस वसते शशि बिन रैनि अँधेरी। सूरदास स्वामी कब आवैं बास करन ब्रजफेरी ॥ २० ॥ ॥ राग सारंग॥ मधुकर कहा प्रवीन सयाने। जानत तीनि लोककी महिमा अबलनि काज अयाने ॥ जे कच कनक कटोरा भरि भरि मेलत तेल फुलेल। तिन केशनको भस्म चढावत टेसू कैसे खेल ॥ जिन केशन सबरोगहि सुंदर अपने हाथ बिनाइ। तिनको जटा कहा नीकीहैं कहु कैसे कहि आइ ॥ जिन श्रवणन ताटंक सुभी औ करनफूल खुटिलाऊ। तिन श्रवणन कश्मीरी मुद्रा लै लै चित्र झुलाऊ ॥ भालतिलक अंजन चख नासा बेसरि नथमें फूली। ते सब तजि आलि कहत मलनमुख उज्वल भस्म खुली ॥ जिहि मुख गीत सुभाषित गावत कहति परस्पर गास। ता मुख मौन गहे क्यों जीजै छूटत ऊरध श्वास ॥ कंठ सुमाल हार मुक्ताके हीरा रत्न अपार। ताहू कंठ बाँधिबे कारण सींगी योग शृंगार ॥ कंचुकि छीन छीन पटसारी चंदन सरस सुछंद। अब कंथा एकै अति गुदरी क्यों उपजी मतिमंद ॥ ऊधो ऊधो सब पालागैं देखो ज्ञान तुम्हारो। सूर सु प्रभु मुख फेरि देखिहैं चिरजीवै कान्ह हमारो ॥ २१ ॥ हमतो दुहूँ भाँति फल पायो। जो गोपाल मिलैं तौ नीको नातो जगत यश गायो ॥ कहा हम या गोकुलकी गोपी वरणहीन घटि जाति। कहँ वै श्रीकमलाके वल्लभ मिलि बैठी इकपांति। निगम ज्ञान मुनि ध्यान अगोचर सो भए घोष निवासी। ता ऊपर अब कहौ देखिधौं मुक्ति कौनकी दासी ॥ योग कथा ऊधो पालागों नाकहु बारंबार। सूर श्याम तजि और भजै जो ताकी जननी छार॥२२॥राग मारू॥ मोहिं अलि दुहूँ भांति फल होति। तब रस अधर लेत जो मुरली अब भइ कुबिजा सौति ॥ तुम जो योग मत सिखवन आए भस्म चढावन अंग। इन विरहिनि मैं कहूं तू देखी सुमन गुहाए मंग ॥ कानन मुद्रा पहिरि मेखला धरैं जटा योग अधारी। इहां तरल तरिवना कांके अरु तन सुखकी सारी ॥ परम वियोगनि रटत रैनि दिन धरि मनमोहन ध्यान।तुमतौ चलौ बेगि मधुवनको जहाँ योगको ज्ञान॥

निशिदिन जीजतु है या व्रजमें देखि मनोहर रूप। सूर योग लै घर घर डोलौ लेहु लेहु ज्यों सूप॥ ॥२३राग नट॥जोपै अलि मथुराहू लै जाहु।आरति हरौ श्रवण नैननकी मेटहु उरके दाहु॥बुधि बल वचन जहाज बांह गहि बिरह सिंधु अवगाहु। पार लगावहु मधुरिपुके तट चंद्र तज्यो जनु राहु॥ देखहु जाइ रूप कुबजाको सहि न सकत यहु चाहु। जीवन जनम सफल करि लेखहिं सूर सबन उत्साहु॥२४॥ लै चल ऊधो अपने देश। मदनगोपाल मिलन मन उमह्यो कौन बसै इह यदपि सुदेश॥ वह मूरति मेरे हृदय बसत है मुरली अधर पुट कुंतल केश। कुंडल लोल तिलक मृगमद रचि गावत नृत्यत नटवर वेश॥ कहा करौं मोपै रहो न जाई छिन सब सुखदायक बसत विदेश। सूरज श्याम मिलन कब ह्वै है दूरि गमन व्रजनाथ नरेश॥२५॥राग विहागरो॥ऊधो लैचलु रे लै चलु रे। जहां बसैं सुंदर श्याम बिहारी लैचलु रे तहां लै चलु रे॥आवन आवन कहि गए ऊधो करि गए हमसों छलु रे। हृदय की प्रीति श्यामजी जानत केतिक दूरि गोकुल रे॥ आपन जाइ मधुपुरी छाए वहां रहे हिलि-मिलि रे। सूरदास स्वामीके बिछुरे नैन नीर परवलु रे॥२६॥ राग सारंग॥गुप्त मतेकी बात कहो जनि काहूके आगे। कै हम जानैं कै तुम ऊधो इतनी पावहिं मांगे॥ एक बेर खेलत वृंदावन कंटक चुभि गयो पांइ। कंटकसों कंटक लै काढ्यो अपने हाथ सुभाइ॥ एकदिवस विहरत वन भीतर मैं जु सुनाई भूँख। पाके फल वै देखि मनोहर चढे कृपाकरि रूख॥ ऐसी प्रीति हमारी उनकी बसते गोकुल बास। सूरदास प्रभु सब बिसराई मधुबन कियो निवास॥२७॥ राग मलार॥ऊधो कत:ए बातैं चाली। कछु मीठी कछु मधुरी हरिकी वै अंतर सब शाली॥ तब ए वेली सींचि श्याम घन अपनी करि प्रतिपाली। अब ए वेली सूखत हरि बिनु छाँडि गए वनमाली॥ जबहीं कृपादुती यदुपतिकी रहसि रंग रसरास सुखाली। सूरदास प्रभु तब न मुई हम जिवहिं विरहकी जाली॥२८॥ ॥राग नट॥ ऊधो इहै विचार गहो। कै तन गए भलो मानै मन कै हरि व्रज आइ रहो॥ कानन देह विरह दौ लागी इंद्री जीव जरै। बूझि श्याम घन प्रेम कमल मुख मुरली बूंद परै॥ चरण सरोवर माहिं मीन मन रहत एक रस रीति। तुम निर्गुण वश तामें डारत सूर कौन यह नीति॥ २९॥ ऊधो हम लायक शिख दीजे। यह उपदेश अग्नितें तातो कहो कौन विधि लीजे॥ तुमहीं कहो इहां इतनन महि सीखनहारी को है। योगी यती रहित मायाते तिनहीं यह मत सोहै। कहा सुनत बिपरीति लोकमहि यह सब कोई कैहै॥ देख्यो धौं अपने मन सबकोइ तुमहीं दूषण दैहै। स्रक चंदन बनिता विनोदरस क्यों विभूति वपु माजै। सूरदास शोभा क्यों पावत आंखि आंधरी आँजे॥ ॥ ३०॥ राग धनाश्री॥ ऊधो हम लायक हमसों कहो। बात विचारि सोहाती कहिए कै अन बोलै ह्वै रहो॥ भली कैहै तुमको अतिशोभा अरु सबही पाइलहो। यह विपरीति बूझिए तुमको कंधजूवसुरभिनहो॥ एते पर पुनि पुनि शिखवतहो योगरत्न दृढकरि गहो। सूर कहै अलि पूरो दीजे निपटहि वातनि मति वहो॥ ३१॥ सारंग॥कबहूं वै ऊधो बात कहो। तजहु सोच मिलिहैं नँदनंदन हितकारि दुखानि दहो॥ तुम हरि समाधानको पठए हमसों कहन सँदेश। अधिक आनि आरत उपजाई कहि निर्गुण उपदेश॥ इक अति निकट रहत अरु निजयुत जानत सकल उपाइ। सोइ करहु जिहि पावहिं दरशन छाँडहु अगम सुभाई॥ हम किंकरी कमललोचनकी वशकीनी मृदुहास। सूरदास अब क्यों विसरतहै नख शिख अंग विलास॥ ३२॥ राग मलार॥ सब जल तजे प्रेमके नाते। चातक स्वाति बूँद नहिं छाँडत प्रगट पुकारत ताते॥ समुझत मीन नीरकी बातैं तजत प्राण हठिहारत। जानि कुरंग प्रेम नहिं त्यागत यद्यपि व्याध शरमारत॥ निमिष चकोर नैन नहिं

लागत शशि जावत युग बीते । ज्योति पतंग देखि वपु जारत भए न प्रेम घट रीते॥कहि अलि क्यों बिसराति वै बातैं सँग जो करि व्रजराजै । कैसे सूर श्याम हमैं छाँडैं एक देहके काजै ॥ ३३ ॥ ऊधो जो हरि हितू तुम्हारे । तौ तुम कहियो जाइ कृपाकरि ए दुख सबै हमारे॥ तनु तरुवर उर श्वास पवनमें विरह दवा अति जारे । नहिं सिरात नहिं जात छारह्वै सुलगि सुलगि भए कारे ॥ यद्यपि प्रेम उमँगि जल सींचे वरप वरपि घनहारे । जो सींचे यहि भाँति जतन करि तौ एते प्रतिपारे॥ कीर कपोत कोकिला चातक बधिक वियोग बिडारे । क्यों जीवै यहिभाँति सूर प्रभु व्रजके लोग विचारे ॥ ३४ ॥ राग धनाश्री ॥ हमैं तो इतनोहीसों काजु ॥ कैसेहूं अलि कमलनैनको व्रज लै आवहु आजु ॥ और अनेक उपाव तुम्हारे सकल करहु सुख राजु । कैसेहैं निबहत अवलनपै कठिन योगके साजु ॥ नख शिख सुभग श्यामघन तनको दरशनहरति विथाजु । सूरदास मत रहत कौन विधि वदन विलोकनि बाजु ॥३५॥ अब हरि कौनके रस गीधे । सकत नहीं निरवारि ऊधो शशि बदरी ज्यों बीधे ॥ बरतहीन नवल-डुलाई तजी सकल कुलकानि । अंधकरि छाँडी भए गाहिल वान फून लकुट बिनपानि ॥ जतन छुरि निर्गुणभए सब नरकी अभिलाष बिना चरणसरोज देखै ॥३६॥राग कान्हरो॥ हरि ठाकुर लोगन सों मधुकर कहो काहेकी प्रीति । ज्यों कीजे तो होइ जल धर रविकी ऐसी रीति ॥ जैसे मीन कमल चातकही ऐसे दिन गए बीति । तरफत जरत पुकारत निशिदिन नाहिंन कछु इहां नीति ॥ मन हठ परचो कमंध जोधालौं हारेहु नाहीं जीति। रुकत न प्रेम समुद्र सूर बल वारूहीकी भीति ॥ ३७ ॥ राग सारंग ॥ को गोपाल कहांके वासी कासों हैं पहिचानि । तुम संदेश कौनके पठये कहत कौनके आनि ॥ अपनी चोप मधुप उडि बैठत भोर भले रसजानि । पुनि वह बेलि बढो कै सूखो ताहि कहा हितहानि । प्रथम बैन मनहरचो अहिरनको राग रागिनी ठानि। पुनि वह बधिक बिश्वासघाती हनत विषम शरतानि ॥ पय प्यावत पूतना बिनाशी छले जु बलिसे दानि । शूपनखा ताडका निपाती सूरदास यह बानि ॥ ३८ ॥ राग मलार ॥ मधुकर कौन मनायो मानै। अविनाशी हरि अंग तुम्हारो कहा प्रीति रस जानै ॥ सिखवहु जाइ समाधि योग रस जे सब लोग सयाने । हम अपने व्रज ऐसेहि रहिहैं विरह वाइ बौराने ॥ जागत सोवत स्वप्न दिवस निशि रहि हैं रूप परवानै । बारक बाल किशोरी लीला शोभा समुद्र समानै ॥ जिनके तन मन प्राण सूर सुनि मुख मुसकानि बिकानै । परी जू पयनिधि अल्प बूँद जल सुपुनि कौन पहिचानै ॥ ३९ ॥ राग सारंग ॥ हरिसुत सुत हरिके तनु आहि । इहां को कहै कौनकी बातैं ज्ञान ध्यान सुमिरैं को काहि ॥ को सुख ममतारस युवतीको को जिनि कंस हतै । हमरे तौ गोपति सूं अधिपति बनिता औरनतै ॥ मोरज रंध्र रूप रुचिकारी चितै चितै हरिहोत । कबहुँक करनी समेतिलेनैक न मानकै सोत ॥ ता रिपु समै संग शिशु लीन्हें पय आवत तनु घोष । सूरदास स्वामी मनमोहन कत उपजावत दोष ॥ ४० ॥ अब हरि और भए माई इतनी दूरि । मधुकर हाथ सँदेशो पठयो चतुर चातुरी घूरि ॥ रूपराशि सो सबै गुण परमिति श्याम सजीवन मूरि । तिनसों कहत मनहिमन समुझहु हैं सबही भरि पूरि ॥ इक सुनि सूर ऐसेहि या तनको रही बिरह झक झूरि । तापर छपद कियो चाहत है कोइलाहूते धूरि ॥ ४१ ॥ राग कान्हरो ॥ कहा जान कोऊ परपीर । नँदनंदनके बिछुरे सखी री जैसी सही शरीर ॥ कहि कहि कथा मधुप समुझावत मनराखहु धरि धीर । नैन मीन कैसे सचपावत बिन दरशन हरि नीर ॥ योग समाधि कहा हम जानैं व्रजवासिनी अहीर । सोइ कीजे जो मिलै सूर प्रभु भव ऋतु रंगनितीर ॥ ४२ ॥ हम त्रिय मृतक

जीवत शशिसाखी । तुम अलि रवि हित कमल विशेषी हरे बिकल मधुमाखी ॥ मुरली अधर सुधा ध्वनि सुनि सुख संच्यो श्रवण दुआर । मधुहारी अक्रूर वधिक सुख अवधि लगाई छार ॥ मनको बिरह नैन कहा जानै श्रुति मत तुही सुनावै । सूर भस्म अँग लगी कुटिलता तरु योगै गुणगावै ॥ ४३ ॥ राग रामकली ॥ हमारी सुरति लेत नहिं माधो । तुम अलि सब स्वारथके गाहक नेह न जानत आधो ॥ निशिलों मरत कोश अभ्यंतर जो हित कहो सु थोरी । भ्रमत भोर सुख ओर सुमनसँग कमल देत नहिं कोरी ॥ राकारास मास ऋतु जेती रजनि प्रीति नहिं थाही । वैस संधि सुख तजी सूर हरि गए मधुपुरी माही ॥ ४४ ॥ राग धनाश्री ॥ कैसे जीवैं ऊधो हरि परदेश रहे । गरजि गरजि घन वरपन लागे नदियां नार बहे ॥ कहि पठवो मधुपुरी सखी री मेरेहो तौ चरण गहे । बासर गए निहारत मारग चातक रैनि डहे ॥ कासों कहौं तपत मन निशिदिन को इह पीर लहै । हमहूं किन लै जाहि सूर प्रभु को ब्रज दुखहि सहे ॥ ४५ ॥ हरि हम काहे को योग बिसारी । प्रेम तरंग बूडत ब्रजबासी तरत श्याम सोइ हारी ॥ रिपु माधव पिक वचन सुधाकर मरुत मंदगति भारी । सहि न सकत अति विरह त्रास तनु आगि सलाकनि जारी ॥ ज्यों जल थाके मीन कहा करै तेउ हरि मेलि अंडारी । विजय अधोमुख लेन सूर प्रभु कहियहु विपति हमारी ॥ ॥ ४६ ॥ जो पै इहै हुती उनके मन । तो तव कमलनयन हम कारण कहा किये ब्रज एते जतन ॥ विप जल व्याल वरुन वर्पानल अनेक अशुभ हति राखे । संतत संग रहत काहू मिस निठुर वचन नहिं भाषे ॥ उन विपदनि कुंचित जो करते कछुअन जीव सराहती । विधि बश नाउँ बहुरि फिरि मिलती एतो विलंब कत सहती ॥ कहियें कहा जो सब जानतहैं या तनुकी गति ऐसी । सूरदास प्रभु हित सुचित्त कै वेगि प्रगट की वो तैसी ॥ ४७ ॥ मोहनसों मुख बनत न मोरे । जिन नैनन मुखचंद्र विलोक्यो जात तरणि नहिं जोरे ॥ मुनि मन मंडन योग कर्म ऋतु मंदिर भार सहत कहि कोरे । बनत नहीं द्वै कमलके बंधन कुंजर क्यों वरहत विनु तोरे ॥ लीलांबुज तनु लील वसन मणि चितयो न जात धूमके भोरे । सूरदास जे कमलके विरही चंपकबन लागत चित थोरे॥४८॥राग सोरठ ॥ विलग हम मानैं ऊधो काको।तरसत रहे वसुदेव देवकी नहिं हितु मात पिताको ॥ काको मात पिता को काको दूध पियो हरि जाको । नंद यशोदा लाड लडायो नाहिंन भयो हरि ताको ॥ कहियो जाइ वनाइ बात यह को हितहै अवलाको । सूरदास प्रभु प्रीति है कासों कुटिल नीच कुविजाको ॥ ४९ ॥ उघरि आये कान्ह कपटकी खानि।सरवस हरो बजाय बाँसुरी अब छाँडे पहिचानि ॥ जिन पय पियत पूतना मारी दालत करी न हानि । बलि छलि बाँधि पताल पठाये नेक न कीनी कानि ॥ जैसे वधिक अधिक मृग विधवत राग रागिनी ठानि । अवध आश परतीति ओटदै हनत विपम शरतानि ॥ जैसे नाट सरुट रतन उर ते तुम ऊधो अति जानी । सूरदास प्रभुके जिय भावै आयसु माथे मानी ॥५०॥सारंग॥ जीवन मुख देखेको नीको । दरश परश दिन रीति पाइअत श्याम पिआरे पीको ॥ सुनो योग कहि काम हमारे जहां ज्यान है जीको । नैन मूँदिकै मृतक देखि वर मधुप ध्यान पोथीको ॥ आछे सुंदर श्याम हमारे और जगत सब फीको । खाटी मही कहा रुचि मानो सूर खवैया घीको॥५१॥मधुकर को मधुवन रहियो।काके कहे सँदेशो ल्याये किनि लिखि लेखि दयो ॥ को वसुदेव देवकीनंद को को यदुवंश उजागर । इहां तिन्हसों पहिचानि न काहू फिरि लेइ जैए कागर। गोपीनाथ राधिका वल्लभ यशुमति सुवन कन्हाई ॥ दिन प्रति लेत दान वृंदावन दूनी रीति चलाई ॥ मधुकर हा तुम भये सयाने कहत औरकी और । सूर सुपथ का-

हू वहि कायो कै भूली यहि ठौर॥९२॥इहां तुम कहत कौनकी बातैं । बिना कहे हम समुझत नाहीं फिरि फिरि बूझति तातैं॥को नृपभयो कंस किन मारचो को वसुदेव सुत आहि। इहां यशुमति सुत परम मनोहर जीजतहै सुखचाहि॥ दिन उठि जात धेनु बन चारन गोप सखनके संग। वासरगत रजनी सुख आवत करत नैन गनि पंग॥को परिपूरण को अविनाशी को बिधि वेद अपार। सूर त्रिरथ बकवाद करतहो यहि ब्रज नंदकुमार॥९३॥राग गूजरी॥डसी री माई श्याम भुअंगम कारे।चितवनि फिरि मुसुकानि महाविष लागत ज्यों शर डारे॥तंत्र न फुरै मंत्र नहिं लागै चले गुणी गुण हारे। प्रेमप्रीतिकी व्यथा तप्त तनु सो मोहिं डारत मारे॥ भली भई तुम आए ऊधो वंद दे चले हमारे। आनहुँ बेगि गारु री गोविंदाहि जो यहि विषहि उतारे॥ आवति लहरि मदन विरहाकी को हरि वेद हँकारे। सूरदास गिरिधर जो आवहिं हम शिर गारुड टारे॥९४॥ राग केदारो॥ नेह न होइ पुरानो रे अलि। जलप्रवाह ज्यों शोभासागर नित नव तन ब्रजनाथ इहाँ बलि॥ जीवतहै आनंद रूप रस बिन प्रतीतिको मीन चढो थलि। अमी अगाध सिंधु सार विहरत पीवतहू न अघात इते जलि॥दिन दिन बढत नीर नलिनी ज्यों श्यामरंग में नैनरहे पलि।सूर गोपाल प्रीति जिय जाके छूटत नाहिन नेह सती सलि॥९५धनाश्री॥ अपने सगुन गोपाल माई यहबिधि काहे देति। ऊधोकी इनि मीठी बातनि निर्गुण कैसे लेति॥ धर्म अर्थ कामना सुनावत सब सुख मुक्ति समेति। काकी भूँख गई मनलाडू सो देखहु चित चेति। जाको मोक्ष बिचारत वर्णत निगम कहतहै नेति। सूर श्याम तजिको भुस फटकै मधुप तुम्हारे हेति॥९६॥हमरी सुधिहु भूलि अलि आए।अब कछु कान्ह कहत औरै हैं समुझि सखा गुण गाए॥ निज स्वारथ रसरीति समुझि उर विकल निमेष न चाहे। कहतहि सुगम सबै कोउ जानत कठिन हेतु निरवाहे॥ अब परतीति बातकी मानै कहतहैं श्याम पराए। कबलौं चलै कपटको नातो सूर सनेह बनाए॥९७॥ मधुकर हम सब कहा करैं। पठए हो गोपाल हेतु करि आयसु ते न टरैं॥ रसना उर वारौं ऊधो पर इहि निर्गुणके साथ। यहपै नेकु बिलगु जिनि मानौं अँखियां नाहिन हाथ॥ कवनभाँति गुण कहौं तिहारे हितको धीर धरावो। महाविचित्र नीर बिनु नौका बिन जलमीन जिआवो॥ सेवाहीन अपूरव दरशन कब आवहुगे फेरि।सूरदास प्रभुसों यों कहियो केलापोष सँग उबरी बेरि॥९८॥ ॥ राग गौरी॥ए अलि जन्म कर्म गुणगाए।हम अनुरागी यशुमतिसुतकी नीरस कथा बहाए॥ कैसे कर गोवर्धन धारचो कैसे केशी मारचो। कालीदमन कियो कैसे अरु बकको वदन विदारचो॥ कैसे नंद महोत्सव कीनो कैसे गोपी धाए। पटभूषण नानाभाँतिनके ब्रजयुवतिन पहिराए॥ दधि माखनके भाजन कैसे गोप सखा लै धाए। वनको धातु चित्र अँग कीनो नाचत भेष सुहाए। तबते कछु न सुहाइ कान्ह बिनु युग सम बीतत याम। सूर मरहिंगी विरह वियोगिनि रटि रटि माधो नाम॥ ९९॥ राग नट॥ मधुप आए योग गथलै दुख अरु हांसीको सहै। कान मुद्रा भस्म कंथा मृगतुचा आसन डहै॥ कान्हतौ वै निठुर कहिए सखा तिनके रावरे। जरे ऊपर लोन लावहि को है उनते बावरे॥ श्यामके गुण हम जु जानै मानु बाँधे नल कियो। संग खेलि खवाइ अपने सोच तो इतनो दियो॥ एकदिन वैकुंठवासी रास वृंदावन रच्यो। सोइ स्वरूप विलोकि माधो आइ इन विधि तनु खच्यो॥ शरद यामिनि इंदु राका लाज तजि कुंजनि गई। बाँसुरीको शब्द सुनिकै बधिककी मृगिनी भई॥ मुरलीहै मदनमूरति मो मन हृदय रमिरई। याहीते हम जगत जानी वेद मेटो दृढभई॥ मंदमति हम कर्महीनी दोष काहि लगाइए। प्राणपति सों नेहबाँध्यो कर्म लिख्यो सो पाइए॥ हम न जानै जन्म ऐसो रैनिको सपनो भयो। अंजुरिन जल

घटत जैसे तैसही यानन गयो ॥ भेदिआसों भेद कहिवो छेदसों छाती परी । अंत नाहिंन और आवै ए सुख सब कुबिजा करी ॥ योग जप तप ध्यान पूजा इह तौ हृदय न आवई। सुधारस जेहि स्वाद चाख्यो तिनहि और न भावई ॥ ज्ञान दृढ तप ध्यान पूजा हरिचरण जिनके हिए । विमुख हैं जे सूर स्वामी फल कहा तिनके जिए॥६०उद्धव वचन॥रागमलार॥ वे हरि सकल ठौरके वासी । पूरण ब्रह्म अखंडित मंडित पंडित मुनिन विलासी ॥ सप्तपताल अध ऊर्ध्व पृथ्वीतल जल नभ वरुन बयारी । अभ्यंतर दृष्टी देखनको कारण रूप मुरारी ॥ मन बुधि चित अहंकार दशेन्द्रिय प्रेरक रथमनकारी । ताके काज बियोग विचारत ये अबला ब्रजनारी॥जाको जैसो रूप मन रुचै सो अपवश करि लीजै । आसन वैसन ध्यान धारणा मन आरोहण कीजै ॥ पटदल अष्ट द्वादशदल निर्मल अजपा जाप जपाली। त्रिकुटी संगम ब्रह्म द्वार भिदि यों मिलिहै वनमाली ॥ एकादशगीता श्रुति साखी जिहि विधि मुनि समुझाए । ते सँदेश श्रीमुख गोपिनको सूर सु मधुप जनाए ॥६१॥अथ गोपी वचन॥कर्णाटी ॥ देखि रे प्रेम प्रगट द्वादश मीन । ऊधो एकबार नंदलाल राधिका वनते आवत सखिही सहित गिरिधर रसभीन ॥ गए नव कुंज कुसुमनिकेपुंज अलि करैं गुंज सुख हम देखिभई लवलीन ॥ पट उडुगण पट मनिधर राजत चौबीस धात केहि चित्र कीन। पट इंदु द्वादश पतंग मनो मधुप मुनि खग चौअन माधुरी दश पीन।द्वादश बिंबाधर सो वानवै वज्र कन मानो पट दामिनि पट जलज हँसि दीन ॥ द्वादश धनुप द्वादशै विष्का मनमोहन पटै चिबुक चिह्न ।चित चीन। द्वादश व्याल अधोमुख झूलत मधुमानो कंजदलसों बीसद्वै वंसीन ॥ द्वादशै मृणाल द्वादश कदली खंभ मानो द्वादश दारिम सुमन प्रवीन । चौबीस चतुष्पद शशि सौ बीस मधुकर अंग अंग रस कंद नवीन ॥ नील नीलै मिलि घटा विविध दामिनि मनो षोडश शृंगार शोभित हरिहीन । फिरि फिरि चक्र गगनमें अमी बतावत युवती योग मौनकहुँ कीन ॥ वचन रचन रसरास नंदनंदन ते वही योग पौन हृदये लवलीन । नंद यशोदा दुखित गोपी गाय ग्वाल गोसुत सब मलिन गात दिनही दिन दुखीन ॥ वकी वका शकटा तृण केशी वच्छ वृषभ रासभे अलि विनु गोपाल इनि वैर कीन । उद्धव यहां मिलाइ पैरैं पाँय तेरे सूर प्रभु आरति हरैं भई तनु छीन॥६२॥राग गौरी॥मधुकर ल्याए योग सँदेशो।भली श्याम कुशलात सुनाई सुनतहि भयो अँदेशो ॥ आशरही जिय कबहुँ मिलेकी तुम आवतही नाशी । युवतिनि कहत जटा शिर बांधौ तौ मिलिहैं अविनाशी ॥ तुमको जिन गोकुलहि पठाए ते वसुदेव कुमार । सूर श्याम हमते कहुँ न्यारे होत न करत विहार ॥ ६३ ॥ राग मलार ॥ मधुकर वादि वचन कत बोलै । आपुन चपल चपलके संगी चपल चहूँ दिश डोलै ॥ इन बातनको कौन पत्यैहै अंतर कपट न खोलै । कंचन कांच कपूर कटुखरी एकहि सँग क्यों तोलै ॥ अब अपनीसी हमहि दिखावत मति भूलहु यहु जोलै । सूर श्याम विन रटत विरहिनी विरह दाग जनि छोलै ॥ ६४॥ राग नट ॥ ऊधो सुनत तिहारे बोल । ल्याये हरि कुशलात धन्य तुम घर घर पार्यो गोल ॥ कहन देहु कहा करै हमारो बरु उठि जैहै झोल । आवतही याको पहिचान्यो निपटहि ओछो तोल ॥ जिनके सोच नहीं कहिवेको ए बहुगुणनि अमोल । जानी जात सूर हम इनकी बतचल चंचल लोल ॥ ६५ ॥ राग धनाश्री ॥ मीठी बात हमारे आगे वारवार अलि कहा सुनावहु । हमहिं खिझाइ आपु पति खोवत यामें कहौ कहा तुम पावहु ॥ कहां न जाइ नगर नारिनसों वे सुनिहैं तिनको समुझावहु । ब्रजवासिनी अहीरिनि विरहिनि तिन आगे तुम काहे गावहु ॥ लोचन गए श्याम सँगही बडे चतुर तौ वो नहीं बुलावहु । सूर चकोर चंद्र दरशन तजि कैसे जीवैं तरनि दरशावहु ॥ ६६ ॥ राग धनाश्री॥

मधुकर कहा करन ब्रजआए। योग ज्ञान हमको परबोधन हरितौ नहीं पठाए॥ जा सुख मुरली धारि अद्भुत सुर गाइ बजाइ रिझावत। तेहि सुख श्याम कहैंगे ऐसे यह तौ तुमहिं बनावत। अंग अंग आभूषण अपने कर करि हमहिं बनावै। सूरदास प्रभु कैसे तुमकर कंथा जोरि पठावै॥ ६७॥ कहा कहत रे मधुमतवारे। आयो धाइ योग उपदेशन प्रेमभजन गहिडारे॥ जेहि मुख सुधा श्याम रस अचवत अब पीवै जल खारे। यह अक्रूरहिते अतिखोटो डारतिहौ अहि कारे॥ हम जान्यो यह श्याम सखाहै यहतो औरै न्यारे।सूर कहा याके सुख लागत कौन याहि अवगारे६८ रे अलि कासों कहत बनाइ। बिन समुझे फिरि फिरि बूझतहै बारक बहुरो गाइ॥ कौने गमन कियो स्यंदनचढि सुफलकसुतके संग। किन वधिरजक लिये नानापट पहिरे अपने अंग॥ केहि हति चापि निदरि गज मारयो केहि बल मल्ल मथि भाने। उग्रसेन वसुदेव देवकी केहि व निगडहति आने॥ काकी करत प्रशंसा निशिदिन कौने घोष पठाए। केहि मातुल वधि लियो जगतयश कौन मधुपुरी छाए॥ माथे मोर मुकुट उरगुंजा मुख मुरली कल गाजै। सूरदास यशोदानंदन गोकुल सदा विराजै॥ ६९॥ राग सारंग॥ तैं अलि कहा पढी यह नीति। लोक वेद श्रुति ज्ञान रहित सब कहत कथा विपरीति॥ जन्म भूमि ब्रज जननि यशोदा केहि अपराध तजे। अतिकुल निर्गुण रूप जो अतिसुख दासी जाइ भजे॥योगसमाधि मूढ मुनि मारग क्यों समुझैं हम ग्वारी॥जो वै गुण अतीति व्यापकता तौ हम काहे न्यारी॥रहि मधु ढीठ कपट स्वारथहित जिय ये वचन विरोपै। मन क्रम वचन बचाति वा नाते सूर श्याम तनु घोपै॥७०॥राग सारंग ॥मधुकर जाहि कहो सुनि मेरो। पीत बसन तनु श्याम जालकी राखत परदा तेरो॥ यहि ब्रजको उपदेशन आयो कत जोरहो करि डेरो। एते मान यह सखी महाशठ छाँडत नाहिंन खेरो॥ ऐसी बात कहो तुम तिनसों होइ जो कहिबे लायक। इहां यशोदा कुँवर हमारे छिनु छिनु प्रति सुखदायक॥ ज्यों तू पुहुव पराग छाँडिकै करहि ग्राम वशबास। तौ हम सूर इहै करि देखहिं निमिष न छाँडहिं पास॥ ७१॥ राग रामकली॥ ऊधो मौनै साधि रहे। योग कहि पछितात मन मन बहुरि कछु न कहे॥श्यामको यह नहीं बूझे अतिहि रह्यो सिखाइ। कहा मैं कहि कहि लजानो नैन रह्यो नवाइ॥ प्रथमही कहि वचन एकै लियो गुरु करि मानि। सूर प्रभु मोको पठायो इहै कारण जानि॥ ७२॥ राग कल्याण॥ कहा न कीजै अपने काजै। अब दिन दश ऐसो करि देखो जो हरि मिलैं योगके साजै॥ माथे जटा पहिरि उर कंथा लावहु भस्म अंग सुख माजे। सींगी बजाइ पहिरि मृगछाला लोचन मूँदि रहौ किन आजै॥ सन्मुख ह्वै शर सहो सयानी नाहिंन वचन आजुके भाजै। योग बिरहके बीच परमदुख मरियतुहै यह दुसह दुराजै॥ ऊधो कहै सत्य करि मानो वर्षा वदत पंचमी गाजै। ज्यों यमुना जल छाँडि सूर प्रभु लीन्हें वसन तजी कुल लाजै॥ ७३॥ राग सारंग॥ ऊधो कहा मति दीनो हमहिं गोपाल। आवहु री सखी सब मिलि सोचैं जो पावैं नँदलाल॥ घर बाहरते बोलि लेहु सब जावदेक ब्रजबाल। कमलासन बैठहु री माई मूँदहु नैन विशाल॥ पटपद कही सोऊ करि देखी हाथ कछू नाहिं आई। सुंदर श्याम कमलदल लोचन नेकु न देत दिखाई॥ फिरि भई मगन विरहसागरमें काहुहि सुधि न रही। पूरण प्रेम देखि गोपिनको मधुकर मौन गही॥ कछु ध्वनि सुनि श्रवणन चातककी प्राणपलटि तनु आए। सूर सो अबके टेरि पपीहै विरही मृतक जिवाए॥७४॥राग सारंग॥मधुकर भलेही आए वीर। दुर्लभ दरशन सुलभ पाए जानिहौ पर पीर॥ कहत वचन विचारि बिनवहु शोधि हो मनमाहिं। प्राणपतिकी प्रीति ऊधो हैकि हमसों नाहिंन॥ कौए तुमसों कहै मधुकर कहन योगी नाहिं।

T

प्रीतिकी कछु रीति न्यारी जानिहो मनमाहिं ॥ नैन नींद न परै निशिदिन विरह डाढी देह । कठिन निर्दय नंदके सुत जोरि तोरो नेह॥कौन तुमसों कहै मधुकर गुप्त प्रगटित बात । सूरके प्रभु क्यों बनै ज्यों करै अबलाघात॥७५॥राग सारंग॥ऊधो तैं कत चतुर कहावत । जेनहिं जानै पीर पराई है सर्वज्ञ जनावत ॥ जो पै मीन नीरते बिछुरे को करि जतन जियावत । प्यासे प्राण जातहैं जल विनु सुधा समुद्र बतावत ॥ हम विरहिनी श्यामसुंदरकी तुम निर्गुणहिं बचावत । योग भोग रस रोग शोग सुख जाने जगत सुनावत ॥ ए दृग मधुप सुमन सब परिहरि कमल वदन रस भावत । सोवत जागत स्वप्न रैनि दिन वह मूरति मोहिं भावत ॥ कहि कहि कपट सँदेशन मधुकर कत बकवाद बढावत । कारो कुटिल निठुर चित अंतर सूरदास कवि गावत ॥ ७६ ॥ मधुकर एमन ऐसो वैरन । अहो मधुप निशिदिन मरियतु है कान्ह कुँवर अवसेरन ॥ चित चुभि रही मनोहर मूरति चपल दृगनके हेरन । तन मन लियो चुराइ हमारो वा मुरलीकी टेरन ॥ कहत न बनै कांध कामरि छवि वन गैयनकी घेरन । वरणि न जाइ सुभग उर शोभा पीतांबरकी फेरन ॥ तुम प्रवीन हरि हमहिं बतावत अगहि गहत भट भेरन । नंदकुमार छाँडिको लैहै योग दुखनकी टेरन ॥ जहां न परम उदार नंदसुत मुक्त परो किन झेरन । सूर रसिक विनु को जीवतिहै निर्गुण कठिन करेरन ॥ ७७ ॥ राग बिलावल ॥ काहेको रोकत मारग सूधो । सुनहु मधुप निर्गुण कंटकते राजपंथ क्यों सूधो ॥ कै तुम सिखै पठाए कुबिजा कही श्याम घन जीधो । वेद पुराण स्मृति सब ढूँढो युवतिन योग कहूँधो ॥ ताको कहा परेखो कीजे माँगत छाँछ न दूधो । सूर सूर अक्रूर गयो लै ब्याज निबेरत ऊधो ॥ ७८ ॥ राग सारंग ॥ मधुकर समुझि कहो किन बात । काहेको हियरा सु लगावत उठि न इहांते जात ॥ जेहि उर वसत यशोदा नंदन निर्गुण कहा समात । कत भटकत डोलत कुसुमनि सँग तुम कित पातन पात । यद्यपि सकल वेलि वन विहरत जाइ वसत जलजात । सूरदास ब्रज मिलवत आए दासीकी कुशलात ॥ ७९ ॥ राग धनाश्री ॥ तुमतो अपनेही मुख झूठे । निर्गुण छवि हरि विनु को पावै ज्यों आँगुरी अँगूठे ॥ निकट रहत पुनि दूरि बतावत द्वौरस माहँ अपूछे । दुइ तरंग दुइ नाव पाँव धरि ते कहि कवनन मूठे ॥ हमसों मिले वर्ष द्वादश दिन चारिक तुमसों टूठे।सूर आपने प्राणन खेलै ऊधो खेलें रूठे ॥८०॥राग मलार॥ऊधो बूझति है अनुमान। देखिअत नाहिं जतन जीवेको इत विरहा उत ज्ञान ॥ इतहि चंद्र चंदन समीर मिलि लागत अनल निधान । उत निर्गुण अवलोकन मनको कठिन विरोधी प्रान ॥ इत भूषण भै करत अंगको सब निशि जागि बिहान । उत कहुँ सुनत समाधि कछू नहिं गूढ कठिनको जान ॥ दुसह दुराइ विपत्ति वियोगहि नृप बडे दोउ समान।को राखै सूरज यहि अवसर कमलनैन विन आन ॥८१॥ राग सारंग ॥ मधुकर राख योगकी बात । कहि कहि कथा श्याम सुंदरकी शीतल करि सब गात ॥ जेइ निर्गुण गुण हीन गनैगो सुनि सुंदरि अलसात । दीरघ नदी नाउ कागरकी को देखो चढिजात ॥ हम तन हेरि चितै अपनो पट देखि पसारहि लात।सूरदास वा सगुण वासिकें कैसे कल्प बिहात॥८२॥राग मलार॥ योगसों कौने हरि पाए। निज आज्ञा तप कियो विधाता कब रस रास खिलाए ॥ योग युक्ति शंकर आराधी परम तत्त्व नवलाए।भुज धरि ग्रीव कबहिं नँदनंदन हिलिमिलि कल सुर गाए ॥ बगदालभ्य महाऋपि कबहूँ तृण छाया न कराए । वर्षत दुखित जानि मन मोहन कब गिरिवर कर छाए ॥ अति तप पुंज विप्र दुर्वासा दूर्वा तृण नित खाए । चक्र सुदर्शन तपत महामुनि कब मुख अनल समाए ॥ बहु तप कियो मार्कंडे द्विज आय सिंधु भरमाए । सतकल्प बीती कब कहि

हरि वरुणपासमों ल्याए॥भक्त विरह कातर करुणामय वेद निरंतर गाए। कोहै योग सुनत इह ऊधो सूर श्याम मन भाए॥८३॥राग मलार॥हमारे कौन वेदाबिधि साधै। बटुआ झोरी दंड अधारा इतनेनको आराधै॥ जाको कहूँ थाह नहिं पइअत अगम अपार अगाधै। गिरिधर लाल छबीलेको यह कहा पठायो पाधै॥ सुनु मधुकर जिन सर्वस चाख्यो सों अब क्यों सचु पावत आधै। सूरदास मणि श्याम छांडिकै घुँघुचि गांठिको बांधै॥८४॥ जिहि तनु गोकुलनाथ भज्यो। ऊधो हरि बिछुरत ते विरहिनी सो तनु तबहिं तज्यो॥ अब या औरै सृष्टि बिरहकी बकत बाइ बौरानी। तिनसों उत्तर कहा देतहौ तुमतो पूरण ज्ञानी॥ जब स्यंदन चढि गमन कियो हरि फिरि चितयो गोपाल। तबहीं परम कृतज्ञ प्राणसँग उठिलागे तेहिकाल॥ अब औसान घटत कहि कैसे उपजी मन परतीति। सूरदास कछु कहत न आवै कठिन विरहकी रीति॥८५॥राग गौरी॥मधुप बार बार काहेको और कथा कहत। प्रभु-की प्रतीति गए नाहिंन कछु रहत॥ पवन तेज अरु आकाश पृथ्वी अरु पान्यो। तामें ते नंद-नँदन कहा घालि सान्यो॥ कमलनैन श्याम सुंदर कौन नहिं भावै। ताको तू गुप्तकैरै आनै कछु गावै॥ सूरसो नंद प्रभु दयालु लीला वपुधारी। निर्गुणते सगुणभए संतन हितकारी॥८६॥ राग सारंग॥ कहिये तासों जो होइ विवेकी। तुमतौ अलि उनहींके संगी अपनीगौंके टेकी॥ ऐसीको ढाली वैसीहै तोसों मूँड चढावै॥ झूँठी बात तुसीसी बिन कन फटकत हाथ न आवै॥ अजहूं लौं अंगहु नहिं छाँडत यह मूरख मतिभोरे। मन क्रम वचन सूर अभ्यंतर नँदनंदन हितमोरे॥ ८७॥ कहिये तासों जो होइ विवेकी। एतो अलि उनहींके संगी अपने बातके टेकी॥ ऐसी बात कहौ तुम उनसों जो नहिं जानै बूझै। सूरदास प्रभु नंदनँदन बिनु देखे और न सूझै॥८८॥ राग कान्हरो॥ ऊधो निर्गुण कहत हो तुमही धौं नेहु। सगुणमूरति नंदनँदन हमहिं आनिय देहु॥ अगमपंथ परमकठिन गमन तहां नाहिं। सनकादिक भूलि फिरे अबला कहां जाहिं। पंचतनु परमकान्ह अपर कैसे जानी। मन वच करि कर्मरहित वेदहुकी वानी॥ कहिए जो निबहिबे अकथन कहुँ सोही। सूर श्याम मुख सु चंद्रलीनी युवतिमोही॥ ८९॥ ऊधो सूधे नेकु निहारो। हम अबलनिको सिखवन आए सुनो सयान तिहारो॥ निर्गुण कहो कहा कहियतहै तुम निर्गुण अतिभारी। सेवत सगुण श्यामसुंदरको मुक्तिलही हम चारी॥ हम सालोक्य स्वरूप सरो ज्यो रहत समीप सहाई। सो तजि कहत औरकी औरै तुम अलि वडे अदाई॥ हम मूरख तुम बडे चतुरहो बहुत कहा अब कहिए। वेही काज फिरत भटकत कत अब मारग निज गहिए॥ अहो अज्ञान कतहि उपदेशत ज्ञानरूप हमही। निशिदिन ध्यान सूर प्रभुको अलि देखति जित तितही॥ ९०॥ ऊधो कोउ नाहिंन अधिकारी॥ लै न जाहु यह योग आपनो कत तुम होत दुखारी॥ यह तौ वेद उपनि-षदको मत महापुरुष व्रतधारी। हम अवला अहीरि व्रजवासिनि देख्यो हृदय बिचारी॥ को है सुनत कहत कासोंहो कौन कथा अनुसारी।सूर श्याम सँगजात भयो मन अहि कांचुली उतारी॥९१॥ ॥ राग केदारो॥ ऊधो राखिए यह बात। कहतहो अनगढिन अनहद सुनत हो चपिजात॥ योग अलि कूष्मांड जैसो अजा मुख न समात। वार बार न भाषिए कोउ अमृत तजि विष खात॥ नैन प्यासे रूप जलके दिये नाहिंन अघात। सूर प्रभु मन हरचो जबलौं तौलगि तनु कुशलात॥९२॥ ॥ राग सारंग॥ ऊधो औरै कथा कहो। तजिये ज्ञान सुनत तावत तनु वरगहि मौन रहो॥ रुचि द्रुम प्रीति रीति नैनन जल सींचि ध्यान झर लागी। ताके प्रेम सुफल मुनि श्रावत श्याम सुरँग अनुरागी॥ ग्रीषम अलि आए उपजी व्रज कठिन योग रवि हेरो। वन मुरझात सूरको राखै

महानेह विन तेरो ॥९३॥ राग सोरठा ॥ कै तुमसों छूटैं लरि ऊधो कै रहिए गहि मौन । इक हम जरैं जरे पर जारत बोलहु वकुची कौन ॥ एक अंग मिले दोऊ क्वारे काको मन पतिआए । तुमसी होइ सो तुमसों बोलै लीने योगहि आए ॥ जा काहूको योग चाहिए सो लै भस्म लगावै । जिन उर ध्यान नंद नंदनको तहँ क्यों निर्गुण भावै ॥ कहो सँदेश सूरके प्रभुको यह निर्गुण अँधियारो । अपनो बोयो आप लोनिये तुम आपहि निरुवारो ॥ ९४ ॥ राग केदारो ॥ कहा रस वरिआईकी प्रीति । जो न गडै उर अंतर ऊधो भुसपर कीसी भीति ॥ नैन वैन अरु हृदय मिलत तब वाढत प्रेम प्रतीत । ए दोउ हंस होत जब सन्मुख लेत मनहिं मन जीति ॥ ऊधो यहै सँदेशो कहियो मधुवन कैसी रीति । सूरदास सोई जन जानै गई जनु हिमही वीति ॥ ९५ ॥ राग मलार ॥ जोपै इहै प्रीतिकी वात । तौ ऊधो तुम निकट रहत कत निरखि साँवरे गात ॥ वात कहत भरिलेत नैनजल सुरत करत अकुलात । जो घट घट हरि रहत निरंतर तौ कतही मधुपुरी जात ॥ सगुण प्रीति ऐसी प्रतिपालत दुखित होत तनुगात । तुमः निर्गुणसों प्रीति करनको सूर समुझि पछितात ॥ ९६ ॥ राग सारंग ॥ ऊधोजनि मधुवन तन देखो । कछुक दिवस औरो ब्रज वसिकै जन्म सफल करि लेखो ॥ कहा जाइ लेइहो ह्वाँ जामें राजकाजकी वात । वालकिशोर कुमार निरखि मुख घर पर माखनखात ॥ तुम निर्गुण नित कहत निरंतर निगम नेति यह नीति।प्रगट रूप मदमत्त नयन क्यों छाँडे दरशन प्रीति ॥ शिव विरंचि सनकादिक मुनि मन संतन जाको धावत । सूरदास प्रभु गोप सुतन सँग गोधन वृंद चरावत ॥ ९७ ॥ राग मलार ॥ ऊधो जीवन धन हम पैए । सोइ होइ जो रचो विधाता औरन दोष लगैए ॥ कीजै कहा कहत नहिं आवै सोचि हृदय पछितैए । मोहनसों वर कुविजा पायो हमको योग वतैए ॥ आज्ञा होइ सोइ पै कीजे विनती इहै सुनैए । सूरदास प्रभु तृपा वढी अति दरशन सुधा पियैए ॥ ९८ ॥ राग केदारो ॥ ऊधो खरी जरी हरिके झूलनकी । कुंज किलोल किये वनही वन सुधि विसरी उन वोलनकी ॥ अरु यह प्रीति कहाँलौं वरणौं या यमुना जल कूलनकी ॥ वह छवि छाके अतिहैं दोऊ लोचन वहि गहि झूलनकी । सूरदास प्रभु दरशन दीजे अरु लीजे अनकूलनकी॥९९॥ राग सारंग ॥ हरि विनु यह विधिहै ब्रज रहियत । पर पीरहि तुम जानत ऊधो ताते तुमसों कहियत ॥ चंदन चंद्र किरनि पावक सम मिलि मिलिहै तन दहियत । जागत याम जात युगयामिनि जतन नहीं निरवहियत ॥ वासरहू या विरह सिंधुको कैसेहु पार न लहियत । फिरि फिरि वहइ अवधि अवलंवन वूडत ज्यों तृणगहियत ॥ एक जु हरि दरशनकी आशा तालगि यहु दुख सहियत । मन क्रम वचन शपथ सुन सूरज और नहीं कछु चहियत ॥३२००॥ हरि विनु यह विधिहै ब्रज जीजतु । पंकज वरपि वरपि उर ऊपर सारंग रिपु जल भीजतु ॥ वायस अजा शब्द की मिलवानि याही दुख तनु छीजतु । चन्द न चौथे जात गोपिनको मधुप परखि यश लीजतु॥तारापति अरिके शिर ठाढी निमिप चैन नहिं कीजतु । सूरदास प्रभु वेगि कृपाकरि प्रगट दरशमोहि दीजतु ॥ १ ॥ हमारे धन जीवन कृष्णमुकुंद । परमउदार कृपानिधि कोमल पूरण परमानंद ॥ निठुर वचन सुनि फटतु हियो यों रहु रे अलि मतिमंद । ब्रज युवतिनको सुगम जनावत योग युक्ति सुखद्वंद ॥ यहुतौ जाइ उनै उपदेशो सनकादिक स्वच्छंद । वारक हमें दरश देखरावो सूर श्याम नँदनंद ॥ २ ॥ राग सारंग ॥ वै वातैं यमुनातीरकी । कवहुँक सुरति करतहै मधुकर हरन हमारे चीरकी ॥ लीने वसन देखि ऊँचे द्रुम रवकि चढनि वलवीरकी । हम ठाढी जलमाहिं गुसांई खरी जुडाई नीरकी ॥ दोऊ हाथ जोरिकै माँगो दोहाई नंद अहीरकी । सूरदास प्रभु सव सुखदाता

जानत हैं परपीरकी ॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥ अब हरि क्यों बसैं गोकुल गवई। बसत नगर नागर लोगनमें नई पहँचानि भई॥ इक हरि चतुर हुते पहिलेही अब बहुतै उन गुरु सिखई । हम सब गवँगँवारि जानि जड अधपर छाँडि दई ॥ ऊधो सुख जोवत कुबिजाको ब्रजवनिता सब बिसरि गई। याहीते चतुर सुजान सूर प्रभु औ ए ग्वाली सँग न लई॥ ४ ॥ राग गौरी॥ प्रेम न रुकत हमारे बूते। किहि गयंद बाँध्यो सुन मधुकर पद्मनालके काचे सूते॥ सोवत मनसिज आनि जगायो पठै सँदेश श्यामके दूते। विरह समुद्र सुखाइ कवन बिधि किरचक योग अग्निके लूते ॥ सुफलक सुत अरु तुम दोउ मिलि लै जैये मुक्ति हमारेहूते। चाहति मिलन सूरके प्रभुको क्यों पतियाहिं तुम्हारे धूते॥ ५ ॥ राग मलार॥ वै गोपाल गोकुलके वासी। ऐसी बातैं बहुतै सुनि सुनि लोग करत हैं हाँसी॥ मथि मथि सिंधु सुधासुर पोषे शंभुभए विष आसी। इमि हति कंसराज औरहिंदै आपु चले हैं दासी ॥ बिसरचो हमहिं बिरह दुख अपनो सुनत चाल ए रासी । जैसे ठग विलोकि गुप्त निधि प्रगट न परखै फांसी ॥ आरजपंथ छुडाइ गोपिका कुल मर्यादा नासी। आप करत सुख राज सूर प्रभु हमैं देत दुख गासी॥ ६॥ राग धनाश्री॥ इह कछु नाहिंन नेह नयो। अहो मधुप माधव सों इह व्रज बिधितें पहिले भयो॥ बीज मन माली मदन चुर आल वाल बयो। प्रेमपय सींचो पहिलही सुभग जीवरि दयो॥ इते श्रम तन श्यामसुंदर बिरवा विमल बढ्यो। मुरली सुख छबि पत्र शाखा हग दुरेफ चढचो॥कमल तजि तनु रचत नाहीं आकको आ- मोद। सूर जो गुण वचन परसत बिन गोपाल विनोद॥ ७॥ राग मलार॥ ऊधो अब यह समुझि भई। नँदनंदनके अंग अंग प्रति उपमा न्याइ दई॥ कुंतल कुटिल भँवर भामिनि वर मालति भुरै लई। तजत न गहरु कियो तन कपटी जानि निराश गई॥ आनन इंदु बरन संपुट तजि कर खेतें न नई। निर्मोही नवनेह कुमुदिनी अंतहु हेम मई ॥ तन घन सजल सेइ निशिबासर रटि रसना छिजई। सूर विवेक हीन चातक सुख बूँदै तौन श्रई ॥८॥ राग सारंग॥ ऐसो माई एक कोदको हेतु।जैसे बसन कुसुंभरंग मिलिकै नेक चटक पुनि श्वेत॥ जैसे करनि किसान वापुरो नौनौ बाहे देत। एतेहू पर नीर निठुर भयो उमँगि आपुही लेत॥ सब गोपी पूछहिं ऊधोको सुनियो बात सुचेत। सूर दास प्रभु जनते बिछुरे ज्यों कृत राई रेत॥ ९॥ राग सारंग॥सुख देखेकी कौन मिताई। जैसे कृपणहि दीन माँगनो लालच लीने करत बडाई॥ प्रीतम सो जो रहै एक रस निशिवासर बढि प्रेम सवा- ई। चितमहि और कपट अंतर्गति ज्यों फल खीर नीर चिक्नाई॥ तब वह करी नंदनंदन अलि वन वेली रसरास खिलाई। अब यह कितही दूरि मधुपुरी ज्यों उडि भँवर बेलि तजि जाई॥ योग सिखाए क्यों मन मानै क्यों व ओसकण प्यास बुझाई। सूरदास उदास भई हम पाखंड प्रीति उघरि निज आई ॥१०॥ राग मलार॥ मधुकर मन सुनि योग डरै। तुमहूँ चतुर कहावत अतिही इतनी न समुझि परै॥ और सुमन जो अनेक सुगंधिका शीतल रुचि जो करै। क्यों तुमको कहि बनै सरै ज्यों और सबै अनरै॥ दिनकर महाप्रताप पुंज वर सबको तेज हरै। क्यों न चकोर छाँडि मृग अंकहि वाको ध्यान धरै॥ उलटोइ ज्ञान सकल उपदेशत सुनि सुनि हृदय जरै। जंबू वृक्ष कहो क्यों लंपट फलवर अंबु फरै॥ मुक्ता अवधि मराल प्राणमैं अबलगि ताहि चरै। निघटत निपट सूर ज्यों जल बिनु व्याकुल मीन मरै॥११॥ राग आसावरी॥ ऊधो योग योग हम नाहीं। अबला सार ज्ञान कहा जानैं कैसे ध्यान धराहीं॥ ते ये मूँदन नैन कहत हैं हरि मूरति जामाहीं॥ ऐसे कथा कपटकी मधुकर हमते सुनी न जाहीं॥ श्रवण चीर अरु जटा बँधावहु ए दुख कौन

समाहीं ॥ चंदन तजि अंग भस्म बतावत विरह अनल अति दाहीं । योगी भरमत जेहि लगि भूले सोतो है अपु माहीं । सूर श्याम ते न्यारे न पल छिन ज्यों घटते परछाहीं ॥ ॥१२॥ राग मलार ॥ ऊधो कहिए बात जो हुती । जाहि ज्ञान सिखवन तुम आए सो कहो ब्रजमें को हुती ॥ अंतहु सिखवन सुनहु हमारी कहियत बात विचारी । फुरत न वचन कछू कहिवेको रहे वैन सो हारी ॥ देखियतहै करुणाकी मूरति सुनियतहै परपीरक । सोइ करो जो मिटै हृदयको दाहु परै उरसीरक ॥ राजपंथते टारि बतावत उज्ज्वल कुचल कुपैंडो । सूरदास सो समाइ कहांलौं अजा वदनमें कुम्हडो ॥ १३॥ राग सारंग ॥ हमतो नंदघोपके वासी । नाम गोपाल जाति कुल गोपक गोप गोपाल उपासी ॥ गिरिवरधारी गोधनचारी वृंदावन अभिलासी । राजानंद यशोदा रानी जलहि नदी यमुनासी ॥ मीत हमारे परममनोहर कमलनयन सुखरासी । सूरदास प्रभु कहौं कहांलौं अष्टसिद्धि नवनिधि दासी ॥ १४ ॥ राग सारंग॥ गोकुल सब गोपाल उपासी । जो गाहक साधनको ऊधो ते सब वसत ईशपुर कासी ॥ यद्यपि हरि हम तजी अनाथ करि तऊ रहति चरणन रसरासी । अपनी शीतलता नहिं तजई यद्यपि विधु भयो राहु गरासी ॥ किहि अपराध योग लिखि पठवत प्रेमभक्तिते करत उदासी । सूरदास सो कौन विरहिनी माँगि मुक्ति छाँडे गुणरासी॥१५॥राग मलार ॥ब्रज जन सकल श्यामव्रतधारी । बिना गोपाल और जेहि भावत ते कहिहैं व्यभिचारी ॥ योग मोट शिरबोझ आनि तुम कतधौं घोष उतारी । इतनिक दूरि जाहु चलि काशी जहां विकतहै प्यारी ॥ यह संदेश सुनै को मधुकर अतिमंडली अनन्य हमारी । जो रसरीति कही हरि हमसों सो क्यों जाति बिसारी ॥ महामुक्ति कोऊ नहिं बाँछै यदपि पदारथ चारी । सूरदास स्वामी मनमोहन मूरति की बलिहारी ॥१६॥राग धनाश्री॥ कहांलौं कीजै बहुत बडाई।अति अगाध मन अगम अगोचर मनसों तहाँ न जाई ॥ जाके रूप न रेख बरन वपु नाहिन संगत सखा सहाई । ता निर्गुण सों नेह निरंतर क्यों निबहै री माई ॥ जल विन तरंग भीति विन लेखन विन चेतहि चतुराई । या ब्रजमें कछु नहीं चाहहै ऊधो आनि सुनाई ॥ मन चुभि रह्यो माधुरी मूरति अंग अंग उरझाई । सुंदर श्याम कमलदल लोचन सूरदास सुखदाई॥१७॥राग नट॥ऊधो कछुक समुझि परी।तुम जु हमको योग ल्याए भली करनी करी ॥ इक विरह जरि रही हरिके सुनत अतिही जरी । जाहु जिनि अब लोन लावहु देखि तुमही डरी॥योगपाती दई तुम कर बडे चतुर हरी।सूरदास स्वामीके रँग रचि कहां धरैं गठरी ॥ ॥१८॥राग कान्हरो॥कहत अलि तेरे सुख बातौ।कमलनयनकी कपट कहानी सुनन भयो तनुतातौ॥कत ब्रजराज काज गोकुलको सबै किए गहिनातौ॥तब नाहिं निमिष वियोग सहति उर करत काम नहिं हातौ।मधुवन जाइ कान्ह कुविजा संग मति भूलहु सुधि सातौ॥ज्यों गज यूथ नेक नहिं बिछुरत शरद मदन मदमातौ । सूर श्याम विन हम सब अवला या तन कहाँ समातौ॥१९॥राग धनाश्री॥तुम अलि कमलनयनके साथी । देखत भले काजको जैसे होत धूमके हाथी ॥ सुंदर श्याम गंड मद लंकृत सम श्रम जलकन छाजै । योग ज्ञान दोउ दशन भोग रद करनी कुंभ विराजै ॥ जब शिशुहुते कुमार असुर हति याते प्रीतम जानें । अब भए जाइ विवश दासीके ब्रजते प्रगट पराने ॥ करिके कपट तुच्छ विद्यावश भगन करत अँग भटज्यों । सूर अवधि पढि मंत्र सजीवन मरिजीवति है नटज्यों ॥ ॥ २० ॥ राग सारंग ॥ ऐसो सुनियत द्वै वैशाख । जानत हौं जीवन काहेको जतन करौ जो लाख ॥ मृगमद मिलै कपूर कुमकुमा केसरि मलया खाख । जरति अग्निमें ज्यों घृत नायो तनु जरिहै है राख ॥ ता ऊपर लिखि योग पठावत खाहु नींब तजि दाख । सूरदास ऊधोकी बतियां उडि

उडि बैठी ताख ॥२१॥राग नट॥ जानी ऊधोकी चतुराई। बार बार तुम कहत अध्यातम पावत कौन बडाई ॥ जो तुम कहत अगाध अगोचर हरिरस तजो न जाई। कौतुक कहत उकुति अपनीतें कौ तुम कहत कहाई ॥ बाहर भीतर ध्यान सगुन बिनु सुनियत दूरि भलाई। सूरदास प्रभु विरहजरी हे बिनु पावक दौ लाई॥ २२॥ राग सारंग॥ जानी अलि ऊधो चतुराई। ब्रजमंडलकी दशा देखिकै कथा सबै बिसराई ॥ परमप्रिया पथ देखन पठए कहि गति योग बनाई। इनको आन भाव बिछुरनके लै बाजनि हम लाई॥ कहा कह्यो हरि कहा सुन्यो इनि कहि लीला सुखगाई। यद्यपि विबुध बडे यदुकुलके नेक न बढी बडाई॥ गुणमहि मंत्र सदा श्रीपतिके मुक्तिपुरी अब गाई। नहिं देखी ब्रजवनकी लीला सूर श्याम लरिकाई॥२३॥ राग मलार॥ इहिविधि पावस सदा हमारे। पूरव पवन श्वास उर ऊरध आनि जुरे एकठारे॥ बादर श्याम श्वेत नयननमें वरषि आँसु जलढारे। अरुन प्रकाश पलक द्रुति दामिनि गर्जन नाम पिप्यारे॥ चातक दादुर मोर प्रगट ब्रज वसत निरंतर धारे। ऊधो ए तबते अटके जब श्याम रहे हिततारे॥ कहिए काहि सुनैं कत कोऊ या ब्रजके व्यवहारे। तुमहींसों कहिकै पछितानी सूर विरहके धारे॥ २४॥ ॥ राग केदारो॥ जोपै कोऊ मधुबनहूंलों जाइ। पतियां लिखौ श्यामसुंदरको कंकन देहौं ताहि॥ नयननीर सारंग रिपु भीजत युग सम रैनि बिहाइ। अब यह भवन भयो पावक सम हरि बिन मोहिं न सुहाइ॥ पछिली प्रीति कहा भई ऊधो मिलते वेणु बजाइ। सूरदास प्रभु बेगि मिलहु किन पुनि कहा करोगे आइ॥ २५॥ राग बिलावल॥ ऊधो कोकिल कूजत कानन। तुम हमको उपदेश करतहो भस्म लगावन आनन॥ औरौ सींगी सखी संगलै टेरत चढे पपानन। बहुरो आइ पपीहा केमिस मदन दहत निज बानन॥ हमतौ निपट अहीरि बावरी योग दीजिए जानन। कहा कथत मोसीके आगे जानत नानी नानन॥ तुमतौ हमहिं सिखावन आए मुक्ति होइ निर्वानन। सूर मुक्ति कैसे पूजतिहै वा मुरलीके तानन॥ २६॥ राग सारंग॥ ऊधो हरिके अवरै ढंग। जहां न अनंग रस रूप नेहको तहाँ दई गति जो अनंग॥ आपु विषमता तजि दोऊ सम भै बानक ललित त्रिभंग। मानों मरिचि देखि तनु भूली भूपथ सुरभि सुरंग॥ तजे कुसुमकर कंटक वन भ्रमि नहिं कामो भ्रूभंग। कनकवेलि सतदल शर मंडित दृढ तर लता लवंग॥ श्यामा सदन बिसारि भजे पुर चंचल नारि पलंग॥ ते सुख बहुत बहुत पावहिंगे जे करिहैं अँगसंग। काकेहोहिं जो नहिं गोकुलके सूरज प्रभु श्रीरंग॥२७॥राग आसावरी॥ऊधो हम दोउ कठिन परी॥जो जीवैं तो मुनि जड ज्ञानी तनु तजि रूप हरी॥ गुण गावैं तौ शुक सनकादिक धाय लीला फरी। आशा अवधि बिचारिहैं तौ धर्म न ब्रज सुंदरी॥ सखीमंडली सब जो सयानी विरहा प्रेम भरी। शोक समुद्र तरिबेको नौका जे सुख मुरली धरी॥ निशिवासर निरंकुश अति बड मातो मदन करी। ढाहत धाम सूर प्रभु चितवत गमन करै कैसे री॥ २८॥ राग केदारो॥ ऊधो सुनिहो बात नईसी। प्रेमबानिकी चोट कठिनहै लागी होइ कहो कत ऐसी॥ तुमहिं बिचारि कहा कहि दीजे हो आनि कहत रे जैसी। जानै कहा बाँझ व्यावर दुख जातक जनहि न पीरहै कैसी॥ हम बावरी न आनि बौरावत कहत न तुम्हैं बूझिए ऐसी। सूरदास न्याइ कुबिजाको सरवसु लेइ हमारो वैसी॥ ॥२९॥ यशोमति वचन॥केदारो॥ ऊधो उदित भई सब दुखकी करनी। ब्रजवेली सब सूखन लागीं बात कही नँदघरनी॥ कमल वदन कुँभिलात सबनके गौवन छाँडी तृणके चरनी। सुख संपति वीति गयो सब नीकी लागी री अलि अनजलकी झरनी॥ देखो चारौ चन्द्रमुख शीतल बिन दरशन क्यों मिटती जरनी। सुत सनेह समुझति सु सूर प्रभु फिरि फिरि यशुमति परती धरनी॥ ३०॥

राग सारंग ॥ ऊधो पूंछति ते बावरी । गोकुल तजो कुँवरि कारण नेह न होति जो रावरी॥जैसो बीज बोइए तैसो लुनिए लोग कहत सब बावरी । सूरदास प्रभु पारस परसै लोहो कनक बराबरी ॥ ३१ ॥ राग गौरी॥मधुकर देखो दीनदशा।इतनी बातैं तुमसों कहतिहैं जो तम श्याम सखा ॥ जे कारेते सबै कुटिलहैं मृतगनके जोहता । तुम विरहिनी विरह दुख जानत कही यह गूढ कथा ॥ मन वशभयो श्रवण सुनि मुरली कुंजनि कुंज बसी । अबतौ एक न भए सूर प्रभु घर बन लोग हँसी ॥ ३२ ॥ राग सारंग॥जैसे कियो तुम्हारे प्रभु अलि तैसो भयो ततकाल । ग्रंथित सूत धरत तेहिं ग्रीवा जहां धरते वनमाल ॥ टेरि देत श्रीदामा द्रुम चढि सरस वचन गोपाल । ते अब श्रवण अक्रूर प्रमुख सब कहत कंस कुशलात ॥ कोमल नील कुटिल अलकावलि रेखी राजत भाल । ऐसे शर त्यागे सुन सूरज फंदा न्याइ मराल॥३३॥राग मलार॥विरचि मन बहुरि राचो आइ।टूटी जुरै बहुत जतननि करि तऊ दोष नहिं जाइ॥ कपट हेतुकी प्रीति निरंतर नोथि चोखाइ गाइ । दूध फाटि जैसे भइ कांजी कौन स्वाद करि खाइ॥केरा पासिं ज्यों वेरि निरंतर हालत दुख देंजाई । स्वाति बूँद जैसे परै फनिक मुख परत विषैह्वैजाइ ॥ एती केती तुमरी उनकी कहत बनाइ बनाइ । सूरदास दिगंबर पुरते रजक कहा व्योसाइ ॥ ३४ ॥ ऊधो तुमहो अति बडभागी । अपरस रहत सनेह तगाते नाहिंन मन अनुरागी ॥ पुरइनि पात रहत जल भीतर तारस देह न दागी । ज्यों जल माँह तेलकी गागरि बूँदन ताको लागी ॥ प्रीतिनदी महँ पाँव न बोरचो दृष्टि न रूप परागी । सूरदास अबला हम भोरी गुरचेंटी ज्यों पागी॥ ३५ ॥ राग धनाश्री ॥ हमते हरि कबहीन उदास।रास खिलाइ पिआइ अधररस क्यों बिसरत व्रजवास ॥ तुमसों प्रेमकथाको कहिबो मनहु काटिबो घास । बहिरो तान स्वाद कहा जानै गूँगो खात मिठास ॥ सुन री सखी बहुरि हरि ऐहैं वह सुख बढ़ै विलास । सूरदास ऊधो हमको अब भए ते रहोमास॥३६॥तेरो बुरो न कोई मानै । रसकी बात मधुप नीरस सुनि रसिक होइ सो जानै ॥ दादुर बसै निकट कमलनके जन्म न रस पहिचानै।अलि अनुराग उडत मन बाँध्यो कही सुनत नहिं कानै ॥ सरिता चली मिलन सागरको कूल सबै द्रुम भानै । कायर बकै लोभते भागै लरै सो सूर बखानै ॥ ३७ ॥ हम सब जानत हरिकी घातैं । तुम जो कहत वो राज्य करत नहिं जानत हौ कछु कातैं ॥ मारे कंस सुरन सुख दीनो असुर जरे पिर पातै । उग्रसेन बैठारि सिंहासन लोग कहत कुलनातै ॥ तपते राज राजते आगे तुम सब समुझत बातै । सूर श्याम यहि भाँति सयाने हमहींको वडु सातैं ॥ ३८ ॥राग नट ॥ऊधो है तू हरिके हितको । हम निर्गुण तबहीं ते जान्यो गुण मेट्यो जब पितुको ॥ समुझहु नेक श्रवण दै सुनिए प्रगट बखानो नितको।कूप रत्नघट कहु क्यों निकसै बिनुगुन बहुतै वितको॥पूरणतातो तबहीं बूडी संग गए लै चितको । हमतौ खगहि सूर सुनि पटपद लोक बटाऊ हितको ॥३९॥राग काफी ॥ आयो घोष बडो व्यापारी । लादि पोष गुणज्ञान योगकी व्रजमें आनि उतारी॥फाटक दैकै हाटक भागत भोरो निपट सुधारी । धुरहीते खोटो खायोहै लिये फिरत शिर भारी ॥ इनके कहे कौन डहकावै ऐसी कौन अनारी । अपनो दूध छाँडि को पीवै खारे कूपको वारी ॥ ऊधो जाहु सवेरे ह्यांते बेगि गहर जनि लावहु। सुख माँगो पैहो सूरज प्रभु साहुहि आनि दिखावहु॥४०॥राग धनाश्री॥ऊधो योग कहा है की जतु। ओढिअतहै की डसिअतहै कीधौं कहियत कीधौं जु पतीजत ॥ की कछु भलो खेलवनी सुंदरि की कछु भूषण नीको । हमरे नँदनंदन जो कहियत जीवन जीवन जीको । तुम जो कहत हरि निगम निरंतर निगम नेति हैं रीति । प्रगट रूपकी राशि मनोहर क्यों छाँडे परतीति ॥ गाइ चरावन गए घोषते

अबहीं है फिरि आवत। सोई सूर सहाय हमारे वेणु रसाल बजावत॥४१॥ राग मलार॥ मधुकर जानो ज्ञान तिहारो। जाने कहा राजलीलाकी अंत अहीर बिचारो॥ एक भली हम सबै सयानी एक सयानी सों मनमानों। लाज लए प्रभु आवत नाहीं है जो रहे खिसिआनो॥ लै आवो हम कछू न कैहैं मिलिहैं प्राणपियारे। व्याहो बीस धरो दश कुबिजा अंतहु श्याम हमारे॥ सुन री सखी कहूं नाहिं कहिए माधो आवन दीजै। सूरदास प्रभु आनि मिलै जो हाँसी करि करि लीजै॥४२॥ मधुकर तुमहीं श्याम सखाई। पालागौं यह दोष बकसियो सन्मुख करत ढिठाई॥ कौने रंक संपदा बिलसी सोवत सपने पाई। धाम धुआँको कहो कवनकै कवनै धाम उठाई॥ अरु कनके माला कर अपने कौने गूँथ बनाई। कहि कागजकी तरनी कीन्हें कौन तरचो सरजाई॥ किन अकाशते तोरि तुरैआ आनि धरी घरमाई। और कौन अबलन ब्रत धारचो योग समाधि लगाई॥ इहि उर आनि रूप देखेकी आगि उठै अगिआई। सुन ऊधो तुम फिरि फिरि आवत यामें कौन बडाई॥ सूरदास प्रभु ब्रज युवतिनको प्रेम कह्यो नाहिं जाई॥४३॥ राग गौरी॥ मनकी मनहीं मांझ रही। कहिए जाई कौनपै ऊधो नाहिन परत कही॥ अवधि अधार आश आवनकी तन मन व्यथा सही। चाहति हुती गोहारि जितहिते तितहिते धार वही॥ अब इन योग सँदेशन सुनि सुनि बिरहिनि बिरह दही। सूरदास अब धीरैं धरहि क्यों मर्यादा न लही॥४४॥ राग गौरी॥ तुमहिं दोष नहिं हम अति वोरी। रूप निरखि दृग लागेहैं ढोरी॥ चित चोराइ लियो मूरति सो री। सुभग कलेवर कुमकुम खोरी॥ गुंजमाल उर पीत पिछोरी। यहिते जो नेकुलु बुधियो री॥ गहत सोइ जो समात अको री। सूर श्यामसों कहियो एक ठोरी॥ यह उपदेश सुनहि ते ओरी॥ ४५॥ राग नट॥ श्याम तुम ठगसों प्रीति करी। काटे नाक पछोरे पूँछत ताते सब सुधरी॥ ह्यां ऊधो काहेको आए कौनसी अटक परी। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिनु सब पाती उघरी॥४६॥ राग सारंग॥ ऊधो बनत न राज भयो। नए गोपाल नई कुबिजा बनीं नौतन नेह ठयो॥ नए सखा जोरे यादवकुल अरु नृपकंस हयो। नव तन नारि नए पुर कीन्हों तिन अपनाइ लयो॥ बिसरे रास बिलास कुंज सब अपनी जात गयो। सूरदास प्रभु बहुत बटोरी दिन दिन होत नयो॥ ४७॥ अब तुम कापर कपट बनावत। नाहिंन कंस कान्ह नहिं गोकुल को पठवत कहा आवत॥ जिन मोहन बंसी वारिज करि सुख तन सींचि बढायो। सो पुनि ऊधो कर कारनको योग कुठार पठायो॥ इतनो तो मानुपही जानै जिनकेहैं मति थोरी। धोखेही बिरवा लगाइकै काटत नाहिं बहोरी॥ वै प्रवीन ऊधो अति नागर जानि परस्पर प्रेम। कैसे कै पठवत वै आवत टारनको हित नेम॥ स्वर्गहु गए कंस अपराधी परचो हमारे खोज। दृष्टिते टारि ध्यानहुते टारत वाऊ सवको चोज॥ विद्यमान आए जे छल करि तिन अपनो फल पायो। ह्याँहै हृदय सूर श्याम प्रभुजी बनत न स्वांग बनायो॥४८॥ अपने स्वारथके सब कोऊ। चुप करि रहो मधुप सुन लंपट तुम देखे अरु ओऊ॥ जो कछु कहो कह्यो चाहतहो करि निरवारो सोऊ। अब मेरे मन ऐसी पटपद होवे होहु सु होऊ॥ तब कत रास रच्यो वृंदावन ज्यों ज्ञानीहू तोऊ। लीने योग फिरत युवतिनमें वडे सुपथ तुम दोऊ॥ छुटिगयो मान परेखो रे अलि हृदय हतो बहु जोऊ। सूरदास प्रभु गोकुल बिसरो चित चिंतामणि खोऊ॥ ४९॥ राग नट॥ कहत कत परदेशीकी बात॥ मंदिर अरध अवधि वदी हमसों हरि अहार चलिजात॥ शशि रिपु वरष सूर रिपु युगवर हर रिपु किए फिरे घांत। मघ पंचक लै गए श्याम घन आइ बनी यह बात॥ नक्षत्र वेद ग्रह जोरि अर्ध करि को वरजै हम खात। सूरदास प्रभु तुम

हि मिलनको कर मीडत पछितात ॥ ९० ॥ राग मलार ॥ ऊधो जानी न हरि यह बात । बैठे रथ पर चढे भोरही हँसत मधुपुरी जात ॥ सुफलकसुत मिलि ढँग ठान्यो है साधे विषमन घात । जेत क बडे धर्मध्वजा नामी संग प्रेम पथ पात ॥ यदुकुलमें दोउ संत सबै कहैं तिनके ए उतपात । एकन हरे प्राण गोकुलके या पर योग कुशलात ॥ यद्यपि सूर प्रताप श्यामको दानव दूरि: दुरात । तद्यपि भवन भाव नहिं ब्रज विनु खोजो दीपे सात ॥ ९१ ॥ हम अलि कैसेकै पतिआहि । वचन तुम्हारे हृदय न आवत क्योंकर धीर धराहिं ॥ वपु आकार भेष नहिं जाको कौन ठौर मन लागे । हौं करिरही कंठमें मनिआ निर्गुण कहा रसहि ते काज । सूरदास सगुणमिलि मोहन रोम रोम सुखराज ॥ ९२ ॥ राग मलार ॥ मधुकर जानतहैं सबकोऊ । जैसे तुम अरु सखा तिहारे गुणन आगरे दोऊ ॥ सुफलकसुत कारे नख शिखते कारे तुम अरु वोऊ । सरवस हरन करत अपनेसुख कोउ कितो गुण होऊ ॥ प्रेम कृपण थोरे वित वपुरी उवरत नाहिंन सोऊ । सूर सनेह करै जो तुमसों सो पुनि आपु विगोऊ ॥ ९३ ॥ मधुकर तुम रसलंपट लोग । कमलकोशनित रहत निरंतर हमहिं सिखावत योग ॥ अपने काज फिरत वन अंतर निमिष नहीं अकुलात । पुहुप गए बहुरी वह्लिनके नेक निकट नहिं जात ॥ तुम चंचल अरु चोर सकल अँग वातनको पतिआत । सूर विधाता धन्य रचे एइ मधुप साँवरे गात ॥ ९४ ॥ राग सारंग ॥ मधुप रावरीये पहिंचानि । वासर समय अनत उठि बैठत पुहुपनकी तजि कानि ॥ वाटिका वहु विपिन जिनके एक वै कुम्हिलानि । तहां अगणित फूल फूले कौन ताके हानि ॥ काम पावक जरत छाती लोन लायो आनि । योग पाती हाथ दीनी विष लगायो सानि ॥ शीशकी मणि हरी जाकी कौन जामें वानि । निठुरहो तुम सूरके प्रभु ब्रज तज्यो यह जानि ॥ ९५ ॥ को कहिहै हरिसों वात हमारी । यहतो हम तवते जिय जानी जवते भए मधुप अधिकारी ॥ एकै प्रकृति एकई तवगति जे मनसिज असितहि क्यों भावै । प्रगटे नित नवकंज मनोहर ब्रजकी सरक करन कत आवै ॥ कुटिल खान चंपक चंचल मति सवही ते जु निनारी । ताअलिकी संगति वसि मधुपुरी सूरदास प्रभु सुरति विसारी ॥ ९६ ॥ मधुकर तुम अति चतुर सुजान । जे पहिले मनरँगे श्यामरँग अव न चढे रँग आन ॥ ए दोऊ लोचन विराटके विधि किये एक समान । भेद चकोर कियो ताहूमें विधु प्रीतम रिपुभान ॥ विरहा भेद भयो पालागों तुमही पूरण ज्ञान । दादुल जलविन जिवै पवन भख मीन तजै हठिप्रान ॥ वारिजवदन नैन मेरे पटपद कव करिहैं मधुपान । सूरदास गोपिन परतिज्ञा छुवहिं न योग विरान ॥ ९७ ॥ ऊधो विरहो प्रेम करै । ज्यों विन पुट पट गहत न रंगको रंगनरसै परै ॥ ज्यों धर देह वीज अंकुर गिरि तौ सतफरानि फरै । ज्यों घट अनल दहत तन अपनो पुनि पय अमी भरै ॥ ज्यों रण शूर सहत शर सन्मुख तौ रवि रथहि ररै । सूर गोपाल प्रेम पथ चलि करि क्यों दुख सुख न डरै ॥ ९८ ॥ राग मलार ॥ मधुकर प्रीति किए पछितानी । हम जान्यो ऐसेहि निवहैगी उन कछु औरै ठानी ॥ वा मोहनको कौन पतीजै बोलत मधुरी वानी । हमको लिखि लिखि योग पठावत आपु करत रजधानी ॥ अवतो सेज सुहाइ न हरि विन चितवत रैनि विहानी । जवते गमन कियो मधुवनको नैनन वरषत पानी ॥ कहियो जाइ श्याम सुंदरको अंतर्गतिकी जानी । सूरदास प्रभु मिलिकै विछुरे ताते भई दिवानी ॥ ९९ ॥ हमरे हरि हारि लकी लकरी । मन क्रम वचन नंदनंदन उर यह दृढ करि पकरी ॥ जागत सोवत स्वप्न दिवस निशि कान्ह कान्ह जकरी । सुनत योग लागत हमें ऐसो ज्यों करुई ककरी ॥ सुतौ व्याधि हमको लै आए देखी सुनि न करी । यह तौ सूर ताहि लै सौंपो जिनके मन चकरी ॥ १०० ॥ राग सारंग ॥ बात

T

हमारी मानो जौतौ। आवन कह्यो हुतो हमजीवति ताते उनही कौतौ॥एक बोलकै लीन्हें सोइ अपनी खोई देवति। ताते खरी मरत इहि ठाहर वाही वचनहि सेवति ॥ इतनो कह्यो करो धरि राखो योग आपनो घरको। पैज खैंचि मेटन आए हो तनक उजारो खरको ॥ नँदनंदन लै गए हमारी सब ब्रज कुलकी ऊब। सूर श्याम तजि औरै सूझै ज्यों खेरे की दूब॥ ६१ ॥ राग मलार ॥ श्याम मुख देखेही परतीति। जो तुम कोटि जतनकरि सिखवहु योग ध्यानकी रीति ॥ नाहिंन कछू सयान ज्ञान महि यह हम कैसे मानै। कहो कहा गहिए अनुभवको कैसे उरमें आनै॥ एही मन इक इक वह मूरति भृंगी कीट समानै। सूर शपथदै पूँछो ऊधो यह ब्रज लोग सयानै ॥ ६२ ॥ रागसारंग ॥ हरिहैं राजनीति पढिआए। समुझी बात कहत मधुकरसे समाचार सब पाए॥ पहिलेही अति चतुर हुते अरु गुरु सब ग्रंथ दिखाए। बाढी बुद्धि कहत युवतिनको योग सँदेश पठाए॥ आगेहूंके लोग भलेहो परहित डोलत धाए। अब अपने मन फेरि पाइहैं चलत जो होहिं पराए॥ ते क्यों नीति करैं आपुन जिन औरन अपथ छडाए। राजधर्म सुनि इहै सूर जिहि प्रजा न जाहिं सताए॥ ६३ ॥ बारक मिलत कहाहै होत। इतनेहुँ मान कहा उहि कुबिजा पाएहैं परिपोत ॥ इतनिक दूरि भए कछु औरै बिसरचो गोकुल गोत। कैसे जियहि वदन बिनु देखे विरहिनि विरहिनि सोत ॥ आए योग देन अबलनिको सुरभिकंठ वृष जोत। सूरदास प्रभु तौ पै जीवहिं देखहिं रविहि उद्योत ॥ ६४ ॥ राग मलार ॥ मधुकर नाहिंन काज सँदेशो। इहि ब्रज कौने योग लिख्यो है कोटि जतन उपदेशो ॥ रविके उदय मिलन चकईको शशिके समय अँदेशो। चातक क्यों बन वसत बापुरो बधिकहि काज वधेसो ॥ नगर आहि नागर बिनु सूनो कौन काज बसिबेसो। सूर स्वभाव मिटै क्यों कारे फनिकहि काज डसेसो॥ ६५ ॥ ऊधो हम वह कैसे मानैं। धूत धौल लंपट जैसे हरि तैसे और न जानैं ॥ सुनत सँदेश अधिक तनु कंपत जानि कोउ डर तहाँ आनै। जैसे वधिक गँवहिते खेलत अंत धनुहिया तानै। निर्गुणवचन कहहु जानि हमसों ऐसी करटि न कानै॥ सूरदास प्रभुकी हौं जानों और कहै औरै कछु ठानै॥ ६६ ॥ राग मलार ॥ ऊधो अब कछु कही न जाइ।रानीभई कूबरीदासी कांपै वरणी जाइ॥ जोइ जोइ मंत्र कहत कुबिजाहै सोइ सोइ लिखत बनाइ। अंत अहीर प्रीति दासीसों मिटत न सहज सुभाइ॥ छुटत नहीं गुण अवगुण जाको कीजै कोटि उपाइ।सूर सुभाइ तजै नाहिं कारो जो कीजै कोटि उपाइ॥६७॥राग मलार।॥बदलेको बदलो लै जाहु। उनकी एक हमारी दोइ तुम बडे जनैओ आहु ॥ तुम अलि जानि अतिहि भोरे संसारो चाहत दाव। अपनी बेर मुकुरके भागत हिए चौगुने चाव ॥ अब तुम साखि बँधो तहाँ जाई काहेको पछिताहु । सूरदास वह न्याउ निबेरहु हम तुम दोऊ साहु ॥६८॥राग मलार॥ ऊधोजी यहि ब्रज बिरह बढे। घर बाहर सरिता सर वन उपवन देखहु द्रुमन चढे॥ दिन अरु रैनि सधूम भवनकै दिशि दिशि तिमिर मढे। द्वंदकरत अति प्रबल बलीबल जीवन अनल उढे॥ जरि नाहिं भई भसम तेही छिन जब हरि वचन रढे। सूरदास विपरीति विधातै यहितनु फेरि ठढे॥ ६९ ॥ ऊधो जो तुम वात कही । ताको कछुअ न उत्तर आवै समुझि विचारि रही ॥ पालागौं तुमही बूझतहौं तुमपर बुधि उमही । कैसे शीतल होइ पवन जल पिए वियोग दही॥ कुबिजासों पढि तुमहिं पठाए नागर नवल लही । अब जोई पद देहि कृपाकरि सोइ हम करैं सही ॥ बिछुरत विरह अग्नि नाहीं जरी नैनन जलन वही। अब सुनि शूल सहति सब सूरज कुलमर्याद ढही॥ ७० ॥ योग मिटि पतिआहु न्योहारु॥ मधुवन बसि मधुरिपु सुनु मधुकर छाँडे ब्रज आभारु॥ धरणीधर गिरिधर कर धरिकै मुरली धर

सुखसारु। अब लिखि योग सँदेशो पठवत व्यापक अगम अपारु॥ हाँसी अरु दुख सुनहु सखी सुठि श्रवण दशा संचारु। सूर प्राणतन तजत न याते सुमिरि अवधि आधारु॥७१॥ राग सारंग॥ मधुकर जो हरि कही सो करो। राजकाज चित दियो साँवरे गोकुल क्यों बिसरो॥ जेजे घोष रहे हम तेहिलों संतत सेवा कीनी। बारक कबहुँ उलूखल बाँधे उहै बाँधि जिय लीनी॥ जो हमसों कोटि करैं ब्रज नायक बहुतै राजकुमारी। तौ एई नंद कहा मिलिहैं और यशोमतिसी महतारी॥ गोवर्धन कहुँ गोप वृंद सचु कहा गोरस सच पैबो॥ सूरदास अब सोई करिए बहुरि गोकुलहि ऐबो॥७२॥ राग सोरठ॥ ऊधो हरि यह कहा बिचारी। सदा समीप रहत वृंदावन करत विहार विहारी॥ एकतौ रंग रचे कुबिजाके बिसरि गए सब नारी। कछु इक मंत्र कियो उन दासी तेहि विनोद अधिकारी॥ दिन दश और रहो तुम इहां देखो दशा बिचारी। प्राण रहतहैं आशा लागे कब आवैं गिरिधारी॥ तुमतौ कहत योगहै नीको कहो कवन बिधि कीजै। हम तन ध्यान नंदनंदनको निरखिनिरखिसो जीजै॥ सुंदर श्याम कंठ वैजंती माथे मुकुट विराजै। कमलनैन मकराकृत कुंडल देखतही भव भाजै॥ याते योग न आवै मनमें तू नीके करि राखि। सूरदास स्वामीके आगे निगम पुकारत साखि॥ ७३॥ राग बिहागरो॥ मधुकर बहुरि न कबहुँ मिलैं हरि। कमलनयन मिलवेके कारण अपनो सो जतन रही बहुतै करि॥ जेजे पथिक जात मधुवनको तेहि सो व्यथा कहति पाँयन परि। कहे न प्रगट करौ यदुपतिसों दुसह दोषकी अवधि गई ढरि॥ धीर न धरत प्रेम व्याकुल मन लेत उसाँस नीर लोचन भरि। सूरदास तनु थकित भयो अति इह वियोग सायर न सकत तरि॥७४॥ राग सारंग॥ मधुकर अब भयो नेह बिरानी। बाहर हेत हातो कहवावत भीतर काज सयानी॥ ज्यों शुक पिंजर माहँ उचारत ज्यों ज्यों कहत बखानी। छूटतही उडि मिले अपुन कुल प्रीत न पल ठहरानी॥ यद्यपि मन नहिं तजत मनोहर तद्यपि कपटी जानी। सूरदास प्रभु कवन काजको माखी मधु लपटानी॥ ७५॥ राग सोरठ॥ हरिते भलो सुपति सीताको। जाके विरह जतन ए कीने सिंधु कियो नीताको॥ लंका जारि सकल रिपु मारे देखतही सुखताको। दूत हाथ उन लिखि जो पठयो ज्ञान कह्यो गीताको॥ तिनको कहा परेखो कीजै कुबिजाके मीताको। चढे सेज सो तो सुधि बिसरी जो सब सुख चीताको॥ चढि चढि सेज सातहू सिंधू बिसरी जो चीताको॥ करि अति कृपा योग लिखि पठयो देखो डराइ ताको। सूरदास प्रभु हम कहा जानैं अब लोभी बनिताको॥ ७६॥ राग नट॥ ऊधो हम ब्रजनाथ बिसारी। जबते गमन कियो मथुराको चितवत लोचन हारी॥ महाप्रलय तब काहेको राखी इंद्र त्रास भवटारी। छूटत नहीं त्रास हृदयते तब न मुई अब मारी॥ अवधि बदी हरि ते सब बीते आवन कहि जो सिधारी। सूरदास प्रभु कबधौं मिलैंगे लैगए प्राण हमारी॥ ७७॥ राग मलार॥ प्रीति उन देखनको उत जानत। तौ यों बात कहत अलि ऐसे व्यथा नहीं पहिचानत॥ जे गोपाल गृह गृह ब्रजमें ते चोर दूध दधि खात। ते अब दुखित देखि ब्रजवासिन निठुर भए ते जात॥ सूर कुटिलता जे सुनियतहैं लोग पुराणनि गावत। नख शिखलों विषरूप बसतपै मधुवन नाम कहावत॥ ७८॥ तू अलि बात नहीं कहि जानत। निर्गुण कथा बनाइ कहत नहिं विरह व्यथा उर आनत॥ प्रफुलित कमल देखि उठि धावत सब कुल संग लिए। और सुमन सौं बंधु याचतही फाटि न जात हिए॥ चातक स्वाति बूँद जो गाहक सदा रहत इकरूप। कहा जानै दादुर जलपरत सागर औ सम कूप॥ बात कहौ सजि ऐसी जासों जाके जिय तुम भावहु॥ सुर वचन जैसो उपदेशत तैसोही तुम पावहु॥७९॥ सारंग॥ कुटिल बिनु और न कोई आनै। तौ ब्रजराज प्रेमकी बातैं ताके हाथ पठावै॥ प्रीति

पुरातन सुमिरि सांवरे सुरति सँदेशो दीनी। तैं अलि कहत औरकी औरै श्रुति मतिकी उर लीनी ॥ ये हो सखा कहे नहिं मानत गहे योगकी टेक। ऐसे सूर बहुत मधुबनमें कहा दोषहै एक ॥ ८० ॥ राग धनाश्री ॥ बतिअन सबकोऊ समुझावै। ऐसो कोउ नाहिनै प्रीतम लै ब्रजनाथ मिलावै ॥ आयो दूत कपटको बासी निर्गुण ज्ञान बतावै। हमारे सखा श्याम मनोहर नैनन भरि न देखावै ॥ ज्ञान ध्यानको मर्म न जानै चतुरहि चतुर कहावै। सूरजदास सबै काहूको अपनो ही हित भावै ॥ ८१ ॥ राग मलार ॥ ऊधो क्यों बिसरत वह नेह। हमरे हृदय आनि नँदनंदन राचि राचि कीन्हें गेह ॥ एक दिवस गई गाइ दुहावन तहां जो वरषो मेह ॥ लिये वोढाय कामरी मोहन निजकरि मान्यो देह ॥ अब हमको लिखि लिखि पठवत है योग युक्ति तुम लेहु। सूरदास बिरही क्यों जीवै कौन सयानप येहु ॥ ८२ ॥ ऊधो नंदको गोपाल गिरिधर गयो तृण जो तोर। मीन जलकी प्रीति कीनी नाहिं निबही वोर ॥ अबकै जब हम दरश पावैं देहिं लाख करोर। हरिसों हीरा खोइ कैहौं रहि समुद्र ढँढोर ॥ ऊधो हमारो कछु दोष नाहीं वै प्रभु निकट कठोर। हौं जपौं तुम नाम निशि दिन जैसे चंद्रचकोर ॥ हम दासी बिनमोलकी ऊधो ज्यों गुड्डी वश डौर। सूरको प्रभु दरश दीजै नहीं मनसा और ॥ ८३ ॥ राग सोरठ ॥ ऊधो अबरै कान्ह भए। जबते यह ब्रज छाँडि मधुपुरी कुबिजा धाम गए ॥ कै वह प्रीति रीति गोकुलबसि दुख सुख प्रीति निबाहत। अब इह करत वियोग देह हम सुनत काम दव डाहत ॥ जहां स्वारथ हारि गुण साँवरो निर्गुण कपट सुनावत। सूर सुमिरि ब्रजनाथ आपने कत न परेखो आवत ॥ ८४ ॥ राग मारू ॥ ऊधो जो तुम हमहिं बतायो। सो हम निपट कठिनई करि करि या मनको समुझायो ॥ योग याचना जबहिं अंगहगहि तबहीं है सो ल्यायो। भटक परचो वोहितके खग ज्यों फिरि हरिहीपै आयो ॥ अबकै तौ सोई उपदेशो जेहि जिय जाइ जिआयो। बारक मिलैं सूरके प्रभु तौ करौं आपनो भायो ॥ ८५ ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो मन मानेकी बात। दाख छोहारा छाँडि अमृतफल विषकीरा विषखात ॥ जो चकोरको देइ कपूर कोउ ताजि अंगारहि अघात। मधुप करत घरकोरे काठमें बँधत कमलके पात ॥ ज्यों पतंग हित जानि आपनो दीपकसों लपटात। सूरदास जाको मन जासों सोई ताहि सुहात ॥ ८६ ॥ राग सोरठ ॥ बातैं कहत सयाने कीसी। कपट तिहारे प्रगट देखिअत ज्यों जलना ऐसीसी ॥ होंतो कहति तिहारे हितकी एतेमो कत भरमति। हौंहू मया तिहारे हितकी कछु व्यौरोसों मरमति ॥ छाइ वसाइ गए सुफलकसुत नेकहु लागी बारन। सूर कृपाकरि आए ऊधो तापर लागे टारन ॥ ८७ राग बिलावल ॥ ऊधो हम ऐसे गोपाल बिनु। सबहीये जैसे हरु ओ तनु ॥ सोचत गनत जाइ यहि बिधि दिनु। युगनिशि होत हमहिं एको छिनु ॥ कहियो सूर संदेश श्याम तिनु। जिनि राखो प्रभु पोच वचन ऋनु ॥ हरि कित भये ब्रजके चोर। तुम्हरे मधुप वियोग उनके मदनकी झकझोर ॥ ८८ ॥ इक कमल पर धरैं गज रिपु एक कमल पर शशिरिपु जोर। दोऊ कमल एक कमल ऊपर जगी एकटक भोर ॥ इक सखी मिलि हँसति पूछति खैंचि करकी कोर। तज मुवाइ सु भखत नाहीं निरखि उनकी ओर। बिरस रासनि सुरति करि करि नैन बहुजल तोरि। तीन त्रिवली मनो सरिता मिली सागर छोर ॥ पट कंध अधरनि माल ऊपर अजयारिपुकी घोर। सूर अबलनि मरत ज्यावो मिलो नंदकिशोर ॥ ८९ ॥ राग सारंग ॥ मधुकर तोहिं कौनसों हेतु। जोपै चढत रंगतौ ऊपर त्यों पै होव श्यामता सेतु ॥ मोहन माणिनिडार मोलीते करि आए मुख प्रीति। अतिशठ ढीठ वसीठ श्यामको हमैं सुनावत गीति ॥ जो कारिख तनु मोटो चाहत तो कमल वदन तनु चाहि। सूर गोपाल सुधारसमें मिलि आनन संग समाहि ॥ ९० ॥ राग सूहो ॥ ऊधो सुनौ वृथा तनुतात।

पारधी मारि भाल क्यों काढै है उरझी हृदयगात ॥ ऐसे बधिक मृगन मारनको माथे बांधे पात। सुंदर श्याम नाद बंसीके बँधी काम शर घात।यह तौ पीर बिरहिनी जानै बहुत जियै दिनरात। सूर अबै न आपने जानै क्यों पूँछै कुशलात ॥९१॥ राग नट ॥ जोपै मोहिं कृष्ण जिय भावहि। तो सुन मधुप यशोदानंदन अबहीं गोकुल आवहिं ॥ जिन नैनन मोहन मुख निरख्यो निशिदिन रूप बिचारयो। ते नैना जो रहत सूने गृह प्रीति न हृदय बिदारयो ॥ जेहि तनु आसन शयन संग सुख हरि समीप रुचि मानी। जिहि तनु बिरह न छूटत सुमिरि गुण नेकहु व्यथा न जानी ॥ जिनि श्रवणन सुनि वचन मनोहर मुरली कल मुख बाजति। तिन श्रवणन हरि सुनत मधुपुरी देत सँदेशन लाजति ॥ अतिप्रचंड यह अंड महाभट जाहि सबै जग जानत। सो मदहीन दीनह्वै बपुको कोपि धनुप सर तानत ॥ सर सौरभ शशि अनिल त्रिविध गुण वैसिय प्रकृति निवाहत। विपम बिरह निज जानि मानिमिति तौ या तनुहि न दाहत ॥ वन बिलास ब्रजवास रास रस देखि देखि दुख पावत। सूरदास बहुरौ वियोग गति कुकवि निलज ह्वै गावत ॥ ९२ ॥ राग धनाश्री॥अब हरि औरहि रंग राचे।तुम सम सखा श्यामसुंदरके परम सयानप काचे ॥ बालापनते निकट रहतही सुन्यो न एक पखानो। जैसे बास बसतहै कोऊ तैसो हो तुम सयानो ॥ अरु अपने मुख तुम जु कहतहो प्रभु सबही भरिपूर। आवागमन करतहौ कापै को लागत को दूर ॥ अरु उपमा पटतर लै दीजै ते सब उनहिंन लायक। जोपै अलख रह्यो चाहत तौ बादि भए ब्रजनायक ॥ अरु जो जतन करहुगे हमको ते सब हमहिं अलेखैं। सूर सुमनसा तव सुख मानै कमलनैन मुख देखैं॥ ९३ ॥ राग मलार ॥हरिबिनु जान लगे दिनही दिन। कैसेकै राखैं प्राण कान्ह बिन ॥ करत जतन कतहि छिनही छिन।सिंह कैसे जीभ धरे हरे तृण॥ जोपै नाहीं मानत प्रभु वचन ऋन। तौ का कहिए सूर श्याम सिन ॥९४॥ अब कोउ ऐसी बात कहो। छाँडहु सकुच मिलहु नँदनंदन हितकरि दुखन दहो ॥ तुम प्रभु समाधानके कारण पठए कहन सँदेश। अधिक आय आरति उपजाई मेटहु बिरह कलेश। इक तुम निकट रहत उनके अरु जानत सकल सुभाइ। सोई करहु प्रगट दरशन जेहि बेगि मिलैं यदुराइ ॥ हम किंकरी कमललोचनकी वशकीनी मृदुहास। सूरदास प्रभु क्यों बिसरतहैं नख शिख अंग प्रकाश ॥ ९५ ॥ इहै प्रकृति परिआई ऊधो अनुदिन या मन मेरे। जो कोउ कोटि जतन करौ कैसेहुँ फिरत नहीं मति फेरे ॥ जादिनते यशुदा गृह जनमें सुंदर यादवराई। तादिनते वा दरश परम बिनु और न कछू सुहाई ॥ क्रीडत हँसत कृपा अवलोकत छिन समान दिन जाते। परमतृति सबही अँग होती लोचन पै न अघाते ॥ जागत सोवत स्वप्न श्याम घन सुंदर तनु अति भावै। सुकहि सूर ता कमलनयन बिन बातन क्यों बनिआवै ॥ ९६ ॥ ऐसी नियत हृदये माँह। याहीमें सब बात बूझबी चतुर शिरोमणि नाह ॥ आवन कह्यो बहुत दिन लायो करी पाछिली गाह। हमहिं छाँडि कुबिजहि मन दीनों मेटि वेदकी राह ॥ एते पर लिखि योग पठावत सिद्ध बतावत थाह। सूर श्याम अब ब्रज किन आवहु दिन दश मानहु साह ॥९७॥ यहि डर बहुरि न गोकुल आए। सुन री सखी हमारी करनी समुझि मधुपुरी छाए ॥ आधीरातको उठि बालक सब मोहिं जगेहैं आइ। बिन पह्नव बन बहुरि पठैहैं मोहिं चरावन गाइ ॥ सूने भवन जाइ रोकत हो अघ चोरत नवनीत। पकरि यशोदा पै लइ जैहैं नाचहु गावहु गीत ॥ जानो मोहिं बहुरो बाँधेगी कै तब वचन सुनाइ। वै दुख सुमिरि सूर मनहीं मन बहुरि सहै को जाइ ॥ ९८॥ ऊधो वेदवचन परमान। कमल मुख पर नैन खंजन निरखि है को आन ॥ श्रीनिकेत समेत सब सुख रूप प्रगट निधान। अधर सुधा

पिआइ बिछुरे पठै दीनो ज्ञान ॥ ए नहीं हैं कृपालु केशव एहैं हिए समान । निकरि क्यों न गोपाल बोलत दुखिन के दुख जान ॥ रूप रेख न देखिए तहाँ मूठ सुमिरि भुलान । इनहि दंड अडारि हरि गुण योगजान बखान ॥ बीतराग सुजान योगिन भक्त जनन निवास । निगमबाणी मेटि कहि क्यों सकै सूरजदास ॥ ९९ ॥ आवन आवन कहि गए पै ऊधो अजहूं नहिं आए । इतनी दूरि गोपाल सँदेशन मधुपन दये पठाए ॥ चलत चितै मुसकाइकै मृदु वचन सुनाए । तेही ठग मोदक भए मनधीर न हरिं तन छूछो छिटकाए ॥ जगमोहन यदुनाथके गुण जानिहु पाए । मनहु सूर यहि लाजते घनश्याम सुंदर वर बहुरि न चरण देखाए ॥३४००॥ माधो मन मर्याद तजी । ज्यों गज मत्त जानि हरि तुमसों बात बिचारि सजी॥ माथे नहीं महावत सतगुरु अंकुश ध्यान कर टूटो । धावत अध अवनी आतुर तजि साकर सगुण सु छूटो ॥ इहै यूथ संग लए विहरत त्रिया काननहु माहिं । क्रोध सोच जलसों रतिमानी कामभक्ष हित जाहिं ॥ अयुत अधार नहीं कछु समुझत भ्रम गहि गुहारहै । सूर श्यामके हरि करुणामय कवनहि विरदु गहै ॥ १ ॥ राग नट ॥ सखी री पुरवनिता हम जानी । याहीते अनुमान करतहैं षटपदसे अगवानी ॥ अब तौ राज तहाँ सुनियतहै कुविजासी पटरानी । प्रथम ग्वाल गाइन सँग रहते भए छाँछके दानी ॥ अर्ध निशा ब्रजनारि संगलै वन वंसी लीला ठानी । मन हरि लियो बजाइ बाँसुरी अब होइ बैठे ज्ञानी ॥ महामच्छ मारत मन मोहन नाहीं समता आनी । सूरदास ए कलपतनैना कहै कौन अब बानी ॥ २ ॥ राग विलावल ॥ जिन कोई वशपरो बरिआए । सरबस दियो आपनो उनको तऊ न कछू कान्हके भाए ॥ सहज समाधि रहत योगी ज्यों मुद्रा जटा विभूति लगाए । राज करौ इह दान तिहारो जोपै देहु बहुत हरि ध्याए ॥ ना जानौं अब भलो मानिहै ऊधो नाचे गाए।सूरदास प्रभु दरशन कारण मानो फिरत धतूरा खाए॥ ॥३॥ राग मलार ॥ जोपै कोउ विरहिनको दुख जानै।तो तजि सगुण साँवरी मूरति कत उपदेशै ज्ञानै ॥ कुमुद चकोर मुदित विधु निरखत कहा करै लै भानै ॥ चातक सदा स्वातिको सेवक दुखित होत बिनपानै ॥ भवँर कुरंग काक कोयलको कविजन कपट बखानै । सूरदास जो सरवस दीजै कारे कृतहि न मानै ॥ ४ ॥ राग मलार ॥ श्याम बिनु क्यों जीवैं ब्रजवासी । इहि घट प्राण रहत क्यों ऊधो बिछुरे कुंजबिलासी ॥ कुबिजा वर पायो मोहनसों मनो तपकियो काशी॥सूर श्यामको इहै परेखो इक दुख दूजी हाँसी॥५॥राग गौरी॥ऊधो कैसे जीवैं कमलनैन बिनु । तबतौ पलक लगत दुख पावत अब जो निरखि भरिजात अंग छिनु ॥ जो ऊजर खेरेके देवनको पूजै को मानै । तो हम बिनु गोपाल भए ऊधो कठिन प्रीतिको जानै ॥ तुमते होइ करो सो ऊधो हम अबला बलहीन । सूर वदन देखे हम जीवैं ज्यों जलभीतर मीन॥६॥राग धनाश्री॥ लरिकाईको प्रेम कहो अलि कैसे छूटत । कहा करौं ब्रजनाथ चरित अंतर्गति लूटत ॥ वह चितवन वह चाल मनोहर वह मुसुक्यानि जो मंद ध्वनि गावन । नटवर भेप नंदनंदनको वह विनोद जोबनको आवन ॥चरणकमलकी सौंह करतहौं इह संदेश मोहिं विपसों लावत । सूरदास मोहिं पलक न विसरत मोहन मूरति सोवत जागत ॥ ७ ॥ उद्धव वचन राग धनाश्री ॥ यह उपदेश कह्योहै माधो । करि बिचार सन्मुखह्वै साधो ॥ इंगला पिंगला सुषमना नारी । शून्यो सहजमें बसहिं मुरारी ॥ ब्रह्मभाव करि मैं सब देखो । अलख निरंजन ही को लेखो ॥ पद्मासन इक मन चित ल्यावो । नैन मूँदि अंतर्गति ध्यावो ॥ हृदयकमलमें ज्योतिप्रकाशी । सो अच्युत अविगति अविनाशी ॥ यहिप्रकार विप मत्त मतारिये । योगपंथ क्रम क्रम अनुसरिए ॥ दुसह सँदेश सुनत ब्रजबाला । मुरछि परी धरणी

T

वेहाला ॥ अरे मधुप लंपट अनिआई । यह संदेश कत कहैं कन्हाई ॥ नंदभवनमें सदाविराजै । नटवर भेष सदा हरि राजै ॥ रासविलास करैं वृंदावन । बिच गोपी बिच कान्ह श्यामघन ॥ अलि आयोहै योग सिखावन । देखिप्रीति लागे शिर नावन ॥ भवँरगीत जो दिन दिन गावै । ब्रह्मानंद परमपद पावै ॥ सूर योगकी कथा वहाई । शुद्ध भक्ति गोपी जन पाई ॥ सांचो मतो जो जिहि विधि धावै । तैसो भाव हरि हिय भरि पावै ॥ ८ ॥ अथ गोपी वचन॥राग धनाश्री॥इहां हरि जी बहु क्रीडा करी । सो तो चितते जात न टरी ॥ इहां पय पीवत बकी संहारी । शकट तृणावर्त इहां हरि मारी ॥ वत्सासुरको इहां निपात्यो । वका अघा इहां हरिजी घातो ॥ हलधर मारचो धेनुकको इहां । देखो ऊधो हत्यो प्रलंब जहां ॥ इहँते ब्रह्मा हमको गयो हरि । और किए हरि लगी न पलक घरि ॥ ते सब राखे संपति नरहरि । तब इहां ब्रह्मा आय अस्तुति करि ॥ इहां हरि काली उर्ग निकास्यो । लगेउ जरावन अनल सो नाश्यो॥वस्त्र हमारे हरि जु इहां हरि । कहां लगि कहिए जे कौतुक करि ॥ हरि हलधर इहां भोजन किए । विप्रतियनको अति सुख दिए ॥ इहां गोवर्धन कर हरि धारचो । मेघ वारिते हमैं निवारचो॥शरद निशामें रास रच्यो इहां । सो सुख हमपै वरण्यो जात कहां ॥ वृषभ असुर को इहां संहारचो । भ्रुम अरु केशी इहां पछारचो॥इहँ हरि खेलत आँखि मुचाई । कहां लगि बरनैं हरिलीला गाई ॥ सुनि सुनि ऊधो प्रेम मगन भयो । लोटत धर पर ज्ञान गर्व गयो ॥ निरखत ब्रज भूमि अतिसुख पावै । सूर प्रभूको पुनि पुनि गावै॥९॥राग धनाश्री॥ऊधो जो करि कृपा पाउँ धरत हरि तौ मैं तुमहिं जनावों । मौन गहे तुम बैठि रहोहो मुरली शब्द सुनावों ॥ अबहिं सिधारे बन गोचारन हो बैठी यश गावों । निशि आगम श्रीदामाके सँग नाचत प्रभुहि देखावों ॥ को जानै दुबिधा संकोचमें तुम डर निकट न आवें । तब इह द्वंद्व वढे पुनि दारुण सखियन प्राण छोडावें ॥ छिन न रहै नंदलाल इहां बिनु जो कोउ कोटि सिखावै । सूरदास ज्यों मनते मनसा अनत कहूं नहिं धावै॥१०॥पुनि उद्धव वचन॥राग सारंग॥मैं ब्रजवा सिनकी बलिहारी । जिनको संग सदाहै क्रीडत श्री गोबर्द्धन धारी॥किनहूके घर माखन चोरत किनहूंके सँग दानी । किनहूंके सँग धेनु चरावत हरिकी अकथ कहानी ॥ किनहूंके सँग यमुनाके तट बंसी टेर सुनावत । सूरदास बलि बलि चरणनकी इह सुख मोहिं नित भावत ॥११॥ रागसारंग ॥ हों इहि मोरनकी बलिहारी । बलिहारी वा बाँस वंशकी बंसीसी सुकुमारी । सदा रहतहै करज श्यामके नेकहु होत न न्यारी ॥ बलिहारी वा कुंजजातकी उपजी जगत उजियारी । सदा रहत हृदय मोहनके कवहूँ टरत न टारी ॥ बलिहारी कुल शैल सर्व बिधि कहत कालिंदि दुलारी । निशि दिन कान्ह अंग आली गण आपुनहूं भई कारी ॥ बलिहो वृंदावनके भूमिहि सो तो भागकि सारी । सूरदास प्रभु नांगे पाँयन दिनप्रति गैया चारी ॥१२॥ ॥ अथ गोपी वचन ॥ राग मारू ॥ अलि तुम जाहु फिरि वहि देश । चीर फारि करिहौं भगौंहौं शिखनि शिखि लवलेश ॥ भाल लोचन चंद्र चमकनि कठिन कंठहि सेस । नाद मुद्रा विभूति भारी करौ रावर भेस । वहां जाइ सँदेश कहियो जटा धारैं केश । कौन कारण नाथ छाँडी सूर इहै अँदेश ॥ ॥ १३ ॥ राग मलार ॥ हमपर हेतु किए रहिवो । वा ब्रजको व्यवहार सखा तुम हरिसों सब कहिवो ॥ देखे जात अपनी इन अँखिअन या तनको दहिवो । बरनौं कहा कथा या तनुकी हिरदेको सहिवो ॥ तब न कियो प्रहार प्राणनिको फिरि फिरि क्यों चहिवो । अब न देह जरिजाइ सूर इन नैननको वहिवो ॥ १४ ॥ अपने जिय सुरति किए रहिवो । ऊधो हरिसों इहै बीनती समो पाइ कहिवो ॥ घोप बसतकी चूक हमारी कछू न चित गहिवो । परमदीन यदुनाथ जानिकै गुण विचारि

T

सहिबा ॥ अबकीबेर दयालु दरशदै दुखकी राशि दहिबो । सूर श्याम हम कहँ कहाँ लग वचन लाज बहिबो ॥ १५ ॥ राग कल्याण ॥ यदुपतिको सँदेश सखी री कैसेकै कहौं । बिनहीं कहे आपनेहि मनमें कबलग शूल सहौं ॥ जो कछु बात बनाऊं चितमें रचि पचि सोचि रहौं । मुख आनत ऊधो तन चितवत नवहु बिचार बहों ॥ सो कछु सीख देहु मोहिं सजनी जाते धीर गहों । सूरदास प्रभुके सेवकसों बिनती करि निबहों ॥ १६ ॥ राग बिलावल ॥ कर कंकनते भुज ठाढ भई ॥ मधुबन चलत श्याम मनमोहन आवन अवधि जु निकट दई ॥ जो अति पंथ मनावत शंकर निशिवासर मो गनत गई । पाती लिखत बिरह तनु व्याकुल कागर ह्वै गयो नीर मई । ऊधो सुखके वचनन कहियो हरिकी शूल नितप्रति नई । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको बिरह वियोगिनि बिलक भई ॥ १७ ॥ राग कल्याण ॥ कहियो सुख सँदेश हाथलै दीजो पाती । समयपाइ ब्रजबात चलाई सुखही माँझ सुहाती ॥ हम प्रतीत करि सरवस अरप्यो गन्यो नहीं दिनराती । नँदनंदन यह जुगत न होई लैजु रहे मनु थाती ॥ जो तव साधि दीज तौ कोऊ तो अब कत पछताती । सूरदास प्रभु मुकुर जानती तौ सँग लीन्हें जाती ॥ १८ ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो नँद नंदनसों इतनी कहियो । यद्यपि ब्रज अनाथ करि डारचो तदपि सुरति चित किये रहियो ॥ तिनकी तोर करहु जिनि हमसों एक बीसकी लाजनि बहिबो । गुण अवगुणन देखि नाहिं कीजतु दासन दासकी इतनी सहियो ॥ तुम बिनप्राण त्याग हम करिहैं यह अवलंब न सुपनेहु लहियो । सूरदास प्रभु लिखिदे पठयो कहां योग कहा पियनंदहियो ॥ १९ ॥ राग नट ॥ ऊधो इतनी जाइ कहो । सबै बिरहिनी पाँइ लागति हैं मथुरा कान्ह रहो ॥ भूलिहु जिनि आवहिं यहि गोकुल तप्त रैनि ज्यों चंद । सुंदर वदन श्याम कोमलतनु क्यों सहिहैं नँदनंद ॥ मधुकर मोर प्रबल पिक चातक वन उपवन चढि बोलत । मनहुँ सिंहकी गर्ज सुनत गो वत्स दुखित तनु डोलत ॥ आसन भये अनल बिष अहि सम भूषण विविध विहार । जित जित फिरत दुसह द्रुम द्रुम प्रति धनुप धरे मनुमार ॥ तुमहो संत सदा उपकारी जानतहौ सब रीति । सूरदास ब्रजनाथ बचै तौ ज्यों नहिं आवै ईति ॥२०॥ राग मलार ॥ मधुकर इतनी कहियहु जाइ । अति कृश गात भई ए तुम बिनु परमदुखारी गाइ ॥ जलसमूह बरषति दोउ आँखैं हूँकति लीने नाउँ । जहां तहां गोदोहन कीनो सूँघति सोई ठाउँ ॥ परति पछार खाइ छिनही छिन अति आतुरह्वै दीन । मानहु सूर काढि डारीहै वारि मध्यते मीन ॥२१॥ राग नट ॥ तुम बिनु हम अनाथ ब्रजबासी । इतनो सँदेशो कहियो ऊधो कमलनैन बिनु त्रासी ॥ जादिन ते तुम हमसों बिछुरे भूँख नींद सब नासी । विह्वल विकल कलहू न परत तनु ज्यों जल मीन निकासी ॥ गोपी ग्वाल बाल बृंदावन खग मृग फिरत उदासी । सबई प्राण तज्यो चाहतहैं को करवत को कासी ॥ अंचल जोरे करत बीनती मिलिबेको सबदासी । हमरो प्राण घातह्वै निबरे तुम्हरे जाने हाँसी ॥ मधुकर कुसुम न तजत सखी री छाँडि सकल अविनाशी । सूर श्याम बिन यह वन सूनो शशि बिनु रैनि निरासी ॥ २२ ॥ राग धनाश्री ॥ सबै करति मनु हारि ऊधो कहियो हो जैसे गोकुल आवै । दिन दश रहे सु भली कीन्ही अब जानि गहरु लगावै ॥ नहिंन सोहात कछू हरि तुम बिनु कानन भवन न भावै । धेनु विकल सो चरत नहीं तृण बछा न पीवन धावै ॥ देखत अपनी आँखि तुमहिं तन और कहा बात न समुझावैं । सूरदास प्रभु कठिन हीन तन कत अब वै ब्रजनाथ कहावैं ॥२३॥ राग गौरी ॥ ऊधो हरि वेगहि देहु पठाइ । नँदनंदन दरशन बिनु रटि मरौं ब्रज अकुलाइ ॥ मातु यशुमति सहित ब्रजपति परे धरणि मुरझाइ । अति बिकल तनु

प्राणत्यागत करै कछु गति आइ ॥ सकल सुरभी यूथ दिनप्रति रुदति पुर दिश धाइ । जहांजहां दुहि वन चराइ मरति तहां बिललाइ ॥ परमप्यारी शरद राधिका लई गृह दुख छाइ । तजत चक्र नवक्र चखविनु करै कोटि उपाइ ॥ योगपदलै देहु योगिहि हमहिं योग मिलाइ । मधुप बिछुरे वारि मीनहि अनत कहा सोहाइ ॥ आजु जेहि विधि श्याम आवैं कहो तेहिबिधि जाइ । सूरदास विरह व्रज जन जरत लेहु बुझाइ ॥ २४ ॥ राग जैतश्री ॥ अलि मलीन वृषभानु कुमारी । हरिश्रम जल अंतर तनु भीजे तालालच न धुआवत सारी ॥ अधोमुख रहति ऊरध नहिं चितवति ज्यों गथहारे थकित जूथ आरी । छूटे चिहुर वदन कुम्हिलाने ज्यों नलिनी हिमकरकी मारी ॥ हरि सँदेश सुनि सहज मृतक भई एक विरहिनि दूजे अलिजारी । सूर श्याम विन यों जीवतिहै व्रजवनिता सब श्याम दुलारी ॥ २५ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो देखेही व्रज जात । जाइ कहियो श्यामसों यों विरहके उतपात ॥ नैनन कछू न सूझई अरु श्रवण कछू न सोहात । श्याम विन सब व्रजहि सूनो दुसह सरवन घात ॥ आइ वौ तौ आइयौं हरि बहुरि शरीर समात। सूर प्रभु पछिताहुगे तुम अंतहू गए गात ॥२६॥ राग मलार॥ हरिजीसों कहियो हो जैसे गोकुल आवहिं । दिन दश रहे भली कीनी वहा अव जिनि गहर लगावहिं॥नाहिंन कछू सुहात तुमहिं विनु कानन भवन न भावहि । बाल विलख मुख गौ न चरति तृण बछ पय पियन न धावहि ॥ देखत अपनी अँखिअन ऊधो हम कहि कहा जनावहिं । सूर श्याम विनु तपत रैनि दिन मिले भलेहि सचु पावहिं ॥ २७ ॥ राग बिहागरो ॥ ऊधो तुमहिं श्यामकी सौंहै । मुख देखत कहियो तुम उनसों जित तित लगी मदनकी दौंहै ॥ जो मन योग जुगुति आराधै सो मनतो सबको उन पैहै । जैसे बसन तजतहैं पंगन सो गति कान्ह करी हमकोंहै ॥ हम बावरी त्यों न चलि जान्यो ज्यों गज चलत आपनी गोंहै । सूरदास कपटी चित माधो कुबिजा मिलि कपटी की खोंहै ॥२८॥ राग केदारो ॥ ऊधो एक मेरी वात । बूझियो हर बाइ हरिसों प्रथम कहि कुशलात । तुम जो इह उपदेश पठायो आनि योग मन ज्ञान । सत्यहु सब वचन झूंठो मानिये मन न्यान॥और व्रज कहि दूसरोहू सुन्यो कहा बलवीर । जाहि बरजन इहां पठयो कारि हमारी पीर॥ आपु जबते गए मथुरा कहत तुमसों लोग । सहजही ता दिवसते हम भूलियो भय भोग ॥ प्रगट पति पितु मात प्रभु जन प्राण तुम आधीन । ज्यों चकोरहि संग चकोरी चित्त चंदहि लीन । रूप रसन सुगंध परसन रुचि न इंद्रिन आन॥होति हाँस न ताहि विपकी कियो जिन मधुपान । ह्वैगयो मन आपुही सब गिनत गुन गन ईश॥ज्ञानकी अज्ञान ऊधो तृणतोरि दीजै शीश॥बहुत कहा कहहि केशो राइ परम प्रवीन । सूर सुमत न छाँडिहै जहां जीवत जल बिन मीन ॥ २९ ॥ राग सारंग ॥ मधुकर कहियो सुचित सँदेशो । समै पाइ समुझाइ श्यामसों हम जिय बहुत अँदेशो ॥ एक बार रसरास हमारे मुरली मन जो हरेसो । तब उन वेणु बजाइ बोलाई अब निर्गुण उपदेशो ॥ और बार उनि योग जुगतिको भेद न कहो परेसो । तब पतिव्रत तुम करन कहत अब ऊखरो ज्ञान गडेसो ॥ और कहाँलौं हम कहैं ऊधो अबलनको दुख ऐसो । सूरदास इन पर हँसि मरियतु कुबिजाकेशव कैसो ॥ ३० ॥ पुनः ऊधोवचन ॥ राग नट ॥ अब अति चकितवंत मन मेरो । आयो हों निर्गुण उपदेशन भयो सगुनको चेरो ॥ मैं कछु ज्ञान कह्यो गीताको तुमहिं न परह्यो नेरो । अति अज्ञान जानिकै अपनो दूत भयो उन केरो ॥ निजजन जानि हरि इहां पठायो दीनो बोझ घनेरो।सूर मधुप उठि चले मधुपुरी बोरि योगको बेरो ॥ ॥३१॥गोपीवचन॥ राग केदारो ॥ ऊधो तिहारे मैं चरणन लागों बारक यहिव्रज करियो बिभावरी । निशि न नींद आवै दिवस न भोजन भावै चितवत मगभई दृष्टि झावरी ॥ एक श्याम विन कछू न भावै

T

रटत फिरत जैसे बकत बावरी। या वृंदाबन सघन श्याम बिनु तहां यमुना बहै सुभग सांवरी॥ लाज न होति उहै चलिजाती चलि न सकति आवै।बिरह ताब री। सूरदास प्रभु आनि मिलावहु ऊधो कीरति होइ रावरी॥३२॥अथ यशोमति संदेशउद्धवप्रति ॥ राग धनाश्री॥ऊधो तिहारे पाँइ लागतिहौं कहि यो श्यामसों इतनी बात। इतनी दूर बसत क्यों बिसरे अपनी जननी तात॥जादिनते मधुपुरी सिधारे श्याम मनोहर गात। तादिनते मेरे नैन पपीहा दरश प्यास अकुलात॥ जहाँ खेलनको ठौर तुम्हारे नंद देखि मुरझात।जो कबहूं उठिजात खरिकलौं गाइ दुहावन प्रात॥ दुहत देखि औरनके लरिका प्राण निकसि नहिं जात। सूरदास बहुरो कब देखों कोमल कर दधिखात॥३३॥ राग मलार॥ तब तुम मेरे काहेको आए। मथुरा क्यों न रहे यदुनंदन जोपै कान्ह देवकी जाए॥ दूध दही काहेको चोरयो काहेको बन गाइ चराए। अघ अरिष्ट काली नहिं काढयो विष जलते सब सखा जिआए। सूरदास लोगनके भोरए काहे कान्ह अब होत पराए॥३४॥ राग सोरठ॥ ऊधो हम ऐसे नहिं जानी। सुतके हेत मर्म नहिं पायो प्रगटे शारँगपानी॥ निशिवासर छातीसों लाई बालकलीला गाइ। ऐसे कबहूं भाग होहिंगे बहुरो गोद खेलाइ॥ को अब ग्वाल सखा सँग लीन्हें सांझ समै ब्रज आवै। को अब चोरि चोरि दधि खैहै मैया कवन बोलावै॥ बिदरत नाहिं बज्रकी छाती हरि वियोग क्यों सहिए। सूरदास अब नँदनंदन बिनु कहो कौन बिधि रहिए॥३५॥ राग धनाश्री॥ ऊधो जो अब कान्ह न ऐहैं। जिय जानौ अरु हृदय बिचारो हम अतिही दुख पैहैं॥ पूँछो जाइ कवनको ढोटा तब कहा उत्तर दैहैं॥ खायो खेले संग हमारे याको कहा बतैहैं॥ गोकुल अरु मथुराके वासी कहांलौं झूठे कैहैं। अब हम लिखि पठयो चाहत हैं उहां पत्त नहिं पैहैं॥ इन गायन चरवो छाँडो है जो नाहिं लाल चरैहैं।इतने पर नहिं मिलत सूर प्रभु फिरि पाछे पछितैहैं॥३६॥राग सारंग॥तबते छीन शरीर सुभाहु।आधो भोजन सुबल करतहै ग्वालनके उर दाहु॥ नंद गोप पिछवारे डोलत नैनन नीर प्रवाहु। आनँद मिट्यो मिटी सब लीला काहु न मन उत्साहु॥ एक बेर बहुरो ब्रज आवहु दूध पतूखी खाहु।सूर सुपथ गोकुल जो बैठहु उलटि मधुपुरी जाहु॥३७॥ ॥राग नट॥कहियो यशुमतिकी आशीस।जहाँ रहो तहां नंदलाडिलो जीवो कोटि वरीस॥मुरली दई दोहनी घृत भरि ऊधो धरि लई शीश। इह घृत तौ उनहीं सुरभिनको जो प्यारी जगदीश॥ ऊधो चलत सखा मिलि आए ग्वाल बाल दश बीश। अबके इहां ब्रज फेरि बसावो सूरदासके ईश॥३८॥अथ सखा वचन ॥राग बिलावल॥ऊधो देखतहो जैसे ब्रजवासी। लेत उसाँस नैन जल पूरित सुमिरि सुमिरि अविनासी॥ भूलि न उठत यशोदा जननी मनो भुअंगम डासी। छूटत नहीं प्राण क्यों अटके कठिन प्रेमकी फाँसी॥ आवत नहीं नंद मंदिरमें बढ्यो फिरत पनियासी। प्रेम न मिले धेनु दुर्बल भई श्याम बिरहकी त्रासी। गोपी ग्वाल सखा बालक सब कहूँ न सुनियत हासी।काहे दियो सूर सुख में दुख कपटी कान्ह लवासी॥ ३९॥उद्धववचन॥राग सारंग॥धन्य नंद धन यशुमति रानी।धन्य कान्ह प्रकटे सुखदानी॥धन्य ग्वाल धन्य धन्य गोपिका जेहि खेलाए शारँग पानी। धन्य ब्रज भूमि धन्य वृंदावन जहाँ अविनाशी आए॥ धन्य धन्य सूर आजु हमहूं जो तुम सब देखे आए॥ ४०॥ अथ दूसरी लीला ॥ भवँरगीत॥ गोपीवचन॥ राग आसावरी ॥छंद त्रिभंगी॥हरि रथ रतन जरयो अनूप दिशाते आवै। जेहि मग कृष्ण गयों तेहि मगते दर्शावै॥ वै मगते आवै सखन बोलावै देखो नैन बिचारी। मुकुट कुंडल तनु पीत बसन कोउ गोविंदकी अनुहारी॥ वैतो भूषण परखन लागी तब लगि निअरे आए। ऊधो जिय जानी मन कुँभिलानी कृष्ण संदेश पठाए॥ १॥ चली

चली पूछें कछु बातें। कहि कहि ऊधो हरि कुशलातें ॥ छंद ॥ कहि कुशलातें सांचीबातें आवन कह्यो हरि नाथै। के गरवाने, राजसभा अब जीवत हम न सुहाथै॥ ठाढी तनु कांपै टेरै झांकै बार बार अकुलाइ। अब जिय कछू कपट जिन राखो बूझें सौंह दिवाइ ॥ २ ॥ कहो ऊधो तुम क्यों ब्रज आए। तब हँसि कह्यो हम कृष्ण पठाए ॥ छंद ॥ कृष्ण पठाये तो ब्रज आए कहत मनोहर बानी। सुनहु सँदेशो तजहु अँदेशो हो तुम चतुर सयानी॥ गोप सखा जिय हिय जिन राखो अविगत है अविनासी। मोहन माया बैर न दाया सब घट आपु निवासी॥ ३ ॥ ऊधो जिन इह कहो तुम प्रभुकी प्रभुताइ। सुनि जिय अंगहि बढ्यो रिसि सही न जाइ॥ रिस सही ना जाइ अंगहि बढ्यो अति इह तुमरी चतुराइ। दासी कुबिजा सेजकी संगत कवन वेद मतिपाइ॥ तुमहूं भली कहनको आए हमको भली सु बानी। जो कछु बस्तु देखिअत नैननसों क्यों नहिं मनमानी ॥ ४ ॥ गोबिंदकी बाणी सब कोइ जानी। परवश भई कहत अब सोई मानी ॥ ॥ राग छंद॥ सब कोइ जानै क्यों मनमानै अब न कछू कहि आवै। जो कछु कुबिजाके मनभावै सोइ सोइ नाच नचावै॥ वाको न्याउ दोष सब हमको कर्मरेखको जानै। गोरस देखि जो राख्यो गाढक विधिनाकी गति आनै ॥ ५ ॥ ऊधो कमलनयनसों कहियो जाइ। एक बेर ब्रज देखो आइ॥राग छंद॥ जिहके प्रीति निरंतर मनमें सो मन क्यों समुझावै। शंकर ब्रह्म शेष अरु सुरपति कोउ हरि दरशन पावै॥ वैसे राज विलास कोलाहल घर घर माखन हरई। सूरदास प्रभु मिलत बहुत सुख विरह श्वास कत जरई॥ ६ ॥ ४१॥ उद्धव वचन ॥ राग भैरव॥मैं तुमपै ब्रजनाथ पठायो। आतमज्ञान सिखावन आयो॥ आपुहि पुरुष आपुही नारी। आपुहि वानप्रस्थ ब्रह्मचारी॥ आपुहि पिता आपुही माता। आपुहि भगिनी आपुही भ्राता॥ आपुहि पंडित आपुहि ज्ञानी।आपुहि राजा आपुहि रानी॥ आपुहि धरती आपु अकासा। आपुहि स्वामी आपुहि दासा॥ आपुहि ग्वाल आपुही गाइ। आपुहि आप चरावन जाइ॥ आपुहि भवँरा आपुहि फूल। आतमज्ञान विना जगभूल॥ राव रंक दूजा नहिं कोई। आपहि आप निरंजन सोई॥ इहि प्रकार जाको मनलागै। जरा मरनसे भवभय भागै॥ योगसमाधि ब्रह्म चित लावहु। ब्रह्मानंद तबहिं सुख पावहु॥ ७॥ गोपी उद्धवप्रति उत्तर ॥ योगी होइ सो योग बखानै। नौधाभक्ति दास रति मानै॥ भजनानंद अली हम प्यारो। ब्रह्मानंद सुख कौन विचारो॥ बतियां रचिपचि कहत सयानी। अँखियाँ हरिके रूप लोभानी॥ व्यावर विथा न बंझा जानै। बिन देखे कैसे रतिमानै॥ पुनि पुनि पुनि वोही सुधि आवै। कृष्णरूप बिन और न भावै॥ नवकिशोर जेहि नैन निहारयो। कोटि योग वा छबिपर वारयो॥ शीश मुकुट कुंडल वनमाला। क्यों बिसरैं वे नैन विशाला॥ मृगमद मलय अलक घुँघुरारे। उन मोहन मन हरे हमारे॥ भ्रुकुटी कुटिल नासिका राजै। अरु न अधर मुरली कल बाजै॥ दाडिम दशन दामिनि दुति सोहै। मृदु मुसुकान जो तन मन मोहै॥ चंद्रझलक कंठ मणि मोती। दूर करत उडुगणकी ज्योती॥ कंकन किंकिणि पदिक विराजै। गजगति चाल नूपुर कल बाजै। वनके धातु चित्र तनुकिए। श्रीवत्स चिह्न राजत अतिहिए॥ पीतवसन छवि वरणि न जाई। नखशिख सुंदर कुँवर कन्हाई॥ रूपराशि ग्वालनको संगी। कब देखैं वह ललित त्रिभंगी॥ जो तू हितकी बात बतावै। मदनगोपालहि क्यों न मिलावै॥ ८॥ उद्धववचन॥ जाके रूप वरन वपु नाहीं। नैन मूँदि चितवो चितमाहीं॥ हृदय कमलमें ज्योति विराजै। अनहद नाद निरंतर बाजै॥ इडा पिंगला सुषमन नारी॥सहज सुतामें बसै मुरारी। माता पिता न दारा भाई॥

जल थल घट घट रह्यो समाई ॥ इहि प्रकार भव दुख सरितरहू । योगपंथ क्रम क्रम अनुसरहू ॥ ॥ ९ ॥ उत्तर गोपिका ॥ हम ब्रजबाल गोपाल उपासी । ब्रह्मज्ञान सुनि आवै हाँसी ॥ ब्रजमें योगकथा तैं ल्यायो । मनो कुबिजा कूबर माँह दुरायो ॥ श्यामसों गाहक पाइ देखायो । सो माधो तुम हाथ पठायो ॥ हम अबला ठगी अल्प अहीरी । वहां भलो ठग्यो कंसकी चेरी । राम जन्म सीता जो दुराई । भली भई कुबिजा वधूपाई ॥ तब सीता वियोग दुख पायो । अब कुबिजा पाइ हियो सिरायो ॥ इह नीरस ज्ञान कहा लै कीजै । योगमोट दासी शिर दीजै ॥ १० ॥ उद्धववचन ॥ वै परब्रह्म अच्युत अविनाशी । त्रिगुणरहित प्रभु धरै न दासी ॥ नहिं दासी ठकुराइन कोई । जहां देखो तहां ब्रह्म है सोई ॥ अपने और ब्रह्महि जानो । ब्रह्म बिना दूजो नहिं मानो ॥ ११ ॥ गोपिकावचन ॥ खरे करब अलियोग सँवारो । भक्त विरोधी ज्ञान तुम्हारो ॥ कहा होत उपदेशे तेरे । नैन सुवस नाहीं अलि मेरे ॥ हरिपथ जोवै छिन छिन रोवै । कृष्णवियोगी निमिष न सोवै ॥ नँदनंदनको देखे जीवै । योग पंथ याते नहिं पीवै ॥ जब हरि आवैं तब सच पावै । मोहन मूरति कंठ लगावै ॥ दुःसह वचन हमैं नहिं भावै ॥ इह योग कथा बोढैकि बिछावै ॥ १२ ॥ उद्धववचन ॥ ऊधो कहि कहि धनि ब्रजबाला । जिनके सर्वस मदनगोपाला ॥ मैं जो कही सो आवन न पाई । तुमरे दरशभक्ति निजमाई ॥ तुम मम गुरु मैं दास तिहारो । भक्ति सुनाइ जगत निस्तारो ॥ भवँर गीत जो सुनै सुनावै । प्रेम भक्ति गोपिनकी पावै ॥ सूरदास गोपी बडभागी । हरि दरशनकी ढवरी लागी ॥ १३ ॥ ४२ ॥ अथ दूसरी लीला भँवरगीत ॥ गोपीवचन जैतश्री ॥ ऊधोको उपदेश सुनो किन कानदै । निर्गुण सँदेशो श्याम पठायो आनदै ॥ कोउ आवत मोहि वोर जहां नंदसुवन पधारे । सरस वेणुध्वनि होहि मनो आए ब्रजप्यारे ॥ धाये सब गलगाजिकै ऊधो देखे जाइ । लै आए ब्रज राज गृह आनंद उर न समाइ ॥ अर्घ्य आरती तिलक दूब दधि माथेमैं दीनी । कंचन कलश भराइ और परिक्रमा कीनी ॥ गोपभीर आँगन भई जुरि बैठे इकजाति । जलझारी आगे धरे पूँछत हरि कुशलाति ॥ कुशल क्षेम वसुदेव कुशल देवै कुबिजाऊ । कुशल क्षेम अक्रूर कुशल नीके वलदाऊ ॥ पूँछि कुशल गोपालकी रहे सकल गहि पाँइ । प्रेम मगन ऊधो भए पेखत ब्रजके भाइ ॥ मनमें ऊधो कहैं ऐसी बूझिए न गोपालहि।ब्रजके हेतु बिसारि योग सिखवैं ब्रजबालहि ॥ इनकी प्रीति पतंगलौं जारतहै सब देह । वै हरि दीपक ज्योति ज्यों नेक न उनके नेह ॥ तब ऊधो करलै लिखी हरिजूकी पाती । पढी परत नहिं नेक रहे गंभीर करि छाती ॥ पाती बाँचि न आवई रहे नयन जल पूरि । देखि प्रेम गोपीनके ऊधो ज्ञान गर्व गयो दूरि ॥ फिरि इत उत बहराइ नीर नैननके शोधे । ठानी कथा प्रबोधि तबहिं फिरि गोप समोधे ॥ जो व्रत सुनि वर ध्यानहीं पावहिं नर अवतार ॥ ते व्रत सिखैं सब गोपिका देहि विषय बिसारे । सुनि ऊधोके वचन रही नीचे कै तारे । मानों मांगति सुधा आनि व्यालनि विष जारे ॥ हम अबलौं कहा जानई योग युक्तिकी रीति । नँदनंदन व्रत छाँडिके को लिखि पूजै भीति ॥ अगमते अगह अपार आदि अविगत है सोऊ । आदि निरंजन नाम ताहि रंजै सब कोऊ ॥ नयन नासिका अग्रहै तहाँ ब्रह्मको बास । अविनाशी विनशै नहीं सहज ज्योति परगास ॥ ऊधो जो पग पानि नहीं ऊखल क्यों बांधे । नयन नासिका मुख न चोरि दधि कौने खाधे । तब जो खिलायो गोदमें बोलि तोतरे बैन । ऊधो ताको बतावही जाहि न सूझै नैन ॥ माया अनित्य अधारी ता लोचन दुइ नापे । ज्ञान नयन अनंत ताहि सूझै परमापे ॥

बूझो निगम बोलाइकै कहैं भेद समुझाइ । आदि अंत जाको नहीं कौन पिता को माइ ॥ ऊधो घर लागे अरु घूर कहो मन कहा धावै । अपनो घर परिहरे कहो को घूर बतावै ॥ मूरख यादव जातिहैं हमहिं सिखावहिं योग । हमसों भूली कहततहैं हम भूली किधौं लोग ॥ प्रेम प्रेमते होइ प्रेमते परहै जीएप्रेम बंधो संसार प्रेम परमारथ लहिए ॥ एकै निश्चय प्रेमको जीवनमुक्ति रसाल । सांची निश्चय प्रेमको जिहिरे मिलैं गोपाल ॥ ऊधो कहि सतभाव न्याय तुम्हरे मुख सांचे । योगप्रेम रस कथा कहो कंचनकी कांचे ॥ जाके परहैं हूजिए गहिए सोई नेम । मधुप हमारी सों कहो योग भलो किधौं प्रेम ॥ सुनि गोपीके बयन नेम ऊधोके भूले । गावत गुण गोपाल फिरत कुंजनम फूले ॥ खन गोपी कै पाँइ परै धन्य सोइहै नेम । धाइ धाइ द्रुम भेंटई ऊधो छाके प्रेम ॥ धनि गोपी धनि ग्वाल धन्य सुरभी वनचारी । धनि इहां पावन भूमि जहां गोविंद अभिसारी॥उपदेश न आये हुते मोहिं भयो उपदेश । ऊधो यदुपतिपै चले धरे गोपकी भेष ॥ भूले यदुपति नाव कहो गोपाल गोसाईं । एकबार ब्रज जाहु देहु गोपिन देखराई ॥ वृंदावन सुख छाँडिके कहां बसेहो आइ ॥ गोवर्धन प्रभु जानिकै ऊधो पकरे पाँइ । ऊधो ब्रजको प्रेम नेम वरणो सब आई । उमँग्यो नैनन नीर बात कछु कह्यो न जाई ॥ सूर श्याम भूलत भए रहे नैन जल छाइ । पोंछि पीतपट सों कह्यो भले आए योग सिखाइ४३॥इति भवँरगीत ॥ अध्याय॥४८॥अथ उद्धव मथुरा आए श्रीकृष्णप्रति वदाति ॥ राग सारंग ॥ ऊधो जब ब्रज पहुँचे जाइ । तबकी कथा कृपाकरि कहिए हम सुनिहैं मन लाइ । बाबानंद यशोदा मइया मिले सबन हित आइ । कबहूं सुरति करत माइनकी किधौं रहे बिसराइ॥गोप सखा दधिखात भात वन अरु चाखते चखाइ । गऊ वच्छ मुरली सुनि उमडत अबहिं रहत केहि भाइ ॥ गोपिन गृह व्योहार विसारे मुख सन्मुख सुखपाइ । पलकवोट निमि पर अन खाती यह दुख कहा समाइ ॥ एक सखी उनमें जो राधा जब हो इहँते गयो । तब ब्रजराज सहित सब गोपिन आगे ह्वै जो लयो ॥ उतरे जाइ नंदबाबाके सबही शोच लह्यो । मेरी सौं सांची कहु ऊधो मैया कछू कह्यो ॥ वारंवार कुशल पूँछी मोहिं लै लै तुम्हरो नाम । ज्यों जल तृषा बढी चातक चित कृष्ण कृष्ण बलराम ॥ सुंदर परम विचित्र मनोहर वह मुरली देइ घाली । लई उठाइ उरलाइ सूर प्रभु प्रीति आनि उरशाली ॥ ४४ ॥ सुनिए ब्रजकी दशा गोसाईं । रथकी ध्वजा पीतपट भूषण देखतही उठि धाईं ॥ जो तुम कही योगकी बातें ते मैं सबैं सुनाईं । श्रवण मूँदि गुण कर्म तुम्हारे प्रेम मगन मनगाईं ॥ औरो कछु सँदेश सखी इक कहत दूरि लौ आईं । हुतो कछू हमहूंसों नातो निपट कहा बिसराईं ॥ सूरदास प्रभु वनविनोद करि जो तुम गऊ चराईं । ते गाय ग्वालन हेरी देय हरति मानों भईं पराईं॥४५॥ राग सारंग॥ ब्रजके विरही लोग दुखारे । विन गोपाल ठगेसे ठाढे अतिदुर्बल तनुकारे ॥ नंद यशोदा मारग जोवत नित उठि साँझ सवारे । चहुँ दिशि कान्ह कान्ह करि टेरत अँसुवन बहत पनारे ॥ गोपीगाइ ग्वाल गोसुत सब अतिही दीन विचारे । सूरदास प्रभु विन यों शोभित चंद्र विना ज्यों तारे ॥ ४६ ॥ राग केदारो॥ हरिजी सुनो वचन सुजान। विरह व्याकुल छीन तन मन हीन लोचन प्रान॥इहै संदेशा ब्रज को माधो सुनहु निदान। मैं सबै ब्रज दीन देखे ज्यों विना निर्मान ॥ तुम विना शोभा न ज्यों गृह-विना दीप भयान । आस श्वास उसाँस घटमें अवध आशाप्रान ॥ जगत जीवन भक्त पालन जगतनाथ कृपाल । करि जतन कछु सूरके प्रभु जो जीवे ब्रजबाल ॥ ४७ ॥ राग जैतश्री ॥ सुनहु श्याम वे सब ब्रजवनिता विरह तुम्हारे भईं बावरी । नाहिंन नाथ और कहि आवत छाँडि

जहां लगि कथा रावरी ॥ कबहुँ कहत हरि माखन खायो कौन बसैया कठिन गाँव री । कबहुँ कहत हरि ऊखल बाँधे घर वर ते लै चलौ दाँव री ॥ कबहुँ कहत ब्रजनाथ बनगए जोवत मगभई दृष्टि झाँव री।कबहुँ कहत वा मुरली महियाँ लै लै बोलत हमारो नाँउ री ॥ कबहुँ कहत ब्रजनाथ साथ ते चंद्र उग्यो है एहि ठाँव री।सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशबिनु अब वह सूरति भई साँवरी ॥४८॥ राग बिहागरो ॥ हरि आए सो भली कीन्ही । मोहिं देखत कहि उठी राधिका अंक तिमिरको दीन्ही ॥ तनु अति कँपति विरह अति व्याकुल उर धुकधुकी खेद कीन्ही । चलत चरणगहि रही गई गिरि खेद सलिल भयभीनी ॥ छूटी वट भुज फूटी बलया टूटी लरफटी कंचुकी झीनी । मानो प्रेमके परन परेवा याहीते पढि लीन्ही ॥ अवलोकति इहिभाँति रमापति मानो छूटी अहिमणि छीनी । सूरदास प्रभु कहौं कहांलगि है अयान मति हीनी ॥४९॥ मलार॥ सुनो श्याम यह बात और कोउ क्यों समुझाय कहै। दुहुँदिशिको रति विरह विरहिनी कैसेकै जो सहै । जब राधे तबहीं मुख माधो माधो रटतरहै । जब माधो होइजात सकल तनु राधा विरह दहै । उभयअग्र दौंदारु कीट ज्यों शीतलताहि चहै । सूरदास अति विकल विरहिनी कैसेहु सुख न लहै ॥ ५० ॥ राग केदारो॥चितदै सुनो श्याम प्रबीन।हरि तुम्हारे विरह राधा मैं जु देखी छीन ॥ तज्यो तेल तमोल भूषण अंग वसन मलीन । कंकना करवाम राख्यो गढी भुजगहि लीन॥जब संदेशा कहन सुंदरि गवन मोतन कीन।खसि मुद्रावलि चरन अरुझी गिरी धरनि बलहीन ॥ कंठवचन न बोल आवै हृदय परिहस भीन।नैन जल भरि रोइ दीनो ग्रसित आपद दीन ॥ उठी बहुरि सँभारि भट ज्यों परम साहस कीन । सूर प्रभु कल्याण ऐसे जीवहि आशालीन ॥ ५१ ॥ भरि भरि लेत ऊरध श्वास । साँवरे ब्रजनाथ तुमबिनु दुखित पंचशर त्रास ॥ अमित पीर अधीर डोलत समर मीन बिलास । तेई सुख दुख भए दारुण मिलि गए रस रास ॥ निगम गुरुजन लोगन डरत जगकरत उपहास । सूर श्याम बिनु विकल विरहिनी मरत दरश बिन प्यास ॥५२॥ राग धनाश्री ॥ उमँगि चले दोउ नैन विशाल । सुनि सुनि यह संदेश श्यामघन सुमिरि तुम्हारे गुण गोपाल ॥ आनन वपु उरजनिके अंतर जलधारा बाढी तेहिकाल । मनुयुगजलज सुमेर शृंगते जाइ मिले सम शशिहि सनाल ॥ भीजे विय अंचर उर राजित तिनपर वर मुकुतनकी माल । मानों इंदु आये नलिनी दल लंकृत अमी ओस कण जाल ॥ कहा वह प्रीति रीति राधासों कहां यह करनी उलटी चाल । सूरदास प्रभु कठिन कथनते क्यों जीवै बिरहिनि बेहाल ॥ ५३ ॥राग मारू॥ तुम्हरे बिरह ब्रजनाथ राधिका नैनन नदी बढी । लीने जाति निमेष कूल दोउ एते यान चढी॥ गोलकनाउ निमेष न लागत सो पलकनि बर बोरति । ऊरध श्वास समीर तरंगिनि तेज तिलक तरु तोरति ॥ कज्जल कीच कुचील किए तट अंबर अधर कपोल । थकि रहे पथिक सुयश हित हीके हस्त चरण मुख बोल॥नाहिन और उपाय रमापति बिन दरशन जो कीजे । अंशु सलिल बूडत सब गोकुल सूर सुकर गहि लीजै॥५४॥राग मलार॥नैन घट घटत न एक घरी।कबहुँ न मिटत सदा पावस ब्रज लागी रहत झरी ॥ विरह इंद्र बरषत निशिबासर इहि अति अधिक करी । उरध उसाँस समीर तेज जल उर भुवि उमँगि भरी॥बूडति भुजा रोमद्रुम अंबर अरु कुच उच्च थरी।चलि न सकत पथिक रहे थकि चंद्रकी चखरी ॥ सब ऋतु मिटी एक भई ब्रज महि यहि विधि उलटि धरी । सूरदास प्रभु तुम्हरे बिछुरे मिटि मर्याद टरी॥५५॥राग केदारो॥देखी मैं लोचन चुवत अचेत।मनहुँ कमल शशि त्रास ईशको मुक्ता गनि गनि देत ॥ द्वार खडी इकटक मग जोवत ऊरध श्वास न लेत । मानहुँ मदन मिले चाहति है सुंचत मरुत समेत ॥ श्रवणन सुनत चित्र पुतरी लौं समुझावत

जित नेत। कहुँ कंकन कहुँ गिरी मुद्रिका कहुँ ताटंक कहुँ नेत ॥ मनहु विरह दव जरत विश्व सब राधा रुचिर निकेत।धुज होइ सुखिरही सूरज प्रभु बधी तुम्हारे हेत॥५६ ॥ राग मलार॥नैननि होड बदी वरषासों। राति दिवस बरसत झर लाए दिन दूरी करखासों ॥ चारि मास बरषे जल खूटे हारि समुझ उनमानी। एतेहू पर धार न खंडित इनकी अकथ कहानी॥ एते मान चढाइ चढी अति तजी पलककी सीव। मैं दिन दिन उन मानो महाप्रलयकी नीव ॥ तुमपै होइ सो करहु कृपा निधि ए व्रजके व्यवहार। अवकी वेर पाछिले नाते सूर लगावहु पार ॥५७॥राग गौरी॥व्रजते द्वै ऋतु पैनगई। ग्रीषम अरु पावस प्रवीन हरि तुम विनु अधिक भई ॥ उरध उसाँस समीर नैन घन सब जल योग जुरे। वरषि प्रगट कीन्हें दुख दादुर हुते जु दूरि दुरे॥ तुम्हरो कठिन वियोग विषम दिन कर सम उदो करै।हरिपद विमुख भए सुनु सूरज को इहि ताप हरै॥५८॥राग कान्हरो॥नाहिन कछु सुधि रही हिए।सुनो श्याम वे सखिहि राधिकहि युगवति जतन किए॥ कर कंकन कोकिला उडावत बिनमुख नाम लिए।सैन सूचना नखनि नितं किसलय श्रवणन शवदाविए॥ शशिशंका निशि जाल निके मग वसन बनाइ किये। दिशि दिशि शीत समीरहि रोकत अंबर ओट दिए ॥ मृगमद मलै परस तनु तलफत जनु विष विषम पिए।जो न इते पर मिलहु सूर प्रभु तौ जान विजए ॥५९॥ राग गौरी ॥ कहाँलौं कहिए व्रजकी वात। सुनहु श्याम तुम विनु उन लोगइ जैसे दिवस बिहात ॥ गोपी गाइ ग्वाल गो सुत वै मलिन वदन कृषगात। परमदीन जनु शिशिरहि मीहत अंबुज गन विनपात ॥ जाकहुँ आवत देखिदूरते सव पूँछति कुशलात। चलन न देत प्रेम आतुर उर कर चरणन लपटात॥ पिकचातक बन वसन न पावहि वाइस वलिहि न खात। सूर श्याम संदेशनके उर पथिक न उहि मग जात॥६०॥राग मलार॥व्रजकी कही न परतिहैं वातें। गिरितनयापति भूषण जैसे विरहजरी दिनरातें॥मलिन वसन हरिहित अंतर्गति तनु पीरी जनु पाते। गदगदवचन नैन जल पूरित विलखि वदन कृषगाते ॥ सुक्तो ताते भवन ते विछुरे मीन मकर विललाते। सारंगरिपु सुत सुहृदपति विना दुख पावति वहु भांते ॥ हरि सुर भषन विना विरहाने छीन भई तनु ताते। सूरदास गोपिन परतिज्ञा मिलहु पहिलके नाते॥६१ ॥ राग कल्याण ॥ रहति रैनि दिन हरि हरि हरि रट। चितवत इकटक मग चकोर लौं जवते तुम विछुरे नागर नट ॥ भरि भरि नैन नीर ढारतिहैं सजल करति अति कंचुकिके पट। मनहुँ विरहकी ज्वरता लगि लियो नेम प्रेम शिव शीशसहसघट ॥ जैसे धुवके अग्र ओसकण प्राण रहत ऐसे अवधिहिके तट। सूरदास प्रभु मिलौ कृपाकरि जेदिन कहे तेउ आए निकट ॥६२॥ ॥ राग सारंग ॥ दिनदश घोष चलहु गोपाल। गाइनके अवसेर मिटावहु लेहु आपने ग्वाल ॥ नाचत नहीं मोर तादिनते बोले न वर्षाकाल। मृग दुवरे तुम्हारे दरश विनु सुनत न वेणु रसाल ॥ वृंदावन हरचो होत न भावत देखो श्याम तमाल। सूरदास मइया अनाथहै घरचलिए नँदलाल॥ ६३ ॥राग सोरठ ॥ ऊधो भलो ज्ञान समुझायो। तुमसों अव यों कहा कहतहैं मैं कहि कहा पठायो ॥ कह-वावतहौ बडे चतुरपै वहां न कछु कहि आयो। सूरदास व्रजवासिनको हित हरि हिय मांझ दुरायो॥ ॥६४॥ राग सारंग ॥ मैं समुझाई अति अपनोसो। तदपि उन्हें परतीति न उपजी सबै लखो सपनो-सो ॥ कह्यो तुम्हारो सवै कहीमैं और कछू अपनी। श्रवणन वचन सुनतहैं उनके जो घटमाँह अक-नी॥ कोई कहै वात बनाइ पचासक उनकी वात जो एक। धन्य धन्य जो नारी व्रजकी विन दरशन इहि टेक ॥ देखत उमँग्यो प्रेम यहांके घरी रही सब रोयो। सूर श्याम हौं रहौं ठगोसो ज्यों मृग चौको भोयो ॥ ६५ ॥ वातैं सुनहु तौ श्याम सुनाऊं। वै उमँगी जलनिधि तरंग ज्यों तामें थाह

न पाऊं ॥ कौन कौन को उत्तर दीजै ताते भग्यो अगाऊं । वे मारे शिर पटिया पारे कंथा काहि उढाऊं ॥ एक अँधेरो हियेकी फूटी दौरत पहिर खराऊं । सूर सकल पट दरशन वैहें बारहखरी पढाऊं ॥ ६६ ॥ सुनि लीन्हों उनहींको कह्यो । अपनी चाल समुझि मनहीं मन गुनि अरगाइ रह्यो ॥ अवलनि सों कही परि जापै बात तोरि कानि कानि । अनबोले पूरो दै निबह्यो वहुत दिनको जानि । जानि बूझि कैहो कत पठयो शठ बावरो अयानो । तुमहूं बूझि बहुत बातनको वहां जाहु तौ जानौ॥अज्ञाभंग होय क्यों मोपै गयउ तुम्हारे ठीले।सूर पठावनहीकी बोरी रह्यो जु गजसों लीले। ॥६७॥राग मलार॥ हो हरि बहुत दाँउदै हारयो । आज्ञा भंग होइ क्यों मोपै वचन तुम्हारो पारयो ॥ हारि मानि उठि चल्यो दीनह्वै जानि आपुन पै कैदु । जानिलेहु हरि इतनेही में कहा करैनी मनको वेदु॥ उत्तर को उत्तर नहिं आवत तब उनहीं मिलि जातु । मेरी किती बात ब्रह्माको अर्ध वचन में मातु । अपनो चाल समुझि मनहीं मन चल्यो बसीठी तोरि । सूर एकहू अंग न काची मैं देखी टकटोरि ॥ ॥ ६८ ॥ कहिबे में न कछू शक राखी । बुधि विवेक उनमान आपने मुख आई सो भाखी ॥ हौ मरि एक कहीं पहरकमें वै छिनमांझ अनेक । हारि मानि उठि चल्यो दीनह्वै छाँडि आपनी टेक ॥ हौं पठयो कत कौने काजै शठ मूरख जो अयानो । तुमहिं बुझावहु ते बातनकी वहां जाहु तौ जानो ॥ श्रीमुखकी सिखई ग्रंथो कत ते सब भई कहानी । एकहोइ तौ उत्तर दीजै सूर सु मठी उभानी ॥ ६९ ॥ राग सोरठ ॥ माधोजी मैं योगको बोझा भरयो । श्याम उन मुख विधु वचन सुधारस सुनि सुनि कछु न कह्यो ॥ तौलौं भार तरंग मो उदधि सखी लोचन उमह्यो । तुम जो कह्यो ज्ञानको मारग सो बातें जो वह्यो ॥ मोहिं आश्चर्य एक जो लागत तौ कैसे जात सह्यो । सूर दास प्रभु सखा सयानी लै भुज बीच गह्यो ॥ ७० ॥ राग नट ॥ कोऊ सुनत न बात हमारी । कहा मानै योग युक्ति यादवपति प्रगट प्रेम ब्रजनारी ॥ कोऊ कहति इंद्र जब बरषो टेकि गोवर्धन लेत । कोउ कहति हरि गए कुंजवन शीश धाम वे देत ॥ कोऊ कहत नागकारे सुनि गए हरि यमुनातीर । कोउ कहै गए अघासुर मारन संगलिए बलवीर ॥ कोउ कहै ग्वाल बाल सँग खेलत वनमें जाइ लुकाने । सूर सुमिरि गुणमाथे तुम्हारे कोउ कह्यो नामानै ॥ ७१ ॥ राग सारंग ॥हरि तुम्हें बारंबार सँभारै । कहहु तौ सब युवतिनके नाम कहो जे हितसों उर धारै ॥ कबहुँक आँखि मूँदिकै चाहति सब सुख अधिक तिहारे । तब प्रसिद्ध लीला सँग विहरत अवचित डोर विहारे ॥ जाको कोऊ जेहि विधि सुमिरै सोउ तेही हित मानै । उलटीरीति सबै तुम्हरेहै हमतो प्रगट कहिजानै ॥ जो पतिआंहो तुम पठवत लिखि वीच समुझि सब पाउ । सूर श्याम है पलक धाममें लखि चित कत बिललाउ ॥ ७२ ॥ माधोजू कहा कहौं उनकी गति । देखत बनै कहत नहिं आवै परम प्रतीति तुमते रति ॥ यद्यपि हो पडमास रह्यो ढिग लही नहीं उनकी मति । कासों कहौं सबै एकै बुधि परबोधी मानै नाहीं अति ॥ तुम कृपालु करुणामय कहियत ताते मिलत कहा क्षति । सूर श्याम सोईपै कीजै जाते तुम पावहु पति ॥ ७३ ॥ तुम्हारोइ चित्र बनाउ कियो । तब्र को इंदु सम्हारि तुरतही मनसिज साजि लियो ॥ व्रति गहि युग अंगुलीके वीचै उन भरि पानि पियो । पुरप्रति करति लेखको प्रारंभ तबहिं प्रहार कियो ॥ वै पथ विकल चकित अति आतुर भर्मंत हेतु दियो । भृति बिलंबि पृष्टिदै श्यामा श्यामै श्याम वियो ॥ या गति पाइ रही राधा अब चाहति अमृत पियो।सूरदास प्रभु प्रति उलटि परी है कैसे जात जियो॥७४॥राग केदारो॥अब जिनि बाँधि वेहि उराहु । दूध दधि माखन मनोहर डारि देहु अरु खाहु ॥ सदा बैठे घोप रहियो वन न दैहै जा

न। पलकहू भरि दुख न देहैं राखि है ज्यों प्रान ॥ सब तिहारो कहे करिहैं वचन माथे मानि। परम चतुर सुजान इते मांझ लीजो जानि ॥ अब न कौनो चूक करिहैं यह हमारे बोल। किंकिरि निकी लाज धरि व्रज सुबस करहु निटोल ॥ समुझि निज अपराध करनी नारि नावति नीचि। बहुत दिनते वरति हैं के आंखि दीजै सीचि ॥ मनसि वचन अरु कर्मना कछु कहति नाहिंन राखि। सूर प्रभु यह बोल हृदय सातराजा साखि ॥ ७५ ॥ राग सारंग ॥ कहत न बनै व्रजकी रीति। नाथ मम शठको पढचो भयो देखि उनकी प्रीति ॥ युवति वल्लभ कत कहावत करत सकल अनीति। मोहि तौ यह कठिन औरो क्यों करिहै परतीति ॥ सुनौ धौं दै कान अपनी लोक लोकनि कीति। सूर प्रभु अपनी खचाई रही निगमन जीति ॥ ७६ ॥ राग नट ॥ परम वियोगिनी सब ठाढी। ज्यों जल हीन दीन कुमुदिनि वन रवि प्रकाशकी डाढी ॥ जिहि विधि मीन सलिल ते बिछुरे तिहि अति गति अकुलानी। सूखे अधर कहि न आवै कछु वचन रहित मुखवानी उन्नत श्वास विरह विरहातुर कमलवदन कुम्हिलानी। निंदतिनैन निमेष छिनहि छिन मिलन कठिन जिय जानी। बिनु बुधि बल विचित्र कृत शोभित चलि न सकी पचिहारी। सूरदास प्रभु अवधि गयो नतो प्राण तजत व्रजनारी॥७७॥ राग मारू ॥ सब ब्रज घर घर एकै रीति। ज्यों कुरुखेत गडेको सोनो त्यों प्रभु तुम्हरी प्रीति ॥ वे सब परम विचित्र सयानी अरु सबही जग कीति। उनको ज्ञान सुनतही शठ भयो ज्यों बहु दिनकी भीति ॥ एकै गहन धरी उन हठ करि मेटि वेद विधि नीति। गोपवेष निज सूर श्याम ले रही विश्व वर जीति॥ ॥७८॥ राग केदारो॥ व्रजजन दुखित अति तनु छीन। रटत इक टक चित्र चातक श्यामघन तन लीन॥ नाहिं पलटत वसन भूषन दृगन दीपक तात। मलिन वदन विलखि रहत जिमि तरनि हीन जलजात ॥ कहन जो तुम कहेउ सो रति मति पच्यो करि उपदेश। धरत नलनी बूँद ज्यों जल वचन नहिं परवेश ॥ धरे मुरली मोर चंद्रिका पीतपट वनमाल। रही वह छवि एक अंगनि लपट श्याम तमाल ॥ दिवस वितवति सकल जन मिलि कथति गुण बलवीर। रैनि उडुपति निरखि तलफति मीन ज्यों जल तीर ॥ हौंहो करुणानाथ बंधो कहेउ ऊधो गहि पाइ। सूर प्रभु अब दरश दै करि लेहु मरति जिआइ॥७९॥ राग सारंग ॥ तबते इन सबहिन सचुपायो। जबते हरि संदेश तुम्हारो सुनत तवारो आयो॥ फूले व्याल दुरेते प्रगटे पवन पेट भरि खायो। फूचो यश मृचोको चरणन तेहु तौ सब विसरायो ॥ निकसि कंदराहूते केहरि शिरपर पूंछ हिलायो। गह्वरते गजराज आइ अंगही सर्व गर्व बढायो॥ ऊंचे वैसि विहंगम भामै शुक वनराइ कहायो। किलकि किलकि कुल सहित आपनी कोकिल मंगल गायो ॥ अब जिनि गहर करोहो मोहन जो चाहतहौ ज्यायो। सूर बहुरिहैं राधाको सब वैरिनिको भायो ॥ ८० ॥ राग धनाश्री ॥ आजु विरहिनी विरह तुम्हारे कैसो रटत रही। चारि याम निशि तुम्हारोई सुमिरन और न बात कही ॥ वासर कथा कठिन मन करि करि क्रम क्रम व्यथा सही। संध्या शशि देखि उठि चली जब अंकन रहत गही ॥ मृगमद मलय कुमकुमा उरजल सरिता सेज वही। ते क्यों शीतल होहिं सूर प्रभु पिय जू विरह दही ॥८१॥ राग सारंग॥ कान्ह तुम्हारी विकल विरहिनी विलपति विरह वियोग। अति आरत न सम्हारत तन मन इकटकलोमग योग ॥ कतर मिलो लोचन वरषत अति दुखसुखके छवि रोयो। राहु केतु मानों सुमीडि विधु आंक छुटावत धोयो ॥ अबला कहा योग मत जानै मन्मथ व्यथाविगोयो। सूरदास क्यों नीर चुवतहैं नीरस वसन निचोयो ॥ ८२ ॥ राग सोरठ माधोजू सुनो व्रजको प्रेम। बूझि मैं पटमास देख्यो गोपिकनको नेम ॥ हृदयते नहिं टरत उनके श्याम नाम सुहेत। अँसुवन सलिल प्रवाह उर मनौं

अरघ नैनन देत ॥ चमर अंचल कुच कलश मनो पाद्य पाणि चढाइ । प्रगट लीला देखि उनकी कर्म उठती गाइ॥ देह गेह सनेह अर्पण कमल लोचन ध्यान। सूर उनको भजत देखत फीको लागत ज्ञान ॥ ८३ ॥ माधोजू सुनिये व्रज व्यवहार । मेरो कह्यो पवनको भुसभयो गावत नंदकुमार ॥ एक ग्वालि गोसुतह्वै रैंगति एक लकुट कर लेति । एक ग्वालि मंडलीकरि बैठति छाँक बाँटिकै देति ॥ एक ग्वालि नटवत वहुलीला एक कर्मगुण गावति । बहुत भाँति करि मैं समुझाई नेक न उरमें आवति ॥ निशिवासर याही ढँग सब व्रज दिन दिन नवतनु प्रीति । सूर सकल फीको लागत हैं देखत वह रँगरीति ॥ ८४ ॥ राग मलार ॥ बातैं बूझति यों बहरावति । सुनहु श्याम वै सखी सयानी पावसऋतु राधहि न सुनावति ॥ घन गर्जत मनु कहत कुशलमति कूंजत गुहा सिंह समुझावति । नहिं दामिनि द्रुम दवा शैलचढि फिरि बयारि उलटी झर धावति ॥ नाहिंन मोर बकत पिक दादुर ग्वालमंडली खगन खिलावत । नहिं नभ वृष्टि झरना झर ऊपर बूँद उचटि इत आवत ॥ कबहुँक प्रगट पपीहा बोलत कहि कुवेष करतारि बजावत । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिन सो बिरहिनि इतनो दुख पावत ॥८५॥ राग नट॥ नेकहू काहू सोच न कीन्हों । सुन व्रजनाथ सबनके अवगुण मिलि मिलिहैं दुख दीन्हों ॥ ऋतुवसंत अनसमै अधममति पिकसहाउ लै धावत । प्रीतम संग न जानि युवती रुचि बोलेहु बोल न आवत॥ सदा शरदऋतु सकल कलालै सन्मुख रहत जन्हाइ । सो सितपच्छ कुहू सम बीतत कबहुँ नदेत देखाइ॥ त्रिविध समीर सुमन सौरभ मिलि मत्त मधुपगुंजार । जोइ जोइ रुचै सु कियो बाँधि बल ताजि मन सकुच बिचार ॥ रतिपति अति अनीति कीवेको कोटिधूमध्वजमानो॥ लैकर धनुष चितै तुम्हरो मुख अब बोलै तब जानौ॥ इहि विधि सबन वीन पायो व्रज काढत बैर दुरासी॥ सूरदास प्रभु वेगि मिलहु अब पिशुन करत सब हाँसी ॥ ८६ ॥ राग सारंग॥ सबते परम मनोहर गोपी । नँदनंदनके नेह मेह जिनि लोक लीक लोपी ॥ बरि कुबिजाके रंगहि राचे तदपि तजी सोपी । तदपि न तजै भजै निशि बासर नेकहू न कोपी ॥ ज्ञानकथा की माथि मन देखो ऊधो वहुधोपी । टेरति घरी छिन नेक न अँखिया श्यामरूप रोपी ॥ जे तिहि तिहि हरिके अवगुणकी ते सबई तोपी । सूरदास प्रभु प्रेम हेम ज्यों अधिक ओप ओपी ॥ ८७ ॥ राग सारंग ॥ मोमन उनईको भयो । परचो प्रभु उनके प्रेमको समै तुमहूं बिसारि गयो ॥ तुमसों शपत करि गयो माधव बेगि कह्योहो आवन । तिनहिं देखि वैसोई ह्वै गयो लग्यो उनहि मिलि गावन ॥ समुझि परी पटमास बीतते कहां हुतो हों आयो । सूर अनकही दै गोपिनसों श्रवण मूँदि उठिधायो॥ ॥८८॥ राग गंधार ॥ उनमें पांचो दिन जो वसिए। नाथ तुम्हारी सौं जिय उपजत फेरि अपनो यों कसिए॥ वह विनोदलीला वह रचना देखेही बनि आवै । मोको कहा बहुरि वैसे सुख वडभागी सो पावै । मनसा वचन कर्मना अबहैं कहत नहीं कछु राखी । सूर काढि डारचो व्रज ते ज्यों दूध मांझते माखी॥८९॥ राग सोरठ ॥ माधोजू मैं अतिही सचुपायो । अपनो जानि संदेश साजि करि व्रजमें मिलन पठायो ॥ क्षमा करो तो करौं वीनती उनहि देखि जो आयो । सकल निगम सिद्धान्त जन्मकर श्याम उन सहज सुनायो ॥ नहिं श्रुति शेष महेशप्रजापति जो रस गोपिन गायो । कथा गंग लागी मोहिं तेरी उह रस सिंधुउमह्यायो ॥ तुम्हरी अकथ कथा तुम जानौ हमैं जिन नाथ बिसरायो। सूर श्याम सुंदरि इह सुनि सुनि नैनन नीर बहायो॥९०॥ राग मलार॥ जोपै प्रभु करुणाके आलै । तौ कत कठिन कठोर होत मन मोहिं बहुत दुख शालै ॥ वहो विरदकी लाज दीन पति करि सुदृष्टि देखो । मोसों बात कहत किन सन्मुख कहा अवनि अब लेखो ॥ निगम कहत वश होत भक्तिते

सोऊहै उन कीनी । सूर उसाँस छाँडि हाहा व्रज जल अँखिया भरि लीनी ॥ ९१ ॥ राग मारू ॥ सुन ऊधो मोहिं नेक न बिसरत वै व्रजबासी लोग । तुम उनको कछु भली न कीनी निशि दिन दियो वियोग ॥ यदपि वसुदेव देवकी मथुरा सकल राज सुखभोग । तदपि मनहिं बसत बंसीबट व्रज यमुना संयोग ॥ वै उत रहत प्रेम अवलंबन इतते पठयो योग । सूर उसाँस छाँडि भरि लोचन बढ्यो विरहज्वर शोग ॥ ९२ ॥ ऊधोमोहिं व्रज बिसरत नाहीं । वृंदावन गोकुल तन आवत सघन तृणनकी छाहीं । प्रात समय माता यशुमति अरु नंद देखि सुखपावत । माखन रोटी दह्यो सजायो अतिहित साथ खवावत ॥ गोपी ग्वाल बाल सँग खेलत सब दिन हँसत सिरात । सूरदास धनि धनि व्रजबासी जिनसों हँसत व्रजनाथ ॥ ९३ ॥ भक्तबछल बसुदेव कुमार। चले एकदिन सुफलकसुतके गृह पंडवहेत विचार ॥ मिलो सो आय पाय सुधि मगमें बार बार परि पाइ । गयो लिवाय सुभग मंदिरमें प्रेम न बरनो जाइ ॥ चरण पखारि धारि जल शिरपर पुनि पुनि दृगन लगाइ ॥ विविध सुगंध चीर आभूषन आगे धरे बनाइ ॥ धन्य धन्यमैं गृह मम धन धन भाग हमारे । जो प्रभु ज्ञान ध्यान नहिं आवत तिन मम गृह पग धारे ॥ प्रभु तव माया अगम अमोघहै लहि न सकत कोउ पार । दीजै भक्ति अनन्य कृपा करि होइ सो मम उद्धार ॥ अरु जेहि कारन प्रभु पग धारे कहिये सोउ विचारि । करहु ताहि तुमरी कृपातें आयसु माथे धारि ॥ यह अक्रूर दशा जो सुमिरै सिखै सुनै अरु गावै । अर्थ धर्म कामना मुक्ति फल चारि पदारथ पावै ॥ हरिजी कह्यो मनोरथ तुम्हरो करिहैं श्रीभगवान । जो जानत सोई सो पावत यह निश्चय जिय जान ॥ तुम जानतहौ पाण्डवके सुत हैं अति हितू हमारे । कुरुपति अंध मोहवश तिनको देत सदा दुख भारे ॥ तात जाइ उनको तुम भेंटो हमरी कुशल सुनावहु । बहुरो समाचार सब उनके लै हम पै चलि आवहु ॥ यह कहि श्याम राम ऊधो मिलि अपने भवन सिधारे । सुफलकसुत आयसु माथे धरि पंडव गृह पग धारे ॥ पहिले कौरवपतिसों भेंट्यो पुनि पंडव गृह आए । पकरि चरन कुंतीके पुनि पुनि सुतै गले लगाए ॥ कुशल भाषि सब यादव कुलकी प्रभुको कह्यो संदेश ॥ भयो परम संतोष तबहिं सुनि कह्यो हम शरन तुम्हारी । कुरुपति अंध मोह पुत्रनके देत सदा दुख भारी ॥ पुनि कुरुपतिसों मिलि सुफलकसुत कह्यो बहुत समझाइ । चारि दिवसके जीवन ऊपर तुम कत करत अन्याइ ॥ अन्याईको बास नरकमों यह जानत सब कोइ । गर्वप्रहारी हैं त्रिभुवनपति जो कछु करैं सो होइ ॥ कुरुपति कह्यो मैंहु यह जानत पै मोहन न बसाय । नमसकार मेरो यदुपतिसों कहिबो गहिकै पाय ॥ सुफलकसुत सब कथा तहांकी आइ श्यामसों भाखी। सूरदास प्रभु सुनिकै तोसों हृदय आपने राखी ॥ ३४९४ ॥

॥ इति श्रीसूरसागरदशमस्कन्ध पूर्वार्ध समाप्त ॥



॥ श्रीः ॥

अथ सूरसागर ।

दशमस्कन्धोत्तरार्धः ।

जरासंध आगमन द्वारकाहेतु ।

॥राग मारू॥ श्याम बलराम जब कंस मारयो । सुनि जरासंध वृत्तान्त अस सुताते युद्ध हित कटक अपनो हँकारयो ॥ जोरिदल प्रबल सो चल्यो मथुरापुरी सुन्यो भगवान जब निकट आयो । तब दुहूँ वीर दल साजिकै आपनो नगरते निकसि रणभूमि छायो॥दुहूँदिशि सुभट बाँके विकट अति जुरे मनो दोउ दिशि घटा उमडि आई।सूर प्रभु सिंहध्वनि करत जोधा सकल जहां तहां करन लागे लराई॥ १॥ ॥ मलार ॥ मानहु मेघ घटा अति गाढी । बरषत बाण बूँद सेनापति महानदी रण बाढी ॥ जहां बरन बरंन बादर बानैत अरु दामिनि करि करि वार ।उडत धूरि धुँरवा धुर दीसत शूल सकल जलधार ॥ गर्जनि पणव निसान शंखरव हय गज हींस चिकार । प्रगटत दुरत देखियत रविसम द्वै वसुदेवकुमार ॥ कुंजर कूल रमित अतिराजत तहँ शोणित सलिल गंभीर । धनुष तरंग भँवर स्यंदन पग जलचर सुभट शरीर ॥ उडत ध्वजा पताक छत्र रथ तरुवर टूटत तीर । परमनिशंक समर सरिता तट क्रीडत यादव वीर ॥ सुने किये सुवन भूपतिके सुवस किए सुरलोक । छिनक मध्य हरि हरयो कृपाकरि उन सबहिनके शोक ॥ आनंदे मधुबनके वासी गई नगरकी रोक । जरासंधको जीति सूर प्रभु आये अपने वोक ॥ २ ॥ अध्याय ॥ ५१ ॥ कालयवनदहन ॥ मुचुकुंद उद्धार ॥ राग सारंग॥ बार सत्रह जरासंध मथुरा चढि आयो । गयो सो सबदिन हार जात घर बहुत लजायो ॥ तब खिसिआइकै कालयवन अपने सँग ल्यायो । हरिजी कियो विचार सिंधुतट नगर बसायो ॥ उग्रसेन सब कुटुमलै ता ठौर सिधायो । अमरपुरीते अधिक सुख तहँ लोगन पायो ॥ कालयवन मुचुकुंद सों हरि भस्म करायो । बहुरि आइ भरमाइ अचल सब ताहि जरायो ॥ जरासंध वहँते बहुरि निज देश सिधायो । श्याम राम गये द्वारका सूरज यश गायो ॥ ३ ॥ अथ द्वारका प्रवेश ॥ राग कल्याण॥देख री आजु नैन भरि हरिजूके रथकी शोभा। योग यज्ञ जप तप तीरथ व्रत कीजतहै जेहि लोभा॥ चारु चक्र मणि खचित मनोहर चंचल चमर पताका । श्वेतछत्र मनो शशि प्राची दिशि उदै कियो निशिराका ॥ घन तन श्याम सुदेश पीतपट शीशमुकुट उरमाला । जनु दामिनि घन रवि तारागण प्रगट एकही काला ॥ उपजत छविकर अधर शंखमिलि सुनियत शब्द प्रशंसा । मानहु आसन कमल मंडलमें कूजतहै कलहंसा ॥ मदनगोपाल

देखियतहै अब सब दुख शोक बिसारी। बैठेहैं सुफलकसुत गोकुल लेन जो वहाँ सिधारी ॥ आनंदित चित जननि तात हित कृष्ण मिलन जिय आए। सूरदास दुहुँ कुल हित कारण अब माधो मधुपुरी जु आए ॥४॥ अध्याय ॥ ५२ ॥ द्वारकाकी शोभा ॥ राग कल्याण ॥ दिन द्वारावती देखन आवत। नारदादि सनकादि महामुनि ते अवलोकि प्रीति उपजावत ॥ विद्रुम स्फटिक पची कंचन खचि मणिमय मंदिर बने बनावत। जितनेतर नर नारि उपर खग सबहिनको प्रतिबिंब दिखावत ॥ जल थल रंग विचित्र बहुत बिधि अवलोकत आनंद बढावत। भूलि रहे अति चतुर चिते चित कौन सत्य कछु मर्म न पावत ॥ वन उपवन फल फूल सुभगसर शुक सारिका हंस पारावत। चातक मोर चकोर वदत पिक मनहु मदन चटसार पढावत ॥ धाम धाम संगीत सरस गति वीणा वेणु मृदंग बजावत। अतिआनंद प्रेम पुलकित तनु जहां तहां यदुपति यश गावत ॥ निशिदिन रहत विमान रूढ रुचि सुरवनितानि संग सब आवत। सूर श्याम क्रीडत कौतूहल अमरन अपनो भवन न भावत ॥ ५ ॥ राग सारंग ॥ श्रीमनमोहन खेलत चौगान। द्वारावती कोट कंचनमें रच्यो रुचिर मैदान ॥ यादव वीर बराइ बटाई इक हलधर इक आपे ओर। निकसे सबै कुँवर असवारी उच्चैःश्रवाके पोर ॥ लीले सुरंग कुमैत श्याम तेहि परदे सब मन रंग। बरन अनेक भांति भांतिनके चमकति चपलावेग ॥ जौन जराइ जु जगमगाइ रहे देखत दृष्टि भ्रमाइ। सुर नर मुनि कौतुक सबै लागे इकटक रहे लुभाइ ॥ जबहीं हरिलै चले गोइ कुदासों लाइ। तबहीं औचकही वेल हलधर पाइ॥ कुँवर सबै घेरि फेरे फेरत छुडत नाहिनै गुपाल। बलै अछत छल बल करि सूरदास प्रभु हाल ॥ ६ ॥ रुक्मिणीपत्रिका आवन ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविंद उर धरो ॥ हरि सुमिरण जब रुक्मिणि कऱ्यो। हरि करि कृपा ताहि तब बऱ्यो ॥ कहौं सो कथा सुनो चितलाई। कहै सुनै सो रहै सुखपाई ॥ कुंदनपुरको भीषम राई। विष्णुभक्तिको तामन चाई ॥ रुक्म आदि ताके सुत पांच। रुक्मिणि पुत्री हरिरँग राच ॥ नृपति रुक्मसों कह्यो सुनाई। कुँवरि योग्यवर श्रीयदुराई ॥ रुक्म रिसाइ पितासों कह्यो। सुनि ताको अंतर्गत दह्यो ॥ रुक्म चँदेरी विप्र पठायो। व्याहकाज शिशुपाल बुलायो ॥ सो बरात जोरि तहां आयो। श्रीरुक्मिणिके जिय नहिं भायो ॥ कह्यो मेरोपति श्रीभगवान। उनही बरो के तजो परान ॥ भीषम सुता रुक्मिणी वाम। सूरजपति निशि दिन वहनाम॥७॥ राग कान्हरो॥ द्विज पतियां दे कहियो श्यामहिं। कुंदनपुरकी कुँवरि रुक्मिणी जपति तुम्हारे नामहि ॥ पालागौं तुम जाहु द्वारावति नँदनंदनके धामहि। कंचन चीर पटंबर देही करकंकनजे नामहिं। यह शिशुपाल मजेत श्रीदीनबंधु ब्रजनाथ कबै सुखदेतिहीं। कहि रुक्मिणि मनमाहँ सबै सुख लेलिहौं ॥ गावहिं सब सहचरी कुँवरि तामसकरि हेऱ्यो। सब दिन सुखसाथिनी आज कैसे सुख फेऱ्यो ॥ मेरे मन कछु औरहै तुम कछु गावति और। प्राण तजौंगी आपनो देखि असुर शिरमौर ॥ तिहूँलोकके धनी मनी तुमहीकी सोहै।सत्यकीर्ति औ पुरुषहि समरथ सब मोहै ॥ पर पुरुषारथ काग हंसनिके घर आवे। कामधेनु खरुलेइ काल अमृत उपजावै ॥ कुटुंब बैर मेरे परे बरनि बरे शिशुपाल। करनि सिंह तुम्हरी धरी कैसे चपै शृगाल ॥ भुवन चतुर्दश राज सकल सुर नर मुनि देवा। करजोरे शशि सूर पवन पानी करैं सेवा ॥ अबहीं औरकी और होति कछु लागै बारा। तातें मैं पाती लिखी तुम प्राणअधारा ॥ कटहि भूँख औ नींद जीवनहीं जानति नाहीं। अनदेखे ये नैन लगे लोचन पथवाहीं ॥ कै यदुपति लै आवहु करौं प्राणलागि घाउ। बाजे शंख जानिहौं सांची आयो यादवराउ ॥ जो मांगो सो देउँ लेहु साथी सँग आए। कोटि

T

यज्ञफल होइ पिता वहि दरशन पाए ॥ रोइ रुक्मिणी यों कह्यो धरो पाणिमें साथ । यह पाती लै पिता दीजियो प्राणनाथके हाथ ॥ विप्रभवन रथ चढ्यो चलत तब बार न लाई । छपनकोटिके मध्य राजतहैं यादवराई ॥ छाँडि सकुच पाती दई तब पूँछी कुशलात । जानि चीन्ह पहिचानि कुँवरमन फूले अंग न मात ॥ आपुन झारी माँगि विप्रके चरण पखारे । इती दूरि श्रम कियो राज द्विज भए दुखारे ॥ पाती बाँचन आवई माँग्यो तुरत विमान ।लोचन भरि भरि आवही मानहु कर जल पान ॥ लीन्हों विप्रचढाइ बोलि बलसों कहि सारा।सकल सभा जियजानिकसे साजे हथिआरा ॥कहहु नाथ कहां आवहीं कियो कौन पर छोहु।भीषमकै रुक्मिणिहरण सावधान सब होहु ॥ आवत देख्यो विप्र जोरिकर रुक्मिणिधाई।कहा कहेगो आनि हिए धकधकी लगाई ॥ विप्रआनि मालादए कहै कुशलके बैन।कुँवरि पतियारो तब कियो जब रथ देख्यो नैन॥गए कंचुकि बंद टूटि लूटि हृदय सो पाइ।करति मनहिंमन सेव निकट रथ दयो देखाइ ॥ तिहूंलोकके कंतहौ हों दासी प्रभु जानि । रुक्मिणिबिनती करतिहै लाजहि आपुहि मानि ॥ बैठि असुर सब सभा रुक्मसों मतौ बिचारयो । आयो सुन्यो अहीर मनों यहिकाल हँकारयो ॥ गाइ चरावन ग्वालहै आयो मुजरा देन । देखहु ढीठो दूरिते आयो भातहि लेन ॥ सब दल होहु हुसियार चलहु मठ घेरहिं जाई । परपंचीहै कान्ह कछू मति करै ढिठाई ॥ कुँवरि गौरि पाँयनपरी मन वांछित फल जानि । हौं यदुपति वर पाइहौं वदन धरौं दोउ पानि॥गौरि कहै सुन कुँवरि पाँय मेरे जिनि लागहि। कहा कुटुंबके बैन नैन श्रीमति बैरागहि । आधो श्रीवृषभानुको आधो दीन्हों तोहिं॥राज सोहाग बढो सबै कहा निहोरो मोहिं॥अब गावहु करि सगुण वोलि सुख अमृत वानी । दूलह श्रीनँदलाल दुलहिनी रुक्मिणि रानी॥याको जननी दीजियो करत सखिनसों नेह । हौं यदुपति घर जाति हौं जाको है यह देह ॥ अंबर बाणी भई सजल बादर दल छाए । देव तेतीसौ कोटि जो यज्ञ तवासे आए ॥ हरन रुक्मिणी होत है दुहूँ ओर भई भीर । अति अघात कछु नाहिंन सूझत बज्र चलिहि ज्यों नीर ॥ लागे रुक्म गोहारि संग शिशुपाल न छोडै । छाँडहि बान विशाल युद्ध ऐसोको वोडै ॥ चक्र धरे हरि आवहीं सुनि असुरन जिय गाज । टेरि कह्यो शिशुपालसों कीजो कंकन लाज ॥ सकल सैन संहारि रुक्म हलधर गहि लीन्हों । आगे इहि सों काम रुक्मिणी सों प्रण कीन्हों ॥ सात शिखा शिर राखिकै तब बूझी कुशलात । कंचनराजको काज सँवारयो भूपन को यह काज ॥ नगर बधाई बाजि नाथ बहुतै सुख मान्यो । पूरण कीन्हों नेह रुक्मते सत्यहि जान्यो ॥ कंकन छोरयो द्वारका बाज्यो अनंद निसान । भुक्ति मुक्ति न्यवछावरी पाई सूर सुजान ॥ ८ ॥ राग कान्हरो ॥ पतियां दीजै श्याम सुजानहि । मुख सँदेश बनाइ विप्र ज्यों प्रभु न ढीठ करि मानहि ॥ श्रीहरि योग्य रुक्मिणी लिखितं बिनती सुनहि प्रभु धरि कानहि । बाँचत बेगि आइबो माधव जात धरे मेरे प्रानहि ॥ समुझत नहीं दीन दुख कोऊ सिंह भखहि शृगालके पानहि । माणि कर्मट कर देत मूढमति मृगमद रजमें सानहि ॥ कबलगि सहौं दुःख दरश दीन भई मीन विना जलपानहिं । सूरदास प्रभु अधर सुधाघन वरषिदेहु जियदानहिं ॥ ९ ॥ ॥ राग सारंग ॥ द्विज कहियो हरिसों समुझाइ । सकत शृगाल सिंहको भोजन दुर्बल देखिकै छीने खाइ ॥ परमित गए लाज तुमहींको हंसिनि व्याहि काग लै जाइ । काहेको नेम धर्म्म व्रत कीन्हों माघमास जल शीत अन्हाइ ॥ श्वान संग सिंहिनि रति अजगुत वेद विरुद्ध असुर करै आइ । सूरदास प्रभु वेगि न आवहु प्राणगए कहा लेहौ आइ ॥ १० ॥ द्विज कहियो यदुपति सन बात । वेदनिरुद्ध होत कुंदनपुर हंसको अंश कागलै परात ॥ जिनि हमरो अपराध बिचारो कन्या

लिख्यो मेटि गुरु तात। ताते यह द्विज बेगि पठायो नेम धर्म्म मर्यादा जात ॥ तनु आत्मा समर्पित तुम कहँ पाछे उपजि परी यह बात। कृष्णसिंह बलि धरी तिहारी लेबेको जंबुक अकुलात ॥ कृपाकरहु उठि वेगि चढहु रथ लग्न समै आवहु परभात। सूरदास शिशुपाल पानि गहै पावक जारि करौं तनुघात ॥११॥ राग धनाश्री ॥ हौं प्रभु जन्म जन्मकी चेरी। भीषम भवन रहतहौं मैं ज्यों लुब्धक असुर सैन्य मिलि घेरी ॥ प्रातकाल शिशुपाल कालते यदुपति आवैं वेगि सबेरी। कछु विपरीति बात नहिं आवै उपजी प्रीति ग्राह गज केरी। सूरदास प्रभु कृष्णप्रीति बिनु प्राणविना तनु लागत पेरी ॥ १२ ॥ राग मारू ॥ द्विज वेग धावहु कहि पठावहु द्वारकाते जाइ। कुंदनपुर एक होत अजगुत वाघ घेरी गाइ ॥ दीनह्वै कारि करहुँ विनती पाती दीजहु जाइ। रुक्म वरवस व्याहि देहै गनै पितहि न माइ ॥ लग्न लै जु बरात साजी उनत मंडप छाइ। पैज करि शिशुपाल आए जरासंध सहाइ ॥ हंसको मैं अंशराख्यो काग कत मँडराइ। गरुडवाहन कृष्ण आवहु सूर बलि बलि जाइ ॥ १३ ॥ अथ द्विजसंदेश कृष्णप्रति वदत ॥ राग आसावरी ॥ बाल मृगीसी भूली आँगन ठाढी। नवल विरहिनी चित चिंता बाढी ॥ तुम्हारो पंथ निहारै स्वामी। कबहिं मिलहुगे अंतर्यामी ॥ मंडपपुर देखे उर थरथर करै। मनु चहुँदिशि दौ लागी धीरज तन न धरै ॥ अपने विवाहके दुंदुभी सुनि सुनि। चकृत मन मानो महासिंह ध्वनि ॥ सखिनकी माल जाल जिय जानति। व्याधरूप शिशुपालहि मानति ॥ सूरदास युगभरि वीतत छिनु। हरि नवरंग कुरंग पीव बिनु ॥ १४ ॥ अध्याय ॥ ९ ॥ कुंदनपुर श्रीकृष्णगए ॥ राग सारंग ॥ सुनत हरि रुक्मिणिको सँदेश। चढिरथ चले विप्रको संगलै कियो न गेह प्रवेश ॥ बारंबार विप्रको पूँछत कुँवरि वचन सो सुनावत। दीन वचन करुणानिधान सुनि नयननीर भरिआवत॥कह्यो हलधरसों आवहु दललै मैं पहुँचतहौं धाई। सूरप्रभु कुंडिनपुर आए विप्रजु जाइ सुनाइ॥१५॥कुँवरि सुनि पायो अतिआनंदन। मनहींमनहिं विचारकरत इह कब मिलिहैं नँदनंदन ॥ हार चीर पाटंबर देकरि विप्रहि गेह पठायो।पै इह भेद रुक्मिणी निज मुख काहू कहि न सुनायो ॥ हरि आगमन जानिकै भीषम आगे लेन सिधायो। सूरदास प्रभु दरशन कारन नगर लोग सब धायो ॥ राग आसावरी ॥ १६ ॥ देख रूप सब नगरके लोग। बारंबार अशीश देत सब यह वर बन्यो रुक्मिणी योग ॥ जो कछु चतुराई विधनामों जानत युगरस रीति। तौ अजहूं लौं राजसुतापति हरिह्वैहै शिशुपालहि जीति ॥ जो राजा कौतुक चलिआए ते मुख निरखि कहतहैं बात। परत न पलक चकोर चंद्रलौं अवलोकत लोचन अकुलात ॥ मनसाको हीता जगजीवन सुंदर वर वसुदेव कुमार। सूरदास जाके जिय जैसी हरिकीन्हें तैसो व्यवहार ॥ १७ ॥ सखी वचन रुक्मिणी प्रति सुही ॥ राग बिलावल ॥ सोच सोच तू डार उठि, देख दीनदयालु आयो। निरखि लोचन प्रणत मोचन कुँवरि फल बांछो सो पायो ॥सुनत भइ अकुलाइ ठाढी ज्यों मृतक विधि दै जिवायो।चढि सदन वह वदनकी छवि परखि दीनो दव बुझायो ॥ ले बलाई मुकर लगायो निरखि मंगलचार गायो। नैन आरति अर्घ्य आँसू पुहुप तन मन धन चढायो। जानि हौं ब्रजनाथ जियकी कियो सो जो तुम बतायो। अपहरन पुन वरन वंश हरि जानि हौं केहि योग भायो ॥ भक्तके वश भक्तवत्सल विदुर सातोसाग खायो ॥ मुदित ह्वै गई गौरि मंदिर जोरि कर बहु विधि मनायो ॥ प्रगट तेहि छिन सुरके प्रभु बाँह गहि कियो वाम भायो। कृपासागर गुणन आगर दासि दुख दीनहि विहायो ॥१८॥ रुक्मिणी हरन॥आसावरी॥रुक्मिणी देवी मंदिर आई। धूप दीप पूजा सामग्री अली संग सब ल्याई ॥ रखवारीको बहुत महाभट

दीन्हें रुक्म पठाई। ते सब सावधान भए चहुँदिशि पंछी इहाँ न जाई ॥ कुँवरि पूजि गौरी बिनती करि वरदेहु यादवराई। मैं पूजा कीन्ही या कारण गौरी सुनि मुसुकाई ॥ पाइ प्रसाद अंबिका मंदिर रुक्मिणि बाहेर आई। सुभट देख सुंदरता मोहे धरणि गिरे मुरझाई ॥ यहिअंतर यादवपति आए रुक्मिणि रथ बैठाई। सूर प्रभू पहुँचे अपने घर तब सबहिन सुधिपाई॥१९॥राग आसावरी॥याहीते शूल रही शिशुपालहि। सुमिरि सुमिरि पछताति सदा वह मान भंगके कालहि ॥ दुलहिनि कहति दौरि दीजहु द्विज पाती नंदके लालहि। वर सुबरात बुलाइ बडे हित मनसि मनोहर बालहि ॥ आये हरषि हरन रुक्मिणि रिस लगी दनुज उर शालहि। सूरज दास सिंह बलि अपुनो लीनी दलकि शृगालहि॥२०॥अध्याय ॥५४॥ श्रीकृष्ण रुक्मिणीविवाह॥ राग सोरठ॥ श्याम जब रुक्मिणि हरि लै सिधारे। सुनि जरासंध शिशुपाल धाए ॥ शाल्व दंतवक्र बनारसीको नृपति चढे दलसाजि मानो रविहि छाए। सांगकि झलक चहुँदिशि चपला चमकि गजगर्ज सुनत दिग्गज डेराए ॥ श्याम बलराम सुधिपाइ सन्मुख भये बाणवर्षा करन लगे सारे। रुक्मिणी भय कियो श्याम धीरज दियो बानसों वान तिनके निवारे ॥ राम हल मूशल संभारि धायो बहुरि विपुलरथ औ सुभट सब संहारे ॥ रुंड पर रुंड धुकि परे धरि धरणिपर गिरत ज्यों संग कर वज्रमारे ॥ जरासंग जीवते भजो रणखेतते शाल दंतवक्र या विधि पराई। प्रातके समै ज्यों भानुके उदयते भलै होइ जात उडगन नशाई ॥ गह्यो भगवान शिशुपालको जीवते ताहि सो वचन याविधि उचारे। रुक्मिणी लिये मैं जात तुम देखतहि पै नहीं हरष कछु मन हमारे ॥ पुरुषको भाजिवेते मरनहै भलो जाइ सुरलोक द्वारे उघारे। पुरुषको हार अरु जीतदोउ होतहै हर्ष अरु सोच नहिं चित्तधारे ॥ बीज बोइये जोइ अंतलोनिये सोइ समुझि यहबात नहिं चित्त धरई। करन कारण महाराजहैं आपही तिनहिं चित राखि नित धर्म्म करई ॥ बहुरि भगवान शिशुपालको छाँडिदियो गयो निज देशको सो खिसाई। शस्त्र धनु छाँडिकै भाजि नरपतिगये यादवनहेत हरिदै लुटाई ॥ रुक्म यह सुनि चल्यो सौंह करि नृपनपै श्याम बलरामको बाँधि ल्याऊं। आइ इहां कह्यो शिशुपाल सो मैं नहीं आपनो बल तुम्हैं अब दिखाऊं ॥ वाण वर्षा लग्यो करन या भांति कहि कृष्ण ज्यों तिनहिं मगमें निवारयो। आपने बाणको काटि ध्वज रुक्मके असुर औ सारथी तुरत मारयो ॥ रुक्म भू परयो उठि युद्ध हरिसों करयो हरि सकल शस्त्र ताके निवारे। बहुरि खिसिआइ भगवानके ढिगचल्यो ज्यों चलत पतंग दीपक निहारे ॥ खड्गलै ताहि भगवान मारनचले रुक्मिणी जोरिकर बिनय कीयो। दोष इन कियो मोहिं क्षमा प्रभु कीजिए भद्रकरि शीश जिवदान दीयो ॥ राम अरु यादवन सुभट ताके हते रुधिरके नहर सरिता वहाई। सुभट मनो मकर अरु केश सेवार ज्यों धनुष त्वच चर्म कूरम बनाई ॥ बहुरि भगवानके निकट आये सकल देखिकै रुक्मको हँसे सारे। कह्यो भगवानसों कहा यह कियो तुम छाँडिवो हुतो या भलो मारे ॥ मंते अप्सरा आइ ताको बरति भाजिहैं देखि अब गेह नारी। रुक्मिणीसों कह्यो सोच नहिं कीजिए होतहै सोइ जो होनिहारी ॥ रुक्म शिरनाइ या भाँति विनती करी नाथमैं बुद्धि मर्म तुम्हरो न जान्यो। ब्रह्म तुम अनंत तुमहिं कारण करण मैं कौन भाँति तुमको पहिचान्यो ॥ दीन बंधु कृपासिंधु करुणाकर सुनि विनय दयाकरि ताहिको छाँडि दीन्हों। बहुरि निज नगरपैच्यो न गयो लाज करि बनहि तिन आपनो वास कीन्हों ॥ आइ भीषम दियो दाइज ता ठौर बहु श्याम आनंद सहित पुर सिधाये। सुनत द्वारावती भारु उतसों भयो सूर जन मंगलाचार गाये ॥ २१ ॥

॥ राग आसावरी॥ देखहिं दौरि द्वारकावासी । सुनत सकल पुर जीत रुक्मिणी लै आए यदुपति अविनासी ॥ लेति बलाइ करत नवछावरि बलि भुज दंड कनक अति त्रासी । नर नारीके नैन निरखि करि चातक तृषित चकोरी प्यासी ॥ कर आरती कलश लै धाई चीन्हि न परति कुलवधू दासी । देश देश भयो रहसि सूर प्रभु जरासंध शिशुपालकी हाँसी॥२२॥राग धनाश्री॥ आवहु री मिलि मंगल गावहु॥हरि रुक्मिणिहि लिये आवत हैं इह आनँद यदुकुलहि सुनावहु॥बाँधो बंदनवार मनोहर कनक कलश भरि नीर भरावहु । दधि अक्षत फल फूल परमरुचि अंगन चन्दन चौक पुरावहु ॥कदली यूथ अनूप कुशल दल सुरंग सुमन लै मंडल छावहु । हरद दूब केशर मग छिरको भेरी मृदंग निसान बजावहु ॥ जरासंध शिशुपाल नृपतिते जीतेहैं उठि अर्घ्य चढावहु । बल समेत तनु कुशल सूर प्रभु हरि आये आरती सजावहु ॥ २३ ॥ विवाह वर्णन ॥राग विलावल ॥ छंद त्रिभंगी ॥ श्री यादवपति व्याहन आया । धन्य धन्य रुक्मिणि हरि वर पाया ॥छंद॥हरि श्याम घन तन परमसुंदर तडित वसन विराजई । अँग अंग भूषण सुरस शशि पूरणकला मानों भ्राजई ॥ कमल मुखकर कमल लोचन कमल मृदुपद सोहहीं । कमल नाभिः कमल सुंदर निरखि सुर मुनि मोहहीं ॥ १ ॥ सुधा सरोवर छिटकिं अनूपम । ग्रीव कपोत मनो नासा कीरसम॥छंद॥कीर नासा इंद्र धनु भ्रू भँवर से अलकावली । अधर विद्रुम बज्रकन दाडिम किधौं दशनावली ॥ खौर केशरि अति विराजत तिलक मृदमदको दियो । कामरूप विलोकि मोह्यो वास पद अंबुज कियो ॥ २ ॥ वसुदेवनंदन त्रिभुवन मनहरन । मुकुट तरुन मनो मकर कुंडल श्रवन ॥ छंद ॥ मुकुटकुंडल जडित हीरा लाल शोभा अतिबनी । पन्ना पिरोजा लागे बिच बिच चहूँदिशि लटकत मनी ॥ सेहरो शिर पर मुकुट लटक्यो कंठमाला राजई । हाथ पहुँची वीर कानग जरित सुंदरी भ्राजई ॥ ३ ॥ उर बैजंती माल शोभा अतिबनी । चरणन नूपुर कटतट किंकिनी ॥ छंद ॥ किंकिनी कट चरण नूपुर शब्द सुंदर कुंजही । कोकिला कलहंस बाल रसालते नाहिं पुंजही ॥ तुरई बाजनि बीना ताजनि चपल चपला सेहरी । जौन जरित जराव बागहि लगे सब मुक्तासरी ॥४॥ चढि यदुनंदन बनित बनाइकै । साजि बरात चले यादव चाइकै ॥ छंद ॥ चले साजि बरात यादव कोटि छप्पन अतिबली । उग्रसेन वसुदेव हलधर करत मन मन अति तली ॥ शंख भेरि निशान बाजहिं नचहिं शुद्ध सोहावनी । भाट बोलैं विरद नारी वचन कहैं मन भावनी ॥ ५ ॥ सुरपति आयो संगहै शची।शुद्ध मुहूरत चौरी विधि रची ॥ छंद॥ रची चौरी आपु ब्रह्मा जरित खंभ लगाइकै । इंद्र सुरदारनि सहित बैठे तहां सुखपाइकै ॥ चौक मुक्ताहल पुरायो आइ हरि बैठे तहां । निरखि सुर नर सकल मोहे रहिगए जहँके तहां ॥ ६ ॥ कुँवरि रुक्मिणी कमला अवतरी । शशि षोडश कला शोभा तनुधरी॥ छंद ॥कुँवरि शशि षोडशकला शृंगार करि ल्याई अली । विविध विधि कियो व्याह विधि वसुदेव मन उपजी रली ॥ सुर पुहुप बरसैं हरषिकै गंधर्व किन्नर गावहीं । शारदा नारद आदि सुयश उचार जयति सुनावहीं ॥ ७ ॥ विप्रगणउ दिए बहु युगुति सुरति करि। किए अयाची याचक जन बहुरि ॥ छंद ॥ बहुरि निज मंदिर सिधारे करी सुभद्रा आरती । देवकी पीवो वार नीरददई अशीशा आरती ॥ युवा युवती खेलाइ कुल व्यवहार सकल कराइवो । जनन मन भयो सूर आनँद हरषि मंगल गाइवो ॥८॥ रागसारंग ॥ तोसों गारि कहा कहिदीजै हो यदुनंदन । जग वपु नाउँ कौनको लीजै हो यदुनंदन ॥ छंद ॥ वपु जगत काको नाउँ लीजै हो यदुज्ञाति गोतन जानिए । गणरूप कछु अनुहारि नाहीं का बखान बखानिए ॥ सब शोधि रह्यो न शोधपायो त्रिन गुने का

कीजिए । बलिजाउँ यादवपति तुम्हारी गारिका कहि दीजिए ॥ तेरी मैया सब जग खोयो । सोको जो बल न विछोयो ॥ छंद॥ सोको जो नबल करि विगोयो फिरत निशि वासर बनी । शिरश्वेत पट कटि नील लहँगा लाल चोली बिन तनी ॥ कछु मंद मुख मुसुकाइ सुर नर नाग भुज भीतर लए । बलिजाउं यादवपति तुम्हारी माया कुल बिंनु तुम किए ॥ कछु कहि न जाइ गति ताकी । नित रहत मदनमद छाकी ॥ नित रहत मन्मथ मदहि छाकी निलज कुच झाँपत नहीं । तब देखि देखि जु छयल मोहित बिकलह्वै धावत तहीं ॥ इक परत उठत अनेक अरुझत मोह अति मनसा मही । यहि भाँति कथा अनेक ताकी कहत हू न परै कही ॥ बहतौ नित नवतनु रति जोरै । चित चितवनिही मँहहे चोरै ॥ ॥ छंद ॥ अति चतुर चितवनि चित चुरावति चलत धर धीर न धरै । फिरि चमक चोप लगाइ चंचल तनहिं तब अंतर करै ॥ कछु भौंहकी छबि निरखि नैननि सु को जन व्रतते टरै । इहि भाँति चतुर सुजान समधिनि सकति रति सबसों करै ॥ इनही भूलि रहे सब भोगी । वश कीने ब्राह्मण जे योगी ॥ वश किये ब्राह्मण बहुत योगी छत्रपति केतेकहौं । और अग जग जीव जल थल गनत सुनत न सुधि लहौं ॥ ते परमआतुर काम कातुर निरखि नित कौतुक नए । यहि भाँति समधिन संग निशिदिन फिरत भ्रम भूले भए ॥ अब तुमहौ परम सयाने । तुम ठाकुर सब जगजाने ॥ छंद ॥ ठाकुर सबनके कृपानिधि हरि सुयश सब जग गाइए । या लोकके उपहास आपुन ताहि बरजि मिटाइए ॥ कहि एकही भल पांच माधो और अनत न सूझिए । सुनि सूर श्याम सुजान इहिकुल अब न ऐसी कीजिए॥२४॥

अध्याय ॥ ५५ ॥ प्रद्युम्नजन्म॥राग बिलावल ॥ प्रद्युम्न जन्म शुभघरी होऊ । काम अवतार लीन्हों विदित बात यह तासु सम तूल नहिं रूप दोऊ ॥ पृथ्वीपर असुर शंबरभयो अति प्रबल तिन्ह उदधि माँह तेहि डारि दीन्हों । मक्षलियो भक्ष सो भक्ष गह्यो असुर तब कौनसों लेइकै भेंट कीन्हों ॥ मक्षके उदरते बाल परकटभयो असुर मायावती हाथ दीन्हों । कह्यो तेहि काम पर माण नारद वचन सुमिरि अति हर्षसों ताहि लीन्हों ॥ भयो जब तरुण तब नारि तासों कह्यो रुक्मिणी मात हरि तात तेरो । नाम ममरति विदित बात जानत जगत कामतुअ नाम पुनि पुरुष मेरो ॥ असुरको मार परिवारको देहि सुख देउँ विद्या तोको मैं बताई । बिना विद्या असुर जीत सकही नहीं भेदकी बात सब कहि सुनाई ॥ प्रद्युमन सकल विद्या समुझि नारिसों असुर सों युद्ध माँग्यो प्रचारी । काटि करवारि लियो मारि ताको तुरत सुरन आकाश जयध्वनि उचारी ॥ बहुरि आकाश मधि जाइ द्वारावती मात मनमोद अतिही बढायो । भयो यदुवंश अति रहसमानो जन्म भयो सूर जन मंगलाचार गायो॥२५॥

अध्याय ॥ ५६ ॥ मणिहेतु सत्यभामा जाम्बवती विवाह ॥ सारंग ॥ हरिदर्शन सत्राजित आयो । लोगन जान्यो आवत आदित हरिसों जाइ सुनायो ॥ हरि कह्यो रवि न होइ सत्राजित मणि है ताके पास । रवि प्रसन्न होइ दीन्ही ताको यह ताको परकाश ॥ आइ गयो सोऊ तेहि अवसर तेहि हरि कह्यो सुनाइ । यह मणि अति अनुपम है सो सुनि रहि न सक्यो ललचाइ ॥ एक दिन ताते अनुज सो माँगी ले गयो अखेटक काजा । ताको मारि सिंह मणि लै गयो सिंह हत्यो रिछराजा ॥ ऋच्छराज वह मणि तासों लै जाम्बवतीको दीन्हीं ॥ प्रसमनको विलंब भयो तब सत्राजित सुध लीन्ही ॥ जहां तहांको लोग पठायो काहू खोज न पायो । सूरदास सत्राजित भ्रमसों चोरी हरिहि लगायो ॥२६॥

अध्याय ॥ ५७ ॥ शत धन्वा बध अक्रूर संवादराग ॥ सोरठ ॥ शुकदेव कहत सुनहु हो राजा । ज्ञानी लोभ करत नहिं कबहूँ लोभ

बिगारत काजा ॥ करिकै लोभ अमृत जो पीवै विष समान सो होई । विष अमृत होइ जाइ लोभ बिन यह जानत जन कोई ॥ एक समय यदुपति औ हलधर पंडव गृह पग धारी । शतधन्वा अरु सुफलकसुत मिलि कीन्हों मंत्र बिचारी ॥ सत्राजितको हति मणि लीजै ज्यों जानै नहिं कोई । ऐसो समय बहुरि फिरि नाहीं पाछे होइ सो होई ॥ निशि अँधियारी जाइ शतधन्वा मारि ताहि मणि ल्यायो । फैलगई यह बात नगर सब तब मनमें पछितायो ॥ सतभामा करि शोक पिताको यदुपति पास सिधाई । शतधन्वा करत करी सो हरिसों कहि समुझाई ॥ सुनि यदुपति हलधर उठि धाये वेग विलंब न लाई । लेहैं वैर पिता तेरेको जैहै कहां पराई ॥ तब मणि डारि अक्रूर पास वह मिथिलापुरको धायो । शत योजन मग एक दिवसमें तुरंग जाइ पहुँचायो ॥ द्वारावति पैठत हरिसों सब लोगन खबरि जनाई । मिथिलापुरी जाइ तिन मारचो पै मणि वहां न पाई ॥ तब हरि कह्यो हत्यो बिन दूषण हलधर भेद बतायो । वहां जाइ खोज तुम कीजो द्वारावति धरि आयो ॥ हलधर रहे गदायुध सीखन हरि द्वारावति आये । सतभामा मन हरष भयो जब समाचार सब पाये । सुफलकसुत मनहीं मन सकुच्यो करों कहा अबकाजा । देत न बनै बनै नहिं राखत उर डेरात उठि भाजा । सब यादव मिलि हरिसों इह कह्यो सुफलकसुत जहां होइ । अनावृष्टि अतिवृष्टि होति नहिं इह जानत सब कोइ ॥ कीजै दोष क्षमा अब ताको हरि तब ताहि बुलायो । कह्यो कहा कहिए अब तुमसों तिन शिर नीचो नायो ॥ पुनि कह्यो मणि सतभामाको दै याते भय भयो तोहीं । मणि बनदै बहुरोहि तेही देइ कह्यो लोभ नहिं मोहीं । लोभ भलो नाहीं दूनो पुर लोभ किये तप जाई । सूर लोभ कीनो सो बिगोयो शुक यह कहि समुझाई ॥ २७ ॥ अध्याय ॥ ५८ ॥ पंचपटरानीका विवाह श्रीकृष्णसों भया ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि सुमिरो सब कोई । हरि हरि सुमिरत सब सुख होई ॥ हरि हरि सुमिरचो है जिन जहां।हरि तेहि दरशन दीन्हों तहां ॥ हरि सुमिरन कालिन्दी कीन्हों । हरि वहां जाइ दरश तेहि दीन्हों ॥ पाणिग्रहण पुनि ताको कीन्हों । सबै भाँति ताको सुख दीन्हों ॥ हरिहि मित्रविंदा चित ध्यायो । हरि तहां जाइ विलंब न लायो ॥ करि विवाह ताही लै आयो । तासु मनोरथ सकल पुजायो ॥ हरि चरणन सीता चित दीन्हों । ताको पिता परण यह कीन्हों ॥ सात बैल इह नाथै जोइ । सीता व्याह ताहि संग होइ ॥ हरि तहां जाइ तासु प्रण राख्यो । धन्य धन्य सब काहू भाष्यो ॥ ताके पिता व्याह जब कियो । दाइज बहु प्रकार पुनि दियो ॥ बहुरो भद्रा सुमिरो हरी । गये पास तब विलम न करी ॥ ऐसेही त्रिभुवनपति राई । ताके मनकी आश पुराई ॥ बहुरि लछमना सुमिरन कीन्हों । ताहि स्वयंवरमें हरि लीन्हों ॥ पांचौ बारि व्याह घर आये । सूरदास यश मंगल गाये ॥ २८ ॥ द्वारका प्रवेश शोभा वर्णन॥ राग मलार॥ देखो माई हरिजूके रथकी शोभा । योग यज्ञ तप कठिन कर्म्म सब कीजत है जिहि लोभा ॥ चारु चक्र मणि पानि विराजत चंचल चमर पताका । श्वेत छत्र मनु शशि प्राचीदिशि प्रगटचो रजनी राका ॥ उपजत छवि कर अधर शंख निश सुनियत दुष्ट प्रशंसा । मानहु अरुन कमल मंडलमें कूजतहैं कलहंसा ॥ श्यामसुंदर सुदेश पीतपट शीश मुकुट उरमाला । जनु घन दामिनि रवि तारागण उदित एकही काला ॥ आनंदित सुत बंधु जननि पितु कृष्ण मिलन पिय भावै । सूरदास प्रभु द्वारकावासिनि प्राणनाथ हिय भावै ॥२९॥ अध्याय ॥ ५९ ॥ भौमासुर बध ॥ नृप कन्या मोक्ष सुरतरु आगमन ॥ षोडशसहस्र रानी विवाह ॥ राग गौरी ॥ सतभामासों इती बात जनते न कही री । कितिक कठिन सुरतरु प्रसूनकी या कारण तू रूठि रही री ॥ पर मुख सुख जना उन दीने बिन काजे दि-

श देह दही री।आपनी सों सुनि सतभामा तैं मैं मन बच यह सुधि न लही री॥सूनो निपट अकेलो मंदिर चंद्रकला जनु राहु गही री। तुववियोगकी पीर कठिन अति सुकहि सूर क्यों जाति सही री ॥३०॥ राग आसावरी॥ रटत कृष्ण गोविंद हरि हरि मुरारी। भक्त भयहरन असुर अंतकारी॥ षटदश सहस कन्या असुर बंदिमें नींद अरु भूँख अहनिशि बिसारी। प्रीति तिनकी सुमिरि भय अनुकूल हरि सत्यभामा हृदय यह उपाई॥ कल्पतरु देखिबेकी भई साध मोहिं कृपाकरि नाथ ल्यावहु देखाई। सत्यभामा सहित बैठे हरि गरुडपर भौमासुर नगर गए तुरत धाई। एकही बान पापानको कोट सब हुतो चहुँओर सो दियो ढहाई। गरुड चहुँपासके नाग लियो निगल जल बरषिकै अग्नि ज्वाला बुझाई॥ करे हरि शंखध्वनि जग्यो तब असुर सुनि कोपकरि भवन ते निकस धायो। देखिकै गरुडको लगो ता हृदय दव कठिन त्रिशूल तब गहि चलायो॥असुर शिर टेक तब कह्यो निज नृपतिसों नहिं तिहुँ भुवन कोउ सम तुम्हारे। युद्धको करत छाजत नहीं है तुम्हें सुनो महाराज इह चाहत हमारे॥ कियो तब युद्ध वन क्रोध होइ श्यामसों हरि कह्यो गरुड याहति प्रचारी। गरुड सुनि धाइ गह्यो जाइ ताको तुरत नैनहू शीश डारे प्रहारी॥ तासु पुत्रन बहुरि युद्ध हरिसों कियो मारते सोऊ कादर डेराने। असुर कटि कटि परे कोऊ उठि उठि लरे कोउ डर डर विदिश दिश पराने॥ तब असुर अग्नि जलवान डारन लग्यो तासु माया सकल हरि निवारी। असुरके तनहिको लग्यो कलपन तुरंग गज उडि चले लागी बयारी॥ असुर अजरूढ होइ गदा मोरे फटकि श्याम अंग लागि सों गिरैं ऐसे। बालके हाथते कमल अमल नाल युत लागि गजराज तन गिरत जैसे॥ आप जगदीश सब शीश ता असुरकी मारि त्रिशूल सोइ काट डारे। छाँडिसो प्राण निर्वाणपदको गयो सुर पुहुप बर्षे जै जै उचारे॥ पृथ्वीगहि पाइ माला कुंडल छत्र लै जोरि कर बहुरि विनती सुनाई। नाथ मम पुत्रको दीजिये परमगति हरि कह्यो पुत्रको मुक्ति पाई॥ बहुरि गये तहां कन्याहुती सब जहां निरखि हरि रूप सो सब लुभाई। चरणही लागि बडभाग लखि आपने कृपाकरि हरि सो निजपुर पठाई॥ बहुरि गयो इंद्रपुर इंद्र रह्यो पाँइपर कल्पतरु वृक्ष तासों मँगाई। त्रिदशपति मोति अरु रत्न कुंडल दई वृक्ष लै आप निज पुरी आई॥ बहुरि बहु रूप धरि गए हरि सबन घर व्याह करि सबनकी आश पूरी। सबनके भौन हरि रहहिं सब रैन दिन सबनसों नेक नहिं होत दूरी॥ सबनको पुत्र दशदश कुँवरि एक एक दै सकलको धर्म गृह किए सिखाई। कोटि ब्रह्मांड नायक सो वसुदेव सुत सूर सोई नँदनंदन कहाई॥ ॥३१॥ अध्याय॥ ६०॥ रुक्मिणभिक्ति परीक्षा॥ राग बिलावल॥ भक्तवत्सल हरिभक्त उधारन। भक्त परीक्षाके हित कारन॥ रुक्मिणिसों बोले सति भाई। हम जानी तुमरी चतुराई॥ राउ चंदेरीको शिशुपाल। जाको सेवत सब भूपाल॥ तासो तेरी भई सगाई। तैं पाती क्यों हमहिं पठाई॥ जाति पाँति उन सम हम नाहीं। हम निर्गुण सब गुण उनपाहीं॥ उन सम नहिं हमरी ठकुराई। पुरुष भले ते नारि भलाई॥ निःकंचन जिनमें ममवासा। नारि संगमैं रहौं उदासा॥ जो कहै मोहिं काहे तुम्ह ल्याये। ताको उत्तर द्यों समुझाये॥ कुंडिनपुर बहु भूपति आये। तिनके हृदय गर्वसों छाये॥ बरंजोरी मैं तोहिं हरि ल्यायो। उनके मनके गर्व नशायो॥ इह सुनि रुक्मिणि भई बेहाल। जानि परचो नहिं हरिको ख्याल॥ लै उसाँस नैन जल ढारे। मुखते वचन न कछुक उचारे॥ ताकी दशा देखि हरि जानी। इन्ह मम भक्ति भली पहिंचानी॥ हँसि बोले तब शारँगपानी। प्राणप्रिया तुम क्यों बिलखानी॥ मैं हाँसी करि बात चलाई। तुम्हरे मन इह साँची आई॥ आंसू

पोंछि निकट बैठारी। हँसी जानि बोली तब प्यारी॥ कहां तुम त्रिभुवनपति गोपाल।कहाँ बापुरो नर शिशुपाल॥कहां चंदेरी कहां द्वारावती। जाके सरवर नहीं अमरावती॥तुम अमर वह जनमें मरे। मूरख उन तुम सरवर करे॥ तुमसन और नहीं यदुराई। याही जानि मैं शरणन आई॥ इह सुनि हरि रुक्मिणिसों कह्यो। ज्यों तुम मोको चितमें चह्यो॥ त्योंही हम चित चाहत तुमको। नाहिं अंतर कछु हमसों तुमसों।यदुपतिको यह सहज सुभाउ॥जो कोउ भजै भजहि तेहि भाउ। जो इह लीला हितकरि गावै। सूर सो प्रेम भक्तिको पावै॥ ३२॥ अध्याय॥६१॥प्रद्युम्न विवाह रुक्मकलिंग राजावध मारू॥ श्याम बलरामको सदा गाऊं। यही मम यज्ञ जप इहै तप नेम ब्रत यहै मम प्रेम फल यही पाऊं॥ श्याम बलराम प्रद्युम्नके व्याह हित रुक्मके देश जबहीं सिधाये। कलिंगको राउ अरु रुक्म बलभद्र सों कपट करि सारि पासा खिलाये॥ दांव बलरामको देखि उन छल कियो रुक्म जीत्यो कहन लगे सारे। देववाणी भई जीतभई रामकी ताउपै मूढ नाहीं सम्हारे॥ कलिंगको राउ करि हँसी लाग्यो करन बन बसन हार कहा खेल जानो। सभाके लोगहू लगे हाँसी करन राम तब हृदयमें क्रोध आन्यो॥ रुक्म औ कलिंगको राउ मारचो प्रथम बहुरि तिनके बहुत सुभट मारे। सूर प्रभु राम बलराम रणजीत भये प्रद्युम्न व्याहि निजपुर सिधारे॥ ३३॥ अध्याय॥६२॥ ऊषा अनिरुद्ध विवाह वर्णन॥राग मारू॥ कुँवर तन श्याम मानो कामहै दूसरो सपनमें देखि ऊषा लोभाई। चित्ररेखा सकल जगतके नृपनकी छिनिकमें सुरति तब लिखि देखाई॥ निरखि यदुवंशको रहस मनमें भयो देखि अनिरुद्धसों युद्ध माच्यो। सूर प्रभु ठटी ज्यों भयो चाहै सो त्यों फांसि करि कुँवर अनिरुद्ध बाँध्यो॥ ३४॥ अनिरुद्धव्याह॥ अध्याय॥ ६३॥ राग मारू॥ श्याम बलराम यह सुनत धाये। आइ नारद कह्यो द्वारका नाथसों बाणासुर चोर अनिरुद्ध बँधाये॥ छोहनी दुइदशहुतो हरि सँग कटक जातही नगर ताको लुटायो। देखि यह असुर सन्मुख भयो श्यामके रुद्र निज सेन ल तहां आयो॥ रुद्र भगवान अरु बान सांबुक भिरे राम कुंभाड मांडी लराई। सैनपति कोपि प्रद्युम्नसों भिरचो सांतुकुंकर दोऊ भिरन धाई॥ तेज भगवानको पाय जलावन लगे असुर दल चल्यो सबही पराई। रुद्र तब कोपि करि अग्नि बरपाकरी श्याम जल बर्षि डारचो बुझाई॥ पुनि महादेव जो बाण संधान लियो आप भगवान ताको प्रहारचो। देखि यह युद्ध सुर असुर चक्रतभये लख्यो तब बाण जो रुद्र धारचो॥ बाण तब आइ भगवान सन्मुख भयो बाण वर्षा करन लग्यो भारी। एकहू बाण आयो न हरिके निकट तब गह्यो धनुष सारंगधारी॥ एकही बाण संधान रथके तुरंग ध्वजा अरु धनुष सब काटि डारी। शंखको शब्दकरि लियो असुर तेज हरि ध्वनि रही फैल नभ पृथ्वीसारी॥ देखि यह असुरकी मातुधाई नगन तुरत भगवानके निकट आई। नगन त्रिय देखि वे जगत नाहिन कह्यो जानि इह हरि रहे मुख फिराई॥ असुर यह घात तकि गयो रणते सटकि विपतिज्वर दियो तब शिवपठाई। सतज्वर युद्धकरि कियो विह्वल तिसे तिन तबहिं आइ विनती सुनाई॥ प्राणदाता तुहीं स्थल छूँछिमतुही सर्वआत्मा तुही धर्मपालक। ज्ञान तुही कर्म्म तुही विश्वकर्मा तुही अनंत शक्ति प्रभु असुर शालक॥ संपत्ति अरु विपतिको मिलि चले प्रभु तहां जहां नहिं होइ सुमिरन तिहारो। करत दंडवत मैं तुम्हें करुणाकरन कृपाकरि ओर मेरे निहारो॥ सुनत यह वचन हरि कह्यो अब मौन करि कृपाकरि तोहिं परवीर धारी। संपति अरु विपतिको भय न होइहै तिसे सुनै जो यह कथा चित्तधारी॥ विपति ज्वर कह्यो शिरनाइ हरिको तुरत बाणासुर बहुरि रणभूमि आयो। चक्रपरिहार हरि कियो ताको निरखि रुद्र

शिरनाइ तब कहि सुनायो ॥ प्रगट तुम कपट तुम तुमहिं सब आत्मा निकारचो अग्नि रुद्र कतिहारी। बुधि बिधि चंद्रमा मन अहंकारमें धरि चरण रोम तू पृथ्वी सारी ॥ शीश आकास अरु श्रवण दशहूं दिशा इंद्र करलोक नृप बपु तिहारो। बाण जगदीश मोहिं जान मम ईश तुम राखितेहि अत्र नाथ हाथचारो॥बिहँसि जगदीश कह्यो रुद्र जो तोहिंभजै तहां मैं जाउँ यह प्रण हमारो।कियो प्रह्लाद कुल अभै मैं पथ महिबाण कियो अमर भाषे तिहारी। करै जो सेव तुम्हरी सो मम सेवहै विष्णु शिव ब्रह्म ममरूप सारी ॥ बाण अभिमान मन माँह धारचो हुत्यो यों बिदित हाथ ताते सँहारी। रुद्र अरु बान अनिरुद्ध सन्मान करि तुरत भगवानके निकट ल्याये। बहुरि ऊषा दई व्याह दाइज सहित करै सुमिरनतिसे भै न होई। कह्यो जो व्यास शुकदेव भागवतमें कही अब सूर जन गाइ सोई ॥ ३५ ॥ अध्याय ६४ नृग राजा उद्धार ॥ राग सारंग ॥ अविगति गति जानी न परै। राईते पर्वत करि डारै राई मेरु करै ॥ नृगराजा नित सहस गऊदै करत हुत्यो जलपान । नृगते गिरगिट कीन्हें ताको कोकरि सकै बखान ॥ कूपमाहिं तेहि देखि बालकन हरिसों कह्यो सुनाई । कृपानिधान जानि अपनोजन आये तहँ यदुराई ॥ अंधकूपते काढि बहुरि तेहि दरशनदै निस्तारा। सूरदास सब तजि हरि भजिये जब कब करै उधारा३६॥अध्याय ॥ ६५ ॥ बलभद्र वृंदावन आये ॥ राग विलावल॥श्याम रामके गुण नित गावों। श्याम रामहीसों चितलावों ॥ एक बार हरि निज पुर छये। हलधरजी वृन्दावन गये। यह देखत लोगन सुखपाये। जान्यो राम श्याम दोउ आये ॥ नंद यशोमति जब सुधिपाई। देह गेहकी सुरति भुलाई ॥ आगे ह्वै लेबेको धाए। हलधर दौरि चरण लपटाये॥ बलको हित करि गले लगाये। दै अशीश बोले ता भाये॥ तुमतो भली करी बलराम। कहाँ रहे मनमोहन श्याम ॥ देखी कान्हरकी निठुराई । कबहूं पातीहू न पठाई ॥ आपुजाइ वहां राजा भए। हमको बिछुरि बहुत दुखदये ॥ कहो कबहुँ हमरी सुधि करत। हमतो उन बिनु बहु दुख भरत ॥ कहा करैं वहां कोउ न जात। उन बिनु पल पल युगसम जात ॥ यहि अंतर आए सब ग्वार। बैठे सबन यथा व्यवहार ॥ नमस्कार काहूको कियो। काहूको भर अंकम लियो ॥ गोपी जुरीं मिली वन आई। अतिहित साथ अशीश सुनाई ॥ हरि करि सुध सुधि बुधि बिसराई। तिनको प्रेम कहो नहिं जाई ॥ कोउ कहै हरि ब्याही बहु नार। तिनके बढ्यो बहुत परिवार ॥ उनको इह हम देत अशीस। सुखसों जीवैं कोटि बरीस ॥ कोऊ कहैं हरिहि नहिं चीन्हों।बिन चीन्हें उनको मन दीन्हों॥निशिदिन रोवत हमैं बिहाइ। कहो कहा हम करैं उपाइ॥ कोउ कहै इहां चरावत गाइ। राजा भये द्वारका जाइ ॥ काहेको वै आवैं इहां।भोग विलास करत नित उहां ॥ कोउ कहै हरि रीत सब नई।और मित्रनको सव सुख दई॥ विरह हमारो कहां रहि गयो। जिन हमको अतिही दुख दयो ॥ कोउ कहै जे हरिजीकी रानी।कौन भाँति हरिको पतियानी॥ कोउ कहै चतुर नारि जो होई। करिहै नहीं निवारो सोई॥कोउ कहै हम तुम क्यों पतिआई। उनको हित कुल लाज गवाँई॥ हरि कछु ऐसो टोना जानत। सबको मन अपने वश आनत॥कोउ कहै हम हरि सब बिसराइ।कहा कहैं कछु कह्यो न जाइ॥हरिको सुमिरि नयनजल ढारे।नेक नहीं मन धीरज धारे। इह सुनि हलधर धीरज धार। कह्यो आइहै हरि निरधार ॥ जब बल इह संदेश सुनायो। तब कछु इक धीरज मन आयो॥ बलि तहँ रहे बहुरि दुइ मास । व्रजवासिनसों करत विलास ॥ सबसों मिलि पुनि निजपुर आये। सूरदास हरिको गुण गाये॥३७॥राग सारंग॥वारुणी बल घूमें लोचन विहरत बन सचुपाए। मनहु महा गजराज विराजत करनि यूथ सँग लाए ॥ मुकुलित केश सुदेश देखिअत नीलबसन लपटाये।

भरि अपने कर कनक कचोरा पीवति प्रियहि चुखाए॥ हँसत रिसात बुलावत बरजत तरसत भौंह चढाए। उदित मुदित उठि चलत डगमगत अनुज सुरति जिय आये॥ इंद्र धनुप भुव चाप अधिक छबि वर बनितनके भाये। सर्वस रीझि देत अपने रस सूर श्याम गुण गाये॥ ३८॥सारंग॥ वारुणी बलराम पियारी। गौतम सुता भगीरथ वीवर सबहिनते सुंदरि सुकुमारी॥ ग्रीवाँ बाहु गला रन गाजत सुखसजनी सतिभाय सवाँरी॥ संकर्षणके सदा सुहागिनि अति अनुराग भाग बहुभारी॥ बसुधा धर जु वाम गिरिराजत भ्राजति सकल लोक सुखकारी। प्रथम समागम आनँद आगम दूलह वर दुलहिनी दुलारी॥ रतिरस रीति प्रीति परगटकरि राम काम पूरणप्रति पारी। सूर सु भाग उदित गोपिनके हरिजू रति भेंटे हलधारी॥ ३९॥ कालिंदी सुन कह्यो हमारो। बोली वेगि चलहि बन विहरत न्हाहिं शरीर भयो श्रम भारी॥ अतिही सतरहोइ जिनि सरित। छोडि गर्व या गुणको गारो। आपनि सौंह कृष्णकी कानी राखतहौं यश मान तुम्हारो॥ इतहु महातम मोहिं देखावत भवँरतरंग प्रवाह पसारो। इन खुनसन गोपाल दोहाई हल करि खैंचि करों नदि नारो॥ शिव विरंचि सनकादि सकल मुनि बोल वचन को ऊधो टारो। सूर सुभद्र श्यामके भैयहि निपट नदी जानत मतवारो॥ ४०॥ यमुना आइगई बलदेव। जो तुमको हौं सौंह करीहौं संतत सादर सेव॥ सुर नर मुनि जन गन गंधर्व ए सब बचननके देव। सूर भनो यह मानु करतहौं अवलंवनकी टेव॥ ४१॥ कालिंदीहै हरिकी प्यारी। जैसे मोपै श्याम करतहैं तैसी तुम करहु कृपा निनारी॥ यमुना यशकी राशि चहूं युग यम जेठी जगकी महतारी॥सूर कछू जिय जिनि दुखपायो कहा करों यह टेव तिहारी॥४२राग रामकली॥ श्रीयमुनाजी तिहारो दरश मोहिं भावै। वंशीवटके निकट बसतहौ लहरनिकी छवि आवै॥ दुखह-रनी सुखदेनी श्रीयमुना प्रातहिं जो यश गावै। मदनमोहनजूकी अधिक पियारी पटरानीजू कहावै॥ वृंदावनमें रास विलासै मुरली मधुर बजावै॥सूरदास दंपति छवि निरखत विमल विमल यशगावै॥४३॥ अध्याय॥ ६६॥ पुंडरीकउद्धार॥ राग बिलावल॥ हरि हरि हरि सुमिरहु सब कोय। हरिके शत्रु मित्र नहिं दोय॥ज्यों सुमिरै त्योंहीं गति होइ। हरि हरि हरि सुमिरहु सबकोइ॥ पुंडरीक काशीको राइ। हरिको सुमिरै वैर सुभाइ॥ अहनिशि रहै एहि लवलाइ। क्यों करि जीतौं यादवराइ॥ द्वारावती तिन दूत पठायो। ताको ऐसे कहि समुझायो॥ चारि भुजा मम आयुध धारा। वासुदेव मैंही निरधारा॥ योंहीं कह्यो यदुपतिसों जाई। कपट तजौं की करो लराई॥ दूत आइ हरिसों सब कह्यो। हरिजी तेहि यह उत्तर दयो॥जो तैं कही सो हम सब जानी। पुंडरीककी आयु सिरानी॥ कहो जाइ करैं युद्ध विचार। सांच झूंठ होइहै निरुआर॥ दूत आइ निज नृपहिं सुनायो। तब उन मनमें युद्ध ठहरायो॥ जहां तहांते सबन बुलाइ। तब लगि यदुपति पहुँचे आइ॥ पुंडरीक सुनि सुन्मुख आयो। पांच क्षोहनी दल सँग ल्यायो॥सेना देखि अस्त्र संभारी। यदुपतिके लोगनपर डारी॥हरि कह्यो तू अजहूं संभारी। सांच झूंठ जिय देख विचारी॥ ताकी मृत्यु आइ निअरानी। जो हरि कही सो मन नहिं आनी॥ यदुपति तब निज चक्र सँभारयो। ताकी सेना ऊपर डारयो॥ ऐसे हैं त्रिभुवनपति राई। जाकी महिमा देवन गाई॥ कोऊ भजो काहू परकारा। सूरदास सो उतरै पारा॥४४॥अध्याय॥ ६७॥ द्विविद व सुतीक्ष्ण वध॥राग मारू॥ द्विविद करि क्रोध हरि पुरी आयो। नृप सुदक्षिण जरयो जरी वारा-णसी धाइ धावन जबहिं यह सुनायो॥ द्वारका माँह उत्पात बहुभाँति करि बहुरि रैवत अचल गयो धाई। तहाँहूं देखि बलरामकी सभाको करन लागो निडर ह्वै ढिठाई॥ लख्यो बलराम

यह सुभटवंत है कोऊ हल मुशल शस्त्र अपना सँभारचो । द्विविद लै शालवृक्ष सन्मुख भयो फुरत करि राम तनु फेंकि मारचो ॥ राम दल मारि सो वृक्ष चुरकुट कियो द्विविद शिर फटगयो लगत ताके । बहुरि तरु तोरि पाषाण फटकन लग्यो हल मुशल करन प्रहार बांके ॥ वृक्ष पाषाणको जब वहां नाश भयो मुष्टिका युद्ध दोऊ प्रचारी । रामकी मुष्टिका लगे गिरयो सो धरणिपर निकसि गयो प्राण सुधि बुधि बिसारी ॥ सुरन आकाश से पुहुप वर्षा करी करि नमस्कार जैजै उचारे । देवता गये सब आपने लोकको सूर प्रभु राम निजपुर सिधारे ॥४५॥ अध्याय ॥ ६९ ॥ सांब विवाह ॥ राग आसावरी ॥ श्याम बलरामको सदा गाऊं श्याम बलराम बिनु दूसरे देवको स्वप्नहू माहिं नहिं शीश नाऊं ॥ श्याम सुनि सांब गयो हस्तिनापुर तुरत लक्ष्मणा जहां स्वयंवर रचायो । देखते सबनके ताहि बैठारि रथ आपने देशको पलटि धायो ॥ कर्ण दुर्योधनादिक लियो घेरि तेहि कर्ण ढिग आइ बहुबाण मारे। सांब तेहि काटि निज बाण संधान करि तुरँग रथ नाश करि सब संहारे॥ हतेउ पुनि सारथी एकही बाण करि परयोसो धरणि गिरि सुधि बिसारी॥ एक इक बाण भेज्यो सकल नृपनपै मानो सब साथ कीन्हें जोहारी॥ देखि यह सुरन धनि धन्य सबहिन करयो पुनि करण अश्वरथके संहारी । सांबपै कोप करि बैठारि रथ आपने सुभट सब हस्तिनापुर सिधारी ॥ आइ नारद कही तुरत भगवानसों चले भगवान हलधर बोलाई । कह्यो मैं जाइकै ल्याइहौं सांबको कौरवनसों सदा हित हमारो । प्रीतिकी रीति समुझाइकै न तरु मैं एकही मुशल सबको सँहारों। जाइ बलराम भेंटे सकल कौरवन बहुरि तिन सबन पुनि कहि सुनायो । सांबसों चूक जो भई बालक हुतो तुम्हैं नाहिं बूझिये जो बँधायो ॥ कह्यो दुर्योधन अति कोप तेहि दोष नाहिं दोष सब लगै पुर गये हमारे । जो मनै कियो सन्मान निज सभामें बहुरि इन ओर हित करि निहारे । जाम्बवंत सुता सुत कहां मम सुता बुधिवंत पुरुष यह सब सँभारे । अरु सदा देत यादवसुता कौरवन कहत अब बात बल सुनि बिचारे ॥ कह्यो बलराम यह सांब सुत श्यामको रुद्र विधि रेणु जाकी न पावैं । इंद्र सुर सकल दरबार ठाढे रहैं सिद्ध गंधर्व गुण सदा गावैं ॥ बहुरि करि कोप हल अग्र पर चक्र धर कटकभे दरर चाहत डुबायो । कौरवन मिलि बहुरि भाँति बिनती करी दोष तिनको द्विजन मिलि क्षमायो ॥ सांबको लक्ष्मिना सहित ल्याये बहुरि दियो दाइज अगिन गिन न जाई । सूर प्रभु राम बलराम अतुल कौतुहल नीके करे आनंद निज पुरी आई ॥४६॥ अध्याय ॥ ७० ॥ नारदसंशय द्वारका आगमन ॥ राग धनाश्री ॥ हरि की लीला देखि नारद चकृत भये । मन यह करत बिचार गोमती तर गये ॥ अलख निरंजन निर्विकार अच्युत अविनाशी । सेवत जाहि महेश शेष सुर माया दासी ॥ धर्म स्थापन हेतु पुनि धारयो नर अवतार । ताको पुत्र कलत्रसों नहिं संभवत पियारे ॥ हरिके षोडश सहस रहे पतिवर्तानारी । सबसों हरिको हेत सबै हरिजीकी प्यारी ॥ जाके गृह दुइ नारि होंइ ताहि कलह नित होइ । हरि विहार केहि विधि करत नैनन देखों जोइ ॥ द्वारावति ऋषि पैठ भवन हरि जूके आयो । आगे होइ हरि नारि सहित चरणन शिरनायो ॥ सिंहासन बैठारिकै प्रभु धोये चरण बनाइ । चरणोदक शिर धरि कह्यो कृपाकरी ऋषिराइ ॥ तब नारद हँसि कह्यो सुनो त्रिभुवनपतिराई । तुम देवनके देव देतहौ मोहिं बडाई ॥ विधि महेश सेवत तुम्हैं मैं बपुरा केहिमाहीं । कहत तुम्हैं ब्राह्मण देवता यामें अचरज नाहीं ॥ और गेह ऋषि गये तहां देखे यदुराई । चमर ढोरावत नारि करत दासी सेवकाई ॥ ऋषिको रूखे

देखि हरि बहुरि कियो सन्मान । उहँऊते नारद चले करत ऐसो अनुमान ॥ जा गृहमें मैं जाउँ श्याम आगेही आवत । ताते छाँडि सुभाउ जाउँ अब कैसे धावत ॥ जहां नारद श्रम करि गये तहां देखे घनश्याम । पालनहू क्रीडा करत करजोरे खडीं बाम ॥ नारद जहाँ जहाँ जाइँ तहाँ तहाँ हरिको देखै । कहुँ कछु लीला करत कहूं कछु लीला पेखै ॥ योंहीं सब गृहमें गये भयो न मन विश्राम । तब ताको व्याकुल निरखि हँसि बोले घनश्याम ॥ नारद मनकी भर्म तोहिं यतनो भरमायो । मैं व्यापक सब जगत वेद चारों मुख गायो । मैं कर्ता मैं भुक्ता मोहिं बिनु और न कोइ । जो मोको ऐसो लखै ताहि नहीं भ्रम होइ ॥ बूझो सब घर जाइ सबै जानत मोहिं योंहीं । हरिकी हमसों प्रीति अनत कहूँ जात न क्योंहीं ॥ मैं उदास सबसों रहों इह मम सहज सुभाइ । ऐसो जानै मोहिं जो मम माया न रचाइ ॥ तब नारद करजोरि कह्यो तुम अज अनंत हरि । तुमसे तुम बिन द्वितिय कोउ नाहीं उत्तमदुरि ॥ तुम माया तुम कृपा बिनु सकै नहीं तरिकोइ । अब मोको कीजै कृपा ज्यों न बहुरि भ्रम होइ ॥ ऋपि चरित्र मम देखि कछु अचरज मतिमानो । मोते द्वितिया और कोऊ मनमाहिं न आनो ॥ मैंही कर्ता मैंही भुक्ता नाहिं यामें संदेहु । मेरे गुण गावत फिरौ लोगनको सुख देहु ॥ नारद करि परणाम चले हरिके गुण गावत । बारबार उरहेत ध्याइ हृदयमें ध्यावत ॥ इह लीला करि अचरजकी सूरदास कहिगाइ । ताको जो गावै सुनै सो भवजल तरिजाइ॥४७॥अध्याय ॥ ७१ ॥ भगवान हस्तिनापुर चले जरासंधवधहेतु ॥

॥ राग मारू ॥ चले हरि धर्म्मसुअनके देश । बंदित जन भूभार उतारन काटन बंदी कठिन नरेश । जब प्रभु जाइ शंखध्वनि कीनी ठाढे नगर प्रवेश । सुनि नृपवधू सकल उठिधाई डारि चरण रजकेश ॥ शीशनाइ करजोरि कह्यो तब नारद सभा सहेस । तत्क्षण भीम धनंजय माधो धन्य द्विजनको भेस ॥ पहुँचे जाइ राजगिरि द्वारे धुरे निसान सुदेश । यांच्यो जाइ आतिथि रूप है आशिश युद्ध नरेश ॥ जरासंधको युद्ध अथरबल रहत न क्षत्रीलेश । सूर श्याम दिन सात बीत तिन तोरिब काटि कलेश ॥ ४८ ॥ राग कान्हरो ॥ राजरवनि गावत हरिको यश । रुदन करत सुतको समुझावति राखति श्रवणन प्यार सुधारस ॥ तुम जिनि जीव डरहु रे बालक कृपासिंधुके शरन सदाबसु । तजि जिय सोच तात अपनेको करि प्रतीति निश्चय ह्वै ह्वै हँसु॥जिन प्रभु जनकसुता प्रण राख्यो अरु रावणके शीश सकल नशु।सोई सूर सहाय तुम्हारो मोचन गोप गयंद महापशु ॥४९॥

॥ राग धनाश्री ॥ इहां और कासों कैहौं गरुडगामी । दीनबंधु दयासिंधु अशरन शरन सत्य सुखधाम सर्वज्ञ स्वामी ॥ इन जरासंध मदअंध मम मान माथि बाँधि बिनु काज बल इहां आने । भए आरूढ आति क्रोध जिनि गिरि गुहा रहत भृंगी कीट ज्यों त्रासमाने ॥ नाहिंनै नाथ जिय सोच धन धरणिको मरनते अधिक यह दुख सतावै ॥ भृत्यकी रीति तजि होत मागध सकल नाथ जिनि दमत उद्वेग पावै ॥ मधु कैटभ मथन मुर भौम केशी भिदन कंस कुल काल अनुसाल हारी । जानि युगजूपमें भूप तद्रूपता बहुरि करिहै कलुप भूमि भारी ॥ बदत नृप देत भैभीत उर भीरता सुनत हरि सूर सारथि बोलायो । भयो आरूढ तकि ताहि उत्तर दियो जाइ सुख देहु या हेतु आयो ॥ ५० ॥ अध्याय ॥ ७२ ॥ जरासंधवध॥राग मारू ॥ कंसखलदलन रन राम रावणहतन सँहारी । दीन दुखहरन गज मुक्तकारी ॥ नृपति चहुँदेशके बंदी जरासंधके रैनि दिन रहत जिय दुखित भारी । सुने यदुनाथ इह बात तब पथिकसों धर्मसुतके हृदय यह उपाई । राजसूयज्ञको कियो आरंभ मैं जानिकै नाथ तुमको सहाई । भीम अर्जुन सहित विप्रको रूपधरि हरि जरासंधसों युद्ध

मांग्यो । दियो उनपै कह्यो तुम कोऊ क्षत्रिआ कपटकरि विप्रको स्वांग स्वांग्यो ॥ हरि कह्यो भीम अर्जुन दोऊ सुभट ये कृष्ण मैं देखि लोचन उघारी । वचन जो कही प्रतिपाल ताको करो कै सभा माँह सत जाहु हारी ॥ पार्थ अरु तुम समर्थ सम युद्धको भीमसों उन यह कह सुनाई । बीस औ सप्तदिन यों गदायुद्ध कियो दोउ बलवंत कोउ लियो न जाई ॥ श्याम तृणचीर देखराय दियो भीमको भीम तब हर्षि ताको संहारचौ । जरा जरासंधकी सांधि जोरचो हुत्यो भीम ता संधको चीर डारचो । नृपनको छोरि सहदेवको राज्यदियो देव नर सकल जैजै उचारचो । सूर प्रभु भीम अर्जुन सहित तहांते धर्मसुत देशको पुनि सिधारचो ॥ ९१ ॥ अध्याय ॥ ७३ हस्तिनापुरआये॥ राग सारंग॥ जीत्यो जरासंध बंदि छोरी । युगल कपाट विदारि बाटकरि लतानि जुही संधियोरी ॥ विषम जाल बल बाँधि व्याधलौं नृप खग अवलि बटोरी । जनु सु अहेरो हति यादवपति गुहापीजरी तोरी ॥ निकसे देत अशीश एकमुख गावत कीरति कोरी । जनु उडचले विहंगम कोगन कटी कठिन पग डोरी ॥ मिटिगए कलह कलेश कुलाहल जनु करि बीती होरी॥ सूरदास प्रभु अतुलित महिमा जो कछु कह्यो सो थोरी॥ राग मारू॥ जीत्यो जीत्यो हो यदुपति रिपु दल मारचो । तउन तजत हठ परम शठ ना जानौ कुबुद्धि जड कै वारहै विदारचो ॥ वरवरमूढा उठि खेलत बालक सुठि आनितइधन दौरि दौरि संचारचो॥ ऐसे इहु नृप नर सकल सकेलि घरके साककरन स्वद रस बकुल जारचो॥ कह्यो न काहूको करै बहुरि बहुरि औरै एकही पाइदै इक पग पकरि पछारचो । सूर स्वामी अतिरिस भीमकी भुजाके मिस व्यौतत वसन ज्यों सुत तन फारचो॥ ९२॥ समूह राजा विनती॥ राग बिलावल॥ जाहि कहा अपराध भरे। तुम माता तुम पिता जगतगुरु तुमहिं सहोदर बंधु हरे ॥ वसन कुचील देह अति दुर्बल उमँगि प्रेम जल सिथिल भरे । राजा सबै बंदिते छोडे आइ कृष्णके पाँइ परे ॥ सावधान करि बिदा दई हरि उठे कमल कर शीश धरे॥ सूरदास प्रभु तुम्हरी कृपाते भवसागरके मांझ तरे॥ ९३॥ अध्याय ॥ ७४ ॥ पांडवयज्ञ शिशुपालगति ॥ राग विलावल ॥ हरि हरि हरि सुमिरो सबकोइ । शत्रु मित्र हरि गिनत न दोइ ॥ जो सुमिरै ताकी गति होइ । हरि हरि हरि सुमिरो सब कोइ ॥ वैरभाव सुमिरचो शिशुपाल । ताहि राजसूमें गोपाल ॥ चक्र सुदर्शन करि संहारचो । तेज तासु निज सुखमें डारचो ॥ भक्त भाव भक्तन उद्धारत । वैरभाव असुरन निस्तारत ॥ कोऊ सुमिरो काहु प्रकार । सूरदास हरिनाम उधार॥ ९४॥ अध्याय ॥ ७५ ॥ पांडवसभा दुर्योधन क्रोध ॥ राग बिलावल ॥ भक्तकाज हरि जित कित सारे । यज्ञराजसू माहिं आप हरि सबके पाँइ पखारे ॥ अष्टनायका द्रुपदसुताकी करैं तहाँ सेवकाई । दुर्यो-धन यह रीति देखिकै मनमें रह्यो खिसाई ॥ भक्त संग हरि लागे डोलत भक्तवत्सल प्रभु भोरी । सब विधि काज करत भक्तनके गनत नहीं हम कोरी ॥ जीते जीतत भक्त आपनकी हारे हार बिचा-रत । सूरदास प्रभु रीति सदा यह प्रणयुगयुग प्रतिपारत ॥ ९५॥ अध्याय॥ ७६॥ तथा॥ ७७॥ शाल्वद्वारका आक्रमण प्रद्युम्नशाल्व युद्ध शाल्व वध ॥ राग मारू॥ सुभट शाल्व करि क्रोध हरिपुरी आयो। हत्यो शिशुपालको राजसू मांह हरि धाइ धावन जबहिं इह सुनायो ॥ वृक्ष बन काटि महलात ढाहन लग्यो नगरके द्वार दीनों गिराई । सर्व पाषाणकी वृष्टि करि लोग पर पाइ अति पलक बीते जराई ॥ प्रद्युमन साँब रणनिकसि सन्मुख भये नंदनंदन सुनत तुरतधाई । तहाँ चारि देश दिश साजि दल मिलि सकल हाँकि रथ तुरंग ता ठौर आई । सुमिरि गोपाल तव शाल्व मारचो फटकि प्रद्युमन बाण दिशिते चलायो । मिटचो अंधकार तब बाण वर्षा करी तुरंग रथ सारथी सो गिरायो ॥ सैन्यके लोग पुनि बहुत घायल किये लरचो ध्वजा धरि धर परचो मुरछाई । शाल्व इह देखिकै चकृत सों होइ रह्यो शस्त्रके गहन

की सुध भुलाई ॥ अस्त्र विद्या समर बहुरि लाग्यो करन कबहुँ लघु कबहुँ दीरघ सो होई। गुप्त कबहुँ कबहुँ प्रगट तेहि देखिकै धरती रहहि कबहुँ आकाश सोई॥अग्नि कबहुंक बरखि वारि बर्षा करे प्रद्युमन सकल माया निवारी। शाल्व परधान उदमान मारी गदा प्रद्युमन मुरछित भये सुधि बिसारी ॥ धर्मपति सारथी गयो एकांतलै उहां जब चेत ह्वै सुधि संभारी। खीझ कह्यो ताहि क्यों इहां ल्यायो मुझे मम पिता मातको लगै गारी ॥ कहा कहिहैं हमैं राम भगवान सुनि नारि मम सुनत अति दुखित होई। मरे रण सुयश त्रैलोक सुख पाइये मंदमति तैं दोऊ बात खोई। धर्मपति कह्यो करि विनय मम शोक नहिं सारथी धर्म मोहिं गुरू सिखायो। मूर्च्छित सुभटहो नहीं राखिये खेतमें जानि यह बात मैं इहां ल्यायो ॥ प्रद्युमन कह्यो जो भई सो भई अब बात नहिं जिन्ह कोऊ सो सुनैये। ताहिदै शपथ करि आचमन यों कह्यो चलो रणभूमि अब वेगि जैये। आइ रणभूमिमें सबन धीरज दियो शाल्व रथ तुरंग चारों संहारे। छत्र ध्वज तोरि मारचो बहुरि सारथी देखि यह दूर कियो सुभट सारे ॥ हस्तिनापुर गये हते हरि पांडु गृह तहांते चले यह बात जानी। शाल्वउत्पात कियो द्वारका माँह बहु हांकि रथ कह्यो सारंगपानी ॥ सारथी पाय रुख दये सटकार हय द्वारकापुरी जब निकट आई। शाल्वके भटन लखि कटक भगवानको आपने नृपतिसों कह्यो जाई ॥ सुनि सो भगवानके आइ सन्मुख भयो सारथी दौरि बर्छी चलाई। ताहि आवत निरखि श्याम निज सांगको काटिकरि शाल्वकी सुधि भुलाई ॥ बहुरि तिन कोपि निज बाण संधानकरि धनुष भगवानको काटि डारचो। टूटते धनुषके शब्द आकाश गयो शाल्व निज जिय समुझि पुनि उचारचो ॥ रुक्मिणी माँगि शिशुपालकी तुम हरी बहुरि तेहि राजसूमें संहारचो। जाइहौ अब कहां शिशु दाँव लैहौं इहां छाँडितीजार आपा संभारचो ॥ कह्यो भगवान सुनु शाल्व जे शूरनर ते नहीं करत निज सुख बडाई। जंगमें शूर तिनको नहीं जानिये भाषि यह गदा ताको चलाई ॥ गदाके लगतही गयो सो गुप्तहोइ धारि धावन रूप यह सुनायो। कह्यो वसुदेव जगदीश सुनु अस्त्रजे तुअ अछत शाल्व मोहिं बांधि ल्यायो ॥ बहुरि करि कपट वसुदेव तहां प्रगट कियो कह्यो तिन नाथ मैं दुखित भारी। शाल्व करवारलै श्यामके देखते डारिदियो ताको शीश उतारी ॥ कह्यो भगवान करि कपट इन यह कियो तासु माया तुरत हरि निवारी। भागि निज पुर चल्यो श्याम पहिलेहि पहुँचि पुनि गदा खैंचि ता शीश मारी। शाल्व कियो युद्ध बहु बेरलौं गदाकी बहुरि हरि सांग ताको चलाई। लगत ताके गए प्राण वाके निकसि सुरन आकाश दुंदुभि बजाई ॥ शीश ताको बहुरि काटि करवालसों नगर सब समुद्र मों डारि दीन्हों। सूर प्रभु रहे ताठौर दिन और कछु मारि दंतवक्र पुर गवन कीन्हों ॥ ९६ ॥ अध्याय ॥ ७८ ॥ दंतवक्रपरमगति ॥ राग मारू ॥ हरि निकट सुभट दंतवक्र आयो। कह्यो शिशुपाल तुम राज सूमें हत्यो धनि सो यह हेत सुनि दरश पायो ॥ भृत्य तुम हने संशय नहीं कछु हमें दोउ विधि आइ प्रभु हित हमारी। जीवै तो राज सुख भोग पावै जगत मुये निर्वाण नीरस तुम्हारी ॥ बहुरि लै गदा प्रहार कियो श्यामपर लगे ज्यों लकुट अंबुजप भारी। हरि गदा लगत गये प्राण ताके निकसि बहुरि हरि निज वदन माँह धारी ॥ अनुज ताको बडो रथ लग्यो फिरन यों चक्रसों शीश ताको प्रहारचो। सूर प्रभु युद्ध भयो मुनि जन हरषिये सुर पुहुप बरषि जै जै उचारचो ॥ ९७ ॥ अध्याय ॥ ७९ ॥ बल्वल बध, रामतीर्थगमन ॥ राग मारू ॥ श्याम बलरामको सदा गाऊं। यही मम ज्ञान यह ध्यान सुमिरन यही इहै स्नान फल इहै पाऊं ॥ श्याम दंतवक्र अरु शाल्वको जीत करि करत आनंद निज पुरी

आये।राम गंगा और यमुना स्नान करि नैमिषारण्य में जाइ न्हाये॥सूत तहां कथा भागवतकी कहत हैं ऋषि अठासी सहस हुते श्रोता। रामको देखि सन्मान सबही कियो सूत नहिं उठ्यो निज जानि वक्ता॥ रामतेहि हत्यो तब सब ऋषिन मिलि कह्यो विप्र हत्या तुम्हैं लगी भाई। ताहिनिमित्त सकल तीर्थ स्नान करो पाप जो भयो सो सब नशाई॥ पुनि कह्यो ऋषिन दानव महा प्रबल इहां इमैं दुख देत सोई सदाई। ताहि जो हैतौ तो होइ कल्याण तुम्हैं हम करैं यज्ञ सुखसों सदाई॥ राम दिन कइक ता ठौर अवरो रहे आइ वल्वल तहां दई देखाई। रुधिर औ माँसकी लगो बर्षा करन ऋषि सकल देखिकै गये डेराई॥ राम हलसों पकरि मूशलसों हत्यो तेहि प्राण तजि तिन सकल सुधि बिसारे। सुरन आकाशते पुहुप बर्षा करी ऋषिन आशीशदै जै ध्वनि उचारी॥ बहुरि बलभद्र परणाम करि ऋषिन्हको पृथ्वी परदक्षिणाको सिधाये। प्रभु रची ज्योंहिं ज्यों होइ सो त्योंहिं त्यों सूर जन हरि चरित कहि कहि सुनाये॥ ५८॥ ॥ अध्याय॥ ८०॥ तथा॥ ८१॥ सुदामा दारिद्रभंजन॥ राग बिलावल॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविंद उर धरो॥ विप्र सुदामा सुमिरे हरी। ताकी सकल आपदा टरी॥ कहौं सो कथा सुनो चितधार। कहै सुनै सो लहै सुखसार॥विप्र सुदामा परमकुलीन। विष्णुभक्त सो अतिलवलीन॥ भिक्षा वृत्ति उदर नित भरै। निशिदिन हरि हरि सुमिरन करै॥ नाम सुशीला ताकी नारी। पति-व्रता अति आज्ञाकारी॥ पति जो कहै सो करै चितलाइ। सूर कह्यो इक दिन या भाइ॥ राग बिला-वल॥ कहि न सकति सकुचाति इक बात। कितीक दूरि द्वारका नगरी काहे न द्विज यदुपति लौं जात॥ जाके सखा श्यामसुंदरसे श्रीपति सकल सुखनके दात। उनके अछत आपने आलस काहे कंत रहत कृशगात॥ कहियत परम उदार कृपानिधि अंतर्यामी त्रिभुवन तात। द्रवत आपु देत दास-नको रीझत हैं तुलसीके पात॥ छाँडौ सकुच बाँधि पट तंदुल सूरज संग चलो उठि प्रात। लोचन सफल करौ प्रभु अपने हरि मुख कमल देखि बिलसात॥ ५९॥ ॥ राग नट॥ श्रीकंत सिधारो मधुसूदनपै सुनियतहै वै मीत तुम्हारे। बाल सखाकी विपति विहंडन संकट हरन मुरारे॥ और जु अति आदर सुन्यो हम निज जन प्रीति विचारे। यद्यपि तुम संतोप भजतहौ दरश निकट सुख भारे॥ सूरदास प्रभु मिले सुदामें सब भाँति सुख दैजु नारे॥६०॥राग बिलावल॥दूरिहिते देखै बलबीर। अपने बाल सखा सुदामा मलिन वसन अरु छीन शरीर॥ पौढे हुते प्रयंक परम रुचि रुक्मिणि चमर डोलावत तीर। उठि अकुलाइ अगमने लीने मिलत नैनभरि आये नीर॥ तेहि आसन बैठारि श्याम घन पूँछी कुशल करौ मन धीर। ल्यायेहौ सु देहु किन हमको अब कहा राखि दुरावत चीर॥दरशन परसि दृष्टि संभापन रही न उर अंतर कछु पीर। सूर सुमति तंदुल चबातही कर पकरयो कमला भइ भीर॥ ॥६१॥राग धनाश्री॥यदुपति देखि सुदामा आये। विह्वल बिकल छीन दारिदवश करि प्रलाप रुक्मिणि समुझाये॥ दृष्टि परे ते दिये संभापण भुजा पसारि अंक लै आये। तंदुल देखि बहुत दुख उपज्यो मांगु सुदामा जो मन भाये।भोजन करत गह्यो कर रुक्मिणि सोइ देहु जो मन न डुलावै। सूरदास प्रभु नव निधि दाता जापर कृपा सोइ जन पावै॥६२॥राग बिलावल॥ऐसी प्रीतिकी बलिजाउँ। सिंहासन तजि चले मिलनको सुनत सुदामा नाउँ॥ गुरुबांधव अरु विप्र जानिकै चरणन हाथ पखारे। अंकमाल दै कुशल बूझिकै अर्धासन बैठारे॥ अर्धंगी बूझत मोहनको कैसे हितू तुम्हारे। दुर्बलदीन क्षीन देखतिहौं पाँउ कहांते धारे॥ संदीपनके हम औ सुदामा पढे एक

T

चटसार। सूर श्यामकी कौन चलावै भक्तन कृपाअपार ॥६३॥राग धनाश्री॥ गुरु गृह जब हम वनको जात। तुरत हमारे बदले लकरी ये सब दुख निजगात॥ एक दिवस वर्षा भई वनमें रहिगये ताही ठौर। इनकी कृपा भयो नाहिं मोहिं श्रम गुरु आये भये भोर॥ सो दिन मोहिं विसरत न सुदामा जो कीन्हों उपकार। प्रतिउपकार कहाकरौं सूर अब भाषत आप मुरार॥ ६४॥ हरिको मिलन सुदामा आयो। विधि करि अरघ पाँवडे दीने अंतर प्रेम बढ़ायो॥ आदर बहुत कियो यादवपति मर्दन करि अन्हवायो। चोवा चंदन अगर कुमकुमा परिमल अंग चढायो॥ पूरब जन्म अदात जानिकै ताते कछू मँगायो। मूठिक तंदुल बाँधि कृष्णको बनिता विनय पठायो॥ समदे विप्र सुदामा घरको सर्वसु दै पहुँचायो। सूरदास बलि बलि मोहनकी तिहूँ लोक पद पायो॥ ६५॥ वह सुधि आवत तोहिं सुदामा। जब हम तुम वनगए लकरियन पठए गुरुकी भामा॥ चपल समीर भयो तेहिरजनी भीजे चारों यामा। कांपत हृदय वचन नाहिं आवै आए सत्वर धामा॥ तबहिं अशीश दई परसन ह्वै सफल होहु तुम कामा। सूरदास प्रभुको जो मिलन यश गावत सुर नर नामा॥ ६६॥ राग बिलावल॥ सुदामा गृहको गमन कियो। प्रगट विप्रको कछु न जनायो मनमें बहुत दियो॥ वोई चीर कुचील वोई विधि मोको कहा कियो। धरिहौं कहा जाइ त्रिय आगे भरि भरि लेत हियो॥ भयो संतोष भाव मनहीं मन आदर बहुत कियो। सूरदास कीन्हें करनीं बिन कोपति आइ वियो॥ ६७॥ सुदामा मंदिर देखि डरयो। शिशधुने दोऊ करमींडे अंतर साँच परयो॥ ठाढी त्रिया मार्ग जो जीवै ऊंचे चरण धरयो। तोहिं आदरयो त्रिभुवनको नायक अब क्यों जात फिरयो॥ इहां हुती मेरी तनिक मडैआ को नृप आनि छरयो। सूरदास प्रभु करि यह लीला आपद विप्र हरयो॥ ६८॥ देखत भूलि रह्यो द्विज दीन। ढूंढत फिरै न पूंछन पावै आपुन गृह प्राचीन॥ किधौं देवमाया बौरायो किधौं अनतही आयो। तृणहुकी छाँह गई निधि मांगत अनेक जतन करि छायो॥ चितवत चकित चहूँदिशि ब्राह्मण अद्भुत रचना रीति। ऊंचे भवन मनोहर छाजा मणि कंचनकी भीति॥ पति पहिचानि धरी मंदिरते सूर त्रिया अभिराम। आवहु कंत देखि हरिको हित पाउँ धारिये धाम॥ ६९॥ भूलो द्विज देखत अपनो घर। औरहि भाँति रची रचना रुचि देखतही उपज्यो हृदय डर॥ कै यह ठौर छिनाइ लियो कहुँ आइ रह्यो कोऊ समरथ नर। कैहौं भूलि अनतखंड आयो यह कैलास जहां सुनियत हर॥ बुधजन कहत दुबल घातक विधि सोइ न आजु लह्यो यह पटतर। ज्यों नलनी वन छाँडि वसी जल दाही हेम जहां पानी सर॥ जगजीवन जगदीश जगतगुरु अनिगति जानि भरयो। आवो चले मंदिर अपनेही कमलाकंत धरयो॥ ता पीछे त्रिय उतरि कह्यो पति चलिए घरहि गहे कर से कर। सूरदास यह सब हित हरिको रोप्यो द्वार सुभग ति कलपतर॥७०॥कहा भयो मेरो गृह माटीको। होतो गयो गुपालहि भेंटन और खर्चतंदुल गांठीको॥बिनु ग्रीवा कल सुभग न आन्यो हुतो कमंडलु दृढ काठीको। घुनो बाँस गत बुन्यो खटोला काहूको पलंग कनक पाटीको॥ नौतन पीरे दिकुयुगतीपै भूषण हुते न लोहू माटीको। सूरदास प्रभु कहा निहोरों मानतुरंक त्रास टाटीको॥७१॥राग धनाश्री॥ कहो कैसे मिले श्याम संघाती। कैसे गए सु कंत कौन विधि परसे हुते वस्तर कुचिलकुजाती॥ सुनि सुंदरि प्रतिहार जनायो हरि समीप रुक्मिणी जहाती। उभै मुठी लीनी तंदुलकी संपति संचित करीही थाती॥ सूर सु दीनबंधु करुणामय करत बहुत जो श्रीनरिसाती॥७२॥राग बिलावल॥ऐसे मोहिं और कौन पहिचानै। सुन सुंदरी

दीनबंधु बिन कौन मिताई मानै ॥ कहां हम कृपण कुचील कुदरशन कहां वै यादवनाथ गुसाँई । भेंटे हृदय लगाइ अंक भरि उठि अग्रजकी नाँई ॥ निज आसन बैठारि परमरुचि निजकर चरण पखारे । पूँछी कुशल श्याम घन सुंदर सब संकोच निवारे ॥ लीन्हें छोरि चीरते चाउर करगहि मुख-में मेले । पूरब कथा सुनाइ सूर प्रभु गुरु गृह वसे अकेले ॥ ७३ ॥ राग धनाश्री ॥ हरि बिन कौन दारिद्र हरै । कहत सुदामा सुन सुंदरि जिय मिलन न हरि विसरै ॥ और मित्र ऐसे समया महँ कत पहिंचान करै । विपति परे कुशलात न बूझै बात नहीं बिचरै । उठिकै मिले तंडुल हरि लीने मोहन वचन फुरै । सूरदास स्वामीकी महिमा टारी निधि न टरै ॥ ७४ ॥ और को जानै रसकी रीति । कहां हौं दीन कहां त्रिभुवनपति मिले पुरातन प्रीति । चतुरानन तन निमिप न चितवत इती राजकी नीति । मोसों बात कही हृदयकी गए जाहि युगबीति ॥ बिनु गोविंद सकल सुख सुंदरि भुस पर कीसी भीति । हौं कहा कहों सूरके प्रभुके निगम करत जाकी कीति ॥ ७५ ॥ गोपाल बिना और मोहिं ऐसो कौन सँभारै । हँसत हँसत हरि दौरि मिले सु उरते उर नहिं टारै ॥ छीन अंग जीरन वस्त्र दीन सुख निहारै । ममतन रज पथ लागी पीतपट सों झारै ॥ सुखद सेज आसन दीन्हों सु हथ पायँ पखारै । हरि हित हर गंग धरे पदजल शिर ढारै ॥ कहि कहि गुरु गेह कथा सकल दुख निवारै । न्याय निज वपु सूरदास हरिजी ऊपर वै वारै ॥ ७६ ॥ राग केदारो ॥ दीन द्विज द्वारे आइ रहो ठाढो । नाम सुदामा कहत नाथ जो दुखी आहि अति गाढो ॥ सुनतहि वचन कमलदल लोचन कमला दल उठि धाए । त्रिभुवन नाथ देखि अपनो प्रिय हितसों कंठ लगाए ॥ आदर करि मंदिर लै आने कनक पलँग बैठाए । कथा अनेक पुरातन कहि कहि गुरुके धाम बताए ॥ खइबेको कछु भाभी दीन्हों श्रीपति श्रीमुख बोले । फेंट ऊपरतें अंजुल तंडुल बलकरि हरिजू खोले ॥ दुइ मूठीं तंडुल मुखमें ले बहुरो हाथ पसारयो । त्रिभुवन दैकरि कह्यो रुक्मिणी अपुनो दान निवारयो ॥ विदा कियो पहुँचे निज नगरी हेरत भवन न पायो । मंदिर रही नारि पहिंचान्यो प्रेम समेत बुलायो ॥ दीनदयालु देवकीनंदन वेद पुकारत चारो । सूर सु भेंटि सुदामाको दुख हरि दारिद्र मिटारो ॥ ॥ ७७ ॥ श्रीकृष्ण द्वारका गमन हेतु पंथीप्रति ब्रजनारी वदति ॥ राग मलार ॥ तबते बहुरि न कोऊ आयो । उहै जु एकबेर ऊधोसों कछु संदेशो पायो ॥ छिन छिन सुरति करत यदुपतिकी परत न मन समुझायो । गोकुलनाथ हमारे हितलगि लिखिहू क्यों न पठायो ॥ यहै विचार करहु धौं सजनी इतौ गहर क्यों लायो । सूर श्याम अब बेगि न मिलहू मेघनि अंबर छायो ॥ ७८ राग गौरी ॥ बहुरयो ब्रज बात न चाली । वहै सु एक बेर ऊधो कर कमलनैन पाती दै घाली ॥ पथिक तुम्हारे पाँइन लागति मथुरा जाउ जहां वनमाली । कहियो प्रगट पुकार द्वार ह्वै कालिंदी फिरि आयो काली ॥ तबहूं कृपालुती नँद नंदन रचि रचि रसिक प्रीति प्रतिपाली । माँगत कुसुम देखि ऊंचे द्रुम लेत उछंग गोद करि आली ॥ जब वह सुरति होत उर अंतर लागति काम बाणकी भाली । सूरदास प्रभु प्रीति पुरातन सुमिरत उरह शूल अति शाली ॥ ७९ ॥ राग धनाश्री ॥ तुम्हरे देश कागर मसि खूटी । भूँख प्यास अरु नींद गई सब हरि विन विरह लयो तनु टूटी ॥ दादुर मोर पपीहा बोले अवधि भई सब झूठी । हम अपराधिनि मर्म न जान्यो अरु तुमहूते तूटी ॥ सूरदास प्रभु कबहुँ मिलहुगे सखी कहत सब झूठी ॥ ८० ॥

अध्याय ॥ ८२ ॥ कुरुक्षेत्र यशोमति गोपी मिलन ॥ पथिक कहियो ब्रजजाइ सुने हरि जात सिंधु तट । सुनि सब अंग भये शिथिल गयो नहिं वज्रहियो फट ॥ नर नारी घर घर सबै इह करति विचारा । मिलिहैं कैसी भांति हमैं अब नंदकुमारा ॥ निकट बसत हुती अस कियो अब दूर पयाना । बिना

कृपा भगवान उपाउ न सूर अपाना॥८१॥राग गौरी ॥हमारे श्याम चलन कहत हैं दूरी।मधुवन वसत आशहुती सजनी अव मरिहैं जु विसूरी ॥ कौने कहीं कौन सुनि आई किहि रुख रथकी धूरि ॥ संगहि सवै चलौ माधवके नातो मरिहौं झूरि ॥ दक्षिणादिशि यह नगर द्वारका सिंधु रह्यो जलपूरि । सूरदास प्रभु विनु क्यों जीवों जात सजीवन मूरि ॥ ८२ ॥ गोपिका विरह ॥राग धनाश्री ॥ नैना भये अनाथ हमारे । मदनगोपाल वहांते सजनी सुनियत दूरि सिधारे ॥ वे जलहर हम मीन वापुरी कैसे जिवहिं निनारे । हम चातक चकोर श्यामघन वदन सुधानिधि प्यारे ॥ मधुवन वसत आश दरशनकी जोइ नैन मगहारे । सूर श्याम करी पिय ऐसी मृतकहुते पुनि मारे॥८३॥राग धनाश्री॥अव निज नैन अनाथ भये। मधुवन हुते माधो सजनी कहियत दूरि गये॥ मथुरा वसत हुती जिय आशा यह लागत व्यवहार । अव मन भयो भीमके हाथी सुपने अगम अपार ॥ सिंधुकूल इक नगर वतावत ताहि द्वारका नाउँ । यह तनु सौंपि सूरके प्रभुको और जन्मधरि जाउँ ॥ उती दूरते को आवै री । जासों संदेश कहि पठऊं इहांते सो कहि कहन कहां पावै री ॥ कंचनके वहु भवन मनोहर राजा रंक न तृण छावै री। वहांके वासी लोगनको क्यों व्रजको वसिवो भावै री.॥ सिंधुकूल इक देश वसतहै देख्यो सुन्यो न मन धावै री । वहुविधि करत विलाप विरहिनी अनेक उपाय दुख पावै री॥कहा करों कहां जाउँ सूर प्रभु को हरि पियपै पहुँचावै री॥८४॥ ॥राग सारंग ॥ हौं कैसेकै दरशन पाऊं । सुनहु पथिक वहिदेश द्वारका जो तुम्हरे सँग आऊं। वाहिर भीर वहुत भूपनकी वूझत वदन दुराऊं । भीतर भीर भोग भामिनिकी तेहिठां कौन पठाऊं ॥ वुधि वल युक्ति जतन करि वहिपुर हरि पियपै पहुँचाऊं । अव वन वसि निकुंजरसिक विन कौनहिं दशा सुनाऊं ॥ श्रमकै सूर जाउँ प्रभुपासहि मनमें भले मनाऊं । नवकिशोर मुख मुरली विना इन नैनन कहा देखाऊं॥ ८५ ॥ राग नट ॥ मानो विधि अव उलटि रची री।जानति नहीं सखी काहेते वही न तेज तजी री ॥ वूडि न मुई नीर नैननके प्रेम न प्रजारि पची री । विरह अग्नि अरु जलप्रवाहते क्यों दुहुँ वीच वची री ॥ जो कछु सकल लोककी शोभा लै द्वारका मची री । वहां कि वारिधि वडवानलमें रतन आनि वची री ॥ कहिये संकर्षणके भ्राता कीटनि कितन मची री। सूर श्याम या जग मोह्यो सोई मुख निरखि नची री॥८६॥ राग मारू ॥ ओ नहीं माईको हतो।सुन री सखी संदेशदुर्लभ भए नैन थके मग जोइतो। गोकुल छाँडि निवास सिंधु कियो प्राण जीवन धनसोइतौ ॥ द्वारावती कठिन अति मारग क्यों करि पहुँचे लोइतो । मिती मिलनकी आशअवधि गई व्रजवनिता कहि रोइतौ ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको त्रिपति कहूं नहिं होइतो ॥ ८७ ॥ ॥ राग मलार ॥ ताते अव अति मरियत अपसोसनि । मथुराहूते गए सखी री अव हरि कारे कोसनि ॥ यह अचरज सु वडो मेरे जिय यह छांडनि वह थोसनि । निपट निकाम जानि हम छाँडी ज्यों कमान विन गोसनि ॥ इक हरिके दरशन विनु मरियत अरु कुविजाके ठोसनि । सूर सु जरनि कहा उपजी जो दूरि होत करि वोसनि ॥ ८८ ॥ राग मारू॥ जोपै लैजाइ कोऊ मोहिं द्वारका देश । संग ताके चलौं सजनी जटाहू करि केश ॥ वोलि पौं हर वाइ पूँछहु आपने समेस ॥ जैसही जो कहै कोऊ वनै तैसे भेस ॥ यदपि हम व्रजनाथ सुनती यूथनाथ नरेश । तदपि शशि कुमुदनी सूरज रची प्रीति परेस ॥८९॥ रागसारंग ॥ उवरि आयो परदेशी को नेह । तव जो सवै मिले कान्ह करि भूलतही अवलेहु । काहेको सखी अपनो सरवस हाथ पराये देहु ॥ लहियो महिमा भंग मथुरा छाँडि जाइ समुद्र कियो गेहु ॥ कहा अव करी अग्नि तनु उपजी वाढ्यो अतिहि संदेहु । सूरदास

विह्वल भई गोपी नैनन वर्षत मेहु॥९०॥राग मलार ॥कैसेहै बनत इहि ब्रज हरिको आवन । कहियतहै मधुवनते सजनी! कहूं कान्ह कियो दूरि गवन ॥ निकट बसत मतिहानि भई हम मिलिहूं न आई सु त्यागि भवन । अब अपने यदुकुल समेतलै दूरि सिधारे जीति जवन ॥अगम सुपंथ दूरि दक्षिणदिशि तहँ सुनियत सखी सिंधुलवन । सूरदास तरसत मन निशिदिन यदुपति लौं लैजाइ कवन ॥९१॥ ॥राग धनाश्री॥सुनियत कहुँ द्वारका बसाई । पश्चिम देश तीर सागर के कंचन कोट गोमती सों खाई॥ पंथ न चलत संदेश न आवत उहां लगि नर कोऊ नहिं जाई । शत योजन मथुराहूते कहियत यह हम सुधि निगमहूपै पाई ॥ बन उपवनमें जन मंदिर छबि कोकिल कीर हंस ध्वनि लाई । द्वारपाल चातक द्रुम सु पचनि माँझ कोट निधि पाई ॥ घोष ग्वाल पशुपाल अधम कुल ईश एकको कौन सगाई । सूर श्याम ब्रजवास बिसारे बाबानंद यशोदा माई ॥९२॥ राग मारू ॥ उडुपति सों बिनवति मृगनैनी ॥ तुम कहियत उडुराज अमृत मय तजि सुभाउ वर्षत कत बहनी॥उमयापति रिपु अधिक दहतहै हरि रिपु प्रीतम सूखत तौनी । छपा न छीन होत सुन सजनी भूमि डसन रिपु कहा दुरोनी ॥ श्याम संदेश बिचार करतिहै कहां रहे हरि छाइ बछोनी । सूर श्याम बिनु भवन भयानक जो अति रहति गोपालकी अवनी ॥ ९३ ॥ रागकेदारो ॥ दधिसुत जातिहौ वहि देश । द्वारकामें श्यामसुंदर सकल भुवन नरेश ॥ परम शीतल अमृतदाता करतहै उपदेश । श्यामसुंदर वियोगिनीको लेहु यह संदेश ॥ नंदनंदन जगतवंदन धरे नटवर भेष । काज अपनो सारि स्वामी रहे जाइ विदेश ॥ भक्त वत्सल विरद तुमरो मोहिं इह अंदेश । अबकी बेर तुम मिलहु कृपाकरि कहैं सूर सु देश ॥९४॥राग मलार ॥ वीर बटाऊ पाती लीजो । जब तुम जाहु देश द्वारका हमरेइ लाल गोपालहि दीजो ॥ रंगभूमि रमणीक मधुपुरी वारि चढाइ कहो दह कीजो । खारि समुद्र छाँडि किन आवत निर्मलजल यमुनाको पीजो ॥ या गोकुलकी सकल ग्वालिनी देत अशीश बहुत युग जीजो । सूरदास प्रभु हमरेकोतें नँदनंदनके पाँइ परीजो ॥ ९५ ॥ राग सारंग ॥ हौं तो आइ मिलत गोपालहि । सिंधु धरनि यह जुगुत न तेरी दुख दीनो ब्रजबालहि ॥ कहा करों पट नील पीत वर दुइते भये भुज चारि । बहु सुख कहा जु तब मन होतो भेंटत श्याम मुरारि ॥ संतत सूर रहत पति संगम सब जानति रुचि जीकी । तू क्यों नहीं धरति या भेषहि जोपै मुक्ति अति नीकी ॥ ९६ ॥ राग मलार ॥ श्याम बिन भई शरदानिशि भारी । हमैं छाँडि प्रभु गये द्वारका ब्रजभूमि कैसे बिसारी ॥ निर्मल जल यमुनाको छाँड्यो सेवत समुद्र जल खारी । कहियो जाइ पथिक जैसे आवैं चरणनकी बलिहारी ॥ अबला कहा योग कर जानै ब्रजवासी जो बिसारी । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको रटत राधिका प्यारी ॥ ९७ ॥ राग मलार ॥ ब्रजपर मदर करत है काम । कहियो पथिक जाइ श्यामसों राखहि आइ आपनो धाम ॥ जलधि कमान वारि दारूभरि ताडित पलीता देत । गर्जन औ तर्पन मानो गो पहरकमें गढ लेह ॥ लेहु लेहु सब करत वंदिजन कोकिल चातक मोर । दादुर नगर करि जीवन ढोवा अलग बिलग चहुँ ओर ॥ ऊधो मधुप जसूस देखि कर कह्यो लुटाऊं धीरजपारन । रखिबे होइ तौ आनि राखिये सुर लोक निज जारन॥९८॥राग मलार॥ ब्रजपर बहुरो लागे गाजन । ज्यौं क्योंहू पति जात बडेकी मुख न देखावत लाजन ॥ चहुँदिशिते दल बादल उमडे सुने लागे बाजन । घोषके लोग कान्ह बल तिन अब जित कित लागे भाजन ॥ आपुन जाइ द्वारका छाये लागे श्याम विराजन । सूरदास गोपी क्यों जीवै बिछुरे हरिजी साजन ॥ ९९ ॥ रागमारू ॥ अब मोहिं निशि देखत डर लागे । बारबार अकुलाइ देहते निकसि

निकसि मन भागै ॥ प्राचीदिशा पेखि पूरण शशि ह्वै आयो तन तातो। मानहु मदन मदन विरहिनिको कारि लीनी रिसरातो ॥ भृकुटी कुटिल कलंक चाप मानों अति रिसिसों शरसाधे। चहुँया किरनि पसारे पासिनि हठिकर योगिनि बाँधे ॥ सुनि शठसँह प्राणपति मेरो जाको यश जग जानै। सूर सिंधु बूडत ते राख्यो ताहू कृतहि न मानै ॥ १०० ॥ रुक्मिणि वचन श्रीभगवानप्रति ॥ राग धनाश्री ॥ रुक्मिणि बूझततहै गोपालहिं। कहौ बात अपने गोकुलकी केतिक प्रीति ब्रजबालहिं ॥ कहा देखि रीझे राधासों चंचल नैन विशालहिं।तब तुम गाय चरावन जाते उरधरते बनमालहिं ॥ इतनी सुनत नैन भरि आये प्रेमनंदके लालहि। सूरदास प्रभु रहे मौनह्वै घोप बात जनि चालहि ॥१॥राग धनाश्री॥ रुक्मिणि मोहिं निमेप न बिसरत वै ब्रजवासी लोग। हम उनसों कछु भली न कीनी निशिदिन मरत बियोग ॥ यदपि कनकमय रची द्वारका सखी सकल संभोग। तदपि मन जो हरत बंसीवट ललिताके संयोग ॥ मैं ऊधो पठयो गोपिनपै देइ सँदेशो योग। सूरदास देखि उनकी गति किन्ह उपदेशे योग ॥ २ ॥ राग मलार ॥ रुक्मिणि मोहिं ब्रज बिसरतु नाहीं। वा क्रीडा खेलत यमुनातट विमल कदमकी छाहीं॥ गोपवधूकी भुजा कंठ धरि विहरत कुंजनमाहीं। अनेक विनोद कहांलौं वरणौं मोमुख वरणि न जाई ॥ सकल सखा अरु नंद यशोदा वे चितते न टराहीं। सुत हित जानि नंद प्रतिपाले बिछुरत विपति सहाहीं॥ यद्यपि सुखनिधान द्वारावति तोउ मन कहुँ न रहाहीं। सूरदास प्रभु कुंजविहारी सुमिरि सुमिरि पछिताहीं ॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥ रुक्मिणि चलहु जनम भूमि जाहीं।यदपि तुम्हारो हतो द्वारका मथुराके सम नाहीं ॥ यमुनाके तट गाय चरावत अमृत जल अचवाहीं। कुंजकेलि अरु भुजा कंधधरि शीतल द्रुमकी छाहीं ॥ सरस सुगंध मंद मलयागिरि विहरत कुंजन माहीं। जो क्रीडा श्रीवृंदावनमें तिहूंलोकमें नाहीं। सुरभी ग्वाल नंद अरु यशुमति मम चितते न टराहीं। सूरदास प्रभु चतुर शिरोमणि सेवा तिनकी कराहीं ॥४॥श्रीकृष्णकुरुक्षेत्रआवन राग सारंग॥ब्रजवासिनको हेतु हृदयमें राखि मुरारी। सब यादवसों कह्यो बैठिकै सभा मँझारी॥बडो पर्व रवि गहन कहा कहौं तासु बडाई। चलौ सबै कुरुक्षेत्र तहां मिलि न्हैये जाई ॥ तात मात निज नारिलै हरिजी सब संगा। चले नगरके लोग साजि रथ तरल तुरंगा ॥ कुरुक्षेत्रमें आइ दियो इक दूत पठाई। नंद यशोमति गोपी ग्वाल सब सूर बुलाई ॥ ५ ॥ सखीवचन राधिकाप्रतिशकुनविचार ॥ राग सारंग॥वायस गहगहात शुभवाणी विमल पूर्वदिशि बोली। आजु मिलाओ श्याम मनोहर तू सुनु सखी राधिके भोली॥कुच भुज अधर नयन फरकत हैं विनहि वात अंचल ध्वज डोली॥सोचनिवार करो मन आनँद मानो भाग्य दशा विधि खोली ॥ सुनत सु वचन सखीके मुखते पुलकित प्रेम तरकि गई चोली॥सूरदास अभिलाप नंदसुत हरपीं सुभग नारि अनमोली ॥ ६ ॥ राग केदारो ॥ माधवजी आवनहार भये। अंचल उडत मन होत गहगहो फरकत नैन खये ॥ देही देखि सोच जिय अपने चितवत सगुन दये। ऋतुवसंत फूली द्रुमवल्ली उलहे पात नये ॥ करति प्रतीति आपु आपुनते सवन शृंगार ठये॥सूरदास प्रभु मिलहु कृपाकारि अवधिहु पूजिगये ॥७॥ श्रीभगवान दूत वचन नंद यशोमति प्रति॥रागधनाश्री ॥ हौं इहां तेरेही कारण आयो। तेरीसों सुन जननी यशोदा हठि गोपाल पठायो ॥ कहा भयो जो लोग कहतहैं देवकी माता जायो ॥ खान पान परिधान सबै सुख तैंहीं लाड लडायो। इतो हमारो राज द्वारका मो जी कछू न भायो ॥ जब जब सुरति होत उहि हितकी विछुर वच्छ ज्यों धायो ॥ अब वे हरि कुरुक्षेत्रमें आये सो मैं तुम्हैं सुनायो। सब कुल सहित नंद सूरज प्रभु हितकरि वहां बोलायो॥८ राधिकावचन सखीप्रति॥सारंग॥राधा नैन नीर भरि आई।कबधौं श्याम

मिलैं सुंदर सखी यदपि निकटहै आई॥कहा करौं केहिभाँति जाउँ अब पेपहि नाहिं तिन पाई । सूर श्याम सुंदर घन दरशे तनुकी ताप नशाई॥९॥सखीवचनराधिकाप्रति॥राग केदारो॥अब हरि आइहैं जिन सोचै । सुन विधुमुखी वारि नयनन ते अब तू काहे मोचै ॥ सत्य जानि चित चेत आनि तू अब नख क्यों तनु नोचै।मदन मुरादि सँभारि सुमिरि सुख तुम समीपको बोचै॥लै लेखनि मसि करि करि अपने लिखि संदेश छाँडि संकोचै।सूर सु विरह जनाउ करत कित प्रबल मदन रिपु पोचै॥१०॥गोपी संदेश श्रीभगवान प्रति ॥ राग सारंग ॥ पथिक कहियो हरिसों यह बात । भक्तवछल है विरद तिहारो हम सब किये सनाथ ॥ प्राण हमारे संग तुम्हारे हमहू हैं अब आवत । सूर श्यामसों कहत संदेशो नयनन नीर बहावत ॥ ॥ ११ ॥ कुरुक्षेत्र श्रीभगवान मिलन॥राग सारंग॥नंद यशोदा सब ब्रजवासी । अपने अपने शकट साजिकै मिलन चले अविनाशी ॥ कोउ गावत कोउ वेणु बजावत कोउ उतावल धावत । हरि दरशन लालसा कारन विविध मुदित सब आवत ॥ दरशन कियो आइ हरि जीको कहत सपनकी साँची । प्रेम मानि कछु सुधि न रही अँग रहे श्याम रँग राची ॥ जासों जैसी भाँति चाहिये ताहि मिल्यो त्यों धाइ । देश देशके नृपति देखि यह प्राण रहे अरगाइ ॥ उमँग्यो प्रेम समुद्र दशहुँदिशि परमिति कही न जाइ।सूरदास इह सुख सो जानै जाके हृदय समाइ॥१२॥राग कान्हरो॥तेरी जीवनि मूरि मिलहि किन माई । महाराज यदुनाथ कहावत तबहीं हुते शिशु कुँवर कन्हाई ॥ पानि परे भुज धरे कमल मुख पेपत पूरव कथा चलाई । परमउदार पानि अवलोकत हीन जानि कछु कहत न जाई ॥ फिरि फिरि अब सन्मुखही चितवति प्रीति सकुच जानी न दुराई । अब हँसि भेटहु कहि मोहिं निज जन बाल तिहारो हो नंद दोहाई ॥ रोम पुलकि गदगद तनु तिहि छिन जलधारा नैनन बरषाई । मिले सु तात मात बंधू सब कुशल कुशल करि प्रश्न चलाई ॥ आसन देइ बहुत करि बिनती सुत धोखे तब बुद्धि हेराई।सूरदास प्रभु कृपाकरी अब चितहि धरे पुनि करी बडाई ॥ १३ ॥ राग मलार ॥ माधव या लगि है जग जीजतु । जाते हरिसों प्रेम पुरातन बहुरि नयो करि कीजतु ॥ कहँ रवि राहु भयो रिपु मति रचि विधि संयोग बनायो । उहि उपकार आज यहि औसर हरि दरशन सचुपायो॥ कहाँ बसहिं यदुनाथ सिंधु तट कहँ हम गोकुल वासी । वह वियोग यह मिलनि कहां अब काल चाल औरासी ॥ सूरदास मुनि चरण चरचि करि सुरलोकनि रुचिं मानी । तब अरु अब यह दुसह प्रमानी निमिषो पीर न जानी॥१४॥श्रीभगवान रुक्मिणि प्रत्युत्तर॥राग कान्हरो ॥ हरि जूसों बूझत है रुक्मिणि इनमें को वृषभानु किशोरी । बारेक हमें देखावो अपने बालापनकी जोरी ॥ जाको हेतु निरंतर लीये डोलत ब्रजकी खोरी । अति आतुर होइ गाइ दुहावन जाते पर घर चोरी ॥ रजनी सेज सुकरि सुमननकी नवपल्लव पुट तोरी । बिनु देखे ताके मन तरसै छिन बीते युग मोरी॥ सूर सोच सुख करि भरि लोचन अंतर प्रीति न थोरी । शिथिल गात मुख वचन फुरत नहिं ह्वै जो गई मति भोरी॥ ॥१५॥राग धनाश्री॥बूझति हैं रुक्मिणि पिय इनमें को वृषभानु किशोरी । नेक हमैं देखरावहु अपनी बालापनकी जोरी ॥ परमचतुर जिन कीने मोहन अल्प वैसही थोरी । बारेते जिहि यहै पढायो बुधि बल कलविधि चोरी ॥ जाके गुणगनि गुथति माल कबहुँ उरते नहिं छोरी । सुमिरन सदा बसतहीं रसना दृष्टि न इत उत मोरी ॥ वह देखो युवति वृंद में ठाढी नीलवसन तनु गोरी । सूरदास मेरो मन वाकी चितवन देखि हरयोरी ॥ १६ ॥ राग मारू ॥ गोविंद परम कृपा मैं जानी । निगम जु कहत दयालु शिरोमणि सत्य सु निधि बानी ॥ अब ये श्रवन वरन कर स्वारथ तुम जु दरश सुख दीनो । या फल योग सुकृत नहिं समुझत दीन देखि हित कीनो ॥ यह दिन धन्य धन्य जीवन जस धन्य

भाग्य प्रभु पाये। शिव मुनि मन दुर्लभ चरणांबुज जनहि प्रगट परसाए॥ हरषित सुजन सखा त्रिय बालक कृष्णमिलन जिय भाये। सूरदास सकल लोचन जनु शशि चकोर कुलपाए॥ १७॥ राग सारंग॥ हरिजी इते दिन कहाँ लगाये। तबहिं अवधि मैं कहत न समुझी गनत अचानक आये॥ भली करी जु अबहिं इन नैनन सुंदर चरण दिखाये। जानी कृपाराज काजहुँ हम निमिष नहीं विसराए॥ विरहिनि विकल विलोकि सूर प्रभु धाइ हृदय करलाए। कछु मुसुकाइ कह्यो सारथि सुन रथके तुरंग छुराए॥ १८॥ राग मलार॥ हरिजू वै सुख बहुरि कहां। यदपि नैन निरखत वह सूरति फिरि मन जात तहां॥ मुखमुरली शिरमोर पखौवा गर घुँघुँचनिको हार। आगे धेनु रेनु तनु मंडित चितवन तिरछी चाल॥ राति दिवस अंग अंग अपने हित हँसि मिलि खेलत खात। सूर देखि वा प्रभुता उनकी कहि नहिं आवै बात॥ १९॥ राग धनाश्री॥ रुक्मिणि राधा ऐसे बैठी। जैसे बहुत दिननकी बिछुरी एक बापकी बेटी॥ एक सुभाउ एकलै दोऊ दोऊ हरिको प्यारी। एक प्राण मन एक दुहुँनको तनु करि देखिअत न्यारी॥ निज मंदिर लै गई रुक्मिणी पहुनाई विधि ठानी। सूरदास प्रभु तहँ पग धारे जहां दोऊ ठकुरानी॥ २०॥ राग धनाश्री॥ राधा माधव भेंट भई। राधा माधव माधव राधा कीट भृंग गति होइ जो गई॥ माधव राधाके रँग राचे राधा माधव रंगरई। माधो राधा प्रीति निरंतर रसना कहि न गई॥ बिहँसि कह्यो हम तुम नहिं अंतर यह कहि ब्रज पठई। सूरदास प्रभु राधा माधव ब्रजविहार नित नई नई॥२१॥ राग धनाश्री॥राधावचन सखी प्रति॥ करत कछु नाहीं आजु बनी। हरि आए हौं रही ठगीसी जैसे चित्तधनी॥ आसन हर्षि हृदय नहिं दीन्हों कमलकुटी अपनी। न्यवछावर उर अरघ न अंचल जलधारा जो बनी॥ कंचुकी ते कुचकलश प्रगटह्वै टूटि न तरक तनी। अब उपजी अतिलाज मनहिमन समुझत निजकरनी॥ मुख देखत न्यारेसी रहिहौं बिनु बुधिमति सजनी। तदपि सूर मेरी यह जडता मंगल माँझ गनी॥ २२॥ भगवान वचन ब्रजवासी प्रति॥ राग सारंग॥ ब्रजवासिनसों कह्यो सबनते ब्रजहित मेरे। तुमसों मैं नहिं दूर रहतहौं सबहिनके नियरे॥ भजै मोहिं जो कोइ भजौं मैं तिनको भाई। मुकुरमांह ज्यों रूप आपनो आपुन सम दरशाई॥ यह कहिकै समदे सकल जन नयनरहे जल छाई।सूर श्यामको प्रेम कछू मोपै कह्यो न जाई॥२३॥राग सारंग॥ सबहिनते सबहै जन मेरो। जन्म जन्म सुन सुबल सुदामा निबह्यो इह प्रण मेरो॥ ब्रह्मादिक इंद्रादि आदि दै जानत बलि बसि केरो। इक उपहास त्रास उठि चलते तजिकै अपनो खेरो॥ कहा भयो जो देश द्वारका कीन्हों दूरि बसेरो। आपु नहीं या ब्रजके कारण करिहौं फिरि फिरि फेरो॥ यहां वहां हम फिरत साधहित करत असाध अहेरो। सूर हृदय ते टरत न गोकुल अंग छुअतहौं तेरो॥ २४॥ वचन ब्रजवासी॥ राग सारंग॥ हमतो इतनेहीं सचुपायो। सुंदर श्याम कमलदल लोचन बहुरो दरश देखायो॥ कहा भयो जो लोग कहतहैं कान्ह द्वारका छायो। सुनि यह दशा विरह लोगनकी उठि आतुर होइ धायो॥ रजक धेनु गज कंस मारिकै कियो आपनो भायो॥ महाराज होय मातु पिता मिलि तऊ न ब्रजविसरायो॥ गोपी गोप अरु नंद चले मिलि प्रेम समुद्र बहायो। येते मान कृपालु निरंतर नैननीर ढरिआयो॥ यद्यपि राज बहुत प्रभुता सुनि हरि हित अधिक जनायो। वैसहिं सूर बहुरि नँदनंदन घर घर माखन खायो॥२५॥अध्याय॥ ८३॥ अष्टनायिका द्रौपदी प्रश्न॥ राग बिलावल॥ हरि हरि हरि सुमिरहु दिनराति। नातरु जन्म अकारथ जाति॥ सौबातनकी एकै बात। हरि हरि हरि सुमिरो दिन रात॥ हरि कुरुक्षेत्र अन्हान सिधाये। तब सब

भूपति दरशन आये ॥ हरि तेहि सबको आदर कियो । भयो संतुष्ट सबहिनको हियो ॥ तब भूपहि हरिको शिरनाइ । करनलगे अस्तुति या भाइ ॥ परमहंस तुम सबके ईश । बचन तुम्हारे श्रुति जगदीश ॥ तुम अच्युत अविगति अविनाशी । परमानंद सदा सुखरासी ॥ तुम तनु धारि हरयो भुवभार । नमो नमो तुम्हैं वारंबार ॥ पुनि रानी रानिनपै आई । द्रुपदसुता तब बात चलाई ॥ ज्यों करि भयो तुम्हारो व्याह । कहो सो तिनको मोहिं उत्साह ॥ कह्यो सबन्ह हरि अज अविनाशी । भक्तवछल सब जगत निवासी ॥ ना हमको नाहिं सुंदरताई । भक्त जानिकै सब अपनाई ॥ व्याह सबनको ज्यों ज्यों भयो । बहुरो तिन्हते वहि त्यों कह्यो ॥ द्रुपदसुता सुनि मन हरषाई । कह्यो धन्य तुम धनि यदुराई ॥ धन्य सकल पटरानी रानी । जिन वर पायो शारँगपानी ॥ धन्य जो हरि गुण अहनिशि गावै । सूरदास तिनकी रज पावै ॥ २६ ॥ अध्याय ॥ ८४ ॥ऋषिस्तुति॥राग विलावल ॥ हरि हरि हरि सुमिरहु सब कोई । बिनु हरि सुमिरन मुक्ति न होई ॥ श्रीशुक व्यास कह्यो यह गाई । सोइ अब कहौं सुनो चितलाई ॥ सूरज गहन पर्व हरि जान । कुरुक्षेत्रमें आए न्हान ॥ तहां ऋषि हरि दरशन हित आये । हरि आगे होइ लेन सिधाये ॥ आसन दे पूजा हित करी । हाथ जोरि बिनती उच्चरी ॥ दरश तुम्हारे देवन दुर्लभ । हमको भयो सो अतिही सुल्लभ ॥ यों कहि पुनि लोगन समुझायो । जैसे वेद पुराणन गायो ॥ हरिजीकी पूजै हरिजान । ताको होइ तुरत कल्यान ॥ गुरु पूजा बहु बिधिसों कीजै । तीरथ जाइ दान बहु दीजै ॥ यह सब किये होइ फल जोइ । संत संगसों छिनमें होइ ॥ यह सुनिकै ऋषि रहे लजाइ । पुनि हरिसे बोले या भाइ ॥ तुम सबके गुरु सबके स्वामी । तुम सबहिनके अंतर्यामी ॥ तुम्हैं वेद ब्राह्मणहि बखानत । ताते हमरी अस्तुति ठानत ॥ हम सेवक तुम जगत अधार । नमो नमो तुम्हैं वारंबार ॥तुम परब्रह्म जगत करतारा । नरतनु धरयो हरन भूभारा ॥ सुरपूजा औ तीर्थ बतावत । लोगनके मतिको भरमावत ॥ तुम रूपहि यहि भाँति छिपायो । काठ माँह ज्यों अग्नि दुरायो ॥ वसुदेव तुमको जानत नाहीं । और लोग बपुरे किन माहीं ॥ कोउ न मानत कोउ न जानत । कोऊ शत्रु मित्र करि मानत ॥ सर्व अशक्ति तुम सर्व अधार । तुम्हैं भजै सो उतरै पार ॥ जैसे नींद नाहिं कोइ होय । बहुविधि सपनो पावै सोय ॥ पै तेहि वहां न कछू सम्हार । कहि देखत को देखनहार ॥ त्यों जिय रहै विपैरस भोइ । तेहिके शुद्धि बुद्धि नहिं कोइ॥जापर कृपा तुम्हारी होइ । रूप तुम्हारो जानै सोइ ॥ घट घट मांह तिहारो बास । सर्व ठौर ज्यों दीप प्रकाश ॥ इहि बिधि तुमको जानै जोइ । भक्तिरु ज्ञानी कहिये सोइ ॥ नाथ कृपा अब हमपर कीजै । भक्ति आपनी हमको दीजै ॥ प्रेम भक्ति विन कृपा न होइ । सर्व शास्त्रमें देखे जोइ ॥ तपसी तुमको तपकरि पावै । सुनि भागवत गृही गुण गावै ॥ कर्मयोग करि सेवत कोई । ज्यों सेवै त्योंही गति होई ॥ ऋषि यहि बिधि हरिके गुणगाइ । कह्यो होइ आज्ञा यदुराइ ॥ हरि तिनको पुनि पूजा करी । कीरति सकल जगत विस्तरी ॥ वेद पुराण सबनको सार । व्यास कह्यो भागवत विचार ॥ बिनु हरि नाम नहीं उद्धार । वेद पुराण सबनको सार । सूर जानि यह भजो मुरार ॥ २७ ॥ अध्याय ॥ ८९ ॥ श्रीकृष्ण देवकी षट्पुत्र आनयन ॥ ॥ राग बिलावल ॥ श्रीगोपाल तुम कहो सो होइ । तुमहीं कर्त्ता तुमहीं हर्त्ता तुमते और न कोइ ॥ अबलौं मैं तुमको नहिं जान्यो पुत्रभावकरि मान्यो । तुमहो देव सकल देवनके अब तुमको पहिचान्यो ॥ गुरुसुत आनि दिये तुम जैसे कृपाकरी यदुराई । ममसुतहूं जे कंस सँहारे

ते प्रभु देहु जिवाई ॥ मेरे जिय यह बडी लालसा देखों नैनन जोई । दूध पिवाइ हृदयसों लावों पाछे होइ सो होई॥ यह सुनि हरि पाताल सिधारे जहां हुते वलिराइ। करि प्रणाम बैठारि सिंहासन हितकारि धोये पाइ ॥ तासों कह्यो देवकीके सुत पष्ठ कंस जे मारे। नेक मँगाइ देहु ते हमको हैं वे लोक तुम्हारे॥ तहँते आनि दिये हरि बालक माता लाड लडाये । सूरदास प्रभु दरश परसके ते वैकुंठ सिधाये२८॥ अध्याय ॥ ८६ ॥ वेदस्तुति वर्णन राग विलावल॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविन्द उरधरो । हरिके रूप रेख नहिं राजा । अरु हरि सम द्वितिया न विराजा ॥ अलखरूप हरि कह्यो न जाई । देवन कछु वेद उक्ति वताई ॥ हरिजीके हृदय यह आई । देवन सवन निरूप देखाई ॥ तीनलोक हरि करि विस्तार । ज्योति अपनिको कियो उजियार ॥ जैसे कोऊ गेह सँवार । दीपक वारि करै उजिआर॥ त्यों हरि ज्योति अपनी प्रगटाइ । घट घटमें सोई दरशाइ॥ तीन लोक सरगुण तनु जान्यो । ज्योति स्वरूप आपनो मान्यो ॥ श्वासा तासु भये श्रुतिचार। करि सो अस्तुति या परकार ॥ नाथ तुम्हारी ज्योति अभास । करत सकल जगमें परकास॥ थावर जंगम जहँ लों भयो । ज्योति तुम्हारि चेतन कियो ॥ तुम सब ठौर सबनते न्यारे । को लखि सकै चरित्र तुम्हारे ॥ सो प्रकाश तुम साजे सदा । जीव कर्म्म करि बंधन वधा ॥ सर्वव्यापी तुम सब ठाहर ॥ तुमहिं दूर जानत नर नाहर ॥ तुम प्रभु सबके अंतर्यामी । विसरि रह्यो जिव तुमको स्वामी ॥ तुम्हरी लीला अगम अपार । युग प्रमान कीन्हों व्यवहार॥ तुम्हरी माया जगत उपाया । जैसेको तैसे मगलाया ॥ अद्भुत सगुण चरित्र तुम्हारे । जो करिकै भुवभार उतारे ॥ तेहिको समुझि सकत नहिं जोइ । निर्गुण रूप लखै क्यों सोइ ॥ नरतनु भक्ति तुम्हारे होइ । जीव तनुमें जिव आसरे सोइ। करिये भक्ति उतरिये पार । नमो नमो तुम्हें वारंवार ॥ शुक जैसे वेद अस्तुति गाई । तैसेही मैं करि समुझाई ॥ जो पद अस्तुति सुनै सुनावे । सूर सु ज्ञान भक्तिको पावै ॥ २९ ॥ राग विलावल ॥ नमो नमस्ते वारंवार । मदन सुदन गोविंद मुरार ॥ माया मोह लोभ अरु मान ॥ ए सब त्रयगुण फांस समान ॥ काल सदा शरसाधे रहै । क्यों करि नर तुव सुमिरन कहै । तुम निर्गुण उदय निराकार । सूर अमर हम रहे पचिहार ॥ तुमरो मर्म न जानै सार । नर वपुरो क्यों करै विचार ॥ अरुण असित सित वपु उन हार । करत जगतमें तुम अवतार ॥ सो जगको मिथ्या कहिजाइ । जहां तरे तुमरे गुण गाइ ॥ प्रेम भक्ति विनु मुक्ति न होइ । नाथ कृपाकरि दीजे सोइ ॥ और सकल हम देखों जोइ । तुम्हरी कृपा होइ सो होइ ॥ इह तनुहै प्रभु जैसे ग्राम । यामें शब्दादिक विश्राम ॥ अधिष्ठाता तुमहो भगवान । जान्यो जगत न तुम अस्थान॥ तुम श्वासाते पुहुमी नाथ । श्वासरूप हम लख्यो न बात ॥ कहा कहि तुम्हरी अस्तुति करें । वाणी नमो नमो उच्चरें॥ जगतपिता तुमहीहो ईश। याते हम विनवत जगदीश ॥ तुम सम द्वितिया और न आहि । पटतर देहिं नाथ हम काहि ॥ शुक जैसे वेद अस्तुति गाई । तैसही मैं कहि समुझाई॥ सूर कह्यो श्रीमुख उचार। कहै सुनै सो तरै भवपार ॥ ३० ॥ नारद स्तुति ॥ राग धनाश्री ॥ प्रभु तुअ मर्म समुझि नहिं परयो । जगसिरजत पालत संहारत पुनि क्यों बहुरि करयो ॥ ज्यों पानीमें होत बुदबुदा पुनि तामाहि समाही॥ त्योंही सब जग कुटुम्ब तुमते पुनि तुम माहिं बिलाही ॥ माया जलधि अगाध महाप्रभु तरि न सकै तेहि कोई । नाम जहाज चढै जो कोई तुवपद पहुँचे सोई ॥ पापी तरयो तरयो सबही सम प्रभुजी नाहीं तासु निवाही । काठ उतारत वारिवाहिमें नाम तुम्हारो ताही ॥ पारस परसि होत ज्यों कंचन लोहपना मिटजाई । ज्यों अज्ञानी ज्ञानहिं पावत नाम तुम्हारे गाई ॥ अमरहोत ज्यों संशयनाशे रहत सदा सुखपाइ । याते होत अधिक सुख

भक्तन चरणकमल चितलाइ ॥ थावर जंगम सब तुम आश्रित सनक सनंदन बानी । ब्रह्मा शिव स्तुति न सकैं करि मैं बपुरो केहिमाहीं ॥ योग ध्यान करि देखत योगी भक्तसदा मोहिं प्यारो । व्रजवनिता भज्यो मोहिं नारद मैं तेहि पार उतारो ॥ नारद ज्योंही अस्तुति कीनी शुक त्यों कहि समुझाई । सूर प्रेम भक्तिकी महिमा श्रीपति श्रीमुखगाई ॥३१॥अध्याय ॥ ८७ ॥ सुभद्राविवाह वर्णन ॥ राग बिलावल॥भक्तवछल श्रीयादवराई ।भक्तकाज हरि कृत सुखदाई॥अर्जुन तीरथयात्रा सिधाये। फिरत फिरत द्वारावति आये ॥ सुन्यो बिचार करत बलयेइ । दुर्योधनहिं सुभद्रा देइ ॥ तब अर्जुनके मन इह आई । याको मैं लैजाउँ दुराई ॥ भेष तापसीको तिन गह्यो । चारि मास द्वारावति रह्यो ॥ बल देवताको नेवत बुलायो । भोजन हेतु सो बल गृह आयो ॥ लख्यो सुभद्रा इह संन्यासी । राजकुँवर कियो भेष उदासी ॥ मेरे मनमें इह उत्साह । मेरो या सँग होहिं विवाह ॥ इकदिन सो हरि मंदिरगई । वहां भेंट पारथसों भई ॥ देखि ताहि रथ ठांढो कियो । हरि दोउको चेहरो लिखिलियो ॥ धनुषबाण अपनो तब दियो । अर्जुन सावधान होइ लियो ॥ यह सुनिकै हलधर उठिधायो । तब हरि अर्जुन नाम सुनायो ॥ बल कह्यो जो तुम मन ऐसी आइ । तौ तुम क्यों कीन्हीं न सगाइ ॥ हरि कह्यो अबहुँ बुलावहु ताहि । भली भाँतिको करो विवाहि ॥ तब बल पारथ तुरत बुलायो । शुद्ध मुहूरत लग्न धरायो ॥ करि विवाह अर्जुन घर आये । सूरदास जन मंगल गाये॥३२॥ ॥ राग नट॥बिनती करत गोविंद गोसाईं । दै सबसौंज अनंत लोकपति निपट रंककी नाईं ॥ धरि धन धाम सजनके आगे श्याम सकुचि कर जोरे । टहल योग इह कुँवरि सुभद्रा तुम सम नाहीं कोरे ॥ इतनी सुनत पंडुके नंदन कह जो यहै वचन प्रभु दीजै । सूरज दीनबंधु अब इहि कुल कन्या जन्म न कीजै ॥३३॥अध्याय ॥ ८८ ॥ जनकदेवमिलाप परमारथ ॥ हरि हरि हरि सुमिरहु सब कोई।रावरंक हरि गिनत न दोई ॥ जो सुमिरै ताकी गति होई । हरि हरि हरि सुमिरहु सब कोई ॥ श्रुतदेव ब्राह्मण सुमिरचो हरी । ताकी भक्ति हृदयमें धरी ॥ राउ जनक हरि सुमिरन कीन्हों । हरिजू सोउ हृदय धरि लीन्हों ॥ तब हरि ऋषिहि पथिक सँग किये । तिनके देश प्रीति वश गये ॥ दोउ रूप हरि दोउनको मिले । तोपि तेहि पुनि निजपुर चले ॥ हरिजीको यह सहज सुभाव । रंक होइ भावै कोउ राव॥जो हित करै ताहि हित करै।सूर प्रभू नहिं अंतर धरै॥३४॥राग कान्हरो॥घरहीं बैठे दोऊ दास । ऋद्धि सिद्धि मुक्ति अभयपद दायक आइ मिले प्रभु हरि अनयास ॥ आये सुने श्याम उपवनमें भेटलई भुज परमसुवास।। चर्चित गात चंद्रमुख चितवत उर सरवर भयो कमल विगास ॥ भूपति चमर विप्र कर वस्तर करत वाउ अति अंग हुलास । आनँद उमँगि चल्यो नैनन जल सुरत देव द्विज नृप बहुलास ॥ जाको ध्यान धरत मुनि शंकर शीशजटा दिग अंबर तास । कामदहन गिरि कंदर आसन वा मूरतिकी तऊ पिआस ॥ भक्तवछलता प्रगट करीहै भयो विप्र घरकर कलि ग्रास । सूरदास स्वामी सुमिरन वश अछत निरंजन सेवा पास ॥३५॥अध्याय ॥ ८९ ॥ भस्मासुर वध ॥ धनाश्री॥ तेऊ चाहत कृपा तुम्हारी । जिनके वश अनमुख अनेक गन अनुचर आज्ञाकारी ॥ महादेव वर दियो असुरको जब उन निज तनु जारचो। शिवके शीशधरन लाग्यो कर शिव वैकुंठ सिधारचो ॥ विप्ररूप हरि कह्यो असुरसों इह वर सत्य न होइ । शिर अपने परधरो असुरकर भस्म होइ गयो सोइ ॥ शिव कैलास गये अस्तुति करि आनँद उपज्यो भारी । सूरदास हरिको यश गायो श्रीभागवत अनुसारी ॥ ३६ ॥ अध्याय ॥ ९० ॥ भृगुपरीक्षा अर्जुन निजरूप दर्शन ॥ शंखचूड़ पुत्रल्यावन ॥ राग बिलावल ॥हरिसों ठाकुर और न जनको।तिहूं लोक भृगुजाइ आइ कह्यो या विधि

सब लोगनको ॥ ब्रह्मा राजसगुण अधिकारी शिवतामस अधिकारी । विष्णु सत्य केवल अधिकारी विप्रलात उरधारी ॥ मुख प्रसन्न शीतल सुभाउ नित देखत नैन सिराइ । इह जिय जानि भजो सब कोई सूर प्रभू यदुराइ॥ ३७ ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविंद उरधरो॥हरि इकदिन निज सभा मँझार । बैठे हते सहित परिवार ॥ अर्जुनहू ता ठौर सिधाये । शंखचूड तब वचन सुनाये॥द्वारावती वसत सब सुखी । महीं एक अह अरु निशि दुखी ॥ मेरे पुत्र होतहैं जवहीं । अंतर्ध्यान होत सो तबहीं ॥ अर्जुन कह्यो द्वारका माहीं । ऐसो कोउ धनुधारी नाहीं ॥ जो तुअ सुतकी रक्षाकरै । अरु तेरो पर दुख परिहरै ॥ मैं तुअ सुतकी रक्षा करों । अरु तेरो इह दुख परिहरों ॥ यह प्रतिज्ञा जो न निबाहौं । तौ तनु अपनो पावक दाहौं ॥ विप्र कह्यो तुम श्यामकि राम । कै प्रद्युमन अनिरुद्ध अभिराम॥अर्जुन कह्यो मैं उनमें नाहीं । पै हौं उनके दासन माहीं ॥ अर्जुन है मेरो निजनाम । धनुष काम दियो श्याम अभिराम ॥ तू निहचिंत बैठ गृहजाइ ।समै होय कह मोसों आइ ॥ पुत्र प्रसूति समय जब आयो । विप्र अर्जुनसों आनि सुनायो ॥ अर्जुन तब शर पंजर कियो । पवन संचार रहन नहिं दियो ॥ गृहको द्वारो राख्यो जहां । अर्जुन सावधान भयो तहां॥ब्राह्मण कह्यो समय अब भयो।अर्जुन धनुष बाण तब गह्यो॥बालक ह्वै भयो अंतर्धान । अर्जुनह्वै रह्यो चकृत समान ॥ विप्र नारि तब गारी दई । लख्यो प्रतिज्ञा कहा होइ गई ॥ तें पुरुषा-रथ कहां ते पायो । मिथ्याही कहि बाद बढायो ॥ हरिसें दुःख अब कहिहौं जाई । अर्जुन कह्यो तासों या भाई ॥ तेरे सुतको मैं अब ल्याऊं । तेरो सब संताप नशाऊं ॥ अर्जुन तिहूंलोक फिरि आयो । ऐसो बालक कहूं न पायो ॥ अर्जुन वीर श्याम तन आए । हरि अर्जुनसों वचन सुनाए ॥ तुम्हे बालक काहीं नहिं राख्यो । सो वृत्तांत हमें तुम भाष्यो ॥ कह्यो जो मैं प्रतिज्ञा करी । सो मोसों पूरण नहिं परी॥बालक होत कौन लेगयो।सो मोको कछु ज्ञान न भयो॥मैंदेख्यो तेहि त्रिभुवन जाइ । पै ताकी कहुँ सुधि नहिं पाइ ॥ विप्रकाज प्रभु अब तुम करो । नातरु मोको जानो मरो ॥ हरि रथ पर अर्जुन बैठाइ । पहुँचे लोकालोकहि जाइ ॥ उहहूंते जब आगे धाई । दारुक हरिसों वचन सुनाई ॥ अंधकार मग नहिं दरशाइ । याते रथ नहिं सकत चलाइ ॥ चक्र सुदर्शन आगे कियो । कोटिकरवि परकाशित भयो ॥ तब हरि अर्जुन पहुँचे तहां । गतिनाहीं काहुकी जहां ॥ तहां जाइ देख्यो इक रूप । तासम और न द्वितिय स्वरूप ॥ नैन निरखि चकृत होइ गये । मन वाणी दोऊ थकिरये ॥ कहिबे योग होइतौ कहै । तहां कछू आकार न लहै॥शयन नाग फन मुकुट स्थान । नैन प्रभा मानो कोटिकभान ॥ हरि अर्जुन कियो निरखि प्रणाम । सुन्यो तहां एक शब्द अभिराम ॥ तुम्हरे हेतु चरित्र यह कियो । बोझ पृथ्वीको हरवो भयो ॥ आवहु अब तुम अपने धाम । पूरण भये सुरनके काम ॥ दशोपुत्र ब्राह्मणके दीन्हें । हरि अर्जुन प्रणाम तब कीन्हें ॥ नहिं जान्यो मैं कहां सिधायो । और यहां मैं कैसे आयो ॥ हरि अर्जुनको निज जन जान । लैगये तहां न जहां शशि भान ॥ निजस्वरूप अपनो दरशायो । जो कछु देख्यो सु नहिं पायो ॥ ऐसे हैं त्रिभुवनपति राई । कहा सके रसना गुणगाई ॥ ज्यों शुक नृपसों कहि समुझायो । सूरदास ताही बिधि गायो ॥ ३८ ॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवर सूरदासकृते दशमस्कन्धोत्तरार्द्धः समाप्तः ॥ १० ॥



श्रीः ।

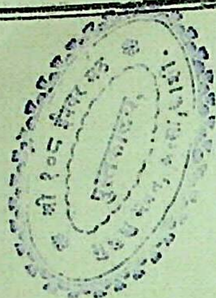
अथ सूरसागर.

एकादशस्कन्ध ।

॥ राग नटनारायण॥ तुम्हरो वचन न मेट्योजाइ । प्राणनाथ कृपालु परमगुरु सुजान यादवराइ ॥ कहत पठवन बद्रिका मोहिं गूढज्ञान सिखाइ । सकुच साहस करत मनमें चलत परत न पाँइ॥पताकाके दंडलौं मन लेत संग लगाइ । कहा करौं चित चरण सन्मुख बसन सदृश उडाय ॥ मेरही या हृदयकी हरि कठिन सकल उपाइ । सूर सुनत जु गयो तबहीं खंड खंड नशाइ ॥ १ ॥ राग सारंग ॥ हरिसों हौं कहा कहौं । प्रभु अंतर्यामी सब जानत यह सुनि सोचि रहौं । बिनु बुधि मनुज देह दयानिधि क्यों करि लै निबहौं । समुझि आपनी करनी गोसाईं काहे न शूल सहौं ॥ मैं यह ज्ञान छली व्रजबनिता दियो सु क्यों न लहौं । प्रकट पाप तनुताप सूर प्रभु केहिपर हठहि गहौं ॥ ॥ २ ॥ राग नट ॥ कैसे करि आवत श्याम इती । मन क्रम वचन और नाहिं मेरे पदरज त्यागि हिती ॥ अंतर्यामी यहौ न जानत जो मो उरहि बिती । ज्यों कुजवारि रस बींधि हारि गथु सोचतु पटकि चिती ॥ रहत अवज्ञा होइ गुसाईं चलत न दुखहि मिती । क्यों विश्वास करहिगो कौरो सुनि प्रभु कठिन क्रिती ॥ इतर नृपति जिहि उचत निकट करि देत न मूठि रिती । छुटत न अंश सुनितहि कृपिणके प्रीति न सूर रिती ॥ ३ ॥ राग केदारो ॥ क्यों करि सकौं आज्ञा भंग । करुणामय पद कमल लालच नाहिंन छूटत संग ॥ यह रजायसु होत मोसन कहत बदरी जान । कहा करौं मम पाप पूरण सुनि न निकसत प्रान ॥ मैं अपराधी व्रजवधू सों कहे वचन विष तूल ॥ मोहिं तजि अवर को वियसहै ऐसे शूल ॥ अब न जो तुम जाहु ऊधो मिटै युग भृत रीति ॥ हौं जु तेरी सकल जानत महा मोसन प्रीति ॥ सकल ज्ञान प्रबोधि उनसों कहि कथा समुझाइ । यादवनको प्रलय सुनि वे मरहिंगी अकुलाइ ॥ अति विषाद सुहृदय करि करि उठि चल्यो ह्वै दीन । सूर प्रभु तू कृपासागर किनभयो हौं मीन ॥ ४ ॥ राग बिलावल॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविंद उर धरो ॥ नारायण जब भये अवतार । कहौं सो कथा सुनो चितधार ॥ धर्म पिता अरु मूरति माई । भये नारायण सुत तेहि आई ॥ बदरीकाश्रम रहे पुनि जाइ । योग अभ्यास समाधि लगाइ ॥ उनके और कामना नाहिं । सुख पावे त्रिभुवन मन माहिं ॥ सुरपति देखत गयो डेराइ । कामसैन सँग दियो पठाइ ॥ ऋतुवसंत फूली फुलवाइ । मंद सुगंध बयार बहाइ ॥ करत गान गंधर्व सुहाइ । नृत्य भली अप्सरा देखाइ ॥ काम बाण पांचों संधाने । नारायणते मनहिं न आने ॥ तब तिन सबन तहां भय पायो । कह्यो इन्द्र हमें कहां पठायो॥तब नारायण आँख उघारी । उन सबकी कीन्हीं मनुहारी ॥ तुम कछु मनमें भय मति

धरो । अभय हमारे आश्रम करो॥दोष तुम्हारो है कछु नाहिं।तुमहिं पठायो है सुर नाहिं ॥ इन्द्रहुको कछु दूषण नाहीं । राजहेतु डरपत मन माहीं ॥ उन कर जोर वीनती उचारी । नारायण हरि हरि बनवारी ॥ उधरत लोग तुम्हारे नाम । क्यों करि मोह सकै तुम काम ॥ जे न शरण प्रभु तुम्हरे करैं । तिनको अंत राइ हम करैं ॥ और संभारि मनोरथ धरैं । ते सब हमको अहनिशिडरैं ॥ कहूं पुत्र मोह उपजावै । कहूं त्रियाके रूप लोभावै ॥ भूँख प्यास होइ कबहुँ संतापैं । ऐसे विधि हम उनको व्यापैं ॥ जो कोउ तुम्हरे शरन न आवै । सुख संसार सकल बिसरावै ॥ तासों हमरो कछु न बसावै । होय चेत सो तुमपै आवै ॥ नारायण तहां प्रगट करी । इन्द्र अपसरा सो भगिरी॥सहस अप्सरा सुंदर रूप । एक एकते अधिक अनूप ॥ काम देखि चकृत होइ गयो।रूप अवनि हम देख्यो नयो ॥ कौन जितै सबहीं इन माहिं । इन सम इन्द्र लोक कोउ नाहिं ॥ तब नारायण आज्ञा करी। इनमें लेहु एक सुन्दरी॥पुनि प्रणाम हरिको तिन कीन्हीं।नाम उर्वशी इक उन लीन्हीं॥सो सुरपतिको दीन्हीं जाइ । कह्यो सकल वृत्तांत सुनाइ॥पुनि भयो नारायण अवतार । सूर कह्यो भागवत अनुसार ॥५॥हंस अवतार वर्णन॥राग विलावल॥हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारबिंद उर धरो ॥ हरि ज्यों धरयो हंस अवतार । कहौं सो कथा सुनो चितधार ॥ सनकादिक ब्रह्मा पै गये । नमस्कार कर पूँछत भये ॥ किधौं विषय को चित गहि रह्यो । की विषहीमें चितको गह्यो ॥ नीर क्षीर ज्यों दोउ मिलि गये । न्यारे होत न न्यारे कये ॥ हमतो जतन करी बहु भाइ । तुम अब कहो सो करैं उपाइ ॥ ब्रह्माको उत्तर नाहिं आयो । तब सनकादिक गर्व बढायो ॥ ज्ञान हमारो अतिशय जोइ । ब्रह्म रह्यो निर उत्तर होइ ॥ ब्रह्मा हरिपद ध्यान लगाय । तब हरि हंस रूप धरि आय ॥ सबहिन रूप देखि सुख पायो । सबहिन उठिकै माथो नायो ॥ सनकादिकन कह्यो या भाइ । हमको दीजै प्रभु समुझाइ ॥ को तुम क्यों करि इहां पधारे । परमहंस तब वचन उचारे ॥ यह तो प्रश्न योग है नाहीं । एकइ आतम हम तुम माहीं ॥ जो तुम देह देखिकै पूछे । तौहू प्रश्न तुम्हारे छूंछे ॥ पंचभूत ते सब तनु भए । कहा देखिकै तुम भ्रमि गए॥ यह कहि उनको गर्व निवारयो । बहुरो या विधि वचन उचारयो ॥ विषय चिंता दोऊहै माया । दोऊ चपरि ज्यों तरुवर छाया ॥ तरुवर डोलै डोलै सोइ । त्यों जिव लगि चित चेत न होइ॥बहुरि चित्त चेत विषै तनु जोवे । चित्त विषय संयोग तब होवै ॥ ऐसी भाँति रहै दोउ गोइ । तिन्हें न्यारे करि सकै न कोइ ॥ ज्यों सुपनेमें सुख दुख जोइ । जानि सत्य राखै चित लोइ ॥ जब जागै तब मिथ्या जानै। ज्ञानी इनको नित यों मानै ॥ विषय चित्त दोऊ भ्रम जानो । आतमरूप सत्य करि मानो ॥ श्रवणादिकमें चित्त लगावहु । प्रेम सहित मम रूपहि ध्यावहु ॥ ऐसे करत विषयहू होइ । अरु मम चरण रहै चित गोइ ॥ जो ऐसे विधि साधन करै । सो सहजहि मम पद अनुसरै ॥ और जो बीचहि तनु छुटि जाय । तौलै जन्म भक्त गृह आय ॥ वहां हू प्रेम भक्ति को थान । पावै मेरो परम स्थान॥ सनकादिक सों कहि यह ज्ञान । परमहंस भये अंतर्धान ॥ जो यह लीला सुनै सुनावै । सूर सो प्रेम भक्तिको पावै ॥ ६॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवरसूरदासकृते एकादशःस्कन्धः समाप्तः ॥ ११ ॥



॥ श्रीः ॥

अथ सूरसागर.

द्वादशस्कन्ध ।

राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविंद उर धरो ॥ शुकदेव हरि चरणन शिरनाइ । राजासों बोल्यो या भाइ ॥ कहौं हरि कथा सुनो चितलाय । सूर तरो हरिके गुणगाय ॥ ॥ १ ॥ बौद्धावतारवर्णन ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविंद उर धरो ॥ बौद्धरूप जैसे हरि धारयो । अदिति सुतनको कारज सारयो ॥ कहौं सो कथा सुनों चित धार ॥ कहै सुनै सो तरै भवपार ॥ असुर एक समय शुक्र पै जाइ । कह्यो सुरन जीतैं केहि भाइ ॥ शुक्र कह्यो तुम जग विस्तरो । करिकै यज्ञ सुरनसों लरो ॥ याही बिधि तुमरी जय होइ ॥ या बिनु और उपाय न कोइ ॥ असुर शुक्रकी आज्ञा पाइ । लागे करन यज्ञ बहु भाइ ॥ तब सुर सब हरि जू पै जाइ । कह्यो वृत्तांत सकल शिर नाइ ॥ हरि जू तिनको दुःखित देख । कियो तुरत सेवरिको भेष ॥ असुरन पास बहुरि चलि गए । तिनसों वचन ऐसी बिधि कए ॥ यज्ञ माहिं तुम पशुन यों मारत । दया नहीं आवत संहारत ॥ अपनो सो जीव सबनको जानि । कीजै नहिं जीवनकी हानि ॥ दया धर्म पालै जो कोइ । मेरी मति ताकी जय होइ ॥ यह सुन असुरन यज्ञ त्यागि । दया धर्म मारग अनुरागि ॥ या बिधि भयो बुद्ध अवतार । सूर कह्यो भागवत अनुसार ॥ २ ॥ भविष्य कल्की अवतार वर्णन ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविंद उर धरो ॥ हरि करिहैं कलंक अवतार । जेहि कारण सों कहो चित धार ॥ कालिमें नृप होइहैं अन्याई । कृपी आइहैं सब लेहैं बरिआई ॥ झूँठे नरसों लेहिं अंकोर । लावहि सांचि नरको खोर ॥ प्रजाधर्मरत होइ नर कोइ । वरन धर्म न पहिंचानै सोइ ॥ दूरि तीर्थन श्रम कारि जाहिं । जहां रहैं तहां लख्यो न ताहिं ॥ जाके गृहमें प्रतिमा होइ । तिन तजि पूजै अनतै सोइ ॥ ब्राह्मण पूँछे जान्यो जाइ । संन्यासी फिरै भेष बनाइ ॥ गृही न अपनो धर्म पहिंचानै । उन नहिं आए को सन्मानै ॥ दया सत्य संतोष नशाइ । दया धर्मकी रीति बिलाइ ॥ फल सुधर्मको जानै सोइ । पै सुधर्मको करै न कोइ ॥ पापनको फल चाहै नाहीं । अहनिशि पाप करतही जाहीं । वर्षा समै न वर्षा होइ । बिना अन्न दुख पावै लोइ ॥ दान देहिं तो यशके काज । कालि न होइ पृथ्वीपति राज ॥ मन इन्द्रिय वश करैं न लोग । ज्यों त्यों कीन्हों चाहैं भोग ॥ शत सम्वत आयुः कुल होइ । सोऊ जीवै बिरला कोइ ॥ नृप ऐसे आयुर्दा पाइ । पृथ्वी हित नित करैं उपाई ॥ पृथ्वी देखि तिन हाँसी करही । ऐसो को जो मो पर रहही ॥ मन्वंतर लगि कियो जेहि राज । तेऊ नृप गय मोहिं त्याज ॥ पृथु से पृथ्वीपति जग भए । तेऊ नृप छाँडि मोहि गए ॥ तुच्छ आयु परिश्रम करत । आपु आपुमें लरि लरि मरत ॥ इनहिं देखि मोहिं हांसी आवत । इनको इतनी समुझि न आवत ॥ सतयुग सत त्रेता जग करते । द्वापर पूजा मनमें धरते ॥ कालियुग एक बडो उपकार । जो हरि कहै सो उतरै पार ॥ कालिमें पाप करै नित लोइ । कहांलगि करिये अंत न होइ ॥ हरि हरि कहत पाप पुनि जाइ । पवन लागि ज्यों रूइ

उडाइ ॥ अजामेल सुत हित हरि भाष्यो । यमदूतनते तेहि हरि राख्यो ॥ कलिमें राम कहे जो कोइ।निश्चय भव जल तरिहै सोइ॥ जबलगि बढे अधर्म अपार । रहै विष्णुजसधर्म सत द्वार ॥ तागृह संभल कलंकी होइ।करै संहार दुष्ट नर लोइ ॥ पृथ्वी अकास तहां रहिजाइ । राजदेहि जो कुंभ बैठाइ ॥ समदृष्टि होवे सब लोइ । दुष्ट भाव मन धरै न कोइ ॥ यों होइहै कलंकि अवतार। कलिमें राम नाम आधार ॥ शुक नृपसों कह्यो जा परकार । सूर कह्यो ताही अनुसार ॥ ३ ॥ राजा परीक्षित हरिपद प्राप्ति वर्णन ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविंद उर धरो ॥ बिनु हरिभक्ति मुक्ति नाहिं होइ।कोटि उपाय करौ किन कोइ॥रहट घरी ज्यों जग व्यवहार । उपजत विनशत बारंबार ॥ उत्पति प्रलय होत जा भाइ । कहौं सुनो सो नृप चितलाइ ॥ राजा प्रलय चतुर्विध होइ । आवत जात चहूं में लोइ ॥ युग परलय तो तुमसों कही । तीन और कहिबे को रही ॥ चतुर्युगी बीतै एकहत्तर । करै राज तब लगि मन्वतर ॥ चौदह मौन ब्रह्मा दिन माहिं । बीतत तासों कल्प कहाहिं ॥ रात होइ तब परलय होइ । निशि मर्यादा दिन सम होइ ॥ प्रात भए जब ब्रह्मा जागै । बहुरो सृष्टि करन को लागै ॥ दिन सौ तीन साठ जब जाहिं । सो ब्रह्माको वरष कहाहिं॥ बर्ष पचाश परारध गए । प्रलय तीसरी या विधि लए ॥ बहुरो ब्रह्मा सृष्टि उपावे । जब लौं परारध दूजो आवै ॥ शत संवत भये ब्रह्मा मरै । महाप्रलय नित प्रभुजू करै ॥ माया माहिं नित्य ले पावै । माया हरिपद माहिं समावै ॥ हरिको रूप कह्यो नाहिं जाइ । अलख अखंड सदा इक भइ ॥ बहुरि जब हरिकी इच्छा होइ । देखै माया के दिशि जोइ ॥ माया सब तबहीं उपजावै । ब्रह्मा सों पुनि सृष्टि उपावै । तब हम प्रलय सदा पुनि होइ । जन्मै मरै सबाइ लोइ ॥ हरिको भजै सो हरि पद पावै । जन्म मरन तेहि ठौर न आवै ॥ नृप मैं तोहिं भागवत सुनायो । और तो हिय माहिं बसायो ॥ मुक्ति माहिं संशय नाहिं कोइ । सुने भागवत में सोइ होइ ॥ सप्तम दिवस आजु है राउ।हरि चरणारबिंद चित लाउ । इह अछेद अभेद अविनासी । सर्व गति अरु सर्व उदासी ॥ दृष्टिहि दृष्टि सोइ दृष्टि टारि । काको दीजै को दिखहारि ॥ हरि स्वरूप सों रतिहि विचारि। मिथ्या तनुको मोह पसारि ॥ नृप कह्यो तनुको मोह न कोइ । याको जो भावै सो होइ ॥ मोहिं अब सर्व ब्रह्म दरशावै । तक्षक भय मनमें नाहिं आवै ॥ तुम प्रसाद में पायो ज्ञान । छूटि अमिथ्या देह अभिमान ॥ अब मैं गहि हरिपद अनुराग । करिहौं मिथ्या तनुको त्याग ॥ शुक जान्यो नृपको जो ज्ञान । आज्ञा लैकरि कियो पयान ॥ तक्षक नृप शरीरको डस्यो । तब तनु तजि हरि पदमें बस्यो ॥ सूत शौनकनि कहि समुझायो । मैंहू ता अनुसार सुनायो ॥ अंत समय हरिपद चित लावै । सूरदास सो हरिपद पावै ॥ ४ ॥ जन्मेजय कथा ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविंद उर धरो ॥ जन्मेजय जब पायो राज । एकबार निज सभा विराज ॥ पिता वैर मनमें सो विचार । विप्रनसों यों कह्यो उचार ॥ मोको तुम अब यज्ञ करावहु । तक्षक कुटुंब समेत जरावहु ॥ विप्रन सेत कुली जब जारी । तब राजा तिनसों उचारी ॥ तक्षक कुल समेत तुम जारो ॥ कह्यो इन्द्र निज शरन उबारो ॥ नृप कह्यो इन्द्र सहित तेहि जारो । विप्रनहूं इह मतो विचारो ॥ आसतीक तेहि अवसर आयो । राजासों यह वचन सुनायो ॥ कारण करनहार भगवान । तक्षक डसन हार मति जान ॥ बिनु हरि आज्ञा द्वितिय न बात । कौन सकै काहू संताप ॥ हरि जो चाहै त्योंहीं होइ । नृप तामें संदेह न कोइ ॥ नृपके मन यह निश्चय आयो । यज्ञ छाँडि हरिपद चित लायो ॥ सूत शौनकनि कहि समुझायो । सूरदास त्योंहीं करि गायो ॥ ५ ॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवर सूरदासकृते द्वादशः स्कन्धः समाप्तः ॥ १२ ॥

इति श्रीसूरसागर सम्पूर्ण ॥

["श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस-बंबई.]

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसकी क्रय्यपुस्तकें (संगीत–राग–गद्य पद्य)

नाम.	की. रु.
सूरसागर–सूरदासजीकृत संपूर्ण भागवत बारहोंस्कंध विविध प्रकारके रागरागिनीमें भक्तगणोंको कंठस्थ करने योग्य अतिललित माधुरी भाषा संयुक्त (जिल्दबँधा)	८)
भजनामृतसार–इसमें मंगल गौरी होली जयध्वनी पद बिनय. आरती इत्यादि अनेक भजन हैं भगवत् भक्तोंके वास्ते अति उत्तमहै...	॥|=)
बृजबिहार–वृन्दावन निवासी श्रीनारायणस्वामीजीकृत इसमें श्रीकृष्णचंद्र आनंदकंद वृंदावनबिहारी तथा श्रीवृषभानुनंदिनी राधे महारानीकी संपूर्ण लीलाओंका वर्णन अनेक प्रकारके भजन दोहे कवित्त और वार्त्तिकमें अति मधुरतासे कियागयाहै जिसके पढनेसे श्रीकृष्णचरणानुरागियोंका मन प्रेममें एकदम मग्न होजाताहै इसमें वही लीला सम्मिलित की गई हैं कि जिनको आजकलके रासधारीलोग करते हैं अन्तमें अनुरागरसभी है जगह २ पर चित्रभी सुन्दरलीलानुकूल लगाये गये हैं पुस्तककी रक्षाके निमित्त विलायती कपडेकी जिल्दभी बांधी गई है जिसपर सोनेके अक्षर लिखेहैं	१॥|)
नवरत्नरासविलास–इसमें श्रीकृष्णजीकी अनेक प्रकारकी रासलीला हैं....	॥|)
रागरत्नाकर–अर्थात् भक्तचिन्तामणि रागमालासहित जिसमें अति चटकीले २००० पद हैं और छः राग ३६ रागिनीमें भजन गानेका अतिउत्तम ग्रंथ है समय २ का राग बर्णन भक्तिमय सैकडों भक्तोंके मनरञ्जन करनेवाला है जिसके बाँचनेसे भगवानकी लीलाओंका जानो सन्मुख दर्शन होताहै ज्यादा क्या प्रशंसाकरें स्वयं मंगवाकर अनुभव करलें	२)
अनुभवरस–इस ग्रंथमें वृन्दावनबिहारी आनन्दकन्द कृष्णजीकी परम मनोहर अनेक लीलायें यथा क्रम राग रागिनियोंमें वर्णित हैं, जो कि नित्यविहारमें आप सदैव रचते रहते हैं सपुष्ट बढिया कागजं और विलायती कपडेकी जिल्द सहित	१)
शैवमनोरंजन–शिवभक्ति देविसहाय इत्यादि भक्तनके अपूर्व भजन रागरागिनीमें	|)
भजनमनोरंजनी–अर्थात् अतिमनोहर भजन कवित्त दोहा सवैया स्तोत्र आदि अत्यंत सुंदर पद हैं	|)
श्रीसीतारामरसपीयूष–अतिमनोहर रागरागिनीमें	|)
संगीतलहरी–गानेलायक ठुमरी टप्पा गजल पद इत्यादिका अपूर्व संग्रह	|)
संगीत सुधानिधि–प्रथमभाग चुनी हुई गजलोंका संग्रह	|)
नटनागरविनोद–श्रीयुत रत्नसिंहजीकृत कवित्त और सवैयोंमें	॥)
सितारचंद्रिका–(सितार बजानेकी रीति) इसमें सितारमें कौन रागमें किसतरहसे परदा रखना और डाडिड् सारीगम इत्यादि भलीभाँति वर्णित हैं	|=)
स्वरतालसमूह–अर्थात् संपूर्ण सितार बजानेकी रीति उदाहरण सहित गानेकी चीजें सारिगमके अनुसार हैं	१)
पदावली–(रामसखेकृत) रामचंद्रजीकी भक्तिरसः प्रधान पदावली	|-)

नाम.	की. रु.
आनंदगान-(यथा नामः तथा गुणाः) यह पुस्तक पढनेसे अपूर्व आनंद प्राप्त होताहै	।)
कजरीरागसंग्रह-श्रावण भादोंमें गानेलायक अत्युत्तम संग्रह है	=)
प्रभातीसंग्रह-भक्तानुरागी सवेरे उठके श्रीराम कृष्णजीकी प्रभाती गाते	=)
भजनावली-श्रीरामचरणदासकृत इसमें भक्तिज्ञान मार्गी भजन पद विनय प्रभाती दोहा आरती कवित्त छंद इत्यादिका रागरागिनीमें वर्णनहै	।=)
भजनपुष्पावली-इसमें प्राचीन नवीन महात्माओंके रसीले भजन अनेक रागरागिनीमय	।)
श्रीप्रेमपुष्पमाला तथा प्रेमपुष्पमंजरी-जिसमें नानाप्रकारके सुललित पद कवित्त दोहा लावनी विनयादि और वैराग्योपदेशादि श्रीभगवत्प्रेम भजन रूप वर्णितहैं	।-)
रघुराजविलास-महाराजरघुराजसिंहजूदेवकृत इसमें श्रीकृष्णजीके पद होरी, इत्यादि राग रागिनीमें वर्णितहैं	।=)
भजनरत्नावली बडी-जिसमें प्राचीन महात्माओंके अनेक रागरागिनीमें रामकृष्णके भजनोंका संग्रह है संप्रदायी साधूसंतके उपयोगीहै	१।)
स्त्रीपुरुष रागमनोहर-गानेलायक अच्छा संग्रह है...	≡)
लावनी ब्रह्मज्ञानकी-काशीगिरि बनारसीकृत इसमें संपूर्ण लावनी ऐसी भावगंभीरतासे बनाई गई हैं कि जिनका अर्थ शृंगार वैराग्य दोनों पक्षोंपर मिलता है	१।)
आनंदप्रकाश-अर्थात् लावनी तुर्रा	।)
प्रेमवाटिका-(रोचक भजन)...	≡)
प्रेमपुष्पमंजरी-अच्छे २ भजन उनमें पंजाबदेशके भी भजन हैं	।)
प्रेमपुष्पलता-अच्छे २ भजन कई एक रागरागिनियोंमें संगृहीत हैं...	।)
रसरंगप्रकाश-(इसमें अच्छे २ कवियोंके मनभावने पदसंग्रह किये गये हैं	।)
पावससुंदरी-(वर्षाके दिनोंमें गानेलायक)...	=)
पावसमंजरी ,, ...	≡)
भजनसागर-महात्माओंके पदोंका अनूठा संग्रह	।।।=)
संगीतरत्नाकर-इसमें समय २ के रागोंका संग्रह	।)
दिलबहलाव-(शौकीनोंके गानेलायक)....	=)
अनुरागरस-नारायणस्वामी कृत	≡)
गुलबहार-अर्थात अमसी व लावनी ख्याल तुर्रा....	।)
गुलचमन बेनजीर-अर्थात् गानेलायक उमदा २ गजलोंका संग्रह	॥)
गजलसंग्रह-(९४ कवियोंकी २२९ के करीब गानेलायक गजलोंका संग्रह)	।≡)
मनरंजनसंग्रह-मनको प्रसन्न करने योग्य....	।)
होरी चौतालसंग्रह-वसंतपंचमीसे फाल्गुनतक गानेलायक होरीका संग्रह	।)
प्रेमांकुर-श्रीकृष्ण यशगायन	॥)
गोविंदाष्टक भा० टी०	=)
वसंतफागसंग्रह-(होली) गानेलायक उमदी चुनी हुई होलियोंका संग्रह...	॥)

नाम.	की. रु.
नागरसमुच्चय–नागरीदासजीकृत भक्तिरस संपूर्ण ईश्वराराधन लयहोनेकामार्ग वैराग्य, शृंगार और पदसागर युक्त अपूर्व नागरीदासके जीवनचरित्र समेत	१॥)
कल्याणकल्पद्रुम–रोचकछन्दबद्ध वेदान्त मार्गमें सूक्ष्मरामायण	।)
सद्योमुक्तिप्रकाश–(चित्र) अर्थात् संस्कृतकी श्रेणीसे (ज्ञान चौपड)	-)
जंजीराहनुमानजीका	-)॥
अग्रदासजीकीकुंडलिया–(वेदान्तोपदेश)...	।)
गंजीफा इकतीसी–(खेलकी निपुणता)	=)
उपदेशरत्नाकर–उपदेशसम्बन्धी अमूल्य उदाहरणोंयुक्त भक्तिज्ञान वैराग्यसंयुक्त सामयिक दोहे वर्णित हैं	।)
निर्भयविलास–भगवद्भक्तोंके हितार्थ अनूठे गानेलायक पदहैं	१।)
भक्तिसागर–(१७ ग्रंथ) (चरणदासकृत योगग्रन्थ) व्रजचरित्र अमरलोक अष्टांगयोग षट्कर्म हठयोग ज्ञानस्वरोदय भक्तिपदार्थ ब्रह्मज्ञान शब्दवर्णन आदि उपदेशिकविषय-रोचक पद्योंमें वर्णित है	१॥।)
श्रीकृष्णचंद्रिका–गणेशसिंहजीकृत श्रीमद्भागवतके द्वादशस्कंधोंकी कथा दोहा, चौपाई आदि मनहरण छंदोंमें वर्णित है	।)
ब्रह्मज्ञानदर्पण–(योगग्रन्थ) नामहीसे ज्ञात होताहै कि पढनेसे ब्रह्मज्ञानमें सदा मग्न रहतेहैं	=)
ज्ञानस्वरोदय भाषा–(चरणदासकृत) प्रश्नज्ञानमें तात्कालिक है	=)
श्रीब्रह्मज्ञानसागर ,, (योगग्रन्थ)	=)
भक्तिज्ञानानन्दामृतवर्षिणी–राधाकृष्णनाममाहात्म्य भक्तिज्ञान प्रेमका उपदेश	=)
गुरुगीता–गुरुपूजापद्धति भाषाटीकासमेत (निगमानिगममंडली)	।)
गुरुमहिमा और गुरुअष्टक–दोहा चौपाईमें गुरूपदेशके वास्ते अवश्यक है	।=)

संपूर्ण पुस्तकोंका "बड़ासूचीपत्र" अलगहै । देखनाहो तो मँगालीजिये.

पुस्तकमिलनेका पता–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्–यन्त्रालय–बंबई.



T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri